

## Volume 1

# The 248 Positive Mitzvot/Commandments

613 Mitzvot (Commandments)

### **GOD**

P 1 Ex. 20:2 To believe in God

#### ईश्वर का अस्तित्व और एकता:

- "मैं तेरा परमेश्वर हूँ" – ईश्वर का अस्तित्व सभी के लिए प्रमाणित किया गया है। वह अकेले ही ब्रह्मांड के सृष्टा हैं, और केवल वही हमारे आराध्य हैं।
- यह संदेश इस तथ्य को स्थापित करता है कि ईश्वर के अलावा कोई अन्य सत्ता नहीं है, और हमें उन्हीं पर विश्वास और निर्भर रहना चाहिए।

#### मुक्ति से ईश्वर की पहचान:

"जो तुझे मिस्र देश से बाहर निकाला" – ईश्वर ने हमारे पूर्वजों को दासता से मुक्ति दिलाई।

यह मुक्ति उनके अस्तित्व और हमारी स्वतंत्रता का प्रमाण है।

ईश्वर का यह कार्य न केवल उनकी शक्ति का, बल्कि उनके प्रेम और देखभाल का प्रतीक है,

जो उन्होंने हमें दिखाया।

#### आराधना का उद्देश्य:

- "तुम मुझे ही आराधना करो" – इस आदेश से स्पष्ट होता है कि ईश्वर की आराधना में किसी भी अन्य देवता या मध्यस्थ का स्थान नहीं है।
- हमें किसी भी अन्य ईश्वर या शक्ति की पूजा नहीं करनी चाहिए, क्योंकि केवल प्रभु प्रभु

**यहोवा वही परमेश्वर हैं जो हमारे सच्चे पालनहार और मार्गदर्शक हैं।**

### ईश्वर की उपस्थिति और हमारे उत्तरदायित्वः

- “मैं ही तुम्हारा परमेश्वर हूँ” – हमें ईश्वर की उपस्थिति को समझकर उनका आदर करना चाहिए और उनके आदेशों का पालन करना चाहिए।
- एक है जो देख रहा है और सुन रहा है
- इस आदेश का पालन करने से हम अपने जीवन में शांति और मार्गदर्शन पा सकते हैं।

### व्यक्तिगत जिम्मेदारीः

- प्रत्येक व्यक्ति के लिए यह आदेश व्यक्तिगत रूप से लागू होता है। यह नहीं कि केवल समुदाय के रूप में, बल्कि हर व्यक्ति को अपनी आस्था और आराधना में ईश्वर के साथ व्यक्तिगत संबंध बनाना चाहिए।
- ”तेरे परमेश्वर” शब्द से यह संदेश मिलता है कि यह आदेश हर व्यक्ति के लिए व्यक्तिगत रूप से है, न कि किसी समूह के लिए।

P 2 De. 6:4 To acknowledge the Unity of God

### Deuteronomy 6:4 का अर्थ (Hindi Explanation):

1. **राशी का विचार (Rashi's Explanation):**
  - ”हे इस्राइल, हमारा परमेश्वर प्रभु प्रभु यहोवा एक है।”
  - प्रभु प्रभु यहोवा (God) अब हमारे परमेश्वर हैं, न कि दुनिया के अन्य लोगों के परमेश्वर।
  - भविष्य में वह (प्रभु प्रभु यहोवा) ही एकमात्र परमेश्वर के रूप में प्रकट होंगे। (यह

भविष्यवाणी है जो यशायाह और ज़ेकर्याह में दी गई है।)

- Zephaniah 3:9 में लिखा है: "तब मैं peoples को एक शुद्ध भाषा दूँगा ताकि वे सब प्रभु प्रभु यहोवा के नाम को पुकारें।"
- Zechariah 14:9 में लिखा है: "उस दिन प्रभु प्रभु यहोवा एक होगा और उसका नाम एक होगा।"

## 2. इब्राहिम एज़रा का विचार (Ibn Ezra's Explanation):

- शमा (Shema) का महत्व है, जिसमें यह बताया जाता है कि प्रभु प्रभु यहोवा हमारे परमेश्वर हैं और वह एक हैं।
- यह शब्द दो बार इसलिये आते हैं ताकि यह साफ हो सके कि प्रभु प्रभु यहोवा एक हैं, न कि दो परमेश्वर हैं जो अलग-अलग रूप में कार्य करते हैं।
- "ईश्वर हमारा परमेश्वर है" (Eloheinu) का मतलब है कि वह हमारे जीवन के हर पहलू का संचालन करते हैं। हम किसी अन्य मध्यस्थ को नहीं चाहते।
- प्रभु प्रभु यहोवा की एकता को दो रूपों में समझाया गया है:
  1. उनकी absolute oneness यानी वह खुद में एक हैं, कोई भाग नहीं हैं।
  2. Negation of multiplicity यानी किसी अन्य ईश्वर का अस्तित्व न होना।

## 3. सोफानो का विचार (Sforno's Explanation):

- "प्रभु प्रभु यहोवा एक है" का मतलब यह है कि वह केवल वह ही हैं जिन्होंने इस भौतिक ब्रह्मांड और पृथ्वी का निर्माण किया है, और उनका कोई दूसरा अस्तित्व नहीं हो सकता।
- इसके साथ ही उन्होंने हमें यह समझाया कि वह हर जीव, जीवाणु, और शक्ति के एकमात्र प्रबंधक हैं।

- उनका यह उल्लेख भी है कि शमा (Shema) के शब्दों में इस एकता का ध्यान

रखने के लिए शब्दों को स्पष्ट रूप से उच्चारित करना चाहिए।

#### 4. रामबाम का विचार (Rambam's Explanation):

- शमा का उद्देश्य यह है कि हम यह समझें कि एक ही परमेश्वर है। किसी भी दो शक्तियों के अस्तित्व की कल्पना नहीं की जा सकती।
- "प्रभु प्रभु यहोवा हमारा परमेश्वर है, प्रभु प्रभु यहोवा एक है" इस वाक्य के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया कि हमारे लिए वह एकमात्र परमेश्वर हैं।
- मोसेस ने इसे इसलिये कहा क्योंकि यह एक बहुत ही बुनियादी विश्वास है, जिसे मानना जरूरी है।

#### 5. अब्रबनेल का विचार (Abarbanel's Explanation):

- शमा के माध्यम से यहूदियों को यह सिखाया गया कि जो आदेश वे सुन रहे हैं, वे दिव्य हैं, जैसे कि वे आदेश सिनेई पर्वत पर सुने थे।
- यहूदियों को यह समझाया गया कि प्रभु प्रभु यहोवा का एकता का सिद्धांत दो प्रकार की एकता को दर्शाता है:
  1. उनकी absolute oneness (वह एक हैं और किसी प्रकार का विभाजन नहीं है),
  2. और negation of multiplicity (किसी दूसरे देवता का अस्तित्व न होना)।
- इसके साथ-साथ उन्होंने यह भी बताया कि एकता का तीसरा रूप भी है, जो किंगशिप (राज्य की एकता) से संबंधित है।

#### मुख्य बिंदु (Key Points to Note):

- **ईश्वर की एकता:** प्रभु प्रभु यहोवा एक हैं और उनका कोई प्रतिस्थापन नहीं है।
- **हमारा परमेश्वर:** प्रभु प्रभु यहोवा हमारे परमेश्वर हैं, और हमें किसी भी अन्य देवता के पास नहीं जाना चाहिए।
- **ईश्वर का राज्य:** भविष्य में जब वह सब पर शासन करेंगे, उनका राज्य और नाम एक होगा।
- **शमा का महत्व:** शमा का उच्चारण करते समय हमें यह विचार करना चाहिए कि प्रभु प्रभु यहोवा ही एकमात्र ईश्वर हैं, और हमें उनकी एकता को पूरी तरह से समझना चाहिए।

3 De. 6:5 To love God

**व्याख्या:** "तू प्रभु प्रभु यहोवा अपने परमेश्वर से अपने पूरे मन, अपनी पूरी आत्मा, और अपनी पूरी सामर्थ्य से प्रेम करना।"

(व्यवस्थाविवरण 6:5)

---

1. "अपने पूरे मन से" (בכל לבבך):

**हिंदी में अर्थ:**

यहाँ "मन" का मतलब हमारे अंदर दो इच्छाओं से है:

- **येत्सर हतोव (अच्छी इच्छा):** जो हमें सही काम करने के लिए प्रेरित करती है।
- **येत्सर हरआ (बुरी इच्छा):** जो हमें गलत काम करने की ओर खींचती है।

परमेश्वर के लिए पूरे मन से प्रेम करने का मतलब यह है कि हमें अच्छे और बुरे विचारों को भी उनके प्रति प्रेम में लगा देना है। जैसे, यदि बुरी इच्छा हमें गुस्से या ईर्ष्या की ओर खींचती है, तो

**हमें इसे परमेश्वर की आज्ञाओं के पालन में बदल देना चाहिए।**

### उदाहरणः

आगर कोई आपको गाली देता है, तो आपकी बुरी इच्छा कहेगी कि बदला लो। लेकिन जब आप अपने पूरे मन से परमेश्वर से प्रेम करेंगे, तो आप उसे क्षमा कर देंगे और शांति बनाएंगे।

---

### 2. "अपनी पूरी आत्मा से" (ובכל נפשך):

#### हिंदी में अर्थः

आत्मा का मतलब यहाँ हमारी "जीवन" और "इच्छा" से है। यहाँ यह बताता है कि परमेश्वर से इतना प्रेम करो कि अगर तुम्हें अपने जीवन की भी आहुति देनी पड़े, तो भी आप उनके प्रति वफादार रहो।

### उदाहरणः

आगर कोई आपसे यह कहे कि आप परमेश्वर को छोड़ दें, वरना आपकी जान ले ली जाएगी, तो भी आपको परमेश्वर से प्रेम करते हुए सत्य पर अडिग रहना है। यह शहीदों के प्रेम का प्रतीक है।

---

### 3. "अपनी पूरी सामर्थ्य से" (ובכל כוחך):

#### हिंदी में अर्थः

यहाँ "सामर्थ्य" का मतलब है आपकी सारी संपत्ति और ताकत। इसका यह भी मतलब है कि चाहे कोई भी परिस्थिति हो, आप परमेश्वर से प्रेम करना न छोड़ें।

### दो मुख्य पहलूः

- संपत्ति से: अगर कोई व्यक्ति संपत्ति से अधिक प्रेम करता है, तो यह कहता है कि अपनी

**सारी संपत्ति से भी बढ़कर परमेश्वर से प्रेम करो।**

- **कठिनाई में:** जब परमेश्वर आपको सुख देता है या दुख, दोनों स्थितियों में उनका प्रेम करो।

**उदाहरण:**

- यदि आपके पास बहुत धन है, तो इसे केवल अपनी इच्छाओं पर खर्च करने की बजाय, गरीबों की मदद में और परमेश्वर की सेवा में लगाएं।
  - यदि आपको कोई विपत्ति आ जाए, जैसे बीमारी या आर्थिक तंगी, तो भी परमेश्वर से प्रेम बनाए रखें और उनका धन्यवाद करें।
- 

**4. "प्रेम का सही अर्थ":**

**हिंदी में समझें:**

प्रेम का मतलब केवल भावनात्मक लगाव नहीं है। यह एक गहरी निष्ठा और समर्पण है। **इसका मतलब है कि आप परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करें न कि किसी लाभ, सम्मान, या इनाम के लिए।**

**उदाहरण:**

- अगर आप बाइबल पढ़ते हैं केवल स्वर्ग जाने के लिए, तो यह सच्चा प्रेम नहीं है।
  - **लेकिन यदि आप परमेश्वर को जानने और उनसे निकटता पाने के लिए पढ़ते हैं, तो यह प्रेम है।**
- 

**5. यह सिखाता है:**

अपने मन, आत्मा, और सामर्थ्य से परमेश्वर को प्राथमिकता दो।

चाहे सुख हो या दुख, उनका प्रेम कभी न छोड़ो।

अपने जीवन के हर हिस्से को, अपनी इच्छाओं, अपनी जान, और अपनी संपत्ति को,

परमेश्वर की महिमा के लिए उपयोग करो।

### उदाहरण:

प्रभु प्रभु यहोवा से प्रेम करना वैसा ही है जैसे एक बच्चा अपने माता-पिता से प्रेम करता है। बच्चा

केवल इनाम पाने के लिए या डर से नहीं, बल्कि सच्चे प्रेम और विश्वास के कारण उनकी बात

मानता है।

P 4 De. 6:13 To fear God

**Deuteronomy 6:13 (व्यवस्थाविवरण 6:13)** का मुख्य संदेश यह है कि हमें प्रभु प्रभु यहोवा

(पिता) का आदर करना चाहिए, उसकी सेवा करनी चाहिए और केवल उसके नाम से शपथ लेनी

चाहिए।

### मूल श्लोक का भावार्थ:

1. **प्रभु प्रभु यहोवा का भय रखना (Fear the Lord):** इसका मतलब है कि हमें प्रभु प्रभु

यहोवा का सम्मान करना चाहिए और उसकी आज्ञाओं को तोड़ने से बचना चाहिए।

- **उदाहरण:** जैसे एक बच्चा अपने माता-पिता के प्रति आदर और डर रखता है कि वह कुछ गलत करेगा तो उसे दंड मिल सकता है, वैसे ही हमें प्रभु प्रभु यहोवा के प्रति आदर रखना चाहिए।

2. **उसकी सेवा करना (Serve Him):** यह इस बात की ओर इशारा करता है कि हमें अपने

**जीवन के हर कार्य में प्रभु प्रभु यहोवा को प्राथमिकता देनी चाहिए।**

- **उदाहरण:** जैसे एक सेवक अपने मालिक की आज्ञाओं का पालन करता है, उसी प्रकार हमें प्रभु प्रभु यहोवा की आज्ञाओं का पालन करना चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि वह कहता है कि दूसरों से प्रेम करो, तो हमें वैसा करना चाहिए।

3. **उसके नाम से शपथ लेना (Swear by His Name):** इसका मतलब है कि यदि हमें

कसम खानी पड़े, तो केवल प्रभु प्रभु यहोवा के नाम पर खाएं, किसी और देवता के नाम पर नहीं।

- **उदाहरण:** जब आपको कोर्ट में सच्चाई बोलने की शपथ लेनी हो, तो आप कहें, "मैं प्रभु प्रभु यहोवा के नाम से कसम खाता हूँ कि मैं सच्चाई बोलूँगा।"

### टीकाकारों के विचार:

1. **राशी (Rashi):** राशी कहते हैं कि केवल वे लोग जो प्रभु प्रभु यहोवा का आदर करते हैं

और उसकी सेवा करते हैं, उन्हें उसके नाम पर शपथ लेनी चाहिए।

- **उदाहरण:** यदि आप प्रभु प्रभु यहोवा के प्रति समर्पित हैं, तो आप उसके नाम पर कसम खाने के लिए अधिक जिम्मेदार होंगे।

2. **रामबान (Ramban):** रामबान कहते हैं कि यह कोई आदेश नहीं है कि हर समय शपथ

खाई जाए, लेकिन अगर जरूरत हो, तो केवल प्रभु प्रभु यहोवा के नाम पर खाई जानी चाहिए।

- **उदाहरण:** यदि आपको यह प्रमाणित करना हो कि आप सच बोल रहे हैं, तो आप कह सकते हैं, "मैं प्रभु प्रभु यहोवा के नाम पर गवाही देता हूँ।"

3. **इब्न एज़रा (Ibn Ezra):** वह कहते हैं कि यह हमें नकारात्मक आज्ञाओं (मत करो) का

पालन करने और सकारात्मक आज्ञाओं (जो करो) को निभाने की याद दिलाता है।

- **उदाहरण:** "झूठ मत बोलो" एक नकारात्मक आज्ञा है और "सच बोलो" एक सकारात्मक आज्ञा है।

### **व्यावहारिक दृष्टिकोणः**

- हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हमारा हर कार्य प्रभु प्रभु यहोवा को प्रसन्न करने वाला हो।
- केवल उसके नाम का उपयोग सत्यता और सम्मान के साथ करना चाहिए।
- किसी अन्य देवता या झूठे नाम की शपथ लेना गलत है।

P 5 Ex.23:25; To serve God

निर्गमन 23:25 में लिखा है:

"तुम प्रभु प्रभु यहोवा अपने परमेश्वर की सेवा करो, और वह तुम्हारे भोजन और पानी को आशीष देगा और तुम्हारे बीच से रोगों को दूर करेगा।"

### **समझाइएः**

इस वचन का मतलब यह है कि जब हम अपने परमेश्वर प्रभु प्रभु यहोवा की सेवा करते हैं, तो वह हमारी जरूरतों का ख्याल रखता है। यहाँ सेवा का मतलब है उसकी आज्ञाओं का पालन करना, प्रार्थना करना, और एक सही जीवन जीना। इसके परिणामस्वरूप, प्रभु प्रभु यहोवा हमें शारीरिक और आत्मिक रूप से आशीष देता है, जैसे कि स्वस्थ भोजन, पानी और रोगों से सुरक्षा।

## उदाहरण:

मान लीजिए, एक किसान प्रभु प्रभु यहोवा पर विश्वास करता है और उसकी सेवा करता है। वह अपने खेतों में मेहनत करता है, लेकिन साथ ही प्रार्थना करता है कि उसकी फसल अच्छी हो। अगर वह ईमानदारी से परमेश्वर की सेवा करता है, तो प्रभु प्रभु यहोवा उसकी फसल को आशीष देगा ताकि उसे और उसके परिवार को भोजन की कमी न हो। साथ ही, वह और उसका परिवार बीमारियों से सुरक्षित रहेगा।

यह वचन यह सिखाता है कि प्रभु प्रभु यहोवा की सेवा में शांति और सुरक्षा मिलती है।

### 1. Ibn Ezra

- परमेश्वर की सेवा का अर्थ है उसकी आज्ञाओं का पालन करना, उससे प्रेम करना, उसके नाम की महिमा करना और प्रार्थना करना।
- जो उसकी सेवा करते हैं, उन्हें इस संसार में चार प्रकार की आशीषें मिलती हैं:
  - रोटी और पानी में आशीष।
  - रोगों का हटाया जाना।
  - संतानहीनता और गर्भपात की समस्या का समाधान।
  - लंबा और पूर्ण जीवन।
- यह आशीषें शारीरिक रूप से हमें लाभ पहुंचाती हैं और हमारे दुर्मनों पर भी असर डालती हैं।

### 2. Ramban

- अन्य जातियों का मानना था कि उनके देवता (जैसे सूर्य और चंद्रमा) उनके जीवन में

**सफलता लाने में मदद करते हैं।**

- लेकिन इस वचन में यह सिखाया गया है कि केवल प्रभु प्रभु यहोवा की सेवा से ही सच्ची आशीष प्राप्त हो सकती है।
  - परमेश्वर हमारी रोटी और पानी को शुद्ध और स्वास्थ्यवर्धक बनाता है, ताकि वे बीमारियां उत्पन्न न करें।
  - आशीष न केवल मनुष्यों बल्कि उनके पशुओं और भूमि पर भी होती है।
- 

### **3. Or HaChaim**

रोटी और पानी जीवन के लिए आवश्यक चीजें हैं। परमेश्वर उन्हें केवल पोषण ही नहीं बल्कि स्वास्थ्य का स्रोत भी बनाता है।

”रोगों को दूर करना“ प्रभु प्रभु यहोवा की प्रत्यक्ष देखभाल और कृपा का प्रमाण है।

यह आशीष शारीरिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य सुनिश्चित करती है।

---

### **4. Sforno**

- परमेश्वर हमारे भोजन को ऐसा बनाएगा कि वह पोषक हो और किसी भी प्रकार के आंतरिक रोगों को जन्म न दे।
  - वह जलवायु या पर्यावरण से उत्पन्न रोगों से भी हमारी रक्षा करेगा।
- 

### **5. Rashbam**

- पानी से उत्पन्न बीमारियां (जैसे प्रदूषित जल) भी इस वचन में संकेतित हैं।

- प्रभु प्रभु यहोवा वादा करता है कि वह इन समस्याओं से हमें सुरक्षित रखेगा।
- 

## 6. Rabbeinu Bahya

- भोजन और पानी में अदृश्य हानिकारक तत्व हो सकते हैं जो बीमारियां उत्पन्न करते हैं।
  - परमेश्वर की सेवा के माध्यम से, वह इन तत्वों को बेअसर कर देता है।
  - यह वचन सिखाता है कि जो लोग परमेश्वर पर निर्भर होते हैं, उन्हें डॉक्टरों की आवश्यकता नहीं होती।
- 

## 7. Ralbag

- इस वचन में "परमेश्वर की सेवा" का अर्थ है प्रार्थना करना और अपनी ज़रूरतें उसके सामने रखना।
  - यह सेवा इस बात को दर्शाती है कि हम अपनी सभी आशाएं और ज़रूरतें केवल प्रभु प्रभु यहोवा से जोड़ते हैं।
- 

## 8. Kli Yakar

- पूरे समुदाय द्वारा की गई सेवा अधिक प्रभावी होती है, क्योंकि "बहुत लोगों की प्रार्थना" प्रभु प्रभु यहोवा के लिए प्रिय होती है।
  - भोजन और पानी में आशीषें हमारे स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए दी जाती हैं, ताकि रोग उत्पन्न न हों।
-

इन व्याख्याओं से यह निष्कर्ष निकलता है कि प्रभु प्रभु यहोवा की सेवा शारीरिक और आध्यात्मिक दोनों स्तरों पर हमारे जीवन के लिए आशीर्वाद लाती है। यह केवल एक व्यक्तिगत लाभ नहीं है, बल्कि सामूहिक रूप से भी परमेश्वर का मार्गदर्शन और सुरक्षा सुनिश्चित करता है।

P 6 De.10:20 To cleave to God

Cleave का मतलब है मजबूती से जुँड़ना, चिपके रहना, या समर्पित रहना। यह शब्द संबंध, लगाव, और वफादारी को दर्शने के लिए उपयोग किया जाता है।

### बाइबिलिक संदर्भ में

Cleave to God का मतलब है:

1. परमेश्वर के साथ गहरा और स्थायी संबंध बनाना।
2. पूरी निष्ठा और विश्वास के साथ प्रभु प्रभु यहोवा पर निर्भर रहना।
3. उसकी उपस्थिति, उसकी इच्छा और उसकी आज्ञाओं का पालन करते हुए उसके करीब रहना।

### उदाहरण:

1. जब कोई संकट में हो और केवल परमेश्वर की ओर देखे और प्रार्थना करे, तो यह cleave करने का उदाहरण है।
2. जैसे एक बच्चा अपनी माँ का हाथ पकड़े बिना छोड़ता नहीं, वैसे ही परमेश्वर के साथ जुड़े रहना cleaving है।

## हिंदी में सरल अर्थ:

1. परमेश्वर के साथ चिपके रहना।
2. उसे कभी न छोड़ना।
3. पूरी निष्ठा और प्रेम के साथ उसके करीब रहना।

**व्याख्या:** व्यावस्थाविवरण 10:20 में लिखा है:

“तुम प्रभु प्रभु यहोवा अपने परमेश्वर से डरो, उसी की सेवा करो, उसी से लिपटे रहो, और उसी के नाम से शपथ लो।”

## समझाइए:

यह वचन परमेश्वर प्रभु प्रभु यहोवा के प्रति पूर्ण समर्पण, प्रेम और आदर को सिखाता है।

- **डरने का अर्थ है उसकी आज्ञाओं को न तोड़ना।**
- **सेवा करना का अर्थ है उसकी आज्ञाओं का पालन और आराधना करना।**
- **लिपटना का अर्थ है हर समय प्रभु प्रभु यहोवा पर निर्भर रहना और उसकी उपस्थिति में रहना।**
- **शपथ लेना का अर्थ है कि केवल प्रभु प्रभु यहोवा का नाम सत्य और सम्मान के लिए उपयोग करें।**

## उदाहरण:

जब एक छात्र परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने की प्रार्थना करता है, तो वह केवल परमेश्वर पर विश्वास करता है और उसी पर निर्भर रहता है। यह “लिपटना” का एक उदाहरण है।

कोई व्यक्ति किसी गलत कार्य से बचने के लिए प्रभु प्रभु यहोवा से डरता है और प्रलोभन को छोड़ देता है, यह "डरने" का उदाहरण है।

जब हम अपने जीवन में परमेश्वर की सेवा के लिए समय निकालते हैं, जैसे प्रार्थना, अध्ययन, या दूसरों की मदद करना, तो यह "सेवा" है।

यदि आपको कोई शपथ लेनी पड़े, तो वह केवल प्रभु प्रभु यहोवा के नाम से हो, जो "सत्य" का प्रतीक है।

---

## रब्बियों की व्याख्या (आपकी फाइल से):

### 1. Ibn Ezra और Chizkuni

- **डरना:** नकारात्मक आज्ञाओं का उल्लंघन न करना।
  - **सेवा करना:** सकारात्मक आज्ञाओं का पालन करना।
  - **लिपटना:** अपने दिल और आत्मा से प्रभु प्रभु यहोवा के साथ जुड़े रहना।
  - **शपथ लेना:** केवल प्रभु प्रभु यहोवा के नाम से शपथ लेना और झूठ से बचना।
- 

### 2. Rabbeinu Bahya

- **डरना:** नकारात्मक आज्ञाओं का उल्लंघन न करने का संकेत है।
- **लिपटना:** प्रभु प्रभु यहोवा के बारे में चिंतन करना और उसकी उपस्थिति में रहना।
- **उनके अनुसार, जो लोग उच्च आध्यात्मिक स्थिति में पहुँचते हैं, वे प्रभु प्रभु यहोवा के साथ "दिव्य निकटता" प्राप्त कर सकते हैं।**
- **उन्होंने यह भी कहा कि यह वचन तोराह के विद्वानों का आदर करने की शिक्षा भी देता है, क्योंकि वे हमें प्रभु प्रभु यहोवा के करीब लाते हैं।**

### 3. Rashi

- जब आप परमेश्वर के प्रति डर, सेवा और लिपटना जैसे गुण प्राप्त कर लेते हैं,

**तभी आप उसके नाम से शपथ ले सकते हैं।**

- □□□□□□□ □□□ □□□□□□□ □□□ □□ □□□□□□: "□□ →  
□□□ → □□□□□ → □□□"

### 4. Ralbag

- "लिपटना" का अर्थ है तोराह और ज्ञान को सीखना।
- प्रभु प्रभु यहोवा के करीब आने के लिए विद्वानों के साथ संगति करने की सलाह  
**दी गई है।**

### 5. Malbim

- परमेश्वर के प्रति "डर और प्रेम" का अद्वितीय संयोजन है।
- परमेश्वर के प्रति डर न केवल हमें दूर रखता है, बल्कि उसकी ओर आकर्षित भी  
**करता है।**

### 6. Haamek Davar

- "लिपटना" का अर्थ है तोराह के विद्वानों के साथ जुड़ना और उनके गुणों को  
**आत्मसात करना।**
- केवल वे लोग जो प्रभु प्रभु यहोवा की सेवा और उसके गुणों को अपनाते हैं, वे  
**शपथ लेने के योग्य हैं।**

## 7. Rav Hirsch

- उन्होंने "लिपटना" को परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिए अपनी पूरी ताकत लगाने के रूप में देखा।
  - यह "डर" और "लिपटना" के बीच संतुलन की बात करता है।
- 

## 8. Torah Temimah

- "शपथ लेना" केवल एक सकारात्मक परिस्थिति में होना चाहिए, जहां यह परमेश्वर के नाम का आदर और महिमा बढ़ाए।
  - उदाहरण: जब एलिय्याह नबी ने शपथ ली कि बारिश नहीं होगी।
- 

### **निष्कर्ष:**

इस वचन में परमेश्वर के साथ घनिष्ठ और समर्पित संबंध बनाने की शिक्षा दी गई है।

**डर:** आज्ञाओं का पालन।

**सेवा:** उसका सम्मान।

**लिपटना:** उसका साथ न छोड़ना।

**शपथ लेना:** सत्य और विश्वास का प्रतीक।

and by God's name shall you swear.

**व्यवस्थाविवरण 10:20 की यह शिक्षाएं शामिल हैं:**

**1. "अपने परमेश्वर प्रभु प्रभु यहोवा से डरो"**

इसका अर्थ है कि हमें उन सभी नकारात्मक आज्ञाओं (निषेधों) को मानना चाहिए जिन्हें

उल्लंघन करना मना है।

**2. "उसी की सेवा करो"**

यह उन सकारात्मक आज्ञाओं को मानने की बात करता है जो पालन करने के लिए दी

गई हैं।

**3. "उससे लिपटे रहो"**

इसका तात्पर्य है कि हम ईश्वर के करीब रहें और अपने विचारों व कर्मों में उससे जुड़े

रहें। "लिपटना" का अर्थ है तोराह और ज्ञान को सीखना।

**4. "उसके नाम की शपथ लो"**

इसका अर्थ है कि अगर किसी परिस्थिति में शपथ लेनी हो, तो केवल परमेश्वर के नाम

की शपथ ली जाए। इसे परमेश्वर की महिमा के लिए किया जाना चाहिए।

**रब्बियों की व्याख्या:**

**1. रशी (Rashi):**

उन्होंने कहा कि ये शिक्षाएं चरणबद्ध हैं। पहले आपको प्रभु प्रभु यहोवा से डरना, उसकी सेवा करना और उससे लिपटना सीखना होगा। जब यह गुण विकसित हो जाते हैं, तभी आप उसके नाम की शपथ ले सकते हैं।

**उदाहरणः**

यदि एक व्यक्ति एक शिक्षक से जुड़ा हुआ है और उसे सिखाया गया है कि कैसे सही तरीके से काम करना है, तो वह विश्वासपूर्वक शपथ ले सकता है क्योंकि उसका विश्वास और कार्य सही दिशा में है।

**2. इब्र एज़रा (Ibn Ezra):**

उनका कहना है कि ईश्वर से डरने का अर्थ है, आज्ञाओं का उल्लंघन न करना। उनकी सेवा करने का मतलब है, उनकी आज्ञाओं को पूरे दिल से मानना।

**उदाहरणः**

अगर आप किसी अनुशासनात्मक संस्थान में हैं, तो डर के कारण आप नियम तोड़ने से बचते हैं। लेकिन सेवा करना एक कदम आगे है, जहां आप स्वेच्छा से नियमों का पालन करते हैं।

**3. हक्टव वेहाकाबाला (HaKtav VeHaKabala):**

उन्होंने "उससे लिपटने" को आत्मा और हृदय से जुड़े रहने की शिक्षा के रूप में देखा। यह केवल बाहरी कार्य नहीं बल्कि आंतरिक समर्पण की बात करता है।

**उदाहरणः**

दो दोस्तों के बीच का प्रेम, जो एक-दूसरे से वादा करते हैं कि वे अपने रिश्ते में सच्चे रहेंगे और इसे बनाए रखेंगे।

**4. रब्बेनु बह्या (Rabbenu Bahya):**

उनका मानना है कि ये सभी शिक्षाएं ईश्वर से निकटता प्राप्त करने के विभिन्न चरण हैं।

"लिपटना" का अर्थ है, अपने विचारों को हमेशा ईश्वर पर केंद्रित रखना।

## निष्कर्षः

- ये चार शिक्षाएं एक व्यक्ति को परमेश्वर के साथ एक गहरा और प्रामाणिक संबंध स्थापित करने के मार्ग पर ले जाती हैं।
- "डर" शुरुआत है, जो नकारात्मकता से बचने का कारण बनता है।
- "सेवा" हमें सकारात्मक कर्मों की ओर प्रेरित करती है।
- "लिपटना" हमें ईश्वर से जुड़ने और आंतरिक समर्पण करने की शिक्षा देता है।
- "शपथ" हमें परमेश्वर की महिमा के लिए अपने शब्दों और कर्मों में सच्चे रहने की बात सिखाती है।

इन शिक्षाओं का पालन करते हुए हम एक बेहतर और आध्यात्मिक जीवन जी सकते हैं, जो ईश्वर की इच्छा के अनुरूप है।

P 8 De. 28:9 On walking in God's ways  
 יהוה will establish you as God's holy people, as  
 was sworn to you, if you keep the  
 commandments of your God יהוה and walk in  
 God's ways.

## Deuteronomy 28:9 की व्याख्या

यह पद परमेश्वर के साथ एक पवित्र संबंध को बनाए रखने के बारे में है। इसमें यह कहा गया है कि यदि आप परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हैं और उसके मार्ग पर चलते हैं, तो वह आपको एक पवित्र राष्ट्र बनाएगा। रब्बियों ने इस पर विभिन्न दृष्टिकोण दिए हैं।

## रब्बियों की व्याख्या:

### इब्र एज़रा (Ibn Ezra):

”पवित्र राष्ट्र” बनने का अर्थ है कि परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करके आप

पवित्रता प्राप्त करेंगे।

**उदाहरण:** जैसे कोई व्यक्ति नियमों का पालन करता है और अपनी जिंदगी में अनुशासन लाता है, वैसा ही परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करना है।

### हाआमेक डावर (Haamek Davar):

यह आशीर्वाद उन लोगों के लिए है जो परमेश्वर से जुड़े रहते हैं और उसकी सेवा में

खुद को समर्पित करते हैं।

**उदाहरण:** जैसे एक शिक्षक अपने छात्रों को सिखाता है और उनके मार्गदर्शन में उनकी क्षमता को बढ़ाता है, वैसे ही परमेश्वर अपने अनुयायियों को मार्गदर्शन देता है।

### रम्बान (Ramban):

परमेश्वर की ”शपथ” सीनै पर्वत पर किए गए उस वादे को संदर्भित करती है, जिसमें इस्माएलियों को ”पवित्र राष्ट्र” कहा गया।

**उदाहरण:** यह वैसा ही है जैसे कोई कंपनी अपने कर्मचारियों से वादा करती है कि यदि वे नियमों का पालन करेंगे, तो उन्हें पदोन्नति मिलेगी।

### ओर हचैम (Or HaChaim):

उन्होंने ”पवित्रता” को नकारात्मक आज्ञाओं के उल्लंघन से बचने से जोड़ा।

**उदाहरण:** अगर आप ट्रैफिक नियमों का पालन करते हैं, तो आप दुर्घटनाओं से बच

सकते हैं। इसी तरह, परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन हमें पवित्रता की ओर ले जाता है।

### **रव हिर्श (Rav Hirsch):**

इस पद में वर्णित आशीर्वाद पूरी मानवता को यह दिखाने के लिए है कि परमेश्वर के नाम पर चलने वाला एक राष्ट्र कितना उत्तम और सशक्त हो सकता है।

**उदाहरण:** जैसे एक आदर्श परिवार दूसरों के लिए प्रेरणा बनता है, वैसे ही परमेश्वर का अनुयायी राष्ट्र पूरी दुनिया के लिए उदाहरण बनेगा।

---

### **निष्कर्षः**

इस पद का मुख्य संदेश यह है कि अगर हम परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हैं और उसके मार्ग पर चलते हैं, तो वह हमें "पवित्र राष्ट्र" बनाएगा।

- **आध्यात्मिक पाठः**

परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन हमें न केवल व्यक्तिगत रूप से बल्कि सामाजिक रूप से भी लाभ पहुंचाता है।

- **उदाहरणः**

यदि आप एक समाज में ईमानदारी, दया, और प्रेम के गुणों का पालन करते हैं, तो आप दूसरों के लिए प्रेरणा बनते हैं।

- **रब्बियों की समग्र दृष्टिः**

रब्बियों ने इसे व्यक्तिगत पवित्रता, सामाजिक आदर्श, और परमेश्वर के साथ संबंध की गहराई के रूप में व्याख्या किया है।

इस पद से सीख यह है कि हमारे कर्म और समर्पण हमें न केवल इस धरती पर बल्कि

आध्यात्मिक रूप से भी उन्नत बनाते हैं।

P 9 Le.22:32 On Sanctifying God's Name

"तुम मेरे पवित्र नाम को अपवित्र न करना, ताकि मैं इस्राएल की प्रजा के बीच पवित्र ठहरूँ-मैं प्रभु प्रभु यहोवा जो तुम्हें पवित्र करता हूँ।"

यहां दी गई टिप्पणियां "אֶלְאָ" (लेविटिकस) 22:33 की विभिन्न व्याख्याएं प्रस्तुत करती हैं। यह

पद इस पर बल देता है कि परमेश्वर ने इस्राएलियों को मिस्र से निकाला ताकि वे उनकी

आज्ञाओं का पालन करें और उनके नाम को पवित्र करें। आइए इसे और सरलता से समझते हैं और हर रब्बी की व्याख्या को हिंदी में उदाहरण सहित समझते हैं।

### **Chatam Sofer की व्याख्या:**

#### **मुख्य विचार:**

चातम सोफर के अनुसार, इस पद में यह समझाया गया है कि परमेश्वर और इस्राएलियों के बीच का प्रेम किसी शर्त पर आधारित नहीं है। जैसे कि दो सच्चे मित्रों के बीच प्रेम कभी समाप्त नहीं होता, वैसे ही इस्राएल और परमेश्वर का प्रेम अनंत और अटूट है।

#### **उदाहरण:**

सोचें कि एक बच्चा अपनी मां से प्यार करता है, चाहे वह मां उसे मिठाई दे या न दे। यह प्रेम शर्त पर आधारित नहीं है। इसी तरह, इस्राएलियों का प्रेम परमेश्वर से और परमेश्वर का प्रेम उनसे

**शर्त-रहित है।**

**संदेशः**

**परमेश्वर चाहते हैं कि हम उनकी आज्ञाओं का पालन करें, चाहे कोई विशेष लाभ हो या न हो।**

---

**Bekhor Shor की व्याख्या:**

**मुख्य विचारः**

बेखोर शोर कहते हैं कि परमेश्वर ने इस्राएलियों को मिस्र से इसलिए निकाला ताकि वे उनके ईश्वर बन सकें और उनकी आज्ञाओं का पालन करें।

**उदाहरणः**

**मान लीजिए कि एक शिक्षक किसी छात्र को परीक्षा में पास करने के लिए गाइड करता है। बदले में वह छात्र से अपेक्षा करता है कि वह उसके निर्देशों का पालन करेगा। इसी तरह परमेश्वर ने इस्राएलियों को बचाया और बदले में आज्ञाकारिता की अपेक्षा की।**

---

**David Zvi Hoffmann की व्याख्या:**

**मुख्य विचारः**

परमेश्वर ने इस्राएल को मिस्र से निकालकर एक पवित्र राष्ट्र बनाया। यह इस बात को दर्शाता है कि इस्राएल को पवित्र और आज्ञाकारी बने रहना है।

**उदाहरणः**

जैसे एक राजा अपने राज्य के नागरिकों को सुरक्षा देता है, और बदले में नागरिकों से यह अपेक्षा

करता है कि वे कानून का पालन करेंगे।

---

### **Divrei David की व्याख्या:**

#### **मुख्य विचार:**

यह व्याख्या बताती है कि चूंकि परमेश्वर ने हमें मिस्र से निकाला है, यह हमारा कर्तव्य बनता है कि हम उनकी आज्ञाओं का पालन करें।

#### **उदाहरण:**

यदि कोई व्यक्ति आपको किसी मुसीबत से बचाता है, तो यह आपकी नैतिक जिम्मेदारी है कि आप उसकी बात मानें।

---

### **Haamek Davar की व्याख्या:**

#### **मुख्य विचार:**

परमेश्वर चाहते हैं कि उनके त्योहारों और समय का आदर किया जाए ताकि उनकी दिव्यता और आशीर्वाद हम पर बना रहे।

#### **उदाहरण:**

जैसे एक परिवार में त्योहारों का विशेष महत्व होता है और उनका पालन करना परिवार की परंपराओं को बनाए रखता है।

---

### **Ibn Ezra की व्याख्या:**

**मुख्य विचार:**

यह पद हमें याद दिलाता है कि परमेश्वर ने हमें आज्ञाएँ दीं ताकि हम उनका अनुसरण करके एक पवित्र जीवन जी सकें।

**उदाहरण:**

जैसे स्कूल में नियम बनाए जाते हैं ताकि छात्रों का भविष्य बेहतर हो।

---

**Malbim की व्याख्या:****मुख्य विचार:**

परमेश्वर ने इस्राएल को मिस्र से निकाला ताकि वे उनका सेवक बनें और अपने प्राणों को भी उनकी सेवा में अर्पित करने के लिए तैयार रहें।

**उदाहरण:**

जैसे एक सैनिक अपने देश के लिए अपना जीवन समर्पित करने को तैयार रहता है।

---

**Sforno की व्याख्या:****मुख्य विचार:**

परमेश्वर ने इस्राएल को मिस्र से निकाला ताकि वे सीधे उनके मार्गदर्शन में चल सकें और किसी अन्य माध्यम पर निर्भर न रहें।

**उदाहरण:**

जैसे एक गुरु अपने शिष्य को सही मार्ग पर ले जाने के लिए स्वयं उसका मार्गदर्शन करता है।

---

## Torah Temimah की व्याख्या:

### मुख्य विचार:

परमेश्वर ने इस्राएल को यह स्पष्ट कर दिया कि उनका उद्देश्य उनका नाम पवित्र करना और उनके लिए अपने प्राणों की आहुति देने की तैयारी रखना है।

### उदाहरण:

जैसे एक खिलाड़ी अपने देश के सम्मान के लिए अपनी पूरी ताकत लगा देता है, वैसे ही परमेश्वर का नाम पवित्र करना हमारा कर्तव्य है।

---

### निष्कर्ष:

इन सभी व्याख्याओं में मुख्य रूप से यह संदेश मिलता है:

1. परमेश्वर ने इस्राएल को मिस्र से निकाला ताकि वे उनका पवित्र नाम स्थापित कर सकें।
2. इस्राएलियों का कर्तव्य है कि वे परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करें और उनकी महिमा बढ़ाएं।
3. यह रिश्ता प्रेम, भक्ति, और आज्ञाकारिता पर आधारित है।

इससे हमें यह सीख मिलती है कि हमें भी परमेश्वर के प्रति अपने प्रेम और भक्ति को बनाए

रखना चाहिए, चाहे परिस्थितियाँ कैसी भी हों।

## TORAH

P 10 De. 6:7 On reciting the Sh'ma each morning and evening

Impress them upon your children. Recite them when you stay at home and when you are away, when you lie down and when you get up.

(Deuteronomy) 6:7 की व्याख्या करता है, जिसमें यहां परंपरा और अन्य रब्बियों की विभिन्न दृष्टियों से "שִׁנְנַתּוּמָה" ("अपने बच्चों को सिखाना") के महत्व को समझाया गया है। चलिए, इसे हिंदी में सरल शब्दों में समझते हैं:

### रब्बियों के विचार:

#### 1. राशी (Rashi):

- "शिनन्तम" (שִׁנְנַתּוּמָה) का अर्थ है 'तीक्ष्णता'। इसका मतलब है कि वचनों को इस प्रकार स्पष्ट और मजबूत बनाया जाए कि अगर कोई व्यक्ति आपसे कुछ पूछे, तो आप तुरंत उत्तर दे सकें।
- "बनिम" (בְּנִים) का अर्थ केवल अपने बच्चों से नहीं है, बल्कि शिष्य भी इसमें शामिल हैं। शिष्य को 'बेटा' और गुरु को 'पिता' कहा गया है।

#### 2. इब्र एज़रा (Ibn Ezra):

- "शिनन्तम" का अर्थ है 'तीक्ष्ण बनाना,' जैसे बाण को तेज किया जाता है। यह सिखाता है कि मनुष्य का मुख्य उद्देश्य ईश्वर की सेवा करना है।

#### 3. राम्बान (Ramban):

- "शिनन्तम" का आदेश इस बात को सुनिश्चित करता है कि बच्चों को वचन सही और सटीक रूप से सिखाए जाएं।

#### 4. रव हिर्श (Rav Hirsch):

- "शिनन्तम" का तात्पर्य है छोटे, सटीक, और सरल वाक्यों में वचनों को समझाना।
- "द्विबार्त बाम" (דב גרבא) का मतलब है कि इन पर नियमित रूप से चर्चा करें और इन्हें मुख्य विषय बनाएं।

#### 5. सफोर्नो (Sforno):

- इसे दोहराने और तर्कपूर्ण तरीकों से सिखाने की बात कही गई है। इससे याद रखने की प्रवृत्ति बढ़ती है।

#### 6. सफतेई चाखामिम (Siftei Chakhamim):

- यह सिखाने की प्रक्रिया को तीव्र और प्रभावी बनाने पर जोर देता है।

#### 7. बेखोर शोर (Bekhor Shor):

- यह बताता है कि वचनों को बच्चों के दिलों में गहराई से बैठाया जाए, ताकि वे इसे अगली पीढ़ियों तक पहुंचा सकें।

#### निष्कर्ष:

"עשותם לבני ר' ("अपने बच्चों को सिखाना") का मुख्य संदेश यह है कि शिक्षा केवल रटने तक सीमित नहीं होनी चाहिए। इसे समझने, तर्क करने और व्यवहार में लाने का प्रयास करना चाहिए। वचनों को इतनी गहराई से आत्मसात किया जाना चाहिए कि वे रोजमर्रा के जीवन का हिस्सा बन जाएं।

- **आध्यात्मिक दृष्टि:** यह वचनों को दोहराने और अभ्यास के माध्यम से व्यक्तिगत और सामूहिक आत्मा की गहराई में उतारने की प्रक्रिया है।
- **व्यावहारिक दृष्टि:** माता-पिता और शिक्षक दोनों का कर्तव्य है कि वे न केवल जानकारी दें, बल्कि इसे बच्चों या शिष्यों के जीवन में प्रभावशाली रूप से लागू करें।

#### 11 De. 6:7 On studying and teaching Torah

रोमा का मतलब है वचन को पढ़ना, सुनना, और परमेश्वर के प्रति अपनी आराधना और आज्ञाकारिता को जीवन में लागू करना।

- **पद 10: "रोमा" का उच्चारण सुबह और शाम करें।**

यह पद प्रभु प्रभु यहोवा के प्रति प्रेम और भक्ति को दोहराने का निर्देश देता है। सुबह और शाम रोमा पढ़ने से हम अपने दिन का आरंभ और अंत परमेश्वर के प्रति समर्पण के साथ करते हैं।

- **पद 11: "तौरेह का अध्ययन और शिक्षा"।**

यह पद हमें यह सिखाता है कि तौरेह (धर्मशास्त्र) को खुद भी पढ़ें और अपने बच्चों व शिष्यों को पढ़ाएँ। इसका मतलब है कि हमें इसे याद रखना चाहिए और इसका जीवन में पालन करना चाहिए।

#### उदाहरण:

- जब एक बच्चा अपनी मां से पूछता है, "क्यों हम प्रार्थना करते हैं?" तो माता को तुरंत उत्तर

**देना चाहिए, "क्योंकि प्रभु प्रभु यहोवा से प्रेम करना और उनकी शिक्षाओं का पालन**

**करना हमारा कर्तव्य है।"**

- घर में शिक्षा का माहौल बनाना और हर दिन कुछ समय तौरेह की चर्चा के लिए समर्पित करना।

## अन्य रब्बियों के विचार:

### 1. राशी:

"रोमा" और "तौरेह" के शब्द हमेशा आपके मुँह पर तैयार रहने चाहिए। यदि कोई आपसे पूछे, तो आप बिना झिझक उत्तर दे सकें।

### 2. रम्बामः

शिक्षा का क्रम बच्चे के बचपन से शुरू होना चाहिए। जैसे-जैसे वह बड़ा होता है, शिक्षा की गहराई बढ़नी चाहिए।

### 3. गुर आर्यः

तौरेह को शार्प (धारदार) ज्ञान के साथ पढ़ाएं, ताकि प्रश्न पूछने पर आप आत्मविश्वास के साथ उत्तर दें।

### 4. इब्र एजरा:

"रोमा" का मतलब है आत्मा को हर रोज़ प्रभु प्रभु यहोवा की आराधना में केन्द्रित करना।

## निष्कर्षः

यह पद हमें सिखाते हैं कि हम तौरेह को अपने जीवन का केंद्र बनाएं। सुबह-शाम रोमा पढ़ना और हर समय तौरेह की चर्चा करना हमें प्रभु प्रभु यहोवा से जोड़ता है। हमें बच्चों और शिष्यों को भी इस शिक्षा में प्रशिक्षित करना चाहिए ताकि यह ज्ञान पीढ़ी दर पीढ़ी चलता रहे। यह केवल वचन पढ़ने

## तक सीमित

नहीं है, बल्कि इसका मतलब है परमेश्वर के वचनों को सुनना, उस पर ध्यान देना, और अपने

जीवन में उसे लागू करना। शेमा की परंपरा के अनुसार, यहूदी लोग सुबह और शाम इसे पढ़ते हैं,

जिसमें परमेश्वर से प्रेम और उनकी आज्ञाओं का पालन करने का प्रण दोहराया जाता है।

P 12 De. 6:8 On binding Tefillin on the head

"इन्हें अपने हाथ पर चिन्ह के रूप में बाँध लेना और इन्हें अपनी आँखों के बीच एक प्रतीक के रूप में रखना।"

### इसका अर्थ:

यह आदेश प्रतीकात्मक है और इसका उद्देश्य है कि परमेश्वर के वचन हमारे विचारों (मस्तिष्क)

और कार्यों (हाथ) में हमेशा उपस्थित रहें।

- हाथ पर बांधना:** यह हमारे कार्यों और कर्मों का प्रतीक है। इसका मतलब है कि हम अपने सभी कार्यों को परमेश्वर की आज्ञाओं के अनुसार करें।
- मस्तिष्क पर प्रतीक:** यह हमारे विचारों और मन का प्रतीक है। इसका मतलब है कि हमारे विचार परमेश्वर के वचनों के अनुरूप हों।

## रब्बियों की व्याख्या:

### 1. राशी:

हाथ पर बांधने का अर्थ है तौरेह (Torah) को अपने जीवन में लागू करना, और माथे पर रखने का मतलब है अपने विचारों को परमेश्वर की ओर निर्देशित करना।

### 2. रम्बाम (माइमोनाइड्स):

उन्होंने इसे तिफ़िलिन (phylacteries) पहनने से जोड़ा, जिसमें तौरेह की कुछ विशेष प्रार्थनाएं लिखी होती हैं। तिफ़िलिन को बाएं हाथ और माथे पर पहनकर, यह यहूदी परंपरा में परमेश्वर की याद रखने का एक भौतिक तरीका है।

### 3. इन्ह एजरा:

यह आदेश प्रतीकात्मक भी है, जो हमें सिखाता है कि हमारे कर्म और विचार हमेशा प्रभु प्रभु यहोवा की शिक्षाओं के प्रति केंद्रित हों।

### 4. मत्त्विम:

उन्होंने इसे इस प्रकार समझाया कि "हाथ" हमारे कार्यों का केंद्र है और "मस्तक" हमारे विचारों का। यह दोनों मिलकर हमें परमेश्वर की सेवा में संपूर्ण समर्पण का पाठ पढ़ाते हैं।

## निष्कर्ष (व्यावहारिक दृष्टिकोण):

यह वचन हमें प्रेरित करता है कि:

1. हमारे कार्य परमेश्वर की शिक्षाओं का पालन करें।
2. हमारे विचार पवित्र और सकारात्मक हों, जो प्रभु प्रभु यहोवा की आज्ञाओं पर केंद्रित हों।
3. जीवन में हर समय परमेश्वर की उपस्थिति और शिक्षाओं का स्मरण करते रहें।

उदाहरण:

**जब कोई निर्णय लेना हो, तो हम सोचें, ”क्या यह निर्णय प्रभु प्रभु यहोवा की इच्छा के अनुसार है?”**

**या जब हम काम करें, तो यह सोचें, ”क्या यह काम प्रभु प्रभु यहोवा को प्रसन्न करेगा?”**

P 13 De. 6:8 On binding Tefillin on the hand (**हाँथों में बाधना**)

**व्यवस्थाविवरण 6:8** के बारे में। यहां ”तफिलीन” (प्रार्थना के पट्टे) के आदेश पर चर्चा की गई है।

इसमें लिखा है कि ”इन्हें अपने हाथ पर चिन्ह के रूप में बांधो और अपने माथे के बीच टोटाफोट के रूप में रखो।”

**मुख्य बिंदु और व्याख्याएं:**

### 1. तफिलीन का स्थान और अर्थः

- राशी कहते हैं कि ”तफिलीन” बाएं हाथ की बांह पर (हृदय के पास) और सिर पर रखे जाते हैं। **यह व्यक्ति के विचारों (सिर) और कर्मों (हाथ) को परमेश्वर की सेवा में जोड़ने का प्रतीक है।**
- रब्बी बाख्या के अनुसार, ”बाएं हाथ” का उल्लेख ”कमज़ोर हाथ” के रूप में किया गया है, और इसे हृदय के करीब रखा जाता है ताकि यह हमारे भावनात्मक और आध्यात्मिक समर्पण को प्रकट करे।

### 2. ”टोटाफोट” का अर्थः

- कुछ रब्बी (राशी और अन्य) कहते हैं कि ”टोटाफोट” का अर्थ चार स्कॉल या खांचे हैं, **जिसमें चार अलग-अलग भाग हैं (जैसे ”शमा” और अन्य प्रार्थनाएं)। यह विचार**

**और कर्म के बीच संतुलन का प्रतीक है।**

### 3. अन्य व्याख्याएँ:

- रब्बी इब्राहिम कहते हैं कि "टोटाफोट" शब्द दुर्लभ है और इसे "स्मरण" और "**चेतावनी**" के प्रतीक के रूप में देखा जाना चाहिए।
- माल्कीम ने तफिलीन को भक्ति और प्रतिबद्धता के प्रतीक के रूप में परिभाषित किया है, जिसमें हृदय और मस्तिष्क दोनों शामिल हैं।

### 4. अनुशासन और स्मरण:

- रब्बी हिशेक के अनुसार, तफिलीन पहनने का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि हमारे विचार और कर्म हमेशा धर्मपरायणता के मार्ग पर हों। यह हमें यह याद दिलाने के लिए है कि हमारा जीवन परमेश्वर की सेवा और नैतिकता में निहित होना चाहिए।

**निष्कर्ष:** यह आदेश यहुदियों के लिए एक दैनिक (daily ki practice) अभ्यास का हिस्सा है, जो उन्हें **उनके विश्वास और कर्म के बीच सामंजस्य स्थापित करने में मदद करता है।** हर रब्बी ने तफिलीन के माध्यम से जीवन और अध्यात्म के बीच एक गहरा संबंध समझाने की कोशिश की है।

तफिलीन में दो मुख्य हिस्से होते हैं:

**सिर का तफिलीन (תפילין של ראש)**

**हाथ का तफिलीन (תפילין של יד)**

**सिर का तफिलीन (Tefillin Shel Rosh):**

सिर के तफिलीन में चार खंड होते हैं, और प्रत्येक खंड में टोरा की एक-एक प्रार्थना (पैरा) लिखी

जाती है। ये खंड अलग-अलग खांचों (compartments) में रखे जाते हैं। ये चार पाठ निम्नलिखित हैं:

**1. कदश ली (לְשָׁאַת):**

- **निर्गमन 13:1-10**
- यह पाठ परमेश्वर की पवित्रता और पहले जन्मे बच्चों के समर्पण के बारे में है।

**2. वहया (וְהִיא כִּי יְבָאֶךָ):**

- **निर्गमन 13:11-16**
- इसमें मिस्र से मुक्ति और यहूदियों की आज्ञाकारिता पर चर्चा है।

**3. शोमा (שְׁמֹעַ):**

- **व्यवस्थाविवरण 6:4-9**
- यह पाठ "शोमा यिसाइल" के रूप में प्रसिद्ध है, जिसमें परमेश्वर की एकता और आज्ञाओं को पालन करने पर जोर दिया गया है।

**4. वहया (וְהִיא אָם שְׁמֹעַ):**

- **व्यवस्थाविवरण 11:13-21**
- इसमें यह समझाया गया है कि आज्ञाओं का पालन करने से आशीर्वाद मिलेगा, और उनका उल्लंघन करने से दंड।

**हाथ का तफिलीन (Tefillin Shel Yad):**

हाथ के तफिलीन में एक ही खंड होता है, जिसमें ऊपर दिए गए चारों पाठ (कदश ली, वहया, शोमा, वहया अम शमोउ) एक ही स्क्रॉल (पर्चमेंट) पर लिखे होते हैं। इसे बाएं हाथ की ऊपरी बांह (हृदय के पास) पर बांधा जाता है।

## मुख्य अंतर:

**सिर का तफिलीन** चार अलग-अलग खांचों में रखे चार पाठों को दर्शाता है।

**हाथ का तफिलीन** एक ही खंड में सभी चार पाठों को रखता है।

## प्रतीकात्मक महत्व:

**सिर का तफिलीन:** यह हमारे विचारों और बौद्धिक जीवन को निर्देशित करने का प्रतीक है।

**हाथ का तफिलीन:** यह हमारे कार्यों और भावनात्मक जीवन को नियंत्रित करने का प्रतीक है।

## निष्कर्ष:

दोनों तफिलीन यह सिखाते हैं कि हमारा मस्तिष्क, हृदय, और कर्म सभी परमेश्वर के प्रति

समर्पित होने चाहिए। यह हमारे जीवन में ईश्वर के आदेशों को आत्मसात करने और उनके अनुसार कार्य करने का मार्गदर्शन करता है।

P 14 Nu.15:38 On making Tzitzit with thread of blue, garments corners



## गिनती 15:38 का पदः:

"इस्लाएलियों से कहो कि वे अपनी पीटियों में अपने वस्त्रों के कोनों पर झूल आने के लिए तजीज़ित बनाएं, और उन तजीज़ित के साथ नीले धागे का एक धागा रखें।"

---

## मुख्य विचार और रब्बियों की व्याख्याएं:

### 1. चिज़कुनी (Chizkuni):

- यह समझाया गया है कि परमेश्वर ने हर चीज़ को आज्ञा पालन के अवसर के रूप में बनाया।
- कपड़ों में तजीज़ित (फ्रिंज) जोड़ने का आदेश यह सिखाता है कि यहां तक कि हमारी पोशाक भी हमें धर्म और आस्था की याद दिला सकती है।

### 2. इब्र एज़रा (Ibn Ezra):

- "तजीज़ित" का अर्थ है "लटकने वाले धागे।" यह कपड़े के कोनों पर लटकाए गए धागों को दर्शाता है।
- नीले धागे (Techelet) का उपयोग स्वर्ग और परमेश्वर की महिमा की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए होता है।

### 3. किल याकर (Kli Yakar):

- नीले रंग का धागा समुद्र और आकाश का प्रतीक है, और अंततः यह परमेश्वर के सिंहासन का स्मरण कराता है।
- तजीज़ित हमें हर समय परमेश्वर की आज्ञाओं को याद रखने और उनका पालन करने में

## मदद करता है।

### 4. माल्बिम (Malbim):

- तजीज़ित के सफेद धागे पवित्रता का प्रतीक हैं, और नीला धागा स्वर्गीय जुड़ाव का।
- उन्होंने बताया कि सफेद और नीला रंग मिलकर एक पूरी आज्ञा को दर्शाते हैं, और अगर इनमें से एक भी हिस्सा अनुपस्थित है, तो भी आज्ञा का पालन संभव है।

### 5. ओर हा चाइम (Or HaChaim):

- उन्होंने इस पर जोर दिया कि "तजीज़ित" की आज्ञा सभी पीढ़ियों में लागू रहती है।
- यदि भविष्य में ऐसा समय आए जब लोग पूर्ण रूप से पवित्र हो जाएं और स्मरण की आवश्यकता न हो, तब भी यह आज्ञा प्रासंगिक रहेगी।

### 6. किल्ज़ुर बाल हातुरीम (Kitzur Ba'al HaTurim):

- उन्होंने तजीज़ित को यहूदियों की पवित्रता और उनके "स्वर्गदूतों" जैसे आचरण का प्रतीक बताया।
- उन्होंने कहा कि तजीज़ित में 8 धागे और 5 गांठें होती हैं, जो 613 मिल्ज़्वोत (आज्ञाओं) को दर्शाती हैं।

## तजीज़ित का उद्देश्य:

### 1. आध्यात्मिक स्मरण:

तजीज़ित पहनने का मुख्य उद्देश्य यह है कि जब भी व्यक्ति इसे देखे, उसे परमेश्वर की आज्ञाओं की याद आए और वह उनका पालन करे।

## 2. स्वर्गीय जुड़ाव:

नीले धागे का रंग समुद्र, आकाश, और परमेश्वर के सिंहासन से जोड़ा गया है, जो एक गहन आध्यात्मिक अनुभव प्रदान करता है।

## 3. व्यक्तिगत अनुशासन:

यह हर समय परमेश्वर की उपस्थिति और आज्ञाओं के प्रति समर्पण का प्रतीक है।

---

### निष्कर्ष:

गिनती 15:38 में "तजीज़ित" पहनने की आज्ञा यह सिखाती है कि विश्वास और कर्म में एकता होनी चाहिए। यह यहूदियों के लिए केवल एक धार्मिक वस्त्र नहीं है, **बल्कि एक यादगार चिन्ह है** जो उन्हें हर समय परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने की प्रेरणा देता है।

यह व्याख्या विभिन्न रब्बियों ने अपने तरीके से की है, लेकिन सभी इस बात पर सहमत हैं कि "तजीज़ित" व्यक्ति को उसकी जिम्मेदारियों और ईश्वरीय मार्ग पर चलने की याद दिलाने का **साधन है।**

P 15 De. 6:9 On affixing a Mezuzah to doorposts and gates

### Mezuzah के महत्व का सारांश:

- परिभाषा:** Mezuzah वह छोटा पार्चमेंट स्क्रॉल (खाल पर लिखा हुआ पाठ) है, जिसमें

यहूदी धार्मिक ग्रंथों के अंश लिखे होते हैं। इसे घर के दरवाजों और गेट्स पर लगाया

जाता है।

## 2. स्थान और विधि:

- Mezuzah दरवाजे के दाँईं तरफ लगाई जाती है।
- इसे कंधे की ऊँचाई पर और थोड़ी तिरछी स्थिति में रखा जाता है ताकि यह घर में प्रवेश करने वालों को दिख सके।

## 3. ग्रंथों की सामग्री:

- शमा (Shema) और व'हया (V'Hayah) जैसे प्रार्थनाओं के अंश, जो यहूदियों की एकता और प्रभु (पिता/प्रभु प्रभु यहोवा) में विश्वास को दर्शाते हैं।

## रब्बीयों की व्याख्या:

रब्बी यित्ज़हाक का कहना है कि Mezuzah दो कंधों का प्रतीक है, जो यह याद दिलाता है कि यह हमें अपने धर्म और नैतिकता का समर्थन करना चाहिए।

यह विश्वास दिलाने का प्रतीक है कि हमारी सुरक्षा और सफलता परमेश्वर पर आधारित है, न कि सितारों या भाग्य पर।

रब्बी यहूदाह हनासी ने Mezuzah को एक सुरक्षा चिन्ह के रूप में समझाया जो न केवल घर बल्कि उसके निवासियों को भी संरक्षित करता है।

## Mezuzah का आधुनिक और सांस्कृतिक महत्व:

- यह घर और परिवार में परमेश्वर की उपस्थिति का प्रतीक है।
- यह उन लोगों को याद दिलाने के लिए लगाया जाता है कि उन्हें अपने कार्यों में धर्म और नैतिकता का पालन करना चाहिए।

## निष्कर्षः

Mezuzah केवल एक प्रतीक नहीं है; यह हमारे विचारों, शब्दों, और कार्यों को एक नैतिक और

धार्मिक ढांचे में बांधता है। यह हमें सिखाता है कि ईश्वर हमारे जीवन के हर हिस्से में शामिल हैं।

जैसे Mezuzah हमें घर में प्रवेश करते समय यह याद दिलाता है कि हम ईश्वर की उपस्थिति में हैं,

वैसे ही यह हमें हमारे कर्तव्यों और विश्वासों को जीने के लिए प्रेरित करता है।

P 16 De.31:12 On Assembling each 7th year to hear the Torah read

## हक्हेल (Hakheil) की परिभाषा और महत्व

हक्हेल एक विशेष सभा है जिसे हर सातवें वर्ष, शिमता (सप्ताहिक वर्ष) के बाद, सुकोत त्योहार के

दौरान बुलाया जाता है। यह सभा यरूशलैम में होती थी, जहां सभी इस्राएली-पुरुष, महिलाएं, बच्चे,

और गेर (परदेसी)-इकट्ठे होते थे।

इस सभा में राजा "व्यवस्था की पुस्तक" (द्वितीय व्यवस्था) का पाठ करते थे। इसका उद्देश्य

इस्राएलियों को यह याद दिलाना था कि वे परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करें और उसके प्रति

भय और श्रद्धा रखें।

## रब्बियों की व्याख्या

### 1. रशी (Rashi):

- पुरुषों के लिए: हक्कहेल में पुरुष आते थे ताकि वे सीखें और व्यवस्था का गहराई से अध्ययन करें।
- महिलाओं के लिए: महिलाएं इस सभा में शामिल होती थीं ताकि वे सुनें और व्यवस्था को समझ सकें।
- बच्चों के लिए: बच्चों को लाने का कारण यह था कि माता-पिता को इन बच्चों को लाने का इनाम (पुरस्कार) मिले।

#### **2. इब्राएज्जा (Ibn Ezra):**

जब बच्चे सभा में आते थे और सुनते थे, तो वे सवाल पूछते थे। इससे बच्चों और अज्ञानी लोगों को सीखने का अवसर मिलता था।

#### **3. कली याकर (Kli Yakar):**

- उन्होंने कहा कि यह सभा पश्चाताप के लिए थी। सभा में सभी लोग एकजुट होकर परमेश्वर की ओर लौटने का संकल्प करते थे। यह एक सामूहिक पश्चाताप का प्रतीक है।

#### **4. मलबिम (Malbim):**

- मलबिम ने बताया कि इस सभा का उद्देश्य यह था कि लोग सुनें, सीखें, और परमेश्वर का भय मानें। इससे वे परमेश्वर की आज्ञाओं को अपने जीवन में लागू करने के लिए प्रेरित होते थे।

#### **उदाहरण:**

- बच्चों का लाना:** जैसे एक मां अपने छोटे बच्चे को सभा में लेकर आती है, तो वह उसे अपनी गोद में रखती है। बच्चा शायद कुछ न सीखे, लेकिन मां को यह महसूस होता है कि वह बच्चे के साथ परमेश्वर की उपस्थिति में है। रब्बी बताते हैं कि इससे माता-पिता को बच्चों के पालन-पोषण में धार्मिकता के प्रति जागरूकता मिलती है।
  - सामूहिक पश्चाताप:** रब्बियों ने उल्लेख किया कि जब सभी इस्माएली एकत्र होते हैं, तो यह उनकी एकता का प्रतीक बनता है। यह उन्हें अपने व्यक्तिगत और सामूहिक पापों के लिए पश्चाताप करने और ईश्वर से माफी मांगने की प्रेरणा देता है।
- 

### **निष्कर्षः**

हक़हेल सभा एक महत्वपूर्ण धार्मिक घटना थी, जिसका उद्देश्य इस्माएलियों को परमेश्वर की आज्ञाओं की याद दिलाना, उनकी एकता को मजबूत करना, और सामूहिक रूप से धार्मिकता के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करना था।

बच्चों, महिलाओं और पुरुषों को इस सभा में शामिल करना यह दिखाता है कि हर कोई, चाहे वह कितना भी छोटा या बड़ा हो, धर्म और परमेश्वर के मार्ग में एक भूमिका निभाता है।

**शिक्षा:** इस्माएलियों को यह सिखाया गया कि व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से धर्म का पालन करना केवल एक कर्तव्य नहीं, बल्कि एक प्रेरणा और जीवन का मार्गदर्शक है।

him on a scroll by the levitical priests.

### **उदाहरणः Deuteronomy 17:18**

यह शास्त्र एक राजा को निर्देश देता है कि जब वह अपने राज्य पर बैठे, तो उसे तोरह का एक कॉपी लिखनी चाहिए। यह उसकी जिम्मेदारी है, ताकि वह हर समय तोरह का पालन कर सके और वह प्रभु प्रभु यहोवा के आदेशों का पालन करने में सक्षम हो।

अब हम जानते हैं कि विभिन्न रब्बियों ने इस पर क्या कहा है:

---

#### **1. रशी (Rashi) का मतः**

- रशी के अनुसार, राजा को दो तोरह स्क्रॉल्स लिखने चाहिए: एक उसकी तिजोरी में रखा जाए और दूसरा हमेशा उसके साथ रहे। यह दिखाता है कि राजा को हर समय तोरह का पालन करना चाहिए और उसे अपनी जीवनशैली का हिस्सा बनाना चाहिए।
- "मिश्रे तोरह" का मतलब है दूसरी तोरह या कॉपी।

उदाहरणः राजा एक स्क्रॉल को अपनी तिजोरी में रखता है और दूसरे को हमेशा अपने पास रखता है। यह उसकी जिम्मेदारी है कि वह दिन-प्रतिदिन तोरह का पालन करे, चाहे वह युद्ध में हो या न्याय कर रहा हो।

---

#### **2. रश्बाम (Rashbam) का मतः**

- रश्बाम का कहना है कि "मिश्रे तोरह" का अर्थ है तोरह की पुनरावृत्ति। राजा को यह निर्देश दिया गया है ताकि वह हर समय तोरह का अध्ययन करे और उसे सही तरीके से समझे।

- यह नियम केवल राजा के लिए है, ताकि वह न्यायप्रियता से शासन कर सके और किसी भी गलत रास्ते पर न चले।

**उदाहरण:** राजा को यह आदेश है कि वह तोरह का पुनरावलोकन करें और उसे अपनी शासन नीति में लागू करें। इसका मतलब है कि वह समय-समय पर तोरह का अध्ययन करता रहे।

---

### 3. किल यकार (Kli Yakar) का मतः

- किल यकार के अनुसार, राजा को तोरह लिखने का आदेश दिया गया है ताकि वह धन, घोड़े, और महिलाओं की अधिकता से दूर रहे। इन चीजों से राजा का मन भटक सकता है और वह प्रभु प्रभु यहोवा के मार्ग से बाहर जा सकता है।
- राजा को यह निर्देश दिया गया है कि वह प्रभु प्रभु यहोवा के मार्ग पर चलने के लिए तोरह का पालन करें।

**उदाहरण:** यदि राजा घोड़े और महिलाओं की अधिकता से ध्यान भटकने लगे, तो उसे याद दिलाने के लिए उसे तोरह की प्रति अपने पास रखनी चाहिए।

---

### 4. मालबिम (Malbim) का मतः

- मालबिम का कहना है कि "मिश्रे तोरह" केवल एक स्क्रॉल का नाम नहीं है, बल्कि यह इस बात को दर्शाता है कि राजा का पूरा जीवन तोरह के अनुसार होना चाहिए। वह एक शुद्ध और सही तोरह स्क्रॉल के साथ शासन करेगा।
- तोरह का पालन राजा की जिम्मेदारी है ताकि वह प्रभु प्रभु यहोवा के आदेशों के अनुसार

## शासन कर सके।

**उदाहरण:** राजा को केवल तोरह की एक प्रति रखने का आदेश नहीं है, बल्कि उसे यह सुनिश्चित करना है कि उसका पूरा शासन तोरह के अनुसार चले।

---

### निष्कर्षः

- सभी रब्बियों का मुख्य विचार इस बात पर है कि राजा को तोरह के आदेशों का पालन करना चाहिए। उसे तोरह का अध्ययन और पालन करना चाहिए ताकि वह प्रभु प्रभु यहोवा के मार्ग पर चल सके और एक नैतिक, न्यायपूर्ण शासन कर सके।
- **सबसे महत्वपूर्ण (Most Important)** यह है कि राजा के लिए यह आदेश केवल एक धार्मिक कर्तव्य नहीं है, बल्कि यह उसकी सत्ता और शासन की नींव है। तोरह का पालन करने से राजा की शक्ति प्रभु प्रभु यहोवा की इच्छा के अधीन रहेगी और उसका शासन न्यायपूर्ण और स्थिर रहेगा।

18 De.31:19 On that everyone should have a Torah scroll

### Deuteronomy 31:19 का संदर्भः

यह शास्त्र कहता है:

”अब तुम इस गीत को लिख लो और इज़राइल के लोगों को सिखाओ, यह गीत उनके

सामने डालो, ताकि यह मेरे विरुद्ध इज़राइल के लोगों की गवाही बने।”

यहां पर तोरह (धर्मग्रंथ) के संदर्भ में यह आदेश दिया गया है कि इज़राइल के लोग एक गीत (जो कि तोरह के सिद्धांतों और आदेशों पर आधारित हो) को लिखें और उसे हमेशा याद रखें, ताकि वे प्रभु प्रभु यहोवा के प्रति अपने दायित्व को न भूलें। यह गीत भविष्य में उनके लिए गवाही के रूप में कार्य करेगा, जब वे प्रभु प्रभु यहोवा के आदेशों का उल्लंघन करेंगे।

---

### रब्बियों के दृष्टिकोण:

#### 1. रशी (Rashi) का मत:

- रशी के अनुसार, यह आदेश इज़राइल के लोगों के लिए है कि वे तोरह के गीत को लिखें और उसे गाकर याद रखें, ताकि वे हमेशा प्रभु प्रभु यहोवा के प्रति अपनी जिम्मेदारी को महसूस करें।
- रशी का कहना है कि यह गीत केवल तोरह की शिक्षा को याद रखने का तरीका नहीं है, बल्कि यह एक चेतावनी भी है। यह उन दिनों के लिए है जब लोग प्रभु प्रभु यहोवा के आदेशों से भटक सकते हैं।

#### 2. उदाहरण: “गीत” यहां तोरह के सिद्धांतों और आदेशों का एक प्रकार से सारांश है,

जिसे इज़राइल के लोग अपने दिलों में संजोते हैं और उसे गाकर याद करते हैं।

---

### रश्बाम (Rashbam) का मत:

- रश्बाम के अनुसार, यह आदेश इसलिए दिया गया ताकि इज़राइल के लोग कभी भी प्रभु प्रभु यहोवा के आदेशों को भूलकर गलत रास्ते पर न चलें।

यह गीत तोरह की शिक्षा को पिघलाकर और सरल बना कर लोगों के दिलों में

उतारने का तरीका है।

**उदाहरण:** यह गीत इज़राइल के लोगों को लगातार याद दिलाएगा कि उन्हें प्रभु प्रभु यहोवा के आदेशों का पालन करना चाहिए और हर समय अपनी जिम्मेदारियों को न भूलें।

---

### 3. किल्यकार (Kli Yakar) का मत:

- किल्यकार के अनुसार, इस गीत का उद्देश्य इज़राइल के लोगों के दिलों में तोरह को हमेशा ताजा रखना है। जब वे भविष्य में पाप करेंगे, यह गीत उन्हें याद दिलाएगा कि वे प्रभु प्रभु यहोवा के आदेशों का पालन नहीं कर रहे हैं।
- यह गीत उनकी याददाश्त को सक्रिय रखेगा और उनके अपराधों के बारे में गवाही देगा।

**4. उदाहरण:** यह गीत एक आत्मा के रूप में काम करेगा, जो इज़राइल के लोगों को अपने प्रभु प्रभु यहोवा के प्रति वफादारी की याद दिलाता रहेगा, जब वे भटकने लगें।

---

### 4. मालबिम (Malbim) का मत:

- मालबिम का कहना है कि यह गीत तोरह की गवाही के रूप में कार्य करेगा, जो इज़राइल के लोगों के सामने आएगा और भविष्य में प्रभु प्रभु यहोवा के साथ उनके रिश्ते को रेखांकित करेगा।
- मालबिम के अनुसार, यह गीत एक दृष्टव्य तरीके से तोरह की शिक्षाओं और प्रभु प्रभु यहोवा के आदेशों का पालन करने का तरीका होगा, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए एक प्रेरणा बनेगा।

5. **उदाहरण:** यह गीत न केवल वर्तमान में इज़राइल के लोगों के लिए, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी गवाही देगा, ताकि वे प्रभु प्रभु यहोवा के साथ अपने संबंध को बनाए रखें।

---

### **निष्कर्ष:**

- **सबसे महत्वपूर्ण (Most Important)** यह है कि इस गीत के माध्यम से इज़राइल के लोग हमेशा प्रभु प्रभु यहोवा के आदेशों का पालन करने की याद रखते हैं। यह गीत न केवल एक धार्मिक शिक्षा है, बल्कि एक गवाही भी है, जो भविष्य में उनकी याददाश्त को ताजा रखने के लिए कार्य करेगा।
- तोरह के आदेशों को हमेशा याद रखने और उनका पालन करने का यह तरीका है ताकि लोग प्रभु प्रभु यहोवा से भटकने न पाएं।
- गवाही का यह गीत इज़राइल के लोगों को उनके पापों के बारे में जागरूक करेगा और उन्हें फिर से प्रभु प्रभु यहोवा के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करेगा।

P 19 De. 8:10 On praising God after eating, Grace after meals

### **भोजन के बाद परमेश्वर प्रभु प्रभु यहोवा की स्तुति: आभार प्रार्थना (Grace after Meals)**

यहूदी परंपरा में भोजन के बाद प्रभु की स्तुति या आभार प्रार्थना को "बिरकत हमाज़ोन" कहा जाता है। यह एक धार्मिक कृत्य है जो भोजन ग्रहण करने के बाद प्रभु का धन्यवाद करने के लिए किया जाता है। आइए इसे विस्तार से समझते हैं।

## बिरकत हमाज़ोन क्या है?

बिरकत हमाज़ोन, यहूदी धर्म में भोजन के बाद पढ़ी जाने वाली एक प्रार्थना है। इसका उद्देश्य भोजन

प्राप्त करने के लिए पर परमेश्वर का धन्यवाद करना और भोजन की कृपा के लिए कृतज्ञता व्यक्त

करना है। यह प्रार्थना यहूदी समुदाय में अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है और इसे नियमित रूप से पढ़ने की सिफारिश की जाती है।

## उदाहरण के साथ समझना

मान लीजिए कि आपने एक स्वादिष्ट भोजन किया है। भोजन समाप्त होने के बाद, आप अपने परिवार के साथ बैठकर बिरकत हमाज़ोन पढ़ते हैं। इस प्रार्थना में आप भोजन के लिए धन्यवाद करते हैं और प्रभु से अगली बार के लिए आशीर्वाद मांगते हैं।

## बिरकत हमाज़ोन का एक संक्षिप्त उदाहरण:

"धन्यवाद, परमेश्वर, जिसने हमें इस भोजन की देन दी। यह भोजन हमारे शरीर के लिए पोषण है

और हमें शक्ति प्रदान करता है। हम आपकी कृपा के लिए आभारी हैं।"

## अन्य रब्बियों के विचार

यहूदी धर्म के कई महान रब्बियों ने बिरकत हमाज़ोन के महत्व पर बल दिया है:

1. रब्बी हिल्के ने कहा कि भोजन के बाद की यह प्रार्थना केवल धन्यवाद व्यक्त करने का

साधन नहीं है, बल्कि यह हमारे मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य के लिए भी

आवश्यक है।

2. रब्बी शिमोन बेंजामिन ने इसे "जीवन का आधार" कहा है, क्योंकि भोजन के बिना जीवन

**संभव नहीं है, और इसीलिए भोजन के बाद आभार प्रकट करना अनिवार्य है।**

3. **रब्बी मर्शेल पवेसनर ने कहा कि यह प्रार्थना हमें विनप्रता सिखाती है और यह याद दिलाती है कि हमारे पास जो कुछ भी है, वह सभी प्रभु की कृपा से है।**

## **निष्कर्ष**

बिरकत हमाज़ोन, या भोजन के बाद की आभार प्रार्थना, यहूदी धर्म में एक महत्वपूर्ण धार्मिक अभ्यास है जो हमें हमारे दैनिक जीवन में कृतज्ञता और विनप्रता का महत्व सिखाता है। यह प्रार्थना न केवल भोजन के लिए धन्यवाद व्यक्त करने का माध्यम है, बल्कि यह हमारे आंतरिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य के लिए भी लाभकारी है। अन्य रब्बियों के विचारों से यह स्पष्ट होता है कि बिरकत हमाज़ोन हमारे जीवन में संतुलन और आभार की भावना को स्थापित करने में सहायक है।

## **TEMPLE AND THE PRIESTS**

P 20 Ex. 25:8 On building a Sanctuary/(Tabernacle/Temple) for God

### **Exodus 25:8 - परमेश्वर के लिए एक पवित्र स्थान (संकील/मंदिर) का निर्माण**

#### **शब्दार्थ (Exodus 25:8)**

”और वे मेरे लिए एक पवित्र स्थान बनाएं, ताकि मैं उनके बीच में निवास कर सकूँ।”

इस लोक में परमेश्वर ने मूसा से कहा कि इज़राइल के लोग उनके लिए एक पवित्र स्थान बनाएं, जहाँ वह निवास कर सकें। यह स्थान, जिसे हम संकील (Tabernacle) या बाद में मंदिर (Temple) कहते हैं, परमेश्वर के साथ इज़राइल के लोगों के संबंध का प्रतीक था। **यह एक विशिष्ट स्थान था जहाँ लोग आराधना करने और परमेश्वर से संवाद करने के लिए एकत्र होते थे।**

#### **संकील का निर्माण (Tabernacle)**

संकील का निर्माण एक ऐसी जगह थी, जहाँ लोग परमेश्वर की उपस्थिति का अनुभव कर सकते थे। यह एक अस्थायी संरचना थी, क्योंकि इज़राइलites अभी भी यात्रा कर रहे थे और एक स्थायी स्थान में बसने से पहले, परमेश्वर के साथ अपने संबंधों को बनाए रखने के लिए उन्हें यह स्थान चाहिए था।

संकील के निर्माण में यह बात महत्वपूर्ण थी कि इसमें विभिन्न तत्वों को विशेष रूप से और पवित्र रूप से तैयार किया गया था, जैसे कि पवित्र वस्तुएं, आंगन, और आराधना का स्थान। इसका मुख्य उद्देश्य परमेश्वर की पवित्रता और मनुष्य के साथ उसका संबंध दिखाना था।

#### **इसकी महत्वता**

यह बात हमें यह समझने में मदद करती है कि हमारे लिए भी जीवन में एक पवित्र स्थान की

आवश्यकता होती है, जहाँ हम परमेश्वर से मिल सकते हैं और उन्हें सम्मान दे सकते हैं। चाहे वह

एक चर्च, प्रार्थना घर या हमारा व्यक्तिगत समय हो, इस श्लोक का संदेश यह है कि हम अपने

जीवन में परमेश्वर के लिए एक स्थान बनाएं।

### **बड़ी रब्बीयों ने क्या कहा (Rabbinic interpretation)**

रब्बीयों के अनुसार, यह श्लोक केवल भौतिक स्थान का नहीं, बल्कि आंतरिक संबंध का प्रतीक है। विभिन्न रब्बी शास्त्रों में इस पर कुछ महत्वपूर्ण विचार दिए गए हैं:

- रब्बी अकिवा (Rabbi Akiva):** रब्बी अकिवा का मानना था कि परमेश्वर का निवास केवल एक भौतिक स्थान में नहीं, बल्कि इस्राइलियों के दिलों में होना चाहिए। उनका कहना था कि इस श्लोक से यह सिखने को मिलता है कि परमेश्वर का निवास हमारे भीतर होना चाहिए, और यह निर्भर करता है कि हम अपनी आस्था को कितनी गंभीरता से स्वीकार करते हैं।
- रब्बी युहन्ना बिन ज़काई (Rabbi Yohanan ben Zakkai):** उन्होंने इस श्लोक को इस प्रकार व्याख्यायित किया कि यह परमेश्वर के साथ एक व्यक्तिगत संबंध बनाने की आवश्यकता को बताता है। उनका मानना था कि परमेश्वर का निवास केवल इज़राइल के समुदाय में नहीं, बल्कि हर व्यक्ति के हृदय में होना चाहिए।
- रब्बी शिमोन बिन युहाई (Rabbi Shimon ben Yochai):** उनके अनुसार, यह श्लोक उन लोगों के लिए था जो अपने दिलों में परमेश्वर की उपस्थिति महसूस करते थे। उन्होंने कहा कि संकीर्ण केवल एक भौतिक मंदिर नहीं, बल्कि आंतरिक विश्वास का प्रतीक था, जहाँ आत्मा और परमेश्वर का संवाद होता है।

**4. रब्बी मयेर (Rabbi Meir):** रब्बी मयेर का विचार था कि परमेश्वर का निवास हमारे

आचरण में होना चाहिए। उनका कहना था कि जिस तरह से संकील को पवित्र वस्तुओं से  
सजाया गया, वैसे ही हमें अपनी जिंदगी में पवित्रता और अच्छे आचरण को स्थान देना  
चाहिए।

### निष्कर्ष (Conclusion)

Exodus 25:8 का मुख्य संदेश यह है कि हमें परमेश्वर के लिए एक पवित्र स्थान तैयार करना चाहिए, जो केवल एक भौतिक स्थान नहीं, बल्कि एक आंतरिक प्रतिबद्धता है। यह श्लोक हमें अपने जीवन में परमेश्वर की उपस्थिति को प्राथमिकता देने और उन्हें हमारे बीच रहने का निमंत्रण देता है। विभिन्न रब्बियों के दृष्टिकोण से यह संदेश मिलता है कि परमेश्वर का निवास हमारे हृदय में होना चाहिए और हमें उसे पवित्र बनाना चाहिए, ताकि हमारा जीवन उसके साथ बेहतर संबंध में हो।

iske upar ek bar phir se kaam karna hoga taki sari commentry ko  
notebook lilm se notes lekar chatgpt se hindi me convert karke samjha  
sake aur behtar notes bana sake

---

21 Le.19:30 On respecting the Sanctuary

**Leviticus 19:30 का संदेश: परमेश्वर की पवित्रता और आदर का पालन**

**आयत का पाठ और अर्थ**

लैब्यवस्था 19:30 में लिखा है:

"मेरे विश्रामदिनों को मानना और मेरे पवित्रस्थान का आदर करना; मैं प्रभु प्रभु यहोवा हूँ।"

यह आयत हमें परमेश्वर के प्रति गहरे आदर और पवित्रता बनाए रखने की शिक्षा देती है। इसमें दो मुख्य निर्देश दिए गए हैं:

### 1. विश्रामदिन (सब्ब) को मानना

यहूदियों के लिए सब्ब (शनिवार) एक पवित्र दिन है। यह दिन पूरी तरह से कार्य से विराम लेने, पूजा करने और परिवार के साथ समय बिताने के लिए अलग रखा गया है। सब्ब का पालन परमेश्वर के साथ संबंध को मजबूत करने का प्रतीक है और यह यहूदियों के लिए धार्मिक अनुशासन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

### 2. पवित्रस्थान (Tabernacle/मंदिर) का आदर करना

पवित्रस्थान परमेश्वर की उपस्थिति का प्रतीक है। इसे सम्मान और आदर से देखना अनिवार्य है। इसमें किसी भी प्रकार के अपवित्र कार्य, हल्का व्यवहार, या अनादरपूर्ण सोच की अनुमति नहीं थी।

**यहूदी विद्वानों की व्याख्याएं**

#### 1. रब्बी रशी (Rashi)

रब्बी रशी के अनुसार, यह आयत स्पष्ट करती है कि सब्ब का पालन मंदिर के निर्माण और अन्य धार्मिक गतिविधियों से भी अधिक महत्वपूर्ण है।

- **उदाहरण:** यदि किसी को मंदिर का निर्माण करना हो, तब भी वह सब्ब के दिन कार्य नहीं कर सकता। सब्ब परमेश्वर द्वारा पवित्र ठहराया गया दिन है, जिसका पालन हर स्थिति में

**किया जाना चाहिए।**

## 2. रब्बी मामोनाइड्स (Maimonides)

रब्बी मामोनाइड्स ने कहा कि मंदिर का आदर केवल बाहरी कार्यों तक सीमित नहीं है। **मंदिर में**

**प्रवेश करने से पहले मन और आत्मा को भी पवित्र रखना चाहिए।**

- **उदाहरण:** मंदिर में जाने से पहले व्यक्ति को अपने विचारों को शुद्ध करना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति अपवित्र विचारों या क्रोध के साथ प्रवेश करता है, तो वह मंदिर का आदर नहीं कर रहा।

## 3. तालमुद की व्याख्या

तालमुद के अनुसार, पवित्रस्थान का आदर केवल शारीरिक स्वच्छता तक सीमित नहीं है, बल्कि

**यह बोलचाल, पहनावे और व्यवहार पर भी लागू होता है।**

- **उदाहरण:** मंदिर में प्रवेश करते समय आदरपूर्वक बात करना, उचित वस्त्र पहनना, और विनम्र रहना चाहिए।

## मुख्य नैतिक संदेश

### 1. विश्राम और पवित्रता का महत्व

- **सब्द का पालन हमें जीवन की भागदौँड़ से विश्राम लेने और परमेश्वर के साथ आत्मिक संबंध को मजबूत करने का अवसर देता है।**
- **सब्द का अर्थ केवल शारीरिक विश्राम नहीं, बल्कि आत्मिक शांति और परमेश्वर के प्रति समर्पण है।**

## 2. पवित्रस्थान का आदर

- पवित्रस्थान का आदर करना केवल भौतिक स्वच्छता का पालन नहीं है, बल्कि हमारे विचारों और व्यवहार का भी पवित्र होना आवश्यक है।
- आज के संदर्भ में, जब हम किसी भी धार्मिक स्थल, जैसे चर्च में जाते हैं, तो हमें अपने आचरण में आदर, नम्रता और शुद्धता बनाए रखनी चाहिए।

## 3. आंतरिक और बाहरी शुद्धता

- यह आयत यह सिखाती है कि परमेश्वर के नियम केवल अनुष्ठानों तक सीमित नहीं हैं।
  - हमें अपने विचारों और भावनाओं को भी पवित्र रखना चाहिए क्योंकि यही हमारे पूरे जीवन को पवित्र और अनुशासित बनाता है।
- 

## निष्कर्ष (Conclusion)

Leviticus 19:30 में दिया गया संदेश आज भी प्रासंगिक है।

- **विश्राम का महत्व हमें यह सिखाता है कि आत्मिक और शारीरिक विश्राम से हम जीवन के प्रति संतुलन बना सकते हैं।**
- **पवित्रस्थान का आदर हमें याद दिलाता है कि पवित्रता केवल एक स्थान या वस्तु तक सीमित नहीं है, बल्कि हमारे जीवन के हर पहलू में झलकनी चाहिए।**

यह आयत हमें यह प्रेरणा देती है कि परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन केवल बाहरी क्रियाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह हमारे विचारों, व्यवहार, और जीवनशैली में भी परिलक्षित होना चाहिए।

**"हल्का व्यवहार"** का अर्थ है किसी भी प्रकार का ऐसा आचरण या रवैया जो आदर, गंभीरता, या गरिमा के अनुरूप न हो। यह व्यवहार पवित्र स्थान (मंदिर या पवित्रस्थान) की पवित्रता और महत्व के प्रति सम्मान की कमी को दर्शाता है।

उदाहरण के लिए:

1. **अनुचित बात करना:**

पवित्र स्थान पर अनावश्यक और हल्की-फुल्की बातें करना, जैसे मज़ाक करना या ऊँची आवाज़ में बोलना।

2. **अशिष्ट या अनुचित पहनावा:**

पवित्र स्थान पर ऐसे वस्त्र पहनना जो आदर या गंभीरता न दर्शाते हों।

3. **असावधानीपूर्ण आचरण:**

मंदिर में इधर-उधर भागना, बैठने या खड़े होने के तरीके में गंभीरता न दिखाना, या ऐसे काम करना जो आदर के विपरीत हों।

4. **ध्यान भटकाना:**

प्रार्थना या आराधना के दौरान अन्य गतिविधियों में लिप्त होना, जैसे फोन का उपयोग करना या किसी दूसरे काम में व्यस्त रहना।

### हल्का व्यवहार का प्रभाव

पवित्र स्थान में ऐसा व्यवहार उस स्थान की गरिमा को ठेस पहुँचाता है और परमेश्वर की उपस्थिति के प्रति सम्मान को कम करता है। "हल्का व्यवहार" का मतलब है कि व्यक्ति उस पवित्र स्थान की पवित्रता और महत्व को गंभीरता से नहीं ले रहा है।

पवित्र स्थान में प्रवेश करते समय आदर, नप्रता, और शुद्ध विचारों के साथ होना चाहिए, ताकि

**व्यक्ति वहां की पवित्रता और महत्व का सम्मान कर सके।**

P 22 Nu. 18:4 On guarding the Sanctuary

### **संख्या 18:4 पर विभिन्न यहादी रब्बियों की टिप्पणियाँ**

संख्या 18:4 की यह आयत, विशेष रूप से वाक्यांश "अजनबी तुम्हारे पास न आए", तंबू और मंदिर की सेवा में लेवियों और याजकों की विशेष भूमिका को परिभाषित करती है। आइए, रब्बियों की प्रमुख व्याख्याओं को समझते हैं और उनके दृष्टिकोण को प्रस्तुत करते हैं।

### **आयत का संदर्भ और अनुवाद**

इस आयत में कहा गया है कि लेवी याजकों के साथ परमेश्वर के भवन की सेवा में सहायक बनेंगे और "अजनबी" या गैर-अधिकृत व्यक्ति परमेश्वर के भवन की सेवाओं में शामिल नहीं हो सकते। वाक्यांश "अजनबी तुम्हारे पास न आए" का उद्देश्य आराधना की पवित्रता बनाए रखना और गैर-अधिकृत व्यक्तियों को इससे दूर रखना है।

### **प्रमुख व्याख्याएँ**

#### **1. रशी (Rashi):**

रशी ने इस आयत की व्याख्या करते हुए कहा कि यहाँ "अजनबी" का अर्थ किसी भी गैर-लेवी या

**गैर-याजको से है। यह चेतावनी दी गई है कि अजनबी पवित्र सेवाओं में भाग न लें।**

**उदाहरण:** "एक आम व्यक्ति परमेश्वर के भवन के भीतर प्रवेश नहीं कर सकता। यह उसकी सीमा है।"

## **2. चिज़कुनी (Chizkuni):**

चिज़कुनी बताते हैं कि यह आयत चेतावनी देती है, लेकिन सज्ञा का विवरण अगले पद (संख्या 18:7) में दिया गया है, जहाँ उल्लंघन करने वाले के लिए मृत्युदंड का प्रावधान है।

**उदाहरण:** "चेतावनी और सज्ञा दोनों को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया गया है।"

## **3. गुर आर्येह (Gur Aryeh):**

गुर आर्येह ने लेवियों की जिम्मेदारी को रेखांकित किया। लेवियों को न केवल सेवा करनी थी, बल्कि इसाएलियों को परमेश्वर के भवन से दूर रखना भी उनका कर्तव्य था।

**उदाहरण:** "लेवी मंदिर के बाहर पहरा देंगे ताकि कोई अजनबी प्रवेश न करे।"

## **4. हा'अमेक दवार (Haamek Davar):**

**हा'अमेक दवार के अनुसार, लेवी याजको के अनुपस्थिति में मंदिर की सुरक्षा करेंगे। जब याजक सेवा में होते हैं, तो लेवी उनकी सहायता करते हैं।**

**उदाहरण:** "मंदिर की सुरक्षा लेवियों और याजको की साझा जिम्मेदारी है।"

## **5. रब्बेइनु बह्या (Rabbeinu Bahya):**

रब्बेइनु बह्या ने इस पर बल दिया कि तंबू के चारों ओर लेवियों की उपस्थिति प्रभु के भवन की प्रतिष्ठा को बढ़ाती है।

**उदाहरण:** "सुरक्षित भवन का महत्व अधिक होता है।"

## 6. रालबाग (Ralbag):

रालबाग का कहना है कि लेवियों का कार्य तंबू को स्थापित करना, उसे संभालना और उसकी देखभाल करना था। उन्होंने यह भी कहा कि "अजनबी का पास न आना" याजकों के लिए आरक्षित सेवाओं का संकेत देता है।

**उदाहरण:** "अजनबी का हस्तक्षेप याजक सेवाओं में वर्जित था।"

---

## मुख्य विचार और सिद्धांत

1. **विशिष्ट भूमिकाएँ:** आयत स्पष्ट रूप से लेवियों और याजकों की भूमिकाओं को परिभाषित करती है।
  2. **चेतावनी और दायित्व:** यह आयत लेवियों को जिम्मेदारी देती है कि वे सुनिश्चित करें कि कोई अजनबी प्रभु के भवन में प्रवेश न करें।
  3. **पवित्रता की रक्षा:** यह नियम प्रभु के भवनकी पवित्रता और ईश्वर के प्रति आदर बनाए रखने के लिए है।
  4. **उल्लंघन पर दंड:** यदि कोई अजनबी याजकों की सेवाओं में हस्तक्षेप करता है, तो उसे **मृत्युदंड का सामना करना पड़ता था।**
- 

## निष्कर्ष (हिंदी में)

सारांश यह है कि संख्या 18:4 में "अजनबी तुम्हारे पास न आए" वाक्यांश मंदिर और उसकी सेवाओं की पवित्रता को बनाए रखने पर जोर देता है। यह आयत लेवियों और याजकों की विशिष्ट जिम्मेदारियों को परिभाषित करती है, और यह सुनिश्चित करती है कि गैर-अधिकृत

**व्यक्ति प्रभु के भवन की सेवाओं में हस्तक्षेप न करें।**

इस नियम का उद्देश्य था पवित्रता और अनुशासन बनाए रखना। उल्लंघन करने वाले के लिए कठोर दंड (मृत्युदंड) का प्रावधान यह दर्शाता है कि यह निर्देश कितना महत्वपूर्ण था।

---

## **पुराने नियम की व्यवस्था और मसीह के द्वारा नई व्यवस्था**

### **1. पुराने नियम की व्यवस्था और भूमिका**

पुराने नियम में लेवी और याजकों (पुरोहितों) की भूमिका यह थी कि वे मंदिर की सेवा करें और इसाएलियों के लिए परमेश्वर और मनुष्यों के बीच मध्यस्थ बनें।

- लेवी मंदिर की रखवाली करते थे और याजकों को सहायता प्रदान करते थे।
- केवल याजक ही बलिदान चढ़ा सकते थे और पवित्र स्थान में प्रवेश कर सकते थे।

संख्या 18:4 का संदर्भ इसी व्यवस्था में आता है। यह व्यवस्था इसाएल की धार्मिक और सामाजिक संरचना का हिस्सा थी।

---

### **2. मसीह के द्वारा नई व्यवस्था का आरंभ**

जब प्रभु यीशु मसीह ने संसार के पापों के लिए अपने प्राण दिए, तो उन्होंने पुराने नियम की

**बलिदान प्रणाली और याजक की मध्यस्थ भूमिका को पूरा कर दिया।**

- **इब्रानियों 7:27-28:** "वह (मसीह) हर दिन याजकों की तरह पहले अपने पापों के लिए और फिर लोगों के पापों के लिए बलिदान चढ़ाने का आवश्यकता नहीं रखता, क्योंकि उसने यह कार्य एक ही बार में अपने आप को बलिदान करके कर दिया।"
- **इब्रानियों 9:11-12:** मसीह अब हमारा "महायाजक" बन गए हैं। उन्होंने "एक बार हमेशा के लिए" अपने खून के द्वारा अनन्त छुटकारा दिलाया।

**इसलिए मसीह के द्वारा, पुराने नियम की बलिदान प्रणाली समाप्त हो गई, और उन्होंने स्वयं को हमारे और परमेश्वर के बीच एकमात्र मध्यस्थ बना दिया।**

---

### **3. सभी मसीही विश्वासियों को याजक बनाना**

बाइबिल सिखाती है कि मसीह में हर विश्वासी को "याजक" बनाया गया है।

- **1 पत्ररस 2:9:** "परन्तु तुम एक चुना हुआ वंश, राजगद्वी का याजक मंडल, पवित्र जाति, और परमेश्वर की निज प्रजा हो।"
- **प्रकाशितवाक्य 1:6:** "और उसने हमें एक राज्य और अपने परमेश्वर और पिता के लिए याजक बनाया।"

**इसका अर्थ यह है कि अब हर मसीही विश्वासी के पास यह विशेषाधिकार है कि वह सीधे परमेश्वर के साथ संवाद कर सके और उसकी सेवा कर सके। अब मध्यस्थता के लिए किसी मानव याजक की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि मसीह ही हमारा महायाजक है।**

---

#### **4. क्या संख्या 18:4 की आज्ञा का पालन अभी भी आवश्यक है?**

चर्च और मसीही विश्वास की नई व्यवस्था में, पुराने नियम की याजकीय व्यवस्थाएँ लागू नहीं होतीं।

मसीह के बलिदान के कारण, अब बलिदान की आवश्यकता नहीं रही।

मंदिर की व्यवस्था अब चर्च के रूप में बदल गई है, जो कि विश्वासियों की संगति है।

इसलिए, संख्या 18:4 का शाब्दिक पालन मसीही चर्च में अब आवश्यक नहीं है।

---

#### **5. मसीही जीवन में इसका क्या अर्थ है?**

हालाँकि हम अब संख्या 18:4 जैसी व्यवस्थाओं का पालन नहीं करते, लेकिन इसके पीछे के

सिद्धांत-परमेश्वर की पवित्रता, अनुशासन, और सेवा का महत्व-आज भी लागू होते हैं।

हमें अपने जीवन में परमेश्वर की पवित्रता को बनाए रखना चाहिए।

हमें "याजक" होने के नाते, प्रार्थना और सेवा के माध्यम से परमेश्वर की सेवा करनी चाहिए।

हमें मसीह में विश्वास के साथ जीना चाहिए, जो हमारा महायाजक है।

---

#### **निष्कर्ष (Hindi)**

मसीह में, पुराने नियम की याजकीय व्यवस्था पूरी हो चुकी है। अब हर मसीही विश्वासी "राजगद्वी का याजक मंडल" है, और मसीह हमारे महायाजक हैं। संख्या 18:4 की आज्ञा का शाब्दिक पालन अब आवश्यक नहीं है, क्योंकि मसीह में सब कुछ पूरा हो गया है।

**लेकिन इस आयत का सिखाया हुआ सिद्धांत आज भी हमारे लिए उपयोगी है-परमेश्वर की**

**सेवा पवित्रता, अनुशासन और समर्पण के साथ करनी चाहिए।**

**"हम अब लेवी नहीं हैं, लेकिन मसीह में चुने गए याजक हैं।"**

P 23 Nu.18:23 On Levitical services in the Tabernacle

**नंबर्स 18:23 की मुख्य व्याख्या हिंदी में:**

**मुख्य विचारः**

लेवियों की भूमिका और जिम्मेदारियों के बारे में यह वचन बताता है। इसमें तीन मुख्य बातें हैं:

**1. सेवा की जिम्मेदारीः**

- लेवियों को मिलाप वाले तंबू की सेवा करनी है
- उदाहरणः जैसे एक नर्स अस्पताल में मरीजों की देखभाल करती है, वैसे ही लेवी पवित्र स्थान की देखभाल करते थे

**2. अपराध का भारः**

- लेवियों को इस्लाएलियों के अपराधों का भार उठाना था
- उदाहरणः यदि कोई इस्लाएली गलती से पवित्र स्थान में प्रवेश कर जाए और लेवियों ने उसे नहीं रोका, तो यह दोष लेवियों पर आता था

**3. भूमि का न मिलनाः**

- अन्य गोत्रों को भूमि मिली, लेकिन लेवियों को नहीं
- उदाहरण: जैसे सरकारी कर्मचारियों को वेतन मिलता है, वैसे ही लेवियों को दशमांश मिलता था

### निष्कर्षः

- लेवी परमेश्वर की सेवा के लिए अलग किए गए थे
- उनकी सेवा पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलती रही
- भूमि के बदले उन्हें दशमांश मिलता था
- वे पवित्र स्थान की सुरक्षा और शुद्धता के लिए जिम्मेदार थे

यह व्यवस्था आज भी यहूदी परंपरा में महत्वपूर्ण है, भले ही मंदिर अब नहीं है।

### विभिन्न रब्बियों की व्याख्या:

#### 1. रशी (Rashi) की व्याख्या:

- ”वे” शब्द लेवियों को दर्शाता है
- लेवियों का कर्तव्य था इसाएलियों को पवित्र स्थान से दूर रखना
- उदाहरण: जैसे सुरक्षा गार्ड प्रतिबंधित क्षेत्र में लोगों को जाने से रोकता है

#### 2. इब्र एज्ञा की व्याख्या:

- ”हू” का अर्थ है ”स्वयं” - लेवी को खुद सेवा करनी चाहिए
- दशमांश उनका उत्तराधिकार था
- उदाहरण: जैसे किसी काम को डेलीगेट नहीं किया जा सकता

### 3. हामेक दवर की व्याख्या:

- सभी लेवी एक साथ सेवा नहीं करते थे, बल्कि बारी-बारी से
- लेवी इस्राएलियों की लापरवाही का दोष उठाते थे
- उदाहरण: जैसे डॉक्टरों की शिफ्ट होती है

### 4. मल्बिम की व्याख्या:

- लेवियों को तब भी काम करना था जब दशमांश नहीं मिलता
- याजकों को लेवियों का काम नहीं करना था
- उदाहरण: जैसे सरकारी कर्मचारी को वेतन देर से मिले तब भी काम करना होता है

### 5. मिज़राची की व्याख्या:

- लेवियों को इस्राएलियों को चेतावनी देने की जिम्मेदारी थी
- उदाहरण: जैसे ट्रैफिक पुलिस लोगों को नियम तोड़ने से रोकती है

### 6. गुर अर्येह की व्याख्या:

- लेवी दशमांश पाने के कारण इस्राएल का दोष उठाते थे
- उदाहरण: जैसे वकील फीस लेकर मुवक्किल की जिम्मेदारी लेता है

### 7. रलबग की व्याख्या:

- यह एक सकारात्मक आज्ञा थी
- लेवियों की गलतियों का दोष उन पर ही था
- उदाहरण: जैसे किसी काम में गलती करने पर जवाबदेही होती है

### 8. रब हिर्श की व्याख्या:

- सेवा पूर्ण कर्तव्य था, भले ही दशमांश न मिले
- लेवियों की भलाई लोगों की इच्छा पर निर्भर थी
- उदाहरण: जैसे मंदिर के याजक दान पर निर्भर होते हैं

### 9. शदल की व्याख्या:

- जानबूझकर मंदिर में सेवा करने पर इस्माएली दोषी होते थे
- उदाहरण: जैसे बिना लाइसेंस गाड़ी चलाने का दोष

### 10. स्टीनसाल्ट्ज़ की व्याख्या:

- लेवी अपनी सेवा से जुड़े पापों के लिए जिम्मेदार थे
- उन्हें भूमि नहीं मिली
- उदाहरण: जैसे डॉक्टर अपनी लापरवाही के लिए जिम्मेदार होता है

### महत्वपूर्ण निष्कर्ष:

1. सभी व्याख्याकारों ने लेवियों की विशेष जिम्मेदारी पर जोर दिया
2. उनकी सेवा अनिवार्य थी
3. वे इस्माएलियों की सुरक्षा के लिए जिम्मेदार थे
4. दशमांश उनका वैध अधिकार था
5. उनकी सेवा पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलती थी

ये सभी व्याख्याएं एक ही वचन के विभिन्न पहलुओं को समझाती हैं और मिलकर पूर्ण चित्र प्रस्तुत करती हैं।

आज के मसीही युग में नंबर्स 18:23 की व्याख्या और उसके सिद्धांतों को निम्नलिखित तरीके से देखा जाता है:

#### 1. सिद्धांतिक अनुप्रयोग:

- लेवीय याज्ञक व्यवस्था अब सीधे तौर पर लागू नहीं होती, क्योंकि प्रभु यीशु मसीह ने एक नई वाचा की स्थापना की
- परन्तु सेवा के मूल सिद्धांत आज भी प्रासंगिक हैं

#### 2. आधुनिक कलीसिया में प्रयोग:

- पास्टर और चर्च लीडर्स अब आध्यात्मिक नेतृत्व प्रदान करते हैं
- वे कलीसिया की देखभाल और विश्वासियों की आध्यात्मिक जरूरतों के लिए जिम्मेदार हैं
- उनकी सेवा के लिए कलीसिया से वित्तीय सहायता मिलती है

#### 3. मुख्य अंतर:

- पुराने नियम में लेवीय याज्ञक वंशानुगत थे
- आज के चर्च लीडर्स बुलाहट और योग्यता के आधार पर चुने जाते हैं
- दशमांश अब अनिवार्य नहीं है, लेकिन स्वैच्छिक दान को प्रोत्साहित किया जाता है

#### 4. आध्यात्मिक शिक्षाएँ:

- सेवा की जिम्मेदारी का महत्व
- आध्यात्मिक नेतृत्व का सम्मान
- विश्वासियों की देखभाल का महत्व
- सेवकाई के लिए समर्पण

इस प्रकार, हालांकि शाब्दिक रूप से लेवीय व्यवस्था अब लागू नहीं होती, लेकिन इसके मूल सिद्धांत और आध्यात्मिक शिक्षाएं आज भी मसीही कलीसिया में महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान करती हैं।

P 24 Ex.30:19 On Cohanim washing hands & feet before entering Temple

यह प्रथा याजकों को याद दिलाती थी कि वे एक पवित्र कार्य करने जा रहे हैं और इसके लिए शारीरिक और मानसिक शुद्धि आवश्यक है।

पुजारियों के लिए यह नियम इतना महत्वपूर्ण था कि इसे बिना किए पूजा करना मृत्युदंड का कारण माना जाता था। यह दर्शाता है कि आध्यात्मिक कार्यों में शुद्धता और विधि-विधान का कितना महत्व है।

मैं आपको विभिन्न रबियों के विचार समझाता हूँ:

**Rashi (रशी) के विचार:**

- हाथ और पैर एक साथ धोने चाहिए
- इसके लिए वे "גָא" (एट) शब्द का प्रमाण देते हैं
- याजक को अपने हाथ पैरों पर रखकर धोना चाहिए

**इब्र एज़रा के विचार:**

- लावर (पानी का बर्तन) आरोन, उनके बेटों और वंशजों के लिए था

- मूसा ने इसे स्थापित करते समय इस्तेमाल किया

### **रमबन (Ramban) के विचार:**

- यह ईश्वर के प्रति सम्मान से जुड़ा है
- हाथ-पैर अशुद्ध चीजों को छूते हैं, इसलिए धोना जरूरी है
- 10 उंगलियों और 10 पैर की उंगलियों को ईश्वर की 10 शक्तियों से जोड़ा

### **Or HaChaim के विचार:**

- "एट" शब्द बताता है कि हाथ-पैर एक साथ धोने चाहिए

### **Rabbeinu Bahya के विचार:**

- राजा की सेवा से पहले की तैयारी से जोड़ा
- 10 उंगलियों को दैवीय शक्तियों से जोड़ा
- प्रार्थना से पहले हाथ धोने से जोड़ा

### **Ralbag के विचार:**

- याजक मंदिर में नंगे पैर रहते थे
- हाथ-पैर को पसीने और अशुद्धि से साफ करना जरूरी था
- चार पुजारियों के लिए पर्याप्त पानी होना चाहिए

### **मल्बिम (Malbim) के विचार:**

- चार याजक एक साथ धो सकते थे
- पिनहास के याजक बनने पर विचार किया

- "एट" शब्द के दो बार आने का महत्व समझाया

**निष्कर्ष:** सभी रब्बियों ने इस प्रथा के अलग-अलग पहलुओं पर प्रकाश डाला:

1. शारीरिक शुद्धि का महत्व
2. आध्यात्मिक संबंध
3. व्यावहारिक पहलू (जैसे कितने लोग एक साथ धो सकते हैं)
4. इसकी विधि और नियम

यह दर्शाता है कि यह एक सरल प्रथा नहीं थी, बल्कि इसमें गहरा धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व था। हर रब्बी ने इसे अपने ज्ञान और समझ के अनुसार व्याख्या की, जो इस प्रथा की जटिलता और महत्व को दर्शाता है।

मैं आपको मसीही धर्म में हाथ-पैर धोने की प्रथा के बारे में विस्तार से समझाता हूँ:

## 1. पवित्र गुरुवार की प्रथा:

- हर साल ईस्टर से पहले पवित्र गुरुवार (Holy Thursday) पर विशेष समारोह होता है
- चर्च में पादरी 12 लोगों के पैर धोते हैं
- यह प्रभु यीशु द्वारा अंतिम भोज के समय अपने 12 शिष्यों के पैर धोने की याद में किया जाता है उदाहरण: जैसे पोप फ्रांसिस हर साल विभिन्न धर्मों और समुदायों के लोगों के पैर धोते हैं

## 2. चर्चों में आज की प्रथा:

- कैथोलिक चर्च:
  - कुछ विशेष अवसरों पर यह प्रथा की जाती है

- यह विनप्रता और सेवा का प्रतीक है
- प्रोटेस्टेंट चर्चः
  - ज्यादातर प्रोटेस्टेंट चर्चों में यह सिर्फ शिक्षा के रूप में रह गई है
  - कुछ चर्च इसे प्रतीकात्मक रूप से करते हैं

### **3. इस प्रथा का आध्यात्मिक महत्वः**

- यह विनप्रता सिखाती है
- दूसरों की सेवा का महत्व बताती है
- प्रभु यीशु के जीवन और शिक्षाओं को याद दिलाती है

### **4. बपतिस्मा मेंः**

- कुछ चर्चों में बपतिस्मा के समय पैर धोने की प्रथा है
- यह नई शुरुआत का प्रतीक है

**निष्कर्षः** मसीही धर्म में हाथ-पैर धोने की प्रथा मुख्य रूप से एक प्रतीकात्मक कर्म है। यह प्रभु यीशु के विनप्रता और सेवा के संदेश को दर्शाती है। हालांकि यह प्रथा पहले जैसी नियमित नहीं रही, फिर भी इसका आध्यात्मिक महत्व आज भी बना हुआ है। यह मसीही धर्म के मूल सिद्धांतों - प्रेम, सेवा और विनप्रता को दर्शाती है।

### **गहरा आध्यात्मिक संदेशः**

1. सभी कार्य पवित्र भाव से करें
2. बाहरी और आंतरिक शुद्धि जरूरी है
3. हर काम में ईश्वर को याद रखें

4. विनप्रता सबसे बड़ा गुण है

P 25 Ex.27:21 On kindling the Menorah by the Cohanim

P

## दीया जलाने की परंपरा: यहूदियों की मेनोरा और

### भारतीय संदर्भ

**मेनोरा (Menorah) यहूदियों के मंदिर में जलने वाले सात दीपों का एक पवित्र दीपस्तंभ है।** इसे

रातभर जलाए रखने का आदेश दिया गया था। इस परंपरा को समझने के लिए यहूदी ग्रंथों, रबियों की व्याख्याओं और उदाहरणों के माध्यम से इसकी गहराई को समझने का प्रयास करते हैं।

#### 1. शाम से सुबह तक जलाना

मेनोरा को "शाम से सुबह तक" जलाने का आदेश दिया गया था। इसका अर्थ है कि यह पूरी रात

जलती रहती थी। **यह ईश्वर की उपस्थिति और पवित्रता का प्रतीक था।**

#### 2. अहरोन और उनके पुत्रों का कार्य

**मेनोरा को जलाने और तैयार करने की ज़िम्मेदारी अहरोन (Aaron) और उनके पुत्रों की थी।**

#### 3. "רְאַרְאֵךְ" (याअरोक) का अर्थ

**यह शब्द 'व्यवस्थित करना' और 'तैयार करना' को दर्शाता है।** इसका अर्थ है कि दीप जलाने के

**पहले उसमें पर्याप्त तेल और सही प्रकार की बाती डालनी चाहिए।**

#### 4. तेल की मात्रा

रबियों ने यह तय किया कि रातभर जलाने के लिए हर दीप में आधा लोग (लगभग 275

मिलीलीटर) तेल पर्याप्त था।

### . गर्मियों और सर्दियों में रात की लंबाई

रब्बियों के बीच इस बात पर चर्चा हुई कि रात की लंबाई अलग-अलग होने पर तेल की मात्रा का क्या किया जाए।

- **राशी (Rashi):** उनका कहना था कि हर रात समान मात्रा (आधा लोग) तेल का इस्तेमाल किया जाए। गर्मियों में बचे हुए तेल को बेकार नहीं माना गया।
- **रब्बी यिल्ज़हाक़:** उन्होंने सुझाव दिया कि गर्मियों में बाती को मोटा बनाया जाए ताकि पूरा तेल जल जाए और कोई बर्बादी न हो।
- **उदाहरण:** गर्मियों में छोटी रातों के लिए दीप में कम तेल और सर्दियों में लंबी रातों के लिए अधिक तेल डालने की योजना।

### मेनोरा का महत्व: यहूदी, ईसाई परंपरा और आधुनिक

#### मसीही काल में उपयोग

##### 1. यहूदी परंपरा में मेनोरा का महत्व

यहूदी परंपरा में मेनोरा का निर्देश मूसा के समय में दिया गया था, जब परमेश्वर ने इसे तंबू (Tabernacle) में रखने का आदेश दिया।

- **मेनोरा और रोशनी का प्रतीक:** यह रोशनी ईश्वर की उपस्थिति का प्रतीक थी। इसे

**"शाम से सुबह तक"** जलाए रखने का आदेश था, ताकि यह अंधेरे में भी आशा और

**मार्गदर्शन का प्रकाश बने।**

- उदाहरण:** यह बिलकुल वैसा है जैसे यहूदी हनुक्काह (Hanukkah) में आठ दिन तक दीप जलाते हैं। हर दिन एक दीप जलाकर ईश्वर के चमत्कार को याद करते हैं।

## 2. ईसाई परंपरा में मेनोरा का प्रतीकात्मक अर्थ

मसीही परंपरा में मेनोरा का सीधा संबंध प्रभु यीशु मसीह से जोड़ा गया है।

- प्रभु यीशु मसीह "जगत की ज्योति":** ईसाई धर्म मानता है कि प्रभु यीशु मसीह वह "ज्योति" हैं, जो अंधकार को मिटाते हैं और सत्य का मार्ग दिखाते हैं।
- उदाहरण:** जैसे मेनोरा की रोशनी लगातार जलती रहती थी, उसी तरह प्रभु यीशु मसीह की शिक्षा लोगों को जीवनभर मार्गदर्शन देती है।

## 3. "शाम से सुबह तक" का आज के मसीही काल में अर्थ

मसीही जीवन में "शाम से सुबह तक" का प्रतीक यह है कि हम अपनी ज़िंदगी में हर समय ईश्वर की उपस्थिति बनाए रखें।

- अंधकार में ज्योति:** जीवन के कठिन समय (अंधकार) में मसीही विश्वास यह सिखाता है कि ईश्वर का प्रकाश (आशा) हमेशा मार्गदर्शन करेगा।
- उदाहरण:** जैसे किसी घर में मोमबत्ती जलाना यह दर्शाता है कि ईश्वर की कृपा हर समय हमारे साथ है।

## 4. मेनोरा का सात दीपक और इसका आधुनिक मसीही महत्त्व

मेनोरा के सात दीपक (लैंप) ईश्वर की पूर्णता और सात आत्माओं (Rev 4:5) का प्रतिनिधित्व

**करते हैं।**

- **सात दीपक का अर्थ:** यह ईश्वर के आत्मा के सात पहलुओं (जैसे ज्ञान, समझ, परामर्श) को दर्शाते हैं।
- **उदाहरण:** जैसे चर्चों में मोमबत्तियाँ जलाई जाती हैं, वे प्रार्थना और आत्मा की उपस्थिति का प्रतीक हैं।

## 5. आधुनिक मसीही जीवन में मेनोरा की भूमिका

- **समर्पण का प्रतीक:** मसीही इसे अपने जीवन में समर्पण और विश्वास के रूप में अपनाते हैं।
- **रोशनी फैलाने का संदेश:** यह हर मसीही को सिखाता है कि वे "जगत की ज्योति" बनें और अपने जीवन से प्रेम, सत्य, और करुणा का प्रकाश फैलाएं।
- **उदाहरण:** जैसे चर्च में क्रिसमस के समय दीप या मोमबत्तियाँ जलाई जाती हैं, यह ईश्वर की उपस्थिति और प्रभु यीशु मसीह के जन्म के उत्सव को दर्शाता है।

## निष्कर्ष

यहूदी परंपरा में मेनोरा अंधकार में आशा और ईश्वर की उपस्थिति का प्रतीक था। ईसाई परंपरा ने इसे प्रभु यीशु मसीह के प्रकाश और मार्गदर्शन से जोड़ा। आज के मसीही काल में, यह संदेश देता है कि हर व्यक्ति अपने जीवन में ईश्वर का प्रकाश बनाए रखे और दूसरों के लिए मार्गदर्शक बने।

26 Nu. 6:23 On the Cohanim blessing Israel

## याजकीय आशीर्वाद: यहूदी, मसीही परंपरा और आधुनिक मसीही

### दृष्टिकोण

#### याजकीय आशीर्वाद का परिचय

याजकीय आशीर्वाद (Priestly Blessing) बाइबिल में गिनती (Numbers 6:23-27) में वर्णित है।

यह परमेश्वर द्वारा अहरोन और उनके पुत्रों (याजकों) को दिया गया एक विशेष आदेश है, जो इस्माएलियों को आशीर्वाद देने के लिए है।

इस आशीर्वाद के तीन मुख्य भाग हैं:

1. "प्रभु प्रभु यहोवा तुझे आशीष दे और तेरी रक्षा करे।"
  2. "प्रभु प्रभु यहोवा तुझ पर अपनी ज्योति चमकाए और तुझ पर अनुग्रह करे।"
  3. "प्रभु प्रभु यहोवा अपना मुख तुझ पर उठा कर तुझे शांति प्रदान करे।"
- 

#### यहूदी परंपरा में आशीर्वाद का महत्व

यहूदी ग्रंथों और रब्बियों ने इस आशीर्वाद की गहराई पर विचार किया है। यहां उनके प्रमुख विचारों का सरल व्याख्यान है:

**1. "प्रभु प्रभु यहोवा तुझे आशीष दे और तेरी रक्षा करे"**

- "आशीष" (Bless): इसका मतलब है भौतिक संपत्ति, जैसे धन, स्वास्थ्य और समृद्धि।

- **"रक्षा"** (Keep): इसका अर्थ है उस आशीष को सुरक्षित रखना ताकि कोई हानि या दुष्टा उसे छीन न सके।
- **उदाहरण:** जैसे कोई माता-पिता अपने बच्चे को उपहार देते हैं और साथ ही उसकी सुरक्षा सुनिश्चित करते हैं, वैसे ही परमेश्वर अपने लोगों को आशीर्वाद देते हैं और उनकी रक्षा करते हैं।

2. "प्रभु प्रभु यहोवा तुझ पर अपनी ज्योति चमकाए और तुझ पर

**अनुग्रह करे"**

**"ज्योति चमकाए"** (Make His face shine): इसका अर्थ है परमेश्वर का प्रेम और ज्ञान देना।

यह आत्मिक उत्तरति और शिक्षा का प्रतीक है।

**"अनुग्रह करे"** (Be gracious): इसका मतलब है दया और कृपा प्रदान करना, चाहे वह

अनावश्यक रूप से हो।

**उदाहरण:** जैसे सूर्य अपनी रोशनी और गर्मी हर जगह फैलाता है, वैसे ही परमेश्वर की कृपा

और प्रेम सभी तक पहुंचते हैं।

3. "प्रभु प्रभु यहोवा अपना मुख तुझ पर उठा कर तुझे शांति

**प्रदान करे"**

- **"मुख उठाना"** (Lift His face): यह दर्शाता है कि परमेश्वर अपने लोगों की ओर ध्यान देते हैं और उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर देते हैं।
- **"शांति"** (Peace): यह केवल बाहरी शांति नहीं, बल्कि आंतरिक शांति, खुशी, और संतोष का प्रतीक है।
- **उदाहरण:** जैसे एक शांति से भरा घर जहां प्रेम और संतोष है, उसी तरह परमेश्वर की शांति हमारे जीवन में पूरीता लाती है।

## आशीर्वाद देने की विधि

- यहूदी परंपरा में यह आशीर्वाद एक विशेष रीति से दिया जाता है:
  - यह हमेशा हिन्दू भाषा में दिया जाता है।
  - याजकों को खड़े होकर अपने हाथ उठाने होते हैं।
  - उनके हाथों की उंगलियों को एक विशेष तरीके से फैलाना होता है।
  - यह आशीर्वाद पूरे समुदाय को संबोधित करते हुए ज़ोर से दिया जाता है।

## मसीही दृष्टिकोण में याजकीय आशीर्वाद

मसीही परंपरा में भी इस आशीर्वाद का विशेष महत्व है।

### 1. प्रभु यीशु मसीह और आशीर्वाद का संबंध

- मसीही धर्म में प्रभु यीशु मसीह को ”परमेश्वर की ज्योति“ और ”शांति का राजकुमार“ कहा गया है।
- यह आशीर्वाद प्रभु यीशु के मिशन से मेल खाता है, क्योंकि वह परमेश्वर की कृपा, शांति और उद्धार लाने आए थे।
- उदाहरण: प्रभु यीशु ने अपने शिष्यों को कहा, ”मैं तुम्हें शांति देता हूं, जो संसार नहीं दे सकता।“ (यूहन्ना 14:27)

### 2. चर्च में आशीर्वाद का उपयोग

- मसीही चर्चों में यह आशीर्वाद अक्सर सेवाओं के अंत में दिया जाता है।

- इसे पूरे समुदाय के लिए एक आशीर्वाद और प्रार्थना के रूप में देखा जाता है।
- **उदाहरण:** चर्च में पादरी इस आशीर्वाद को देते समय हाथ फैलाकर congregation (समाज) को संबोधित करते हैं।

### 3. व्यापक मानवता के लिए आशीर्वाद

- मसीही परंपरा में यह आशीर्वाद केवल इस्राएलियों तक सीमित नहीं है। इसे मानवता के लिए एक सार्वभौमिक आशीर्वाद के रूप में देखा जाता है।
- 

### निष्कर्ष

याजकीय आशीर्वाद एक पवित्र और गहरा संदेश है। यह यहूदियों के लिए परमेश्वर की भौतिक और आत्मिक कृपा का प्रतीक है, और मसीही परंपरा में इसे प्रभु यीशु मसीह के माध्यम से शांति और उद्धार के रूप में देखा जाता है।

यह हमें सिखाता है कि परमेश्वर का प्रेम, कृपा, और शांति हमेशा हमारे साथ हैं, और हमें इसे दूसरों के साथ साझा करना चाहिए।

P 27 Ex.25:30 On the Showbread before the Ark

लेहम पनीम (शोब्रेड) और इसके महत्व पर विभिन्न रब्बी व्याख्याओं से चर्चा की गई है। यहाँ एक

सारांश है, जिसमें आपके अनुरोध के अनुसार उदाहरण, विभिन्न टिप्पणियाँ और आधुनिक इसाई संदर्भ में इसकी प्रासंगिकता शामिल है:

## लेहम पनीम क्या है?

- **लेहम पनीम का शाब्दिक अर्थ ”चेहरों की रोटी” या ”शोब्रेड” है। यह तंबू में एक मेज पर रखी गई बारह रोटियों का सेट था।**
- ये रोटियाँ सिर्फ साधारण रोटियाँ नहीं थीं; इन्हें बारीक आटे से बनाया गया था और यह एक विशेष भेंट के रूप में थीं।
- रोटियाँ हमेशा प्रभु के सामने प्रदर्शित की जाती थीं। हर हफ्ते, सब्द के दिन, ताजगी रोटियाँ मेज पर रखी जाती थीं। पुरानी रोटियाँ फिर याजको द्वारा खाई जाती थीं।

## ”चेहरों“ (पनीम) की व्याख्याएँ

- **शारीरिक रूप: कई टिप्पणीकार ”चेहरों“ शब्द की व्याख्या रोटियों के शारीरिक रूप के आधार पर करते हैं।**
  - राशी का सुझाव है कि रोटियाँ एक खुले बॉक्स की तरह आकार की थीं, जिनके किनारे बाहर की ओर थे। इससे उन्हें तंबू के विभिन्न हिस्सों से देखा जा सकता था।
  - बेन जोमा का कहना है कि रोटियों को ”चेहरे“ होने चाहिए।
  - रेगियो भी इस विचार का समर्थन करते हैं कि रोटियाँ एक बॉक्स की तरह बनाई

गई थीं, जिनके किनारे दिखाई देते थे और कवर हटा दिए गए थे। वह यह भी सुझाव देते हैं कि "चेहरों" शब्द मानव विशेषताओं की दृतता को संदर्भित करता है (दो आँखें, कान आदि), और इसी तरह, रोटियों के दो सेट थे, फिर भी वे एक भेट के रूप में थे।

- रालबाग रोटियों को कई सतहों या "चेहरों" के रूप में वर्णित करते हैं, जिस तरह से वे मोड़ी और आकार दी गई थीं। वह कहते हैं कि रोटियों के चारों ओर के छह पक्षों में से प्रत्येक को तीन खंडों में विभाजित किया गया है, जिससे कुल 18 सतहें बनती हैं।
- दिव्य उपस्थिति:
- इन्हे एज़रा का कहना है कि इसे लेहम पनीम कहा जाता है क्योंकि रोटियाँ हमेशा प्रभु के "सामने" होती हैं, जो प्रभु की निरंतर ध्यान देने का संकेत देती हैं।
- रब्बीनू बह्या पनीम शब्द की व्याख्या तंबू के भीतर रोटियों की स्थिति के तरीके से करते हैं, जो तीन दिशाओं में मुख किए हुए थे।
- तोरा; ए बुमन'स कमेंट्री का कहना है कि "चेहरा" दिव्य उपस्थिति को इंगित करता है, इसलिए रोटियों के साथ "चेहरे" का संबंध यह संकेत देता है कि यह प्रभु

के लिए था।

- **गुणवत्ता:**

- रशबाम पनीम की व्याख्या रोटियों की उच्च गुणवत्ता के रूप में करते हैं, जो महत्वपूर्ण व्यक्तियों जैसे राजाओं के सामने प्रदर्शित की जा सकती हैं। वह यह भी नोट करते हैं कि यह शब्द अक्सर चुनिंदा उपहारों से जुड़ा होता है।

- **आंतरिक अर्थ:**

- हकतव वेहकबालाह का कहना है कि नाम का अर्थ आंतरिक रोटी है, क्योंकि इसे पवित्र स्थान के अंदर रखा जाता है।

## **साप्ताहिक रोटी चक्र का उदाहरण**

कल्पना करें कि तंबू में एक याज्ञक सब्ज के दिन है। पुरानी लेहम पनीम, जो एक हफ्ते से मेज पर है, हटा दी जाती है। फिर वह ताजगी रोटियाँ मेज पर रखता है, यह सुनिश्चित करते हुए कि वे सही ढंग से व्यवस्थित हैं। पुरानी रोटियाँ फिर याजको द्वारा खाई जाती हैं। यह साप्ताहिक चक्र प्रभु के सामने लेहम पनीम की निरंतर भेंट को प्रदर्शित करता है। रब्बी इस बात पर चर्चा करते हैं कि पुरानी रोटियों को कैसे हटाया गया और नई रोटियाँ कैसे जोड़ी गई, इस पर जोर देते हुए कि उनकी निरंतरता प्रभु के सामने है। एक स्रोत यह बताता है कि नई रोटियाँ पुरानी रोटियों के बगल में रखी जाती थीं जब उन्हें मेज पर रखा जाता था, जो रोटी भेंट की निरंतरता का प्रतीक है।

## **आधुनिक ईसाई संदर्भ में प्रासंगिकता**

हालांकि तंबू और इसके अनुष्ठान सीधे ईसाई प्रथाओं का हिस्सा नहीं हैं, लेकिन प्रतीकात्मक संबंध हैं:

- **आध्यात्मिक पोषण:** लेहम पनीम आध्यात्मिक पोषण और प्रभु की प्रावधान का विचार प्रस्तुत करता है। जैसे याज्ञक रोटियाँ खाते थे, ईसाई मानते हैं कि वे प्रभु के शब्द और उपस्थिति से पोषित होते हैं।
- **निरंतर भेट:** मेज पर लेहम पनीम की निरंतर उपस्थिति निरंतर प्रार्थना और भक्ति के विचार से तुलना की जा सकती है। यह ईसाइयों को प्रभु के साथ निरंतर संबंध बनाए रखने की याद दिलाता है।
- **संप्रदाय:** कुछ ईसाई लेहम पनीम को ईसाई संप्रदाय की प्रथा का पूर्ववर्ती मानते हैं। संप्रदाय में रोटी को मसीह के शरीर का प्रतीक माना जाता है, जो आध्यात्मिक पोषण प्रदान करता है। पुजारियों द्वारा रोटियों का खाना ईसाई प्रथा में यूचरिस्ट के साझा करने से भी संबंधित हो सकता है।

## अतिरिक्त बिंदु

- पाठ में निर्दिष्ट किया गया है कि लेहम पनीम बारीक आटे से बनाई गई थी।
- रोटियों के उचित आकार और आयामों के बारे में चर्चा है। कुछ रब्बी सुझाव देते हैं कि रोटियाँ एक विशिष्ट तरीके से बनाई गई थीं ताकि उन्हें ठीक से बेक करने के लिए आसानी से ओवन में रखा जा सके।
- ओत नोट करता है कि रोटियाँ दो दसवें एफा से बनाई जाती हैं, और कुछ रब्बी रोटियों

की मोटाई के बारे में बहस करते हैं।

सारांश में, लेहम पनीम तंबू का एक महत्वपूर्ण तत्व था, जिसका महत्व केवल भौतिक रोटी से परे था। इसके चारों ओर विभिन्न व्याख्याएँ और प्रथाएँ दिव्य उपस्थिति, निरंतर भेंट, और आध्यात्मिक पोषण के विचारों में अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं, जो आधुनिक ईसाइयों के लिए भी अर्थपूर्ण हो सकती हैं।

P 28 Ex. 30:7 On Burning the Incense on the Golden Altar twice daily

P

### निर्गमन 30:7 में धूप अर्पण

निर्गमन 30:7 में लिखा है: "और हारून उस पर मीठे मसालों की धूप जलाएगा; हर सुबह, जब वह दीपकों की देखभाल करेगा, वह इसे जलाएगा।" यह पद एक दैनिक अनुष्ठान का वर्णन करता है जिसमें सोने की वेदी पर धूप जलाना शामिल है, विशेष रूप से मेनोरा की देखभाल के समय।

- **समय:** धूप अर्पण हर सुबह ("बोकर ब'बोकर") किया जाना है। यह मेनोरा के दीपकों की "देखभाल" या "सजावट" से जुड़ा हुआ है। यह "देखभाल" पिछले रात की राख को साफ करने और नए बत्तियों और तेल के साथ उन्हें तैयार करने में शामिल है।
- **कौन अर्पण करता है?** जबकि पद में "हारून" का उल्लेख है, इसका मतलब यह नहीं है कि केवल हारून, महायाजक, इस कर्तव्य को निभाता था। साधारण याजक भी इस कार्य को कर सकते थे। तालमुद वर्णन करता है कि इस सेवा के लिए याजकों को दैनिक रूप से चुना जाता था, उन लोगों को प्राथमिकता दी जाती थी जिन्हें अभी तक अवसर नहीं

**मिला था।** महायाजक, हालांकि, जब वह इसे करना चाहता था, तो उसे प्राथमिकता दी

जाती थी। यह भी उल्लेख किया गया है कि इस पद में हारून का उपयोग यह दिखाने के लिए किया गया है कि हारून ने सबसे पहले इस सेवा को किया था।

- **धूप:** धूप मीठे मसालों से बनाई जाती थी। एक स्रोत का सुझाव है कि मसाले (बेसामिम) सबसे महत्वपूर्ण घटक हो सकते हैं, या कि शब्द सामिम (मीठे मसाले) विभिन्न धूप यौगिकों के बीच अंतर करने के लिए उपयोग किया जाता है।
- **उद्देश्य:** धूप अर्पण, मेनोरा की रोशनी की तरह, "राष्ट्रीय आध्यात्मिक कार्य" और "आदर्श पूर्ति" के रूप में देखा जाता है। उठता हुआ धुआं ईश्वर द्वारा ध्यान देने और अधिकारियों से मिलने का एक रूपक माना जाता है। यह धुएं जैसे एक ऐथेरियल तत्व के माध्यम से दिव्य के साथ संवाद करने का प्रयास भी हो सकता है।
- धूप अर्पण मेनोरा की रोशनी से जुड़ा हुआ है। तोराह इन दोनों पवित्र बर्तनों के उद्देश्य के बारे में सिखाती है। मेनोरा की रोशनी तोराह के अध्ययन का प्रतिनिधित्व करती है, जबकि धूप दयालुता के कार्यों का प्रतिनिधित्व करती है। दोनों आवश्यक हैं, क्योंकि दयालुता के कार्यों की आवश्यकता होती है ताकि कोई अपने आप को समर्थन देने के बोझ को हटा सके, ताकि वह तोराह का अध्ययन कर सके।

## रब्बियों की व्याख्याएँ

- **"हारून" शाब्दिक नहीं है:** कई स्रोत बताते हैं कि "हारून" का उल्लेख केवल हारून के लिए नहीं है। यह हो सकता है कि हारून ने सबसे पहले इस कर्तव्य को निभाया था, या कि "हारून" का उपयोग यह दिखाने के लिए किया गया है कि वह याजकता का प्रतिनिधित्व करता है।
- **अनुष्ठान का क्रम:** कुछ टिप्पणियाँ बताती हैं कि वेदी की प्रारंभिक समर्पण और धूप की

पहली अर्पण शाम को की गई थी। दैनिक धूप अर्पण मेनोरा की सफाई से जुड़ा हुआ है।

कुछ स्रोत बताते हैं कि दीपकों की सफाई चरणों में की जाती है, जिसमें धूप अर्पण इस प्रक्रिया के दौरान होता है। वास्तव में, कुछ स्रोत सुझाव देते हैं कि धूप अर्पण पांचवें और अंतिम दो दीपकों की सफाई के बीच किया जाता है।

- **सुबह और शाम:** कुछ टिप्पणीकार बताते हैं कि धूप अर्पण के संबंध में "सुबह से सुबह" का उपयोग, जो दैनिक बलिदान ("तामिद") के लिए "सुबह" के उपयोग से भिन्न है, यह दर्शाता है कि धूप अर्पण सुबह के बलिदान से पहले किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त, "सुबह से सुबह" का उपयोग यह सिखाने के लिए समझा जाता है कि सुबह का अर्पण एक अवधि में किया जाता है।
- **मेनोरा से संबंध:** धूप और मेनोरा के बीच का संबंध महत्वपूर्ण है। दीपकों की रोशनी तोराह अध्ययन के माध्यम से ज्ञान का प्रतीक है, जबकि धूप प्रेमपूर्ण दयालुता के कार्यों का प्रतीक है। दोनों जुड़े हुए हैं, क्योंकि दयालुता को तोराह के अध्ययन का समर्थन करने के लिए आवश्यक माना जाता है। एक स्रोत सुझाव देता है कि धूप द्वारा लाई गई स्मरण से दीपकों की रोशनी होती है।
- **दीपकों की तैयारी:** "जब वह दीपकों की देखभाल करता है" (ब'हैयतिवो एत हा-नेरोट) शब्द का तात्पर्य मेनोरा की दैनिक सफाई और तैयारी से है। इसमें पिछले रात की राख और कालिख को हटाना और तेल और नई बत्तियों के साथ फिर से भरना शामिल है।
- **प्रारंभिक समर्पण:** कुछ स्रोत बताते हैं कि वेदी और मेनोरा को प्रारंभ में शाम को समर्पित किया गया था। दैनिक अनुष्ठान ने इस पैटर्न का पालन किया, धूप अर्पण को मेनोरा की देखभाल के संदर्भ में रखा।

प्रदान किए गए स्रोत सीधे तौर पर निर्गमन 30:7 पर मसीही दृष्टिकोण को संबोधित नहीं करते हैं। हालांकि, निम्नलिखित बिंदु आमतौर पर मसीही धर्म में समझे जाते हैं:

- **प्रतीकवाद:** मसीही अक्सर धूप अर्पण को प्रार्थना के रूप में देखते हैं जो ईश्वर की ओर उठती है। यह समझ बाइबिल के दोनों पुराने और नए नियमों के पदों से ली गई है। धूप अर्पण को इस प्रकार आराधना का एक कार्य माना जाता है।
- **मसीह महायाजक के रूप में:** मसीही धर्मशास्त्र में, प्रभु यीशु मसीह को अंतिम महायाजक के रूप में देखा जाता है जिसने मानवता के लिए अपने आप को बलिदान के रूप में अर्पित किया। कुछ मसीही धूप अर्पण को मसीह के बलिदान और ईश्वर के सामने मध्यस्थता के पूर्वाभास के रूप में व्याख्या कर सकते हैं।
- **आध्यात्मिक अनुप्रयोग:** जबकि शारीरिक रूप से धूप अर्पण मसीही अनुष्ठान का हिस्सा नहीं है, प्रार्थना की अवधारणा को ईश्वर के लिए "मीठी सुगंध" के रूप में महत्वपूर्ण माना जाता है। एक शुद्ध हृदय और ईश्वर को समर्पित जीवन की अवधारणा को धूप अर्पण के विचार से तुलना की जा सकती है।

**महत्वपूर्ण नोट:** मसीही दृष्टिकोण के बारे में जानकारी प्रदान किए गए स्रोतों से नहीं है। आप इस जानकारी को अन्य स्रोतों से सत्यापित करना चाह सकते हैं।

## रब्बियों ने जो कहा:

यहाँ "स्थायी अग्नि" के बारे में विभिन्न रब्बी व्याख्याएँ दी गई हैं, जिनमें कुछ बिंदुओं पर

असहमतियाँ हैं:

- **राशी:** राशी का कहना है कि "स्थायी अग्नि" वही अग्नि है जिसका उपयोग मेनोरा (दीपक) को

जलाने के लिए किया जाता था। वह "तामिद" (निरंतर) शब्द को मेनोरा को जलाने से जोड़ते हैं।

राशी यह भी बताते हैं कि "तामिद" शब्द का पुनरावृत्ति इस बात का संकेत है कि यह अग्नि मेनोरा के लिए थी।

- **इब्र एज़रा:** इब्र एज़रा का कहना है कि "निरंतर" शब्द को इस बात को स्पष्ट करने के लिए जोड़ा गया है कि अग्नि को हमेशा जलते रहना चाहिए।

• **चिज़कुनी:** चिज़कुनी के अनुसार, यह अग्नि शब्द के दिन और जब व्यक्ति शुद्ध नहीं होता था, तब भी जलती रहती थी, और यहाँ तक कि इमाइलियों के रेगिस्तान में यात्रा करते समय भी।

- **मल्बिम:** मल्बिम ने "तामिद" के दो प्रकार बताए हैं: निरंतरता का एक प्रकार (जैसे "स्थायी अग्नि") और आदेशित निरंतरता (जैसे दैनिक बलि)। उनका कहना है कि "तामिद" का मतलब है ऐसा कुछ जो बिना रुकावट के होता है, और यह किसी चीज़ को हमेशा या एक विशेष समय पर होने को संदर्भित कर सकता है।

• **गुर अर्येह:** इस टिप्पणीकार का कहना है कि मेनोरा की अग्नि बाहरी वेदी से ली जाती थी।

• **रव हिर्श:** वह बताते हैं कि वेदी पर जलने वाली अग्नि ही पवित्र स्थल में अन्य सभी अग्नियों का स्रोत होती थी, जिसमें धूप वेदी और मेनोरा की अग्नि भी शामिल थी।

• **मास्किल ले डेविड:** यह स्रोत यह समझाता है कि राशी ने मेनोरा की अग्नि से जुड़े व्याख्यान को

क्यों चुना, बजाय इसके कि साधारण अर्थ लिया जाता कि अग्नि हमेशा जलती रहनी चाहिए। मास्किल ले डेविड यह भी स्पष्ट करते हैं कि अग्नि को बुझाने पर प्रतिबंध यात्रा के दौरान भी लागू होता है।

### **रालबाग की व्याख्या:**

रालबाग (रब्बेनी लेवी बिन गेरशम) के अनुसार, जो अग्नि वेदी पर थी, वह वास्तव में तीसरी अग्नि थी, जो बलि चढ़ाने और धूप की आहुति के लिए इस्तेमाल होने वाली आग से अलग थी। यह स्थायी अग्नि थी, जिसे हमेशा जलता हुआ रखना आवश्यक था, और इसका उपयोग बलि चढ़ाने के लिए नहीं था। रालबाग का कहना है कि इस अग्नि को बुझाने का निषेध केवल इस विशेष आग पर लागू होता था, **जिसका उद्देश्य परमेश्वर की उपस्थिति की निरंतरता को दर्शाना था।**

### **तोरा टेमिमा की व्याख्या:**

तोरा टेमिमा के अनुसार, मेनोरा (दीपक) की आग बाहरी वेदी से ली जाती थी, और यह आग स्थायी आग का हिस्सा थी। इसका मतलब है कि स्थायी आग का प्रयोग न केवल वेदी पर बलि चढ़ाने के लिए, बल्कि धूप की आहुति के लिए भी होता था। तोरा टेमिमा यह भी बताता है कि यह आग शब्बत के दिन और शुद्धता की स्थिति में भी जलती रहनी चाहिए। इसके अतिरिक्त, इस आग को बुझाने का निषेध इतना महत्वपूर्ण था कि यह अन्य आदेशों से भी प्राथमिकता रखता था।

### **रब्बी विचारों में भिन्नता:**

रब्बियों के बीच वेदी पर अग्नि की संख्या और उसे बुझाने के निषेध के बारे में विभिन्न मत हैं:

## 1. आग की संख्या:

- कुछ रब्बी यह मानते हैं कि वेदी पर तीन अग्नियाँ थीं: एक बलि की आग, एक धूप की आहुति की आग, और एक स्थायी आग।
- कुछ अन्य रब्बी यह मानते हैं कि वेदी पर चार अग्नियाँ थीं, जिसमें एक अग्नि उन बलियों के लिए थी जो पहली आग में नहीं जलाए गए थे।

## 2. यात्रा के दौरान आग:

- रब्बियों के बीच यह भी बहस है कि क्या आग को यात्रा करते समय भी बुझने से बचाना जरूरी था, या क्या इसे ढकने के लिए विशेष उपाय किए जा सकते थे।

## 3. "तामिद" का अर्थ:

- "तामिद" (निरंतर) शब्द के बारे में भी अलग-अलग व्याख्याएँ हैं। कुछ इसे पूर्ण निरंतरता के रूप में समझते हैं, जबकि कुछ इसे दैनिक निरंतरता के रूप में, जो एक निश्चित समय पर होती है, समझते हैं।

## आधुनिक मसीही दृष्टिकोण:

यह स्रोत सीधे तौर पर आधुनिक मसीही दृष्टिकोण को संबोधित नहीं करते, लेकिन सामान्य ज्ञान के आधार पर हम इस तरह से समझ सकते हैं:

## 1. प्रतीकवाद:

- मसीही विश्वास में, आग अक्सर परमेश्वर की उपस्थिति, पवित्र आत्मा, शुद्धिकरण, और उत्साह का प्रतीक मानी जाती है। इसलिए, वेदी पर जो स्थायी अग्नि थी, उसे परमेश्वर की निरंतर उपस्थिति और उसके अविरत कार्य का प्रतीक माना जा सकता है।

2. **यह स्थायी अग्नि मसीही विश्वास में प्रभु यीशु मसीह के बलिदान और पवित्र आत्मा की निरंतर उपस्थिति का प्रतीक हो सकती है, जैसे कि इस आग को कभी बुझने नहीं दिया जाता था, वैसे ही मसीह का बलिदान और पवित्र आत्मा की उपस्थिति निरंतर बनी रहती है।**

P 30 Le. 6:10 On removing the ashes from the Altar

"और याजक अपने सनी के वस्त्र और अपने तन पर अपनी सनी की जांघिया पहिनकर होमबलि की राख, जो आग के भस्म करने से वेदी पर रह जाए, उसे उठा कर वेदी के पास रखे।"

### **लिनन का चोगा (Midu Bad):**

शास्त्र में उल्लेख है कि याजक को वेदी से राख हटाते समय लिनन का चोगा पहनना चाहिए। यह विशेष कपड़ा "मिदु बद" कहलाता है, जो आमतौर पर शरीर से सटा हुआ, सादगीपूर्ण और व्यक्तिगत रूप से याजक के नाप का बनाया जाता था। कुछ रब्बियों का मानना है कि "मिदु" सिर्फ चोगा को दर्शाता है, जबकि अन्य इसे पूरे याजकीय वस्त्रों के लिए प्रयोग करते हैं। रशी ने इस पर विशेष जोर दिया कि यह चोगा याजक के नाप का होना चाहिए और इसे आम कपड़ों की तरह नहीं देखा जा सकता।

### **लिनन का पायजामा (Mikhnesey Bad):**

लिनन के पायजामे को विशेष रूप से त्वचा से सटाकर पहनने का निर्देश दिया गया था। इसके नीचे कोई अन्य कपड़ा न होना आवश्यक था ताकि यह पवित्रता बनाए रखे। यह ध्यान रखा गया कि यह कपड़ा शरीर और पवित्र वस्त्र के बीच किसी भी बाधा को रोके।

## अन्य कपड़े:

हालांकि पाठ में सिर्फ चोगा और पायजामा का जिक्र है, कई रब्बी यह भी मानते हैं कि याजक को पगड़ी और पेटी सहित चारों याजकीय वस्त्र पहनने चाहिए। "पहनना" (yilbash) शब्द के पुनरावर्तन से यह व्याख्या की जाती है कि यह सभी वस्त्रों को शामिल करता है।

## सामग्री:

इन कपड़ों को लिनन से बनाया गया था, जिसे शुद्ध सामग्री माना जाता है।

## राख हटाने की प्रक्रिया (Terumat Hadeshen):

**राख हटाना कोई साधारण काम नहीं था, बल्कि इसे मंदिर की सेवा का महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता था। यह कार्य याजकीय वस्त्र पहनकर किया जाता था, और इसे पवित्र कर्तव्य के रूप में देखा जाता था। यह प्रक्रिया सुबह की बलि से पहले होती थी और राख को वेदी के पास एक निर्दिष्ट स्थान पर सावधानीपूर्वक रखा जाता था।**

## रब्बी व्याख्याएँ:

- **रशी (Rashi):** मिदु बद की फिटिंग पर जोर देते हैं। वह बताते हैं कि यह राख बलि की बची हुई चीज़ों से है, न कि लकड़ी से।
- **रम्बन (Ramban):** यह स्पष्ट करते हैं कि मिदु सभी वस्त्रों का प्रतिनिधित्व कर सकता है और पूरी प्रक्रिया याजक के सभी वस्त्रों में होनी चाहिए।
- **इब्न एज़रा (Ibn Ezra):** "त्वचा पर" पहनने की आवश्यकता और राख की उत्पत्ति पर प्रकाश डालते हैं।
- **राव हिर्श (Rav Hirsch):** राख हटाने को एक प्रतीकात्मक कार्य मानते हैं, जो पिछली भक्ति और सेवा की निरंतरता को दर्शाता है।

- **कली याकर (Kli Yakar):** राख हटाने के माध्यम से नप्रता और प्रायश्चित्त के विचार को जोड़ते हैं।
- **मालबीम (Malbim):** राख शब्द के विभिन्न प्रयोगों की व्याख्या करते हैं और यह स्पष्ट करते हैं कि किस प्रकार की राख हटाई जानी चाहिए।

### आधुनिक प्रासंगिकता:

राख हटाने और याजकीय वस्त्र पहनने की प्रक्रिया आज के समय में भी नप्रता, पवित्रता, और सेवा के प्रति समर्पण की प्रतीक हो सकती है। यह दिखाता है कि साधारण दिखने वाले काम भी, यदि ध्यान और उद्देश्य के साथ किए जाएं, तो पवित्र बन सकते हैं।

आज के मसीही युग में राख हटाने की इस प्रक्रिया का शाब्दिक अनुपालन नहीं होता, क्योंकि मंदिर की व्यवस्था और याजकीय अनुष्ठान अब प्रचलन में नहीं हैं। लेकिन इसके पीछे छिपे आध्यात्मिक अर्थ और प्रतीकवाद को मसीही विश्वास में गहराई से समझा जाता है। कुछ मुख्य बिंदु निम्नलिखित हैं:

#### 1. स्मरण और आत्मविश्लेषण:

- जैसे याजक पिछले दिन की बलि की राख हटाते थे, मसीही विश्वासियों को भी अपने जीवन में पाप और कमजोरियों की पहचान करनी चाहिए। यह आत्मविश्लेषण और प्रायश्चित्त की प्रक्रिया है, जिसमें वे अपनी गलतियों को परमेश्वर के सामने स्वीकार करते हैं और उसे अपने जीवन से हटाने के लिए प्रार्थना करते हैं।

#### 2. प्रायश्चित्त और क्षमा:

- राख हटाना उस बलि का स्मरण कराता था जो पापों के प्रायश्चित्त के लिए चढ़ाई जाती थी। मसीही विश्वास में, यह प्रभु यीशु मसीह के बलिदान की ओर

**इशारा करता है, जिसे मसीही धर्म के अनुसार, पापों के अंतिम प्रायश्चित्त के रूप**

**में देखा जाता है। इस प्रकार, राख हटाने की प्रक्रिया आज आत्मिक स्तर पर**

**मसीह के बलिदान को स्मरण करने और परमेश्वर से क्षमा प्राप्त करने का प्रतीक**

**बनती है।**

### 3. नग्रता और सेवा का प्रतीक:

- याजक, जो पवित्र वस्त्र पहनकर राख हटाते थे, एक विनग्र सेवक की भूमिका निभाते थे। यह सिखाता है कि मसीही विश्वासी किसी भी कार्य को, चाहे वह कितना ही साधारण क्यों न हो, विनग्रता और समर्पण के साथ करें। यहाँ तक कि एक साधारण काम भी, जब इसे परमेश्वर के प्रति सेवा के रूप में किया जाता है, तो वह पवित्र बन सकता है।

### 4. पवित्रता बनाए रखना:

- जिस तरह याजक ने राख हटाने के लिए विशिष्ट वस्त्र पहनकर पवित्रता बनाए रखी, मसीही विश्वासियों को भी अपने जीवन में पवित्रता बनाए रखने की आवश्यकता है। यह केवल बाहरी शुद्धता नहीं, बल्कि आंतरिक मन की स्थिति है जो परमेश्वर की उपस्थिति में योग्य बनाती है।

### 5. निरंतरता और भक्ति का अनुस्मारक:

- राख हटाने की दैनिक प्रक्रिया सेवा की निरंतरता और परमेश्वर के साथ रिश्ते की स्थिरता का प्रतीक थी। मसीही विश्वास में, यह दिखाता है कि ईश्वर के प्रति भक्ति और आत्मिक शुद्धता को प्रतिदिन बनाए रखना आवश्यक है। यह दैनिक प्रार्थना, आत्मिक अनुशासन, और परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

## सारांश में:

मसीही युग में राख हटाने की भौतिक प्रक्रिया को अब अभ्यास में नहीं लाया जाता, लेकिन इसके पीछे के सिद्धांत-जैसे पाप से शुद्धि, नप्रता, सेवा, और भक्ति की निरंतरता-आज भी आत्मिक जीवन के लिए प्रेरणा और मार्गदर्शन के स्रोत बने हुए हैं।

P 31 Nu. 5:2 On removing unclean persons from the camp

P

"इस्राएलियों के शिविर से सभी क्षयग्रस्त, जाव, और किसी भी प्रकार के मृतक के संपर्क में

आने वाले को बाहर निकाल दो, ताकि वे उस शिविर में न रहे जहाँ मैं निवास करता हूँ।"

यह पाठ इज़राइलाइट्स के शिविर से धार्मिक रूप से अपवित्र व्यक्तियों के निष्कासन के बारे में है, जिसमें विभिन्न प्रकार के अपवित्रता और उनके अनुसार निष्कासन की विभिन्न स्तरों दी गई हैं। आइए इसे हिंदी में समझें और वर्तमान मसीही युग में इसके महत्व को भी देखें।

## अपवित्रता के प्रकार

### 1. टज़रात (कुष्ठरोग जैसा त्वचा रोग):

- यह सबसे गंभीर प्रकार की अपवित्रता मानी जाती है। टज़रात से पीड़ित व्यक्ति को तीनों शिविरों से बाहर भेज दिया जाता था। जैसा कि तोराह में कहा गया है, "वह अलग रहे, उसका निवास शिविर के बाहर होगा," इसका अर्थ है कि उसे पूरी तरह से पृथक किया जाता था।
- टज़रात को सामाजिक और आध्यात्मिक decay का प्रतीक माना जाता था।
- **उदाहरण:** यदि कोई व्यक्ति टज़रात से ग्रसित होता था, तो उसे पूरी तरह से

समाज से बाहर कर दिया जाता था, जिससे यह प्रतीकात्मक रूप से इस बात को  
 दर्शाता था कि वह व्यक्ति किसी गंभीर आध्यात्मिक दोष से ग्रसित था।

## 2. ज़ाव (गोनोरिया जैसा स्राव):

- यह उस पुरुष के लिए था जो असामान्य जननांग स्राव से पीड़ित था। ज़ाव को भीतर के दो शिविरों (शेकिनाह शिविर और लेवियों का शिविर) से बाहर किया जाता था, लेकिन उसे इस्माएलियों के शिविर के बाहर रहने की अनुमति दी जाती थी।
- इसे यौन अनाचार से जुड़ी अपवित्रता माना जाता था।

## 3. तुमत मेट (लाश से संपर्क के कारण अपवित्रता):

- यह अपवित्रता एक मृत शरीर से संपर्क करने पर उत्पन्न होती थी। तुमत मेट से पीड़ित व्यक्ति को सिर्फ सबसे अंदर के शिविर (शेकिनाह शिविर) से बाहर किया जाता था, लेकिन उसे अन्य दो शिविरों में रहने की अनुमति होती थी।
- इसे मृत्यु और ईश्वर की अनुपस्थिति से जुड़ा हुआ माना जाता था।

## तीन शिविर

इस्माएलाइट्स के शिविर तीन परिधियों में बाँटे गए थे, और प्रत्येक का अपनी पवित्रता का स्तर था:

## 1. शेकिनाह का शिविर (Divine Presence Camp):

- यह सबसे अंदर का क्षेत्र था, जो तबेरनेकल (तंबू) के अंदर स्थित था, जहां ईश्वर

की उपस्थिति थी।

## 2. लेवियों का शिविर (Levite Camp):

- यह तबेरनेकल के चारों ओर स्थित क्षेत्र था, जहां लेवी लोग बसे हुए थे।

## 3. इस्राएलियों का शिविर (Israelite Camp):

- यह सबसे बाहरी क्षेत्र था, जहां बाकी इस्राएली जनजातियाँ स्थित थीं।

## निष्कासन का उद्देश्य

### 1. पवित्रता बनाए रखना:

- शिविर की पवित्रता और शुद्धता बनाए रखना ज़रूरी था क्योंकि यह जगह ईश्वर का निवास स्थान मानी जाती थी।

### 2. संपर्क से संक्रमण से बचाव:

- अपवित्रता को संक्रामक माना जाता था, और अपवित्र व्यक्तियों को शिविर से बाहर करने से यह सुनिश्चित होता था कि अन्य लोग अपवित्र न हो जाएं।

### 3. आध्यात्मिक महत्व:

- प्रत्येक प्रकार की अपवित्रता का आध्यात्मिक महत्व था, जो किसी न किसी पाप या आध्यात्मिक कमी को दर्शाता था। निष्कासन का स्तर अपवित्रता की गंभीरता पर निर्भर करता था।

### 4. तत्काल और पीढ़ी दर पीढ़ी आज्ञा:

- यह आज्ञा जब तबेरनेकल स्थापित हुआ, तब से तत्काल लागू थी और सभी पीढ़ियों पर लागू होती थी।

## "तामे ल'नेफेश" (आत्मा द्वारा अपवित्र) का अर्थ

### 1. हड्डियाँ:

- रशी ने "तामे ल'नेफेश" को मृत व्यक्ति की हड्डियों से अपवित्रता के रूप में अनुवादित किया है। अरामाईक शब्द "तिमी" का अर्थ हड्डी होता है, जो शरीर से संपर्क में आने के बजाय आत्मा से जुड़ा होता है।

### 2. तुमत मेट को अव हतुमा कहा गया:

- रशी यह बताते हैं कि मृतक की हड्डी से संपर्क करना अव हतुमा(मुख्य स्रोत) होता है, जबकि शव से संपर्क करना वलाद हतुमा(द्वितीयक स्रोत) होता है।

### 3. ल'नेफेश पूर्वसर्ग का प्रयोग:

- "ल" का प्रयोग इस बात को दर्शाता है कि यह अपवित्रता आत्मा से जुड़ी है, खासकर जब हड्डियाँ मृत आत्मा के साथ जुड़ी होती हैं।

## मसीही युग में इसका महत्व

### 1. आध्यात्मिक शुद्धता:

- जैसे इसाएलाइट्स के शिविर में शुद्धता और पवित्रता बनाए रखना जरूरी था, वैसे ही आज के मसीही विश्वास में भी आध्यात्मिक शुद्धता महत्वपूर्ण है। पवित्रता का संरक्षण मसीही जीवन का एक अहम हिस्सा है।

### 2. आध्यात्मिक दूरी और संपर्क:

- मसीही जीवन में हम इस बात को समझते हैं कि पाप या आध्यात्मिक प्रदूषण से खुद को अलग रखना जरूरी है। यद्यपि हमें शारीरिक रूप से दूर जाने की

आवश्यकता नहीं होती, लेकिन हमारे जीवन में परमेश्वर से सच्चा संबंध बनाए रखना ज़रूरी है।

### 3. आध्यात्मिक रूप से निष्कासन:

- मसीही धर्म में, पाप से दूर जाने और शुद्ध होने की प्रक्रिया को आध्यात्मिक रूप से देखा जाता है, जहां हम पाप से छुटकारा पाकर परमेश्वर के साथ एक करीबी संबंध बनाए रखते हैं।

## उदाहरण

1. जब एक मसीही विश्वास अपने पापों से निपटने के लिए प्रायश्चित्त करता है, तो यह उसी तरह होता है जैसे इस्माएलाइट्स शिविर से बाहर किए गए अपवित्र व्यक्तियों को उनकी शुद्धता को फिर से प्राप्त करने के लिए संघर्ष करना होता था।
2. जैसे इस्माएलाइट्स शिविर के बाहर निष्कासन के दौरान व्यक्ति को एक प्रकार की शुद्धता की प्रक्रिया से गुजरना होता था, वैसे ही मसीही विश्वास में पाप के पश्चात शुद्धता पाने के लिए पश्चाताप और प्रार्थना के माध्यम से एक नए जीवन की शुरुआत होती है।

इस प्रकार, जबकि पुराने नियम में शिविर से अपवित्र व्यक्तियों को बाहर करना शारीरिक और बाहरी अपवित्रता के संबंध में था, आज मसीही युग में यह आध्यात्मिक शुद्धता की आवश्यकता को दर्शाता है।

32 Le. 21:8 On honoring the Cohanim

**तो कोहनीम, पुरोहित और याजक सभी शब्द धार्मिक कार्यों को करने वाले व्यक्ति के लिए**

**उपयोग किए जाते हैं।**

### **लैब्यव्यवस्था 21:8 का अर्थ**

लैब्यव्यवस्था 21:8 में कहा गया है, ”तुम उसे पवित्र करोगे, क्योंकि वह तुम्हारे परमेश्वर का भोजन

अर्पित करता है। **वह तुम्हारे लिए पवित्र होगा, क्योंकि मैं परमेश्वर, जो तुम्हें पवित्र करता हूँ, पवित्र**

**हूँ।**” इस आयत में कोहनीम (पुरोहितों) की विशेष स्थिति और उन्हें कैसे सम्मानित किया जाए,

इस पर चर्चा की गई है।

### **आदेशों का समझना**

**”तुम उसे पवित्र करोगे”:** यह वाक्य (माण्डगा) यह आदेश देता है कि **यहां समुदाय को**

**कोहनीम को विशेष पवित्रता का सम्मान देना चाहिए।** इसका मतलब यह है कि उनका

**ध्यान रखना और उनकी पवित्रता सुनिश्चित करना।**

यह पवित्रता स्वेच्छिक और अनिच्छुक दोनों रूपों में हो सकती है। यदि कोई कोहिन एक

ऐसी महिला से विवाह करता है जो उसे निषिद्ध है, तो अदालत उसे तलाक देने के लिए

मजबूर कर सकती है, भले ही वह इसके खिलाफ हो।

**”वह तुम्हारे लिए पवित्र होगा”:** इसका मतलब है कि कोहनीम को पवित्रता के संदर्भ में

**सम्मानित किया जाना चाहिए।** यह सम्मान देना, उन्हें पहले बोलने, आशीर्वाद देने, और

**अच्छे हिस्से को प्राप्त करने के रूप में हो सकता है।**

### **पवित्रता के व्यवहार**

- रब्बियों के अनुसार, "तुम उसे पवित्र करोगे" का अर्थ है कि कोहनीम को पवित्रता के मामलों में प्राथमिकता दी जाएगी।
  - इसमें उन्हें पहले बात करने, आशीर्वाद देने, और अच्छे हिस्से प्राप्त करने की प्राथमिकता मिलती है।
- कुछ टिप्पणीकार मानते हैं कि यह प्राथमिकता केवल पवित्रता के मामलों तक सीमित है, जबकि अन्य का मानना है कि यह सभी मामलों में लागू होती है।

## पवित्रता का कारण

- "क्योंकि वह तुम्हारे परमेश्वर का भोजन अर्पित करता है": कोहनीम को पवित्र किया जाता है क्योंकि वे परमेश्वर के लिए अर्पित भोजन (बलि) पेश करते हैं। उनका मंदिर में सेवा करना उन्हें विशेष बनाता है।
- "क्योंकि मैं, परमेश्वर, जो तुम्हें पवित्र करता हूँ, पवित्र हूँ": कोहनीम की पवित्रता का कारण परमेश्वर की पवित्रता है। चूंकि परमेश्वर पवित्र हैं, उनके पास सेवा करने वाले को भी पवित्र होना चाहिए।

## रब्बियों के विचार और विचार-विमर्श

- जबर्दस्ती: "तुम उसे पवित्र करोगे" का अर्थ यह भी है कि अदालत कोहनीम को तलाक देने के लिए मजबूर कर सकती है यदि वह निषिद्ध महिला से विवाह करता है। यह सुनिश्चित करने के लिए किया जाता है कि कोहनीम की पवित्रता बनी रहे।
  - कुछ स्रोतों के अनुसार यह जबर्दस्ती केवल तलाक तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सुनिश्चित करने के लिए किया जाता है कि कोहनीम रीतिक्रम से अशुद्धता से बचें।

- **प्राथमिकता:** रशी और अन्य लोग मानते हैं कि यह प्राथमिकता "वह तुम्हारे लिए पवित्र होगा" से ली जाती है।
  - तामुदी में कहा गया है कि कोहनीम को पवित्रता के सभी मामलों में प्राथमिकता दी जानी चाहिए।
  - "एन्साइक्लोपीडिया तालमुदित" स्पष्ट करता है कि यह प्राथमिकता उस स्थिति में दी जाती है जहां कोहनीम को सम्मानित और पवित्र दिखाई देने के लिए प्राथमिकता दी जाती है।

## लोगों की भूमिका

**यह आदेश लोगों को दिया गया है कि वे याजको को सम्मानित करें।**

लोगों की जिम्मेदारी है कि वे कोहनीम को पवित्र बनाए रखें। उन्हें कोहनीम को अपवित्र करने का कारण नहीं बनाना चाहिए।

सम्पूर्ण समुदाय को इस बात की जिम्मेदारी दी जाती है कि वे याजको की पवित्रता को बनाए रखें ताकि वे अपनी भूमिका के योग्य बने रहें।

**लोग यह सुनिश्चित करें कि वे कोहनीम को उनके स्थान, आशीर्वाद और भोजन में**

**प्राथमिकता दें।**

## आधुनिक समय में इसका उपयोग

- आज, जब मंदिर की सेवा और कोहनीम की भूमिका समाप्त हो चुकी है, तब भी यह विचार महत्वपूर्ण हो सकता है।
- धार्मिक नेताओं और उनके द्वारा किए गए कार्यों की प्रतिष्ठा और सम्मान का विचार आज भी धार्मिक समुदायों में प्रासंगिक है।

- यह विचार यह बताता है कि पवित्रता एक व्यक्तिगत लक्ष्य है जिसे प्रत्येक व्यक्ति को हासिल करना चाहिए, और यह पूरे समुदाय द्वारा बनाए रखा जाना चाहिए।

## रब्बी विचारों का उदाहरण

1. **राशि:** वह कहते हैं कि "वह तुम्हारे लिए पवित्र होगा" से यह सिद्ध होता है कि कोहनीम को पवित्रता के सभी मामलों में प्राथमिकता मिलनी चाहिए, चाहे वह आशीर्वाद हो या न्यायिक प्रक्रिया।
2. **तामुदः:** तामुदी में इस विचार का स्पष्ट उल्लेख है कि कोहनीम को पवित्रता में प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

## आज के मसीही युग में इसका महत्व

आज के मसीही युग में, पुरोहितों और धार्मिक नेताओं के सम्मान का मतलब यह है कि हमें उन व्यक्तियों का आदर करना चाहिए, जो हमें पवित्रता और सही रास्ते पर चलने के लिए मार्गदर्शन देते हैं। इन धार्मिक नेताओं का कार्य केवल धार्मिक अनुष्ठान तक सीमित नहीं होता, बल्कि वे हमें जीवन में अच्छाई और सही आचरण की दिशा भी दिखाते हैं।

यह विचार हमें यह सिखाता है कि एक समुदाय के रूप में हमें एकजुट रहकर पवित्रता और श्रद्धा को बनाए रखना चाहिए। यदि हम चाहते हैं कि हमारे समाज में शांति और अच्छाई बनी रहे, तो हमें अपने धार्मिक नेताओं (जो वचन को सिंखाते हैं) का आदर करना चाहिए और उनके मार्गदर्शन का पालन करना चाहिए।

**उद्धरण:** "वह जो तुम्हें पवित्र करता है, वह पवित्र है।" (लैव्यव्यवस्था 21:8) - यह हमें याद दिलाता है कि पवित्रता का महत्व है और हमें उस व्यक्ति का सम्मान करना चाहिए जो हमें पवित्रता की

## ओर मार्गदर्शन करता है।

1. "आपस में प्यार करो, जैसे मैं तुमसे प्यार करता हूं।" (यूहन्ना 13:34)
2. ) - यह उद्धरण दर्शाता है कि हमें एक दूसरे के प्रति आदर और प्यार रखना चाहिए,  
खासकर उन लोगों के प्रति जो हमें धार्मिक शिक्षा और मार्गदर्शन देते हैं।

इस प्रकार, आज के समय में यह विचार यह समझाता है कि धार्मिक नेता और शिक्षक समाज में अहम भूमिका निभाते हैं और उनका आदर करना हम सभी की जिम्मेदारी है, ताकि हम सही मार्ग पर चल सकें।

P 33 Ex. 28:2 On the garments of the Cohanim

निर्गमन 28:2 में लिखा है: "और तू अपने भाई हारून के लिए पवित्र वस्त्र बनवाना, जो महिमा और शोभा के लिए हों।"

प्राचीन युग में, याजकों के वस्त्रों का बहुत महत्व था और इन्हें "महिमा और सुंदरता के लिए" (לכבוד ולתפארה) कहा गया था। विभिन्न रब्बियों ने इस वाक्यांश की अलग-अलग व्याख्याएँ की हैं:

"महिमा और सुंदरता के लिए" (לכבוד ולתפארה) की व्याख्याएँ:

- **याजक का सम्मान:** कई स्रोतों ने इस बात पर जोर दिया कि वस्त्र पहनने वाले, विशेष रूप से हारून और महायाजक, को सम्मान और महिमा देने के लिए थे।

- वस्त्र याजकों को अलग करने और उन्हें विशिष्ट बनाने के लिए थे।
- वे याजकों की उच्च स्थिति को दर्शाते थे, जिससे वे "प्रभु के दूत" की तरह दिखते थे।
- वस्त्र शाही पोशाक के समान थे, जिससे उनकी विशिष्टता और बढ़ जाती थी।
- प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व:
  - वस्त्र उन आध्यात्मिक गुणों का प्रतीक थे जिन्हें याजकों को अपनाना चाहिए।
    - आत्मा के वस्त्र, जिनमें विचार और गुण शामिल हैं, आंतरिक पवित्रता को दर्शाने चाहिए।
  - विभिन्न वस्त्र विशिष्ट पापों के लिए प्रायशिचित करते थे।
- ईश्वर का सम्मान:
  - कुछ लोग वस्त्रों को मंदिर सेवा के दौरान उनकी भव्यता के माध्यम से ईश्वर का सम्मान करने का साधन मानते हैं।
  - वस्त्र "ईश्वर की महिमा" के लिए थे।
  - वस्त्र इसाएलियों के बीच दिव्य उपस्थिति, शेखिना, को दर्शाते हैं।
  - वे तंबू और उसकी सेवा को स्वर्गीय मंदिर के मॉडल के रूप में प्रस्तुत करते हैं।
- प्रायशिचित:
  - महायाजक के वस्त्र विशेष रूप से उन्हें लोगों के लिए प्रायशिचित प्राप्त करने की अनुमति देते थे।
  - वस्त्र उन याजकों के लिए आवश्यक थे जो अपने पूरे जीवन सेवा करेंगे।
- विशिष्ट वस्त्र और उनके अर्थ:
  - कमीज रक्तपात के लिए प्रायशिचित करती है।
  - पतलून निषिद्ध यौन संबंधों के लिए प्रायशिचित करती है।

- मुकुट अहंकार के लिए प्रायश्चित करता है।
- बेल्ट दिल के विचारों के लिए प्रायश्चित करता है।
- छाती का पट्टा अनुचित निर्णयों के लिए प्रायश्चित करता है।
- एफोड मूर्तिपूजा के लिए प्रायश्चित करता है।
- चोगा दुर्भावनापूर्ण भाषण के लिए प्रायश्चित करता है।
- सामने की पट्टी निर्लज्जता के लिए प्रायश्चित करती है।

### रब्बियों की व्याख्याएँ:

- अदेरत एलियाह बताते हैं कि जबकि वस्त्र आमतौर पर सम्मान और सुंदरता के लिए होते हैं, वे केवल उस व्यक्ति के लिए होते हैं जो पवित्र स्थान में प्रवेश कर चुका है और सुरक्षित रूप से बाहर आ गया है। हारून के मामले में, जो धर्मी माने जाते थे, वस्त्रों का सम्मान शुरू से ही था।
- बेखोर शोर बताते हैं कि वस्त्र पवित्र सेवा के लिए हैं और उन्हें नियमित, रोजमरा के कपड़ों के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए।
- कासुतो कहते हैं कि वस्त्र पवित्रता का प्रतिनिधित्व करते हैं और हारून के उच्च पद के कारण थे
- चिब्बा येतेराह दो कारण बताते हैं: इस्राएलियों को हारून का सम्मान करने के लिए प्रेरित करना और हारून को स्वयं को महायाजक के रूप में व्यवहार करने की याद

## दिलाना।

- चिजकुनी बताते हैं कि वस्त्र तंबू के निर्देशों के बाद दिए गए निर्देशों का हिस्सा थे।
- चोमत अनाख वस्त्रों को तोराह का प्रतिनिधित्व करने के रूप में व्याख्या करते हैं और यह कि किसी को कैसे आचरण करना चाहिए, जिसमें विनप्रता, ज्ञान और स्वर्ग का भय शामिल है। लेखक वस्त्रों को तोराह के विभिन्न भागों, जैसे लिखित और मौखिक परंपरा, के साथ भी जोड़ते हैं।
- हक्तव वेहकबाला बताते हैं कि वस्त्र सेवा के माध्यम से ईश्वर का सम्मान करते हैं और याजक को उनके अनुयायियों के लिए भयभीत करने वाले बनाते हैं।
- हामेक दवार बताते हैं कि वस्त्र हारून को ईश्वर के चुने हुए के रूप में अलग करने का एक तरीका थे, "शेखिना का सिंहासन"।
- इन्ह एज़रा कहते हैं कि वस्त्र पवित्र थे क्योंकि वे मंदिर सेवा के दौरान पहने जाते थे, और वे याजकों को अलग करते थे, और इन वस्त्रों के माध्यम से वे महिमा प्राप्त करते थे।
- मलबिम वस्त्रों को उन आंतरिक आध्यात्मिक गुणों का बाहरी प्रतिनिधित्व मानते हैं

**जिन्हें याजकों को विकसित करना चाहिए, जैसे कि उनकी आत्माओं और गुणों को परिष्कृत करना।**

- और हचाइम सुझाव देते हैं कि वस्त्र आनंद की अभिव्यक्ति हैं और दिखाते हैं कि मूसा चाहते थे कि हारून का सम्मान और विशिष्टता हो। वे स्वर्ण और सफेद वस्त्रों को ईश्वर के विभिन्न नामों से भी जोड़ते हैं, चार स्वर्ण वस्त्र अज्ञेय नाम का प्रतिनिधित्व करते हैं, और चार सफेद लिनन वस्त्र "अदोनाई" नाम का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसके अतिरिक्त, वे बताते हैं कि वस्त्र प्रायश्चित प्राप्त करने के लिए बनाए गए थे और यही कारण है कि जब मूसा ने अस्थायी रूप से महायाजक के रूप में सेवा की तो उन्हें उन्हें पहनने की आवश्यकता नहीं थी।
  
  
  
  
  
  
- रब्बेनु बह्या बताते हैं कि वस्त्र याजक को लोगों की नजर में जितना विशिष्ट दिखाते थे, उतना ही विशिष्ट बनाते थे, जैसे कि शाही वस्त्र, जैसे कि कमीज, चोगा, मुकुट, छाती का पट्टा।
  
  
  
  
  
  
- रालबाग बेउर हामिलोट बताते हैं कि वस्त्र अच्छे स्थिति में होने चाहिए ताकि उन्हें उपयुक्त माना जा सके।
  
  
  
  
  
  
- रम्भान वस्त्रों और शाही वस्त्रों के बीच संबंध को नोट करते हैं, और कैसे वे विशिष्टता और सुंदरता का संकेत देते थे।

- रेकानाती बताते हैं कि वस्त्र ईश्वर की सेवा के लिए हैं और इस विचार से जुड़े थे कि वस्त्रों के माध्यम से ईश्वर की उपस्थिति महसूस होनी चाहिए। लेखक यह भी बताते हैं कि वस्त्रों को "दिल की बुद्धि" वाले लोगों द्वारा बनाया जाना चाहिए।
- रेगियो महिमा (אַבָּג) और सुंदरता (גְּרוּאַתֶּה) की अवधारणा को उन चीजों से जोड़ते हैं जो प्राकृतिक से परे उठती हैं और शैखिना की उपस्थिति को दर्शाती हैं।
- सफोर्नों कहते हैं कि वस्त्र ईश्वर का सम्मान करते हैं और इस्राएलियों के बीच भय उत्पन्न करते हैं, जिन्हें स्वयं को शिष्य के रूप में देखना चाहिए।
- स्टेन्साल्ट्ज़ बताते हैं कि वस्त्र सेवा के वस्त्र और याजक की भूमिका के सार्वजनिक संकेतक दोनों थे।
- तुर हारोक कहते हैं कि मूसा को कारीगरों को वस्त्र बनाने के तरीके के बारे में निर्देश देने की आवश्यकता थी, और वे शाही वस्त्रों और याजकों को विशिष्ट बनाने में वस्त्रों की भूमिका के संबंध को भी नोट करते हैं। लेखक एक वैकल्पिक विचार भी प्रस्तुत करते हैं, कि वस्त्र ईश्वर का सम्मान करते थे।

**आधुनिक युग में प्रासंगिकता:**

हालांकि भौतिक वस्त्र अब उसी तरह नहीं पहने जाते हैं, लेकिन वे जिन अवधारणाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं, वे अभी भी प्रासंगिक हैं। **आत्मिक गुणों से स्वयं को सजाना, विनप्रता और ईमानदारी से कार्य करना, और अपने कार्यों के माध्यम से ईश्वर का सम्मान करना स्थायी विषय हैं।** कुछ लोग वस्त्रों को सम्मान के महत्व, पवित्र कार्य के लिए अलग रहने की आवश्यकता, और आंतरिक शुद्धिकरण का प्रतीक मानते हैं जिसे हर व्यक्ति प्राप्त करने का प्रयास कर सकता है।

#### P 34 Nu. 7:9 On Cohanim bearing the Ark on their shoulders

"परन्तु कोहाथियों को उसने कुछ नहीं दिया, क्योंकि पवित्र वस्तुओं की सेवा उनके जिम्मे थी,  
जिन्हें वे कंधे पर उठाकर ले जाते थे।"

\*\*"בָּאָשׁוֹרֶת" (कंधे पर उठाना) की व्याख्या:\*\*

"बָּאָשׁוֹרֶת" वाक्यांश का शाब्दिक अर्थ है "वे कंधे पर उठाएंगे"। यह वाक्यांश विशेष रूप से कोहाथियों (תַהֲאֵת) के संदर्भ में उपयोग किया गया है, जो तंबू के सबसे पवित्र वस्तुओं को ले जाने के लिए जिम्मेदार थे, जिसमें वाचा का सन्दूक भी शामिल था। यह केवल एक तार्किक कार्य नहीं था बल्कि एक अत्यधिक प्रतीकात्मक और आध्यात्मिक रूप से महत्वपूर्ण कार्य था।

\* \*\*कोहाथियों का विशिष्ट कर्तव्य:\*\* गेरशोनियों और मेरारियों के विपरीत, जो तंबू की संरचना और उसके घटकों को गाड़ियों पर ले जाते थे, कोहाथियों को गाड़ियाँ नहीं दी गई थीं। इसके बजाय, उन्हें पवित्र बर्तनों को अपने कंधों पर उठाना पड़ता था। पाठ इस बात पर जोर देता है कि "पवित्र वस्तुओं की सेवा उनके लिए है"।

\* \*\*महत्वः\*\* कंधे पर पवित्र वस्तुओं को उठाने का यह कार्य एक गहरी संबंध और जिम्मेदारी का प्रतीक था। यह केवल वस्तुओं को स्थानांतरित करने के बारे में नहीं था; यह उन वस्तुओं की पवित्रता को मूर्त रूप देने के बारे में था जिन्हें वे ले जाते थे। **कोहाथियों को "दिव्य उपस्थिति के लिए एक रथ"** होना था, हमेशा अपने दिमाग को दिव्य पर केंद्रित रखते हुए।

\* \*\*केवल शारीरिक बोझ नहीं:\*\* एक व्याख्या के अनुसार, शब्द "אַלְעָם" (वे उठाएंगे) का संबंध "गीत" (הָרִישׁ) की अवधारणा से भी है। यह विचार इस बात पर जोर देता है कि पवित्र वस्तुओं को उठाना केवल एक शारीरिक कार्य नहीं था, बल्कि एक उपासना और आध्यात्मिक संबंध का कार्य भी था।

### **\*\*विभिन्न रब्बियों द्वारा व्याख्याएँ:\***

\* \*\*हाकतव वेहाकबाला:\*\* यह स्रोत बताता है कि अधिकांश स्थानों पर जहां पाठ कंधे पर उठाने का उल्लेख करता है, वहां "לע" (पर) शब्द का उपयोग करता है ताकि कंधे पर उठाने पर जोर दिया जा सके, लेकिन सन्दूक के संदर्भ में पाठ "לע" (पर) को छोड़ देता है, ताकि इसे एक अलग तरीके से उठाने के विचार को शामिल किया जा सके, जिसे वे "साइड-स्टेपिंग" के रूप में वर्णित करते हैं। क्योंकि डंडे सन्दूक के किनारों पर रखे गए थे, **सन्दूक को उठाने वाले लोगों को सन्दूक की ओर मुंह करके चलना पड़ता था** ताकि वे सन्दूक की ओर पीछे न करें। इस अनूठे तरीके से उठाने से सन्दूक को दी गई पवित्रता और सम्मान पर और जोर दिया गया।

\* \*\*हामेक दवार:\*\* यह स्रोत इस बात के दो व्याख्याएँ प्रस्तुत करता है कि पाठ "מִלְעָם" (उन पर) का उपयोग क्यों करता है। पहले, उन्हें बोझ \*स्वयं\* उठाना चाहिए, किसी और को उठाने के बजाय, और दूसरा, कि केवल \*वे\* ही इसे उठाएं। पाठ बताता है कि राजा दाऊद की प्रारंभिक

गलती सन्दूक को गाड़ी पर ले जाने की थी, जो पाठ की गलत समझ पर आधारित थी। उन्होंने

पाठ को इस प्रकार समझा था कि सेवा को लेवियों पर बर्तनों के साथ किया जाना चाहिए,

लेकिन यह नहीं कि बर्तनों को विशेष रूप से उनके कंधों पर उठाया जाना चाहिए। बाद में उन्होंने

महसूस किया कि पाठ का विशेष रूप से मतलब था कि सेवा को \*कोहाथियों\* द्वारा, उनके कंधों

पर किया जाना चाहिए।

\* \*\*मिनचत शाई:\*\* यह टिप्पणी बताती है कि "कुफ" (ק) "कोहाथ" (כה) में "रव" (ר) है

और "גגו" (ג) के अक्षरों को तोराह के 22 अक्षरों से जोड़ता है, यह समझाते हुए कि तोराह के

अध्ययन के माध्यम से \*लिलित\* को हटा दिया जाता है, जिसका अर्थ है कि तोराह का

अध्ययन बुराई को हटा देता है।

\* \*\*राशी:\*\* राशी इस बात पर जोर देते हैं कि यह सामान्य सेवा नहीं थी जो कोहाथियों पर

थी, बल्कि विशेष रूप से सबसे पवित्र वस्तुओं को उठाने की सेवा थी।

\* \*\*रव हिर्श:\*\* रव हिर्श तंबू की सेवा और पवित्र वस्तुओं की सेवा के बीच अंतर करते हैं, यह

समझाते हुए कि कोहाथियों की सेवा सीधे उन वस्तुओं से संबंधित थी जो उस पवित्रता को

मूर्त रूप देती थीं जिसके लिए तंबू बनाया गया था। वे बताते हैं कि कंधों पर उठाना उनके मुख्य

सार, उनकी सबसे आवश्यक क्षमताओं का उपयोग करने की आवश्यकता का प्रतिनिधित्व

करता था, प्रभु की सेवा में।

\* \*\*स्फोर्नो:\*\* स्फोर्नो इस विचार पर जोर देते हैं कि कोहाथियों ने जो उठाया वह फर्नीचर था,

न कि स्वयं संरचना, और इन वस्तुओं को \*मेकुदाश\* (מקדש) के रूप में संदर्भित किया गया

था।

\* \*\*स्टेन्साल्ट्जः:\*\* स्टेन्साल्ट्ज बताते हैं कि कोहाथियों को जानवरों या किसी भी प्रकार के परिवहन का उपयोग करने की अनुमति नहीं थी; इसके बजाय, उन्हें पवित्र बर्तनों को अपने कंधों पर उठाना पड़ता था।

\* \*\*तोरा तेमिमा:\*\* यह स्रोत यह सिखाता है कि कंधे पर उठाना शब्दत पर वस्तुओं को उठाने पर लागू होता है, जिसका अर्थ है कि शब्दत के दौरान इस तरीके से वस्तुओं को उठाना निषिद्ध है क्योंकि इसे काम माना जाता है। यह स्रोत यह भी सुझाव देता है कि "אַלְ" का संबंध गीत से है, शारीरिक श्रम को आध्यात्मिक अभिव्यक्ति से जोड़ता है।

\* \*\*त्जफनत प'नेचः:\*\* यह टिप्पणी सिफ्री का हवाला देती है, जो बताती है कि दाऊद ने गलती की क्योंकि उन्होंने गाड़ी का उपयोग किया था बजाय इसके कि लेवियों ने इसे उठाया। यह स्रोत यह भी जोड़ता है कि जब सेवा परमेश्वर के स्पष्ट आदेश पर की जाती है, तभी कंधे पर उठाना आवश्यक होता है। हालांकि, जब कोई अन्य कारण होता है, तो यह आवश्यक नहीं होता।

**\*\*आधुनिक मसीही युग में प्रासंगिकता:\***

कंधे पर पवित्र वस्तुओं को उठाने का विशिष्ट कार्य आधुनिक ईसाई धर्म में सीधे अभ्यास नहीं किया जाता है। हालांकि, अंतर्निहित सिद्धांत और प्रतीकवाद प्रासंगिक बने रहते हैं:

\* \*\*जिम्मेदारी उठाना:\*\* कोहाथियों का कर्तव्य पवित्र कार्यों की जिम्मेदारी उठाने की अवधारणा को रेखांकित करता है। ईसाई धर्म में, यह विश्वास, सेवा और समुदाय में अपनी

**भूमिका को गंभीरता से लेने के रूप में अनुवादित हो सकता है।**

\* \*\*शारीरिक प्रयास और भक्ति:\*\* कंधे पर उठाने का शारीरिक कार्य एक प्रतिबद्धता का

प्रतीक है जिसमें शारीरिक प्रयास और आध्यात्मिक भक्ति दोनों शामिल हैं। **यह सिद्धांत**

**विभिन्न प्रकार की ईसाई सेवा और उपासना पर लागू किया जा सकता है जिसमें समर्पण की**

**आवश्यकता होती है।**

\* \*\*पवित्र का सम्मान:\*\* जिस तरह से कोहाथियों को सन्दूक को उठाना था - उसका सामना

करना और साइडवेज़ चलना - यह दिखाता है कि उन्होंने पवित्र वस्तुओं के साथ कितना सम्मान

और श्रद्धा दिखाया। **आधुनिक मसीही युग में, यह पवित्र प्रथाओं, स्थानों और शास्त्रों के प्रति**

**श्रद्धा रखने के रूप में अनुवादित होता है।**

\* \*\*दिव्य पर ध्यान केंद्रित करना:\*\* यह विचार कि कोहाथियों को पवित्र वस्तुओं को उठाते समय

अपने दिमाग को दिव्य पर केंद्रित रखना था, ईसाई जीवन के कई पहलुओं पर लागू होता है। **यह**

**सभी गतिविधियों में आध्यात्मिक जागरूकता और प्रभु के साथ संबंध पर ध्यान केंद्रित करने के**

**लिए प्रोत्साहित करता है।**

**\*\*सारांश में:\*\***

"אשְׁר יִגְבַּב" (कंधे पर उठाना) की अवधारणा कोहाथियों का एक पवित्र कर्तव्य के रूप में

शारीरिक श्रम के शाब्दिक कार्य से परे जाती है। यह जिम्मेदारी, समर्पण, आध्यात्मिक भक्ति

और पवित्र के प्रति श्रद्धा का प्रतीक है। जबकि शारीरिक कार्य को सीधे आधुनिक मसीही युग

में दोहराया नहीं जा सकता है, सेवा, श्रद्धा और दिव्य पर ध्यान केंद्रित करने के अंतर्निहित

सिद्धांत अत्यधिक प्रासंगिक बने रहते हैं।

P 35 Ex.30:31 On the holy anointing oil

### अभिषेक तेल (Anointing Oil) का महत्व

व्याख्या और विभिन्न रब्बियों के दृष्टिकोणः

#### 1. तेल का घटक (Composition of the Oil)

Exodus 30:22-33 में जो अभिषेक तेल का विवरण दिया गया है, वह एक विशेष और पवित्र तेल था, जो मंदिर, उसके उपकरणों, याजकों और राजाओं को पवित्र करने के लिए उपयोग किया गया था। इसे बनाने के लिए निप्रलिखित सामग्री का उपयोग किया गया था:

- मुरः 500 शकेल
- स्वीट दारचीनीः 250 शकेल
- स्वीट कैलमसः 250 शकेल
- कैसियाः 500 शकेल
- जैतून तेलः 1 हिन (12 लोग)

#### 2. रब्बी के दृष्टिकोण (Rabbinical Views)

- अबारबनेल (Abarbanel): उन्होंने कहा कि अभिषेक तेल को केवल एक बार मूसा द्वारा बनाया गया था, और इसका सटीक अनुपात कभी न दोहराया जाए। उन्होंने यह भी कहा

कि यह तेल भविष्य में मसीही युग में फिर से उपयोग किया जाएगा।

- **रामबान (Ramban):** रामबान का कहना था कि जब यह कहा गया, "यह मेरे लिए होगा," तो इसका मतलब यह था कि यह तेल केवल याजकों के लिए नहीं, बल्कि राजाओं के लिए भी था।
- **रालबाग (Ralbag):** रालबाग ने कहा कि यदि यह तेल लगातार बनाना आवश्यक होता, तो इसे विशेष रूप से "हमारे लिए" न बनाने के लिए आदेश दिया जाता, जैसा कि धूप के तेल के मामले में था।
- **गुर आर्ये (Gur Aryeh):** उन्होंने यह कहा कि "विदेशी" (जो न तो याजक हैं और न राजा) पर तेल का उपयोग करना निषिद्ध था।
- **रशी (Rashi):** रशी ने यह बताया कि "यह" (ה) शब्द का अंकगणितीय मान 12 है, जो 12 लोग तेल के मात्रा से संबंधित है। उन्होंने यह भी कहा कि यह तेल भविष्य में एक चमत्कारी रूप से संरक्षित किया जाएगा और मसीही समय में इसका उपयोग होगा।

### 3. तेल का महत्व (Significance of the Oil)

- **ईश्वरीय चयन (Divine Selection):** यह तेल यह संकेत देता था कि जिस व्यक्ति या वस्तु को अभिषेक किया गया, वह ईश्वर द्वारा किसी विशेष उद्देश्य के लिए चुना गया है।
- **पवित्रता (Holiness):** यह तेल स्वयं पवित्र था और जो कुछ भी इस तेल से अभिषेक होता, वह पवित्र हो जाता था।
- **अनन्तता (Eternity):** तेल का उपयोग यह दर्शाता था कि यह पवित्रता हमेशा के लिए है, जैसे मंदिर के उपकरण, याजकता और राजत्व।
- **ईश्वरीय प्रभाव (Divine Influence):** तेल से अभिषेक होने से याजक और राजा ईश्वरीय प्रेरणा प्राप्त करते थे।

#### 4. अभिषेक का तरीका (Form of Anointing)

- **स्थान:** याजकों और राजाओं को सिर पर अभिषेक किया जाता था, क्योंकि सिर शरीर का सर्वोच्च भाग होता है।
- **आकृति:** याजक के अभिषेक में "कुफ" (κ) या ग्रीक "कप्पा" (κ) का आकार बनाया जाता था, जबकि राजाओं का अभिषेक मुकुट (τιτ) के रूप में होता था।
- **पवित्रता:** यह तेल एक व्यक्ति या वस्तु को पवित्र करने के लिए होता था, जबकि अभिषेक शरीर को ईश्वर के प्रभाव को प्राप्त करने के लिए तैयार करता था।

#### 5. आधुनिक मसीही चर्च में अभिषेक तेल का उपयोग (Use of Anointing Oil in Modern Christianity)

आज के मसीही चर्चों में अभिषेक तेल का उपयोग निम्नलिखित उद्देश्यों के लिए किया जाता है:

- **चंगा करना (Healing):** तेल का उपयोग शारीरिक और मानसिक चंगा के लिए प्रार्थनाओं के दौरान किया जाता है [James 5:14]।
- **पवित्रता (Consecration):** इसका उपयोग किसी को विशेष भूमिका या मंत्रालय के लिए पवित्र करने के लिए किया जाता है, जैसे कि याजकों का अभिषेक।
- **पवित्र आत्मा (Holy Spirit):** अभिषेक तेल मसीही विश्वास में पवित्र आत्मा की उपस्थिति और शक्ति का प्रतीक होता है [1 Samuel 10:1, 16:13]।
- **ईश्वरीय आशीर्वाद (Divine Blessing):** यह तेल ईश्वर की कृपा और आशीर्वाद का प्रतीक माना जाता है।

**उदाहरण:**

- एक मसीही मंत्री का अभिषेक उनके द्वारा किए जाने वाले कार्यों के लिए ईश्वर से समर्थन प्राप्त करने के रूप में देखा जाता है।
- जब किसी व्यक्ति को शारीरिक या मानसिक रूप से चंगा करने के लिए प्रार्थना की जाती है, तो तेल का उपयोग उस व्यक्ति को शांति और ईश्वर की शक्ति से भरने के लिए किया जाता है।

दस कुवारी वाली कहानी (Matthew 25:1-13) में मशाल और तेल का एक गहरा प्रतीकात्मक अर्थ है। यह कहानी प्रभु यीशु द्वारा दी गई एक दृष्टिंत है, जो विश्वासियों को तैयार रहने की आवश्यकता पर जोर देती है। इसमें तेल और मशाल के प्रतीक भी महत्वपूर्ण हैं।

## दस कुवारी (Ten Virgins) की कहानी में मशाल और तेल का महत्व

### कहानी का सारः

कहानी में दस कुवारी (कुमारी) एक दूल्हे का स्वागत करने के लिए तैयार हो रही थीं। उनमें से पांच ने अपनी मशालों के साथ तेल भी रखा था, जबकि पांच ने ऐसा नहीं किया। जब दूल्हा देर से आया, तो जो कुवारी तेल के बिना थीं, वे अपनी मशालों को जलाए रखने के लिए तेल लाने गईं। तब तक दूल्हा आया और जो कुवारी तैयार थीं, वे उसके साथ समारोह में शामिल हो गईं। बाकी पांच कुवारी बाहर रह गईं, क्योंकि वे तैयार नहीं थीं।

### तेल और मशाल के प्रतीक

- मशाल (Lamp):**
  - मशाल का मतलब है प्रकाश और दृष्टि। यह हमारे जीवन में प्रभु यीशु के

**मार्गदर्शन को दर्शाता है। मशाल का यह प्रतीक यह दिखाता है कि हमें जीवन में**

**प्रभु यीशु के सत्य और प्रकाश से मार्गदर्शन प्राप्त करना चाहिए। जैसे रात में**

**मशाल अंधेरे को हटाती है और रास्ता दिखाती है, वैसे ही प्रभु यीशु का ज्ञान**

**और सत्य हमारे जीवन को रोशन करता है।**

- **यह हमारे आध्यात्मिक जीवन का प्रतीक है। जैसे कुवारी अपनी मशालें लेकर**

**इंतजार कर रही थीं, वैसे ही विश्वासियों को अपने आध्यात्मिक जीवन में सच्चे**

**विश्वास और निरंतर तैयारी के साथ प्रभु यीशु के आने का इंतजार करना**

**चाहिए।**

#### • **तेल (Oil):**

- **तेल का उपयोग मशाल को जलाए रखने के लिए किया जाता है, जो**

**आध्यात्मिक तैयारी और विश्वास की निरंतरता का प्रतीक है। जिन कुवारी के**

**पास तेल था, वे तैयार थीं, और वे दूल्हे के आने पर उसके साथ जा सकीं। तेल का**

**अभाव उन कुवारी के लिए था जो अचानक दूल्हे के आगमन के लिए तैयार नहीं**

**थीं।**

- **तेल यहां पवित्र आत्मा (Holy Spirit) का प्रतीक हो सकता है, जो मसीही**

**विश्वासियों को शक्ति देता है और उन्हें प्रभु यीशु के मार्ग पर बनाए रखता है।**

**यह हमें दिखाता है कि हमारे जीवन में पवित्र आत्मा की उपस्थिति और मार्गदर्शन**

**से ही हम आत्मिक रूप से तैयार रह सकते हैं।**

#### **किसको और क्यों कहा गया?**

##### • **मशाल और तेल के साथ तैयार कुवारी:**

**ये कुवारी उन विश्वासियों का प्रतीक हैं जो अपने विश्वास में दृढ़ और तैयार रहते हैं। वे**

**प्रभु यीशु के मार्गदर्शन और पवित्र आत्मा से सशक्त होते हैं, और जब वह आएंगे, तो वे उसके साथ जाएंगे। उनका तेल (पवित्र आत्मा) उन्हें ईश्वर के मार्ग पर बनाए रखता है और वे सच्चे अनुयायी बने रहते हैं।**

- **तेल के बिना कुवारी:**

ये कुवारी उन विश्वासियों का प्रतीक हैं जो सतही तौर पर विश्वास करते हैं, लेकिन जिनके पास ईश्वर के मार्गदर्शन का वास्तविक अनुभव और आंतरिक आध्यात्मिक तैयारी नहीं होती। जब दूल्हा आता है (प्रभु यीशु का पुनः आगमन), तो वे तैयार नहीं होते और इस कारण वे समारोह में शामिल नहीं हो पाते।

## संदेश

इस दृष्टांत का संदेश है कि हमें हमेशा तैयार रहना चाहिए, हमारे पास आध्यात्मिक तेल (पवित्र आत्मा) होना चाहिए, जो हमें ईश्वर के मार्ग पर बनाए रखे। यह हमें बताता है कि सच्चा विश्वास सिर्फ बाहरी रूप से नहीं बल्कि हमारे जीवन में पवित्र आत्मा की उपस्थिति और तैयारी के साथ होना चाहिए। प्रभु यीशु के आगमन के लिए हमें निरंतर तैयार रहना चाहिए।

मशाल और तेल का दैनिक जीवन में अर्थ लाना, यानी अपने आध्यात्मिक जीवन में प्रकाश और तैयार रहने की स्थिति बनाए रखना, एक साधारण परंतु गहरे अभ्यास की बात है। यह काम नियमित आध्यात्मिक गतिविधियों के माध्यम से किया जा सकता है। यहां कुछ तरीके हैं, जिनसे आप मशाल और तेल को अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में शामिल कर सकते हैं:

### 1. प्रार्थना (Prayer)

- **मशाल का मतलब: प्रार्थना से आप अपने जीवन में प्रकाश और दृष्टि ला सकते हैं।**

- **कैसे करें:** दिन में कम से कम एक बार अपने दिल को ईश्वर से जोड़ने के लिए प्रार्थना करें। प्रार्थना आपकी आत्मा को जागरूक रखती है, जैसे मशाल अंधेरे में रास्ता दिखाती है।

## 2. ध्यान और Bible अध्ययन (Meditation and Bible Study)

- **तेल का मतलब:** जैसे तेल मशाल को जलाए रखने के लिए चाहिए, वैसे ही बाइबल का अध्ययन और ध्यान हमें आध्यात्मिक रूप से तैयार रखता है।
- **कैसे करें:** हर दिन कुछ समय बाइबल पढ़ने और उस पर विचार करने के लिए निकालें। आप कुछ छान-बीन और विचार करके समझ सकते हैं कि ईश्वर क्या कहना चाहता है, और यह आपके जीवन को रोशन करता है।

## 3. दूसरों की मदद करना (Helping Others)

- **मशाल का मतलब:** जब आप दूसरों की मदद करते हैं, तो आप प्रकाश फैलाते हैं और अपनी आंतरिक शक्ति का अनुभव करते हैं।
- **कैसे करें:** रोज़ अपने आस-पास के लोगों की मदद करने की कोशिश करें। छोटे-छोटे अच्छे काम जैसे किसी की मदद करना, किसी के साथ अच्छा बर्ताव करना, या किसी को प्रोत्साहित करना आपकी मशाल को प्रज्वलित रखता है।

## 4. आध्यात्मिक अनुशासन (Spiritual Discipline)

- **तेल का मतलब:** आपकी आध्यात्मिक प्रैक्टिस जैसे प्रार्थना, उपवास, और तपस्या का अभ्यास तेल की तरह है जो आपकी आस्था को मजबूत बनाता है।
- **कैसे करें:** अपने जीवन में नियमित रूप से आध्यात्मिक अनुशासन बनाए रखें। हर दिन

एक निश्चित समय पर प्रार्थना या ध्यान करने का प्रयास करें। यह आपके जीवन में

संतुलन बनाए रखता है और आत्मिक रूप से आपको तैयार करता है।

## 5. आत्म-मूल्यांकन (Self-Examination)

- **मशाल का मतलब:** आत्म-मूल्यांकन से आप अपनी आध्यात्मिक स्थिति की सही पहचान कर सकते हैं। यह मशाल की तरह काम करता है, जो आपको बताता है कि आप कहाँ खड़े हैं।
- **कैसे करें:** सप्ताह में एक बार अपने आचरण, विचार और कर्मों पर विचार करें। यह जानने की कोशिश करें कि क्या आप ईश्वर के मार्ग पर चल रहे हैं, या कहीं भटक गए हैं।

## 6. धैर्य और विश्वास (Patience and Faith)

- **तेल का मतलब:** जब आप किसी मुश्किल समय में धैर्य रखते हैं और विश्वास बनाए रखते हैं, तो आप तेल की तरह अपनी आस्था को बनाए रखते हैं, जो आपको तैयार रहने में मदद करता है।
- **कैसे करें:** जीवन में आने वाली चुनौतियों का सामना करते हुए धैर्य रखें और विश्वास बनाए रखें। यह आपका आध्यात्मिक तेल है, जो आपको प्रभु यीशु के पुनः आगमन के लिए तैयार करता है।

## 7. संगति (Fellowship)

- **मशाल का मतलब:** विश्वासियों के साथ मिलकर चर्च या समूह में समय बिताना, आपकी मशाल को मजबूत करता है। दूसरों के साथ आध्यात्मिक बातचीत से आपका जीवन रोशन रहता है।

- कैसे करें: धार्मिक समूहों या चर्च की गतिविधियों में भाग लें। यह आपके विश्वास को मजबूत करेगा और आपको तैयार रखने में मदद करेगा।

## 8. पवित्र आत्मा से मार्गदर्शन (Guidance from the Holy Spirit)

- तेल का मतलब: पवित्र आत्मा आपको मार्गदर्शन और शक्ति देता है। यह आपकी तैयारी और आध्यात्मिक तेल का प्रतीक है।
- कैसे करें: हर दिन ईश्वर से प्रार्थना करें कि पवित्र आत्मा आपको मार्गदर्शन दे। अपनी आत्मा को शांत करके सुनें कि वह आपको क्या दिशा दे रहा है।

### निष्कर्ष

आपकी मशाल और तेल आपके आध्यात्मिक जीवन की स्थिति को दर्शाते हैं। **मशाल प्रकाश** का प्रतीक है, जो प्रभु यीशु के मार्ग पर चलने और दूसरों के लिए भी रास्ता दिखाने का काम करती है। तेल आपकी आस्था और पवित्र आत्मा की उपस्थिति का प्रतीक है, जो आपके आध्यात्मिक जीवन को जीवित और प्रभावी बनाए रखता है। इन दोनों को रोज़मरा की ज़िंदगी में शामिल करना हमें तैयार रखने में मदद करता है, ताकि जब प्रभु यीशु का पुनः आगमन हो, हम उसके साथ हो सकें।

Exodus 30:31 और Matthew 25:1-13 दोनों में तेल और तैयार रहने का प्रतीकात्मक रूप से उपयोग किया गया है, लेकिन दोनों का मुख्य उद्देश्य और संदेश अलग हैं।

- Exodus 30:31 में तेल का उपयोग पवित्रता और संगठन के लिए किया गया है, जो पवित्र वस्तुओं और व्यक्तियों के अभिषेक के लिए था। यह पवित्रता का संकेत है, जिसे कुछ विशेष उद्देश्य के लिए प्रयोग किया गया था।

- Matthew 25:1-13 में तेल का उपयोग आध्यात्मिक तैयार रहने और ईश्वर के आने के लिए किया गया है। यह विश्वासियों को चेतावनी देता है कि उन्हें हमेशा तैयार रहना चाहिए, जैसे कुवारीयों को अपने तेल के साथ मशाल जलाए रखने के लिए कहा गया था।

संक्षेप में, Exodus 30:31 पवित्रता और अभिषेक से संबंधित है, जबकि Matthew 25:1-13 आध्यात्मिक जागरूकता और तैयारी से संबंधित है। दोनों में तेल का उपयोग होता है, लेकिन उनका संदर्भ और उद्देश्य अलग है।

P 36 De.18:6-8 On the Cohanim ministering in rotation/watches

### **व्याख्या (Deuteronomy 18:6-8)**

#### **आयत**

**6:**

”यदि कोई लेवी तुम्हारे नगरों में से किसी नगर से आकर, जहाँ वह रहता है, आए, और वह उस स्थान पर सेवा करने के लिए पूरी इच्छा से आकर, जिस स्थान को प्रभु प्रभु यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने चुना है, वहाँ परमेश्वर के नाम से सेवा करे,”

#### **आयत**

**7:**

”तो उसे उसी प्रकार सेवा करने का अधिकार होगा, जैसा अन्य सभी लेवियों को सेवा का अधिकार होता है, और वह उसी हिस्से का भागी होगा जो वे खाते हैं।”

#### **आयत**

**8:**

”सिवाय उनके जो अपने पूर्वजों से कोई भूमि बेच चुके हैं, वे अपने पूर्वजों से मिली हुई भूमि का हिस्सा नहीं पाएंगे।”

यहाँ पर दी गई आयतें लेवी परिवारों के लिए एक व्यवस्था प्रदान करती हैं, जो भूमि के मालिक नहीं होते थे, बल्कि समुदाय से भरण-पोषण प्राप्त करते थे। ये आयतें इस बात को संबोधित करती हैं कि जब एक लेवी या पुरोहित (Levitical priest) यरूशलेम के मंदिर में सेवा करने के लिए आता है, तो उसके लिए क्या अधिकार और व्यवस्था है।

## मुख्य बिंदु:

### 1. लेवी का आना (Verse 6):

- यह आयत बताती है कि यदि कोई लेवी किसी अन्य स्थान से यरूशलेम आता है तो उसे सेवा करने की अनुमति है। इसका अर्थ है कि लेवी जो अपनी सेवा में नहीं है, वह भी उस केंद्रीय पवित्र स्थल पर आकर सेवा कर सकता है।

### 2. मन की इच्छा से सेवा (Verse 6):

- "अपने मन की इच्छा से" का मतलब है कि वह व्यक्ति सेवा के लिए स्वेच्छा से आ रहा है, न कि उसे बाध्य किया गया है। यह सेवा एक व्यक्तिगत और आध्यात्मिक प्रेरणा से प्रेरित होती है।

### 3. सेवा का अधिकार (Verse 7):

- उस लेवी को भी वही अधिकार प्राप्त होते हैं जो अन्य लेवियों को प्राप्त होते हैं, जो पहले से सेवा में हैं। यह समानता की बात करता है कि सभी को समान रूप से हिस्सेदारी मिले।

### 4. पूर्वजों द्वारा विक्रय की अपवाद (Verse 8):

- "वह जो पूर्वजों ने बेचा था" का मतलब है कि कुछ लेवियों को किसी विशेष समझौते के तहत अपने हिस्से का अधिकार नहीं मिलता था। यह पुराने अनुबंधों

और सेवा प्रणाली का सम्मान करने की बात करता है।

## रब्बियों की व्याख्याएँ

यहां पर रब्बी इस बात पर चर्चा करते हैं कि क्या "लेवी" शब्द का अर्थ एक सामान्य लेवी है, या फिर केवल एक पुरोहित (Priest)। विभिन्न रब्बियों ने इसे विभिन्न रूपों में समझा है:

### 1. राशि (Rashi):

- राशि के अनुसार, यहां पर लेवी का तात्पर्य एक सामान्य लेवी से है, लेकिन आगे स्पष्ट किया गया है कि यह विशेष रूप से पुरोहितों का उल्लेख करता है, क्योंकि वे ही मंदिर सेवा में भाग लेते थे।

### 2. सिफरे (Sifrei):

- सिफरे का कहना है कि "लेवी" का मतलब केवल पुरोहित है, क्योंकि केवल वे ही मंदिर सेवा कर सकते थे।

### 3. मालबिम (Malbim):

- मालबिम का मानना है कि यहां पर केवल पुरोहितों का ही उल्लेख किया गया है, न कि सामान्य लेवियों का।

### 4. अदरित एलियाहु (Aderet Eliyahu):

- यह बात उठाते हैं कि आयतें यह दर्शाती हैं कि पुरोहित चाहे अपनी ड्यूटी के बाहर हो, फिर भी वह सेवा कर सकते हैं।

## आधुनिक मसीही चर्च में इसकी प्रासंगिकता

इन आयतों में जो मूल सिद्धांत दिए गए हैं, उनका मसीही चर्च के संदर्भ में कुछ ऐसे उपयोग किया जा सकता है:

## 1. सेवा एक आत्मान है (Ministry as a Calling):

- "अपने मन की इच्छा से" सेवा की बात यह दिखाती है कि सेवा केवल एक कर्तव्य नहीं, बल्कि एक व्यक्तिगत आत्मान होना चाहिए। चर्च में सेवक और उपदेशक को आत्मिक रूप से प्रेरित होना चाहिए, न कि केवल कर्तव्य से।

## 2. सभी विश्वासियों का समावेश (Inclusion of All Believers):

- जैसे आयतों में कहा गया है कि सभी लेवी (या पुरोहित) सेवा में भाग ले सकते हैं, वैसे ही चर्च में भी सभी विश्वासियों को सेवा में भागीदारी का अवसर मिलना चाहिए, चाहे उनका पद या स्थिति कुछ भी हो।

## 3. न्याय और समानता (Equity and Fairness):

- "समान हिस्सा" की अवधारणा यह बताती है कि चर्च में कार्य करने वाले सभी सेवकों को समान सम्मान और अधिकार मिलना चाहिए, और जो कार्य कर रहे हैं, उन्हें उचित योगदान और समर्थन मिलना चाहिए।

## 4. संरचना और व्यवस्था (Structure and Order):

- जबकि इस व्यवस्था में लचीलापन है, परंतु यह सुनिश्चित करने के लिए एक सही संरचना और सेवा का वितरण जरूरी है कि सब कार्य सही ढंग से हों। इसके साथ ही, पुरानी व्यवस्था का सम्मान और उचित बदलाव की स्वीकृति भी महत्वपूर्ण है।

ध्यान देने योग्य बिंदु:

- आधुनिक मसीही चर्चों में पुरोहितों का कार्य और सेवा नई वाचा (New Covenant) के तहत बदल चुके हैं। प्रभु यीशु मसीह के बलिदान ने पुराने नियम के बलि-प्रणाली और मंदिर सेवा को समाप्त कर दिया। इसलिए, इन आयतों को नए वाचा के संदर्भ में समझते समय ध्यान रखना आवश्यक है।

## उदाहरणः

- मान लीजिए कि एक चर्च में एक सदस्य स्वेच्छा से अपनी सेवाएं देने आता है, वह अपनी इच्छा से चर्च की किसी सेवा में भाग लेता है। उसे उसी प्रकार का आदर और हिस्सा मिलना चाहिए जैसा चर्च में कार्य कर रहे अन्य कर्मचारियों को मिलता है। इस तरह से सभी को समान अवसर मिलते हैं, चाहे वे नियमित रूप से सेवा में हों या त्योहारों में भाग लेने के लिए आए हों।

## P 37 Le.21:2-3 On the Cohanim being defiled for dead relatives

लैब्यव्यवस्था 21:1-3 की चर्चा में हम यह देखते हैं कि पुरोहितों को मृत्यु से संबंधित शुद्धता और अशुद्धता के नियमों का पालन करना था। यह नियम उनकी पवित्रता के उच्च मानक को दर्शाते हैं। साथ ही, इनमें कुछ अपवाद भी दिए गए हैं, जो परिवार के नज़दीकी रिश्तेदारों के लिए थे। आइए इसे विस्तार से हिंदी में समझते हैं:

## मुख्य विचार और प्रतिबंध

- सामान्य निषेधः पुरोहित को सामान्य रूप से किसी मृत व्यक्ति को छूने या उसके संपर्क में आने से मना किया गया था। ऐसा इसलिए क्योंकि मृत्यु का संपर्क उन्हें "अनुद्वेष्य अशुद्ध" (ritually impure) बना देता था, जो उनकी पवित्रता के विरुद्ध था।

- वचन: "वह किसी भी मृत शरीर को छूकर अशुद्ध न हो।"
2. **अपवाद - नजदीकी रिश्तेदारों के लिए:** कुछ रिश्तेदारों के लिए पुरोहित को अशुद्ध होने की अनुमति नहीं, बल्कि आदेश दिया गया है। यह रिश्तेदार हैं:

- **माता और पिता:** पुरोहित को उनके लिए अशुद्ध होना आवश्यक है।
- **पुत्र और पुत्री:** अपने बच्चों के लिए भी पुरोहित को अशुद्ध होना होगा।
- **भाई और कुंवारी बहन:** अपने भाई और कुंवारी बहन के लिए भी ऐसा करना आवश्यक है।
- **पत्नी:** पत्नि के लिए भी पुरोहित को अशुद्ध होना है। हालांकि, कुछ रब्बी इसे केवल रब्बिनिक (परंपरा) मानते हैं, ना कि सीधे बाइबलिक आदेश।

## “उसके संबंधी” (רָאשָׁנָה) का अर्थ और व्याख्या

### 1. पत्नी के लिए “संबंधी” शब्द:

“संबंधी” (शोअरो) शब्द का अर्थ प्रायः पत्नी के लिए समझा जाता है। यह इसलिए क्योंकि बाइबल (उत्पत्ति 2:24) में कहा गया है कि पति और पत्नी “एक शरीर” (one flesh) बन जाते हैं।

### 2. “निकट संबंधी” (רָאשָׁנָה):

- यह वाक्यांश ”सगाई” (engaged) वाली स्त्री को बाहर करता है, क्योंकि सगाई केवल कानूनी संबंध है, लेकिन विवाह के बाद का संबंध शारीरिक और आत्मिक दोनों होता है।

- यह भी कहा जाता है कि 'संबंधी' शब्द यह सिखाने के लिए है कि पत्नी पति का जीवन-संबंध (sustenance) और निकटतम साथी है।
- 

## रिश्तेदारों के नियमों के विशिष्ट विवरण

### माता बनाम पिता:

वचन में माता का उल्लेख पिता से पहले किया गया है। इसका कारण यह बताया

गया है:

मां-बच्चे का संबंध जैविक रूप से सुनिश्चित है, जबकि पिता का संबंध मान्य

(assumed) होता है।

मां को बेटे की देखभाल और आदर की अधिक आवश्यकता होती है।

उच्च पुरोहित (high priest) के मामले में, पिता का उल्लेख पहले किया गया

है ताकि पवित्रता का महत्व प्रदर्शित हो सके।

### "जीवित" बच्चे:

पुत्र और पुत्री का उल्लेख "जीवित" बच्चों के लिए है। मृत जन्मे बच्चे (stillborn) शामिल

नहीं हैं क्योंकि उन्हें "मानव" (viable human) नहीं माना गया।

### कुंवारी बहन (Virgin Sister):

बहन का उल्लेख "कुंवारी" के रूप में किया गया है। इसका अर्थ है, वह बहन जिसने

विवाह या यौन संबंध नहीं बनाए हैं।

यदि बहन विवाहित हो चुकी है, तो वह भाई की जिम्मेदारी में नहीं मानी जाती।

## "निकट संबंध" का अर्थ:

बहन के लिए "निकट संबंध" (close to him) में यह भी माना जाता है कि सगाई की बहन शामिल हो सकती है लेकिन तलाकशुदा बहन शामिल नहीं होती।

---

## इन रिश्तेदारों को ही क्यों चुना गया?

### 1. शोक मनाने का कर्तव्य:

इन रिश्तेदारों के लिए शोक और अंतिम संस्कार करना आवश्यक समझा गया है।

### 2. "उसके लिए अशुद्ध होगा" (אַשְׁוּדָה לֵל):

यह वचन केवल अनुमति नहीं, बल्कि आदेश है। इसका अर्थ है कि पुरोहित को इन रिश्तेदारों के लिए अशुद्ध होना ही होगा।

---

## रब्बियों की व्याख्याएं

### 1. राशी (Rashi):

- उन्होंने कहा कि "संबंधी" शब्द पत्नी को संदर्भित करता है।
- वह यह भी बताते हैं कि "अशुद्ध होने" का आदेश एक सकारात्मक कर्तव्य है।

### 2. इब्र एज़रा (Ibn Ezra):

- उनके अनुसार "निकट संबंध" का अर्थ पिता और माता दोनों से है।

### 3. मालबिम (Malbim):

- उन्होंने कहा कि "उसके लिए अशुद्ध होगा" में शब्दों का क्रम महत्वपूर्ण है। यह दिखाता है कि आदेश व्यक्तिगत है।

### 4. ओर हचैइम (Or Hachaim):

- उन्होंने कहा कि पिता का उल्लेख इसलिए किया गया क्योंकि उसकी पहचान केवल मान्य (assumption) पर आधारित होती है।

---

## आधुनिक मसीही दृष्टिकोण में प्रासंगिकता

### 1. रितिक अशुद्धता (Ritual Impurity):

मसीही धर्म में रितिक अशुद्धता पर कम ध्यान दिया जाता है। **इसके बजाय नैतिक पवित्रता (moral purity) पर बल है।**

### 2. पुराने नियम की व्याख्या:

मसीही धर्म में यह विश्वास है कि प्रभु यीशु मसीह के बलिदान ने पुराने नियम के इन नियमों को पूरा कर दिया।

### 3. परिवार का महत्व:

परिवार के लिए शोक मनाने और उनका सम्मान करने का महत्व मसीही परंपराओं में भी बना हुआ है।

### 4. पादरियों के मानक:

मसीही पादरियों पर पुरोहितों जैसे रितिक नियम लागू नहीं होते, लेकिन उनके नैतिक जीवन के लिए उच्च मानक आवश्यक हैं।

---

## सारांशः

**लैब्यवस्था 21:1-3** में पुरोहितों की पवित्रता बनाए रखने के लिए मृत्यु से संबंधित नियम दिए गए हैं। परिवार के नज़दीकी रिश्तेदारों के लिए शोक मनाने और उनकी अंत्येष्टि में भाग लेने के लिए अशुद्ध होने का आदेश दिया गया है। यह नियम परिवार और रिश्तों के महत्व को दर्शाते हैं। रबियों की व्याख्याएं इन नियमों की गहराई और उद्देश्य को समझने में मदद करती हैं। आधुनिक मसीही चर्च में यह पाठ धार्मिक शिक्षा और पारिवारिक मूल्य के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है।

## P 38 Le.21:13 On that Cohen haGadol may only marry a virgin

**लैब्यवस्था 21:13** में लिखा है, "और वह अपनी पत्नी को उसके कुँवारापन में ही लेगा।" यह आज्ञा मुख्यतः महायाजक (कोहेन गडोल) को दी गई है, जिसमें यह कहा गया है कि वह केवल एक कुँवारी स्त्री से विवाह करेगा। यह एक सकारात्मक आज्ञा (Positive Commandment) है, जो महायाजक की पवित्रता और धार्मिक जिम्मेदारी को दर्शाती है। आइए इसे हिंदी में विस्तार से समझते हैं:

---

## आदेश का मुख्य तात्पर्य

1. यह आज्ञा केवल महायाजक के लिए लागू होती है, जिसमें उसे एक कुँवारी पत्नी को ही चुनने का आदेश है।
  2. शब्द "और वह" (אַחֲרָה - וְהִ) से संकेत मिलता है कि यह आदेश विशेष रूप से महायाजक को संबोधित करता है।
  3. "उसके कुँवारापन में" (הַלְּבָבָה - בְּתֻלָּה) का मतलब है कि वह महिला न केवल शारीरिक रूप से कुँवारी होनी चाहिए बल्कि अपनी युवावस्था में भी होनी चाहिए।
- 

## "कुँवारापन" (הַלְּבָבָה - बेतुलेहा) का अर्थ

"बेतुलेहा" शब्द में "युद" (י) का उपयोग किया गया है, जो यहूदियों की कुछ मान्यताओं के अनुसार 12 वर्ष की आयु की ओर इशारा करता है। इस आयु तक लड़की को "कुँवारी"

माना जाता है।

कुछ रब्बियों का मानना है कि "कुँवारापन" केवल शारीरिक अवस्था को ही नहीं, बल्कि

युवावस्था और नैतिक पवित्रता को भी दर्शाता है।

"बेतुलेहा" शब्द बहुवचन (plural) में लिखा गया है, जो यह इंगित करता है कि विवाह के

समय तक उसकी सारी पवित्रता और शुद्धता सुरक्षित होनी चाहिए।

---

## रब्बियों के विचार और व्याख्याएं

### 1. रामबन (Ramban):

उन्होंने समझाया कि यह सकारात्मक आज्ञा एक नकारात्मक आज्ञा भी बन जाती है, जिसमें महायाजक को ऐसी स्त्री से विवाह करने से मना किया गया है, जो कुंवारी न हो।

#### **2. कित्तुर बा'अल हा तुरिम (Kitzur Ba'al HaTurim):**

उन्होंने कहा कि "ब'ह" (आहा) का अंक मान (numerical value) 18 है, जो यह संकेत देता है कि विवाह के लिए उचित आयु 18 वर्ष है।

#### **3. माल्बिम (Malbim):**

माल्बिम ने समझाया कि "बेतुलेहा" का अर्थ है कि युवती को शारीरिक रूप से कुंवारी होना चाहिए। उन्होंने यह भी बताया कि महायाजक को किसी "बोगेरेट" (यानी परिपक्व स्त्री) से विवाह करने की अनुमति नहीं है, भले ही उसने संबंध न बनाए हों।

#### **4. राल्बाग (Ralbag):**

उन्होंने स्पष्ट किया कि यदि किसी महिला ने शारीरिक रूप से कुँवारापन खो दिया है, लेकिन उसने संबंध नहीं बनाए हैं (जैसे किसी दुर्घटना के कारण), तो वह अभी भी "कुँवारी" मानी जाती है।

#### **5. नाचल केदूमिम (Nachal Kedumim):**

उन्होंने भी "ब'ह" (आहा) के अंक मान को विवाह की आयु 18 से जोड़ा। उन्होंने यह भी कहा कि आज के समय में शरीर कमज़ोर हो सकते हैं, लेकिन बुरी इच्छाओं पर काबू पाने के लिए जल्दी विवाह करना उचित है।

#### **6. डॉ. स्टेन्साल्ट्ज़ (Steinsaltz):**

उन्होंने संक्षेप में बताया कि महायाजक को केवल कुंवारी महिला से विवाह करने का आदेश है।

## 7. तोरा टेमीमा (Torah Temimah):

उन्होंने बताया कि यह नियम न केवल सेवा में महायाजक पर लागू होता है, बल्कि जो महायाजक सेवा से निवृत्त हो चुके हैं, उनके लिए भी यह लागू होता है।

---

## आधुनिक समय में प्रासंगिकता (Relevance Today)

### 1. यहूदी धर्म में:

- यह कानून महायाजक पर लागू था, जो यहूदी मंदिर में सेवा करता था। चूंकि आज यहूदी मंदिर नहीं हैं, इसलिए यह कानून आज के समय में व्यावहारिक रूप से लागू नहीं होता।

### 2. मसीही चर्च में:

- इस नियम को मसीही चर्चों में शाब्दिक रूप से पालन नहीं किया जाता क्योंकि यह मूसा की व्यवस्था (Law of Moses) का हिस्सा है, जो मसीही मान्यताओं के अनुसार प्रभु प्रभु यीशु मसीह के बलिदान के साथ पूरा हो चुका है।
- हालाँकि, पवित्रता और शुद्धता का सिद्धांत आज भी मसीही चर्च में मूल्यवान है।

विवाह को शुद्धता और भक्ति का प्रतीक माना जाता है।

### 3. आध्यात्मिक दृष्टि से:

- "कुँवारी" को अक्सर बाइबिल में आध्यात्मिक पवित्रता और भक्ति का प्रतीक माना जाता है। जैसे मसीह की दुल्हन (कलीसिया) को "पवित्र और निष्कलंक" होना चाहिए।

1. यदि कोई महायाजक 20 वर्ष का है और विवाह करना चाहता है, तो उसे ऐसी युवती से विवाह करना होगा, जो न केवल शारीरिक रूप से कुंवारी हो, बल्कि नैतिक और आध्यात्मिक रूप से भी शुद्ध हो।
2. आज के समय में, मसीही चर्च में यह नियम एक प्रतीकात्मक सिद्धांत के रूप में लिया जाता है, जो पवित्रता और भक्ति को दर्शाता है।

## निष्कर्ष

लैब्यवस्था 21:13 में दिए गए इस आदेश का उद्देश्य महायाजक की पवित्रता और उसकी भूमिका के महत्व को दर्शाना है। आज यह आदेश शाब्दिक रूप से पालन नहीं होता, लेकिन इसका संदेश-पवित्रता, भक्ति और नैतिकता-आज भी प्रासंगिक है।

## SACRIFICES

P 39 Nu.28:3 On the twice Daily Burnt, tamid, offerings

गिनती 28:3

"और उनसे यह कहो कि यह वह अग्नि के लिए अर्पण है जिसे तुम प्रभु प्रभु यहोवा के लिए चढ़ाओगे: एक वर्ष के निर्दोष मेमने, दो प्रतिदिन, हमेशा के लिए एक होमबलि।"

आध्यात्मिक समझ: "दो प्रतिदिन"

इस पद में प्रतिदिन दो होमबलि (मेमनों) का उल्लेख है, एक सुबह और एक शाम। इसे "तमीद" (लगातार बलिदान) कहा गया है। आइए इसे विस्तार से समझें:

---

### **"दो प्रतिदिन" का अर्थ (Rabbinic व्याख्या के अनुसार)**

#### **1. शाब्दिक अर्थ**

यह सरलता से यह निर्देश देता है कि हर दिन दो मेमने चढ़ाए जाएं। सुबह का बलिदान सूरज निकलने के समय और शाम का बलिदान सूरज ढलने के समय दिया जाए।

#### **2. सूरज की स्थिति के अनुसार (Opposite the Day)**

कुछ रब्बियों ने समझाया कि बलिदान को सूरज की स्थिति के विपरीत दिशा में किया जाना चाहिए:

- **सुबह बलिदान:** सूरज पूरब में होता है, इसलिए मेमने की बलि उत्तर-पश्चिम दिशा में दी जाती थी।
  - **शाम बलिदान:** सूरज पश्चिम में होता है, इसलिए बलि उत्तर-पूर्व दिशा में दी जाती थी।
- इस व्यवस्था का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि इसाएली सूर्य-पूजा से बचें और केवल प्रभु प्रभु यहोवा की आराधना करें।

#### **3. तब्बा'त (Rings)**

मिशना (Tractate Tamid) के अनुसार:

- वे मेमने को बलि के समय उत्तर दिशा में स्थिर करने के लिए ज़मीन में लगे छल्लों (rings)

**का उपयोग करते थे।**

- छल्ले कुल 24 थे, जो 6 पंक्तियों में विभाजित थे।
  - सुबह बलिदान उत्तर-पश्चिम के दूसरे छल्ले पर और शाम का बलिदान उत्तर-पूर्व के दूसरे छल्ले पर किया जाता था।
- 

## रबी व्याख्याएं

**राशी:**

"दो प्रतिदिन" का अर्थ यह सिखाने के लिए है कि बलि सूर्य की स्थिति के अनुरूप हो।

**माल्बिमः**

प्रतिदिन बलिदान सूर्य-पूजा का विरोध करने के लिए था। यह दिखाता है कि इस्राएल केवल

सृष्टिकर्ता की पूजा करते हैं, न कि सृष्टि की।

**हामेक दावरः**

"ओलाह" (होमबलि) शब्द दिखाता है कि यह बलिदान लोगों को प्रभु प्रभु यहोवा के निकट लाने के लिए है।

**रव हिर्शः**

सुबह और शाम बलिदान यह संकेत देता है कि दिनभर और रातभर प्रभु प्रभु यहोवा की आराधना होनी चाहिए।

**नचाल कदुमिमः**

उन्होंने शब्दों की गिनती का उपयोग करके बताया कि हर साल कुल 730 बलिदान दिए जाते हैं,

जो यह दिखाता है कि यह अभ्यास हर दिन किया गया।

---

## आज के मसीही चर्च के लिए इसका महत्व

### 1. बलिदान का उद्देश्य और मसीहः

प्रभु प्रभु यहोवा के लिए मेमने का यह दैनिक बलिदान प्रभु यीशु मसीह के अंतिम बलिदान का प्रतीक है। मसीह को "परमेश्वर का मेमना" कहा गया है, जो संसार के पापों को उठा ले जाता है (यूहन्ना 1:29)।

### 2. आध्यात्मिक बलिदानः

मसीहियों के लिए, यह बलिदान आत्मसमर्पण और हर दिन खुद को परमेश्वर के लिए अर्पित करने की याद दिलाता है। पौलुस ने लिखा, "अपने शरीरों को जीवित और पवित्र बलिदान के रूप में प्रस्तुत करो, जो परमेश्वर को भाता है" (रोमियों 12:1)।

### 3. निरंतर आराधना:

"तमीद" (लगातार बलिदान) हमें सिखाता है कि हमारी आराधना और समर्पण सिर्फ रविवार तक सीमित नहीं होना चाहिए। यह हर दिन, हर पल प्रभु प्रभु यहोवा के प्रति समर्पण का जीवन होना चाहिए।

### 4. पाप और अनुग्रहः

बलिदान पापों की क्षमा के लिए प्रभु प्रभु यहोवा की दया को दर्शाता था। आज, मसीह के बलिदान के कारण, पाप क्षमा के माध्यम से अनुग्रह का संदेश मिलता है।

---

## उदाहरण

- प्राचीन बलिदानः

प्राचीन इस्राएल में बलिदान शारीरिक मेमनों के द्वारा दिया जाता था। यह शुद्धता और प्रभु प्रभु यहोवा के प्रति समर्पण दिखाने का तरीका था।

- मसीहियों के लिएः

मसीहियों के लिए यह आत्मिक बलिदान है। एक उदाहरण यह हो सकता है कि सुबह और शाम प्रार्थना और आराधना की जाए।

- व्यावहारिक रूप सेः

मसीही आज ”हर दिन“ अपने जीवन को पवित्र और शुद्ध रखते हुए, प्रार्थना और पवित्रशास्त्र अध्ययन के माध्यम से परमेश्वर के प्रति अपने समर्पण को दिखा सकते हैं।

## निष्कर्षः

गिनती 28:3 का ”दो प्रतिदिन“ बलिदान यह सिखाता है कि प्रभु प्रभु यहोवा के प्रति निरंतर समर्पण, आराधना, और आत्मिक बलिदान का जीवन जीना चाहिए। आज के चर्च में, यह मसीह के अंतिम बलिदान की ओर संकेत करता है और हमारे दैनिक जीवन में समर्पण और आराधना के महत्व को रेखांकित करता है।

P 40 Le.6:13 On Cohen haGadol's twice daily meal offering

लैब्यवस्था 6:13) में पाई जाती है। हिन्दू भाषा में इसे इस प्रकार लिखा गया है:

”אֱלֹהִים יְהוָה תְּהִלֵּת עַל-הַמִּזְבֵּחַ לֹא תִּכְלֶה“।

इसका हिंदी में अनुवाद है:

**"वेदी पर निरंतर आग जलती रहेगी; वह बुझने न पाए।"**

## हिंदी में व्याख्या:

### 1. निरंतर आग (אַיִלָּת שְׁאֵלָה):

यहाँ "तामीद" का अर्थ है "निरंतर"। यह आग ऐसी होनी चाहिए जो हर समय जलती रहे।

इसका मतलब यह है कि वेदी पर कभी भी आग बुझनी नहीं चाहिए। यह परमेश्वर के

प्रति निरंतर आराधना और भक्ति का प्रतीक है।

### 2. वेदी पर (בְּאַתְּה וְעַלְךָ):

वेदी को पवित्र स्थान माना गया है जहाँ बलिदान चढ़ाए जाते थे। यह आग वेदी पर स्थायी रूप से जलनी थी।

### 3. न बुझने पाए (הַבְּعָד אַל):

यह एक सख्त आज्ञा है। आग बुझने देना परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन माना जाता।

इसे विशेष महत्व दिया गया है क्योंकि यह दो बार नकारात्मक रूप में कहा गया है, "ल अ

हबूदा"।

## रब्बियों के विचार:

यह आयत यहूदी विद्वानों (रब्बियों) द्वारा गहराई से व्याख्यायित की गई है। उनके विचार इस प्रकार हैं:

### 1. राशी (Rashi):

राशी के अनुसार "तामीद" का मतलब है कि यह आग न केवल बलिदानों के लिए थी

**बल्कि मेनोरा (दीप संभ) की ज्योति को जलाने के लिए भी इसी आग का उपयोग**

**किया जाता था। उनका कहना है कि "लावृग अ" का अर्थ है कि इसे बुझने देना दो**

**आज्ञाओं का उल्लंघन होगा।**

## 2. चिज़कुनी (Chizkuni):

**चिज़कुनी के अनुसार, यह आग न केवल हर दिन बल्कि शब्बात (साबत) के दिन और**

**अशुद्धता की स्थिति में भी जलानी रहनी चाहिए। यह आग इज़राइलियों की यात्रा के**

**दौरान भी जलानी रहती थी।**

## 3. इब्र एज़रा (Ibn Ezra):

**इब्र एज़रा ने "तामीद" को आग के निरंतर जलने की विशेषता के रूप में देखा। उन्होंने इसे**

**बलिदान प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बताया।**

## 4. मालबिम (Malbim):

**मालबिम ने कहा कि "तामीद" का मतलब है बिना किसी रुकावट के जलना। उन्होंने यह**

**भी बताया कि यह आग शब्बात और यात्रा के दौरान भी बुझनी नहीं चाहिए।**

## 5. रव हिर्श (Rav Hirsch):

**रव हिर्श के अनुसार, यह आग मन्दिर में सभी पवित्र कार्यों के लिए आग का मुख्य स्रोत**

**थी। उनका कहना है कि यह आग याहवेह (प्रभु प्रभु यहोवा) की उपस्थिति का प्रतीक थी।**

## 6. हा-अमेक दावार (Haamek Davar):

**उनका कहना था कि यहाँ तक कि जब कोई बलिदान नहीं चढ़ाया जा रहा हो, तब भी**

**लकड़ी से आग जलानी रहनी चाहिए।**

## 7. गुर आर्ये (Gur Aryeh):

**उन्होंने इस आयत का उपयोग मेनोरा की ज्योति के लिए किया और यह स्पष्ट किया कि**

**वेदी की आग का उपयोग अन्य पवित्र उद्देश्यों के लिए किया जाता था।**

## उदाहरण के साथ समझना:

### 1. सावत के दौरानः

शब्दात के दिन काम करना वर्जित था, लेकिन वेदी की आग को बुझने से बचाने के लिए यह नियम लागू नहीं होता। लकड़ी व्यवस्थित करके इसे जलते रहना सुनिश्चित किया जाता।

### 2. यात्रा के दौरानः

जब इस्माएली जंगल में यात्रा करते थे, तो एक धातु की ढाल का उपयोग करके आग को बुझने से बचाया जाता।

## आज के मसीही चर्च में इसका महत्वः

### 1. निरंतर आराधना:

मसीही विश्वास में "निरंतर आग" का अर्थ है परमेश्वर के प्रति समर्पित और निरंतर आराधना। यह आज भी प्रार्थना और भक्ति के रूप में जारी है।

### 2. प्रकाश का प्रतीकः

आग को प्रकाश और परमेश्वर की उपस्थिति का प्रतीक माना जाता है। जैसे मसीह ने कहा, "तुम संसार की ज्योति हो," उसी प्रकार यह आग हमें संसार में प्रभु यीशु मसीह की ज्योति फैलाने की याद दिलाती है।

### 3. समर्पण और बलिदानः

निरंतर जलने वाली आग परमेश्वर के लिए हमारे समर्पण और बलिदान को दर्शाती है।

**यह आत्मा की अग्नि को जीवित रखने की आवश्यकता को भी व्यक्त करती है।**

#### 4. सामुदायिक जिम्मेदारी:

**जिस प्रकार पुरोहित मिलकर वेदी की आग को जलाए रखते थे, उसी प्रकार आज चर्च के सदस्य मिलकर विश्वास को बनाए रखते हैं।**

---

#### सारांशः

**इस आयत का मूल उद्देश्य परमेश्वर के प्रति निरंतर भक्ति और आराधना है। यद्यपि यह आदेश पुराने नियम के मंदिर के लिए था, लेकिन इसके सिद्धांत-निरंतरता, समर्पण, और परमेश्वर की ज्योति का प्रचार-आज के मसीही जीवन में भी उतने ही प्रासंगिक हैं।**

P 41 Nu.28:9 On the Shabbat additional, musaf, offering

#### बाइबल पद (Numbers 28:9)

**“और विश्राम दिन (सब्बत) के दिन, दो साल के निर्दोष नर मेघे, और दो-दो दसवें भाग एफा मैदा, जो तेल में गूंथा हो, अन्नबलि के लिए, और उसके साथ उसकी अर्धबलि (पेयबलि)।”**

यह पद प्रभु प्रभु यहोवा द्वारा इमाएलियों को सब्बत (विश्राम दिन) पर दी गई अतिरिक्त बलि (मूसाफ) के बारे में बताता है, जो नियमित दैनिक बलि के अतिरिक्त चढ़ाई जाती थी।

---

#### हिंदी में समझाना (पद का अर्थ)

यह पद यह बताता है कि सब्ल के दिन अतिरिक्त बलि चढ़ाई जानी चाहिए। इसमें शामिल हैं:

1. **दो साल के निर्दोष नर मेघः**: निर्दोषता परमेश्वर के प्रति पूर्ण पवित्रता और समर्पण को दर्शाती है।
2. **अन्नबलि (मैदा और तेल)**: दो-दो दसवें एफा मैदा का उपयोग होता था, जो तेल में गूंथा जाता था। यह मेहनत और समर्पण का प्रतीक है।
3. **पेयबलि (अर्धः)**: यह शराब का उपयोग कर बनाई जाती थी और परमेश्वर को चढ़ाई जाती थी। यह आनंद और परमेश्वर के प्रति आभार व्यक्त करता है।

### प्रमुख रबियों की व्याख्या और उनके दृष्टिकोण

#### 1. दो मेघों का महत्व

- **दोहरी प्रकृतिः**
  - **शामोर (स्मरण करना) और ज़खोर (पालन करना)** - ये दोनों पहलू सब्ल की दोहरी प्रकृति को दर्शाते हैं।
  - **यह दोनों मेघे यह स्मरण दिलाते हैं कि सब्ल सृष्टि (creation) और मिस्र से मुकित्त (exodus) का प्रतीक है।**
- **दोगुना अन्न और मन्त्रः**
  - दो मेघे मन्त्रा की उस दोहरी मात्रा को भी दिखाते हैं जो शुक्रवार को दी गई थी ताकि सब्ल को पवित्र रखा जा सके।

#### 2. बलियों का क्रम और महत्व

- **चिज़कुनी:** उन्होंने कहा कि सब्ल पर बलि "अर्पण" शब्द से नहीं कही जाती, क्योंकि बलि अर्पण करना आमतौर पर सब्ल पर वर्जित होता है।
- **दात ज़केनिम:** उन्होंने कहा कि दो मेंप्रे "जोड़ों" के महत्व को दिखाते हैं जैसे - दो मन्त्रा, दो रोटियां, और दो पक्ष।
- **आबरबनेल:** उन्होंने इसे सृष्टि और मुकित में परमेश्वर के "विजय" का प्रतीक बताया।

### 3. अन्नबलि और पेयबलि का प्रतीक

- **ओर हाचाइम:** उन्होंने अन्नबलि को दो रोटियों के प्रतीक के रूप में देखा।
- **मालबिम:** उन्होंने बताया कि यह बलि दैनिक बलि का विस्तार है, और यह एक सामुदायिक बलि है।

### 4. अन्य व्याख्याएं

- **रव हिर्श:** उन्होंने इसे व्यक्तियों और समुदायों के परमेश्वर से व्यक्तिगत और सामूहिक संबंध के रूप में देखा।
- **रब्बेइनो बक्या:** उन्होंने कहा कि दो मेंप्रे पुरुष और महिला, सामूहिक और व्यक्तिगत समर्पण को दिखाते हैं।
- **स्टीनसाल्टज़:** उन्होंने "अर्धबलि" शब्द के अस्पष्ट अर्थ पर जोर दिया, जो कि अन्नबलि या सब्ल की आत्मा का प्रतीक हो सकता है।

### आज के मसीही चर्च में इसका महत्व

हालांकि मसीही चर्च में अब पशु बलि नहीं दी जाती, लेकिन यह पद कई तरीकों से महत्वपूर्ण है:

## 1. यहूदी जड़ों की समझः

यह पद यहूदी परंपराओं और बलि की व्यवस्था को समझने में मदद करता है, जिससे यह मसीह के बलिदान के महत्व को स्पष्ट करता है।

## 2. सब्ल का महत्वः

- मसीहियों के लिए सब्ल का सिद्धांत आराम और आराधना का दिन है।
- इसाई चर्चों में, रविवार को आराधना का दिन माना जाता है, लेकिन यह सब्ल के सिद्धांत से प्रेरित है।

## 3. प्रभु यीशु का अंतिम बलिदानः

- यह बलि मसीह के बलिदान का प्रतीक है, जो पापों के लिए पूर्ण और अंतिम बलिदान है।
- मसीह का बलिदान हर दिन और विशेष रूप से आराधना के दिन याद किया जाता है।

## 4. समर्पण और आराधनाः

- पशु बलि के स्थान पर, मसीही अब अपना समय, आराधना और सेवा परमेश्वर को समर्पित करते हैं।

## 5. आध्यात्मिक प्रतीकः

- दो मेंप्रे यह स्मरण दिलाते हैं कि मसीह का बलिदान व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों प्रकार के संबंधों को दर्शाता है।

## निष्कर्ष

**गिनती 28:9** सब्त के दिन बलि चढ़ाने की व्यवस्था का वर्णन करता है और इसे कई रब्बियों ने अलग-अलग तरीकों से समझाया है। यह पद मसीही दृष्टिकोण से सब्त, बलिदान और परमेश्वर के प्रति समर्पण को समझने में मदद करता है। बलिदान की परंपरा को मसीह के बलिदान के प्रतीक के रूप में देखा जाता है, और इसे मसीही जीवन में समर्पण और आराधना के रूप में अपनाया जाता है।

P 42 Nu.28:11 On the New Moon, Rosh Chodesh, additional offering

## बाइबल पद:

### गिनती 28:11

“और तुम्हारे नए चाँदों (महीनों) के दिन तुम प्रभु प्रभु यहोवा के लिए होमबलि चढ़ाओगे; दो बछड़े, एक मेदा, और साल भर के सात निर्दोष मेमने।”

## हिंदी में समझाना:

इस पद में परमेश्वर ने इस्माएलियों को नए चाँद (राँश चोदश/महीने की शुरुआत) पर चढ़ाए जाने वाले विशेष बलिदानों की आज्ञा दी है। इसमें निर्दोष जानवरों की गिनती दी गई है:

- 1. दो बछड़े (पार / बैल):** ये बलिदान सामर्थ और समर्पण का प्रतीक हैं।
- 2. एक मेदा:** यह इसहाक की बलि की कहानी से जुड़ा है, जो परमेश्वर की आज्ञाकारिता को दर्शाता है।
- 3. साल भर के सात निर्दोष मेमने:** ये पूर्णता (7 संख्या) और पवित्रता का प्रतीक हैं।

इस बलि का उद्देश्य यह था कि इसाएली हर महीने की शुरुआत परमेश्वर को याद करते हुए और उनकी महिमा में बलिदान चढ़ाकर करें। यह उनकी आत्मिक नवीनीकरण और परमेश्वर के प्रति समर्पण का प्रतीक था।

---

### रब्बियों के मत और उनके उदाहरण:

#### अबर्बनेल:

"नए चाँद" (מִשָּׁאָה) को बहुवचन में इस्तेमाल किया गया है ताकि यह सुनिश्चित हो

कि यह हर महीने के नए चाँद को दर्शाता है, न कि केवल निसान महीने को।

उन्होंने जानवरों को पितृपुरुषों (अब्राहम, इसहाक, याकूब) से जोड़ा। उदाहरण: बैल

अब्राहम का प्रतिनिधित्व करते हैं, मेदा इसहाक का और मेमने याकूब का।

उन्होंने इस बलि को खगोलीय दृष्टिकोण से भी समझाया। जैसे:

दो बैल "सूर्य और चंद्रमा" का प्रतिनिधित्व करते हैं।

सात मेमने "सात ग्रहों" का प्रतीक हैं।

#### चट्टम सोफर:

उन्होंने इस्राएल में गवाहों द्वारा चाँद देखने की प्रक्रिया को समझाया, और यह बताया

**कि बलि कैसे समय पर दी जाती थी।**

**उदाहरण:** जब गवाह देर से आते थे, तो लावियों के भजन के कारण समय सीमा को शाम तक सीमित कर दिया गया।

**चिङ्गकुनीः**

**उन्होंने कहा कि यह पद विशेष रूप से निसान महीने के नए चाँद को संदर्भित करता है, क्योंकि यह इस्राएल की मिस्र से मुक्ति का प्रतीक है।**

**उदाहरण:** इस महीने की बलि पास्का (फसह) और शावोत (सप्ताहों का पर्व) से मेल खाती है।

**रव हिर्शः**

**उन्होंने नए चाँद को यहूदी चेतना और नवीनीकरण का प्रतीक माना।**

**उदाहरण:** बलिदानों में सामर्थ और पवित्रता का महत्व दिखता है।

**उनके अनुसार, यह बलि इस्राएल के नैतिक और आत्मिक उद्देश्य को व्यक्त करती है।**

**सफोर्नोः**

**उन्होंने कहा कि इस बलि का उद्देश्य आत्मिक नवीनीकरण और पापों से शुद्धिकरण था।**

**उदाहरण:** यह बलि इस बात का प्रतीक है कि चंद्रमा सूर्य से प्रकाश प्राप्त करता है, जैसे इस्राएली परमेश्वर की कृपा पर निर्भर हैं।

**राब्बी बाह्याः**

उन्होंने बलिदानों को पितृपुरुषों से जोड़ा और इसे प्रभु प्रभु यहोवा के लिए  
नवीनीकरण का प्रतीक माना।

**उदाहरण:** हर महीने का नया चाँद यह याद दिलाता था कि प्रभु प्रभु यहोवा इस्राएल  
का परमेश्वर है।

### मालबिमः

उन्होंने यह स्पष्ट किया कि "तुम बलिदान चढ़ाओगे" (תְּקַרְבָּנָה עַוְלָה) का तात्पर्य है कि  
इस बलि को किसी अन्य दैनिक बलि के साथ भ्रमित न किया जाए।

---

### आज के मसीही चर्च में इसका महत्वः

हालांकि आज के चर्च में ये बलिदान प्रथा लागू नहीं है, लेकिन इसके मूल संदेश का महत्व बना  
हुआ है।

#### 1. नवीनीकरण और नई शुरुआतः

- जैसे नया चाँद एक नई शुरुआत का प्रतीक है, वैसे ही मसीहियत में आत्मिक  
नवीनीकरण (नई सृष्टि बनना) महत्वपूर्ण है।
- **उदाहरणः** प्रभु भोज (कम्युनियन) के दौरान अपने जीवन में आत्मिक परिवर्तन  
की प्रतिज्ञा।

#### 2. परमेश्वर पर निर्भरताः

- जैसे चंद्रमा सूर्य के प्रकाश पर निर्भर है, वैसे ही मसीही जीवन परमेश्वर की कृपा  
पर निर्भर है।

### 3. पापों से प्रायश्चित और शुद्धता:

- यह बलि आत्मा की शुद्धता और पापों से छुटकारे का प्रतीक थी, जो आज मसीही जीवन में आत्मा के पवित्र होने का संकेत है।

### 4. समुदाय और आराधना:

- नए चाँद के दिनों में यह बलि एक समुदाय के रूप में चढ़ाई जाती थी। आज मसीही चर्च भी सामूहिक आराधना और प्रार्थना के माध्यम से इसे जीता है।

#### **उदाहरण:**

- जैसे नए साल पर आत्मनिरीक्षण और प्रार्थना का महत्व दिया जाता है।
  - चर्च के कैलेंडर में विशेष अवसर, जैसे क्रिसमस या ईस्टर, आत्मिक नवीनीकरण के समय के रूप में मनाए जाते हैं।
- 

#### **निष्कर्ष:**

गिनती 28:11 में दिया गया नया चाँद बलिदान आत्मिक नवीनीकरण, पवित्रता, और परमेश्वर पर निर्भरता का एक मजबूत प्रतीक है। जबकि मसीही चर्च में बलिदान की यह प्रथा नहीं है, इसके पीछे के मूल्य और संदेश आज भी आत्मिक जीवन को निर्देशित करते हैं।

## **बाइबल पद:**

**"आठवें दिन तुम्हारी एक पवित्र महासभा होगी; और प्रभु प्रभु यहोवा के लिये अग्नि द्वारा अर्थ चढ़ाना। यह एक विशेष सभा होगी; तुम कोई कठिन काम नहीं करोगे।"**

— लैब्यववस्था 23:36

---

## **हिंदी में व्याख्या:**

### **1. "आठवां दिन" का अर्थ**

यह आठवां दिन सुकोत (झोपड़ियों का पर्व) के सात दिनों के बाद आता है। इसे शमिनी अत्सेरेत (Shemini Atzeret) कहा जाता है।

- शमिनी का अर्थ है "आठवां," और
- अत्सेरेत का मतलब होता है "रुकना" या "विशेष सभा।"

### **2. पवित्र सभा**

- इस दिन को "पवित्र महासभा" कहा गया है, जहाँ लोग इकट्ठा होकर परमेश्वर की आराधना करते हैं।
- यह सभा इस बात का प्रतीक है कि मनुष्य परमेश्वर के साथ विशेष समय बिताए।

### **3. अग्नि द्वारा अर्थ चढ़ाना**

यह एक प्रतीकात्मक बलिदान है, जो यह दिखाता है कि हम अपनी भेंट और धन्यवाद परमेश्वर के सामने प्रस्तुत करते हैं।

### **4. श्रम का निषेध**

- "कोई कठिन काम नहीं करना" (मलाखा अवोदा) यह दिखाता है कि यह दिन पूरी तरह से परमेश्वर को समर्पित होना चाहिए।
  - सांसारिक कार्यों से छुटकारा लेकर परमेश्वर की सेवा में समय बिताना इसका उद्देश्य है।
- 

## रब्बियों की व्याख्या:

### 1. "अत्सेरेत" का अर्थ - परमेश्वर का बच्चों को रोकना

- कई रब्बी इसे इस प्रकार समझाते हैं कि परमेश्वर अपने बच्चों (इसाएल) को और एक दिन के लिए रोकते हैं, क्योंकि वे उनके साथ समय बिताना चाहते हैं।
- उदाहरण:
  - एक राजा अपने बच्चों को लंबे उत्सव के बाद और एक दिन रोकता है, यह कहकर, "तुम्हारे जाने से पहले, मुझे तुम्हारे साथ थोड़ा और समय बिताना है।"

### 2. एक अलग पर्व

- रब्बियों ने इसे सुकोत से अलग एक स्वतंत्र पर्व के रूप में देखा।
- यह पर्व दिखाता है कि अब सात दिनों के बाद, एक विशेष और निजी समय परमेश्वर के साथ बिताना चाहिए।
- उदाहरण: सात दिनों तक बड़े उत्सव (सुकोत) के बाद, यह दिन शांत और आत्मिक चिंतन के लिए होता है।

### 3. आध्यात्मिक चिंतन और तैयारी

- रब्बियों ने कहा कि **शमिनी अत्सरेत** पिछले पर्वों से सीखे हुए पाठों को आत्मसात करने का समय है।
- यह एक ऐसा दिन है, जब व्यक्ति अपनी आत्मा की स्थिति को जांचता है और **उन सीखों को अपने जीवन में लागू करता है।**

### 4. काम का निषेध

- इस दिन काम करने की अनुमति नहीं होती, ताकि लोग परमेश्वर पर ध्यान केंद्रित कर सकें।
- इसे विश्राम और आराधना के लिए समर्पित किया गया है।

### 5. परमेश्वर की सभा (Assembly)

- **अत्सरेत** का अर्थ "सभा" भी है।
- **यह दिन परमेश्वर के साथ और समुदाय के साथ एकता का समय है।**

### आज के मसीही चर्च में इसका महत्व:

#### 1. आराधना और आराम का दिन

- मसीही जीवन में यह दिन विश्राम का प्रतीक है।
- जैसे **शमिनी अत्सरेत** पर काम छोड़कर परमेश्वर पर ध्यान केंद्रित किया जाता था, वैसे ही मसीही यह सिखते हैं कि परमेश्वर के साथ समय बिताना उनकी

## प्राथमिकता होनी चाहिए।

### 2. आध्यात्मिक चिंतन का समय

- यह मसीही जीवन में उन शिक्षाओं पर ध्यान देने का समय है, जो उन्होंने बाइबल पढ़ने, प्रार्थना और आराधना से प्राप्त की हैं।
- इसे आत्मिक पुनरुद्धार और नवीनीकरण के रूप में देखा जा सकता है।

### 3. समाज और एकता का प्रतीक

- "पवित्र महासभा" का विचार मसीही चर्च की प्रार्थना सभा, फेलोशिप और एकता से मेल खाता है।
- जैसे इस दिन लोग इकट्ठा होकर परमेश्वर को धन्यवाद देते थे, वैसे ही चर्च में आराधना और सामूहिक प्रार्थना होती है।

### 4. "आठवें दिन" और प्रभु यीशु का पुनरुत्थान

- मसीही परिप्रेक्ष्य में "आठवें दिन" का प्रतीक प्रभु यीशु मसीह के पुनरुत्थान से जुड़ता है।
- प्रभु यीशु का पुनरुत्थान सब्ज के दिन के बाद हुआ था, जो मसीही विश्वास में नई सृष्टि और अनंत जीवन का प्रतीक है।

### 5. आत्मिक बलिदान का प्रतीक

- जैसे शमिनी अत्सेरेत पर अग्नि द्वारा अर्ध चढ़ाई जाती थी, वैसे ही मसीही विश्वास में प्रभु यीशु मसीह का बलिदान एक पूर्ण और अनंत बलिदान है।

## उदाहरण:

- जैसे सुकोत और शमिनी अत्सेरेत में परमेश्वर का धन्यवाद दिया जाता था, वैसे ही चर्च में धन्यवाद और आराधना के दिन मनाए जाते हैं।
  - मसीही "विश्राम दिवस" को "परमेश्वर के साथ समय" के रूप में मानते हैं, जो शमिनी अत्सेरेत की भावना से मेल खाता है।
- 

## निष्कर्ष:

**शमिनी अत्सेरेत** यह सिखाता है कि हमें अपने व्यस्त जीवन से समय निकालकर परमेश्वर के

**साथ संबंध मजबूत करना चाहिए।**

आज के मसीही चर्च इस सिद्धांत को अपने आराधना, प्रार्थना और समाज के एकता में

**प्रतिबिंबित कर सकते हैं।**

P 44 Le.23:10 On the second day of Pesach meal offering of the Omer

## ओमर अर्पण पर बाइबिल पद और उसका अर्थ

### बाइबिल पद

ओमर अर्पण का उल्लेख लैब्यव्यवस्था 23:10-11 में मिलता है:

"इस्राएलियों से कहो, जब तुम उस देश में पहुंचोगे जो मैं तुम्हें देता हूं, और वहां

**की फसल काटोगे, तब अपनी फसल के पहिलौठे फल का एक पूला याजक के पास लाओ। और वह उस पूले को प्रभु प्रभु यहोवा के सामने हिला कर चढ़ाए, ताकि तुम प्रभु प्रभु यहोवा की कृपा प्राप्त करो; याजक इसे सब के अगले दिन चढ़ाए।”**

यह पद बताता है कि इस्राएलियों को अपनी पहली फसल का ”ओमर” प्रभु प्रभु यहोवा के सामने अर्पित करना था। यह एक प्रकार का धन्यवाद और पहली फसल को पवित्र करने का कार्य था।

---

## हिंदी में अर्थ और उद्देश्य

ओमर अर्पण एक विशेष अनुष्ठान था जो फसल के पहले भाग को प्रभु प्रभु यहोवा को अर्पित करने का प्रतीक है। इसका उद्देश्य यह सिखाना था कि सब कुछ परमेश्वर का है और हमें उनके प्रति कृतज्ञ रहना चाहिए।

### 1. ओमर का अर्थ:

- ओमर एक माप है, जो लगभग 2 लीटर के बराबर होता है। इसे ”पूला” भी कहा जाता है।
- यह विशेष रूप से जौ की पहली फसल से लिया जाता था क्योंकि जौ वसंतऋतु में सबसे पहले पकती है।

### 2. रबी साम्प्रदायिक व्याख्या:

- यह अर्पण केवल इस्राएल की भूमि में किया जाता था।

- इस अर्पण के बिना कोई भी नई फसल को खाना निषिद्ध था।
- यह अर्पण प्रभु प्रभु यहोवा के प्रति कृतज्ञता और फसल की सुरक्षा का प्रतीक है।

### 3. अनुष्ठान का क्रम:

- फसल काटने के बाद ओमर अर्पण को याजक के पास लाया जाता था।
  - याजक इसे प्रभु प्रभु यहोवा के सामने हिलाता था (wave offering), जो इसे पवित्र करने का संकेत था।
- 

## रब्बियों की व्याख्याएं (उदाहरण सहित)

### 1. राशी:

- राशी कहते हैं कि "ओमर" एक माप है और इसका उद्देश्य यह सिखाना है कि फसल से पहले प्रभु प्रभु यहोवा को अर्पण करना चाहिए।
- उदाहरण: यदि किसी के पास बड़ी फसल है, तो वह ओमर माप को पहले अर्पित करेगा।

### 2. रामबान (नचमानिडेस):

- यह अर्पण केवल इमारेल की भूमि के लिए अनिवार्य था।
- उन्होंने यह भी कहा कि ओमर अर्पण के बिना नई फसल खाना निषिद्ध था।

### 3. मालबिम:

- मालबिम ने बताया कि ओमर केवल जौ से होना चाहिए क्योंकि यह साल की पहली फसल होती है।
- यह अर्पण आने वाली फसलों के लिए आशीर्वाद का प्रतीक है।

#### 4. गुर आर्यः

- गुर आर्य के अनुसार, यह अर्पण किसी भी खेत से लाया जा सकता है, लेकिन इसे पवित्र उद्देश्य के लिए तैयार करना आवश्यक था।

#### 5. तोरा तेमीमा:

- यह अर्पण केवल इस्राएल की भूमि से होना चाहिए।
  - इसे इस्राएलियों की आशीर्वाद के लिए अर्पित किया जाता था।
- 

### आधुनिक मसीही चर्च में इसका महत्व

#### 1. प्रतीकात्मक अर्थः

- मसीही चर्च में "ओमर" को "पहले फल" (first fruits) के प्रतीक के रूप में देखा जाता है।
- यह इस बात का प्रतीक है कि मसीही विश्वासियों को अपना जीवन, समय और संसाधन पहले परमेश्वर को अर्पित करने चाहिए।

#### 2. पेंटेकोस्ट से संबंधः

- ओमर गिनती (50 दिनों तक गिनती) शावूत (Pentecost) तक चलती है।

- मसीही धर्म में, यह पवित्र आत्मा के आगमन और कलीसिया की स्थापना से जुड़ा है।

### 3. फसल उत्सव:

- कुछ चर्च इसे "फसल उत्सव" के रूप में मनाते हैं, जहां परमेश्वर की आशीषों के लिए धन्यवाद अर्पित किया जाता है।

### 4. मसीही यहूदी (Messianic Jews):

- मसीही यहूदी समुदाय ओमर अर्पण को यहूदी जड़ों के साथ जोड़ते हैं।
- यह उन्हें इसाएली परंपराओं और मसीही मान्यताओं को जोड़ने में मदद करता है।

## निष्कर्ष

ओमर अर्पण यह सिखाता है कि हमें अपने संसाधनों का पहला हिस्सा परमेश्वर को अर्पित करना चाहिए। यह परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता, आज्ञाकारिता और उनकी आशीषों की प्रतीक्षा का प्रतीक है। आज के मसीही चर्च में यह अधिक प्रतीकात्मक रूप से समझा और मनाया जाता है।

## बाइबल पद और उसका संदर्भ

### गिनती 28:26 (Numbers 28:26):

“और पहले फलों के दिन, अर्थात् जब तुम प्रभु प्रभु यहोवा के लिये नई अन्न-भेंट चढ़ाते हो, हफ्तों के पर्व में, तब तुम्हारे लिये एक पवित्र सभा होगी; तुम कोई भी दास्त्व का काम न करना।”

यह पद यहूदी पर्व **शवुत (Shavuot)** के बारे में है, जिसे हफ्तों का पर्व (Feast of Weeks) और पहले फलों का दिन (Day of First Fruits) भी कहा जाता है। यह पर्व उस समय मनाया जाता है जब नई गेहूं की फसल तैयार होती है। इस दिन परमेश्वर के लिये एक नई अन्न-भेंट (**New Meal Offering**) चढ़ाई जाती है। इसे पवित्र सभा के रूप में मनाने का आदेश दिया गया है, और इस दिन कोई भी काम नहीं किया जाना चाहिए।

---

## हिंदी में समझाइए

यह पद परमेश्वर के आदेश को बताता है कि शवुत के दिन एक पवित्र सभा रखी जाए और कोई दास्त्व का काम न किया जाए।

### 1. शवुत पर्व का महत्व:

- **शवुत, फसह (Passover)** के बाद **सात सप्ताह (7 weeks)** पूरे होने पर आता है। इसे फसल कटाई का त्योहार और नए अन्न की भेंट चढ़ाने का दिन माना जाता है।
- इस दिन, परमेश्वर को नए गेहूं (**New Wheat**) से बनी अन्न-भेंट चढ़ाई जाती है।

## 2. नई अन्न-भेंट (New Meal Offering):

- यह भेंट नई फसल की पहली उपज से बनती है।
- इसे "पहले फल" या "प्रथम फल" (First Fruits) के रूप में चढ़ाया जाता है।

## 3. पवित्र सभा:

- इस दिन सभी यहूदी लोग इकट्ठा होकर आराधना करते हैं और इसे पवित्र मानते हैं।
  - यह एक विशेष दिन होता है जब कोई भी काम नहीं किया जाता।
- 

## रब्बी की व्याख्या और यहूदी परंपराएँ

यहूदी परंपराओं और रब्बी के अनुसार, इस पद के मुख्य पहलुओं की गहराई से व्याख्या की गई है:

### 1. पहले फल (Bikkurim):

- यह दिन "पहले फलों का दिन" कहलाता है क्योंकि इस दिन किसान अपनी फसल के पहले फल मंदिर में परमेश्वर को अर्पित करते थे।
- विशेष तौर पर, दो रोटी की भेंट (Two Loaves of Bread) दी जाती थी, जो नई गेहूं की फसल से बनती थी।

- उदाहरण:

- यदि कोई किसान अपनी फसल काटता है, तो वह सबसे पहली उपज को मंदिर में चढ़ाने के लिये रखता था।
- यह परमेश्वर के प्रति धन्यवाद और समर्पण का प्रतीक है।

## 2. नई अन्न-भेंट (Minchah Chadasha):

- यह अन्न-भेंट नई फसल की पहली गेहूं से बनती थी।
- रब्बियों के अनुसार, यह भेंट पूरी तरह "नई" होनी चाहिए, जिसका कोई अन्य उपयोग पहले नहीं किया गया हो।

## 3. हफ्तों का पर्व (Shavuot):

- शवुत को "हफ्तों का पर्व" कहा जाता है क्योंकि यह फसह के बाद सात सप्ताह पूरे होने पर आता है।
- इसे अत्सेरेट (Atzeret) भी कहा जाता है, जिसका अर्थ है "ठहरना" या "विश्राम करना।"

## 4. ओमर की गिनती (Counting of the Omer):

- फसह के दूसरे दिन से शवुत तक 50 दिन गिने जाते हैं।
- यह गिनती फसह से शुरू होकर फसल की कटाई और नई फसल की भेंट तक चलती है।

## 5. तौरेत का दिया जाना:

- शवुत केवल फसल का त्योहार नहीं है। यह तौरेत (Torah) के दिये जाने का पर्व भी है।

- यह दिन यहूदी लोगों के लिये आध्यात्मिक नवीनीकरण (Spiritual Renewal) का प्रतीक है।
- 

## आधुनिक मसीही दृष्टिकोण

### 1. पेंटेकोस्ट से संबंध:

- मसीही परंपरा में, शवुत को पेंटेकोस्ट (Pentecost) कहा जाता है।
- यह वह दिन है जब पवित्र आत्मा (Holy Spirit) प्रेरितों (Apostles) पर उतरी, और मसीही चर्च का जन्म हुआ।

### 2. पहले फलों का प्रतीक:

- शवुत के "पहले फल" का महत्व मसीही जीवन में धन्यवाद और परमेश्वर को सर्वोत्तम अर्पित करने के रूप में देखा जाता है।
- यह सिखाता है कि हमें अपनी सबसे पहली और उत्तम चीजें परमेश्वर को अर्पित करनी चाहिए।

### 3. पवित्र आत्मा का प्रतीक:

- जैसे यहूदी परंपरा में इस दिन तौरेत मिली, मसीही परंपरा में इसे पवित्र आत्मा के दिये जाने का दिन माना जाता है।
- यह नये नियम (New Covenant) का आरंभ है।

### 4. आत्मिक फसल:

- मसीही विश्वास में, पेटेकोस्ट आत्मा की फसल का प्रतीक है, जहां लोग मसीह में विश्वास करते हुए परमेश्वर के राज्य में शामिल होते हैं।
- 

## सारांश

**गिनती 28:26** का संदेश यह है कि शवुत के दिन पवित्रता के साथ परमेश्वर को भेंट चढ़ाई जाए। यह पर्व फसल, तौरेत, और परमेश्वर के साथ नये संबंध का प्रतीक है। यहूदी और मसीही परंपराओं में इसका महत्व अलग-अलग तरीकों से प्रकट होता है, लेकिन दोनों परंपराओं में यह परमेश्वर की आशीष और उसके प्रति कृतज्ञता को प्रकट करता है।

P 46 Le.23:17 On the Two Loaves of bread Wave offering on Shavuot

### बाइबल पद:

#### लैब्यववस्था 23:17

"तुम अपने निवास स्थानों से दो रोटी लहराने के लिए ले आओ; वे दो एफा के दसवें भाग के बराबर उत्तम मैदा से बनी हों। उन्हें खमीर के साथ बेक किया जाए; वे प्रभु प्रभु यहोवा के लिए पहिलाँठे फल के रूप में होनी चाहिए।"

---

### हिंदी में समझाइए:

**1. "अपने निवास स्थानों से":**

इसका मतलब है कि यह रोटी इसाएल की भूमि से लाई जानी चाहिए, बाहर की भूमि से नहीं। यह बताता है कि यह भेट इसाएलियों के अपने घरों से आना चाहिए।

**2. "दो रोटी":**

भेट में दो रोटियाँ होनी चाहिए, और वे आकार और गुणवत्ता में समान होनी चाहिए।

**3. "दो एफा के दसवें भाग के बराबर":**

दोनों रोटियाँ कुल मिलाकर दो एफा के दसवें भाग के बराबर मैदा से बनती हैं। हर रोटी में एक एफा का दसवां हिस्सा उपयोग होता है।

**4. "उत्तम मैदा":**

यह गेंहू के आटे से बनी होनी चाहिए, जो जौ के आटे से अधिक उच्च माना जाता है।

**5. "खमीर के साथ बेक किया जाए":**

इस भेट को खमीर (यीस्ट) के साथ बनाना चाहिए। यह इसाएल के अनाज की कटाई के लिए धन्यवाद का प्रतीक है। खमीर को आमतौर पर बलि चढ़ाने में नहीं इस्तेमाल किया जाता, लेकिन यह अपवाद है।

**6. "प्रभु प्रभु यहोवा के लिए पहिलौठे फल":**

यह भेट नए अनाज की कटाई का पहला भाग था, जिसे प्रभु प्रभु यहोवा को समर्पित किया गया। यह प्रभु प्रभु यहोवा के प्रति कृतज्ञता और नई फसल के लिए धन्यवाद का प्रतीक है।

## रब्बियों की व्याख्या:

### 1. रशी (Rashi):

- यह भेट इसाएल की भूमि से होना चाहिए।
- यह रोटी लहराने का प्रतीक है, और यह सभी अन्न बलिदानों में सबसे पहला है।

### 2. रम्बन (Ramban):

- यह रोटी खमीर के साथ बनाई जाती है क्योंकि यह कटाई का धन्यवाद अर्पण है।
- खमीर न्याय (justice) का प्रतीक है, और यह दिखाता है कि न्याय और दया दोनों संतुलित हैं।

### 3. गुर आर्ये (Gur Aryeh):

- रोटी को ऊपर उठाकर और अलग करके लहराना दर्शाया गया है। यह प्रसाद सभी अन्न बलिदानों का पहला और सर्वोच्च है।

### 4. सफोर्नो (Sforno):

- यह प्रसाद नई गेहूं की फसल का पहला हिस्सा है। इसे प्रभु प्रभु यहोवा को अर्पित करने से शेष फसल इस्माएलियों के लिए उपयोग करने योग्य हो जाती है।

### 5. रव हिर्श (Rav Hirsch):

- रोटी खमीर के साथ बनाई जाती है, जो स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता का प्रतीक है।
- गेहूं मानव भोजन का प्रतीक है, जबकि जौ जानवरों के चारे का। इसलिए यह भेट गेहूं का

है।

## उदाहरणः

- अगर किसी किसान ने फसल कटाई शुरू की, तो वह पहले गेहूं से प्रभु प्रभु यहोवा के लिए रोटी बनाएगा।
- रोटी को लहराने का मतलब है कि वह इसे ऊपर उठाएगा और प्रभु प्रभु यहोवा को समर्पित करेगा।

## आज के मसीही चर्च में इसका महत्वः

### 1. धन्यवाद (Thanksgiving):

- यह भेट फसल के लिए परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता है। आज मसीही चर्च में यह सिद्धांत 'फर्स्ट फ्रूट' अर्पित करने के रूप में प्रकट होता है।

### 2. पहिलौठे फल (First Fruits):

- आज भी कई चर्च अपने धन, समय, और संसाधनों का पहला हिस्सा परमेश्वर को अर्पित करते हैं।

### 3. खमीर का महत्वः

- खमीर का उपयोग मसीही परंपरा में सुसमाचार के प्रसार के प्रतीक के रूप में किया जाता है।

- यह दिखाता है कि परमेश्वर का वचन किस तरह हमारे जीवन को बदल सकता है।

#### 4. पेंतेकोस्त (Pentecost):

- जिस दिन यह रोटी चढ़ाई जाती थी, वही दिन बाद में मसीही परंपरा में पवित्र आत्मा के आगमन के रूप में मनाया गया।
  - इस दिन चर्च ने परमेश्वर की आत्मा के साथ मसीही धर्म के प्रसार की शुरुआत की।
- 

#### निष्कर्ष:

- लैब्यववस्था 23:17 में दी गई रोटी प्रभु प्रभु यहोवा को समर्पित करने की प्रक्रिया को बताती है। यह इस्राएलियों के लिए कृतज्ञता और नई फसल के प्रतीक के रूप में महत्वपूर्ण थी।
- आज, मसीही परंपरा में यह पेंतेकोस्त और परमेश्वर को धन्यवाद अर्पित करने के विचार के साथ जुड़ा है।

P 47 Nu.29:1-2 On the Rosh HaShannah additional offering

**बाइबल पद और इसका हिंदी अनुवाद**

## गिनती 29:1-2:

1. "सातवें महीने के पहले दिन, तुम्हारे लिए एक पवित्र सभा होनी चाहिए। उस दिन तुम कोई साधारण काम न करना; यह तुम्हारे लिए **Shofar** (नरसिंग) बजाने का दिन होगा।
  2. और तुम प्रभु प्रभु यहोवा के लिए एक होमबलि अर्पित करोगे, जो प्रभु प्रभु यहोवा को सुखदायक सुंगध दे; वह एक बैल, एक मेदा और सात एक साल के निर्दोष मेमने होंगे।"
- 

## हिंदी में समझाइए

1. **सातवां महीना (तीशरी):**

यहाँ सातवां महीना यहूदी कैलेंडर के अनुसार तीशरी है, जो यहूदी नववर्ष **रोश हशाना** (Rosh Hashanah) का समय है।

2. **रोश हशाना का महत्व:**

यह दिन पवित्र सभा और **Shofar** (नरसिंग) बजाने का होता है। यह एक ऐसा दिन है जिसमें लोगों को आत्म-परीक्षा (self-examination) और मन फिराव (repentance) के लिए प्रेरित किया जाता है।

3. **बलिदान:**

यह दिन प्रभु प्रभु यहोवा के लिए विशेष बलिदान लाने का आदेश देता है। इसमें एक बैल, एक मेदा और सात निर्दोष मेमने चढ़ाए जाते हैं। इन बलिदानों का उद्देश्य परमेश्वर को प्रसन्न करना और आत्मिक शुद्धि के लिए होता था।

## रब्बी परंपराओं और व्याख्याओं में क्या कहा गया?

### 1. याद और न्याय का दिन (Day of Remembrance and Judgment):

- **अबर्बनेल (Abarbanel)** ने इसे "याद करने का दिन" कहा है। नरसिंगा बजाना लोगों को आत्मा जागृति और पश्चाताप के लिए प्रेरित करता है।
- **P'sikrah** के अनुसार, अगर रोश हशाना शब्बात (Sabbath) पर पड़े, तो नरसिंगा नहीं बजाया जाता। यह "याद करने का दिन" बनता है, लेकिन अन्य दिनों में इसे "नरसिंगा बजाने का दिन" कहते हैं।

### 2. नया निर्माण (New Creation):

- रब्बियों का कहना है कि इस दिन यहूदी समुदाय को नए सृजन के समान माना जाता है।
- **Yerushalmi** और **Midrash** के अनुसार, जब लोग पश्चाताप करते हैं, प्रभु प्रभु यहोवा उन्हें ऐसे देखते हैं जैसे वे नए सृजन के समान हों।
- **Kitzur Ba'al HaTurim** के अनुसार, बलिदान लाना पश्चाताप (*Teshuvah*) का प्रतीक है। अगर सच्चे दिल से पश्चाताप किया जाए, तो परमेश्वर इसे बलिदान के समान मानते हैं।

### 3. बलिदान के प्रतीक:

- **अबर्बनेल (Abarbanel)** ने बलिदानों को इस प्रकार समझाया:
  - **धार्मिक दृष्टिकोण से:** बैल अब्राहम का, मेदा इसहाक का, और सात मेमने याकूब और उनके बेटों के प्रतीक हैं।
  - **ज्योतिषीय दृष्टिकोण से:** बैल आकाशीय गोलार्ध का, मेदा तारों का

और सात मेमने ग्रहों के प्रतीक हैं।

#### 4. नरसिंगा (Shofar) का महत्व:

- *Torah Temimah* के अनुसार, नरसिंगा बजाना कोई शारीरिक काम नहीं, बल्कि एक बुद्धिमत्ता का कार्य है। यह दिन में ही किया जाता है और रात में नहीं।
  - रब्बी हिर्श के अनुसार, नरसिंगा परमेश्वर की ओर लौटने की आवाज है।
- 

### आज के मसीही चर्च में इसका क्या महत्व है?

हालांकि आज के मसीही चर्च यहूदी रीति-रिवाजों को नहीं मानते, लेकिन रोश हशाना और

गिनती 29:1-2 की कुछ गूढ़ शिक्षाएं उनके लिए प्रेरणादायक हो सकती हैं:

#### 1. आत्मिक नवीनीकरण (Spiritual Renewal):

- यहूदियों के लिए नया साल नया सृजन दर्शाता है। मसीही विश्वास में इसे "नए जन्म" (new birth) के रूप में देखा जाता है, जो मसीह में विश्वास के द्वारा संभव है।

#### 2. पश्चाताप और आत्म-परीक्षा (Repentance and Reflection):

- यह दिन मन फिराव का आत्मान करता है, जो मसीही विश्वास के पापों का अंगीकार (*confession of sins*) और आत्मिक बढ़ोत्तरी से मेल खाता है।

#### 3. नरसिंगा की ध्वनि (Sounding the Alarm):

- नरसिंगा को चेतावनी और जागरण के प्रतीक के रूप में देखा जा सकता है। यह परमेश्वर की आवाज़ और उसके उद्देश्य पर ध्यान केंद्रित करने की याद दिलाता है।

#### 4. परमेश्वर की राजगद्दी पर ध्यान (God's Kingship):

- जैसा कि अबर्बनेल कहते हैं, यह परमेश्वर को याद करने और उसे न्यायाधीश और राजा के रूप में पहचानने का दिन है। मसीही विश्वास में यह ईश्वर की सार्वभौमिकता और न्याय के विचार से मेल खाता है।

#### 5. बाइबल पर्वों का संबंध:

- कुछ मसीही चर्च यह मानते हैं कि बाइबल के पर्व परमेश्वर की उद्धार योजना को बेहतर समझने का एक तरीका हो सकते हैं।
- 

#### निष्कर्षः

गिनती 29:1-2 रोश हशाना की पृष्ठभूमि में आत्मा जागरण, मन फिराव, और आत्मिक शुद्धि की एक महत्वपूर्ण शिक्षा देता है। रब्बियों ने इस दिन को न्याय और नवीनीकरण से जोड़ा है। मसीही चर्च, हालांकि, इन बलिदानों को नहीं मानते, लेकिन इसके आध्यात्मिक पहलुओं, जैसे आत्म-परीक्षा, पश्चाताप और आत्मिक नवीनीकरण को अपनी परंपरा में देख सकते हैं।

P 48 Nu.29:7-8 On the Yom Kippur additional offering

<sup>7</sup> फिर उसी सातवें महीने के दसवें दिन को तुम्हारी पवित्र सभा हो; तुम अपने अपने प्राण को दुःख देना, और किसी प्रकार का कामकाज न करना;

<sup>8</sup> और प्रभु प्रभु यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्ध देने को होमबलि; अर्थात् एक बछड़ा, एक मेढ़ा, और एक एक वर्ष के सात भेड़ के बच्चे चढ़ाना; फिर ये सब निर्दोष हों;

यह पद यौम किप्पूर (प्रायश्चित्त का दिन) के बारे में है। इसे इस्राएलियों के लिए पश्चाताप

और आत्म-परिशोधन का सबसे महत्वपूर्ण दिन माना जाता था।

### 1. सातवें महीने का दसवां दिन:

यह महीना तीशरी (Tishrei) है, जो यहूदियों के नागरिक वर्ष का पहला महीना है। धार्मिक वर्ष के

अनुसार इसे सातवां महीना कहा गया है, क्योंकि धार्मिक कैलेंडर निसान से शुरू होता है।

**उदाहरण:** जैसे वित्तीय वर्ष और कैलेंडर वर्ष अलग-अलग हो सकते हैं, वैसे ही यह यहूदी कैलेंडर के संदर्भ में है।

### 2. पवित्र महासभा (Holy Convocation):

यह दिन पवित्र सभा का दिन था, जिसमें सभी यहूदी मिलकर परमेश्वर की आराधना करते थे।

यह दिन सामूहिक प्रायश्चित्त का प्रतीक था।

### 3. अपने आप को दीन करना (Afflict Your Souls):

इस वाक्यांश का अर्थ उपवास करना है। यह केवल भोजन त्यागना नहीं है, बल्कि आत्म-

विश्लेषण, पश्चाताप, और परमेश्वर के सामने अपनी गलतियों को स्वीकार करना है।

#### उदाहरण:

किसी ने झूठ बोला या किसी के साथ अन्याय किया हो, तो इस दिन वह अपनी आत्मा को

विनग्र बनाकर उस गलती को सुधारने का प्रण लेता है।

### 4. कोई काम नहीं करना (Do No Work):

इस दिन किसी भी प्रकार का काम करने की मनाही थी। इसका उद्देश्य था कि लोग पूर्णतः

परमेश्वर की आराधना और आत्मा की शुद्धि में ध्यान केंद्रित करें।

## रब्बियों की व्याख्या:

### 1. चिज़कुनी (Chizkuni):

- उन्होंने बताया कि "यह सातवां महीना" निसान से गिना जाता है।
- उन्होंने उदाहरण दिया कि राजा सुलैमान के समय मंदिर का समर्पण भी इसी महीने में हुआ था।

### 2. हक्तव वेहकबाला (HaKtav VeHaKabalah):

उन्होंने इस दिन के महत्व को यह कहकर समझाया कि इसे "दसवें दिन" न कहकर "दसवें" के रूप में संदर्भित किया गया। यह दिन बाकी दिनों से अलग और पवित्र है।

### 3. हामेक दवार (Haamek Davar):

- "यह सातवां महीना" शब्द रौश हशाना (यहूदी नया साल) से जुड़ा है।
- उन्होंने बताया कि इस दिन काम करने से मना किया गया ताकि लोग परमेश्वर के प्रति पूरी तरह समर्पित रहें।

### 4. रल्बाग (Ralbag):

- उन्होंने कहा कि यौम किष्पूर के नियम पहले से समझाए गए हैं।
- यह अध्याय बलिदानों की विशेषता पर प्रकाश डालता है।

### 5. रवी हिर्श (Rav Hirsch):

- उन्होंने कहा कि यह दिन introspection (आत्म-विश्लेषण) के दिनों का समाप्त है।

- उपवास और काम न करने का उद्देश्य था, लोगों को उनकी निर्भरता और परमेश्वर की कृपा की आवश्यकता का अहसास दिलाना।
- बलिदानों का अर्थ था अपने आपको परमेश्वर की सेवा और मानवता के प्रति समर्पित करना।

#### 6. इब्र एज़रा (Ibn Ezra):

- उन्होंने बलिदानों के नियमों में उच्च याजक (High Priest) के बलिदानों को बाकी बलिदानों से अलग बताया।
- 

#### यौम किप्पूर के बलिदान (Sacrifices):

गिनती 29:8 के अनुसार, इस दिन निम्न बलिदान चढ़ाए जाते थे:

- एक बछड़ा (young bull)
- एक मेदा (ram)
- सात निर्दोष भेड़ें (lambs)
- एक बकरी (he-goat) पापबलि के रूप में।

#### रवी हिर्श:

इन बलिदानों का उद्देश्य था परमेश्वर के साथ अपने संबंध को नवीनीकृत करना और अपने दायित्वों को समझना।

---

#### आज के मसीही चर्च में इसका महत्व:

**यौम किप्पूर के बलिदान और उपवास मसीही विश्वास में पूरी तरह से प्रभु यीशु मसीह के बलिदान द्वारा पूर्ण हो गए हैं।**

### **प्रायश्चित्त का दिन (Day of Atonement):**

मसीही विश्वास में प्रभु यीशु मसीह को परमेश्वर ने संसार के पापों का प्रायश्चित्त बनाने के लिए भेजा।

**इब्रानियों 10:10:** "हम एक ही बार प्रभु यीशु मसीह के शरीर के बलिदान के द्वारा पवित्र किए गए हैं।"

### **उपवास और आत्म-विश्लेषण:**

मसीही उपवास लेंट (Lent) के दौरान होता है, जो पवित्र सप्ताह (Holy Week) तक चलता है।  
यह आत्म-विश्लेषण और प्रभु प्रभु यीशु के बलिदान पर ध्यान केंद्रित करने का समय है।

### **चिंतन और क्षमा:**

यौम किप्पूर के संदेश के अनुसार, मसीही लोग अपने जीवन में क्षमा मांगने और देने को प्राथमिकता देते हैं।  
**उदाहरण:** जब मसीही प्रार्थना करते हैं, "हमारे अपराध क्षमा कर, जैसे हमने दूसरों को क्षमा किया।" (मत्ती 6:12)

### **समाप्ति:**

**गिनती 29:7 हमें सिखाता है कि आत्म-विश्लेषण, पश्चाताप, और परमेश्वर के प्रति**

**समर्पण कितना महत्वपूर्ण है। यह दिन, चाहे यहूदी परंपरा में हो या मसीही विश्वास में, पवित्रता और आत्मा की शुद्धि के महत्व को उजागर करता है।**

## P 49 Le.16 On the service of Yom Kippur, Avodah (Full Chapter)

1. जब हारून के दो पुत्र प्रभु प्रभु यहोवा के सामने समीप जाकर मर गए, उसके बाद प्रभु प्रभु यहोवा ने मूसा से बातें कीं;

- **व्याख्या:** यह पद प्रभु प्रभु यहोवा की पवित्रता और मानव के पाप की गंभीरता को दर्शाता है। हर कोई परमेश्वर की पवित्र उपस्थिति में नहीं आ सकता। यौम किप्पुर पर केवल महायाजक (हाई प्रीस्ट) ही विशेष रीति से अंदर जा सकता था।

### 2. लैव्यव्यवस्था 16:5-10

दो बकरों का चुनाव होता है—एक ”प्रभु प्रभु यहोवा के लिए” और दूसरा ”अज़ाज़ेल के लिए।” महायाजक उन दोनों बकरों पर चिट्ठी डालता था। एक को बलि चढ़ाया जाता और दूसरे को जंगल में छोड़ दिया जाता।

- **व्याख्या:**
  - पहला बकरा बलिदान के लिए चुना जाता था जो पापों का प्रायशिच्छा करता।
  - दूसरा बकरा, जिसे ”अज़ाज़ेल” के लिए छोड़ा जाता था, को महायाजक जंगल में छोड़ देता था। यह प्रतीक था कि हमारे पाप हमारे जीवन से हटा दिए गए हैं।

### 3. लैब्यवस्था 16:20-22

महायाजक पापों को स्वीकारते हुए दूसरे बकरे (अज़ाज़ेल) पर हाथ रखता और उसे ज़ंगल भेज देता।

- **व्याख्या:** यह पापों को लोगों से दूर ले जाने का प्रतीक था।
- 

## 2. रब्बियों की व्याख्या (Jewish Rabbinic Interpretations)

### उदाहरण और व्याख्याएं

#### 1. अज़ाज़ेल का अर्थः

- कुछ रब्बियों के अनुसार, "अज़ाज़ेल" एक रेगिस्तानी स्थान है।
- कुछ इसे दुष्ट आत्मा (demonic force) का प्रतीक मानते हैं।
- यह बकरा इस बात का संकेत है कि हमारे पाप हमें छोड़कर दूर हो जाते हैं।

#### 2. महायाजक की पोशाकः

- सोने के वस्त्र उतारकर सादे सफेद वस्त्र पहनना यह दर्शाता है कि परमेश्वर के सामने विनम्रता और पवित्रता से आना चाहिए।
- रब्बियों ने इसे "पापों से मुक्त होने का प्रतीक" माना।

#### 3. लाल धागे का सफेद होना:

- "यशायाह 1:18" के आधार पर: "यदि तुम्हारे पाप लाल रंग के भी हों, तो वे बर्फ के समान सफेद हो जाएंगे।"
- लाल धागे का सफेद होना यह संकेत देता था कि लोगों के पाप क्षमा हो गए।

#### 4. अध्याय की दोहरावः

- "हारून के पुत्रों की मृत्यु" का बार-बार उल्लेख यह याद दिलाता है कि पवित्र स्थान में

प्रवेश की गंभीरता को हल्के में नहीं लेना चाहिए।

## अतिरिक्त बिंदु

- **रक्त का छिड़िकाव:** महायाजक ”एक, एक और एक, एक और दो...“ गिनते हुए रक्त का छिड़िकाव करता। यह प्रक्रिया संख्या और पवित्रता का महत्व दिखाती है।
  - **धूप जलाना:** महायाजक का पवित्र स्थान में धूप चढ़ाना आध्यात्मिक और भौतिक संसार के बीच के संबंध का प्रतीक था।
- 

## 3. आधुनिक मसीही चर्च की व्याख्या

### मसीह के द्वारा पूर्ति

#### 1. प्रभु यीशु के बलिदान का प्रतीकः

- यौम किप्पुर के बलिदान और अज्ञाज्ञेल का बकरा मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान का प्रतीक है।
- **इब्रानियों 9:12:** ”वह बकरों और बछड़ों के लहू के द्वारा नहीं, परन्तु अपने ही लहू के द्वारा एक ही बार पवित्र स्थान में प्रवेश कर गया और अनन्त छुटकारा प्राप्त किया।”

#### 2. पापों का दूर किया जाना:

- अज्ञाज्ञेल का बकरा मसीह के द्वारा हमारे पापों को दूर किए जाने का प्रतीक है।
- **1 पतरस 2:24:** ”उसने आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ाया।”

#### 3. धूप और प्रार्थना का महत्वः

- आधुनिक चर्च में, धूप चढ़ाने के बजाय प्रार्थना को आत्मिक धूप माना जाता है।
- **प्रकाशितवाक्य 8:3-4:** ”धूप की धुआँ प्रार्थनाओं के साथ परमेश्वर के पास पहुँचती

है।”

#### 4. पवित्रता और विनम्रता:

- यौम किप्पुर में महायाजक की तैयारी यह सिखाती है कि हमें पवित्र और नम्र होकर  
मसीह के पास आना चाहिए।

#### चर्च में इसका महत्व

- **प्रायश्चित्त का दिन:** यह मसीह के बलिदान को याद करने का दिन है।
- **पवित्र आत्मा के माध्यम से पश्चाताप:** चर्च में पश्चाताप और आत्मा की शुद्धता पर जोर  
दिया जाता है।
- **प्रभु भोज (Lord's Supper):** मसीही लोग प्रभु यीशु के बलिदान को स्मरण करने के लिए  
यह अनुष्ठान करते हैं।

<sup>2</sup>और प्रभु प्रभु यहोवा ने मूसा से कहा, “अपने भाई हारून से कह कि सन्दूक के ऊपर के प्रायश्चित्तवाले ढकने के आगे, बीचवाले परदे के अन्दर, पवित्रस्थान में हर समय न प्रवेश करे, नहीं तो मर जाएगा; क्योंकि मैं प्रायश्चित्तवाले ढकने के ऊपर बादल में दिखाई दूँगा।

लैब्यवस्था 16:2 का हिंदी में अर्थ, रब्बियों की व्याख्या, और आज के मसीही चर्च में इसका महत्व

#### पद का सरल अर्थ:

लैब्यवस्था 16:2 में प्रभु प्रभु यहोवा ने मूसा से कहा कि वह अपने भाई हारून को बताएं कि वह ”पर्दे के भीतर पवित्र स्थान“ में किसी भी समय प्रवेश न करे। यह परमेश्वर की पवित्र उपस्थिति के प्रति गंभीर चेतावनी है। यह पद यह सिखाता है कि परमेश्वर के निकट जाने के लिए तैयारी, पवित्रता

**और सीमाओं का पालन करना आवश्यक है।**

---

## रब्बियों की व्याख्या

### 1. तीन प्रकार की चेतावनियाँ

रब्बियों का मानना है कि इस पद में केवल एक नहीं, बल्कि तीन प्रकार की चेतावनियाँ दी गई हैं:

- **पहली चेतावनी:** हारून को सामान्य दिनों में पवित्र स्थान में प्रवेश न करने के लिए मना किया गया।
- **दूसरी चेतावनी:** यदि वह अनुचित तरीके से प्रवेश करेगा, तो उसकी मृत्यु हो जाएगी।
- **तीसरी चेतावनी:** यह चेतावनी उनके बेटों नादाब और अबीूह के उदाहरण से है, जिन्होंने गलत तरीके से परमेश्वर के पास जाने की कोशिश की और मारे गए।

### उदाहरण:

रब्बी एलाज़ार बेन अजारिया ने इसे एक चिकित्सक (डॉक्टर) के उदाहरण से समझाया।

पहला डॉक्टर कहता है, "यह चीज़ खतरनाक है।"

दूसरा डॉक्टर कहता है, "यह खतरनाक है, और इससे मृत्यु हो सकती है।"

तीसरा डॉक्टर कहता है, "यह खतरनाक है। मेरे सामने किसी और ने इसे खाकर अपनी जान गंवा दी।"

यह दिखाता है कि चेतावनियाँ क्रमशः गंभीर होती जाती हैं ताकि व्यक्ति इसे अनदेखा न करे।

### 2. "किसी भी समय" (גַּע-לְבָב)

इस वाक्यांश को रब्बी कई तरीकों से समझते हैं:

- सामान्य दिनों में हारून को मना किया गया था।
- यहाँ तक कि यौम किप्पुर (प्रायश्चित्त का दिन) पर भी, वह केवल तब प्रवेश कर सकता है जब वह सही विधि से तैयार हो।

**उदाहरण:** मल्बीम रब्बी कहते हैं कि यदि यह हर दिन के लिए मना होता, तो शब्द "מִן־לְבָבֶךָ" (हर दिन) उपयोग होता। लेकिन यहाँ "גַּע־לְבָבֶךָ" (किसी भी समय) लिखा है, जो एक विशिष्ट समय को इंगित करता है।

### 3. पवित्र स्थान और पर्दा (Holy Place & Veil)

रब्बियों ने "पवित्र स्थान" (पर्दे के भीतर) और "सन्दूक के ढक्कन के सामने" (Ark's Cover) के बीच भिन्नता बताई।

- "पवित्र स्थान" बाहरी अभ्यारण्य है।
- "पर्दे के भीतर" वह जगह है जिसे पवित्रतम स्थान (Holy of Holies) कहा जाता है।
- केवल सन्दूक के सामने जाने पर ही मृत्यु दंड का नियम लागू होता था।

### 4. "बादल में मैं प्रकट होता हूँ"

"बादल" (בָּאָדָל) का मतलब है परमेश्वर की महिमा।

- कुछ रब्बियों के अनुसार, यह धूप (incense) के बादल को भी दर्शाता है, जो महायाजक द्वारा पवित्रतम स्थान में प्रवेश के समय बनाया जाता था।
- मल्बीम का कहना है कि यह "बादल" धूप के धुएँ का प्रतीक है।

**उदाहरण:** रशी की व्याख्या के अनुसार, परमेश्वर बादल के माध्यम से प्रकट होते हैं ताकि उनकी महिमा को प्रत्यक्ष रूप में न देखा जाए।

### 5. कपपोरत (Mercy Seat)

"कपपोरत" सन्दूक के टक्कन को कहते हैं।

- यह प्रायश्चित्त और दया का प्रतीक है।
  - यह वह स्थान था जहाँ महायाजक परमेश्वर के सामने बलिदान का खून चढ़ाता था।
- 

## आज के मसीही चर्च में महत्व

### 1. परमेश्वर की पवित्रता (God's Holiness)

यह पद यह सिखाता है कि परमेश्वर की उपस्थिति में जाने के लिए पवित्रता और सम्मान अनिवार्य है।

आज भी मसीही चर्च में यह मान्यता है कि परमेश्वर की उपस्थिति को हल्के में नहीं लिया जाना चाहिए।

### 2. मसीह: महायाजक और मध्यस्थ (Christ as High Priest & Mediator)

नए नियम के अनुसार, प्रभु यीशु मसीह ही हमारे महायाजक हैं, जिन्होंने अपने बलिदान के द्वारा हमें परमेश्वर के साथ मेल कराया।

इब्रानियों की पुस्तक (Hebrews) में बताया गया है कि मसीह "परदे के पीछे" गए और हमारे लिए प्रायश्चित्त किया।

### 3. सभी के लिए खुला प्रवेश (Access through Christ)

- पुराने नियम में केवल महायाजक को पवित्रतम स्थान में प्रवेश की अनुमति थी।
- नए नियम में, मसीही विश्वासियों को यह विश्वास है कि मसीह के द्वारा सबको परमेश्वर की उपस्थिति में जाने का अधिकार है।

#### 4. आदर और भय (Reverence and Awe)

- यद्यपि मसीही विश्वासियों को परमेश्वर की उपस्थिति में जाने की स्वतंत्रता है, लेकिन आज भी परमेश्वर के प्रति आदर और भय आवश्यक है।
- उदाहरण के लिए, प्रार्थना और आराधना में परमेश्वर के प्रति गंभीरता और विनम्रता को बनाए रखना।

#### 5. प्रतीकात्मकता (Symbolism)

- पवित्र स्थान और सन्दूक को मसीही धर्म में आत्मा, स्वर्गीय स्थान, या ईश्वर की उपस्थिति का प्रतीक माना जाता है।
- 

#### निष्कर्ष (Summary)

लैब्यववस्था 16:2 परमेश्वर की पवित्रता, मानव की सीमाओं, और परमेश्वर के निकट आने के सही तरीकों के बारे में सिखाता है। रब्बियों ने इस पद को कई स्तरों पर समझाया है, और उनका उद्देश्य है कि हम परमेश्वर की उपस्थिति में जाने से पहले उसकी पवित्रता को पहचानें।

मसीही चर्च में, यह पद प्रभु यीशु मसीह के बलिदान और हमारी परमेश्वर तक पहुँच को समझने में मदद करता है। हालाँकि आज प्राचीन रीति-विधियाँ नहीं अपनाई जातीं, लेकिन परमेश्वर की महिमा और पवित्रता का आदर आज भी उतना ही प्रासंगिक है।

<sup>3</sup>जब हारून पवित्रस्थान में प्रवेश करे तब इस रीति से प्रवेश करे, अर्थात् पापबलि के लिये एक बछड़े को और होमबलि के लिये एक मेढ़े को लेकर आए।

यह वाक्य "बज़ोत यवो अहरोन एल हाकोदश" (अर्थ: "इससे हारून पवित्र स्थान में प्रवेश करेगा") लैब्यववस्था 16:3 में पाया जाता है। यह वाक्य उन निर्देशों का हिस्सा है जो महायाजक (High Priest) को पवित्र स्थान (Holy of Holies) में प्रवेश करने के लिए दिए गए थे। यह स्थान इसाएल के पापों के प्रायरिचेत्त (atonement) के लिए सबसे पवित्र स्थान था।

यहाँ "बज़ोत" (בָּזֹאת) शब्द और इस आदेश के विभिन्न पहलुओं पर कई रब्बियों और व्याख्याताओं ने प्रकाश डाला है। नीचे इनके संदर्भ, आधुनिक मसीही चर्च में इसकी प्रासंगिकता और हिंदी में विस्तृत व्याख्या दी गई है।

---

## 1. "בָּזֹאת" का मतलब और उसकी गिनती (Gematria)

"बज़ोत" शब्द का अंक मान (गिनती) 410 है। यह पहले मंदिर (First Temple) के 410 वर्षों का संकेत माना जाता है।

- **रब्बियों की व्याख्या:**

कुछ रब्बी मानते हैं कि यह संकेत करता है कि महायाजक द्वारा पवित्र स्थान में प्रवेश करने की सही विधि केवल पहले मंदिर के समय में लागू होती थी।

- दूसरे मंदिर के समय में यह क्रिया इतनी पवित्र नहीं थी क्योंकि वहाँ अभिषेक के लिए पवित्र तेल (Holy Anointing Oil) उपलब्ध नहीं था।

---

## 2. "बज़ोत" के आध्यात्मिक अर्थ

"बज़ोत" केवल भौतिक बलिदानों (sacrifices) की ओर नहीं बल्कि नैतिक और धार्मिक गुणों (merits) और आज्ञाओं (commandments) को भी इंगित करता है।

- टोराह और आज्ञाओं का महत्व:

रब्बी बताते हैं कि महायाजक केवल बलिदानों के द्वारा ही नहीं, बल्कि इस्राएल की आज्ञाओं और उनकी धार्मिकता के कारण भी पवित्र स्थान में प्रवेश करता था।

- उदाहरण:

- शब्बत (Sabbath): शब्बत का पालन करना एक महान गुण माना जाता है।
  - टोरा का अध्ययन: टोरा का अध्ययन परमेश्वर की उपस्थिति को बुलाने के बराबर है।
- 

### 3. बलिदानों का महत्व और प्रतीकात्मकता

पशु बलिदानों का गहरा प्रतीकात्मक अर्थ है:

- बैल (Bull/בָּקָר):

- अर्थ और प्रतीक: बैल अब्राहम (Abraham) का प्रतीक है, जिनके कार्यों ने सकारात्मक आज्ञाओं (*mitzvot aseh*) को सुदृढ़ किया।
- बलिदान के माध्यम से यह दिखाया जाता है कि महायाजक को अपने पापों के लिए पहले प्रायश्चित्त करना पड़ता है।

- मेंदा (Ram/לְאַיִל):

- अर्थ और प्रतीक: मेंदा इसहाक (Isaac) का प्रतीक है, और यह नकारात्मक आज्ञाओं (*mitzvot lo ta'aseh*) का प्रतिनिधित्व करता है।
- यह महायाजक की भूमिका को इस्राएल के लोगों के बीच एक नेता और मार्गदर्शक के रूप में दर्शाता है।

- दो बकरियाँ (Two Goats):

- यह बकरियाँ याकूब (Jacob) का प्रतीक मानी जाती हैं।
  - एक बकरी बलिदान के लिए और दूसरी बकरी आज के "बलि का बकरा" (scapegoat) की परंपरा को दर्शाती है।
- 

## 4. यौम किप्पुर (Yom Kippur) के लिए प्रवेश का समय

- कब प्रवेश संभव था?

महायाजक केवल यौम किप्पुर (प्रायशिच्त का दिन) पर ही पवित्र स्थान में प्रवेश कर सकता था।

- रब्बियों का मानना है कि "बज़ोत" का अर्थ है कि प्रवेश केवल तब हो सकता है जब सही विधियों का पालन किया जाए।
- 

## 5. आधुनिक मसीही चर्च में इसका क्या अर्थ है?

यद्यपि आधुनिक मसीही चर्च सीधे तौर पर लैब्यवस्था 16 की रस्मों को नहीं अपनाते हैं, इसके आध्यात्मिक और धार्मिक सिद्धांत अभी भी प्रासंगिक हैं।

### (i) मसीह को महायाजक मानना (Christ as the High Priest)

- मसीही विचारधारा के अनुसार, प्रभु यीशु मसीह परम महायाजक हैं।
- वे "स्वर्गीय पवित्र स्थान" (heavenly Holy of Holies) में अपने बलिदान के द्वारा एक बार में और हमेशा के लिए गए, न कि जानवरों के रक्त के साथ, बल्कि अपने स्वयं के रक्त के साथ।

"लेकिन मसीह, जो आनेवाली अच्छी बातों का महायाजक है, ... अपने ही लहू से, एक बार ही

**पवित्रस्थान में प्रवेश किया, और अनन्त छुटकारा प्राप्त किया।"**

(इब्रानियों 9:11-12)

### (ii) प्रायश्चित्त (Atonement)

- बलिदान और प्रायश्चित्त का सिद्धांत, जो लैब्यव्यवस्था 16 में प्रमुख है, मसीही विश्वास के केंद्र में है।
- मसीही विचार में, प्रभु यीशु ने सभी पापों का प्रायश्चित्त अपने बलिदान के द्वारा किया।

### (iii) परमेश्वर तक पहुंच (Access to God)

- लैब्यव्यवस्था 16 में केवल महायाजक को पवित्र स्थान में जाने का अधिकार था।
- मसीही धर्म सिखाता है कि अब सभी विश्वासियों को प्रभु यीशु के माध्यम से परमेश्वर तक सीधा पहुंच है।

"तो आओ, हम विश्वास के पूरे भरोसे के साथ अनुग्रह के सिंहासन के पास जाएं।"

(इब्रानियों 4:16)

## 6. रब्बियों की अन्य अंतर्दृष्टि

- टोराह अध्ययन का महत्व:
  - जहाँ टोराह का अध्ययन होता है, वहाँ ईश्वर की उपस्थिति होती है।
  - "यदि किसी भोज में टोराह चर्चान हो, तो उसे 'मृतकों का बलिदान' (*sacrifices of the dead*) कहा जाता है।"
- तीन चीजें बुरी दशा को समाप्त करती हैं:
  - प्रार्थना (Prayer), दान (Charity), और पश्चाताप (Repentance)।

- यह तीनों "बज़ोत" शब्द के मूल्य (410) से जुड़े हैं।
- 

## उदाहरण और निष्कर्ष

- लैव्यव्यवस्था 16 का यह अध्याय हमें बताता है कि पवित्र स्थान में प्रवेश केवल आत्म-शुद्धि, आज्ञा पालन और धार्मिकता के माध्यम से ही संभव है।
- यह मसीही और यहूदी दोनों परंपराओं में प्रायश्चित्त, बलिदान और परमेश्वर की निकटता के महत्व को दर्शाता है।

<sup>4</sup>वह सनी के कपड़े का पवित्र अंगरखा, और अपने तन पर सनी के कपड़े की जाँधिया पहिने हुए, और सनी के कपड़े का कटिबन्द, और सनी के कपड़े की पगड़ी भी बाँधे हुए प्रवेश करें; ये पवित्र वस्त्र हैं, और वह जल से स्नान करके इन्हें पहिने।

### योम किपुर पर उच्च याजक के वस्त्रों का महत्व

योम किपुर पर उच्च याजक (कohen gadol) ने जो चार लिनन (लिन) वस्त्र पहने, वे उनके साधारण और पवित्रता को दर्शाते थे। यह वस्त्र सोने से बने अन्य आठ वस्त्रों से भिन्न थे, जिन्हें वह सामान्य रूप से अपने धार्मिक कर्तव्यों में पहनते थे। इन वस्त्रों का उद्देश्य विशेष रूप से पापों की क्षमा और परमेश्वर से शुद्धता प्राप्त करना था।

### चार लिनन वस्त्र

योजना में, उच्च याजक ने चार विशेष लिनन वस्त्र पहने थे, जब वह पवित्र स्थान (Holy of Holies) में प्रवेश करते थे:

1. कुर्ता (Tunic)

## 2. पैंट (Trousers)

### 3. कम्मल (Belt)

### 4. मिटर (Mitre)

यह चार वस्त्र पूरी तरह से लिनन से बने थे, जो सफेद होते थे और इनमें सोने या किसी अन्य धातु का उपयोग नहीं किया गया था।

## लिनन का चुनाव और महत्व

लिनन को पवित्रता और विनप्रता का प्रतीक माना जाता है। यह पदार्थ पृथ्वी से आता है, जबकि ऊन जीवों से प्राप्त होता है, इसलिए लिनन को अधिक शुद्ध माना जाता है। इसके सफेद रंग का अर्थ है माफी और निर्दोषता।

## सोने का उपयोग क्यों नहीं किया गया?

1. **सोने के साथ पाप का संबंध:** सोने को बछड़े के पाप (Golden Calf) से जोड़ा गया है। जब उच्च याजक परमेश्वर से क्षमा की प्रार्थना कर रहा था, तो सोने का उपयोग पाप की याद दिला सकता था। "एक अभियोगी (accuser) रक्षा नहीं कर सकता" (אינו יגיא רשות נעשה) का सिद्धांत इस तथ्य को बल देता है कि पवित्र स्थान में सोने का उपयोग अनिवार्य नहीं था।

2. **विनप्रता:** लिनन के वस्त्र सोने के विपरीत सरल और विनप्र थे, जो परमेश्वर के सामने शुद्धता और विनप्रता के प्रतीक थे।

## रब्बियों के विचार

कुछ प्रमुख रब्बियों ने इन वस्त्रों के बारे में कई विश्लेषण दिए:

1. **राशि:** राशि के अनुसार, उच्च याजक ने पवित्र स्थान में केवल चार लिनन वस्त्र पहने थे,  
जबकि सोने से बने आठ वस्त्र उन्होंने सामान्य धार्मिक कार्यों के दौरान पहने थे। इसके अलावा, वह बताते हैं कि ये वस्त्र मन्दिर के खजाने से खरीदे गए थे।
2. **रामबान:** रामबान का कहना है कि "क्रोदेश" (पवित्र) शब्द से यह संकेत मिलता है कि उच्च याजक के सभी वस्त्र मन्दिर के खजाने से आने चाहिए थे, और यही सिद्धांत सामान्य याजकों पर भी लागू होता है।
3. **इन्ह एज़रा:** इन्ह एज़रा का मानना है कि पवित्र स्थान में वस्त्रों का अद्भुत होना यह दिखाता है कि दूसरे मन्दिर याजक ने उन वस्त्रों का सही उपयोग किया जो उन्हें विशेष रूप से उस सेवा के लिए निर्धारित थे।
4. **कली याकार:** कली याकार ने यह बताया कि चार वस्त्रों का उद्देश्य विभिन्न पापों की क्षमा करना है। कुर्ता हत्या के पाप के लिए, पैंट अवैध संबंधों के लिए, बेल्ट अपवित्र विचारों के लिए और मिटर घमंड के लिए है।
5. **ऑर हचाइम:** उनका कहना है कि "क्रोदेश" शब्द से यह संकेत मिलता है कि इन वस्त्रों को मन्दिर के खजाने से खरीदा गया था, ताकि उच्च याजक को अपने व्यक्तिगत संपत्ति से इन वस्त्रों को न खरीदने दिया जाए।
6. **मालबिम:** मालबिम ने यह भी बताया कि जब तर्क दिया गया हो तो अंत में दिए गए शब्दों में दो व्याख्याएँ हो सकती हैं। उनका मानना था कि इन वस्त्रों का हर रूप समान पवित्रता का प्रतीक है।
7. **रव हिर्ष:** रव हिर्ष के अनुसार, ये वस्त्र उच्च याजक की आंतरिक शुद्धता की आवश्यकता

को दर्शाते हैं। इन वस्त्रों का पहनना एक प्रेरणा है कि हम अपनी आध्यात्मिक जीवन में शुद्धता की ओर अग्रसर हों।

## रिट्रॉल स्नान और वस्त्र परिवर्तन

योम किपुर के दिन, उच्च याजक को हर बार जब वह वस्त्र बदलते थे, एक स्नान करना पड़ता था और हाथ और पैर धोने होते थे। दिन में पांच बार स्नान और दस बार हाथ-पैर धोने का अनुष्ठान किया जाता था, जो इस तथ्य को दर्शाता है कि शुद्धता और तैयारी के बिना परमेश्वर के सामने आना नहीं होता।

## मसीही दृष्टिकोण

न्यू टेस्टामेंट के अनुसार, प्रभु यीशु को अंतिम उच्च याजक के रूप में चित्रित किया गया है। हालांकि मसीही चर्च में सीधे लिनन वस्त्रों की कोई परंपरा नहीं है, फिर भी लेंट के समय में कई चर्च साधारण सफेद वस्त्र पहनने को एक प्रतीक के रूप में उपयोग करते हैं, जो विनम्रता, पश्चाताप और आत्मसमर्पण को दर्शाता है।

- शुद्धता का प्रतीक:** कुछ मसीही चर्चों का मानना है कि उच्च याजक के लिनन वस्त्र "प्रभु यीशु में शुद्ध किया गया" की अवधारणा से मेल खाते हैं।
- विनम्रता:** उच्च याजक के अलंकृत वस्त्रों को साधारण सफेद वस्त्रों से बदलना मसीही सिद्धांतों से मेल खाता है, जो विनम्रता और आत्म-अर्पण को प्रदर्शित करता है।

## निष्कर्ष

योम किपुर पर उच्च याजक के लिनन वस्त्र केवल साधारण कपड़े नहीं थे। वे पवित्रता, विनम्रता और क्षमा के प्रतीक थे। इन वस्त्रों और संबंधित अनुष्ठानों की विशेषताएँ यह स्पष्ट करती हैं कि परमेश्वर

के सामने आकर अपनी शुद्धता की तैयारी कितनी महत्वपूर्ण थी। रब्बियों और मसीही दृष्टिकोण

दोनों से यह समझ में आता है कि शुद्धता, विनप्रता और आत्मसमर्पण का प्रतीक रूप में यह वस्त्र

क्या दर्शाते हैं।

<sup>5</sup>फिर वह इस्राएलियों की मण्डली के पास से पापबलि के लिये दो बकरे और होमबलि के लिये एक मेढ़ा ले।

### लेवितिकस 16:5 में दो बकरियाँ

लेवितिकस 16:5 में दो बकरियों (שנִי שְׁעִירִי עַזִּים) का उल्लेख है जिन्हें इस्राएली समुदाय से लिया जाएगा। ये बकरियाँ योंम किपुर (आत्म-प्रायशिच्त का दिन) के अनुष्ठान का हिस्सा हैं।

1. **एक ही पाप बलि का हिस्सा:** हालांकि दो बकरियाँ हैं, लेकिन वे एक ही पाप बलि का हिस्सा हैं, क्योंकि दोनों का उद्देश्य प्रायशिच्त है, हालांकि एक बकरियाँ को परमेश्वर के लिए और दूसरी को अज़ाज़ेल के लिए भेजा जाता है।
2. **बकरियों की समानता:** इन दोनों बकरियों को समान रूप से लिया जाना चाहिए। दोनों की शर्कल, कद और मूल्य में समानता होनी चाहिए। "שְׁנִי" (שנִי) शब्द का उपयोग इसे स्पष्ट रूप से दर्शाता है, जो बताता है कि दोनों बकरियाँ एक जैसे होने चाहिए। यह समानता अत्यंत महत्वपूर्ण है।
  - **हिंदी में समझाएँ:** "शनी" का अर्थ है कि ये दोनों बकरियाँ एक जैसी होनी चाहिए, जैसे दिखने में, कद में और मूल्य में।
3. **दो बकरियों का उद्देश्य:** ये दोनों बकरियाँ इस्राएल के समुदाय और प्रायशिच्त के दो

पहलुओं का प्रतिनिधित्व करती हैं। एक बकरी का चयन परमेश्वर के लिए होता है और

दूसरी को अज्ञाज़ेल की ओर भेजा जाता है।

## रब्बियों की व्याख्याएँ

### 1. अबारबानेल:

- अबारबानेल के अनुसार, एक बकरी पृथ्वी के पाप और दोषों का प्रतीक है, जबकि दूसरी बकरी पाप को हटा देने का प्रतीक है। यह इस विचार को दर्शाता है कि पृथ्वी में खामियाँ हैं जबकि आकाश परिपूर्ण है।
- वह यह भी कहते हैं कि ये बकरियाँ याकूब और एसाव का प्रतीक हैं। याकूब को परमेश्वर के पास पास और नजदीक माना जाता है, जबकि एसाव को दूर भेजा जाता है।
- हिंदी में व्याख्या: एक बकरी दुनिया के पापों का प्रतीक है और दूसरी बकरी इन पापों को दूर करने का प्रतीक है।

### 2. आल्शिच:

- आल्शिच ने सवाल उठाया कि परमेश्वर को बकरी की आवश्यकता क्यों है और एक बकरी को अज्ञाज़ेल के पास क्यों भेजा जाता है?
- वह इसे समझाते हैं कि जब कोई व्यक्ति पाप करता है, तो एक विनाशकारी फरिश्ता उत्पन्न होता है, और जब वह पश्चाताप करता है, तो एक पवित्र फरिश्ता उत्पन्न होता है। बलि चढ़ाने से इन दोनों फरिश्तों की शक्ति एकत्रित होती है।
- हिंदी में व्याख्या: जब कोई व्यक्ति पाप करता है, तो एक विनाशकारी फरिश्ता उत्पन्न होता है, और जब वह पश्चाताप करता है, तो एक पवित्र फरिश्ता उत्पन्न होता है।

### 3. रव हिर्शः

- रव हिर्श के अनुसार, ये दोनों बकरियाँ पाप बलि (chatat) के दो अलग-अलग रूपों को दर्शाती हैं, जो परमेश्वर, कानून और समुदाय के बीच संबंध को प्रदर्शित करती हैं।
- हिंदी में व्याख्या: बकरियाँ दो अलग-अलग तरीके से पाप बलि को दर्शाती हैं, जो परमेश्वर और समुदाय के बीच संबंध को स्पष्ट करती हैं।

### 4. मलबिमः

- मलबिम के अनुसार "शनी" (शनि) शब्द का उपयोग यह दिखाता है कि बकरियाँ पूरी तरह समान होनी चाहिए। वह इसके द्वारा यह सिद्ध करते हैं कि दोनों बकरियाँ केवल एक ही पाप बलि का हिस्सा हैं।

### 5. स्फोर्नोः

- स्फोर्नो ने इसके बारे में विशेष टिप्पणी नहीं की है, लेकिन पाप बलि के बारे में उनके विचार महत्वपूर्ण हैं।

**आधुनिक मसीही चर्च में मान्यताएँ:**

#### 1. मसीह को बकरियाँ का प्रतीक माना जाता है:

- आजकल के मसीही चर्चों में, अज्ञाज़ेल की ओर भेजी गई बकरी को मसीह का प्रतीक माना जाता है, जो मानवता के पापों को अपने ऊपर लेकर उसे दूर कर देते हैं।
- दूसरी बकरी, जो परमेश्वर के लिए बलि चढ़ाई जाती है, को मसीह के क्रूस पर बलिदान के रूप में देखा जाता है, जो विश्वासियों के पापों के लिए प्रायशिच्त प्रदान करता है।

#### 2. आत्म-प्रायशिच्त की आवश्यकता:

- योंम किपुर के अनुष्ठान को आज भी मसीही चर्चों में यह समझा जाता है कि पापों के

लिए एक परिपूर्ण बलि की आवश्यकता है, जो मसीह ने क्रूस पर दी।

**निष्कर्ष:** दो बकरियाँ लेवितिकस 16:5 में पाप बलि के दो पहलुओं का प्रतीक हैं, जिन्हें रब्बियों ने विभिन्न दृष्टिकोणों से समझाया है। मसीही चर्चों में, इन बकरियों को मसीह के बलिदान की प्रतीकात्मकता के रूप में देखा जाता है, जो मानवता के पापों के प्रायश्चित्त के रूप में काम करता है।

**६** और हारून उस पापबलि के बछड़े को जो उसी के लिये होगा चढ़ाकर अपने और अपने घराने के लिये प्रायश्चित्त करे।

लेवितिकस 16:6 में कहा गया है: "और हारून बकरा चढ़ाएगा जो अपनी ओर से पापबलि के रूप में है, और वह अपने और अपने घर के लिये प्रायश्चित्त करेगा।"

यह आयत योंम किपुर (आत्म-प्रायश्चित्त का दिन) के अनुष्ठान के दौरान हारून द्वारा की जाने वाली प्रायश्चित्त की प्रक्रिया के बारे में है। आइए इस आयत को रब्बियों की व्याख्याओं और आधुनिक मसीही चर्च में इसके अर्थ के संदर्भ में समझें।

### १. "जो अपनी ओर से है" (Which is for himself)

- **महत्व:** यह वाक्यांश यह संकेत करता है कि यह बकरा हारून के व्यक्तिगत धन से खरीदी जानी चाहिए, न कि सामूहिक धन या अन्य याजकों के धन से। रब्बी इसे स्पष्ट रूप से समझाते हैं कि इस बकरा का प्रायश्चित्त व्यक्तिगत और विशेष होना चाहिए, न कि सामूहिक रूप से।
- **रब्बियों की व्याख्या:**
  - **राशि:** राशि के अनुसार, "जो अपनी ओर से है" का मतलब है कि यह बकरा हारून के अपने धन से होना चाहिए, और यह ध्यान में रखते हुए प्रायश्चित्त की प्रक्रिया वैध मानी जाती है।

- **मलबिम:** मलबिम यह बताते हैं कि इस शब्द के पुनरावलोकन से यह सिद्ध होता है कि प्रायश्चित्त सिर्फ हारून के व्यक्तिगत प्रयास से होना चाहिए।
- **इन्ह एज़रा:** वह कहते हैं कि प्रायश्चित्त हारून और उसके परिवार के लिए है, और यह बकरा लाने की क्रिया खुद प्रायश्चित्त मानी जाती है।

## **2. प्रायश्चित्त के माध्यम से कबूलनाम (Atonement through Confession)**

**कबूलनाम:** आयत में "प्रायश्चित्त करेगा" शब्द का उपयोग है, जो यह दर्शाता है कि प्रायश्चित्त

केवल रक्त के बलिदान से नहीं, बल्कि एक मौखिक कबूलनाम से होता है। यह एक महत्वपूर्ण बिंदु है, क्योंकि इसमें इस बात पर बल दिया गया है कि प्रायश्चित्त की प्रक्रिया में पहले कबूलनाम आवश्यक है, और रक्त बलिदान बाद में होता है।

**वीडुई (Vidui):** यह कबूलनाम व्यक्ति द्वारा अपने पापों को स्वीकार करने का अवसर है, ताकि

वह भविष्य में उन पापों से बचने का संकल्प ले सके।

**रब्बियों की व्याख्याएँ:**

**राशि:** राशि यह मानते हैं कि "प्रायश्चित्त करेगा" का अर्थ एक मौखिक कबूलनाम है, जो हारून और उसके परिवार के पापों के लिए होता है।

**रव हिर्श:** वह इसे इस प्रकार समझाते हैं कि यह प्रायश्चित्त केवल रक्त बलिदान से नहीं, बल्कि कबूलनाम (Vidui) और हाथ रखने की प्रक्रिया से होता है, जो पापों के "बीते हुए" को दबा देने के रूप में कार्य करता है।

## **3. "अपने और अपने घर के लिए" (For himself and his house)**

- **घर का अर्थ:** "घर" का मतलब सिर्फ हारून का परिवार (पत्नी और बच्चों) नहीं, बल्कि याजकों का समुदाय है। यह पूरे याजक वर्ग के लिए प्रायश्चित्त करने की प्रक्रिया को भी सम्मिलित करता है।

- **रब्बियों की व्याख्याएँ:**

- **राशि:** राशि के अनुसार, हारून को पहले अपने और अपने घर (परिवार) के पापों का प्रायश्चित्त करना था, क्योंकि कोई भी व्यक्ति दूसरों के पापों के लिए प्रायश्चित्त नहीं कर सकता जब तक कि वह खुद पवित्र न हो।
- **चिज़कुनी:** चिज़कुनी के अनुसार, यह विचार किया गया है कि "साधू व्यक्ति को पहले अपनी पापों के लिए प्रायश्चित्त करना चाहिए, फिर दूसरों के लिए"

#### 4. विभिन्न प्रकार के पाप (Different Types of Sins)

रब्बी विभिन्न प्रकार के पापों की पहचान करते हैं:

- **चता (Chata):** अनजाने में किए गए पाप।
- **अवोन (Avon):** जानबूझकर किए गए पाप, जो परमेश्वर के प्रति विद्रोह से उत्पन्न होते हैं।
- **पेशा (Pesha):** जानबूझकर किए गए पाप, जो परमेश्वर की सत्ता का खुले तौर पर अस्वीकार करते हैं।

#### 5. आधुनिक मसीही चर्च में इसका अर्थ (Modern Christian Interpretations)

- **प्रायश्चित्त और बलिदान:** आधुनिक मसीही चर्च में यह समझा जाता है कि प्रभु यीशु मसीह अंतिम सर्वोच्च याजक हैं, और वही अंतिम बलिदान भी हैं। इस दृष्टिकोण से, हारून द्वारा किए गए प्रायश्चित्त को मसीह के क्रूस पर बलिदान के द्वारा पूरा किया गया माना जाता है।
- **कबूलनाम का अर्थ:** मसीही विश्वास में कबूलनाम को व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर के सामने किया जाता है। यह प्रायश्चित्त की प्रक्रिया का अहम हिस्सा है, जो आत्म-परीक्षण और पश्चाताप के रूप में माना जाता है।

## निष्कर्षः

लेवितिकस 16:6 में हारून द्वारा किए गए पापबलि की प्रक्रिया को रब्बियों ने विभिन्न तरीकों से समझाया है, जैसे कि "जो अपनी ओर से है" के माध्यम से व्यक्तिगत प्रायश्चित्त, कबूलनाम के साथ प्रायश्चित्त की शुरुआत, और पापों को सच्चे दिल से स्वीकार करना। आधुनिक मसीही दृष्टिकोण इसे मसीह के बलिदान के संदर्भ में समझते हैं, जो परमेश्वर के सामने किए गए प्रायश्चित्त को पूर्ण करता है।

<sup>7</sup> और उन दोनों बकरों को लेकर मिलापवाले तम्बू के द्वार पर प्रभु प्रभु यहोवा के सामने खड़ा करें;

Leviticus 16 में दो बकरियों का महत्व यम किप्पुर के दिन के बलिदान प्रक्रिया में है। इसे समझते हुए रब्बियों ने जो तात्त्विक और धार्मिक व्याख्याएं दी हैं, साथ ही आधुनिक मसीही चर्च के दृष्टिकोण को भी समझते हैं।

## दो बकरियों का रिवाजः

### 1. बकरियों का चयन (חַלֵּל):

- यहाँ "लेना" (חַלֵּל) शब्द का प्रयोग किया गया है, "अर्पित करना" (בִּרְאָה) नहीं, क्योंकि बकरियाँ अभी बलिदान के लिए नहीं लाई जा रही हैं, बल्कि उनका उद्देश्य तय किया जा रहा है। एक बकरी को "प्रभु प्रभु यहोवा के लिए" और दूसरी को "अज़ाज़ेल के लिए" चुना जाता है। इसका मतलब है कि एक बकरी का बलिदान होता है और दूसरी को वन में भेजा जाता है।

### 2. बकरी "प्रभु प्रभु यहोवा के लिए":

- यह बकरी बलिदान की जाती है, और इसका रक्त पवित्र स्थान में छिड़का जाता है। इसका उद्देश्य पवित्र स्थान के अपवित्र होने की सफाई करना है।

### 3. बकरी "अज़ाज़ेल के लिए" (स्केपगोट):

- इस बकरी को बलिदान नहीं किया जाता, बल्कि इसे जीवित छोड़ दिया जाता है और जंगल में भेजा जाता है। पहले, याजक अपनी हाथों को इस बकरी के सिर पर रखकर पूरे इसाएल की पापों की पहचान और घोषणा करता है। इस प्रक्रिया के माध्यम से, यह बकरी इसाएल के पापों को अपने ऊपर ले लेती है और इन पापों को एक नष्ट किए गए स्थान में भेज दिया जाता है।

### रब्बी विचार:

#### अज़ाज़ेल का अर्थ:

- अज़ाज़ेल का मतलब आज भी विवादास्पद है। कुछ विद्वान इसे एक जंगली स्थान के रूप में समझते हैं, जबकि अन्य इसे एक आध्यात्मिक शक्ति के रूप में मानते हैं। रब्बी बहैया के अनुसार, यह बलिदान शैतान या किसी अन्य अर्धमृत्यु से मुकाबला करने के लिए नहीं था, बल्कि इसे एक प्रकार से उसे शांत करने और परमेश्वर के अर्पण को सही दिशा में जाने देने के रूप में देखा गया था।

#### रब्बी विचार - "प्रभु प्रभु यहोवा के लिए" और "अज़ाज़ेल के लिए" के बीच अंतर:

- रब्बी अकिवा ने कहा कि बकरियों का चयन और उनके बीच का अंतर यह दर्शाता है कि एक ही परमेश्वर के सामने सभी पापों का प्रायश्चित किया जाता है। यह किसी अन्य शक्ति के लिए नहीं किया जाता।

## रशि और अन्य रब्बियों के दृष्टिकोण:

- रशि ने यह समझाया कि बकरियाँ "प्रभु के सामने खड़ी होती हैं" का मतलब है कि वे संकाय के द्वार पर खड़ी होती हैं, न कि मंदिर के भीतर।
- रम्बान का कहना था कि यह बकरियाँ पूरे इसाएल के पापों का प्रतीक हैं और यह उनके प्रायश्चित के लिए एक गहरी प्रक्रिया है।

## आधुनिक मसीही दृष्टिकोण:

### ईश्वर के अंतिम प्रायश्चित के रूप में प्रभु यीशु मसीहः

- मसीही धर्म में, प्रभु यीशु मसीह को अंतिम "स्केपगोट" के रूप में देखा जाता है। उनका बलिदान मानवता के सभी पापों के लिए हुआ था।
- जैसे बकरियाँ इसाएल के पापों को अपने ऊपर ले जाती थीं, उसी तरह प्रभु यीशु मसीह ने क्रूस पर अपने शरीर और रक्त के माध्यम से पूरी मानवता के पापों का प्रायश्चित किया।

## आध्यात्मिक दृष्टिकोण:

- मसीही चर्च में, बकरियों का यह रिवाज अक्सर प्रतीकात्मक रूप में देखा जाता है। इसे प्रभु यीशु के बलिदान से जोड़ा जाता है, न कि वास्तविक बकरियों के प्रयोग से। चर्च में इस दिन का महत्व इस बात पर है कि प्रभु यीशु ने मानवता के पापों को अपने ऊपर लिया और उनका प्रायश्चित किया।

## पाप और प्रायश्चित का महत्व:

- मसीही धर्म में, पापों से मुक्ति पाने के लिए विश्वास और प्रायश्चित की आवश्यकता होती है। जैसे यम किष्पुर में बकरियों के माध्यम से प्रायश्चित किया जाता था, वैसे ही आज मसीही

विश्वासियों के लिए प्रभु यीशु के बलिदान के माध्यम से पापों का प्रायश्चित किया जाता है।

### सारांशः

- यहां दी धर्म में: दो बकरियाँ इसाएल के पापों का प्रायश्चित करने के लिए होती हैं—एक बकरी को बलिदान किया जाता है, जबकि दूसरी को अकेले जंगल में भेजा जाता है। यह धार्मिक प्रक्रिया पापों से मुक्ति का एक तरीका है।
- मसीही धर्म में: प्रभु यीशु मसीह को अंतिम "स्केपगोट" के रूप में देखा जाता है। उनके बलिदान से सारे पापों का प्रायश्चित किया गया, और आज के मसीही चर्च में यह बलिदान आध्यात्मिक मुक्ति का प्रतीक है।

यह प्रक्रिया और इसके रब्बी और मसीही धर्म में अलग-अलग दृष्टिकोण हैं, जो पाप, प्रायश्चित और मुक्ति के महत्वपूर्ण पहलुओं को उजागर करते हैं।

8 और हारून दोनों बकरों पर चिट्ठियाँ डाले, एक चिट्ठी प्रभु प्रभु यहोवा के लिये और दूसरी अज़ाज़ेल के लिये हो।

Leviticus 16:8 में यम किप्पुर (Atonement Day) के दिन दो बकरों के बारे में बताया गया है: "और हारून दोनों बकरों पर भाग्य डालेंगे; एक भाग्य प्रभु प्रभु यहोवा के लिए, और दूसरा भाग्य अज़ाज़ेल के लिए।"

### रिवाजः

- दो बकरों को चुना गया, और उनके भाग्य का निर्धारण करने के लिए लॉट डाले गए।
- एक बकरा "प्रभु प्रभु यहोवा के लिए" नामित किया जाता है, जिसे पापबलि के रूप में बलि दी जाती है।

- दूसरा बकरा "अज़ज़ेल के लिए" नामित किया जाता है, और उसे जंगल में भेज दिया जाता है।
- लॉट समान और किसी भी सामग्री से हो सकते थे, ना कि सोने और चांदी के, या बड़े और छोटे लॉट।
- लॉटों को एक बर्तन में डाला जाता था और एक हाथ में एक लॉट और दूसरे हाथ में दूसरा लॉट डाला जाता था, फिर उन्हें बकरों पर डाल दिया जाता था।
- दोनों बकरों को बगैर किसी दोष के होना चाहिए, ताकि वे प्रभु के लिए योग्य हों।

### "अज़ज़ेल" का अर्थ:

"अज़ज़ेल" का अर्थ बहुत ही पेचीदा है और इस पर बहुत से मत हैं। यहां कुछ प्रमुख व्याख्याएँ दी जा रही हैं:

1. **एक स्थान:** कई टिप्पणीकार अज़ज़ेल को एक भौतिक स्थान के रूप में मानते हैं, विशेष रूप से एक कठिन और निर्जन स्थान, जो अक्सर एक पहाड़ या चट्टान के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इसे एक शुष्क और बंजर भूमि के रूप में वर्णित किया गया है।
  - Bekhor Shor कहते हैं कि यह एक कठिन और बंजर भूमि है, जिसमें कुछ भी नहीं उगता।
  - Gur Aryeh इसे एक पहाड़ मानते हैं।
  - Rashi इसे एक "उबड़-खाबड़ चट्टान" मानते हैं।
2. **एक दैविक शक्ति (सैतान):** कुछ टिप्पणियाँ इसे एक दैवीय या दुष्ट शक्ति के रूप में मानती हैं; जैसे सैतान या समाएल।
  - Chizkuni इसे समाएल (सैतान का एक और नाम) से जोड़ते हैं और मानते हैं कि यह बकरा सैतान को शांत करने के लिए भेजा जाता है ताकि वह प्रायश्चित्त प्रक्रिया

### में हस्तक्षेप न करे।

- पाप और नष्ट करने का प्रतीकः कुछ लोग "अज़ज़ेल" को एक प्रतीक के रूप में मानते हैं,

जो पाप को पूरी तरह से नष्ट करने, दूर करने, और अलग करने का कार्य करता है। बकरा

पापों को लेकर बंजर भूमि में भेज दिया जाता है ताकि वे समाप्त हो जाएं और समुदाय शुद्ध

हो जाए।

- David Zvi Hoffman इसे पापों के नष्ट होने और अलग किए जाने का प्रतीक मानते हैं।

### दो बकरों का उद्देश्यः

- प्रायश्चित्तः** इस रिवाज का मुख्य उद्देश्य इस्माएलियों के पापों का प्रायश्चित्त करना है।
  - Kitzur Ba'al HaTurim कहते हैं कि दोनों बकरों के माध्यम से इस्माएलियों के पापों का प्रायश्चित्त होता है। पहला बकरा प्रभु प्रभु यहोवा के लिए बलि दिया जाता है, और दूसरा बकरा अज़ज़ेल के लिए भेजा जाता है।
- दुष्ट शक्तियों को शांत करना:** कुछ टिप्पणीकार इसे एक तरह से सैतान या समाएल जैसी शक्तियों को शांत करने के रूप में मानते हैं ताकि वे प्रायश्चित्त प्रक्रिया में हस्तक्षेप न करें।
- पापों का शोधनः** बकरा इस्माएलियों के पापों को अपने ऊपर ले लेता है और उन्हें एक निर्जन स्थान पर भेजा जाता है, जहाँ से वे वापस नहीं आते। यह एक प्रतीकात्मक क्रिया है, जो पापों को पूरी तरह से दूर करने का संकेत देती है।

### समकालीन ईसाई दृष्टिकोणः

- प्रभु यीशु मसीह के रूप में प्रायश्चित्तः** ईसाई धर्म में, प्रभु यीशु मसीह को अंतिम

"स्कैपगोट" (पाप का वह बकरा) के रूप में देखा जाता है। वह मानवता के पापों को अपने ऊपर लेता है और उन्हें दूर करता है। जैसे बकरा अपने पापों को लेकर निर्जन स्थान में भेजा जाता है, वैसे ही प्रभु यीशु मसीह भी संसार के पापों को अपने बलिदान के द्वारा दूर करते हैं।

2. **ईश्वर का न्याय और कृपा:** कुछ ईसाई विचारक इसे ईश्वर के दोहरे स्वभाव के प्रतीक के रूप में मानते हैं - एक ओर वह पापों के लिए न्याय की आवश्यकता को पूरा करता है (जैसे बकरा बलि दिया जाता है), और दूसरी ओर वह कृपा का भी संदेश देता है (जैसे बकरा अज़ज़ेल के लिए भेजा जाता है)।
  
3. **कुर्बानी की निरर्थकता का संकेत:** कुछ ईसाई चर्चों में यह रिवाज यह भी दर्शाता है कि केवल बाहरी रिवाजों पर निर्भर रहना पर्याप्त नहीं है; इसके बजाय, आंतरिक प्रायश्चित्त और विश्वास महत्वपूर्ण हैं।

### **निष्कर्ष:**

लिविटिक्स 16:8 में दो बकरों के रिवाज का महत्व बहुत गहरा है, और यह पाप, प्रायश्चित्त, और ईश्वर के प्रभुत्व के विचारों को उजागर करता है। यह रिवाज यहूदियों के लिए प्रायश्चित्त का एक माध्यम था, जबकि ईसाई धर्म में इसे प्रभु यीशु मसीह के बलिदान के संदर्भ में देखा जाता है, जो संसार के पापों को अपने ऊपर लेकर उन्हें दूर करता है।

<sup>9</sup>और जिस बकरे पर प्रभु प्रभु यहोवा के नाम की चिट्ठी निकले उसको हारून पापबलि के लिये चढ़ाए;

### **लेविटिक्स 16:9 का विश्लेषण और रब्बियों की व्याख्याएँ**

लेविटिक्स 16:9 में लिखा है: "और हारून वह बकरी प्रस्तुत करेगा जिस पर लॉट का भाग परमेश्वर के

लिए पड़ा है और उसे पाप बलि के रूप में अर्पित करेगा।"

## आध्यात्मिक विश्लेषण

**लॉट का महत्व:** इस श्लोक का मुख्य बिंदु यह है कि पाप बलि के रूप में चयनित बकरी को लॉट ('לָוֹט') के द्वारा निर्धारित किया जाता है, न कि महायाजक द्वारा। रब्बी इस बात पर जोर देते हैं कि लॉट स्वयं बकरी को बलि के लिए चुनता है, और यह मानव निर्णय से अलग है। "גַּאֲתָהוּ הַאֲשָׁעָה" (और इसे पाप बलि बनाए) का अर्थ रब्बी यह मानते हैं कि यह क्रिया लॉट द्वारा की जाती है, न कि महायाजक द्वारा।

**पाप बलि का चयन:** जब लॉट एक विशिष्ट बकरी पर गिरता है, तब उसे परमेश्वर के लिए पाप बलि के रूप में स्वीकार किया जाता है। यह स्थिति बकरी के बलि होने से पहले का है।

**बलि का समय:** जब लॉट गिरता है, तब यह जरूरी नहीं है कि बकरी पर लॉट का चयन तब तक बना रहे जब तक उसका वध न हो। चयन एक कदम है, जबकि बलि देना एक अन्य क्रिया है।

**"Ve'asahu Chatat" का अर्थ:** "Ve'asahu" (וְאַסָּהוּ) का अर्थ है "उसका कार्य करना", जो यह दर्शाता है कि लॉट ने बकरी को पाप बलि के रूप में चुना। यह क्रिया भूतकाल में हुई है, जो दर्शाता है कि बकरी पहले ही पाप बलि के रूप में तय हो चुकी थी।

## रब्बियों की व्याख्याएँ

1. **रशी:** रशी का कहना है कि बकरी को पाप बलि के रूप में बनाने का कार्य महायाजक का नहीं बल्कि लॉट का है। जब महायाजक लॉट गिरने के बाद बकरी को चुनता है, तो वह बकरी को "परमेश्वर के लिए पाप बलि" के रूप में घोषित करता है।

2. **इब्र एज़रा:** इब्र एज़रा के अनुसार ”और उसे पाप बलि के रूप में अर्पित करेगा” का मतलब है ”उसका वध करना”। उनके अनुसार, लॉट द्वारा चयन के बाद, बकरी का वध किया जाता है और वही बलि है।
3. **चिजकुनी:** चिजकुनी का मानना है कि महायाजक का कार्य पासिव है, यानी वह सक्रिय रूप से बकरी को बलि के रूप में नहीं चुनता, बल्कि यह काम लॉट करता है। महायाजक केवल इस प्रक्रिया को सही रूप से संपन्न करता है।
4. **मालबिम:** मालबिम ”Ve'asahu” शब्द के प्रयोग को समझाते हुए यह कहते हैं कि यह लॉट का कार्य है। बकरी के बलि बनने की प्रक्रिया में महायाजक केवल एक माध्यम है, जबकि असल कार्य लॉट द्वारा होता है।
5. **स्फोर्नो:** स्फोर्नो भी मानते हैं कि यह लॉट है जो बकरी को पाप बलि के रूप में निर्धारित करता है, न कि महायाजक का नामकरण। महायाजक का कार्य केवल लॉट के परिणाम को स्वीकृति देना है।
6. **रव हिर्श:** रव हिर्श का कहना है कि लॉट का गिरना ही बकरी को पाप बलि के रूप में स्थापित करता है, और महायाजक का कार्य उस चयन के अनुसार इसे अर्पित करना होता है।

## **मुख्य विचार और अंतर**

**लॉट बनाम महायाजक:** बकरी का पाप बलि के रूप में चयन मानवीय निर्णय से नहीं, बल्कि दिव्य निर्णय से होता है, जो लॉट द्वारा होता है। यह एक अद्वितीय दिव्य चयन प्रक्रिया है।

**सक्रिय बनाम निष्क्रिय:** "Ve'asahu Chatat" का मतलब महायाजक का इरादा नहीं है, बल्कि यह लॉट के प्रभाव को व्यक्त करता है। महायाजक का कार्य केवल इस बात को मान्यता देना है कि लॉट ने बकरी को पाप बलि के रूप में चुना।

**निर्धारण बनाम बलि:** बकरी को पाप बलि के रूप में घोषित करना बलि अर्पित करने की प्रक्रिया से अलग है। यह सिर्फ चयन की प्रक्रिया है, जबकि बलि अर्पित करना बाद की क्रिया है।

### समकालीन मसीही चर्च में इसका महत्व

लेविटिक्स 16 का यह प्राविधान मसीही धर्म में महत्वपूर्ण है क्योंकि इसे प्रभु यीशु मसीह की बलि के रूप में देखा जाता है। न्यू टेस्टामेंट, विशेष रूप से इब्रानियों की पुस्तक, इसे प्राचीन याजक प्रणाली के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करती है।

- स्थानापन्न प्रायश्चित (Substitutionary Atonement):** पाप बलि में बकरी का चयन एक स्थानापन्न प्रायश्चित का उदाहरण है, जहाँ बकरी पापी की जगह बलि दी जाती है। मसीही विश्वास में, प्रभु यीशु को पापी के स्थान पर बलि के रूप में प्रस्तुत किया गया।
- दिव्य चयन:** बकरी का चयन लॉट द्वारा किया जाता है, यह दर्शाता है कि परमेश्वर ही प्रायश्चित के लिए चयन करता है, न कि मनुष्य। इसी तरह, मसीही विश्वास में, ईश्वर ने मानवता के उद्धार के लिए प्रभु यीशु को चुना।
- पाप के लिए बलि:** जैसा कि पुराने नियम में बलि के लिए बकरी दी जाती है, वैसे ही मसीही विश्वास में प्रभु यीशु का बलिदान पापों की क्षमा के लिए है। यह बलिदान पापों के लिए पापी के स्थान पर दी गई बलि को दर्शाता है।

## हिंदी में संक्षेप

लेविटिक्स 16:9 का संदेश यह है कि पाप बलि के रूप में बकरी का चयन लॉट द्वारा होता है, न कि महायाजक द्वारा। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि परमेश्वर ही प्रायश्चित के लिए चयन करते हैं। आज के मसीही विश्वास में इसे प्रभु यीशु मसीह के बलिदान के रूप में देखा जाता है, जहाँ प्रभु यीशु ने हमारे पापों के लिए बलि दी, जैसे उस समय बकरी दी जाती थी।

<sup>10</sup>परन्तु जिस बकरे पर अज्ञाज़ेल के लिये चिट्ठी निकले वह प्रभु प्रभु यहोवा के सामने जीवित खड़ा किया जाए कि उस से प्रायश्चित किया जाए, और वह अज्ञाज़ेल के लिये जंगल में छोड़ा जाए।

## लेविटिक्स 16:10 का अर्थ और रब्बियों की व्याख्याएँ

लेविटिक्स 16:10 में हम देखते हैं: "परन्तु वह बकरी जिस पर लॉटरी का फैसला आ जाए, उसे जीवित छोड़ दिया जाएगा, ताकि उसके द्वारा प्रभु के सामने प्रायश्चित किया जा सके और उसे जंगल में आज्ञाज़ेल के पास भेज दिया जाए।"

यह आयत योंम किप्पुर (प्रायश्चित दिवस) के दिन की बकरी के प्रायश्चित अनुष्ठान के बारे में बताती है। इसका मतलब है कि इस बकरी को स्केपगोट (अपराध बकरी) के रूप में चुना जाता है। इसे जीवित छोड़ा जाता है ताकि उस पर पापों की घोषणा की जा सके, और फिर इसे जंगल में भेज दिया जाता है। इसे प्रभु के लिए प्रायश्चित करने के रूप में माना जाता है।

## महत्वपूर्ण बिंदु

1. "जो बकरी आज़ाज़ेल के लिए चुनी जाए" - यह बकरी उस लॉटरी के माध्यम से चुनी जाती है जो दो बकरियों में से एक के लिए होती है। एक बकरी प्रभु के लिए होती है (जिसे बलि चढ़ाया जाता है), और दूसरी बकरी आज़ाज़ेल के लिए होती है।
2. "प्रभु के सामने जीवित रखा जाएगा" - इसका मतलब है कि बकरी को तब तक जीवित रखा जाता है जब तक महायाजक उस पर पापों का उच्चारण नहीं कर देता। यह शब्द "जीवित" यह स्पष्ट करता है कि यह बकरी न तो तत्काल मारी जाएगी और न ही इसे मृत माना जाएगा, जब तक कि पापों का उच्चारण नहीं किया जाता।
3. "प्रायश्चित के लिए इसे भेजा जाएगा" - इस बकरी को प्रायश्चित के प्रतीक के रूप में जंगल में भेजा जाता है, जिसका अर्थ यह है कि इसके माध्यम से पापों को समाज से बाहर और दूर किया जाता है। इसे आज़ाज़ेल के पास भेजने से यह माना जाता है कि पापों का नाश किया जा रहा है और वे एक निर्जन स्थान में ले जाए जा रहे हैं।

## रब्बियों की व्याख्याएँ

1. राशी - राशी कहते हैं कि "यह जीवित खड़ा रहेगा" शब्द यह स्पष्ट करने के लिए है कि यह बकरी जीवित रहेगी जब तक पापों का उच्चारण नहीं किया जाता। इसका उद्देश्य यह था कि बकरी की मृत्यु बाद में होगी, लेकिन इस प्रक्रिया के दौरान यह जीवित रहेगी। उन्होंने यह भी कहा कि प्रायश्चित तब होता है जब महायाजक बकरी पर पापों का उच्चारण करता है।
2. इब्र एज़रा - इब्र एज़रा ने कहा कि "यो'मद" शब्द एक होफल(निष्क्रिय रूप) में है, जिसका मतलब है कि यह बकरी जीवित रहेगी जब तक इसे जंगल में भेजने की प्रक्रिया पूरी नहीं होती।

3. **डेविड ज़्वी होफमैन** - होफमैन के अनुसार, स्केपगोट का प्रायश्चित उसकी जीवनकाल में ही होता है, क्योंकि पापों का उच्चारण उस पर किया जाता है। इसे बलि की तरह मृत्यु के बाद प्रायश्चित नहीं किया जाता।
  
4. **मालबिम** - मालबिम का कहना था कि शब्दों का द्वृतीय अर्थ यह दिखाता है कि तोराह व्यर्थ में नहीं लिखी गई है और इन बकरियों के बीच में एक गहरी अर्थ है। यह प्रक्रिया दो विचारों को प्रकट करती है: एक बकरी से पापों का प्रायश्चित और दूसरी बकरी को भेजना।
  
5. **रव हिर्श** - रव हिर्श के अनुसार, ये दोनों बकरियाँ दो विरोधी शक्तियों का प्रतीक हैं: एक बकरी प्रभु के लिए होती है, जबकि दूसरी बकरी आज़ाज़ेल के लिए होती है। प्रभु के लिए बकरी के बलि चढ़ाने से पापों का प्रायश्चित होता है, जबकि आज़ाज़ेल की बकरी को जंगल में भेजने से पापों को समुदाय से दूर किया जाता है। उन्होंने आज़ाज़ेल शब्द का अर्थ अज़ाज़ल ("जो असहमत है और गायब हो जाता है") के रूप में किया।
  
6. **हकटव वेहकाबला** - उनके अनुसार "प्रायश्चित" का मतलब है पापों का नाश करना, और यह प्रायश्चित तब होता है जब महायाजक बकरी पर पापों का उच्चारण करता है।
  
7. **बेखोर शोर** - बेखोर शोर का कहना था कि जब महायाजक बकरी पर पापों का उच्चारण करता है, तो वह बकरी पापों को अपने ऊपर ले लेती है, जैसे वह समाज के पापों की सजा भुगतने वाली हो।

## आज के मसीही चर्च में इसका महत्व

ईसाई धर्म में, यह प्राचीन परंपरा प्रभु यीशु मसीह की बलि का प्रतीक मानी जाती है। यहाँ पर कुछ

बिंदु दिए गए हैं जो मसीही विश्वासियों के लिए इसे स्पष्ट करते हैं:

1. **पापों का बोझ उठाना** - जैसे स्केपगोट पापों को अपने ऊपर लेता है, वैसे ही प्रभु यीशु मसीह ने मानवता के पापों को अपने ऊपर लिया।
2. **प्रायश्चित के लिए बलि** - प्रभु यीशु की कूस पर बलि, जिसे वह खुद को सच्चे प्रायश्चित के रूप में प्रस्तुत करते हैं, यह स्केपगोट के बलि चढ़ाने से मेल खाती है। प्रभु यीशु का बलिदान, दोनों बकरियों के कार्यों को पूरा करता है: एक बकरी की तरह, वह पापों को अपने ऊपर लेकर सजा भुगतते हैं, और दूसरी बकरी की तरह, वह पापों को समाज से दूर भेजते हैं।
3. **पापों का नाश** - स्केपगोट का जंगल में भेजा जाना, और वहाँ से पापों का दूर होना, प्रभु यीशु के बलिदान की तरह माना जाता है, जो पापों को हटा देता है और उसे "समाज से बाहर" कर देता है।
4. **स्थानापन्न प्रायश्चित** - स्केपगोट की भूमिका एक "स्थानापन्न प्रायश्चित" के रूप में मानी जाती है, जहाँ एक बकरी (या प्रभु यीशु) मानव के स्थान पर पापों की सजा भुगतता है।

इस प्रकार, लेविटिक्स 16:10 का यह पुराना प्रथा मसीही धर्म में प्रभु यीशु के बलिदान के सिद्धांत से जुड़ा हुआ है, जो पापों के प्रायश्चित की पूर्णता को दर्शाता है।

<sup>11</sup>"हारून उस पापबलि के बछड़े को जो उसी के लिये होगा समीप ले आए, और उसको बलिदान करके अपने और अपने घराने के लिये प्रायश्चित करे।

**Leviticus 16:11 में यह वर्णित है कि आरोन (याजक) यौम किपुर (प्रायश्चित्त का दिन) के अवसर पर अपने और अपने परिवार के लिए बलि का बकरा पेश करता है। इस श्लोक के तहत, आरोन की प्रायश्चित्त क्रिया की प्रक्रिया इस प्रकार है:**

### **प्रमुख कार्य और विचार:**

1. **बैल की बलि (Sin Offering):** आरोन को एक बैल लाना था, जो उसके और उसके परिवार के लिए पाप के प्रायश्चित्त के रूप में था। जैसा कि श्लोक कहता है, "आरोन अपने लिए और अपने परिवार के लिए पाप की बलि के बैल को पेश करेगा और उसे मारेगा।" यह बलि विशेष रूप से आरोन का अपना बलिदान था, न कि समुदाय का।
2. **प्रायश्चित्त की स्वीकृति (Confession - विदुई):** बलि को मारने से पहले, आरोन को एक प्रायश्चित्त स्वीकृति (confession) करनी होती है। यह स्वीकृति केवल रक्त की बलि नहीं थी, बल्कि यह एक मौखिक अभिव्यक्ति थी, जहां आरोन अपने पापों की स्वीकृति और प्रायश्चित्त करता है। श्लोक में कहा गया है "वह अपने और अपने घराने के लिए प्रायश्चित्त करेगा।" इस शब्द का अर्थ है - 'स्वीकृति'।
3. **बलि का वध और रक्त का उपयोग:** इसके बाद, आरोन बैल को मारता है, और उसका रक्त एक अन्य याजक के पास दिया जाता है, ताकि वह उसे अच्छे से हिलाकर, उसका उपयोग अंदर के पवित्र स्थान में छिड़कने के लिए कर सके।

### **दो स्वीकृतियां (Confessions):**

1. **पहली स्वीकृति (Confession for Himself):** आरोन पहले अपने और अपने परिवार के लिए स्वीकृति करता है। यह परिवार में उसके घरवालों (पत्री और बच्चों) को शामिल करता

है।

2. **दूसरी स्वीकृति (Confession for Priests):** दूसरी स्वीकृति पुजारियों के लिए होती है, जो आरोन के घराने के सदस्य माने जाते हैं। "आल आसील हारोन" (आरोन का घराना) का मतलब उन सभी पुजारियों से है, जो आरोन के परिवार से संबंधित हैं।

### **रब्बियों के विचार:**

1. **राशी:** राशी के अनुसार, दूसरी स्वीकृति विशेष रूप से पुजारियों के लिए होती है, क्योंकि उनके पापों से पवित्र स्थान की अशुद्धि हो जाती है।
2. **डेविड ज्वी होफमैन:** वे कहते हैं कि "अपने परिवार के लिए" का अर्थ पूरा पुजारियों का समुदाय है। वे मानते हैं कि आरोन को दो प्रायशिच्छा करने चाहिए, एक अपने परिवार के लिए और एक पुजारियों के लिए।
3. **मालबिम:** मालबिम का कहना है कि यह स्वीकृति एक मौखिक क्रिया है, और बैल केवल आरोन की व्यक्तिगत बलि है, न कि सामूहिक बलि।
4. **गुर आर्ये:** गुर आर्ये कहते हैं कि पहली स्वीकृति आरोन और उसकी पत्नी के लिए है, और दूसरी स्वीकृति पुजारियों के लिए है। दोनों स्वीकृतियों में अलग-अलग पाप होते हैं, और यह उचित नहीं है कि एक दोषी व्यक्ति दूसरे दोषी का प्रायशिच्छा करे।
5. **मिज्ञाची:** मिज्ञाची के अनुसार, पहली स्वीकृति आरोन और उसके परिवार के लिए है, और दूसरी स्वीकृति सभी पुजारियों के लिए है।

## मसीही चर्च में आज इसका महत्व:

1. **प्रायश्चित्त (Atonement):** इस श्लोक में प्रायश्चित्त का जो महत्व बताया गया है, वही मसीही विश्वास में भी मुख्य है। मसीही विश्वास में, ईसा मसीह को अंतिम बलिदान के रूप में देखा जाता है, जो मानवता के पापों का प्रायश्चित्त करता है। यद्यपि यौम किपुर का प्रायश्चित्त रक्त से होता था, मसीही विश्वास में ईसा की मृत्यु को अंतिम प्रायश्चित्त माना जाता है।
2. **स्वीकृति (Confession):** इस स्वीकृति की प्रक्रिया मसीही चर्च में भी प्रचलित है। मसीही विश्वास में, लोग अपने पापों की स्वीकृति और प्रायश्चित्त के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं। यह स्वीकृति और पापों की क्षमा की प्रक्रिया चर्च में अत्यधिक महत्वपूर्ण है।
3. **याजक का कार्यः** कुछ मसीही परंपराएँ ईसा मसीह को उच्चतम याजक के रूप में देखती हैं, जो ईश्वर के सामने मानवता के पापों का प्रायश्चित्त करता है। पुराने नियम का यह याजकत्व ईसा मसीह के कार्य को दर्शाने के रूप में देखा जाता है, जहां वह पृथ्वी पर एक आदर्श याजक के रूप में उपस्थित थे।

## निष्कर्षः

Leviticus 16:11 में आरोन के प्रायश्चित्त के माध्यम से यह सिखाया जाता है कि व्यक्तिगत और सामूहिक पापों के लिए प्रायश्चित्त जरूरी है, और इस प्रक्रिया में स्वीकृति और बलिदान की महत्वपूर्ण भूमिका है। रब्बियों के विभिन्न दृष्टिकोण यह दिखाते हैं कि प्रायश्चित्त की प्रक्रिया के तहत विशेषतः अपने और समुदाय के लिए दो अलग-अलग स्वीकृतियां की जाती हैं। आज के मसीही चर्च में इसका महत्व प्रायश्चित्त, स्वीकृति और उच्चतम याजक के रूप में ईसा मसीह की भूमिका से

जुड़ा हुआ है।

<sup>12</sup>और जो वेदी प्रभु प्रभु यहोवा के सम्मुख है उस पर के जलते हुए कोयलों से भरे हुए धूपदान को लेकर, और अपनी दोनों मुट्ठियों को कूटे हुए सुगन्धित धूप से भरकर, बीचवाले परदे के भीतर ले आकर

Leviticus 16:12 का विवरण याँम किपुर (प्रायशिचित का दिन) के समय उच्च याजक द्वारा किए गए एक विशेष अनुष्ठान को बताता है। इस अनुष्ठान में, उच्च याजक को एक विशेष थाली में अंगारों और शुद्ध लोबान लेकर पवित्र स्थान (Holy of Holies) में जाना होता था। इस विवरण को हम विभिन्न रबियों की टिप्पणियों और आज के मसीही चर्च में इसके महत्व के संदर्भ में समझ सकते हैं।

### Leviticus 16:12 का विवरण

1. "मग्ना में अंगारे ले जाएगा..." (He shall take a fire-pan full of smoldering coals)

- **मग्ना** (Fire-pan): यह एक छोटा थाली जैसा पात्र होता है, जिसका उपयोग अंगारों को रखने के लिए किया जाता है। यह वही पात्र नहीं होता जो रोज़ के अनुष्ठानों में प्रयोग होता है, बल्कि याँम किपुर के लिए एक विशेष चांदी का मठ होता था, जबकि सामान्य दिनों में सोने का मठ इस्तेमाल होता था।
- **अंगारे:** यह अंगारे बाहरी वेदी से लिए जाते हैं, जो पवित्र स्थान से बाहर स्थित होती है। खास बात यह है कि अंगारे जलते हुए, यानी "सुलगते हुए" होते हैं, ना कि जलते हुए लपटों वाले। इन अंगारों को "हाँसले से सुलगते हुए" होना चाहिए, ताकि वे सुगन्धित धुआ उत्पन्न करें।

2. "और उसके दोनों हाथों में बारीक पिसा हुआ, सुगन्धित लोबान होगा..." (and his

**hands full of finely ground fragrant incense)**

- उच्च याजक दोनों हाथों से लोबान लेकर पवित्र स्थान में प्रवेश करता है। इस लोबान को बारीक रूप से पीसकर तैयार किया जाता था। यॉम किपुर के दिन इसे और भी बारीकी से पीसा जाता था। यह बारीकता इसे अधिक सुगंधित और प्रभावशाली बनाती है।
3. "और वह उसे पर्दे के अंदर ले जाएगा..." (and bring it within the curtain)

- उच्च याजक को इन अंगारों और लोबान को पवित्र स्थान के अंदर, यानी परम पवित्र स्थान (Holy of Holies) में ले जाना था। इसका मतलब यह था कि याजक को पवित्र स्थान के अंदर प्रवेश करने से पहले दोनों को एक साथ लेकर जाना था। कुछ लोग कहते हैं कि लोबान को पहले बाहर रखा जाता था, लेकिन यह स्पष्ट रूप से गलत है क्योंकि जैसा कि लिखा है, पहले "ले जाएगा", फिर "रखेगा"।

### **रब्बियों की व्याख्याएँ**

1. **राशी (Rashi):** राशी ने बताया कि अंगारे बाहरी वेदी के पश्चिमी भाग से लिए जाते थे, जो पवित्र स्थान के प्रवेश द्वार की ओर होता है। इसके अलावा, लोबान को विशेष रूप से यॉम किपुर के लिए बारीक रूप से पीसा जाता है।
2. **इबन एज़रा (Ibn Ezra):** इबन एज़रा ने कहा कि "मग्ना" शब्द का अर्थ स्पष्ट रूप से जाना जाता है, और उच्च याजक के दोनों हाथों में लोबान होता है।
3. **मालबिम (Malbim):** मालबिम ने बताया कि "अंगारे" शब्द का अर्थ विशेष रूप से "सुलगते हुए" होता है, ताकि लोबान और अंगारे का मिश्रण धुएं के रूप में उठे।
4. **डेविड जवी होफमैन (David Zvi Hoffmann):** उन्होंने कहा कि यॉम किपुर के लिए मठा

विशेष होता था और अंगारे सुलगते हुए होने चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि "प्रभु के समक्ष" का मतलब सिर्फ पवित्र स्थान नहीं, बल्कि बाहरी वेदी का पश्चिमी भाग भी हो सकता है।

## आज के मसीही चर्च में इसका महत्व

1. **प्रायश्चित का प्रतीक:** यॉम किपुर का दिन प्रायश्चित और पापों के लिए पश्चाताप का दिन होता है। यह मसीही धर्म में येसु मसीह की बलि का प्रतीक माना जाता है, जो हमारे पापों के लिए सर्वोत्तम बलि बने। याजक के द्वारा किया गया यह अनुष्ठान मसीह के द्वारा किए गए महान कार्य की प्रतीकात्मक छाया है, जहां वह हमारे लिए स्वर्गीय पवित्र स्थान में प्रवेश करता है।
2. **ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग:** लोबान के धुएं का यह चढ़ता हुआ धुआ मसीही विश्वास में प्रार्थनाओं और पूजा का प्रतीक है, जो मसीह के माध्यम से ईश्वर तक पहुँचती हैं। मसीही मानते हैं कि येसु मसीह के द्वारा उन्हें ईश्वर से सीधा संबंध स्थापित हुआ है, जिससे उन्हें प्रार्थनाएँ अर्पित करने का अधिकार मिलता है।
3. **पूजा और प्रार्थना:** कुछ मसीही परंपराओं में लोबान का उपयोग पूजा और प्रार्थना में होता है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि उनकी प्रार्थनाएँ ईश्वर के पास पहुँचें।
4. **ऐतिहासिक संदर्भ:** इस अनुष्ठान के विवरण को समझने से मसीही लोग पुराने नियम और नए नियम की शिक्षाओं के बीच के संबंध को समझ सकते हैं, खासकर यह कि किस प्रकार येसु मसीह ने पुराने नियम की व्यवस्था को पूरा किया।

## मुख्य अंतर और विचार

- जबकि पुराने नियम में यह अनुष्ठान याजक द्वारा पवित्र स्थान में किया जाता था, मसीही विश्वास में येसु मसीह को सर्वोत्तम याजक माना जाता है, जो हमारे पापों के लिए बलि चढ़ाता है और हमें सीधे ईश्वर से जोड़ता है।
- विभिन्न मसीही सम्प्रदाय इस प्रतीकवाद को अपनी विशिष्ट धर्मशास्त्र के अनुसार समझते हैं और लागू करते हैं।

इस प्रकार, Leviticus 16:12 याँम किपुर के अनुष्ठान का महत्वपूर्ण भाग है, जो उच्च याजक द्वारा पवित्र स्थान में की जाने वाली पूजा और प्रायश्चित के बारे में बताता है। मसीही चर्च में इसे येसु मसीह के बलिदान और प्रार्थना के माध्यम से ईश्वर तक पहुँचने के प्रतीक के रूप में देखा जाता है।

<sup>13</sup>उस धूप को प्रभु प्रभु यहोवा के सम्मुख आग में डाले, जिससे धूप का धूआँ साक्षीपत्र के ऊपर के प्रायश्चित्त के ढकने के ऊपर छा जाए, नहीं तो वह मर जाएगा;

लेवितिकस 16:13 में दिया गया वचन यम किप्पुर के दिन के उस महत्वपूर्ण प्रक्रिया को दर्शाता है, जिसमें उच्च याजक को पवित्र स्थान में जाकर वहाँ की धूप को पवित्र गंध से अर्पित करना होता था ताकि वह जीवित रह सके। इसका तात्पर्य यह है कि याजक को सही प्रक्रिया का पालन करना आवश्यक था, क्योंकि यदि वह गलत तरीका अपनाता तो उसकी मृत्यु हो सकती थी।

**वचन का विश्लेषण और रब्बियों के दृष्टिकोण:**

### 1. "वह धूप को आग पर डालेगा":

- यह संकेत करता है कि उच्च याजक को पवित्र स्थान में प्रवेश करने से पहले, उसे धूप को जलती हुई अंगीठी पर डालना था। यह आग बाहर के वेदी से ली जाती थी, और

उसे तंत्र में लाकर विशेष स्थान पर रखा जाता था।

- सदूकियों का मानना था कि धूप को पहले से बाहर तैयार कर लाना चाहिए और फिर उसे जलते हुए लेकर पवित्र स्थान में आना चाहिए। लेकिन रब्बी इस पर असहमत थे और उनका कहना था कि धूप को अंदर पवित्र स्थान में ही डाला जाना चाहिए।
- बेकर शोर और मिज्जाची के अनुसार, "प्रभु के सामने" शब्द से यह स्पष्ट होता है कि धूप को पवित्र स्थान में ही डालना चाहिए, ना कि बाहर से लाकर उसे अंदर लाना। रब्बियों का मानना था कि किसी राजा के सामने जाने से पहले उसके सम्मान में कोई वस्तु बाहर तैयार नहीं की जाती, तो फिर प्रभु के सामने ऐसा क्यों?

## 2. "प्रभु के सामने":

- इस वाक्य में बताया गया है कि धूप को पवित्र स्थान में, साक्षात्कार के सन्देश (आर्क) के ऊपर डाले गए ढक्कन (कपोरट) के सामने रखा जाएगा। इसका उद्देश्य यह था कि यह स्थान प्रभु की उपस्थिति का प्रतीक था और इसके सामने आते समय विशिष्ट नियमों का पालन आवश्यक था।

## 3. "ताकि धूप का बादल साक्षात्कार के ढक्कन को ढक सके":

- इस वाक्य का मतलब है कि धूप का धुंआ या बादल प्रभु की उपस्थिति को छिपाता है, ताकि उच्च याजक उसकी दिव्य महिमा को न देख सके और मर न जाए।
- चिज़कुनि के अनुसार, यह बादल प्रभु की महिमा से बचाव का कार्य करता था।
- दाविद पीड़ित व्यक्तिलोफमैन का कहना है कि यह बादल न केवल धूप का बल्कि प्रभु के पवित्र आत्मा का भी प्रतीक था, जो याजक को बचाता था।
- रव हिंश ने इसे इस तरह समझाया कि धूप की धारा सीधी ऊपर उठती थी, जैसे ताढ़

का पेड़, और फिर दीवारों तक फैल जाती थी।

#### 4. "ताकि वह मर न जाए":

- यह चेतावनी थी कि यदि उच्च याजक ने निर्दिष्ट विधि का पालन नहीं किया, तो उसे मृत्यु का सामना करना पड़ सकता था।
- आदरेट एलियाह का कहना है कि अगर धूप नहीं थी या उसमें कोई तत्व गायब था, तो याजक को मौत का सामना करना पड़ता।
- गुर अरेह ने भी इस बात का उल्लेख किया कि अगर याजक ने गलत तरीके से धूप तैयार किया या उसे नहीं लाया, तो उसे मृत्यु हो सकती थी।

**रब्बी दृष्टिकोण और उनकी महत्वपूर्ण बातें:**

- **प्रक्रिया का महत्व:** इस वचन में यह स्पष्ट किया गया है कि प्राचीन यहूदी धर्म में हर कार्य की एक सही विधि थी, और उसमें कोई भी त्रुटि गंभीर परिणाम ला सकती थी।
- **आर्क और साक्षात्कार:** आर्क (केवर) और साक्षात्कार (हृदृत) का बहुत महत्व था। हकटाव वेहाकबालाह के अनुसार, "कपोरट" का अर्थ "कफारा" (अतिविशेष) से भी जुड़ा हुआ है, जो पाप की क्षमा से संबंधित है।
- **सदूकियों के साथ विवाद:** रब्बी और सदूकियों के बीच यह विवाद था कि क्या विधि को शाब्दिक रूप से लागू करना चाहिए या इसे समझने की आवश्यकता है। रब्बी के अनुसार, सच्चा आदर्श तब होगा जब उच्च याजक का कार्य पूरी श्रद्धा और सटीकता से किया जाए।

**आज के मसीही विश्वास में इसका महत्व:**

- **धूप का प्रतीकवाद:** मसीही चर्चों में विशेष रूप से जो लिटर्जिकल चर्च होते हैं, वहां धूप का उपयोग पूजा में किया जाता है। यह पूजा के समय प्रभु के प्रति विश्वास, प्रार्थना की स्वीकृति

और प्रभु की उपस्थिति का प्रतीक है।

- **प्रभु यीशु मसीह को उच्च याजक के रूप में देखना:** नये नियम में, विशेष रूप से इब्रानियों की पुस्तक में, प्रभु यीशु मसीह को अंतिम उच्च याजक के रूप में देखा गया है, जिन्होंने स्वर्गीय पवित्र स्थान में अपने रक्त से बलिदान अर्पित किया। यह पुराने नियम की विधियों की तुलना में एक अंतिम और पूर्ण बलिदान है।
- **पर्दा का फटना:** मसीह के क्रूस पर मरने के समय मन्दिर के पर्दे का फटना, जो प्रभु के साथ मानव के संवाद का प्रतीक था, मसीही विश्वासियों के लिए दर्शाता है कि अब हर कोई मसीह के माध्यम से सीधे प्रभु से मिल सकता है। यह उन धुएं के बादल की आवश्यकता को समाप्त करता है जो पुराने नियम में उच्च याजक की रक्षा करता था।

**निष्कर्ष:** लेवितिकस 16:13 का महत्व न केवल यहांी धर्म में है, बल्कि मसीही धर्म में भी इसके प्रतीकात्मक अर्थ गहरे हैं। यह वचन पवित्रता, विधि, और प्रभु के साथ संबंध की आवश्यकता को दर्शाता है, और मसीही विश्वास में यह प्रभु यीशु मसीह के माध्यम से प्रभु से सीधे जुड़ने के सिद्धांत से जुड़ा हुआ है।

<sup>14</sup>तब वह बछड़े के लहू में से कुछ लेकर पूर्व की ओर प्रायश्चित्त के ढकने के ऊपर अपनी उंगली से छिड़के, और फिर उस लहू में से कुछ उंगली के द्वारा उस ढकने के सामने भी सात बार छिड़क दे।

लेवितिकस 16:14 में योंम किपुर (प्रायश्चित्त दिवस) के अनुष्ठान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा वर्णित है, जिसमें उच्च पुरोहित पवित्र स्थान (हॉली ऑफ होलिज) में रक्त छिड़कता है। इस आक्षेप में लिखा है: "वह बैल के रक्त में से कुछ लेगा और अपनी उंगली से उसे मरसी सीट के सामने पूर्व दिशा में छिड़केगा, और मरसी सीट के सामने वह सात बार रक्त छिड़केगा।"

## उच्च पुरोहित का कार्य

1. **रक्त लेना:** उच्च पुरोहित उस व्यक्ति से रक्त लेता है, जिसने रक्त को जमने से बचाने के लिए उसे हिलाया था। रक्त को बहने देना जरूरी है क्योंकि यह बलिदान का प्रतीक है।
2. **रक्त छिड़कने के स्थान:**
  - “मरसी सीट के सामने (कप्पोरेट), पूर्व दिशा में”: यह उस स्थान को संदर्भित करता है जहाँ यह कार्य किया जाता है। यह छिड़काव ऊपर नहीं, बल्कि मरसी सीट के सामने किया जाता है।
  - “मरसी सीट के सामने”: यह संभवतः अर्थ में ज़मीन पर या उसी के सामने होता है।
3. **रक्त छिड़कने का तरीका:** उच्च पुरोहित अपनी दाहिनी अंगुली से रक्त छिड़कता है। यह छिड़काव एक झापकी की तरह होता है, और यह सीधी रेखा में होता है।
4. **छिड़कने की संख्या:**
  - **एक बार ऊपर:** उच्च पुरोहित एक बार मरसी सीट के ऊपर रक्त छिड़कता है।
  - **सात बार नीचे:** वह सात बार मरसी सीट के सामने रक्त छिड़कता है।
5. **गिनती:** उच्च पुरोहित छिड़काव की गिनती ज़ोर से करता है: “एक, एक और एक, एक और दो, एक और तीन,” और इसी तरह से। यह सुनिश्चित करने के लिए कि वह गलती न करें।

## रब्बीयों के विचार

रब्बी इस आक्षेप पर कई व्याख्याएँ देते हैं। यहाँ कुछ प्रमुख बिंदु हैं:

- “पर” बनाम “सामने”: शब्द “अल” का अर्थ ‘ऊपर’ या ‘सामने’ होना चाहिए, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि रक्त सीधे मरसी सीट पर डाला जाए, बल्कि यह उसके सामने या एक स्थान पर डाला जाता है।
- **पूर्व दिशा:** पूर्व दिशा को महत्वपूर्ण माना जाता है। शब्द “यने” (सामना) का हमेशा मतलब

पूर्व दिशा से होता है। इसका अर्थ है कि उच्च पुरोहित पूर्व दिशा में खड़ा होकर छिड़काव करता है।

- **सात छिड़काव:** सात का संख्या पूर्णता और संपूर्णता का प्रतीक है। यह सृष्टि के सात दिनों से संबंधित है। रब्बी यह मानते हैं कि सात छिड़काव से प्रभु से संपूर्ण मेल-मिलाप होता है।
- **गिनती:** उच्च पुरोहित को गिनती पूरी तरह से करनी चाहिए। यदि कोई गिनती में गलती करता है तो उसे सही तरीके से पुनः गिनना आवश्यक होता है।

### **रब्बियों के उदाहरण:**

- **राशी:** राशी का मानना है कि "उसकी अंगुली से" का मतलब केवल एक छिड़काव है और अगले वाक्य में सात छिड़काव की संख्या दी जाती है।
- **मालबिम:** मालबिम ने हिन्दू शब्दों की व्याख्या की है। वह बताते हैं कि "वह छिड़केगा" का मतलब एक बार छिड़काव करना है, और "इसे" के प्रयोग से यह स्पष्ट होता है कि यह एक ही क्रिया है।
- **रव हिर्ष:** रव हिर्ष का मानना है कि ऊपर एक छिड़काव प्रभु से रिश्ते का प्रतीक है, जबकि सात छिड़काव नीचे प्रभु के आदेश को पृथ्वी पर लागू करने का संकेत है।
- **इब्र एज़रा:** इब्र एज़रा का कहना है कि पारंपरिक व्याख्याओं की आवश्यकता है ताकि शब्दों के सही अर्थ समझे जा सकें।

### **आज के मसीही दृष्टिकोण**

क्रिश्चियन परंपरा में, पुरानी नियमों के बलिदान प्रणाली को अक्सर मसीह की बलि की पूर्ववर्ती के रूप में देखा जाता है। यहाँ कुछ तरीके हैं जिनसे मसीही इस आक्षेप को समझते हैं:

1. **बलि और प्रायश्चित्त:** इस अनुष्ठान में रक्त जीवन को प्रतीकित करता है, जो पाप के लिए

बलिदान होता है। नया नियम इसे मसीह की बलि के रूप में समझता है, जो मानवता के पापों के प्रायश्चित्त के लिए सर्वोत्तम बलिदान है।

2. **उच्च पुरोहित:** पुराने नियम में उच्च पुरोहित, मसीह की भूमिका का पूर्वाभास था, जो अब मसीह को सर्वोच्च पुरोहित के रूप में देखता है।
3. **प्रतीकवाद:** रक्त छिड़कने का कार्य शुद्धिकरण और प्रभु के साथ मेल-मिलाप का प्रतीक है। मसीही धर्म में इसे मसीह के द्वारा पापों की शुद्धि के रूप में देखा जाता है।
4. **प्रभु से पहुंच:** पुराना नियम पवित्र स्थान को प्रभु की उपस्थिति का स्थान मानता था। मसीही धर्म में, मसीह का बलिदान यह बताता है कि अब सभी लोग सीधे प्रभु से जुड़ सकते हैं।

### **निष्कर्ष:**

1. **रब्बियों का दृष्टिकोण** इन छिड़कावों के माध्यम से हम पूरी दुनिया और उच्चतम क्षेत्रों से जुड़ने की कोशिश करते हैं। यह पापों के लिए प्रायश्चित्त और प्रभु से मेल-मिलाप की प्रक्रिया है।
2. **मसीही दृष्टिकोण** में यह अनुष्ठान मसीह के बलिदान की ओर इशारा करता है, जो प्राचीन अनुष्ठानों को पूरी तरह से पूरा करता है और हमारे पापों के लिए सर्वोत्तम प्रायश्चित्त है।

यह वर्णन रब्बियों के विचार और मसीही धर्म के दृष्टिकोण को जोड़कर पुरानी और नई व्यवस्थाओं को एक साथ समझने में मदद करता है।

<sup>15</sup>फिर वह उस पापबलि के बकरे को जो साधारण जनता के लिये होगा बलिदान करके उसके लहू को बीचवाले परदे के भीतर ले आए, और जिस प्रकार बछड़े के लहू से उसने किया था ठीक वैसा ही वह बकरे के लहू से भी करे, अर्थात् उसको प्रायश्चित्त के ढकने के ऊपर और

## उसके सामने छिड़के।

Leviticus 16:15 में यों किप्पुर (आत्म-प्रायश्चित का दिन) के दिन एक बकरा (बकरा पापबलि के रूप में) को बलि देने का विवरण है, और यह बलि प्रजा के पापों के लिए है। यह बकरा एक विशेष बलि है, जो पापों के लिए प्रायश्चित करने के लिए अर्पित की जाती है।

### मुख्य तत्व और उनके अर्थ

#### 1. बकरा की बलि देना:

- बकरा की बलि देने से पहले, उच्च याजक ने अपने पापों के लिए एक बैल की बलि दी थी। यह दर्शाता है कि याजक का प्रायश्चित पहले होना चाहिए, ताकि वह दूसरों के पापों के लिए बलि दे सके।
- बकरा की बलि देने के बाद, उसकी रक्त को पवित्र स्थान (पवित्र स्थान के सामने) में लाया जाता है, जो मंदिर का सबसे पवित्र स्थान होता था।

#### 2. रक्त का छिड़काव:

- याजक बकरा के रक्त को मंदिर के पवित्र स्थान पर छिड़कता था, जैसे बैल के रक्त को। रक्त का छिड़काव एक विशेष विधि से किया जाता था - एक बार ऊपर की ओर और सात बार नीचे की ओर। यह रक्त छिड़काव पवित्र स्थान और वहां की वस्तुओं की अशुद्धि से शुद्धता लाता था।

#### 3. प्रजा के लिए प्रायश्चित:

- यह बलि विशेष रूप से प्रजा के पापों के लिए होती थी, और यह याजक के परिवार के लिए नहीं होती थी। याजक के पापों का प्रायश्चित बैल द्वारा किया जाता था, जबकि प्रजा का प्रायश्चित बकरा द्वारा।

## रब्बियों की व्याख्याएँ:

### "प्रजा के लिए" (asher le'am):

"प्रजा के लिए" का मतलब यह है कि बकरा का बलि प्रजा के पापों के लिए होती है।

रब्बी इसे इस रूप में समझते हैं कि प्रजा के पापों का प्रायश्चित इस बकरा से किया जाता है, जबकि याजक के पापों का प्रायश्चित बैल से किया जाता है।

एक रब्बी ने कहा कि इस वाक्य के साथ यह सिखाया जाता है कि बकरा केवल प्रजा के लिए है, और याजक का प्रायश्चित बैल से होता है।

### रक्त छिड़काव का पैटर्न:

"और जैसा उसने बैल के रक्त के साथ किया, वैसा वह बकरा के रक्त के साथ करेगा"

का अर्थ है कि बकरा के रक्त का छिड़काव भी बैल के रक्त के जैसा ही किया जाएगा - एक बार ऊपर और सात बार नीचे।

### पवित्र स्थान का प्रायश्चित:

बकरा का बलि पवित्र स्थान की अशुद्धि को शुद्ध करता था। इसका मुख्य उद्देश्य मंदिर

और उसकी पवित्र वस्तुओं को शुद्ध करना था, ना कि सभी प्रकार के पापों को।

## मसीही चर्च में इसका आज का महत्व:

मसीही धर्म में, लेवितिकस 16:15 और इसके संदर्भ में दिए गए बलि संस्कारों को प्रभु यीशु मसीह के बलिदान के प्रतीक के रूप में देखा जाता है। यहाँ कुछ महत्वपूर्ण बिंदु हैं:

### 1. प्रभु यीशु मसीह का अंतिम बलिदान:

- मसीही विश्वास के अनुसार, प्रभु यीशु मसीह का बलिदान सभी मानवता के पापों

के लिए अंतिम और पूर्ण प्रायश्चित है। जैसे याजक और बकरा बलि द्वारा प्रायश्चित करते थे, वैसे ही प्रभु यीशु ने क्रूस पर अपना जीवन दे दिया ताकि हर व्यक्ति के पापों का प्रायश्चित हो सके।

## 2. मसीही धर्म में उच्च याजक:

- प्रभु यीशु को मसीही धर्म में उच्च याजक माना जाता है, जो खुद को बलि के रूप में अर्पित करता है। पुराने नियम में याजक दूसरों के पापों के लिए बलि देते थे, लेकिन प्रभु यीशु ने खुद को ही बलि दिया, जो असीम और पूर्ण प्रायश्चित था।

## 3. पवित्र स्थान और रक्त का महत्व:

- पुराने नियम में उच्च याजक पवित्र स्थान में प्रवेश करता था, जबकि मसीही विश्वास के अनुसार प्रभु यीशु ने स्वर्ग में परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश किया, जो इस प्रक्रिया का पूरा अर्थ है। प्रभु यीशु का रक्त अब हमारी आत्माओं को शुद्ध करता है, जबकि पहले यह शारीरिक और प्रतीकात्मक था।

## 4. प्रायश्चित के लिए बलि:

- लेवितिकस 16 के बलि संस्कार मसीही विश्वास में पाप और शुद्धता के बारे में शिक्षा देते हैं। जैसे बकरा का रक्त पवित्र स्थान को शुद्ध करता था, वैसे ही प्रभु यीशु का रक्त विश्वासियों की आत्माओं को शुद्ध करता है और उन्हें परमेश्वर से मेल-मिलाप में लाता है।

**निष्कर्ष:** लेवितिकस 16:15 में बकरा की बलि और रक्त का छिड़काव पवित्र स्थान को शुद्ध करने का कार्य करता था, और यह संस्कार मसीही विश्वास के अनुसार प्रभु यीशु मसीह के बलिदान की ओर इशारा करता है, जो पापों के लिए शुद्धि और प्रायश्चित लाता है। यद्यपि यह संस्कार अब

मसीही चर्चों में नहीं किए जाते, फिर भी उनका अर्थ मसीही विश्वासियों के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि प्रभु यीशु का बलिदान उनके जीवन में शुद्धता और परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप का मार्ग बनता है।

<sup>16</sup>और वह इस्राएलियों की भाँति भाँति की अशुद्धता, और अपराधों, और उनके सब पापों के कारण पवित्रस्थान के लिये प्रायश्चित्त करे; और मिलापवाला तम्बू जो उनके संग उनकी भाँति भाँति की अशुद्धता के बीच रहता है उसके लिये भी वह वैसा ही करे।

Leviticus 16:16 में यौम किष्पुर (प्रायश्चित्त दिवस) पर जो विशेष प्रायश्चित्त क्रिया की जाती है, उसका विवरण दिया गया है। इस वचन में यह बताया गया है कि कैसे पवित्र स्थान (Holy Place), तंबू (Tent of Meeting), और इस्राएल के लोग अपनी अशुद्धियों और पापों के लिए प्रायश्चित्त करेंगे।

### वचन का अर्थ और उसके प्रमुख तत्व:

#### 1. पवित्र स्थान के लिए प्रायश्चित्त:

- "वह पवित्र स्थान के लिए प्रायश्चित्त करेगा" - इसका मतलब यह है कि यह प्रायश्चित्त पवित्र स्थान के लिए नहीं है, बल्कि इस्राएलियों के पापों से उत्पन्न अशुद्धियों के कारण है।
- यहां पवित्र स्थान का अर्थ है पवित्र स्थल (Holy of Holies), जो मंदिर का सबसे पवित्र स्थान है।

#### 2. इस्राएलियों की अशुद्धियां:

- वचन में कहा गया है कि "इस्राएलियों की अशुद्धियों के कारण" प्रायश्चित्त किया जाएगा। यह अशुद्धियां उन विशेष प्रकार की अशुद्धियों को संदर्भित करती हैं जो

मंदिर और उसके पवित्र वस्त्रों से संबंधित हैं।

### 3. पाप और उल्लंघनः

- "उनके पाप और उनके अपराधों के लिए" – यहाँ पाप (chatot) का मतलब अनजाने में किए गए पाप से है और अपराध (pesha'im) का मतलब जानबूझकर किए गए पाप से है।

### 4. तंबू का प्रायशिच्तः

- "तंबू के लिए भी ऐसा ही किया जाएगा" – इसका मतलब है कि तंबू (जो इस्माएलियों का धार्मिक स्थल था) भी इस्माएलियों की अशुद्धियों के कारण प्रायशिच्त की आवश्यकता है।
- इस वचन में यह बताया गया है कि यह प्रायशिच्त पवित्र स्थान और तंबू दोनों के लिए आवश्यक था, ताकि पवित्रता बनाए रखी जा सके।

**रब्बियों द्वारा व्याख्याएः**

#### 1. अशुद्धियों के प्रकारः

- रब्बियों ने यह स्पष्ट किया कि यहां वचन में मंदिर से संबंधित अशुद्धियों का उल्लेख किया गया है। उदाहरण के लिए, यदि कोई व्यक्ति अशुद्ध होकर मंदिर में प्रवेश करता है, या पवित्र भोजन को अशुद्ध होकर खाता है, तो इसके लिए प्रायशिच्त की आवश्यकता होती है।
- यह उन अशुद्धियों को संदर्भित करता है जो धार्मिक कर्तव्यों के दौरान उत्पन्न होती हैं, न कि अन्य पापों जैसे मूर्तिपूजा, अनैतिकता या हत्या।

#### 2. जानबूझकर बनाम अनजाने में किए गए पापः

- रब्बी बताते हैं कि *peshaim* (जानबूझकर पाप) और *chatot* (अनजाने में पाप) दोनों के लिए प्रायशिच्छा की आवश्यकता है, बशर्ते वे पवित्र स्थान के अशुद्धियों से जुड़े हों।
- एक रब्बी ने कहा कि जानबूझकर किए गए पाप विशेष रूप से मंदिर से जुड़े होते हैं, जबकि अनजाने में किए गए पाप सामान्य होते हैं।

### 3. पाप और अशुद्धता के साथ ज्ञान:

- रब्बियों के अनुसार, यदि कोई व्यक्ति अपने अशुद्धता के बारे में पहले नहीं जानता था, तो यॉम किप्पुर के दौरान उसे प्रायशिच्छा की आवश्यकता होती थी। यदि कोई व्यक्ति अशुद्धता के बारे में जानता था और फिर भूलकर भी पाप करता था, तो यह भी प्रायशिच्छा के योग्य था।

### 4. "पर" पवित्र स्थान पर:

- कुछ रब्बी ने "पर" शब्द को इस अर्थ में लिया कि प्रायशिच्छा पवित्र स्थान के भीतर किया जाता है, जबकि अन्य ने इसे पवित्र स्थान से संबंधित मामलों के रूप में लिया, जैसे पवित्र वस्त्रों या पवित्र स्थान से जुड़ी अशुद्धियां।

### 5. ईश्वर की उपस्थिति अशुद्धता के बीच:

- रब्बी इस वचन को इस रूप में समझते हैं कि यद्यपि लोग अशुद्ध होते हैं, फिर भी प्रभु की उपस्थिति उनके बीच बनी रहती है। यह दिखाता है कि ईश्वर ने अपने लोगों को नहीं छोड़ा, चाहे वे पापी और अशुद्ध क्यों न हों। यह ईश्वर की दया और प्रेम का प्रतीक है।

### आज के मसीही चर्च में महत्व:

## 1. प्रभु यीशु के बलिदान के रूप में अंतिम प्रायश्चित्तः

- मसीही मान्यता के अनुसार, प्रभु यीशु मसीह ने क्रूस पर अपनी मृत्यु से सारे पापों का प्रायश्चित्त किया। जैसे यॉम किप्पुर में पवित्र स्थान और तंबू के लिए प्रायश्चित्त किया जाता था, वैसे ही प्रभु यीशु ने अपने बलिदान से न केवल पवित्र स्थान बल्कि पूरे संसार के पापों के लिए प्रायश्चित्त किया।
- मसीह का बलिदान एक बार और हमेशा के लिए हुआ, जो यम किप्पुर के बलिदानों की अस्थिरता को स्थायी रूप से समाप्त कर देता है।

## 2. ईश्वर की उपस्थितिः

- मसीही धर्म में यह माना जाता है कि पवित्र आत्मा (Holy Spirit) अब विश्वासियों में निवास करता है, और वह अशुद्धता के बावजूद विश्वासियों के साथ रहता है। यह वही सिद्धांत है जो रब्बियों ने कहा था कि ईश्वर अपनी उपस्थिति अशुद्धियों के बीच बनाए रखता है।

## 3. नई वाचा:

- पुराने नियम में जो क्रान्ती बलिदान थे, वे मसीह की नई वाचा के तहत समाप्त हो गए हैं। प्रभु यीशु ने पापों के प्रायश्चित्त के लिए अपना जीवन दिया, और विश्वासियों को उसके माध्यम से मुक्ति मिलती है, न कि पुराने नियम के बलिदानों द्वारा।

## 4. संपूर्ण प्रायश्चित्तः

- जैसे यॉम किप्पुर के बलिदान पवित्र स्थान और तंबू के लिए थे, वैसे ही प्रभु यीशु ने सम्पूर्ण मानवता के पापों का प्रायश्चित्त किया। प्रभु यीशु का बलिदान केवल

आंतरिक अशुद्धताओं को ही नहीं, बल्कि पूरे संसार के पापों को समाप्त करता है।

इस प्रकार, Leviticus 16:16 मसीही चर्च में एक प्रतीकात्मक संदर्भ के रूप में देखा जाता है, जिसमें प्रभु यीशु मसीह के बलिदान को एक आदर्श रूप में स्वीकार किया जाता है, और यह समझा जाता है कि अब विश्वासियों को यम किप्पुर के बलिदानों की आवश्यकता नहीं है क्योंकि प्रभु यीशु ने एक बार और हमेशा के लिए प्रायशिच्त किया।

<sup>17</sup>जब हारून प्रायशिच्त करने के लिये पवित्रस्थान में प्रवेश करे, तब से जब तक वह अपने और अपने घराने और इस्राएल की सारी मण्डली के लिये प्रायशिच्त करके बाहर न निकले तब तक कोई मनुष्य मिलापवाले तम्बू में न रहे।

Leviticus 16:17 का सार यह है: "जब वह पवित्र स्थान में प्रायशिच्त करने के लिए प्रवेश करेगा, तब से लेकर जब तक वह बाहर न आ जाए, तब तक बैठक के तंबू में कोई मनुष्य न हो।" इसका मतलब है कि यों किप्पुर (प्रायशिच्त का दिन) के दिन, जब उच्च याजक पवित्र स्थान में प्रवेश करता है, तब कोई अन्य व्यक्ति वहां नहीं होना चाहिए।

### मुख्य तत्वों का विश्लेषण:

1. "कोई मनुष्य नहीं": यह बात सभी लोगों पर लागू होती है, जिसमें सामान्य याजक भी आते हैं, जो सामान्यतः तंबू में प्रवेश कर सकते थे। कुछ रब्बी इस पर भी कहते हैं कि इसका मतलब यह है कि यहां तक कि स्वर्गदूतों को भी तंबू में प्रवेश की अनुमति नहीं है।

- चिज़कुनी के अनुसार, यह निषेध केवल अन्य याजकों पर लागू होता है ताकि वे शुद्धता से संबंधित अनिश्चितताओं से बच सकें।

- इन्हे एज़रा यह बताते हैं कि इसका मतलब केवल कोहानी (याजक) है।
  - टोराह तेमीमा और ल्ज़ो'ना उरेना के अनुसार, इसका मतलब यह भी है कि वे beings जो मनुष्य के समान होते हैं, तंबू में नहीं आ सकते।
  - रब्बेनू बायह कहते हैं कि तम्बू के अंदर किसी भी मानव रूप के स्वर्गदूत का भी प्रवेश निषेध है।
2. "बैठक का तंबू": यह शब्द पवित्र स्थान के भीतर के क्षेत्र को संदर्भित करता है, जहाँ प्रायश्चित्त के कर्म किए जाते थे।
- मालबिम के अनुसार, इस शब्द का विस्तार यरुशलेम के मंदिर तक किया जा सकता है, क्योंकि यह भी पवित्र स्थल था।
  - रालबाग का कहना है कि तंबू और वे स्थान, जहाँ बलि की वेदी थी, वे भी इसमें शामिल थे।
  - रेज़ियो ने स्पष्ट किया कि निषेध का मतलब केवल पवित्र स्थल और पवित्र स्थान से है, न कि बाहरी आंगन से।
3. "प्रायश्चित्त करने के लिए": इसका मतलब है उच्च याजक के विशेष कार्य, जिसमें धूप चढ़ाना और रक्त का छिड़काव शामिल था।
- हामेक दवार कहते हैं कि धूप चढ़ाने से प्रायश्चित्त होता था।
  - रव हिर्श कहते हैं कि धूप चढ़ाने का उद्देश्य पूरे राष्ट्र की एकता को व्यक्त करना था।
  - टोराह तेमीमा के अनुसार, धूप चढ़ाने का उद्देश्य उच्च याजक के लिए, उनके परिवार के लिए और सम्पूर्ण इस्राएल के लिए प्रायश्चित्त करना था।
4. "जब तक वह बाहर न आ जाए": इस निषेध का पालन तब तक करना होता था जब तक उच्च याजक तंबू से बाहर नहीं आता।

## रब्बी विचार और विवरणः

1. **आइसोलेशन का उद्देश्य:** कई रब्बी बताते हैं कि उच्च याजक का इस समय अकेले होना इस प्रायश्चित्त कर्म की विशाल पवित्रता को सुनिश्चित करने के लिए था।
  - **बेखोर शोर** कहते हैं कि इस समय को "ईश्वरीय उपस्थिति के भय" के कारण उच्च याजक को अकेला रहना चाहिए।
  - **डेविड पीड़ित व्यक्तिहाँफमैन** के अनुसार, उच्च याजक को अपने महत्वपूर्ण कार्य पर ध्यान केंद्रित करने के लिए अलग किया गया था।
  - **रालबाग** का कहना है कि इस समय उच्च याजक का उद्देश्य तंबू की अशुद्धियों का प्रायश्चित्त करना था।
  - **स्टेन्सालज़** का कहना है कि उच्च याजक इस समय खुद, अपने परिवार और सम्पूर्ण इस्राएल का प्रायश्चित्त करता है।
2. **प्रायश्चित्त की समयावधि:**
  - **मालबिम** के अनुसार, "जब वह प्रवेश करता है प्रायश्चित्त करने के लिए" का मतलब केवल धूप चढ़ाने का प्रारंभ नहीं है, बल्कि इसमें रक्त का छिड़काव और अन्य प्रायश्चित्त कर्म भी शामिल हैं।
3. **प्रायश्चित्त की प्रक्रिया:** उच्च याजक पहले खुद के लिए, फिर अपने परिवार के लिए, और फिर सम्पूर्ण इस्राएल के लिए प्रायश्चित्त करता था।
4. **धूप और प्रायश्चित्त:** **talmud** में यह व्याख्या की जाती है कि धूप चढ़ाना, "लाशोन हारा" (चर्चा की बुराई) के लिए प्रायश्चित्त करता है।

## मसीही चर्च में इसका महत्व:

वर्तमान मसीही चर्चों में इस शास्त्र का महत्व प्रभु यीशु मसीह की प्रायशिच्त और याजकत्व से जोड़ा जाता है। यहां यह कैसे व्याख्यायित किया जा सकता है:

1. **प्रभु यीशु को उच्च याजक के रूप में देखना:** मसीही धर्म में प्रभु यीशु को सर्वोच्च याजक माना जाता है, जिन्होंने स्वर्गीय पवित्र स्थान (स्वर्ग) में प्रवेश किया और मानवता के लिए प्रायशिच्त किया [इब्रानियों 9]। इस प्रकार, पृथ्वी पर तंबू केवल प्रतीकात्मक रूप से स्वर्गीय पवित्र स्थान का प्रतिनिधित्व करता है।
2. **पूर्ण बलि:** उच्च याजक के अकेलेपन का कारण प्रभु यीशु के अद्वितीय और एकल प्रायशिच्त कार्य का प्रतीक है।
3. **ईश्वर से संपर्क:** जहां केवल उच्च याजक को पवित्र स्थान में प्रवेश की अनुमति थी, वहीं मसीही विश्वास यह मानते हैं कि प्रभु यीशु के माध्यम से सभी विश्वासी अब सीधे ईश्वर से संपर्क कर सकते हैं [इफिसियों 2:18]।
4. **प्रतीकात्मक अर्थ:** इस शास्त्र का अर्थ आज के मसीही चर्चों में पवित्रता और शुद्धता की आवश्यकता के रूप में लिया जाता है जब हम ईश्वर से संपर्क करते हैं, और यह दर्शाता है कि पाप कितनी गंभीर चीज़ है।

**महत्वपूर्ण ध्यान देने योग्य बात:** कुछ जानकारी जो मसीही व्याख्याओं में दी जाती है, वह आपके स्रोतों में स्पष्ट रूप से उल्लेखित नहीं है, इसलिए इसे स्वतंत्र रूप से सत्यापित करना आवश्यक है।

<sup>18</sup>फिर वह निकल कर उस वेदी के पास जो प्रभु प्रभु यहोवा के सामने है जाए और उसके लिये प्रायश्चित्त करे, अर्थात् बछड़े के लहू और बकरे के लहू दोनों में से कुछ लेकर उस वेदी के चारों कोनों के सींगों पर लगाए।

### Leviticus 16:18: उच्च याजक की क्रियाएँ

यह शास्त्रवाक्य उस समय की प्रक्रिया को वर्णित करता है जब उच्च याजक (High Priest) यम किपुर (Day of Atonement) पर पवित्र स्थान से बाहर निकलते हैं और वे वेदी (altar) के लिए प्रायश्चित्त करते हैं। इसे इस प्रकार से समझ सकते हैं:

”वह बाहर जाएगा”: उच्च याजक के पवित्र स्थान से बाहर निकलने की क्रिया का अर्थ है कि वह पवित्र स्थान (Holy of Holies) से निकलकर, पवित्र स्थान के अन्य भागों में जाएंगे। उनका यह बाहर निकलना, वेदी के पास और अन्य भागों में प्रायश्चित्त करने के लिए आवश्यक था।

”प्रायश्चित्त करना”: यह क्रिया वेदी की शुद्धता को पुनः प्राप्त करने के लिए है। यहाँ पर उच्च याजक वेदी के चार कोनों पर बैल और बकरा के रक्त को छिड़कते हैं। इस रक्त का मिलाना और वेदी के कोनों पर छिड़कना, वेदी को शुद्ध करता है और इसे पवित्र करता है।

रक्त का मिश्रण: यह प्रक्रिया महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें बैल के रक्त (जो याजक के पापों के लिए है) और बकरा के रक्त (जो लोगों के पापों के लिए है) को मिलाया जाता है। यह दोनों रक्त एक साथ प्रायश्चित्त की प्रक्रिया का हिस्सा बनते हैं।

होन और रक्त छिड़कने का क्रम: विभिन्न रब्बी इस बात पर चर्चा करते हैं कि रक्त को किस क्रम में छिड़कना चाहिए। Rashi और Malbim यह बताते हैं कि ”वह बाहर जाएगा“ का अर्थ है कि याजक पहले वेदी के उत्तर-पूर्व कोने से शुरू करेगा, क्योंकि वह पहले पवित्र स्थान के पश्चिम में था और अब वह वेदी तक पहुंचने के लिए पूर्व की ओर चलेगा।

## रब्बी व्याख्याएँ:

- “बाहर जाने” का अर्थ: रब्बी बताते हैं कि “बाहर जाना” का मतलब यह है कि याजक को वेदी के पास जाने के लिए एक सीमा पार करनी होती है। वेदी के पास जाने से पहले उसे एक बाधा को पार करना था, जैसे कि वह पहले पवित्र स्थान में था और अब उसे वेदी के पास जाना था।
- वेदी का स्वच्छिकरण: रब्बी यह बताते हैं कि यह प्रायश्चित्त किसी व्यक्तियों के पापों के लिए नहीं था, बल्कि वेदी और उसके पवित्र वस्त्रों के लिए था। यह धार्मिक जगह भी पापों से दूषित हो सकती थी, इसलिए इसकी शुद्धि जरूरी थी।
- रक्त का मिश्रण: कुछ रब्बी इसे यह मानते हैं कि रक्त का मिश्रण यह सुनिश्चित करता है कि यह एक विशेष प्रायश्चित्त क्रिया है, और रक्त का संलयन इसका हिस्सा है। इसका उद्देश्य पापों का शुद्धिकरण और समर्पण है।

## मसीही दृष्टिकोण में इस क्रिया का महत्वः

मसीही विश्वास में, यम किपुर के दिन के यह प्रायश्चित्त क्रियाएँ प्रभु यीशु मसीह के बलिदान की ओर संकेत करती हैं। यहाँ कुछ महत्वपूर्ण विचार हैं:

- प्रभु यीशु मसीह को उच्च याजक के रूप में देखना: मसीही विश्वास में, प्रभु यीशु को उच्च याजक के रूप में देखा जाता है, जो मानवता के पापों के लिए अंतिम बलिदान पेश करते हैं। यम किपुर के यह बलिदान और रक्त के छिड़काव प्रभु यीशु के बलिदान के प्रतीक हैं।
- प्रायश्चित्त और शुद्धि: जैसे कि वेदी को शुद्ध किया जाता है, वैसे ही मसीही विश्वास में, प्रभु यीशु के बलिदान से मानवता के पापों का शुद्धिकरण होता है। मसीह के बलिदान के

द्वारा मनुष्य का प्रायशिच्त होता है।

- **रक्त का मिश्रण और सांकेतिक महत्वः** मसीही विचार में, रक्त का मिश्रण प्रभु यीशु के मानव और ईश्वर के स्वभाव के एकता का प्रतीक हो सकता है। यह भी माना जाता है कि यह रक्त मानवता के विभिन्न हिस्सों के एकता का प्रतीक है।
- **मसीही चर्च में इसका महत्वः** मसीही धर्म में, यह विश्वास किया जाता है कि प्रभु यीशु का बलिदान एक बार के लिए और सभी के लिए था, इसलिये बार-बार बलिदान करने की आवश्यकता नहीं है। इस प्रकार, यम किपुर की प्रथा, जहाँ हर वर्ष बलिदान होते थे, अब मसीही विश्वास में प्रभु यीशु के एक बार के बलिदान द्वारा पूर्ण होती है।

**सारांशः** Leviticus 16:18 में उच्च याज्ञक द्वारा वेदी के चारों कोनों पर रक्त छिड़कने की प्रक्रिया का विवरण है, जो वेदी को शुद्ध करने और पवित्र करने के लिए है। रब्बी इसे धार्मिक स्थान की शुद्धता के लिए महत्वपूर्ण मानते हैं, जबकि मसीही दृष्टिकोण में इसे प्रभु यीशु मसीह के अंतिम बलिदान और पापों के शुद्धिकरण के प्रतीक के रूप में देखा जाता है।

<sup>19</sup> और उस लहू में से कुछ अपनी ऊंगली के द्वारा सात बार उस पर छिड़ककर उसे इस्माएलियों की भाँति भाँति की अशुद्धता छुड़ाकर शुद्ध और पवित्र करे।

**Leviticus 16:19 का मतलब और रब्बी की व्याख्याएँ**

Leviticus 16:19 में, योम किप्पुर के दिन, उच्च पुरोहित द्वारा रक्त का छिड़काव करने का आदेश दिया गया है। यह प्रक्रिया शुद्धिकरण (Purification) और पवित्रकरण (Sanctification) के उद्देश्य

से है। इस आयत में लिखा है, "और वह उसकी अंगुली से उस पर रक्त छिड़केगा, सात बार और उसे शुद्ध करेगा और उसे पवित्र करेगा, इसाएलियों की अशुद्धता से।"

### **शुद्धिकरण और पवित्रकरण के बारे में मुख्य बिंदु:**

1. **"उस पर" (�לע) शब्द:** कई टिप्पणीकारों के अनुसार, इसका मतलब है कि रक्त को मुख्य रूप से वेदी के ऊपर छिड़का जाएगा, न कि उसके किनारों पर। इसे वेदी की "छत" या "पवित्र सतह" कहा जाता है।
2. **सात बार छिड़काव:** यहां पर रक्त का छिड़काव सात बार करना होता है, और यह एक क्रमबद्ध क्रिया है, न कि सात बूँदें। इसे प्रतीकात्मक रूप से पूर्णता (perfection) और परमेश्वर के साथ रिश्ते की शुद्धता के रूप में देखा जाता है।
3. **शुद्धिकरण (רואה) और पवित्रकरण (טהרה):**
  - **शुद्धिकरण:** इसका मतलब है कि वेदी को इसाएलियों के पापों और अशुद्धताओं से शुद्ध करना।
  - **पवित्रकरण:** वेदी को भविष्य में पवित्र उपयोग के लिए समर्पित करना, ताकि वह जो कुछ भी उसमें चढ़ाया जाए वह परमेश्वर के लिए स्वीकार्य हो।

### **रब्बी की व्याख्याएँ:**

1. Aderet Eliyahu के अनुसार, शुद्धिकरण और पवित्रकरण वेदी के विभिन्न हिस्सों के लिए अलग-अलग किए जाते हैं— पवित्रस्थान, सभा तंबू और अंदर की वेदी।
2. David Zvi Hoffmann का कहना है कि शुद्धिकरण पिछले पापों को हटाता है, जबकि पवित्रकरण भविष्य के लिए सुरक्षा है। उन्होंने यह भी कहा कि यह प्रक्रिया बाहरी बलिदान

वेदी (outer altar) से संबंधित नहीं है, जैसा कि कुछ अन्य लोग मानते थे।

3. Malbim ने यह स्पष्ट किया कि "उस पर" शब्द को विशेष रूप से वेदी के ऊपर के सतह पर रक्त छिड़कने के रूप में समझा जाना चाहिए।
4. Maskil LeDavid के अनुसार, शुद्धिकरण का मतलब पिछले पापों से मुक्ति है और पवित्रकरण वेदी की मूल पवित्रता की बहाली है।
5. Mizrachi ने कहा कि "उस पर" का मतलब वेदी के ऊपर के हिस्से में रक्त छिड़कना है, और इसका उद्देश्य शुद्धिकरण और पवित्रकरण है, जहां एक ओर शुद्धिकरण पिछले पापों से मुक्ति देता है, वहीं पवित्रकरण भविष्य के लिए समर्पण है।
6. Ralbag का कहना था कि रक्त का छिड़काव वेदी की उस सतह पर किया जाएगा, जिस पर धूप अर्पित किया जाता था, और यह शुद्धिकरण और पवित्रकरण दोनों का कार्य है।

### **मसीही चर्च में इसका महत्व:**

आजकल के मसीही चर्चों में यह विशिष्ट प्रक्रिया सीधे तौर पर नहीं होती, लेकिन इस विचार की गहरी जड़ें मसीही धर्म में हैं:

1. **ईसा मसीह का बलिदान:** मसीही धर्म में, प्रभु यीशु मसीह को अंतिम बलिदान और परमेश्वर के उद्धारकर्ता के रूप में देखा जाता है। उनका रक्त सभी विश्वासियों को पाप से शुद्ध करता है। यह पुराने नियम में किए गए बलिदानों का पूरा होना माना जाता है।
2. **व्यक्तिगत शुद्धिकरण और पवित्रकरण:** मसीही धर्म में विश्वासियों के लिए व्यक्तिगत शुद्धिकरण और पवित्रकरण पर जोर दिया जाता है। यह आमतौर पर प्रभु यीशु मसीह पर

विश्वास करने और पवित्र जीवन जीने की प्रतिबद्धता के माध्यम से प्राप्त होता है।

3. **आध्यात्मिक शुद्धिकरण और पवित्रकरण:** कुछ मसीही पंथों में, विशेष रूप से चारिज़मैटिक और पेंटेकोस्टल चर्चों में, पवित्र तेल से अभिषेक जैसे प्रतीकात्मक कर्मों के माध्यम से शुद्धिकरण और पवित्रकरण किया जाता है। यह पुराने नियम की शुद्धिकरण और पवित्रकरण प्रक्रिया की पुनरावृत्ति है, लेकिन यह अब आध्यात्मिक और प्रतीकात्मक रूप से की जाती है।

#### **निष्कर्षः**

Leviticus 16:19 में रक्त छिड़काव का कार्य केवल भौतिक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक रूप से भी बहुत महत्वपूर्ण है। यह पिछले पापों को हटाने और भविष्य के लिए शुद्धता और पवित्रता की स्थापना का प्रतीक है। मसीही चर्च में, प्रभु यीशु के बलिदान को इस पुराने नियम की प्रक्रिया का पूर्णता के रूप में देखा जाता है। उनके बलिदान के माध्यम से विश्वासियों को पापों से शुद्ध किया जाता है और उन्हें परमेश्वर के साथ एक पवित्र संबंध स्थापित करने का अवसर मिलता है।

## **प्रायश्चित्त का बकरा**

20“जब वह पवित्रस्थान और मिलापवाले तम्बू और वेदी के लिये प्रायश्चित्त कर चुके, तब जीवित बकरे को आगे ले आए;

यहाँ Leviticus 16:20 का विस्तृत विश्लेषण किया गया है, जिसमें विभिन्न रबियों की व्याख्याएं और आज के मसीही चर्चों में इसके महत्व को शामिल किया गया है।

## **Leviticus 16:20: प्रायश्चित्त की समाप्ति**

इस श्लोक में लिखा है, "और जब वह पवित्र स्थान, और मिटिंग का तंबू, और वेदी के लिए प्रायश्चित्त कर चुका हो, तब वह जीवित बकरा प्रस्तुत करेगा।" यह श्लोक यौम किप्पुर (Yom Kippur) के विशेष प्रायश्चित्त समारोह का हिस्सा है, जो पवित्र मन्दिर/तम्बू के भीतर किए जाने वाले रीति-रिवाजों को लेकर है।

**"और जब वह प्रायश्चित्त करने का कार्य समाप्त कर चुका हो"** – यह वाक्यांश "כלה מ'killah m'kaper" महत्वपूर्ण है। "killah" (הַלָּה) का अर्थ है समाप्त करना या पूरा करना, और "m'kaper" का अर्थ है प्रायश्चित्त करना। जब ये दोनों शब्द एक साथ आते हैं, तो यह दर्शाता है कि यह कार्य पूरी तरह से समाप्त हो गया है।

रब्बी अकीवा (या रब्बी यहूदा) के अनुसार, यह समाप्ति रक्त को वेदी पर और पवित्र अव्यवस्था को शुद्ध करने के बाद होती है। हालांकि, "avodah" (सेवा) का कार्य तब भी समाप्त नहीं होता।

**"पवित्र स्थान, मिटिंग का तंबू और वेदी":** ये तीन स्थान पवित्रता की विभिन्न श्रेणियों को प्रदर्शित करते हैं, और प्रायश्चित्त प्रत्येक स्थान के लिए किया जाता है:

- **पवित्र स्थान (ha-kodesh):** इसमें "कौदश हकौदशिम" (Holy of Holies) शामिल है, जो पवित्रतम स्थान है।
- **मिटिंग का तंबू:** यह वह स्थान है जहां पवित्रता की रक्षा की जाती है।
- **वेदी:** यह वह स्थान है जहां विशेष प्रायश्चित्त अनुष्ठान होते हैं।

**"वह जीवित बकरा प्रस्तुत करेगा":** इसके बाद, बकरा पेश किया जाता है जिसे स्कैपगोट (scapegoat) कहा जाता है। इस बकरा को आज़ाजेल (Azazel) के लिए निर्धारित किया गया था और इसे जीवित रखा जाता है। रब्बी डेविड ज़्वी होफ्रमैन ने समझाया कि बकरा को आंगन में लाया

जाता है, जहां अगले चरण में इसे परखा जाता है।

### रब्बी विचारः

1. **जीवित बकरा: आदरेत एलीयाह कहते हैं कि बकरा जीवित होना आवश्यक है, और इसकी स्थिति *segol* और *patach* के माध्यम से व्याख्यायित की जाती है। चिज़कुनी ने बताया कि यह पहली बार जब बकरा "जीवित" शब्द का उपयोग किया जाता है। रब्बी मिनछात शाय ने भी इसे विस्तार से समझाया।**
2. **प्रायश्चित्त का पूर्णता: तोरा तेमिमा के अनुसार, "v'kill a m'kaper" यह सिखाता है कि यदि याजक किसी भी प्रायश्चित्त अनुष्ठान को छोड़ देता है, तो पूरे कार्य को अमान्य माना जाता है। इस प्रक्रिया में गति या उत्साह प्रायश्चित्त की स्वच्छता में योगदान करते हैं।**
3. **कार्यक्रम का क्रम: रालबाग के अनुसार, जब पवित्र स्थान में प्रायश्चित्त किया जाता है, तो जीवित बकरा पश्चिम दिशा में लाया जाता है ताकि उस पर पापों का उच्चारण किया जा सके।**
4. **प्रायश्चित्त के अनेक क्रियाएँ: हा-अमेक दावर के अनुसार, रक्त से किया गया प्रायश्चित्त हर दिन की आवश्यकता है। हालांकि यौम किष्पुर का प्रायश्चित्त पूरे वर्ष के लिए है।**

### आज के मसीही चर्चों में महत्व

इस दिन की प्रथा और विशेष रूप से स्स्कैपगोट पर पापों को स्थानांतरित करने की प्रक्रिया को आज के मसीही विश्वासों में इस प्रकार देखा जाता है:

1. **प्रभु यीशु का सर्वोत्तम प्रायश्चित्त: बहुत से मसीही विश्वास करते हैं कि प्रभु यीशु मसीह ने**

पुरानी व्यवस्था के बलिदानों का पूर्ण रूप से पालन किया। प्रभु यीशु का बलिदान और क्रृस पर मृत्यु प्रायश्चित्त का अंतिम रूप मानी जाती है, जो मानवता के पापों के लिए किया गया था।

2. **पाप का स्थानांतरण:** स्स्कैपगोट पर पापों का स्थानांतरण प्रथा को प्रभु यीशु की मृत्यु के साथ जोड़ा जाता है, जिसमें प्रभु यीशु ने दुनिया के पापों को अपने ऊपर लिया और उन्हें खत्म किया।
3. **पवित्र स्थानों का विचार:** मसीही चर्चों में पवित्र स्थान की अवधारणा को विश्वासियों में परमेश्वर की उपस्थिति के रूप में देखा जाता है। चर्च में पूजा करते समय इसे प्रतीकात्मक रूप से महसूस किया जाता है।
4. **रिवाजों का महत्व:** कुछ मसीही मतों में, विशेष रूप से पेंटेकोस्टल और चारिस्मैटिक चर्चों में, पुराने नियम के प्राचीन रिवाजों का प्रतीकात्मक रूप से पालन किया जाता है, जैसे पवित्रता के लिए तेल का अभिषेक।

**निष्कर्ष:** Leviticus 16:20 यौम किप्पुर के एक महत्वपूर्ण पल को दिखाता है, जब पवित्र स्थानों के लिए प्रायश्चित्त पूर्ण किया जाता है और फिर स्स्कैपगोट को प्रस्तुत किया जाता है। रब्बीयों की व्याख्याएं इस प्रथा की गहरी समझ देती हैं, और मसीही धर्म में यह प्रभु यीशु मसीह के बलिदान के प्रतीक के रूप में देखा जाता है, जो सभी मानवता के पापों का प्रायश्चित्त है।

<sup>21</sup> और हारून अपने दोनों हाथों को जीवित बकरे पर रखकर इसाएलियों के सब अधर्म के

**कामों, और उनके सब अपराधों, अर्थात् उनके सारे पापों को अंगीकार करे, और उनको बकरे के सिर पर धरकर उसको किसी मनुष्य के हाथ जो इस काम के लिये तैयार हो जंगल में भेजके छुड़वा दे।**

### **लेवितिकस 16:21: पापों की स्वीकृति और स्थानांतरण**

यह वचन उस अनुष्ठान का वर्णन करता है जहाँ याजक अपने हाथों से इस्राएलियों के पापों की स्वीकारोक्ति बकरा पर करता है और पापों को उस पर स्थानांतरित करता है। यह वचन है: "और हारून अपने दोनों हाथ जीवित बकरा के सिर पर रखेगा और इस्राएलियों के सभी अपराधों, उनकी सभी गलतियों, और उनके सभी पापों को उस पर स्वीकार करेगा, और उसे रेगिस्तान में एक आदमी के हाथों भेजेगा जो तैयार हो।"

### **"और हारून अपने दोनों हाथ जीवित बकरा के सिर पर रखेगा"**

**दो हाथ:** यह वचन यह संकेत करता है कि याजक को दोनों हाथों से बकरा के सिर पर हाथ रखना चाहिए। डेविड पीड़ित व्यक्तियों होफमैन के अनुसार, जब आमतौर पर "हाथ रखो" शब्द प्रयोग में आता है तो एक हाथ का उल्लेख होता है, लेकिन यहाँ पर "दो" का उल्लेख किया गया है, जिससे यह शिक्षा मिलती है कि यह क्रिया पूरी शक्ति के साथ की जानी चाहिए।

**स्पष्टता:** मालबिम और रल्बाग ने इस पर टिप्पणी की है कि "दो हाथ" का अर्थ है कि इसे पूरी शक्ति के साथ किया जाए, और यह एक प्रकार की शिक्षाप्रद क्रिया है जो दिखाती है कि पापों को पूरी गंभीरता से स्वीकार किया जाना चाहिए।

### **"और इस पर सभी इस्राएलियों के अपराधों, उनकी गलतियों, और उनके पापों की स्वीकारोक्ति करेगा"**

- स्वीकारोक्ति:** यह वचन याजक के द्वारा किया गया मौखिक पाप स्वीकारोक्ति को दर्शाता

है। आदरित एलियाहू के अनुसार, याजक यह शब्द कहेगा: ”हे परमेश्वर, तेरे लोग पाप किए हैं, वे भ्रष्ट हुए हैं, और उन्होंने तेरे सामने गलत कार्य किए हैं, कृपया इन पापों के लिए प्रायशिचित करें।”

- **तीन प्रकार के पाप:** यहाँ पर तीन प्रकार के पापों का उल्लेख किया गया है:
  - **अवोन:** जानबूझकर पाप (आत्मा की विकृति),
  - **पेशा:** विद्रोह (इच्छा से नियमों का उल्लंघन),
  - **हाता:** अज्ञानता से पाप (ग़ालती से किया गया कार्य)। डेविड पीड़ित व्यक्तिं होफैन ने इसे इस प्रकार बताया कि अवोन वो पाप हैं जो जानबूझकर और इरादे से किए जाते हैं, पेशा विद्रोह है, और हाता वह पाप है जो भूलवश किया जाता है।

### ”और उसे बकरा के सिर पर रखेगा”

- **प्रतीकात्मक स्थानांतरण:** बकरा के सिर पर हाथ रखकर पापों को उस पर स्थानांतरित किया जाता है। यह एक प्रतीकात्मक कार्य है, जिसका उद्देश्य यह दिखाना है कि पापों को पशु पर स्थानांतरित किया जाता है ताकि यह साफ किया जा सके। राल्बाग ने कहा कि यह एक जागरूकता की क्रिया है, जिससे पापों को पहचानने और दूर करने का उद्देश्य होता है।

### ”और उसे रेगिस्तान में भेजेगा”

- **तैयार आदमी:** ”तैयार आदमी” से तात्पर्य उस व्यक्ति से है जिसे इस कार्य के लिए चुना गया है। रशि के अनुसार, यह व्यक्ति विशेष रूप से इस कार्य के लिए तैयार किया जाता है और उसका यह कार्य निर्धारित होता है।
- **रेगिस्तान:** बकरा उस स्थान पर भेजा जाता है जहाँ वह पापों को अपने साथ लेकर जाता है। रेगिस्तान को कई बार पापों और शुद्धता से दूर रहने के रूप में देखा जाता है। यहाँ यह स्थान पापों के निष्कासन का प्रतीक है।

## रब्बी व्याख्या और उदाहरण

- **"तैयार आदमी"**: मालबिम का कहना है कि जब "आदमी" शब्द का प्रयोग होता है तो इसका उद्देश्य यह दिखाना होता है कि यह कार्य केवल याजक के द्वारा नहीं किया जा सकता, बल्कि कोई भी सामान्य व्यक्ति इसे कर सकता है।
- **पाप का स्थानांतरण**: रैगीओ ने कहा कि यह स्थानांतरण मानवीय शक्ति द्वारा नहीं होता, बल्कि यह परमेश्वर का वचन है। इसलिए यह क्रिया मात्र एक प्रतीकात्मकता है।

## आधुनिक मसीही चर्च में इसका महत्व

1. **प्रभु यीशु और बकरा**: मसीही धर्म में, प्रभु यीशु को अक्सर अंतिम "बकरा" के रूप में देखा जाता है, जिसने मानवता के पापों को अपनी मृत्यु के द्वारा अपने ऊपर ले लिया। यह समझा जाता है कि जैसे बकरा पर पापों को स्थानांतरित किया गया, वैसे ही प्रभु यीशु ने मानवता के पापों को अपने ऊपर लिया।
2. **रेगिस्तान का प्रतीक**: रेगिस्तान को पाप और अपवित्रता से अलग एक स्थान के रूप में देखा जाता है। जब बकरा रेगिस्तान में भेजा जाता है, तो यह एक प्रतीक है कि पापों को परमेश्वर की उपस्थिति से दूर भेजा जा रहा है।
3. **प्रायश्चित और क्षमा**: यह अनुष्ठान मसीही धर्म में प्रायश्चित और क्षमा की आवश्यकता को समझाता है। मसीह के बलिदान से, विश्व को परमेश्वर की क्षमा प्राप्त होती है, और इस संदर्भ में यह पुराना नियम और प्रभु यीशु की बलि के बीच एक कड़ी बनाता है।

## निष्कर्ष

**लेवितिकस 16:21 का यह वचन इस्माइल के लिए पापों को स्वीकार करने और शुद्ध करने का एक प्रतीकात्मक तरीका था। रब्बीयों ने इसे गहरे तरीके से समझा और आधुनिक मसीही चर्च इसे प्रभु यीशु के बलिदान की ओर इशारा करते हुए पापों की क्षमा और प्रायश्चित के रूप में समझता है।**

**22वह बकरा उनके सब अधर्म के कामों को अपने ऊपर लादे हुए किसी निर्जन स्थान में उठा ले जाएगा; इसलिये वह मनुष्य उस बकरे को जंगल में छोड़ दे।**

### **लेवितिकस 16:22: बकरा का अंतिम यात्रा**

यह वाक्य उस बकरा के अंतिम सफर को वर्णित करता है, जिस पर याजक ने इस्माइल के पापों की उच्छासन (कबूल) की है: "और बकरा उन सभी पापों को अपने ऊपर लेकर एक ऐसी भूमि में भेजा जाएगा जो अलग-थलग है, और वह बकरा रेगिस्ट्रेशन में भेजा जाएगा।"

**"और बकरा उन सभी पापों को अपने ऊपर लेकर चलेगा"**

1. **पापों का वहन करना:** इस वाक्य में बकरा उन पापों को वहन कर रहा है जो इसलियों ने किए हैं। इसका अर्थ यह है कि बकरा इसलियों के पापों को अपने ऊपर लेता है और इसे एक अलग स्थान पर भेजा जाता है ताकि पापों का उच्छासन हो सके।
  - **उदाहरण:** जैसे एक व्यक्ति भारी बस्ते को उठाकर उसे कहीं दूर ले जाता है, ठीक वैसे ही बकरा पापों को अपने ऊपर लेकर उस स्थान पर भेजा जाता है जहाँ वह अब वापस लौटकर नहीं आ सकता।
2. **"उसके ऊपर" (�לע):** इस शब्द का उद्देश्य यह है कि यह बकरा ही है जो इस कार्य को करता है, और कोई अन्य बकरा इसमें भागीदार नहीं होता।

- **राशि:** इसका मतलब यह है कि बकरा अकेला ही इस कार्य में भागीदार है, कोई अन्य बकरा नहीं।
- 3. पापों का वास्तविक स्थानांतरण नहीं:** यह प्रक्रिया भौतिक रूप से पापों के स्थानांतरण को नहीं दिखाती, बल्कि यह एक प्रतीकात्मक कार्य है। पापों को "उपर" रखना यह दर्शाता है कि बकरा अब इस्माइल के पापों को अपनी पीठ पर उठाए हुए है।

### **"एक ऐसी भूमि में जो अलग-थलग है"**

**अलग-थलग भूमि:** "अलग-थलग भूमि" का मतलब ऐसी भूमि है जो अन्य भूमि से पूरी तरह अलग है। यह भूमि एक ऐसी जगह है जो किसी उपयोग के लिए नहीं है और जहां बकरा कभी भी लौटकर नहीं आ सकता।

**उदाहरण:** जैसा कि किङ्गकनी कहते हैं, यह एक ऐसी भूमि है जो कभी भी कृषि कार्य के लिए उपयोगी नहीं हो सकती। यह एक जंगली और अनुपजाऊ भूमि होती है।  
**वृत्तांत से संबद्ध:** इस भूमि को भेजने का उद्देश्य यह था कि बकरा और उस पर चढ़े हुए पाप पूरी तरह से नष्ट हो जाएं, और इस तरह से इस्माइल के पापों का उच्छासन हो सके।

### **"और वह बकरा रेगिस्तान में भेजा जाएगा"**

- 1. भेजे जाने का कार्य:** बकरा को रेगिस्तान की ओर भेजे जाने का कार्य पापों के उच्छासन को दर्शाता है। यह एक प्रतीक है कि पापों का सम्पूर्ण उच्छासन हो गया है।
- **उदाहरण:** जब पापों को रेगिस्तान में भेजा जाता है, तो यह दर्शाता है कि पाप अब वापस नहीं आएंगे और इस्माइल को ईश्वर के पास पुनः शुद्ध किया गया है।

## रब्बीनिक व्याख्याएँ और उदाहरण

### 1. ईसाव और याकूबः

- बालेई बृत अब्राहम कहते हैं कि पापों का स्थानांतरण ईसाव के पास किया जाता है, क्योंकि ईसाव बुराई का प्रतीक है। रोश का मानना है कि बकरा ईसाव का प्रतिनिधित्व करता है और इस्माइल के पापों को वह इस्माइल के बुरे कार्यों का भागी बनाता है।

### 2. संतानः

- नाचल केदुमिम कहते हैं कि इस बकरा की प्रक्रिया में, शैतान को यह स्पष्ट किया जाता है कि इस्माइल के पापों के लिए कोई आरोप नहीं रहेगा। इस बकरा को शैतान की भूमिका में देखा जाता है।

### 3. क्षमा:

- रालबाग के अनुसार, बकरा को एक जगह भेजा जाता है जहाँ यह मरने के लिए छोड़ दिया जाता है, जो यह दर्शाता है कि इस्माइल के पाप समाप्त हो गए हैं और वे अब पूरी तरह से क्षमा प्राप्त कर चुके हैं।

## आज के मसीही चर्च में महत्व

1. प्रभु यीशु मसीह के रूप में बकरा: मसीही धर्म में बकरा प्रभु यीशु मसीह का प्रतीक माना जाता है, जो पूरे संसार के पापों को अपने ऊपर लेकर मर गया। जैसे बकरा इस्माइल के पापों को ले जाता है, वैसे ही प्रभु यीशु ने संसार के पापों को अपने ऊपर लिया और कूस पर चढ़कर उन्हें नष्ट कर दिया।

2. **रेगिस्तान का प्रतीक:** मसीही दृष्टिकोण में, रेगिस्तान को एक जगह माना जाता है जो पाप और दुख का प्रतीक है। बकरा का रेगिस्तान में भेजा जाना प्रभु यीशु के द्वारा हमारे पापों को दूर करने के कार्य को दिखाता है।
  
3. **क्षमा और उद्धार:** इस्राइल के पापों के नष्ट होने के प्रतीक के रूप में, मसीही धर्म में प्रभु यीशु की बलिदान को संसार के पापों की क्षमा और उद्धार के रूप में देखा जाता है।

**सारांश लेवितिकस 16:22** में, बकरा इस्राइल के पापों को अपने ऊपर लेकर एक निष्क्रिय भूमि में भेजा जाता है, यह प्रक्रिया पापों के उच्छासन का प्रतीक है। रब्बीनिक व्याख्याएँ इस प्रक्रिया को विभिन्न दृष्टिकोणों से समझाती हैं, जबकि मसीही धर्म इसे प्रभु यीशु मसीह के बलिदान और संसार के पापों की क्षमा के प्रतीक के रूप में देखता है।

<sup>23</sup>“तब हारून मिलापवाले तम्बू में आए, और जिस सनी के वस्त्रों को पहने हुए उसने पवित्रस्थान में प्रवेश किया था उन्हें उतारकर वहीं पर रख दे।

### **Leviticus 16:23: हारून का पवित्र तंबू में लौटना**

यह पद यों कहता है: ”तब हारून पवित्र तंबू में आएगा और वह उन लिनन वस्त्रों को उतारकर वहीं छोड़ देगा, जो उसने पवित्र स्थान में जाने के समय पहने थे।” यह आक्षेप उस समय के कृत्यों के बीच बहुत महत्वपूर्ण है, और रब्बियों द्वारा दिए गए विभिन्न दृष्टिकोणों को जानने से हम इसके गहरे अर्थ को समझ सकते हैं।

### **हारून का पवित्र तंबू में आना:**

- **समय का उलटः** यह पद कुछ हद तक आदेश के अनुसार नहीं है, क्योंकि यह दूसरे घटनाक्रमों से पहले आता है। रशी, बिरकट आशेर और अन्य रब्बी इसे समय से बाहर मानते हैं। तामुद के अनुसार, यह बिंदु तंत्र का हिस्सा नहीं है और इसे बाद में स्थानित किया जाना चाहिए था। मालबिम का कहना है कि यह पद तब आता है जब यह स्पष्ट नहीं होता कि हारून तंबू से बाहर जा चुका है। मस्किल लेडविड का कहना है कि यह कहना भी स्पष्ट नहीं है कि हारून क्यों आ रहा है।
- **चमच और चिमटे की वापसीः** रब्बियों के अनुसार, हारून का पवित्र तंबू में आना इसका उद्देश्य चमच और चिमटे को पुनः प्राप्त करना था जो उसने पवित्र स्थान में छोड़ थे। रालबाग का कहना है कि इन उपकरणों को छोड़ दिया गया था क्योंकि वे उष्ण थे। हिज्कुनिके अनुसार, यह उचित नहीं था कि इन वस्त्रों को पवित्र स्थान में छोड़ दिया जाए।
- **पाँच स्रानः** रब्बी कहते हैं कि यह पद उलटने की स्थिति में है ताकि यों किपुर के दिन के लिए पांच स्रान की आवश्यकता पर जोर दिया जा सके। यदि इस क्रम का पालन किया जाता, तो केवल तीन स्रान होते। यह पांच स्रान पांच विशेष क्रियाओं के दौरान किए जाते थे: सोने के वस्त्र, लिनन वस्त्र, रैम्ब की बलि में बदलने के दौरान, चिमटे और चमच की वापसी, और अंत में अतिरिक्त बलि।

**"और वह उन लिनन वस्त्रों को उतारकर वहीं छोड़ देगा":**

- **वस्त्रों का उतारना:** इस पद में हारून के लिनन वस्त्रों को उतारने का वर्णन है। रालबाग कहते हैं कि उच्च याजक के लिए पवित्र स्थान में नग्र होना उचित नहीं है। रामबान कहते हैं कि यह पद हमें सिखाता है कि अगले यों किपुर पर इन वस्त्रों का पुनः उपयोग नहीं किया जाएगा।
- **वस्त्रों का स्थानः** डेविड पीड़ित व्यक्तियों होफमैन और अन्य रब्बियों का कहना है कि वस्त्रों को आंगन में उतारना था। रालबाग का कहना है कि ये वस्त्र उस कमरे में उतारे गए थे जहां याजक स्रान करता था।

### **"और उन्हें वहीं छोड़ देगा":**

- **वस्त्रों का त्याग:** "और उन्हें वहीं छोड़ देगा" का मतलब यह है कि वस्त्रों को फिर से प्रयोग में नहीं लाया जाएगा। रशी और अन्य कहते हैं कि इन वस्त्रों का अगली यों किपुर पर पुनः उपयोग नहीं किया जाएगा। स्फोर्नों के अनुसार, ये वस्त्र पवित्रता को प्राप्त कर चुके थे और अब इन्हें पुनः इस्तेमाल नहीं किया जा सकता।
- **वस्त्रों का दफन:** रबीनु बह्या के अनुसार, इन वस्त्रों का अर्थ 18 माने (वजन) से जुड़ा हुआ है और यह संकेत करता है कि वे वस्त्र अब नष्ट होने के लिए छोड़ दिए गए थे।

### **रबीयों की व्याख्याएँ और उदाहरण:**

- **आदेश का पालन:** रशी का कहना है कि यों किपुर के दिन विभिन्न क्रियाएँ की जाती थीं, जिनमें हर एक के लिए वस्त्रों का परिवर्तन होता था। इस प्रकार, दिन के प्रमुख क्रियाओं के लिए पाँच स्रान होते थे।
- **स्रान:** डेविड पीड़ित व्यक्तिहोफमैन का कहना है कि यह एक नई व्यवस्था थी और याजक को वस्त्रों को बदलने के समय स्रान करना आवश्यक था।

### **आधुनिक मसीही चर्च में महत्व:**

1. **आध्यात्मिक शुद्धता का प्रतीक:** वस्त्रों का परिवर्तन और स्रान का क्रिया आध्यात्मिक शुद्धता और नवीकरण का प्रतीक मानी जाती है, जो बपतिस्मे के मसीही विश्वास से मेल खाता है।
2. **मसीह का उच्च याजक के रूप में स्थान:** मसीही चर्च में याजक के काम और वस्त्रों का महत्व मसीह के उच्च याजक के रूप में स्थान की पुष्टि करता है। उन्हें पापों के प्रायशिच्छ के लिए परमेश्वर के पास जाकर मध्यस्थता करनी होती है।
3. **रूपांतरण:** लिनन वस्त्रों का त्याग और नए वस्त्रों का धारण करना मसीही विश्वास में इस

विचार का प्रतीक हो सकता है कि मानव अपनी सांसारिक स्थितियों से एक दिव्य स्थिति में रूपांतरित हो जाता है।

4. **संस्कारों का महत्व:** याजक के कार्यों का इस प्रकार से विस्तार में वर्णन मसीही संस्कारों की महत्ता को समझाता है, जहां प्रत्येक कार्य और वस्त्र परिवर्तन विशेष अर्थ रखते हैं।

**निष्कर्ष:** लेविटिकस 16:23 में हारून के वस्त्रों को उतारने और उन्हें छोड़ने की प्रक्रिया को रब्बी एक महत्वपूर्ण कार्य मानते हैं, जो शुद्धता और पवित्रता की आवश्यकता को दर्शाता है। आधुनिक मसीही चर्च इसे एक आध्यात्मिक शुद्धता और रूपांतरण के रूप में देखते हैं, जो बपतिस्मे और पापों के प्रायश्चित्त से जुड़ा हुआ है।

<sup>24</sup>फिर वह किसी पवित्रस्थान में जल से स्नान कर अपने निज वस्त्र पहिन ले, और बाहर जाकर अपने होमबलि और साधारण जनता के होमबलि को चढ़ाकर अपने और जनता के लिये प्रायश्चित्त करे।

#### **Leviticus 16:24 - विस्तार से विश्लेषण**

यह आयत यम किष्युर (प्रायश्चित्त दिवस) के बारे में बताती है, जिसमें उच्च पुरोहित को विशेष कार्य करने होते हैं, खासकर पवित्र स्थान में सेवा समाप्त करने के बाद। इस आयत में जो कार्य बताए गए हैं, वे इस प्रकार हैं:

1. **पवित्र स्थान में स्नान:** उच्च पुरोहित को स्नान करना होता है।
2. **पुनः वस्त्र पहनना:** वह अपने साधारण (सोने के) वस्त्र पहनता है।
3. **बलि की आहुति देना:** वह अपनी बलि की आहुति और फिर लोगों की बलि की आहुति देता है।

**4. प्रायश्चितः** यह कार्य उच्च पुरोहित और लोगों दोनों के लिए प्रायश्चित करने का होता है।

### रब्बी टिप्पणियाँ

1. **बहुत अधिक स्नान का आवश्यकता:** इस आयत में स्नान का उल्लेख है, जो इस बात की ओर इशारा करता है कि उच्च पुरोहित को विशेष परिस्थितियों में स्नान करने की आवश्यकता थी। रब्बी इसे पांच स्नान और दस पवित्रकरण क्रियाओं में से एक मानते हैं। यह स्नान उच्च पुरोहित को लिनन से सोने के वस्त्र में बदलते समय करना होता था। रशी के अनुसार, पहले स्नान में पवित्र स्थान का उल्लेख नहीं है, लेकिन बाद में जो स्नान होते हैं, वे पवित्र स्थान में होते हैं।
2. **पवित्र स्थान का स्थानः** "पवित्र स्थान में" का अर्थ है मंदिर के वह स्थान जहाँ उच्च पुरोहित ने स्नान किया। रशी ने बताया कि यह स्नान पार्वा कक्ष की छत पर हुआ था। यह स्थान विशेष रूप से यम किप्पुर से संबंधित था।
3. **वस्त्रः** आयत में 'वस्त्र' का उल्लेख है, जो उच्च पुरोहित द्वारा पहने जाने वाले आठ वस्त्रों का है। ये वस्त्र उनके नियमित सोने के वस्त्रों के ऊपर पहने जाते थे, जो विशेष रूप से यम किप्पुर के दिन पवित्र स्थान में पहनने के लिए होते थे।
4. **बलि की आहुतिः** रशी के अनुसार, "लोगों की बलि की आहुति" उसी राम से संबंधित है, जिसका उल्लेख पहले हुआ है। मिस्राची बताते हैं कि इस बलि के माध्यम से यम किप्पुर के दिन अन्य बलियों को जोड़ा गया है।
5. **कर्मों का क्रमः** यह आयत विशेष क्रम में कार्यों को स्थापित करती है: स्नान, वस्त्र बदलना, बलि अर्पित करना और प्रायश्चित करना। मालबिम बताते हैं कि जब दो संज्ञाएँ एक साथ

आती हैं, तो यह जरूरी है कि पहला कार्य दूसरा कार्य करने से पहले किया जाए। इसका अर्थ है कि उच्च पुरोहित पहले अपनी प्रायश्चित करेगा, फिर लोगों के लिए।

## प्रमुख विचार

1. **शुद्धता और अशुद्धता:** ज्ञान को शुद्धता की एक क्रिया माना जाता है, जो उच्च पुरोहित को ईश्वर के सामने सेवा देने के लिए तैयार करता है। यह एक यथार्थिक क्रिया है, लेकिन यह व्यक्ति को मानसिक और आत्मिक रूप से शुद्ध करने का भी एक प्रतीक है।
2. **प्रायश्चित:** बलि की आहुति प्रायश्चित करने का एक तरीका है, खासकर उच्च पुरोहित और लोगों के लिए। यह मानसिक शुद्धता का प्रतीक है, जहां अच्छे विचारों और कार्यों के द्वारा परेचाताप किया जाता है।
3. **आध्यात्मिक महत्व:** विशेष वस्त्रों, ज्ञान, और बलि की आहुति की सही विधि के पालन से ईश्वर के साथ सच्ची सामंजस्य की दिशा में कदम बढ़ाए जाते हैं।

## आज के मसीही चर्च में मान्यता

मसीही चर्चों में, यद्यपि यम किष्पुर के शारीरिक समारोहों का पालन नहीं किया जाता, लेकिन इसमें छिपे हुए आध्यात्मिक अर्थ आज भी महत्वपूर्ण माने जाते हैं:

1. **ज्ञान और शुद्धता:** मसीही विश्वास में, प्रभु यीशु मसीह के माध्यम से पाप से शुद्धता प्राप्त की जाती है। बपतिस्मा, जो ज्ञान के समान है, पापों से छुटकारा पाने और आत्मिक शुद्धता की ओर एक कदम है।

## 2. बलि और प्रायश्चितः मसीह के कृस पर बलिदान को मसीही धर्म में अंतिम बलि माना

जाता है, जो सभी पापों के लिए प्रायश्चित है। इसके बाद, किसी और बलि की आवश्यकता नहीं है। मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान, सभी मानवता के पापों के लिए प्रायश्चित करने के रूप में देखी जाती है।

## 3. प्रायश्चित की क्रिया: यद्यपि हम यम किष्पुर की तरह पशु बलि की परंपरा को नहीं मानते, परंतु प्रायश्चित के दिनों (जैसे लैंट) में मसीही विश्वासियों को अपने पापों से पर्चाताप करने और प्रभु यीशु के प्रति विश्वास को मजबूत करने की दिशा में मार्गदर्शन किया जाता है।

### निष्कर्ष

लिवितिकस 16:24 हमें यम किष्पुर के दिन उच्च पुरोहित के कार्यों के माध्यम से शुद्धता और प्रायश्चित की महत्वपूर्ण प्रक्रिया को समझाता है। यह न केवल यहां परंपरा में, बल्कि मसीही विश्वास में भी अपनी गहरी आध्यात्मिक महत्ता रखता है।

<sup>25</sup>और पापबलि की चर्बी को वह वेदी पर जलाए।

### Leviticus 16:25 का विस्तृत विश्लेषण

आयत कहती है, ”और पापबलि की चर्बी को वेदी पर धुआं करके जलाएगा।” यह आयत पापबलि के बलिदान की चर्बी को वेदी पर जलाने के अनुष्ठान के बारे में है। इस प्रक्रिया में महायाजक पापबलि के बकरा और बैल के चर्बी के हिस्से को वेदी पर जलाने का काम करता है।

### रब्बीयों की व्याख्याएँ

- **पापबलि की चर्बी:** "पापबलि की चर्बी" से तात्पर्य बैल और बकरी की चर्बी से है, जो पापबलि के रूप में चढ़ाई जाती है। रब्बी रशी के अनुसार, पापबलि में दोनों (बैल और बकरी) की चर्बी शामिल होती है। रब्बी हिज़कुनी ने यह भी कहा कि ओन्केलोस ने इसे बहवचन में अनुवादित किया है, ताकि यह स्पष्ट हो सके कि चर्बी को दोनों जानवरों से संबंधित किया गया है। रब्बी मिज़ाची ने यह बताया कि एकवचन "पापबलि" से तात्पर्य बैल और बकरी दोनों हैं, जिन्हें एक ही पापबलि के रूप में समझा जाता है।
  
- **वेदी:** चर्बी को बाहरी वेदी पर जलाना है, न कि भीतरी वेदी पर। रशी ने यह स्पष्ट किया कि चर्बी को बाहरी वेदी पर जलाया जाएगा, क्योंकि भीतरी वेदी विशेष रूप से धूप के लिए आरक्षित है। रेगिओ और बिरकत आशेर ने भी इसे बाहरी वेदी पर जलाने का उल्लेख किया है।
  
- **बलिदान की प्रक्रिया का क्रम:** पापबलि की चर्बी को जलाने का काम महायाजक और लोगों द्वारा होमबलि चढ़ाए जाने के बाद होता है। रब्बी हाएमेक दवार और रल्बाग दोनों का कहना है कि यह प्रक्रिया सामान्य रूप से होमबलि से पहले नहीं होती, लेकिन विशेष परिस्थितियों में इसका उल्टा भी हो सकता है।
  
- **अशुद्धता या शब्दत में जलाना:** यह अनुष्ठान शब्दत या अशुद्धता की स्थिति में भी किया जा सकता है। रब्बी एडरेट एलियाहू, त्ज़फ़नत पनेह, और टोरा टेमिमा ने इस पर प्रकाश डाला है कि चर्बी को जलाने का अनुष्ठान शब्दत या अशुद्धता की स्थिति में भी वैध है। माल्बिम ने कहा कि "धुआं करके जलाएगा" शब्द का पुनरावृत्ति से यह स्पष्ट होता है कि यह अनुष्ठान किसी भी स्थिति में किया जा सकता है।

- **बलिदान और प्रायश्चितः** पापबलि की अवधारणा मसीही विश्वास में महत्वपूर्ण है, क्योंकि ईसाई मानते हैं कि प्रभु यीशु मसीह ने कूस पर अपनी बलि दी, जिससे पशु बलि की आवश्यकता समाप्त हो गई। हालांकि चर्बी को जलाने का अनुष्ठान अब मसीही चर्च में नहीं होता, लेकिन यह बलिदान और प्रायश्चित की अवधारणा को स्पष्ट करता है।
- **प्रभु को सर्वोत्तम देना:** जबकि यह अनुष्ठान अब नहीं किया जाता, लेकिन परमेश्वर को सर्वोत्तम देना एक महत्वपूर्ण मसीही सिद्धांत है। जैसे चर्बी को सर्वोत्तम भाग माना जाता था, वैसे ही आज मसीही लोग अपनी सर्वश्रेष्ठ पूजा, समय और संसाधन परमेश्वर को अर्पित करते हैं।
- **आध्यात्मिक शुद्धता:** प्रायश्चित की प्रक्रिया, जिसमें बलिदान और शुद्धता की आवश्यकता होती थी, मसीही विश्वास में आध्यात्मिक शुद्धता की आवश्यकता की याद दिलाती है। ईसाई लोग विश्वास करते हैं कि प्रभु यीशु के बलिदान के माध्यम से उनकी आत्मा शुद्ध हो जाती है।

## हिंदी में समझाते हुए

लेविटिकस 16:25 कहता है कि पापबलि की चर्बी को वेदी पर जलाया जाएगा। यह अनुष्ठान महायाजक द्वारा पापबलि के बैल और बकरी की चर्बी को बाहरी वेदी पर जलाने का था, ताकि परमेश्वर के साथ सामंजस्य स्थापित किया जा सके। रब्बी रशी और अन्य रब्बियों ने इसे विभिन्न तरीकों से व्याख्यायित किया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि यह बलिदान पापों के प्रायश्चित के लिए था। शब्दत और अशुद्धता की स्थिति में भी इसे किया जा सकता था, जो इस अनुष्ठान की महत्वता को बढ़ाता है। मसीही चर्च में, इस पापबलि की अवधारणा प्रभु यीशु के बलिदान के रूप में समाहित हो गई है, जिससे पशु बलि की आवश्यकता खत्म हो गई, लेकिन परमेश्वर को सर्वोत्तम देने का

सिद्धांत अभी भी प्रासंगिक है।

### निष्कर्ष

Leviticus 16:25 में पापबलि की चर्बी को जलाने के अनुष्ठान को विस्तार से बताया गया है, और रब्बियों की व्याख्याओं ने इसे विभिन्न संदर्भों में समझाया है। मसीही चर्च में इस अनुष्ठान का पालन अब नहीं होता, लेकिन इसके प्रमुख सिद्धांत, जैसे बलिदान, प्रायशिचित, और परमेश्वर को सर्वोत्तम देना, आज भी मसीही विश्वास में महत्वपूर्ण हैं।

<sup>26</sup>और जो मनुष्य बकरे को अजाजेल के लिये छोड़कर आए वह भी अपने वस्त्रों को धोए, और जल से सूनान करे, और तब वह छावनी में प्रवेश करे।

### लैब्यव्यवस्था 16:26 का विस्तृत विश्लेषण

लैब्यव्यवस्था 16:26 कहता है: "और जो व्यक्ति अजाजेल के लिए बकरी को छोड़ता है, वह अपने कपड़े धोएगा, और वह अपने शरीर को पानी में धोएगा, और उसके बाद वह शिविर में आ सकता है।" इस आयत में वह शुद्धिकरण प्रक्रिया बताई गई है, जो उस व्यक्ति को करनी होती है जिसने बकरी को अजाजेल के लिए भेजा।

### रब्बियों की व्याख्याएँ

#### 1. भेजने वाला व्यक्ति

रब्बी लोगों के अनुसार, "जो व्यक्ति बकरी भेजता है" का अर्थ वह व्यक्ति है जो शारीरिक रूप से बकरी को अजाजेल के लिए भेजता है, न कि वह जो इसे करने का निर्देश देता है।

- तोरा टेमिमा के अनुसार, यह वही व्यक्ति अशुद्ध होता है जो बकरी भेजता है।
- माल्किम ने भी बताया कि यह व्यक्ति ही अशुद्ध होता है, और यह एक शारीरिक क्रिया है न कि केवल आदेश देने का मामला।
- बेखोर शोर के अनुसार, "भेजने वाला" वह व्यक्ति है जो बकरी को बाहर भेजता है, जैसे एक मिशन पर भेजा गया संदेशवाहक।

## 2. कपड़े धोना

बकरी को भेजने वाले व्यक्ति को अपने कपड़े धोने का निर्देश दिया जाता है।

- रेगिओ का कहना है कि बकरी इस्राएल के पापों को अपने ऊपर ले जाती है, इसलिये वह व्यक्ति और उसके कपड़े अशुद्ध हो जाते हैं।
- स्टेन्सल्ट्ज़ ने कहा कि किसी अशुद्ध शक्ति से संपर्क करने के कारण कपड़े धोने की आवश्यकता होती है।

## 3. शरीर को पानी में धोना

बकरी भेजने वाले को अपना शरीर पानी में धोने के लिए कहा जाता है।

- इब्र एज्ञा ने कहा कि यह स्नान पर्याप्त है, और अशुद्धता केवल शाम तक रहती है।
- रलबैग ने कहा कि स्नान करने के बाद और सूर्यास्त के बाद वह व्यक्ति शिविर में लौट सकता है।

## 4. शिविर में लौटना

शुद्धिकरण के बाद ही वह व्यक्ति शिविर में वापस लौट सकता है।

- माल्किम का कहना है कि यह केवल बकरी के अनुष्ठान से जुड़ा नियम है, जैसा कि बैल और बछिया के जलाने के लिए भी यही प्रक्रिया होती है।
- रलबैग का कहना है कि यह लौटना केवल सूर्यास्त के बाद ही संभव है, चाहे वह योम

**किष्पुर का दिन हो।**

## 5. अजाजेल का स्थान और अर्थ

अजाजेल का सही अर्थ स्पष्ट नहीं है।

- ओर हाचिम के अनुसार, कबालिस्टों के अनुसार अजाजेल वह स्थान है जहां समेल (शैतान) का निवास है।
- रव हिर्श ने कहा कि बकरी एक "गलत दिशा वाले जीवन" का प्रतीक है, जो अशुद्धता का प्रतीक बन जाती है।
- रेगिओ ने कहा कि व्यक्ति बकरी को चट्टान से धकेलता है।

## 6. अशुद्धता और शुद्धिकरण

बकरी को भेजने से जुड़ी अशुद्धता कोई साधारण चीज नहीं है।

- डेविड पीड़ित व्यक्ति हॉफमैन ने कहा कि अशुद्धता कब शुरू होती है, इस पर विवाद है।
- रलबैग ने कहा कि व्यक्ति को तब तक मंदिर में प्रवेश की अनुमति नहीं है जब तक वह स्नान न कर ले और रात के समय का इंतजार न कर ले।
- रव हिर्श ने बताया कि बकरी के विचार, "नैतिक स्वतंत्रता के विचार" के कारण व्यक्ति शुद्धिकरण के बिना पवित्र स्थान में लौटने के योग्य नहीं होता।

## मसीही चर्च में महत्व

- मसीह को अंतिम बलि का बकरा माना जाता है। ईसाई धर्म में यह माना जाता है कि मसीह ने दुनिया के पापों को अपने ऊपर ले लिया, जैसा कि बकरी ने इस्राएल के पापों को अपने ऊपर लिया था।

- आध्यात्मिक शुद्धिकरण की अवधारणा आज भी प्रासंगिक है। मसीही यह मानते हैं कि बपतिस्मा और पश्चाताप के माध्यम से आत्मा को शुद्ध किया जाता है।
- पापों की क्षमा का प्रतीक मसीह का बलिदान है, जैसा कि बकरी का भेजा जाना पापों को दूर करने का प्रतीक था।

## **हिंदी में व्याख्या**

लैब्यववस्था 16:26 में बताया गया है कि जो व्यक्ति अजाजेल के लिए बकरी भेजता है, उसे शुद्धिकरण के रूप में अपने कपड़े धोने और स्नान करने की आवश्यकता होती है। यह प्रक्रिया इस बात का प्रतीक है कि वह व्यक्ति सामूहिक पापों को अपने ऊपर नहीं लेता, बल्कि बकरी को इस जिम्मेदारी से मुक्त करता है। इस शुद्धिकरण प्रक्रिया का मतलब यह है कि व्यक्ति को अपने कर्मों के परिणाम से उबरने के लिए शुद्ध होना पड़ता है।

मसीही चर्च में इसे इस प्रकार देखा जाता है कि प्रभु यीशु मसीह ने हमारी सभी गलतियों और पापों को अपने ऊपर लिया और क्रूस पर मरकर हमें शुद्ध कर दिया, जैसे बकरी इस्राएल के पापों को अपने ऊपर ले जाती है।

इसलिए, लैब्यववस्था 16:26 का संदेश आज भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह हमें यह सिखाता है कि शुद्धता और पापों की क्षमा एक प्रक्रिया है जो हमें आत्मिक रूप से शुद्ध करने के लिए आवश्यक है।

<sup>27</sup>और पापबलि का बछड़ा और पापबलि का बकरा भी जिनका लह पवित्रस्थान में प्रायश्‌चित्त करने के लिये पहुँचाया जाए वे दोनों छावनी से बाहर पहुँचाए जाएँ; और उनका

## चमड़ा, मांस, और गोबर आग में जला दिया जाए।

लेवितिक्स 16:27 में जो बकरा और बैल (जिनकी बलि दी जाती है) के अवशेषों को शिविर के बाहर जलाने की प्रक्रिया दी गई है, वह इस बात को दर्शाती है कि पाप और अशुद्धता को पूरी तरह से समाप्त किया जाता है। इस प्रक्रिया में जो नियम और व्याख्याएँ दी गई हैं, वे इस महत्वपूर्ण बलिदान के लिए धार्मिक और रीतिरिवाजों के बारे में गहरी जानकारी देती हैं। आइए इसे विस्तार से समझें:

### रिवाज का विवरण:

#### पाप बलिदान के अवशेष जलाना:

यह केवल उन बलिदानों का मामला है जिनका खून पवित्र स्थान (होलि ऑफ होलिज) में चढ़ाया गया था, यानी जिनकी बलि विशेष रूप से पाप के लिए दी गई थी।

बलि के बकरा और बैल के अवशेषों को शिविर के बाहर ले जाकर जलाया जाता था।

इसमें उनके खाल, मांस और मल (अधूरी चीज़ें) भी शामिल होती हैं। जैसे कि लेवितिक्स 4:12 में वर्णित है कि इन्हें जलाने से पहले काटा जाता था, वैसे ही यहाँ भी काटकर जलाने का नियम था।

इस जलाने की प्रक्रिया को पाप और दुष्कर्म के अवशेषों का नाश करने के रूप में देखा जाता था।

### रिवाज को कौन निभाता था:

#### 1. "वह इसे बाहर ले जाएगा":

- जबकि यह वाक्य "वह इसे बाहर ले जाएगा" कहता है, इस शब्द का मतलब स्पष्ट नहीं है कि कौन व्यक्ति यह कार्य करेगा। एक व्याख्या के अनुसार यह 'आरोन' की ओर इशारा करता है, जो दूसरों को इस कार्य के लिए निर्देश देता था।

- सही व्याख्या यह है कि इसका मतलब ”जो भी इसे बाहर ले जाने वाला होगा” है। इस काम को कई लोग मिलकर कर सकते थे, जैसे एक व्यक्ति आग लेकर आएगा, दूसरा लकड़ी को व्यवस्थित करेगा, और तीसरा आग जलाएगा, लेकिन जो आग जलाएगा, वह पवित्रता में अशुद्ध हो जाएगा।

## **”शिविर के बाहर” का सिद्धांतः**

### **1. ”शिविर के बाहर”ः**

- ”शिविर के बाहर” का मतलब सिर्फ किसी भी बस्ती के बाहर नहीं है, बल्कि इसका मतलब है कि यह किसी ऐसी जगह पर होना चाहिए जिसे ‘शिविर’ माना जाता है, जैसे यरुशलैम या कोई भी दीवारों वाला नगर।
- जब जलपोत के निर्माण के समय शिविर तीन हिस्सों में बंटे थे: याजक, लेवी और इज़राइली। ”शिविर के बाहर” जाने का मतलब था कि यह तीनों शिविरों के बाहर, यानी पूरी तरह से बाहर होना चाहिए।
- इसका उद्देश्य यह था कि जैसे ही बलिदान को शिविर के बाहर भेजा जाता, यह पवित्रता की अशुद्धता को प्रदर्शित करता था।

## **पवित्रता की अशुद्धताः**

### **1. अशुद्धता और पुनः शुद्धिकरणः**

- जो व्यक्ति इस जलाने की प्रक्रिया को करता, उसे अपने कपड़े धोने और स्नान करने की आवश्यकता थी। इसी तरह, जो बलि बाहर ले जाता था, वह भी अशुद्ध हो जाता था।
- यह अशुद्धता इसलिए होती थी क्योंकि बलि का बकरा और बैल पाप का प्रतिनिधित्व करते थे, और इनका संबंध पाप और अशुद्धता से था।

- जलाने की प्रक्रिया को एक प्रकार से प्रायश्चित (atonement) के रूप में देखा जाता था, क्योंकि यह पापों से मुक्ति का एक रूप था।

## **रब्बियों की व्याख्याएँ:**

1. **इब्र एज़रा:** उनके अनुसार "वह इसे बाहर ले जाएगा" का मतलब था कि आरोन ही यह कार्य करवाएगा।
2. **नाचमानीदेस:** इब्र एज़रा से विपरीत, उन्होंने इसे यह माना कि यह कार्य जो भी निर्धारित व्यक्ति करेगा, वही करेगा।
3. **मालबिम:** मालबिम ने यह नोट किया कि यह वाक्य "पाप बलिदान का बैल" और "पाप बलिदान का बकरा" के रूप में था, ताकि यह स्पष्ट किया जा सके कि यह पाप का तत्व है जो अशुद्धता उत्पन्न करता है।
4. **राशि:** राशि ने यह स्पष्ट किया कि इन बलिदानों का खून पवित्र स्थान में लाया जाता था और इसे सबसे पवित्र स्थान (होलि ऑफ होलिज) में चढ़ाया जाता था।
5. **गुर आर्येह:** गुर आर्येह ने बताया कि यह बलिदान सिर्फ बाहरी पवित्र स्थान से संबंधित नहीं था, बल्कि यह अंदरूनी पवित्र स्थान से संबंधित था।

## **आधुनिक मसीही दृष्टिकोण:**

आधुनिक मसीही चर्च में, ये बलिदान और जलाने की प्रक्रिया अब नहीं की जाती है, क्योंकि मसीह की बलि को अंतिम और पूर्ण प्रायश्चित के रूप में देखा जाता है। प्रभु यीशु मसीह की मृत्यु और उसके पुनरुत्थान को पापों के लिए अंतिम बलिदान के रूप में माना जाता है।

- **प्रभु यीशु का बलिदान:** मसीही धर्म में यह माना जाता है कि प्रभु यीशु मसीह का बलिदान, जो क्रूस पर चढ़कर किया गया था, वह पापों की स्थायी मुक्ति के लिए था। पुराने नियम की

इस प्रक्रिया का उद्देश्य प्रभु यीशु के बलिदान के प्रतीक के रूप में देखा जाता है, जो अब मसीही विश्वासियों के लिए पापों के प्रायश्चित का अंतिम उपाय है।

**उदाहरण:** जैसे पुराने नियम में बलिदान के पश्चात पापों की माफी होती थी, वैसे ही मसीही धर्म में प्रभु यीशु का बलिदान पापों की माफी का अंतिम तरीका है, और इसलिए आजकल इन पुराने नियम के रिवाजों को मान्यता नहीं दी जाती।

<sup>28</sup>और जो उनको जलाए वह अपने वस्त्रों को धोए, और जल से स्नान करे, और इसके बाद वह छावनी में प्रवेश करने पाए।

यहां पर हम पवित्रता, अशुद्धता और प्रायश्चित के संदर्भ में बलिदानों को जलाने की प्रक्रिया पर चर्चा कर रहे हैं, विशेष रूप से "सरफ" (१७ - जलाना) क्रिया का उपयोग, और इसके बारे में रब्बी व्याख्याएँ। आइए इसे हिंदी में समझते हैं:

### मुख्य अवधारणाएँ

"सरफ" (१७ - जलाना):

यह क्रिया किसी वस्तु को जलाने के लिए उपयोग की जाती है, जिसमें वह वस्तु खुद नहीं जल सकती, बल्कि उसे जलाने के लिए लकड़ी या अन्य जलने पोग्य पदार्थों की आवश्यकता होती है।

"सरफ" यह दर्शाता है कि जलाने वाला व्यक्ति स्वयं इस क्रिया को कर रहा है, यानी वह जलाने का कारण बनता है।

"सरफ" और अन्य क्रियाओं का अंतर:

**"सरफ"** अलग है अन्य क्रियाओं से जैसे:

"दलाक" (דלאק): आग को प्रज्वलित करने के लिए उपयोग की जाती है।

"बा'र" (בער): आग को जलाने और फैलाने की क्रिया।

"यात़ज़त" (yatzzat): आग को फैलाने की क्रिया।

"अचल" (אכל): आग द्वारा भौतिक वस्तु को नष्ट करने की क्रिया।

"सरफ" का मतलब केवल जलाने की क्रिया है, जबकि "अचल" यह दिखाता है कि आग किसी वस्तु को नष्ट करती है।

### अशुद्धता:

जो व्यक्ति बलिदान को जलाने की प्रक्रिया में शामिल होता है, वह पवित्रता में अशुद्ध हो जाता है।

इस प्रक्रिया से अशुद्धता तब होती है जब वह वस्तु शिविर से बाहर ले जाई जाती है।

जिन लोगों ने जलाने में मदद की है, वे भी अशुद्ध हो जाते हैं।

### पवित्रता की शुद्धि:

जलाने के बाद, जो व्यक्ति इस प्रक्रिया में शामिल होता है, उसे अपने कपड़े धोने और स्नान करने की आवश्यकता होती है। यह इसलिए है क्योंकि वह एक पवित्र वस्तु के अवशेषों से संपर्क कर चुका है, जिसका पवित्रता अब घटित हो चुकी है।

### "जो जलाता है" का दायरा:

कुछ व्याख्याओं के अनुसार, "जो जलाता है" (הו ילה) उस व्यक्ति को दर्शाता है जो

जलाने में शामिल होता है, लेकिन इसका मतलब सिर्फ उस व्यक्ति तक सीमित नहीं होता, जो आग को जलाता है या लकड़ी को व्यवस्थित करता है।

"जो जलाता है" का अर्थ उस व्यक्ति से है जो बलिदान को आग में रखता है और सुनिश्चित करता है कि वह पूरी तरह जल जाए। इसके अलावा, जो व्यक्ति जलाने में मदद करता है, उसे भी अशुद्ध माना जाता है और उसे शुद्धि की आवश्यकता होती है।

## रब्बी व्याख्याएँ

### 1. रब्बी यहूदा:

- रब्बी यहूदा के अनुसार, "जो जलाता है" का मतलब केवल उस व्यक्ति से है जो वस्तु को राख में बदलने तक जलाता है।

### 2. रब्बी शिमोन:

- रब्बी शिमोन ने रब्बी यहूदा से असहमत होते हुए कहा कि "जो जलाता है" वह केवल वह व्यक्ति नहीं है जो अंतिम जलन तक पहुंचता है, बल्कि वह व्यक्ति भी जो जलाने की तैयारी करता है, उसे भी "जो जलाता है" माना जाता है।
- उनके अनुसार, वस्तु के अधिकांश भाग के जलने पर ही कपड़े अशुद्ध होते हैं।

### 3. अन्य रब्बी:

- कुछ अन्य रब्बी व्याख्याओं के अनुसार, जो भी व्यक्ति जलाने की प्रक्रिया में मदद करता है, वह अशुद्ध हो जाता है।

### 4. तोरा तेमिमा:

- यह व्याख्या कहती है कि "जो जलाता है" केवल उस व्यक्ति को संदर्भित करता है जो वस्तु को जलाता है, और जब वह राख में बदल जाती है तो यह नहीं माना जाता।

इसके अलावा, "जो भेजता है" और "जो जलाता है" के बीच एक संबंध है, भले ही वे एक साथ नहीं दिखाए गए हों।

## उदाहरण

अगर एक पशु बलिदान जलाया जा रहा है:

- उन लोगों को "जो जलाते हैं" नहीं माना जाएगा जो लकड़ी रखते हैं, आग जलाते हैं, या आग को प्रज्वलित करते हैं।
- लेकिन वह व्यक्ति जिसे पशु को आग में रखने और यह सुनिश्चित करने का कार्य सौंपा गया है, उसे "जो जलाता है" माना जाएगा।
- इसके अतिरिक्त, जो लोग उस व्यक्ति की मदद करते हैं, वे भी अशुद्ध हो जाते हैं और शुद्धि की आवश्यकता होती है।

## आज के मसीही विश्वास में इसका क्या अर्थ है?

आधुनिक मसीही चर्च में, पापों के लिए बलिदान जलाने की यह प्रक्रिया अब नहीं की जाती है। मसीह की बलि को अंतिम और पूर्ण प्रायश्चित के रूप में माना जाता है। यह मान्यता है कि प्रभु यीशु मसीह का बलिदान ही पापों की स्थायी माफी के लिए पर्याप्त है, इसलिए इन पुराने नियमों के बलिदान और जलाने की प्रक्रियाओं का पालन नहीं किया जाता।

- **प्रभु यीशु का बलिदान:** मसीही विश्वास के अनुसार, प्रभु यीशु मसीह ने कूस पर चढ़कर अपना बलिदान दिया, जो अब पापों के लिए स्थायी प्रायश्चित का एकमात्र मार्ग है।

उदाहरण के रूप में, जैसे पुराने नियम में बलिदान की प्रक्रिया होती थी, वैसे ही मसीही धर्म में प्रभु यीशु का बलिदान पापों के लिए अंतिम प्रायश्चित माना जाता है।

## प्रायश्चित्त का दिन मानना

<sup>29</sup>“तुम लोगों के लिये यह सदा की विधि होगी कि सातवें महीने के दसवें दिन को तुम अपने अपने जीव को दुःख देना, और उस दिन कोई, चाहे वह तुम्हारे निज देश का हो चाहे तुम्हारे बीच रहने वाला कोई परदेशी हो, कोई भी किसी प्रकार का काम-काज न करे;

लेवितिकस 16:29 में जो कहा गया है, वह यों किप्पुर (Atonement Day) के बारे में है, जिसमें आत्मा की शोषण (affliction) और काम से विश्राम की बात की गई है। इस दिन को एक शाश्वत आदेश माना गया है। इसका उद्देश्य पापों की क्षमा के लिए आत्मा की शुद्धि और आत्मनिरीक्षण करना है।

### मुख्य बिंदु:

- **आत्मा की शोषण (תִמְכִיתָא שְׁפָרָה):** इसका मतलब है उपवास (fasting), यानी भोजन और पेय से परहेज करना। इसका उद्देश्य शरीर की शारीरिक सुख-सुविधाओं को दूर करना और आत्मा के लिए आत्मनिरीक्षण और प्रायश्चित्त का अवसर प्रदान करना है।
  - यह शोषण खुद को दर्द देने के बारे में नहीं है, बल्कि शारीरिक सुखों से परहेज करने के बारे में है।
  - शोषण आत्मा से जुड़ा हुआ है, क्योंकि आत्मा का अस्तित्व खाने और पीने से ही बनाए रखा जाता है।
  - जैसे पानी शरीर को बाहरी रूप से शुद्ध करता है, वैसे ही उपवास आंतरिक अंगों को शुद्ध करता है।
- **काम से विश्राम (תְּבִשָּׁם לֹא תַעֲשֶׂה):** यह निषेध शबात (Sabbath) के समान है। इसमें न केवल सामान्य काम, बल्कि कौशलपूर्ण काम भी शामिल है।
  - इसमें किसी भी प्रकार का कार्य निषिद्ध है, जैसे कि लेखन या धार्मिक उद्देश्य से

**काम करना भी नहीं करना चाहिए।**

- यह प्रतिबंध शबात के प्रतिबंधों के समान है और किसी भी प्रकार का कार्य जिसे विशेष उद्देश्य से किया जाए, वह प्रतिबंधित है।
- **सभी के लिए लागू** (מכוורת ברגה רגלה פאראא): यह नियम सभी पर लागू होता है, चाहे वे घर में जन्मे इज़राइली हों (जो शुद्ध इज़राइली नागरिक हैं) या उन विदेशी/अजनबियों पर जो इज़राइल में निवास करते हैं।
  - 'घर में जन्मे' का मतलब है इज़राइली नागरिकों में महिलाएं भी शामिल हैं।
  - 'विदेशी' या 'परदेशी' का अर्थ है न केवल निवासी विदेशी बल्कि वे लोग भी जो यहूदी धर्म में परिवर्तित हो चुके हैं।

**रब्बी व्याख्याएँ:**

- **आदरेट एलियाह:** वह कहते हैं कि 'आपके लिए' (מכוֹל) शब्द विशेष रूप से इज़राइलियों के लिए है, यानी यह नियम केवल यहूदी लोगों के लिए हैं, अन्य देशों के लिए नहीं। आत्मा की शोषण (तानि) का संबंध भूख से है, जैसे कि "उसने तुम्हें कष्ट दिया और तुम्हें भूखा रखा"। काम से विश्राम शबात के काम से विश्राम के समान है, इसका मतलब है कि न केवल भौतिक कार्य बल्कि धार्मिक कार्य भी निषिद्ध हैं।
- **अलशेख:** वह यह सवाल उठाते हैं कि जब मंदिर अब नहीं है तो यह नियम "एक शाश्वत आदेश" क्यों है? वह बताते हैं कि शोषण (उपवास) प्रायशिच्त के लिए आवश्यक है, और दिन का उद्देश्य केवल पापों की क्षमा नहीं बल्कि शुद्धि भी है।
- **इब्र एज़रा:** उनका कहना है कि "आत्मा की शोषण" हमेशा उपवास का ही संकेत है, और वह यह भी कहते हैं कि गैर-यहूदी इस दिन काम से विश्राम करें, लेकिन उन्हें उपवास नहीं करना चाहिए।
- **मालबिम:** वह 'आपके लिए' (מכוֹל) को इज़राइलियों के लिए खास बताते हैं, और यह भी

बताते हैं कि 'गर' (विदेशी) का मतलब धर्म परिवर्तन करने वाले लोग और उनके परिवार भी होते हैं।

- **रालबाग:** वह यह कहते हैं कि शोषण का उद्देश्य उपवास है, ताकि व्यक्ति को पाप के लिए पछतावा हो सके, लेकिन वह यह भी बताते हैं कि केवल न खाने और पीने से ही शोषण पूरा नहीं होता, बल्कि इसका उद्देश्य आनंद से वंचित करना है।

**आज के मसीही चर्च में क्या मान है:**

- यों किप्पुर का यह दिन मसीही धर्म में विशेष रूप से पालन नहीं किया जाता है। हालांकि, कुछ मसीही परंपराएं जैसे 'लेंट' (Lent) में उपवास और प्रायश्चित किया जाता है, जो ईस्टर से पहले 40 दिनों का होता है।
- मसीही विश्वास में येसु मसीह का बलिदान ही पापों की क्षमा का कारण है, इसलिए यों किप्पुर जैसा दिन उन्हें पापों के लिए प्रायश्चित करने की आवश्यकता नहीं होती।
- कुछ मसीही लोग व्यक्तिगत रूप से उपवास और प्रार्थना करते हैं ताकि वे परमेश्वर से क्षमा प्राप्त कर सकें, लेकिन यह एक व्यक्तिगत या पंथिक चयन है, सभी मसीही समुदायों में यह अनिवार्य रूप से नहीं होता है।
- 'लेंट' में उपवास एक प्रकार से आत्मनिरीक्षण और पापों के लिए पश्चाताप करने का समय होता है, लेकिन यों किप्पुर जैसा दिन मसीही विश्वास में नहीं है।

**उदाहरण:** जैसे यों किप्पुर में उपवास से शुद्धि होती है, वैसे ही 'लेंट' में मसीही लोग अपनी आत्मा की शुद्धि के लिए उपवास करते हैं और अपने पापों के लिए प्रायश्चित करते हैं। हालांकि, उनका विश्वास है कि येसु मसीह के बलिदान से पापों की क्षमा मिल गई है, इसलिए उन्हें यों किप्पुर की तरह का दिन मनाने की आवश्यकता नहीं है।

30 क्योंकि उस दिन तुम्हें शुद्ध करने के लिये तुम्हारे निमित्त प्रायश्चित्त किया जाएगा; और तुम अपने सब पापों से प्रभु प्रभु यहोवा के समुख पवित्र ठहरोगे।

Leviticus 16:30 का यह वाक्य "क्योंकि इस दिन वह तुम्हारे लिए प्रायश्चित्त करेगा, तुम्हें शुद्ध करने के लिए; तुम अपने सभी पापों से प्रभु प्रभु यहोवा के सामने शुद्ध किए जाओगे" यम किप्पुर, या प्रायश्चित्त दिवस (Day of Atonement) के महत्व को स्पष्ट करता है। आइए इसे विस्तार से समझते हैं और विभिन्न रब्बी टिप्पणियों पर ध्यान देते हैं:

### **मुख्य विचार:**

1. **प्रायश्चित्त (הַקְרֵב - Kippurah):** यह दिन प्रायश्चित्त करने का अवसर है। यह प्रायश्चित्त केवल बलिदानों पर निर्भर नहीं है, बल्कि व्यक्ति की तौबा (repentance) और आत्मा की तैयारी पर भी आधारित है।
2. **शुद्धि (הַחֲרֵב - Tohorah):** प्रायश्चित्त के परिणामस्वरूप शुद्धि होती है। यह केवल बाहरी शुद्धि नहीं है, बल्कि यह आंतरिक परिवर्तन और आत्मिक स्वतंत्रता की प्राप्ति है। यह पाप के "मैलेपन" को हटाने और स्पष्टता व उज्ज्वलता प्राप्त करने के रूप में देखा जाता है।
3. **"प्रभु प्रभु यहोवा के सामने"** (הַאֲנָשִׁן): शुद्धि "प्रभु प्रभु यहोवा के सामने" होती है। इसका अर्थ है कि वास्तविक तौबा और शुद्धि हमारे संबंध को परमेश्वर के साथ सुधारने से जुड़ी है। परमेश्वर ही हमारी तौबा की सच्चाई का न्याय करता है।

### **रब्बी व्याख्याएं:**

1. **दिन स्वयं प्रायश्चित्त करता है:** मालबिम जैसे कुछ रब्बी यह मानते हैं कि स्वयं यम किप्पुर

का दिन प्रायश्चित करता है, न कि केवल उस दिन किए गए बलिदान। उपवास और आत्म-दुःख केवल तैयारी नहीं, बल्कि प्रायश्चित की प्रक्रिया का हिस्सा हैं।

2. **तौबा आवश्यक है:** अधिकांश टिप्पणीकारों का मानना है कि यम किप्पुर केवल उन्हीं के लिए प्रायश्चित करता है जो सच्चे मन से तौबा करते हैं। तौबा केवल पछतावे से नहीं, बल्कि बदलने और पाप को न दोहराने का संकल्प लेने से जुड़ी है। हक्तव वे हकबाला का कहना है कि यम किप्पुर स्वयं प्रायश्चित नहीं करता, बल्कि केवल उन लोगों के लिए करता है जो सच्चे मन से तौबा करते हैं। रालबाग के अनुसार, तौबा, उपवास, और काम से अवकाश लेने से तौबा की आवश्यकता का एहसास होता है।
3. **ईश्वर के खिलाफ पाप और दूसरों के खिलाफ पाप:** एक महत्वपूर्ण भेद यह है कि यम किप्पुर ईश्वर के खिलाफ पापों के लिए प्रायश्चित करता है, लेकिन दूसरों के खिलाफ पापों के लिए, जब तक व्यक्ति ने उसे सही नहीं किया और क्षमा नहीं मांगी, तब तक यम किप्पुर नहीं करता। नचल केदूमिम का कहना है कि दूसरों से क्षमा प्राप्त करने के बाद भी, पाप के लिए परमेश्वर से प्रायश्चित की आवश्यकता होती है।
4. **आंतरिक परिवर्तन:** कल्पी याकार का कहना है कि यम किप्पुर केवल बाहरी दिखावे की धार्मिकता के बारे में नहीं है, बल्कि यह आंतरिक तौबा का समय है। शुद्धि "प्रभु प्रभु यहोवा के सामने" होती है, जिसका अर्थ है कि यह सच्ची और दिल से की जाने वाली तौबा होती है। डेविड ज़वी होफमैन के अनुसार, यम किप्पुर उन पापों के लिए प्रायश्चित करने का अवसर प्रदान करता है, जो केवल परमेश्वर जानता है।
5. **महान याजक का कार्य:** कुछ टिप्पणीकारों जैसे इब्र एज़रा और रेज़ि़यो का कहना है कि महान याजक का कार्य और प्रार्थनाएँ यम किप्पुर पर प्रायश्चित प्राप्त करने में महत्वपूर्ण थीं।

**महान याजक का शब्द "प्रभु प्रभु यहोवा" का उच्चारण करना और प्रायशित के लिए नाम लेना महत्वपूर्ण था।**

6. **42 अक्षरों वाला परमेश्वर का नामः राब्बेणु बाह्या 42 अक्षरों वाले परमेश्वर के नाम का उल्लेख करते हैं, जो दया से संबंधित हैं, और उनका यम किप्पुर की प्रार्थनाओं से संबंध बताते हैं।**

### **उदाहरणः**

1. **ईश्वर के खिलाफ पापः** मान लीजिए, किसी व्यक्ति ने शब्दत का उल्लंघन किया और काम किया। अगर वह व्यक्ति यम किप्पुर पर सच्चे मन से तौबा करता है और फिर से उस पाप को न करने का संकल्प लेता है, तो यम किप्पुर उस पाप के लिए प्रायशित कर सकता है।
2. **दूसरों के खिलाफ पापः** अगर किसी ने किसी से चोरी की, तो यम किप्पुर उस पाप के लिए प्रायशित नहीं करेगा, जब तक वह व्यक्ति चोरी की गई वस्तु वापस नहीं करता और उस व्यक्ति से क्षमा नहीं मांगता जिसे उसने धोखा दिया।
3. **आंतरिक तौबा:** अगर व्यक्ति ने यम किप्पुर पर उपवास रखा और प्रार्थना की, लेकिन उसने अपने व्यवहार में कोई बदलाव नहीं किया और पापों के लिए क्षमा प्राप्त नहीं की, तो यह सच्ची तौबा नहीं मानी जाएगी।

### **आज के मसीही चर्च में मान्यताः**

क्रिस्टियन धर्म में प्रायश्चित का सिद्धांत मौजूद है, लेकिन यह यहूदी विचार से अलग है। मसीही धर्म में यह विश्वास किया जाता है कि प्रभु यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान ने मानवता के पापों के लिए अंतिम प्रायश्चित प्रदान किया। शुद्धि का विचार आमतौर पर बपतिस्मा और पवित्र आत्मा को प्राप्त करने से जुड़ा होता है, जो आध्यात्मिक शुद्धि के लिए आवश्यक मानी जाती है। मसीही धर्म में प्रभु यीशु के बलिदान को विश्वास के माध्यम से शुद्धि प्राप्त करने का प्रमुख तरीका माना जाता है, न कि किसी विशेष दिन पर तौबा करने से।

मसीही धर्म में यम किप्पुर का सीधा अनुपालन नहीं है, लेकिन कुछ मसीही इस दिन के महत्व को समझते हैं और अध्ययन करते हैं। इसके बजाय, मसीही धर्म में विभिन्न प्रथा जैसे "कन्फेरेन्स" होती हैं, जो एक प्रकार का प्रायश्चित और परमेश्वर से क्षमा प्राप्त करने का तरीका है, लेकिन यह उनके विश्वास और धर्मशास्त्र के अनुसार अलग होता है।

**संक्षेप में:** यम किप्पुर के दिन का उद्देश्य पापों के लिए प्रायश्चित और शुद्धि है, जो आंतरिक परिवर्तन और ईश्वर के साथ संबंध सुधारने की दिशा में होता है। रब्बी व्याख्याएँ इस दिन की महत्वता को समझाती हैं और तौबा की सच्चाई पर बल देती हैं। जबकि मसीही धर्म में प्रायश्चित और शुद्धि के लिए अलग परंपराएँ हैं, यम किप्पुर की अवधारणा को उन्होंने अपने विश्वास के अनुसार अलग तरीके से समझा है।

<sup>31</sup>यह तुम्हारे लिये परमविश्राम का दिन ठहरे, और तुम उस दिन अपने अपने जीव को दुःख देना; यह सदा की विधि है।

विधिविशेष 16:31 का वाक्य "यह तुम्हारे लिए विश्राम का दिन है, और तुम अपनी आत्माओं को कष्ट दोगे," यौम किप्पुर (प्रायश्चित का दिन) से संबंधित है और इसे पूर्ण विश्राम और आत्म-निरास का

दिन स्थापित करता है।

**मुख्य अवधारणाएँ:**

- **शबात शबातोन** (שְׁבָת שְׁבָת): यह शब्द "विश्राम का शबात" का अर्थ है जो सामान्य शबात से उच्चतम विश्राम को दर्शाता है। इसे शारीरिक और मानसिक विश्राम दोनों के रूप में समझा जा सकता है। शबात शब्द की पुनरावृत्ति इस कानून के महत्व को दर्शाती है और **शबातोन** शब्द यह सूचित करता है कि यह विश्राम पूर्ण और संपूर्ण होना चाहिए। इसका मतलब यह है कि व्यक्ति को शारीरिक और मानसिक गतिविधियों से पूरी तरह से बचना चाहिए।
- **आत्मा को कष्ट देना** (נִזְנַת אַת): यह शब्द यौम किष्युर पर आत्म-निरास का अभ्यास करने को संदर्भित करता है, जो मुख्य रूप से उपवासी होने के रूप में व्यक्त होता है। यह केवल कामकाजी गतिविधियों से बचने का प्रश्न नहीं है, बल्कि शारीरिक आवश्यकताओं जैसे खाने-पीने और अन्य शारीरिक सुखों से बचने का भी है। यह दुनिया में सक्रिय रहने की बजाय शांति की ओर मुड़ने का समय है।
- "यह तुम्हारे लिए है" (לְךָ): यह शब्द यह स्पष्ट करता है कि यौम किष्युर पर विश्राम और आत्म-निरास का उद्देश्य स्वयं व्यक्ति के लिए है, न कि केवल प्रभु के लिए। इसका अर्थ यह है कि यह विश्राम स्वयं को अपने पापों के लिए शुद्ध करने और अपने आत्मा की शुद्धि के लिए है।

**रबी व्याख्याएँ और संकेत:**

- **इब्र एज़रा:** इब्र एज़रा का कहना है कि "शबात शबातोन" का अर्थ है एक विश्राम जो बिना

किसी सीमा के हैं। यह किसी भी अन्य विश्राम से ऊपर का विश्राम है।

- **हिज़कुनि:** हिज़कुनि यह बताते हैं कि यहाँ "यह" (אֲنָה) शब्द का विरोष प्रकार से प्रयोग किया गया है, जो यह दिखाता है कि यह विश्राम लोगों के लिए है जबकि सृष्टि के शबात का विश्राम प्रभु के लिए है।
- **डेविड पीड़ित व्यक्ति हॉफमैनः:** हॉफमैन बताते हैं कि "शबात" शब्द की पुनरावृत्ति इस कानून को और अधिक महत्वपूर्ण बनाती है। वे यह भी बताते हैं कि यदि यौम किप्पुर के दौरान पापों के लिए प्रायशिच्छ नहीं किया गया, तो भी उपवास और काम से बचने की आवश्यकता बनी रहती है।
- **मालबिमः** मालबिम के अनुसार "शबातोन" शब्द के साथ नून का जोड़ यह दर्शाता है कि यहाँ पर विश्राम का स्तर ऊंचा है और इसमें न केवल शारीरिक काम से बचना, बल्कि शारीरिक सुखों से भी बचना शामिल है।
- **रव हिर्शः** रव हिर्श का मानना है कि सृष्टि के शबात का उद्देश्य प्रभु के प्रति समर्पण को दर्शाना था, जबकि यौम किप्पुर का उद्देश्य हमारी खुद की अवमानना और पापों के लिए पश्चाताप करना है। इसलिए, यौम किप्पुर में केवल काम से बचना नहीं बल्कि आत्म-निरास करना भी आवश्यक है।
- **रेगियोः** रेगियो का कहना है कि यौम किप्पुर को "शबात शबातोन" कहा जाता है क्योंकि इसमें न केवल काम से बचना होता है, बल्कि खाने, पीने और शारीरिक सुखों से भी बचना होता है। वे यह भी कहते हैं कि यौम किप्पुर के नियम स्थायी हैं, जो मंदिर के अभाव में भी लागू होते हैं।

- **स्फोर्नो:** स्फोर्नो का कहना है कि सामान्य शबात में भोजन और पेय से श्रद्धा व्यक्त की जाती है, जबकि यौम किप्पुर में आत्म-निरास करना शबात के पालन की अवधारणा को उत्तरत करता है।
- **स्टेइनसाल्ट्ज़:** स्टेइनसाल्ट्ज़ का कहना है कि यौम किप्पुर, शबात के समान एक विश्राम का दिन है, जिसमें शारीरिक जरूरतों से अतिरिक्त प्रतिबंध हैं। यौम किप्पुर की पवित्रता मंदिर पर निर्भर नहीं है।

### **मसीही धर्म में आज का दृष्टिकोण:**

यद्यपि यौम किप्पुर और इसके अभ्यास अधिकांश मसीही परंपराओं में सीधे तौर पर नहीं होते, फिर भी कुछ समानताएँ पाई जाती हैं:

- **उपवासी:** यद्यपि यौम किप्पुर से संबंधित नहीं है, कई मसीही संप्रदाय विशेष रूप से लैण्ट (Lent) के दौरान उपवास करते हैं। यह आत्म-निरास और प्रायशिच्छा का समय होता है, जो व्यक्ति को आत्मनिरीक्षण और परिवर्तन की दिशा में प्रेरित करता है।
- **पश्चाताप और क्षमा:** यौम किप्पुर के केंद्रीय विषय पश्चाताप और क्षमा की अवधारणा मसीही धर्म में भी महत्वपूर्ण है। मसीही विश्वास करते हैं कि प्रभु यीशु मसीह के बलिदान और पुनरुत्थान के द्वारा उनके पापों की क्षमा हो जाती है और वे प्रभु से मेल-मिलाप प्राप्त करते हैं।
- **आत्म-निरास:** यौम किप्पुर पर आत्म-निरास का अभ्यास मसीही धर्म में भी पाया जाता है, विशेष रूप से उपवास और प्रार्थना के माध्यम से, जो एक उच्च आध्यात्मिक उद्देश्य और ईश्वर के प्रति समर्पण के रूप में देखा जाता है।

यद्यपि यौम किप्पुर के लिए कोई विशेष दिन या अनुष्ठान मसीही धर्म में नहीं है, फिर भी पापों का प्रायश्चित्त दोनों धर्मों में केंद्रीय है, हालांकि इसे प्राप्त करने के तरीके और अनुष्ठान अलग-अलग हैं।

<sup>32</sup>और जिसका अपने पिता के स्थान पर याजक पद के लिये अभिषेक और संस्कार किया जाए वह याजक प्रायश्चित्त किया करे, अर्थात् वह सनी के पवित्र वस्त्रों को पहिनकर,

लेवितिकस 16:32 में, परमेश्वर ने हाई प्रीस्ट (महायाजक) के कर्तव्यों को स्पष्ट किया है, जिनमें योम किप्पुर (प्रायश्चित्त का दिन) पर प्रायश्चित्त की सेवा करना शामिल है। इस पद का विश्लेषण और विभिन्न रब्बी के विचारों को हम निप्रलिखित बिंदुओं में समझ सकते हैं:

### **प्रमुख अवधारणाएँ:**

- प्रायश्चित्त (Atonement):** इस पद का संदर्भ योम किप्पुर के दिन की प्रथा से है, जिसमें महायाजक विशेष संस्कारों द्वारा लोगों के लिए प्रायश्चित्त करता है। यह प्रायश्चित्त केवल व्यक्तिगत रूप से नहीं, बल्कि सार्वजनिक रूप से भी होता है, जैसे कि लोग शारीरिक और मानसिक रूप से यत्र करते हैं और महायाजक यह प्रार्थना करता है।
- महायाजक (High Priest):** "याजक जो अभिषिक्त और पवित्र किया जाए" इस पद में महायाजक के बारे में कहा गया है। महायाजक वह व्यक्ति होता है जो यरुशलाम के मन्दिर में परमेश्वर के सामने विशेष कर्तव्य निभाता है, और यह पद हमेशा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में पुत्रों को सौंपा जाता है।
- अभिषेक और पवित्रता (Anointing and Consecration):** महायाजक को विशेष

अभिषेक तेल से अभिषिक्त किया जाता था, जो उसे परमेश्वर की सेवा के लिए पवित्र करता था। यह अभिषेक तेल न केवल शारीरिक रूप से, बल्कि आत्मिक रूप से भी उसे पवित्र करता था।

4. “पिता के स्थान पर” (*In his father's stead*): इस पद का अर्थ है कि यदि महायाजक का पुत्र सक्षम है, तो वह उसके स्थान पर इस सेवा को संभालेगा। यह अनुवंशिकता को दर्शाता है, लेकिन यह भी यह संकेत देता है कि केवल योग्य व्यक्ति को ही यह पद मिल सकता है।

### **रब्बी के व्याख्याएँ:**

1. **राशी (Rashi):** Rashi के अनुसार, इस पद का संदर्भ आरोन के बाद आने वाले सभी महायाजकों से है। वे कहते हैं कि ”अभिषेक और पवित्रता“ से तात्पर्य है कि वे याजक जिनका अभिषेक तेल से नहीं हुआ, वे विशेष वस्त्र पहनने से पवित्र हो जाते हैं। उनका कहना है कि ”पिता के स्थान पर“ यह दर्शाता है कि पुत्र को ही यह अधिकार होता है, यदि वह इसके लिए योग्य हो।
2. **इब्न एजरा (Ibn Ezra):** इब्न एजरा के अनुसार, जो याजक अभिषिक्त और पवित्र नहीं होता, वह भी विशेष वस्त्र पहनने से प्रायश्चित्त की सेवा कर सकता है।
3. **मालबिम (Malbim):** मालबिम इस बात पर जोर देते हैं कि ”अभिषेक या पवित्रता“ से तात्पर्य दो अलग-अलग प्रक्रियाएँ हैं। महायाजक का शारीरिक अभिषेक और वस्त्र पहनने के माध्यम से उसकी पवित्रता का निर्धारण किया जाता है।
4. **रंभान (Ramban):** रंभान के अनुसार, महायाजक का अभिषेक तेल से या विशेष वस्त्रों से

पवित्रता प्राप्त करने की प्रक्रिया महत्वपूर्ण है, और यह दोनों तरीके मानी जाती हैं।

## आज के मसीही विश्वास में क्या मान है:

1. **प्रभु यीशु मसीह को महायाजक के रूप में देखना:** नए नियम में, विशेष रूप से हिन्दू पत्रमें प्रभु यीशु को सर्वोत्तम महायाजक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। मसीही विश्वास के अनुसार, प्रभु यीशु ने स्वयं को परमेश्वर के समक्ष अंतिम बलिदान के रूप में प्रस्तुत किया, जिससे पापों का प्रायश्चित्त हुआ। यह नया प्रायश्चित्त था, जो याजकों और उनके बलिदानों की आवश्यकता को समाप्त कर दिया।
2. **प्रायश्चित्त का कार्य:** मसीही विश्वास में, प्रायश्चित्त का कार्य अब प्रभु यीशु के बलिदान द्वारा पूरा हो चुका है। मसीहियों का मानना है कि उनके पापों की क्षमा और प्रायश्चित्त प्रभु यीशु के बलिदान द्वारा हुआ है, न कि पुराने नियम के याजकों द्वारा किए गए कर्मों के द्वारा।
3. **पारंपरिक याजक व्यवस्था का कोई स्थान नहीं:** आधुनिक मसीही चर्चों में, कोई भी धार्मिक व्यक्ति या याजक प्रभु यीशु की भूमिका को नहीं निभाता। याजकों की अवधारणा केवल मसीही चर्च के कर्तव्यों और आदेशों के लिए नहीं है। हालांकि, चर्च के पास पुरोहित (पादरी) होते हैं, जिनका कार्य शिक्षण और प्रचार करना है, लेकिन वे पुराने नियम के महायाजक के समान कार्य नहीं करते।

इस तरह से, मसीही धर्म में प्रायश्चित्त का विचार प्रभु यीशु के बलिदान के माध्यम से पूरी तरह से नया रूप ले चुका है, और अब पृथ्वी पर कोई भी महायाजक की भूमिका नहीं निभाता, क्योंकि प्रभु यीशु ही परमेश्वर के समक्ष हमारे लिए अंतिम बलिदान बने हैं।

<sup>33</sup>पवित्रस्थान, और मिलापवाले तम्बू, और वेदी के लिये प्रायश्चित्त करे; और याजकों के और मण्डली के सब लोगों के लिये भी प्रायश्चित्त करे।

Leviticus 16:33 में संतरी सेवा और पापमुक्ति की प्रक्रिया को समझाया गया है। यहाँ पर तीन प्रमुख भाग हैं जिनका शुद्धीकरण करना है: पवित्र स्थान (Holy of Holies), तम्बू (Tent of Meeting), और वेदी (Altar), तथा यह पापमुक्ति याजकों और सम्पूर्ण इस्राइलियों के लिए है।

### पापमुक्ति की प्रक्रिया की व्याख्या:

1. **पवित्र स्थान (Holy of Holies):** यह मंदिर का सबसे अंदरूनी और सबसे पवित्र भाग है। इसे शुद्ध करना आवश्यक है क्योंकि यहाँ पर परमेश्वर की उपस्थिति रहती है, और जब लोग पाप करते हैं, तो उसकी पवित्रता भ्रष्ट हो जाती है, जिससे उसका शुद्धिकरण किया जाता है।
2. **तम्बू और वेदी (Tent of Meeting and Altar):** यहाँ पर पवित्र स्थान और वेदी का शुद्धिकरण होता है। तम्बू और वेदी के साथ-साथ वे सभी स्थान भी शुद्ध किए जाते हैं, जहाँ पर लोग पाप करते हैं। इसके लिए बकरों और बैल का रक्त छिड़का जाता है।
3. **याजक और लोग:** इसके बाद याजकों और इस्राइलियों के लिए पापमुक्ति होती है। याजकों के लिए बैल की बलि दी जाती है और लोगों के लिए एक बकरा जंगल में भेजा जाता है (स्केपगोट)। इस बकरे को पापों को अपने ऊपर लेकर जंगल में छोड़ दिया जाता है।

### रबी साहित्य की व्याख्या:

1. **पापमुक्ति की पुनरावृत्ति:** "पापमुक्ति" शब्द को तीन बार प्रयोग किया गया है, जिससे यह

संकेत मिलता है कि पापमुक्ति की प्रक्रिया तीन भागों में विभाजित है: पवित्र स्थान, तम्बू और वेदी, और याजक तथा लोग। इस पुनरावृत्ति से यह भी पता चलता है कि हर एक स्थान और हर एक समूह के लिए अलग-अलग शुद्धिकरण की आवश्यकता होती है।

2. **"मिकदाश हाकोदश"** (Mikdash HaKodesh): यह शब्द पवित्र स्थान को दर्शाता है। रब्बी के अनुसार इसका अर्थ है पवित्रता का शुद्धिकरण, जिससे यह भी संकेत मिलता है कि इस स्थान पर परमेश्वर की उपस्थिति फिर से स्थापित की जाती है।
3. **"लोगों का समुदाय"** (Am HaKahal): रब्बी यह बताते हैं कि यह वाक्यांश याजकों और लेवियों को छोड़कर अन्य सभी लोगों को शामिल करता है। इसका मतलब यह है कि याजक और लेवी अपनी अलग पापमुक्ति प्रक्रिया से गुजरते हैं।
4. **पापमुक्ति की व्यवस्था:** पापमुक्ति की प्रक्रिया में एक निश्चित क्रम है। पहले पवित्र स्थान का शुद्धिकरण होता है, फिर तम्बू और वेदी का, और अंत में लोगों की पापमुक्ति की जाती है।

### क्रिस्त्यानिटी में आज:

आज के मसीही विश्वास में यह माना जाता है कि प्रभु यीशु मसीह ही परमेश्वर के अंतिम याजक हैं, जो अपने बलिदान से पूरी दुनिया के पापों के लिए पापमुक्ति प्रदान करते हैं। इसलिए, इसाएलियों द्वारा किए गए याजक बलि और पापमुक्ति की प्रक्रियाएँ आज मसीही विश्वास में प्रभु यीशु के कूस पर चढ़ने और उसके बलिदान के द्वारा पूरी हो चुकी हैं।

- **प्रभु यीशु** को अंतिम याजक माना जाता है: मसीही धर्म में प्रभु यीशु को एकमात्र उच्च याजक माना जाता है, जिन्होंने खुद को बलि चढ़ाकर पूरी दुनिया के पापों के लिए पापमुक्ति

की।

- **पापमुक्ति का मार्ग:** अब पापमुक्ति विश्वास और विश्वास के द्वारा प्रभु यीशु के बलिदान में भाग लेकर प्राप्त की जाती है, न कि कोई विशेष याजक बलि या प्राचीन संस्कारों के द्वारा।

आज के मसीही चर्चों में इन प्राचीन नियमों की पूरी व्यवस्था का पालन नहीं किया जाता, क्योंकि प्रभु यीशु मसीह के बलिदान ने सभी बलियों की आवश्यकता को समाप्त कर दिया है। इस संदर्भ में, क्रिस्तियानिटी ने याजकों और पुराने मंदिर की व्यवस्था को समाप्त कर दिया है, और अब यह विश्वास किया जाता है कि प्रत्येक व्यक्ति मसीह में परमेश्वर के साथ सामंजस्य बना सकता है।

<sup>34</sup>और यह तुम्हारे लिये सदा की विधि होगी कि इसाइलियों के लिये प्रतिवर्ष एक बार तुम्हारे सारे पापों के लिये प्रायश्चित्त किया जाए।” प्रभु प्रभु यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार जो उसने मूसा को दी थी हारून ने किया।

### Leviticus 16:34 और योम किप्पुर की प्रक्रिया का महत्व

यह शास्त्र के वाक्य में लिखा है: ”यह तुम्हारे लिए एक अनन्त विधान होगा, ताकि तुम इसाइलियों के लिए उनके सभी पापों का प्रायश्चित्त एक बार प्रति वर्ष कर सको। और उसने वही किया जो प्रभु प्रभु यहोवा ने मूसा को आदेश दिया।” इस वाक्य में योम किप्पुर (प्रायश्चित्त का दिन) की प्रक्रिया और हर साल इसे करने की आवश्यकता का विवरण दिया गया है।

### व्याख्या और महत्व

1. ”यह तुम्हारे लिए एक अनन्त विधान होगा”: इसका मतलब है कि यह प्रक्रिया हमेशा के लिए पालन की जानी चाहिए जब तक कि इसकी आवश्यकता हो, यानी जब तक मंदिर या

पवित्र स्थान हो। इसका संकेत है कि यह एक दिव्य आदेश है, न कि मनुष्य द्वारा बनाई गई कोई रीति।

2. "ताकि तुम इस्माइलियों के लिए उनके सभी पापों का प्रायश्चित एक बार प्रति वर्ष कर सको": योम किप्पुर का उद्देश्य इस्माइलियों के सभी पापों का प्रायश्चित करना था, और यह प्रक्रिया साल में केवल एक बार, 7वें महीने के 10वें दिन होती थी। इसका मतलब है कि यह एक बार का वार्षिक समारोह था, और इसे एक से अधिक बार नहीं किया जा सकता था।
3. "और उसने वही किया जो प्रभु प्रभु यहोवा ने मूसा को आदेश दिया": यह वाक्य हर कारीवाही में सटीकता और आदेश की पालन करने की महत्ता को बताता है। हारून ने प्रभु के आदेश के अनुसार ही यह कार्य किया, और यह भी दिखाता है कि मूसा ने परमेश्वर के आदेश को सही तरीके से संदेश दिया था।

### **रब्बी व्याख्याएँ**

1. **आबरबानल:** वे कहते हैं कि योम किप्पुर पर शारीरिक सुखों से वंचित रहना इसलिये था ताकि आत्मा परिपूर्ण रूप से प्रायश्चित और प्रार्थना में संलग्न हो सके। यह भी कहा गया कि यह दिन सभी लोगों के पापों का प्रायश्चित करता है, और यह दूसरों के लिए जिम्मेदारी है।
2. **आदरेट एलियाह:** उनका कहना है कि यह प्रायश्चित अन्य त्योहारों से अलग है, क्योंकि इसे केवल साल में एक बार ही करना होता था।
3. **राशि:** राशि के अनुसार, "और उसने वही किया" वाक्य हारून की पूरी अनुपालन को सराहने के लिए है। हारून ने जो कार्य किया वह उसकी स्वार्थ की भावना से नहीं, बल्कि प्रभु प्रभु यहोवा के आदेश के अनुसार था।

4. **रंबान:** वे कहते हैं कि हारून ने पूरी श्रद्धा और विश्वास के साथ सभी आदेशों का पालन किया और कभी भी हज़ारों साल बाद की प्रथा से यह प्रक्रिया बदलने की कोशिश नहीं की।
5. **नज़रे अक्रिबा:** उनका मानना था कि योम किप्पुर की प्रक्रिया न केवल प्रायश्चित के लिए थी, बल्कि यह इसाइल के संपूर्ण समुदाय के एकता और पवित्रता को सुनिश्चित करती थी।

### आज के मसीही धर्म में इसका महत्व

आज के मसीही धर्म में योम किप्पुर की प्रक्रिया को उसी तरह से पालन नहीं किया जाता, क्योंकि मसीह के बलिदान को सभी पापों के प्रायश्चित के रूप में माना जाता है। मसीह के बलिदान के कारण, जो मसीही धर्म का केंद्र है, योम किप्पुर के अनिवार्य और नियमित प्रायश्चित की आवश्यकता नहीं रहती। मसीही विश्वास में, मसीह ने एक बार और हमेशा के लिए पापों का प्रायश्चित किया, जिससे प्रत्येक व्यक्ति को आत्मा की शुद्धि और परमेश्वर के साथ पुनः मेलजोल का मार्ग मिलता है।

फिर भी, कुछ मसीही जो यहूदी उत्पत्ति से आते हैं, या जो अपने विश्वास की यहूदी जड़ों में रुचि रखते हैं, वे योम किप्पुर के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ को सीखने और समझने में रुचि रखते हैं। वे इसे एक अध्ययन के रूप में देखते हैं कि कैसे इसाइलियों ने पापों के प्रायश्चित के लिए किया था और इसे मसीही विश्वास में समायोजित करते हैं।

**उदाहरण:** आज के मसीही चर्च में, कई लोग मानते हैं कि प्रभु यीशु मसीह के द्वारा किया गया बलिदान योम किप्पुर की प्रक्रिया को समाप्त कर देता है। वे मसीह के बलिदान को प्रायश्चित के एकमात्र स्रोत के रूप में मानते हैं और अपने पापों के लिए प्रायश्चित करने के बजाय मसीह में विश्वास करते हैं, जो उनके पापों को पूरी तरह से धो देता है।

**निष्कर्षः** योम किप्पुर की प्रक्रिया पुराने नियम के समय की एक अनिवार्य धार्मिक प्रथा थी, लेकिन आज के मसीही विश्वास में, प्रभु यीशु मसीह का बलिदान इस प्रक्रिया का नया अर्थ प्रदान करता है।

P 50 Nu.29:13 On the Sukkot, musaf, offerings

### **बाइबल पदः**

सूक्त (Tabernacles) के पर्व से संबंधित बलिदान का विवरण संख्या<sup>एँ</sup> 29:12-34 में मिलता है।

इसका मुख्य बाइबल पद इस प्रकार है:

**संख्या<sup>एँ</sup> 29:12-34 (NKJV):** "तुम सातवें महीने की पंद्रहवीं तिथि को प्रभु प्रभु यहोवा के लिए पवित्र मेला ठहराओ। तुम उस दिन कोई काम न करो, वह तुम्हारे लिए प्रभु प्रभु यहोवा का पर्व होगा। तुम सात दिन तक प्रभु प्रभु यहोवा के लिए पर्व मनाओगो। और तुम अर्पित करोगे प्रभु प्रभु यहोवा के लिए सुगंधित बली, अर्थात् तेरह बैल, दो मेढ़े, और चौदह मेमने, जो बिना किसी दोष के हों। प्रत्येक बैल के लिए तीन-तिनाई एफा आटे का, प्रत्येक मेढ़े के लिए दो-तिनाई एफा आटे का, और प्रत्येक मेमने के लिए एक-तिनाई एफा आटे का, तेल के साथ। इसके अतिरिक्त एक बकरा पापबलि के रूप में अर्पित किया जाएगा।"

यह विवरण प्रभु प्रभु यहोवा के लिए बलिदान की संख्या और प्रकार को निर्दिष्ट करता है, जो 7 दिनों तक मनाए जाने वाले सूक्त पर्व के दौरान अर्पित किए जाते हैं। पहले दिन 13 बैल, 2 मेढ़े,

और 14 मेमने अर्पित किए जाते हैं, और अगले दिनों में बैल की संख्या घटती जाती है, लेकिन मेढ़े और मेमनों की संख्या वही रहती है।

---

सूकुत का पर्व इस्राएलियों के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण था और यह मुख्यतः फसल की कटाई के बाद धन्यवाद देने के लिए मनाया जाता था। इस पर्व के दौरान, 7 दिनों तक विभिन्न बलिदान अर्पित किए जाते थे। पहले दिन 13 बैल, 2 मेढ़े, और 14 मेमने अर्पित किए जाते थे। इसके बाद हर दिन बैल की संख्या घटाकर 1 कम की जाती थी, लेकिन मेढ़े और मेमनों की संख्या स्थिर रहती थी। इस बलिदान में आठे का अर्पण और एक बकरा पापबलि के रूप में भी अर्पित किया जाता था।

**यह बलिदान क्यों किए जाते थे?**

1. **70 बैल:** बैलों की संख्या 70 थी, जो कि दुनिया के 70 जातियों का प्रतीक था। यह उन देशों और जातियों के लिए प्रायश्चित था जिन्हें इस्राएल से बाहर रखा गया था।
  2. **14 मेमने:** मेमनों की संख्या में वृद्धि यह दर्शाती है कि इस्राएल का आशीर्वाद, जो अंततः सभी मानवता के लिए था, व्यापक था। यह इस्राएल की आध्यात्मिक स्थिति का प्रतीक था।
  3. **पापबलि और आह्वान:** बकरा पापबलि के रूप में इस्राएल के पापों के लिए अर्पित किया जाता था। यह उस समय की तात्कालिक नैतिक और आध्यात्मिक शुद्धता का प्रतीक था।
- 

**रबियों की व्याख्याएँ और प्रतीकवादः**

1. **Bekhor Shor:** रब्बी बेकोर शोर का मानना था कि सूकृत के बलिदान बढ़ाने से त्योहार के अतिरिक्त आभार और खुशी का प्रतीक बनता है। यह इस्राएल के सामूहिक आशीर्वाद और समृद्धि के प्रतीक थे।
2. **Chizkuni:** रब्बी चिज़कुनि के अनुसार, सूकृत के बलिदान फसल के उत्सव के दौरान आभार और संतोष के प्रतीक थे। यह बलिदान न केवल इस्राएल के लिए, बल्कि दुनिया के 70 देशों के लिए भी थे।
3. **Da'at Zekenim:** रब्बी दात ज़ेकेनिम ने भी बताया कि ये बलिदान पापों की प्रायश्चित और विशेष रूप से उन 70 देशों के लिए थे, जो इस्राएल से दूर थे। साथ ही, ये बलिदान इस्राएल की आध्यात्मिक स्थिति का प्रतीक थे।
4. **Hadar Zekenim:** उनके अनुसार, यह बलिदान इस्राएल की शुद्धता और दुनिया के देशों के लिए प्रायश्चित का एक माध्यम थे। इसके अलावा, यह भविष्य में सभी मानवता के एकीकरण का प्रतीक थे।
5. **Rav Hirsch:** रब्बी रेव हिर्श ने बलिदान के दो समूहों की व्याख्या की थी: एक समूह इस्राएल के लिए था, जबकि दूसरा समूह अन्य मानवता के लिए था। उनका कहना था कि समय के साथ इस भेद को मिटा दिया जाएगा और सभी राष्ट्र एक साथ मिलकर प्रभु के सामने आ सकते हैं।

आज के मसीही चर्च में सूकुत का पर्व पारंपरिक रूप से मनाया नहीं जाता, लेकिन इसका अध्ययन और समझ निश्चित रूप से कुछ मसीही लोगों के लिए महत्वपूर्ण है, विशेष रूप से उन मसीहियों के लिए जिनका यहां पृष्ठभूमि है। कुछ चर्चों में सूकुत के बारे में शिक्षाएं दी जाती हैं, खासकर ऐतिहासिक संदर्भ और बाइबल के धर्मशास्त्र के तहत, ताकि मसीही अपने विश्वास को और गहरे तरीके से समझ सकें।

1. **धन्यवाद का प्रतीक:** सूकुत का पर्व मसीही विश्वासियों के लिए एक आभार का प्रतीक हो सकता है, जैसे इस्लामियों ने फसल की कटाई के बाद प्रभु का धन्यवाद किया था।  
मसीही अपने जीवन में मिलने वाले आशीर्वाद और समृद्धि के लिए धन्यवाद अर्पित कर सकते हैं।
2. **सृष्टि और आशीर्वाद:** सूकुत इस बात को याद दिलाता है कि प्रभु ने अपने लोगों को अपनी उपस्थिति में रहने के लिए एक छांव दी थी। मसीही इसे प्रभु के संरक्षण और आशीर्वाद के रूप में देख सकते हैं, जो उन्हें व्यक्तिगत रूप से और सामूहिक रूप से प्राप्त होते हैं।
3. **मसीही विश्वासियों के लिए अनुप्रयोग:** मसीही सूकुत के पर्व को यहां परंपरा के संदर्भ में समझ सकते हैं, विशेष रूप से उसकी भविष्यवाणी में मसीह के आने के बाद सभी जातियों और राष्ट्रों के एकत्र होने की अवधारणा के रूप में। यह मसीह के दूसरे आगमन और सभी राष्ट्रों के एकीकरण का संकेत हो सकता है।

इस प्रकार, सूकुत का पर्व मसीही चर्च में न केवल एक ऐतिहासिक उत्सव है, बल्कि यह उनकी आध्यात्मिक यात्रा और भविष्यवाणी के दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण हो सकता है।

P 51 Nu.29:36 On the Shemini Atzeret additional offering

## शेमिनी अचरेट (Shemini Atzeret) और इसके बलिदानों का अर्थ

शेमिनी अचरेट यहूदी त्योहारों का एक महत्वपूर्ण भाग है, जिसमें केवल एक बैल और एक मेड़े का बलिदान दिया जाता है। इसे इसाएल की एकता और प्रभु प्रभु यहोवा के प्रति उनकी भक्ति का प्रतीक माना जाता है। आइए इसे विस्तार से समझें:

### राशी (Rashi) का दृष्टिकोण

राशी कहते हैं कि यह बलिदान प्रभु प्रभु यहोवा के इसाएल के प्रति प्रेम और स्नेह को दर्शाता है। वह इस स्थिति की तुलना एक पिता से करते हैं, जो चाहता है कि उसके बच्चे उसके साथ और समय बिताएं।

- **मिद्राश तंचुमा (Midrash Tanchuma)** का उदाहरण: इसमें कहा गया है कि मेज़बान (host) अपने मेहमान को पहले दिन सबसे अच्छा भोजन देता है और फिर धीरे-धीरे साधारण भोजन पर आ जाता है। जैसे:

- पहले दिन: मोटा चिकन।
- दूसरे दिन: मछली।
- तीसरे दिन: मांस।
- चौथे दिन: दाल और सब्जियाँ।

यह दिखाता है कि उचित आचरण (proper conduct) में ऐसा करना सही है।

**उदाहरण:** यह सिद्धांत इस बात को इंगित करता है कि मेहमान की मेज़बान से करीबी बढ़ती है और वे उसे अपने परिवार का हिस्सा मानने लगते हैं। यह सिद्धांत सुक्कोत के दौरान बैलों की घटती संख्या के बलिदान से भी जुड़ा है।

---

## अन्य रब्बियों की व्याख्याएँ और दृष्टिकोण

### 1. बिरकत आशेर (Birkat Asher):

- वह इस बात पर सवाल उठाते हैं कि क्या भोजन की गुणवत्ता को कम करना वास्तव में "अच्छा आचरण" है।
- **रब्बी चाइम कामिल (Rabbi Chaim Kamil):** वे कहते हैं कि यह व्यवहार मेहमान को परिवार का सदस्य जैसा महसूस कराता है।
- **रब्बी शमूएल इमैनुएल (Rabbi Shmuel Emanuel):** यदि मेज़बान के पास सीमित साधन हैं, तो वे हर दिन अपनी क्षमता अनुसार सर्वश्रेष्ठ देते हैं।

### 2. उदाहरण: अगर किसी के पास सीमित धन है, तो वह पहले दिन अच्छी मिठाई और बाकी दिनों में सादा खाना परोस सकता है। यह दिखाता है कि वह अपनी क्षमता अनुसार मेहमान का सम्मान कर रहा है।

### 3. चिज़कुनी (Chizkuni):

- उनका मानना है कि शेमिनी अचरेट पर बलिदानों की संख्या कम करके प्रभु प्रभु यहोवा ने इसाएल से अपने प्रेम का प्रदर्शन किया।

### 4. उदाहरण: कम बलिदान से यह संकेत मिलता है कि प्रभु प्रभु यहोवा भौतिक बलिदानों

से अधिक रिश्ते और भक्ति को महत्व देते हैं।

#### 5. द'अत जेकेनिम (Da'at Zekenim):

- वे कहते हैं कि एक बैल और एक मेड़े का बलिदान इमाएल का सम्मान दर्शने के लिए था।
- शेमिनी अचरेट को सुक्कोत के तुरंत बाद मनाने का कारण भी समझाया गया है: बारिश के मौसम में तीर्थ यात्रा कठिन हो जाती।

#### 6. उदाहरण: त्योहार का समय इस तरह रखा गया ताकि प्रभु प्रभु यहोवा की भक्ति के

साथ-साथ लोगों की यात्रा और जीवन की कठिनाईयों का भी ध्यान रखा जाए।

#### 7. दिव्रे डेविड (Divrei David):

- मिद्राश में मछली को मांस से बेहतर बताने की बात पर चर्चा करते हुए कहते हैं कि यह जगह पर निर्भर करता है। कुछ स्थानों पर मछली मांस से सस्ती होती है।

#### 8. उदाहरण: अगर किसी स्थान पर मछली दुर्लभ है, तो वह अधिक मूल्यवान हो सकती है।

इस दृष्टिकोण से मिद्राश की व्याख्या समय और परिस्थिति पर आधारित है।

#### 9. सिफते चखामिम (Siftei Chakhamim):

- उनका कहना है कि एक बैल और एक मेड़ा इमाएल की एकता का प्रतीक है।
- सुक्कोत के दौरान बलिदानों की घटती संख्या यह सिखाती है कि मेज़बान को मेहमानों के साथ उचित व्यवहार करना चाहिए।

## आज के मसीही चर्च में इसका महत्व

मसीही चर्च शेमिनी अचरेट को विशिष्ट रूप से नहीं मनाते, लेकिन इसके पीछे के आध्यात्मिक संदेशों को मान्यता देते हैं:

### 1. प्रभु प्रभु यहोवा का प्रेमः

- यह त्योहार प्रभु प्रभु यहोवा और इस्राएल के बीच के निकट संबंध को दर्शाता है।  
मसीही इसे प्रभु यीशु मसीह और चर्च (कलीसिया) के बीच के रिश्ते के रूप में  
देखते हैं।
- उदाहरणः जैसा पिता अपने बच्चों को पास रखना चाहता है, प्रभु यीशु मसीह ने  
भी अपने अनुयायियों के लिए यही इच्छा व्यक्त की (यूहन्ना 17:24)।

### 2. एकता और बलिदानः

- एक बैल और मेढ़े का बलिदान इस्राएल की एकता का प्रतीक था। मसीही इस विचार को स्वीकार करते हैं कि सभी विश्वासियों को एकजुट होकर प्रभु प्रभु यहोवा की आराधना करनी चाहिए।
- उदाहरणः चर्च में, पवित्र भोज (Holy Communion) को सभी विश्वासियों की एकता के प्रतीक के रूप में देखा जाता है।

### 3. आध्यात्मिक बलिदानः

- चर्च भौतिक बलिदानों के बजाय आत्मिक बलिदानों पर जोर देता है। रोमियों 12:1 में कहा गया है, "अपने शरीरों को जीवित बलिदान के रूप में प्रस्तुत करो।"

### 4. समय और मौसम का ध्यानः

- यह सिद्धांत आज के चर्च के कार्यक्रमों में भी लागू होता है। **उदाहरणः चर्च त्योहारों या सभाओं का आयोजन करते समय मौसम और लोगों की सुविधा का ध्यान रखते हैं।**
- 

## निष्कर्ष

शेमिनी अचरेट के बलिदान न केवल प्रभु प्रभु यहोवा के प्रेम और इस्राएल की एकता को दर्शाते हैं, बल्कि यह भी सिखाते हैं कि जीवन में हर कार्य में उचित संतुलन और सम्मान होना चाहिए।

आज के मसीही चर्च इसे प्रभु यीशु मसीह के प्रेम और विश्वासियों की एकता के प्रतीक के रूप में देखते हैं, जो उनके जीवन और आराधना में व्यावहारिक रूप से प्रकट होता है।

P 52 Ex.23:14 On the three annual Festival pilgrimages to the Temple

**निर्गमन 23:14** में लिखा है, "साल में तीन बार तुम मेरे लिए पर्व मनाना।" इस आयत में "बार" के लिए प्रयुक्त हिन्दू शब्द *regalim* है, जो *regei* (पैर) से संबंधित है। आइए, इसे विस्तार से समझते हैं:

---

## हिंदी में *Regalim* की व्याख्या

### 1. तीर्थ यात्रा (Pilgrimage):

*Regalim* का अर्थ पैर या चलने से जोड़ा गया है। यह इंगित करता है कि इन पर्वों के दौरान यरूशलेम की यात्रा पैदल चलकर की जानी चाहिए।

- उदाहरणः यदि कोई व्यक्ति वृद्ध, अपाहिज, या अंधा है और चलने में असमर्थ है, तो वह तीर्थ यात्रा के लिए बाध्य नहीं है।
- यह नियम एक दयालुता दर्शाता है कि जो लोग शारीरिक रूप से अक्षम हैं, उन्हें इस यात्रा से मुक्त रखा गया है।

## 2. समय या अवसर (Times or Occasions):

कुछ टीकाकारों ने *regalim* को "समय" या "अवसर" के अर्थ में लिया है, जैसे हिब्रू शब्द *pe'amim*

- उदाहरणः तीन पर्व ऐसे विशेष समय हैं जब सभी को परमेश्वर की आराधना करनी चाहिए और उनके प्रति आभार प्रकट करना चाहिए।

## 3. पर्व (Festivals):

कई लोग *regalim* को पर्वों का ही पर्याय मानते हैं।

- उदाहरणः पास्का, शावोत और सुक्कोत तीन मुख्य पर्व हैं, जिन्हें परमेश्वर ने नियुक्त किया है।

## तीन पर्व (Three Festivals)

### 1. पास्का (Pesach):

मिस्र से बाहर निकलने की याद में मनाया जाता है। यह वसंत में आता है।

- उदाहरणः जैसे परमेश्वर ने मिस्र में पहले जन्मों को बचाया, वैसे ही पास्का परमेश्वर के उद्धार को दर्शाता है।

## 2. शावूत (Shavuot):

सीने पर्वत पर तोराह के दिए जाने की याद में। इसे फसल के समय (Harvest) में मनाया जाता है।

- उदाहरण: यह पर्व परमेश्वर की व्यवस्था (Law) को प्राप्त करने की खुशी को

व्यक्त करता है।

## 3. सुक्कोत (Sukkot):

यह फसल और इस्लाएलियों के अस्थायी निवासों (Booths) की याद में मनाया जाता है।

- उदाहरण: जैसे उन्होंने जंगल में तंबू में रहकर यात्रा की, वैसे यह पर्व उस समय की याद दिलाता है।

---

## तीर्थ यात्रा का उद्देश्य

### 1. आनंद और धन्यवाद:

परमेश्वर के आशीर्वादों के लिए आभार प्रकट करना।

- उदाहरण: लोग अपनी फसलों का पहला भाग अर्पण करते थे।

### 2. आध्यात्मिक संबंध:

मंदिर में जाकर लोग परमेश्वर के करीब महसूस करते थे।

- उदाहरण: यरूशलेम की यात्रा विश्वास को प्रबल करती थी।

### 3. राष्ट्रीय एकता:

**पूरे इमाएल के लोग एकत्रित होते थे।**

- **उदाहरण:** यह त्योहार लोगों को एकजुट करता था।

#### 4. परमेश्वर की कृपा की स्मृति:

**उनके आश्चर्यकर्मों को याद करना।**

- **उदाहरण:** मिस्र से मुक्ति और जंगल में उनकी देखभाल।
- 

## रबियों की टीकाएं

### 1. अल्लोखः

उन्होंने कहा कि ये पर्व परमेश्वर की दी गई कृपा के लिए आभार का अवसर हैं।

- **उदाहरण:** जैसे भूमि को सातवें वर्ष में आराम मिलता है, वैसे ही ये पर्व विश्राम और आभार का समय हैं।

### 2. चिजकुनीः

अन्य धर्मों में कठोर मांगें होती हैं, जबकि यहूदियों को केवल तीन पर्वों के लिए तीर्थ यात्रा की आवश्यकता है।

- **उदाहरण:** पास्का, शावोत, और सुक्कोत विभिन्न घटनाओं (उद्धार, व्यवस्था, और फसल) का जश्न मनाते हैं।

### 3. मालबिमः

उन्होंने *regalim* का अर्थ "चलने" और "समय" दोनों के रूप में बताया।

- उदाहरण: केवल वही लोग मंदिर में उपस्थित होते थे जो पैदल चल सकते थे।

#### 4. राब्बेनु बन्धा:

उन्होंने कहा कि *regalim* इस बात को स्पष्ट करता है कि यात्रा केवल विशेष समय पर ही ही की जानी चाहिए।

- उदाहरण: व्यक्ति अपनी सुविधा के अनुसार नहीं, बल्कि पर्व के समय ही जा सकता था।

#### 5. शादाल:

उन्होंने *regalim* को *pe'amim* (बार) से जोड़ा और दोनों को *regei* (पैर) से संबंधित बताया।

---

### मसीही चर्च में आज का महत्व

मसीही परंपरा में तीर्थ यात्रा और पर्वों का एक अलग अर्थ और परिप्रेक्ष्य है।

#### 1. तीर्थ यात्रा:

ईसाई धर्म में यरूशलाम, रोम, और अन्य पवित्र स्थलों की यात्रा की परंपरा है।

- उदाहरण: यरूशलाम में क्रूस का मार्ग (Via Dolorosa) यात्रा का मुख्य हिस्सा है।

#### 2. पर्व:

मुख्य पर्व जैसे क्रिसमस और ईस्टर।

- उदाहरण: ईस्टर पुनरुत्थान की खुशी और मसीह की विजय को दर्शाता है।

### 3. सांस्कृतिक और व्यक्तिगत दृष्टिकोणः

ईसाई धर्म के विभिन्न संप्रदायों में पर्वों और तीर्थ यात्रा की महत्ता भिन्न होती है।

---

### आधुनिक मसीही चर्च में संबंधित अवधारणा

मसीही पर्वों में एकता, भक्ति, और आनंद की भावना है।

- उदाहरण: क्रिसमस में प्रभु यीशु के जन्म का उत्सव मनाने के साथ-साथ, परिवार एकत्र होते हैं और विशेष आराधना होती है।

इस प्रकार, *regalim* का अर्थ यहूदियों के तीर्थ यात्रा और त्योहारों में गहरा आध्यात्मिक और सांस्कृतिक अर्थ रखता है, जो आज भी उनकी परंपराओं में जीवित है और मसीही चर्च में भी अलग तरीके से देखा जाता है।

P 53 Ex.34:23; On appearing before YHVH during the Festivals

**निर्गमन 34:23 में लिखा है:**

"वर्ष में तीन बार तुम्हारे सब पुरुष प्रभु प्रभु यहोवा, इमाएल के परमेश्वर के सामने उपस्थित होंगे।"

इसमें यह आज्ञा दी गई है कि इमाएल के पुरुष वर्ष में तीन बार पर्वों (पास्का, शावूत, और सुक्कोत) के दौरान प्रभु प्रभु यहोवा के सामने उपस्थित हों। आइए इसे विस्तार से समझते हैं:

## रब्बियों की व्याख्याएँ (Rabbinic Interpretations)

### 1. कौन बाध्य है?

- “सब पुरुष” (कुल पुरुष):

- रब्बियों का मानना है कि यह वाक्य सभी इस्राएली पुरुषों के लिए है, न कि किसी व्यक्ति की “संपत्ति” के लिए। इसमें बच्चे और वयस्क पुरुष आते हैं, लेकिन स्त्रियाँ इस आज्ञा से मुक्त हैं।
- शारीरिक विकलांग लोग (जैसे अंधे या लंगड़े) भी इस आदेश से मुक्त माने गए हैं।

### 2. तीर्थयात्रा का उद्देश्य (Purpose of the Pilgrimage)

तीर्थयात्रा का मुख्य उद्देश्य प्रभु प्रभु यहोवा के सामने उपस्थित होना था। हर पर्व की अपनी विशिष्ट भूमिका है:

- पास्का (Passover):

इस्राएली “मालिक” (Master) के सामने आते हैं, जिसने उन्हें मिस्र की दासता से छुड़ाया।

- शावूत (Shavuot):

इस पर्व में वे परमेश्वर के सामने आते हैं जो सभी चीजों का स्रोत है और जिसने सीनै पर्वत पर अपनी वाणी प्रकट की।

- सुक्कोत (Sukkot):

इसमें वे “इस्राएल के परमेश्वर” के सामने आते हैं, जिसने उन्हें जंगल में संरक्षण दिया।

### 3. “देखने” का संदर्भ (The Language of Seeing)

- इस वचन में "האר" (देखना) शब्द का प्रयोग किया गया है, जिसे "यिर'एह" (देखेगा) और "ये'रा'एह" (दिखाई देगा) के रूप में पढ़ा जाता है।
- इसका अर्थ यह है कि जो व्यक्ति परमेश्वर को देखने आता है, उसे परमेश्वर के द्वारा भी देखा जाता है।
- यह भी कहा गया है कि जो व्यक्ति स्वयं "देखने" में असमर्थ है (जैसे अंधा), वह इस आज्ञा से मुक्त है।

#### 4. परमेश्वर के नामों का महत्व (Names of God)

- वचन में परमेश्वर को "मालिक" (Master), "प्रभु प्रभु यहोवा" और "इस्राएल का परमेश्वर" कहा गया है।
  - "मालिक": प्राकृतिक जीवन की व्यवस्थाओं को नियंत्रित करने वाले परमेश्वर के लिए।
  - "इस्राएल का परमेश्वर": इस्राएल की आत्मिक आवश्यकताओं का ध्यान रखने वाले परमेश्वर के लिए।
  - "इस्राएल का परमेश्वर" का प्रयोग सोने के बछड़े की घटना के बाद इस्राएल और परमेश्वर के विशेष संबंध को दर्शाने के लिए किया गया है।

#### 5. तीर्थयात्रा के दौरान सुरक्षा (Protection During Pilgrimage)

- एक चिंता थी कि जब लोग तीर्थयात्रा पर जाएंगे, तो उनकी भूमि पर कोई हमला कर सकता है।
- परमेश्वर ने आश्वासन दिया कि तीर्थयात्रा के समय उनकी भूमि पर कोई कब्जा नहीं करेगा।

## 6. अन्य संदर्भों से तुलना (Comparison to Other Passages)

- निर्गमन 23:17 में लिखा है: "एल पने" (प्रभु के सामने)।
  - लेकिन निर्गमन 34:23 में "एत पने" लिखा गया है, जो परमेश्वर के और भी निकटता और विशेष संबंध को दिखाता है।
- 

## रब्बियों की विशिष्ट व्याख्याएँ (Examples of Rabbinic Commentary)

### 1. राशी (Rashi):

- "सब पुरुष" का अर्थ है इस्राएल के सभी पुरुष।
- राशी बताते हैं कि वचनों को दोहराने का उद्देश्य उनकी आज्ञाओं की गंभीरता को समझाना है।

### 2. इब्राइज़ा (Ibn Ezra):

- उनका मानना है कि "इस्राएल के परमेश्वर" का उल्लेख सोने के बछड़े की घटना के बाद इस्राएल और परमेश्वर के संबंध को फिर से जोड़ने के लिए है।

### 3. रब्बेइनु बह्या (Rabbeinu Bahya):

- उन्होंने कहा कि स्त्रियाँ और शारीरिक रूप से अक्षम लोग इसलिए मुक्त हैं क्योंकि "महिमा के बादल" (Shekhinah) में उनकी छवि दिखाना उपयुक्त नहीं है।

### 4. हआमेक दावर (Haamek Davar):

- वे बताते हैं कि ”एत पने“ का प्रयोग इस बात को दर्शाता है कि पर्वों के समय लोग परमेश्वर के साथ अधिक निकटता का अनुभव करते हैं।
- 

## मसीही चर्च में इसका महत्व (Scope in Christianity Today)

- तीर्थयात्रा का पालन:**

आधुनिक मसीही धर्म में इस्साएली तीर्थयात्रा की आवश्यकता नहीं है।

- आज, मसीही विश्वास में उद्धार का मार्ग प्रभु यीशु मसीह के माध्यम से है।
- तीर्थयात्रा के बजाय, व्यक्तिगत विश्वास और आराधना को प्राथमिकता दी जाती है।

- आध्यात्मिक तीर्थयात्रा:**

कुछ मसीही लोग व्यक्तिगत भक्ति के लिए यरूशलेम या अन्य धार्मिक स्थलों की यात्रा करते हैं।

लेकिन इन तीर्थयात्राओं को उद्धार का हिस्सा नहीं माना जाता।

- ”परमेश्वर के सामने उपस्थित होना“:**

मसीही विश्वास में, हर व्यक्ति प्रभु यीशु मसीह के माध्यम से परमेश्वर के सामने उपस्थित हो सकता है। इसलिए, भौगोलिक यात्रा आवश्यक नहीं है।

---

## उदाहरण और आज की स्थिति

- मसीही चर्च में आराधना:**

रविवार की सामूहिक आराधना को एक प्रकार की "उपस्थिति" माना जा सकता है।

- चर्च के पर्वों (ईस्टर और क्रिसमस) को मसीही तीर्थयात्रा के समान एक अवसर माना जाता है।
- **रब्बियों की सीख से जुड़ाव:**

मसीही धर्म में भी यह धारणा बनी रहती है कि परमेश्वर का दर्शन प्राप्त करना और उनके साथ संबंध स्थापित करना मुख्य उद्देश्य है।

इस प्रकार, यह वचन हमें यह सिखाता है कि तीर्थयात्रा केवल यात्रा नहीं है, बल्कि परमेश्वर के साथ एक संबंध है, जो आज भी आराधना और भक्ति के माध्यम से जीवित रखा जा सकता है।

P 54 De.16:14 On rejoicing on the Festivals

### **त्योहारों पर आनन्द मनाने का आदेश**

पवित्र शास्त्र में लिखा है, "तू अपने पर्वों पर आनन्द करेगा।" यह आदेश सभी यहांदी त्योहारों पर लागू होता है, लेकिन विशेष रूप से सुक्कोत (झोपड़ी पर्व) से जुड़ा हुआ है। रब्बियों ने इस आदेश का गहराई से अध्ययन किया और विभिन्न त्योहारों के संदर्भ में इसे समझाया है। आइए इसे विस्तार से समझते हैं।

### **आनन्द मनाने के कारण**

#### **1. फसल का उत्सव:**

सुक्कोत पर सारी फसलें (खेत और बगीचों की) एकत्रित की जाती हैं। यह समय परमेश्वर द्वारा दी गई भरपूरी और आशीर्वाद का आनन्द मनाने का होता है।

- **पसह (Passover):** यह पहला पर्व है, लेकिन इसमें आनन्द का वर्णन नहीं है क्योंकि यह फसल के निर्णय और पुराने अनाज के समाप्त होने का समय है।
- **शावुत (Shavuot):** अनाज की फसल कटने पर यह उत्सव मनाया जाता है, और इसमें आनन्द का वर्णन केवल एक बार मिलता है।
- **सुक्कोत (Sukkot):** इस पर्व पर आनन्द का कई बार उल्लेख किया गया है क्योंकि यह सभी फसलों के एकत्रित होने और परमेश्वर के आशीर्वाद के पूर्ण अनुभव का समय है।

## 2. परमेश्वर के साथ जुड़ाव:

यह आनन्द केवल भौतिक वस्तुओं के लिए नहीं है, बल्कि परमेश्वर के साथ आध्यात्मिक रूप से जुड़ने और उनके आदेश को मानने का भी है।

## 3. राष्ट्रीय एकता:

यह समय पूरे समुदाय के साथ मिलकर आनन्द मनाने का है। इसका उद्देश्य व्यक्तिगत खुशी को सामूहिक आनंद और सेवा में बदलना है।

## त्योहारों में भिन्नता

### ● फसह (Passover):

- **फसह में "आनन्द" का कोई स्पष्ट उल्लेख नहीं है।** यह न्याय और फसल के निर्णय का समय है।

- कुछ रब्बियों ने इसे "दयालुता और न्याय" का प्रतीक बताया, क्योंकि मिस्र से उद्धार दयालुता का कार्य था लेकिन फिरैन पर न्याय हुआ।
- **शावुत (Shavuot):**
  - इसमें आनन्द का एक बार उल्लेख है क्योंकि यह अनाज की फसल का समय है।
- **सुक्कोत (Sukkot):**
  - इसमें आनन्द का तीन बार उल्लेख है क्योंकि यह सभी फसलों के एकत्रित होने और परमेश्वर के न्याय और आशीर्वाद का परिणाम है।

---

## रब्बियों की व्याख्याएँ

### 1. नचाल केडुमिम (Nachal Kedumim):

उन्होंने बताया कि त्योहार का आनन्द केवल व्यक्तिगत सुख के लिए नहीं, बल्कि परमेश्वर के सम्मान और आज्ञा के पालन के लिए होना चाहिए।

### 2. मलबिम (Malbim):

मलबिम ने कहा कि "आनन्द" हर प्रकार की खुशी को शामिल करता है और यह विशेष रूप से त्योहार पर लाए जाने वाले बलिदान (हगीगा) से जुड़ा है।

### 3. रब्बेनु बाह्या (Rabbeinu Bahya):

- उन्होंने कहा कि फसह में "आशीर्वाद" का उल्लेख नहीं है, क्योंकि वह फसल के निर्णय का समय है।

- उन्होंने यह भी बताया कि त्योहार के आनन्द को किसी और खुशी (जैसे विवाह) के साथ नहीं मिलाना चाहिए।

#### 4. रव हिर्श (Rav Hirsch):

- उन्होंने व्यक्तिगत आनन्द को सामूहिक अनुभव से जोड़ा और कहा कि सच्ची खुशी तभी मिलती है जब व्यक्ति अपने समुदाय के साथ जुड़ा हो।
- उनका मानना था कि त्योहार का आनन्द मंदिर तक सीमित न होकर घर तक भी पहुँचना चाहिए।

#### 5. तोलेदोत यित्तचाक (Toledot Yitzchak):

उन्होंने कहा कि फसह न्याय का दिन है, इसलिए उसमें आनन्द नहीं मनाना चाहिए।  
सुककोत कई निर्णयों और न्यायों से गुजरने के बाद का पर्व है, इसलिए इसमें पूर्ण आनन्द है।

#### 6. तोरा तेमीमा (Torah Temimah):

- उन्होंने कहा कि बीमार व्यक्ति त्योहार के आनन्द से छूटे हुए हैं।
- आनन्द का संदर्भ शांति के बलिदान से है।
- त्योहार के मध्य दिनों में विवाह नहीं करना चाहिए।
- पुरुषों के लिए आनंद का साधन दाखमधु (wine) है, और महिलाओं के लिए सुंदर वस्त्र।

- **आनन्द साझा करना:**

त्योहार का आनन्द परिवार, लेवी, अनाथ, विधवा और अजनबियों के साथ बाँटने का आदेश दिया गया है।

- **बलिदान:**

पुराने समय में आनन्द बलिदानों से जुड़ा था।

- **शोक का न होना:**

त्योहार पर शोक मनाना प्रतिबंधित है।

- **विवाह का निषेध:**

त्योहार के मध्य दिनों में विवाह नहीं करना चाहिए।

## आज के मसीही चर्च में इसका महत्व

मसीही परंपरा में यहूदियों के त्योहारों को पालन नहीं किया जाता क्योंकि वे "अनुग्रह" (grace)

पर अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं।

### **मसीह का बलिदान:**

प्रभु यीशु मसीह का बलिदान परम आनन्द और उद्धार का स्रोत माना जाता है।

### **आध्यात्मिक खुशी:**

त्योहार के स्थान पर, हर दिन को परमेश्वर के साथ आनन्दित रहने का समय माना जाता

है।

### **एकता:**

मसीही चर्च में सामूहिक आराधना और मिलन पर ध्यान दिया जाता है।

4. **उत्सवः**

**क्रिसमस और ईस्टर जैसे उत्सव मसीही आनन्द के प्रतीक हैं, लेकिन इनका आधार यहूदी त्योहारों से अलग है।**

P 55 Ex.12:6 On the 14th of Nisan slaughtering the Pesach lamb

### **बाइबल पदः निर्गमन 12:6**

**"और उस महीने के चौदहवें दिन तक उसे रखा करो; तब इस्राएल की सारी मण्डली उसको सांझा के समय वध करे।"**

---

### **हिंदी में समझाव**

**1. "उस महीने के चौदहवें दिन तक उसे रखा करो"**

यहाँ पर **निर्गमन 12:6** में परमेश्वर इस्राएलियों को निर्देश दे रहे हैं कि वे एक निर्दोष और बिना दोष का मेप्रा (लैम्ब) चुनें और उसे चार दिनों तक जाँच करें।

- चार दिन का निरीक्षण काल (Examination Period):**

इसका अर्थ यह है कि मेप्रा को 10 तारीख से 14 तारीख तक परखा जाएगा, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि उसमें कोई दोष न हो।

- रब्बियों की व्याख्या:**

- राशी:** उन्होंने कहा कि "लमिश्मेरत" (גָרָאַשְׁמָרָת) का अर्थ है कि मेप्रा को

**चार दिनों तक निरीक्षण में रखा जाए।**

2. यह केवल मिस की पहली फसह (Passover) के लिए अनिवार्य था। बाद

**की पीढ़ियों में यह नियम नहीं था।**

- **उद्देश्य:**

1. मेम्रा की शुद्धता को सुनिश्चित करना।

2. इस्माएलियों को मूर्तिपूजा से दूर करना।

3. उन पुरुषों को समय देना जो खतना (circumcision) करना चाहते थे,

**ताकि वे भी फसह में भाग ले सकें।**

4. मिस्रवासियों को चिढ़ाना, क्योंकि वे मेम्रा को अपना देवता मानते थे।

5. इस्माएलियों को इस आदेश का पालन करने के लिए समय देना ताकि

**यह उनकी आस्था को मज़बूत करे।**

2. "तब इस्माएल की सारी मण्डली उसको सांझ के समय वध करे"

- **सामूहिक वध (Communal Slaughter):**

"सारी मण्डली" का अर्थ है कि पूरा समुदाय इस काम में भाग लेगा।

- **रब्बी क्या कहते हैं?**

- **तीन समूहों में वध:**

"सारी मण्डली" के तीन शब्दों - "काहल" (कांग्रेस), "एदा" (समूह), और

**"इस्माएल"** का मतलब है कि इसे तीन समूहों में बांटा गया।

■ **प्रत्येक समूह में कम से कम 10 व्यक्ति थे।**

- **एजेंसी का सिद्धांत:**

यदि समूह का एक सदस्य मेप्रा वध करता है, तो माना जाएगा कि समूह  
के सभी लोग उसमें भाग ले रहे हैं।

- इसका आधार यहादी कानून का "प्रतिनिधि = व्यक्ति" सिद्धांत है।
  - जैसे विवाह या तलाक में कोई व्यक्ति एजेंट नियुक्त कर सकता है।
- 

### 3. "सांझ के समय" (Between the Two Evenings)

"सांझ के समय" के बारे में अलग-अलग व्याख्याएँ हैं:

- राशीः

दो सांझों का अर्थ है दो समयः

- दोपहर के बाद का समय (जब सूरज ढलने लगता है)।
- सूरज ढलने और रात होने के बीच का समय।

- इन्ह एज़रा:

उनका कहना है कि यह सूर्यास्त और उसके बाद बादलों से प्रकाश समाप्त होने के बीच का समय है।

- रामबानः

उन्होंने इसे दिन की दो परछाइयों (हल्की और गहरी रात) के बीच का समय माना।

- ओनकलोसः

उन्होंने इसे "दो सूर्यों के बीच" कहा, जिसका अर्थ है दोपहर और रात के बीच।

- **हलाखिक महत्व (Jewish Law Significance):**

- वध का सही समय "सांझा के समय" होना चाहिए।
  - दोपहर के पहले वध करना अमान्य माना जाएगा।
  - सामान्य रूप से यह समय दोपहर 3 बजे से सूरज ढलने तक माना जाता है।
- 

## आधुनिक मसीही चर्च में महत्व

मसीही परंपरा में इस पद को प्रभु यीशु मसीह के बलिदान के प्रतीक के रूप में देखा जाता है।

- **फसह का मेम्रा और मसीह:**

- फसह का मेम्रा, जिसे बिना दोष का होना चाहिए, प्रभु यीशु मसीह का प्रतीक है, जिन्हें पापरहित माना जाता है।
- मेम्रा का खून इस्लाएलियों को मृत्यु-दूत से बचाने का कारण बना। यह प्रभु यीशु के बलिदान के द्वारा पापों से उद्धार का संकेत देता है।
- मसीह को भी "सांझा के समय" क्रूस पर चढ़ाया गया था, जो "दो सांझों" के समय का प्रतीक है।

- **सामूहिक बलिदान और मसीही समुदाय:**

- "सारी मण्डली" के सामूहिक वध का अर्थ यह भी है कि मसीह का बलिदान पूरे मानवजाति के लिए है।

- आज के चर्चों में, फसह के समय विशेष आराधना सेवाएँ होती हैं, जहाँ मसीह के बलिदान को याद किया जाता है।
- प्रेरणा:

- यह पद हमें यह सिखाता है कि हमें भी अपने जीवन से "पाप के दोषों" को हटाना चाहिए।
  - मसीही दृष्टिकोण में, प्रभु यीशु के बलिदान के द्वारा प्रत्येक विश्वासी पवित्र और उद्धार के योग्य बन सकता है।
- 

## उदाहरण

1. जैसे फसह का मेम्रा एक निर्दोष बलिदान था, उसी तरह मसीह ने निर्दोष रहते हुए हमारे लिए अपने प्राण दिए।
2. जिस प्रकार मेम्रा का खून इसाएलियों के घरों के द्वार पर लगाया गया, वैसे ही मसीही विश्वास में, मसीह के खून का प्रतीक उद्धार का कारण बनता है।

P 56 Ex.12:8 On eating the roasted Pesach lamb night of Nisan 15

### निर्देशित पद: निर्गमन 12:8 (Exodus 12:8)

"और उस रात उसका मांस आग में भूनकर खाएं, और अखमीरी रोटी और कड़वे साग के साथ खाएं।"

### निर्गमन 12:8 का हिंदी में अर्थ और विवरण:

यह पद ईश्वर (प्रभु प्रभु यहोवा) द्वारा दिए गए निर्देशों को दर्शाता है, जो इसाएलियों को मिस्र से बाहर निकलने से पहले उनके पहले फसह (Passover) उत्सव के लिए दिए गए थे।

### मुख्य तत्वः

#### 1. भुना हुआ मांसः

- फसह का मेमना आग पर भूनकर खाना था। उसे उबालने की मनाही थी। यह भुना हुआ मांस संपूर्णता और स्वतंत्रता का प्रतीक है।
- यह निर्देश देता है कि केवल हड्डियों के ऊपर का मांस खाना है, हड्डियों के अंदर के मांस को नहीं।

#### 2. अखमीरी रोटी (मट्ज़ा):

- अखमीरी रोटी, यानी ऐसी रोटी जो फुली न हो। इसे गेहूं, जौ, स्पेल्ट, राई, या जई जैसे पांच अनाजों से बनाया जाता है।
- यह उस जल्दबाजी का प्रतीक है जिसमें इसाएली मिस्र से निकले थे।

#### 3. कड़वा साग (मरोर):

- कड़वे साग मिस्र की गुलामी की कठोरता और कष्टों की याद दिलाते हैं।

### रब्बियों की व्याख्याएं और उनका अर्थः

#### 1. राशी (Rashi):

- मांस का उल्लेख केवल हड्डियों के ऊपर के मांस को खाने का आदेश देता है, और

हड्डियों व नसों को नहीं।

- कड़वे साग किसी भी कड़वी जड़ी-बूटी से हो सकते हैं, जैसे- मूली, सहिजन आदि।

## 2. इब्र एज़रा (Ibn Ezra):

- कड़वे साग मिस्र में गुलामी के कड़वे अनुभवों की स्मृति हैं।

## 3. चिज़कुनी (Chizkuni):

- मेमने को आग पर भूनने से उसकी सुगंध मिस्रवासियों को उनके देवता (मेमने को मिस्रवासी पवित्र मानते थे) की असहायता दिखाती थी।
- कड़वा साग गुलामी की कठिनाईयों को याद दिलाने के लिए है।

## 4. बेरखोर शोर (Bekhor Shor):

- मट्ज़ा, कड़वे साग, और भुने हुए मेमने को एक साथ खाने का अर्थ है—गुलामी, स्वतंत्रता, और उद्धार का अनुभव।

## 5. रामबान (Ramban):

- "साथ" शब्द ('ל) यह संकेत करता है कि फसह का बलिदान, अखमीरी रोटी और कड़वे साग के साथ खाना है, लेकिन उन्हें एक ही समय में खाना आवश्यक नहीं।

## 6. राब्बेनु बह्या (Rabbeinu Bahya):

- उबालने की मनाही का कारण था कि यह मिस्रियों की पद्धति थी।
- आग पर भूनने का प्रतीक प्रभु प्रभु यहोवा द्वारा अब्राहम को निम्रोद की अग्नि से

**बचाने की स्मृति है।**

## 7. मल्बिम (Malbim):

- आग पर भूनने का अर्थ है इसे सीधे आग पर पकाना, न कि किसी ओवन में या लकड़ी की छड़ पर।

## 8. पर्देस योसेफ (Pardes Yosef):

- मट्ज़ा अनिवार्य है, चाहे फसह का बलिदान हो या न हो।
  - कड़वे साग केवल तभी आवश्यक हैं जब फसह का बलिदान हो।
- 

## आज के मसीही चर्च में इसका क्या महत्व है?

### 1. मसीही सिद्धांत में फसह का प्रतीक:

- फसह का मेमना:

मसीही मान्यता के अनुसार, फसह का मेमना प्रभु यीशु मसीह का प्रतीक है। मसीह को “ईश्वर का मेमना” कहा जाता है, जिसने संसार के पापों को उठा लिया।  
(यूहन्ना 1:29 - ”देखो, यह परमेश्वर का मेम्प्रा है, जो संसार के पाप उठा ले जाता है।”)

- अखमीरी रोटी:

प्रभु यीशु ने आखिरी भोज (Last Supper) में अखमीरी रोटी का उपयोग किया। यह मसीह के शुद्ध और पापरहित जीवन का प्रतीक है।  
(1 कुरिन्थियों 5:7-8 - ”इसलिए आओ, हम उत्सव मनाएं, न पुरानी खमीर से, न बुराई और दुष्टता की खमीर से, बल्कि सत्य और सच्चाई की अखमीरी रोटी से।”)

- **कड़वा सागः**

**यह प्रभु यीशु मसीह के कष्ट और बलिदान की स्मृति हो सकता है।**

## 2. अंतिम भोज और फसह का संबंधः

- **प्रभु यीशु मसीह ने अपने क्रूस पर चढ़ने से पहले अपने शिष्यों के साथ फसह मनाया।**

**यह अंतिम भोज बाद में मसीही विश्वास में पवित्र बियारी (Holy Communion) का आधार बन गया।**

- **मसीही चर्च फसह को एक नई व्यवस्था के रूप में देखता है, जो प्रभु यीशु मसीह के बलिदान द्वारा पूर्ण हुआ।**

## 3. समकालीन मसीही परिप्रेक्ष्यः

- अधिकांश मसीही फसह को यहूदी परंपरा का हिस्सा मानते हैं और इसे नहीं मनाते।
- हालांकि, कुछ मसीही समूह, विशेषकर मसीही यहूदियों और मेसियानिक यहूदियों में, फसह के भोज को प्रभु यीशु मसीह की स्मृति में मनाते हैं।

## उदाहरणः

- फसह के दौरान "अखमीरी रोटी" का उपयोग चर्चों में सामूहिक भोज के लिए किया जाता है।
- कड़वे साग यह याद दिलाने के लिए उपयोग किए जाते हैं कि कैसे प्रभु यीशु ने हमारे लिए दुख सहा।

## सारांशः

**निर्गमन 12:8 फसह के भोजन की परंपरा का वर्णन करता है, जिसमें प्रभु प्रभु यहोवा के निर्देशों के अनुसार मांस, अखमीरी रोटी, और कड़वे साग को शामिल किया गया। यह यहूदी परंपरा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और मसीही धर्म में भी इसे प्रभु यीशु मसीह के बलिदान के प्रतीक के रूप में देखा जाता है।**

P 57 Nu.9:11 On slaughtering the Pesach Sheini, Iyyar 14, offering

## बाइबल पदः

### गिनती 9:11

**"दूसरे महीने के चौदहवें दिन सांझा के समय उसे मनाना चाहिए। वे उसे बिना खमीर की रोटी और कड़वे साग के साथ खाएँ।"**

## हिंदी में समझाना:

### दूसरा फसह (Pesach Sheni)

**गिनती 9:11 का संदर्भ "दूसरे फसह" के बारे में है। यह प्रावधान उन लोगों के लिए था जो "पहले फसह" (पहले महीने में, यानी निसान महीने के 14वें दिन) पर अशुद्धता (जैसे किसी मृत शरीर के संपर्क में आने) या यात्रा के कारण इसे मना नहीं सके थे। ईश्वर ने उनके लिए दूसरा अवसर दिया ताकि वे अपनी उपासना में भाग ले सकें।**

## दूसरे फसह के विशेष निर्देश

1. **समय:** दूसरे फसह को दूसरे महीने (इयार) के 14वें दिन सांझ के समय मनाना होता है।
2. **खाद्य सामग्री:** इसके तहत फसह बलि के मेमने को बिना खमीर की रोटी (मट्ज़ाह) और कड़वे साग (मरोर) के साथ खाना होता है।
3. **लचीलेपन का संदेश:** यह प्रावधान दिखाता है कि परमेश्वर अपने लोगों के प्रति दयालु और लचीले हैं, जो अपने लोगों को उनके कठिन परिस्थितियों में भी अवसर प्रदान करते हैं।

## विशेष ध्यान

- इस दौरान खमीर वाली रोटी (leavened bread) घर में हो सकती है, जो पहले फसह पर नहीं होती थी। यह नियम पहले और दूसरे फसह को अलग करता है।
- 

## रब्बियों की व्याख्या:

### 1. मालबिम (Malbim)

मालबिम ने दूसरे फसह में दो प्रकार की मिल्क्वोत (आज्ञाएँ) को विभाजित किया है:

- **मिल्क्वोत शे'ब'गुफ (Mitzvot she'b'guf):** यह बलि के शरीर से संबंधित आज्ञाएँ हैं, जैसे मेमना एक वर्ष का होना चाहिए, उसे भुना जाना चाहिए, और उसकी हड्डियाँ नहीं तोड़ी जानी चाहिए।
- **मिल्क्वोत शे'अल गुफ (Mitzvot she'al gufo):** यह व्यक्ति से संबंधित हैं, जैसे मेमने को मट्ज़ाह और मरोर के साथ खाना।

गिनती 9:11 का "बिना खमीर की रोटी और कड़वे साग" वाली आज्ञा बलि के शरीर

से नहीं, बल्कि खाने वाले से संबंधित है।

## 2. रव हिर्श (Rav Hirsch)

उन्होंने बताया कि दूसरे फसह में बलि से संबंधित आज्ञाएँ तो मानी जाती हैं, लेकिन अन्य नियम,

जैसे घर में खमीर रखना मना होना, लागू नहीं होते।

- उदाहरण: पहले फसह में घर से खमीर को पूरी तरह हटाना होता था, लेकिन दूसरे फसह में यह आवश्यकता नहीं है।

## 3. तालमुद (Pesachim)

- मट्ज़ाह और मरोर एक साथ या अलग?**
  - हिलेल: मट्ज़ाह और मरोर को एक साथ खाने की आवश्यकता है।
  - अन्य रब्बी: इन्हें अलग-अलग खाया जा सकता है।
- मरोर का महत्व:** मरोर (कड़वे साग) को खाना केवल मंदिर में बलि के समय आवश्यक था। लेकिन मट्ज़ाह खाना आज भी आवश्यक है।

## 4. ज़ोहर (Zohar)

ज़ोहर ने लिखा कि "मट्ज़ाह" शब्द को वाव अक्षर के साथ लिखा गया है, जो इसकी पूर्णता और महत्व को दर्शाता है। यह इस बात का प्रतीक है कि यह आज्ञा आध्यात्मिक गहराई से जुड़ी है।

**मसीही चर्च में आज इसका महत्व:**

आज के मसीही चर्चों में दूसरे फसह का सीधा पालन नहीं किया जाता क्योंकि मसीही धर्म मानता है कि प्रभु यीशु मसीह स्वयं फसह का मेमना हैं।

- **प्रभु यीशु का बलिदान:** उनके बलिदान ने फसह की सभी बलियों को पूर्ण कर दिया।
  - **परमेश्वर का लचीला स्वभाव:** दूसरा फसह मसीहियों को यह संदेश देता है कि ईश्वर अवसर प्रदान करने वाले, दयालु और क्षमाशील हैं।
  - **आत्मिक दृष्टिकोण:**
    - आज यह मसीही विश्वास का हिस्सा है कि कोई भी व्यक्ति यदि चूक जाए, तो ईश्वर उसे आत्मिक रूप से फिर से जुड़ने का अवसर देते हैं।
    - जैसे, बपतिस्मा लेने या प्रार्थना जीवन में सुधार के लिए।
- 

### **निष्कर्ष:**

दूसरा फसह परमेश्वर की दया और प्रावधान का प्रतीक है। रब्बियों ने इसके नियमों और प्रतीकों की गहराई से व्याख्या की है, जबकि आज के मसीही इसे ईश्वर के प्रेम और अवसर के संदर्भ में देखते हैं। यह प्रावधान हमें यह सिखाता है कि हम जीवन की बाधाओं के बावजूद ईश्वर के प्रति अपनी भक्ति को निभा सकते हैं।

P 58 Nu.9:11; On eating the Pesach Sheini lamb with Matzah and Maror

### **बाइबल पद:**

**गिनती 9:10-12** (Numbers 9:10-12)

“इस्राएलियों से कहो, ‘यदि कोई व्यक्ति या तो किसी मरे हुए के कारण अशुद्ध हो या किसी दूर यात्रा पर हो और वह प्रभु प्रभु यहोवा के लिए फसह मनाने में

**असमर्थ हो, तो वह दूसरे महीने के चौदहवें दिन सूर्यास्त के समय इसे मनाए। वह इसे बिना खमीर की रोटी और कड़वे साग के साथ खाए। वह इसका कोई भी हिस्सा सुबह तक न छोड़े और इसकी हड्डियों को न तोड़े। इसे फसह के सारे नियमों के अनुसार ही मनाया जाए।”**

---

## हिंदी में समझाना:

फसह शनि (Pesach Sheni) का आदेश उन लोगों के लिए था जो पहले फसह (14वें निसान) को अशुद्धता (मृत शरीर को छूने के कारण) या किसी यात्रा के कारण यह पर्व नहीं मना पाए थे।

### 1. समय:

- दूसरे महीने (इयार) के 14वें दिन सूर्यास्त के समय फसह शनि मनाया जाता है।

### 2. खाने के नियम:

- यह बलिदान बिना खमीर की रोटी (Matzah) और कड़वे साग (maror) के साथ खाया जाता है।

### 3. अन्य नियम:

- बलि को पूरी तरह भूनकर तैयार करना होता है।
  - हड्डियों को तोड़ना मना है।
  - इसका कोई भी हिस्सा सुबह तक नहीं छोड़ा जा सकता।
- 

## रब्बियों की टीका और व्याख्या:

### 1. मालबिम (Malbim):

- मित्पीड़ित व्यक्तिट श'बेगुफ और मित्पीड़ित व्यक्तिट श'अल गुफो का भेद:
    - मित्पीड़ित व्यक्तिट श'बेगुफ (बलिदान के शरीर से संबंधित):
      - बलिदान की भुनी हुई प्रकृति, इसकी हड्डियों को न तोड़ना।
      - ये नियम फसह शनि में लागू होते हैं।
    - मित्पीड़ित व्यक्तिट श'अल गुफो (खाने वाले व्यक्ति से संबंधित):
      - बिना खमीर की रोटी और कड़वे साग के साथ खाना।
      - इन्हें अलग से उल्लेखित करना पड़ा क्योंकि ये बलिदान की शारीरिक प्रकृति से संबंधित नहीं हैं।
  - खमीर:
    - फसह शनि में खमीर घर में रखा जा सकता है, जबकि पहले फसह में यह मना है।
- 2. तलमुद (Pesachim):**
- Matzah और Maror का साथ में या अलग-अलग खाना:
    - हिल्लोल (Hillel) के अनुसार, Matzah और Maror को एक साथ खाना चाहिए।
    - दूसरे विद्वानों का मत है कि इन्हें अलग-अलग भी खाया जा सकता है।
  - आज के समय में Maror का महत्व:
    - जब मंदिर मौजूद नहीं है, तो Maror खाने का आदेश लागू नहीं होता।
    - लेकिन Matzah का आदेश आज भी जारी है।
- 3. रव हिर्श (Rav Hirsch):**
- बलिदान से संबंधित मित्पीड़ित व्यक्तिट (मित्पीड़ित व्यक्तिट श'बेगुफ) का पालन फसह शनि में होता है।
  - खमीर हटाने और केवल बिना खमीर की रोटी खाने का आदेश फसह शनि में नहीं लागू

होता।

#### 4. ज्ञोहरः

- यह उल्लेख करता है कि Matzah और Maror बलिदान के साथ खाए जाने चाहिए।
  - “Matzah” शब्द को वाव के साथ पूरा लिखा गया है, जो पूर्णता का संकेत देता है।
- 

#### मसीही चर्च में इसका आज का महत्वः

##### आध्यात्मिक संदर्भः

फसह शनि को परमेश्वर की कृपा और लचीलापन दिखाने वाले उदाहरण के रूप में  
देखा जाता है।

यह उन लोगों को दूसरा अवसर देता है जो किसी कारणवश समय पर ईश्वर की  
व्यवस्था का पालन नहीं कर सके।

##### प्रभु यीशु मसीह का संदर्भः

मसीही विश्वास में, प्रभु यीशु मसीह को “हमारे फसह का मेमना” माना जाता है (1  
कुरिन्यियों 5:7)।

फसह शनि को मसीही चर्च एक प्रतीकात्मक रूप में देखता है, जहां ईश्वर ने पापियों  
को पश्चाताप और उद्धार का दूसरा अवसर दिया।

##### Matzah और Maror:

आज भी ईसाई प्रभु भोज (Holy Communion) में रोटी (Matzah का प्रतीक) और  
दाखरस का उपयोग करते हैं।

---

## उदाहरण:

### 1. प्राचीन यहूदी परंपरा:

- यदि कोई यात्रा पर था और अशुद्धता के कारण पहले फसह का बलिदान नहीं चढ़ा सका, तो वह इयार महीने में इसे मना सकता था।

### 2. मसीही परंपरा:

- पाप और पश्चाताप के लिए दूसरा अवसर, जैसा कि फसह शनि में देखा गया।
- 

## निष्कर्ष:

फसह शनि न केवल यहूदी धार्मिक नियमों की व्यावहारिकता दिखाता है, बल्कि यह परमेश्वर के दयालु स्वभाव का भी प्रमाण है। यह आज भी यहूदी और मसीही परंपराओं में गहरी आध्यात्मिक और सांस्कृतिक प्रासंगिकता रखता है।

P 59 Nu.10:9 - 10 Trumpets for Feast sacrifices brought & for tribulation

## बाइबल पद

### गिनती

**10:9-10**

- (9) "जब तुम्हारे देश में तुम्हारे विरुद्ध कोई शत्रु युद्ध करने आए, तो उन तुरहियों को फूंकना, और प्रभु प्रभु यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें स्मरण करेगा और तुम अपने शत्रुओं से बच जाओगे।
- (10) और अपने आनंद के दिनों में, अपनी नियत पर्वों में और अपने नये चाँदों के दिन होमबलि और मेलबलि चढ़ाते समय, तुम तुरहियां फूंको; यह तुम्हारे परमेश्वर के सामने तुम्हारा स्मरण रहेगा।

मैं तुम्हारा परमेश्वर प्रभु प्रभु यहोवा हूं।”

---

## इसका हिंदी में सरल व्याख्या

### 1. युद्ध के समय (पद 9):

- तुरहियां (चांदी की बनी हुई) बजाने का उद्देश्य था प्रभु प्रभु यहोवा से सहायता और सुरक्षा के लिए स्मरण करना।
- जब शत्रु हमला करता था, तो तुरहियां बजाने का संकेत था कि पूरा इस्राएल आत्मिक रूप से जागृत हो और प्रभु प्रभु यहोवा से प्रार्थना करें।
- यह तुरही केवल बाहरी शत्रु के लिए नहीं बल्कि आत्मिक शत्रु (पाप, बुराई) से भी लड़ने का प्रतीक है।

### 2. त्योहार और पर्वों के समय (पद 10):

- तुरहियां बजाने से इस्राएलियों को प्रभु प्रभु यहोवा के साथ उनके संबंध की याद दिलाई जाती थी।
  - यह उनके आनंद, बलिदानों, और उपासना को पवित्रता प्रदान करता था।
  - तुरही बजाकर बलिदानों को विशेष रूप से प्रभु प्रभु यहोवा के सामने स्मरणीय बनाया जाता था।
- 

## रबियों की टिप्पणियां (व्याख्या और उदाहरण)

### 1. अल्लोख (रबी मोशो अल्लोख)

- **युद्ध में (पद 9):**

तुरहियां केवल एक उपकरण नहीं हैं, बल्कि आत्मा को जागृत करने और पाप से पर्चाताप का प्रतीक हैं।

- उदाहरण: शत्रु चाहे बाहरी हो या आंतरिक (जैसे अहंकार या लोभ), तुरहियां आत्मिक जागृति और प्रार्थना की आवाज हैं।
- तुरहियां यह याद दिलाती हैं कि संकट में केवल प्रभु प्रभु यहोवा ही मदद कर सकता है।

- **पर्वों में (पद 10):**

- तुरहियां आनंद को केवल सांसारिक न रहने देकर उसे आत्मिक सेवा में बदल देती हैं।
- उदाहरण: किसी पर्व में खुशी के समय तुरही बजाने से यह याद आता है कि हर खुशी प्रभु प्रभु यहोवा से आती है।

## 2. रशी (रबी १लोमो यिल्लाचाकी)

- **युद्ध:**

- तुरहियां "प्रभु प्रभु यहोवा के सामने स्मरण" का संकेत हैं।
- यह इसाएल की अच्छाइयों को प्रभु प्रभु यहोवा के सामने लाने का माध्यम है।
- उदाहरण: जैसे रोश हशाना में शफार बजाना, तुरहियों के उपयोग का आध्यात्मिक रूप है।

- **त्योहारों में:**

- तुरहियां यह सिखाती हैं कि पर्व और बलिदान केवल सांसारिक नहीं हैं बल्कि प्रभु प्रभु यहोवा की उपस्थिति में हैं।
- यह वचन रोश हशाना के त्योहार में उपयोग होने वाली प्रार्थनाओं (मलख्योट, ज़िख्रोनोत, शफारोत) के महत्व को बताता है।

### 3. मालबिम (रबी मीर लिबुश वेसर)

- युद्धः

- तुरहियां आत्मिक शक्ति को जगाती हैं और शत्रु की आत्मिक ताकतों को कमज़ोर करती हैं।
- उदाहरणः जब कोई राष्ट्र संकट में हो, तो तुरहियां बजाकर सामूहिक प्रार्थना और पश्चाताप किया जाता था।

- पर्वों मेंः

- यह शारीरिक बलिदानों (जैसे होमबलि) और आत्मिक आनंद (उपासना) के बीच संतुलन स्थापित करता है।

### 4. इब्र एज़रा

- तुरहियां व्यावहारिक दृष्टिकोण से अराधना में सामूहिक ध्यान केंद्रित करने का माध्यम थीं।
- उदाहरणः बलिदानों के समय तुरहियों की आवाज पूरे समुदाय को प्रभु प्रभु यहोवा के प्रति श्रद्धा में बांध देती थी।

## 5. सिफ्रे (तालमुदिक युग की हलाखिक मिद्राश)

- युद्ध में तुरहियां बजाने वाले केवल याजक होते थे, सैनिक नहीं।
  - यह दिखाता है कि विजय का आधार आध्यात्मिक शक्ति और प्रभु प्रभु यहोवा की कृपा थी।
- 

### मसीही चर्च में इसका क्या महत्व है?

#### 1. तुरहियों का प्रतीकात्मक अर्थ

- तुरहियां परमेश्वर की घोषणा और आत्मिक जागृति का प्रतीक मानी जाती हैं।
- **उदाहरणः**
  - 1 कुरिन्यियों 15:52 में "अंतिम तुरही" उद्धार और पुनरुत्थान का प्रतीक है।
  - प्रकाशितवाक्य 8-11 में सात तुरहियां परमेश्वर के न्याय की घोषणा करती हैं।

#### 2. आधुनिक प्रासंगिकता

- तुरहियां आत्मिक युद्ध (जैसे पाप और बुराई के खिलाफ) और आत्मिक पुनर्जागरण का प्रतीक हैं।
- **उदाहरणः**
  - कुछ चर्चों में तुरहियों या शफार का उपयोग विशेष पर्वों में किया जाता है, जैसे ईस्टर्न ऑर्थोडॉक्स चर्च में।

### 3. ईसाई धर्म में ध्यान

- तुरहियां सुसमाचार के प्रचार और आत्मिक जागृति का प्रतिनिधित्व करती हैं।
  - **जॉन कैल्विन:** उन्होंने तुरहियों को आत्मिक रूप से जागने और सुसमाचार सुनने का प्रतीक माना।
  - **आधुनिक व्याख्या:** तुरहियां मसीही विश्वासियों को याद दिलाती हैं कि वे आत्मिक युद्ध में हैं (इफिसियों 6:12)।
- 

### सारांश

- **यहूदी परंपरा:** तुरहियां पवित्रता, सामूहिक पश्चाताप, और परमेश्वर की याद के प्रतीक हैं।
- **मसीही परंपरा:** तुरहियां मुख्य रूप से आत्मिक युद्ध, पुनरुत्थान, और परमेश्वर की न्यायिक योजना का प्रतीक बन गई हैं।

दोनों परंपराओं में तुरहियां आत्मिक चेतना और प्रभु प्रभु यहोवा की ओर लौटने का माध्यम हैं।

P 60 Le.22:27 On minimum age of cattle to be offered

**पद:** लेवितिकस **22:27**

"जब कोई बैल, भेड़, या बकरी जन्मे, तब वह सात दिन तक अपनी माँ के नीचे रहेगा; और आठवें दिन से प्रभु प्रभु यहोवा की वेदी पर चढ़ाने के लिए वह स्वीकार किया जा सकता है।"

## इस पद का हिंदी में समझाना:

### 1. पशु की प्रजाति (Species):

केवल बैल, भेड़, या बकरी बलिदान के लिए स्वीकार्य हैं।

- यह क्यों ज़रूरी है?

ये प्रजातियाँ "पवित्रता और सरलता" का प्रतीक हैं।

- क्रॉस ब्रीड (मिश्रित प्रजाति):

मिश्रित प्रजाति (जैसे, भेड़ और बकरी का मेल) को बलिदान के लिए अनुपयुक्त माना गया है।

- उदाहरण: अगर एक मेमना बकरी जैसा दिखे या बकरी मेमने जैसी दिखे, तो वह बलिदान के लिए योग्य नहीं होगा।

- तीन प्रजातियों का संबंध:

रब्बियों के अनुसार, इन तीनों प्रजातियों का संबंध इब्राहीम (बैल), इसहाक (भेड़), और याकूब (बकरी) से है।

### 2. स्वाभाविक जन्म (Natural Birth):

पशु का स्वाभाविक रूप से अपनी माँ के गर्भ से जन्म लेना ज़रूरी है।

- अगर किसी पशु का जन्म सी-सेक्शन (योज़ेई डोफेन) से हुआ हो, तो वह बलिदान के लिए अयोग्य होगा।
- इंसानों पर यह नियम लागू नहीं होता। इंसान सी-सेक्शन से जन्म लेने के बाद भी बलिदान पेश कर सकता है।

### 3. उम्र (Age):

**बलिदान के लिए पशु की उम्र कम से कम आठ दिन होनी चाहिए।**

- **पहले सात दिन:**

पहले सात दिन तक पशु "समय से पहले" (machusar zman) माना जाता है।

इसे बलिदान के लिए योग्य नहीं माना जाता।

- उदाहरण: यदि कोई बछड़ा पाँच दिन का है, तो वह बलिदान के योग्य नहीं होगा।

- **आठवें दिन का महत्व:**

आठवाँ दिन "पवित्रता और परिपूर्णता" का प्रतीक है। जैसे, यह सब्ज़ के बाद की शुरुआत को दर्शाता है।

- पशु को आठवें दिन की रात को पवित्र किया जा सकता है, लेकिन बलिदान दिन में ही होगा।

#### 4. माँ के साथ संबंध (Relationship with Mother):

**पशु को अपनी माँ के साथ पहले सात दिन तक रहना चाहिए।**

- **अनाथ पशु (Orphaned Animal):**

अगर माँ जन्म के तुरंत बाद मर जाती है, तो वह पशु भी बलिदान के योग्य नहीं होगा।

- **"माँ के नीचे" का अर्थ:**

- माँ के नीचे रहना शारीरिक पोषण और गर्भों के लिए ज़रूरी है।
- यह दिखाता है कि पशु अपनी माँ की जगह ले रहा है।

## रब्बियों की व्याख्या और उदाहरण:

### 1. स्वर्ण बछड़े का प्रायशिचितः

बैल को बलिदान के रूप में चुनना स्वर्ण बछड़े के पाप का प्रायशिचित करने के लिए है।

- उदाहरणः जब इस्राएलियों ने मूसा के अनुपस्थिति में बछड़े की मूर्ति बनाई, तो

बैल का बलिदान उन्हें उस पाप से शुद्ध करता है।

### 2. सात दिन का प्रतीकः

- पवित्रता की तैयारीः

सात दिन का समय एक पशु को अशुद्धता से पवित्रता की ओर ले जाता है।

- सब्ला का महत्वः

जैसे एक सप्ताह बिना सब्ला के अधूरा है, उसी तरह बलिदान से पहले एक पशु को सब्ला अनुभव करना चाहिए।

### 3. आठवाँ दिनः

आठवाँ दिन नए आरंभ का प्रतीक है।

- उदाहरणः जैसा कि पुरुषों के लिए खतना आठवें दिन किया जाता है, वैसे ही पशु

बलिदान के लिए तैयार होता है।

## आज के मसीही चर्च में इसका क्या महत्व है?

### 1. बलिदान की प्रथा समाप्तः

- आज के मसीही विश्वास में, प्रभु यीशु मसीह का क्रृस पर बलिदान अंतिम और पूर्ण बलिदान माना जाता है।
- इसलिए, यहां बलिदानों की प्रथा आज मसीही चर्चों में प्रचलित नहीं है।

## 2. प्रतीकात्मक महत्वः

- **निर्दोष बलिदानः**  
लेवितिकस के बलिदानों को प्रभु यीशु के "निर्दोष और पाप रहित बलिदान" के प्रतीक के रूप में देखा जाता है।
  - उदाहरणः पशु को शारीरिक दोष रहित होना चाहिए, जैसे मसीह पाप से रहित थे।
- **पवित्रताः**  
बलिदान के नियम मसीहियों को "आध्यात्मिक पवित्रता" की याद दिलाते हैं।

## 3. अनुग्रह पर जोरः

मसीही विश्वास अनुग्रह और क्षमा पर आधारित है।

- बलिदानों के बजाय, मसीही जीवन में प्रार्थना, आराधना, और प्रेम महत्वपूर्ण हैं।

### उदाहरणः

- एक भेड़ (7 दिन की) और दूसरी भेड़ (8 दिन की)।
  - 7 दिन की भेड़ बलिदान के योग्य नहीं है क्योंकि यह "समय से पहले" है।
  - 8 दिन की भेड़ बलिदान के लिए योग्य है क्योंकि उसने एक सब्ल और पूर्णता का समय पूरा किया है।

- आज के चर्च में इसे प्रतीकात्मक रूप में देखा जाएगा, जहां प्रभु यीशु के बलिदान के कारण अब शारीरिक बलिदान की आवश्यकता नहीं है।

P 61 Le.22:21 On offering only unblemished sacrifices

### लेवियों 22:21

"और जो कोई प्रभु प्रभु यहोवा के लिये मेलबलि करे, चाहे मन्त्रत पूरी करने के लिये, या अपनी इच्छा से, तो बछड़े या भेड़-बकरी में से जो बलि चढ़ाए, वह निर्दोष और निरोग होना चाहिए, तभी वह ग्रहण किया जाएगा; उस में कोई दोष न हो।"

---

### इस पद का अर्थ (हिंदी में):

यह पद मेलबलि (शांति बलि) के विषय में है, जो कि दो प्रकार के हो सकते हैं:

1. **मन्त्रत (नज़र या नज़ीर)**: यह बलि उस वचन को पूरा करने के लिए चढ़ाई जाती है जो किसी विशेष स्थिति में परमेश्वर से सहायता मांगते समय किया गया हो।
2. **स्वेच्छा से चढ़ाई गई बलि (स्वेच्छा-दान)**: यह बिना किसी दबाव के, केवल अपने प्रेम और आराधना को प्रकट करने के लिए चढ़ाई जाती है।

**बलि के लिए इस्तेमाल होने वाले पशु (गाय, बैल, भेड़, या बकरी) में कोई दोष या कमी नहीं होनी चाहिए। ऐसा पशु "निर्दोष" या "संपूर्ण" (तमीम) होना चाहिए। दोषपूर्ण बलि को स्वीकार नहीं किया जाता।**

---

## रब्बियों की व्याख्या:

### 1. मन्त्रत पूरी करने के लिए (רְאַלְפָלֶת):

- **राशी (Rashi):** "लफले नज़र" का अर्थ है मन्त्रत को बोलकर स्पष्ट रूप से कहना। मन्त्रत मन में सोचने से पूरी नहीं होती; इसे स्पष्ट रूप से प्रकट करना होता है।
- **इब्र एज़रा (Ibn Ezra):** "लफले" का अर्थ है वचन को साफ़ और स्पष्ट रूप से बोलना।
- **रव हिर्श (Rav Hirsch):** "पाला" का संबंध एक स्वतंत्र इच्छा और ईश्वरीय प्रेरणा से है।  
मन्त्रत एक ऐसा वचन है जो व्यक्ति अपनी इच्छा से परमेश्वर के प्रति प्रतिबद्धता दिखाने के लिए करता है।
- **तूर हारोक (Tur HaArokh):** यह मन्त्रतें अक्सर कठिन परिस्थितियों में की जाती हैं, जब व्यक्ति परमेश्वर से किसी चमत्कार की अपेक्षा करता है।

### 2. स्वेच्छा से बलि (הַעֲלֵה):

- **डेविड पीड़ित व्यक्तिहाँफमैन:** स्वेच्छा-दान की बलि मन्त्रत की बलि से अलग है। यह बिना किसी प्रतिबद्धता के प्रेम से चढ़ाई जाती है।
- **मलबिम (Malbim):** "नेदावा" (स्वेच्छा बलि) दिल की सच्ची भावना और खुशी से चढ़ाई जाती है।

### 3. निर्दोष होना (מִינְגָּד):

- **रलबग (Ralbag):** यह आज्ञा है कि बलि निर्दोष होनी चाहिए।
- **सफोर्नो (Sforno):** भले ही मेलबलि हो, जो कि पवित्रता की निम्न श्रेणी में आता है, वह तब तक स्वीकार नहीं होता जब तक वह दोषरहित न हो।

#### 4. कोई दोष न हो (מִלְאָמָר):

**अदरेट एलियाहूः पशु में दोष लगाना या जान-बूझकर दोष उत्पन्न करना मना है।**

**मलबिमः** अगर पशु पहले से दोषपूर्ण है, तो उसका दोष और बढ़ाना भी वर्जित है।

---

#### उदाहरण (रब्बियों के दृष्टिकोण से):

- राशीः** अगर किसी ने कहा, "मैं एक गाय चढ़ाऊँगा," तो यह स्पष्ट होना चाहिए कि वह मन्त्रत है या स्वेच्छा-दान।
  - तूर हारोकः** अगर किसी ने संकट के समय मन्त्रत की कि "अगर मैं बच गया, तो एक बलि चढ़ाऊँगा," तो यह "लफले नज़र" का उदाहरण है।
  - सफ़ोर्नोः** मेलबलि के लिए लाए गए पशु को हर प्रकार की शारीरिक कमी से मुक्त होना चाहिए, चाहे वह मन्त्रत की बलि हो या स्वेच्छा से।
- 

#### आधुनिक मसीही चर्च में इसका महत्वः

आज के मसीही चर्च में यह पद प्रतीकात्मक रूप से समझा जाता है:

- प्रभु यीशु मसीह को पूर्ण बलिदान मानना:** मसीही विश्वास में यह माना जाता है कि प्रभु यीशु मसीह ही वह "निर्दोष बलि" हैं, जिन्होंने संसार के पापों के लिए अपना प्राण दिया।
- पूर्णता और समर्पणः** यह पद यह सिखाता है कि आराधना या भेंट केवल तभी स्वीकार्य होती है जब वह शुद्ध हृदय और सच्चे मन से की जाए।

**3. आत्मिक बलिदान: आज मसीही लोग पशुओं की बलि नहीं चढ़ाते, बल्कि अपने**

**जीवन, समय, और संसाधनों को परमेश्वर के प्रति समर्पित करते हैं।**

---

### **निष्कर्ष (आज के संदर्भ में):**

**लेवियों 22:21 परमेश्वर के प्रति शुद्ध, निर्दोष, और सच्चे समर्पण का प्रतीक है। यह हमें**

**सिखाता है कि हमारी भेंट या सेवा तभी ग्रहणीय होती है जब वह बिना किसी स्वार्थ या**

**दोष के हो। आधुनिक मसीही दृष्टिकोण में, यह पद हमारे आत्मिक जीवन को शुद्ध और**

**समर्पित रखने का आव्वान करता है।**

P 62 Le.2:13 On bringing salt with every offering

### **बाइबल पद:**

नमक से संबंधित मुख्य बाइबल पद लैब्यव्यवस्था 2:13 में मिलता है:

**"तू अपने अन्नबलि में नमक देना न छोड़ना; क्योंकि प्रभु प्रभु यहोवा के साथ अपने परमेश्वर की**

**नमक की वाचा सदा बनी रहे, इसलिए हर एक भेंट में नमक दिया जाना चाहिए।"**

इसके अलावा, गिनती 18:19 और 2 इतिहास 13:5 में भी "नमक की वाचा" का उल्लेख है।

---

### **हिंदी में समझाना:**

#### **1. नमक का प्रतीकात्मक अर्थ:**

- **नमक की वाचा (Salt of the Covenant):**

नमक परमेश्वर और इसाएलियों के बीच स्थायी और अटूट वाचा का प्रतीक है। इसे "नमक की वाचा" कहा गया है क्योंकि नमक नष्ट नहीं होता और स्थायित्व का प्रतीक है। जैसे नमक भोजन को खराब होने से बचाता है, वैसे ही यह वाचा सदा के लिए है।

**उदाहरण:**

गिनती 18:19 में परमेश्वर ने याजकों (पुरोहितों) को उनके भाग के रूप में "नमक की वाचा" दी, जो यह दर्शाता है कि उनकी सेवा स्थायी और पवित्र है।

- **संरक्षण और शुद्धता (Preservation and Purity):**

नमक को शुद्ध करने वाला और संरक्षित करने वाला माना जाता है। बलिदानों में नमक यह दर्शाता है कि वे परमेश्वर के लिए शुद्ध और पवित्र हैं।

**उदाहरण:**

जब एक व्यक्ति अपने पापों के लिए बलिदान लाता था, तो नमक यह याद दिलाता था कि उसे शुद्ध होकर और पाप न करने के निश्चय के साथ आगे बढ़ना चाहिए।

- **परमेश्वर की न्याय और दया (Justice and Mercy):**

नमक में अग्नि और जल के विपरीत गुण होते हैं। यह परमेश्वर के राज्य में न्याय और दया दोनों के संतुलन का प्रतीक है।

**उदाहरण:**

रम्बान (Ramban) ने समझाया कि नमक का निर्माण जल और सूर्य की शक्ति से होता है, जो जीवन देने वाली शक्ति को नष्ट कर देता है। यह परमेश्वर के न्याय और दया के दो पहलुओं को दर्शाता है।

## 2. व्यावहारिक अनुप्रयोग (Practical Application):

- **बलिदानों में अनिवार्यता:**

हर प्रकार की बलि (अन्नबलि, होमबलि, पशुबलि) में नमक का उपयोग करना अनिवार्य था।

- **सार्वजनिक प्रावधान:**

मंदिर के लिए नमक सार्वजनिक रूप से उपलब्ध कराया जाता था, जैसे वेदी के लिए लकड़ी।

- **विशेष नमक:**

सोदोम (मृत सागर) का नमक सर्वोत्तम माना जाता था। यदि यह उपलब्ध न हो तो अन्य नमक का उपयोग किया जाता था।

- **नमक की मात्रा:**

यह सुनिश्चित किया जाता था कि नमक इतना अधिक न हो कि वह मांस का सारा खून सोख ले।

---

## रब्बियों की व्याख्या (Interpretations by Rabbis):

1. **राशी (Rashi):**

नमक का संबंध सृष्टि के समय से है। निचले जल (समुद्र) को वादा किया गया था कि वे नमक और जल के रूप में वेदी पर अर्पित किए जाएंगे।

**उदाहरण:**

सुकोत के जल चढ़ावे और बलिदान के नमक को निचले जल के बलिदान के रूप में

देखा जाता है।

2. **इब्न ए़ज़रा (Ibn Ezra):**

नमक बलिदान को स्वादिष्ट बनाता है और नमक रहित बलिदान अपमानजनक माना जाता है।

**उदाहरण:**

कोई भी बलिदान स्वादहीन या अधूरा नहीं होना चाहिए।

3. **रम्बान (Ramban):**

नमक जीवनदायी जल और नाशकारी गुणों का मेल है। यह वाचा की दोहरी प्रकृति (अच्छाई और बुराई) को दर्शाता है।

4. **मालबिम (Malbim):**

नमक का उल्लेख कई बार इसलिए हुआ है ताकि इसकी अनिवार्यता स्थापित की जा सके। यह नियम शब्दत और अशुद्धता से भी ऊपर है।

5. **रब्बीनू बाह्या (Rabbeinu Bahya):**

नमक मांस को स्वादिष्ट बनाता है और मूर्तिपूजा की प्रथाओं का विरोध करता है। यह निचले जल के साथ सृष्टि में हुई वाचा का प्रतीक है।

6. **हिजकुनी (Chizkuni):**

बलिदानों में केवल वास्तविक नमक का उपयोग होना चाहिए, न कि खारे पानी का।

## मसीही चर्च में नमक का महत्व (Significance in Christian Churches Today):

### 1. आध्यात्मिक अर्थ:

मसीही जीवन में नमक का प्रतीक शुद्धता, स्थायित्व, और परमेश्वर की वाचा के प्रति वफादारी का है।

#### उदाहरण:

प्रभु यीशु ने कहा, "तुम पृथ्वी के नमक हो!" (मत्ती 5:13)। इसका अर्थ है कि मसीही विश्वासी दूसरों को पाप से बचाने और समाज को शुद्ध करने का कार्य करते हैं।

### 2. प्रेरणा:

नमक विश्वासियों को यह याद दिलाता है कि उन्हें नम्र और परिपक्व रहकर दूसरों की सेवा करनी चाहिए।

### 3. बलिदान का प्रतीक:

मसीही अनुष्ठानों, जैसे ईश्वरभक्ति और प्रार्थना में, नमक को आत्मा के समर्पण और स्थिरता के प्रतीक के रूप में देखा जाता है।

### 4. आधुनिक उपयोग:

कुछ चर्च संस्कारों, जैसे रोटी और अंगूरी के साथ नमक का उपयोग करते हैं ताकि परमेश्वर के साथ स्थायी वाचा का स्मरण कर सकें।

## निष्कर्षः

नमक बाइबल में न केवल स्थायित्व और वाचा का प्रतीक है, बल्कि यह मानव जीवन में शुद्धता, बलिदान, और परमेश्वर के प्रति वफादारी का भी स्मारक है। आज भी इसका आध्यात्मिक और व्यावहारिक महत्व बना हुआ है।

## स्वार्थ और दोष का मसीही और यहूदी दृष्टिकोण से विश्लेषणः

### 1. स्वार्थ (Selfishness) का अर्थ और उसका संदर्भ

स्वार्थ का मतलब है किसी कार्य को केवल अपने लाभ या व्यक्तिगत इच्छाओं को पूरा करने के लिए करना।

- यहूदी दृष्टिकोण से:

यहूदी धर्म में भेंट और बलिदान को निश्चल हृदय और ईमानदारी से किया गया कार्य माना गया है। अगर भेंट या बलिदान केवल अपने जीवन को बेहतर बनाने, किसी स्वार्थी मकसद को पूरा करने, या दूसरों पर अपनी श्रेष्ठता साबित करने के लिए हो, तो यह स्वीकार्य नहीं है।

- उदाहरणः यदि कोई व्यक्ति केवल इसलिए बलिदान देता है ताकि वह समुदाय में सम्मान प्राप्त कर सके, तो उसकी भेंट स्वीकार नहीं होगी।

- रब्बियों की शिक्षा:

- रब्बी हिलेल ने कहा था, "यदि मैं केवल अपने लिए हूं, तो मैं कौन हूं?" यह इस बात पर जोर देता है कि ईश्वर को प्रसन्न करने वाले कार्य स्वार्थ से परे होने चाहिए।

- मसीही दृष्टिकोण से:

मसीही दृष्टिकोण में, स्वार्थ का मतलब है परमेश्वर के प्रति अपने समर्पण को केवल सांसारिक लाभ या दिखावे के लिए करना। प्रभु यीशु ने फरीसियों और सदूकियों की आलोचना की, जो केवल लोगों को दिखाने के लिए प्रार्थना या बलिदान करते थे।

- **उदाहरण:** जब प्रभु यीशु ने उस विधवा की दो पाई की प्रशंसा की, जो उसने पूरे हृदय से दी, यह स्पष्ट हुआ कि ईश्वर केवल दिल की भावना को महत्व देते हैं, न कि बाहरी प्रदर्शन या धनराशि को।

## 2. दोष (Blemish) का अर्थ और संदर्भ

दोष का मतलब है कोई खोट, अशुद्धता, या कमी जो बलिदान या समर्पण को ईश्वर के सामने स्वीकार्य न बनाए।

- **यहूदी दृष्टिकोण से:**

यहूदी धर्म में बलिदान का दोष रहित (unblemished) होना अनिवार्य था।

- **शारीरिक दोष:** पशु में कोई बाहरी दोष (जैसे अंधापन, टूटा अंग, बीमारी) नहीं होना चाहिए।
- **आध्यात्मिक दोष:** बलिदान लाने वाले का मन पवित्र और सच्चा होना चाहिए। यदि किसी व्यक्ति का इरादा सही नहीं है, तो उसकी भेंट स्वीकार्य नहीं होगी।
- **रब्बी रशि का दृष्टिकोण:** रशि ने कहा कि "निर्दोषता" केवल बाहरी शारीरिक स्थिति तक सीमित नहीं है; यह लाने वाले के दिल और इरादे को भी संदर्भित करता है।
- **उदाहरण:** यदि कोई व्यक्ति ईश्वर से वरदान प्राप्त करने के लिए बलिदान दे रहा है, तो उसकी भेंट दोषपूर्ण

है लेकिन उसका मन अपने पड़ोसी के प्रति द्वेष से भरा है, तो उसकी भेंट दोषपूर्ण

**मानी जाएगी।**

- **मसीही दृष्टिकोण से:**

मसीही दृष्टिकोण में दोष का मतलब पाप या अशुद्धता है। प्रभु यीशु ने सिखाया कि परमेश्वर को बलिदान से ज्यादा आंतरिक शुद्धता और सच्चाई में दिलचस्पी है।

- **उदाहरण:** मत्ती 5:23-24 में प्रभु यीशु ने कहा, "यदि तू वेदी पर अपनी भेंट छढ़ाने जाए, और तुझे स्मरण हो कि तेरे भाई का तुझ पर कोई दोष है, तो अपनी भेंट वहीं छोड़ दे और पहले अपने भाई से मेल कर, तब आकर अपनी भेंट छढ़ा।"

### 3. स्वार्थ और दोष का आध्यात्मिक अर्थ

- **स्वार्थ का विरोध:**

परमेश्वर के प्रति समर्पण का अर्थ है निस्वार्थ भाव से, बिना किसी व्यक्तिगत लाभ की अपेक्षा के, केवल ईश्वर के प्रति प्रेम और भक्ति के कारण भेंट देना या सेवा करना।

- **यहाँ उदाहरण:** हन्ना ने अपने पुत्र रामूएल को ईश्वर को समर्पित किया। यह एक निस्वार्थ भेंट थी, क्योंकि उसने अपना सबसे प्रिय पुत्र बिना किसी स्वार्थ के ईश्वर को अर्पित किया।
- **मसीही उदाहरण:** प्रभु यीशु का बलिदान पूर्ण निस्वार्थता का प्रतीक है। उन्होंने मानवजाति के उद्धार के लिए अपनी जान दी, बिना किसी व्यक्तिगत लाभ की अपेक्षा के।

- **दोष का विरोध:**

दोष का अर्थ है हमारे कार्यों में पाप, छल, या अशुद्धता। ईश्वर की दृष्टि में केवल वे भेंट या सेवाएं स्वीकार्य हैं, जो दिल और आत्मा की सच्चाई और पवित्रता के साथ दी जाती हैं।

- यहूदी उदाहरण: लैब्यव्यवस्था में बलिदान के नियम बताते हैं कि केवल निर्दोष पशु ही स्वीकार किए जा सकते हैं।
- मसीही उदाहरण: मसीही मान्यता में प्रभु यीशु को "निर्दोष मेमना" कहा गया है, जो मानवजाति के पापों के लिए पूर्ण बलिदान था।

## 4. आधुनिक मसीही चर्च में इसकी प्रासंगिकता

- स्वार्थ के संदर्भ में:

- चर्च सिखाते हैं कि सेवा या भेंट का उद्देश्य व्यक्तिगत लाभ या प्रशंसा प्राप्त करना नहीं होना चाहिए। यह केवल परमेश्वर की महिमा के लिए होना चाहिए।
- उदाहरण: कोई व्यक्ति चर्च में दान देता है ताकि उसका नाम सार्वजनिक रूप से घोषित हो, तो यह स्वार्थी भावना है।

- दोष के संदर्भ में:

- मसीही चर्च बलिदान को शारीरिक रूप से नहीं, बल्कि आत्मिक रूप से देखता है। आज, यह "पवित्र और शुद्ध जीवन" जीने के रूप में समझा जाता है।
- उदाहरण: रोमियों 12:1 में लिखा है, "अपनी देह को जीवित, पवित्र और परमेश्वर को भलीभांति ग्रहणयोग्य बलिदान के रूप में अर्पित करो।"

## 5. निष्कर्ष

स्वार्थ का अर्थ है केवल अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए कार्य करना, जबकि दोष का अर्थ है हमारे कार्यों में पाप या छल का होना। ईश्वर की दृष्टि में स्वीकार्य भेंट और सेवा केवल निस्वार्थता, पवित्रता, और सच्चे समर्पण के साथ ही संभव है। यहूदी और मसीही दोनों दृष्टिकोण हमें सिखाते हैं कि केवल शुद्ध और सच्चे हृदय से किया गया समर्पण ही

## परमेश्वर को ग्रहणीय है।

**उदाहरण:** मत्ती 5:23-24 में प्रभु यीशु ने कहा, "यदि तू वेदी पर अपनी भेंट चढ़ाने जाए, और तुझे

स्मरण हो कि तेरे भाई का तुझ पर कोई दोष है, तो अपनी भेंट वहीं छोड़ दे और पहले अपने

भाई से मेल कर, तब आकर अपनी भेंट चढ़ा।" दो कहानी हैं

1 की यदि एक वक्यती के दुसरे से माफ़ी मांगी और उसने नहीं दी . तो क्या फिर भी उसकी भेट

ग्रहन नहीं होगी

2. और यदि एक वक्ती ने दुसरे को माफ़ कर दिया पर बार बार मन में वही विचार सामने आ

जाता अहि कुइकी जिसे माफ़ किया वो बार बार वही काम करे जबकि उसने माफ़ी तक नहीं

मांगी तो मसीह के अनुसार बाइबल से क्या मिलता है इन सब के बारे में

आपके दोनों सवालों का उत्तर बाइबल के शिक्षाओं और मसीह के दृष्टिकोण से निप्रलिखित रूप में दिया जा सकता है:

**पहली कहानी:** यदि किसी ने माफ़ी मांगी लेकिन दूसरा उसे माफ नहीं करता, तो क्या उसकी भेंट स्वीकार नहीं होगी?

### 1. प्रभु यीशु की शिक्षा:

मत्ती 5:23-24 में प्रभु यीशु का मुख्य उद्देश्य यह है कि परमेश्वर के साथ संबंध बनाने से पहले, हमें दूसरों के साथ शांति और मेल-मिलाप करना चाहिए।

- यदि कोई व्यक्ति माफी मांगता है लेकिन दूसरा माफ नहीं करता, तो यह माफी मांगने वाले व्यक्ति का दोष नहीं है।
- रोमियों 12:18: "जहाँ तक हो सके, सब मनुष्यों के साथ मेल मिलाप रखो।" यहाँ यह स्पष्ट किया गया है कि हम अपनी ओर से हर संभव प्रयास करें, लेकिन दूसरे व्यक्ति की प्रतिक्रिया हमारे नियंत्रण से बाहर है।

## 2. भेंट का संदर्भ:

- अगर आप ईमानदारी से माफी मांग चुके हैं और दूसरा व्यक्ति माफ करने से इनकार करता है, तो आपकी भेंट परमेश्वर के सामने स्वीकार होगी, क्योंकि आपने अपनी ओर से सही कदम उठाया है।
- प्रभु प्रभु यहोवा का न्याय: प्रभु प्रभु यहोवा दिलों को देखता है। अगर आपकी माफी सच्चे दिल से है, तो आप निर्दोष हैं। माफ न करने वाले व्यक्ति को खुद के मन का हिसाब देना होगा।
- उदाहरण: प्रभु यीशु ने फरीसियों की आलोचना करते हुए कहा कि वे बाहरी कर्मों (जैसे भेंट चढ़ाना) पर जोर देते हैं, लेकिन दिल की शुद्धता पर ध्यान नहीं देते।

**दूसरी कहानी:** यदि किसी ने माफ कर दिया, लेकिन बार-बार वही विचार आते हैं क्योंकि दूसरा व्यक्ति बार-बार वही गलती करता है, तो क्या करना चाहिए?

## 1. मसीह की माफी का दृष्टिकोण:

- मसीह ने अनन्त माफी सिखाई।
- मत्ती 18:21-22: जब पतरस ने पूछा कि ”मैं अपने भाई को कितनी बार माफ करूँ? सात बार?” प्रभु यीशु ने उत्तर दिया, ”सत्तर गुना सात बार।”  
इसका मतलब है कि हमें बार-बार माफी देनी चाहिए, क्योंकि माफी परमेश्वर की कृपा और प्रेम का हिस्सा है।

## 2. मन में बार-बार विचार आने का कारण:

- यह हमारी मानव स्वभाव और भावनाओं के कारण होता है। माफी देना एक प्रक्रिया है, और कभी-कभी समय लगता है।
- **बाइबल का निर्देश:**
  - 2 कुरिन्थियों 10:5: ”हम हर विचार को बंदी बना लेते हैं और उसे मसीह के अधीन कर देते हैं।”
  - जब नकारात्मक विचार बार-बार आएं, तो उन्हें प्रार्थना के माध्यम से परमेश्वर के सामने लाएं।
  - फिलिप्पियों 4:8: ”जो बातें सत्य, आदरणीय, और शुद्ध हैं, उन पर ध्यान करो।”

## 3. व्यवहारिक कदम:

- **दूसरे को माफ करना:**  
मसीह ने सिखाया कि माफी का मतलब केवल व्यक्ति को उसके कार्यों के लिए जिम्मेदार ठहराना नहीं है, बल्कि अपने दिल को उस बोझ से मुक्त करना है।  
  - अगर वह व्यक्ति बार-बार गलती करता है, तो माफ करना हमारे मन को

**शांति देता है।**

- **रोमियों 12:19:** "प्रेमियों, बदला न लेना; क्योंकि यह लिखा है, 'प्रभु कहता है, प्रतिशोध मेरा है। मैं ही इसका बदला चुकाऊंगा।'"

- **स्वस्थ सीमाएं (Boundaries):**

बाइबल सिखाती है कि हमें माफी और समझदारी के बीच संतुलन रखना चाहिए।

- **नीतिवचन 22:3:** "बुद्धिमान व्यक्ति विपत्ति को देख कर छुप जाता है,

लेकिन मूर्ख बिना विचार के आगे बढ़ता है।"

- अगर कोई व्यक्ति बार-बार गलती कर रहा है, तो समझदारी से

सीमाएं तय करें।

- इसका मतलब यह नहीं है कि आप माफ नहीं कर रहे हैं, बल्कि

आप अपने और दूसरों के लिए सही स्थिति बना रहे हैं।

**क्या माफी के बिना भी हम सही तरीके से परमेश्वर की सेवा कर सकते हैं?**

1. **माफी देना, पर खुद को आहत होने से बचाना:**

- **मत्ती 5:44:** "अपने शत्रुओं से प्रेम करो, और उनके लिए प्रार्थना करो, जो तुम्हें सताते हैं।"

■ मसीह की शिक्षा हमें यह समझने में मदद करती है कि माफी देना हमारे दिल की शुद्धता के लिए आवश्यक है, न कि दूसरे के सुधार के लिए।

- हालांकि, इसका मतलब यह नहीं है कि हमें खुद को बार-बार चोट पहुँचाने

**देना चाहिए।**

## 2. समस्या को परमेश्वर के हाथों में छोड़ देना:

- भजन 55:22: "अपना बोझ प्रभु प्रभु यहोवा पर डाल दे, और वह तुझे संभालेगा।"
    - अपने मन की चिंताओं को परमेश्वर को सौंपना और प्रार्थना करना मदद करता है।
- 

## निष्कर्षः

### 1. पहली कहानीः

- यदि आपने सच्चे दिल से माफी मांगी है और दूसरा व्यक्ति आपको माफ नहीं करता, तो आपकी भेंट स्वीकार होगी। माफी मांगना आपका कर्तव्य है, और माफ करना उसका।

### 2. दूसरी कहानीः

- बार-बार विचार आना स्वाभाविक है, लेकिन मसीह ने हमें बार-बार माफ करने की शिक्षा दी।
- यदि कोई व्यक्ति बार-बार गलती कर रहा है, तो माफी देने के साथ-साथ व्यवहारिक सीमाएं स्थापित करें।

### 3. मसीह का सन्देशः

मसीह ने हमें दूसरों को माफ करके अपने दिल को हल्का रखने और ईश्वर के न्याय पर भरोसा करने की शिक्षा दी। माफी हमारे लिए शांति का मार्ग है, जबकि न्याय प्रभु प्रभु यहोवा के अधिकार में है।

P 63 Le.1:2 On the Burnt-Offering

---

## 1. बाइबिल का मूल पद और अनुवाद

लेवी 1:2 हिन्दू में इस प्रकार है:

### हिंदी अनुवाद:

"इस्राएलियों से कहो: जब तुम में से कोई प्रभु प्रभु यहोवा के लिए एक भेंट लाता है, तो उसे अपने पशुओं में से - बैल, गाय, या भेड़-बकरी में से ही अपनी भेंट लानी होगी।"

---

## 2. शब्दों का गहरा

### विश्लेषण

#### 1. "דָבֵר אֶל־בְּנֵי יִשְׂרָאֵל" (Daber el-bnei Yisrael) – "इस्राएल के लोगों से कहो"

- "דָבֵר" (Daber - "बोलना"): यह एक आदेश देने वाला शब्द है, जो सख्ती से निर्देश देने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। यह दर्शाता है कि यह नियम यहूदियों के लिए अनिवार्य है।
- "בְּנֵי יִשְׂרָאֵל" (Bnei Yisrael - "इस्राएल के लोग"): बलिदान (sacrifice) केवल इस्राएल के लोगों के लिए था। हालाँकि, बाद में कुछ गैर-यहूदी भी स्वैच्छिक भेंट चढ़ा सकते थे।

## 2. "אָדָם כִּי-קָרַב" (Adam ki yakriv) – "जब कोई मनुष्य भेंट लाए"

- "אָדָם" (Adam - "मनुष्य") :
  - आमतौर पर, हिन्दी में "man" के लिए "ישָׁאֵן" (Ish) शब्द का उपयोग किया जाता है। लेकिन यहाँ "Adam" का उपयोग किया गया है, जो आदम (पहले मानव) का संदर्भ देता है।
    - रब्बी राशी (Rashi) कहते हैं कि इसका मतलब है कि भेंट चोरी की हुई नहीं होनी चाहिए, क्योंकि आदम ने कभी चोरी नहीं की थी।
    - कुछ व्याख्याकार बताते हैं कि यह शब्द यहूदियों के साथ-साथ गैर-यहूदियों को भी शामिल करता है।

## 3. "מִקְקֵם" (Mikkem - "तुममें से")

- रब्बी चज़कुनी (Chizkuni) बताते हैं कि "Mikkem" यह दिखाता है कि केवल वे लोग भेंट चढ़ा सकते हैं जो परमेश्वर से जुड़े रहना चाहते हैं।
- यह यहूदियों को सिखाता है कि वे पवित्रता से बलिदान चढ़ाएँ।

## 4. "לִיהְוָה קָרְבָּן" (Korban la'Hashem) – "प्रभु प्रभु यहोवा के लिए भेंट"

- "Korban" शब्द "Karov" (करीब आना) से आता है, जिसका अर्थ है ईश्वर के निकट आना।
- बलिदान कोई उपहार नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के हृदय की भावना को दर्शाता है।

## 5. "מִינָהָבָה" (Min HaBehemah - "पशुओं में से")

- केवल पालतू पशु जैसे गाय, बैल, और भेड़ स्वीकार किए जाते थे।
- जंगली जानवरों (हिरण, भालू, सिंह आदि) को बलिदान के लिए अनुमति नहीं थी।

## 6. "תקריב ערך קרבנ Chem" (Takrivu et-karbanchem - "अपनी भेंट लाओ")

- "Takrivu" (बहुवचन) शब्द दर्शाता है कि लोग सामूहिक रूप से भेंट चढ़ा सकते हैं।
  - इसका अर्थ यह भी हो सकता है कि दो या दो से अधिक लोग मिलकर बलिदान दे सकते हैं।
- 

## 3. रब्बी विचार और व्याख्याएँ

### 1. राशी (Rashi):

- "Adam" शब्द का उपयोग दिखाता है कि भेंट चोरी की हुई नहीं होनी चाहिए।
- "Korban" शब्द से पता चलता है कि बलिदान ईश्वर के साथ घनिष्ठता बनाने के लिए है, न कि किसी को रिश्वत देने के लिए।

### 2. राव हिर्श (Rav Hirsch):

- बलिदान का उद्देश्य आध्यात्मिक आत्म-परिवर्तन है।
- मनुष्य को अपने अहंकार, लालच, और पापों को त्यागने के लिए बलिदान देना चाहिए।

### 3. स्फोर्नो (Sforno):

- बलिदान पशु का नहीं, बल्कि हमारे अंदर की पापी प्रवृत्ति का होना चाहिए।

- पालतू जानवरों का चुनाव इसलिए किया गया क्योंकि वे मानव जीवन के करीब होते हैं।

#### 4. क्ली याकर (Kli Yakar):

- जब आदम ने पाप किया, तो उसे पत्तों से ढका गया।
  - लेकिन जब बलिदान की व्यवस्था आई, तो ईश्वर ने पशु की खाल से वस्त्र दिया।
  - इसका मतलब यह है कि बलिदान आत्मिक ढंकने (कवरेज) का प्रतीक है।
- 

## 4. ईसाई परिप्रेक्ष्य में इस पद का महत्व

ईसाई धर्म में बलिदान की यह अवधारणा प्रभु यीशु मसीह में पूरी होती है:

### 1. प्रभु यीशु को परमेश्वर का पूर्ण बलिदान माना जाता है।

- इब्रानियों 10:10: "हम प्रभु यीशु मसीह के शरीर के एक ही बार बलिदान किए जाने के द्वारा पवित्र किए गए हैं।"
- जिस प्रकार लेवी 1:2 में निर्दोष पशु को बलिदान के लिए चुना जाता था, प्रभु यीशु को पाप-रहित मानकर बलिदान दिया गया।

### 2. "Korban" (ईश्वर के निकट आना) का अर्थ मसीह में पूरा होता है।

- इब्रानियों 7:25: "वह उनका पूरा उद्धार कर सकता है जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं।"

- मसीह का बलिदान हमें प्रभु प्रभु यहोवा के निकट लाता है।

### 3. पशु बलिदान की आवश्यकता समाप्त हो गई।

- रोमियों 12:1: "अपने शरीर को जीवित, पवित्र और ईश्वर को स्वीकार्य बलिदान के रूप में प्रस्तुत करो।"
  - अब बलिदान पशु नहीं, बल्कि हमारे जीवन की भेंट होनी चाहिए।
- 

## निष्कर्ष

लेवी 1:2 न केवल बलिदान की प्राचीन यहूदी परंपरा को दर्शाता है, बल्कि यह सिखाता है कि बलिदान का असली उद्देश्य आत्मा की शुद्धता और परमेश्वर के साथ समीपता है। इसाई धर्म में यह सिद्धांत प्रभु यीशु मसीह के बलिदान में पूरा होता है।

P 64 Le.6:18 On the Sin-Offering

## 1. पहला बाइबल पद

लेवीयें 6:18 में लिखा है:

"גָּרְעָלָה תִּתְעַטֵּף תְּמִימָה"

लेवीयविवरण 6:18 (Leviticus 6:18) हिंदी में:

"जो कोई पुरुष याजक इस को खाए, वह पवित्र ठहरे; यह तुम्हारी पीढ़ियों के लिये प्रभु प्रभु

यहोवा की ओर से सदा का नियम ठहरा। जो कोई उसे छुए वह पवित्र ठहरे।”

इसका शाब्दिक अर्थ है:

”यह है पाप (या अनिच्छित पाप) के चढ़ाने की विधि।”

(टिप्पणी: विभिन्न बाइबिल संस्करणों में पद की शब्दावली में थोड़े अंतर हो सकते हैं, लेकिन मूल संदेश यही रहता है कि यह पाप के चढ़ाने (sin offering) के संबंध में एक निश्चित विधि है।)

---

## 2. हिंदी में विस्तृत समझ

पाप के चढ़ाने (Sin Offering) की विधि का उद्देश्य

### 1. बलिदान का स्थान:

- **उत्तरी दिशा पर बलिदान:** पाप चढ़ाने का बलिदान (हटाअत) उसी स्थान पर किया जाना चाहिए जहाँ पर भेट (burnt offering) का बलिदान किया जाता है, यानी वेग (altar) के उत्तर भाग में।
- **मूल कारण:** ऐसा इसलिए ताकि उस व्यक्ति की गलती को सार्वजनिक रूप से उजागर न किया जाए। यदि पाप चढ़ाने का बलिदान उसी स्थान पर होता है, तो उसे अन्य बलिदानों की तरह ही देखा जाएगा और व्यक्ति की शर्मिंदगी नहीं बढ़ेगी।

### 2. सभी पाप चढ़ानों पर समान नियम:

- आयत में कहा गया है "גַּעֲמָה גַּרְאָתָה" अर्थात् "यह है पाप चढ़ाने की विधि", जिससे स्पष्ट होता है कि चाहे पाप चढ़ाने का बलिदान बाहरी (public) हो या भीतरी (private), उन पर समान नियम लागू होते हैं।
- एक विशेष नियम यह भी है कि यदि बलिदान के दौरान रक्त किसी वस्त्र पर गिर जाए, तो उस वस्त्र को धोना अनिवार्य है।

### 3. गोपनीयता और प्रतिष्ठा की सुरक्षा:

- पाप चढ़ाने का बलिदान इस तरह से किया जाता है कि उसका स्वरूप भेट (burnt offering) जैसा प्रतीत हो, जिससे व्यक्ति की गलती सार्वजनिक न हो और उसकी गरिमा बनी रहे।

### 4. पाप के चढ़ाने का महत्व:

- इसे अत्यंत पवित्र बलिदानों में गिना जाता है। पाप चढ़ाने का बलिदान अनजाने में हुई गलतियों के लिए प्रायश्चित का माध्यम होता था, और इसे एक व्यक्ति के जीवन का विकल्प माना जाता था।

## 3. रब्बी विद्वानों (रब्बियों) की व्याख्या और उदाहरण

### (a) राशी की व्याख्या

#### • मुख्य बिंदु:

राशी कहते हैं कि "גַּעֲמָה גַּרְאָתָה" का अर्थ है कि बाहरी (public) पाप चढ़ाने के

**साथ-साथ भीतरी (private) पाप चढ़ाने पर भी वही नियम लागू होते हैं।**

- **उदाहरण:**

यदि किसी व्यक्ति ने अनजाने में गलती की और उसके दो प्रकार के पाप चढ़ाने की आवश्यकता हुई, तो दोनों के लिए समान विधि अपनाई जानी चाहिए।

**(b) इब्र एज़रा की टिप्पणी**

- **मुख्य बिंदु:**

इब्र एज़रा बताते हैं कि पाप चढ़ाने का बलिदान अन्य पवित्र वस्तुओं की भाँति अत्यंत महत्वपूर्ण है, और इसका महत्व अन्य बलिदानों के समान है।

**(c) कली याकर की दृष्टि**

**मुख्य बिंदु:**

कली याकर ने एक प्रतीकात्मक व्याख्या दी है:

उन्होंने कहा कि मन (हृदय) बायीं ओर स्थित होता है और वही पाप का स्रोत माना जाता है।

इसलिए, उत्तरी भाग में बलिदान करके यह दर्शाया जाता है कि व्यक्ति ने अपने हृदय को बुराई से दूर कर लिया है।

इसके साथ ही, पाप चढ़ाने को भेट के बराबर समझा जाता है, जो कि सबसे उच्चतम बलिदान है।

**(d) मालबिम की व्याख्या**

- **मुख्य बिंदु:**

मालबिम बताते हैं कि "גָאַבְנָה תָוָרָתֶתֶת" का अर्थ है कि सभी प्रकार के पाप चढ़ानों के लिए समान नियम हैं।

- वे विशेष रूप से इस बात पर जोर देते हैं कि रक्त के किसी भी छींटे से वस्त्र दूषित हो जाए तो उसे धोना अनिवार्य है।

#### **(e) हामेक दावर की व्याख्या**

- **मुख्य बिंदुः**

हामेक दावर के अनुसार, पाप चढ़ाने का बलिदान उत्तरी भाग में इसलिए किया जाता है ताकि बलिदान का प्रकार भेट जैसा दिखाई दे।

- इसका उद्देश्य यह था कि गलती करने वाले की पहचान छिपाई जा सके और उसकी प्रतिष्ठा बनी रहे।

#### **(f) रब्बेनु बहया की टिप्पणी**

- **मुख्य बिंदुः**

रब्बेनु बहया ने बताया कि पाप चढ़ाने का बलिदान भी भेट के समान अत्यंत पवित्र है।

- उन्होंने बलिदानों के क्रम को इस प्रकार रखा कि सबसे पवित्र बलिदान पहले चर्चा में आएं।

#### **(g) छिजकुनी की व्याख्या**

- **मुख्य बिंदुः**

छिजकुनी कहते हैं कि जब पहली बार नियम उल्लिखित किए गए थे, तो यह स्पष्ट नहीं था कि क्या यह नियम सभी पाप चढ़ानों पर लागू होता है।

- अतः, पुनः दोहराव से यह सुनिश्चित किया गया कि सभी पाप चढ़ानों के लिए उत्तरी भाग में बलिदान करना अनिवार्य है।

## (h) डेविड पीड़ित व्यक्ति हॉफमैन

### की व्याख्या

- मुख्य बिंदुः

- डेविड पीड़ित व्यक्ति हॉफमैन ने विभिन्न Torah खंडों में बलिदानों के क्रम में अंतर समझाया है।
- उन्होंने बताया कि यह खंड (Seder Tzav) सबसे पवित्र बलिदानों को पहले सूचीबद्ध करता है।

## 4. आज के मसीही चर्च में पाप चढ़ाने (Sin Offering) का मान

### मसीही दृष्टिकोणः

#### 1. पुराने नियम की पूर्तिः

- मसीही धर्मशास्त्र में यह माना जाता है कि पुराना बलिदानी व्यवस्था अब पूरी तरह से ईसा मसीह की कुर्बानी में पूरी हुई है।
- ईसा मसीह को परमपरा में अंतिम और पूर्ण बलिदान माना जाता है, जिसने पुराने नियम के बलिदानों की आवश्यकता को समाप्त कर दिया।

#### 2. प्रतीकात्मक महत्वः

- जबकि यह नियम यहूदी कानून का हिस्सा हैं, अधिकांश मसीही चर्चे इन्हें प्रतीकात्मक मानते हैं।
- ईसा मसीह के बलिदान को पापों के प्रायश्चित के रूप में देखा जाता है, जो पहले के बलिदानों (जैसे पाप चढ़ाने) का प्रतिरूप है।

### 3. आध्यात्मिक परिवर्तन:

- मसीही धर्म में आंतरिक परिवर्तन और आत्मा की शुद्धि पर अधिक बल दिया जाता है, बजाय शारीरिक बलिदानों के।
- इसलिए, पाप के लिए प्रायश्चित अब विश्वास, पश्चाताप और ईसा मसीह में विश्वास के द्वारा मुमकिन होता है।

### उदाहरण:

- पुराने नियम में:
 

किसी व्यक्ति ने अनजाने में गलती की तो उसे पाप चढ़ाने का बलिदान अर्पित करना पड़ता था ताकि उसकी गलती का प्रायश्चित हो सके और वह पुनः ईश्वर के निकट आ सके।
- नए नियम में:
 

मसीही मान्यताओं के अनुसार, ईसा मसीह के बलिदान ने उस आवश्यकता को समाप्त कर दिया। विश्वासियों के लिए, उनके पापों का प्रायश्चित उनके विश्वास और पश्चाताप द्वारा होता है, न कि किसी जानवर के बलिदान द्वारा।

## निष्कर्ष

- **बाइबल पद:**

लेवीये 6:18 में "גָּאַתְּנָה תָּרָאָתָּה" लिखा है, जिसका मतलब है कि यह पाप चढ़ाने की विधि है।

- **हिंदी में समझ:**

यह विधि इस प्रकार निर्धारित करती है कि पाप चढ़ाने का बलिदान उत्तरी दिशा में किया जाए, ताकि व्यक्ति की गरिमा बनी रहे और उसका प्रायश्चित्त सुनिश्चित हो।

- **रब्बी व्याख्याएँ:**

विभिन्न रब्बियों (जैसे राशी, इब्र एज़रा, कली याकर, मालबिम, हामेक दावर, रब्बेनु बह्या, छिजकुनी, और डेविड पीड़ित व्यक्ति हॉफमैन) ने इस विषय पर अलग-अलग बिंदुओं पर जोर दिया-जैसे कि नियम का सार्वभौमिक प्रभाव, प्रतीकात्मक अर्थ, और गलती करने वाले की गरिमा की सुरक्षा।

- **मसीही चर्च का दृष्टिकोण:**

आज के मसीही चर्च में पुराने नियम के बलिदानी व्यवस्था को अब ईसा मसीह के बलिदान द्वारा पूरा माना जाता है। मसीही विश्वास के अनुसार, ईसा मसीह का बलिदान ही अंतिम और पूर्ण प्रायश्चित्त है, जिससे पापों की सफाई और आत्मिक परिवर्तन संभव होता है।

इस प्रकार, जबकि यहूदियों के लिए पाप चढ़ाने के नियमों का एक विशेष महत्व है, मसीही

धर्मशास्त्र में इन्हें अब प्रतीकात्मक रूप में देखा जाता है और ईसा मसीह के बलिदान को ही अंतिम बलिदान माना जाता है।

P 65 Le.7:1 On the Guilt-Offering

"अपराध बलिदान के विषय में यह व्यवस्था है: वह पवित्र पवित्र वस्तु है। जिस स्थान पर होमबलि को वध किया जाता है, उसी स्थान पर अपराध बलिदान को भी वध किया जाएगा, और उसका लहू वेदी के चारों ओर छिड़का जाएगा।" (लैब्यव्यवस्था 7:1-2)

---

## 1. *Asham* (अपराध बलिदान) का हिंदी में विवरण

(1) *Asham* सबसे पवित्र बलिदान है:

टोराह इसे "कोदेश कोदाशिम" (पवित्र पवित्र) कहता है, जैसे पापबलि (*Chatat*) और अनाजबलि (*Mincha*) के लिए कहा गया है। यह दिखाता है कि इस बलिदान का विशेष महत्व था और इसे अत्यधिक शुद्धता के साथ चढ़ाना आवश्यक था।

(2) *Asham* का उद्देश्य:

- *Asham* केवल अपराध या दोष का प्रायश्चित नहीं था, बल्कि यह पूरी व्यवस्था को पुनर्स्थापित करने का माध्यम था।
- यह बलिदान उन लोगों के लिए था जिन्होंने अज्ञानता या गलती से पाप किया था, जैसे कि गलत तरीके से परमेश्वर की पवित्र वस्तुओं का उपयोग करना (लैब्यव्यवस्था 5:15-

**16), या झूठी शपथ लेना (लैंब्यव्यवस्था 5:20-26)।**

- *Asham* बलिदान के साथ अक्सर हजारे का भुगतान भी करना पड़ता था, जिससे यह स्पष्ट होता है कि यह बलिदान केवल पश्चाताप का कार्य नहीं था, बल्कि हानि की भरपाई भी आवश्यक थी।

### (3) *Asham* की बलि विधि:

- *Asham* को उसी स्थान पर बलि किया जाता था जहाँ होमबलि (*Olah*) चढ़ाया जाता था- वेदी के उत्तर दिशा में।
  - इस बलिदान के रक्त को वेदी के चारों ओर छिड़का जाता था।
  - मांस केवल याजकों (पुरोहितों) द्वारा खाया जा सकता था और वह भी पवित्र स्थान में।
- 

## 2. रब्बियों की व्याख्याएँ

### (1) अबारबनेल (Abarbanel) का दृष्टिकोण:

अबारबनेल समझाते हैं कि *Asham* बलिदान के नियमों को एक स्थान पर रखा गया है क्योंकि इसके नियम अन्य बलिदानों की तरह नहीं बदलते। पापबलि (*Chatat*) और मेलबलि (*Shelamim*) में विभिन्न प्रकार के पशु होते हैं, लेकिन *Asham* हमेशा एक मेढ़ा होता था।

### (2) अल्शेख (Alshekh) का दृष्टिकोण:

- *Asham* को वेदी के उत्तर में बलि करना दर्शाता है कि परमेश्वर पश्चातापी को अस्वीकार नहीं करता।

- *Asham* और होमबलि (*Olah*) का स्थान एक ही होना दिखाता है कि पश्चाताप करने वाला व्यक्ति पवित्रता की उसी स्थिति तक पहुँच सकता है जैसे कि वह जिसने कभी पाप ही नहीं किया।
- वे कहते हैं कि जैसे *Asham* का लहू छिड़का जाता है, वैसे ही पश्चातापी की आँखों से बहने वाले आँसू भी स्वर्गीय वेदी पर छिड़के जाते हैं।

### (3) राशी (Rashi) का दृष्टिकोण:

- जब लिखा है "यह पवित्र पवित्र वस्तु है," तो इसका अर्थ यह है कि कोई भी जानवर जिसे *Asham* के बदले रखा जाए (*Temurah* - स्थानांतरण), वह वैध नहीं होगा।

### (4) डिव्रे डेविड (Divrei David) का दृष्टिकोण:

- यदि किसी ने *Asham* बलिदान के लिए एक पशु अलग रखा और फिर उसे दूसरे जानवर से बदल दिया, तो मूल पशु तो बलिदान के योग्य रहेगा, लेकिन बदला गया पशु नहीं।
- ऐसा जानवर या तो चरागाह में छोड़ दिया जाता था जब तक कि वह दोषयुक्त न हो जाए, या फिर उसे बेचकर उसका धन स्वैच्छिक भेंट के लिए उपयोग किया जाता था।

### (5) रब्बी शमशोन रेफाएल हिर्श (Rav Hirsch) का दृष्टिकोण:

- यदि किसी ने *Asham* बलिदान के लिए अलग किए गए पशु को बदला, तो वह सीधा *Olah* (होमबलि) के रूप में गिना जाता है, क्योंकि अब वह मूल उद्देश्य के लिए अयोग्य हो चुका होता है।

### (6) चोमत अनाख (Chomat Anakh) का दृष्टिकोण:

- वे कहते हैं कि "אשָׁם" (Asham) शब्द का संख्यात्मक मान (गेमात्रिया) "शांति" शब्द के समान है, जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि यह बलिदान शांति बहाल करने का कार्य करता था।
- 

### 3. मसीही चर्च में Asham का महत्व

#### (1) मसीह प्रभु यीशु का Asham के साथ संबंध:

- यशायाह 53:10 में मसीहा को Asham बलिदान के रूप में देखा गया है:  
"परन्तु प्रभु प्रभु यहोवा को यह अच्छा लगा कि वह उसे कुचले; उसने उसे दुखी किया; जब तू उसका प्राण अपराधबलि ठहराएगा, तब वह एक वंश देखेगा, और उसके दिन बहुत होंगे; और प्रभु प्रभु यहोवा की इच्छा उसके हाथ से पूरी होगी।"
- प्रभु यीशु मसीह ने अपने बलिदान द्वारा सम्पूर्ण मानवजाति के लिए Asham बलिदान को पूरा किया।

#### (2) पश्चाताप और क्षमा का सिद्धांतः

- मसीही दृष्टिकोण में Asham बलिदान एक छाया थी जो अंततः प्रभु यीशु मसीह के बलिदान में पूरी हुई।
- जैसे Asham बलिदान के द्वारा व्यक्ति को पश्चाताप और क्षमा मिलती थी, वैसे ही प्रभु यीशु में विश्वास करने वाले को पापों की क्षमा और परमेश्वर से मेल मिलाप मिलता है।

### (3) आज का मसीही जीवन और *Asham* बलिदान:

- आज चर्च में *Asham* के सिद्धांत को आत्मिक रूप में अपनाया जाता है:
    - **पश्चाताप आवश्यक है:** केवल विश्वास करना पर्याप्त नहीं, हमें पश्चाताप करना आवश्यक है।
    - **मसीह के बलिदान को स्वीकार करना:** पुराने नियम में *Asham* बलिदान के द्वारा व्यक्ति की शुद्धता बहाल होती थी, अब मसीह में वह शुद्धता स्थायी रूप से दी जाती है।
    - **आत्मिक बलिदान:** रोमियों 12:1 हमें सिखाता है कि अब हमें अपने शरीर को जीवित बलिदान के रूप में परमेश्वर को समर्पित करना चाहिए।
- 

## 4. निष्कर्ष

- *Asham* बलिदान पवित्र पवित्र (*Kodesh Kodashim*) था, और इसका मुख्य उद्देश्य व्यवस्था को पुनर्स्थापित करना था।
- यह बलिदान दिखाता था कि परमेश्वर पश्चाताप करने वाले को अस्वीकार नहीं करता।
- विभिन्न रब्बियों ने इसके महत्व को समझाने के लिए कई दृष्टिकोण दिए हैं।
- मसीही विश्वास में, प्रभु यीशु मसीह को परम *Asham* बलिदान माना जाता है, जिसने अपने बलिदान द्वारा सभी के लिए मुक्ति और मेल मिलाप प्रदान किया।

इसलिए, *Asham* बलिदान केवल एक रस्म नहीं था, बल्कि परमेश्वर की दया, न्याय और पुनर्स्थापन की योजना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था।

P 66 Le.3:1 On the Peace-Offering

### लैब्यव्यवस्था 3:1 (Leviticus 3:1)

**बाइबल पद (हिंदी - IRV):**

"यदि कोई व्यक्ति प्रभु प्रभु यहोवा को मेलबलि अर्पित करे, तो यदि वह गाय-बैल हो, तो नर या मादा कोई भी हो सकता है। लेकिन वह पशु निर्दोष होना चाहिए।"

---

### शेलामिम(मेलबलि) का अर्थ

#### 1. मेलबलि का अर्थ और उद्देश्य

शेलामिम (मालूम) शब्द मालूम (शालोम) से निकला है, जिसका अर्थ होता है "शांति, पूर्णता, या समग्रता"। यह बलिदान प्रभु प्रभु यहोवा के साथ मेल (शांति) बनाए रखने, धन्यवाद प्रकट करने और आनंद के लिए चढ़ाया जाता था। यह एक विशेष प्रकार का बलिदान था जिसमें:

- बलिदानकर्ता, याजक और प्रभु प्रभु यहोवा तीनों का हिस्सा होता था।
  - यह बलिदान केवल किसी पाप का प्रायश्चित करने के लिए नहीं, बल्कि प्रभु प्रभु यहोवा की कृपा, आशीष और सुरक्षा के लिए कृतज्ञता दिखाने के लिए दिया जाता था।
  - इसे "शांति का बलिदान" (peace offering) भी कहा जाता था क्योंकि यह परमेश्वर और मनुष्य के बीच सामंजस्य और शांति को दर्शाता था।
-

## 2. मेलबलि के घटक और प्रक्रिया

### (1) पशु का चुनाव

- यह बलिदान गाय-बैल, भेड़, या बकरी में से कोई भी हो सकता था।
- नर या मादा कोई भी हो सकता था, लेकिन निर्दोष (blemish-free) होना आवश्यक था।
- यह बलिदान प्रभु प्रभु यहोवा के मिलापवाले तंबू (Tabernacle) के द्वार पर चढ़ाया जाता था।

### (2) बलिदान की विधि

1. **पशु की हत्या** - बलिदानकर्ता खुद पशु का वध करता था।
  2. **रक्त की छिड़काव** - याजक वेदी के चारों ओर रक्त छिड़कते थे।
  3. **चर्बी जलाना** –
    - याजक किडनी के पास की चर्बी, यकृत की चर्बी, और आतों को टकने वाली चर्बी को वेदी पर जलाते थे।
    - यह प्रभु प्रभु यहोवा के लिए "मीठी सुगंध" का बलिदान माना जाता था।
  4. **याजकों का भाग** –
    - छाती (breast) और दाहिनी जांघ (right thigh) याजकों को दिया जाता था।
  5. **बलिदानकर्ता का भाग** –
    - बाकी मांस बलिदानकर्ता और उसके परिवार द्वारा खाया जाता था।
- यहां परंपरा में इसे एक पवित्र भोज माना जाता था, जिसमें बलिदानकर्ता प्रभु प्रभु

यहोवा के साथ सहभागिता करता था।

---

### 3. यहूदी रब्बियों की व्याख्या

#### (1) अबारबनेल (Abarbanel)

उन्होंने कहा कि शेलामिम बलिदान तीन भागों में विभाजित होता है:

**प्रभु प्रभु यहोवा (चर्बी जलाकर)**

**याजक (छाती और दाहिनी जांघ)**

**बलिदानकर्ता (बाकी मांस)**

उन्होंने इसे "तीन पवित्र मेजों" से जोड़ा:

**वेदी (altar) - प्रभु प्रभु यहोवा की मेज़**

**मिलापवाले तंबू का आंगन - याजकों की मेज़**

**यरूशलेम का नगर - बलिदानकर्ताओं की मेज़**

#### (2) रब्बी हिर्श (Rav Hirsch)

- उन्होंने कहा कि शेलामिम केवल यहूदी बलिदान है, क्योंकि यह आनंद, पूर्णता और धन्यवाद में चढ़ाया जाता था।
- उन्होंने गैर-यहूदी बलिदानों की तुलना ओलाह(संपूर्ण होम बलिदान) से की, जिसमें सबकुछ जला दिया जाता था।

#### (3) चिज़कुनी (Chizkuni)

- उन्होंने शेलामिम को "वचन का भुगतान" कहा। यानी यह बलिदान कोई प्रतिज्ञा (vow) पूरी करने के लिए चढ़ाया जाता था।

#### (4) डेविड झ्वी हॉफमैन (David Zvi

**Hoffmann)**

- उन्होंने इसे "परमेश्वर के साथ एक भोज" बताया, जिससे यह पता चलता है कि परमेश्वर और मनुष्य के बीच सामंजस्य और मेल बना हुआ है।

#### (5) मालबिम (Malbim)

उन्होंने विश्लेषण किया कि लैब्यव्यवस्था 3:1 में लिखा "यदि" (וְאִם - im) दर्शाता है कि यह बलिदान ऐच्छिक (optional) था, अनिवार्य नहीं।

---

## 4. आज के मसीही चर्च में इसका क्या अर्थ है?

#### (1) प्रभु यीशु मसीह - परमेश्वर

और मनुष्य के बीच मेल

मसीही विश्वास के अनुसार, प्रभु यीशु मसीह हमारा "परम शांति बलिदान" (Ultimate Peace Offering) है।

- इफिसियों 2:14 कहता है: "क्योंकि वही (प्रभु यीशु) हमारी शांति है, जिसने दोनों (यहूदी और अन्यजाति) को एक कर लिया और बैर की दीवार को गिरा दिया।"
- मसीहियों का विश्वास है कि प्रभु यीशु का क्रूस पर दिया गया बलिदान परमेश्वर और

**मनुष्य के बीच स्थायी शांति और मेल लेकर आया।**

## (2) पवित्र भोज (Holy Communion) - शेलामिम का प्रतीक

- जैसे शेलामिम बलिदान में बलिदानकर्ता, याजक और परमेश्वर का हिस्सा होता था, वैसे ही पवित्र भोज में परमेश्वर और विश्वासियों के बीच सहभागिता होती है।
- कृतिनियों 10:16-17 कहता है: "जिस आशीर्वाद के कटोरे को हम आशीष देते हैं, क्या वह मसीह के लहू में सहभागिता नहीं? और जिस रोटी को हम तोड़ते हैं, क्या वह मसीह की देह में सहभागिता नहीं?"

## (3) धन्यवाद और आराधना का बलिदान

- इब्रानियों 13:15 - "इसलिए आओ, हम उसके द्वारा सदा परमेश्वर के लिए धन्यवाद का बलिदान चढ़ाएं, जो हमारे होठों का फल है, अर्थात् उसके नाम का अंगीकार करना।"
  - आज के मसीही बलिदान "प्रशंसा और भक्ति" के रूप में देखे जाते हैं, न कि पशु बलिदान के रूप में।
- 

## निष्कर्ष

- शेलामिम बलिदान "धन्यवाद, आनन्द और शांति" का प्रतीक था।
- यह परमेश्वर, याजकों और बलिदानकर्ता के बीच साझेदारी को दर्शाता था।
- यहूदी परंपरा में इसे परमेश्वर के साथ भोज और आत्मिक पूर्णता का बलिदान माना जाता था।

- मसीही विश्वास में, प्रभु यीशु मसीह को "परम शांति बलिदान" (Ultimate Peace Offering) माना जाता है, जिसने सभी को परमेश्वर से मिला दिया।
- पवित्र भोज (Holy Communion) को मसीही शैलामिय के रूप में देखा जाता है, जहाँ विश्वासी परमेश्वर के साथ सहभागिता रखते हैं।

P 67 Le.2:1; On the Meal-Offering

"यदि किसी व्यक्ति को प्रभु प्रभु यहोवा के लिए *minchah* (भोजन बलि) अर्पित करनी हो,  
तो वह बारीक आटे से इसे तैयार करेगा; और उसमें तेल डालेगा और उस पर लोबान  
रखेगा।"

### बाइबल में *Minchah* (भोजन बलि) का पद

*Minchah* शब्द का उल्लेख कई बार बाइबल में किया गया है, और इसका अर्थ है " (अन्नबली )भोजन की बलि" या "परोसा गया भोजन"। इसका सबसे प्रमुख उल्लेख लेवितिकस (Leviticus) 2:1-16 में है, जहाँ यह बलि के रूप में दी जाती है। यहाँ पर एक उदाहरण दिया गया है:

"यदि कोई व्यक्ति प्रभु प्रभु यहोवा के पास *minchah* अर्पित करना चाहे, तो वह इसे बारीक गेहूँ के आटे से तैयार करेगा, और उसमें तेल डालेगा और उस पर लोबान रखेगा। यह *minchah* की बलि होगी।"

### हिंदी में समझाया गया

मिन्चाह (भोजन बलि) एक प्रकार की बलि होती है जो विशेष रूप से व्यक्तिगत रूप से दी जाती थी। यह गरीब व्यक्ति द्वारा दी जाने वाली बलि होती थी, जो आमतौर पर गेहूँ के आटे, तेल और लोबान से तैयार की जाती थी।

- **किसी गरीब का समर्पण:** यदि कोई व्यक्ति गरीब होता, तो वह *minchah* अर्पित करता। यह एक तरह से व्यक्ति का परमेश्वर के प्रति समर्पण और श्रद्धा का प्रतीक था।

गरीब व्यक्ति का यह *minchah* उसकी समर्पण भावना को दर्शाता था, क्योंकि यह उसके पास जो था, वही अप्रिंत करता था।

- **शब्दों का महत्व:** *Minchah* का अर्थ "उपहार" या "उत्सर्ग" होता है। यह परमेश्वर के प्रति आदर और समर्पण को व्यक्त करता है, क्योंकि यह बलि न तो पाप के लिए होती थी, न फिर भी यह किसी प्रकार की नियमित बलि होती थी।

## रब्बियों द्वारा विभिन्न व्याख्याएँ

1. **राशी:** राशी ने इस बलि को गरीबों का बलि बताया और यह भी कहा कि *minchah* के विभिन्न प्रकार हैं, और सबसे शुद्ध प्रकार *minchat solet* है। राशी ने यह भी बताया कि तेल पूरे आटे पर डाला जाता था, लेकिन लोबान केवल आटे के एक हिस्से पर डाला जाता था।
2. **इब्र एज़रा:** इब्र एज़रा ने *nefesh* शब्द को बलि की स्वेच्छा को इंगीत किया, और यह बताया कि गेहूँ का आटा शुद्ध होना चाहिए।
3. **मालबिम:** मालबिम ने कहा कि *minchah* बलि का उद्देश्य परमेश्वर के पास नजदीकी प्राप्त करना है। वह यह भी कहते हैं कि यह एक साक्षात्कार और समर्पण की प्रक्रिया थी।
4. **रव हि�र्श:** उन्होंने इसे एक व्यक्ति के परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत संबंध के रूप में व्याख्यायित किया और यह बताया कि इस बलि का उद्देश्य यह दर्शाना है कि सभी संपत्ति परमेश्वर की है।

5. **आबारबनेल:** आबारबनेल ने इसका सम्बन्ध युवा अवस्था से जोड़ा और कहा कि इसका प्रयोग उस समय के दौरान की अनियंत्रित इच्छाओं पर काबू पाने के लिए किया जाना चाहिए।

## आज के मसीही चर्च में *Minchah* का महत्व

वर्तमान समय में, मसीही चर्च में *minchah* बलि का कोई प्रत्यक्ष उपयोग नहीं है। हालांकि, यह बलि नए नियम के अंतर्गत, प्रभु यीशु मसीह की बलि के रूप में पूरी हुई मानी जाती है। प्रभु यीशु ने स्वयं को बलि के रूप में अर्पित किया, और इस प्रकार, मसीही धर्म में अब किसी प्रकार के पशु या भोजन बलि की आवश्यकता नहीं है।

- **प्रभु यीशु की बलि:** मसीहियों के अनुसार, प्रभु यीशु ने कूस पर अपनी जान दी, जो सभी पुराने नियम की बलियों का प्रतिस्थान है। यह बलि परमेश्वर के साथ पुनः संबंध स्थापित करने के लिए थी और अब किसी प्रकार की अन्य बलि की आवश्यकता नहीं है।
- **समर्पण का प्रतीक:** मसीही दृष्टिकोण से, *minchah* अब एक रूपक बन गया है, जो मसीही विश्वासियों द्वारा परमेश्वर के प्रति समर्पण और उपकार की भावना को व्यक्त करता है। मसीही इसे अपने दैनिक जीवन में ईश्वर के प्रति समर्पण के रूप में देख सकते हैं, जैसे कि सेवा, प्रार्थना, और दूसरों के प्रति दया।

संक्षेप में, *minchah* एक पुरानी परंपरा थी जो अब मसीही विश्वास में प्रभु यीशु के बलिदान के माध्यम से पूरी हो चुकी है।

P 68 Le.4:13 On offerings for a Court (Sanhedrin) that has erred

### **बाइबल पदः**

#### **लिविटिकस 4:13 (हिन्दू बाइबल में)**

"यदि इस्राएल की पूरी सभा अनजाने में कोई ऐसा पाप कर बैठती है, जो प्रभु  
प्रभु यहोवा की आज्ञाओं के खिलाफ है, और यदि उनका पाप उनके सामने  
प्रकट होता है, तो वे अपनी गलती के लिए एक बकरा, एक बिना दोष का  
बकरा, पाप-बलि के रूप में लाएंगे।"

यहां यह बताया गया है कि यदि पूरी सभा (जिसमें संप्रभुता, न्यायाधीश, और आम लोग शामिल हैं) कोई गलती करती है, तो इसके लिए एक बकरा (जो पाप-बलि के रूप में होगा) लाना होगा।

यह चर्चा लिविटिकस (Leviticus) 4:13-21 से संबंधित है, जहाँ यह वर्णित है कि यदि इस्राएल की पूरी सभा (कुल समुदाय) गलती करती है, तो उन्हें शुद्धि का एक तरीका दिया गया है, जो इस्राएल की संप्रभुता, पाप के लिए जिम्मेदारी, और याजकों के बीच के रिश्ते को दर्शाता है। इस विशेष स्थिति में, यह पाप का कारण संप्रभुता में एक असावधानी है, और यह गलत समझ एक सामूहिक रूप में साझा की जाती है।

### **हिंदी में समझाना:**

यह स्थिति उस समय के धार्मिक दृष्टिकोण से बहुत महत्वपूर्ण थी, जब संप्रभुता या उच्च न्यायिक

निकाय, जैसे कि सैनहेड्रिन (जो सबसे बड़ी धार्मिक अदालत है), यदि कोई त्रुटि (गलती) करते हैं तो उसके लिए पूरे समुदाय को जिम्मेदार ठहराया जाता है। इस गलती को "शाग़ा" (अज्ञानता या अनजाने में की गई गलती) के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। यह गलती कोई ऐसी बात होती है, जिसे जानबूझकर करना गंभीर होता है, लेकिन क्योंकि यह गलती अनजाने में हुई थी, इसलिए इसके लिए परचाताप की आवश्यकता होती है।

जब समुदाय इस गलती को स्वीकार करता है, तो यह अपने पाप का प्रायशिचित करने के लिए एक पाप बलि (जैसे बकरा) अर्पित करता है। यह बलि केवल पशु की बलि नहीं, बल्कि उस सामूहिक पाप को ठीक करने का एक प्रतीक है, जिससे यह प्रदर्शित होता है कि समुदाय ने अपनी गलती को स्वीकार किया और उसे सुधारने की कोशिश की।

---

### रब्बियों की व्याख्याएँ:

1. **राशी:** राशी के अनुसार, इस स्थिति में आदत इस्राएल (सम्पूर्ण इस्राएल की सभा) का अर्थ सैनहेड्रिन (उच्च न्यायिक निकाय) से है, और उनकी गलती उस प्रकार की हो सकती है जो जानबूझकर की जाए, जैसे कोई कानून तोड़ने का निर्णय।
2. **डेविड त्पीड़ित व्यक्तिहोफमैन:** होफमैन यह बताते हैं कि एदाह (सभा) और काहल (जनता) में भिन्नता है। वे मानते हैं कि एदाह सैनहेड्रिन के लिए प्रयोग किया जाता है, जबकि काहल जनता को संदर्भित करता है। इसका मतलब यह है कि सैनहेड्रिन की गलती से पूरी जनता को जिम्मेदार ठहराया जाता है।
3. **मलबिम:** मलबिम का मानना है कि यह गलती केवल "सैद्धांतिक" (सिद्धांत से

संबंधित) हो सकती है, न कि व्यावहारिक, और यह गलती सिर्फ सैनहेड्रिन द्वारा हो सकती है।

4. **रव हिंश:** रव हिंश के अनुसार, यह गलती केवल एक "सैद्धांतिक" गलतफहमी हो सकती है, और इसका परिणाम जनता पर होना चाहिए, क्योंकि वे सैनहेड्रिन के निर्णय का पालन कर रहे थे।
  5. **सफोर्नो:** सफोर्नो ने बताया कि "त्सेशुबह" (पश्चाताप) और बलि लाने से पहले गलती की स्वीकृति और सुधार का महत्व है।
- 

### **मसीही चर्च में इसका महत्व:**

आज के मसीही चर्चों में "पाप के लिए पश्चाताप" और "कलीसिया की गलती" पर विचार करने की महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। यद्यपि ये विषय सीधे तौर पर लिविटिक्स 4 के उन नियमों से नहीं जुड़े होते, फिर भी मसीही चर्च में सामूहिक पाप और उसके लिए पश्चाताप का महत्व विशेष रूप से प्रकट होता है। **मसीही विश्वास के अनुसार, प्रभु यीशु मसीह ने कूस पर अपने बलिदान के द्वारा पूरी मानवता के पापों का प्रायश्चित किया है।** फिर भी, व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से **पश्चाताप की प्रक्रिया को महत्वपूर्ण माना जाता है।**

**कुछ चर्चों में, सामूहिक गलती या पाप के लिए एक सामूहिक कन्फेरेन्स (स्वीकृति और प्रायश्चित) किया जाता है, जबकि अन्य में यह व्यक्तिगत रूप से किया जाता है।** यहां भी यह विचार किया जाता है कि विश्वासियों को उनके पापों के लिए पश्चाताप करने की आवश्यकता है, जैसा कि पुराने नियम में समुदायों को दिखाया गया था।

आज के मसीही दृष्टिकोण में, प्रभु यीशु का बलिदान इस नियम से कहीं अधिक गहरा और व्यापक माना जाता है, क्योंकि वह सर्वश्रेष्ठ बलिदान है जो सभी पापों के प्रायश्चित्त के रूप में कार्य करता है, लेकिन पुराने नियम के पश्चाताप और शुद्धता के सिद्धांत अब भी महत्वपूर्ण माने जाते हैं।

---

### निष्कर्षः

यहाँ यह महत्वपूर्ण है कि हम समझें कि पुराने नियम में जो संप्रभुता की गलतिया थीं, वे उन समुदायों के लिए एक प्रक्रिया थी, जिसमें पश्चाताप और बलि की आवश्यकता होती थी।

मसीही दृष्टिकोण में, प्रभु यीशु मसीह ने इस प्रथा को पूरा किया और मसीही विश्वासियों को विश्वास और पश्चाताप के द्वारा शुद्ध होने का मार्ग दिखाया।

P 69 Le.4:27 Fixed Sin-Offering, by one unknowingly breaking a karet

### लेवितिकस 4:27 (हिंदी बाइबल):

"यदि कोई सामान्य लोग में से कोई भूलवश उस काम को करता है जिसे प्रभु प्रभु यहोवा ने करने से मना किया है, और वह दोषी ठहरता है,"

**Leviticus 4:27 (KJV):** "And if any one of the common people sin through error, in doing any of the things which the LORD has commanded not to be done, and be guilty;"

### हिंदी में समझाइएः

लेवितिकस 4:27 में यह बताया गया है कि यदि सामान्य लोग गलती से कोई ऐसा कार्य करते हैं जो परमेश्वर ने करने से मना किया है, तो वे दोषी माने जाते हैं और उन्हें प्रायश्चित के लिए बलि चढ़ानी चाहिए। यहाँ "सामान्य लोग" से तात्पर्य उन लोगों से है जो पवित्र कार्यों के प्रभारी नहीं हैं, अर्थात् वे न तो याजक हैं और न ही राजा।

यहाँ पर गलती से हुए पाप की बात की गई है, यानी ऐसा पाप जो जानबूझ कर न किया गया हो, लेकिन फिर भी वह पाप माना जाता है और उसके लिए प्रायश्चित के उपाय बताए गए हैं। यह भी महत्वपूर्ण है कि इस पाप के लिए व्यक्तिपरक कर्तव्य और जिम्मेदारी है, क्योंकि एक व्यक्ति को अपने पाप का एहसास होना चाहिए और उसे प्रायश्चित करना चाहिए।

## रब्बी इंटरप्रिटेशन और विचार:

### 1. "Nefesh Achat" (कोई एक व्यक्ति):

- रब्बियों के अनुसार "nefesh achat" का मतलब है कि यह बलि एक व्यक्तिगत पाप के लिए है। यह तब लागू होती है जब एक व्यक्ति अकेले पाप करता है। इसका अर्थ है कि जब दो लोग एक साथ पाप करते हैं, तो उन्हें अलग-अलग बलि देने की आवश्यकता नहीं होती। उदाहरण के तौर पर, यदि एक व्यक्ति किसी काम का पहला भाग करता है और दूसरा व्यक्ति उसका दूसरा भाग करता है, तो उन्हें व्यक्तिगत रूप से बलि की आवश्यकता नहीं होती। हालांकि, यदि दोनों एक साथ ऐसा कार्य करते हैं जिसे कोई अकेले नहीं कर सकता, तो दोनों को बलि चढ़ानी होगी।

## 2. "Me'am Ha'aretz" (सामान्य लोग):

- इस वाक्यांश का अर्थ है कि बलि केवल आम लोगों द्वारा दी जाएगी, न कि प्रमुख व्यक्तित्वों द्वारा। इसमें *kohen mashiach* (अलंकरण याजक) और *nasi* (राजा) शामिल नहीं हैं, जिनके लिए अलग-अलग बलि की व्यवस्था है। *Mumar* (धर्मत्यागी) भी इसमें शामिल नहीं हैं क्योंकि उन्हें पाप के लिए पश्चाताप का एहसास नहीं होता और उनका पाप जानबूझकर किया गया होता है।

## 3. "Be'asotah" (इस काम को करने में):

- इसका मतलब है कि व्यक्ति ने स्वयं गलत निर्णय लिया हो और न कि अदालत की गलत सलाह के कारण। यदि कोई अदालत की गलत सलाह का पालन करता है, तो उसे बलि नहीं चढ़ानी होती, लेकिन यदि उसने यह जानकर सलाह का पालन किया कि वह गलत है, तो उसे बलि चढ़ानी होगी। यह आयत यह सिखाती है कि व्यक्ति की व्यक्तिगत जिम्मेदारी महत्वपूर्ण है।

## पाप और जिम्मेदारी का स्वभाव:

यह नियम यह दर्शाता है कि यहां तक कि अनजाने में किया गया पाप भी जिम्मेदारी का पात्र है। यह इस बात को दर्शाता है कि मनुष्य को अपनी हर क्रिया के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, चाहे वह जानबूझकर हो या गलती से। इस दृष्टिकोण से पाप केवल शारीरिक कार्य नहीं, बल्कि आत्मिक (आध्यात्मिक) भी है। रब्बी आलशेख का कहना है कि पाप केवल शारीरिक क्रियाओं का परिणाम नहीं है, बल्कि यह आत्मा से जुड़ी हुई एक गहरी

समस्या है।

## मसीही धर्म में इसका महत्व:

- मसीही धर्म में, लेवितिकस 4:27 की परिभाषा के आधार पर, प्रभु यीशु मसीह की बलि को एक समग्र पाप के प्रायशिचित के रूप में देखा जाता है। जैसे लेवितिकस में कहा गया है कि पाप को ढकने के लिए बलि चढ़ानी चाहिए, वैसे ही प्रभु यीशु ने अपने बलिदान के द्वारा पूरी मानवता के पापों का प्रायशिचित किया। मसीही विश्वास में यह विश्वास है कि प्रभु यीशु का बलिदान एक अंतिम और पूर्ण बलि है जो सभी मानवता के पापों को ढकता है, चाहे वे जानबूझकर किए गए हों या गलती से।

इस आयत का मसीही चर्च में यह मान है कि मसीह की बलि ने सभी पापों के लिए एक बार और हमेशा के लिए प्रायशिचित कर दिया है, और अब हमें अपने पापों को पहचानने और पश्चाताप करने की आवश्यकता है। यह विचार कि पाप अनजाने में भी किया जा सकता है, मसीही विश्वास में इस बात को और अधिक स्पष्ट करता है कि मसीह का बलिदान सभी प्रकार के पापों के लिए है।

## उदाहरण:

मान लीजिए एक व्यक्ति गलती से किसी ऐसे काम को करता है जिसे परमेश्वर ने मना किया है, जैसे कि झूठ बोलना या किसी का धन चोरी करना, लेकिन उसे इसका अहसास नहीं था। वह व्यक्ति जब पश्चाताप करता है और परमेश्वर से माफी मांगता है, तो उसे प्रायशिचित के रूप में बलि देने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि मसीह ने सभी पापों के लिए एक बलि दी है। यह मसीही विश्वास का मुख्य आधार है।

P 70 Le.5:17 - 18 Suspensive Guilt-Offering if doubt of breaking a karet

### **लेविटिकस 5:17-18 (हिंदी बाइबल):**

5:17 ”यदि कोई व्यक्ति प्रभु प्रभु यहोवा के आदेशों में से किसी एक का उल्लंघन कर बैठता है,  
और जानबूझकर वह पाप करता है, तो वह दोषी होगा, और उसे अपने पाप के लिए एक बकरा,  
जो एक निर्दोष और बिना दोष वाला हो, बलि में चढ़ाना होगा।”

5:18 ”उस व्यक्ति को उस पाप के लिए एक निर्दोष बकरा, जो एक निर्दोष और बिना दोष वाला  
हो, को लाकर प्रभु प्रभु यहोवा के पास चढ़ाना होगा; और याजक उसके द्वारा किए गए पाप के  
लिए प्रायश्चित्त करेगा, और वह क्षमा किया जाएगा।”

### **पद 17**

लेविटिकस 5:17-19 में उस व्यक्ति के लिए अशाम तलुय(अस्थायी दोष बलि) के बारे में बताया  
गया है जो इस बात को लेकर अनिश्चित है कि उसने कोई ऐसा पाप किया है, जिसके लिए करेट  
(ईश्वर से भयंकर दंड) का दंड है। यह बलि तब दी जाती है जब व्यक्ति यह नहीं जानता कि उसने  
कोई नकारात्मक आज्ञा का उल्लंघन किया है, जिसके परिणामस्वरूप करेट दंड हो सकता है।

यह बलि तब होती है जब कोई व्यक्ति पाप के बारे में अनिश्चित हो और यह जानता हो कि उसने  
किसी धार्मिक आदेश का उल्लंघन किया है, लेकिन उसे इस बात का यकीन नहीं होता कि उसने  
इसे जानबूझकर किया है। इस बलि के माध्यम से, व्यक्ति अस्थायी रूप से अपने पाप के लिए

**प्रायश्चित करता है, और जब बाद में उसे स्पष्ट हो जाता है कि उसने पाप किया था, तो उसे एक अतिरिक्त बलि (पाप बलि) लानी होती है।**

### **रब्बी की व्याख्याएँ:**

विभिन्न रब्बियों ने **अशाम तलुय बलि** के महत्व और इसके प्रावधानों पर विभिन्न दृष्टिकोण दिए हैं:

#### **1. रब्बी योसी हागेली:**

रब्बी योसी हागेली का मानना था कि यदि तोराह उस व्यक्ति को दंडित करती है जो अपने पाप को अनजाने में करता है, तो एक जानबूझकर पाप करने वाले व्यक्ति को और भी सख्त दंड मिलेगा। वे आदम की मिसाल देते हैं, जहां परमेश्वर ने उसकी गलती को भी सजा दी, भले ही वह अनजान था। इसके जरिए रब्बी योसी यह दिखाना चाहते थे कि जो जानबूझकर पाप करता है, उसे कहीं ज्यादा जिम्मेदार ठहराया जाएगा।

#### **2. रब्बी अकिवा:**

रब्बी अकिवा का कहना था कि तोराह अनिश्चितता को जानबूझकर पाप से ज्यादा गंभीर मानती है। अगर कोई व्यक्ति निश्चित रूप से दोषी है, तो वह एक पाप बलि लाता है, लेकिन आगर उसे संदेह है कि उसने पाप किया है, तो वह **अशाम तलुय बलि** लाता है, जो ज्यादा महंगी होती है। इस दृष्टिकोण में, रब्बी अकिवा यह कहते हैं कि संदेहपूर्ण स्थिति को और भी गंभीरता से लिया गया है।

#### **3. रब्बी एलेज़ार बिन अज़्जार्या:**

वे मानते थे कि जो कोई जानबूझकर अच्छे कार्यों में मदद करता है, उसे परमेश्वर से बड़ी कृपा मिलती है, और यही सिद्धांत इस मामले में भी लागू होता है कि जो अनजाने में पाप करता है, उसके लिए यह बलि आवश्यक है।

#### 4. राशी:

राशी के अनुसार, यह आर्थात् अशाम तलुयबलि उस स्थिति का प्रतिनिधित्व करती है जब किसी व्यक्ति को निश्चित रूप से यह ज्ञात नहीं होता कि उसने पाप किया है, लेकिन वह संदिग्ध स्थिति में होता है और यह बलि परमेश्वर से अस्थायी प्रायश्चित की आवश्यकता को दर्शाती है।

### आज के मसीही चर्च में मान्यता:

#### 1. पाप और प्रायश्चित:

मसीही धर्म में, पाप और प्रायश्चित का महत्व बहुत है, हालांकि इस दृष्टिकोण में जानवरों की बलि का कोई स्थान नहीं है। मसीही विश्वास करते हैं कि प्रभु यीशु मसीह की बलिदान और पुनरुत्थान ने मानवता के पापों के लिए प्रायश्चित किया। इस दृष्टिकोण से, अशाम तलुय का वैकल्पिक रूप है प्रभु यीशु के बलिदान के माध्यम से पापों की क्षमा प्राप्त करना।

#### 2. मनुष्य का आत्ममूल्यांकन:

मसीही धर्म में भी आत्ममूल्यांकन की प्रक्रिया को महत्व दिया जाता है, जहाँ विश्वासियों को अपनी अंतरात्मा में झाँकने और अपने पापों की पहचान करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। यह वही भाव है जिसे अशाम तलुयबलि में व्यक्त किया गया है—जब कोई व्यक्ति अपने पाप के बारे में अनिश्चित होता है, तो उसे अपने कर्मों की पहचान करने और प्रायश्चित करने के लिए कदम उठाना चाहिए।

#### 3. उत्तरदायित्व और नैतिक जीवन:

मसीही धर्म में भी उत्तरदायित्व का बहुत महत्व है, जैसे कि अशाम तलुयबलि में दिखाया गया है कि व्यक्ति को अपनी क्रियाओं की जिम्मेदारी लेनी चाहिए, चाहे वह जानबूझकर

हो या अनजाने में। मसीही विश्वासियों को भी इसी प्रकार अपने कृत्यों और उनके

परिणामों के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है।

- मसीही परंपरा के अनुसार, प्रभु यीशु मसीह ने अपने बलिदान के द्वारा सभी प्रकार के पापों (निश्चित और अनिश्चित दोनों) के लिए प्रायश्चित किया। इब्रानियों 9:12 में लिखा है कि प्रभु यीशु मसीह ने अपना खून देकर एक बार ही सदा के लिए छुटकारा प्रदान किया

## आत्मिक शिक्षा और ईसाई सिद्धांत

- Asham Talui* हमें सिखाता है कि हमें अपने संदेहपूर्ण पापों के प्रति भी संवेदनशील रहना चाहिए।
- पवित्र आत्मा (Holy Spirit) हमें *conviction* (आत्मिक बोध) देता है जिससे हम अपने अनजाने पापों के लिए पश्चाताप कर सकते हैं।
- यदि कोई मसीही व्यक्ति सुनिश्चित नहीं है कि उसने पाप किया है, तो वह परमेश्वर से पश्चाताप कर सकता है और आत्मिक क्षमा की प्रार्थना कर सकता है।

## आत्मिक अनुशासन

- चर्चों में सिखाया जाता है कि "जो कुछ संदेहजनक हो, उसे मत करो" (Romans 14:23)।
- यदि कोई कार्य नैतिक रूप से संदेहजनक है, तो मसीही विश्वासियों को उससे बचना चाहिए।

## नियमित आत्म-परीक्षण (Self-Examination)

- मसीही लोग नियमित रूप से अपने हृदय की जाँच करते हैं कि कहीं वे अनजाने में परमेश्वर के खिलाफ तो नहीं जा रहे।

## निष्कर्षः

अशाम तलुयबलि एक विशेष बलि है जो संदेह की स्थिति में व्यक्ति द्वारा दी जाती है, ताकि वह अपने पाप के लिए अस्थायी प्रायश्चित कर सके। यह उन परिस्थितियों का सामना करने का तरीका है जब कोई व्यक्ति निश्चित नहीं होता कि उसने कोई पाप किया है या नहीं। इस विषय में विभिन्न रब्बियों की व्याख्याएं हमें इस सिद्धांत को समझने में मदद करती हैं और यह आज के मसीही विश्वास के साथ भी कुछ समानताएँ रखती हैं, जैसे आत्ममूल्यांकन, प्रायश्चित और जिम्मेदारी का महत्व।

P 71 Le.5:15; Unconditional Guilt-Offering, for stealing, etc.

## बाइबल पदः

लेव 5:15 –

"यदि कोई व्यक्ति पवित्र वस्तुओं के विषय में अज्ञानता में विश्वासघात करे (מעיל לה) और पाप करे, तो वह प्रभु प्रभु यहोवा के लिए दोषबलि लाए, अर्थात् झुंड में से एक निर्दोष मेढ़ा, जो तेरे अनुसार दो शेकेल चाँदी का हो, और उसे दोषबलि के रूप में भेंट करे।"

"מעיל" (मेइला) का हिंदी में अर्थ और व्याख्या

## 1. "מעילה" की परिभाषा और अर्थ:

"מעילה" (मेइला) का अर्थ है किसी पवित्र वस्तु का अनुचित प्रयोग करना, जिससे उसकी स्थिति पवित्र से सांसारिक (धार्मिक से सामान्य) में बदल जाती है। इसे "धोखा" या "अनुचित उपयोग" भी कहा जा सकता है।

**पवित्र और अपवित्र का भेद:** जब कोई वस्तु प्रभु प्रभु यहोवा के लिए समर्पित होती है, तो उसका उपयोग केवल उसी उद्देश्य के लिए किया जा सकता है। अगर कोई गलती से या जानबूझकर उसे किसी और उपयोग में लाता है, तो यह "מעילה" कहलाता है।

**चोरी से भिन्न:** यह सिर्फ चोरी नहीं है, क्योंकि इसमें कोई भी पवित्र वस्तु का उपयोग करके लाभ प्राप्त करता है, भले ही उसने उसे चुराया न हो।

**"מעיל" (मेइल) से संबंध:** इन्ह एङ्ग्रा के अनुसार, "מעילה" का संबंध "מעיל" (मेइल - वस्त्र) से है, जिसका अर्थ "छिपाना" होता है। इसका तात्पर्य यह है कि यह कार्य छिपे रूप में होता है, और व्यक्ति धोखे से पवित्र वस्तु का उपयोग कर लेता है।

## 2. "מעילה" के उदाहरण:

- मंदिर की वस्तुओं का अन्य उपयोग:** यदि कोई व्यक्ति मंदिर के लिए रखे गए सोने के बर्तन को अपने निजी उपयोग में लेता है, तो यह "מעילה" होगी।
- पवित्र धन का अनुचित उपयोग:** यदि कोई व्यक्ति मंदिर के खजाने से पैसा लेता है और उसे व्यक्तिगत कार्यों में खर्च करता है, तो यह "מעילה" होगी।
- पवित्र भेंटों का निजी उपयोग:** अगर कोई पवित्र बलिदान के मांस को बिना अनुमति के खा लेता है, तो वह "מעילה" कर रहा है।

- **निर्धारित पवित्र स्थानों का उपयोग:** अगर कोई मंदिर के अंदरूनी हिस्से में घुसकर वहाँ की वस्तुओं का उपयोग करता है, तो यह "הַמְעִילָה" हो सकता है।
  - **मंदिर के वस्त्रों का प्रयोग:** यदि कोई मंदिर के पवित्र वस्त्र को पहनता है और उसका आनंद उठाता है, तो यह भी "הַמְעִילָה" है।
- 

### 3. प्रमुख रब्बियों की व्याख्याएँ:

#### राशी (Rashi)

- "הַמְעִילָה" का अर्थ परिवर्तन (status change) है - जब कोई वस्तु पवित्र से अपवित्र में बदल जाती है।
- पवित्र वस्तुओं से लाभ उठाना निषिद्ध है।
- "הַשְׁאָק'" (कदरो हा-शेम) का अर्थ है "वह वस्तुएँ जो परमेश्वर के लिए विशेष रूप से समर्पित हैं।"

#### इब्र ए़ज़ा (Ibn Ezra)

- "הַמְעִילָה" और "מֵइַל" (मेइल - वस्त्र) का संबंध बताते हैं, जिसका अर्थ है कि यह कार्य किसी न किसी रूप में "छिपाने" से जुड़ा होता है।

#### माल्बीम (Malbim)

- "הַמְעִילָה" और "בְּגִידָה" (बगिदा - विश्वासघात) में समानता है।
- "הַמְעִילָה" सार्वजनिक धोखा होता है, जबकि "בְּגִידָה" व्यक्तिगत स्तर पर विश्वासघात होता है।

## रव हिर्श (Rav Hirsch)

- "המעיל" का अर्थ है किसी पवित्र वस्तु का ऐसा उपयोग जो परमेश्वर की आज्ञा के विपरीत हो।
- यह वस्तु के आध्यात्मिक स्वभाव को नष्ट करता है और इसे सांसारिक बना देता है।

## नचमानीड्स (Nachmanides)

- "מישא" (अराम) या दोषबलि अनिवार्य होती है क्योंकि "המעיל" एक गंभीर अपराध है।

## रेज्जियो (Reggio)

- "המעיל" का अर्थ परमेश्वर के सम्मान की अवहेलना करना है।

## सिफतेई चाखामिम (Siftei Chakhamim)

- "המעילה" का अर्थ केवल लाभ उठाना नहीं, बल्कि वस्तु की स्थिति बदलना भी है।

## गुर आर्ये (Gur Aryeh)

- "המעילה" केवल उन वस्तुओं पर लागू होती है, जो पूर्णतः परमेश्वर के लिए समर्पित हैं, लेकिन कुछ बलिदानों में यह नियम लागू नहीं होता।

## 4. "המעילה" और "אתנה" (पाप) में अंतर

- "אתנה" (पाप) सामान्य रूप से किसी भी पाप को कहा जाता है, चाहे वह जानबूझकर हो या गलती से।
- "המעילה" विशिष्ट रूप से पवित्र वस्तुओं के प्रति की गई गलती होती है।

- लेव 5:15 में दोनों शब्द साथ प्रयोग हुए हैं:

- "מעילה" पहले आता है क्योंकि परमेश्वर इस तरह की गलतियों को गंभीर मानता है।
  - "אטה" बाद में आता है क्योंकि यह व्यक्ति के व्यक्तिगत दोष को दर्शाता है।
- 

## 5. "מעילה" के लिए प्रायशिचित और दंड

1. **अशाम बलिदान (Guilt Offering):** व्यक्ति को एक निर्दोष मेदा (दो शोकेल चाँदी मूल्य का) बलिदान देना होता था।
  2. **चुकौती (Repayment):** व्यक्ति को उस वस्तु का पूरा मूल्य और 20% अतिरिक्त चुकाना पड़ता था।
  3. **गलती से और जानबूझकर "מעילה" का भेद:**
    - यदि गलती से होता है, तो दोषबलि और चुकौती दोनों आवश्यक हैं।
    - यदि जानबूझकर होता है, तो दंड अधिक कड़ा हो सकता है।
- 

## 6. आज के मसीही चर्च में "מעילה" की प्रासंगिकता

यद्यपि "מעילה" यहां मंदिर की पवित्र वस्तुओं से जुड़ा था, लेकिन ईसाई धर्म में इससे जुड़े कुछ नैतिक सिद्धांत आज भी लागू हो सकते हैं:

1. चर्च की पवित्र संपत्ति का सम्मान

- चर्च में रखे गए धन, बाइबल, और अन्य समर्पित वस्तुओं का उचित उपयोग

**किया जाना चाहिए।**

- चर्च के धन का दुरुपयोग "מעיליה" की तरह ही पवित्रता का उल्लंघन माना जा सकता है।

## 2. परमेश्वर को समर्पित जीवन

- इसाई विश्वास में हर व्यक्ति का जीवन परमेश्वर के लिए समर्पित है। यदि कोई व्यक्ति अपना जीवन सांसारिक सुखों के लिए जीता है और परमेश्वर की आज्ञाओं की अवहेलना करता है, तो यह "המעיליה" के समान हो सकता है।

## 3. दक्षिणा और भेंट का उचित उपयोग

- यदि चर्च को दी गई दान राशि का दुरुपयोग होता है, तो यह एक प्रकार का "המעיליה" हो सकता है।

## 4. पवित्रता और ईमानदारी

- मसीही जीवन में ईमानदारी और पवित्रता आवश्यक है। पवित्र वस्तुओं और परमेश्वर के कार्यों के प्रति अनुचित व्यवहार "המעיליה" के समान हो सकता है।

## निष्कर्ष

"המעיליה" का सिद्धांत यह सिखाता है कि जो वस्तु परमेश्वर को समर्पित है, उसका सम्मान और उचित उपयोग किया जाना चाहिए। आज के युग में, यह सिद्धांत नैतिकता, ईमानदारी और धार्मिक दायित्वों को पूरा करने के रूप में लागू हो सकता है। चाहे चर्च की संपत्ति हो, दान हो, या

**स्वयं का जीवन—सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिए उपयोग होना चाहिए।**

P 72 Le.5:1-11 Offering higher or lower value, according to ones means

□ □□□□ □□:

### **लैब्यव्यवस्था 5:1**

**"यदि कोई व्यक्ति सुनता है कि किसी ने शपथ (आलाह) लेकर गवाही देने को कहा है, और वह साक्षी है, या तो उसने देखा हो, या उसे इसका ज्ञान हो, परन्तु वह यह बात प्रगट न करे, तो वह अपने अधर्म का भागी होगा।"**

---

□ □□□□ □□□ □□□□□□□□:

**यह पद एक महत्वपूर्ण नैतिक और धार्मिक सिद्धांत को प्रस्तुत करता है—अगर कोई व्यक्ति किसी घटना का साक्षी (गवाह) है और उसे औपचारिक रूप से गवाही देने के लिए बुलाया जाता है, तो उसे सत्य बोलना चाहिए। यदि वह गवाही नहीं देता, तो यह पाप माना जाता है, और उसे दोषी ठहराया जाएगा। इस स्थिति को "गवाह के मौन रहने का पाप" कहा जाता है।**

### **इसमें मुख्य तत्वः**

1. **"कोल आलाह" (शपथ का स्वर)** - जब किसी व्यक्ति को किसी मामले में गवाही देने के लिए औपचारिक रूप से बुलाया जाता है, खासकर न्यायिक शपथ के साथ। इसमें वह

स्थिति भी शामिल है जब किसी के ऊपर शपथ का दायित्व रखा जाता है, भले ही उसमें  
कोई शाप न दिया गया हो।

2. "वह साक्षी है" - इसका अर्थ यह है कि व्यक्ति वास्तव में किसी घटना को देखकर या  
सुनकर जानता है।
3. "उसने देखा हो या उसे ज्ञान हो" –
  - देखने का अर्थ: उसने कोई घटना अपनी आँखों से देखी हो (जैसे किसी को चोरी करते हुए देखना)।
  - ज्ञान का अर्थ: वह घटना को प्रत्यक्ष रूप से नहीं देखता, लेकिन प्रमाणित जानकारी रखता है (जैसे उसने किसी को स्वीकार करते हुए सुना कि उसने अपराध किया है)।
4. "परन्तु वह यह बात प्रगट न करें" – जब व्यक्ति को न्यायिक रूप से गवाही देने के लिए बुलाया गया हो और वह चुप रहे।
5. "तो वह अपने अधर्म का भागी होगा" – न्याय में बाधा डालने और सत्य को छिपाने के कारण उसे पाप का दोषी माना जाएगा।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ (□ □ □ □ □ □) □ □

□ □ □ □ □ □ □ □ :

□ 1. "□ □ □" (□ □ □) □ □ □ □ :

- कुछ रब्बियों का मानना है कि "आलाह" का अर्थ केवल एक शपथ (oath) नहीं, बल्कि यह एक शापित शपथ (cursed oath) को भी संदर्भित करता है।
- अन्य व्याख्याओं के अनुसार, इसमें बिना शाप वाली सामान्य शपथ भी शामिल हो

सकती है।

□ 2. ○○○○○ ○○○○ ○ ○ ○○○○○○○○:

- कुछ रब्बियों के अनुसार, गवाही देने की जिम्मेदारी केवल न्यायालय में आधिकारिक रूप से बुलाए जाने पर लागू होती है।
- अन्य व्याख्याओं में कहा गया है कि यदि पीड़ित व्यक्ति किसी को व्यक्तिगत रूप से गवाही देने के लिए बुलाता है, तो भी यह अनिवार्य हो सकता है।

□ 3. ○○○○○ (intention) ○○ ○○○○○:

- कुछ टीकाकार मानते हैं कि व्यक्ति दोषी होगा, चाहे उसने जानबूझकर गवाही छिपाई हो या अनजाने में।
- अन्य रब्बियों के अनुसार, यदि उसने जानबूझकर गवाही छिपाई है, तभी वह दोषी होगा।

□ 4. "अगर" (ox, im) का महत्व:

- हिन्दू में "अगर" शब्द इंगित करता है कि यह एक शर्त है—अर्थात् कोई भी व्यक्ति जो गवाही नहीं देता, वह दोषी माना जाएगा, चाहे उसने झूठी गवाही दी हो या नहीं।

□ 5. ○○ ○○○○○ ○○○ ○○○○○○ ○○○ ○○○○ ○○?

- कुछ विद्वानों के अनुसार, यह केवल आर्थिक (monetary) मामलों में लागू होता है, जहाँ साक्ष से किसी के अधिकार को सिद्ध किया जा सकता है।
- अन्य यहूदी विद्वान कहते हैं कि यह अपराध (criminal) मामलों में भी लागू हो सकता है, विशेष रूप से जब न्याय का उल्लंघन हो रहा हो।

□ 6. "○○ ○○○○○○ ○○" ○○ ○○○○○○:

- इसका अर्थ यह हो सकता है कि साक्षी को विशेष रूप से इस मामले के लिए नामित किया जाना चाहिए।
- कुछ विद्वान मानते हैं कि यह दोहराव यह स्पष्ट करने के लिए है कि व्यक्ति उसी समय गवाह होना चाहिए जब शपथ ली जा रही हो।

□ 7. "□□□□" □ □ "□□□□" □ □ □□ □□□□□□:

- कुछ रब्बियों का मानना है कि "देखने" और "जानने" का अर्थ एक ही है—यदि व्यक्ति इसे प्रमाणित कर सकता है, तो वह साक्षी है।
  - अन्य यहूदी विद्वान कहते हैं कि "देखना" और "जानना" दो अलग-अलग आधार हैं; एक व्यक्ति केवल देखने से या केवल जानकारी रखने से भी गवाह बन सकता है।
- 

□ □□□□□:

1 □ □□□□: □□□□ □ □ □□□□ □□□ □□□□

रूबेन ने शिमोन से कहा कि उसने उसे कुछ धन उधार दिया था और गवाह भी मौजूद थे। यदि वे गवाह न्यायालय में गवाही देने से इनकार करते हैं, तो वे इस आदेश का उल्लंघन कर रहे हैं और दोषी माने जाएंगे।

2 □ □□□□: □□□□ □ □ □□□□

यदि किसी व्यक्ति ने चोरी होते हुए देखी, लेकिन वह न्यायालय में जाकर यह बात नहीं बताता, तो वह इस आज्ञा का उल्लंघन कर रहा है।

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

## 1. प्रभु यीशु मसीह के बारे में गवाही देना

- ईसाई धर्म में "गवाही" केवल न्यायिक संदर्भ तक सीमित नहीं है।
- यह सच्चाई के लिए खड़े होने और प्रभु यीशु मसीह के बारे में प्रचार करने से संबंधित भी है (मत्ती 10:32-33, प्रेरितों के काम 1:8)।

## 2. सत्य और न्याय की रक्षा करना

- कई ईसाई मानते हैं कि सत्य के पक्ष में खड़ा होना और न्याय को बनाए रखना ईश्वर की इच्छा के अनुसार कार्य करना है (नीतिवचन 31:8-9)।

## 3. आधुनिक मसीही चर्च में इसका क्या अर्थ है?

- आज चर्च इस सिद्धांत को नैतिकता और न्याय की दृष्टि से देखता है।
- यह शिक्षण दिया जाता है कि एक मसीही विश्वासी को कभी भी सत्य को नहीं छिपाना चाहिए, विशेष रूप से जब किसी को न्याय दिलाने की आवश्यकता हो।
- यह भी सिखाया जाता है कि प्रभु यीशु मसीह ने पाप के विरुद्ध और न्याय के पक्ष में गवाही दी, और उनके अनुयायियों को भी ऐसा ही करना चाहिए।

□ □ □ □ □ □ □ □

लैब्यवस्था 5:1 हमें सिखाता है कि यदि हम किसी सच्चाई के गवाह हैं और हमें गवाही देने के

लिए बुलाया जाता है, तो हमें सत्य बोलना चाहिए। इसे छिपाने से अन्याय होता है और यह एक पाप माना जाता है।

यहूदी परंपरा में इसे कानूनी और नैतिक दोनों दृष्टिकोण से देखा जाता है, जबकि ईसाई धर्म में इसे सत्य, न्याय, और प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार के प्रचार से जोड़ा जाता है।

□ □ □ □ □ □ □ : यह आज के समय में भी प्रासंगिक है—चाहे न्यायिक प्रणाली में हो, समाज में, या किसी के व्यक्तिगत जीवन में, सत्य की रक्षा करना और न्याय के लिए खड़ा होना परमेश्वर की दृष्टि में महत्वपूर्ण है।

## बाइबल पदः लेव 5:2

”यदि कोई व्यक्ति किसी वस्तु की अशुद्धता को छू ले, चाहे वह किसी अशुद्ध वन्य पशु की लोथ हो, या किसी अशुद्ध पालतू पशु की लोथ हो, या किसी अशुद्ध रेंगने वाले जन्तु की लोथ हो, और वह इसे नहीं जानता, तो वह अशुद्ध होगा और दोषी ठहराया जाएगा।”

---

## समझौता (हिंदी में)

यह पद उस स्थिति के बारे में बात करता है जब कोई व्यक्ति किसी अशुद्ध वस्तु (जैसे किसी मृत अशुद्ध जानवर की लोथ) को छू ले और बाद में उसे अहसास हो कि उसने ऐसा किया है। यह इमाएलियों के लिए एक महत्वपूर्ण नियम था क्योंकि पवित्र स्थान (मंदिर) और पवित्र वस्तुएँ अशुद्धता से दूर रखी जानी चाहिए थीं।

## मुख्य बातें:

### 1. अशुद्धता के स्रोत -

इस पद में तीन प्रकार की अशुद्ध चीजों का उल्लेख किया गया है:

- **अशुद्ध जंगली जानवर (नेवेलात ख्याह तमेयाह)** - जैसे शेर, भेड़िया आदि।
- **अशुद्ध पालतू जानवर (नेवेलात बेहेमाह तमेयाह)** - जैसे ऊँट, गधा आदि।
- **अशुद्ध रेंगने वाले जीव (नेवेलात शेरेट तमेयाह)** - जैसे छिपकली, चूहा आदि।

### 2. ज्ञान और अनज्ञानेपन का महत्व –

- "उससे छिपा रहा" (*venelam mimenu*) का अर्थ है कि व्यक्ति पहले जानता था कि यह अशुद्ध है लेकिन भूल गया।
- **मालबीम (Malbim)** बताते हैं कि वाक्य में "venelam" शब्द प्रयोग किया गया है, जो दर्शाता है कि पहले ज्ञान था और बाद में भूला दिया गया।
- **रावा (Rava)** इस बात की पुष्टि करते हैं कि अगर यह शुरू से ही अज्ञात होता तो शब्द *vehi aluma* प्रयुक्त होता।

### 3. पाप और दंड –

- **पाप केवल छूने से नहीं होता, बल्कि उसके बाद मंदिर में प्रवेश करना या पवित्र भोजन (कोदाशिम) खाना वास्तविक अपराध है।**
- **यदि किसी ने जानबूझकर पवित्र स्थान अशुद्ध किया, तो उसे करेत (आत्मिक निष्कासन) की सजा दी जाती थी।**

### 4. अशुद्धता से छुटकारा पाने का उपाय -

इस अपराध का समाधान एक कोबर्न ओले वयोरेद (korban oleh v'yored - "चरम और परिवर्तनशील बलिदान") चढ़ाने से था, जो व्यक्ति की आर्थिक स्थिति के अनुसार बदलता था।

- **धनी व्यक्ति** - भेड़ या बकरी चढ़ाता था।
  - **मध्यम वर्ग** - कबूतर या फाख्ता चढ़ाता था।
  - **गरीब व्यक्ति** - आटे का चढ़ावा चढ़ाता था।
- 

## रब्बियों की व्याख्याएँ

### 1. रशी (Rashi)

- रशी के अनुसार यह नियम तब लागू होता है जब कोई व्यक्ति अशुद्धता में मंदिर में प्रवेश करता है या पवित्र भोजन खाता है।
- "छिपा रहा" (venelam) का अर्थ है कि व्यक्ति यह भूल गया कि वह अशुद्ध है।

### 2. रब्बी अकीवा (Rabbi Akiva)

- "venelam" शब्द के दोहराव का अर्थ है कि व्यक्ति को पहले अपनी अशुद्धता का ज्ञान था, फिर भूल गया और बाद में याद आया।
- उन्होंने यह भी समझाया कि केवल *av hatumah* (प्राथमिक अशुद्धता का स्रोत) ही इस दंड का कारण बनता है, *tumah* का द्वितीयक स्तर (secondary impurity) नहीं।

### 3. हाअमेक दावार (Haamek Davar)

- "b'chol davar tameh" (किसी भी अशुद्ध वस्तु) का अर्थ है कि न केवल जीव-जंतु

**बल्कि कपड़े और मकान भी अशुद्धता फैला सकते हैं।**

#### 4. इब्न एज़रा (Ibn Ezra)

- उन्होंने स्पष्ट किया कि "अशुद्ध पशु" का अर्थ केवल जंगली जानवर नहीं है, **बल्कि घोड़े और गधे भी** इसमें आते हैं।

#### 5. मालबीम (Malbim)

- उन्होंने व्याकरणिक पहलुओं पर ध्यान दिया और बताया कि "नेवेलाह" (मृत शरीर) शब्द ही अशुद्धता का कारण है, न कि खुद जानवर।

#### 6. रव हिर्श (Rav Hirsch)

- वे कहते हैं कि पाप केवल अशुद्ध होने में नहीं है, **बल्कि अशुद्धता की स्थिति में** मंदिर में प्रवेश करना या पवित्र भोजन खाना असली अपराध है।

#### 7. स्टेन्सल्ज़ (Steinsaltz)

उन्होंने समझाया कि **व्यक्ति पर दोष तब लगता है जब वह यह जताता है कि वह शुद्ध है** और **पवित्र स्थान में प्रवेश करता है या बलिदान का भोजन खाता है।**

## आज के मसीही चर्च में इस नियम का क्या महत्व है?

मसीही समुदाय में लेव 5:2 की व्याख्या प्रतीकात्मक रूप से की जाती है।

## 1. अशुद्धता और पाप

- पाप को एक प्रकार की आध्यात्मिक अशुद्धता के रूप में देखा जाता है।
- जैसे यहूदी लोग पवित्रता बनाए रखते थे, वैसे ही मसीही विश्वास में आंतरिक पवित्रता और नैतिकता महत्वपूर्ण हैं।

## 2. प्रभु यीशु मसीह की बलि

- यहूदी धर्म में, अशुद्धता से बचने के लिए बलिदान चढ़ाए जाते थे।
- मसीही धर्म में यह माना जाता है कि प्रभु यीशु मसीह की बलि ने सभी बलिदानों की आवश्यकता को पूरा कर दिया (इब्रानियों 10:10)।

## 3. आत्मिक और नैतिक शिक्षा

- यह नियम यह सिखाता है कि पवित्रता और अपवित्रता केवल बाहरी चीज़ें नहीं हैं, बल्कि यह आत्मा की स्थिति से भी जुड़ी हुई हैं।
- आज मसीही समुदाय में यह नियम नैतिक शुद्धता, ईमानदारी और धार्मिक जीवन के प्रति प्रतिबद्धता को प्रेरित करता है।

## 4. आत्मिक अशुद्धता से छुटकारा

- पुराने नियम में, अशुद्धता दूर करने के लिए विशेष रीति-रिवाज थे।
- मसीही धर्म में, पश्चाताप और प्रभु यीशु मसीह में विश्वास को आत्मिक अशुद्धता से मुक्ति का मार्ग माना जाता है।

## निष्कर्ष

1. लेव 5:2 में बताया गया कि अशुद्ध वस्तु को छूने से व्यक्ति अशुद्ध हो जाता है, लेकिन असली अपराध तब होता है जब वह इस अशुद्धता के साथ मंदिर में प्रवेश करता या पवित्र भोजन खाता है।
2. रब्बियों ने इसे विभिन्न तरीकों से समझाया - कुछ ने इसे भाषा के आधार पर, तो कुछ ने इसे व्यावहारिक दायित्वों के संदर्भ में व्याख्या किया।
3. मसीही धर्म में, इस नियम को आध्यात्मिक रूप से समझा जाता है - पाप एक प्रकार की अशुद्धता है, और शुद्ध होने का मार्ग प्रभु यीशु मसीह के बलिदान से प्रशस्त होता है।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ 5:3 (Leviticus 5:3)

(हिन्दू बाइबल - तनख्ब से अनुवाद)

"या यदि वह किसी प्रकार की अशुद्धता को छू ले जो मनुष्य को अशुद्ध कर देती है, चाहे वह जो कुछ भी हो और उसे पता न हो, तो जब उसे पता चलेगा, तब वह दोषी ठहरेगा।"

यह पद एक ऐसे व्यक्ति की स्थिति के बारे में बताता है जो अनजाने में किसी अशुद्ध चीज़ को छू लेता है, लेकिन उसे इस बात की जानकारी नहीं होती। जैसे ही उसे इस बात का एहसास होता है, वह दोषी माना जाएगा और उसे प्रायश्चित करना होगा।

□ □ □ □ □ □ □ :

1. **शारीरिक अशुद्धता:** इस पद में अशुद्धता का मतलब किसी मृत शरीर, रोगी व्यक्ति,

या किसी अन्य अशुद्ध वस्तु को छूना हो सकता है।

2. अनजाने में किया गया कार्य भी दोषी बनाता है: भले ही व्यक्ति को तुरंत इसका

एहसास न हो, पर जैसे ही उसे इसका ज्ञान होता है, उसे इसके लिए व्यवस्था के अनुसार प्रायश्चित करना पड़ता है।

3. प्रभु प्रभु यहोवा की पवित्रता महत्वपूर्ण है: परमेश्वर चाहता है कि उसका लोग पवित्र

और शुद्ध रहें, इसलिए उसने ऐसे नियम बनाए।

---

□ □

□ □ □ □ □ □ □ (Rabbi Rashi - □ □ □ □ □ □ □ □ □ □  
□ □ □ □ □ □ □):

रब्बी रशी इस पद की व्याख्या में बताते हैं कि "अशुद्धता" यहाँ पर मुख्य रूप से शव-संपर्क (dead body) या किसी अन्य धार्मिक रूप से अशुद्ध वस्तु से छूने को संदर्भित करता है। अगर कोई व्यक्ति इसे अनजाने में करता है, तो भी जब उसे एहसास होता है, तब वह आध्यात्मिक रूप से दोषी माना जाता है और उसे प्रायश्चित बलिदान देना होता है।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ (Nachmanides - □ □ □ □ □):

उन्होंने समझाया कि यह केवल शारीरिक अशुद्धता नहीं, बल्कि नैतिक और आत्मिक अशुद्धता का भी प्रतीक है। अशुद्ध वस्तु से संपर्क करना हमारे आत्मिक जीवन को दूषित कर सकता है, और जब हमें इसका एहसास होता है, तो हमें इसे शुद्ध करने का प्रयास करना चाहिए।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ (Mishnah & Talmud)

- मिशना (Nazir 7:3) और तलमूद में यह उल्लेख मिलता है कि अगर कोई व्यक्ति गलती से अशुद्ध हो जाता है, तो उसे शुद्धिकरण अनुष्ठान (purification ritual) करना पड़ता है।
  - यरूशलेम के मंदिर में ऐसे लोगों के लिए विशेष बलिदान (offering) की व्यवस्था थी।
- 

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □  
□ □ □ □ □ ?

## 1. आत्मिक शुद्धता और पाप का एहसास

- मसीही चर्च इस पद को नैतिक पाप के संदर्भ में देखता है।
- अशुद्धता केवल बाहरी नहीं, बल्कि अंदरूनी (हृदय की स्थिति) भी हो सकती है।
- जब किसी को पाप का एहसास होता है, तो उसे पश्चाताप करना चाहिए।

## 2. प्रभु यीशु में पूर्ण प्रायश्चित (Atonement in Jesus)

- पुराने नियम में लोग अशुद्धता के लिए पशुबलि चढ़ाते थे, लेकिन मसीही मान्यता के अनुसार प्रभु यीशु ने अपने बलिदान के द्वारा उन सभी को शुद्ध कर दिया जो उसमें विश्वास रखते हैं।
- अब हमें पशुबलि चढ़ाने की जरूरत नहीं, बल्कि अपने हृदय से सच्चा पश्चाताप करना आवश्यक है।

## 3. आत्मिक जीवन में पवित्रता बनाए रखना

- चर्चों में इसे एक चेतावनी के रूप में लिया जाता है कि हमें हर समय अपने हृदय और

**आत्मा को पवित्र रखना चाहिए।**

- यदि हम गलती से भी कोई गलत कार्य कर बैठें, तो जब हमें इसका एहसास हो, हमें तुरंत पर्चाताप करना चाहिए।
- 



### 1. यहूदी दृष्टिकोण से:

अगर कोई व्यक्ति गलती से मृत शरीर को छू ले और बाद में उसे याद आए कि वह अशुद्ध हो गया है, तो उसे नियमों के अनुसार शुद्धि प्रक्रिया से गुजरना होगा।

### 2. मसीही दृष्टिकोण से:

अगर कोई व्यक्ति बिना जाने किसी का दिल दुखा देता है, और बाद में उसे एहसास होता है, तो उसे प्रायशिचित करना चाहिए और उस व्यक्ति से माफी मांगनी चाहिए।

---

## निष्कर्ष

- लैब्यववस्था 5:3 हमें यह सिखाता है कि अनजाने में हुई गलती भी जब सामने आती है, तो हमें उसकी जिम्मेदारी लेनी चाहिए।
- यहूदी परंपरा में इसका सीधा संबंध धार्मिक शुद्धता और बलिदान से था।
- मसीही परंपरा में इसे नैतिक और आत्मिक पवित्रता के रूप में देखा जाता है, जहाँ प्रभु यीशु के बलिदान से उद्धार संभव है।

- आज भी यह पद हमें सिखाता है कि हमें आत्म-जांच (self-examination) करते रहना

चाहिए और जब हमें अपने दोषों का एहसास हो, तो पश्चाताप करके सही मार्ग

अपनाना चाहिए।

## लैव्यव्यवस्था 5:4 (Leviticus 5:4) - बाइबल पद

"या यदि कोई व्यक्ति अपने होठों से स्पष्ट रूप से शपथ खाए कि वह किसी बुरी या अच्छी

बात को करेगा-जो कुछ भी मनुष्य अपने होठों से शपथ खाकर प्रकट करे-और वह उससे

अनजान हो, जब वह जान ले, तब वह इन में से किसी एक में दोषी हो।" (लैव्यव्यवस्था 5:4)

□ □□□□□ □□□ □□□□□□□□

इस पद में यह नियम दिया गया है कि यदि कोई व्यक्ति अपने होठों से कोई शपथ (oath) खाता

है-चाहे वह भलाई के लिए हो या बुराई के लिए-और बाद में उसे भूल जाता है या उसका

उल्लंघन कर देता है, तो वह दोषी ठहराया जाएगा और उसके लिए प्रायरिचित करना होगा।

□ "यदि कोई व्यक्ति अपने होठों से स्पष्ट रूप से शपथ खाए" (וְיִתְבַּא בְּמִתְחַדֵּה)

- यह शपथ केवल विचारों में नहीं होनी चाहिए, बल्कि इसे शब्दों में व्यक्त किया जाना चाहिए।
- राशी (Rashi) कहते हैं कि केवल वही शपथ मान्य होगी जो स्पष्ट रूप से बोले गए हो।
- यदि किसी ने मन में कुछ और सोचा, लेकिन अपने होठों से कुछ और कहा, तो वह शपथ मान्य नहीं होगी।
- मलबिम (Malbim) बताते हैं कि इस वाक्यांश में "ל" (लेटर ल) का प्रयोग इंगित करता है

**कि शपथ तैयार की गई और उसे ज़बान से कहा गया, यानी यह केवल मन की बात नहीं**

**थी।**

- **मस्किल लेदाविद (Maskil LeDavid)** के अनुसार, शपथ का प्रभाव तब होता है जब

**दिल और ज़बान एक साथ होते हैं।**

□ "अच्छाई या बुराई करने की शपथ" (להראע או להיטיב)

- यह शपथ किसी व्यक्तिगत कार्य से जुड़ी होनी चाहिए, जैसे "मैं यह भोजन खाऊंगा" या "मैं यह भोजन नहीं खाऊंगा"।

- **राशी** के अनुसार, यह शपथ खुद के लाभ या हानि से संबंधित होती है।

- **सिफ्टे चखामिम (Siftei Chakhamim)** के अनुसार, यदि किसी ने दूसरे व्यक्ति को नुकसान पहुंचाने की शपथ ली, तो यह वैध नहीं होगी क्योंकि यह अनैतिक है।

- **मल्बिम (Malbim)** का तर्क है कि पहले "बुराई" और फिर "अच्छाई" का उल्लेख करने का अर्थ है कि यह व्यक्तिगत, न कि सार्वभौमिक भलाई या बुराई का संदर्भ देता है।

- **हामेक दावर (Haamek Davar)** कहते हैं कि पहले शपथ ली जाती है और फिर व्यक्ति अपने इरादे को प्रकट करता है।

□ "जो कुछ भी व्यक्ति अपने होठों से प्रकट करे" (כל אשר יבַטָּה אָדָם בְשִׁבְעָה)

- इस वाक्यांश का अर्थ यह है कि कोई भी शपथ, चाहे वह किसी छोटी चीज़ के बारे में क्यों

**न हो (जैसे "मैं पानी में पत्थर फेंकूंगा"), मान्य होगी।**

- कुछ रब्बियों का मानना है कि इसमें अतीत की घटनाओं से संबंधित शपथ भी शामिल हो सकती हैं।

- **हामेक दावर** बताते हैं कि यह वाक्यांश उस स्थिति को संदर्भित करता है जब कोई पहले

कुछ कहता है और फिर उस कथन को शपथ द्वारा और मजबूत करता है।

- **मलबिम** के अनुसार, यहाँ "מִתְּאַמֵּן" (मनुष्य) शब्द यह दिखाने के लिए है कि शपथ

**बुद्धिमानी** और स्वतंत्र इच्छा से ली जानी चाहिए, न कि किसी दबाव में।

□ "और वह उससे अनजान हो" (גַּנְעָל מִמְּנָה)

- इसका अर्थ यह है कि व्यक्ति भूल गया कि उसने कोई शपथ खार्झ थी, और फिर उसने उसका उल्लंघन कर दिया।
- गुर आर्येह (Gur Aryeh) के अनुसार, यह स्पष्ट करने की आवश्यकता है कि व्यक्ति ने अपनी शपथ को भुला दिया और फिर उसका उल्लंघन किया।
- रलबग (Ralbag) कहते हैं कि यह वाक्यांश इंगित करता है कि व्यक्ति को बाद में अपनी गलती का एहसास होना चाहिए, अन्यथा उसे प्रायशिचित करने की आवश्यकता नहीं होगी।

□ "जब वह जान ले, तब वह दोषी हो" (מִשְׁאָא עַד' אָהָא)

- इसका अर्थ यह है कि जब व्यक्ति को एहसास होता है कि उसने अपनी शपथ तोड़ दी है, तो वह दोषी माना जाएगा।

□ "इन में से किसी एक में" (הַלְאַחֲת מִמְּלָאָה)

- इसका अर्थ यह है कि यह नियम अन्य तीन प्रकार की अशुद्धियों पर भी लागू होता है:
  1. **शपथ का उल्लंघन**
  2. **मंदिर की अशुद्धता**
  3. **झूठी गवाही**

A horizontal row of 20 empty square boxes, intended for children to draw or write in.

1 □ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ (Torah Laws) □□  
□□□□ □□□□ □□?

- र' इरमाएल और र' अकीवा के अनुसारः

- र' इश्माएल मानते हैं कि यह नियम केवल भविष्य की शपथों पर लागू होता है,  
जो अच्छे और बुरे के समान होती हैं।
  - र' अकीवा के अनुसार, यह नियम लगभग सभी शपथों पर लागू होता है, सिवाय  
उन शपथों के जो परमेश्वर की आज्ञाओं से संबंधित हैं।

इन कोई व्यक्ति कहता है, "मैं शनिवार को विश्राम नहीं करूँगा," तो यह एक अमान्य  
कानून होगी क्योंकि वह पहले से ही परमेश्वर की आज्ञाओं से बाध्य है।

**2** □ □□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ ?

- कुछ रब्बियों का मानना है कि यह नियम केवल भविष्य की शपथों पर लागू होता है, अतीत पर नहीं।
  - लेकिन 'र' अकीवा के अनुसार, यह अतीत की शपथों पर भी लागू हो सकता है, जैसे "मैंने यह भोजन खाया" या "मैंने यह भोजन नहीं खाया।"

यदि कोई व्यक्ति अपने दिल में "गेहूं की रोटी खाने" की शपथ खाए, लेकिन ज़बान से "जौ की रोटी खाने" की शपथ कहे, तो वह शपथ मान्य नहीं होगी।

□ □ □ □ □ □ □ (Sacrifice) □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ (Atonement)

- यदि कोई इस प्रकार की शपथ तोड़ देता है, तो उसे एक विशेष बलिदान देना पड़ता था:

1. यदि वह अमीर है, तो उसे भेड़ या बकरी का बलिदान देना होगा।
  2. यदि वह गरीब है, तो वह कबूतर या फाख्ला चढ़ा सकता है।
  3. यदि वह अत्यंत गरीब है, तो वह केवल आटे का चढ़ावा दे सकता है।
- छतम सोफेर (Chatam Sofer) कहते हैं कि गरीब व्यक्ति द्वारा दिए गए आटे का चढ़ावा उसकी आत्मा का प्रतीक होता है।
- 

□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□?

आज के चर्च में बलिदान नहीं दिया जाता, लेकिन सिखाए गए मूल्य अभी भी महत्वपूर्ण हैं:

**सच्चाई और ईमानदारी का पालन करना।**

**बिना सोचे-समझे शपथ नहीं लेना।**

**शपथ तोड़ने पर पश्चाताप करना।**

प्रभु यीशु ने कहा, "तुम्हारी 'हाँ' का अर्थ 'हाँ' और 'नहीं' का अर्थ 'नहीं' होना चाहिए" (मत्ती

5:37), यानी हमें शपथ लेने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए यदि हम हमेशा सच्चे होते

हैं।

□ □□□□□□□: लैव्यव्यवस्था 5:4 हमें सिखाता है कि हमारी ज़बान से निकले शब्दों की बहुत

अहमियत होती है और हमें अपने शब्दों की ज़िम्मेदारी लेनी चाहिए।

□ □□□□□□□ 5:5

"और जब वह इन में से किसी एक बात के लिये दोषी ठहरे, तब उसे चाहिए कि जिस बात के विषय में उसने पाप किया है, उसका अंगीकार करे।"

## हिंदी में व्याख्या और रब्बियों की व्याख्या

यह पद इस बात पर जोर देता है कि यदि कोई व्यक्ति किसी विशेष प्रकार के पाप का दोषी ठहरता है, तो उसे अपने पाप को "अंगीकार" (स्वीकार) करना चाहिए। यह केवल पाप को पहचानने की बात नहीं है, बल्कि यह एक सार्वजनिक और मौखिक रूप से स्वीकार करने की प्रक्रिया है। इस पद में मुख्य रूप से विदूई ('ादा - *Vidui*) अर्थात् "स्वीकारोक्ति" की प्रक्रिया पर ध्यान दिया गया है।

### 1. विदूई (Confession) क्या है?

- हिन्दू में "हात्वादा" (*v'hitvada*) शब्द आया है, जिसका अर्थ है "स्वीकार करना"। यह शब्द *yada* मूल से आता है, जिसका अर्थ होता है "फेंक देना" या "दूर करना"। इसका तात्पर्य यह है कि जब कोई व्यक्ति पाप स्वीकार करता है, तो वह उस पाप को स्वयं से दूर कर रहा होता है।
- यह केवल स्वीकार करने तक सीमित नहीं है, बल्कि व्यक्ति को पाप से पूरी तरह पलटने (तौबा करने) की भी आवश्यकता होती है।
- रब्बी रम्बान (Ramban) के अनुसार, यह पद उन पापों के लिए विदूई को आवश्यक ठहराता है जो जानबूझकर करने पर करेत (किसी व्यक्ति को समुदाय से काटे जाने की सजा) का कारण नहीं बनते, लेकिन अनजाने में किए जाने पर बलिदान की आवश्यकता होती है।
- रब्बी मल्बीम (Malbim) के अनुसार, यहाँ "हाहा" (और यह होगा) शब्द तत्कालता (immediacy) को इंगित करता है, अर्थात् जैसे ही किसी को अपने पाप का अहसास

हो, उसे तुरंत स्वीकार करना चाहिए।

---

## 2. विदूई कैसे किया जाता था?

- मौखिक स्वीकारोक्ति आवश्यक थी – व्यक्ति केवल बलिदान देकर अपने पाप से मुक्त नहीं हो सकता था, बल्कि उसे अपने पाप को मौखिक रूप से स्वीकार करना पड़ता था।
- बलिदान के सिर पर हाथ रखना (Semichah - הַמִּיחָה) –
  - रलबाग (Ralbag) और रब्बी मल्�बीम बताते हैं कि स्वीकारोक्ति तब की जाती थी जब व्यक्ति बलिदान के सिर पर हाथ रखता था।
  - यह क्रिया पाप को प्रतीकात्मक रूप से बलिदान पर स्थानांतरित (transfer) करने को दर्शाती थी।
  - यह वही प्रक्रिया थी जो यौम किप्पुर (प्रायश्चित्त दिवस) पर अज़ा़ज़ेल बकरे (Leviticus 16:10) के साथ की जाती थी।

## 3. "जिस बात के विषय में उसने पाप किया है" - इसका क्या अर्थ है?

- हिन्दू में लिखा है "הַמִּיחָה עַלְךָ שְׁרָא" (asher chata aleha), जिसका अर्थ है कि व्यक्ति को अपने पाप को स्पष्ट रूप से नाम लेकर स्वीकार करना चाहिए।
- यह केवल यह कहने से कि "मैंने पाप किया है" से अधिक है। उसे यह कहना आवश्यक था कि "मैंने झूठी शपथ खाई," "मैंने अशुद्धता में प्रवेश किया," आदि।
- रलबाग (Ralbag) बताते हैं कि यह केवल सामान्य स्वीकारोक्ति नहीं है, बल्कि पाप को

**स्पष्ट रूप से बताने की आवश्यकता है।**

---

#### 4. कब आवश्यक था विदूई करना?

इस अध्याय में तीन प्रकार के पापों का उल्लेख है जहाँ यह आवश्यक था -

1. **झूठी शपथ लेना (False Oath)** - यदि किसी ने झूठी गवाही दी।
2. **किसी अशुद्ध वस्तु को छूना (Impurity)** - यदि कोई जानबूझकर या अनजाने में किसी अशुद्ध चीज़ के संपर्क में आया।
3. **शपथ तोड़ना (Broken Vows)** - यदि किसी ने परमेश्वर के नाम पर कोई शपथ खाई और उसे पूरा नहीं किया।

□ **उदाहरण:** यदि किसी व्यक्ति ने किसी मामले में झूठी शपथ ली और बाद में उसे याद आया कि उसने पाप किया है, तो उसे अपने पाप को स्वीकार करना आवश्यक था। बिना स्वीकारोक्ति के बलिदान मान्य नहीं होता था।

---

#### आज के मसीही चर्च में इसका क्या महत्व है?

##### 1. मसीही दृष्टिकोण से स्वीकारोक्ति

यद्यपि मसीही धर्म में लेवितिक बलिदानों का पालन नहीं किया जाता, फिर भी स्वीकारोक्ति और प्रायश्चित (repentance) की अवधारणा आज भी बनी हुई है।

- प्रभु यीशु मसीह में विश्वास के माध्यम से क्षमा

- मसीही विश्वास में पापों की क्षमा अब बलिदान से नहीं, बल्कि प्रभु यीशु मसीह के बलिदान से मिलती है (इब्रानियों 10:10-12)।
- फिर भी, व्यक्ति को अपने पापों को परमेश्वर के सामने स्वीकार (confess) करना आवश्यक है -  
"यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह विश्वासयोग्य और धर्मी है, कि हमारे पाप क्षमा करे और हमें सब अधर्म से शुद्ध करे" (1 यूहन्ना 1:9)।

## 2. मसीही स्वीकारोक्ति और यहूदी विदूई का अंतर

**यहूदी विदूई**

**मसीही स्वीकारोक्ति**

मौखिक रूप से बलिदान  
के साथ स्वीकारोक्ति

मौखिक रूप से परमेश्वर के सामने  
(या कभी-कभी पादरी के सामने)  
**स्वीकारोक्ति**

**बलिदान चढ़ाना**

**प्रभु यीशु मसीह का बलिदान अंतिम**

**आवश्यक था**

**बलिदान माना जाता है**

**व्यक्ति अपने पाप का**

**व्यक्ति को अपने पापों को स्पष्ट रूप**

**नाम लेकर स्वीकार**

**से स्वीकार करना चाहिए**

**करता था**

**शारीरिक क्रियाएँ भी थीं**

**आत्मिक स्तर पर पश्चाताप और**

**(हाथ रखना, बलिदान**

**माफी की प्रार्थना**

**(देना)**

### 3. आज के समय में इस पद का संदेश

पाप को छिपाना सही नहीं है – जिस तरह पुराने नियम में परमेश्वर ने स्वीकारोक्ति की

आज्ञा दी, उसी तरह आज भी हमें अपने पापों को छिपाने के बजाय स्वीकार करना चाहिए।

स्पष्ट रूप से स्वीकार करें - केवल यह कहने से कि "मैंने गलती की" पर्याप्त नहीं है। हमें अपने पापों को स्पष्ट रूप से पहचानना चाहिए।

परमेश्वर का अनुग्रह उपलब्ध है – मसीही दृष्टिकोण से, प्रभु यीशु मसीह का बलिदान हमें एक नया जीवन देने के लिए है।

## निष्कर्ष

लेवितिकुस 5:5 हमें यह सिखाता है कि पाप की क्षमा के लिए स्वीकारोक्ति (विदूई)

आवश्यक है। यह न केवल यहूदी परंपरा में बल्कि मसीही विश्वास में भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है। हालाँकि आज मसीही धर्म में पशु बलिदान नहीं होते, फिर भी पापों को स्पष्ट रूप से स्वीकार करना और उनसे दूर होने का संकल्प लेना अनिवार्य है।

### मुख्य सीखः

- ✓ पाप को छिपाने के बजाय परमेश्वर के सामने स्वीकार करें।
- ✓ स्वीकारोक्ति केवल एक औपचारिकता नहीं, बल्कि हृदय का परिवर्तन है।
- ✓ प्रभु यीशु मसीह में विश्वास द्वारा सच्ची क्षमा संभव है।

"जो अपने अपराधों को छिपाता है, वह सफल न होगा; परन्तु जो उन्हें मान लेता और छोड़

**देता है, उस पर दया की जाएगी।” (नीतिवचन 28:13)**

□ □□□□□□□□□ 5:6

**बाइबल पद (लैव्यव्यवस्था 5:6, हिंदी - HINOVBS):**

**“और अपने उस पाप के लिये जो उसने किया हो, प्रभु प्रभु यहोवा के लिये अपराधबलि**

**लाए, अर्थात् झुंड में से कोई मादा भेड़ या बकरी पापबलि के लिये लाए; और याजक**

**उसका प्रायश्चित्त उसके पाप के कारण करेगा।”**

□ □□□□ □□□ □□□□□□□

**लैव्यव्यवस्था 5:6 पापबलि (Sin Offering) के नियमों के बारे में बताता है। जब कोई व्यक्ति**

**किसी विशेष प्रकार का पाप करता था, जैसे कि झूठी शपथ खाना, अनजाने में किसी अशुद्ध**

**वस्तु को छूना, या अन्य धार्मिक अपराध, तो उसे परमेश्वर के सामने एक बलि चढ़ानी होती थी।**

### ✓ बलि का प्रकार

- यहाँ पर स्पष्ट किया गया है कि पापबलि के लिए एक मादा भेड़ (lamb) या मादा बकरी (goat) लाई जाए।
- यह पशु निर्दोष और स्वस्थ होना चाहिए, जिससे बलिदान शुद्ध और स्वीकार्य हो।

### ✓ याजक का कार्य

- याजक (महायाजक या अन्य याजक) बलि लेकर पापी का प्रायश्चित्त करता था।
- बलि के खून को वेदी पर छिड़का जाता था, जिससे व्यक्ति का पाप परमेश्वर के सामने

**शुद्ध माना जाता था।**

**✓पशु का लिंग (मादा ही क्यों?)**

- मादा भेड़ या बकरी का चुनाव यह दर्शाता है कि यह पापबलि थी, जबकि नर पशु अधिकतर होमबलि (Burnt Offering) या मेलबलि (Peace Offering) में प्रयोग किए जाते थे।
  - रब्बियों के अनुसार, मादा पशु को पापबलि में इसलिए चुना गया क्योंकि यह विनप्रता और दीनता का प्रतीक होता है।
- 

□ □

□ □ ‘□□□’ □□□ □ □ □□□□□ □□□□ □□□?

- आम तौर पर, पापबलि (Sin Offering) को “*Chatat*” कहा जाता है, लेकिन यहाँ पर **अशाम (Asham)** शब्द आया है, जो आमतौर पर दोषबलि (Guilt Offering) के लिए प्रयुक्त होता है।
- **मालबिम (Malbim)** ने कहा कि यहाँ पर ‘अशाम’ का प्रयोग यह दिखाने के लिए किया गया कि इस प्रकार के पाप अधिक गंभीर हैं, क्योंकि इनमें अनजाने में किए गए पापों में भी एक प्रकार की जानबूझकर की गई गलती होती है।
- **रव हिर्श (Rav Hirsch)** ने कहा कि यह शब्द पाप के बाहरी प्रभाव (External Consequences) को इंगित करता है, जबकि *Chatat* आंतरिक दोष (Internal Degradation) को दर्शाता है।
- **रालबाग (Ralbag)** के अनुसार, यह बलि विशेष रूप से व्यक्तिगत दोष के लिए दी

जाती थी।

□ □ "□□□□ □□□□ □□ □□□□" □□ □□□□ □□ □□□□

- तलमूद (*Talmud*) में कहा गया है कि बलि के लिए मादा पशु इसलिए चुना गया क्योंकि यह पापबलि (Sin Offering) थी, जबकि नर पशु आमतौर पर होमबलि (Burnt Offering) के लिए प्रयुक्त होते थे।
- मालबिम (Malbim) ने कहा कि "झुंड में से" (*min hatzon*) शब्द इस बात को स्पष्ट करता है कि कोई भी प्रकार की भेड़ या बकरी चढ़ाई जा सकती थी, जब तक कि वह स्वस्थ और योग्य हो।
- यह नियम "*pelegess*" नामक विशेष प्रकार के 13 महीने में जन्मे मेमने को बाहर करता था, जो पूर्ण रूप से विकसित नहीं होता था।

□ □ **Olah V'Yored** (आर्थिक स्थिति के अनुसार बलि बदलना)

- □□ □□□□ □□ □□□□□□, □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□  
□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□:

1 अमीर व्यक्ति → □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□

2 गरीब व्यक्ति → □□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□  
□□□

3 अत्यधिक गरीब व्यक्ति → □□□□ □□ *ephah* (लगभग 2 लीटर) आटे की भेंट  
देता था।

- मालबिम ने कहा कि यदि किसी ने बलिदान लाने के लिए भेड़ खरीद ली और तब तक गरीब हो गया, तो वह उसे बेच सकता था और पक्षियों को बलि के रूप में ला सकता था।

□ ?

## 1□ प्रभु यीशु मसीह की बलि का संकेत

- इस बलिदान की आवश्यकता यह दिखाती है कि पाप के लिए एक बलिदान अनिवार्य था।
- यह व्यवस्था इस बात की ओर इशारा करती थी कि एक अंतिम और संपूर्ण बलिदान की आवश्यकता थी, जो प्रभु यीशु मसीह के द्वारा पूरा हुआ।
- इब्रानियों 10:10 में कहा गया है, “हम प्रभु यीशु मसीह के शरीर के एक ही बार बलिदान चढ़ाए जाने के द्वारा पवित्र किए गए हैं।”

## 2□ पाप की गंभीरता और प्रायशिचित की आवश्यकता

- यह नियम हमें सिखाता है कि पाप एक गंभीर बात है, और हमें अपने पापों को स्वीकार करना और परमेश्वर के सामने पश्चाताप करना चाहिए।
- 1 यूहन्ना 1:9 कहता है, “यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह विश्वासी और धर्मी है, कि हमारे पाप क्षमा करे और हमें सब अधर्म से शुद्ध करे।”

## 3□ आज के चर्च में इसका महत्व

- आज, मसीही लोग पशु बलि नहीं चढ़ाते, क्योंकि प्रभु यीशु मसीह का बलिदान अंतिम और पूर्ण बलिदान था।
- परंतु, यह सिद्धांत हमें सिखाता है कि हमें अपने पापों को स्वीकार करके प्रभु यीशु मसीह के बलिदान पर भरोसा रखना चाहिए।
- मसीही धर्म में प्रायशिचित, पाप स्वीकार और अनुग्रह द्वारा उद्धार की शिक्षा दी जाती है।

--	--	--	--	--	--	--

✓ लैब्यवस्था 5:6 में बताया गया है कि जब कोई विशेष पाप करता था, तो उसे एक मादा भेड़ या बकरी बलिदान के रूप में लानी होती थी।

✓ मसीही दृष्टिकोण से, यह बलि प्रभु यीशु मसीह के अंतिम बलिदान की ओर इशारा करती थी, जिससे आज किसी भी पशु बलि की आवश्यकता नहीं रही।

✓ ह नियम हमें परंचाताप, विश्वास, और प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह में चलने की शिक्षा देता है।

A horizontal sequence of 15 empty rectangular boxes, followed by a vertical ellipsis.

- इब्रानियों 10:10 – "प्रभु यीशु मसीह के बलिदान से हम शुद्ध किए गए हैं"
  - 1 यूहन्ना 1:9 – "यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमें क्षमा करेगा।"

**”यदि वह भेड़-बकरी का बच्चा लाने में समर्थन हो, तो वह प्रभु प्रभु यहोवा के समुख अपने अपराधबलि के लिए दो कपोत, या दो पंडुक के बच्चे लाए, एक तो पापबलि के लिए और दूसरा होमबलि के लिए।” (लैब्यव्यवस्था 5:7)**

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

इस पद में पापबलि (Sin Offering) और होमबलि (Burnt Offering) का उल्लेख है। यह उन लोगों के लिए था जो आर्थिक रूप से एक मेम्रा (lamb) या बकरी नहीं ला सकते थे। इस नियम के अनुसारः

1. अगर कोई व्यक्ति धनवान है, तो उसे अपने पापों के प्रायशिचित के लिए एक भेड़ या बकरी चढ़ानी थी।
2. अगर कोई गरीब है, तो उसे दो पक्षी (कबूतर या पंडुक) चढ़ाने की अनुमति दी गई -
  - एक पापबलि के लिए (जो पापों का प्रायशिचित करता था)।
  - दूसरा होमबलि के लिए (जो पूरी तरह जलाया जाता था और परमेश्वर को समर्पित होता था)।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

- यह सिद्धांत "דָרָא וְלֹא יָרַא" (Olah V'yored) कहलाता है, जिसका अर्थ है कि बलि देने की अनिवार्यता व्यक्ति की आर्थिक स्थिति पर निर्भर करती है।
- परमेश्वर केवल धनवानों से ही बलिदान की अपेक्षा नहीं करता बल्कि गरीबों के लिए भी एक वैकल्पिक तरीका प्रदान करता है।
- बलिदान का मुख्य उद्देश्य पापों की क्षमा और परमेश्वर के साथ पुनः मेल करना था।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □ □

1 □ "यदि उसकी हैसियत न हो" (דִּין הַגְּזִיעָה / Lo Tagia Yado)

यह वाक्यांश यह बताता है कि अगर कोई व्यक्ति आर्थिक रूप से कमज़ोर है तो उसे बड़ी बलि देने के लिए बाध्य नहीं किया जाएगा।

□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□

#### 1□ मालबीम (Malbim):

- "Tagia" का अर्थ है "पहुँचना"। अगर किसी की संपत्ति उस स्तर तक नहीं पहुँचती कि वह एक भेड़ ला सके, तो वह पक्षी ला सकता है।
- यह आर्थिक बाध्यता को दर्शाता है, न कि केवल संपत्ति के अभाव को। यदि किसी के पास एक भेड़ तो हो लेकिन वह मूलभूत आवश्यकताओं (भोजन, वस्त्र) से वंचित है, तो उसे गरीब माना जाएगा।

#### 2□ तोराह तेमीमाह (Torah Temimah):

- यहूदी कानून के अनुसार, व्यक्ति को इस बलिदान के लिए ऋण लेने की आवश्यकता नहीं है।
- इसका मतलब है कि परमेश्वर किसी व्यक्ति को उसकी सामर्थ्य से अधिक बोझ नहीं देता।

#### 3□ और हाचाइम (Or HaChaim):

- व्यक्ति को बलिदान जल्द से जल्द चढ़ाने का प्रयास करना चाहिए, लेकिन अतिरिक्त परिश्रम करके पैसा कमाने के लिए बाध्य नहीं किया जाएगा।

#### 4□ रेगियो (Reggio):

- "Lo Tagia Yado" का अर्थ है कि किसी की "हाथ की पहुँच" उस स्तर तक नहीं होती कि

## वह महंगा बलिदान चढ़ा सके।

---

2 □ "□□ □□□□ - □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□"

□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□

### 1 □ चिज्कुनी (Chizkuni):

- अमीर व्यक्ति के बलिदान में बलि का मांस याजकों को खाने के लिए दिया जाता था, लेकिन गरीब व्यक्ति के पक्षियों में केवल रक्त चढ़ाया जाता था।
- इसलिए, अतिरिक्त बलि (होमबलि) आवश्यक थी ताकि बलिदान का पूरा उद्देश्य पूरा हो सके।

### 2 □ मालबीम (Malbim):

- अन्य बलिदानों में पहले होमबलि चढ़ाई जाती थी, लेकिन यहाँ पहले पापबलि दी जाती है क्योंकि यह व्यक्ति के पाप का प्रायशिच्त करता था।

### 3 □ रम्बान (Ramban):

- गरीब व्यक्ति का बलिदान उसी उद्देश्य को पूरा करता है जो अमीर व्यक्ति का बलिदान करता था, लेकिन परमेश्वर गरीबों के प्रति दयालु होता है और उन्हें हल्का बलिदान करने की अनुमति देता है।

### 4 □ तुर हा-अरूख (Tur HaArokh):

- यह बलिदान गरीब व्यक्ति के प्रति परमेश्वर की करुणा को दर्शाता है।

यद्यपि आज मसीही विश्वास में बलिदान नहीं चढ़ाए जाते, लेकिन यह सिद्धांत कई रूपों में प्रासंगिक बना हआ है:

**1□ □□□□□ □□□□ □□□□□ (The Ultimate Sacrifice)**

- इब्रानियों 10:10 – "और उसी इच्छा के अनुसार हम प्रभु यीशु मसीह के शरीर के एक ही बार बलिदान चढ़ाए जाने के द्वारा पवित्र किए गए हैं।"

- प्रभु यीशु मसीह को अंतिम बलिदान माना जाता है, जिसने पापबलि की व्यवस्था को पूरा किया।
  - इसलिए, अब पशु बलिदान की आवश्यकता नहीं रही, क्योंकि प्रभु यीशु ने समस्त मानवता के पापों के लिए स्वयं को अर्पित किया।

- परमेश्वर की व्यवस्था गरीबों का ध्यान रखती थी, और यह सिद्धांत आज भी मसीही समुदायों में लागू होता है।
  - बाइबल कहती है कि परमेश्वर गरीबों और जरूरतमंदों की देखभाल करना चाहता है:
    - **नीतिवचन 19:17** – “जो दीन पर अनुग्रह करता है वह प्रभु प्रभु यहोवा को उधार देता है, और वह उसके भले काम का प्रतिफल देगा।”

## **3□ □□□□□□ □□□□□□ (Spiritual Sacrifice)**

- आज के मसीही विश्वासी भौतिक बलिदान के स्थान पर आत्मिक बलिदान

□ रोमियों 12:1 – ”इसलिए, हे भाइयों, मैं तुम से परमेश्वर की दया की बिनती करता हूँ।

कि अपने शरीरों को जीवित, पवित्र और परमेश्वर को भावता बलिदान करके चढ़ाओ,

यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।”

- इसका अर्थ है कि मसीही विश्वासी अपने जीवन को परमेश्वर के लिए समर्पित करें।

A horizontal row of ten empty square boxes, each with a thin black border, intended for children to draw or write in.

□ □□□□□□□□□□□□ 5:7 □□□□□□□□□□□□

A horizontal row of 20 small square icons, each containing a different geometric shape, used as a decorative separator at the bottom of the page.

1

**रूप से दयालु हैं।**

□ □ □, □ □ □□□□□ □□□ दीनता, न्याय, करुणा, और आत्मिक समर्पण की प्रेरणा

देता है।

परमेश्वर ने गरीबों और असीरों दोनों के लिए बलिदान का मार्ग प्रदान किया था। आज के

मसीही विश्वास में यह सिद्धांत दिखाता है कि हर व्यक्ति को परमेश्वर की उपासना अपनी

**सामर्थ्य के अनुसार करनी चाहिए, और परमेश्वर ब्रह्मी बलिदान से अधिक दिल के समर्पण**

को महल देते हैं। □

(Leviticus 5:8, हिंदी बाइबल)

“फिर वह उन्हें याजक के पास ले जाएगा, और याजक एक को पापबलि के रूप में अर्पित करेगा, और दूसरे को होमबलि के रूप में अर्पित करेगा। और वह पहले पापबलि को अर्पित करेगा, और फिर होमबलि को अर्पित करेगा।”

### हिंदी में समझाना (Explanation in Hindi):

Leviticus 5:8 का संदर्भ है पाप के लिए एक बलि चढ़ाने की विधि, विशेष रूप से जब कोई व्यक्ति जो मृग या भेड़ का बलि चढ़ाने की सामर्थ्य नहीं रखता है, पक्षी का बलि चढ़ा सकता है। इस पद में बताया गया है कि कैसे पक्षी को एक विशेष तरीके से बलि के लिए चुना जाता है और उसके सिर को पिंच (पकड़कर मरोड़ना) करना होता है।

### पक्षी बलि की विशेष विधि (Method of Bird Offering)

इस पद में विशेष रूप से यह बताया गया है कि पक्षी के सिर को गर्दन के पास से पिंच किया जाता है, लेकिन उसे पूरी तरह से अलग नहीं किया जाता। यह विधि “मेलिकाह” (Melikah) कहलाती है, जो पक्षियों के बलि चढ़ाने का तरीका है।

### रब्बियों द्वारा व्याख्याएँ (Rabbinic Interpretations):

#### 1. एडरेट एलियाहु (Aderet Eliyahu):

इस पुस्तक में कहा गया है कि पिंच करने की क्रिया गर्दन के पास की जाती है, न कि सिर के पिछले हिस्से पर। इससे यह स्पष्ट होता है कि पक्षी की बलि में सिर को पिंच करना एक विशेष विधि है, जो अन्य जानवरों की बलि से अलग है।

## 2. बार्टेनूरा (Bartenura):

बार्टेनूरा बताते हैं कि पिंच करने की क्रिया "गर्दन के सामने" की जाती है, अर्थात् गर्दन के ठीक पास, न कि पूरे सिर के पीछे।

## 3. राशी (Rashi):

राशी के अनुसार, "ओरेफ" (oref) का अर्थ है वह स्थान जहाँ सिर गर्दन की तरफ झुकता है। और "मोल ओरेफ" (mol oref) का अर्थ है वह स्थान जो गर्दन के निकट होता है।

## 4. डेविड ज़्वी हॉफमैन (David Zvi Hoffmann):

उनका कहना है कि "मोल" शब्द का अर्थ है "सामने से," और "ओरेफ" गर्दन का पिछला हिस्सा है, अर्थात् जहाँ सिर गर्दन की ओर ढलता है।

## कृषि से संबंधित कार्यवाही और नशे का ध्यान (The Act of Pinching the Head and Its Theological Meaning):

इस क्रिया का अर्थ है कि पक्षी का सिर पूरी तरह से अलग नहीं किया जाना चाहिए, बल्कि केवल एक अंग को काटा जाता है। यह बलि की विधि, जिसे सिनेहिस्ट में देखा जा सकता है, वह येरुशलम में पाप का प्रायश्चित्त करती है और इस पद्धति से पक्षी को आधिकारिक रूप से समाप्त किया जाता है।

## आज के मसीही चर्च में इसका महत्व (Significance in Christianity Today):

### 1. पाप का बलि (Sin Offering):

क्रिस्टियनों के लिए, यह बलि उनके पापों का प्रायशिच्त करने का प्रतीक मानी जाती है, जैसे प्रभु यीशु मसीह ने अपनी बलि दी थी। यह बलि पाप को दूर करने के लिए एक विधि थी, और प्रभु यीशु मसीह की बलि की तुलना में इसे एक प्रकार का आदान प्रदान माना जा सकता है।

## 2. सुसमाचार का प्रतीक (Symbol of Atonement):

मसीही चर्च में इस बलि का उल्लेख यह समझाने के लिए किया जाता है कि प्रभु यीशु मसीह ने खुद को पापों के लिए बलि के रूप में प्रस्तुत किया और उसके बलिदान के माध्यम से हम परमेश्वर से मेल मिलाप कर सकते हैं।

## 3. आध्यात्मिक रूप से समझना:

मसीह में विश्वास करने से पूर्व में दिए गए बलि के विधान को समझना महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह इस बात की पुष्टि करता है कि परमेश्वर के साथ संबंध स्थापित करने के लिए एक मूल्य चुकाना पड़ता है, और प्रभु यीशु मसीह के बलिदान के माध्यम से यह कार्य हुआ।

## निष्कर्ष (Conclusion):

Leviticus 5:8 में बताए गए पक्षी बलि के नियम, विशेष रूप से पिंच करने की विधि, मसीही विश्वासियों को प्रभु यीशु मसीह की बलि के प्रतीक के रूप में स्मरण दिलाते हैं, जिसमें परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप और पापों से मुक्ति का मार्ग दिखाया गया।

## लेवितिकस 5:9 (हिंदी बाइबल, 2011 संस्करण):

**"और वह पक्षी के रक्त को इस प्रकार वेदी के चारों ओर छिकेंगे, और उसकी सारी धारा**

**वेदी के नीचे की भूमि पर निकल जाएगी।"**

यह विवरण लेवितिकस 5:9 में है, जहाँ पर पक्षी द्वारा किए जाने वाले पापबलि (sin-offering)

की प्रक्रिया का उल्लेख किया गया है।

## हिंदी में समझाना:

लेवितिकस 5:9 में जो पक्षी की बलि दी जाती है, उसमें दो मुख्य क्रियाएँ हैं: रक्त छिकना

(Sprinkling) और रक्त बहाना (Draining)। यह दोनों क्रियाएँ वेदी पर पापबलि की प्रक्रिया

का हिस्सा हैं, जो यह दर्शाती हैं कि पाप के लिए बलि दी जाती है और उसका प्रायश्चित किया

जाता है।

### 1. रक्त छिकना (Sprinkling):

इसमें याजक पक्षी के रक्त को हाथ में पकड़कर, उसे ऊपर-नीचे हिलाता है ताकि रक्त

वेदी के दीवार पर छिक जाए। यह क्रिया एक दूरी से की जाती है, यानी याजक का हाथ

और पक्षी का शरीर दीवार से नहीं छूते, लेकिन रक्त वेदी के निचले हिस्से पर छिकते हैं।

### 2. रक्त बहाना (Draining):

फिर याजक बाकी का रक्त वेदी के निचले हिस्से में बहा देता है, अर्थात् रक्त वेदी के

आधार पर गिरता है। यह प्रक्रिया स्वाभाविक रूप से होती है, यानि याजक रक्त को दबा

कर नहीं निकालता, बल्कि यह अपने आप निकलता है, जैसा कि बाइबल में "הצף!"

(यिमात्से) शब्द से व्यक्त किया गया है। यह शब्द सक्रिय नहीं, बल्कि निष्क्रिय है, जो यह

दर्शाता है कि रक्त स्वाभाविक रूप से बहता है।

## रब्बी विचार (Rabbinical Interpretations):

रब्बियों ने इस बलि की प्रक्रिया के महत्व को समझाया और कई विस्तारों से इसकी व्याख्या की है:

### 1. इच्छा (Intent, המטרה):

रब्बियों के अनुसार, बलि का उद्देश्य विशेष रूप से पाप का प्रायश्चित्त होना चाहिए। यदि याजक अन्य किसी बलि का इरादा करता है, तो वह बलि अमान्य मानी जाती है। "גַּאֲלָה" (यह पापबलि है) वाक्यांश का प्रयोग यह बताता है कि बलि को सही तरीके से पाप के लिए अर्पित किया जाना चाहिए।

### 2. "הַצְּבָעַ" (यिमात्से):

शब्द "הַצְּבָעַ" में "हे" के साथ समाप्ति का महत्व रब्बियों द्वारा समझाया गया है। इस शब्द के अंत में "हे" का प्रयोग यह दर्शाता है कि रक्त वेदी के आधार पर बहता है। इसका अर्थ है कि रक्त को स्वाभाविक रूप से वेदी के निचले हिस्से में बहने दिया जाता है, न कि याजक इसे दबा कर बाहर निकालता है।

### 3. पक्षी और पशु बलियों में अंतर:

रब्बी यह भी बताते हैं कि पक्षी और पशु के पापबलि में अंतर होता है। पक्षी के रक्त को वेदी के निचले हिस्से पर छिड़कते हैं, जबकि पशु के रक्त को वेदी के ऊपरी हिस्से पर छिड़कते हैं। यह अंतर यह दर्शाता है कि पक्षी की बलि एक विशेष प्रकार की होती है, जो दीन-हीन व्यक्ति या निर्धन व्यक्तियों के लिए होती है, जो पशु का बलिदान नहीं कर

## सकते।

### मसीही दृष्टिकोण (Christian Perspective):

मसीही विश्वास में, पुराना नियम और उसकी बलि प्रणालियाँ, प्रभु यीशु मसीह के बलिदान का चित्रण करती हैं। मसीह ने अपनी जान दी ताकि मानवता के पापों का प्रायश्चित हो सके। पुराने नियम के बलि विधान, जैसे पापबलि, प्रभु यीशु के बलिदान का संकेत देते हैं।

#### 1. पाप के लिए बलि (Sacrifice for Sin):

जैसा कि पाप के लिए पक्षी की बलि दी जाती थी, ठीक वैसे ही मसीह ने क्रूस पर अपने रक्त से पापों का प्रायश्चित किया। मसीही विश्वास में इसे "आध्यात्मिक रूप से" और "शारीरिक रूप से" समझा जाता है कि प्रभु यीशु का बलिदान सभी पापों का प्रायश्चित है।

#### 2. रक्त का महत्व:

पुराने नियम में रक्त का बहुत महत्व था, और यह माना जाता था कि रक्त के द्वारा ही पापों का प्रायश्चित होता है। इसी तरह, मसीही विश्वास में प्रभु यीशु का रक्त पापों के लिए एक अंतिम बलि है, जो पूरे संसार के पापों के लिए अर्पित किया गया।

#### 3. चर्च में आज के रीति-रिवाज़:

मसीही चर्ची में, प्रभु यीशु के बलिदान को याद करने के लिए नियमित रूप से "सैन्टिफिकेशन" और "इशु के रक्त का बलिदान" पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, जैसे कि प्रभु की भोज (Holy Communion) के दौरान, जब विश्वासियों को प्रभु यीशु का

**शरीर और रक्त प्रतीकात्मक रूप से दिया जाता है।**

लेवितिकस 5:10 (हिंदी बाइबल, 2011 संस्करण):

"फिर वह दूसरे को, जैसा विनियम (תֹּבֶדֶת) है, ले जाएगा, और जैसा कि नियम के अनुसार है, उसे उतारकर उसे जलाएगा। यह एक बलिदान है, जो पाप के कारण है।"

**हिंदी में समझाया गया:**

लेवितिकस 5:10 में यह बताया गया है कि एक पक्षी का बलिदान, जिसे पाप के कारण किया जाता है, को कैसे अदा किया जाए। यह वाक्यांश "जैसा विनियम है" (תֹּבֶדֶת) का प्रयोग किया गया है, जो कि बलिदान की प्रक्रिया के नियमों को स्पष्ट करता है। इसका मतलब है कि पक्षी को उसी तरह से जलाया जाएगा, जैसा पहले से निर्धारित नियमों के अनुसार किया जाता है। इस पर विभिन्न रब्बियों के दृष्टिकोण हैं:

**रब्बियों की व्याख्याएं:**

1. **राशि और अन्य रब्बी:** राशि के अनुसार, "जैसा विनियम है" का मतलब है कि यह नियम उस पक्षी के जलाए जाने की प्रक्रिया से संबंधित है, जो एक निःस्वार्थ बलिदान के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इसमें पक्षी का सिर दबाकर उसका रक्त वेदी पर निकाला जाता है और फिर उसे पूरी तरह से जलाया जाता है। राशि इसको लेवितिकस 1:14 के साथ जोड़ते हैं, जो एक सामान्य निःस्वार्थ बलिदान के नियमों का पालन करता है।
  - **उदाहरण:** राशि ने इसे लेवितिकस 1:14 के साथ जोड़ते हुए बताया है कि यह वही प्रक्रिया है जिसमें पक्षी को पूरी तरह से जलाना होता है।

2. **कुछ अन्य रब्बी:** कुछ अन्य रब्बी यह मानते हैं कि "जैसा विनियम है" शब्द असाधारण है

अगर यह केवल पक्षी के सामान्य निःस्वार्थ बलिदान से संबंधित है। वे इसे पाप के

बलिदान से जोड़ते हैं, **खासकर गरीब व्यक्तियों के द्वारा दिए गए पशु बलिदान से।**

- **उदाहरण:** इस व्याख्या के अनुसार, पक्षी को पाप के बलिदान के रूप में लिया जाता है और इसे उसी तरह से किया जाता है जैसे अमीर लोग अपने पशु बलिदान में करते हैं, अर्थात् यह निःस्वार्थ बलिदान के रूप में नहीं होता।

3. **कुछ रब्बी और अन्य व्याख्याएं:** कुछ रब्बी यह मानते हैं कि "जैसा विनियम है" का संबंध

पक्षी के पाप के बलिदान की प्रक्रिया से है, जिसमें पक्षी का सिर गर्दन से काटा जाता है।

जबकि कुछ अन्य इसे उस स्थान पर सिर को दबाने के तौर पर देखते हैं जहाँ नपुंसकता

(नपुनस्य) होती है।

- **उदाहरण:** एक अन्य मत है कि पक्षी का सिर और शरीर एक साथ पकड़कर रक्त को वेदी पर छिड़का जाता है।

4. **मिझराची:** मिझराची का कहना है कि यहाँ पर "विनियम" (गा) शब्द का प्रयोग किया

गया है, न कि "निर्णय" (पृष्ठम), क्योंकि "विनियम" एक स्थापित कानून या प्राचीन

परंपरा को दर्शाता है, न कि एक निर्णय या अदालत का आदेश।

**आज के मसीही चर्च में इसका क्या मान है:**

मसीही धर्म में, लेवितिकस के बलिदान प्रणालियों का पालन नहीं किया जाता है, क्योंकि

मसीही विश्वास के अनुसार प्रभु यीशु मसीह ने कृस पर अपनी मृत्यु से सभी पापों के लिए

अंतिम बलिदान दिया है। इस तरह, मसीही धर्म में पुराने नियम की बलिदान प्रणाली को पूरी

तरह से प्रभु यीशु के बलिदान में समाहित किया गया है, जो सच्चे पाप के बलिदान के रूप में

माना जाता है।

1. **प्रभु यीशु के बलिदान के रूप में पूर्ण रूप से माफ़ी:** मसीही विश्वास के अनुसार, प्रभु

यीशु का बलिदान सभी पापों के लिए परमेश्वर के सामने एक पूर्ण और अंतिम

बलिदान है। प्रभु यीशु का रक्त पुराने नियम के बलिदानों को पूरा करता है, जिनमें

लेवितिकस के पक्षी बलिदान भी शामिल हैं।

2. **विश्वास के माध्यम से माफ़ी:** मसीही धर्म में, माफ़ी और प्रायश्चित प्रभु यीशु मसीह में

विश्वास के द्वारा प्राप्त की जाती है, न कि शारीरिक बलिदानों के माध्यम से। बलिदान

की अवधारणा अब प्रभु यीशु के बलिदान के रूप में समझी जाती है।

3. **प्रतीकात्मक महत्व:** हालांकि पुराने नियम के बलिदान अब मसीही चर्च में शारीरिक रूप

से नहीं किए जाते, फिर भी यह बलिदान मसीही धर्म में प्रतीकात्मक महत्व रखते हैं। वे

पाप, प्रायश्चित, और परमेश्वर के साथ पुनः मेलजोल की आवश्यकता को दर्शाते हैं,

जिसे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा पूरा किया गया है।

## सारांश:

"जैसा विनियम है" (לענין) का अर्थ लेवितिकस 5:10 में विभिन्न रबियों द्वारा अलग-अलग

समझा गया है। कुछ इसे सामान्य पक्षी बलिदान की प्रक्रिया से जोड़ते हैं, जबकि कुछ इसे पाप के बलिदान की प्रक्रिया से जोड़ते हैं। मसीही चर्च में इस बलिदान को शारीरिक रूप से नहीं किया जाता, लेकिन यह प्रभु यीशु मसीह के बलिदान को दर्शाता है, जो पाप और प्रायशिचित की आवश्यकता को पूरा करता है।

### बाइबल के पद:

**Leviticus 5:11 (NIV)**

11 “लेकिन यदि वह गरीब हो और उसकी सामर्थ्य न हो कि वह एक बकरा या एक मेमना चढ़ा सके, तो वह पापबलि के रूप में दसवें हिस्से एफ़ा आटा लाए, और उसमें तेल या लोबान न डाले। यह पापबलि होगी।

यह विषय लेवितिकस (Leviticus) के अध्याय 5 के 11-13 पदों में पाया जाता है। इस भाग में यह बताया गया है कि गरीब व्यक्ति के लिए पापबलि (Sin Offering) का नियम क्या है। यदि कोई गरीब व्यक्ति यथासम्भाव बलि का पशु नहीं ला सकता, तो उसे एक दशमांश एफ़ा (tenth of an ephah) आटे की बलि चढ़ानी होती है।

### हिंदी में समझाएं:

यह नियम विशेष रूप से गरीबों के लिए है, जिन्हें सामर्थ्य नहीं है कि वे बड़े जानवरों (जैसे बकरा या मेमना) को बलि के रूप में चढ़ा सकें। ऐसे व्यक्ति को एक निश्चित मात्रा (दशमांश एफ़ा आटा) का आटा लाने के लिए कहा जाता है, जिसे पापबलि के रूप में चढ़ाना होता है। इसमें न तो तेल डाला जाता है और न ही लोबान (सुगंधित पदार्थ)। इसका उद्देश्य उस व्यक्ति के पाप के लिए

**प्रायश्चित करना है, और यह बलि समर्पण का एक संकेत है, जिसमें व्यक्ति अपने पापों के लिए विनती करता है और ईश्वर से क्षमा की मांग करता है।**

### **रब्बियों की व्याख्याएँ:**

1. **समय पर बलि चढ़ाना:** रब्बी यह मानते हैं कि व्यक्ति को अपनी बलि समय रहते चढ़ानी चाहिए, चाहे उसके पास बड़े पशु चढ़ाने के लिए पैसे हों या नहीं। अगर कोई गरीब व्यक्ति एक बड़ी सम्पत्ति का उत्तराधिकारी है, तो उसे उस समय तक इंतजार नहीं करना चाहिए। उसे जितनी सामर्थ्य हो, उतना ही चढ़ाना चाहिए। यह विश्वास है कि सही समय पर चढ़ाई गई बलि ईश्वर के लिए अधिक प्रिय होती है।
2. **आटे का बलि होना:** आटे की बलि एक निश्चित माप (दशमांश एफ़ा) है, जो एक दिन के खाने के बराबर मानी जाती है। यह गरीब व्यक्ति के पास जितनी सामर्थ्य होती है, उतनी ही होती है, और इससे यह सिद्ध होता है कि परमेश्वर किसी की स्थिति के आधार पर बलि की मात्रा नहीं, बल्कि उसकी श्रद्धा और पवित्रता देखता है।
3. **तेल और लोबान का अभाव:** रब्बी यह समझाते हैं कि पापबलि की आटे में न तेल होता है और न ही लोबान। इसका कारण यह है कि यह एक पाप की बलि है, और पाप के लिए चढ़ाई जाने वाली बलि को सजाया नहीं जाता। यह बलि एक सादगी और विनप्रता को दर्शाती है। रब्बी यह भी मानते हैं कि यदि तेल या लोबान का उपयोग किया जाता है, तो बलि अमान्य हो जाती है।
4. **इच्छा का महत्व:** रब्बी यह मानते हैं कि बलि का उद्देश्य पाप के लिए प्रायश्चित करना है,

और यह बलि तब ही स्वीकार होती है जब इसे सही उद्देश्य और समर्पण के साथ चढ़ाया जाता है। अगर यह बलि बिना सही भावना के चढ़ाई जाती है, तो यह अमान्य हो जाती है।

### मसीही दृष्टिकोण:

- ईसा का बलिदान:** मसीही विश्वास के अनुसार, प्रभु यीशु मसीह का बलिदान पुराने नियम की बलियों का अंतिम और पूर्ण रूप है। यह आटे की पापबलि और अन्य बलियों का प्रतीक है, जो अब प्रभु यीशु के बलिदान में पूरी हो गई हैं। मसीही दृष्टिकोण में यह समझा जाता है कि प्रभु यीशु का बलिदान पाप के लिए एक बार और हमेशा के लिए प्रायशिचित है।
- अस्तित्व का सामर्थ्य:** मसीही चर्च में पापबलि के बारे में विचार करते समय, यह विश्वास किया जाता है कि पाप के लिए प्रायशिचित का मार्ग प्रभु यीशु के बलिदान के माध्यम से ही खुला है। इस दृष्टिकोण में किसी भी प्रकार की पशुबलि की आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि प्रभु यीशु ने एक ही बार में सब पापों के लिए बलि दी।
- स्मारक बलि:** मसीही चर्च में यह बलि समर्पण और आत्मिक प्रायशिचित का प्रतीक मानी जाती है, जो विश्वासियों को प्रभु यीशु के बलिदान के माध्यम से पापों से मुक्ति की ओर प्रेरित करती है।

### सारांश:

इस पापबलि का उद्देश्य गरीब व्यक्ति को भी ईश्वर के साथ संबंध बनाए रखने का एक मार्ग प्रदान करना था, भले ही उसके पास अन्य बलियों के लिए धन न हो। रब्बी इसे समय पर, सही

**उद्देश्य के साथ, और विनप्रता के साथ चढ़ाने का आदेश देते हैं। जबकि मसीही दृष्टिकोण में इस बलि को प्रभु यीशु के बलिदान से जोड़ा जाता है, जो अंतिम और संपूर्ण प्रायश्चित्त के रूप में समझा जाता है, जिससे अब कोई अन्य बलि नहीं की जाती।**

P 73 Nu.5:6-7 To confess one's sins before God and repent from them

### **बाइबल पदः**

#### **गिनती 5:6 –**

**"यदि कोई पुरुष या स्त्री किसी प्रकार का पाप करे जो मनुष्य से मिलने वाले पापों में से हो, और प्रभु प्रभु यहोवा के प्रति विश्वासघात करके दोषी ठहरे,"**

---

### **हिंदी में व्याख्या:**

गिनती 5:6 में धोखा, प्रतिफल और अंगीकार (स्वीकारोक्ति) से संबंधित व्यवस्थाएँ दी गई हैं। यह उन परिस्थितियों को संबोधित करता है जहाँ कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति के साथ विश्वासघात करता है, विशेषकर चोरी या झूठी शपथ के संदर्भ में।

#### **1. पाप (अपराध) – (מַעֲלָת חֲטֹאת)**

इस वाक्यांश का अर्थ है "मनुष्यों से मिलने वाला पाप", अर्थात् वे पाप जो हम एक-दूसरे के विरुद्ध करते हैं। इसमें निम्नलिखित अपराध शामिल हैं:

- चोरी करना

- किसी के धन को नकार देना (जो उसने धरोहर या उधार के रूप में दिया था)
- झूठी शपथ लेना (किसी खोई हुई वस्तु के संबंध में)
- किसी को आर्थिक रूप से धोखा देना

□ यहाँ चोरी या आर्थिक धोखाधड़ी के बावजूद मानवीय अपराध नहीं हैं, बल्कि आध्यात्मिक रूप से प्रभु प्रभु यहोवा के प्रति विश्वासघात भी माना गया है।

## 2. विश्वासघात (ल'מעול בעול באה ')

शब्द "ल'מעול בעול" का अर्थ है धोखा देना या विश्वासघात करना, और यहाँ इसे प्रभु प्रभु यहोवा के प्रति विश्वासघात कहा गया है।

- यदि कोई व्यक्ति किसी अन्य के धन को हड़पता है और फिर झूठी शपथ खाकर अपनी बेगुनाही का दावा करता है, तो वह सिर्फ उस व्यक्ति के साथ ही नहीं बल्कि परमेश्वर के साथ भी विश्वासघात कर रहा है।
- यदि पीड़ित कोई परिवर्तित (convert) व्यक्ति हो, तो यह अधिक गंभीर माना जाता था क्योंकि इससे परमेश्वर के नाम की निंदा होती थी।

## 3. दोषी और अंगीकार (אָדָמִיתָה וְשַׁפְּמוּתָה)

- यह पद कहता है कि जिसने भी पाप किया है, उसे स्वीकार करना होगा (अंगीकार करना होगा)।
- अंगीकार (Confession) विदुई ('אָדָמִית) के माध्यम से किया जाता था, और यह आवश्यक था कि अपराधी अपने अपराध को खुलकर माने।

□ रब्बी नतन ने कहा कि मृत्यु से पहले अंगीकार करना चाहिए ताकि आत्मा को शुद्ध किया

## जा सके।

### 4. प्रतिफल (वहशिव אֲשֶׁר בְּאַת)

जो कुछ भी चुराया गया है, उसे लौटाया जाना चाहिए।

अपराधी को मूल धनराशि + एक पंचमांश ( $1/5 = 20\%$ ) अतिरिक्त लौटाना होता था।

यदि पीड़ित व्यक्ति मर चुका हो और उसका कोई उत्तराधिकारी न हो, तो यह धन याजकों  
को दिया जाता था।

### 5. दोषबलि (अपराध बलि) - (מַלִּין)

- दोषी व्यक्ति को एक अपराधबलि (Guilt Offering) चढ़ानी होती थी, जो यह दर्शाता  
था कि यह अपराध केवल सामाजिक अन्याय नहीं बल्कि ईश्वर के विरुद्ध भी अपराध  
था।
- यह सिद्धांत बताता है कि किसी को केवल धन वापस करने से ही संतोष नहीं होता,  
बल्कि उसे आत्मिक रूप से भी शुद्ध किया जाना आवश्यक है।

## रब्बियों की व्याख्या:

### 1 राशी (Rashi)

- वे कहते हैं कि यह व्यवस्था लेव 6:2-5 में वर्णित चोरी और झूठी शपथ की व्यवस्था को  
दोहराती है।
- यह दो नये तत्व जोड़ती है:
  - अपराधबलि के लिए स्वयं अंगीकार करना आवश्यक है।

2. यदि पीड़ित व्यक्ति कोई परिवर्तित (convert) व्यक्ति था, और उसकी कोई संतान नहीं थी, तो चुराया गया धन याजकों को दिया जाता था।

## 2 □ रम्बान (Ramban) □

- वे कहते हैं कि इस पद में "पुरुष और स्त्री" दोनों का उल्लेख इसलिए किया गया है ताकि यह स्पष्ट हो कि स्त्रियाँ भी इन दंडों के लिए समान रूप से उत्तरदायी हैं।
- हालाँकि चोरी या झूठी शपथ लेना पुरुषों में अधिक आम था, फिर भी यह व्यवस्था सभी के लिए समान थी।

## 3 □ ओर हा-चैम (Or HaChaim) □

- वे बताते हैं कि वास्तविक पाप तभी शुरू होता है जब कोई व्यक्ति अपने ऊपर लगे आरोप से इनकार करता है।
- झूठी शपथ लेने का परिणाम यह होता है कि व्यक्ति को न केवल धन वापस करना पड़ता है बल्कि अतिरिक्त 20% जुर्माना भी भरना पड़ता है।

### उदाहरण:

कोई व्यक्ति एक परिवर्तित (convert) व्यक्ति से £500 उधार लेता है, लेकिन उसे वापस करने से इनकार कर देता है। वह झूठी शपथ लेता है कि उसने पैसे नहीं लिए। बाद में, यह परिवर्तित व्यक्ति मर जाता है और उसके कोई उत्तराधिकारी नहीं होते।

□ उस व्यक्ति को क्या करना होगा?

✓ स्वीकार (अंगीकार) करना □ □ □ □ □ □ □ □ □

✓ £500 + £100 (20% अतिरिक्त) वापस करना □

✓ £600 याजकों को देना, □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

✓ दोषबलि (Guilt Offering) चढ़ाना, जिससे वह परमेश्वर के सामने क्षमा प्राप्त कर सके।

## आज के मसीही चर्च में इसका क्या महत्व है?

### 1 □ अंगीकार (Confession) और पश्चाताप (Repentance):

- मसीही विश्वास में अंगीकार और पश्चाताप अत्यंत महत्वपूर्ण माने जाते हैं।
- 1 यूहन्ना 1:9 कहता है -

"यदि हम अपने पापों को मान लें तो वह विश्वासयोग्य और धर्मी है, कि हमारे पापों को क्षमा करे और हमें सब अधर्म से शुद्ध करे।"

### 2 □ अन्याय का निवारण (Restitution):

- केवल क्षमा माँगना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि हमें अपने गलत कार्यों का निवारण भी करना चाहिए।
- लूका 19:8 में जब जक्कई (Zacchaeus) मसीह से मिलता है, तो वह कहता है -  
"हे प्रभु, देख, मैं अपनी आधी संपत्ति कंगालों को देता हूँ, और यदि किसी से कुछ अन्याय किया है, तो उसे चौगुना भर देता हूँ।"

### 3 □ परमेश्वर और मनुष्यों के प्रति उत्तरदायित्व:

- प्रभु यीशु ने सिखाया कि यदि किसी ने अपने भाई के विरुद्ध कोई अन्याय किया है, तो

**उसे पहले अपने भाई से मेल-मिलाप करना चाहिए (मत्ती 5:23-24)।**

- यह सिद्धांत पुराने नियम की व्यवस्था से मेल खाता है, जहाँ केवल पश्चाताप पर्याप्त नहीं था, बल्कि प्रतिफल (Restitution) भी आवश्यक था।
- 

### **निष्कर्षः**

गिनती 5:6 यह सिखाता है कि धोखा देना केवल सामाजिक अपराध नहीं है, बल्कि यह परमेश्वर के प्रति भी विश्वासघात है।

- स्वीकार (Confession),
- प्रतिफल (Restitution), और
- अपराधबलि (Guilt Offering)

इन्हें सही मायनों में लागू करना आवश्यक था। आज मसीही विश्वास में हम मसीह की बलिदान की महिमा को मानते हैं, लेकिन इसके साथ-साथ हमें न्याय, अंगीकार और सुधार को भी अपनाना चाहिए।

### **बाइबल पद - गिनती 5:7**

**"वे अपने उस पाप को मान लें जो उन्होंने किया है और उसकी पूरी भरपाई करें; जो कुछ**

**उन्होंने लिया है उसे लौटा दें, और उस पर पाँचवां भाग और जोड़कर उसे उसी को दें जिससे उन्होंने अन्याय किया है।"**

## हिंदी में व्याख्या

इस पद में प्रभु प्रभु यहोवा द्वारा एक स्पष्ट आदेश दिया गया है कि यदि किसी व्यक्ति ने चोरी की हो, किसी को धोखा दिया हो, या किसी की संपत्ति को गलत तरीके से ले लिया हो, तो उसे चार महत्वपूर्ण कार्य करने होंगे:

1. **अपने पाप को स्वीकार करना (स्वीकारोक्ति - Confession)** - व्यक्ति को अपने किए गए अन्याय को खुले तौर पर स्वीकार करना आवश्यक है। यह केवल आंतरिक पछतावा नहीं, बल्कि सार्वजनिक स्वीकारोक्ति (विदुई) होनी चाहिए।
2. **मूल धनराशि को लौटाना (Restitution)** - जो भी धन या वस्तु गलत तरीके से ली गई है, उसे वापस लौटाना होगा।
3. **एक अतिरिक्त पाँचवां भाग जोड़ना (20% अधिक चुकाना)** - केवल मूल राशि लौटाना पर्याप्त नहीं है; बल्कि, दंडस्वरूप 20% अतिरिक्त राशि भी देनी होगी।
4. **पीड़ित व्यक्ति को भुगतान करना** - वह धनराशि उसी व्यक्ति को लौटानी होगी जिससे अन्याय हुआ है। यदि पीड़ित व्यक्ति मर चुका हो और उसका कोई वारिस न हो, तो यह धन याजकों (पुरोहितों) को दिया जाना चाहिए।

## रब्बियों की व्याख्याएँ

### 1. रशी (Rashi)

- रशी कहते हैं कि यह कानून विशेष रूप से उन मामलों पर लागू होता है जहाँ किसी

**व्यक्ति ने झूठी शपथ खाकर किसी से धन छीन लिया हो। इसीलिए इसे यहाँ दोहराया**

गया है, जबकि यह पहले लैव्यव्यवस्था 6:2-5 में भी बताया गया था।

- यदि ठगा गया व्यक्ति एक धर्मान्तरित यहूदी (Convert) था और उसकी मृत्यु हो गई, तो उसकी धनराशि याजकों को देनी होती है।

## 2. नचमैनिदेस (Ramban)

- उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि इस आदेश का पालन न केवल पुरुषों बल्कि महिलाओं पर भी लागू होता है।
- वे कहते हैं कि चोरी में पकड़े जाने पर पुरुष और महिला दोनों को एक ही दंड देना होगा, हालांकि समाज में महिलाओं द्वारा चोरी के मामले अपेक्षाकृत कम होते हैं।

## 3. ओर हा-चायिम (Or HaChaim)

- ओर हा-चायिम का मत है कि व्यक्ति का वास्तविक पाप तब शुरू होता है जब वह अपने अपराध को छुपाने की कोशिश करता है और झूठी शपथ खाता है। यह धोखा देने के अपराध को और गंभीर बना देता है।
- इसीलिए, जब व्यक्ति अपने पाप को स्वीकार करता है, तो उसे केवल मूल राशि नहीं लौटानी होती, बल्कि अतिरिक्त 20% भी चुकाना पड़ता है।

## 4. विल्ना गाओं (Vilna Gaon)

- वे बताते हैं कि यह कानून केवल चोरी या धोखे तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें सभी प्रकार के आर्थिक अन्याय शामिल हैं, जैसे किसी को जानबूझकर गलत सौदे में फँसाना।

## उदाहरण

### उदाहरण 1: चोरी और पश्चाताप

राहुल ने अपने मित्र मोहित से ₹ 10,000 उधार लिए और फिर यह कहकर लौटा देने से इनकार कर दिया कि उसने कभी पैसे नहीं लिए। बाद में, जब राहुल को एहसास हुआ कि उसने गलत किया है, तो उसे करना होगा:

1. **अपने पाप को स्वीकार करना** - राहुल को मोहित से माफी माँगनी होगी और यह स्वीकार करना होगा कि उसने गलत किया था।
2. **मूल राशि लौटाना** - राहुल को ₹ 10,000 वापस देना होगा।
3. **एक अतिरिक्त पाँचवां भाग जोड़ना** - राहुल को 20% अतिरिक्त राशि यानी ₹ 2,000 और जोड़कर कुल ₹ 12,000 वापस देने होंगे।

### उदाहरण 2: मृत व्यक्ति का बकाया

अमित ने एक वृद्ध धर्मातिरित यहूदी से ₹ 50,000 लिए लेकिन समय पर नहीं लौटाए। जब वह वृद्ध व्यक्ति मर गया और उसका कोई वारिस नहीं बचा, तो अमित को वह राशि याजकों (पुरोहितों) को दान करनी होगी, क्योंकि यही प्रभु प्रभु यहोवा का आदेश है।

## आज के मसीही चर्च में इस पद का महत्व

### 1. स्वीकारोक्ति (Confession) का सिद्धांत

- मसीही विश्वास में भी पाप की स्वीकारोक्ति (Confession of sins) को बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है।
- प्रभु यीशु ने कहा, "यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह विश्वासयोग्य और धर्मी है कि हमारे पाप क्षमा करे और हमें सब अधर्म से शुद्ध करे।" (1 यूहन्ना 1:9)

## 2. प्रतिफल और सुधार (Restitution and Repentance)

- प्रभु यीशु ने जक्कई (Zacchaeus) की कहानी में इस सिद्धांत को स्थापित किया (लूका 19:8-9)।
- जब जक्कई ने स्वीकार किया कि उसने लोगों से धन गलत तरीके से लिया था, तो उसने न केवल उसे लौटाने का प्रण किया, बल्कि चार गुना अधिक लौटाने का वादा किया।
- यह सिद्ध करता है कि केवल पछतावा करना पर्याप्त नहीं, बल्कि नुकसान की भरपाई करना आवश्यक है।

## 3. प्रभु के प्रति जवाबदेही

- जब हम किसी के साथ अन्याय करते हैं, तो यह केवल उस व्यक्ति के विरुद्ध नहीं होता, बल्कि प्रभु प्रभु यहोवा के विरुद्ध भी होता है।
- यही कारण है कि प्रभु यीशु ने सिखाया, "यदि तू वेदी पर अपनी भेंट चढ़ाने जा रहा है, और वहाँ तुझे स्मरण आए कि तेरे भाई के मन में तेरा कोई अपराध है, तो पहले जाकर अपने भाई से मेल कर, फिर आकर भेंट चढ़ा।" (मत्ती 5:23-24)
- इसका अर्थ है कि हमारे पाप केवल हमारे और व्यक्ति के बीच नहीं होते, बल्कि परमेश्वर भी हमारे कार्यों को देखता है।

#### **4. आर्थिक ईमानदारी का सिद्धांत**

- आज भी चर्चों में सिखाया जाता है कि किसी से लिया गया धन या संसाधन यदि गलत तरीके से प्राप्त किया गया है, तो उसे लौटाना आवश्यक है।
  - व्यापार, लेन-देन और व्यक्तिगत जीवन में ईमानदारी को मसीही विश्वास में बहुत महत्व दिया गया है।

## **निष्कर्ष**

1. गिनती 5:7 एक मजबूत नैतिक सिद्धांत देता है कि यदि कोई अन्याय करता है, तो उसे स्वीकारोक्ति, प्रतिफल (restitution), और दंडस्वरूप अतिरिक्त राशि देकर सुधार करना चाहिए।
  2. यह आदेश केवल यहां व्यवस्था तक सीमित नहीं है, बल्कि मसीही विश्वास में भी स्वीकारोक्ति, प्रतिफल, और सच्चे हृदय से पश्चाताप (repentance) को महत्वपूर्ण माना जाता है।
  3. इसका आज भी व्यवहारिक रूप से महत्व है—कोई भी अन्याय जो हमने किया है, उसे सुधारने का प्रयास करना हमारे आध्यात्मिक जीवन के लिए आवश्यक है।

P 74 Le.15:13 - 15 On offering brought by a zav (man with a discharge)

## इब्रानी:

"וכי יטהר הזב מזובו ווסף לו שבעת ימים לטהרותו וככט בגדיו ורוחץ בשרו במים חיים וטהר"

## हिंदी:

**"और जब वह मनुष्य जिसका बहाव हुआ था, अपने बहाव से शुद्ध हो जाए, तब वह अपने शुद्ध होने के लिए सात दिन गिन ले; और अपने वस्त्र धोए, और अपने शरीर को जीवते जल में स्नान करे, तब वह शुद्ध ठहरेगा।" (लैब्य. 15:13)**

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □

यह पद पीड़ित व्यक्ति (Zav - ऐसा व्यक्ति जिसका शारीरिक बहाव हुआ हो) की शुद्धि की प्रक्रिया को दर्शाता है। इसके अनुसार:

### 1 □ बहाव का रुकना (Cessation of Discharge) –

- जब तक व्यक्ति का बहाव बंद नहीं होता, वह अशुद्ध माना जाता है।
- बहाव बंद होने के बाद ही शुद्धि की प्रक्रिया शुरू हो सकती है।

### 2 □ सात दिनों की गणना (Seven Days of Cleansing) –

- जब बहाव रुक जाता है, तब वह व्यक्ति सात दिन गिनेगा।
- ये सात दिन लगातार और पूरी तरह शुद्ध होने चाहिए।
- यदि इन सात दिनों में फिर से बहाव होता है, तो गिनती फिर से शून्य हो जाएगी और उसे दोबारा शुरू करना होगा।

### 3□ वस्त्रों को धोना (Washing Clothes) –

- यह संकेत करता है कि शारीरिक शुद्धता के साथ-साथ वस्त्रों की भी शुद्धि आवश्यक थी।

### 4□ जीवते जल में स्नान (Bathing in Living Water) –

- 'जीवता जल' (*Mayim Chayim* - Living Water) का अर्थ है प्राकृतिक रूप से प्रवाहित जल, जैसे नदी या झारना।
- अन्य अशुद्ध लोगों के विपरीत, *Zav* को विशेष रूप से इसी प्रकार के जल में स्नान करना आवश्यक था।

### 5□ शुद्ध ठहरना (Becoming Clean) –

- इन सभी चरणों को पूरा करने के बाद ही वह व्यक्ति शुद्ध माना जाता था।
  - लेकिन कुछ रब्बियों के अनुसार, यह पूर्ण शुद्धि सूर्यास्त के बाद मानी जाती थी।
- 

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ "רְחִיבֵי יִתְהַר" (V'chi yit'har) – "जब वह शुद्ध हो जाए"

- रब्बी रशी (Rashi) बताते हैं कि इसका अर्थ यह नहीं कि वह पूरी तरह शुद्ध हो गया है, बल्कि बहाव बंद होने के बाद उसे शुद्ध होने की प्रक्रिया में गिना जाता है।

□ "מִזּוֹבוֹ" (Mizovo) – "अपने बहाव से"

- यह संकेत करता है कि भले ही किसी को केवल दो बार बहाव हुआ हो, फिर भी उसे सात

दिनों की गणना करनी होगी।

- यह बताता है कि शुद्धि प्रक्रिया केवल गंभीर मामलों के लिए नहीं बल्कि हल्के मामलों पर भी लागू होती थी।

□ "וְסָפַר לֹא" (V'safar lo) – "वह स्वयं सात दिन गिने"

- व्यक्ति को खुद ही अपनी गणना करनी थी, कोई अन्य व्यक्ति इसे नहीं गिन सकता था।

□ "וּרְחַצְתָ בְמִים חַיִם" (V'rachatz B'mayim Chayim) – "जीवते जल में स्नान करे"

- पीड़ित व्यक्ति को सामान्य मिक्वेह (ritual bath) की बजाय प्राकृतिक बहते जल (spring water) में स्नान करना होता था।
- यह दर्शाता है कि उसकी अशुद्धि अन्य प्रकार की अशुद्धियों से अधिक गंभीर थी।

□ "רָהַט" (V'taher) – "और वह शुद्ध हो जाएगा"

- इसका अर्थ यह नहीं कि वह तुरंत पूरी तरह शुद्ध हो गया, बल्कि कुछ रब्बियों के अनुसार, उसे सूर्यस्त के बाद ही पूरी तरह शुद्ध माना जाता था।

□ □ □ □ □ □ :

1 □ □ □ □ □ □ □ □ :

राम को दो दिन तक बहाव हुआ। जब बहाव रुक गया, तो उसने सात दिनों तक प्रतीक्षा की।

सात दिन पूरे होने के बाद, उसने अपने कपड़े धोए और एक झरने में स्नान किया। इसके बाद वह शुद्ध माना गया।

२ इसका उपर्युक्त विवरण यह है कि इसका उपर्युक्त विवरण यह है कि

इसका उपर्युक्त विवरण यह है कि

रवि को बहाव हुआ, उसने सात दिन गिनने शुरू किए। छठे दिन फिर से बहाव हुआ, तो उसे  
दोबारा सात दिनों की गणना करनी पड़ी।

---

† इसका उपर्युक्त विवरण यह है कि इसका उपर्युक्त विवरण यह है कि  
इसका उपर्युक्त विवरण यह है कि

## १ शारीरिक शुद्धि बनाम आत्मिक शुद्धि

- यह नियम यहूदियों के लिए था, लेकिन मसीही विश्वास में इसका आध्यात्मिक अर्थ देखा जाता है।
- प्रभु यीशु ने कहा कि असली अशुद्धता बाहरी नहीं, बल्कि मन और आत्मा की अशुद्धता है (मरकुस 7:15)।

## २ प्रभु यीशु और "जीवता जल"

- लैब्यव्यवस्था में जीवता जल शरीर की शुद्धि के लिए था।
- प्रभु यीशु ने आत्मिक शुद्धि के लिए जीवते जल की बात की (यूहन्ना 4:10-14)।

## ३ पवित्र आत्मा से शुद्धिकरण

- पुराने नियम में शुद्धि के लिए जीवते जल आवश्यक था।
- नए नियम में यह संकेत करता है कि पवित्र आत्मा के द्वारा आत्मिक शुद्धि होती है (यूहन्ना 7:38-39)।

## 4□ प्रभु प्रभु यीशु के बलिदान से पूर्ण शुद्धि

- पुराने नियम में अशुद्ध व्यक्ति को मन्दिर में चढ़ावा देना पड़ता था।
- नए नियम में प्रभु यीशु ने हमारे लिए अंतिम बलिदान दे दिया (इब्रानियों 9:13-14)।

## 5□ बपतिस्मा (बपतिस्मे का अर्थ)

- पुराने नियम में जल शुद्धि का प्रतीक था।
  - मसीही विश्वास में जल बपतिस्मा नए जीवन और आत्मिक शुद्धि का प्रतीक है (रोमियों 6:3-4)।
- 

□ □ □ □ □ □ □ □

1□ □□□□□□□□□□ 15:13 □□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□  
□□, □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□, □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□  
□□□ □□□□□ □□□□□ □□□

2□ □□□□□□□ □□ □□ □□□-□□□□□□, □□□□□□□ □□ □□□□□□□  
□□ □□□□□ □□□□□ □□□

3□ □□□□□ □□□□□□□□ □□, □□ □□□□□ □□□□□□, □□□□□□ □□□□□  
□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□□ □□

4□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□, □□□□ □□□  
□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□, □□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□  
□□□□□ □□□□

+ "यदि कोई मुझ पर विश्वास करे, तो उसके हृदय से जीवन के जल की नदियाँ बहेंगी"

(यूहन्ना 7:38)

## Leviticus 15:14 (Wayiqra 15:14) – Biblical Verse

עברית (Hebrew):

"בָּיִם הַשְׁמִינִי יִקַּח לְוּ שְׁתִּים תְּרִيم אֲוֹ שְׁנִי בְּנֵי יְהוָה וָבָא לִפְנֵי ה' אֶל פְּתַח אֹהֶל מוֹעֵד וְנִתְן אַתֶּם אֶל 'הַכָּהן"

### लेविय्यवरस्था 15:14 (Leviticus 15:14) - हिंदी बाइबल पद

"और आठवें दिन वह दो कपोत या दो कबूतर के बच्चे ले कर प्रभु प्रभु यहोवा के सामने मिलापवाले तम्बू के द्वार पर आए, और उन्हें याजक को दे।"

---

## हिंदी में समझाना

### 1. आठवें दिन का महत्व:

जब पीड़ित व्यक्ति (शरीर से असामान्य स्त्राव या डिस्चार्ज होने वाला व्यक्ति) सात दिनों तक शुद्ध रहता है, तब उसे आठवें दिन एक विशेष अनुष्ठान करना होता है। यह दिन उसकी शुद्धि की प्रक्रिया को पूरा करता है।

### 2. बलिदान (कुर्बानी) के लिए पक्षी:

पीड़ित व्यक्ति को दो कबूतर या दो फाख्ता (Turtledove or Young Pigeon) लाने होते हैं। यह पक्षी गरीब लोगों के लिए विशेष रूप से चुने गए थे, क्योंकि वे महंगे पशु बलिदान (जैसे मेमने या बैल) देने में असमर्थ होते थे।

### 3. परमेश्वर के सामने आना:

पीड़ित व्यक्ति को इन पक्षियों को लेकर प्रभु प्रभु यहोवा के सामने, मिलापवाले तंबू (Tabernacle) के द्वार तक जाना पड़ता था। इसका मतलब यह था कि वह अब धार्मिक रूप से

**शुद्ध हो चुका है और परमेश्वर की उपस्थिति में आने के योग्य है।**

#### 4. याजक (पुरोहित) को देना:

पीड़ित व्यक्ति को यह पक्षी याजक (कोहेन) को सौंपने होते थे। याजक उन्हें दो प्रकार के बलिदानों के रूप में अर्पित करता था:

- **पापबलि (Sin Offering - גָּעֵל, Chatat):** यह बलि उस अशुद्धि के लिए दी जाती थी, जिससे वह पहले अशुद्ध रहा था।
  - **होमबलि (Burnt Offering - נָאָל, Olah):** यह बलि परमेश्वर की कृपा और पुनः उसकी संगति में आने के लिए दी जाती थी।
- 

## रब्बियों की व्याख्या (Rabbinical Interpretations)

### 1. दो पक्षियों का महत्व

रब्बियों के अनुसार, यह कुर्बानी विशेष रूप से उन लोगों के लिए रखी गई थी जो अधिक खर्चाली बलि नहीं दे सकते थे (यज.व्य. 5:7 के समान)।

### 2. "परमेश्वर के सामने" क्यों कहा गया?

रब्बियों ने यह तर्क दिया कि यह पीड़ित व्यक्ति को याद दिलाने के लिए था कि अशुद्धि का हटना केवल शारीरिक प्रक्रिया नहीं है, बल्कि इसे आध्यात्मिक रूप से भी शुद्ध करने की आवश्यकता होती है। इसलिए, उसे परमेश्वर की उपस्थिति में आना पड़ता था।

### 3. याजक ही क्यों बलिदान देता था?

**बलिदान देने का काम स्वयं पीड़ित व्यक्ति नहीं कर सकता था, क्योंकि यह कार्य केवल परमेश्वर द्वारा नियुक्त याजकों के माध्यम से ही किया जा सकता था। याजक बलिदानों की सही विधि सुनिश्चित करता था।**

---

## **उदाहरण:**

आगर कोई व्यक्ति सात दिनों तक बिना किसी नए डिस्चार्ज के शुद्ध बना रहता है, तो आठवें दिन उसे दो कबूतर या दो फाख्ता खरीदकर यरुशलेम के मंदिर में जाना होता था। वहां याजक पक्षियों को लेता और उन्हें पापबलि व होमबलि के रूप में चढ़ाता।

लेकिन, यदि इस प्रक्रिया के दौरान पुनः डिस्चार्ज होता, तो उसे फिर से सात दिन गिनने पड़ते और आठवें दिन फिर बलिदान लाना पड़ता।

---

## **आज के मसीही चर्च में इसका क्या महत्व है?**

### **1. प्रभु यीशु मसीह और शुद्धि की अवधारणा**

मसीही विश्वास में बलिदान की यह व्यवस्था प्रभु यीशु मसीह के बलिदान के द्वारा पूरी हो गई है। पुराने नियम में, पीड़ित व्यक्ति को अपनी शुद्धि के लिए बलिदान चढ़ाना पड़ता था, लेकिन नए नियम के अनुसार, प्रभु यीशु ने क्रूस पर बलिदान देकर सभी पापों और अशुद्धियों को धो दिया (इब्रानियों 10:10-12)।

### **2. आत्मिक शुद्धि**

आज मसीही विश्वास में शारीरिक अशुद्धि से अधिक आत्मिक अशुद्धि पर ध्यान दिया जाता है। बाइबल के अनुसार, शुद्धता केवल बाहरी नहीं बल्कि आंतरिक भी होनी चाहिए (मत्ती 5:8 - "धन्य हैं वे जिनके मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे")।

### 3. बलिदान की आवश्यकता समाप्त हो गई

आज मसीही चर्च में पीड़ित व्यक्ति की शुद्धि की यह प्रक्रिया नहीं निभाई जाती क्योंकि प्रभु यीशु मसीह ने बलिदान की इस व्यवस्था को पूरा कर दिया (इब्रानियों 9:12-14)।

### 4. नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा

हालाँकि, इस प्रक्रिया से हमें यह सिखाया जाता है कि पवित्रता और शुद्धि महत्वपूर्ण हैं। यह केवल शरीर की शुद्धि नहीं, बल्कि हृदय और आत्मा की शुद्धि भी होनी चाहिए (1 पतरस 1:15-16 - "जैसे तुम्हारा बुलाने वाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने सारे चाल-चलन में पवित्र बनो")।

---

### निष्कर्ष:

- लेव 15:14 पीड़ित व्यक्ति की पूर्ण शुद्धि के लिए आवश्यक बलिदान को दर्शाता है।
- रब्बियों के अनुसार, यह बलिदान पीड़ित व्यक्ति की बाहरी और आंतरिक शुद्धि के लिए आवश्यक था।
- आज के मसीही चर्च में यह बलिदान आवश्यक नहीं है क्योंकि प्रभु यीशु मसीह ने सभी पापों और अशुद्धियों के लिए अंतिम बलिदान दे दिया है।
- परन्तु यह आज भी आत्मिक शुद्धि और परमेश्वर के सामने शुद्ध मन से आने के महत्व को दर्शाता है।

□ □□□□□□□□□□□□□□ 15:15 (Leviticus 15:15) □□□□□ □□

"और याजक उन को, एक को पापबलि, और दूसरे को होमबलि करके चढ़ाए; और याजक उसके लोह के कारण प्रभु प्रभु यहोवा के सम्मुख उसके लिए प्रायश्चित्त करेगा।"

(Leviticus 15:15, हिंदी बीएसआई)

□ □□□□□ □□□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□

□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□

□ □□□□□□□□□□

- यदि किसी पुरुष को अनियमित शारीरिक साव (discharge) हुआ हो, तो वह अशुद्ध माना जाता था।
- अशुद्धि समाप्त होने के बाद उसे सात दिन तक स्वच्छ रहना आवश्यक था।
- आठवें दिन, उसे मंदिर में दो पक्षी (या तो दो कबूतर या दो कपोत) बलिदान के रूप में चढ़ाने होते थे।

□ □□□□□ □□ □□□□□□□□

□ **याजक की भूमिका:** याजक इन पक्षियों को लेकर एक को पापबलि (Sin Offering - גָּזָב) और दूसरे को होमबलि (Burnt Offering - הַלְלָה) के रूप में चढ़ाता था।

□ **प्रायश्चित्त (Atonement):** इन बलिदानों के द्वारा प्रभु प्रभु यहोवा के सामने पीड़ित व्यक्ति के लिए प्रायश्चित्त (कफारा - נִקְּאָה) किया जाता था।

□ **क्यों आवश्यक था बलिदान?**

- discharge को एक प्रकार की शारीरिक बीमारी माना जाता था, और यह अनैतिकता से जुड़ा नहीं था, लेकिन फिर भी इसे अशुद्धता का कारण माना जाता था।
  - बलिदान देने का उद्देश्य यह दिखाना था कि व्यक्ति अब पूरी तरह से शुद्ध हो गया है और फिर से मंदिर में प्रवेश कर सकता है।
- 

□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□

□ 1. "וְהַכֹּה מָאֹתָה שְׁעִיר" (The priest shall offer them)

- रब्बियों के अनुसार, यह याजक पर निर्भर था कि वह कौन-सा पक्षी पापबलि होगा और कौन-सा होमबलि।
- यदि किसी महिला ने जन्म देने के बाद पक्षी चढ़ाए, तो उसे खुद निर्धारित करना होता था, लेकिन पीड़ित व्यक्ति के मामले में याजक ही यह निर्णय करता था।

□ 2. "בְּפַנֵּי" (Before the Lord)

- यह दिखाता है कि यह बलिदान केवल एक औपचारिक प्रक्रिया नहीं थी, बल्कि प्रभु प्रभु यहोवा के सामने आत्मिक शुद्धि प्राप्त करने का एक तरीका था।
- कुछ रब्बियों का मानना था कि discharge एक गंभीर बीमारी थी, और बलिदान स्वास्थ्य लाभ के लिए धन्यवाद का प्रतीक था।

□ 3. "בִּזְמָן" (Because of his discharge)

- Sefer HaChinuch नामक ग्रंथ के अनुसार, discharge कभी-कभी अशुद्ध आदतों, बुरी जीवनशैली, या तनाव के कारण भी हो सकता था।
- यह बलिदान आत्मिक शुद्धि को भी दर्शाता था, ताकि व्यक्ति अपने जीवन को सुधार

सके।

#### 4. "||?" (Nest - पक्षियों की जोड़ी)

- पक्षियों की यह जोड़ी "Ken Setumah" कहलाती थी यदि यह अज्ञात हो कि कौन-सा पक्षी किस बलिदान के लिए है।
  - एक बार जब यह तय हो जाता था, तो यह "Ken Meforeshet" कहलाता था।

A horizontal row of seven empty rectangular boxes, intended for children to write their names in, similar to a handwriting practice sheet.

□□ राहेल नामक व्यक्ति को discharge हुआ। वह सात दिन तक discharge से मुक्त रहने के

**बाद आठवें दिन दो कबूतर लाता है** □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□

पापबलि और दूसरे को होमबलि

--	--	--	--	--	--	--	--	--

**समाज में पूरी तरह से शुद्ध माना जाता है।**

10

## □ प्रभु यीशु मसीह का बलिदानः

- मसीही विश्वास के अनुसार, प्रभु यीशु मसीह ने क्रूस पर अपने लहू द्वारा अंतिम और पूर्ण बलिदान दिया (इब्रानियों 9:12)।

- अब किसी को मंदिर में जाकर बलिदान चढ़ाने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि मसीहा ने  
**एक ही बार में सभी के लिए बलिदान दिया।**

## आत्मिक शिक्षा:

- यह अध्याय हमें यह सिखाता है कि पाप से शुद्धि और परमेश्वर के सामने आत्मिक स्वच्छता कितनी महत्वपूर्ण है।
  - discharge की यह प्रक्रिया हमें यह याद दिलाती है कि हमें अपनी आत्मिक और नैतिक शुद्धि पर ध्यान देना चाहिए।

A horizontal row consisting of 15 empty rectangular boxes, intended for students to draw or write in.

✓ लेविष्यव्यवस्था 15:15 पीड़ित व्यक्ति की अंतिम शदधिकरण प्रक्रिया

✓ एक पक्षी को पापबलि और दूसरे को होमबलि के रूप में चढ़ाकर व्यक्ति के लिए प्रायशिक्ति करता था।

□ □ □ □ □, बल्कि आत्मिक अनुशासन और अच्छे जीवनशैली की सीख भी देती थी।

P 75 Le.15:28 - 29 Offering brought by a zavah (woman with a discharge)

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ 15:28

**"परन्तु जब वह अपनी अशुद्धता से शुद्ध हो जाए, तब वह सात दिन गिने, और उसके बाद**

**वह शुद्ध ठहरे।"**

---

**1 □ □□□□□ □□□ □□□□□□□ □□□□□□□:**

इस पद में एक स्त्री के शुद्ध होने की प्रक्रिया दी गई है, जो योनि स्राव (Zava - ज़ावा) से ग्रसित

रही हो। जब उसका रक्तस्राव समाप्त हो जाता है, तो उसे सात दिनों तक गिनना होता है। यदि

सात दिन तक कोई नया स्राव न हो, तो वह सातवें दिन के अंत में शुद्ध मानी जाएगी और

**इसके बाद मिकवे (रिचुअल बाथ) में स्नान (तेविला - ה'בִּלָּה) करना आवश्यक है।**

यह नियम स्त्रियों को यह सिखाने के लिए था कि वे अपने शरीर की अशुद्धता को दूर करके

**प्रभु प्रभु यहोवा के निकट आ सकें। यह केवल एक शारीरिक प्रक्रिया नहीं थी, बल्कि**

**आध्यात्मिक रूप से पवित्रता और आज्ञाकारिता की ओर इंगित करता था।**

---

**2 □ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□:**

**(i) सात दिन की गिनती कैसे की जाए?**

**□ Torat Kohanim (तोरात कोहानीम) कहता है कि जब रक्तस्राव पूरी तरह से रुक जाए, तभी**

**गिनती शुरू होगी। उसे पहले स्नान करने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि सीधे सात दिन गिनना**

**प्रारंभ कर सकती है।**

**(ii) आशीर्वाद क्यों नहीं दिया जाता?**

□ यहूदी परंपरा के अनुसार, किसी भी ऐसा कार्य जिसमें भविष्य की अनिश्चितता हो, उसमें आशीर्वाद (बरखा) नहीं दिया जाता। क्योंकि आगर स्त्री के सात दिनों में पुनः रक्तस्राव हो जाता है, तो उसकी पिछली गिनती अमान्य हो जाएगी और उसने प्रभु प्रभु यहोवा के नाम का व्यर्थ में उच्चारण कर दिया होता।

### (iii) 'הַרְחָה' (तहाराह) शब्द का अर्थ

□ 'הַרְחָה' इसका अर्थ है कि एक सात दिन पूरे करें और उसके बाद स्नान करके पूरी तरह पवित्र मानी जाए। इस समय तक, यदि कोई उसे छूता है, तो वह अभी भी अशुद्ध हो सकता है।

### (iv) स्नान का महत्व (Tevillah - טבילה)

□ स्नान का महत्व यह है कि एक मात्र सात दिन पूरे करना पर्याप्त नहीं है बल्कि उसे मिकवे (ritual bath) में स्नान करना आवश्यक है।

□ गणना 31:23 के आधार पर, पुरुषों के लिए वसंत (spring water) आवश्यक था, परंतु स्त्रियों के लिए यह निर्धारित किया गया कि वह किसी भी रिचुअल बाथ में स्नान कर सकती हैं।

## 3. रालबाग (Ralbag) :

□ रालबाग (Gersonides) के अनुसार, मासिक धर्म (menstruation) के दिन ज़ावा के दिनों से पहले आते हैं। ज़ावा की न्यूनतम अवधि ग्यारह दिन होती है, जिसमें से तीन दिन रक्तस्राव

और सात दिन की गिनती होती है।

---

**4** □ □□□□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□  
□□□□ □□?

□ मिद्राश (Midrash) में कहा गया है कि हब्बा (इव) के कारण मानव जाति मृत्यु के अधीन हो गई (आदम का पतन हुआ), इसलिए उसके स्वयं के रक्त को बहाने का नियम लागू किया गया।

□ उदाहरण:

जैसे आदम को शारीरिक श्रम का दंड मिला (उत्पत्ति 3:17-19), वैसे ही स्त्रियों को मासिक धर्म और प्रसव पीड़ा का दंड मिला (उत्पत्ति 3:16)। यह नियम स्त्रियों के लिए एक प्रकार का ”शुद्धि का मार्ग” था, जिससे वे पवित्रता बनाए रख सकें।

---

**5** □ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□□  
□□□□ □□?

□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□□□  
□□□□ □□□□ □□□, □□□ (□□□□□ □□□ ) □□ □□ □□□□□□ □□□□ □□

बाहरी अशुद्धता से अधिक हृदय की पवित्रता आवश्यक है (मत्ती 15:11)।

□ मरकुस 5:25-34 – प्रभु यीशु ने एक ऐसी स्त्री को चंगा किया जो बारह वर्षों से रक्तस्राव से पीड़ित थी। वह व्यवस्था के अनुसार अशुद्ध थी, परंतु जब उसने विश्वास से प्रभु यीशु को छुआ, तो वह तुरंत चंगी हो गई।

□ आज मसीही चर्च में इस पद का महत्व

**1 □ शारीरिक शुद्धता और आत्मिक शुद्धता में अंतर – अब बलिदानों की आवश्यकता**

नहीं रही क्योंकि मसीह का बलिदान अंतिम बलिदान था (इब्रानियों 10:10)।

**2 □ नया जीवन और आत्मिक पुनर्जन्म – अब पापों की क्षमा प्रभु यीशु के द्वारा उपलब्ध है,**

और हमें हृदय की पवित्रता पर ध्यान देना चाहिए (1 यूहन्ना 1:9)।

**3 □ स्नान (बपतिस्मा) का प्रतीकात्मक महत्व – मसीही परंपरा में मिकवे का स्थान बपतिस्मा**

(बपतिस्मा के जल में झुबकी लगाना) ने ले लिया, जो आत्मिक शुद्धता का प्रतीक है।

□ □ □ □ □ □ □ :

लैब्यव्यवस्था 15:28 यह सिखाता है कि शरीर की शुद्धता का महत्व था, और सात दिनों की प्रतीक्षा के बाद स्नान करना आवश्यक था। यह नियम स्त्रियों को पवित्रता बनाए रखने के लिए दिया गया था।

□ मसीही दृष्टिकोण से, प्रभु यीशु ने इन बाहरी नियमों को आत्मिक शुद्धता में बदल दिया और विश्वास के द्वारा आत्मिक शुद्धि को प्राथमिकता दी। मसीही चर्च अब इसे एक प्रतीक के रूप में देखता है, जहाँ पाप से छुटकारा पाने के लिए बाहरी शुद्धता से अधिक आत्मिक शुद्धता पर बल दिया जाता है।

**लैब्यव्यवस्था 15:29 (Leviticus 15:29) - हिंदी बाइबल**

□ "आँर आठवें दिन वह दो कबूतर, वा दो पंडकी लेकर मिलापवाले तम्बू के द्वार पर याजक के पास लाए।" - (हिंदी ओ.वि.अनुवाद)

## हिंदी में समझाइएः

जब किसी स्त्री को असामान्य रक्तस्राव (ज़ावा) होता है, तो वह शुद्ध होने के लिए सात स्वच्छ (शुद्ध) दिन गिनती है। इसके बाद, आठवें दिन उसे दो कबूतर या दो फाख्ता पक्षी लाकर याजक (पुरोहित) को देना होता था। याजक इन पक्षियों की बलि चढ़ाता था, जिससे स्त्री की शुद्धि प्रक्रिया पूरी हो जाती थी।

## मुख्य बिंदुः

1. स्त्री को सात दिन स्वच्छ रहना आवश्यक था।
2. आठवें दिन बलिदान देना अनिवार्य था।
3. बलिदान के लिए दो पक्षियों की मांग की गई थी - एक पापबलि (sin offering) और एक होमबलि (burnt offering)।
4. बलिदान मिशकान (Tabernacle) के द्वार पर याजक को देना होता था।

## रब्बियों की व्याख्याएँः

### 1. बलिदान का उद्देश्य (Chizkuni):

Chizkuni के अनुसार, यह आदेश दिखाता है कि स्त्री संध्या से पहले अपने आप को शुद्ध करने के लिए स्नान (मिक्वेह) कर सकती थी। चूंकि बलिदान उसी दिन चढ़ाना आवश्यक था, इसका मतलब यह हुआ कि स्नान दिन में ही किया जाता था, ताकि वह शुद्ध हो और मंदिर में प्रवेश कर सके।

**उदाहरण:**

अगर कोई स्त्री सात दिन पूरे करने के बाद आठवें दिन सूर्यास्त से पहले मंदिर

जाती, तो उसे पहले स्नान करना पड़ता। यदि वह सूर्यास्त के बाद स्नान करती, तो वह

अगले दिन तक अशुद्ध मानी जाती।

---

**2. बलिदान का क्रम (Haamek Davar):**

Haamek Davar कहते हैं कि यह ज़रूरी नहीं था कि दोनों बलिदान एक साथ लाए जाएं।

- स्त्री पहले पापबलि (sin offering) लाकर दे सकती थी और बाद में होमबलि (burnt offering) चढ़ा सकती थी।
- पुरुषों के मामले में, ज़ाव (पुरुष रोगी) को दोनों बलिदान एक साथ लाने होते थे, लेकिन स्त्री को यह छूट दी गई थी।
- तत्मूद के अनुसार, यदि कोई स्त्री पापबलि चढ़ाने के बाद मर जाती, तो उसके उत्तराधिकारी केवल होमबलि चढ़ाते, क्योंकि पापबलि पहले दी जानी आवश्यक थी।

**उदाहरण:**

यदि किसी महिला के पास केवल एक ही कबूतर उपलब्ध था, तो वह पहले

पापबलि लाकर चढ़ा सकती थी और बाद में दूसरा पक्षी लेकर होमबलि चढ़ा

सकती थी।

---

**3. बलिदान की व्याकरणिक बारीकियाँ (Ibn Ezra और Minchat Shai):**

Ibn Ezra और Minchat Shai बताते हैं कि हिन्दू में "הא'יבגה" (वहेवियाह – और वह लाएगी) शब्द

की वाक्य रचना विशेष है। यह दिखाता है कि स्त्री स्वयं बलिदान लाकर देगी, किसी और के माध्यम से नहीं।

---

## इस आदेश का आध्यात्मिक और नैतिक महत्व:

मिड्राश (Midrash) में एक व्याख्या यह भी है कि स्त्रियों को यह नियम इसलिए दिया गया क्योंकि उन्होंने "मानव रक्त बहाया," अर्थात् आदम और हब्बा को पाप में गिराने में योगदान दिया। इसलिए, उन्हें अपने रक्तसाव की अवधि को याद करते हुए आत्म-शुद्धि की आवश्यकता थी।

### आधुनिक दृष्टिकोण:

आज यह विचार अधिक आध्यात्मिक रूप से लिया जाता है। ज़ावा की अवधारणा आत्मिक और नैतिक शुद्धता को दर्शाती है। यह बताता है कि मनुष्य को अपने पापों से शुद्ध होने की आवश्यकता है।

---

## आज के मसीही चर्च में इसका क्या महत्व है?

आज के ईसाई चर्च में इस बलिदान की व्यवस्था का पालन नहीं किया जाता क्योंकि ईसा मसीह ने अपना बलिदान देकर एक बार सदा के लिए पापों की क्षमा उपलब्ध कर दी।

### 1. प्रभु यीशु मसीह में पूर्णता (Hebrews 10:10-14):

बाइबल में लिखा है:

**"हम प्रभु यीशु मसीह के शरीर के एक ही बार किए गए बलिदान के द्वारा पवित्र किए गए हैं।"** - (इब्रानियों 10:10)

ईसाई मानते हैं कि पुराने नियम की सभी बलिदानों की पूर्ति प्रभु यीशु के बलिदान में हुई।

इसलिए आज किसी भी प्रकार का पशु या पक्षी बलिदान आवश्यक नहीं है।

---

## 2. आत्मिक शुद्धता का संदेश:

- जैसे स्त्री को शारीरिक अशुद्धता से बचने के लिए शुद्धि का नियम दिया गया, वैसे ही आत्मिक शुद्धि भी आवश्यक है।
- यह नियम याद दिलाता है कि मनुष्य को अपने आत्मिक जीवन में पवित्रता बनाए रखनी चाहिए।
- प्रार्थना, पश्चाताप और प्रभु के वचनों में जीवन बिताना ही आत्मिक शुद्धि का मार्ग है।

**"प्रभु यीशु मसीह का लहू हमें सभी पापों से शुद्ध करता है।"** - (1 यूहन्ना 1:7)

---

## निष्कर्ष:

- लेव 15:29 स्त्रियों के शारीरिक शुद्धिकरण के लिए बलिदान की अनिवार्यता को दर्शाता है।
- यह नियम बताता है कि शुद्धि प्रक्रिया में सात दिन गिनना, स्नान (मिक्चेह) करना, और फिर बलिदान देना आवश्यक था।

3. रब्बियों ने समझाया कि यह बलिदान आध्यात्मिक और नैतिक शुद्धता का प्रतीक है।
  4. **आज के इसाई चर्च में, प्रभु यीशु मसीह के बलिदान को अंतिम बलिदान मानकर पशु बलिदान नहीं किए जाते।**
  5. **आत्मिक रूप से, यह आदेश पवित्रता और शुद्धता का संदेश देता है, जो आज भी इसाइयों के लिए प्रासंगिक है।**
- 

P 76 Le.12:6 On offering brought by a woman after childbirth

### **Leviticus 12:6 (VAYIKRA 12:6)**

#### **हिंदी (ERV-Hindi)**

**"जब वह अपने शुद्ध होने के दिनों को पूरा कर लेगी, वह वह पुत्र के लिए हो या पुत्री के लिए, तो वह होमबलि के लिए एक वर्ष का एक भेड़ का बच्चा और पापबलि के लिए एक कबूतर या फाख्ता को मिलाप के तम्बू के द्वार पर याजक के पास लाए।"**

---

### **इसका अर्थ (हिंदी में समझाइए)**

इस पद में प्रभु प्रभु यहोवा ने यह नियम दिया कि जब कोई स्त्री संतान जन्म दे और उसकी शुद्धिकरण की अवधि पूरी हो जाए, तब उसे याजक के पास दो भेटें चढ़ानी होंगी:

**होमबलि (Burnt Offering):** एक वर्ष का भेड़ का बच्चा।

## पापबलि (Sin Offering): एक कबूतर या एक फार्ख्ता।

यह बलियाँ प्रभु प्रभु यहोवा के सामने प्रायश्चित और समर्पण का प्रतीक थीं। इसका उद्देश्य केवल शारीरिक शुद्धि नहीं था, बल्कि आत्मिक शुद्धि और परमेश्वर से पुनः मेल का प्रतीक था।

---

## रब्बियों की व्याख्या

### 1. यह भेंट क्यों दी जाती है?

**Chizkuni:** जब किसी स्त्री को प्रसव पीड़ा होती है, तो वह कसम खा सकती है कि वह दोबारा पति के साथ संबंध नहीं रखेगी। यह भेंट उस अनुचित कसम का प्रायश्चित है।

**Toledot Yitzchak और Ramban:** स्त्री प्रसव के दौरान कठिनाई में हो सकती है और कसम खा सकती है कि वह दोबारा गर्भवती नहीं होगी। लेकिन वह अपने पति के अधीन होती है, इसलिए यह कसम व्यर्थ हो सकती है, और उसे इस बलि द्वारा प्रायश्चित करना पड़ता है।

**Ibn Ezra:** महिला प्रसव पीड़ा के कारण मन में बुरे विचार रख सकती है या अपने मुंह से अनुचित शब्द कह सकती है, इसलिए उसे होमबलि और पापबलि दोनों चढ़ानी पड़ती हैं।

**Recanati:** यह भेंट मूल पाप (Adam और Havva के समय) की स्मृति में दी जाती है, क्योंकि प्रसव पीड़ा आदम और हव्वा के पाप का परिणाम है (उत्पत्ति 3:16)।

- **उदाहरण:** जब कोई व्यक्ति गुस्से में कुछ गलत बोल देता है और बाद में पछताता है, तो

**उसे क्षमा मांगनी पड़ती है। इसी तरह, स्त्री प्रसव के दौरान कष्ट झेलती है और कोई अनुचित**

**बात कह सकती है, इसलिए यह बलि दी जाती है।**

---

## 2. बलि का समय

- **Malbim:** यह बलि तभी दी जा सकती है जब महिला का शुद्धिकरण समय पूरा हो जाए।
  - **Torah Temimah:** बलि "पूर्णता के दिन" ही चढ़ाई जा सकती है, उससे पहले नहीं।
  - **Rambam (Maimonides):** यदि स्त्री शुद्धिकरण के दिनों के भीतर बलि चढ़ाए, तो वह स्वीकार नहीं होगी।
  - **Raavad:** Rambam से असहमत हैं और पूछते हैं कि क्यों बलि को शुद्धिकरण अवधि के दौरान स्वीकार नहीं किया जा सकता, जैसे कि अन्य पापबलियाँ स्वीकार की जाती हैं।
  - **Tzafnat Pa'neach:** अगर किसी महिला के दो बच्चे कम समय में जन्मे हों, तो उसे पहले और तीसरे जन्म के लिए बलि चढ़ानी होगी, लेकिन दूसरे जन्म के लिए नहीं।
- **उदाहरण:** मान लीजिए, अगर किसी के पास कोई ऋण है और उसे चुकाने की एक समय-सीमा दी गई है, तो उसे उसी समय सीमा के अनुसार चुकाना होता है, उससे पहले या बाद में नहीं। यही नियम बलि पर भी लागू होता है।
- 

## 3. होमबलि के लिए मेमना (Lamb)

- **David Zvi Hoffmann:** मेमना एक वर्ष का होना चाहिए।

- **HaKtav VeHaKabalah:** इसकी गणना आठ दिन की उम्र से लेकर अगले वर्ष के उसी दिन और घंटे तक की जाती है।
  - **Malbim:** "בֶן שְׁנָתוֹ" (Ben Shenato) का अर्थ यह नहीं कि वह कैलेंडर वर्ष से गिना जाए, बल्कि जन्म तिथि से अगले वर्ष की तिथि तक गिना जाए।
  - **Rav Hirsch:** यह समय गणना घड़ी और दिन के अनुसार होती है, न कि यहूदी कैलेंडर के अनुसार।
- **उदाहरण:** किसी सरकारी पहचान पत्र की वैधता उसी दिन और घंटे से समाप्त होती है, जब वह जारी हुआ था। इसी तरह, यह मेमना एक विशेष समय के भीतर ही होमबलि के लिए उपयुक्त होता है।
- 

#### **4. पापबलि के लिए पक्षी (Pigeon या Turtledove)**

- **Haamek Davar:** आमतौर पर तफती पक्षी (Turtledove) का नाम पहले आता है, लेकिन यहाँ कबूतर पहले आता है क्योंकि वह अधिक सुलभ है।
- **Kitzur Ba'al HaTurim:** अगर किसी के पास कबूतर उपलब्ध हो, तो फाख्ता को नहीं लिया जाना चाहिए क्योंकि फाख्ता अपने साथी के बिना उदास रहती है।
- **Malbim:** पक्षियों को समान मूल्य के रूप में गिना गया है, इसलिए कोई व्यक्ति एक छोटा कबूतर या एक बड़ा तफती पक्षी ले सकता है, लेकिन इससे अधिक नहीं।
- **Torah Temimah:** रब्बी शिमोन कहते हैं कि दोनों पक्षी एक ही मूल्य के हैं।

- **उदाहरण:** जब कोई व्यक्ति दान करता है, तो उसकी क्षमता के अनुसार दान करता है। गरीब व्यक्ति कबूतर लाकर भी वही पुण्य प्राप्त कर सकता है, जो धनी व्यक्ति मेमना चढ़ाकर करता।

## 5. बलि की जगह (स्थान)

- David Zvi Hoffmann: स्त्री मिलाप के तंबू में नहीं जा सकती थी, इसलिए उसे बाहरी द्वार पर बलि चढ़ानी होती थी।
  - Reggio: यह स्थान महिलाओं के लिए अलग क्षेत्र में था क्योंकि शुद्ध न होने की स्थिति में वह मुख्य शिविर में प्रवेश नहीं कर सकती थी।
  - Malbim: उसे बलि के समय निकानोर गेट (Nicanor Gate) पर खड़ा होना पड़ता था।
- उदाहरण: आज के समय में भी कई धार्मिक स्थलों में महिलाओं के लिए अलग स्थान होता है, क्योंकि वे विशेष नियमों का पालन करती हैं।

## इसका आज के मसीही चर्च में महत्व

1. **प्रभु यीशु मसीह ने बलि व्यवस्था को पूर्ण किया:** मसीही विश्वास के अनुसार, प्रभु यीशु मसीह ने अपने बलिदान से उन सभी बलियों को पूरा कर दिया (इब्रानियों 10:10)।
2. **आध्यात्मिक शुद्धि का संदेश:** यह पद हमें सिखाता है कि हमें परमेश्वर के सामने आत्मिक रूप से शुद्ध रहना चाहिए।
3. **धैर्य और समर्पण:** प्रसव पीड़ा के बावजूद, स्त्री प्रभु प्रभु यहोवा को धन्यवाद देती थी। आज भी, मसीही लोग कठिनाइयों में परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं।
4. **हर कोई परमेश्वर के सामने समान:** गरीब व्यक्ति कबूतर चढ़ा सकता था, और अमीर मेमना। आज, मसीही विश्वास में भी, हर कोई परमेश्वर के सामने समान है।

## निष्कर्ष

यह पद केवल प्रसव के बाद की शुद्धि के बारे में नहीं है, बल्कि यह दिखाता है कि परमेश्वर हर चीज़ में सहभागिता चाहता है, चाहे वह पीड़ा हो, संकल्प हो या पुनः समर्पण। प्रभु यीशु मसीह ने इसे पूरा किया, लेकिन आज भी यह सिद्धांत आत्मिक रूप से प्रासंगिक है।

P 77 Le.14:10 On offering brought by a leper after being cleansed

□ □□□□□ □□:

**लैब्यवस्था 14:10** (Leviticus 14:10)

"आठवें दिन वह दो निर्दोष नर भेड़ के बच्चे, और एक वर्ष की एक निर्दोष मादा भेड़, और तीन दसवें हिस्से इफा मैदा जो तेल में मिला हो, और एक लोग तेल ले आए।"

□ □□□□□ □□□ □□□□□□:

**पृष्ठभूमि:**

लैब्यवस्था 14 अध्याय में यह नियम दिया गया है कि जो व्यक्ति कोढ़ (tzara'at) से शुद्ध होता है, उसे कैसे शुद्धि प्रक्रिया पूरी करनी चाहिए। इस प्रक्रिया का अंतिम भाग आठवें दिन होता है, जब वह परमेश्वर के सामने कुछ विशेष बलिदान चढ़ाता है।

□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□□:

शुद्ध हुआ व्यक्ति नीचे दिए गए बलिदान चढ़ाएगा:

1. **दो नर भेड़ के बच्चे (כבשִׁים) - बिना दोष के।**
  2. **एक मादा भेड़ (כבשָׂה) - एक वर्ष की, बिना दोष के।**
  3. **तीन दसवें हिस्से इफा (7-12.8 लीटर) मैदा - जो तेल में मिला हो, यह अन्नबलि के लिए था।**
  4. **एक लोग (0.33-0.6 लीटर) तेल - यह विशिष्ट रीति से प्रयोग किया जाता था।**
- 

❖ □□□□□□□ □□□□□□ □□

□□□□□□□:

### 1 □ अपराधबलि (Guilt Offering – משלא)

□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□  
 □□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□ (tzara'at) □□□□□□  
 □□□□□□□□□□□□, □□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□  
 □□□□□□□□□□

□ यह व्यक्ति को यह याद दिलाने के लिए था कि उसके कार्यों से उसकी आत्मिक स्थिति

**प्रभावित होती है।**

### 2 □ होमबलि (Burnt Offering – עוללה)

□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□  
 □□□□□□□□□□□□□□□□□□□□, □□□□□□□□□□□□□□  
 □□□□□□□□□□□□□□□□□□□□

□ यह समर्पण और परमेश्वर के प्रति पूर्ण विश्वास का प्रतीक था।

### 3 □ पापबलि (Sin Offering – גavelength)

□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□  
 □□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□  
 □□□□□□□□□□□□□□

## 4 अन्नबलि और तेल (Meal & Oil Offering)

□ एक लोग तेल याजक द्वारा व्यक्ति के दाहिने कान, दाहिने हाथ के अंगूठे, और दाहिने पैर के

अंगूठे पर लगाया जाता था। यह शरीर, मन और आत्मा की पूर्ण शुद्धि का प्रतीक था।

A horizontal row of 20 empty square boxes, each with a small vertical line on its left side, intended for handwritten responses.

□ □ □ □ □ □ (Rashi):

- उन्होंने स्पष्ट किया कि अन्नबलि (Meal Offering) तीनों भेंटों के साथ लाई जाती थी, क्योंकि कोट्री (Metzora) के अपराधबलि और पापबलि के साथ यह आवश्यक था, जबकि अन्य मामलों में यह जरूरी नहीं था।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ (Ibn Ezra):

- उन्होंने इस बात पर बल दिया कि कोढ़ एक आध्यात्मिक समस्या थी, और इसे "बुरी सोच" (evil thoughts) और "जिह्वा के पाप" (sins of the tongue) से जोड़ा गया था।
  - इसलिए, एक नर भेड़ का होमबलि इस बात का प्रतीक था कि व्यक्ति अपने विचारों को शद्ध कर रहा है।

□ □ □ □ □ □ □ □ (Malbim):

- उन्होंने इस बात को समझाया कि जब तोराह (Torah) "एक" (אֶחָד) शब्द का प्रयोग करती है, तो उसका विशेष अर्थ होता है।
  - इस संदर्भ में, यह दर्शाता है कि बलिदानों की संख्या और प्रकार निश्चित थे, न कि

## मनमाने।

□ □ □ □ □ (Gur Aryeh):

- उन्होंने उल्लेख किया कि सामान्यतः पापबलि (Sin Offering) और अपराधबलि (Guilt Offering) के साथ अन्नबलि नहीं लाई जाती थी, लेकिन इस विशेष मामले में यह आवश्यक था।
  - इसका कारण यह था कि पूरी प्रक्रिया व्यक्ति के संपूर्ण आत्मिक और शारीरिक पुनःस्थापन (restoration) से जुड़ी हुई थी।
- 

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □ ?

1□ प्रभु यीशु मसीह में पूर्ण शुद्धि:

□ मत्ती 8:2-3 - एक कोढ़ी प्रभु यीशु के पास आया और बोला, "प्रभु, यदि तू चाहे, तो मुझे शुद्ध कर सकता है।" प्रभु यीशु ने उसे छूकर कहा, "मैं चाहता हूँ, तू शुद्ध हो जा।"

✓□□□□  
 □  
 □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

2□ प्रभु यीशु ही हमारा अंतिम बलिदान:

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ 10:10 – "□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □  
 □  
 □

✓□□□□□  
 □  
 लेकिन प्रभु यीशु मसीह ने स्वयं को "एक ही बार" बलिदान कर दिया,

## जिससे हम पाप से पूर्ण शुद्धि प्राप्त कर सकें।

### 3 आत्मिक और शारीरिक पुनर्स्थापनः

□ याकूब 5:14-15 - "यदि तुम में कोई बीमार हो, तो वह कलीसिया के प्राचीनों को बुलाए और वे प्रभु प्रभु यहोवा के नाम से उसके लिए प्रार्थना करें, और तेल से अभिषेक करें।"

✓ □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□, □□□ □□ □□□ □□ □□□□  
 □□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□ (anointing with oil)  
 □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□ □□□  
 □□□□ □□□□ □□□

---

### □ □□□□□□□:

□ □□□□□□□□□□ 14:10 □□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□  
 □□□□□ □□□ □□□ □□□, □□□□□ □□□□□ □□ □□, □□□□□ □□  
 □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□  
 □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□  
 □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ (spiritual impurity) □□ □□□□□ □□□□ □□  
 □□ □□□□□, □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□□□□□ □□  
 □□□□ □□□□, □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□  
 □□□□□ □□□□□ □□  
 □ □□□□ □□ □□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□  
 □□□□□□□□ □□ □□□□ □□, □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□  
 □□ □□□□□□ □□ □□□□□

□ □ □□□□□ □□□□ □ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□  
 □□! □

---

## पवित्र बाइबल में पदः

**लैब्यव्यवस्था 27:32**

“और गाय-बैल और भेड़-बकरियों का दशमांश, अर्थात् जितने पशु चरवाहे की लाठी के नीचे से निकलते हैं, उन में से हर दसवां प्रभु प्रभु यहोवा के लिये पवित्र ठहरेगा।”

---

## हिंदी में समझाइएः

इस पद में प्रभु प्रभु यहोवा (परमेश्वर) द्वारा दी गई दशमांश (tithe) की व्यवस्था के बारे में बताया गया है। पशुओं के दशमांश का अर्थ है कि प्रत्येक दसवें पशु को परमेश्वर के लिए पवित्र माना जाएगा। यह दशमांश इस प्रकार लिया जाता था कि चरवाहा अपने झुंड को एक संकरे रास्ते से निकालता था, और जब दसवां पशु आता था, तो उसे विशेष रूप से चिह्नित कर दिया जाता था।

इस व्यवस्था का मुख्य उद्देश्य यह सिखाना था कि परमेश्वर ही सबकुछ प्रदान करता है, और उसकी सेवा के लिए एक अंश को समर्पित करना आवश्यक है। इस दशमांश के तहत चुने गए पशु को परमेश्वर को बलिदान किया जाता था या फिर याजक इसे खा सकते थे।

---

## रब्बियों की व्याख्याएँ और उनके दृष्टिकोणः

### 1. राशी (Rashi):

- राशी ने यह स्पष्ट किया कि यह दशमांश बलिदान के रूप में दिया जाता था, लेकिन इसका मांस याजकों और मालिक द्वारा खाया जा सकता था।
- इस बलिदान में रक्त और चर्बी को वेदी पर चढ़ाया जाता था।

## 2. मालबिम (Malbim):

- मालबिम के अनुसार, "दसवें" को पवित्र कहा गया है, इसका अर्थ यह है कि  
गणना करने का तरीका कोई भी हो, दसवें पशु का बलिदान करना अनिवार्य था।
- यदि गलती से कोई व्यक्ति नौंवें पशु को दसवां कह देता था, तब भी यह दशमांश  
माना जाता था, लेकिन इसकी स्थिति भिन्न होती थी।

## 3. चिज़कुनी (Chizkuni):

- चिज़कुनी ने सिफ्रा ग्रंथ का हवाला देते हुए बताया कि यदि गलती से किसी ने  
नौंवें या ग्यारहवें पशु को भी दसवां कह दिया, तो तीनों पवित्र माने जाते थे।
- हालांकि, उनका उपयोग भिन्न तरीके से किया जाता था - असली दशमांश के रूप  
में केवल दसवें को ही स्वीकृति मिलती थी।

## 4. रालबाग (Ralbag):

- रालबाग का कहना था कि केवल उन्हीं पशुओं का दशमांश दिया जाता था जो  
बलिदान किए जा सकते थे।
- यदि कोई पशु जन्मजात दोषयुक्त था या उसकी माता का प्राकृतिक प्रसव नहीं  
हुआ था (जैसे सिजेरियन डिलीवरी), तो वह दशमांश के योग्य नहीं होता था।

## 5. रव हिर्श (Rav Hirsch):

- उन्होंने बताया कि केवल वे पशु जिनका स्वामित्व एक ही व्यक्ति के पास होता  
था, वही दशमांश के योग्य थे।
- साझेदारी में पाले गए पशु या खरीदकर लिए गए पशु दशमांश से मुक्त होते थे।

## उदाहरण के साथ समझाइएः

यदि किसी चरवाहे के पास 100 भेड़ें थीं, तो वह उन्हें एक संकरी जगह से एक-एक करके निकालता, और हर दसवें पशु को चिह्नित कर देता। इसे परमेश्वर को समर्पित किया जाता था।

### गलती होने की स्थिति मेंः

यदि किसी ने गलती से नौवें को दसवां कह दिया, तो वह भी पवित्र माना जाता था। और अगर ग्यारहवें को भी दसवां कहा, तो वह भी पवित्र होता, लेकिन अलग प्रकार के बलिदान के रूप में।

## आज के मसीही चर्च में इसका क्या महत्व है?

यद्यपि आज बलिदान की यह प्रथा मसीही विश्वास में नहीं अपनाई जाती, लेकिन "दशमांश देने" की अवधारणा चर्चों में प्रचलित है।

### 1. आर्थिक दशमांशः

- **अधिकांश चर्चों में यह परंपरा है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी आय का 10% परमेश्वर को देता है।**
- **इसे चर्च, मिशनरी कार्यों और जरूरतमंदों की सहायता के लिए उपयोग किया जाता है।**

### 2. बलिदान का आध्यात्मिक अर्थः

- मसीही विश्वास के अनुसार, प्रभु यीशु मसीह ने अपने प्राण बलिदान कर दिए,

जिससे अब पापों की क्षमा के लिए किसी और बलिदान की आवश्यकता नहीं है।

- अब बलिदान का रूप भौतिक से अधिक आध्यात्मिक हो गया है, यानी परमेश्वर को अपने समय, प्रेम, और सेवा द्वारा समर्पण देना।

### 3. ध्यान केंद्रित करने का संदेश:

- यह पद हमें सिखाता है कि हमें अपनी संपत्ति और संसाधनों को केवल अपने लिए ही नहीं रखना चाहिए, बल्कि परमेश्वर और दूसरों की भलाई के लिए भी देना चाहिए।
  - यह दर्शाता है कि हम परमेश्वर द्वारा दी गई वस्तुओं के केवल "प्रबंधक" (steward) हैं, न कि उनके अंतिम मालिक।
- 

### निष्कर्ष:

लैब्यव्यवस्था 27:32 दशमांश की एक विशिष्ट प्रथा का वर्णन करता है, जिसमें प्रत्येक दसवें पशु को परमेश्वर के लिए पवित्र माना जाता था। हालाँकि यह व्यवस्था अब मसीही जीवन में पशु बलिदान के रूप में लागू नहीं होती, लेकिन दशमांश देने की अवधारणा आज भी चर्चों में जीवित है। इसका आध्यात्मिक अर्थ यह है कि हमें अपनी आय, समय, और संसाधनों का एक भाग परमेश्वर की सेवा और दूसरों की भलाई के लिए समर्पित करना चाहिए।

□ □ □ □ □ □ □ :

यह आज्ञा निर्गमन (Exodus) 13:2 में दी गई है:

□ "मेरे लिये हर पहलौठे को पवित्र ठहराना, जो इस्राएलियों में माता की कोख से पहिले निकलता है, चाहे मनुष्य में हो, चाहे पशु में, वह मेरा ही होगा।"

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

यह आज्ञा इस बात को दर्शाती है कि पहला जन्म लेने वाला (Firstborn) विशेष होता है और उसे प्रभु प्रभु यहोवा (पिता) के लिए अलग किया जाना चाहिए। इसका कारण यह है कि जब मिस्र में दसवीं विपत्ति आई, तो प्रभु प्रभु यहोवा ने मिस्रियों के सभी पहलौठों (Firstborns) को मार डाला, लेकिन इस्राएल के पहलौठों को बचाया। इसलिए परमेश्वर ने इस्राएलियों के पहलौठों को अपने लिए अलग करने का आदेश दिया।

□ मुख्य बिंदुः

1. हर पहलौठा प्रभु प्रभु यहोवा का होता है - चाहे वह मनुष्य हो या पशु।
  2. पहले जन्म लेने वाले का विशेष स्थान – यह उसकी माता की कोख से पहला जन्म है, इसलिए यह विशेष रूप से परमेश्वर के लिए समर्पित किया जाता है।
  3. छुटकारे की याद - यह मिस्र से छुटकारे की घटना को स्मरण करने का एक तरीका है।
  4. पहलौठे का छुटकारा (Redemption) - मनुष्यों के पहलौठों को पाँच शोकेल देकर छुड़ाया जाता था, लेकिन पशु की बलि चढ़ाई जाती थी।
- 

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

## 1 इनायतीला (Rashi)

इनायतीला में लिखा है "ਪਟਰ ਕਿ ਰਾਹਮ" (ਪਟਰ ਕਿ ਰਾਹਮ)। इसमें लिखा है कि उन्होंने मिस्र में

**उदाहरण:** यदि किसी महिला ने पहले लड़की को जन्म दिया और फिर लड़का हुआ, तो वह लड़का "पहला जन्म" नहीं माना जाएगा, क्योंकि वह कोख को सबसे पहले नहीं खोलता।

### अतिरिक्त व्याख्या:

- परमेश्वर ने पहलौठों को अपनी संपत्ति के रूप में लिया क्योंकि उन्होंने मिस्र में इस्राएलियों के पहलौठों को मारा नहीं था।
  - यह नियम विशेष रूप से केवल पुरुष पहलौठों पर लागू होता है।
- 

## 2 इनायतीला (Ibn Ezra)

इनायतीला में लिखा है "רְבִזְבֵּז" शब्द का अर्थ "खोलना" बताया और कहा कि इसका आशय है कि जो पहला बेटा माँ की कोख को खोलता है, वही पहलौठा कहलाता है।

**उदाहरण:** यदि कोई महिला जुड़वाँ बच्चों को जन्म देती है, तो जो पहला बाहर आएगा, वही "पहला जन्म" कहलाएगा, भले ही दूसरा कुछ ही क्षण बाद जन्म ले।

---

## 3 बेखोर शोर (Bekhor Shor)

इनायतीला में लिखा है कि उन्हें मिस्र में मारे जाने से चमत्कारी रूप से बचाया गया था।

**उदाहरण:** जब परमेश्वर ने मिस्र के पहलौठों को मारा, तो इस्राएल के पहलौठे सुरक्षित रहे।

इसलिए उनकी पवित्रता एक विशेष आशीर्वाद और पहचान का प्रतीक है।

**4□ □□□□□□□ (Chizkuni)**

□ □□□□□□□□ □□□ □□ □□ □□□□ केवल पहले जन्मे मानव पुरुषों पर लागू होता है।

पुराने समय में, केवल पहलौठे ही बलिदान चढ़ाने की सेवा में होते थे।

## अतिरिक्त जानकारी:

बाद में लेवियों को इस सेवा के लिए चन लिया गया, और इस्ताएल के पहलौठों को पाँच

रोकेल देकर छडाया जाने लगा।

# 5□ □□□□□ (Malbim)

“**पुरुष पहलाठे**” (Firstborn Son), जो उनकी विवाही स्तर का एक अत्यधिक महत्वपूर्ण घटना है।

male) को निर्दिष्ट किया।

## सम्बंधित पहलूः

यहूदी परंपरा में पहली बेटी को पहलौठी नहीं माना जाता।

6  (Ray Hirsch)

□ □□□□□□□□ □□□ □ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□

(Representative) □□□□ □□□□ □□□

## □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ परमेश्वर की योजना और उद्देश्यों □ □ □ □ □ □ □

□ □ □

□ पहला जन्म लेने वाले को पवित्र करना इस बात का प्रतीक था कि परमेश्वर ही सम्पूर्ण राष्ट्र  
का मार्गदर्शक है।

□ उदाहरण: अगर किसी घर में पहलौठा लड़का था, तो उसे एक विशेष भूमिका दी जाती थी  
कि वह घर में धार्मिक गतिविधियों और परंपराओं को आगे बढ़ाए।

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ (Christian Perspective) □ □ □  
□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ ?

1□ प्रभु यीशु मसीह स्वयं "पहलौठे" हैं

- □ कुलुस्सियों 1:15 – "वह अनदेखे परमेश्वर की प्रतिमा और सारी सृष्टि में पहलौठा है।"
- प्रभु यीशु मसीह को "पहलौठा" इसलिए कहा गया क्योंकि वे परमेश्वर की योजना में  
पहले स्थान पर हैं।

2□ मसीही विश्वास में बलिदान का महत्व

- पुराने नियम में पहलौठे बलिदान किए जाते थे, लेकिन प्रभु यीशु मसीह ने स्वयं को एक  
बार और हमेशा के लिए बलिदान कर दिया।
- □ इब्रानियों 10:10 - "हम प्रभु यीशु मसीह की देह के एक ही बार बलिदान चढ़ाए जाने  
के द्वारा पवित्र किए गए हैं।"

3□ हर मसीही अब "परमेश्वर के लिए समर्पित" होता है

- पुराने नियम में सिर्फ पहलौठे परमेश्वर के लिए समर्पित थे, लेकिन नये नियम में हर मसीही विश्वासी को परमेश्वर के लिए जीने का बुलावा दिया गया है।
  - □ रोमियों 12:1 - ”अपने शरीरों को जीवित, पवित्र और परमेश्वर को भानेवाले बलिदान के रूप में चढ़ाओ।”

## 4□ पहला जन्म और नया जन्म (Born Again)

- पुराने नियम में पहला जन्म लेना महत्वपूर्ण था, लेकिन प्रभु यीशु ने कहा कि "पुनर्जन्म (Born Again) लेना ज्यादा महत्वपूर्ण है।
  - □ यूहन्ना 3:3 - "यदि कोई नए सिरे से न जन्मे, तो वह परमेश्वर के राज्य को नहीं देख सकता।"

□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□

□□□□ □□, □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□

□□□□ □□□□ □□□

अब हर मसीही को "परमेश्वर के लिए समर्पित" जीवन जीने का

## आह्वान किया गया है।

॥ इषानिये २:११ ॥

P 80 Ex.22:28; On Redeeming the First-born of man, Pidyon ha-ben

## बाइबल पदः

### निर्गमन (Exodus) 22:28

**"तू अपनी उपज और रस का पहिला ठा अर्पित करने में विलम्ब न करना; अपने पहिला ठे पुत्र को मुझे दे देना।"**

---

## हिंदी में विस्तृत व्याख्या:

यह पद दो प्रमुख बातों पर ध्यान केंद्रित करता है:

1. पहली उपज और रस (अनाज, अंगूर, जैतून का तेल) को अर्पित करना
2. पहिला ठे पुत्र को प्रभु प्रभु यहोवा के लिए समर्पित करना

### 1. उपज और रस का अर्पणः

बाइबल के समय में इस्राएली कृषि प्रधान समाज में रहते थे। प्रभु प्रभु यहोवा ने उन्हें आज्ञा दी

कि वे अपनी पहली उपज और अंगूर तथा जैतून के पहले रस को परमेश्वर को अर्पित करें।

इसका मुख्य उद्देश्य यह था कि वे प्रभु प्रभु यहोवा को अपनी आजीविका और आशीषों का स्रोत मानें और उसके प्रति कृतज्ञता दिखाएँ।

### 2. पहिला ठे पुत्र का अर्पणः

पहिलौठा बेटा विशेष रूप से प्रभु प्रभु यहोवा को समर्पित होता था, क्योंकि मिस्र से निकलने के समय प्रभु प्रभु यहोवा ने इस्राएल के पहिलौठों को मृत्यु से बचाया था (निर्गमन 13:2, 12-15)।  
इस्राएलियों को आज्ञा दी गई थी कि वे अपने पहले पुत्रों को 5 शेकेल (चाँदी के सिक्के) देकर छुड़ाएँ (गिनती 18:16)।

---

## यहूदी विद्वानों (रब्बियों) की व्याख्याएँ:

### 1. रशी (Rashi):

- "מִלְאִתְקָה" (*M'leiatekha*) का अर्थ है जब फसल पूरी तरह से पक जाती है, तब उसे देना चाहिए।
- "בְּדִימָקָה" (*V'Dimakha*) का अर्थ है पहला रस (अंगूर और जैतून से निकला रस)।
- "לֹא תַּעֲקַה אֶל" (*Lo Te'akhen*) का अर्थ है कि इन चीजों को चढ़ाने में देरी न करें।

**उदाहरण:** यदि किसी के पास गेहूँ की पहली फसल आ चुकी है, तो उसे पहले प्रभु प्रभु यहोवा को समर्पित करना होगा, फिर अन्य उपयोगों के लिए रखना होगा।

### 2. इब्न ए़ज़रा (Ibn Ezra):

- "מִלְאִתְקָה" का अर्थ है अनाज, और "בְּדִימָקָה" का अर्थ है जैतून का तेल और अंगूरी रस।
- इस्राएलियों को उनकी पहली फसल प्रभु प्रभु यहोवा को समर्पित करने के लिए कहा गया ताकि वे यह याद रखें कि सारी उपज प्रभु प्रभु यहोवा के आशीर्वाद से आती है।

### 3. रशबाम (Rashbam):

- उन्होंने इस पद को यरूशलेम में पहला फल चढ़ाने की प्रथा से जोड़ा।
- "לְאַתָּה אַתָּה א'" का अर्थ है कि मंदिर में पहला अत्र समय पर लाया जाए, देरी न की जाए।

### 4. नचमैनिदेस (Nachmanides):

- इस पद को पहले फलों की भेंट और पहले बेटे को समर्पित करने की व्याख्या में विभाजित किया।
  - उनका मत था कि यह आदेश प्रभु प्रभु यहोवा को इसाएल का प्रथम स्थान देने का प्रतीक था।
- 

## आज के मसीही चर्च में इसका क्या महत्व है?

### 1. पहली उपज का अर्पण (First Fruits Offering):

- ईसाई परंपराओं में यह अवधारणा परमेश्वर को हमारी पहली और सर्वश्रेष्ठ चीज़ें देने की भावना में जारी रहती है।
- यह सिद्धांत "पहली उपज का सिद्धांत" (First Fruits Principle) के रूप में जाना जाता है, जिसमें लोग अपनी पहली आमदनी, पहला वेतन, या सबसे अच्छा हिस्सा प्रभु प्रभु यहोवा को समर्पित करने की परंपरा निभाते हैं।

### 2. प्रभु यीशु मसीह और पहला फल:

- 1 कुरिच्यियों 15:20-23 में प्रभु यीशु को "मृतकों में से पहला फल" कहा गया है, जिसका

अर्थ है कि वह पुनरुत्थान का पहला उदाहरण हैं और हम सभी जो उसमें विश्वास करते हैं,

उसी पुनरुत्थान का हिस्सा होंगे।

- इसलिए, पहले फल का सिद्धांत न केवल कृषि उपज तक सीमित है, बल्कि यह ईसाइयों के लिए आत्मिक अर्थ भी रखता है।

### 3. पहला बेटा और प्रभु यीशु मसीहः

- प्रभु यीशु स्वयं परमेश्वर के पहिलाँठे पुत्र के रूप में देखे जाते हैं (कुलुस्सियों 1:15)।
- मसीही सिद्धांत में, प्रभु यीशु ने अपने बलिदान से पहिलाँठे पुत्र की बलि देने की आवश्यकता को पूरा कर दिया।

### 4. आज के चर्च में प्रासंगिकता:

- चर्च में यह सिखाया जाता है कि हमारी सबसे पहली और सर्वश्रेष्ठ चीज़ें परमेश्वर को समर्पित होनी चाहिए - चाहे वह धन हो, समय हो, या प्रतिभाएँ।
  - पहला फल और पहला बेटा परमेश्वर की प्रभुता को स्वीकार करने का प्रतीक हैं।
- 

### निष्कर्षः

निर्गमन 22:28 हमें सिखाता है कि हम अपनी पहली और सबसे अच्छी चीज़ें परमेश्वर को अर्पित करें। यह सिद्धांत यहां परंपरा में पहले फलों और पहले जन्मे पुत्र की भेंट के रूप में देखा जाता है। मसीही सिद्धांत में, यह प्रभु यीशु के बलिदान से जुड़ता है और हमें प्रेरित करता है कि हम अपने जीवन का पहला और सर्वोत्तम हिस्सा प्रभु प्रभु यहोवा को दें।

## आज के लिए सीखः

1. परमेश्वर को हमेशा अपने जीवन में पहला स्थान दें।
2. अपनी आमदनी, समय, और संसाधनों का पहला और सर्वोत्तम भाग परमेश्वर के लिए अलग रखें।
3. प्रभु यीशु मसीह को "पहिला फल" मानते हुए, उसके बलिदान के द्वारा उद्धार को स्वीकार करें।

P 81 Ex.34:20 On Redeeming the firstling of an ass, if not...

### निर्गमन 34:20 (Exodus 34:20)

"तू अपने पहलौठे गदहे का बलि का पशु देकर छुटकारा कर; और यदि तू उसका छुटकारा न करे तो उसकी गर्दन तोड़ दे। और तू अपने सब पहलौठे पुत्रों का छुटकारा करेगा। और मेरे दर्शन के लिये कोई भी खाली हाथ न आए।"

□ □

#### 1. पहलौठे पुत्र की मोल-छुड़ाई (Redemption of the Firstborn Son)

- प्रभु प्रभु यहोवा ने इसाएलियों को आज्ञा दी कि प्रत्येक पहलौठे पुत्र का मोल छुड़ाया जाए।
- इस छुड़ाई के लिए पाँच शेकेल (सिल्वर के सिक्के) देने होते थे (गिनती 18:16)।
- इस दायित्व का पालन पिता को करना पड़ता था, और यदि पिता इसे न करे, तो जब पुत्र

**वयस्क हो जाए, तो वह स्वयं अपना मोल छुड़ाए।**

- यदि पुत्र की मृत्यु हो जाती है, तो भी उसकी मोल-छुड़ाई करनी आवश्यक थी।
- यह आदेश केवल पहलौठे पुत्रों पर लागू होता है, बेटियों पर नहीं।

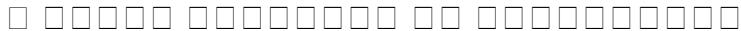
## 2. पहलौठे गदहे की मोल-छुड़ाई (Redemption of the Firstborn Donkey)

- किसी भी गैर-पवित्र पशु (non-kosher animal) में से केवल गदहे को छुड़ाने की आज्ञा दी गई।
- गदहे को छुड़ाने के लिए एक भेड़ (lamb) देकर याजक को देना होता था।
- यदि कोई छुड़ाने से मना करता, तो गदहे की गर्दन तोड़ देनी होती थी।
- गदहे का छुड़ाया गया पशु याजक के पास रहता था, लेकिन उसे बलिदान नहीं किया जाता था, क्योंकि गदहा अशुद्ध पशु था।

## 3. "मेरे सामने कोई खाली हाथ न आए" (Not Appearing Empty-Handed)

- यह आज्ञा तीन प्रमुख त्योहारों पर प्रभु प्रभु यहोवा के सामने उपस्थित होने से संबंधित थी -
  1. **फसह (Passover)**
  2. **पिन्तेकुस्त (Pentecost/Shavuot)**
  3. **झोपड़ियों का पर्व (Feast of Tabernacles/Sukkot)**
- जब भी कोई प्रभु प्रभु यहोवा के सामने मंदिर में उपस्थित होता, उसे भेंट या बलिदान लाना आवश्यक था।
- यह सिद्धांत इब्राहीम के उदाहरण में दिखता है, जब उसने मल्कीसेदेक को भेंट दी (उत्पत्ति 14:20)।

- व्यवस्थाविवरण 15:13-14 के अनुसार, पदि कोई इब्री दास मुक्त किया जाता, तो उसे खाली हाथ नहीं भेजा जाता था, बल्कि उसे फसल और पशुओं से दिया जाता था।



## **1. बिर्कत अशर (Birkat Asher)**

- वे इस पद की शब्दों की संरचना पर ध्यान देते हैं और पूछते हैं कि मनुष्यों के पहलौठे की चर्चा पशुओं के बाद क्यों की गई?
  - वे तक देते हैं कि यह मानव जीवन की पवित्रता को उजागर करता है और प्रभु प्रभु यहोवा को प्रथम स्थान देने का एक तरीका है।

## 2. चिज्कुनी (Chizkuni)

- चिज़कुनी बताते हैं कि गदहे को छुड़ाने की आवश्यकता इसलिए है क्योंकि यह बलिदान के लिए योग्य नहीं है।
  - यदि इसे छुड़ाया नहीं जाता, तो इसका वध निषिद्ध रूप से गर्दन तोड़कर करना होता।

### 3. हक्तव वेहकब्बलाह (HaKtav VeHaKabbalah)

- यह पद **तीर्थयात्रा (Pilgrimage)** से जुड़ा हुआ है।
  - ”कोई भी खाली हाथ न आए” का मतलब यह भी हो सकता है कि भूमि के स्वामी ही तीर्थयात्रा कर सकते थे, क्योंकि भूमि का स्वामित्व प्रभु प्रभु यहोवा का आशीर्वाद था।

#### **4. रब्बी बाख्या (Rabbeinu Bahya)**

- वे पहलौठे के महत्व को दर्शाते हैं और बताते हैं कि पहले यह सम्मान पहलौठों को दिया

गया था कि वे बलिदान चढ़ाएँ, लेकिन सोने के बछड़े की घटना के बाद, यह सम्मान  
लेवी याजकों को दिया गया।

## 5. सिफतई चखामिम (Siftei Chakhamim)

- यह स्पष्ट करते हैं कि गदहे की मोल-छुड़ाई अन्य बलिदान योग्य पशुओं से अलग होती है।
  - वे बताते हैं कि छुड़ाया गया गदहा साधारण कार्यों में प्रयोग किया जा सकता था, लेकिन  
बलिदान के योग्य नहीं था।
- 

### □ □□□□ □□□□□□□ (Christian Perspective)

#### 1. प्रभु यीशु मसीह और पहलौठे का अर्थ

- नया नियम प्रभु यीशु मसीह को "पहला जन्मा" (Firstborn) कहता है (कुलुस्सियों 1:15,  
रोमियों 8:29)।
- यह मसीह के सर्वोच्च अधिकार और बलिदान को दिखाता है।
- मसीह ने अपने जीवन को देकर मानवता के लिए एक अंतिम छुटकारे की कीमत चुकाई  
(1 पतरस 1:18-19)।

#### 2. "कोई खाली हाथ न आए" का नया नियम में अर्थ

- मसीही विश्वास में यह सिद्धांत आज भी मौजूद है कि जब हम परमेश्वर के सामने आते हैं, तो हमें केवल भौतिक चीज़ों में नहीं, बल्कि आध्यात्मिक बलिदान भी चढ़ाने चाहिए।
- रोमियों 12:1 में, प्रेरित पौलुस कहता है,  
"अपने शरीरों को जीवित, पवित्र और प्रभु प्रभु यहोवा को भाने योग्य बलिदान  
करके चढ़ाओ, यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।"

### 3. मसीही चर्चों में इसका पालन कैसे किया जाता है?

**पहला जन्मा प्रभु यीशु : प्रभु यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान को "पहला फल" के रूप में देखा**

**जाता है (1 कुरिञ्चियों 15:20)।**

**अर्थिक भेंट और दसवांशः** चर्च में दान देने की परंपरा इसी नियम पर आधारित है कि

**परमेश्वर की आराधना में "खाली हाथ" नहीं आना चाहिए।**

**आत्मिक बलिदानः** मसीही आज अपनी प्रार्थना, आराधना, और सेवा के द्वारा "आत्मिक

**बलिदान**" लाते हैं (इब्रानियों 13:15-16)।

### □ □ □ □ □ □ □ □ (Conclusion)

**निर्गमन 34:20** एक महत्वपूर्ण पद है जो परमेश्वर के प्रति समर्पण, पहलौठे के छुटकारे और

**भेंट चढ़ाने की भावना को दर्शाता है।**

- यह यहूदी धर्म में आज भी लागू होता है, विशेषकर पिद्योन हाबेन (Pidyon HaBen) नामक धार्मिक रीति के द्वारा।
- मसीही विश्वास में, यह प्रभु यीशु मसीह के बलिदान के महत्व को उजागर करता है और हमें परमेश्वर के सामने श्रद्धा और समर्पण के साथ आने की सीख देता है।

P 82 Ex.13:13 ...breaking the neck of the firstling of an ass

**बाइबल पदः**

## निर्गमन 34:20

**"और हर एक पहलौठा गदहा मेंसे से छुड़ाया जाए, यदि तू उसे छुड़ाना न चाहे, तो उसकी गर्दन तोड़ दी जाए। और अपने सब पुत्रों के पहलौठों को छुड़ा लेना। और कोई मेरे सम्मुख खाली हाथ न आए।"**

## हिंदी में समझाव

यह पद दो महत्वपूर्ण आज्ञाओं को प्रस्तुत करता है:

1. **पहलौठे पुत्र का छुड़ाया जाना** – इसाएलियों को अपने पहले जन्मे पुत्र को छुड़ाने की आज्ञा दी गई थी। छुड़ाने की राशि पाँच शेकेल थी (गिनती 18:16)। इस व्यवस्था का उद्देश्य इसाएलियों को याद दिलाना था कि प्रभु प्रभु यहोवा ने मिस्र में उनके पहलौठों को बचाया था, जबकि मिस्रियों के पहलौठे मारे गए थे (निर्गमन 13:15)।
2. **पहलौठे गदहे का छुड़ाया जाना** - यदि किसी के पास पहलौठा गदहा हो, तो उसे एक मेंसे के बदले छुड़ाना आवश्यक था। यदि गदहे को छुड़ाया नहीं जाता, तो उसकी गर्दन तोड़ दी जाती थी। यह नियम केवल गदहों के लिए था, अन्य अपवित्र पशुओं के लिए नहीं। इसका प्रतीकात्मक अर्थ यह है कि गदहा मिस्रियों की गुलामी का प्रतीक था, और उसका छुड़ाया जाना यह दर्शाता है कि प्रभु प्रभु यहोवा ने इसाएलियों को मिस्र से छुड़ाया।

**"कोई मेरे सम्मुख खाली हाथ न आए"** – यह भाग यह सिखाता है कि जब भी कोई प्रभु प्रभु यहोवा के सामने आता (विशेषकर पर्वों में), तो वह भेंट या बलिदान लेकर आता। यह आदर और कृतज्ञता व्यक्त करने का तरीका था।

## रब्बियों की व्याख्या और विभिन्न दृष्टिकोण

### 1. पहलौठे पुत्र की छुटकारे की व्यवस्था:

- **राशी:** पहलौठे का छुड़ाया जाना मिस्र में घटित घटनाओं की स्मृति के रूप में है।
- **मालबिम:** यदि किसी व्यक्ति के कई पहलौठे पुत्र हों, तो प्रत्येक को छुड़ाना होगा।
- **चिज़कुनी:** पहले सभी पहलौठे प्रभु प्रभु यहोवा के लिए पवित्र माने जाते थे, लेकिन बाद में लेवीयों को इस स्थान पर विशेष रूप से चुना गया।
- **रब्बी बाख्या:** पहलौठा पुत्र बलिदान देने के योग्य नहीं होता था, इस कारण उसकी छुड़ौती दी जाती थी।

### 2. पहलौठे गदहे का छुड़ाया जाना:

- **राशी:** मिस्री गदहों के समान थे क्योंकि वे प्रभु प्रभु यहोवा के विरुद्ध कठोर थे।
- **रब्बी हिर्श:** गदहा शांति और समृद्धि का प्रतीक है, और इसका छुड़ाया जाना यह दर्शाता है कि सभी भौतिक संपत्तियाँ प्रभु प्रभु यहोवा की होती हैं।
- **सिफतेई चखामिम:** मेस्त्रा जो गदहे के बदले दिया जाता था, वह याजक के लिए केवल साधारण पशु होता था, उसे बलिदान नहीं किया जाता था।
- **रब्बी रालबाग:** छुड़ौती में दिया गया मेस्त्रा पवित्र नहीं होता था, बल्कि यह केवल स्वामित्व का स्थानांतरण था।
- **रब्बी मसकिल लेडविड:** यदि कोई गदहे को छुड़ाने से इनकार करता, तो उसकी गर्दन तोड़ दी जाती, जो यह दर्शाता था कि वह परमेश्वर की प्रभुता को अस्वीकार कर रहा है।

### 3. खाली हाथ न आना (प्रभु प्रभु यहोवा के सामने भेंट लाना):

- **रब्बी हकटव वेहकबालाह:** यह व्यवस्था यह सिखाती है कि जो लोग प्रभु प्रभु यहोवा की आराधना करने आते हैं, वे अपनी भेंट लाकर अपनी निष्ठा व्यक्त करें।
  - **रब्बी चिज़कुनी:** यह आदेश पर्वों पर बलिदान लाने की परंपरा से जुड़ा हुआ है।
  - **सिफतेई चखामिम:** यह आज्ञा यह भी दर्शाती है कि जो कोई आज़ाद किया गया हो (जैसे कि इब्रानी दास) उसे कुछ भेंट के साथ विदा किया जाए।
- 

## आज के मसीही चर्च में इस पद का महत्व

### 1. मसीह प्रभु यीशु में पूर्णता:

- मसीह को "परमेश्वर का मेम्रा" कहा गया है (यूहन्ना 1:29)। ठीक उसी प्रकार जैसे पहलौठा पुत्र छुड़ाया जाता था, वैसे ही प्रभु यीशु मसीह ने हमें अपने लहू से छुड़ाया (1 पतरस 1:18-19)।
- प्रभु यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान ने छुटकारे की प्रक्रिया को पूरा कर दिया, इसलिए अब मसीहियों को कोई बलिदान देने की आवश्यकता नहीं है।

### 2. परमेश्वर के सामने भेंट लाना:

- मसीही विश्वास में यह शिक्षा दी जाती है कि जब हम परमेश्वर के पास आते हैं, तो हमें केवल भौतिक चीज़ों से नहीं, बल्कि अपने हृदय, आराधना और सेवा से भी उसकी महिमा करनी चाहिए (रोमियों 12:1)।

### 3. विश्वास और धन्यवाद:

- यह पद हमें यह सिखाता है कि हम परमेश्वर के सामने धन्यवाद और आदर के

### साथ आएँ, न कि खाली हाथ।

- मसीही चर्चों में दान, सेवा, और प्रभु के प्रति समर्पण को इसी विचार से जोड़ा जाता है।

### 4. पहलौठे का विशेष महत्व:

- नए नियम में, मसीह को "सभी सृष्टि का पहलौठा" कहा गया है (कुलुस्सियों 1:15), जो यह दर्शाता है कि वह परमेश्वर का पहला और सर्वोच्च पुत्र है, और उसी के द्वारा छुटकारे का मार्ग संभव हुआ।
- 

### निष्कर्ष

निर्गमन 34:20 का यह संदेश आज भी महत्वपूर्ण है। यह हमें परमेश्वर के छुटकारे की योजना की ओर इंगित करता है, जो मसीह में पूरी हुई। यह हमें याद दिलाता है कि हमें परमेश्वर की उपस्थिति में कृतज्ञता और समर्पण के साथ आना चाहिए। इसके अलावा, यह हमें यह भी सिखाता है कि हम अपनी संपत्तियों को परमेश्वर की महिमा के लिए उपयोग करें, ठीक उसी प्रकार जैसे इसाएली अपने पहलौठों को छुड़ाते थे।

P 83 De.12:5-6 On bringing due offerings to Jerusalem without delay

□ □ □ □ □ □ □ :

□ व्यवस्थाविवरण (Deuteronomy) 12:5

"परन्तु उस स्थान पर जिसे तुम्हारा परमेश्वर प्रभु प्रभु यहोवा तुम्हारे सब गोत्रों में से चुन

**लेगा कि वह अपना नाम वहाँ रखे, उसी की खोज करना, और उसी स्थान पर जाया**

**करना।"**

---

□ □

**1 □ □ □ "□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ ?**

यह स्थान वह है **जहाँ प्रभु प्रभु यहोवा अपना नाम स्थायी रूप से रखेगा।** इस पद में किसी विशेष स्थान (जैसे यरूशलेम) का उल्लेख नहीं किया गया है, **बल्कि केवल यह कहा गया है कि परमेश्वर स्वयं इसे चुनेगा।**

**बाइबल में संदर्भ:**

- पहले, परमेश्वर की उपासना के लिए कई स्थानों का उपयोग किया गया, जैसे **गिलगाल, शिलोह, नोब, और गिबोन।**
  - अंत में, यरूशलेम को स्थायी स्थान के रूप में चुना गया, जहाँ **सुलैमान ने मंदिर बनाया**
- (1 राजा 8:10-11)।
- 

**2 □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ ?**

इस प्रश्न पर यहौदी विद्वानों और रब्बियों के अलग-अलग विचार हैं:

□ (1) युद्ध और विनाश से बचाव:

- **रम्बाम (Maimonides):** यदि इस स्थान को पहले से बता दिया जाता, तो अन्य राष्ट्र इसे नष्ट कर सकते थे।

- उदाहरण: बाबूल के लोगों ने बाद में यहूदियों के मंदिर को गिराया, यदि पहले से

यरूशलेम का नाम दिया जाता, तो यह और पहले हो सकता था।

□ (2) जनजातियों में संघर्ष न हो:

- रम्बान (Nachmanides): यदि इस स्थान को पहले ही बता दिया जाता, तो जनजातियाँ

इसे अपने क्षेत्र में रखने के लिए लड़तीं।

- उदाहरण: बेन्जामिन गोत्र में यह मंदिर आया, अगर पहले ही खुलासा होता तो बाकी गोत्र

इसका विरोध कर सकते थे।

□ (3) अस्थायी पवित्र स्थलों का सम्मान:

- केली याकर (Keli Yakar): प्रभु प्रभु यहोवा ने पहले शिलोह, नोब, और गिबोन जैसे

स्थानों को चुना था। यदि यरूशलेम का नाम पहले से बता दिया जाता, तो इन अस्थायी

स्थानों का सम्मान नहीं होता।

□ (4) लोगों को स्वयं खोजना पड़े:

- अबारबनेल (Abarbanel): परमेश्वर चाहता था कि लोग स्वयं इस स्थान को खोजें,

जिससे वे और अधिक विश्वास और भक्ति दिखाएँ।

- उदाहरण: आज भी यहूदी प्रार्थना के समय यरूशलेम की ओर मुख करके प्रार्थना

करते हैं।

3 □ "לישקנו תדרשו" (Lishkono Tidrshu) का अर्थ

इसका शाब्दिक अर्थ है "उसकी उपस्थिति को खोजो"।

## रब्बियों के अनुसार:

- **राशी (Rashi):** यह शिलोह में स्थित पवित्र तंबू (Tabernacle) की ओर इशारा करता है।
- **रम्बान (Ramban):** यह प्रभु प्रभु यहोवा की महिमा को खोजने का आदेश देता है।
- **कली याकर:** यह बताता है कि परमेश्वर की उपस्थिति केवल मंदिर तक सीमित नहीं, बल्कि हर जगह खोजी जा सकती है।

## □ आधुनिक अनुप्रयोग:

आज भी यहूदी और मसीही विश्वासी यरूशलेम को पवित्र मानते हैं, और प्रार्थना के समय उसी दिशा में मुख करते हैं।

---

4□ □ □ □ □ □ (Christian) □□□□□□ □□ □ □□  
□□□ □□□ □□?

## 1□ प्रभु यीशु मसीह और "चुना हुआ स्थान"

- प्रभु यीशु ने कहा कि "अब यह जरूरी नहीं कि यरूशलेम में या किसी विशेष स्थान पर ही आराधना की जाए, बल्कि आत्मा और सच्चाई से आराधना होनी चाहिए।"  
(यूहन्ना 4:21-24)
- इस कारण आज मसीही चर्च में "एक स्थान" की अवधारणा मंदिर तक सीमित नहीं रही, बल्कि विश्वासियों की संगति को ही "परमेश्वर का मंदिर" माना जाता है।

## 2□ मसीहियों के लिए वास्तविक मंदिर क्या है?

- प्रेरित पौलस ने कहा कि "तुम्हारा शरीर ही पवित्र आत्मा का मंदिर है।" (1 कुरिन्थियों 6:19)

- इसलिए, मसीही चर्च इस पद को आत्मिक रूप में लेते हैं कि हर विश्वास करने वाला व्यक्ति परमेश्वर के निवास का स्थान है।

### 3□ मसीही चर्च में इस पद का महत्व:

- यह सिखाता है कि परमेश्वर ने अपने लोगों के साथ रहने के लिए एक स्थान चुना है।
  - प्रभु यीशु मसीह के द्वारा अब यह स्थान यरूशलेम का भौतिक मंदिर नहीं, बल्कि विश्वासियों का हृदय और संगति (Ecclesia) बन चुका है।
- 

□ □□□□□□□:

1□ □□ □□ □□□□□ □□ □□ परमेश्वर ने एक विशेष स्थान (यरूशलेम) को अपनी आराधना

के लिए चुना।

2□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□, □□□□□, □□  
□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□  
3□ □□□□□□□ □□ □□ □□-□□ □□□□□ □□ □□□□□, □□□□□  
□□□□□ □□ □□□□□, □□ □□ □□□□□□, □□ □□□□□□ □□□□□  
□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□  
4□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□,

□□□□ हर विश्वासी स्वयं परमेश्वर का मंदिर है।

□ इसलिए, इस पद का संदेश यह है कि हमें सच्चाई और आत्मा में परमेश्वर को खोजना चाहिए, न कि किसी विशेष भौतिक स्थान पर ही सीमित रहना चाहिए। ✤

## बाइबल पद:

**"और वहाँ अपने होमबलि और अपने मेलबलि और अपनी दशमांश और अपनी चढ़ाई,  
और अपनी मन्त्रत और अपनी स्वेच्छा की भेंट, और अपने गाय-बैल और भेड़-बकरियों के  
पहिलाँठे को ले जाना।"**(व्यवस्थाविवरण 12:6)

---

## हिंदी में व्याख्या:

यह पद इस्राएलियों को प्रभु प्रभु यहोवा के चुने हुए स्थान (अंततः यरूशलेम में मंदिर) में अपने बलिदानों और भेंटों को लाने की आज्ञा देता है। इस पद में सात प्रकार की भेंटों का उल्लेख किया गया है:

### 1. होमबलि (Burnt Offering - Olot)

- यह पूर्णतः वेदी पर जलाया जाता था।
- इसका उद्देश्य प्रायश्चित्त और समर्पण दिखाना था।
- उदाहरण: जब नूह ने जलप्रलय के बाद होमबलि चढ़ाई (उत्पत्ति 8:20)।

### 2. मेलबलि (Peace Offering - Zevachim/Shelamim)

- यह आंशिक रूप से याजकों, बलिदानकर्ता, और प्रभु प्रभु यहोवा के बीच बाँटा जाता था।
- इसका उद्देश्य धन्यवाद और संगति को दर्शाना था।
- उदाहरण: जब इस्राएली मूसा के नेतृत्व में प्रभु प्रभु यहोवा से शांति की प्रतिज्ञा कर रहे थे (लैव्यव्यवस्था 3:1-5)।

### 3. दशमांश (Tithes - Maaserot)

- यह दो प्रकार के होते थे:
  1. **दूसरा दशमांश (Maaser Sheni):** इसे यरूशलेम में खाया जाता था।
  2. **पशु का दशमांश (Maaser Behemah):** यह भी यरूशलेम में चढ़ाया जाता था।
- **उदाहरण:** अब्राहम ने मलिकिसिदक को दशमांश दिया (उत्पत्ति 14:20)।

### 4. चढ़ाई (Terumat Yadechem - Heave Offering)

- राशी इसे बिक्करिम (पहली उपज) मानते हैं।
- रामबान के अनुसार, यह स्वयं से दी गई भेंट हो सकती है।
- **उदाहरण:** काइन और हाबिल की भेंट (उत्पत्ति 4:3-5)।

### 5. मन्त्र (Vows - Nedarim)

- ये वो बलिदान थे जो किसी प्रतिज्ञा के रूप में प्रभु प्रभु यहोवा को समर्पित किए जाते थे।
- **उदाहरण:** हन्ना ने प्रभु प्रभु यहोवा से प्रतिज्ञा की कि अगर उसे पुत्र होगा तो वह उसे प्रभु प्रभु यहोवा को समर्पित करेगी (1 शमूएल 1:11)।

### 6. स्वेच्छा की भेंट (Freewill Offerings - Nedavot)

- यह किसी भी समय स्वेच्छा से दिया जाने वाला बलिदान था।
- **उदाहरण:** जब मंदिर के निर्माण के लिए लोगों ने स्वेच्छा से भेंट चढ़ाई (निर्गमन 35:29)।

## 7. पहिलौठा (Firstborn - Bechorot)

- गाय-बैल और भेड़-बकरी के पहले जन्मे बच्चों को याजकों को दिया जाता था।
  - उदाहरण: मिस्र से छुटकारे के बाद यह नियम स्थापित हुआ (निर्गमन 13:12-15)।
- 

### रब्बियों की व्याख्या:

#### 1. राशी:

- "दशमांश" का मतलब पशु दशमांश और दूसरा दशमांश है।
- "चढ़ाई" का मतलब बिककुरिम (पहली उपज) है।

#### 2. रामबान:

- "चढ़ाई" को किसी भी संपत्ति से स्वेच्छा से दिया गया दान मानते हैं।

#### 3. मिजराची:

- यरुशलेम में लाने की आवश्यकता इसलिए बताई गई क्योंकि अन्य बलिदानों की तरह दशमांश वेदी पर नहीं चढ़ाए जाते थे, बल्कि खाए जाते थे।

#### 4. हकतव वेहकबाला:

- "याद" (हाथ) शब्द को धन्यवाद और स्तुति के रूप में देखते हैं।

#### 5. रव हिर्श:

- बिककुरिम लाने का अर्थ यह मान्यता देना है कि हमारी स्वतंत्रता प्रभु प्रभु यहोवा

से आती है।

## 6. रलबागः

- तीर्थयात्रा के पहले अवसर पर सभी भेटें और मन्त्रतें पूरी करनी आवश्यक थीं।
- 

## मसीही चर्च में इसका महत्वः

### 1. प्रभु यीशु में पूर्ति

- प्रभु यीशु ने कहा, "मैं विधि या भविष्यद्वक्ताओं को लोप करने नहीं आया, परन्तु पूरा करने आया हूँ" (मत्ती 5:17)।
- होमबलि और मेलबलि की पूर्ति क्रूस पर प्रभु यीशु के बलिदान से हुई (इब्रानियों 10:10-12)।

### 2. आध्यात्मिक दशमांश और भेट

- मसीही विश्वास में, शारीरिक दशमांश के बजाय परमेश्वर को हृदय से देना आवश्यक है (2 कुरिच्यियों 9:7)।

### 3. नई वाचा में पहला फल

- रोमियों 8:23 कहता है कि हमें पवित्र आत्मा "पहला फल" के रूप में दिया गया है।

### 4. मसीही सेवा और भेट

- प्रेरितों के काम 4:32-35 में विश्वासियों ने अपनी संपत्ति को एक साथ रखा और जरूरतमंदों की मदद की।

## निष्कर्षः

**व्यवस्थाविवरण 12:6 में बताए गए बलिदान प्रभु प्रभु यहोवा की आराधना का हिस्सा थे और यह दर्शाते थे कि सब कुछ उसी का है। प्रभु यीशु मसीह ने इन बलिदानों की अंतिम पूर्ति की, जिससे अब विश्वासियों को हृदय से देने और सेवा करने के लिए प्रेरित किया जाता है।**

P 84 De.12:14 All offerings must be brought only to the Sanctuary

## व्यवस्थाविवरण 12:14 (Deuteronomy 12:14)

### बाइबल पदः

**“बलिके उसी स्थान में जिसे प्रभु प्रभु यहोवा तेरे एक गोत्र में से चुन ले, वहाँ तू होमबलि चढ़ाया करना; और वहीं वह सब कुछ करना, जिसकी में तुझे आज्ञा देता हूँ।”**

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

इस पद में यह स्पष्ट किया गया है कि परमेश्वर ने एक विशेष स्थान चुना है जहाँ होमबलि (Olot - Burnt Offerings) चढ़ाने होंगे। कोई भी व्यक्ति अपनी इच्छा से कहीं भी बलिदान नहीं कर सकता था। यह स्थान, भविष्य में यरूशलैम (Jerusalem) बना, जिसे परमेश्वर ने अपने मंदिर के लिए चुना।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ :

**चुना हुआ स्थान – यह स्थान वह होगा जिसे प्रभु प्रभु यहोवा स्वयं चुनेगा।**

**बलिदानों का नियम - सभी बलिदानों और धार्मिक क्रियाओं को उसी स्थान पर करना**

होगा।

**पालन करने का आदेश - यह केवल एक सुझाव नहीं है बल्कि एक आदेश था कि बलिदान**

**परमेश्वर द्वारा निर्धारित स्थान पर ही किए जाएं।**



□ **1. बेखोर शोर (Bekhor Shor):**

- उन्होंने कहा कि मंदिर बेन्यामीन (Benjamin) के क्षेत्र में था, लेकिन यहूदा (Judah) के हिस्से में भी एक पट्टी थी जहाँ वेदी (altar) स्थित थी।
- यह विचार महत्वपूर्ण है क्योंकि यह प्रभु प्रभु यहोवा के सभी गोत्रों को एक साथ जोड़ता है।

□ **2. अदेरेत एलियाहु (Aderet Eliyahu):**

- उन्होंने इस पद को द्वितीय मंदिर (Second Temple) से जोड़ा और बताया कि उसमें कुछ चीजें गायब थीं, जैसे उरीम और तुम्हीम (Urim and Thummim) जो परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए प्रयोग होते थे।

□ **3. गुर आर्येह (Gur Aryeh):**

- उन्होंने ”तेरे एक गोत्र में से“ शब्दों की व्याख्या करते हुए कहा कि यस्तलेम सभी गोत्रों के लिए था, न कि किसी एक गोत्र की संपत्ति।

□ 4. हाअमेके दावर (Haamek Davar):

- उन्होंने स्पष्ट किया कि चाहे किसी को दूर यात्रा करनी पड़े, फिर भी परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हुए, बलिदान उसी चुने हुए स्थान पर ही चढ़ाने चाहिए।

□ 5. मालबिम (Malbim):

- वे बताते हैं कि इस पद में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों आज्ञाएँ छिपी हुई हैं -
  - बलिदान केवल परमेश्वर द्वारा चुने गए स्थान पर देना आवश्यक है।
  - अन्यत्र बलिदान देना मना है।

□ 6. ओर हचाइम (Or HaChaim):

- उन्होंने इस विचार का विरोध किया कि परमेश्वर केवल एक गोत्र तक सीमित हैं। वे कहते हैं कि यह स्थान सभी के लिए था, न कि किसी एक गोत्र की संपत्ति।

□ 7. रशी (Rashi):

- उन्होंने बताया कि दाऊद (David) ने सभी गोत्रों से धन इकट्ठा किया था ताकि अराना (Araunah) से भूमि खरीदकर वहाँ परमेश्वर का मंदिर बनाया जाए।

□ 8. रब्बी हिर्श (Rav Hirsch):

- उन्होंने कहा कि परमेश्वर द्वारा चुने गए स्थान के अलावा कहीं भी बलिदान चढ़ाना मना था, और यह आदेश यरूशलेम को एक धार्मिक केंद्र बनाने के लिए दिया गया था।

□ 9. तोराह तेमीमाह (Torah Temimah):

- वे इस पद को बलिदानों के नियमों से जोड़ते हैं और बताते हैं कि जब तक सही निर्देश न

मिले, किसी को दंड नहीं दिया जाता।

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ ?

1 □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

- मसीही विश्वास में यरूशलेम एक पवित्र स्थान माना जाता है क्योंकि यही वह स्थान था जहाँ प्रभु यीशु मसीह को क्रूस पर चढ़ाया गया और जहाँ से वह पुनर्जीवित हुए।

2 □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

- यहूदी व्यवस्था में मंदिर में बलिदान चढ़ाए जाते थे, लेकिन मसीहियों का मानना है कि प्रभु यीशु मसीह ही अंतिम और संपूर्ण बलिदान (*Ultimate Sacrifice*) थे।
- इसलिए अब पशु बलिदान की आवश्यकता नहीं रही क्योंकि प्रभु यीशु ने स्वयं को एक बार सभी के लिए बलिदान कर दिया।

3 □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

- प्रभु यीशु ने कहा:
- "अब वह समय आ गया है जब न तो तुम इस पर्वत पर और न ही यरूशलेम में पिता की आराधना करोगे... परमेश्वर आत्मा है, और जो उसकी आराधना करते हैं, उन्हें आत्मा और सच्चाई से आराधना करनी चाहिए।"** (यूहन्ना 4:21-24)
- अब आराधना किसी स्थान तक सीमित नहीं है बल्कि आत्मा और सत्य में की जाती है।

4 □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

- मसीही विश्वास में यह माना जाता है कि अब "चुनी हुई जगह" कोई एक विशिष्ट शहर नहीं बल्कि कलीसिया (चर्च) है।
  - "क्या तुम नहीं जानते कि तुम परमेश्वर के मन्दिर हो, और परमेश्वर की आत्मा तुम में निवास करती है?" (1 कुरिन्थियों 3:16)

A horizontal row of nine empty square boxes, each with a thin black border, intended for children to draw or color in.

## 1□ यहां दियों के लिए:

- इस पद का मुख्य संदेश यह है कि परमेश्वर ने एक निश्चित स्थान चुना था (यरूशलेम),  
जहाँ बलिदान चढ़ाए जाने चाहिए।
  - विभिन्न रबियों ने इस स्थान की प्रकृति और नियमों पर चर्चा की।

## 2 मसीहियों के लिए:

प्रभु यीशु मसीह के बलिदान के कारण अब पशु बलिदान की जरूरत नहीं।

अब सच्ची आराधना केवल एक स्थान तक सीमित नहीं बल्कि हृदय और आत्मा में होती है।

□ **ਸੀਖ:** □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□

□ □ □ □ □ □ ! □

## बाइबल पदः व्यवस्थाविवरण (Deuteronomy) 12:26

”परन्तु जो कुछ तू पवित्र वस्तुओं और अपनी मन्त्रत की भेंटों में से रख छोड़े, उन्हें ले कर उस स्थान पर जा जो प्रभु प्रभु यहोवा चुनेगा।” (Hindi Bible: ERV)

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □  
□ □ □ □ □ □ □ □

व्यवस्थाविवरण 12:26 में यह नियम दिया गया है कि यदि किसी ने कोई पवित्र भेंट (कोदाशिम - *Kodashim*) या मन्त्रत की भेंट (*vowed offerings*) रखी है, तो उसे उसे सिफ़्र उसी स्थान पर ले जाना चाहिए जिसे प्रभु प्रभु यहोवा (*परमेश्वर*) ने चुना है यानी यरूशलेम का मंदिर। इसका मतलब है कि इस्माएली किसी भी पवित्र बलि को अपने शहरों में नहीं चढ़ा सकते थे, बल्कि उन्हें परमेश्वर के मंदिर में ही अर्पित करना था।

### □ मुख्य बिंदुः

1. यदि कोई बलिदान या नज़राने की मन्त्रत माने, तो उसे उसे यरूशलेम के मंदिर में ही चढ़ाना होगा।
2. अपने शहर में या किसी और जगह इसे चढ़ाना अनुचित होगा।
3. केवल सामान्य पशु-वध (*Slaughtering*) को कहीं भी किया जा सकता है, लेकिन बलिदान के लिए मंदिर जाना अनिवार्य था।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

## □ 1. रशी (Rashi)

रशी कहते हैं कि यह नियम यह स्पष्ट करता है कि हालाँकि इस्राएली किसी भी स्थान पर सामान्य

पशु-वध कर सकते हैं, लेकिन बलिदानों (sacrifices) के लिए यह स्वतंत्रता नहीं है □

□ उदाहरण: यदि कोई व्यक्ति मंदिर के बाहर बलिदान चढ़ाए, तो वह नियम का उल्लंघन करेगा।

---

## □ 2. अदेरेट ईलियाहु (Aderet Eliyahu)

यह व्याख्या बताती है कि इस्राएल के बाहर किए गए कोदाशिम (पवित्र बलिदान) को भी

इस्राएल में लाया जाना आवश्यक था।

□ उदाहरण: अगर कोई व्यक्ति बाबुल (बाबिलोनिया) में बलिदान के लिए किसी पशु को अलग

रखता है, तो उसे इसे यरूशलेम ले जाकर बलिदान करना ही होगा।

---

## □ 3. हामेक दावर (Haamek Davar)

इस व्याख्या में कहा गया है कि "जो तुम्हारे पास होंगे" का अर्थ है कि कोई भी चीज़ जिसे बलिदान

के रूप में अलग किया गया हो, उसे पूरा करना आवश्यक है।

□ उदाहरण: यदि कोई व्यक्ति कहे "यह पशु बलिदान के लिए है", लेकिन स्पष्ट न करे कि किस

प्रकार का बलिदान है, तब भी वह इसे मंदिर में लाने के लिए उत्तरदायी रहेगा।

---

## □ 4. इब्न ईज़रा (Ibn Ezra)

उन्होंने कहा कि "पवित्र वस्तुएँ" (Kodashim) से तात्पर्य है:

1. **होम बलि (Burnt Offering - Olah)**
2. **शांति बलि (Peace Offering - Shelamim)**
3. **मन्त्र की भेंट (Vow Offerings - Neder)**

□ उदाहरण: यदि किसी ने परमेश्वर से कोई मन्त्र मांगी और कहा कि ”मैं तुझे बलिदान चढ़ाऊँगा,” तो उसे इसे केवल परमेश्वर के मंदिर में ही चढ़ाना होगा।

---

□ 5. मल्बिम (Malbim)

उन्होंने भी कहा कि विदेशों में किए गए कोदाशिम को इसाएल लाना अनिवार्य था।

□ उदाहरण: कोई व्यक्ति रोम में रहते हुए यह मन्त्र माने कि वह प्रभु प्रभु यहोवा के लिए एक बकरी बलिदान करेगा, तो उसे इसे यरूशलेम के मंदिर में ले जाना होगा, कहीं और नहीं।

---

□ 6. मस्किल लेड्वाइड (Maskil LeDavid)

उन्होंने कहा कि यदि बलिदान के लिए अलग किए गए पशु में कोई दोष नहीं है, तो उसे कभी भी भुनाया (redeem) नहीं जा सकता।

□ उदाहरण: यदि कोई व्यक्ति बिना दाग-धब्बे वाला मेमना मंदिर के लिए अलग करता है, तो उसे उसे यरूशलेम ले जाना ही होगा।

---

□ 7. राब्बी यिशमैल (Rabbi Yishmael)

उन्होंने कहा कि ”पवित्र वस्तुएँ“ (Rak Kodashecha) से तात्पर्य Temurah (बलिदान के बदले

दूसरा पशु रखने का नियम) से है।

- उदाहरण: यदि कोई गलती से एक गाय को बलिदान के लिए अलग करता है, लेकिन बाद में उसे किसी दूसरी गाय से बदलना चाहता है, तो वह नियम के विरुद्ध होगा।
- 

#### □ 8. ○○○○○○ ○○○○○○ (Tzafnat Paneach)

उन्होंने कहा कि पहिलोठ (Firstborn) बलिदान यरूशलेम में लाना अनिवार्य था, लेकिन केवल त्योहारों के समय।

- उदाहरण: यदि किसी के झुड़ में पहला जन्मा बछड़ा हुआ, तो उसे उसे यरूशलेम में लाकर त्योहार के दौरान बलिदान करना था।
- 

- ○○○○○ ○○○○ ○○○ ○○ ○○ ○○ ○○○○  
○○○○ ○○ ?

आज के ईसाई धर्म में यह पद इस तरह से समझा जाता है:

1 ○ ○○○○ ○○○ ○○○○ ○○○○○○○ ○○ ○○○○ ○○○  
○○○○ ○○ ○○○○○○ ○○○

पुराने नियम में यरूशलेम का मंदिर ही एकमात्र स्थान था जहां बलिदान घटाया जा सकता था।

लेकिन नए नियम में, प्रभु यीशु मसीह स्वयं बलिदान बन गए (इब्रानियों 10:10)।

- ○○ ○○○○○○○ ○○ ○○○○○○ ○○○ ○○ ○○○○○○○ ○○○○ ○○, क्योंकि  
प्रभु यीशु मसीह परमेश्वर का बलिदान मेमना (यूहन्ना 1:29) बन गए हैं।
-

**2 □ □□□□□□□□ □ □ □□□□□□□ □□□□□□ □ □ □ □**

□□□□□ □□□□ □ □ □□□□□□ □ □ □□□, □ □ □□□□ □□□ □□□ □□□□□□ □ □  
□□□□□□□□ □□□□ □□□ (□□□□□□□□□□) 9:12 □

□ इसलिए मसीही चर्च इस पद को यह सिखाने के लिए उपयोग करता है कि अब पशु  
बलिदानों की जगह प्रभु यीशु का बलिदान पर्याप्त है।

---

### **3 □ □□□□□ □□□□□ (Spiritual Sacrifices)**

अब हमें आत्मिक बलिदान देना है, जैसे:

- **प्रार्थना** (1 थिस्सलुनीकियों 5:17)
- **सच्ची आराधना** (रोमियों 12:1)
- **दूसरों की सेवा** (इब्रानियों 13:16)

□ इसलिए, पुराने नियम में बलिदान को मंदिर में लाना अनिवार्य था, लेकिन आज मसीही  
जीवन का बलिदान प्रभु यीशु को समर्पित हृदय और भक्ति में प्रकट होता है।

---

□ □□□□□□□

- यह नियम पुराने नियम में केवल यरूशलेम के मंदिर में बलिदान चढ़ाने की अनिवार्यता  
बताता है।
- विभिन्न रब्बियों ने इस पद को बलिदानों के भिन्न नियमों से जोड़ा है।
- नए नियम में, प्रभु यीशु स्वयं बलिदान बन गए, इसलिए अब यह नियम मसीहियों पर<sup>1</sup>  
लागू नहीं होता।

- अब मसीही लोग आत्मिक बलिदान देते हैं, जैसे प्रार्थना और सच्ची भक्ति।

□ "प्रभु यीशु मसीह में हमें पूर्ण बलिदान मिल चुका है!"

P 86 De.12:15 On Redeeming blemished sanctified animal offerings

### **व्याख्या: व्यवस्थाविवरण 12:15 (Deuteronomy 12:15)**

**बाइबल पद (Deuteronomy 12:15 Hindi):**

हिंदी (ERV):  
 "फिर भी तू अपने नगरों में अपनी इच्छा के अनुसार मांस काट कर खा सकता है, प्रभु प्रभु यहोवा, तेरा परमेश्वर, जो आशीर्वाद तुझे देगा, उसके अनुसारः अशुद्ध और शुद्ध जन दोनों उसे खा सकते हैं, जैसे हिरन और हरिण को खाते हैं।"

### **हिंदी में व्याख्या**

इस पद में यह स्पष्ट किया गया है कि इसाएली अब मांस को अपने नगरों में स्वतंत्र रूप से खा सकते हैं, बशर्ते कि परमेश्वर का आशीर्वाद उनके साथ हो। पहले, जब वे जंगल में थे, तो वे केवल उन्हीं जानवरों का मांस खा सकते थे जो वे मंदिर में बलिदान करते थे। लेकिन जब वे कनान में बस गए, तो परमेश्वर ने अनुमति दी कि वे कहीं भी मांस खा सकते हैं, चाहे वह पवित्र हो या अपवित्र व्यक्ति हो।

## मुख्य बिंदुः

1. **बलिदान अनिवार्य नहीं** - जंगल में, इस्राएली केवल बलिदान किए गए जानवरों को ही खा सकते थे। लेकिन अब वे अपनी इच्छा के अनुसार मांस खा सकते थे।
  2. **शुद्ध और अशुद्ध का भेद** - यहाँ शुद्ध और अशुद्ध व्यक्तियों दोनों को समान अधिकार दिया गया है।
  3. **हरिण और हिरन का उदाहरण** - यह दिखाने के लिए कि अब यह बलिदान से अलग है, क्योंकि हिरन और हरिण को बलिदान नहीं किया जाता था।
- 

## रब्बियों के अनुसार अलग-अलग व्याख्याएँ

### 1. राशी (Rashi):

- यह पद उन पवित्र पशुओं के बारे में है जो किसी कारणवश बलिदान के योग्य नहीं रहे।  
यदि वे किसी स्थायी दोष से ग्रस्त हो जाते हैं, तो उन्हें छुड़ाया जा सकता है और सामान्य भोजन के रूप में खाया जा सकता है।
- **उदाहरण:** यदि कोई गाय मंदिर को समर्पित की गई थी लेकिन उसका पैर टूट गया, तो अब वह बलिदान योग्य नहीं रही। तब इसे छुड़ाकर इसका मांस खाया जा सकता है, लेकिन इसकी ऊन नहीं काती जा सकती और इसका दूध नहीं पिया जा सकता।

### 2. अदेरेत एलियाहु (Aderet Eliyahu):

- यह पद विशेष रूप से पसुले मुकदाशिन (अशुद्ध बलिदान योग्य पशु) के बारे में बात करता है। यदि कोई पशु बलिदान योग्य था लेकिन बाद में अपात्र हो गया, तो उसे अन्य सामान्य मांस की तरह खाया जा सकता है।

### **3. बखोर शोर (Bekhor Shor):**

- यह पद बलिदान के लिए समर्पित पशुओं के बारे में है जो अब बलिदान योग्य नहीं रहे।  
उन्हें छुड़ाया जा सकता है और फिर उनकी पवित्रता समाप्त हो जाती है।

### **4. चिज़कुनी (Chizkuni):**

- इस पद में परमेश्वर एक नई व्यवस्था देता है कि यदि कोई पशु बलिदान योग्य नहीं है, तो  
अब वह सामान्य मांस की तरह खाया जा सकता है।

### **5. हक्तव वेहकबाला (HaKtav VeHaKabalalah):**

- ”केवल” शब्द उन पशुओं को संदर्भित करता है जो बलिदान के लिए समर्पित थे लेकिन  
अब अपात्र हो गए हैं।

### **6. इब्र एज़रा (Ibn Ezra):**

- इस पद में हिरन और हरिण का उल्लेख किया गया है, क्योंकि वे बलिदान योग्य नहीं होते,  
लेकिन फिर भी उनका मांस खाया जा सकता है।

### **7. मालबिम (Malbim):**

- इस पद में उन पशुओं का उल्लेख है जो पहले बलिदान योग्य थे लेकिन अब वे स्थायी  
दोष के कारण सामान्य हो गए हैं।

### **8. मास्किल लेदाविद (Maskil LeDavid):**

- यह पद दर्शाता है कि एक बार यदि कोई पशु बलिदान से छूट जाता है, तो अब वह  
सामान्य पशु के रूप में खाया जा सकता है।

## 9. स्टेन्साल्ज़ (Steinsaltz):

- पहले इस्राएलियों को केवल तंबू (Tabernacle) में बलिदान किए गए पशु ही खाने की अनुमति थी, लेकिन कनान में बसने के बाद यह नियम बदल गया।
- 

## आज के मसीही चर्च में इस पद का महत्व

मसीही धर्म में, यह पद ईसा मसीह की बलिदानी मृत्यु और नए नियम की स्वतंत्रता को दर्शाने के लिए प्रयोग किया जाता है।

- बलिदान की आवश्यकता समाप्त - प्रभु यीशु मसीह के बलिदान के बाद, अब किसी भी बलिदान की आवश्यकता नहीं रही (इब्रानियों 10:10-12)।** इस पद से दिखता है कि पुराने नियम में भी कुछ चरणों में बलिदान की अनिवार्यता को समाप्त किया गया था।
  - आध्यात्मिक शुद्धता महत्वपूर्ण -** यह पद दर्शाता है कि बाहरी शुद्धता (ritual purity) इतनी महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि व्यक्ति का हृदय महत्वपूर्ण है (मत्ती 15:11)।
  - नए नियम में स्वतंत्रता -** प्रभु यीशु ने अपने अनुयायियों को यह सिखाया कि अब वे मूसा की व्यवस्था के कठोर नियमों के अधीन नहीं हैं (मरकुस 7:19)।
  - मांसाहार और ईसाई स्वतंत्रता -** पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 10:25-26 में कहा कि मसीही विश्वासियों को आत्मिक विवेक के अनुसार भोजन करना चाहिए।
- 

## निष्कर्ष

व्यवस्थाविवरण 12:15 यह सिखाता है कि परमेश्वर ने इस्राएलियों को बलिदान के नियमों में एक

नई स्वतंत्रता दी, जिससे वे सामान्य रूप से मांस खा सकें। विभिन्न रब्बियों की व्याख्याओं से यह स्पष्ट होता है कि यह पद मुख्य रूप से उन पशुओं के बारे में है जो कभी बलिदान योग्य थे लेकिन अब अपात्र हो गए हैं।

मसीही धर्म में, यह पद इस बात का प्रतीक है कि अब बाहरी नियमों से अधिक आत्मिक हृदय महत्वपूर्ण है, और इसा मसीह के बलिदान के बाद मसीहियों को स्वतंत्रता प्राप्त है।

P 87 Le.27:33 On the holiness of substituted animal offerings

### लेवितिकस 27:23 (Leviticus 27:23) - Hindi (ERV-HI)

“तो याजक को उसके लिये जुबली वर्ष तक का मूल्य आँक लेना होगा, और उस दिन उसे जो मूल्य आँका गया हो, उसी दिन वह उसे पवित्र स्थान को चुकाएगा।”

यह पद प्रभु प्रभु यहोवा को समर्पित किए गए खेत के छुटकारे (redemption) की प्रक्रिया के बारे में बताता है। अगर कोई व्यक्ति अपनी भूमि प्रभु प्रभु यहोवा को समर्पित करता है और फिर उसे छुड़ाना चाहता है, तो याजक (priest) यह गणना करेगा कि जुबली वर्ष (Jubilee Year) तक उसके कितने वर्ष बचे हैं और उसी के अनुसार उसकी कीमत तय करेगा।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ ?

1. मूल्यांकन की गणना (Calculation of Value)

- याजक यह तय करेगा कि जुबली वर्ष तक खेत की क्या कीमत होगी।
- जुबली वर्ष हर 50 साल में आता था, और उस वर्ष समर्पित खेत अपने मूल  
मालिक को लौट जाता था।
- मूल्यांकन खेत से प्राप्त होने वाले फसलों (crops) के उत्पादन के आधार पर  
किया जाता था।

## 2. □ □□□□□ □□□□□ □ □ □□□□□□□□ (Immediate Payment)

- पद कहता है "वह उसी दिन इसका भुगतान करेगा" (אָהָה מָיִם - "Bayom Hahu")।
- इसका मतलब यह है कि जब व्यक्ति छुटकारे के लिए आता है, उसे तुरंत  
भुगतान करना होगा, देरी नहीं कर सकता।

## 3. □ □□□□ □□□ (Ancestral Field) □□ □□□□□□□□ □□□ (Acquired Field)

- अगर भूमि पूर्वजों की दी हुई थी (ancestral field), तो उसका मूल्य फिक्स्ड था,  
और छुड़ाने के समय उसमें 20% (1/5) अतिरिक्त देना पड़ता था (लैव्यवस्था  
27:19)।
- अगर भूमि किसी और से खरीदी हुई थी (acquired field), तो छुटकारे की  
गणना अलग तरीके से होती थी और 1/5 भाग नहीं जोड़ा जाता था।

- HaKtav VeHaKabalah: 'Mikhsat' का अर्थ मूल्य का सारांश (sum of valuation) है, जो संपत्ति के मूल्यांकन के लिए दिया जाता है।
- Malbim: 'Mikhsat' का अर्थ "तैयारी" (preparation) भी है, यानी व्यक्ति को पहले से ही भुगतान के लिए तैयार रहना चाहिए।

## 2. पैतृक भूमि बनाम खरीदी गई भूमि

- R' Eliezer: उनका मानना था कि खरीदी गई भूमि का मूल्यांकन फिक्स्ड रेट पर होना चाहिए, जैसे कि पैतृक भूमि के लिए होता है।
- HaKtav VeHaKabalah: लेकिन अन्य रब्बियों ने R' Eliezer से असहमति जताई और कहा कि खरीदी गई भूमि का मूल्यांकन अलग तरीके से किया जाएगा।

## 3. देरी से भुगतान क्यों नहीं कर सकते?

- Haamek Davar: कहते हैं कि जब कोई चीज़ प्रभु प्रभु यहोवा को समर्पित (holy to the Lord) होती है, तो उसमें देरी नहीं हो सकती।
- Torah Temimah: अगर व्यक्ति को कोई वस्तु बेचने पर ज़्यादा पैसा मिल सकता है, तो भी उसे देरी नहीं करनी चाहिए।

## 4. अतिरिक्त 1/5 जोड़ने की ज़रूरत क्यों नहीं?

- Torah Temimah बताते हैं कि अधिग्रहीत (acquired) भूमि के छुटकारे में 1/5 अतिरिक्त जोड़ने की आवश्यकता नहीं थी, जबकि पैतृक भूमि के छुटकारे में इसे जोड़ा जाता था।



?

## 1. प्रभु यीशु मसीह द्वारा छुटकारा (Redemption by Christ)

- यह पद छुटकारे (redemption) की अवधारणा को दर्शाता है, जो नए नियम में प्रभु यीशु  
मसीह के बलिदान से पूरी हुई।
  - जैसे खेत छुड़ाने के लिए तुरंत भुगतान करना पड़ता था, वैसे ही प्रभु यीशु ने हमारे  
छुटकारे के लिए तुरंत अपना लहू बहाया।

## 2. कर्ज़ से मुक्ति (Freedom from Debt)

- यह पद दिखाता है कि छुटकारा संपूर्ण भुगतान से होता है।
  - नए नियम में, प्रभु यीशु ने हमारे पापों के लिए संपूर्ण भुगतान किया (कुलुस्सियों 2:14 - ”उसने विधियों का वह लेख मिटा डाला, जो हमारे विरोध में था”)।

### 3. जुबली वर्ष और आत्मिक मुक्ति

जुबली वर्ष एक ऐसा समय था जब गुलाम मुक्ति किए जाते थे और ऋण माफ कर दिए जाते थे।

**प्रभु यीशु ने स्वयं लका 4:18 में कहा:**

”प्रभु प्रभु यहोवा का आत्मा मुझ पर है, क्योंकि उसने मुझे गरीबों को शुभ समाचार सुनाने के लिए अभिषेक किया; उसने मुझे बंदियों को स्वतंत्र करने के लिए भेजा।”

यह दर्शाता है कि जैसे जुबली वर्ष में कर्ज़ और दासता से मुक्ति मिलती थी, वैसे ही प्रभु यीशु

हमें पाप और मृत्यु से मुक्ति दिलाते हैं।

#### 4. चर्च में वित्तीय और नैतिक ईमानदारी

- यह पद हमें सिखाता है कि जब हम किसी चीज़ को प्रभु प्रभु यहोवा के लिए समर्पित करें, तो उसमें ईमानदारी रखें।
  - चर्च में, तत्काल आज्ञाकारिता (Immediate Obedience) ज़रूरी है - जैसे प्रभु प्रभु यहोवा को समर्पित किए गए खेत को छुड़ाने के लिए तुरंत भुगतान करना पड़ता था, वैसे ही हमें अपनी प्रतिज्ञाओं (vows) को निभाना चाहिए।



□ □□□□□□□ 27:23 □□□□□□□ (redemption) □□ □□□□□□□ (faithfulness)  
□□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□  
□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□  
□□□□□□ □□, □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□  
□ □□□□□□□□□ □□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□  
□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□  
□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□, □□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□  
□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□

**"आरोन और उसके पुत्रों से यह कहो कि होमबलि की व्यवस्था यह है: होमबलि सारी रात भोर तक वेदी पर उसकी आग के साथ पड़ी रहे, और वेदी पर की आग सदा जलती रहे।"**

(Leviticus 6:9 - Hindi Bible ERV-HI)

---

## हिंदी में व्याख्या और समझ

यह पद याजकों (Aaron और उनके पुत्रों) को होमबलि (Burnt Offering) की विधि को लेकर निर्देश देता है। इसमें मुख्य बातें निम्नलिखित हैं:

### 1. होमबलि की रातभर वेदी पर जलती रहना

- "होमबलि सारी रात भोर तक वेदी पर उसकी आग के साथ पड़ी रहे"

  - इसका अर्थ यह है कि जब कोई व्यक्ति होमबलि चढ़ाता था, तो उसकी आग रातभर जलती रहनी चाहिए थी।
  - यह बलिदान पूरी तरह जलाकर प्रभु प्रभु यहोवा को समर्पित किया जाता था।
  - यह बलिदान पापों का प्रायश्चित्त करने और परमेश्वर से मेल बनाए रखने का प्रतीक था।

### 2. वेदी की आग का सदा जलते रहना

- "वेदी पर की आग सदा जलती रहे"

  - यह आज्ञा बताती है कि वेदी की आग को बुझने नहीं देना चाहिए था।
  - यह परमेश्वर की निरंतर उपस्थिति और इस्राएलियों की आराधना की निरंतरता को दर्शाता था।

- याजकों की यह ज़िम्मेदारी थी कि वे आग को जलाए रखें और इसे कभी बुझने न  
दें।
- 

## रब्बियों की व्याख्या और यहूदी दृष्टिकोण

### 1. रशी (Rashi) की व्याख्या

- रशी कहते हैं कि "होमबलि की आग रातभर जलती रहनी चाहिए थी और सुबह उसे  
साफ करने से पहले पूरी तरह जलकर समाप्त हो जानी चाहिए थी।"
- इसका अर्थ यह है कि कोई भी बचा हुआ अंश सुबह तक नहीं रहना चाहिए था।

### 2. अबरबनेल (Abarbanel) की व्याख्या

- अबरबनेल बताते हैं कि यह आग "प्रभु प्रभु यहोवा की उपस्थिति" का प्रतीक थी और  
इसका बुझना धार्मिक गिरावट को दर्शाता था।
- वेदी की आग को बुझने न देने का मतलब था कि इस्माएल की आत्मिक स्थिति हमेशा  
जीवित और सक्रिय रहनी चाहिए।

### 3. रंभम (Rambam - Maimonides) की व्याख्या

- रंभम बताते हैं कि होमबलि पूर्ण आत्मसमर्पण का प्रतीक था।
- इसका यह मतलब था कि जब कोई प्रभु प्रभु यहोवा को समर्पित होता है, तो उसे पूरी  
तरह अपने अहंकार और सांसारिक इच्छाओं को त्याग देना चाहिए।

### 4. मल्बीम (Malbim) की व्याख्या

- मल्बीम ने कहा कि ”वेदी की आग कभी नहीं बुझनी चाहिए” का मतलब है कि **आराधना में निरंतरता होनी चाहिए।**
  - **यह जीवन में आध्यात्मिक अनुशासन और नियमित प्रार्थना का महत्व दर्शाता है।**
- 

## उदाहरण और सीख

### 1. आग का बुझना = विश्वास की गिरावट

- आग बुझ जाती, तो इसका मतलब होता कि लोगों ने अपनी आराधना और **विश्वास में कमी कर दी।**
- यह हमें सिखाता है कि हमें अपने विश्वास को हमेशा जलाए रखना चाहिए, प्रार्थना और **आराधना के द्वारा।**

### 2. पूर्ण समर्पण का महत्व

- होमबलि को पूरी तरह जलाया जाता था, जो यह दर्शाता था कि परमेश्वर के प्रति समर्पण **अधूरा नहीं होना चाहिए।**
  - इसी तरह, मसीही विश्वासियों को भी अपने जीवन को पूरी तरह से परमेश्वर को समर्पित **करना चाहिए।**
- 

## मसीही चर्च में आज इसका क्या महत्व है?

### 1. मसीह का पूर्ण बलिदान

- प्रभु यीशु मसीह ने कूस पर पूर्ण बलिदान दिया, जो होमबलि का अंतिम और पूर्ण रूप है  
(इब्रानियों 10:10)।
- होमबलि निरंतर चढ़ाया जाता था, लेकिन प्रभु यीशु मसीह का बलिदान एक बार में ही हमेशा के लिए पर्याप्त हो गया।

## 2. आत्मिक आग को जलाए रखना

- वेदी की आग बुझने नहीं देनी थी, उसी प्रकार मसीहियों को अपने विश्वास की "आत्मिक आग" को बुझने नहीं देना चाहिए।
- इसका अर्थ है कि प्रार्थना, आराधना और परमेश्वर के वचन का अध्ययन निरंतर करते रहना चाहिए (1 धिस्सलुनीकियों 5:17)।

## 3. आत्मिक बलिदान देना

- रोमियों 12:1 कहता है कि हमें "अपने शरीर को जीवित बलिदान" के रूप में परमेश्वर को अर्पित करना चाहिए।
  - यह हमें सिखाता है कि हमें अपने जीवन को परमेश्वर की महिमा के लिए जीना चाहिए।
- 

## निष्कर्ष

- लेवितिकृस 6:9 हमें यह सिखाता है कि परमेश्वर की आराधना और बलिदान को गंभीरता से लेना चाहिए।
- यहूदी व्याख्याओं के अनुसार, यह पद पूर्ण समर्पण, निरंतर आराधना, और आत्मिक

**जागरूकता पर जोर देता है।**

- मसीही विश्वास में, यह पद हमें प्रभु यीशु मसीह के बलिदान की पूर्णता को समझने और आत्मिक जीवन को सक्रिय बनाए रखने के लिए प्रेरित करता है।

P 89 Ex.29:33 On Cohanim eating the meat of Sin and Guilt Offerings

### **निर्गमन 29:33 - बाइबल पद**

"और वे उन्हीं वस्तुओं को खाएँगे, जिनके द्वारा प्रायश्चित किया गया, जिससे उन्हें पवित्र और पाधस्थ किया जाए; परन्तु कोई पराया उन्हें न खाए, क्योंकि वे पवित्र हैं।" (निर्गमन 29:33)

---

### **हिंदी में व्याख्या**

1. "और वे उन्हीं वस्तुओं को खाएँगे..." - इसका क्या अर्थ है?

इस पद में प्रभु यहोवा ने आज्ञा दी कि हारून और उसके पुत्र याजकों को ही बलिदान की कुछ वस्तुएँ खाने का अधिकार होगा। यह भोजन केवल साधारण भोजन नहीं था, बल्कि इसका एक आध्यात्मिक और धार्मिक महत्व था।

(क) कौन खाएगा?

- राशी (Rashi) के अनुसार, "वे" शब्द हारून और उसके बेटों की ओर इशारा करता है, क्योंकि बलिदान उनके लिए निर्धारित किया गया था।
- Mizrachi कहते हैं कि आमतौर पर मेलबलि (peace offerings) में याजक उसे नहीं खाते, लेकिन यहाँ पर हारून और उनके पुत्र खाते हैं क्योंकि वे उसके "मालिक" (owners) होते हैं।
- Or HaChaim बताते हैं कि याजक इस बलिदान को याजक के रूप में नहीं बल्कि उसके "मालिक" के रूप में खाते हैं।

#### (ख) खाने के द्वारा प्रायश्चित (Atonement Through Eating)

- राशी और मालबिम (Malbim) कहते हैं कि इस भोजन का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य प्रायश्चित (atonement) कराना था।
- जब याजक बलिदान के कुछ भाग खाते थे, तो यह उन लोगों के लिए प्रायश्चित का एक तरीका था, जिन्होंने यह बलिदान चढ़ाया था।
- Talmud (Pesachim 59b) में भी कहा गया है कि जब याजक किसी पवित्र भोजन को खाते थे, तो यह उस बलिदान को स्वीकार किए जाने का संकेत था।

#### (ग) क्या प्रायश्चित हुआ?

- राशी के अनुसार, इस बलिदान के माध्यम से वे सभी गलतियाँ और अशुद्धियाँ, जो बलिदान लाने वाले में थीं, दूर हो जाती थीं।
- यह विशेष रूप से याजकों के अभिषेक और उनके पवित्र होने से संबंधित था।

## 2. इस खाने का उद्देश्य क्या था?

### (क) अभिषेक और पवित्रता

- राशी कहते हैं कि यह बलिदान हारून और उसके पुत्रों को याजक के रूप में स्थापित करने और उन्हें पवित्र करने का कार्य करता था।
- सिफतेई चखामिम (Siftei Chakhamim) कहते हैं कि याजक खाने से नहीं, बल्कि इन बलिदानों को विधि अनुसार करने से ही अभिषेकित और पवित्र होते हैं।

### (ख) सहायता और आशीर्वाद

- Haamek Davar के अनुसार, इस बलिदान को खाने से याजकों को आत्मिक और शारीरिक बल प्राप्त होता था, जिससे वे सेवा में कमज़ोर नहीं पड़ते थे।
  - Mizrachi ने कहा कि यह *melu'im* (अभिषेक बलिदान) उनके याजक-पद की स्थापना और पवित्रता को बनाए रखने के लिए आवश्यक था।
- 

## 3. "पराया न खाए" - अजनबी के लिए मनाही क्यों?

### (क) पराया कौन है?

- Ibn Ezra और Reggio कहते हैं कि "पराया" से तात्पर्य उन लोगों से है जो हारून के वंशज नहीं हैं।
- यह विशेष भोजन केवल याजकों के लिए आरक्षित था।

### (ख) क्यों मनाही थी?

- राशी कहते हैं कि यह भोजन बहुत उच्च स्तर पर पवित्र (Holy of Holies) था, इसलिए केवल याजक ही इसे खा सकते थे।

- Mizrachi बताते हैं कि यह नियम केवल इस बलिदान के लिए नहीं बल्कि उन सभी बलिदानों पर लागू होता है जो "पवित्रतम्" श्रेणी में आते हैं।
- 

## 4. आज के मसीही चर्च में इसका क्या महत्व है?

### (क) प्रभु यीशु मसीह में इसकी पूर्ति

- पुराने नियम में याजक बलिदान को खाते थे और यह प्रायश्चित का हिस्सा था।
- नए नियम में, प्रभु यीशु मसीह स्वयं "परम याजक" (Hebrews 4:14) और "बलिदान का मेघा" (John 1:29) हैं।
- मसीही विश्वास में, प्रभु भोज (Lord's Supper) को इस संदर्भ में देखा जाता है कि प्रभु यीशु ने अपने शरीर और लहू को प्रायश्चित के रूप में दिया, और जो लोग उसमें विश्वास करते हैं वे उसमें सहभागी होते हैं (Matthew 26:26-28)।

### (ख) बलिदान के खाने का आध्यात्मिक महत्व

- जैसे हारून और उसके पुत्रों को याजक होने के कारण बलिदान खाने की आज्ञा दी गई थी, वैसे ही नए नियम में, सभी मसीही विश्वासियों को "राजकीय याजक" (1 Peter 2:9) कहा गया है।
- प्रभु भोज (Holy Communion) के दौरान, मसीही विश्वासियों को प्रतीकात्मक रूप से मसीह के बलिदान में सहभागी होने का अवसर मिलता है।

### (ग) कौन भाग ले सकता है?

- जैसे पुराने नियम में कोई "पराया" उस पवित्र भोजन को नहीं खा सकता था, वैसे ही नए

नियम में प्रभु भोज केवल उन लोगों के लिए है जो विश्वास के साथ इसमें भाग लेते हैं (1

**Corinthians 11:27-29)।**

---

## निष्कर्ष

- पुराने नियम में, याजकों के लिए बलिदान को खाना एक पवित्र कार्य था, जिससे उनके लिए और बलिदान लाने वालों के लिए प्रायश्चित होता था।
- बलिदान का भोजन केवल याजकों के लिए आरक्षित था, क्योंकि यह अत्यधिक पवित्र था और इसका उद्देश्य उन्हें अभिषेकित और पवित्र करना था।
- नए नियम में, प्रभु यीशु मसीह परम याजक और बलिदान दोनों हैं, और मसीही विश्वासियों के लिए प्रभु भोज इस सत्य की याद दिलाता है।
- आधुनिक मसीही चर्च में, यह पद हमें प्रभु भोज और आत्मिक बलिदान में सहभागी होने के महत्व को समझने में मदद करता है।

## उदाहरण

- जैसे पुराने नियम में केवल याजकों को यह भोजन खाने की अनुमति थी, वैसे ही प्रभु भोज को आदर और विश्वास के साथ लिया जाना चाहिए।
- पुराने नियम में याजक बलिदान खाकर प्रायश्चित का हिस्सा बनते थे, नए नियम में, विश्वासियों को प्रभु प्रभु यीशु में पूर्ण प्रायश्चित मिलता है।

इस प्रकार, निर्गमन 29:33 पुराने नियम के बलिदानों की गहराई को दर्शाता है, और यह हमें

**मसीह के बलिदान को बेहतर तरीके से समझने में मदद करता है।**

P 90 Le.7:19 Burn Consecrated Offerings that've become tameh/unclean

□ □□□□ □□:

### **लैब्यव्यवस्था 7:19**

**"जो मांस किसी अशुद्ध वस्तु को छू ले वह नहीं खाया जाए, उसे आग में जला दिया जाए। और जो मांस शुद्ध व्यक्ति खा सकता है, वह वह ही खाए।"**

---

□ □□□□ □□ □□□□□:

यह पद बलि के मांस की पवित्रता और अशुद्धता से संबंधित है। इसमें दो मुख्य नियम दिए गए हैं:

#### **1. अशुद्ध वस्तु को छूने वाला मांस:**

- **यदि कोई बलि का मांस किसी अशुद्ध वस्तु को छू लेता है, तो उसे खाना निषिद्ध है और उसे जलाकर नष्ट करना आवश्यक है।**
- **इसका कारण यह है कि अशुद्धता पवित्रता को दूषित कर सकती है।**

#### **2. शुद्ध व्यक्ति ही मांस खा सकता है:**

- **केवल वे लोग जो शारीरिक और धार्मिक रूप से शुद्ध हैं, वे ही इस बलि के मांस को खा सकते हैं।**
- **यदि कोई अशुद्ध व्यक्ति इस मांस को खा लेता है, तो वह परमेश्वर के**

## विरुद्ध अपराध करता है।

इस व्यवस्था का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि बलिदानों का पालन पूर्ण शुद्धता और पवित्रता के साथ किया जाए।

---

□ इन सभी विवरणों में इन सभी विवरणों में इन सभी विवरणों में:

1 इन सभी विवरणों में इन सभी विवरणों में:

□ **मालबीमः**

- यहाँ "अशुद्ध वस्तु" का तात्पर्य सभी प्रकार की अशुद्धताओं से है—चाहे वे हल्की हों या गंभीर।
- मांस यदि अशुद्धता को छू ले तो उसे जलाना अनिवार्य है।
- यहूदी परंपरा के अनुसार, कोई वस्तु दो प्रकार से अशुद्ध हो सकती है—(1) सीधे संपर्क में आने से और (2) उसे उठाने या ले जाने से।

□ **तोरा तेमीमा:**

इस पद से यह सिद्ध होता है कि बलि के मांस को यदि दूसरी या तीसरी श्रेणी की अशुद्धता (secondary impurity) भी छू ले, तो भी वह निषिद्ध हो जाता है।

□ **रब्बी हिर्शः**

यदि कोई व्यक्ति स्वयं अशुद्ध है और पवित्र बलिदान का मांस खा ले, तो यह अधिक गंभीर पाप है क्योंकि वह अशुद्धता को परमेश्वर के पवित्र कार्य में सम्मिलित कर रहा है।

□ इनकारणः

- यदि कोई व्यक्ति शव को छूकर अशुद्ध हो गया है और उसने स्रान नहीं किया है, तो वह बलिदान का मांस नहीं खा सकता।
- यदि बलिदान का मांस गलती से किसी मरे हुए जीव के संपर्क में आ गया, तो उसे जलाना होगा।

2 □ इनकारण इनकारण इनकारण इनकारण इनकारण

□ रशबामः

”हर शुद्ध व्यक्ति खा सकता है“ का तात्पर्य है कि बलि का मांस केवल उन्हीं को दिया जा सकता है जो अशुद्ध न हों।

यह भी स्पष्ट होता है कि बलि के मांस को केवल बलिदान करने वाले स्वामी ही नहीं, बल्कि कोई भी शुद्ध व्यक्ति खा सकता है।

□ हाकतव वेहकबाला:

- ”हर शुद्ध व्यक्ति“ से यह निष्कर्ष निकलता है कि बलिदान का मांस केवल याजकों के लिए नहीं, बल्कि जिसे भी याजक आमंत्रित करें, वह इसे खा सकता है।

□ मालबीमः

- बलिदान का मांस खाने की अनुमति केवल उन्हीं को है जो इसे पवित्र भावना से स्वीकार करें।

□ इनकारणः

यदि किसी व्यक्ति ने टोरा की सभी शुद्धता की विधियों का पालन किया है, तो वह शांति

**बलिदान (Peace Offering) का मांस खा सकता है।**

यदि कोई व्यक्ति अशुद्धता की स्थिति में है, जैसे कि वह कुछ रोगी है, तो वह इसे नहीं खा सकता।

3 □ □□□□ □□□ □ □ □□□□□□□□

□ **राशी:**

यदि बलिदान का एक भाग मंदिर के बाहर गिर जाता है और अशुद्ध हो जाता है, तो उसे जलाना होगा।

□ **सिफरा:**

- यदि बलिदान का कोई हिस्सा ऐसा स्थान छोड़ देता है जहाँ उसे खाना अनुमत था, तो वह निषिद्ध हो जाता है।

□ **तोरा तेमीमा:**

- **बलिदान का मांस खाने से पहले खून की छिड़काव (sprinkling of blood) आवश्यक है।**

□ □□□□ □□□□□□□ □□ □ □□□ □□□□ □□□□ □□?

1 □ □□□□ □□□ □□□ □ □ □□□□□ □ □ □□□□□□□

- यह नियम इस्राएलियों के बलिदानों से संबंधित था, लेकिन मसीही विश्वास में प्रभु यीशु मसीह को अंतिम बलिदान (Final Sacrifice) माना जाता है।
- इब्रानियों 9:13-14 में लिखा है कि प्रभु यीशु का लहू पुराने नियम के पश्च बलियों से श्रेष्ठ है क्योंकि वह आत्मा के द्वारा हमें पूरी तरह शुद्ध करता है।

2 □ □□□□□ □□□□□□ □ □ □□□□□□□

प्रभु यीशु ने कहा, "जो कुछ मुख में जाता है, वह मनुष्य को अशुद्ध नहीं करता, परन्तु जो कुछ मुख से निकलता है, वही मनुष्य को अशुद्ध करता है।" (मत्ती 15:11)

इसका अर्थ यह हुआ कि बाहरी नियमों से अधिक आत्मिक शुद्धता महत्वपूर्ण है।

3 □ □□□□ □□ (Holy Communion) □ □ □□□□□□

- प्रभु भोज (Lord's Supper) में भाग लेने से पहले आत्मिक शुद्धता आवश्यक है।
  - 1 कुरिन्थियों 11:27-29 में लिखा है कि यदि कोई प्रभु की भोज में अशुद्ध मन से भाग लेता है, तो वह दोषी ठहराया जाता है।
- 

□ □□□□□□:

1. लैब्यव्यवस्था 7:19 बलि के मांस की पवित्रता और अशुद्धता को नियंत्रित करता है।
  2. यह नियम सुनिश्चित करता है कि केवल शुद्ध व्यक्ति ही बलिदान के मांस को खा सकें।
  3. रब्बियों ने इस पद से कई विस्तृत सिद्धांत निकाले, जैसे कि बलिदान केवल उन्हीं को दिया जा सकता है जो पूरी तरह से शुद्ध हों।
  4. मसीही परिप्रेक्ष्य में, यह नियम आत्मिक पवित्रता की ओर संकेत करता है और प्रभु यीशु मसीह को अंतिम बलिदान माना जाता है।
  5. आज के मसीही विश्वास में प्रभु भोज में भाग लेने से पहले आत्मिक शुद्धता बनाए रखना आवश्यक माना जाता है।
- 

आत्मिक शुद्धता और प्रभु भोज (Lord's Supper) में भाग लेना

प्रभु भोज (Lord's Supper) मसीही विश्वासियों के लिए एक पवित्र विधि (ordinance) है, जिसमें यीशु मसीह के बलिदान और अनुग्रह को स्मरण किया जाता है। लेकिन इसमें भाग लेने से पहले आत्मिक शुद्धता आवश्यक है। यह आत्मिक शुद्धता कैसे आती है, इसे हम बाइबल के आधार पर समझ सकते हैं।

---

## 1. बाइबल में आत्मिक शुद्धता की आवश्यकता

1 कोरिन्थियों 11:27-29 कहता है:

"इसलिए जो कोई अनुचित रीति से प्रभु की रोटी खाए, या उसके कटोरे में से पीए, वह प्रभु की देह और लहू का अपराधी ठहरेगा। इसलिये मनुष्य अपने आप को जांच ले, और इसी रीति से उस रोटी में से खाए, और उस कटोरे में से पीए। क्योंकि जो बिना पहचाने प्रभु की देह खाता और पीता है, वह अपने लिये दण्ड खाता और पीता है।"

इसका अर्थ यह है कि यदि कोई व्यक्ति पाप में जीवन व्यतीत कर रहा है और फिर भी प्रभु भोज में भाग लेता है, तो वह अपने ऊपर दोष लाता है। इसलिए आत्म-जांच (self-examination) और पश्चाताप (repentance) बहुत ज़रूरी है।

---

## 2. आत्मिक शुद्धता कैसे आती है?

### (i) मसीह के लहू के द्वारा शुद्धि (Forgiveness by Christ's Blood)

1 पूहन्ना 1:7 कहता है:

**"यदि हम ज्योति में चलें, जैसे कि वह ज्योति में है, तो हमारी आपस में संगति है और उसके पुत्र यीशु का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है।"**

→ यीशु मसीह का लहू ही पापों को धोने और आत्मिक शुद्धता देने का एकमात्र माध्यम है। प्रभु भोज में भाग लेने से पहले हमें अपने पापों का अंगीकार (confession) करना चाहिए और उसके लहू से क्षमा माँगनी चाहिए।

---

### **(iii) पश्चाताप और अंगीकार (Repentance & Confession of Sins)**

**1 यूहन्ना 1:9 कहता है:**

**"यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह, जो विश्वासयोग्य और धर्मी है, हमें पापों को क्षमा करने, और सारी अधर्मता से शुद्ध करने में सक्षम है।"**

→ □□□□□ □□□ □ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□  
□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□

---

### **(iii) आत्मा से संचालित जीवन (Spirit-Led Life)**

**गलातियों 5:16 कहता है:**

**"मैं कहता हूँ, आत्मा के अनुसार चलो, तो शरीर की अभिलाषाओं को पूरा न करोगे।"**

→ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□ □□ □□□□□  
□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□□□, □□□□ □□ □□□  
□□ □□□ □□ □□□□□

---

#### (iv) आत्म-जांच और क्षमा (Self-Examination & Reconciliation)

**मत्ती 5:23-24 में यीशु ने कहा:**

**"इसलिए यदि तू वेदी पर अपनी भेंट चढ़ाने जा रहा हो और वहाँ तुझे स्मरण आए कि तेरे**

**भाई के मन में तेरे विरुद्ध कुछ है, तो अपनी भेंट वहीं वेदी के आगे छोड़कर पहले जाकर**

**अपने भाई से मेल कर, तब आकर अपनी भेंट चढ़ा।"**

→ प्रभु भोज में भाग लेने से पहले हमें दूसरों को क्षमा करना और उनसे मेल-मिलाप करना चाहिए।

### 3. प्रभु भोज और आत्मिक शुद्धता का महत्व आज के चर्च में

आज मसीही चर्च में प्रभु भोज एक महत्वपूर्ण विधि है, जिसे विभिन्न संप्रदाय (denominations) अलग-अलग तरीकों से मनाते हैं, लेकिन आत्मिक शुद्धता का सिद्धांत सभी में एक समान रहता है।

1. **कैथोलिक चर्च - प्रभु भोज (Eucharist)** में भाग लेने से पहले पाप स्वीकार (confession) करने पर ज़ोर दिया जाता है।
2. **प्रोटेस्टेंट चर्च - लोग** आत्म-जांच और प्रार्थना द्वारा अपने मन को तैयार करते हैं।
3. **पेंटेकोस्टल और करिशमाई चर्च - आत्मा की अगुवाई** में पवित्रता और आत्म-जांच पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

→ □□ □□□ □□□□□□□ □□□ □□ □□□ □□□□□□ □□—प्रभु भोज केवल उन्हीं के  
लिए है जो सच्चे मन से प्रभु के प्रति समर्पित हैं और आत्मिक रूप से शुद्ध होने की इच्छा रखते  
हैं।

---

## 4. निष्कर्ष

### आत्मिक शुद्धता आवश्यक क्यों है?

- क्योंकि बिना शुद्धि के यदि कोई प्रभु भोज में भाग लेता है, तो वह आत्मिक दोष का भागी बनता है (1 कोरिन्थियों 11:29)।
- यीशु मसीह का लहू ही हमें पापों से शुद्ध करता है (1 यूहन्ना 1:7)।
- पश्चाताप, क्षमा, आत्म-जांच, और मेल-मिलाप के बिना प्रभु भोज लेना अनुचित है।

### आत्मिक शुद्धता कैसे प्राप्त करें?

✓□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ (1 □□□□□□ 1:9)□  
 ✓□□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□ (□□□□□□□□ □□ □□□ 3:19)□  
 ✓□□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□-□□□□□ □□□ (□□□□ 5:23-24)□  
 ✓□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□□  
 (□□□□□□ 5:16)□

→ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□  
 □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□, □□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□□  
 □□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□□□

P 91 Le.7:17 Burn remnant of Consecrated Offerings not eaten in time

□ □□□□ □□: □□□ 7:17

**"और जो कुछ उस यज्ञ के मांस का तीसरे दिन तक बचा रहे, वह आग में जला दिया जाए।"**

---

## □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ (Burning of Leftover Sacrificial Meat)

### 1. समय-सीमा (Timing of Burning)

- बलिदान के मांस को केवल बलिदान के दिन और उसके अगले दिन तक ही खाया जा सकता था।
- तीसरे दिन तक जो मांस बचा रहे, उसे जला देना आवश्यक था। इसका अर्थ यह नहीं था कि कोई व्यक्ति रात के समय उसे खा सकता था; बल्कि, उसे अगले दिन सुबह से पहले ही जला देना था।

### 2. जलाने का समय (Daytime Burning)

- इस नियम के अनुसार, मांस को रात में नहीं जलाया जा सकता था; केवल दिन में जलाना आवश्यक था।
- यह नियम अन्य बलिदानों पर भी लागू होता है कि सभी पवित्र बलिदानों को दिन में जलाया जाए।

### 3. किन चीजों को जलाना है?

- "मांस" (basar) शब्द स्पष्ट करता है कि केवल बलिदान का मांस जलाया जाना चाहिए।
- हड्डियाँ, नसें, सींग, खुर, और दूसरी चीजें इसमें शामिल नहीं थीं।

### 4. किन चीजों को बाहर रखा गया है?

"zevach" शब्द यह स्पष्ट करता है कि यदि कोई भ्रूण (foetus) या गर्भनाल (placenta)

बलिदान में पाया जाए, तो उसे बलिदान योग्य नहीं माना जाएगा।

---

## □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ (Rabbinical Interpretations and Examples)

### 1. तीसरे दिन जलाने की अनिवार्यता

#### □ Chizkuni:

- उन्होंने बताया कि बाइबल में "तीसरे दिन जलाया जाए" यह अतिरिक्त शब्द यह सिखाने के लिए हैं कि किसी भी बलिदान का बचा हुआ मांस तीसरे दिन ही जलाना अनिवार्य है।

#### □ Paaneach Raza:

- उन्होंने यह व्याख्या की कि बलिदान के मांस को रात के समय जलाना वर्जित था, चाहे वह तीसरे दिन की रात हो या चौथे दिन की।
- ज़रूरी था कि मांस को तीसरे दिन ही जला दिया जाए, ना कि इसे अगले दिन तक टाला जाए।

#### □ Torah Temimah (Zevachim 56b से उद्धरण)

- इसने पुष्ट की कि बलिदान का बचा हुआ मांस केवल दिन में जलाया जाना चाहिए, रात में नहीं।

### 2. कहाँ जलाया जाए?

**Ralbag Beur HaMilot:**

यदि विशेष स्थान निर्दिष्ट नहीं किया गया है, तो बलिदान का मांस वहीं जलाया जाए जहां वह खाया जाता था।

### 3. अतिरिक्त शब्दों का अर्थ (Superfluous Wording)

**Malbim:**

- उन्होंने यह समझाया कि बाइबल "m'basar" ("मांस का") शब्द का उपयोग कर रही है, ना कि "min hazevach" ("बलिदान का")।
- इसका उद्देश्य यह बताना है कि केवल मांस ही जलाने योग्य है, बाकी हिस्से नहीं।
- दो बार "zevach" शब्द का प्रयोग यह स्पष्ट करने के लिए किया गया है कि कोई गर्भ या गर्भनाल बलिदान का हिस्सा नहीं मानी जाएगी।

### 4. यदि तीसरे दिन न जलाया जाए?

**Reggio:**

- यदि किसी कारण से तीसरे दिन बलिदान का बचा हुआ मांस नहीं जलाया गया, तब भी इसे जलाया जाना चाहिए, लेकिन इसे भोजन में उपयोग नहीं किया जा सकता।



### (Relevance in Christianity Today)

#### 1. यीशु मसीह ही अंतिम बलिदान हैं

- नए नियम में, यीशु मसीह को "परमेश्वर का मेघा" कहा गया है (यूहन्ना 1:29)।

- पुराने नियम के बलिदान प्रायश्चित (atonement) के लिए थे, लेकिन यीशु मसीह का बलिदान सभी पापों के लिए अंतिम और पूर्ण बलिदान बन गया (इब्रानियों 10:10-12)।

## 2□ प्रभु भोज (Lord's Supper) और बलिदान का संबंध

- प्रभु भोज में यीशु का शरीर और लहू स्मरण किया जाता है।
- पुराने नियम में बलिदान के बचे हुए मांस को तीसरे दिन तक नष्ट करना पड़ता था, जिससे यह सिद्ध होता है कि बलिदान का मांस अधिक समय तक नहीं रखा जा सकता।
- नए नियम में भी यीशु मसीह ने कहा:

**"यह मेरा शरीर है, जो तुम्हारे लिए दिया गया है; इसे मेरी स्मृति में किया करो।"**

(लूका 22:19)

## 3□ आध्यात्मिक शिक्षा (Spiritual Lessons)

- पुराने नियम का यह नियम हमें सिखाता है कि परमेश्वर के आदेशों का पालन तुरंत किया जाना चाहिए, उन्हें टाला नहीं जाना चाहिए।
- जैसे कि बलिदान के मांस को तीसरे दिन तक नहीं रखना चाहिए था, वैसे ही हमें भी परमेश्वर की दी हुई आत्मिक आशीषों और अवसरों को व्यर्थ नहीं करना चाहिए।

## 4□ पवित्रता और अनुशासन (Holiness & Discipline)

- यह नियम सिखाता है कि हमें परमेश्वर की चीजों का अनादर नहीं करना चाहिए।
- मसीही विश्वास में भी हमें परमेश्वर की दी हुई चीज़ों को संभाल कर और सही समय

## पर इस्तेमाल करना चाहिए।

---

### □ □□□□□□ (Conclusion)

- ✓ पुराने नियम में बलिदान का मांस तीसरे दिन तक जलाया जाना अनिवार्य था, □ □ □ □
- □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □
- ✓ रब्बियों ने समझाया कि यह नियम हमें सिखाता है कि परमेश्वर की आज्ञाओं का तुरंत पालन करना चाहिए और बलिदान की पवित्रता बनाए रखनी चाहिए □
- ✓ आज के मसीही चर्च में, यह नियम हमें यह सिखाता है कि यीशु मसीह ही अंतिम और सिद्ध बलिदान हैं, और हमें उनकी शिक्षाओं के अनुसार जीना चाहिए □
- ✓ आध्यात्मिक रूप से, यह हमें पवित्रता, अनुशासन और समय पर परमेश्वर की योजना का पालन करने की शिक्षा देता है।

□ □□□□□□□ □□□ □□□ □□□□□□□ □ □ □□□□ □ □ □□□ □□□  
 □□□□□□□□ □□□ □□□ □ □ □□ □□! □□□□

### VOWS

P 92 Nu.6:5 The Nazir letting his hair grow during his separation

**Nazirite के बालों से संबंधित व्यवस्था (गिनती 6:5)**

**बाइबल पद**

□ गिनती 6:5 - "जब तक उसके अलग रहने के दिन पूरे न हो जाएँ, तब तक अपने सिर पर

**उस्तरा न फिरने दे। जब तक उसके अलग रहने के दिन पूरे न हों, तब तक वह पवित्र रहेगा**

**और अपने सिर के बाल बढ़ने देगा।"**

---

## हिंदी में समझाइए

जब कोई व्यक्ति **Nazirite** (नाज़ीर) का व्रत लेता था, तो उसे तीन प्रमुख नियमों का पालन करना पड़ता था:

1. **मदिरा और अंगूर से बनी किसी भी चीज़ का सेवन न करना।**
2. **मृत शरीर को न छूना, चाहे वह कोई भी हो।**
3. **अपने बालों को न काटना।**

इसका मतलब यह था कि **नाज़ीर** की पवित्रता का एक चिन्ह उसके सिर के बढ़ते हुए बाल होते थे। जब तक उसकी मन्त्रत पूरी न होती, तब तक उसे अपने बालों को उस्तरे या किसी अन्य माध्यम से कटवाने की अनुमति नहीं थी।

---

## रबियों की व्याख्या

### □ गिद्देल पेरा (Giddel Pera) का अर्थ

- "गिद्देल पेरा" का अर्थ है बालों को स्वतंत्र रूप से बढ़ने देना।
- राशी (Rashi) कहते हैं कि यदि बाल 30 दिनों तक न बढ़ें, तो उसे "पेरा" नहीं कहा जा सकता। इसलिए, **नाज़ीर** की न्यूनतम अवधि 30 दिन मानी जाती है।

### □ बाल न काटने का आध्यात्मिक अर्थ

- अल्लोख (Alshekh) के अनुसार, बाल न कटवाना अहंकार को दबाने का प्रतीक है।
- यह उदासी और आत्मनिरीक्षण को बढ़ावा देने के लिए होता है, ताकि व्यक्ति यहोवा का भय रखे और सच्चे आराधन में लगा रहे।

□ शारीरिक सुखों से दूर रहना

- सफ़ोर्नो (Sforno) कहते हैं कि बाल न कटवाने से व्यक्ति सांसारिक सुखों को छोड़ देता है और खुद को अलग रखता है।
- रव हिर्श (Rav Hirsch) इसे सामाजिक गतिविधियों से दूरी बनाना और आंतरिक आत्मा पर ध्यान केंद्रित करना मानते हैं।

□ अगर नाज़ीर ने बाल कटवा लिए?

- तोरा तेमीमा (Torah Temimah) के अनुसार, अगर नाज़ीर ने गलती से बाल कटवा लिए, तो उसे अपना द्रवत फिर से शुरू करना पड़ता था।

## अन्य मतभेद और विशेषताएँ

- "कदोष यीहिये (Kadosh Yihiyeh)" का अर्थ -  
राशी और सिफ्ते चखामिम कहते हैं कि यहाँ "पवित्र" शब्द नाज़ीर के बालों को संदर्भित करता है।
- मिनहात शाइ (Minchat Shai) बताते हैं कि इस पद में "कदोष" शब्द छोटे वाव (ו) के बिना लिखा गया है, जो एक विशेष व्याकरणिक संकेत है।

## आज के मसीही चर्च में इसका क्या महत्व है?

### 1. यीशु मसीह और नाज़ीर व्रत

- कई लोग मानते हैं कि यीशु मसीह ने नाज़ीर का व्रत नहीं रखा था, क्योंकि उन्होंने मदिरा पी और मृतकों को छुकर उन्हें जिलाया।
- हालाँकि, कुछ विद्वान मानते हैं कि यीशु एक अलग प्रकार के "पवित्र" व्यक्ति थे, जिन्हें नाज़ीर नियमों का पालन करने की ज़रूरत नहीं थी।

### 2. आधुनिक मसीही जीवन में

- आज, अधिकांश चर्च नाज़ीर व्रत को एक सांकेतिक और आत्मिक प्रतिबद्धता मानते हैं।
- कई लोग व्रत और त्याग को पवित्रता का एक रूप मानते हैं, जैसे कि मदिरा से दूर रहना या बालों को बढ़ाना।

### 3. समर्पण और नाज़ीर नियम

- कुछ मसीही लोग व्यक्तिगत स्तर पर समर्पण के प्रतीक के रूप में बाल न काटने या अन्य त्याग करने का प्रण लेते हैं।
- यह मसीही जीवन में संयम, प्रार्थना, और परमेश्वर के प्रति समर्पण को दर्शाने का एक तरीका हो सकता है।

- गिनती 6:5 में नाज़ीर के बाल बढ़ाने के नियम का उल्लेख है, जो पवित्रता, समर्पण, और सांसारिक इच्छाओं से दूर रहने का प्रतीक है।
- रब्बियों के अनुसार, यह नियम आत्म-संयम और आत्मनिरीक्षण में सहायता करता है।
- आज के मसीही चर्च में, इस सिद्धांत को आत्मिक समर्पण और आत्म-नियंत्रण के रूप में देखा जाता है।

P 93 Nu.6:18 Nazir completing vow shaves his head & brings sacrifice

### **बाइबल पद:**

#### **गिनती 6:18**

"तब नाज़ीर अपने अभिषेक किए हुए सिर को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर मुँडवाएगा,  
और उस बाल को जो उसके अभिषेक किए हुए सिर का है, ले जाकर मेलबलि की आग में  
डालेगा।"

---

### **हिंदी में समझाइएः**

गिनती 6:18 उस रीति की व्याख्या करता है जो किसी व्यक्ति के नाज़ीर (Nazirite) बनने की मियाद पूरी होने पर करनी थी। इस प्रक्रिया में निम्नलिखित महत्वपूर्ण कदम थे:

1. **सिर मुँडवाना:**

- जब नाज़ीर अपने व्रत (Nazirite vow) की अवधि पूरी कर लेता था, तो उसे अपने सिर के बाल को मिलापवाले तम्बू (Tabernacle) के द्वार पर मुंडवाना होता था।
- यह एक सार्वजनिक कृत्य था, जिससे उसकी नाज़ीरता समाप्त हो जाती थी।

## 2. बाल जलाना:

- मुँडवाए गए बालों को मेलबलि (peace offering) के नीचे जलाया जाता था।
  - इसका अर्थ था कि नाज़ीर के बाल भी परमेश्वर को अर्पित किए गए और उन्हें किसी अन्य सांसारिक उपयोग में नहीं लाया जा सकता था।
- 

## रब्बियों की व्याख्याएँ:

### 1. राशी (Rashi)

- वह कहते हैं कि बाल मुंडवाने की जगह मिलापवाले तम्बू के सामने होनी चाहिए थी, लेकिन यह यज्ञ वेदी के सामने करना अपमानजनक होता।
- इसलिए, बाल तब मुँडवाए जाते थे जब मेलबलि की कुर्बानी दी जा चुकी होती थी।

### 2. मालबिम (Malbim)

- वह बताते हैं कि नाज़ीर को मेलबलि के बलिदान के समय तम्बू के द्वार पर खड़ा रहना होता था, फिर वह अपने बालों को उसी स्थान पर मुंडवाता था जहाँ बलियाँ

पकाई जाती थीं।

### 3. रब्बी शिमोन शेझुरी (Rabbi Shimon Shezuri)

- उनका मत था कि केवल पुरुष नाज़ीर को ही तम्बू के द्वार पर सिर मुंडवाने की अनुमति थी, लेकिन महिलाओं को नहीं, क्योंकि यह अशोभनीय समझा जाता था।

### 4. तलमूद (Talmud)

- इसमें लिखा है कि नाज़ीर के बालों पर बलि का रस (gravy) डालकर फिर उन्हें आग में जलाया जाता था।
- यह दर्शाता है कि नाज़ीर का पूरा जीवन और उसका समर्पण परमेश्वर को अर्पित था।

### 5. मिजराची (Mizrachi)

- वह तर्क देते हैं कि चूंकि मेलबलियाँ आम लोगों द्वारा खाई जाती थीं, इसलिए कुछ लोग अपने घरों में पकाते थे, और इस रीति को वहीं करना होता था।
- 

**आज के मसीही चर्च में इसका क्या महत्व है?**

#### 1. समर्पण और पवित्रता:

- मसीही जीवन में, यह व्रत एक प्रतीक है कि हमें पवित्रता और परमेश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण के साथ जीना चाहिए।

- नाज़ीर का व्रत पूरा होने पर बाल जलाना दर्शाता है कि हम अपने संपूर्ण जीवन को परमेश्वर की आराधना में लगा सकते हैं।

## 2. प्रभु यीशु मसीह और नाज़ीरता:

- यद्यपि प्रभु यीशु स्वयं नाज़ीर नहीं थे, कुछ विद्वानों का मानना है कि युहन्ना बपतिस्मा देने वाला (John the Baptist) नाज़ीर था।
- नाज़ीर का व्रत प्रभु यीशु मसीह के बलिदान की ओर संकेत करता है, क्योंकि उसने स्वयं को हमारे उद्धार के लिए पूर्ण रूप से अर्पित कर दिया।

## 3. आत्मिक नाज़ीरता:

- आज के समय में, कोई शारीरिक रूप से नाज़ीर व्रत नहीं लेता, लेकिन मसीही लोग आत्मिक रूप से परमेश्वर के लिए समर्पित होने की शिक्षा ले सकते हैं।
- जैसे नाज़ीर अपने सिर को मुँडवाकर और बालों को जलाकर परमेश्वर को समर्पण करता था, वैसे ही मसीही विश्वासी अपने पापमय जीवन को छोड़कर मसीह में नया जीवन प्राप्त कर सकते हैं।

### निष्कर्षः

गिनती 6:18 न केवल नाज़ीर व्रत की समाप्ति की प्रक्रिया को समझाता है, बल्कि यह हमें

परमेश्वर को पूर्ण समर्पण की भी शिक्षा देता है।

मसीही विश्वास में, यह रीति प्रभु यीशु मसीह के पूर्ण बलिदान और हमारी आत्मिक शुद्धता की ओर इशारा करती है।

## उदाहरण:

आज यदि कोई व्यक्ति मसीही जीवन में पूर्णता और पवित्रता की ओर बढ़ना चाहता है, तो वह इस आयत से सीख सकता है कि उसे अपने पुराने जीवन को पूरी तरह त्यागकर, मसीह में एक नया और समर्पित जीवन जीना चाहिए।

P 94 De.23:24 On that a man must honor his oral vows and oaths

## व्याख्या: व्यवस्थाविवरण 23:24 (Deuteronomy 23:24)

### बाइबल पद

“जो कुछ तेरे मुख से निकले, उसकी रक्षा करना, और जिस मन्त्र की प्रतिज्ञा तू यहोवा अपने परमेश्वर से करे, उसको पूरी रीति से पूरा करना, जैसा कि तू ने अपनी इच्छा से यहोवा को मुँह से कह दिया है।” (व्यवस्थाविवरण 23:24)

---

### हिंदी में समझावन

यह पद वचनों की पवित्रता और मन्त्रों (vows) को पूरा करने के महत्व को दर्शाता है। इसमें सिखाया गया है कि जब कोई व्यक्ति यहोवा से कोई मन्त्र करता है, तो उसे पूरी निष्ठा के साथ निभाना चाहिए।

- वचन की पवित्रता** - जब कोई व्यक्ति कुछ कहता है, खासकर जब वह परमेश्वर के नाम से कोई वचन या प्रतिज्ञा करता है, तो उसे निभाना अनिवार्य होता है।
- मन्त्र का महत्व** – अगर कोई व्यक्ति स्वेच्छा से परमेश्वर के लिए कुछ करने की मन्त्रत

**करता है, तो उसे उसे पूरा करना होगा, क्योंकि परमेश्वर इूठे वचनों को सहन नहीं करता।**

3. **देर न करना** – अगर कोई व्यक्ति मन्त्रत पूरी करने में देरी करता है, तो यह पाप के रूप में गिना जाता है।
- 

## रब्बियों की व्याख्याएँ

### 1. रशी (Rashi) की व्याख्या

रशी इस पद के दो मुख्य पहलुओं को उजागर करते हैं:

- यह केवल एक नकारात्मक आज्ञा (negative commandment) नहीं है बल्कि एक सकारात्मक आज्ञा (positive commandment) भी है।
- यदि कोई व्यक्ति यहोवा से कोई प्रतिज्ञा करता है, तो उसे तुरंत निभाना चाहिए, इसमें देरी करना पाप माना जाएगा।

### 2. इब्राए़ज़ा (Ibn Ezra)

- यह पद दर्शाता है कि कोई भी प्रतिज्ञा जो यहोवा के नाम से की जाती है, उसे पूरा करना आवश्यक है।
- इब्राए़ज़ा के अनुसार, यह केवल मौखिक प्रतिज्ञाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें वे सभी वादे भी शामिल हैं जो व्यक्ति अपने हृदय में करता है।

### 3. मालबिम (Malbim)

- मन्त्रत करना स्वैच्छिक होता है, लेकिन एक बार जब व्यक्ति प्रतिज्ञा कर लेता है, तो वह उसके लिए अनिवार्य बन जाती है।

- “जो तेरे मुख से निकले” का अर्थ है कि व्यक्ति को अपनी वाणी पर नियंत्रण रखना चाहिए और अनावश्यक प्रतिज्ञाएँ नहीं करनी चाहिए।

#### 4. ओर हा-चयिम (Or HaChaim)

- यह व्याख्या बताती है कि मन्त्रत करने से पहले व्यक्ति को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वह उसे पूरा करने की स्थिति में है।
- “तेरे मुख से निकले” इस बात को रेखांकित करता है कि केवल बोले गए शब्द ही नहीं, बल्कि सोचे गए वचन भी पवित्र माने जाते हैं।

#### 5. तालमूद (Talmud) की व्याख्या

- तालमूद सिखाता है कि मन्त्रत को शीघ्र पूरा करना चाहिए, और उसमें देरी करने से पाप होता है।
- एक व्यक्ति को कोई मन्त्रत करने से पहले सावधानी से सोचना चाहिए, क्योंकि परमेश्वर अधूरे वचनों को पसंद नहीं करता।

#### 6. चिज़कुनी (Chizkuni)

- यदि कोई व्यक्ति अपने लिए कोई व्रत या प्रतिबद्धता लेता है, तो उसे पूरी निष्ठा से उसका पालन करना चाहिए।
- यह प्रतिबद्धता स्वैच्छिक होती है, लेकिन एक बार स्वीकार कर लेने के बाद, उसे टालना संभव नहीं होता।

#### 7. तोराह तेमीमाह (Torah Temimah)

- इस पद से यहूदियों को यह सीखने की प्रेरणा मिलती है कि मन्त्रों की निगरानी

**न्यायालय (Jewish court) द्वारा भी की जानी चाहिए, ताकि लोग उन्हें हल्के में न लें।**

---

## उदाहरण

### 1. हन्ना (Hannah) की प्रतिज्ञा (1 शमूएल 1:11)

- हन्ना ने यहोवा से प्रतिज्ञा की कि यदि वह उसे पुत्र देगा, तो वह उसे जीवनभर यहोवा की सेवा के लिए समर्पित कर देगी।
- जब शमूएल का जन्म हुआ, तो हन्ना ने अपनी मन्त्रत पूरी की और उसे याजक एली को साँप दिया।

### 2. यहूदी रीति-रिवाजों में मन्त्रते

- यहूदियों के लिए नाज़ीर (Nazir) बनना एक गंभीर मन्त्रत मानी जाती थी। यदि कोई नाज़ीर बनने की प्रतिज्ञा करता था, तो उसे शराब और मुदर्दों के संपर्क से बचना पड़ता था और अपने बाल बढ़ाने पड़ते थे।

### 3. मसीही जीवन में वचनों की पवित्रता

- यीशु ने भी इस विषय पर शिक्षा दी (मत्ती 5:37):
 

**"तुम्हारी हाँ का अर्थ हाँ, और तुम्हारी नहीं का अर्थ नहीं होना चाहिए। जो कुछ इससे अधिक है, वह बुराई से आता है।"**
  - यीशु ने यह सिखाया कि किसी को झूठी मन्त्रत करने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए; एक ईमानदार व्यक्ति की सच्चाई ही पर्याप्त होती है।
-

## आज के मसीही चर्च में इसका क्या महत्व है?

### 1. ईमानदारी और वचनबद्धता

- मसीही विश्वासियों को अपने वचनों और वादों के प्रति ईमानदार रहना चाहिए,  
क्योंकि परमेश्वर वचनों की पवित्रता को बहुत गंभीरता से लेता है।

### 2. प्रतिज्ञाओं की सावधानीपूर्वक योजना

- जैसे यहूदियों में नाज़ीर मन्त्रतें होती थीं, वैसे ही मसीही जीवन में भी कुछ  
प्रतिबद्धताएँ होती हैं, जैसे बपतिस्मा, विवाह, और सेवा की प्रतिज्ञाएँ।

### 3. यीशु की शिक्षा के अनुसार जीवन जीना

- यीशु ने सिखाया कि मसीहियों को अनावश्यक मन्त्रतें नहीं करनी चाहिए, बल्कि  
उन्हें सीधे और सच्चे जीवन जीने पर ध्यान देना चाहिए।

### 4. सामाजिक प्रतिबद्धता

- आज के चर्च में यह पद सामाजिक उत्तरदायित्व की ओर भी संकेत करता है, जहाँ  
मसीही विश्वासियों को अपने समुदाय के प्रति किए गए वादों को निभाना  
चाहिए।

## निष्कर्ष

व्यवस्थाविवरण 23:24 हमें सिखाता है कि हमें अपने शब्दों की पवित्रता को बनाए रखना चाहिए  
और किसी भी प्रतिज्ञा को हल्के में नहीं लेना चाहिए। यहूदी व्याख्याओं के अनुसार, इस पद में

सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार की आज्ञाएँ समाहित हैं। मसीही परंपरा में, यीशु ने  
यह सिखाया कि सच्चाई और ईमानदारी किसी भी शपथ या मन्त्र से अधिक महत्वपूर्ण है। अतः,  
हमें केवल वही प्रतिज्ञाएँ करनी चाहिए जिन्हें हम वास्तव में पूरा कर सकते हैं।

P 95 Nu.30:3 On that a judge can annul vows, only according to Torah

□ □□□□□ □□:

### गिनती 30:3 (हिंदी BSI)

"यदि कोई पुरुष यहोवा से मन्त्र माने, वा किसी वस्तु की शपथ खाकर अपने को किसी  
बन्धन में बांध ले, तो वह अपनी बात न टाले; जो कुछ उसने अपने मुंह से कहा हो, वही करे।"

---

□ □□□□□ □□ □□□□□□ (□□□□□ □□□ □□□□□□)

गिनती 30:3 हमें यह सिखाता है कि जब कोई व्यक्ति यहोवा से मन्त्र (व्रत) करता है या कोई  
शपथ खाता है, तो उसे अपनी बात को हल्के में नहीं लेना चाहिए। जो कुछ उसने कहा है, उसे पूरा  
करना अनिवार्य है। इसका मुख्य संदेश यह है कि हमें अपने शब्दों को पवित्र और भरोसेमंद  
रखना चाहिए।

□ □ □□□□□ □□□□□□ □ □ □□□□□□:

**मन्त्र (रान - Neder):** यह तब होता है जब कोई व्यक्ति किसी वस्तु को अपने लिए निषिद्ध  
कर देता है।

**उदाहरण:** यदि कोई कहता है, "मेरे लिए यह रोटी थैंट के समान हो," तो इसका अर्थ है

**कि वह व्यक्ति उस रोटी को नहीं खाएगा।**

**शपथ (העבש - Shavuah):** इसमें व्यक्ति अपने कार्यों को एक निश्चित दिशा में बांधता है।

**उदाहरण:** यदि कोई कहता है, "मैं शराब नहीं पिऊंगा," तो यह एक शपथ होगी।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

- **अपनी बात न तोड़ो** - यहोवा ने यह आज्ञा दी कि जब कोई प्रतिज्ञा करे तो उसे पूरा करे।
  - **जो कुछ कहे, उसे पूरा करे** - इसका तात्पर्य यह है कि किसी को भी झूठी प्रतिज्ञा नहीं करनी चाहिए।
  - **वैध विषय-वस्तु** - मन्त्र और शपथ केवल उन्हीं बातों पर लागू हो सकते हैं जो पहले से निषिद्ध नहीं हैं।
- 

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ (Rashi)

**विचार:** राशी के अनुसार, एक मन्त्र तब बनती है जब कोई कहता है, "मैं यह चीज़ अपने लिए एक भेंट के समान मानता हूँ, इसलिए मैं इसे नहीं करूँगा।"

✓**उदाहरण:** अगर कोई कहता है, "मैं अपने लिए दूध पीना निषिद्ध करता हूँ," तो यह मन्त्र बन जाती है।

□ □ □ □ (Ramban)

**विचार:** □

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ , □

□ □ □ □ □ □ □ □ □

✓उदाहरणः यदि कोई कहे, "मैं यह व्रत लेता हूँ कि हर शुक्रवार को उपवास करूँगा," तो यह एक वैध मन्त्र होगी।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ (Rabbeinu Bahya)

**विचारः** □

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □, □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

✓उदाहरणः कोई कहता है, "मैं मंदिर में हर हफ्ते दस प्रतिशत दान दूँगा," तो यह एक पवित्र मन्त्र होगी, और इसे न निभाना पाप माना जाएगा।

□ □ □ □ □ (Sifri)

**विचारः** □ (□ □), □

✓उदाहरणः कोई कहे, "मैं यह शपथ खाता हूँ कि मैं काशेर भोजन नहीं खाऊँगा," तो यह शपथ अपने आप अमान्य होगी।

□ □ □ □ □ □ □ □ (Or HaChaim)

**विचारः** □

✓उदाहरणः कोई कहे, "मैं यह प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं हर रविवार को अनाथालय में सेवा करूँगा," तो यह एक धार्मिक प्रतिज्ञा होगी।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ (Annulment of Vows)

□ ?

1. यदि व्यक्ति को मन्त्रत के गंभीर परिणामों का पहले से पता नहीं था।
2. यदि वह व्यक्ति यह महसूस करता है कि उसने गलती की है और पश्चाताप करता है।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ ?

- यह कार्य आमतौर पर यहूदी न्यायालय (Beth Din) या किसी विद्वान रब्बी के द्वारा किया जाता है।
  - व्यक्ति को अपनी मन्त्रत के प्रति पछतावा व्यक्त करना होता है, और न्यायालय उसे उस मन्त्रत से मुक्त कर सकता है।
- 

□ ?

## 1. यीशु की शिक्षा:

मती 5:33-37 में, यीशु ने कहा कि हमें "हाँ" को "हाँ" और "नहीं" को "नहीं" कहना चाहिए और अनावश्यक शपथों से बचना चाहिए।

□ □ □ □ □ 5:37

"तुम्हारी बातें हाँ की हाँ, और नहीं की नहीं होनी चाहिए; क्योंकि जो कुछ इससे अधिक होता है वह बुराई से होता है।"

## 2. नया नियम और प्रतिज्ञाएँ:

- नए नियम में, यीशु और प्रेरितों ने सिखाया कि हमें अपनी बातों में सच्चा रहना चाहिए और अनावश्यक शपथ नहीं खानी चाहिए।
- याकूब 5:12 में भी कहा गया है कि हमें बिना कारण शपथ खाने से बचना चाहिए।

### 3. कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट मान्यताएँ:

- **कैथोलिक चर्च:** मन्त्रतें (Vows) महत्वपूर्ण मानी जाती हैं, खासकर मठवासी जीवन में, जहाँ लोग पवित्रता, गरीबी, और आज्ञाकारिता की मन्त्रत लेते हैं।
- **प्रोटेस्टेंट चर्च:** अधिकतर प्रोटेस्टेंट चर्च अनावश्यक शपथों से बचने की सलाह देते हैं, लेकिन अगर कोई प्रतिज्ञा की जाती है, तो उसे पूरा करना आवश्यक है।

### 4. आधुनिक समय में मसीही मन्त्रतें:

- मसीही लोग आज भी व्यक्तिगत स्तर पर यहोवा के लिए मन्त्रतें कर सकते हैं, जैसे कि प्रार्थना में एक व्रत लेना।
- चर्चों में विवाह प्रतिज्ञाएँ (Marriage Vows) और सेवकाई प्रतिज्ञाएँ (Ministry Vows) महत्वपूर्ण मानी जाती हैं।

## □ □ □ □ □ □ (Summary)

1. गिनती 30:3 में यह सिखाया गया है कि किसी भी मन्त्र या शपथ को तोड़ना नहीं चाहिए।
2. रब्बियों ने मन्त्रतों और शपथों के नियम स्पष्ट किए हैं, जैसे कि राशी, रंबान, और रब्बेइनु बाह्या।
3. मसीही दृष्टिकोण के अनुसार, यीशु ने अनावश्यक शपथों से बचने और सच्चाई में जीने पर जोर दिया।
4. आधुनिक समय में मन्त्रतें चर्च में विवाह, सेवकाई और व्यक्तिगत प्रतिज्ञाओं के रूप में देखी जाती हैं।

+ निष्कर्षः

बाइबल हमें सिखाती है कि हमें अपने शब्दों को हल्के में नहीं लेना चाहिए और अपने वचनों को निभाने के लिए जिम्मेदार होना चाहिए।

## **RITUAL PURITY**

P 96 Le.11:8, 24 Defilement by touching certain animal carcasses, &...

□ □□□□ □□:

लैव्यवस्था

**11:8**

(Leviticus

**11:8)**

"उनके मांस को न खाना, और न ही उनकी मरी हुई देह को छूना; वे तुम्हारे लिए अशुद्ध हैं।"

□ □□□□ □□ □□□□□□□:

लैव्यवस्था 11:8 में यह स्पष्ट किया गया है कि कुछ जानवरों को न केवल खाने से मना किया गया है बल्कि उनकी मरी हुई देह को छूना भी अशुद्धता लाता है।

❖ □□□□ □□□□:

1. **खाने की मनाही** - यहोवा ने कुछ जानवरों को "अशुद्ध" घोषित किया, जिनका मांस इसाएलियों के लिए वर्जित था।
2. **स्पर्श की मनाही** - केवल उनका मांस खाना ही नहीं, बल्कि उनकी लाश को छूना भी

**व्यक्ति को अशुद्ध बनाता था।**

3. **शुद्धता का महत्व - इसाएली अगर अशुद्ध होते, तो वे पवित्र स्थान में प्रवेश नहीं कर सकते थे।**
- 

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

**1 □ □ □ (Rashi):**

- यह निषेध सभी अशुद्ध जानवरों पर लागू होता है, भले ही वे विशेष रूप से टोरा में उल्लिखित न हों।
  - यह सिद्धांत "कथोर से सरल तक" (*a fortiori reasoning*) से लिया गया है - यदि कुछ शुद्धता के लक्षण रखने वाले जानवर वर्जित हैं, तो जिनमें कोई शुद्धता का लक्षण नहीं है, वे और भी अधिक वर्जित होंगे।
  - **उदाहरण:** ऊँट का मांस निषिद्ध है क्योंकि उसके खुर नहीं फटे होते, जबकि गाय का मांस शुद्ध माना जाता है।
- 

**2 □ □ □ □ □ (Ramban):**

- यह केवल छूने की मनाही नहीं है, बल्कि यह सिखाता है कि इन जानवरों की लाश को छूने से **ऋतिगत अशुद्धता** (*ritual impurity*) आ जाती है।
- जो लोग इन्हें छूते हैं, उन्हें पवित्र स्थान में जाने से पहले शुद्ध होना चाहिए।

□ □ □ □ □ : **यदि कोई व्यक्ति अशुद्ध जानवर की लाश को छूता है, तो उसे पवित्रता की शर्तें पूरी करने तक मंदिर में प्रवेश नहीं करना चाहिए।**

### 3 इन्हें व्यक्ति की लाश को छूता है (Ibn Ezra):

- जो व्यक्ति जानबूझकर किसी अशुद्ध जानवर की लाश को छूता है, वह एक नकारात्मक आज्ञा (negative commandment) को तोड़ता है और उसे सजा दी जा सकती है।

### 4 इन्हें व्यक्ति की लाश को छूना स्वयं में कोई पाप नहीं है, लेकिन यह व्यक्ति को अशुद्ध बना देता है (Ralbag):

- अशुद्ध जानवरों की लाश को छूना स्वयं में कोई पाप नहीं है, लेकिन यह व्यक्ति को अशुद्ध बना देता है।
- टोरा का आदेश है कि लोग अशुद्धता से बचें ताकि वे पवित्र स्थान में जाने के योग्य बने रहें।

### 5 इन्हें व्यक्ति की लाश को छूता है (Rav Hirsch):

- यह निषेध विशेष रूप से तब लागू होता है जब कोई व्यक्ति मंदिर में पूजा करने के लिए जाता है।
- केवल उन्हीं स्थितियों में इसे सख्ती से लागू किया जाना चाहिए, जहाँ पवित्रता की आवश्यकता होती है।

### 6 इन्हें व्यक्ति की लाश को छूने से व्यक्ति बलिदानों में

- यह चेतावनी देता है कि अशुद्ध जानवरों की लाश को छूने से व्यक्ति बलिदानों में

**भाग लेने या मंदिर में जाने के योग्य नहीं रहता।**

- इसे विशेष रूप से यहूदी त्योहारों और यरूशलेम में उपस्थिति के संदर्भ में समझाया गया है।
- 

## 7. अन्य उपयोग (Malbim):

- शब्द "माल" (तुम्हारे लिए) इंगित करता है कि ये जानवर केवल खाने के लिए निषिद्ध हैं, लेकिन अन्य उपयोगों के लिए नहीं।
  - उदाहरण: ऊँट की खाल का उपयोग सवारी या अन्य उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है, लेकिन उसका मांस खाना निषिद्ध है।
- 

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □  
□ □ □ □ □ ?

### 1. यीशु मसीह के द्वारा भोजन नियमों का अंत

- मसीही चर्च में यहूदी क्रानूनों के अनुसार खान-पान संबंधी नियमों का पालन नहीं किया जाता।
- मरकुस 7:18-19 में यीशु ने कहा, "जो कुछ मनुष्य के बाहर से उसके भीतर जाता है वह उसे अशुद्ध नहीं करता, क्योंकि वह उसके हृदय में नहीं, बल्कि पेट में जाकर बाहर निकल जाता है।"**
- इसका अर्थ यह है कि यीशु ने सभी भोजन को शुद्ध घोषित कर दिया।

### 2. प्रेरित पतरस का दर्शन (प्रेरितों के काम 10:9-16)

- पतरस को एक दर्शन में स्वर्ग से उत्तरती एक चादर दिखाई दी जिसमें हर प्रकार के जीव-जंतु थे, और उसे कहा गया:

**"उठ, पतरस, मार और खा!"**

- पतरस ने उत्तर दिया, "हे प्रभु, ऐसा कभी नहीं हो सकता; क्योंकि मैंने कभी कोई अपवित्र या अशुद्ध वस्तु नहीं खाई!"
- तब प्रभु ने कहा, "जो परमेश्वर ने शुद्ध ठहराया है, उसे तू अपवित्र न कह।"
- इस दर्शन का मुख्य अर्थ था कि अब अन्यजातियों को भी उद्धार का संदेश दिया जाना था, लेकिन इससे यह भी संकेत मिलता है कि भोजन संबंधी नियम अब बाध्यकारी नहीं रहे।

### 3. मसीही विश्वासियों के लिए उपदेश

- रोमियों 14:14: "मैं जानता हूँ और प्रभु यीशु में निर्चय करता हूँ कि कोई वस्तु अपने आप में अशुद्ध नहीं, पर जो उसे अशुद्ध समझता है, उसके लिए अशुद्ध है।"
- 1 तीमुथियुस 4:4-5: "क्योंकि परमेश्वर की सृष्टि की हुई प्रत्येक वस्तु अच्छी है, और यदि धन्यवाद के साथ ग्रहण की जाए तो कोई भी वस्तु त्याज्य नहीं, क्योंकि यह परमेश्वर के वचन और प्रार्थना से पवित्र की जाती है।"



#### 1. यहूदी धर्म में:

- अशुद्ध जानवरों का मांस खाना निषिद्ध था।
- उनकी लाश को छूना अशुद्धता लाता था, खासकर मंदिर में प्रवेश करने से पहले।
- यह नियम आज भी यहूदी समुदाय में पालन किया जाता है।

## 2. मसीही विश्वास में:

- यीशु मसीह ने सभी भोजन को शुद्ध घोषित कर दिया, इसलिए मसीही लोग इन निषेधों को नहीं मानते।
- प्रेरित पतरस के दर्शन के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया कि परमेश्वर ने अब जातियों को भी उद्धार का अवसर दिया है।
- मसीही चर्च में व्यक्ति को भोजन संबंधी स्वतंत्रता दी गई है, बशर्ते वह विश्वास और संयम के साथ लिया जाए।



□□□□□□□:

**लैब्यवरस्था 11:8** पुराने नियम में यहूदी लोगों के लिए एक महत्वपूर्ण आदेश था, लेकिन नए नियम में यीशु ने इसे समाप्त कर दिया। आज यह नियम यहूदी परंपरा में बना हुआ है, लेकिन मसीही लोग इसे अनिवार्य रूप से नहीं मानते।

□□□□□□□ 11:24

**“तुम इनके द्वारा अशुद्ध ठहरोगे: जो कोई इनके शव को छुए, वह सांझ तक अशुद्ध रहेगा।”**

□ □□□□□ □□□ □□□□□□

यह पद उन नियमों के बारे में बताता है जो उन लोगों पर लागू होते हैं जो अशुद्ध जानवरों के शब्द (मेरे हुए शरीर) को छूते हैं। यह स्पष्ट करता है कि जो कोई इनके शब्द को छूएगा, वह सांझा तक अशुद्ध रहेगा।

- **शुद्धता और अशुद्धता का संबंध** - इस नियम का मुख्य उद्देश्य इसाएलियों को पवित्र और अपवित्र चीज़ों के बीच भेद सिखाना था। अगर कोई व्यक्ति अशुद्ध हो जाता था, तो उसे शाम तक इंतजार करना पड़ता था और शुद्धि प्रक्रिया से गुजरना पड़ता था।
  - **शरीरिक अशुद्धता बनाम नैतिक अशुद्धता** - यह नियम नैतिक रूप से गलत काम करने के लिए नहीं बल्कि पवित्रता और अपवित्रता की अवधारणा को समझाने के लिए दिया गया था।
- 

□ □□□□□□□□ □□ □□□□□

❖ □□□ (Rashi)

→ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□  
□□□□ □□□ □□□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□  
□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□  
□□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□

❖ □□□□□ (Ramban)

→ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□  
□□□□ □□ □□□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□  
□□  
□□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□

❖ □□□□ □□□□ (Ibn Ezra)

→ □□□□□□□□ □□□□ □□□ □□ "तितमायु" (तुम अशुद्ध हो जाओगे) क्रिया हित्वाएल

(Hitpa'el) स्वरूप में है, जो यह दर्शाता है कि यह एक स्वचालित प्रक्रिया है - कोई चाहे या न चाहे, अगर वह इन्हें छूता है, तो वह अशुद्ध हो जाएगा।

✡ □□□□□□□ (Or HaChaim)

→ उन्होंने सुझाव दिया कि पद में प्रयुक्त "الله" (और इनसे) शब्द संकेत करता है कि यह सूचीबद्ध जीवों तक सीमित नहीं है, बल्कि अन्य अशृद्ध जानवरों पर भी लागू हो सकता है।

✡ □□□□□□□□□□□□ (Steinsaltz)

→ उन्होंने लिखा कि यह नियम केवल खाने तक सीमित नहीं है बल्कि उनके शरों को छूना भी अपवित्रता लाता है।

✡ ☐☐☐☐☐☐☐ (Mizrahi)

→ □□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□ "□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□"  
□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ , □□□□□ □□ □□  
□□□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□

□ ?

- **यीशु मसीह के द्वारा शुद्धि** - नए नियम (New Testament) में, यीशु मसीह ने यह सिखाया कि बाहरी शारीरिक अशुद्धता से अधिक महत्वपूर्ण आत्मिक पवित्रता है। मरकुर 7:15 में यीशु ने कहा:

**”कोई वस्तु जो बाहर से मनुष्य में प्रवेश करती है, वह उसे अशुद्ध नहीं कर सकती; पर जो वस्तु ऐसे मनुष्य के भीतर से निकलती हैं, वे ही उसे अशुद्ध करती हैं।”**

**मसीही लोग अब इन नियमों का पालन क्यों नहीं करते?**

✓ ☰☐☐☐ ☰☐ ☰☐☐☐☐☐☐☐ ☰☐ ☰☐☐☐ ☰☐☐ (☐☐☐☐☐ 5:17)

✓ ☰☐☐☐☐☐☐☐ ☰☐ ☰☐ 10:15 ☰☐ ☰☐☐☐☐☐☐☐ ☰☐ ☰☐☐☐ ☰☐ ☰☐☐☐

☐☐☐ ☰☐: “जिसे परमेश्वर ने शुद्ध ठहराया है, उसे तू अशुद्ध न कह।”

✓ ☰☐☐☐☐☐☐☐☐☐ 2:16-17 ☰☐☐☐ ☰☐ ☰☐☐, ☰☐☐, ☰☐☐☐☐☐, ☰☐☐

☐☐☐ ☰☐ ☰☐☐☐ ☰☐☐☐, ☰☐☐☐☐☐ ☰☐ ☰☐☐☐☐☐ ☰☐ ☰☐☐☐ ☰☐,

☐☐☐☐☐ ☰☐☐☐☐☐☐☐☐☐ ☰☐☐☐ ☰☐☐☐ ☰☐☐☐ ☰☐

**परंतु, नैतिक शुद्धता अभी भी महत्वपूर्ण है।**

□ हालाँकि, मसीही धर्म इन शारीरिक नियमों को पालन करने की आवश्यकता नहीं बताता, फिर

**भी आत्मिक शुद्धता आवश्यक मानी जाती है।**

---

□ ☰☐☐☐☐☐☐

1 ☰ ☰ ☰☐☐☐ ☰☐☐☐☐☐☐☐☐☐ ☰☐ ☰☐☐☐☐☐ ☰☐ ☰☐☐☐☐☐☐☐ ☰☐ ☰☐

☐☐☐ ☰☐☐☐ ☰☐☐☐ ☰☐ ☰☐ ☰☐ ☰☐

2 ☰ ☰☐☐☐☐☐ ☰☐☐☐☐☐☐ ☰☐ ☰☐ ☰☐ ☰☐ ☰☐-☐☐☐ ☰☐☐☐☐☐ ☰☐

☐☐☐☐☐, ☰☐☐☐☐ ☰☐☐ ☰☐☐☐ ☰☐☐☐☐☐☐☐ ☰☐☐ ☰☐ ☰☐ ☰☐☐☐☐

☐☐☐☐☐☐☐ ☰☐ ☰☐ ☰☐☐☐ ☰☐☐☐☐☐☐ ☰☐☐☐ ☰☐ ☰☐☐☐☐☐☐ ☰☐☐☐ ☰☐

3 ☰ ☰ ☰☐☐☐☐ ☰☐☐☐, ☰☐☐☐ ☰☐☐☐ ☰☐ ☰☐☐☐☐☐☐☐ ☰☐☐☐☐☐☐☐ ☰☐

☐☐☐☐☐ ☰☐☐☐☐☐☐ ☰☐☐☐☐☐☐ ☰☐ ☰☐☐☐, ☰☐☐☐☐☐ ☰☐ ☰☐☐☐☐☐☐ ☰☐

☐☐☐ ☰☐☐☐ ☰☐☐☐ ☰☐ ☰☐

4 ☰ ☰☐ ☰☐, ☰☐☐☐☐ ☰☐ ☰☐☐☐☐☐☐☐☐ ☰☐☐☐☐☐☐☐ ☰☐ ☰☐☐☐ ☰☐

☐☐☐☐☐☐☐☐☐ ☰☐ ☰☐☐☐☐☐☐ ☰☐

**□ “परमेश्वर ने हमें अशुद्धता के लिए नहीं, पर पवित्रता के लिए बुलाया है।” – 1**

☐☐☐☐☐☐☐☐☐ 4:7 ☐

P 97 Le.11:29 - 31 ...by touching carcasses of eight creeping creatures

**Leviticus 11:29 "और जो जन्तु भूमि पर रेंगते हैं, उनमें से ये तुम्हारे लिये**

**अशुद्ध ठहरेंगे: नेवला, चूहा और गिरगिट, इनके भिन्न-भिन्न प्रकार,"**

---

## हिंदी में समझाइए

### 1. पद का सरल अनुवाद

"जो छोटे-छोटे प्राणी धरती पर रेंगते हैं, उनमें से ये तुम्हारे लिए अशुद्ध होंगे: नेवला, चूहा, और कछुआ अपने प्रकार के अनुसार।"

यह पद यहोवा द्वारा इसाएलियों को दिए गए शुद्ध और अशुद्ध प्राणियों के नियमों का हिस्सा है। इसमें ऐसे छोटे जीवों का उल्लेख किया गया है जो किसी के स्पर्श करने से उसे अशुद्ध कर सकते हैं।

---

### 2. रब्बियों की व्याख्या और संदर्भ

यहूदियों के लिए यह नियम केवल आहार संबंधी नहीं है, बल्कि यह पवित्रता और अपवित्रता की स्थिति को भी दर्शाता है।

#### (क) "और ये" (וְאַתָּה) का अर्थ

रब्बी रशी के अनुसार, "और ये" यह दर्शाता है कि यह नियम पिछले खंड से जुड़ा हुआ है, जहाँ भूमि

पर रेंगने वाले प्राणियों की अशुद्धता बताई गई थी।

### (ख) "तुम्हारे लिए" (מְלָא) का अर्थ

रब्बी इब्राएल कहते हैं कि यह नियम केवल इस्राएलियों पर लागू होते हैं, अन्य जातियों पर नहीं।

यह दर्शाता है कि इस्राएल को अन्य जातियों से अलग पवित्र जीवन जीने के लिए बुलाया गया था।

### (ग) "अशुद्ध" (אַטָּה) का अर्थ

- **रशी:** यहाँ "अशुद्ध" शब्द आहार निषेध नहीं दर्शाता, बल्कि यह बताता है कि इन प्राणियों के शर्वों को छूने से व्यक्ति कुछ समय तक अशुद्ध हो जाएगा और उसे शुद्धिकरण प्रक्रिया से गुजरना होगा।
- **रामबान (नचमैनाइड्स):** इन प्राणियों को छूना मंदिर में प्रवेश करने या बलिदान खाने की अनुमति समाप्त कर देता था।

### (घ) "रेंगने वाले प्राणी" (רְאַתְּה)

- "**शेरेट्ज़**" (Sheretz) शब्द का अर्थ: यह हिब्रू शब्द ऐसे छोटे जीवों को संदर्भित करता है जो रेंगते या तेजी से फैलते हैं।
- **रब्बी हिर्श़:** यह शब्द उन जीवों के लिए प्रयुक्त होता है जिनकी संख्या बहुत तेजी से बढ़ती है (जैसे चूहे और नेवले)।

जीव	हिन्दू नाम	यहूदी व्याख्या
नेवला	<i>Chuldah</i> (चुँड़ा)	रशी के अनुसार, यह 'मुस्टिला' (Mustela - Weasel) नामक जीव है।
चूहा	<i>Achbar</i> (चुँगू)	साधारण चूहे को संदर्भित करता है।
कछुआ या बड़ी छिपकली	<i>Tzav</i> (त्वष्)	कुछ रब्बियों के अनुसार, यह जल-थल दोनों में रहने वाली छिपकली हो सकती है। अन्य इसे 'टॉर्टोइज़' (Tortoise) मानते हैं।

### 3. रब्बियों के अन्य विचार

**(क) रक्त भी अशुद्ध करता है**

मालबिम के अनुसार, यदि इन प्राणियों का रक्त शरीर में मौजूद हो और उसे छू लिया जाए, तो

वह भी अशुद्ध कर सकता है।

**(ख) ये प्राणी क्यों अशुद्ध घोषित किए गए?**

पानेअच रज्ञा नामक रब्बी ने कहा कि ये सभी जीव साँप के श्राप से जुड़े हुए हैं। चूंकि यहोवा ने

आदम और हव्वा के पाप के कारण साँप को श्राप दिया, इसलिए इस प्रकार के जीवों को भी

अशुद्ध घोषित कर दिया गया।

**(ग) "स्वरूप के अनुसार" (למִינָהוּ) का अर्थ**

यह वाक्य दर्शाता है कि इस सूची में केवल एक ही प्रकार के जीव नहीं हैं, बल्कि उनकी विभिन्न उप-प्रजातियाँ भी अशुद्ध मानी जाती हैं।

## 4. आज के मसीही चर्च में इसका क्या महत्व है?

### (क) यीशु मसीह और पवित्रता का नया दृष्टिकोण

यीशु ने शिक्षा दी कि बाहरी नियमों की तुलना में आंतरिक पवित्रता अधिक महत्वपूर्ण है।

**मरकुस 7:18-19** - यीशु ने कहा कि "जो कुछ मनुष्य के भीतर जाता है, वह उसे अशुद्ध नहीं कर सकता।"

**प्रेरितों के काम 10:9-16** - पतरस को एक दर्शन में सभी जीवों को शुद्ध घोषित करने की आज्ञा मिली, जिससे यह संकेत मिला कि अब व्यवस्था की आहार संहिता बाध्यकारी नहीं है।

### (ख) मसीही दृष्टिकोण में बदलाव

प्रारंभिक चर्च (विशेष रूप से पौलस) ने सिखाया कि मसीह में विश्वास करने वाले गैर-यहूदी ईसाइयों के लिए ये नियम आवश्यक नहीं हैं।

- कुलुस्सियों 2:16** - "इसलिए खाने-पीने या पर्वों, नए चंद्रमा, या विश्राम दिन के विषय में कोई तुम्हारा न्याय न करे।"
- रोमियों 14:14** - "मैं जानता हूँ और प्रभु यीशु में मुझे पूरा विश्वास है कि कोई भी वस्तु अपने आप में अशुद्ध नहीं है।"

### (ग) आज के चर्च में व्यावहारिक निष्कर्ष

- अधिकांश मसीही आज इन आहार नियमों को पालन नहीं करते, क्योंकि वे मानते हैं कि

यीशु ने इन सीमाओं को समाप्त कर दिया।

- परंतु कुछ मसीही समूह (जैसे सेवेंथ डे एडवेंटिस्ट) अब भी बाइबल की आहार संहिता का पालन करते हैं।
- 

## 5. निष्कर्ष

- यह नियम यहूदी धर्म में पवित्रता और अपवित्रता से जुड़ा हुआ था।
- रब्बियों ने इसे विस्तार से समझाया, खासकर स्वच्छता और मंदिर सेवा के संबंध में।
- मसीही परंपरा में, यीशु और प्रेरितों की शिक्षा के आधार पर इन नियमों का अनुपालन आवश्यक नहीं समझा जाता।

### व्यावहारिक शिक्षा:

- यह नियम हमें सिखाता है कि यहोवा ने अपने लोगों को पवित्र और अलग रहने के लिए बुलाया।
- मसीही दृष्टिकोण के अनुसार, बाहरी शुद्धता से अधिक महत्वपूर्ण आत्मिक शुद्धता और प्रेम है।

### लैब्यववस्था 11:30 (Leviticus 11:30) - हिंदी बाइबल पद

"और गिरगिट, मगरमच्छ, दीवार पर चलने वाली छिपकली, घोंघा और गिरगिट, ये सब तुम्हारे लिये अशुद्ध ठहरेंगे।"

(लैब्यव्यवस्था 11:30 - Hindi Bible: Easy-to-Read Version (ERV-HI))

---

## हिंदी में विस्तृत व्याख्या

लैब्यव्यवस्था 11:30 में पाँच अलग-अलग रेंगने वाले जीवों का उल्लेख किया गया है जिन्हें यहोवा ने अशुद्ध घोषित किया। यह सूची पिछले पद (लैब्यव्यवस्था 11:29) से संबंधित है, जो भूमि पर रेंगने वाले अन्य अशुद्ध जीवों को बताती है।

इन जीवों के बारे में विभिन्न यहूदी रब्बियों और टीकाकारों की व्याख्याएँ दी गई हैं, जो इनके सही पहचान को लेकर विभिन्न राय रखते हैं।

---

### 1. अनाकाह (Anakah - אֲנָקָה)

यह कौन सा जीव है?

- अनाकाह का अनुवाद Septuagint (यूनानी बाइबल) में μυγάλη (मिगाले) किया गया है।
- जर्मन में इसे Spitzmaus (शार्प-नोज़ माउस) कहा जाता है।
- राशी ने इसे पुरानी फ्रेंच भाषा में hérisson (हेजहॉग) बताया।
- योनातान (Targum Jonathan) इसे "एक ऐसा प्राणी जो साँप का दूध पीता है" कहता है।
- यरूशलेम तर्गुम इसे "ऐसा प्राणी जो साँप की खोज करता है" कहता है।
- ओनकेलोस इसे yala नाम से संदर्भित करता है।

- रलबग इसे *iritzon* कहता है और बताता है कि इसका नाम इसकी तीव्र आवाज़ के कारण रखा गया है।
  
  - संभावित आधुनिक पहचान: हेजहॉग, गूफर या कोई और छोटा स्तनधारी जो ज़मीन के नीचे रहता हो।

---
- 2. कोआह (Koach - כוח)**
- यह कौन सा जीव है?
  
    - Septuagint में इसे Χαμαιλέων (Chameleon) बताया गया है।
    - अरबी में इसे *chardon* कहा जाता है, जो एक प्रकार की बड़ी छिपकली है जो इसाएल और सीरिया में प्राचीन खंडहरों में पाई जाती थी।
    - रलबग इसे *lidir* (पुरानी फ्रेंच भाषा) कहता है और बताता है कि यह बहुत ज़हरीला है।  
  - संभावित आधुनिक पहचान: गिरगिट या बड़ी छिपकली।

---

**3. लतआह (Leta'ah - הַאֲתָה!)**

- यह कौन सा जीव है?
  

  - तलमूद (Talmud) इसे सभी प्रकार की छिपकलियों के लिए इस्तेमाल करता है।
  - राशी इसे एक छिपकली मानता है।
  - Toledot Yitzchak इसे *lagartixa* (छिपकली) कहता है।
  - रलबग इसे *le gram verade* (पुरानी फ्रेंच भाषा) कहता है।

संभावित आधुनिक पहचान: साधारण दीवार पर चलने वाली छिपकली।

---

#### 4. खोमेट (*Chomet* - חומת)

यह कौन सा जीव है?

राशी ने इसे *limace* (घोंघा या स्लग) कहा।

Septuagint ने इसे *σαῦρα* (साउरा - एक प्रकार की छिपकली) कहा।

Vulgate ने इसे *Lacerta* (लैसटर्फ़ - छिपकली) बताया।

रलबग कहता है कि कुछ इसे *lianca liassa* कहते हैं, लेकिन वह मानता है कि यह *albrina* नामक एक ज़हरीला जीव है।

Shadal कहता है कि कुछ इसे *lumaca* (झेल) कहते हैं, लेकिन यह सर्प (saraf) नहीं है क्योंकि इसके पैर नहीं हैं।

संभावित आधुनिक पहचान: घोंघा, स्लग, या किसी प्रकार की ज़हरीली छिपकली।

---

#### 5. तिन्शेमेत (*Tinshemet* - תינשְׁמֵת)

यह कौन सा जीव है?

- Septuagint, Vulgate, और Onkelos इसे मोल (*Maulwurf* - तिलचट्ठा या अंधा छूटंदर) कहते हैं।
- योनातान इसे सैलामैंडर (*salamander*) कहता है।
- कई आधुनिक विद्वान इसे गिरगिट (*Chameleon*) मानते हैं।

- राशी इसे *talpa* (तिलचट्टा/छछंदर) मानते हैं।
- रलबग इसे *darboux* कहते हैं और बताते हैं कि यह बिना आँखों का होता है और ज़मीन के अंदर पौधों की जड़ें खाता है।
- तलमूद इसे *korpiday* प्रकार का जीव मानता है।

□ संभावित आधुनिक पहचान: गिरगिट, छछंदर, या अंधा छछंदर।

---

## रब्बियों की विशेष व्याख्याएँ

✓**राशी** □

✓**तलमूद** □

✓**रलबग** □

✓**शादाल** ने इनमें से कुछ को स्नेक (सर्प) से जोड़ने की कोशिश की।

---

## आज के मसीही चर्च में इसका क्या महत्व है?

↙ मसीही दृष्टिकोण

### 1. नए नियम में अशुद्धता का संदर्भ:

- नए नियम में यीशु मसीह ने साफ़ किया कि भोजन के माध्यम से कोई अशुद्ध

**नहीं होता, बल्कि मन से निकले विचार ही अशुद्धता लाते हैं (मरकुस 7:15)।**

- प्रेरितों की पुस्तक में पतरस को एक दर्शन में बताया गया कि अब कोई भोजन

**अशुद्ध नहीं है (प्रेरितों 10:9-16)।**

## 2. आज का मसीही मतः

- अधिकांश मसीही चर्च इस नियम को "पुराने नियम की व्यवस्थाओं" में रखते हैं, जो अब अनिवार्य नहीं हैं।
- यह आदेश मूल रूप से यहूदियों के लिए दिया गया था, ताकि वे अन्यजातियों से अलग रहें।
- मसीही विश्वास के अनुसार, यीशु ने क्रूस पर बलिदान देकर सब व्यवस्थाओं को पूरा कर दिया, जिससे अब भोजन संबंधी नियम बाध्यकारी नहीं रहे।



### निष्कर्ष

□ □□□□□ □□□□□□ □□□ □ □□ □□□□□□ □□□□□ □□, □□ □□□□ □□□□ □□  
 □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□, □□ □□□□ □□ □□ □□□□□□ □□  
 □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□, □□□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□  
 □□□□ □□ □□ □□ □□ □□ □□, □ □□ □□□□ □□□

---

### निष्कर्ष

□ लैब्यव्यवस्था 11:30 के अनुसार ये जीव अशुद्ध थे, परन्तु मसीही मत के अनुसार आज इन

**नियमों का पालन आवश्यक नहीं है।**

□ मसीही शिक्षा: "मनुष्य को अशुद्ध करने वाली चीज़ उसके बाहर से नहीं, बल्कि उसके अंदर

से आती है।” (□□□□□ 7:15) □

### लेविटिकस 11:29-31 (हिंदी में)

”ये भी तुम्हारे लिये अशुद्ध जीवों में गिने जाएंगे, अर्थात् भूमि पर रेंगनेवाले जन्तु : नेवला,

चूहा,	और	गिरगिट	की	विभिन्न	जातियाँ;	
अनाकाह,	कोआह,	लटआह,	और	होमेत,	और	तिनशेमेत।

ये वे जीव हैं, जो तुम्हारे लिये अशुद्ध होंगे; इनमें से जो कोई भी मरे हुए को छुएगा, वह सांझा तक अशुद्ध रहेगा।”

### समझाइए - लेविटिकस 11:29-31

यह पद उन आठ "शेरेट्ज़" (יְתָזֵעַ, यानी रेंगने वाले जीवों) के बारे में बात करता है, जो मरने के बाद अशुद्धता फैलाते हैं। इस नियम का उद्देश्य इस्माएलियों को शारीरिक और आत्मिक पवित्रता की शिक्षा देना था। ये जीव आमतौर पर नमी वाले स्थानों, खेतों और घरों में पाए जाते थे, जिससे इनके संपर्क में आना आसान था। बाइबल में "अशुद्ध" होने का अर्थ केवल शारीरिक नहीं बल्कि आध्यात्मिक संदर्भ में भी है। इस संदर्भ में, यदि कोई इन मरे हुए जीवों को छूता था, तो वह सांझा तक अशुद्ध माना जाता था और उसे शुद्धिकरण की विधियों का पालन करना पड़ता था।

### रब्बियों की व्याख्याएँ और विभिन्न अनुवाद

## 1. अनाकाह (Anakah)

- सेषुआजेंट (ग्रीक अनुवाद) इसे *μυγάλη* (Mygale) कहता है।
- राशी (Rashi) इसे *hérisson* (ओल्ड फ्रेंच) कहते हैं, जो हेजहॉग (Hedgehog) है।
- योनातान (Targum Jonathan) इसे "सांप को दृढ़ पिलाने वाला" कहते हैं।
- यरूशलेम तर्गुम इसे "सांप को खोजने वाला" कहते हैं।
- रलबाग (Ralbag) इसे *iritzon* (ओल्ड फ्रेंच) कहते हैं, क्योंकि यह रोता है।

**उदाहरण:**

आज भी कुछ जीव सांप के बिलों में पाए जाते हैं और उनका शिकार करते हैं, जैसे नेवला (mongoose)।

---

## 2. कोआह (Koach)

- सेषुआजेंट इसे *קָמָרִיא* (Chameleon) कहता है।
- अरबी भाषा में इसे *Chardon* कहा गया है, जो छिपकली की एक जाति है।
- रलबाग इसे *Lidir* (ओल्ड फ्रेंच) कहते हैं, और इसे जहरीला मानते हैं।

**उदाहरण:**

कुछ लोग इसे गिरगिट (Chameleon) से जोड़ते हैं, जो रंग बदल सकता है और सूखे क्षेत्रों में पाया जाता है।

---

## 3. लटआह (Leta'ah)

- तालमूद इसे सभी प्रकार की छिपकलियों (**Lizards**) के लिए उपयोग करता है।
- राशी इसे छिपकली ही मानते हैं।
- तोलेदोत यित्ज़चाक इसे *Lagartixa* (ओल्ड फ्रेंच) कहते हैं।
- रलबाग इसे *le gram verade* (ओल्ड फ्रेंच) कहते हैं।

#### **उदाहरण:**

भारत में भी कई प्रकार की छिपकलियाँ होती हैं, जो घरों में पाई जाती हैं और दीवारों पर चिपकती हैं।

---

#### **4. होमेत (Chomet)**

- राशी इसे *limace* (ओल्ड फ्रेंच) कहते हैं, जो स्नेल (**Snail**) है।
- सेषुआजेंट इसे *σαῦπα* और बुलगेट इसे *Lacerta* कहते हैं।
- रलबाग इसे *lianca liassa* कहते हैं, लेकिन वे मानते हैं कि यह *Albrina* नामक जहरीला प्राणी है।
- शाड़ाल इसे *Testudo* (कछुआ) से जोड़ते हैं।

#### **उदाहरण:**

कुछ लोग इसे घोंघा (**Snail**) मानते हैं, लेकिन यह नियम घोंघों पर लागू नहीं हो सकता क्योंकि उनमें हड्डियाँ नहीं होतीं।

---

#### **5. तिनशेमेत (Tinshemet)**

- सेष्टुआजेंट, वुलगेट और ओनकेलोस इसे मोल (Mole) मानते हैं।
- योनातान इसे सालामेंडर (Salamander) कहते हैं।
- राशी इसे *Talpa* (ओल्ड फ्रेंच) कहते हैं, जो मोल (Mole) है।
- रलबाग इसे *Darboux* (ओल्ड फ्रेंच) कहते हैं, जो अंधा होता है और पौधों की जड़ों को खाता है।
- तालमूद इसे *Korpiday* कहते हैं।

#### उदाहरण:

मोल (Mole) अंधे होते हैं और ज़मीन के अंदर बिल बना कर रहते हैं।

---

## आज के मसीही चर्च में इसका क्या महत्व है?

आज के मसीही चर्च में यह नियम अब व्यवहारिक रूप से नहीं लागू होते क्योंकि यीशु मसीह ने मूसा की व्यवस्था को पूरा किया (मत्ती 5:17)। पौलुस ने भी सिखाया कि मसीही अब उन विशिष्ट यहूदी शुद्धता के नियमों का पालन करने के लिए बाध्य नहीं हैं (कुलुस्सियों 2:16-17, प्रेरितों के काम 15:28-29)।

## आज के समय में इसका आध्यात्मिक संदेश

1. **पवित्रता और अलगाव** - इम्राएली लोगों को इन नियमों के माध्यम से सिखाया गया था कि वे अन्यजातियों से अलग होकर यहोवा के लिए पवित्र बनें। आज भी, मसीही विश्वासी को आध्यात्मिक रूप से पवित्र रहने के लिए बुलाया गया है (1 पतरस 1:16)।
2. **आध्यात्मिक अशुद्धता से बचाव** - पुराने नियम में शारीरिक अशुद्धता से बचने की

**शिक्षा दी गई थी, लेकिन नए नियम में पाप से बचने की शिक्षा दी गई है (2 कुरिन्थियों**

**7:1)।**

- 3. प्राकृतिक नियमों की देखभाल -** यह नियम हमें स्वच्छता और स्वास्थ्य के महत्व को भी सिखाते हैं। कई अशुद्ध घोषित किए गए जीव बीमारियों के वाहक होते हैं, और आज भी अच्छे स्वास्थ्य के लिए कुछ खाद्य नियमों का पालन करना फायदेमंद हो सकता है।
- 

## निष्कर्ष

लेविटिकस 11:29-31 में सूचीबद्ध जीव यहूदी शुद्धता के नियमों से जुड़े हैं और रब्बियों ने उनके बारे में विभिन्न व्याख्याएँ दी हैं। आज के मसीही विश्वासी के लिए यह नियम पालन करने के लिए आवश्यक नहीं हैं, लेकिन यह हमें पवित्रता, स्वास्थ्य, और आत्मिक शुद्धता के सिद्धांत सिखाते हैं।

P 98 Le.11:34 Defilement of food & drink, if contacting unclean thing

□ □□□□□□ 11:34 (Leviticus 11:34) - □□□□□ □□□

**"तुम्हारे खाने योग्य जो कोई वस्तु उस जल से, जो किसी ऐसे पात्र में हो, छू जाए, वह अशुद्ध ठहरेगी; और ऐसा कोई पेय, जो किसी पात्र में पीने के योग्य हो, वह भी अशुद्ध ठहरेगा।"**

□ □ □ □ □ □)

इस पद में यहोवा (परमेश्वर) इस्राएलियों को यह सिखा रहे हैं कि कौन-से भोजन और पेय अशुद्ध माने जाएंगे। इस कानून के पीछे मुख्य सिद्धांत यह है कि भोजन तभी अशुद्ध हो सकता है जब वह किसी तरल (जल, दूध, तेल, आदि) के संपर्क में आए और वह तरल अशुद्ध हो।

- यदि कोई अशुद्ध वस्तु किसी पात्र में रखे पानी या किसी और पेय पदार्थ को छूती है, तो वह पूरा पेय अशुद्ध हो जाता है।
- यदि ऐसा पानी या तरल किसी खाने की वस्तु को भिगो देता है, तो वह भोजन भी अशुद्ध हो जाता है।

इससे यह सिद्ध होता है कि खाने की वस्तुएं तभी अशुद्ध हो सकती हैं जब वे पहले किसी तरल के संपर्क में आएं।

---

□ □

1. □ (Rashi - □)

- खाना तब तक अशुद्ध नहीं हो सकता जब तक कि वह पानी या अन्य सात तरल पदार्थों में से किसी एक के संपर्क में न आए।
- यदि कोई भोजन पहले गीला हो चुका है, फिर सूख भी जाए, तब भी वह अशुद्ध होने योग्य बना रहेगा।

2. □ □ □-□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ ?

- सात प्रकार के तरल जो भोजन को अशुद्ध कर सकते हैं:
  1. पानी

2. ओस

3. रक्त

4. शराब

5. तेल

6. दूध

7. मधु (शहद)

### 3. इनियोना इन इनियोना (Egg-size Rule)

- किसी भोजन को अशुद्ध होने और अशुद्धता फैलाने के लिए कम-से-कम अंडे के बराबर आकार (kebeitza - כביצה) का होना चाहिए।
- यह इस बात पर आधारित है कि मनुष्य के गले में एक समय में एक मुर्गी के अंडे जितना ही भोजन समा सकता है।

### 4. इनियोना इन इनियोना इनियोना (Ground Connection)

- जब तक भोजन किसी पौधे या पेड़ पर लगा रहता है, वह अशुद्ध नहीं हो सकता।
- केवल वही भोजन अशुद्ध हो सकता है जो पहले से तोड़ा गया हो।

### 5. इनियोना इनियोना इनियोना इनियोना

- केवल वे खाद्य पदार्थ जो मनुष्यों के खाने के लिए उपयुक्त हैं, अशुद्ध हो सकते हैं।
- जानवरों का आहार, जैसे कि घास या चारा, अशुद्धता के नियमों से बाहर है।

### 6. इनियोना इनियोना इनियोना इनियोना इनियोना

- यदि कोई अशुद्ध वस्तु खुले पानी या नदी में गिरती है, तो पानी अशुद्ध नहीं होता।

- लेकिन यदि वह पानी किसी पात्र (बर्तन) में हो और अशुद्ध वस्तु उसे छू जाए, तो पानी अशुद्ध हो जाएगा।
- 

□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□?

### 1. यशु मसीह ने आंतरिक पवित्रता पर जोर दिया

- मसीही धर्म में शारीरिक अशुद्धता से अधिक आत्मिक और नैतिक शुद्धता महत्वपूर्ण मानी जाती है।
- प्रभु यीशु मसीह ने स्पष्ट किया कि ”जो चीज़ें मनुष्य के अंदर से निकलती हैं, वे उसे अशुद्ध बनाती हैं, न कि बाहर से आने वाली चीज़ें।” (मरकुस 7:15)
- इसका अर्थ यह हुआ कि भोजन, पानी, या बाहरी अशुद्धता की तुलना में पाप से बचना अधिक महत्वपूर्ण है।

### 2. शुद्धता के नियमों का नया दृष्टिकोण

- प्रेरितों के काम 10:15 में यहोवा ने पतरस से कहा: ”जिसे परमेश्वर ने शुद्ध ठहराया है, उसे तू अशुद्ध न कह।”
- इससे यह संकेत मिलता है कि पुराने नियम में दी गई खाद्य-शुद्धता की व्यवस्था अब मसीही विश्वास में लागू नहीं है।

### 3. आध्यात्मिक शिक्षा

- यह नियम हमें सिखाता है कि हमारी संगति (association) और संपर्क (influence) हमारी आत्मिक दशा को प्रभावित कर सकते हैं।

- यदि हम गलत विचारों, पापी कार्यों, या बुरी संगति के संपर्क में आते हैं, तो वे हमें आत्मिक रूप से अशुद्ध कर सकते हैं।
- 

□ □□□□□□ (□□□□□)

✓ □□□□□□ 11:34 □□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□  
□□□□ □□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□  
✓ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□  
□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□  
✓ □□□□ □□□□□□□□ □□□, □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□  
□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□  
□□□  
✓ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□, □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□  
□□□□, □□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□

---

## उदाहरण

□ पुराने नियम के अनुसारः यदि कोई चूहा किसी खुले पानी के पात्र में गिर जाए, तो वह पानी  
और उस पानी से बना भोजन अशुद्ध माना जाएगा।

✓ नए नियम के अनुसारः यदि कोई व्यक्ति किसी बुरी संगति में रहता है और बुरे विचार ग्रहण  
करता है, तो वह आत्मिक रूप से अशुद्ध हो सकता है।

□ □□□□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□  
□□□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□!

□ लैब्यवस्था 15:19 "यदि कोई स्त्री रजस्वला हो जाए और उसके शरीर से रक्तस्राव हो,  
तो वह सात दिन तक अशुद्ध रहेगी; और जो कोई उसको छाएगा, वह संध्या तक अशुद्ध  
रहेगा।

---

□ □□□□□ □□□ □□□□□□□□

1□ □□□□□□ (□□□□□□□) □□ □□□□□□

□ □□□□□ □□□□ □□□ निदाहवह अवस्था है जब कोई स्त्री अपने मासिक धर्म (पीरियड्स)  
के दौरान या असामान्य रक्तस्राव के कारण अशुद्ध मानी जाती है।

□ मुख्य बातें:

✓□□□□□□ □□□ □□□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□ □□□□□□ □  
□□□□□□ □□□ □□, □□□ □□□□□□□□ □□□ □□ □□ □□□  
✓□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□ □□□ □□, □□ □□ □□□□□□ □  
□□□□□□ □□□ □□  
✓□□ □□□ □□□□□□, □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□, □□ □□□□□□ □  
□□□ □□

✓यदि रक्तस्राव लंबे समय तक चलता है, तो अशुद्धि तब तक जारी रहती है जब तक कि वह  
बंद न हो जाए और वह सात स्वच्छ दिन न गिने।

✓□□□□ □□□ □□□ मिक्रे(विशेष स्नान) में स्नान करना पड़ता है और याजक के पास  
बलिदान चढ़ाने जाना पड़ता है।

---

□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□

□ 1. मिजराची – केवल वही रक्त जो "स्त्री के स्रोत" (गर्भाशय) से आता है, अशुद्ध करता है।

- 2. रलबग – □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□  
□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□, □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□
  - 3. डेविड ज़्यू हॉफमैन – □□□□ □□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□□□
  - 4. अडरेट एलियाह - यदि एक नवजात बच्ची भी जन्म के समय रक्तसाव करती है, तो वह भी निदाह □□ □□□□ □□□ □□
  - 5. बेखोर शोर - यहूदी स्त्रियों की परंपरा रही है कि वे सात स्वच्छ दिनों की गिनती करती हैं, भले ही केवल एक बूंद रक्त दिखाई दे।
- 

❖ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□

### □ कौन अशुद्ध होता है?

- □□□ □□□□ **निदाह** □□□□□ □□ □□□□ □□, □□ □□ □□
- □□□□ □□
- □□□□ □□
- □□□ □□□□ □□ □□□□ □□, □□□□ □□, □□ □□ □□□□□ □□ □□
- 

### □ शुद्धिकरण प्रक्रिया

- □□□□ □□ □□ □□□□□ □□ **सिकरे**(□□□□ □□□□) □□
  - □□□□ □□□
  - □□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□
  - □□ □□ □□□□□ □□□
  - □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□
  - □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□
-

† इस दस्तावेज़ में निम्नलिखित बाबों का सम्मान किया गया है:

### (Christian View on Niddah)

#### □ 1. यीशु और स्त्रियों का सम्मान

✓ अपने लिए अपनी निधाह का उपयोग करने का अधिकार देते हैं।

अपनी निधाह का उपयोग करने का अधिकार देते हैं।

✓ मरकुस 5:25-34 में यीशु ने एक बीमारी की जैविक विकास को देखा, जिसका उपयोग करने का अधिकार देते हैं।

अपनी निधाह का उपयोग करने का अधिकार देते हैं, जिसका उपयोग करने का अधिकार देते हैं।

✓ अपनी निधाह का उपयोग करने का अधिकार देते हैं, जिसका उपयोग करने का अधिकार देते हैं।

अपनी निधाह का उपयोग करने का अधिकार देते हैं।

#### □ 2. नया नियम और अनुग्रह (Grace in the New Testament)

✓ मसीह ने व्यवस्था को पूरा किया (मत्ती 5:17-18) अपने लिए अपनी निधाह का उपयोग करने का अधिकार देते हैं।

अपनी निधाह का उपयोग करने का अधिकार देते हैं।

✓ गलातियों 3:28 – अपनी निधाह का उपयोग करने का अधिकार देते हैं, जिसका उपयोग करने का अधिकार देते हैं।

अपनी निधाह का उपयोग करने का अधिकार देते हैं।

✓ इब्रानियों 9:13-14 - मसीह का बलिदान आत्मा को पवित्र करता है।

#### □ 3. आधुनिक मसीही चर्च में मान्यता

✓ अपनी निधाह का उपयोग करने का अधिकार देते हैं।

✓ अपनी निधाह का उपयोग करने का अधिकार देते हैं, जिसका उपयोग करने का अधिकार देते हैं (Eastern Orthodox), अपनी निधाह का उपयोग करने का अधिकार देते हैं (Holy Communion) अपनी निधाह का उपयोग करने का अधिकार देते हैं।

✓ अपनी निधाह का उपयोग करने का अधिकार देते हैं, जिसका उपयोग करने का अधिकार देते हैं।

अपनी निधाह का उपयोग करने का अधिकार देते हैं।

→ यहूदी धर्म में: निधाह का उपयोग करने का अधिकार देते हैं, जिसका उपयोग करने का अधिकार देते हैं।

□ □

→ रब्बियों ने: रक्तस्राव के स्रोत, उसकी अवधि और पवित्रता को लेकर कई नियम बनाए।

→ मसीही दृष्टिकोण: यीशु मसीह ने स्त्रियों के साथ करुणा दिखाई और उनके लिए व्यवस्था को पूरा किया, जिससे बलिदानों की आवश्यकता समाप्त हो गई।

→ आज के चर्च में: अधिकतर मसीही इस नियम को नहीं मानते, लेकिन कुछ पारंपरिक चर्चों में अभी भी इसकी छाया बनी हुई है।

□ □ □ □ □ □ □

□ "यीशु मसीह ने कहा, मैं आया हूँ कि उन्हें जीवन मिले, और बहुतायत से मिले।" (यूहन्ना 10:10)

□ इसलिए, आज मसीही विश्वास शरीर की नहीं, बल्कि आत्मा की पवित्रता पर केंद्रित है!

P100 Le.12:2 On Tumah of a woman after childbirth

**लैब्यववस्था 12:2 (Leviticus 12:2) "जब कोई स्त्री गर्भवती हो और पुत्र को जन्म दे, तब वह सात दिन तक अशुद्ध रहेगी; जैसे वह अपने मासिक धर्म के दिनों में अशुद्ध रहती है, वैसे ही वह अशुद्ध रहेगी।"**

## इस पद की हिंदी में व्याख्या

इस पद में यहोवा उन शुद्धता के नियमों को बता रहे हैं, जो प्रसव (बच्चे के जन्म) के बाद एक स्त्री

पर लागू होते हैं। यदि कोई स्त्री पुत्र (लड़का) को जन्म देती है, तो वह 7 दिन तक अशुद्ध मानी जाएगी, जैसे वह मासिक धर्म के समय अशुद्ध होती है।

- यह अवधि केवल उसकी **शारीरिक अशुद्धता** के लिए होती है, न कि नैतिक या **आध्यात्मिक अशुद्धता** के लिए।
  - सात दिन पूरे होने के बाद, उसे 33 दिनों तक पवित्रिकरण की प्रक्रिया में रहना होता है।
  - यदि वह पुत्री (लड़की) को जन्म देती है, तो उसकी अशुद्धता की अवधि **14 दिन** होती है, और उसके बाद 66 दिनों तक पवित्रिकरण की प्रक्रिया चलती है (लैब्यवरस्था 12:5)।
- 

## रब्बियों की व्याख्या और उनके मत

### 1. राशी (Rashi) का मत:

राशी कहते हैं कि "צַדְרִירָה" (की तज़रिया) - जब स्त्री गर्भ धारण करेइस शब्दावली का उपयोग इसलिए किया गया है ताकि यह संकेत मिले कि यदि किसी स्त्री का भ्रूण अपूर्ण रूप से विकसित हुआ हो या गर्भपात हो गया हो, तो भी वह अशुद्ध मानी जाएगी।

### उदाहरण:

यदि कोई महिला गर्भवती हुई लेकिन भ्रूण ठीक से विकसित नहीं हुआ और वह एक द्रव या टिशू जैसी अवस्था में बाहर आया, तब भी उसे उसी तरह अशुद्ध समझा जाएगा, जैसे कि वह संपूर्ण रूप से एक स्वस्थ बच्चे को जन्म देती।

---

### 2. रब्बी सिमलाई का मत:

रब्बी सिमलाई कहते हैं कि जिस प्रकार सृष्टि में सबसे पहले जानवरों और पक्षियों को बनाया गया और अंत में मनुष्य की सृष्टि हुई, उसी प्रकार यहां भी पहले जानवरों से संबंधित शुद्धता और अशुद्धता के नियम दिए गए और फिर मनुष्यों पर चर्चा की गई।

□ **उदाहरण:**

लैव्यव्यवस्था 11 में जानवरों की अशुद्धता के नियमों को बताया गया है, और फिर लैव्यव्यवस्था 12 में स्त्रियों के प्रसव के बाद की अशुद्धता पर चर्चा की गई है।

---

**3. इब्न एज़रा (Ibn Ezra) का मत:**

इब्न एज़रा बताते हैं कि महिला को भूमि (earth) से तुलना की गई है, क्योंकि जिस प्रकार बीज भूमि में पड़कर फल उत्पन्न करता है, उसी प्रकार स्त्री का गर्भ धारण होता है।

□ **उदाहरण:**

एक पुरुष का बीज जब स्त्री के गर्भ में निषेचित होता है, तब एक नया जीवन जन्म लेता है, जैसे बीज मिट्टी में गिरकर अंकुरित होता है।

---

**4. रामबान (Ramban) का मत:**

रामबान इस वाक्यांश "גַּזְעִים" (जब स्त्री गर्भ धारण करे) को समझाते हुए कहते हैं कि रब्बियों का मत है कि यदि स्त्री पहले अपने अंडाणु (seed) को निषेचित करती है, तो पुत्र (लड़का) जन्म लेता है, और यदि पुरुष का बीज पहले निषेचित होता है, तो पुत्री (लड़की) जन्म लेती है।

**उदाहरण:**

यदि महिला का अंडाणु पहले निषेचित होता है, तो पुत्र होने की संभावना अधिक होती है। यह अवधारणा तर्कशास्त्र और जैविक विज्ञान के दृष्टिकोण से बाद में भी चर्चा का विषय रही है।

---

**5. ओर हच्यिम (Or HaChaim) का मत:**

ओर हच्यिम कहते हैं कि इस पद से हमें यह शिक्षा मिलती है कि अगर कोई महिला सिजेरियन सेक्शन (Caesarean Section) से बच्चे को जन्म देती है, तो वह अशुद्ध नहीं मानी जाएगी।

**उदाहरण:**

अगर कोई महिला ऑपरेशन (सिजेरियन सेक्शन) द्वारा बच्चे को जन्म देती है, तो उसे शुद्धि के लिए 7 या 14 दिन प्रतीक्षा नहीं करनी होगी।

---

**6. मलबिम (Malbim) का मत:**

मलबिम बताते हैं कि "तज़रिया" शब्द संकेत करता है कि जन्म प्राकृतिक तरीके से होना चाहिए।

**उदाहरण:**

यदि बच्चा सिजेरियन से जन्म लेता है, तो यह शुद्धि के नियमों के अंतर्गत नहीं आएगा।

---

**आधुनिक मसीही चर्च में इस विषय का क्या महत्व है?**

मसीही दृष्टिकोण से, यीशु मसीह के द्वारा मूसा की व्यवस्था पूरी की गई (मत्ती 5:17), इसलिए आज के चर्च में इस व्यवस्था को सीधे तौर पर लागू नहीं किया जाता। लेकिन कुछ बातें आज भी चर्च में मान्य हैं:

### आध्यात्मिक शुद्धता का महत्व

**मसीही धर्म में यहूदी नियमों के स्थान पर आध्यात्मिक शुद्धता पर अधिक बल**

**दिया जाता है।**

**प्रेरित पौलुस ने कहा कि मसीह में विश्वास करने वाले लोग अब व्यवस्था के अधीन**

**नहीं हैं (रोमियों 6:14)।**

### परिवार और मातृत्व का सम्मान

यह पद मातृत्व के महत्व को दर्शाता है और यह समझाता है कि बच्चा जन्म देना एक

**पवित्र और अनमोल प्रक्रिया है।**

**मसीही चर्च में गर्भवती महिलाओं को विशेष सम्मान दिया जाता है और उनके लिए**

**प्रार्थना की जाती है।**

### बपतिस्मा (बपतिस्मा द्वारा शुद्धि)

**यीशु मसीह के बलिदान के कारण, अब कोई भी व्यक्ति विश्वास और बपतिस्मा**

**के द्वारा आत्मिक शुद्धि प्राप्त कर सकता है (मरकुस 16:16)।**

**पुराने नियम में जो प्रायश्चित्त और शुद्धि के लिए अनुष्ठान थे, उनकी पूर्ति यीशु**

**मसीह के बलिदान द्वारा हो गई।**

## निष्कर्षः

1. यह पद प्रसव के बाद की शारीरिक अशुद्धता की अवधि को निर्धारित करता है।
2. यह नियम विशेष रूप से यहूदी समाज के लिए दिया गया था, और यह स्त्री-पुरुष के शरीर विज्ञान और समाजिक जीवन को भी प्रतिबिंबित करता है।
3. रब्बियों ने इस पद को विभिन्न दृष्टिकोणों से समझाया, जिसमें प्राकृतिक जन्म, सिजेरियन सेकरान, गर्भधारण की प्रक्रिया, और अशुद्धि के नियमों को शामिल किया गया।
4. मसीही विश्वास के अनुसार, यीशु मसीह ने व्यवस्था को पूर्ण कर दिया, इसलिए आज चर्च में यह नियम लागू नहीं होता, लेकिन आध्यात्मिक शुद्धता, मातृत्व का सम्मान, और पारिवारिक पवित्रता पर बल दिया जाता है।

□ अंततः, यह पद यह सिखाता है कि जीवन पवित्र है, और इसे संभालने के लिए हमें यहोवा की आज्ञाओं का सम्मान करना चाहिए।

P101 Le.13:3 On Tumah of a leper

□ □□□□□□□ 13:3 (Leviticus 13:3) □□□□□  
□□□

"याजक उसको देखने के बाद यदि यह देखे कि चर्म रोग स्थान में रवेत केश हो गया है और रोग का स्थान त्वचा से अधिक गहरा दिखाई दे रहा है, तो यह कोढ़ (tzara'at) की विपत्ति है। याजक उसे अशुद्ध ठहराएगा।"

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □

लेवितिकस 13 अध्याय में *tzara'at* (जिसे अक्सर कुष रोग कहा जाता है) के नियम दिए गए हैं।

लेकिन बाइबल के विद्वान इसे एक साधारण शारीरिक बीमारी नहीं मानते, बल्कि इसे एक **आध्यात्मिक और शारीरिक अशुद्धि** का संकेत मानते हैं।

इस पद में तीन मुख्य बातें दी गई हैं जो यह निर्धारित करने में मदद करती हैं कि कोई व्यक्ति *tzara'at* (कोढ़) से पीड़ित है या नहीं:

1. **चर्म रोग में सफेद बाल (White Hair)** - यदि प्रभावित त्वचा में बाल सफेद हो जाते हैं, तो यह गंभीर रोग का संकेत है।
2. **त्वचा से गहरा धब्बा (Deep Appearance)** - यदि धाव त्वचा की सामान्य सतह से गहरा दिखता है, तो यह अस्वस्थता को दर्शाता है।
3. **याजक का निर्णय (Priest's Role)** - केवल याजक ही यह तय कर सकता था कि व्यक्ति शुद्ध है या अशुद्ध।

इसका मतलब यह था कि बीमारी को आत्मिक पापों से जोड़ा गया था, और इसे केवल चिकित्सा दृष्टि से नहीं देखा जाता था, बल्कि पाप के दंड के रूप में भी माना जाता था।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □

1. **बहार (baheref) - चमकदार धब्बा**

- यह एक सफेद, चमकदार स्थान होता था जो त्वचा पर उभरता था।

## 2. גָּאשׁ (se'eith) - उठी हुई त्वचा

- यह त्वचा पर एक ऊँचा धब्बा होता था, जिसे बीमारी के रूप में देखा जाता था।

## 3. קֹהֶן (kohen) - याजक

- रोग का फैसला कोई डॉक्टर नहीं बल्कि याजक करता था। क्योंकि यह केवल शारीरिक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक अशुद्धि भी थी।
- 

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ 1. रशी (Rashi) - प्रसिद्ध यहूदी टीकाकार रशी ने कहा कि *tzara'at* एक आम बीमारी नहीं थी, बल्कि यह व्यक्ति की आत्मिक स्थिति को दर्शाने के लिए परमेश्वर द्वारा भेजा गया दंड था।  
इसे झूठ, गपशप (लाशोन हारा), और अभिमान के कारण माना जाता था।

□ 2. रांबम (माइमोनिडीज) - उन्होंने कहा कि *tzara'at* केवल शरीर तक सीमित नहीं था, बल्कि यह कपड़ों और घरों तक भी फैल सकता था (लेवितिकस 14:34)। यह इस बात का संकेत था कि व्यक्ति को आत्मिक शुद्धिकरण की आवश्यकता है।

□ 3. मिद्रश (Midrash Tanchuma) - मिद्रश बताता है कि यह बीमारी विशेष रूप से उन लोगों को होती थी जो गपशप (Lashon Hara) करते थे। उदाहरण के लिए, मूसा की बहन मरियम को भी गपशप के कारण *tzara'at* हो गया था (गिनती 12:10)।

□ 4. टोसेफता (Tosefta Negaim 6:1) - इसमें बताया गया है कि याजक का निर्णय बहुत महत्वपूर्ण था। अगर व्यक्ति को याजक ने अशुद्ध नहीं ठहराया, तो वह समाज में रह सकता था, भले ही उसमें *tzara'at* के लक्षण हों।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □ □ □ ?

## □ 1. पाप और आत्मिक अशुद्धि का संकेत

- आज के मसीही चर्च इस पद को शारीरिक बीमारी के संदर्भ में नहीं बल्कि आत्मिक अशुद्धता के प्रतीक के रूप में देखते हैं।
- यीशु मसीह ने कई लोगों को चंगाई दी, जो शारीरिक और आत्मिक रूप से अशुद्ध माने जाते थे। (मत्ती 8:2-3)

## □ 2. पश्चाताप और आत्मिक चंगाई

- इस पद का संदेश यह है कि जब कोई व्यक्ति अपने पापों से पश्चाताप करता है, तो वह आत्मिक रूप से चंगा हो सकता है।
- यीशु ने कहा, "मैं धर्मियों को नहीं, परन्तु पापियों को मन फिराने के लिए बुलाने आया हूँ।" (लूका 5:32)

## □ 3. मसीह द्वारा शुद्धता

- लेवितिकस में याजक को अशुद्धता को पहचानने की शक्ति दी गई थी, लेकिन वह शुद्ध करने की शक्ति नहीं रखता था।
- परंतु यीशु मसीह न केवल पहचानते हैं, बल्कि हमें पूर्ण रूप से शुद्ध भी कर सकते हैं। (1 यूहन्ना 1:7)

□ □ □ □ □ □ □ □

लेवितिकस 13:3 केवल एक प्राचीन चिकित्सा नियम नहीं है, बल्कि यह आत्मिक चेतावनी भी देता है कि हमें अपनी आत्मा को शुद्ध रखना चाहिए।

- यहूदियों के लिए, *tzara'at* आत्मिक बीमारी और पाप से जुड़ा हुआ था।
- रबियों ने इसे अहंकार, गपशप, और पाप के दंड के रूप में देखा।
- आज के मसीही चर्च इसे आत्मिक शुद्धि और यीशु के द्वारा चंगाई के संदेश के रूप में देखते हैं।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □  
 □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □  
 □ □ □ □ □ □ □ □ ! □ ✤

P102 Le.13:51 On garments contaminated by leprosy

**लेवितिकस 13:51 (Leviticus 13:51) - हिंदी में बाइबल पद**

"सातवें दिन वह उसे जाँच ले; और यदि वह कोढ़ उस वस्त्र में, या बुने अथवा ओढ़ने की किसी वस्तु में, या ऊनी या सूती किसी वस्तु में, या चमड़े की किसी वस्तु में फैल गया हो, तो वह अनिवार्य कोढ़ है, वह वस्तु अशुद्ध ठहराई जाएगी।"

**समझाइए कि इसका अर्थ क्या है**

यह पद वस्त्रों, चमड़े, ऊन और सूती कपड़ों में पाए जाने वाले तज़ारात (תְּצָרָעַת – Tzara'at) यानी "कोढ़" के बारे में बात करता है। बाइबल में यह केवल एक शारीरिक बीमारी नहीं है, बल्कि इसे

**आध्यात्मिक अशुद्धता (ritual impurity) से जोड़ा गया है।**

अगर किसी वस्त्र पर यह कोढ़ फैलता हुआ पाया जाए, तो उसे "अशुद्ध" ठहराया जाता है और जलाया जाना आवश्यक होता है। इस तरह के कोढ़ को "मेमाअरेट" (מְמָאָרֶת – mema'aret)

**कहा गया है, जिसका अर्थ है "घातक" या "नाशकारी"।**

---

## रब्बियों की व्याख्याएँ

### 1. मेमाअरेट (מְמָאָרֶת) का अर्थ क्या है?

- **राशी (Rashi)** – उन्होंने समझाया कि मेमाअरेट का अर्थ "चुभने वाला कांटा" (pricking brier) जैसा है, यानी यह धीरे-धीरे नष्ट करने वाली चीज़ है।
- **रशबाम (Rashbam)** – उन्होंने इसे "दर्दनाक कांटा" कहा, और इसे शाप (curse) और कर्मी (deficiency) से जोड़ा।
- **इब्न एज़रा (Ibn Ezra)** – उनके अनुसार, यह शब्द "पीड़ादायक" (painful) का संकेत देता है।
- **रव हिर्श (Rav Hirsch)** – उन्होंने तर्क दिया कि इसका संबंध "खोखला करना" (to hollow out) या "नींव को कमज़ोर करना" (undermining) से हो सकता है, जिससे वस्त्र का नाश होता है।
- **ओहेव गेर (Ohev Ger)** – उन्होंने यहूदियों के विद्वान रंबान (Ramban) को उद्धृत करते हुए कहा कि यह कांटों से जुड़ा शब्द है, जो दर्शाता है कि यह वस्त्र के लिए हानिकारक है।

### 2. तज़ारात के फैलने का प्रभाव

- **डेविड ज़्वी हॉफमैन (David Zvi Hoffmann)** – वे बताते हैं कि यदि नया दाग कपड़े पर दूर-दूर तक फैल जाए, तो इसे बढ़ता हुआ माना जाता है और यह अशुद्ध माना जाएगा।

### 3. तज़ारात और चमड़े पर इसका प्रभाव

- **बिर्कत अशेर (Birkat Asher)** - वे बताते हैं कि केवल उन चमड़ों पर कोढ़ हो सकता है जो पहले से उपयोग के लिए तैयार किए गए हैं।
- **हामेक दावार (Haamek Davar)** - वे कहते हैं कि यदि एक कोढ़ग्रस्त चमड़े के टुकड़े का उपयोग लकड़ी या धातु के औजार पर किया जाए, तो भी इसे "फैलता हुआ" माना जाएगा।

### 4. तज़ारात और जलाने का नियम

- **पानेआच रज़ा (Paaneach Raza)** - उनके अनुसार, मेमाअरेट(महा-कोढ़) का अर्थ यह है कि वस्त्र शापित हो गया है, और यह पूरे कपड़े को संक्रमित कर देगा, इसलिए उसे जलाना ही एकमात्र उपाय है।
- **रेगिजओ (Reggio)** – उन्होंने कहा कि चमड़े का कोढ़ ठीक नहीं हो सकता, इसलिए इसे जलाना आवश्यक है।

### 5. तज़ारात और किसी भी लाभ को निषिद्ध करना

- **तोरा तेमीमा (Torah Temimah)** - उन्होंने कहा कि मेमाअरेटका अर्थ यह भी है कि उस वस्त्र से कोई लाभ नहीं उठाया जा सकता।
- **रव हिर्श (Rav Hirsch)** - वे इस बात पर ज़ोर देते हैं कि ऐसे वस्त्रों का उपयोग प्रतिबंधित किया जाना चाहिए।

## आज के मसीही चर्च में इसका क्या अर्थ है?

मसीही परंपराओं में तज़ारात (Tzara'at) को आध्यात्मिक अशुद्धि के प्रतीक के रूप में देखा जाता है। यह केवल बाहरी रोग नहीं है, बल्कि यह पाप, नैतिक भ्रष्टाचार, और आत्मिक अशुद्धता का प्रतीक है।

### 1. आध्यात्मिक बीमारी का संकेतः

- बाइबल में "कोढ़" को अक्सर पाप से जोड़ा गया है। जिस प्रकार इस्राएलियों को कोढ़ से दूर रहना था, उसी प्रकार मसीही विश्वासियों को भी आत्मिक रूप से अशुद्ध कार्यों से दूर रहना चाहिए।

### 2. प्रभु यीशु मसीह और कोढ़ी (लूका 17:11-19)

- जब प्रभु यीशु मसीह ने 10 कोढ़ियों को चंगा किया, तो केवल एक वापस लौटकर धन्यवाद देने आया। यह घटना दिखाती है कि कोढ़ से चंगाई केवल शारीरिक नहीं थी, बल्कि आत्मिक भी थी।
- यहाँ संदेश यह है कि शारीरिक चंगाई से अधिक महत्वपूर्ण आत्मिक चंगाई है, जो प्रभु यीशु मसीह में पाई जाती है।

### 3. पवित्रता का महत्व

- पुराने नियम में कोढ़ की जाँच याजक (प्रिस्ट) करता था, लेकिन नए नियम में हमारा महायाजक (High Priest) प्रभु यीशु मसीह हैं, जो हमें पाप से शुद्ध कर सकते हैं (इब्रानियों 4:14-16)।

## 4. चर्च और आत्मिक अशुद्धता

- मसीही चर्चों में तज़ारात का मुख्य संदेश यह है कि पाप हमारे जीवन में फैल सकता है जैसे कोढ़ वस्त्रों में फैलता है।
  - जब हम अपने पापों का अंगीकार करके मसीह में शुद्ध होते हैं, तो यह हमारे आत्मिक जीवन की चंगाई का प्रतीक बन जाता है।
- 

### निष्कर्ष

लेवितिकुस 13:51 केवल एक प्राचीन यहूदी कानून नहीं है, बल्कि यह एक गहरी आत्मिक सच्चाई को प्रकट करता है। यह हमें सिखाता है कि पाप और अशुद्धता फैल सकती है, और इसे तुरंत हटाना आवश्यक होता है, ठीक वैसे ही जैसे कोढ़ग्रस्त वस्त्रों को जलाया जाता था।

मसीही दृष्टिकोण से, यह हमें प्रभु यीशु मसीह की शुद्धिकरण करने वाली शक्ति की ओर इंगित करता है, जो हमें न केवल शारीरिक बल्कि आत्मिक रूप से भी चंगा कर सकते हैं।

**"यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह विश्वासयोग्य और धर्मी है, कि हमारे पापों को क्षमा करे और हमें सब अधर्म से शुद्ध करे।"** - (1 यूहन्ना 1:9)

P103 Le.14:44 On a leprous house

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ 14:44 (Leviticus 14:44)

□ □ □ □ □ □ □

**"तब याजक आए और जाँच करे, और देखे कि वह कोढ़ उस घर में फैल गया है, तो वह घर**

**भयंकर कोढ़ से अशुद्ध ठहराया जाए; वह अशुद्ध है।"**

---

□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□

लैब्यववस्था 14 में यहूदी व्यवस्था के अनुसार किसी घर में 'कोढ़' (*tzara'at*) का पाया जाना और उसका निवारण बताया गया है। इस संदर्भ में कोढ़ का अर्थ किसी संक्रामक त्वचा रोग से नहीं बल्कि किसी प्रकार के दाग, रंग परिवर्तन, या घर की दीवारों पर फंगस या सड़न से है।

### प्रक्रिया:

1. यदि घर में कोढ़ जैसा दाग दिखाई दे, तो याजक (पुजारी) आकर निरीक्षण करेगा।
  2. यदि कोढ़ 7 दिनों तक वैसा ही बना रहता है, तो याजक दूसरी बार जांच करेगा।
  3. यदि दाग बढ़ गया हो, तो प्रभावित पत्थरों को हटाकर दीवारों को फिर से पलस्तर किया जाएगा।
  4. यदि कोढ़ दोबारा उभर आए, तो पूरा घर गिरा दिया जाएगा क्योंकि उसे 'अशुद्ध' माना जाता है।
- 

□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□

□ 1. "Tzara'at Mema'eret" (תִּצְרָאַת מֵמָאֵרֶת)

इस पद में "tzara'at mema'eret" शब्द का उल्लेख है, जो यह दिखाता है कि यह कोढ़ अन्य प्रकारों से अधिक गंभीर है। यह न केवल बढ़ता है, बल्कि यह घर के पूरे ढांचे को प्रभावित कर सकता है।

◊ □ □□□□ □□□□□ □ □ □□□□□: वे कहते हैं कि यदि कोटु वापस आ जाता है, तो यह

**फैलने के बराबर माना जाएगा, भले ही वह पहले से बड़ा न हो।**

## □ 2. □□□ (Rashi) □□ □□□□□□□

रशी का कहना है कि यह पद दो स्थितियों को जोड़ता है:

- पहला, यदि पहला सप्ताह बीतने पर कोटु जस का तस रहता है, और फिर दूसरे सप्ताह के अंत में फैलता है, तो इसे 'फैलाव' माना जाएगा।
- दूसरा, यदि यह पहले सप्ताह में ही फैल जाता है, तो उसे तुरंत अशुद्ध मान लिया जाएगा।

◊ उदाहरण: मान लीजिए कि किसी दीवार पर हरा या लाल धब्बा बनता है। यदि पहला निरीक्षण होने के बाद दूसरा निरीक्षण करने पर दाग जस का तस रहता है, तो तीसरी बार निरीक्षण के बाद इसे 'फैलाव' माना जाएगा।

## □ 3. □□□□□ □□□□□ □□□□□ (David Zvi Hoffmann)

- हॉफमैन बताते हैं कि यदि कोटु की बीमारी वापस लौटती है, तो इसे स्वतः फैलाव माना जाएगा क्योंकि पहले की गई सफाई से यह समाप्त हो जाना चाहिए था।
- वे 'फैलाव' को 'नया अंकुरण' (sprout) के रूप में देखते हैं।

## □ 4. □□□ □□□□□ (Gur Aryeh)

- गुर आर्ये मानते हैं कि *tzara'at mema'eret* शब्द का प्रयोग घरों और वस्त्रों के लिए समान रूप से किया गया है।
- वे इसे *gezeirah shava* (तर्कसंगत तुलना) के आधार पर मानते हैं कि जैसे वस्त्रों में

धब्बा लौटने पर अशुद्ध माना जाता है, वैसे ही घर में भी कोढ़ लौटने पर उसे अशुद्ध समझा जाएगा।

□ 5. □□□□□□ (Mizrachi)

- वे कहते हैं कि यदि कोढ़ उसी स्थान पर वापस लौटता है, तो उसे 'फैलाव' नहीं माना जाएगा, लेकिन यदि वह एक अलग स्थान पर फैलता है, तो इसे अशुद्ध माना जाएगा।

◊ उदाहरण: यदि एक घर में पहले खिड़की के पास कोढ़ था और वह हटाने के बाद दरवाजे के पास उभरता है, तो यह संकेत होगा कि घर पूरी तरह अशुद्ध हो चुका है।

---

† □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□  
□□□□ □□□□ □□□□□ □□?

□ 1. □□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□

मसीही परंपरा में घर में कोढ़ को एक आध्यात्मिक अशुद्धता और पाप का प्रतीक माना जाता है।

□ उदाहरण:

- जैसे एक घर को पूरी तरह साफ किया जाता है और फिर भी कोढ़ लौट आए, तो उसे गिरा देना पड़ता है, वैसे ही यदि कोई व्यक्ति पाप करता है और पश्चाताप करने के बाद भी वह पाप की ओर लौटता है, तो उसे अपने जीवन में कठोर निर्णय लेने पड़ेंगे।

□ 2. □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□

यीशु ने कई लोगों को कोढ़ से चंगा किया था (लूका 5:12-14, मत्ती 8:1-4)।

- यह दिखाता है कि शुद्धि केवल बाहरी नहीं, बल्कि आंतरिक भी होनी चाहिए।
- यीशु ने कहा कि वह केवल शरीर की नहीं, बल्कि आत्मा की अशुद्धता को भी साफ़ करने आए हैं।

□ 3. □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□

- यह पद हमें सिखाता है कि पाप को अनदेखा नहीं किया जाना चाहिए।
- यदि कोटि का सही समय पर इलाज न किया जाए, तो पूरे घर को नष्ट करना पड़ता है।
- इसी प्रकार, यदि कोई व्यक्ति पाप में निरंतर बना रहता है, तो वह आत्मिक विनाश की ओर बढ़ता है।

□ 4. □□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□

□□□□□□□□□□□□

- जिस तरह घर को गिराने के बाद नए सिरे से बनाया जाता था, उसी तरह मसीही विश्वास में यदि कोई पाप से दूर होता है, तो वह नया जीवन शुरू कर सकता है (2 कुरिन्थियों 5:17)।
- आत्मिक रूप से, हमें अपने जीवन से "पुराने पत्थरों" (पापी आदतें) को निकालकर "नया पलस्तर" (ईश्वर का वचन) लगाना चाहिए।

□ □□□□□□□

लैब्यवस्था 14:44 केवल एक बाहरी घर के कोटि के बारे में नहीं, बल्कि आध्यात्मिक

अशुद्धता और पाप के खिलाफ चेतावनी का प्रतीक है।

- यहूदी परंपरा में इसे अनुशासन और आत्मिक सफाई का हिस्सा माना गया।
- मसीही परंपरा में यह पाप से मुक्त होने, प्रभु के न्याय और दया को दर्शाने का प्रतीक

है।

- आज के मसीही चर्च में यह पद शुद्धिकरण, आत्मिक पुनर्निर्माण और प्रभु की पवित्रता को बनाए रखने का संदेश देता है।

□ संदेश: □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□

□□ □□□□□ □□□□ □□□□, □□□□ □□ "□□□□□□□□ □□□□" (□□□)

□□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □

P104 Le.15:2 On Tumah of a zav (man with a running issue)

### लैव्यव्यवस्था 15:2 (Leviticus 15:2) - हिंदी में बाइबल पद

"इस्राएलियों से कहो, यदि किसी पुरुष के शरीर से कोई स्राव निकलता है, तो वह अशुद्ध

ठहराया जाएगा।"

### समझाइए - लैव्यव्यवस्था 15:2 का अर्थ

यह पद शरीर से निकलने वाले एक असामान्य स्राव (discharge) के कारण अशुद्धि के नियमों

को बताता है। यह स्राव प्राकृतिक नहीं है, बल्कि किसी बीमारी या शारीरिक समस्या के कारण

उत्पन्न होता है। इस प्रकार के स्राव को "ज़व" (Zav) कहा जाता है, और इससे ग्रसित व्यक्ति को

अशुद्ध माना जाता था।

बाइबल में दिए गए यह नियम इस्राएली समाज में पवित्रता बनाए रखने के लिए थे। पवित्रता

केवल आध्यात्मिक नहीं थी, बल्कि यह शारीरिक स्वच्छता और स्वास्थ्य से भी जुड़ी हुई थी।

## रब्बियों की व्याख्या और यहदी परंपरा में समझ

### 1. "ज़व" (Zav) क्या होता है?

- राशी (Rashi) के अनुसार, "ज़व" एक ऐसा तरल पदार्थ है जो सामान्य वीर्य (semen) से अलग होता है और यह बीमारी के कारण उत्पन्न होता है।
- मिद्रश और तालमूद बताते हैं कि यह स्राव देखने में पतला और पानी जैसा होता है, जो आमतौर पर बीमार शरीर से आता है।
- कुछ रब्बियों ने इसे पाचन समस्या, आंतरिक अंगों की कमज़ोरी, या संक्रमित रोग से जोड़कर देखा है।
- यह वीर्य जैसा नहीं होता, बल्कि यह अस्वस्थ शरीर से निकलने वाली अशुद्धता को दर्शाता है।

### 2. कौन अशुद्ध माना जाएगा?

- इस नियम को केवल इस्लामी पुरुषों पर लागू किया गया था।
- "बने यिस्लाम" (इस्लाम की संतानें) शब्द दर्शाता है कि यह विशेष रूप से यहूदियों के लिए था, हालांकि बाद में यहूदियों ने इसे धर्मातिरितों (converts) पर भी लागू किया।
- तालमूद के अनुसार, यदि यह स्राव किसी बाहरी कारण से हुआ (जैसे अत्यधिक परिश्रम, गिरना, या भोजन से), तो व्यक्ति अशुद्ध नहीं माना जाएगा।

### 3. "मिस्सारो" (उसके शरीर से) का क्या अर्थ है?

- गुर आर्ये (Gur Aryeh) के अनुसार, यह विशेष रूप से जननांगों (genitals) से निकलने वाले स्राव की बात करता है, न कि शरीर के किसी अन्य भाग से।

- यदि कोई अन्य तरल पदार्थ (जैसे रक्त, लार, या पस) शरीर के अन्य भाग से निकलता है, तो इसे इस अशुद्धि की श्रेणी में नहीं रखा गया।

#### 4. "तम्हु" (अशुद्ध होगा) का क्या अर्थ है?

- इसाएली धर्मगुरु बताते हैं कि "तम्हु" का अर्थ यह है कि न केवल व्यक्ति अशुद्ध होता है, बल्कि वह अन्य चीजों को भी अशुद्ध कर सकता है।
- उदाहरण के लिए, अगर "ज़व" वाला व्यक्ति किसी चीज़ को छूता है, तो वह वस्तु भी अशुद्ध हो जाती है और उसे विशेष रीति से शुद्ध करना पड़ता था।

#### 5. क्यों यह नियम दिया गया?

- यह नियम केवल आध्यात्मिक पवित्रता के लिए नहीं, बल्कि संक्रामक रोगों (infectious diseases) के नियंत्रण के लिए भी था।
- यह नियम इसाएली शिविर को बीमारियों से बचाने के लिए थे, ताकि लोग स्वच्छता बनाए रखें और रोगों को फैलने से रोकें।
- डॉ. डेविड हॉफमैन के अनुसार, यह नियम बाइबल के स्वास्थ्य-आधारित नियमों का हिस्सा था, जो संक्रामक रोगों से बचाव के लिए बनाए गए थे।

#### आज के मसीही चर्च में इसका क्या महत्व है?

##### 1. आत्मिक शुद्धता और पाप का प्रतीक

- मसीही विश्वास में, यह नियम पाप से आत्मिक अशुद्धि का प्रतीक माना जाता है।
- जैसे पुरानी वाचा (Old Covenant) में शारीरिक अशुद्धता के लिए नियम थे, वैसे ही नई

**वाचा (New Covenant) में पाप से शुद्ध होने के लिए यहोवा यीशु के बलिदान पर बल**

**दिया जाता है।**

- प्रेरित पौलुस ने लिखा:

**"तुम्हारे शरीर को पवित्र और जीवित बलिदान के रूप में अर्पित करो, जो यहोवा को**

**ग्रहणयोग्य हो।"** (रोमियों 12:1)

**इसका अर्थ यह है कि मसीही जीवन में भी शुद्धता आवश्यक है, लेकिन अब यह**

**आत्मिक रूप में होती है।**

## 2. आत्मिक और शारीरिक स्वच्छता का महत्व

- यीशु ने स्पष्ट किया कि बाहरी अशुद्धता से अधिक महत्वपूर्ण है हृदय की शुद्धता  
(मरकुस 7:15)।
- हालाँकि, मसीही चर्च आज भी शरीर की स्वच्छता और स्वास्थ्य के नियमों को महत्व देता है।
- चर्च में लोगों को पवित्रता और आत्मिक शुद्धता पर ध्यान देने की शिक्षा दी जाती है।

## 3. आधुनिक स्वास्थ्य और चिकित्सा से संबंध

- आज हम जानते हैं कि कई संक्रामक रोग शारीरिक स्राव के माध्यम से फैल सकते हैं।
- बाइबल के ये नियम हमें यह सिखाते हैं कि स्वच्छता, हाथ धोने, और स्वास्थ्य नियमों का पालन करना महत्वपूर्ण है।
- COVID-19 महामारी के दौरान चर्चों ने भी इन नियमों का पालन किया, जो अप्रत्यक्ष रूप से बाइबल के स्वच्छता सिद्धांतों से जुड़े हुए हैं।

## निष्कर्ष

लैब्यव्यवस्था 15:2 में दिए गए नियम उस समय की सामाजिक और धार्मिक पवित्रता बनाए

रखने के लिए थे। यह यहूदी परंपरा में शारीरिक और आत्मिक स्वच्छता का एक महत्वपूर्ण

**नियम था।**

आज के मसीही चर्च में इसका सीधा पालन नहीं किया जाता, लेकिन इसके पीछे की भावना

अभी भी महत्वपूर्ण मानी जाती है—**आत्मिक शुद्धता, पवित्रता, और शारीरिक स्वच्छता।**

### □ मुख्य शिक्षा:

1. **आध्यात्मिक रूप से शुद्ध रहना महत्वपूर्ण है।**
2. **शरीर और स्वास्थ्य की देखभाल करना भी बाइबल के सिद्धांतों से मेल खाता है।**
3. **यीशु ने हमें सिखाया कि बाहरी पवित्रता से अधिक महत्वपूर्ण हृदय की पवित्रता है।**

□ "□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□, □□□□□□□ □□ □□□□□ □□  
□□□□□□□" (□□□□ 5:8)

P105 Le.15:6 On Tumah of semen

### लेविटिकस 15:6 (हिंदी में)

"और जो कोई उस आसन पर बैठे जिस पर वह स्रावग्रस्त बैठा हो, वह अपने वस्त्रों को धोए

**और जल में स्नान करे और संध्या तक अशुद्ध रहेगा।"**

---

## हिंदी में व्याख्या

यह पद एक व्यक्ति के विषय में बात कर रहा है जो किसी ऐसे आसन पर बैठता है जिस पर

पहले से ही एक ज़ाव (स्रावग्रस्त व्यक्ति) बैठा था। यह नियम हमें यह सिखाता है कि अशुद्धि

केवल सीधे संपर्क से नहीं फैलती, बल्कि उस वस्तु के माध्यम से भी फैल सकती है जिस पर

**ज़ाव बैठा था।**

### मुख्य बिंदुः

1. **सीधे संपर्क की आवश्यकता नहीं -** यदि कोई व्यक्ति उस वस्तु पर बैठे जिस पर पहले से ही ज़ाव बैठ चुका था, तो वह व्यक्ति भी अशुद्ध हो जाता है, भले ही उसने ज़ाव को सीधे न छुआ हो।
2. **अनेक परतों के बावजूद अशुद्धि फैलती है -** यदि ज़ाव किसी वस्तु पर बैठता है और फिर उसके ऊपर कई अन्य वस्तुएँ रखी जाती हैं, तो जो कोई भी उनके ऊपर बैठेगा, वह अशुद्ध हो जाएगा।
3. **वस्तु के माध्यम से अशुद्धि का स्थानांतरण -** यदि कोई वस्तु (जैसे कुर्सी, बिस्तर, गद्दी) ज़ाव के बैठने से अशुद्ध हो गई है, तो जो कोई उस पर बैठेगा, उसे भी अपने वस्त्र धोने होंगे और जल में स्नान करना होगा।
4. **अशुद्धि केवल ज़ाव की उपस्थिति में नहीं होती -** पद कहता है "जिस पर वह बैठा हो," जिसका अर्थ यह है कि अशुद्धि केवल तभी नहीं फैलती जब ज़ाव वहाँ उपस्थित हो, बल्कि उसके जाने के बाद भी वह वस्तु अशुद्ध बनी रहती है।

## रब्बियों की व्याख्या और व्याख्या के उदाहरण

### 1. मलबीम (Malbim)

- उन्होंने पद के शब्द "עַלְשָׁא" (अशेर येरोव अलाव) पर ध्यान दिया और कहा कि यह अशुद्धि की स्थिति को जारी रखने का संकेत देता है।
- इसका अर्थ है कि भले ही ज़ाव वहाँ न हो, वह वस्तु फिर भी अशुद्ध बनी रहती है और जो कोई उसे छूता है या उस पर बैठता है, वह भी अशुद्ध हो जाता है।

✓**उदाहरण:** यदि कोई व्यक्ति किसी पार्क में बैठने की जगह पर बैठता है, और उससे पहले वहाँ कोई सावग्रस्त व्यक्ति (ज़ाव) बैठा था, तो बाइबल के अनुसार वह नया व्यक्ति भी अशुद्ध हो जाएगा और उसे स्नान करके खुद को शुद्ध करना होगा।

### 2. रशी (Rashi)

- रशी कहते हैं कि यह नियम परतों पर भी लागू होता है।
- यदि दस वस्तुएँ एक के ऊपर एक रखी हों और सबसे नीचे की वस्तु पर ज़ाव बैठ चुका हो, तो सभी वस्तुएँ अशुद्ध हो जाती हैं और ऊपर बैठने वाला भी अशुद्ध होगा।

✓**उदाहरण:** अगर ज़ाव एक चटाई पर बैठता है, और फिर उसके ऊपर एक गद्दा रखा जाता है, और उसके ऊपर एक तकिया, फिर कोई व्यक्ति तकिए पर बैठता है - तो वह व्यक्ति भी अशुद्ध माना जाएगा।

### 3. आदरेत एलियाहु (Aderet Eliyahu)

- उन्होंने कहा कि यह नियम बाल और नाखूनों पर भी लागू होता है।
- यदि कोई व्यक्ति ज़ाव द्वारा अशुद्ध वस्तु पर बैठता है, तो उसके शरीर का हर भाग, यहाँ  
तक कि उसके बाल और नाखून भी अशुद्ध माने जाते हैं।

✓उदाहरण: यदि कोई व्यक्ति ज़ाव द्वारा अशुद्ध किए गए वस्त्र पहन ले, तो उसके नाखून और  
बाल भी अशुद्ध माने जाएंगे और उसे स्नान करना होगा।

---

### 4. तोरा तेमीमा (Torah Temimah)

- उन्होंने स्पष्ट किया कि "כל על" (अल हाकली) का अर्थ यह है कि यह अशुद्धि किसी  
विशेष वस्तु तक सीमित नहीं है।
- इसका अर्थ है कि यदि ज़ाव किसी भी प्रकार की बैठने की वस्तु (कुर्सी, चटाई, घोड़ा, ऊँट  
आदि) पर बैठता है, तो वह वस्तु और उस पर बैठने वाला व्यक्ति अशुद्ध हो जाएगा।

✓उदाहरण: अगर ज़ाव किसी गाड़ी (रथ, ऊँट, घोड़े) की सीट पर बैठा था, और बाद में कोई  
दूसरा व्यक्ति वहाँ बैठता है, तो वह भी अशुद्ध हो जाएगा।

---

### मसीही चर्च में आज इसका क्या महत्व है?

मसीही दृष्टिकोण से, यीशु मसीह ने शरीर की बाहरी अशुद्धता से अधिक आंतरिक शुद्धता  
पर बल दिया।

नए नियम में शुद्धता का नया अर्थ - मरकुस 7:15 में यीशु ने कहा:

**"मनुष्य को अपवित्र करने वाली कोई भी चीज़ बाहर से नहीं आती, बल्कि जो कुछ**

**उसके मन से निकलती है वही उसे अपवित्र करती है।"**

इससे यह स्पष्ट होता है कि पीशु ने बाहरी शुद्धता के नियमों को आत्मिक रूप से

समझने की शिक्षा दी।

**हिन्दीयों 9:13-14**

**"यदि बकरों और बैलों का लहू और एक बछिया की राख छिड़कने से अशुद्ध**

**लोगों को शरीर की शुद्धता के लिए पवित्र किया जाता था, तो मसीह का लहू,**

**जिसने शाश्वत आत्मा के द्वारा स्वयं को परमेश्वर के लिए निर्दोष बलिदान किया,**

**तुम्हारे विवेक को मरे हुए कर्मों से कितना अधिक शुद्ध करेगा ताकि तुम जीवित**

**परमेश्वर की सेवा कर सको।"**

इस पद के अनुसार, अब बाहरी शुद्धता नहीं बल्कि मसीह के बलिदान से आंतरिक

शुद्धता महत्वपूर्ण है।

**गलातियों 3:24-25**

**"इसलिए व्यवस्था मसीह तक पहुँचने के लिए हमारा मार्गदर्शक बनी, ताकि हम**

**विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरें। परन्तु जब विश्वास आ गया, तो हम अब उस**

**मार्गदर्शक के अधीन नहीं रहे।"**

इसका अर्थ यह है कि मूसा की व्यवस्था (जिसमें लैब्यव्यवस्था 15:6 जैसे नियम भी

आते हैं) अब मसीह में पूर्णता पा चुकी है और अब सीधे लागू नहीं होती।

✓ आधुनिक मसीही चर्चों में इस पद की व्याख्या:

- अब मसीही विश्वास में अशुद्धि केवल शारीरिक संपर्क से नहीं बल्कि मन और आत्मा की स्थिति से जुड़ी हुई मानी जाती है।
  - यीशु के बलिदान के कारण, अब कोई भी व्यक्ति पवित्रता को केवल स्नान या वस्त्र धोने से प्राप्त नहीं करता, बल्कि पापों से पश्चाताप और प्रभु पर विश्वास द्वारा आत्मिक रूप से पवित्र किया जाता है।
- 

## निष्कर्ष

- लैब्यव्यवस्था 15:6 एक महत्वपूर्ण नियम था जो यहौदियों के लिए अशुद्धि और शुद्धि की समझ को निर्धारित करता था।
- रब्बियों ने इसे गहराई से व्याख्या किया और यह सिद्ध किया कि अशुद्धि परतों के बावजूद फैल सकती है।
- मसीही दृष्टिकोण में, अब बाहरी अशुद्धि पर कम ध्यान दिया जाता है, और आत्मिक शुद्धता को अधिक महत्व दिया जाता है।

इसलिए, आज मसीही विश्वास में लैब्यव्यवस्था 15:6 का सीधा पालन नहीं किया जाता, बल्कि इसे एक आत्मिक सन्दर्भ में देखा जाता है।

P106 Le.15:19 Tumah of a zavah (woman suffering from a running issue)

15:19 (Leviticus 15:19)

"और जब कोई स्त्री ऋतुमती हो, और उसके शरीर से उसका मासिक धर्म निकले, तब वह सात दिन तक अशुद्ध रहे; और जो कोई उसको छुए, वह साँझा तक अशुद्ध रहेगा।"

□ □ □ □ □ □ □ □ ( □ □ □ □ □ □ □ □ )

## 1. स्त्री का मासिक धर्म और अशुद्धता

यह पद बताता है कि जब किसी स्त्री का मासिक धर्म (Menstruation) होता है, तो वह सात दिन तक अशुद्ध मानी जाएगी। इस समय में:

- कोई भी व्यक्ति जो उसे छुएगा, वह भी सांझ तक अशुद्ध रहेगा।
- किसी भी वस्तु को जो उसने छुआ, यदि कोई और छुए, तो वह भी अशुद्ध हो जाएगा।
- इस अशुद्धता से शारीरिक सफाई ही नहीं, बल्कि धार्मिक रूप से भी अलग रहना आवश्यक था।

## 2. "ऋतुमती" शब्द का अर्थ

इब्रानी भाषा में "निदा" (Niddah) शब्द का उपयोग हुआ है, जिसका अर्थ होता है "अलग की गई" या "अलग रहने वाली"। इस शब्द का अर्थ केवल मासिक धर्म से संबंधित नहीं है, बल्कि यह एक प्रकार की धार्मिक स्थिति भी बताती है जिसमें स्त्री को अलग रहना होता था।

□ □

□ □ Aderet Eliyahu – इस नियम का पालन तब भी होता है जब कोई लड़की केवल एक दिन की हो।

□ □ **Bekhor Shor** – यदि रक्त शरीर के अंदर ही हो और बाहर न निकला हो, तब भी यह स्त्री को अशुद्ध बना सकता है।

□ □ **Chizkuni** - यदि स्त्री सातवें दिन की संध्या से पहले स्नान कर ले, तो यह शुद्धि प्रक्रिया वैध नहीं मानी जाएगी।

□ □ **David Zvi Hoffmann** – यह नियम तोराह देने से पहले भी था, लेकिन तोराह ने इसे सीमित कर सात दिन तक रखा और शुद्धि की विधि दी।

□ □ **Gur Aryeh** - यदि स्त्री को केवल एक बार रक्तस्राव होता है, तब भी वह पूरे सात दिन तक अशुद्ध मानी जाएगी।

□ □ **Mizrachi** – यह स्पष्ट करता है कि रक्त का स्रोत गर्भाशय (uterus) होना चाहिए, अन्य रक्तस्रावों को यह नियम लागू नहीं होता।

□ □ **Rabbeinu Bahya** - तोराह ने स्पष्ट रूप से यह नहीं कहा कि स्नान (मिक्वेह) आवश्यक है, लेकिन यह नियम परंपरा और तार्किक व्याख्या से लिया गया है।

□ □ **Rashi** – *Niddah* का अर्थ ही है "अलग की गई"।

□ □ **Sforno** – यह सुझाव देते हैं कि यह अशुद्धि केवल शारीरिक कारणों से नहीं होती, बल्कि यह मानसिक और नैतिक विचारों से भी संबंधित हो सकती है।

□ □ **Torah Temimah** – इस पद में "स्त्री" शब्द सभी आयु की स्त्रियों के लिए लागू होता है, चाहे वे कितनी भी छोटी हों।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

✓ उदाहरण 1: यदि कोई स्त्री मासिक धर्म में हो और वह किसी बिस्तर पर बैठी हो, फिर कोई

और उस पर बैठे, तो वह व्यक्ति भी अशुद्ध माना जाएगा।

✓ उदाहरण 2: यदि कोई व्यक्ति गलती से उस स्त्री को छू लेता है, तो उसे संध्या तक अशुद्ध

समझा जाएगा और उसे स्नान करना होगा।

✓ उदाहरण 3: यदि कोई वस्त्र या बर्तन किसी मासिक धर्म वाली स्त्री के संपर्क में आता है, तो

वह भी शाम तक अशुद्ध रहता था।

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ ?

□ 1. यीशु और नयी वाचा (New Covenant)

यीशु मसीह ने व्यवस्था को पूरा किया (मत्ती 5:17), इसलिए मसीही धर्म में इस तरह की

अशुद्धता को पाप या आध्यात्मिक समस्या नहीं माना जाता।

□ 2. यीशु ने नारी को छूने की अनुमति दी

मरकुस 5:25-34 में एक स्त्री, जो 12 वर्षों से रक्तस्राव से पीड़ित थी, यीशु के वस्त्र को छूती है और

चंगा हो जाती है। यह दिखाता है कि यीशु ने इन नियमों को प्रेम और अनुग्रह से पूरा किया, न कि

केवल धार्मिक रीति-रिवाजों से।

□ 3. मसीही विचार में शारीरिक अशुद्धता कोई आध्यात्मिक बाधा नहीं

यीशु ने स्पष्ट किया कि वास्तविक अशुद्धता शरीर से नहीं बल्कि हृदय और विचारों से आती है

(मत्ती 15:11)।

□ 4. आधुनिक मसीही समाज में मासिक धर्म एक सामान्य प्रक्रिया

आज के चर्च में इस नियम का पालन नहीं किया जाता, क्योंकि यह अब मसीही आस्था में आवश्यक नहीं माना जाता।

---

□ □ □ □ □ □ □ □

- यह नियम पुराने नियम की यहूदी धार्मिक व्यवस्था का हिस्सा था, जहां मासिक धर्म के दौरान स्त्रियों को अलग रहना होता था।
- रब्बियों ने इसके अलग-अलग पहलुओं को समझाया, जैसे रक्त का स्रोत, सात दिनों की अवधि, और स्नान की आवश्यकता।
- नयी वाचा के अनुसार, यीशु ने प्रेम और अनुग्रह से इन नियमों को पूरा किया, और आज के मसीही चर्च में इसे पाप या अशुद्धता के रूप में नहीं देखा जाता।

□ "यीशु मसीह में हमें धार्मिक रीति-रिवाजों से अधिक प्रेम और विश्वास का महत्व

**समझने को मिलता है।"**

P107 Nu.19:14 On Tumah of a human corpse

### बाइबल पद (गिनती 19:14) - हिंदी में

**"जब कोई मनुष्य तंबू में मर जाए, तब जो कोई उस तंबू में जाए, और जितने तंबू में हों, वे सब सात दिन तक अशुद्ध रहेंगे।"**

---

### समझाइए - बाइबल का दृष्टिकोण

यह पद मरे हुए व्यक्ति के कारण होने वाली **अशुद्धि** (ritual impurity) के नियमों को बताता है। इस अशुद्धि को "तंबू की अशुद्धि" (*impurity imparted by a tent*) कहा जाता है। यदि कोई व्यक्ति एक ऐसे स्थान पर मर जाता है जो चारों ओर से घिरा हुआ है (जैसे तंबू, घर या कोई बंद स्थान), तो उस स्थान के अंदर प्रवेश करने वाला हर व्यक्ति और वहां मौजूद हर वस्तु अशुद्ध हो जाती है।

### इस नियम के मुख्य बिंदु

1. तंबू का उल्लेख क्यों किया गया?

- इसाएली जब जंगल में यात्रा कर रहे थे, तब वे तंबुओं में रहते थे। इसलिए "तंबू" शब्द प्रयोग हुआ, लेकिन यह नियम हर बंद संरचना (घर, कक्ष) पर लागू होता है।

2. कौन-कौन अशुद्ध हो जाता है?

- जो कोई भी तंबू में प्रवेश करता है।
- जो कोई पहले से उस तंबू में मौजूद होता है।

- तंबू के अंदर मौजूद वस्तुएँ भी अशुद्ध हो जाती हैं।

### 3. अशुद्धि कितने दिन तक रहती है?

- सात दिन तक।
- इस अवधि में दो बार शुद्धि जल (पानी में मिलाई गई लाल गाय की राख) के द्वारा छिड़काव किया जाता था - तीसरे और सातवें दिन (गिनती 19:17-19)।

### 4. क्या बाहर मरने वाले को अंदर लाने से भी अशुद्धि होती है?

- हाँ, यदि मृत शरीर को तंबू या घर में लाया जाए, तो वह भी अशुद्धि का कारण बनता है।

### 5. कैसे शुद्धि किया जाता था?

- विशेष रीति से बनाई गई राख (लाल गाय की राख) को पानी में मिलाकर शुद्धिकरण के लिए प्रयोग किया जाता था।
- यह प्रक्रिया उन लोगों को भी करनी पड़ती थी जिन्होंने शव को छुआ था।

## रब्बियों के विचार और उनकी व्याख्या

### 1. यह नया नियम क्यों था?

यह नियम "זהותה תאמ" (Zot HaTorah - "यह है व्यवस्था") शब्दों से शुरू होता है। इसका अर्थ है कि यह एक अनोखा नियम है जो विशेष रूप से मृत शरीर से उत्पन्न अशुद्धि को दर्शाता है।

### 2. यह नियम कब लागू होता है?

- यह नियम यहूदियों की यात्रा के समय लागू हुआ और भविष्य में भी यही व्यवस्था बनी रही।

### 3. तंबू में जाने से अशुद्धि कैसे होती है?

- अगर कोई व्यक्ति तंबू में प्रवेश करता है, तो उसे अशुद्ध माना जाता है, भले ही उसने मृत शरीर को छुआ हो या नहीं।
- अगर कोई दरवाजे से प्रवेश करता है, तो वह अशुद्ध होता है, लेकिन अगर दरवाजा बंद है और कोई छेद से अंदर झाँकता है, तो वह अशुद्ध नहीं होता।

### 4. क्या अशुद्धि नीचे की ओर भी फैलती है?

- हाँ, यह अशुद्धि ज़मीन के नीचे तक पहुँचती है, जब तक कि कोई अवरोध (जैसे दूसरी छत या परत) उसे रोक न दे।

### 5. किसे अशुद्धि लगती है?

यह नियम मुख्य रूप से यहूदियों के लिए लागू होता है।

रब्बी शिमोन बेन योचाई के अनुसार, गैर-यहूदियों की कब्रों से तंबू वाली अशुद्धि नहीं

फैलती।

### 6. क्या दूसरा तंबू अशुद्धि को रोक सकता है?

हाँ, अगर एक और तंबू या परत (जिसकी ऊँचाई एक तेफ़च - लगभग 3.5 इंच) हो, तो यह

अशुद्धि को नीचे फैलने से रोक सकता है।

## 1. मंदिर में पवित्रता बनाए रखने के लिए इस नियम का पालन

- प्राचीन इस्राएल में यरूशलेम मंदिर में प्रवेश करने से पहले कोई भी व्यक्ति जो मृत शरीर के संपर्क में आया था, उसे शुद्धिकरण प्रक्रिया से गुजरना पड़ता था।

## 2. कब्रों के पास जाने के नियम

- यहूदी पुजारियों (कोहेन) को कब्रों से दूर रहना पड़ता था ताकि वे पवित्र रहें और मंदिर सेवा में भाग ले सकें।

## 3. नाज़ीर व्यक्ति (जिसने विशेष प्रतिज्ञा ली हो)

- नाज़ीर को विशेष रूप से मृत शरीर से दूर रहने के लिए कहा गया था (गिनती 6:6-7)।
- 

## आज के मसीही चर्च में इसका क्या महत्व है?

### 1. आत्मिक अशुद्धि का प्रतीक

- आज के मसीही विश्वास में शारीरिक शुद्धि की अपेक्षा आत्मिक शुद्धि अधिक महत्वपूर्ण मानी जाती है।
- मृत शरीर की अशुद्धि पाप और मृत्यु की शक्ति का प्रतीक मानी जाती है।
- यीशु मसीह ने मृत्यु पर विजय पाई, इसलिए आज की मसीही शिक्षा में बल दिया जाता है कि "मृत्यु की शक्ति अब हमें नहीं बाँध सकती" (1 कुरिन्यियों 15:54-57)।

### 2. यीशु मसीह और शुद्धि

यीशु ने मृतकों को छुने के बाद भी किसी प्रकार की अशुद्धि अनुभव नहीं की। उदाहरणः

जब यीशु ने एक मृत लड़की का हाथ पकड़ा और उसे जीवित किया (लूका 8:54)।

जब उन्होंने लाजर को कब्र से बाहर बुलाया (यूहन्ना 11:43-44)।

### 3. आत्मिक संदेशः मृत्यु और जीवन का अंतर

- पुराने नियम में मृत शरीर से दूर रहना आवश्यक था, लेकिन नए नियम में यीशु ने मृत्यु से जीवन दिया।
- मसीहियों के लिए यह नियम पाप और आत्मिक अशुद्धि से दूर रहने का प्रतीक है।

### 4. अंतिम न्याय और शुद्धि

- प्रकाशितवाक्य 21:27 में लिखा है कि स्वर्ग में केवल वे ही प्रवेश कर सकते हैं जो शुद्ध हैं।
- यह नियम हमें यह सिखाता है कि पवित्रता महत्वपूर्ण है और हमें अपने जीवन को परमेश्वर के अनुसार शुद्ध रखना चाहिए।

### निष्कर्ष

गिनती 19:14 में दिया गया नियम यहूदी व्यवस्था के अनुसार मृत्यु से उत्पन्न होने वाली अशुद्धि के विषय में है। यह नियम बताता है कि मृत्यु जीवन से अलग है और यहोवा हमें पवित्रता और जीवन के मार्ग पर चलाना चाहता है। रब्बियों ने इस नियम की विस्तृत व्याख्या की और बताया कि अशुद्धि कैसे फैलती है और कैसे रोकी जा सकती है।

आज के मसीही विश्वास में यह नियम आत्मिक रूप से देखा जाता है, जिसमें यीशु मसीह द्वारा

प्रदान की गई पवित्रता और पाप से मुक्ति को प्राथमिकता दी जाती है। मसीही जीवन में यह

नियम पवित्रता और परमेश्वर की भक्ति को बनाए रखने का प्रतीक बना हुआ है।

P108 Nu.19:13, 21 Law of the purification water of sprinkling, mei niddah

### गिनती 19:13 हिंदी में:

"जो कोई किसी मरे हुए मनुष्य की लोथ को छूए, और अपने को शुद्ध न करे, वह यहोवा के निवास को अशुद्ध करता है; वह व्यक्ति इस्राएल में से काट डाला जाएगा, क्योंकि उस पर छिकने का जल नहीं छिका गया, वह अशुद्ध ही रहेगा; उसकी अशुद्धता अभी भी उसके ऊपर बनी रहेगी।"

### हिंदी में व्याख्या:

यह पद बताता है कि यदि कोई व्यक्ति किसी मरे हुए मनुष्य के शरीर को छूता है और शुद्धिकरण की प्रक्रिया पूरी नहीं करता है, तो वह यहोवा के पवित्र स्थान (मिश्कान/मंदिर) को अशुद्ध कर देता है। इसका दंड "करेट" (आत्मिक कटौती) है, जो यहोवा से अलग कर दिए जाने का संकेत है।

### मुख्य बिंदु:

1. मृत शरीर का स्पर्श - किसी भी मरे हुए इंसान को छूने से अशुद्धता (तुमअह) आ जाती है।

2. **शुद्धि की आवश्यकता** - केवल स्नान या मिक्वह (विशेष स्नान) से शुद्धि नहीं होती, बल्कि **अपराध निवारण जल** (लाल गाय की राख से बनी जल विधि) का छिड़काव अनिवार्य है।
  3. **अशुद्धि का प्रभाव** – यदि अशुद्ध व्यक्ति मंदिर में प्रवेश करे, तो वह उसे अशुद्ध कर देता है और कठोर दंड का भागी होता है।
  4. **"करेट" (आत्मिक दंड)** – जो व्यक्ति शुद्धि की प्रक्रिया पूरी नहीं करता, वह इमाएल से "काट दिया" जाता है, जिसका अर्थ आध्यात्मिक मृत्यु या संपूर्ण समाज से बहिष्करण भी हो सकता है।
- 

## रब्बियों की व्याख्याएँ और उनके दृष्टिकोण:

1. "जो कोई किसी मरे हुए मनुष्य की लोथ को छुए" - इसका क्या अर्थ है?

- यह नियम केवल मनुष्य के शव के लिए लागू होता है, न कि किसी पशु के शव के लिए।
  - एक गर्भ में मृत शिशु भी इस नियम के अंतर्गत आता है।
  - यदि किसी मरे हुए व्यक्ति से एक विशेष मात्रा (कम से कम एक चौथाई लोग/लगभग 86 ml खून) निकला हो, तो उसे छूने वाला व्यक्ति भी अशुद्ध हो जाता है।
  - उदाहरण:** यदि कोई डॉक्टर या नर्स किसी शव का परीक्षण कर रही है, तो वह अशुद्ध हो जाएगी और उसे शुद्धि की प्रक्रिया से गुजरना पड़ेगा।
- 

2. "और अपने को शुद्ध न करे" - इसका क्या तात्पर्य है?

□ □□□ □**मिक्वह**(□□□□□□□□ □□□□) □□ □□□□□□ □□□□□ □□□

□□□□

□ तीसरे और सातवें दिनलाल गाय (पराह अदुमा) की राख वाले जल का छिड़काव आवश्यक है।

□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□, □□□□ □□□□□□ □□□□, □□ □□  
□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□

□ उदाहरण: यदि कोई यहूदी व्यक्ति किसी शव को छूकर स्नान कर ले, लेकिन छिड़काव न कराए, तो वह मंदिर में नहीं जा सकता।

---

### **3. "वह यहोवा के निवास को अशुद्ध करता है"**

□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□, □□  
□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□  
□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□ □□  
□□□□□□ □□ □□□ □□, □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□□  
□□□

□ उदाहरण: यदि कोई व्यक्ति शव को छूने के बाद यरूशलाम के मंदिर में प्रवेश कर जाता, तो वह घोर अपराध करता और उसे कड़ी सजा मिलती।

---

### **4. "वह इस्राएल में से काट डाला जाएगा" - करेट का अर्थ क्या है?**

□ करेट(गा॒?) का अर्थ है **आत्मिक रूप से अलग किया जाना** □

□ □□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□, □□ □□□□□□ □□□□□ □□□  
□□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□

□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□□□□□ समय से पहले मर

जाएगा।

- **उदाहरण:** एक पुरानी यहूदी परंपरा के अनुसार, कोई व्यक्ति जिसने बार-बार मंदिर की पवित्रता को अशुद्ध किया, वह 50 वर्ष की आयु तक जीवित नहीं रह पाता था।

# आधुनिक मसीही चर्च में इस पद का क्या महत्व है?

## 1. प्रभु यीशु और शुद्धि का संदेश

- मसीही विश्वास के अनुसार, प्रभु यीशु मसीह ने अंतिम बलिदान दिया और अब "आध्यात्मिक शुद्धि" किसी विशेष जल से नहीं, बल्कि विश्वास के द्वारा होती है।

**बलिदान का प्रतीक थी।**

- लेकिन प्रभु यीशु ने कहा: "मैं मार्ग, सत्य और जीवन हूँ; कोई भी पिता के पास नहीं आता, परन्तु मेरे द्वारा" (यूहन्ना 14:6)।

- **उदाहरण:** पहले यहूदी प्रथा में मृत शरीर को छूने से अशुद्धि होती थी, लेकिन प्रभु यीशु ने खुद मृतकों को छुकर उन्हें जिलाया (मरकुस 5:41)।

## 2. आत्मिक अशुद्धि और नई वाचा

## □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ आध्यात्मिक शुद्धता □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ पवित्र आत्मा के माध्यम से "हृदय की शुद्धि" ही मुख्य उद्देश्य माना जाता है।

□ □, लेकिन नए नियम में

**पाप और आत्मिक अशुद्धि अधिक महत्वपूर्ण विषय हैं।**

### □ उदाहरण:

पहले मंदिर में अशुद्ध होकर प्रवेश करने से करेट का दंड था, लेकिन आज के मसीही विश्वास में सच्चा पश्चाताप करने वाला व्यक्ति परमेश्वर की उपस्थिति में आ सकता है।

---

## निष्कर्ष:

□ **गिनती 19:13** यह सिखाता है कि परमेश्वर के नियमों का उल्लंघन उसकी पवित्रता का

अनादर है और इसका दंड आत्मिक रूप से गंभीर हो सकता है।

□ यह नियम यहूदियों के लिए महत्वपूर्ण था क्योंकि यह मंदिर की पवित्रता बनाए रखने के लिए आवश्यक था।

□ मसीही दृष्टिकोण में, यह नियम अब भी सिखाता है कि आत्मिक रूप से अशुद्ध व्यक्ति को परमेश्वर के सामने शुद्ध हृदय से आना चाहिए।

□ **सीखः** हमें न केवल बाहरी बल्कि आत्मिक शुद्धि पर भी ध्यान देना चाहिए, ताकि हम परमेश्वर के सामने पवित्र जीवन जी सकें।

---

**गिनती 19:21 (Numbers 19:21) - हिंदी में बाइबल पद**

**"यह उनके लिये सदा की विधि ठहरे। और जो जन छिड़कने का जल छिड़के वह अपने वस्त्र धोए; और जो जन छिड़कने के जल को छुए वह सांझा तक अशुद्ध रहे।"**

---

## व्याख्या और समझ

गिनती 19:21 लाल बछिया (Red Heifer) की शुद्धिकरण प्रक्रिया के बारे में एक महत्वपूर्ण नियम प्रस्तुत करता है। यह पद यह सिखाता है कि अशुद्धता को दूर करने के लिए जिस जल का उपयोग किया जाता है, वही जल किसी शुद्ध व्यक्ति को अशुद्ध कर सकता है।

### मुख्य बिंदु:

1. "यह उनके लिए सदा की विधि ठहरे" – यह कानून इमाएलियों के लिए एक स्थायी नियम था, जो यह दर्शाता है कि इसकी प्रासंगिकता लंबे समय तक बनी रहेगी, विशेष रूप से जब मंदिर की सेवा सक्रिय थी।
  2. "जो जल छिड़के वह अपने वस्त्र धोए" – पानी छिड़कने वाला व्यक्ति, हालांकि वह शुद्ध होता है, फिर भी उसे अपने वस्त्र धोने होते हैं।
  3. "जो जल को छुए वह सांझा तक अशुद्ध रहे" – जो व्यक्ति सिर्फ उस जल को छू लेता है, वह पूर्ण रूप से अशुद्ध नहीं होता, बल्कि केवल शाम तक अशुद्ध रहता है।
- 

## रब्बियों की व्याख्या और तर्क

यह पद विशेष रूप से पेचीदा है क्योंकि यह एक विरोधाभास प्रस्तुत करता है - वह जल जो

अशुद्ध को शुद्ध करता है, शुद्ध को अशुद्ध कर देता है। यहूदी रब्बियों ने इसे विभिन्न तरीकों से समझाने की कोशिश की:

### 1. "छिड़कने" का अर्थ क्या है?

- यहूदियों के कुछ विद्वानों ने कहा कि यहां "छिड़कने" (sprinkling) का मतलब "उठाने" (carrying) से भी हो सकता है।
- इस व्याख्या के अनुसार, जब कोई व्यक्ति इस जल को किसी अन्य उद्देश्य से उठाता है, तो वह अशुद्ध हो सकता है।
- लेकिन जब यह जल शुद्धि प्रक्रिया के लिए उपयोग होता है, तो छिड़कने वाला शुद्ध ही रहता है।

### 2. क्यों शुद्ध करने वाला खुद अशुद्ध हो जाता है?

- राशी (Rashi) ने कहा कि यह नियम यह दिखाने के लिए था कि शुद्धता और अशुद्धता दोनों परमेश्वर के आदेश पर निर्भर हैं, न कि किसी वैज्ञानिक प्रक्रिया पर।
- माइमोनिदेस (Maimonides) ने इसे "चुकेह" (Chok - एक अलौकिक कानून) कहा, जिसका अर्थ है कि यह नियम तर्क से परे है और केवल परमेश्वर के आदेश का पालन करने के लिए दिया गया है।

### 3. क्या पानी की मात्रा से फर्क पड़ता है?

- कुछ रब्बियों ने कहा कि केवल एक निश्चित मात्रा (minimum quantity) तक ही यह नियम लागू होता है।
- यदि पानी बहुत कम है, तो यह नियम लागू नहीं होगा।

## 4. शुद्ध और अशुद्ध के विरोधाभास का उदाहरण

रब्बियों ने इसे कई प्रकार की दवाओं से तुलना की:

- जो दवा बीमार व्यक्ति को ठीक कर सकती है, वही दवा एक स्वस्थ व्यक्ति को नुकसान पहुँचा सकती है।
  - इसी तरह, लाल बछिया की राख वाला जल अशुद्ध व्यक्ति को शुद्ध करता है, लेकिन शुद्ध व्यक्ति को अशुद्ध बना देता है।
- 

## आज के मसीही चर्च में इस पद का क्या महत्व है?

### 1. मसीह यीशु को लाल बछिया से जोड़ा जाता है:

- मसीही विश्वास के अनुसार, यीशु मसीह ने पापों से शुद्ध करने के लिए अपने लाहू को बहाया।
- इब्रानियों 9:13-14 में कहा गया है कि यदि लाल बछिया की राख वाला जल शरीर को शुद्ध कर सकता था, तो मसीह का बलिदान आत्मा को शुद्ध करने के लिए कितना अधिक प्रभावी होगा!
- इस प्रकार, मसीह को "पूर्ण शुद्धिकरण" (Ultimate Purification) के रूप में देखा जाता है।

### 2. बाहरी और आंतरिक शुद्धता:

- यह पद हमें याद दिलाता है कि केवल बाहरी शुद्धता पर्याप्त नहीं है, बल्कि

**आत्मा की शुद्धता भी आवश्यक है।**

- मसीह ने कई बार फरीसियों को चेतावनी दी थी कि वे बाहर से तो साफ दिखते हैं, लेकिन अंदर से अशुद्ध हैं (मत्ती 23:27)।

### 3. याजकीय सेवा और अशुद्धता का महत्व:

- चर्च में सेवा करने वाले लोग (जैसे कि पादरी, प्रचारक) को हमेशा आत्मिक रूप से तैयार रहना चाहिए।
- उन्हें अपने जीवन की "आध्यात्मिक अशुद्धता" से खुद को बचाने के लिए आत्मिक परिक्षण करना चाहिए।

### 4. आज के जीवन में प्रासंगिकता:

- यह पद हमें शारीरिक और आत्मिक पवित्रता के महत्व को सिखाता है।
- हमें अपने विचारों, कर्मों और आत्मा की पवित्रता पर ध्यान देना चाहिए, ताकि हम परमेश्वर की उपस्थिति में योग्य रह सकें।

### निष्कर्ष:

गिनती 19:21 एक रहस्यमय लेकिन महत्वपूर्ण आदेश है जो यह दिखाता है कि परमेश्वर के नियम केवल तर्क पर आधारित नहीं होते, बल्कि उन्हें आज्ञाकारिता के साथ मानना आवश्यक होता है। यह पद बाहरी शुद्धता, आंतरिक पवित्रता और परमेश्वर के निर्देशों के प्रति आज्ञाकारिता का संदेश देता है। मसीही दृष्टिकोण से, यह मसीह की बलिदानी सेवा की ओर संकेत करता है, जो अंतिम शुद्धिकरण प्रदान करता है।

P109 Le.15:16 On immersing in a mikveh to become ritually clean

### **लैब्यवस्था 15:16 (Leviticus 15:16) हिंदी में**

**"यदि किसी पुरुष से वीर्य स्खलित हो जाए, तो वह संपूर्ण शरीर को जल से धोए और संध्या तक अशुद्ध रहेगा।"**

---

### **समझ Explanation (समझाइए)**

लैब्यवस्था 15:16 में यह व्यवस्था दी गई है कि यदि किसी पुरुष से वीर्य स्खलित (semen emission) हो जाए, तो वह उस दिन अशुद्ध माना जाएगा। उसे अपने पूरे शरीर को पानी से धोना होगा, और वह संध्या तक (शाम तक) अशुद्ध रहेगा। इस नियम का उद्देश्य पवित्रता बनाए रखना था, विशेष रूप से मंदिर की पवित्रता को बनाए रखने के लिए।

यह नियम यहूदियों के लिए ताहारा (शुद्धता) के संदर्भ में था और उनका मानना था कि शारीरिक स्रावों (discharges) से अस्थायी रूप से अशुद्धि हो जाती है।

---

### **रब्बियों की व्याख्याएँ (Rabbinic Interpretations)**

1. "पुरुष" (ישׁאָן - इशा) का अर्थ

रब्बियों के अनुसार, यहाँ "इशा" (पुरुष) शब्द प्रयोग यह दर्शाने के लिए किया गया है कि यह नियम नौ वर्ष और एक दिन से छोटे बच्चों पर लागू नहीं होता। केवल वयस्कों पर यह नियम लागू होता है।

## 2. वीर्य का शरीर से बाहर निकलना अनिवार्य

रब्बियों ने इस पद के "जब वह उससे निकल जाए" (וְיָצַא מִמֶּנּוּ) भाग से यह निष्कर्ष निकाला कि जब वीर्य शरीर से पूरी तरह बाहर निकल जाए, तभी यह अशुद्धि लाता है। यदि यह अंदर ही रह जाए, तो यह नियम लागू नहीं होता।

### उदाहरणः

- यदि कोई व्यक्ति अपने वीर्य स्खलन को रोक ले और वह बाहर न आए, तो उसे शुद्ध माना जाता है।
- याजकों (Priests) को सिखाया गया था कि यदि वे त्रूमा (पवित्र अन्न जो याजकों को दिया जाता था) खा रहे हों और उन्हें वीर्य स्खलन होने वाला लगे, तो वे खाने को पूरा करने तक इसे रोकें ताकि त्रूमा अपवित्र न हो।

## 3. स्वप्रदोष (Nocturnal Emission) भी अशुद्धि लाता है

- यदि वीर्य स्खलन नींद में हो जाए, तो भी व्यक्ति अशुद्ध होगा।
- इस नियम का एक महत्वपूर्ण पहलू यह था कि नींद में वीर्य स्खलन अनैच्छिक होता है, फिर भी यह शरीर की अशुद्धि को दर्शाता है, इसलिए स्नान करना आवश्यक था।

## 4. वीर्य की गुणवत्ता (Potency of Semen)

रबियों ने यह भी व्याख्या दी कि केवल वही वीर्य अशुद्धि लाता है जो बाण (arrow) की भाँति निकलता है, अर्थात् जो संतान उत्पन्न करने की क्षमता रखता हो।

**यदि वीर्य पतला, अशक्त, या अपूर्ण हो, तो यह नियम लागू नहीं होता।**

### उदाहरणः

- यदि कोई पुरुष बीमार है और उसका वीर्य संतान उत्पन्न करने योग्य नहीं है, तो वह अशुद्ध नहीं माना जाएगा।
  - वीर्य में यदि रक्त की मात्रा अधिक हो या यह गाढ़ा न हो, तो अशुद्धि नहीं मानी जाएगी।
- 

## शुद्धि की विधि (Washing and Purification Rules)

### 1. स्नान का नियम

- व्यक्ति को अपने पूरे शरीर को धोना आवश्यक था।
- स्नान केवल किसी बर्तन से पानी डालकर नहीं किया जा सकता था, बल्कि पूरे शरीर को एक साथ पानी में डुबोना आवश्यक था।
- इस नियम का आधार "एत कोल बसारो" (בְּשַׁבַּת אֶת קָוֵל) है, जिसका अर्थ है "अपने समस्त शरीर को जल में धोए।"

### 2. जल की मात्रा

- कम से कम 40 सेंटीमीटर (लगभग 530 लीटर) पानी आवश्यक था, जो कि एक उचित मिक्वह (यहूदी स्नान कुंड) की न्यूनतम सीमा होती थी।

- पानी का स्रोत एक जलाशय या मिक्वेह हो सकता था।

### 3. बाधारहित स्नान (No Barriers)

- स्नान करते समय शरीर पर कोई वस्त्र, मिट्टी, तेल, या अन्य चीज नहीं होनी चाहिए, जिससे पानी शरीर को पूरी तरह न छू सके।
- 

## अन्य अशुद्धियों से तुलना (Comparison with Other Impurities)

- वीर्य स्खलन से उत्पन्न अशुद्धि इतनी गंभीर नहीं थी जितनी कि ज़र (गोनोरिया जैसा संक्रमण) से उत्पन्न अशुद्धि।
  - वीर्य स्खलन से अशुद्ध पुरुष को केवल शाम तक अशुद्ध माना जाता था, जबकि ज़र को सात दिनों तक अशुद्ध माना जाता था।
  - मंदिर में प्रवेश करने से पहले इस अशुद्धि से शुद्ध होना आवश्यक था।
- 

## आध्यात्मिक व्याख्या (Spiritual Interpretations)

### 1. चार तत्वों का संतुलन (Four Elements in a Human Body)

यहूदी विचारधारा में मनुष्य चार तत्वों से बना है:

- आग (Fire) - आत्मा (Spirit)

2. हवा (Air) - प्राण (Breath)
3. पानी (Water) - शरीर में तरल (Fluids)
4. मिट्टी (Earth) - शारीरिक शरीर (Physical Body)

वीर्य स्खलन को शरीर से एक तत्व के बाहर जाने के रूप में देखा जाता था, इसलिए संतुलन

बनाए रखने के लिए स्नान आवश्यक था।

## 2. "आत्मा की जागरूकता"

- जब व्यक्ति जागते समय वीर्य स्खलित करता है (संभोग के दौरान), तो उसकी आत्मा, शरीर और मन तीनों सक्रिय रहते हैं।
  - लेकिन जब वीर्य स्वप्न में स्खलित होता है, तो आत्मा और शरीर निष्क्रिय होते हैं, जिससे यह "अधिक अशुद्ध" माना जाता है।
- 

## आज के मसीही चर्च में इस पद का महत्व

### (Significance in Christian Churches Today)

#### 1. नए नियम में इस पर कोई प्रत्यक्ष नियम नहीं

- यीशु मसीह ने शारीरिक अशुद्धि से अधिक आत्मिक पवित्रता पर बल दिया।
- मरकुर 7:15 - "कोई भी चीज़ जो बाहर से मनुष्य के भीतर जाती है, उसे अशुद्ध नहीं करती, बल्कि जो कुछ भीतर से निकलता है वही उसे अशुद्ध करता है।"

#### 2. आध्यात्मिक पवित्रता महत्वपूर्ण है

- मसीही चर्च इस नियम को केवल यहूदी शुद्धता नियमों का हिस्सा मानते हैं, जो अब पालन करने की आवश्यकता नहीं है।
- चर्च आत्मिक शुद्धता को प्राथमिकता देते हैं, जैसे कि आध्यात्मिक व्यभिचार से बचना, मन और हृदय को पवित्र रखना।

### 3. नैतिकता पर ज़ोर

- यीशु ने कहा कि यदि कोई स्त्री को कुदृष्टि से देखता है, तो उसने पहले ही अपने मन में पाप कर लिया (मत्ती 5:28)।
  - इसलिए मसीही शिक्षा में शरीर की स्वच्छता से अधिक मन की पवित्रता को प्राथमिकता दी जाती है।
- 

### निष्कर्ष (Conclusion)

लैब्यववस्था 15:16 शारीरिक पवित्रता और धार्मिक रीति-रिवाजों से संबंधित था, विशेष रूप से मंदिर में प्रवेश करने से पहले की शुद्धता के लिए। यहूदी परंपराओं में इसे विभिन्न तरीकों से समझाया गया, जिसमें वीर्य की गुणवत्ता, म्हान की विधि, और आत्मिक तत्वों का संतुलन शामिल था।

आज मसीही चर्च इसे नैतिक और आत्मिक पवित्रता के दृष्टिकोण से देखते हैं और इसे शारीरिक स्वच्छता से अधिक मन की पवित्रता से जोड़ते हैं।

## लैविक्यवस्था 14:2 हिंदी में

**"कोट्री के शुद्ध होने की विधि यह हैः उसे याजक के पास लाया जाए।"**

---

## समझ Explanation of Leviticus 14:2 in Hindi

लैविक्यवस्था 14:2 यह बताता है कि मेत्सोरा (कोट्री) के शुद्धिकरण की प्रक्रिया में पहला

कदम क्या होगा। यह नियम यहोवा ने मूसा के द्वारा दिया कि जो व्यक्ति त्ज़ारात (कोट्रे) से ठीक हुआ हो, उसे याजक के पास ले जाया जाए, और वह इसकी शुद्धि की प्रक्रिया प्रारंभ करेगा।

### रब्बियों की व्याख्याएँ

1. "यह व्यवस्था होगी" (הַתִּיהֵה תְּהִלָּת - Zot Tihyeh HaTorah) का अर्थः

- इस वाक्यांश का अर्थ है कि यह सख्त नियम है। यदि शुद्धिकरण की प्रक्रिया में कोई भी आवश्यक हिस्सा छूट जाता है, तो शुद्धिकरण अमान्य रहेगा।
- यह नियम तब भी लागू होगा जब बलिदान चढ़ाने की प्रक्रिया संभव न हो।
- यह नियम सभी प्रकार के मेत्सोरा (कोट्रे से ग्रसित) लोगों के लिए लागू है।

2. "मेत्सोरा" शब्द का अर्थः

- शब्द "मोत्ज़ी शेम रा" (מֹתָזֵר שְׁמָרָא) से बना है, जिसका अर्थ है "बुरा नाम निकालने वाला", यानी जो दूसरों के विरुद्ध बुरी बातें फैलाता है या निंदा करता है।
- कई रब्बियों के अनुसार, यह कोट्रे केवल एक शारीरिक बीमारी नहीं, बल्कि आत्मिक

### शुद्धता की कमी का परिणाम था।

- इसका मुख्य कारण लाशोन हारा (बुरी या अपमानजनक बातें कहना) होता था।

### 3. "शुद्धि के दिन" (יֹם תִּהְרָא - Yom Taharato) का अर्थ:

- शुद्धिकरण दिन के समय होना चाहिए, रात में नहीं।
- जिस दिन याजक यह देखे कि कोढ़ ठीक हो गया है, उसी दिन यह प्रक्रिया प्रारंभ होगी।

### 4. "उसे याजक के पास लाया जाए" (וְהַעֲלֵא אֶלְחָנָהוּ - Vehuva El HaKohen) का

अर्थ:

- एक कोढ़ी व्यक्ति स्वयं याजक के पास नहीं जा सकता, बल्कि उसे दूसरों द्वारा लाया जाता है।
- यहूदी परंपरा के अनुसार, न्यायालय (बेत दिन) और अन्य व्यक्ति उसे याजक के पास लाने के लिए बाध्य कर सकते हैं।
- रब्बी रशी के अनुसार, यह सिर्फ शारीरिक रूप से लाने की बात नहीं करता, बल्कि "हृदय परिवर्तन" (तशुवाह) की ओर इशारा करता है।

### 5. "याजक बाहर जाकर उसकी जाँच करेगा"

- याजक स्वयं नगर या छावनी से बाहर जाकर कोढ़ी की जाँच करेगा।
- यह इंगित करता है कि याजक को कोढ़ी से दूर रखा जाता था ताकि अन्य लोग अशुद्ध न हों।

## 1. नितम का उदाहरण (2 राजा 5:1-14)

- अराम के सेनापति नितम को ल़ारात (कोढ़) था।
  - नबी एलीशा ने उसे यर्दन नदी में सात बार स्नान करने का आदेश दिया।
  - जब नितम ने आज्ञा मानी, तो उसका शरीर बिल्कुल शुद्ध हो गया।
  - यह दिखाता है कि शारीरिक शुद्धिकरण और आत्मिक आज्ञाकारिता दोनों ज़रूरी हैं।
- 

## आज के मसीही चर्च में लैब्यव्यवस्था 14:2 का महत्व

### 1. आत्मिक रूप से अशुद्ध से शुद्ध होने की प्रक्रिया

- कोढ़ केवल एक शारीरिक रोग नहीं, बल्कि पाप और आत्मिक अशुद्धि का प्रतीक भी था।
- मसीह यीशु ने कहा कि "मन से निकलने वाली बुरी बातें मनुष्य को अशुद्ध बनाती हैं" (मत्ती 15:18-20)।
- जब कोई व्यक्ति पाप से पश्चाताप करता है और प्रभु यीशु को स्वीकार करता है, तब वह शुद्ध होता है (1 यूहन्ना 1:9)।

### 2. यीशु मसीह ने कोढ़ियों को चंगा किया

- मत्ती 8:1-4 में यीशु ने एक कोढ़ी को चंगा किया और उसे याजक के पास जाने के लिए कहा।
- यह दिखाता है कि यीशु ने मूसा की व्यवस्था का पालन किया, और उनके पास

**सच्ची शुद्धि देने की सामर्थ्य थी।**

### 3. चर्च में आत्मिक शुद्धिकरण

- कई चर्चों में लोग अपने पापों का अंगीकार करते हैं और आत्मिक चंगाई प्राप्त करते हैं।
  - लैब्यव्यवस्था 14:2 हमें ईश्वर के समक्ष पवित्र जीवन जीने का महत्व सिखाता है।
- 

## निष्कर्ष

**लैब्यव्यवस्था 14:2** यह सिखाता है कि मेत्सोरा(कोढ़ी) को याजक के पास लाया जाए ताकि वह शुद्धिकरण प्रक्रिया शुरू कर सके।

**रब्बियों ने इसे पाप, बुरी वाणी, और आत्मिक शुद्धिकरण से जोड़ा।**

**मसीही दृष्टिकोण से, यह हमें यीशु मसीह की चंगाई और आत्मिक शुद्धि के महत्व को**

**समझने में मदद करता है।**

P111 Le.14:9 On that a leper must shave his head

□ □□□□□□□□□ 14:9 (Leviticus 14:9) - □□□□□ □□□

**"और वह सातवें दिन अपना सारा बाल मुँडवाए; अपना सिर, अपनी दाढ़ी और अपनी**

**भाँहें, और अपना सब बाल मुँडवा डाले; तब वह अपने वस्त्र धोकर अपना शरीर जल में धोए,**

## और शुद्ध हो जाए।"

---

□ □

यह पद ल़ज़रात (اللَّجْرَأَتُ - त्वचा की एक विशेष स्थिति, जिसे अकसर कुष्ठ रोग से जोड़ा जाता है) से शुद्ध होने की प्रक्रिया का वर्णन करता है।

### 1. सातवें दिन मुंडन करने का नियम

- संक्रमित व्यक्ति को सातवें दिन अपने सिर के बाल, दाढ़ी, और भौंहें साफ़ करनी पड़ती थीं।
- पद में "सारा बाल" दो बार आता है, जो यह दर्शाता है कि पूरे शरीर का हर बाल हटाया जाए।
- मुंडन के बाद उसे वस्त्र धोने और स्नान करने का निर्देश दिया गया है, जिससे वह फिर से शुद्धमाना जाए।

### 2. "सामान्य → विशेष → सामान्य" नियम

- पहले "सारा बाल" मुंडवाने की सामान्य बात कही गई।
- फिर विशेष रूप से सिर, दाढ़ी, और भौंहें का उल्लेख किया गया।
- फिर दोबारा "सारा बाल" कहा गया, जिससे यह सिद्ध होता है कि हर उस जगह का बाल साफ़ करना चाहिए जहाँ बाल उगते हैं और दिखाई देते हैं।
- कुछ यह मानते हैं कि केवल शरीर के बाहरी और स्पष्ट बाल हटाने चाहिए, छिपे हुए नहीं।

- अन्य इसे और व्यापक रूप में लेते हैं, और कहते हैं कि पूरा शरीर गourd (लौकी) की तरह मुँडवाना चाहिए।
- एक और मत यह कहता है कि नाक के अंदर के बाल को छोड़कर बाकी सभी बाल हटाने चाहिए।

### 3. "वह मुँडवाए" शब्द की पुनरावृत्ति

- यह संकेत करता है कि यदि सातवें दिन कोई कारणवश मुँडन न हो सके, तो आठवें या नौवें दिन भी किया जा सकता है।
- 

□ □□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□

□ □□□□ (Rashi)

- उन्होंने इस पद को "सामान्य -> विशेष -> सामान्य" नियम से समझाया।
- उनका मानना था कि जहाँ भी शरीर में बालों का समूह स्पष्ट रूप से दिखता है, वहाँ मुँडन आवश्यक है।

□ □□□□□ □□□□□□ (Rabbi Yishmael)

- उन्होंने केवल सिर, भौंहों और पैरों के बीच के बालों को शामिल किया।
- बगल (armpits) के बालों को मुँडने से बाहर रखा।

□ □□□□□ □□□□□ (Rabbi Akiva)

- उन्होंने कहा कि पूरा शरीर मुँडना आवश्यक है।
- सिर्फ नाक के अंदर के बालों को छोड़ दिया।

□ □ □ □ □ (Malbim)

- उन्होंने "मुंडवाने" शब्द की पुनरावृत्ति को यह सिद्ध करने के लिए लिया कि अगर कोई सातवें दिन मुंडन नहीं कर सका, तो बाद में भी कर सकता है।

□ □ □ □ □ □ (Or HaChaim)

- उन्होंने इसे आध्यात्मिक दृष्टिकोण से समझाया।
- ल़ज़रात को इज़राइल की निष्कासन (exile) और उनके पवित्र होने की प्रक्रिया से जोड़ा।
- उन्होंने दो पक्षियों (Leviticus 14:4-7) को दो मसीहों (Messiahs) से जोड़ा।
- यह विचार प्रभु यीशु आ (यीशु मसीह) और भविष्य में आने वाले मसीहा के संदर्भ में भी देखा जाता है।

□ □ □ □ □ (Kli Yakar)

- उन्होंने इसे मानसिक और आत्मिक शुद्धि से जोड़ा।
  - सिर का मुंडन = घमंड (arrogance) का प्रायश्चित।
  - दाढ़ी का मुंडन = बुरी बातें (lashon hara - निंदा) का प्रायश्चित।
  - भौहों का मुंडन = ईर्ष्या (envy) का प्रायश्चित।
- 

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ ?

1. शारीरिक और आत्मिक शुद्धि का प्रतीक

- यीशु मसीह ने कहा कि आत्मिक अशुद्धता बाहरी नहीं, बल्कि हृदय से आती है (मरकुस 7:20-23)।
- त्ज़रात को पाप और विशेष रूप से निंदा (lashon hara) से जोड़ा जाता है।

## 2. बपतिस्मा (बपतिस्मे के जल में धोने) की छाया

- जैसे त्ज़रात से मुक्त व्यक्ति को स्नान करके शुद्ध होना पड़ता था, वैसे ही यीशु ने बपतिस्मे को आत्मिक शुद्धि के रूप में दिया।
- "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले वह उद्धार पाएगा" (मरकुस 16:16)।

## 3. मसीह की बलिदान से पूर्णता

- पुराने नियम में त्ज़रात के उपचार के लिए दो पक्षी बलिदान किए जाते थे।
- यीशु मसीह को "परमेश्वर का मेमना" कहा गया, जो पापों का प्रायश्चित्त करते हैं (यूहन्ना 1:29)।
- इसलिए आज मसीही चर्च मानता है कि यह पद यीशु में पूरी तरह से पूरा हुआ।

## 4. परमेश्वर के मंदिर के रूप में शरीर की देखभाल

- पुराने नियम में शुद्धता आवश्यक थी क्योंकि लोग यहोवा की आराधना में प्रवेश करते थे।
- नए नियम में मसीही विश्वासियों का शरीर ही परमेश्वर का मंदिर है (1 कुरन्यियों 6:19-20)।
- इसलिए हमें शारीरिक और आत्मिक रूप से पवित्र रहना चाहिए।

#### 5. घमंड, ईर्ष्या, और निंदा से बचने की शिक्षा

- कली याकर की व्याख्या के अनुसार, यह पद अहंकार, ईर्ष्या, और बुरी बातों से शुद्ध होने का संदेश देता है।
  - यीशु ने भी "दूसरों की निंदा मत करो" (मत्ती 7:1-5) और "धोखे से रहित बनो" (मत्ती 10:16) सिखाया।

--	--	--	--	--	--	--	--	--

- यह पद न केवल शारीरिक शुद्धि, बल्कि आत्मिक शुद्धि की भी बात करता है।
  - यह हमें अहंकार, ईर्ष्या, और बुरी बातों से दूर रहने का संदेश देता है।
  - यीशु मसीह में यह पद पूर्ण रूप से पूरा होता है, क्योंकि उन्होंने हमारी आत्मिक अशुद्धि को धो दिया।
  - आज के चर्च में इसे बपतिस्मा, आत्मिक शुद्धता, और परमेश्वर की आराधना में परिव्रत जीवन जीने से जोड़ा जाता है।

P112 Le.13:45 On that the leper must be made easily distinguishable

लेवियों 13:45 का हिंदी बाइबल पद

"जिस को कोढ़ हो वह अपने वस्त्र फाड़े, और अपने सिर के बाल खोल छोड़े, और अपने

**ऊपरी होंठ को ढाँप कर चिल्लाए, अशुद्ध! अशुद्ध!"**

---

## लेवियों 13:45 का हिंदी में विवरण

यह पद ल़ज़रात(कोढ़) से ग्रसित व्यक्ति के लिए परमेश्वर द्वारा दिए गए नियमों को दर्शाता है।

यह नियम न केवल शारीरिक शुद्धता के लिए थे, बल्कि आध्यात्मिक और सामाजिक प्रभाव भी रखते थे।

1. **वस्त्र फाइना** - यह दुःख, पश्चाताप और अपवित्रता का संकेत था। यह दिखाता था कि व्यक्ति अपने पाप के कारण परमेश्वर और समाज से अलग किया गया है।
  2. **सिर के बाल बढ़ाना** - कोढ़ी व्यक्ति को बाल कटाने की अनुमति नहीं थी, जिससे उसकी पहचान स्पष्ट हो सके। यह शोक और सामाजिक बहिष्कार का प्रतीक था।
  3. **ऊपरी होंठ को ढाँपना** - इसका अर्थ यह हो सकता है कि व्यक्ति को मास्क या कपड़े से अपने मुँह को ढाँपना था ताकि उसकी सांस से दूसरों को नुकसान न पहुँचे। यह उस समय की संक्रामक बीमारियों से बचने का उपाय भी हो सकता था।
  4. **"अशुद्ध! अशुद्ध!" चिल्लाना** - यह समाज को सतर्क करने के लिए था ताकि वे उससे दूर रहें। यह आत्म-स्वीकारोक्ति भी थी कि व्यक्ति को उपचार और शुद्धि की आवश्यकता है।
- 

## रब्बियों की विभिन्न व्याख्याएँ

### 1. राशी (Rashi)

- "बाल बढ़ाने" का अर्थ है कि कोटी को बाल कटाने की अनुमति नहीं थी। यह संकेत था कि वह अशुद्ध है और अलग रहना चाहिए।
- मुँह को ढँकना शोक का संकेत था, जैसे मृतक के निकट संबंधी अपने मुँह को ढँकते थे।

## 2. इब्न एज़रा (Ibn Ezra)

- उनका मानना था कि वस्त्र फाड़ना कोटी के पापों के प्रति उसके पश्चाताप और लज्जा को दिखाता है।

## 3. बेखोर शोर (Bekhor Shor)

- कोटी व्यक्ति को अपने परिवार से अलग किया जाता था और वह समाज में एक निष्कासित व्यक्ति के रूप में रहता था।

## 4. हक्टव वेहकबाला (HaKtav VeHaKabalah)

- उन्होंने समझाया कि "ऊपरी होंठ को ढाँपना" का अर्थ मुँह को ढकने के साथ-साथ मौन रहना भी हो सकता है, ताकि व्यक्ति अनावश्यक बातों से बच सके।

## 5. क्ली याकर (Kli Yakar)

- उन्होंने इस नियम को आत्मिक सिखावन से जोड़ा:
  - फटे हुए वस्त्र = व्यक्ति के कठोर हृदय का प्रतीक जो टूट जाना चाहिए।
  - बढ़े हुए बाल = व्यक्ति के अहंकार को झुकाना चाहिए।
  - मुँह ढाँपना = वर्ध और बुरी बातों से बचना चाहिए।

## 6. मल्बिम (Malbim)

- उनका मत था कि यह नियम कोढ़ी को समाज से पूरी तरह अलग करने के लिए था,  
ताकि उसका प्रभाव दूसरों पर न पड़े।

## 7. सिफ्टे चखामिम (Siftei Chakhamim)

- उनका कहना था कि कोढ़ी दूसरों को अशुद्ध नहीं कहता था, बल्कि वह स्वयं अपने अशुद्ध होने की घोषणा करता था।
- 

## बाइबल के अन्य उदाहरण

उच्चतम याजक (High Priest) भी इस नियम से अछूता नहीं था - भले ही याजकों को अपने बाल कटवाने और विशेष कपड़े पहनने की अनुमति थी, यदि वे ल़ज़रात से ग्रसित होते, तो उन्हें भी यही नियम मानने पड़ते।

नबी एलिशा और गेहजी - गेहजी, जो एलिशा का सेवक था, लालच के कारण कोढ़ से ग्रसित हो गया और उसे समाज से बाहर कर दिया गया (2 राजा 5:27)।

प्रभु यीशु और कोढ़ी व्यक्ति (Matthew 8:2-3) - प्रभु यीशु ने एक कोढ़ी को चंगा किया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि नई वाचा में आत्मिक शुद्धि पर अधिक बल दिया गया।

---

## आज के मसीही चर्च में इसका क्या महत्व है?

- आत्मिक अशुद्धता का प्रतीक - पुराने नियम में ल़ज़रात केवल शारीरिक बीमारी नहीं थी, बल्कि यह आत्मिक अशुद्धता और पाप का प्रतीक भी थी। मसीही विश्वास में इसे पाप और उसके प्रभाव के रूप में देखा जाता है।

2. **पाप से अलगाव** - जिस प्रकार कोटी को समाज से अलग किया जाता था, उसी प्रकार  
पाप व्यक्ति को परमेश्वर से अलग कर देता है।
  3. **प्रभु यीशु के द्वारा चंगाई** - मसीही विश्वास में, प्रभु यीशु मसीह को "महान चंगाईकर्ता"  
माना जाता है, जो शारीरिक और आत्मिक अशुद्धता से मुक्ति देते हैं।
  4. **नम्रता और पश्चाताप का संदेश** - यह नियम सिखाता है कि व्यक्ति को अपने पापों  
को स्वीकार कर परमेश्वर के सामने दीनता से आना चाहिए।
  5. **शुद्धता और पवित्रता का महत्व** - यह नियम हमें सिखाता है कि परमेश्वर की  
उपस्थिति में आने के लिए हमें शुद्ध और पवित्र रहना चाहिए।
- 

## निष्कर्ष

लेवियों 13:45 के बारे में नहीं, बल्कि आत्मिक स्थिति के बारे में भी  
सिखाता है। यह नियम न केवल यहूदियों के लिए, बल्कि मसीही विश्वासियों के लिए भी  
महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह आत्मिक शुद्धता, पश्चाताप और परमेश्वर से निकटता का संदेश देता  
है। प्रभु यीशु मसीह ने लंबरात से ग्रसित लोगों को चंगा किया, यह दिखाने के लिए कि वह  
न केवल शारीरिक, बल्कि आत्मिक चंगाई भी लाते हैं।

आज भी यह पद हमें याद दिलाता है कि हमें अपनी आत्मिक स्थिति की जांच करनी चाहिए,  
पाप से बचना चाहिए, और नम्रता तथा पश्चाताप के साथ परमेश्वर के सामने आना चाहिए।

## बाइबल पद (हिंदी में)

गिनती 19:2

**"यहोवा की यह विधि की विधि (चुकी) है, जिसे यहोवा ने आज्ञा दी है: इस्ताएलियों से कह,  
कि वे तेरे पास एक निर्दोष लाल रंग की गाय लाएँ, जिसमें कोई दोष न हो, और जिस पर  
कभी जूआ न रखा गया हो।"**

## गिनती 19:३ की व्याख्या (हिंदी में)

## 1. "यहोवा की यह विधि (चुक्ति) है"

## 2. लाल रंग की निर्दोष गाय

□ □ इसका लाल रंग पाप के प्रतीक के रूप में देखा जाता है (यशायाह 1:18 - "यदि तुम्हारे पाप रक्त के समान लाल हों तो वे हिम के समान श्वेत हो जाएंगे")।

□□ यह निर्दोष है, अर्थात् इसे किसी दोष या खराबी के बिना होना चाहिए। यह मसीह के पूर्णता  
और पाप-रहित स्वभाव का संकेत देता है।

### 3. "जिस पर कभी ज़ुआ न रखा गया हो"

## रब्बियों की व्याख्याएँ

### 1. राशी (Rashi)

□ □□□□ □□□□ □□□ □□ "चुकी" (हुक्कत) का अर्थ एक ऐसी आज्ञा है, जिसका कारण

**मनुष्य नहीं समझ सकता।**

□ □□ □□□□ □□□□□ □□, क्योंकि अन्य जातियाँ इस्राएलियों का उपहास उड़ाती थीं

और पूछती थीं कि इस विधि का क्या तर्क है। इसलिए, यहोवा ने कहा कि यह मेरी आज्ञा है और  
इसे मानना ही होगा।

□ राशी आगे बताते हैं कि लाल गाय (Red Heifer) को इसलिए लाया गया क्योंकि

इस्राएलियों ने स्वर्ण बछड़े (Golden Calf) की पूजा करके अपने को अशुद्ध कर लिया था।

इसलिए, जैसे माँ अपने बच्चे को शुद्ध करती है, वैसे ही यह गाय इस्राएल को शुद्ध करने के  
लिए दी गई थी।

□ □□□□□:

□ □ जब इस्राएलियों ने स्वर्ण बछड़े की पूजा की थी, तब वे आध्यात्मिक रूप से अशुद्ध हो गए  
थे। इसी प्रकार, लाल गाय की राख को जल छिड़कने के लिए उपयोग किया जाता था ताकि  
अशुद्ध व्यक्ति फिर से पवित्र हो जाए।

### 2. रम्बान (Ramban)

□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□ "□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□" □□ □□□□□  
□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□

--	--	--	--	--	--	--	--	--

A horizontal row of 20 empty square boxes, each with a thin black border, intended for children to write their names in.

### **३. ओर हा-हायिम (Or HaChaim)**

- और हा-हायिम का मानना है कि लाल गाय की विधि पूरी व्यवस्था (Torah) के पालन के बराबर मानी जाती है।
  - जो व्यक्ति इसे मानता है, वह पूरी व्यवस्था का पालन करने के बराबर माना जाता है, क्योंकि यह पूर्ण समर्पण और विश्वास का प्रतीक है।

#### 4. मिद्राश (Midrash)

## लाल गाय की प्रतीकात्मकता।

तत्व	अर्थ
लाल रंग	पाप और दोष का प्रतीक (यशायाह 1:18)
निर्दोष और पूर्णता	मसीह की निर्दोषता को दर्शाता है (1 पतरस 1:19 - "निर्दोष और निष्कलंक में से के समान")
जिस पर जूआ न रखा गया हो	यह दर्शाता है कि यह बलिदान विशुद्ध रूप से परमेश्वर को समर्पित है।
अंगारों पर जलाना	यह मसीह के बलिदान की ओर इशारा करता है (इब्रानियों 9:13-14)

## आज के मसीही चर्च में लाल गाय का महत्व

### 1. यीशु मसीह का बलिदान

□  
 □  
 □ □ □ □ □, उसी प्रकार यीशु मसीह के लहू से सभी विश्वासियों को पापों से शुद्ध  
 किया जाता है (इब्रानियों 9:13-14)।

### 2. पुनरुत्थान और अंत समय की भविष्यवाणी

□  
 □  
 □  
 □

### 3. पवित्रता और आत्मिक शुद्धि

□  
 □ □ □ □ □, □  
 □  
 □ □ □ □ □ □ □ □ □

### 4. यीशु का बलिदान अंतिम बलिदान था

□ इब्रानियों 10:10 कहता है, "हम यीशु मसीह के शरीर के एक ही बार किए गए बलिदान

के द्वारा पवित्र किए गए हैं।” इसका अर्थ यह है कि अब किसी अन्य बलिदान की

आवश्यकता नहीं है, क्योंकि मसीह ने पाप के लिए पूर्ण बलिदान दे दिया।

निष्कर्ष

□ □ □ □ □ (Red Heifer) □

□ □

□□□□□□□□ □□□□□□□□ (Torah) □□□□□□□□ □□□□□□□□

□ आज के मसीही चर्च में इसे मसीह के बलिदान, आत्मिक शुद्धि, और अंतिम समय की

**भविष्यवाणियों से जोड़ा जाता है।**

□ “यीशु मसीह का लहू हमें सारे पापों से शुद्ध करता है” (1 यहन्ता 1:7)

## बाइबल पद (गिनती 19:9) हिंदी में

**”तब वह शदृश पुरुष उस गाय की राख को बसा कर छावनी के बाहर किसी शदृश स्थान में**

**रख छोड़े; और इमाएलियों की मण्डली के लिये वह जल से शुद्ध करने के निमित्त रखा**

**जाए; वह पापबलि का काम देगा।” (गिनती 19:9)**

---

## हिंदी में समझाइए

यह पद *लाल बछड़ी* (Red Heifer) की राख को इकट्ठा करने और उसे शुद्धि की प्रक्रिया में प्रयोग करने के बारे में बताता है।

1. राख को एक शुद्ध व्यक्ति द्वारा इकट्ठा किया जाता है – यह आवश्यक नहीं कि यह व्यक्ति याजक (कोहेन) हो, परंतु उसे शुद्ध होना चाहिए।
  2. राख को छावनी के बाहर एक शुद्ध स्थान में रखा जाता है – यह शुद्धिकरण की प्रक्रिया के लिए आवश्यक था, ताकि कोई भी अपवित्रता उसे दूषित न करे।
  3. इस्लाएलियों के लिए जल से शुद्ध करने हेतु रखा जाता है – इस राख को विशेष जल में मिलाकर मृत शरीर के संपर्क में आए व्यक्ति को शुद्ध करने के लिए प्रयोग किया जाता था।
  4. पापबलि का कार्य करता है – यह बलिदान अन्य बलिदानों से अलग था, लेकिन इसे पाप से शुद्ध करने का कार्य सौंपा गया था।
- 

## रब्बियों की व्याख्या

### 1. राशी (Rashi)

राशी बताते हैं कि ”पापबलि“ (Chatat) का उपयोग यह दिखाने के लिए किया गया कि यह राख पवित्र है और इसे कोई अन्य सांसारिक कार्य के लिए उपयोग नहीं किया जा सकता।

## 2. रामबान (Ramban)

रामबान मानते हैं कि इस प्रक्रिया में लाल बछड़ी की राख तीन भागों में बांटी जाती थी:

1. एक भाग माउंट ऑफ ऑलिव्स (Mount of Olives) पर रखा जाता था, ताकि उच्च याजक (High Priest) अन्य लाल बछड़ी की तैयारी के लिए इसका उपयोग कर सके।
2. दूसरा भाग याजकों को दिया जाता था, ताकि जो कोई अपवित्र हो गया हो, उसे शुद्ध किया जा सके।
3. तीसरा भाग मंदिर क्षेत्र (Chil) में रखा जाता था, ताकि इसे हमेशा के लिए संरक्षित किया जा सके।

## 3. ओर हचैम (Or HaChaim)

ओर हचैम यह बताते हैं कि यह आदेश दिखाता है कि जब कोई व्यक्ति इस नियम का पालन करता है, तो वह पूरी तोराह का पालन करने के समान पुण्य प्राप्त करता है, क्योंकि यह एक ऐसा नियम है जो पूर्ण रूप से विश्वास पर आधारित है।

## 4. मिद्रश (Midrash)

मिद्रश इस बछड़ी को इस्राएल के इतिहास से जोड़ता है। यह दिखाता है कि इस बलिदान का सोने के बछड़े (Golden Calf) की घटना से संबंध है। जैसे एक माँ अपने बच्चे के लिए प्रायशित करती है, वैसे ही लाल बछड़ी इस्राएल के उस पाप के लिए प्रायशित का कार्य करती है।

**आज के मसीही चर्च में इसका क्या महत्व है?**

मसीही चर्च लाल बछड़ी के विषय में कई दृष्टिकोण रखते हैं:

1. **यीशु मसीह और लाल बछड़ी का संबंध - कई मसीही विद्वान मानते हैं कि लाल बछड़ी**

**का बलिदान यीशु मसीह के बलिदान का प्रतीक था।**

- **लाल बछड़ी का बलिदान इमाएलियों को शुद्ध करता था, जबकि यीशु का**

**बलिदान पाप से सभी को शुद्ध करता है।**

- **लाल बछड़ी को छावनी के बाहर जलाया जाता था, जैसे कि यीशु को**

**यरूशलेम के बाहर क्रूस पर चढ़ाया गया (इब्रानियों 13:12)।**

2. **अंत समय की भविष्यवाणी - कई ईसाई मानते हैं कि तीसरा मंदिर बनने के लिए लाल**

**बछड़ी आवश्यक है।**

- **यहूदी मंदिर संस्थान (Temple Institute) में आज भी एक शुद्ध लाल बछड़ी की**

**तलाश की जा रही है।**

- **बाइबल के अनुसार, जब तीसरे मंदिर का निर्माण होगा, तब मसीह का पुनः**

**आगमन होगा।**

3. **आध्यात्मिक शिक्षा - यह दिखाता है कि पवित्रता और शुद्धता परमेश्वर की इच्छा के**

**अनुसार होती है, न कि मनुष्य की तर्कशक्ति पर।**

## निष्कर्ष

- लाल बछड़ी की राख से शुद्धि की प्रक्रिया को यहूदी धर्म में अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता था।
- रबियों के अनुसार यह बलिदान तर्क से परे है और पूर्ण विश्वास पर आधारित है।
- मसीही परिप्रेक्ष्य में, यीशु मसीह को लाल बछड़ी के बलिदान से जोड़ा जाता है।
- कुछ लोग इसे अंत समय की भविष्यवाणी से भी जोड़ते हैं।

इस प्रकार, गिनती 19:9 में उल्लिखित लाल बछड़ी का बलिदान यहूदी और मसीही दोनों परंपराओं में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

## **DONATIONS TO THE TEMPLE**

P114 Le.27:2-8 On the valuation for a person himself to the Temple

**लेवियों 27:1-34 (हिंदी में बाइबल पद)**

**"इस्राएलियों से कह, जब कोई यहोवा के लिये किसी मनुष्य के मूल्य का विशेष मन्त्र माने,"**

## **व्याख्या (हिंदी में समझाइए)**

इस अध्याय में मोल-भाव (Valuation) की व्यवस्था दी गई है, जब कोई व्यक्ति यहोवा को अपने या किसी अन्य व्यक्ति की मोल-भाव की मन्त्र मानता है। इस मोल-भाव का मूल्य व्यक्ति की

आयु और लिंग पर निर्भर करता है।

## 1. मन्त्रत और मूल्य

- जब कोई व्यक्ति अपनी स्वयं की या किसी अन्य की मोल-भाव की मन्त्रत करता था, तो उसे मंदिर को एक निश्चित राशि चुकानी होती थी।
- यह राशि पुरुषों और स्त्रियों के लिए अलग-अलग थी।
- मूल्य चार उम्र वर्गों में विभाजित थे:
  1. एक महीने से 5 वर्ष तक
  2. 5 वर्ष से 20 वर्ष तक
  3. 20 वर्ष से 60 वर्ष तक
  4. 60 वर्ष से अधिक

## 2. धन और बलिदान का संबंध

- यदि कोई निर्धन व्यक्ति होता और मन्त्रत की पूरी रकम देने में असमर्थ होता, तो याजक उसकी सामर्थ्य के अनुसार उसकी मोल-भाव का मूल्य निर्धारित करता था।
- इस प्रणाली का मुख्य उद्देश्य यह सिखाना था कि परमेश्वर को अर्पण करने की भावना महत्वपूर्ण है, न कि केवल राशि।

## 3. समर्पण का महत्व

- मोल-भाव का संबंध बलिदान से था, क्योंकि यह मंदिर को आर्थिक सहायता प्रदान करने का एक तरीका था।

- यह इस विचार को दर्शाता है कि परमेश्वर के प्रति प्रेम केवल भावनात्मक नहीं,  
बल्कि व्यावहारिक और भौतिक रूप से भी होना चाहिए।
- 

## रब्बियों की व्याख्याएँ

### 1. रब्बी योसेफ चाइमः

- जीवन को चार अवस्थाओं में बाँटकर यह सिखाया गया कि हर अवस्था में एक व्यक्ति की जिम्मेदारियाँ होती हैं।
- 20-60 वर्ष का मूल्य सबसे अधिक था क्योंकि इस उम्र में व्यक्ति सबसे अधिक उत्पादक होता है।
- 60 वर्ष के बाद मूल्य कम होने का कारण यह था कि व्यक्ति की कार्यक्षमता कम हो जाती थी।

### 2. रब्बी मेझर और रब्बी यहूदा का मतभेदः

- रब्बी मेझरः इसाएली लोग ही मोल-भाव की मन्त्रत कर सकते हैं, गैर-यहूदी नहीं।
- रब्बी यहूदाः गैर-यहूदी मोल-भाव की मन्त्रत कर सकते हैं, लेकिन उनकी स्वयं की मोल-भाव नहीं हो सकती।
- इस विवाद का कारण यह था कि गैर-यहूदी मंदिर की व्यवस्था में सीधे भाग ले सकते हैं या नहीं, इस पर अलग-अलग विचार थे।

### 3. मोल-भाव और आत्मिक उद्धार का संबंधः

- कुछ यहूदी विद्वानों का मानना था कि यह व्यवस्था न केवल आर्थिक योगदान थी, बल्कि आत्मिक रूप से उद्धार प्राप्त करने का एक माध्यम भी थी।
  - अगर कोई व्यक्ति गहन पाप में था, तो वह अपने जीवन का मूल्य देकर प्रायशिचित कर सकता था।
- 

## उदाहरण

### 1. मन्त्रत का उदाहरण:

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □,

□ "मैं अपने बेटे की मोल-भाव की मन्त्रत मानता हूँ,"

तो उसे बच्चे की उप्र के अनुसार मंदिर में राशि चुकानी होती थी।

- अगर बच्चा 6 साल का लड़का है, तो उसे 20 शेकेल चाँदी चुकानी होती थी।
- अगर वह 6 साल की लड़की है, तो उसे 10 शेकेल चाँदी चुकानी होती थी।

### 2. निर्धन व्यक्ति का उदाहरण:

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □,

□ "मैं अपने जीवन का मूल्य अर्पण करना चाहता हूँ,"

लेकिन उसके पास पूरा मूल्य नहीं होता,

तो वह याजक के पास जाता और याजक उसकी क्षमता के अनुसार राशि तय करता।

---

## मसीही दृष्टिकोण में इसका महत्व

## 1. यीशु मसीह और उद्धार:

- यीशु मसीह ने सिखाया कि उद्धार केवल धन के द्वारा नहीं, बल्कि विश्वास के द्वारा प्राप्त होता है।
- पुराने नियम की इस व्यवस्था से यह सिद्धांत मिलता है कि प्रत्येक व्यक्ति का परमेश्वर के लिए एक मूल्य है।
- मसीही मत के अनुसार, यीशु ने अपने बलिदान के द्वारा सबका मूल्य चुका दिया (1 कुरिन्यियों 6:20 - "तुम मूल्य देकर मोल लिये गए हो")।

## 2. मसीही चर्च में मन्त्रों का महत्व:

- आज भी कई मसीही लोग परमेश्वर से मन्त्र मानते हैं (जैसे, बीमार व्यक्ति के ठीक होने पर सेवा करना, या जरूरतमंदों की सहायता करना)।
- लेकिन मसीहियत में मन्त्रों को अनिवार्य नहीं माना जाता, क्योंकि उद्धार पहले से ही यीशु मसीह के बलिदान के द्वारा दिया गया है।

## 3. परमेश्वर के प्रति समर्पण:

- यह अध्याय हमें सिखाता है कि हमारा धन, समय और जीवन परमेश्वर को समर्पित होना चाहिए।
- मसीही विश्वास के अनुसार, परमेश्वर केवल धन नहीं, बल्कि हमारे सम्पूर्ण जीवन को चाहता है (रोमियों 12:1 - "अपने शरीरों को जीवित बलिदान के रूप में प्रस्तुत करो")।

## निष्कर्ष

- लेवियों 27 हमें सिखाता है कि हर व्यक्ति का एक मूल्य होता है और परमेश्वर की आराधना केवल शब्दों से नहीं, बल्कि कर्मों और बलिदानों के द्वारा भी होनी चाहिए।
- पुराने नियम की इस व्यवस्था का मुख्य उद्देश्य यह सिखाना था कि हमें परमेश्वर के प्रति अपने संपूर्ण जीवन को समर्पित करना चाहिए।
- आज मसीही चर्च में यह महत्व रखता है कि यीशु ने हमारे लिए मूल्य चुका दिया है, और हमें अपने जीवन को परमेश्वर के उद्देश्य के लिए जीना चाहिए।

### लैब्यवस्था 27:8 हिंदी बाइबल पद

#### लैब्यवस्था 27:8

"परन्तु यदि वह तेरे बताए हुए मूल्य के अनुसार देने के योग्य न हो, तो वह उस व्यक्ति को जो वचन दे चुका हो, याजक के पास ले जाए, और याजक उसकी देह शक्ति के अनुसार उसका मूल्य ठहराए।"

### इसका हिंदी में सरल विवरण

लैब्यवस्था 27:8 यह सिखाता है कि यदि कोई व्यक्ति यहोवा के लिए किसी की मूल्य (valuation) की मन्त्रत मानता है लेकिन बाद में वह पूरी रकम देने में असमर्थ होता है, तो उसे

**याजक (priest) के पास ले जाया जाएगा। याजक उसकी आर्थिक स्थिति को देखते हुए नई**

राशि तय करेगा, ताकि वह अपनी मन्त्रत को पूरा कर सके।

इससे यह संदेश मिलता है कि यहोवा किसी भी व्यक्ति को उसकी क्षमता से अधिक बोझ

नहीं देता और हर किसी को उसके सामर्थ्य के अनुसार दान देने का अवसर दिया जाता है।

---

## रब्बियों के विचार

### 1. राशी (Rashi)

- “उसे याजक के पास लाया जाएगा” का अर्थ यह है कि मूल्यांकन करने के लिए व्यक्ति को याजक के सामने लाना आवश्यक है।
- यदि वह निर्धन हो गया है, तो याजक उसे उसकी आर्थिक स्थिति के अनुसार मूल्य ठहराएगा।

### 2. इब्न एज़रा (Ibn Ezra)

- इस पद को समझने के लिए ”याजक के पास खड़ा किया जाएगा” को इस तरह समझें:

”और याजक उसे याजक के पास ले जाएगा”।

- इसका मतलब यह है कि याजक स्वयं निर्णय करेगा और व्यक्ति की आर्थिक स्थिति के अनुसार संशोधित मूल्य निर्धारित करेगा।

### 3. मालबिम (Malbim)

- "यदि वह गरीब हो गया है" का अर्थ यह नहीं है कि वह पूरी तरह निर्धन हो, बल्कि केवल इतना कि वह नियत राशि (50 शेकेल) देने में असमर्थ हो।
- यह नियम उन लोगों के लिए भी लागू होता है जो पहले संपन्न थे लेकिन बाद में निर्धन हो गए।
- याजक को वर्तमान स्थिति के अनुसार मूल्य ठहराना चाहिए, न कि भविष्य में क्या हो सकता है, इस पर ध्यान देना चाहिए।

#### 4. आदरेट एलियाहु (Aderet Eliyahu)

- यह पद यहोवा की दया और न्याय को दर्शाता है।
- यह सिर्फ आर्थिक व्यवस्था नहीं, बल्कि आत्मिक शिक्षाएं भी देता है।
- यह संकेत करता है कि जब इस्राएल पाप करता है और वह दंड के योग्य हो जाता है, तब भी यहोवा उसे उसकी स्थिति के अनुसार न्याय देता है।

#### 5. रव हिर्श (Rav Hirsch)

- "यदि वह निर्धन हो गया" का अर्थ पूर्ण रूप से निर्धन होना नहीं, बल्कि उसकी आर्थिक स्थिति में गिरावट को दर्शाता है।
- इस्राएल के आत्मिक जीवन में भी ऐसा ही होता है - यदि वे अपने संकल्प को पूरा करने में असमर्थ होते हैं, तो यहोवा उनकी स्थिति को समझता है।

#### 6. टोराह तेमीमा (Torah Temimah)

- यह नियम दिखाता है कि टोरा (Torah) मनुष्यों के प्रति सहानुभूति रखती है।
- कोई भी व्यक्ति अपनी मूल आवश्यकताओं से वंचित न रहे, इसलिए उसे अपनी क्षमता के अनुसार देने की अनुमति दी जाती है।

## उदाहरण

### 1. निर्धन व्यक्ति की मन्त्रत

यदि किसी ने मन्त्रत मानी कि वह 50 शेकेल देगा, लेकिन बाद में उसका व्यापार फूब गया और अब वह केवल 5 शेकेल ही दे सकता है, तो याजक उसे 5 शेकेल की न्यूनतम राशि तय कर सकता है, ताकि उसकी आवश्यकताएं भी पूरी हों और मन्त्रत भी पूरी हो।

### 2. अमीर व्यक्ति को अधिक नहीं देना

अगर किसी ने कहा कि वह अपनी मन्त्रत में 30 शेकेल देगा, लेकिन वह अमीर हो गया, तो टोरा उसे 50 शेकेल देने के लिए बाध्य नहीं करता। इससे यह सिद्ध होता है कि यहोवा न्यायी है और दया से देखता है।

## आज के मसीही चर्च में इसका क्या महत्व है?

### 1. आर्थिक स्थिति के अनुसार दान देना

आज के चर्च में भी यह नियम लागू होता है कि हर व्यक्ति को उसकी क्षमता के अनुसार दान देना चाहिए। यीशु ने भी इसी सिद्धांत को सिखाया:

**मरकुस 12:43-44**

"सच में, मैं तुमसे कहता हूँ, कि इस निर्धन विधवा ने सब से बढ़कर दान दिया; क्योंकि

**उन्होंने अपनी बढ़ती में से दिया, परन्तु इस ने अपनी निर्धनता में से अपना सब कुछ दे दिया।"**

## 2. अनुग्रह से भरपूर न्याय

**यीशु ने कहा कि यहोवा केवल बाहरी कार्य नहीं, बल्कि हृदय को देखता है (1 शमूएल 16:7)।**

- इसका अर्थ है कि यदि कोई व्यक्ति सच्चे मन से मसीही जीवन जीने का प्रयास कर रहा है, पर उसकी परिस्थितियाँ कठिन हैं, तो यहोवा उसे अनुग्रह प्रदान करता है।

## 3. मसीही दृष्टिकोण से मूल्य और दया

- यीशु ने मनुष्यों को धन के बजाय ईश्वर के राज्य को प्राथमिकता देने के लिए कहा (मत्ती 6:33)।
- मसीही धर्म में, यह नियम ईश्वरीय प्रेम और दया को दर्शाता है - कि हर कोई अपने हृदय और अपनी क्षमता के अनुसार योगदान कर सकता है।

## निष्कर्ष

**लैब्यवस्था 27:8** यह सिखाता है कि **यहोवा न्यायी और दयालु है।** यदि कोई निर्धन हो जाता है, तो उसकी संपत्ति के अनुसार मूल्य तय किया जाता है, ताकि वह बोझ महसूस न करे।

यह सिद्धांत आज भी चर्च में लागू होता है - **हर व्यक्ति अपनी क्षमता के अनुसार सेवा और दान कर सकता है और यहोवा उसे उसके हृदय की भावना के अनुसार आशीष देता है।**

P115 Le.27:11 - 12 On the valuation for an unclean beast to the Temple

**लैविटिकस 27:11 (Leviticus 27:11) हिंदी में:**

"**आँर यदि वह पशु अशुद्ध हो, जिसकी बलिदान के लिये यहोवा को भेंट चढ़ाना उचित नहीं है, तो वह उसे उस पशु के सामने ले आए।"**

---

## हिंदी में व्याख्या

### 1. इस पद का संदर्भ और मुख्य विषय

यह पद उस स्थिति के बारे में बात करता है जब कोई व्यक्ति किसी पशु को यहोवा को अर्पित

करता है, लेकिन वह पशु बलिदान के लिए उपयुक्त नहीं है। इसका कारण दो प्रकार का हो

**सकता है:**

1. **पशु जन्म से ही अशुद्ध हो (जैसे गधा, घोड़ा आदि), जो बलिदान के योग्य नहीं होते।**
2. **पशु शुद्ध तो हो, लेकिन उसमें कोई दोष (blemish) हो गया हो, जैसे कोई शारीरिक विकृति या बीमारी, जिससे वह बलिदान के योग्य न रहे।**

ऐसे पशुओं को पवित्र स्थान पर नहीं चढ़ाया जा सकता, बल्कि उन्हें छुड़ाया (redeem) जा

**सकता है, अर्थात् उन्हें उचित मूल्य पर वापस खरीदा जा सकता है।**

---

### 2. विभिन्न रब्बियों की व्याख्याएँ

**(A) राशी (Rashi):**

राशी का मत है कि इस पद में "अशुद्ध पशु" (האנט, *teme'ah*) का अर्थ वह पशु है जिसमें कोई शारीरिक दोष (מום, *mum*) आ गया हो, जिससे वह बलिदान के योग्य नहीं रह जाता।

 **उदाहरण:**

यदि कोई व्यक्ति एक बैल को यहोवा के लिए समर्पित करता है, लेकिन बाद में वह बैल लंगड़ा हो जाता है, तो वह बलिदान योग्य नहीं रहेगा। ऐसे में, उसे छुड़ाया जा सकता है।

**(B) राल्बाग (Ralbag - Beur HaMilot):**

राल्बाग यह स्पष्ट करते हैं कि यह नियम केवल स्थायी दोषों (permanent blemishes) पर लागू होता है।

- यदि दोष अस्थायी (temporary) है, तो पशु को बलिदान से वंचित नहीं किया जा सकता।
- यदि दोष स्थायी (permanent) है, तो पशु को छुड़ाने की अनुमति है।

 **उदाहरण:**

अगर कोई गाय बीमार पड़ जाती है लेकिन कुछ समय बाद ठीक हो सकती है, तो उसे बलिदान से वंचित नहीं किया जाएगा। लेकिन यदि गाय का एक पैर हमेशा के लिए बेकार हो गया हो, तो उसे बलिदान नहीं किया जा सकता।

**(C) बिरकात अशेर (Birkat Asher):**

यह विचार प्रस्तुत किया गया है कि अगर कोई पशु बिना किसी दोष के अर्पित किया जाता है, तो

वह तब तक पवित्र रहता है जब तक उसमें कोई दोष न आ जाए। यदि पशु शुद्ध है और उसमें कोई दोष नहीं है, तो उसे छुटकारा (redeem) नहीं किया जा सकता।

#### (D) चिज़कुनी (Chizkuni):

चिज़कुनी यह बताते हैं कि दोषयुक्त पशु को छुड़ाने के लिए इसे याजक (priest) के पास ले जाना पड़ता था। याजक उस पशु का मूल्यांकन करता और फिर इसे उचित मूल्य पर छुड़ाया जाता।

□ उदाहरण:

अगर कोई व्यक्ति अपनी भेड़ को यहोवा को अर्पित करता है, लेकिन वह किसी दुर्घटना में घायल हो जाती है, तो उसे याजक के पास ले जाना होगा, ताकि याजक यह निर्णय ले कि यह छुड़ाई जा सकती है या नहीं।

#### (E) अदेरेत एलियाहु (Aderet Eliyahu):

एक महत्वपूर्ण सवाल उठाया गया कि यदि कोई पवित्र पशु मर जाता है, तो क्या उसे छुड़ाया जा सकता है?

- यदि पशु पहले पवित्र किया गया था और फिर मर गया, तो उसे छुड़ाया नहीं जा सकता।
- यदि पशु मरने के बाद पवित्र किया जाता है, तो उसे छुड़ाया जा सकता है।

□ उदाहरण:

अगर किसी ने एक बैल को मंदिर के लिए अर्पित किया और बाद में वह मर गया, तो उसे छुड़ाया नहीं जा सकता। लेकिन यदि कोई मरा हुआ बैल मंदिर को समर्पित करता है, तो उसे

छुड़ाया जा सकता है।

### (F) डेविड ज़्रवी हॉफ्मैन (David Zvi Hoffmann):

उन्होंने पशु की स्थिति को दो भागों में बाँटा:

1. अगर दोष पशु को समर्पित करने से पहले था, तो यह केवल धनराशि की पवित्रता (*kedushat damim*) को धारण करता है और इसे मृत्यु के बाद भी छुड़ाया जा सकता है।
  2. अगर दोष पशु के समर्पण के बाद हुआ, तो यह पूर्ण रूप से पवित्र (*kedushat haguf*) हो जाता है और केवल जीवित रहते हुए छुड़ाया जा सकता है।
- 

### 3. मसीही चर्च में इस पद का क्या महत्व है?

आज के मसीही दृष्टिकोण में यह पद सीधा बलिदान की प्रक्रिया से नहीं जुड़ता क्योंकि यीशु मसीह ने अंतिम और पूर्ण बलिदान दिया (इब्रानियों 10:10-14)। लेकिन यह पद कुछ महत्वपूर्ण सिखावनियाँ देता है:

#### 1□ परमेश्वर को देने योग्य भेंट शुद्ध और बेदाग होनी चाहिए

- पुराने नियम में बलिदान योग्य पशु को बेदाग (*unblemished*) होना जरूरी था।
- नए नियम में यह इंगित करता है कि मसीह का बलिदान पूर्ण रूप से शुद्ध और निर्दोष था (1 पतरस 1:19)।

#### 2□ भक्ति और समर्पण का सिद्धांत

- अगर हम परमेश्वर को कुछ अर्पित कर रहे हैं (समय, संसाधन, सेवा), तो वह सर्वोत्तम होना चाहिए।

- हमें अधूरे मन से या दोषयुक्त चीजें नहीं देनी चाहिए।

### 3□ छुटकारे का सिद्धांत (Redemption Principle)

- जैसे दोषयुक्त पशु को छुड़ाया जा सकता था, वैसे ही परमेश्वर ने हमें यीशु मसीह के बलिदान

के द्वारा छुटकारा दिया (इफिसियों 1:7)।

- यह हमें बताता है कि जब हम पाप से दूषित हो जाते हैं, तब भी परमेश्वर हमें उद्धार दे सकता है।

---

### निष्कर्ष

□ **लैव्यव्यवस्था 27:11** □□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□

□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□

□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□,

□□□□□ □□□ □□ □□ □□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□□

□ मसीही विश्वास में यह पद समर्पण, शुद्धता और छुटकारे के गहरे अर्थ को दर्शाता है।

### □ हमारे लिए संदेश:

हमें अपने जीवन में परमेश्वर के प्रति समर्पण और पवित्रता बनाए रखनी चाहिए, क्योंकि

हम उसके अनमोल बलिदान द्वारा छुड़ाए गए हैं।

### Leviticus 27:12 in Hindi (हिंदी में बाइबल पद)

#### लैव्यव्यवस्था 27:12 –

"तब याजक उसको चाहे अच्छा ठहराए चाहे निकम्मा, जैसा याजक ठहराए वैसा ही उसका

**ठहराया जाना होगा।"**

---

## हिंदी में विस्तृत व्याख्या

यह पद मन्दिर के लिए समर्पित किसी वस्तु या पशु के मूल्यांकन की प्रक्रिया को समझाता है।

जब कोई व्यक्ति किसी वस्तु (विशेषकर जानवर) को यहोवा के लिए समर्पित करता है, तो उसका मूल्य निर्धारित करने की ज़िम्मेदारी याजक की होती है। याजक को पशु का आकलन करना होता है और जो भी वह मूल्य निर्धारित करे, वही अंतिम रूप से स्वीकार्य होता है।

इसमें यह विशेष रूप से उल्लेख किया गया है कि चाहे याजक किसी वस्तु को "अच्छा" (उच्च मूल्य का) या "निकम्मा" (कम मूल्य का) ठहराए, उसका निर्णय अंतिम होगा। व्यक्ति अपने मूल्यांकन से पीछे नहीं हट सकता।

---

## रब्बियों की व्याख्याएँ

### 1. Aderet Eliyahu

- इस स्रोत के अनुसार, न केवल बलिदान के लिए समर्पित पशु, बल्कि मंदिर की देखरेख के लिए समर्पित कोई भी संपत्ति औपचारिक मूल्यांकन की प्रक्रिया से गुजरती है।
- यदि कोई व्यक्ति एक बार उच्च मूल्य पर समर्पण कर देता है और बाद में अपनी बोली कम करना चाहता है, तो इसकी अनुमति नहीं होती।

### 2. David Zvi Hoffmann

- वे बताते हैं कि पद में "अच्छा या निकम्मा" का अर्थ यह है कि मूल्यांकन का परिणाम चाहे

**मंदिर के लिए लाभकारी हो या हानिकारक, वह स्थायी रहेगा।**

- यदि कोई व्यक्ति अपनी समर्पित संपत्ति को वापस खरीदना चाहता है, तो उसे तय की गई कीमत के अलावा पाँचवा भाग ( $1/5$  अतिरिक्त) चुकाना होगा।

### 3. Gur Aryeh

- उनका मत है कि जो व्यक्ति अपनी संपत्ति को पुनः खरीदता है, उसे उस वस्तु से अधिक लगाव होता है। इसीलिए उसे मूल्य से  $20\%$  अधिक देना पड़ता है ताकि समर्पण का पवित्र महत्व बना रहे।

### 4. Haamek Davar

- याजक को पूरी ईमानदारी से मूल्यांकन करना चाहिए और जानबूझकर मंदिर के लाभ के लिए कीमत नहीं बढ़ानी चाहिए।
- यदि याजक गलती से गलत मूल्य निर्धारित करता है, तब भी वह निर्णय मान्य रहता है।

### 5. Malbim

- उनका मत है कि याजक को पशु या वस्तु को सही तरीके से जांचकर उसका उचित मूल्यांकन करना चाहिए, अनुमान के आधार पर नहीं।

### 6. Ralbag

- मूल्यांकन को अधिक निष्पक्ष बनाने के लिए, इसे कम से कम तीन लोगों की एक समिति द्वारा किया जाना चाहिए, जिसमें एक याजक भी हो।

### 7. Rashi

- यदि कोई बाहरी व्यक्ति मंदिर से समर्पित वस्तु को खरीदना चाहता है, तो उसे केवल निर्धारित कीमत चुकानी होगी।

- लेकिन यदि वही व्यक्ति जिसने वस्तु को समर्पित किया था, उसे वापस खरीदना चाहता है, तो उसे पाँचवाँ भाग अतिरिक्त देना होगा।

#### 8. Shadal

- इस विचार के अनुसार, जब कोई व्यक्ति कोई वस्तु समर्पित करता है, तो उसे तुरंत उसकी अनुमानित कीमत चुकानी होती है।
  - यदि वह बाद में उस वस्तु को पुनः प्राप्त करना चाहता है, तो उसे अतिरिक्त भुगतान करना होगा।
- 

#### उदाहरण

माना कि किसी व्यक्ति ने एक गाय को मंदिर के लिए समर्पित किया।

- याजक उसका मूल्य 50 शेकेल तय करता है।
- यदि कोई अन्य व्यक्ति उसे मंदिर से खरीदना चाहता है, तो उसे 50 शेकेल देने होंगे।
- लेकिन यदि वही व्यक्ति जिसने गाय को समर्पित किया था, उसे वापस खरीदना चाहता है, तो उसे 50 शेकेल + 10 शेकेल ( $1/5$  भाग) देना होगा, यानी कुल 60 शेकेल।

इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि लोग मंदिर को संपत्ति समर्पित करने के बाद उसे आसानी से पुनः प्राप्त न कर सकें।

---

#### आज के मसीही चर्च में इसका क्या महत्व है?

मसीही चर्चों में लैव्यव्यवस्था 27:12 का सीधा अनुप्रयोग नहीं देखा जाता, क्योंकि न तो मंदिर

प्रणाली अस्तित्व में है और न ही याजकों द्वारा भौतिक संपत्ति का मूल्यांकन किया जाता है।

हालाँकि, इस पद से कुछ आध्यात्मिक सिद्धांत निकाले जा सकते हैं:

### 1. समर्पण का महत्व

- जब कोई व्यक्ति यहोवा के लिए कुछ समर्पित करता है, तो उसे अपने निर्णय पर  
**अडिग रहना चाहिए।**
- यह हमें सिखाता है कि हमें परमेश्वर को आधे-अधूरे मन से नहीं, बल्कि पूरी निष्ठा  
**से अर्पित करना चाहिए।**

### 2. याजकों (आत्मिक अगुवों) की ज़िम्मेदारी

- पुरानी वाचा में याजक मूल्यांकन करते थे; आज मसीही अगुवों को भी अपनी  
**सेवा में निष्पक्षता और न्याय के साथ निर्णय लेना चाहिए।**
- चर्च में किसी भी चीज़ का मूल्यांकन ईमानदारी और विवेक से किया जाना  
**चाहिए।**

### 3. बलिदान और पुनर्खरीद का सिद्धांत

- यह पद हमें यीशु मसीह के बलिदान की याद दिलाता है, जिन्होंने हमें हमारे पापों  
**से छुड़ाने के लिए अपने प्राण दिए।**
- जैसे ही पुराने नियम में समर्पित वस्तु को छुड़ाने के लिए अतिरिक्त पाँचवाँ भाग  
**देना पड़ता था, वैसे ही यीशु ने हमें मुक्त करने के लिए एक भारी कीमत चुकाई (1**  
**पतरस 1:18-19)।**

### 4. परमेश्वर के लिए उत्तम अर्पण

- यह पद हमें सिखाता है कि हम परमेश्वर को अपना सबसे अच्छा दें, न कि अपने बची-खुची चीज़ें।
- 

## निष्कर्ष

लैब्यव्यवस्था 27:12 मंदिर को समर्पित वस्तुओं के मूल्यांकन की प्रक्रिया को समझाता है। यह बताता है कि याजक का निर्णय अंतिम होता है और यदि समर्पण करने वाला व्यक्ति अपनी वस्तु को पुनः खरीदना चाहता है, तो उसे अतिरिक्त राशि देनी पड़ती है।

रब्बियों ने विभिन्न पहलुओं पर विचार किया, जैसे कि मंदिर के लिए निष्पक्ष मूल्यांकन, पाँचवाँ भाग जोड़ने का कारण, और याजक के निर्णय की स्थायित्व।

आज के मसीही संदर्भ में, यह पद हमें सिखाता है कि हमें अपने जीवन और संसाधनों को पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ परमेश्वर को अर्पित करना चाहिए, जैसे कि रोमियों 12:1 में कहा गया है:

**“इसलिए हे भाइयों, मैं परमेश्वर की दया तुम्हें समझाता हूँ, कि अपने शरीरों को जीवित, पवित्र और परमेश्वर को स्वीकार योग्य बलिदान करके चढ़ाओ; यही तुम्हारी आत्मिक आराधना है।” (रोमियों 12:1)**

---

**"यदि कोई अपने घर को यहोवा के लिये पवित्र ठहराए, तो याजक उसका मूल्य ठहराए,**

**चाहे अच्छा हो, चाहे बुरा; जैसा याजक ठहराए, वैसा ही उसका मूल्य ठहरे�।"**

— लेविटिकस 27:14

---

## हिंदी में व्याख्या

यह पद यहोवा को घर (संपत्ति) समर्पित करने और उसके मूल्यांकन से संबंधित है। यदि कोई व्यक्ति अपना घर परमेश्वर को समर्पित करता है, तो याजक उसका मूल्य ठहराएगा। यह मूल्यांकन उस संपत्ति की वास्तविक स्थिति के अनुसार होगा, चाहे वह अच्छी हो या खराब।

यदि कोई उस घर को वापस लेना चाहे, तो उसे उसी मूल्य के अनुसार धन चुकाना होगा, और यदि मूल स्वामी उसे पुनः प्राप्त करना चाहे तो उसे उस मूल्य में एक पंचमांश (20%) अधिक जोड़कर चुकाना होगा।

यह सिद्धांत यह दर्शाता है कि कोई भी वस्तु जो परमेश्वर को समर्पित की जाती है, उसका विशेष मूल्य होता है, और यदि उसे पुनः लेना है, तो अतिरिक्त समर्पण का भाव दिखाने के लिए अतिरिक्त राशि चुकानी होगी।

---

## रब्बियों के विचार

### 1. अद्वेत एलियाह

- "उसका घर" शब्द का प्रयोग यह दर्शाने के लिए किया गया है कि केवल स्वयं के घर को

ही समर्पित किया जा सकता है।

- कोई भी व्यक्ति चोरी की गई संपत्ति को परमेश्वर को समर्पित नहीं कर सकता।

## 2. डेविड ज़्वी हॉफमैन

- "उसका घर" इस बात पर जोर देता है कि केवल वही चीज़ समर्पित की जा सकती है जो वास्तव में व्यक्ति की अपनी हो।
- यदि कोई घर समर्पित किया गया और कोई बाहरी व्यक्ति उसे वापस लेना चाहता है, तो उसे उसी मूल्य पर खरीदना होगा।

## 3. हाआमेक दवार

- यह आवश्यक है कि समर्पण के समय व्यक्ति स्पष्ट रूप से यह घोषित करे कि वह इसे "यहोवा के लिए पवित्र" ठहरा रहा है।
- "ठहरेगा" शब्द बताता है कि घर अब एक ऊँचे आध्यात्मिक दर्जे में प्रवेश कर चुका है।

## 4. इब्र एज़ा

"याकुम" (Yakum) का अर्थ है "स्थिर रहेगा"-अर्थात् याजक जो भी मूल्य ठहराएगा, वह किसी भी परिस्थिति में नहीं बदलेगा।

## 5. मलबिम

- "घर" शब्द का दो बार प्रयोग यह स्पष्ट करता है कि यहाँ विशेष रूप से भवन की ही बात हो रही है, न कि अन्य वस्तुओं की।
- अगर किसी अन्य व्यक्ति ने इसे खरीद लिया, तो यह जुबली वर्ष (50वें वर्ष) में मूल

**मालिक को वापस लौट आएगा।**

## 6. रालबाग

- याजक का आकलन अंतिम होता है, चाहे वह मंदिर के लिए लाभदायक हो या नहीं।
- संपत्ति की कीमत का निर्धारण निष्पक्ष और निष्कलंक तरीके से किया जाना चाहिए।

## 7. रैव हिंश

- "घर" का मतलब केवल चार दीवारी नहीं है, बल्कि व्यक्ति का पूरा अधिपत्य है।
- कुछ चीजें जो पवित्र ठहराई गई हैं, वे व्यक्तिगत उपयोग के लिए नहीं हो सकतीं।

## 8. तोराह तेमीमा

- केवल वही वस्तु पवित्र ठहराई जा सकती है जो वास्तव में व्यक्ति की खुद की हो।
- 

## उदाहरण

□ कल्पना करें कि किसी व्यक्ति ने अपना घर मंदिर को समर्पित कर दिया।

1. याजक उस घर का मूल्य 1,000 रोकेल ठहराता है।
2. यदि कोई अन्य व्यक्ति उसे खरीदना चाहे, तो उसे 1,000 रोकेल चुकाने होंगे।
3. यदि मूल स्वामी उसे पुनः खरीदना चाहे, तो उसे 1,200 रोकेल ( $1,000 + 200$ ) चुकाने होंगे।

इस व्यवस्था का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि लोग अपने संपत्तियों को हल्के में समर्पित न

**करें और यदि वे वापस चाहते हैं तो उन्हें अतिरिक्त जिम्मेदारी लेनी पड़े।**

---

## आज के मसीही चर्च में इसका क्या महत्व है?

1. **समर्पण और त्याग की भावना** - यह पद हमें सिखाता है कि जो कुछ हम परमेश्वर को अर्पित करते हैं, उसे हल्के में नहीं लेना चाहिए।
2. **ईमानदारी और निष्ठा** – केवल वही चीज़ें परमेश्वर को समर्पित की जा सकती हैं जो हमारे पास कानूनी रूप से और नैतिक रूप से हों।
3. **आध्यात्मिक मूल्यांकन** – आज के समय में, यह कलीसिया, सेवा कार्य, और दूसरों की मदद करने के लिए हमारे संसाधनों को समर्पित करने की शिक्षा देता है।
4. **नए नियम में** – पौलुस कहता है कि हमारा शरीर ही "परमेश्वर का मंदिर" है (1 कुरिन्थियों 6:19), और हमें इसे उसकी महिमा के लिए पवित्र रखना चाहिए।

इस प्रकार, लेविटिकस 27:14 आज भी यह सिखाता है कि हमें अपने संसाधनों और जीवन को परमेश्वर को समर्पित करने में गंभीर रहना चाहिए, और यदि हम कुछ वापस लेना चाहते हैं, तो हमें अतिरिक्त समर्पण और त्याग दिखाने की आवश्यकता होती है।

---

P117 Le.27:16, 22-23 On the valuation of a field as a donation to the Temple

**बाइबल पद (लैब्यव्यवस्था 27:16-25) - हिंदी में**

**लैब्यव्यवस्था 27:16 – "यदि कोई मनुष्य अपने निज के अधिकार की भूमि का कुछ अंश**

**यहोवा को समर्पित करे, तो उसका मूल्य उसकी उपज के अनुसार आँका जाएगा; अर्थात्**

**प्रति होमर जौ के बीज का मूल्य पचास शेकेल चाँदी आँका जाएगा।"**

**लैब्यवस्था 27:17-25 -** इस पूरे भाग में सदेह अखूजा (पैतृक भूमि) के पवित्रीकरण

(consecration), छुटकारे (redemption), और जुबली वर्ष में इसके पुनः लौटने के नियम दिए गए हैं। यदि भूमि को पुनः छुड़ाने की प्रक्रिया में देर होती है, तो उसकी गणना शेष वर्षों के अनुसार होती है।

---

## **समझाइए: सदेह अखूजा (पैतृक भूमि) का नियम क्या है?**

### **1. सदेह अखूजा क्या है?**

सदेह अखूजा वह खेत है जो किसी व्यक्ति ने अपने पूर्वजों से विरासत में प्राप्त किया हो। इस प्रकार की भूमि का स्वामित्व स्थायी होता है और यह व्यक्ति के परिवार की संपत्ति मानी जाती है।

- यदि कोई व्यक्ति इस भूमि को यहोवा को समर्पित करता है (यानी मंदिर के लिए देता है), तो उसे छुड़ाने के लिए एक निश्चित मूल्य चुकाना होगा।
- यह मूल्य भूमि में उगने वाले जौ के बीज की क्षमता पर आधारित होता है, न कि भूमि की उर्वरता या गुणवत्ता पर।

□ दूसरी भूमि का नियम अलग था:

अगर कोई खरीदी हुई भूमि (सदेह मिक्रेह) को समर्पित करता है, तो वह केवल जुबली वर्ष तक मंदिर की होती थी और फिर मूल स्वामी को वापस मिल जाती थी।

## 2. भूमि की कीमत और छुटकारे की प्रक्रिया

### (क) मूल्य निर्धारण कैसे होता था?

- प्रति होमर (225 लीटर) जौ के बीज के लिए 50 शेकेल चाँदी का मूल्य तय था।
- यदि व्यक्ति जुबली वर्ष के प्रारंभ में छुड़ाता है, तो उसे पूरी कीमत चुकानी होती थी।
- यदि जुबली वर्ष के पहले के वर्षों में छुड़ाया जाता है, तो कीमत शेष वर्षों के आधार पर घटती जाती थी।

### (ख) यदि भूमि छुड़ाई न जाए तो क्या होता था?

- यदि वह भूमि छुड़ाई नहीं जाती, तो जुबली वर्ष में यह मंदिर (याजकों) की स्थायी संपत्ति बन जाती थी और मूल स्वामी उसे दोबारा प्राप्त नहीं कर सकता था।

### □ आधुनिक रूप में समझें:

मान लीजिए कि किसी किसान की भूमि की क्षमता 10 विंचटल जौ उगाने की है। यदि वह भूमि मंदिर को समर्पित करता है और फिर छुड़ाना चाहता है, तो उसे एक निश्चित धनराशि देनी होगी। यदि जुबली वर्ष से केवल 10 वर्ष शेष हैं, तो उसे केवल 10/50 भाग का मूल्य देना होगा।

## 3. रब्बियों की व्याख्याएँ और उनके विचार

### (1) डेविड ज़वी हॉफमैन

- उन्होंने स्पष्ट किया कि सदेह अखूज़ा (पैतृक भूमि) का मूल्य तय किया जाता था, लेकिन

यदि कोई खरीदी हुई भूमि होती (सदेह मिक्रेह), तो वह मूल्य पर नहीं बेची जाती, बल्कि सीधे मूल मालिक को लौटाई जाती थी।

## (2) रशी (Rashi)

- उन्होंने कहा कि यह मूल्यांकन जुबली वर्ष के प्रारंभ में लागू होता है, और यदि जुबली वर्ष तक समय बीत गया है, तो मूल्यांकन शेष वर्षों के आधार पर घटता जाता है।

## (3) रालबाग (Ralbag)

- उन्होंने बताया कि यदि भूमि जुबली के बाद समर्पित की गई हो, तो उसका मूल्य शेष वर्षों के आधार पर तय किया जाएगा।
- उन्होंने यह भी कहा कि सप्ताहिक वर्ष (शेमिता) को भी इस गणना में जोड़ा जाता था।

## (4) हैआमेक दावर (Haamek Davar)

- उन्होंने समझाया कि चूंकि जुबली वर्ष में भूमि याजकों (कोहनिम) को चली जाती थी, इसलिए इसका मूल्य केवल बुनियादी कृषि क्षमता पर आधारित था, ताकि कोई इसे खरीदने के बाद इसमें अनावश्यक सुधार न करे।

## (5) अदेरेत एलियाहु (Aderet Eliyahu)

- उन्होंने जोर दिया कि भूमि का मूल्य बीज बोने की क्षमता पर आधारित था, न कि भूमि की उपज पर।

## (6) बिरकत आशेर (Birkat Asher)

- उन्होंने कहा कि रशी का शिक्षण बहुत प्रभावी था क्योंकि उन्होंने इस पूरे कानून को बहुत

ही स्पष्ट रूप से समझाया था।

---

## 4. आज के मसीही चर्च में इस नियम का क्या महत्व है?

### (क) ईसाई दृष्टिकोण

#### 1. मूल्य और छुटकारे का सिद्धांत

- यह नियम मसीह द्वारा किए गए छुटकारे (Redemption) के सिद्धांत से मेल खाता है। जैसे भूमि को छुड़ाने के लिए एक निश्चित मूल्य चुकाना पड़ता था, वैसे ही प्रभु यीशु ने अपने लहू के द्वारा पापियों को छुड़ाया (1 पतरस 1:18-19)।

#### 2. जुबली वर्ष और स्वतंत्रता

- जुबली वर्ष का अर्थ छुटकारा और स्वतंत्रता से जुड़ा था। ईसा मसीह ने स्वयं कहा कि "यहोवा का अनुग्रह का वर्ष" आया है (लूका 4:18-19), जिसका संबंध इस छुटकारे के नियमों से है।

#### 3. पैतृक विरासत और स्वर्गीय विरासत

- यह नियम यहूदियों के लिए सदैव की भूमिकी अवधारणा पर आधारित था। ईसाई धर्म में, यह स्वर्गीय विरासत का प्रतीक माना जाता है (इब्रानियों 11:16)।

### (ख) आधुनिक चर्च में इसकी क्या प्रासंगिकता है?

- चर्च इस सिद्धांत को आत्मिक छुटकारे (Spiritual Redemption) और परमेश्वर की

**स्वर्गीय योजना से जोड़ता है।**

- जुबली वर्ष का नियम दर्शाता है कि परमेश्वर चाहता है कि लोग स्वतंत्र और छुटकारे का अनुभव करें।
- 

## **निष्कर्ष**

1. सदेह अखूज़ा की व्यवस्था का मुख्य उद्देश्य पैतृक भूमि की सुरक्षा और धार्मिक पवित्रता बनाए रखना था।
2. भूमि के मूल्य का निर्धारण उसकी कृषि क्षमता के आधार पर होता था, न कि उसकी गुणवत्ता पर।
3. रब्बियों ने इस नियम की विस्तृत व्याख्या की, जिसमें रशी, रालबाग, हॉफमैन, हामेक दावर आदि शामिल थे।
4. आधुनिक मसीही दृष्टिकोण इसे येशु मसीह द्वारा किए गए छुटकारे और आत्मिक विरासत के रूप में देखता है।

□ □ □ □ □ □ □ □ □: यह नियम केवल भूमि के मूल्य के बारे में नहीं था, बल्कि छुटकारे और विरासत की एक गहरी आध्यात्मिक अवधारणा को दर्शाता था, जिसे मसीही धर्म में येशु मसीह की बलिदानमयी मृत्यु से जोड़ा जाता है।

## लैविक्यवस्था 27:22 (Leviticus 27:22) - हिंदी में:

"और यदि कोई व्यक्ति अपने अधिकार क्षेत्र के खेत के सिंवाय, जो खरीदी गई भूमि हो,  
यहोवा के लिए पवित्र कर दे,"

---

□ अदेह अरखूजा: अदेह अरखूजा (अदेह अरखूजा) □ अदेह अरखूजा  
(अदेह अरखूजा)

1. **सदेह अरखूजा (पैतृक भूमि)** – यह वह खेत है जो किसी को उसके पूर्वजों से विरासत में

मिला हो। इसे स्थायी संपत्ति माना जाता है। यदि इसे पवित्र कर दिया जाए (यहोवा को समर्पित कर दिया जाए), तो इसे छुड़ाने का एक निश्चित मूल्य तय किया जाता है, और यदि यह छुड़ाया न जाए तो यौवल (जुबली) वर्ष में यह याजकों को मिल जाता है।

2. **सदेह मिक्रेह (खरीदी हुई भूमि)** – यह वह खेत है जो किसी ने खरीदा हो, न कि अपने

पूर्वजों से प्राप्त किया हो। इस प्रकार की भूमि जुबली वर्ष में अपने मूल मालिक को लौट जाती है और इसे पुजारियों को नहीं दिया जाता।

---

□ अदेह अरखूजा □ अदेह अरखूजा □ अदेह अरखूजा

1. □ अदेह अरखूजा –

सदेह मिक्रेह को जुबली वर्ष में पुजारियों को नहीं दिया जाता, क्योंकि यह हमेशा ही अपने मूल मालिक को वापस लौटती है।

2. □ □□□ -

सदेह अखूज्जा के विपरीत, सदेह मिक्रेह को याजकों को नहीं दिया जाता, क्योंकि जुबली वर्ष में यह अपने पहले के स्वामी को लौटना ही है।

3. □ □□□□□ □□□□□ □□□□□ -

यदि कोई अपने पिता से भूमि खरीदता है और पिता की मृत्यु से पहले उसे पवित्र कर देता है, तो यह भूमि सदेह मिक्रेहमानी जाती है। लेकिन यदि पिता की मृत्यु के बाद उसे समर्पित किया जाता है, तो यह सदेह अखूज्जा बन जाता है और याजकों को चला जाता है।

4. □ □□□□□ □□□ -

सदेह मिक्रेह का तात्पर्य केवल उन खेतों से है, जो पूर्वजों से नहीं मिले। अगर कोई व्यक्ति अपने परिवार के खेत को किसी से खरीदता है और उसे छुड़ाने के लिए आंशिक भुगतान करता है, तो भी इसे सदेह अखूज्जा माना जाएगा।

5. □ □□□□□ -

यदि कोई अपनी विरासत में मिली भूमि को पवित्र करता है, और फिर उसे छुड़ाने की कोशिश करता है, तो उसका मूल्य जुबली वर्ष तक बचे हुए वर्षों पर आधारित होगा।

6. □ □□□□□□ -

जब बाइबल कहती है कि भूमि जुबली वर्ष में "मालिक के पास लौटेगी", तो इसका मतलब उस व्यक्ति से है जिससे यह भूमि पहले खरीदी गई थी।

## 1. यीशु मसीह द्वारा छुटकारा -

इन व्यवस्थाओं में छुटकारे (Redemption) की अवधारणा बहुत महत्वपूर्ण है। यह दर्शाता है कि भूमि को हमेशा किसी न किसी रूप में पुनः प्राप्त किया जा सकता है, ठीक वैसे ही जैसे यीशु मसीह ने हमें पाप से छुड़ाया।

## 2. ईश्वर का स्वामित्व -

जैसा कि लैब्यवस्था 25:23 कहती है, "भूमि यहोवा की है", इसी तरह मसीही विचारधारा में यह समझाया जाता है कि हम केवल इस पृथ्वी के प्रबंधक हैं, मालिक नहीं।

## 3. जुबली का प्रतीकात्मक अर्थ –

जुबली वर्ष माफी, बहाली और स्वतंत्रता का प्रतीक है, जो ईसा मसीह की शिक्षा के अनुरूप है। लूका 4:18-19 में यीशु घोषणा करते हैं कि वे "बंदियों को स्वतंत्र करने" और "यहोवा के अनुग्रह के वर्ष" का प्रचार करने आए हैं।

## 4. अनन्त विरासत -

जैसे सदेह अखूज़ा परिवार की स्थायी संपत्ति होती थी, वैसे ही मसीही विश्वास में परमेश्वर की राज्य में हमारी विरासत अनन्त है।

- मान लीजिए कि कोई व्यक्ति अपने पिता से एक खेत खरीदता है, लेकिन फिर उसे यहोवा को समर्पित कर देता है। यदि पिता की मृत्यु के बाद यह समर्पण किया जाता है, तो इसे पुजारियों को दिया जाएगा, लेकिन यदि पिता के जीवनकाल में ही समर्पित कर

**दिया गया, तो यह जुबली में अपने मूल मालिक को लौट जाएगा।**

- इसी तरह, मसीही विचारधारा में यह समझाया जाता है कि परमेश्वर हमारे जीवन का अंतिम स्वामी हैं, और केवल उन्हीं के साथ हमारा अनन्त संबंध है।

लैब्यवस्था 27:23 - हिन्दी में बाइबल पद

"तो याजक उस वर्ष के अन्त तक उसकी कीमत ठहराए, और उस दिन वह अपनी ठहराई हुई कीमत यहोवा को पवित्र वस्तु जान कर दे।"

## हिन्दी में व्याख्या

### 1. समर्पित खेत का छुटकारा (Redemption of a Dedicated Field)

लैब्यवस्था 27:23 एक ऐसे खेत के छुटकारे के नियम को समझाता है जिसे किसी व्यक्ति ने यहोवा को समर्पित किया था। यह दो प्रकार के खेतों पर लागू होता है:

- वंशानुगत खेत (Sdeh Achuza) - जो किसी को अपने पूर्वजों से विरासत में मिला हो।
- खरीदी हुई भूमि (Sdeh Mikneh) - जिसे किसी ने खरीदा हो और फिर पवित्र कर दिया हो।

जब कोई अपनी खरीदी हुई भूमि यहोवा को समर्पित करता है, तो उसे उसका मूल्यांकन करवाना पड़ता है। यह मूल्यांकन याजक द्वारा किया जाता है और यह जुबली वर्ष तक खेत के उपयोग के आधार पर तय होता है।

- यदि समर्पित खेत छुटकारा लिया जाता है, तो उसके लिए व्यक्ति को याजक द्वारा निर्धारित मूल्य देना पड़ता है।
  - "उस दिन वह अपनी ठहराई हुई कीमत यहोवा को पवित्र वस्तु जान कर दे" - यह वाक्य इंगित करता है कि भुगतान तत्काल होना चाहिए, इसे ऋण के रूप में नहीं रखा जा सकता।
- 

## 2. रब्बियों की व्याख्याएँ

"मूल्य का हिसाब (*Michsat ha'erech*)" क्या दर्शाता है?

### 1. HaKtav VeHaKabalah

- "Michsat" शब्द का अर्थ है मूल्य का आकलन।
- वंशानुगत खेतों के विपरीत, खरीदी गई भूमि की कीमत उसकी वास्तविक उपयोगिता के अनुसार आंकी जाती है।
- *Sdeh Achuza* की पुनर्खरीद के लिए बीज की मात्रा के आधार पर एक निश्चित दर होती है, लेकिन *Sdeh Mikneh* के लिए ऐसी कोई निर्धारित दर नहीं है।

### 2. Aderet Eliyahu

- "Michsat" शब्द *Arakhin 14b* से जुड़ा है, जो इंगित करता है कि खरीदी गई भूमि

**को छुटकारा देने में एक अतिरिक्त पाँचवां भाग (20% अतिरिक्त) नहीं जोड़ा**

**जाता, जबकि वंशानुगत भूमि में यह जोड़ा जाता है।**

### 3. Ibn Ezra

- "Michsat" शब्द का अर्थ है संख्या या गिनती के अनुसार मूल्यांकन।

### 4. Ralbag

- **कोई व्यक्ति ऐसी चीज़ को समर्पित नहीं कर सकता जो वास्तव में उसकी न हो।**
- चूंकि खरीदी गई भूमि जुबली वर्ष में असली मालिक को लौट जाती है, इसलिए इसकी स्थिति अलग होती है।

### 5. Torah Temimah

- यह दर्शाता है कि खरीदी गई भूमि के छुटकारे में अतिरिक्त पाँचवां भाग नहीं जोड़ा जाता।
- 

## "उस दिन" का क्या अर्थ है?

### 1. Haamek Davar

- "उस दिन" का अर्थ यह नहीं कि जब भूमि समर्पित की गई, बल्कि जिस दिन छुटकारे का भुगतान किया गया।
- **व्यक्ति को मूल्य तुरंत चुकाना चाहिए, इसे ऋण के रूप में नहीं रखा जा सकता।**

### 2. Malbim

- **यदि व्यक्ति के पास मूल्य का भुगतान करने के लिए मूल्यवान वस्तुएं (जैसे**

**मोती) भी हैं, तो उसे इंतजार नहीं करना चाहिए कि बाज़ार में उनकी कीमत बढ़े।**

### 3. Torah Temimah

- **व्यक्ति को देरी नहीं करनी चाहिए, क्योंकि समर्पित वस्तु केवल विशेष समय और स्थान में पवित्र मानी जाती है।**
- 

### 3. समर्पित भूमि के धन का उपयोग

Reggio ने समझाया कि जब भूमि छुटकारे के लिए बेची जाती है, तो इसकी कीमत मंदिर कोष (Temple Treasury) में जाती है न कि याजकों के पास।

---

### 4. आज के मसीही चर्च में इस कानून का क्या महत्व है?

आज के मसीही चर्च में यह नियम सीधे रूप से लागू नहीं होता, लेकिन इससे समर्पण और भक्ति की एक गहरी सीख मिलती है।

**आधुनिक मसीही सिद्धांत में इसकी प्रासंगिकता:**

#### 1. समर्पण और ईमानदारी

- जिस तरह से समर्पित वस्तु को समय पर छुटकारा देना ज़रूरी था, उसी तरह मसीही विश्वासी को ईश्वर के प्रति अपनी प्रतिज्ञाओं और भक्ति में ईमानदार रहना चाहिए।

#### 2. देने में तत्परता (Cheerful Giving)

- बाइबल में सिखाया गया है कि हमें प्रसन्नता से देना चाहिए, बिना किसी देरी या स्वार्थ के (2 कुरिन्यों 9:7)।
- लैब्यव्यवस्था 27:23 भी सिखाता है कि जब हम परमेश्वर को कुछ समर्पित करते हैं, तो उसे तुरंत और बिना विलंब किए पूरा करना चाहिए।

### 3. अचल संपत्ति और चर्च प्रबंधन

- पुराने नियम के ज़माने में ज़मीनें परमेश्वर की ओर से मिली आशीष मानी जाती थीं। आज भी, कई चर्च और मसीही संस्थान अपने संसाधनों का उपयोग मिशनरी कार्यों और सेवाओं के लिए करते हैं।

### 4. पवित्रता का सिद्धांत

- समर्पित भूमि की कीमत मंदिर के कोष में दी जाती थी, जिससे मंदिर का कार्य चलता था। इसी तरह, मसीही विश्वासी को अपने संसाधनों को परमेश्वर के कार्य और सेवकाई में उपयोग करना चाहिए।

## निष्कर्ष

लैब्यव्यवस्था 27:23 सिखाता है कि जब हम परमेश्वर को कुछ समर्पित करते हैं, तो हमें ईमानदारी, तत्परता और निस्वार्थता के साथ उसे पूरा करना चाहिए। भले ही यह कानून आज मसीही चर्च में सीधे लागू नहीं होता, फिर भी यह समर्पण, भक्ति और ईमानदारी का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत सिखाता है।

P118 Le.5:16 If benefit from Temple property, restitution plus 1/5th

## लैंब्यव्यवस्था 5:16 - हिंदी में बाइबल पद

"**और पवित्र वस्तु की जो हानि हुई हो उसका मुआविज्ञा भर कर उसका पाँचवा भाग उसमें और मिला कर याजक को दे; तब याजक मेलबलि का मेढ़ा लेकर उसके लिये प्रायश्चित्त करेगा, और उसको क्षमा मिल जाएगी।"** (लैंब्यव्यवस्था 5:16)

---

## हिंदी में व्याख्या

यह पद उन नियमों के बारे में है जो किसी व्यक्ति द्वारा अजाने में पवित्र वस्तुओं के दुरुपयोग (मिसयूज़) पर लागू होते हैं। यदि किसी ने गलती से पवित्र वस्तु का उपयोग कर लिया (जैसे मंदिर के लिए समर्पित चीजों का व्यक्तिगत उपयोग किया), तो उसे:

1. **मूल्य की भरपाई करनी होगी** - जिस वस्तु या धन का उपयोग किया, उसे वापस देना होगा।
2. **एक-पाँचवाँ भाग (20%) अतिरिक्त देना होगा** - इसे *chomesh* (छमाओ) कहा जाता है, और यह दंडस्वरूप जोड़ा जाता है।
3. **प्रायश्चित बलिदान (गिल्ट ऑफरिंग - अशाम बलि) देना होगा** - मंदिर में एक निर्दोष मेढ़ा (राम) बलि के रूप में देना होगा।

इसके बाद याजक (पुजारी) बलिदान चढ़ाकर प्रायश्चित करेगा, और पापी को क्षमा मिल

जाएगी।

---

## रब्बियों की व्याख्याएँ

### 1. पाँचवाँ भाग जोड़ने का गणित

- **रब्बी योचनान** – *chomesh* मूल राशि का 20% होता है।
  - उदाहरण: यदि किसी ने 100 रोकल की पवित्र वस्तु का उपयोग किया, तो उसे **120 रोकल चुकाने होंगे** ( $100 + 20$ )।
- **रब्बी योशियाह** - उनका मानना है कि कुल भुगतान राशि की गणना अलग तरीके से होती है। यदि 100 रोकल खर्च हुए तो कुल चुकाई गई राशि का  $4/5$  हिस्सा मूल राशि होता है, जिससे कुल **125 रोकल** बनते हैं।

### 2. बलिदान का उद्देश्य

- **गुर आर्य** – मूल राशि लौटाना तो आर्थिक सुधार है, लेकिन *chomesh* देना आत्मिक प्रायश्चित के लिए आवश्यक है।
- **मालबिम** - जब तक पूरी भरपाई और बलिदान नहीं दिया जाता, तब तक पाप नहीं मिटता।

### 3. याजक की भूमिका

- **हाआमेक दावार** - याजक इस धन को मंदिर के लिए सही जगह उपयोग में लाने का ज्ञान रखते हैं।

- **मालबिम** – यदि याजक स्वयं भी पवित्र वस्तु का गलत उपयोग करे, तो उसे भी नियमों  
का पालन करना होगा।

#### 4. क्षमा कैसे मिलती है?

- **मालबिम** – यदि बलिदान के दौरान रक्त के छिकाव में कोई त्रुटि हो जाए, तब भी  
परमेश्वर क्षमा करता है।
- 

### उदाहरण

1. **कोई गलती से मंदिर का अनाज खा ले** – अगर कोई व्यक्ति मंदिर के लिए समर्पित अनाज को गलती से खा ले, तो उसे उस अनाज का मूल्य + 20% जोड़कर देना होगा और एक मेढ़ा बलिदान करना होगा।
  2. **कोई मंदिर के धन का निजी उपयोग कर ले** – यदि कोई गलती से मंदिर के धन का उपयोग अपनी जरूरतों के लिए करता है, तो उसे वह राशि + पाँचवाँ भाग वापस देना होगा और प्रायश्चित बलिदान चढ़ाना होगा।
- 

### मसीही चर्च में इसका क्या अर्थ है?

#### 1. यीशु मसीह में पूर्ण प्रायश्चित

मसीही विश्वास के अनुसार यीशु मसीह ने क्रूस पर बलिदान देकर सभी पापों का प्रायश्चित कर दिया। इसलिए आज मसीही चर्च में कोई भी व्यक्ति बलिदान देने की ज़रूरत नहीं समझता।

## इब्रानियों 10:10 - "और उसी इच्छा से हम यीशु मसीह के शरीर के एक ही बार बलिदान

चढ़ाए जाने के द्वारा पवित्र किए गए हैं।"

### 2. पवित्र वस्तुओं का सम्मान

हालांकि आज मंदिर में बलिदान नहीं होते, लेकिन चर्च में समर्पित धन और वस्तुओं का सम्मान करना आवश्यक है।

- चर्च में दी गई भेंट का दुरुपयोग करना नैतिक रूप से गलत माना जाता है।
- जो लोग चर्च के संसाधनों का गलत उपयोग करते हैं, उन्हें पश्चाताप करना चाहिए और जो नुकसान हुआ उसकी भरपाई करनी चाहिए।

### 3. मसीही सिद्धांत में दान और भेंट

मसीही धर्म में दान और भेंट (tithe) देने की परंपरा है, और इसे पवित्र माना जाता है।

- 2 कुरिन्थियों 9:7 - "हर एक जन जैसा मन में ठाने वैसा ही दान करे, न कुड़कुड़ाकर और न दबाव से, क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देनेवाले को प्रेम करता है।"
- यदि कोई चर्च का धन या संसाधन गलत उपयोग करता है, तो उसे अपनी गलती मानकर सुधार करना चाहिए।

## निष्कर्ष

- पवित्र वस्तु के दुरुपयोग पर लैब्यव्यवस्था 5:16 में सज़ा का प्रावधान है - मूल धन लौटाना + 20% अतिरिक्त देना + बलिदान चढ़ाना।

- यह नियम न्याय, पश्चाताप और मंदिर की पवित्रता को बनाए रखने के लिए था।
  - मसीही सिद्धांत में, यीशु मसीह ने पूर्ण प्रायश्चित कर दिया है, इसलिए आज चर्च में यह नियम लागू नहीं होता, लेकिन पवित्र वस्तुओं का सम्मान अभी भी ज़रूरी है।
  - कोई भी पवित्र वस्तु का उपयोग अनैतिक रूप से नहीं करना चाहिए, और अगर गलती से ऐसा हो जाए, तो सही प्रायश्चित करना चाहिए।
- 

P119 Le.19:24 On the fruits of the trees fourth year's growth

### लेव 19:24 हिंदी बाइबल पद

"और चौथे वर्ष उसका सारा फल यहोवा के लिये पवित्र, स्तुति करने के लिये ठहरे।"

---

### इसकी व्याख्या (समझाना)

यह नियम इसराएलियों को यह सिखाने के लिए दिया गया था कि उनकी भूमि और उसकी उपज परमेश्वर की ओर से आशीर्वाद है। जब कोई नया वृक्ष लगाया जाता था, तो उसके पहले तीन वर्षों के फल को "अपरिपक्व" माना जाता था और उसे खाने की अनुमति नहीं थी। लेकिन चौथे वर्ष में उपजे सारे फल को परमेश्वर के लिए पवित्र माना जाता था और उसे यरूशलेम में लाकर वहाँ स्तुति और धन्यवाद के साथ खाया जाता था।  
यदि कोई यरूशलेम नहीं जा सकता था, तो वह फलों को रूपयों से छुड़ाकर (redeem) ले सकता था, लेकिन उसे उसकी कीमत का पाँचवां भाग (20%) और जोड़कर देना पड़ता था।

## रब्बियों के अनुसार इस नियम की व्याख्या

### 1. "पवित्र और स्तुति करने योग्य" का अर्थ क्या है?

- राशी कहते हैं कि इसका उद्देश्य यह है कि इस्राएली यरूशलेम जाएं और वहाँ जाकर परमेश्वर की स्तुति करें।
- मालबिम बताते हैं कि "पवित्र" का अर्थ है कि फल को परमेश्वर के लिए अलग रखा गया है, और "स्तुति करने योग्य" का अर्थ है कि जब इसे खाया जाए, तो परमेश्वर की प्रशंसा और धन्यवाद किया जाए।
- हाअमेक दावरः कहते हैं कि इस नियम से यह सिखाया जाता है कि कोई भी वस्तु परमेश्वर का धन्यवाद किए बिना उपयोग नहीं करनी चाहिए।

### 2. वृक्ष के वर्षों की गणना कैसे होती थी?

- मालबिम बताते हैं कि किसी भी नए वृक्ष का पहला वर्ष रोपण (planting) के साल की रोश हशाना (यहूदी नव वर्ष) से गिना जाता था।
- यदि कोई वृक्ष रोश हशाना से 30 दिन पहले लगाया गया होता, तो वह पहले वर्ष में गिना जाता था।
- तोरा तेमीमा कहते हैं कि चौथे वर्ष के फल को 15 शवात (Tu Bishvat, पेड़ों का नया साल) से पहले नहीं खाया जा सकता था।

### 3. क्या सभी प्रकार के फल इसमें शामिल थे?

- मिजराची कहते हैं कि "सारा फल" शब्द यह दर्शाता है कि भले ही कुछ फल अच्छी गुणवत्ता के न हों, फिर भी उन्हें यरूशलेम में ले जाना आवश्यक था।

- र' योसी के अनुसार, केवल पके हुए फल ही इस नियम के अंतर्गत आते थे, कच्चे या अधपके फल नहीं।

#### 4. क्या यह नियम दान (tithes) से जुड़ा था?

रालबाग बताते हैं कि यह नियम अनाथ, विधवाओं, या लेवियों के लिए दान देने वाले नियमों से अलग था।

यह केवल उन व्यक्तियों के लिए था, जिनके पास अपने बाग-बगीचे थे, और उनके पास

उनके पहले चार वर्षों के फल का उपयोग करने की कोई अनुमति नहीं थी।

#### 5. इसका दूसरा दशमांश (Maaser Sheni) से क्या संबंध है?

- मालबिम बताते हैं कि दूसरे दशमांश (Maaser Sheni) की तरह, चौथे वर्ष के फल को भी यरूशलेम में ही खाया जाना था।
- अगर इसे छुड़ाया जाता था, तो 20% अतिरिक्त राशि जुड़ती थी, ठीक वैसे ही जैसे दूसरे दशमांश के धन के साथ होता था।

### उदाहरण के साथ समझाना

#### 1. बिना छुड़ाए फल को यरूशलेम ले जाना:

माना कि किसी व्यक्ति के पास एक सेब का बाग है। जब बाग चौथे वर्ष में आता है, तो वह अपने पूरे सेब की फसल को यरूशलेम ले जाता है और वहाँ मंदिर में परमेश्वर की स्तुति करते हुए इसे खाता है।

#### 2. फल को छुड़ाना (Redeem करना):

यदि कोई व्यक्ति यरूशलेम जाने में असमर्थ हो, तो वह अपने फलों को बेच सकता था। उदाहरण के लिए:

- उसके पास 100 सेब हैं, जिनकी कीमत 100 रोकल है।
  - यदि वह फल अपने पास रखना चाहता है, तो उसे 100 रोकल + 20% (20 रोकल) = 120 रोकल मंदिर में देना होगा।
  - यह राशि फिर यरूशलेम में खाने-पीने की वस्तुएँ खरीदने के लिए प्रयोग की जाती थी।
- 

**आज के मसीही चर्च में इस नियम का क्या महत्व है?**

### 1. परमेश्वर के प्रति आभार व्यक्त करना

आज के मसीही जीवन में यह सिद्धांत हमें सिखाता है कि हमें परमेश्वर से मिले सभी आशीर्वादों के लिए आभार व्यक्त करना चाहिए। मसीही लोग प्रार्थना और स्तुति के द्वारा परमेश्वर की स्तुति करते हैं और अपनी आय का एक हिस्सा दान देते हैं।

### 2. पहली फसल परमेश्वर को देना (First Fruits Giving)

हालांकि मसीही लोग यहूदी धार्मिक नियमों के अधीन नहीं हैं, लेकिन कई चर्च "फर्स्ट फ्रूट ऑफरिंग" (पहली फसल की भेंट) देने को प्रोत्साहित करते हैं, जिससे लोग अपनी पहली आय या पहली फसल का कुछ भाग परमेश्वर को धन्यवादस्वरूप देते हैं।

### 3. मसीह में पूर्णता (Fulfillment in Christ)

नया नियम सिखाता है कि मसीह ने मूसा की व्यवस्था को पूरा किया (मत्ती 5:17)। इसलिए मसीही लोग मानते हैं कि अब मंदिर की परंपराएँ पूरी हो चुकी हैं, और उनकी आराधना

**यरूशलेम के स्थान पर आत्मा और सच्चाई में होती है (यूहन्ना 4:23)।**

#### 4. तिथियां और मसीही स्वतंत्रता

रोमियों 14:5-6 में पौलुस कहता है कि कुछ लोग एक दिन को दूसरे से अधिक पवित्र मानते हैं, जबकि कुछ सब दिन समान मानते हैं। इसीलिए मसीही लोगों को इस नियम को पालन करने या न करने के लिए बाध्य नहीं किया गया है, बल्कि वे स्वतंत्र हैं कि वे अपनी इच्छानुसार परमेश्वर की आराधना करें।

---

#### निष्कर्ष

1. पुराने नियम में, चौथे वर्ष का फल पवित्र था और इसे यरूशलेम में खाया जाता था, या छुड़ाने के लिए 20% अतिरिक्त शुल्क देना पड़ता था।
  2. रब्बियों ने इसकी गहराई से व्याख्या की, और यह नियम हमें परमेश्वर की आशीषों के प्रति कृतज्ञता, स्तुति, और दान की भावना सिखाता है।
  3. आज के मसीही विश्वास में, यह नियम हमें परमेश्वर का धन्यवाद करने, पहले फल को देने, और अपनी आराधना को आत्मा और सच्चाई में करने का सिद्धांत सिखाता है।
- 

P120 Le.19:9 On leaving the corners (Peah) of fields for the poor

**बाइबल पद (लैब्यव्यवस्था 19:9-10) हिंदी में:**

**"जब तुम अपने देश में अपनी फ़सल काटो, तो खेत के कोनों तक पूरी तरह न काटना, और  
न ही गिरी हुई बालें बटोरना। न ही अपनी दाख की बारी में दाख की बेरों को पूरा तोड़ना  
और न ही ज़मीन पर गिरी हुई बेरों को बटोरना; इन्हें कंगालों और परदेशियों के लिए छोड़  
देना। मैं यहोवा तुम्हारा परमेश्वर हूँ।"**

---

## समझ (Explanation) हिंदी में:

यहोवा ने इस्राएलियों को निर्देश दिया कि वे जब अपनी फ़सल काटें, तो अपनी फ़सल के कोनों को पूरी तरह से न काटें, और जो बालें कटाई के दौरान गिर जाएं, उन्हें न उठाएं। इसी तरह, दाख की बारी में गिरे हुए फल भी न उठाएं, बल्कि इन सबको गरीबों और परदेशियों के लिए छोड़ दें।

### क्यों दिया गया यह नियम?

1. **गरीबों और अनाथों की देखभाल** - परमेश्वर चाहते थे कि जरूरतमंद लोगों को भोजन मिल सके।
2. **परदेशियों (विदेशियों) के लिए दया** - जिनका इस्राएल में कोई अधिकार नहीं था, उन्हें भी भोजन उपलब्ध कराना।
3. **लालच से बचाना** - किसान को पूरी फ़सल अपने लिए न रखते हुए, दूसरों की भलाई के लिए देना सिखाना।
4. **परमेश्वर के दिए हुए संसाधनों को बांटना** - खेतों के स्वामी को याद दिलाना कि सब कुछ परमेश्वर का है और उसे दूसरों के साथ साझा करना चाहिए।

## रब्बियों की व्याख्याएँ और दृष्टिकोणः

### 1. लेकेट (Leket - गिरी हुई बालियाँ)

- **राशी (Rashi):** यदि कटाई के समय 1 या 2 बालियाँ गिर जाएँ तो वे गरीबों के लिए हैं, लेकिन 3 या अधिक बालियाँ खेत के मालिक द्वारा ली जा सकती हैं।
- **गुर आर्ये (Gur Aryeh):** बालियाँ यदि कटाई के दौरान गिरती हैं, तो किसान को उन्हें छोड़ देना चाहिए, लेकिन अगर वे तेज़ हवा से गिरती हैं, तो किसान उन्हें रख सकता है।
- **मिज्राची (Mizrachi):** किसान अपनी मर्जी से गरीबों को नहीं बुला सकता कि वे पहले आकर चुन लें, बल्कि यह पहले आओ, पहले पाओ की नीति पर आधारित था।

### 2. पएह (Pe'ah - खेत का कोना छोड़ना)

**चिझ्कूनी (Chizkuni):** कम से कम 1/60 खेत का हिस्सा गरीबों के लिए रखा जाना चाहिए।

**राव हिर्श (Rav Hirsch):** खेत यहोवा का है, और वह अपने लोगों को गरीबों का ख्याल रखने के लिए कहता है।

**बेखोर शोर (Bekhor Shor):** खेत के कोने को अंत में इसलिए छोड़ना चाहिए ताकि गरीब जान सकें कि कटाई पूरी हो गई है और वे बिना हिचकिचाहट के इसे ले सकें।

**दाऊद ज्वी हॉफमैन (David Zvi Hoffmann):** यह कानून गरीबों को सम्मान के साथ भोजन प्राप्त करने की अनुमति देता है ताकि उन्हें भीख न माँगनी पड़े।

## उदाहरणों से समझें:

## 1. रूथ की कहानी (रूथ 2:2-3)

- जब नाओमी और उसकी बहु रूथ भूखी थीं, तो उन्होंने खेतों में जाकर गिरी हुई **बालियाँ उठाई** (Leket)।
- बोअज़ ने रूथ को अनुमति दी कि वह गरीबों के लिए छोड़े गए हिस्से में कटाई के **बाद भी अनाज उठा सके।**
- इससे पता चलता है कि यह नियम मूसा की व्यवस्था के अनुसार व्यवहार में लागू था।

## 2. आज के जमाने में कैसे लागू हो सकता है?

- आधुनिक समाज में, किसान और व्यवसायी अपने मुनाफे का कुछ हिस्सा गरीबों के लिए दान कर सकते हैं।
- कई देश फूड बैंक (Food Banks) चलाते हैं, जहाँ बचे हुए भोजन को गरीबों में वितरित किया जाता है।
- चर्च और अन्य संस्थाएँ जरूरतमंदों के लिए मुफ्त भोजन वितरण सेवाएँ चलाती हैं।

## आज के मसीही चर्च में इसका क्या महत्व है?

### 1. दया और परोपकार की भावना

- यीशु ने कहा: "जब तुम भूखों को खाना खिलाते हो, तो वह ऐसे हैं जैसे तुमने मुझे

### खिलाया" (मत्ती 25:35-40)।

- चर्च गरीबों और जरूरतमंदों की देखभाल को मुख्य सेवा मानता है।

## 2. दसवांश और दान

- मसीही विश्वास में, **तिथिंग (Tithing - 10% आय देना)** और **दान (Charity)** को प्रोत्साहित किया जाता है।
- गरीबों और असहायों के लिए चर्च द्वारा विशेष खाद्य वितरण कार्यक्रम चलाए जाते हैं।

## 3. यहोवा के संसाधनों को साझा करना

- जैसे इस्राएलियों को अपनी फसल में से हिस्सा छोड़ने के लिए कहा गया था, वैसे ही मसीहीयों को जरूरतमंदों के लिए समय, धन और संसाधनों को साझा करने के लिए प्रेरित किया जाता है।
  - **लूका 12:33 में यीशु ने कहा: "अपनी संपत्ति बेचकर गरीबों को दान दो"।**
- 

## निष्कर्ष:

**लैब्यव्यवस्था 19:9-10 के नियम सिर्फ इस्राएलियों के लिए नहीं थे, बल्कि वे आज भी लागू किए जा सकते हैं।**

- यह हमें ईश्वर के संसाधनों को दूसरों के साथ बांटने की सीख देता है।
- आज भी चर्च और समाज में गरीबों के लिए दान और भोजन वितरण सेवाएँ इसी भावना से चलती हैं।

- यीशु ने भी इस सिद्धांत को आगे बढ़ाया और सिखाया कि "जो दूसरों के लिए करता है, वह परमेश्वर के लिए करता है" (मत्ती 25:40)।

इसलिए, हमें भी अपनी संपत्ति और संसाधनों का कुछ हिस्सा जरूरतमंदों के लिए छोड़ना चाहिए। □

P121 Le.19:9 On leaving gleanings of the field for the poor

### लेव 19:9 (Leviticus 19:9) हिंदी में

"जब तुम अपने देश में अपनी भूमि की कटनी काटो, तब अपने खेत के कोने-कोने तक पूरी रीति से न काटना, और न अपनी कटनी का गिरा पड़ा अन्न बटोरना।"

---

### समझाइए: लेव 19:9 का संदेश

यह पद इसाएलियों को आदेश देता है कि जब वे अपनी भूमि की कटाई करें, तो अपने खेत का पूरा अन्न न काटें और न ही गिरे हुए अन्न को इकट्ठा करें। इसके बजाय, यह अन्न गरीबों और यात्रियों के लिए छोड़ देना चाहिए।

### मुख्य सिद्धांत:

1. **दया और न्याय** - परमेश्वर चाहता है कि लोग गरीबों और जरूरतमंदों का ध्यान रखें।
2. **संपत्ति पर ईश्वर का अधिकार** - भूमि और फसल परमेश्वर की दी हुई हैं; मनुष्य केवल उसका प्रबंधक है।

3. **लालच पर नियंत्रण** - यह कानून किसानों को स्वार्थी होने से रोकता है।
  4. **सामाजिक संतुलन** - गरीबों को भी जीने के लिए भोजन प्राप्त करने का अवसर मिलता है।
- 

## यहां व्याख्याएँ और विवरण

### 1. फसलों के हिस्से गरीबों के लिए:

- **पेयाह (Pe'ah - पे'अह)** – खेत के कोने को अछूता छोड़ना, ताकि गरीब उसमें से अनाज इकट्ठा कर सकें।
- **लेकेट (Leket - लेकेट)** – कटाई के दौरान ज़मीन पर गिरा हुआ अनाज गरीबों के लिए छोड़ना।

### 2. कब और कैसे देना है?

- फसल की कटाई के बाद खेत के कोने को नहीं काटना चाहिए।
- जो फसल कटाई के दौरान गिर जाती है, उसे नहीं उठाना चाहिए।
- यह केवल उन अनाजों पर लागू होता है जिन्हें खाया और संग्रहित किया जाता है, जैसे गेहूं और जौ।

### 3. कारण और तर्क:

- **संदेह से बचाव** – अगर पे'अह पहले छोड़ दी जाती, तो लोग देख नहीं पाते और किसान पर संदेह करते कि उसने कुछ नहीं छोड़ा।

- गरीबों को समय बचाने के लिए - यदि किसान अंत में पे'अह छोड़ता है, तो गरीब लोग सीधे वहां जा सकते हैं।
- धोखाधड़ी रोकने के लिए - कोई यह दावा न करे कि उसने पहले ही पे'अह छोड़ दी है।

#### 4. कितनी मात्रा छोड़नी चाहिए?

- बाइबल न्यूनतम मात्रा नहीं बताती, लेकिन रब्बियों ने इसे खेत की उपज का **1/60वां हिस्सा** निर्धारित किया।
  - यह खेत की उपज, गरीबों की संख्या, और किसान की उदारता पर निर्भर करता है।
- 

### अन्य रब्बियों की व्याख्याएँ

#### 1. रब्बी शिमोन:

वे कहते हैं कि जब तक **1/60वां** भाग छोड़ा गया हो, तब तक अलग-अलग चरणों में थोड़ा-थोड़ा छोड़ने से भी पे'अह का पालन हो जाता है।

#### 2. मालबीम (Malbim) का विवरण:

उन्होंने **הַלְלוּ** (कला) शब्द का अध्ययन किया और समझाया कि जब यह संज्ञा के साथ होता है, तो यह पूरी समाप्ति को दर्शाता है। जब यह क्रिया के साथ होता है, तो यह केवल कार्य की समाप्ति दिखाता है, लेकिन वस्तु पूरी तरह समाप्त नहीं होती।

#### 3. त्सफ़नात पानेआख (Tzafnat Pa'neach)

वे कहते हैं कि जब आप कटाई कर रहे हैं, तो आपको यह ध्यान में रखना चाहिए कि गरीब व्यक्ति आ रहा है। **इसका मतलब है कि दान करना एक योजना का हिस्सा होना चाहिए, न कि केवल कटाई के बाद बचा हुआ देना।**

---

## आधुनिक मसीही चर्च में इसका क्या अर्थ है?

आज मसीही विश्वास में इस आदेश का क्या स्थान है?

### 1. गरीबों की देखभाल:

**यीशु ने भी दया और उदारता पर जोर दिया (मत्ती 25:35-40)। मसीहीयों को जरूरतमंदों की मदद करनी चाहिए, चाहे वे भोजन, वस्त्र, या वित्तीय सहायता के रूप में हो।**

### 2. चर्च और समाज सेवा:

बहुत से चर्च आज भी इस सिद्धांत का पालन करते हैं:

- अनाथों और विधवाओं की मदद करना (याकूब 1:27)।
- चर्चों द्वारा फूड बैंक चलाना, जहाँ गरीबों को मुफ्त भोजन दिया जाता है।
- दान और सेवा कार्यों के माध्यम से समाज को मदद पहुंचाना।

### 3. लालच और न्याय:

- यह नियम हमें याद दिलाता है कि संपत्ति और धन परमेश्वर का है, हम केवल उसके प्रबंधक हैं।

- हमें केवल अपने लिए नहीं, बल्कि दूसरों के लिए भी सोचना चाहिए।

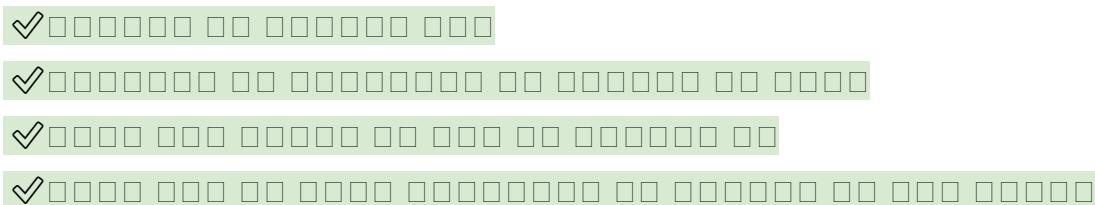
#### 4. आध्यात्मिक अर्थः

- शारीरिक अनाज की तरह, हमें अपनी आत्मिक आशीषों को भी दूसरों के साथ बाँटना चाहिए।
  - हमें अपने ज्ञान, प्रेम और समय का कुछ हिस्सा दूसरों की मदद के लिए देना चाहिए।
- 

#### निष्कर्षः

लेव 19:9 केवल कृषि का नियम नहीं, बल्कि एक सामाजिक और आध्यात्मिक सिद्धांत है।

यह हमें सिखाता है:



P122 De.24:19 On leaving the forgotten sheaf for the poor

#### बाइबल पद (हिंदी में)

##### □ व्यवस्थाविवरण 24:19

**"जब तू अपने खेत में कटनी करे और कोई पूला खेत में भूल जाए, तो उसे लेने को न लौटना; वह परदेशी, अनाथ और विधवा के लिये छोड़ देना, जिससे तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे सब कामों में तुझे आशीष दे।"**

## व्याख्या (हिंदी में)

### मूल नियम:

जब किसान अपने खेत की फसल काटता है और यदि कोई पूला (sheaf, अनाज का गटुरा) खेत में भूल जाता है, तो वह उसे लेने के लिए वापस नहीं लौटे। यह पूला गरीबों-परदेशियों, अनाथों और विधवाओं-के लिए छोड़ देना चाहिए।

### इसकी शिक्षा और उद्देश्य

- गरीबों की सहायता** – यह व्यवस्था यहोवा के न्याय और दया को दर्शाती है, जिससे समाज के निर्बल लोगों की देखभाल हो।
- लालच से बचाव** – इससे किसान को यह सिखाया जाता है कि वह अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर दूसरों का भी भला सोचे।
- यहोवा की आशीष का वादा** – जो किसान इस नियम का पालन करेगा, यहोवा उसके अन्य कार्यों में आशीष देगा।
- परोपकार की मानसिकता** – यह नियम किसानों को परोपकारी बनने की शिक्षा देता है और समाज में दयालुता एवं न्याय बनाए रखने में मदद करता है।

## रब्बियों की व्याख्या

### 1. अल्शेख (Alshekh)

उन्होंने समझाया कि यह व्यवस्था केवल गरीबों की मदद के लिए नहीं, बल्कि किसानों को पुण्य कमाने का अवसर देने के लिए है। यहोवा जानबूझकर किसान को भूलने देता है, ताकि वह अनजाने में भी यह भलाई करे और आशीष पाए।

## 2. हथाम सोफर (Chatam Sofer)

उन्होंने इस कानून को आत्मिक पुनरुत्थान (Teshuvah) से जोड़ा। जिस तरह एक किसान को पीछे मुड़कर अपनी भूली हुई पूली नहीं लेनी चाहिए, वैसे ही व्यक्ति को अपने पुराने पापों की ओर नहीं लौटना चाहिए, बल्कि यहोवा पर भरोसा रखना चाहिए कि वह उसकी आवश्यकताओं को पूरा करेगा।

## 3. चिज़कुनी (Chizkuni)

उन्होंने कहा कि किसान को इस बात की चिंता नहीं करनी चाहिए कि वह कुछ खो रहा है। यहोवा उसकी मेहनत की भरपाई किसी और तरीके से करेगा।

## 4. इब्र एज़रा (Ibn Ezra)

उन्होंने कहा कि यह व्यवस्था हमें यह सिखाती है कि वास्तव में कुछ भी हमारा नहीं है, बल्कि सब कुछ यहोवा का है। जब हम जरूरतमंदों के लिए छोड़ते हैं, तो हम केवल वही लौटा रहे होते हैं जो पहले से यहोवा का था।

## 5. मालबिम (Malbim)

उन्होंने बताया कि यह नियम गरीबों को यह एहसास दिलाने के लिए है कि वे भी अपने हिस्से की फसल प्राप्त कर रहे हैं, और यह किसानों को उदार हृदय रखने के लिए प्रेरित करता है।

## 6. रब्बेइनु बाख्या (Rabbeinu Bahya)

उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि जब कोई व्यक्ति इस भलाई को सही भावना से करता है, तो

यहोवा उसे विशेष आशीष देता है।

## 7. त्जाफ्रात पानिएह (Tzafnat Pa'neach)

उन्होंने स्पष्ट किया कि यह नियम केवल उस स्थिति में लागू होता है जब एक इस्राएली अपने

स्वयं के खेत की कटाई कर रहा हो।

## उदाहरण

- एक खेत का किसान अपनी फसल काटते समय कुछ पूले भूल जाता है। यदि वह यह नियम मानता है, तो वह उन्हें वापस लेने के बजाय गरीबों के लिए छोड़ देता है।
- यदि कोई राहगीर खेत से गुजरते समय देखता है कि कोई किसान अपनी पूली भूल गया है, तो उसे उसे याद दिलाने की जरूरत नहीं, क्योंकि यह परमेश्वर का नियम है कि इसे गरीबों के लिए छोड़ दिया जाए।
- आज के समय में एक समान उदाहरण: यदि कोई अमीर व्यक्ति गलती से कुछ पैसे गिरा देता है और कोई जरूरतमंद उन्हें उठा लेता है, तो यह उसी प्रकार की आशीष का कारण बनता है।

## आज के मसीही चर्च में इसका महत्व

## 1. उदारता और सेवा की भावना

इस नियम से मसीही समाज को यह शिक्षा मिलती है कि वे दूसरों की जरूरतों का ध्यान रखें।

चर्चों में दान देने, गरीबों की सेवा करने और जरूरतमंदों के लिए संसाधन उपलब्ध कराने को प्रोत्साहित किया जाता है।

## 2. परोपकार का सिद्धांत

यह नियम आज भी हमें सिखाता है कि जो कुछ हमारे पास है, वह केवल हमारा नहीं बल्कि परमेश्वर का दिया हुआ है। हमें जरूरतमंदों के साथ अपनी संपत्ति और संसाधन साझा करने चाहिए।

## 3. आशीष प्राप्त करने का मार्ग

जिस प्रकार इसाएलियों से कहा गया था कि वे जरूरतमंदों के लिए अपनी संपत्ति का एक भाग छोड़ दें, उसी प्रकार आज भी मसीही विश्वासियों को सिखाया जाता है कि वे जरूरतमंदों की सहायता करें, जिससे यहोवा उनकी आजीविका को आशीषित करें।

## 4. सामाजिक समानता और न्याय

यह नियम हमें सामाजिक न्याय का पाठ पढ़ाता है, जिससे अमीर और गरीब के बीच असमानता कम हो सके। चर्च आज भी इसी सिद्धांत पर चलते हुए समाज के कमज़ोर वर्गों की सहायता के लिए कार्य करते हैं।

बाइबल के इस नियम का उद्देश्य केवल गरीबों की मदद करना नहीं, बल्कि सभी लोगों में  
 करुणा, दयालुता और उदारता की भावना को बढ़ावा देना है। यह हमें सिखाता है कि  
 लालच को छोड़कर दूसरों की भलाई के लिए कार्य करें, जिससे यहोवा हमें और अधिक  
 आशीष दे। मसीही चर्च भी इसी सिद्धांत को अपनाते हैं और समाज में गरीबों की  
 सहायता को प्राथमिकता देते हैं।

P123 Le.19:19 On leaving the malformed grape clusters for the poor

□ □□□□□□□□□ 19:19 (Leviticus 19:19) □□□□ □□:

”तुम मेरी विधियों को मानना; तू अपने पशुओं को दूसरी जाति के पशु से सहवास न  
 कराना, और न अपने खेत में दो भाँति के बीज बोना; और न दो भाँति के सूत से बुना हुआ  
 वस्त्र पहनना।”

□ □□□□ □ □ □□□□ □ □ □□□□ □ □ □□□□

इस पद में तीन निषेध दिए गए हैं:

1. भिन्न जाति के पशुओं का संकर (crossbreeding) न करना
2. खेत में मिश्रित बीज न बोना
3. मिश्रित कपड़े (शाटनेझ़: ऊन और लिनन) न पहनना

इन्हें ”चुकिम (Chukim)” कहा जाता है, यानी ऐसी आज्ञाएँ जिनका कोई स्पष्ट तर्क नहीं दिया गया,

**बल्कि उन्हें ईश्वर की संप्रभुता के रूप में स्वीकार करना होता है।**

---

□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□

**1 □ □□□ (Rashi) :**

- “चुकीम” परमेश्वर के आदेश हैं, जिनका कोई स्पष्ट कारण नहीं बताया गया है।
- शाटनेझ (ऊन और लिनन) की मना इसीलिए है क्योंकि यह मिश्रण परमेश्वर के सिद्ध आदेश के विपरीत है।

**□ उदाहरण:** जैसे राजा का आदेश बिना किसी तर्क-वितर्क के मानना आवश्यक होता है, वैसे ही

**ये आज्ञाएँ मानी जानी चाहिए।**

**2 □ □□□□ (Ramban) :**

- परमेश्वर ने हर प्राणी और वनस्पति को उसके विशेष गुणों के साथ बनाया है।
- “किलायिम” का निषेध इसलिए है ताकि सृष्टि की प्राकृतिक व्यवस्था बनी रहे।

**□ उदाहरण:** यदि मनुष्य बिना परमेश्वर की इच्छा के प्रजातियों का मिश्रण करेगा, तो यह सृष्टि

**के मूल नियमों का उल्लंघन होगा।**

**3 □ □□□ □□□□ (Ibn Ezra) :**

- परमेश्वर की रचना पूर्ण है। यदि मनुष्य इसे बदलना चाहता है, तो वह ईश्वर के कार्य में हस्तक्षेप कर रहा है।

**□ उदाहरण:** यदि कोई संतरे और सेब के पेड़ को मिलाकर नया फल बनाना चाहे, तो वह सृष्टि के नियमों के विपरीत जाएगा।

**4 □ □□□□□ (Malbim) :**

- ये नियम केवल विशेष वस्तुओं के लिए नहीं हैं, बल्कि व्यापक रूप से जीवन में ”शुद्ध और अशुद्ध” की धारणा को दर्शाते हैं।
- ऊन (जानवर से) और लिनन (वनस्पति से) का मिश्रण प्राकृतिक संतुलन को दर्शाता है, जिसे बिगाइना नहीं चाहिए।

□ **उदाहरण:** जैसे ”कोषेर” भोजन में दूध और मांस को अलग रखना आवश्यक होता है, वैसे ही कपड़ों में ऊन और लिनन का मिश्रण निषिद्ध है।

**5 □ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ (Rav Hirsch) :**

- ऊन जानवरों से आता है, और लिनन पौधों से। इनका मिश्रण ”पशु” और ”वनस्पति” के बीच के अंतर को मिटा देता है।
- परमेश्वर चाहता है कि हम प्राकृतिक वर्गों का सम्मान करें।

□ **उदाहरण:** मनुष्य को जानवरों जैसा जीवन नहीं जीना चाहिए, बल्कि आत्मिक रूप से ऊँचा उठना चाहिए।

**6 □ □□□□□□ □□□□ (Rabbeinu Bahya) :**

- मिश्रण करने से परमेश्वर की सृजन योजना का उल्लंघन होता है।
- यह इस विचार को भी दर्शाता है कि हमें आत्मिक रूप से शुद्ध रहना चाहिए।

□ **उदाहरण:** जैसे प्रकाश और अंधकार को एक साथ नहीं मिलाया जा सकता, वैसे ही परमेश्वर ने चीज़ों को विशिष्ट बनाया है।

**7 □ □□□□ □□□ □□□□ (David Zvi Hoffmann) :**

- यह नियम ”सृजन के प्राकृतिक नियमों” का सम्मान करने के लिए दिया गया है।

- हर चीज़ को उसके प्राकृतिक रूप में रहने देना ही ईश्वर की इच्छा है।

□ उदाहरण: परमेश्वर ने मनुष्य को पुरुष और स्त्री बनाया, और उनके प्राकृतिक अंतर को बनाए रखना आवश्यक है।

---

□ ?

✓1. □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

- यह आज भी ऑर्थोडॉक्स यहूदी पालन करते हैं।
- कोषेर नियमों की तरह, वे ऊन और लिनन को एक साथ पहनने से बचते हैं।

✓2. □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

- यीशु मसीह ने मूसा की व्यवस्था को पूरा किया (मत्ती 5:17)।
- पौलुस कहता है कि हमें व्यवस्था के नियमों के बजाय विश्वास के द्वारा उद्धार मिलता है (गलातियों 3:23-25)।
- लेकिन नैतिक सिद्धांत आज भी लागू होते हैं।

✓3. □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

- यह हमें "पवित्रता" और "शुद्धता" बनाए रखने की शिक्षा देता है।
- आत्मिक रूप से, हमें "सत्य" और "झूठ" को मिलाने से बचना चाहिए।

□ आधुनिक उदाहरण:

1. मसीही जीवन में "संसारिकता" और "आध्यात्मिकता" को मिलाने से बचना चाहिए।
2. हमें अपने जीवन में सही और गलत के बीच स्पष्ट रेखा खींचनी चाहिए।

□ □ □ □ □ □ □ □

चुकीम ऐसी आज्ञाएँ हैं जिनका कोई स्पष्ट तर्क नहीं दिया गया है, परन्तु परमेश्वर ने हमें उन्हें मानने के लिए बुलाया है।

किलायिम नियम परमेश्वर की सृजन व्यवस्था को बनाए रखने के लिए दिए गए हैं।

आधुनिक मसीही जीवन में, यह नियम हमें नैतिकता और पवित्रता का महत्व सिखाते हैं।

□ इसलिए, हमें अपने जीवन में परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करना चाहिए, चाहे हमें

**उनके पीछे का कारण समझ में आए या न आए!**

P124 Le.19:10 On leaving grape gleanings for the poor

### लेविटिकस 19:10 का हिंदी अनुवाद

"तू अपनी दाख की बारियों में दाने चुन लेने के बाद जो कुछ बच जाए उसे न तोड़ना, और न ही अपनी दाख की बारियों के गिरे हुए दानों को बटोरना। उन्हें गरीबों और परदेशियों के लिए छोड़ देना। मैं यहोवा, तुम्हारा परमेश्वर हूँ।" (लैब्यव्यवस्था 19:10, हिंदी बाइबल)

### इस पद का हिंदी में विस्तार से अर्थ

यह पद फसलों की कटाई और दाख की बारियों में अंगूर इकट्ठा करने के दौरान गरीबों और परदेशियों (अजनबियों) के लिए व्यवस्था करता है। परमेश्वर इस्राएलियों को आज्ञा देते हैं कि वे अपनी फसल का पूरा भाग न लें, बल्कि उसका कुछ हिस्सा उन लोगों के लिए छोड़ दें जो

**ज़रूरतमंद हैं।**

## मुख्य शब्दों की व्याख्या

### 1. ओलेलोत (Olelot - गिरे हुए अंगूर)

- राशी: छोटे या अधूरे पके अंगूरों को 'ओलेलोत' कहा जाता है।
- मिश्राह (*Peah*): वे अंगूर जो पूर्ण विकसित नहीं हैं, वे गरीबों के लिए छोड़ दिए जाते हैं।
- मालबीमः 'ओलेलोत' का अर्थ छोटे अंगूरों के गुच्छे से है, जैसे एक छोटा बच्चा बड़े आदमी की तरह दिखता है लेकिन पूरी तरह विकसित नहीं होता।
- रव हिशः वे अंगूर जो पूरी तरह गुच्छे के रूप में विकसित नहीं होते, उन्हें गरीबों के लिए छोड़ना चाहिए।

### 2. परेट (Peret - गिरा हुआ फल)

- राशी: कटाई के दौरान ज़मीन पर गिरने वाले व्यक्तिगत अंगूर 'परेट' कहलाते हैं।
- हाकताव वेहाकबाला: जो अंगूर तोड़े जाते समय गिरते हैं, यदि वे अलग-अलग हैं तो उन्हें गरीबों के लिए छोड़ देना चाहिए।
- मालबीमः यह शब्द 'परेट' (Detail) से लिया गया है, जो छोटे-छोटे हिस्सों की ओर इशारा करता है।
- रव हिशः 'परेट' उन्हीं अंगूरों को कहा जाता है जो कटाई के समय गिर जाते हैं, और उन्हें वैसे ही छोड़ देना चाहिए जैसे गेहूं के लिए 'लेकेट' (गिरी हुई बालियाँ) होती हैं।

### 3. लेअनी व'गेर (LeAni v'Ger - गरीबों और परदेशियों के लिए)

- **इन्हे एज़रा:** यह प्रावधान इसाएल के गरीबों और वहाँ रहने वाले परदेशियों (अजनबियों) दोनों के लिए था।
- **मालबीमः 'गेर'** शब्द का अर्थ है दो तरह के लोग-जो बसने आए हैं (*ger toshav*) और जो यहूदी धर्म में परिवर्तित हुए हैं (*ger tzedek*)।
- **रलबागः 'गेर त्जोदेक'** (धर्म परिवर्तन करने वाले गैर-यहूदी) का इस कानून में समावेश इसलिए किया गया क्योंकि उनके पास भूमि की विरासत नहीं थी।
- **रज्जियः:** यहाँ 'गेर' का अर्थ यहूदी धर्म स्वीकार करने वाला व्यक्ति है।

### 4. त'आज़ोव ओताम (Te'azov Otam - तुम इसे छोड़ दो)

- **हाकताव वेहाकबाला:** भूमि के मालिक को न केवल अंगूर छोड़ने हैं, बल्कि यदि गरीबों को उन्हें इकट्ठा करने में कठिनाई हो, तो उनकी सहायता भी करनी चाहिए।
- **मालबीमः "छोड़ना"** (*aziva*) और "देना" (*netinah*) में अंतर है। "छोड़ने" का अर्थ है कि भूमि के मालिक को हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए, और गरीबों को स्वतंत्र रूप से इसे लेने देना चाहिए।
- **रव हिशः:** यह सुनिश्चित करने के लिए कि गरीबों के साथ कोई पक्षपात न हो, भूमि के मालिक को यह निर्णय नहीं लेना चाहिए कि कौन ले सकता है और **कौन नहीं।**

# उद्देश्य

## 1. परमेश्वर के प्रति आभार

- **बेखोर शोर.** यह व्यवस्था लोगों को सिखाती है कि उनकी संपत्ति केवल उनकी नहीं है, बल्कि परमेश्वर की दी हुई है, और इसमें गरीबों का भी हिस्सा है।
- **रव हिर्फ़.** इस व्यवस्था का उद्देश्य केवल भौतिक सहायता देना नहीं, बल्कि लोगों को सिखाना है कि वे गरीबों और जरूरतमंदों की परवाह करें।

## 2. "मैं यहोवा, तुम्हारा परमेश्वर हूँ"

- **राशी.** यदि कोई व्यक्ति इस आदेश का पालन नहीं करता, तो यहोवा उसका न्याय करेगा।
- **डेविड ज़्क्री हॉफमैन.** परमेश्वर सबका स्वामी है और वह चाहता है कि हर व्यक्ति यह पहचाने कि भूमि उसकी नहीं, बल्कि परमेश्वर की है।

## 3. भूमि के मालिक और गरीबों की ज़िम्मेदारी

- **किल्ज़ुर ब'आल हतूरिम.** यह चेतावनी भूमि के मालिकों को दी गई है कि वे गरीबों का हक न छीनें, और गरीबों को भी यह याद रखना चाहिए कि वे केवल उतना ही लें जितना परमेश्वर ने उनके लिए निर्धारित किया है।
- **तोरा तेमीमा.** गरीबों को अधिकार है कि वे अपनी आजीविका के लिए यह फसल स्वयं इकट्ठा करें, और इसे मालिक द्वारा नियंत्रित नहीं किया जाना चाहिए।

## आज के मसीही चर्च में इस कानून का महत्व

यद्यपि आज के चर्चों में कृषि आधारित समाज कम है, लेकिन इस सिद्धांत को अलग-अलग तरीकों से लागू किया जाता है:

### 1. गरीबों और ज़रूरतमंदों की सहायता

- कई चर्च 'फूड बैंक' चलाते हैं जहाँ ज़रूरतमंदों के लिए मुफ्त भोजन उपलब्ध कराया जाता है।
- चर्चों में 'टाइथिंग' (दसवांश देना) और दान करने की परंपरा आज भी मौजूद है, जिससे गरीबों और बेसहारा लोगों की मदद की जाती है।

### 2. सामाजिक न्याय और समानता

- यह सिद्धांत हमें सिखाता है कि संपत्ति और संसाधनों पर केवल अमीरों का अधिकार नहीं है, बल्कि समाज के कमज़ोर वर्गों का भी इसमें हिस्सा है।
- आधुनिक चर्च सामाजिक सेवाओं में योगदान देते हैं, जैसे अनाथालय, अस्पताल, और शिक्षा संस्थान।

### 3. मसीही सिद्धांतों से मेल

- यीशु ने कहा: "जो कोई दो कुरते रखता है, वह उसके पास बाट दे, जिसके पास कोई नहीं है, और जिसके पास भोजन है, वह भी ऐसा ही करे।" (लूका 3:11)
- यीशु ने खेतों में भूखों को खाने देने का समर्थन किया (मत्ती 12:1-8)।
- प्रेरितों के काम 2:44-45 में दिखाया गया है कि शुरुआती मसीही विश्वासियों ने अपनी

**संपत्ति साझा की ताकि कोई भी ज़रूरतमंद न रहे।**

---

## निष्कर्ष

लेविटिकस 19:10 की यह आज्ञा हमें यह सिखाती है कि परमेश्वर की दृष्टि में हर व्यक्ति समान है, और ज़रूरतमंदों की देखभाल करना हमारी ज़िम्मेदारी है। यह न केवल भौतिक सहायता के लिए बल्कि आत्मिक परिपक्वता के लिए भी आवश्यक है।

मसीही दृष्टिकोण से, यीशु के उपदेश इस बात की पुष्टि करते हैं कि हमें दानशील और दयालु होना चाहिए। चर्च आज भी इस सिद्धांत को अपनाते हुए सामाजिक न्याय, गरीबों की मदद, और ज़रूरतमंदों की सेवा में लगे रहते हैं।

P125 Ex.23:19 On separating & bringing First-fruits to the Sanctuary

मैं आपके द्वारा दिए गए बाइबल पद और इसके विभिन्न व्याख्याओं के बारे में हिंदी में समझाऊंगा।

### बाइबल पद (हिंदी में):

"अपनी भूमि के पहले फलों में से सबसे अच्छे फल तू अपने परमेश्वर यहोवा के भवन में लाना / बकरी के बच्चे को उसकी माता के दूध में न पकाना।" (निर्गमन.23:19)

## पहले फलों (बिककुरिम) के बारे में व्याख्या:

पहले फलों को लाने का अर्थ है कि आपनी फसल के पहले और सबसे अच्छे हिस्से को परमेश्वर को समर्पित करना। यह आज्ञा इमाएलियों को दी गई थी और इसका पालन करने से भूमि पर परमेश्वर की आशीष आकर्षित होती थी।

**पहले फलों का समय:** फसल के शुरुआत से फसल के एकत्रीकरण तक, शावुओत से सुककोत तक।

**किस प्रकार के फल:** मुख्य रूप से वे सात प्रकार के उत्पाद जिनके लिए फिलिस्तीन प्रशंसित था: गेहूं, जौ, अंगूर, अंजीर, अनार, जैतून और शहद।

**उद्देश्य:** यह स्वीकार करने का एक तरीका था कि सभी आशीर्वाद परमेश्वर से आते हैं और मनुष्य की सुख-सुविधा के लिए पकने वाली हर चीज का उद्देश्य और समर्पण ईश्वरीय कानून के पालन में होना चाहिए।

## बकरी के बच्चे को उसकी माता के दूध में न पकाने का निषेध:

इस आज्ञा के बारे में विभिन्न रबियों और विद्वानों ने अलग-अलग व्याख्याएं दी हैं:

1. **तीन बार दोहराव:** यह आज्ञा तोरा में तीन बार आती है, जिसे हलाखा (यहूदी कानून) में एक तिहरा निषेध माना जाता है:

- इस मिश्रण को पकाना नहीं
- इसका सेवन नहीं करना

- इससे कोई लाभ नहीं लेना
2. **"गेदी"** (बकरी का बच्चा) का अर्थः रशी के अनुसार, "गेदी" में बछड़ा और मेमना भी शामिल है, यानी कोई भी युवा, कोमल पशु।
3. **विस्तारित व्याख्या:** ज्ञानियों ने इस निषेध को किसी भी मांस को किसी भी दूध के साथ पकाने और ऐसे मिश्रण को खाने तक विस्तारित किया है।
4. **निषेध के कारणः**
- **दया की भावना:** यह दया की भावनाओं को कम करने वाला है, व्यक्तित्व को कठोर बनाता है।
  - **मैमोनिडीज का मतः** यह मूर्तिपूजकों का रिवाज था कि वे अपने मंदिरों में त्योहारों के दौरान दूध और मांस का सेवन करते थे, और तोरा ने इस्माएलियों के पालन को मूर्तिपूजक प्रथाओं से अलग करने के लिए इस प्रथा को निषिद्ध किया।
  - **अलग-अलग प्रकार की पवित्रता:** कुछ लोग सुझाव देते हैं कि यह निषेध विभिन्न प्रकार की पवित्रता को न मिलाने से संबंधित है।

### **विभिन्न व्याख्याएं और विस्तारः**

1. **राबी अकिवा का मतः** "बकरी के बच्चे को मत पकाओ" के तीन दोहराव जानवरों, पक्षियों और अशुद्ध जानवरों को निषेध से बाहर रखते हैं।
2. **तीन निषेधः** एक विचार यह है कि इस निषेध के तीन उल्लेख खाने, लाभ उठाने और

**मिश्रण को पकाने को निषिद्ध करने के लिए हैं।**

3. **क्रूरता का तर्कः** कुछ सुझाव देते हैं कि यह निषेध इसलिए है क्योंकि एक युवा जानवर को उस दूध में पकाना क्रूर है जो उसे पोषण देने के लिए होता है।
4. **मूर्तिपूजक रीति-रिवाजों से अलगावः** कुछ सुझाव देते हैं कि तोरा ने इसाएलियों के पालन को मूर्तिपूजक प्रथाओं से अलग करने के लिए इस प्रथा को निषिद्ध किया।
5. **प्रतीकात्मक अर्थः** कुछ सुझाव देते हैं कि यह जीवन के विभिन्न क्षेत्रों को अलग करने और व्यवस्था और पवित्रता बनाए रखने का प्रतीक है।

### **मसीही चर्च में आज का महत्वः**

आपके द्वारा दिए गए स्रोतों में मसीही चर्च में इस निषेध के वर्तमान महत्व के बारे में जानकारी नहीं दी गई है। आम तौर पर, मसीही धर्म में:

1. पहले फलों का सिद्धांत अभी भी महत्वपूर्ण है, लेकिन अधिकांश मसीही इसे आध्यात्मिक रूप से समझते हैं - अपने जीवन, समय और संसाधनों का सर्वोत्तम हिस्सा परमेश्वर को देना।
2. मांस और दूध के संबंध में, अधिकांश मसीही धर्मों में यह निषेध शाब्दिक रूप से लागू नहीं होता। प्रेरित पौलुस के लेखों में यह स्पष्ट है कि मसीही पुराने नियम के खाद्य कानूनों से मुक्त हैं (रोमियों 14:14, कुलुस्सियों 2:16)।
3. कुछ मसीही समुदाय इस आज्ञा को अधिक प्रतीकात्मक रूप से देखते हैं, जिसमें यह

बताया गया है कि जीवन देने वाली चीजों (दूध) और मृत्यु (मांस) को न मिलाया जाए।

4. कुछ पूर्वी मसीही चर्च और आर्थोडॉक्स परंपराएं खाद्य निषेधों का पालन अधिक सख्ती से करती हैं, लेकिन यह निषेध विशेष रूप से उनके पालन का हिस्सा नहीं है।

P126 De.18:4 To separate the great Heave-offering (terumah)

□ □□□□ □□ (□□□□□□□□□□□ 18:4) □□□□□ □□□:

**“तेरे अन्न, तेरे नये दाखमधु, और तेरे टटके तेल का पहिलौठा भाग और तेरी भेड़ों की ऊन का पहिला भाग उत्सको देना।”**

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

इस पद में यहोवा इम्राएलियों को आज्ञा देता है कि वे अपनी उपज और भेड़ों की पहली ऊन का भाग याजकों (पुरोहितों) को दें। इसका उद्देश्य यह था कि जो लोग परमेश्वर के काम में नियुक्त हैं, उनकी आवश्यकताएँ पूरी की जाएँ।

- “तेरे अन्न, तेरे नये दाखमधु, और तेरे टटके तेल का पहिलौठा भाग” - इसका अर्थ यह है कि सबसे पहला और सबसे अच्छा भाग यहोवा के लिए अलग किया जाए और उसे याजकों को दिया जाए।
- “तेरी भेड़ों की ऊन का पहिला भाग” - जब भेड़ों की ऊन पहली बार काटी जाती थी, तो उसमें से एक भाग याजकों को दिया जाता था।

यह व्यवस्था इस सिद्धांत को स्थापित करती है कि जो परमेश्वर के काम में लगे हैं, उनकी देखभाल करने की जिम्मेदारी पूरी संगति की होती है।

□ □□□□□□□ □□□□□□□□ □ □ □□□□□□□□:

### 1 □ Aderet Eliyahu

- पहला अंश याजकों को दिया जाता है क्योंकि वे परमेश्वर द्वारा चुने गए हैं।
- गरीबों को दिए गए दान से यह अलग है, क्योंकि याजकों को मिलने वाला भाग सर्वश्रेष्ठ होता है।
- उदाहरण: जैसे किसी के पास एक बाग है, तो वह सबसे अच्छी फसल याजकों को देगा, जबकि गरीबों को बाद में दान देगा।

### 2 □ Bekhor Shor

- तरूपा गेदोला (बड़ी भेंट) का कोई निश्चित माप नहीं था, लेकिन रबियों ने मानक तय किए:
  - कंजूस व्यक्ति - 1/60 भाग देगा
  - सामान्य व्यक्ति - 1/50 भाग देगा
  - उदार व्यक्ति - 1/40 भाग देगा
- उदाहरण: यदि किसी के पास 100 बोरियां गेहूँ हैं, तो उदार व्यक्ति 2 बोरियां देगा, सामान्य व्यक्ति 2 बोरियों से थोड़ा कम देगा, और कंजूस व्यक्ति सिर्फ 1.5 बोरियां देगा।

### 3 □ Chizkuni

- राशी के अनुसार, औसतन 2% फसल याजकों को दी जाती थी।
- यह दान स्थान के आधार पर भिन्न हो सकता था:
  - यहां क्षेत्र में - कम से कम 5 शेकेल के मूल्य का दिया जाता था।

- गलील क्षेत्र में - दोगुनी मात्रा दी जाती थी।
- उदाहरण: यदि किसी के पास 10 भेड़ें थीं, तो यहां का व्यक्ति 5 शेकेल के बराबर ऊन देगा, जबकि गलील का व्यक्ति 10 शेकेल के बराबर देगा।

#### 4 □ Da'at Zekenim

- पहले फल और ऊन का कोई निश्चित माप नहीं था, लेकिन पूरी फसल नहीं दी जा सकती थी।
- खेड़ की ऊन कम से कम इतनी होनी चाहिए कि उससे एक कमरबंद (belt) बन सके।
- उदाहरण: यदि एक किसान के पास 50 भेड़ें थीं, तो वह इतनी ऊन देगा जिससे कम से कम एक पट्टी बुनी जा सके।

#### 5 □ Gur Aryeh

- हर साल ऊन का पहला हिस्सा दिया जाता था, न कि केवल पहली बार कटाई होने पर।
- उदाहरण: यदि एक व्यक्ति हर साल 10 भेड़ों की ऊन काटता है, तो उसे हर साल पहली ऊन का कुछ भाग देना होगा।

#### 6 □ Haamek Davar

- "प्रथम" का अर्थ सर्वोत्तम अंश भी हो सकता है।
- "तेरे अन्न" - सर्वश्रेष्ठ फसल को दर्शाता है, "तेरी ऊन" - पहली कटाई को दर्शाता है।
- उदाहरण: यदि 100 किलो गेहूँ में से 10 किलो सबसे अच्छा है, तो वह दिया जाना चाहिए।

#### 7 □ Malbim

- सर्वोत्तम अन्न और ऊन ही याजकों को दिया जाना चाहिए।
- उदाहरण: यदि कोई किसान अच्छी और खराब दोनों तरह की ऊन काटता है, तो उसे अच्छी ऊन ही याजकों को देनी चाहिए।

#### 8 □ Mizrachi

यह भेंट प्रत्येक वर्ष दी जानी थी, न कि केवल पहली ऊन काटने पर।

उदाहरण: कोई व्यक्ति 5 साल तक भेड़ों का पालन करता है, तो उसे हर साल दान करना होगा।

#### 9 □ Rashi

- याजकों को दिया जाने वाला अंश  $1/60$  से  $1/40$  के बीच होना चाहिए।
- कम से कम 5 भेड़ों से ऊन दी जानी चाहिए।
- उदाहरण: यदि किसी के पास 4 भेड़े हैं, तो उसे ऊन नहीं देनी पड़ेगी।

#### □ Rav Hirsch

- जैसे तरूणाका कोई माप तय नहीं, वैसे ही ऊन का भी कोई निश्चित माप नहीं।

#### 1 □ 1 □ Torah Temimah

- यदि किसी की खेती किसी गैर-यहूदी के साथ साझेदारी में थी, तो वह इस दायित्व से मुक्त था।

#### 1 □ 2 □ Siftei Chakhamim

- न्यूनतम अंश  $1/60$  होना चाहिए।

#### 1 □ 3 □ Yeriot Shlomo

- ”गाज़” शब्द चार भेड़ों को दर्शाता है।

1□ नई वाचा में यह अनिवार्य नहीं है

- मसीही विश्वास के अनुसार, यह मूसा की व्यवस्था के तहत यहूदियों के लिए था।
  - प्रभु यीशु के बलिदान के बाद, नए नियम में बलि और याजकीय व्यवस्था समाप्त हो गई।

२० परमेश्वर को पहली और सर्वोत्तम भेंट देना आज भी महत्वपूर्ण है।

- भले ही यह नियम लागू नहीं है, लेकिन यीशु ने यह सिखाया कि हमें अपनी संपत्ति का पहला और सर्वोत्तम भाग परमेश्वर के कार्य में लगाना चाहिए (मत्ती 6:33)।

## 3 दरामांश और भेट का सिद्धांत

- आज के चर्च में लोग अपनी आय का एक भाग दसवें (10%) के रूप में चर्च और जरूरतमंदों को देते हैं।
  - 2 कुरिन्यियों 9:7 में कहा गया है कि प्रत्येक व्यक्ति को प्रसन्नता से देना चाहिए।

#### 40 याजकों (चर्च लीडर्स) की देखभाल

- १ तीमुथियुस 5:17-18 में कहा गया है कि जो लोग सेवा में लगे हैं, उनका उचित देखभाल किया जाना चाहिए।

5 सारांश

- आज मसीहियों के लिए यह अनिवार्य नहीं, लेकिन देने की भावना और प्राथमिकता

**परमेश्वर को देने की होनी चाहिए।**

- चर्च और सेवकों की सहायता करना, गरीबों की देखभाल करना और उदारता से देना  
**अब भी परमेश्वर की इच्छा के अनुसार सही है।**
- 

□ □□□□□□□:

- यह आज्ञा इस्राएलियों के लिए थी, लेकिन इसका मुख्य उद्देश्य यह सिखाना था कि परमेश्वर को प्राथमिकता देनी चाहिए।
- यह सिद्धांत आज भी मसीही जीवन में महत्वपूर्ण है - चाहे वह दशमांश हो, चर्च की सहायता हो, या जरूरतमंदों की मदद।
- परमेश्वर को सबसे पहले और सबसे अच्छा देना, आज भी आशीष का कारण बनता है।

□ "सब कुछ यहोवा का है, इसलिए हम उसे अपने हृदय की उदारता से दें!" (1 इतिहास 29:14)

P127 Le.27:30; To set aside the first tithe to the Levites

### **लेवितिकुस 27:29 - हिंदी में बाइबल पद**

**"जो कोई मनुष्य श्राप का ठहराया जाए, उसे छुड़ाया न जाए; वह निःचय ही मार डाला**

**जाए।"**

**(Leviticus 27:29, हिंदी बाइबल)**

## इस पद की व्याख्या

यह पद "अर्पित (हरम) " (मराह - *Cherem*) की अवधारणा पर केंद्रित है, जिसका अर्थ होता है समर्पित या पूर्ण रूप से प्रतिबंधित। यह वचन बताता है कि कोई भी व्यक्ति जो अर्पित (हरम) (अर्थात् यहोवा को पूर्ण रूप से समर्पित या दण्ड के लिए नियत) ठहराया जाए, उसे छुड़ाया नहीं जा सकता और उसे अवश्य मार डाला जाएगा।

यह आम तौर पर उन मामलों में लागू होता था जब किसी व्यक्ति को न्यायिक प्रक्रिया द्वारा मृत्युदण्ड सुनाया जाता था या जब कोई किसी को अर्पित (हरम) घोषित कर देता था। इस तरह का समर्पण वापस नहीं लिया जा सकता था, और ऐसे व्यक्ति को निश्चित रूप से मृत्यु की सजा दी जाती थी।

---

## रब्बियों के विभिन्न दृष्टिकोण

### 1. राशी (Rashi) का दृष्टिकोण - यह मृत्यु-दण्ड के मामलों से संबंधित है

□ राशी (Rashi) समझाते हैं कि यह पद उन लोगों के बारे में है जिन्हें यहूदी न्यायालय (Beit Din) द्वारा मृत्यु-दण्ड दिया गया हो। यदि कोई व्यक्ति ऐसे किसी व्यक्ति के ऐरेक (मूल्यांकन) की प्रतिज्ञा करता है और कहता है, "मैं इसकी कीमत मंदिर को अर्पित करता हूँ," तो यह प्रतिज्ञा मान्य नहीं होगी क्योंकि ऐसे व्यक्ति का मूल्य शून्य होता है।

□ □ □ □ □ □ :

यदि किसी अपराधी को अदालत द्वारा पत्थरवाह करने का निर्णय दिया गया है और कोई कहता है, "मैं इस व्यक्ति की कीमत यहोवा के मंदिर को समर्पित करता हूँ," तो उसकी प्रतिज्ञा

**अस्वीकृत होगी, क्योंकि यह व्यक्ति न्यायिक मृत्यु का अधिकारी बन चुका है।**

## 2. नचमैनिदेस (Nachmanides) का दृष्टिकोण - युद्ध और शत्रुओं के अर्पित (हरम) के बारे में

□ नचमैनिदेस (Ramban) इसे अधिक व्यापक रूप में समझाते हैं। वे कहते हैं कि यह पद उन लोगों पर लागू होता है जिन्हें युद्ध में अर्पित (हरम) घोषित किया गया हो। यदि किसी दुश्मन को इमाएलियों द्वारा यहोवा के लिए समर्पित (*cherem*) किया गया है, तो उसे नहीं छोड़ा जाएगा, बल्कि नष्ट कर दिया जाएगा।

□ □□□□□:

यह वही नियम था जिसे यहोशू ने यरीहो (Jericho) के युद्ध में लागू किया था। यहोशू 6:17 कहता है कि यरीहो और उसमें रहने वाले सब लोग यहोवा के लिए अर्पित (हरम) कर दिए गए थे, जिसका अर्थ था कि कोई भी व्यक्ति जीवित नहीं बच सकता था।

---

## 3. राजा और संहद्रिन (Sanhedrin) की शक्ति

□ नचमैनिदेस और अन्य रब्बियों ने इस पद की व्याख्या यहदी राजा या संहद्रिन (यहदी सर्वोच्च न्यायालय) की शक्ति के रूप में भी की। यदि राजा या संहद्रिन किसी व्यक्ति या समुदाय को अर्पित (हरम) घोषित करते हैं, तो उसका उल्लंघन करने वाले को मृत्यु-दण्ड दिया जा सकता है।

□ □□□□□:

1. जब राजा शाऊल ने युद्ध में सैनिकों को यह आदेश दिया कि वे किसी भी तरह का

भोजन न करें, तो यह **अपर्यित (हरम)** का एक उदाहरण था। लेकिन उसका पुत्र योनातान अनजाने में शहद खा बैठा। जब यह पता चला, तो योनातान को मरने का दोषी माना गया, परन्तु इस्राएली लोगों ने उसे बचा लिया। (1 रामूएल 14:24-45)

2. **न्यायियों के समय में जब इस्राएलियों ने बेन्यामीन गोत्र के विरुद्ध युद्ध किया, उन्होंने यह शपथ खाई कि जो कोई इस युद्ध में भाग नहीं लेगा, उसे मारा जाएगा। जब यह पता चला कि याबेश-गिलाद के लोग युद्ध में शामिल नहीं हुए थे, तो उन्हें नष्ट कर दिया गया। (न्यायियों 21:5-11)**
- 

#### **4. इफतह (Jephthah) की प्रतिज्ञा - एक गलतफहमी**

- इफतह (Jephthah) ने प्रतिज्ञा की थी कि जो कोई भी उसके घर से बाहर आएगा, वह उसे यहोवा के लिए होमबलि के रूप में चढ़ा देगा। दुर्भाग्य से, उसकी बेटी ही सबसे पहले बाहर आई।
- रब्बियों का मत है कि इफतह ने यहोवा की व्यवस्था को गलत समझा। मनुष्यों को बलिदान करना परमेश्वर की इच्छा नहीं थी। उसने संहिता से परामर्श भी नहीं किया, जबकि उसे करना चाहिए था। इसलिए उसकी प्रतिज्ञा गलत थी, और उसे उसकी बेटी का जीवन बचाने का उपाय खोजना चाहिए था।

- □□□□□□□□: न्यायियों 11:30-39
-

## आज के मसीही चर्च में इस पद का क्या महत्व है?

□ मसीही दृष्टिकोण से, यह पद यीशु मसीह में पूर्ण होता है।

1. **पाप के लिए दण्ड का नियम:** इस पद से हमें यह शिक्षा मिलती है कि जो भी यहोवा के विरुद्ध जाता है, वह मृत्यु का अधिकारी होता है। रोमियों 6:23 कहता है, "क्योंकि पाप की मजदूरी मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनन्त जीवन है।"
2. **यीशु ने स्वयं को Cherem के रूप में समर्पित कर दिया:** जब यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया, तो वह एक प्रकार से Cherem बन गए - एक ऐसा व्यक्ति जिसे छुड़ाया नहीं गया, बल्कि मृत्यु दी गई। उनकी मृत्यु ने सभी के लिए छुटकारे का मार्ग खोल दिया। (मत्ती 20:28, 1 पतरस 1:18-19)
3. **बलिदान के स्थान पर अनुग्रह:** पुराने नियम में जो लोग अर्पित (हरम) ठहराए जाते थे, उन्हें बचाया नहीं जा सकता था। लेकिन मसीह में, अनुग्रह द्वारा उद्धार संभव है।

### निष्कर्ष

- ✓ यह पद हमें न्याय, बलिदान, और परमेश्वर की पवित्रता के बारे में सिखाता है।
- ✓ रब्बियों की व्याख्याएँ इसे न्यायिक मृत्यु, युद्ध में नाश, और राजा की शक्ति से जोड़ती हैं।
- ✓ मसीही दृष्टिकोण में, यह पद यीशु मसीह के बलिदान को दर्शाता है, जिन्होंने अनुग्रह

## द्वारा उद्धार प्रदान किया।

P128 De.14:22 To set aside the second tithe, eaten only in Jerusalem

### व्याख्या और मसीही दृष्टिकोण में इसका महत्व

**बाइबल पद (Deuteronomy 14:22) हिंदी में:**

- "तू प्रति वर्ष अपनी भूमि की उपज का दशमांश अवश्य देना।"

यह पद दशमांश (*Tithe*) देने की आज्ञा देता है, जिसका अर्थ है कि किसी व्यक्ति को अपने खेत की उपज का दसवाँ भाग अलग करके देना चाहिए। यह दशमांश यहोवा के लिए पवित्र था और इसका उपयोग मंदिर, याजकों, लेवियों, गरीबों, और जरूरतमंदों के लिए किया जाता था।

---

### व्याख्या और अर्थ

- "तू अवश्य दशमांश देना" - यहाँ "רשות עשר" (Asar Te'Asar) लिखा है, जो दोहराव का प्रयोग करता है। यह दोहराव दर्शाता है कि दशमांश देना सिर्फ एक साधारण कर्तव्य नहीं बल्कि एक अनिवार्य और पवित्र कर्तव्य है।
- "अपनी भूमि की उपज" - इसका मतलब है कि यह नियम खेती की पैदावार से संबंधित है, यानी अनाज, दाखरस (अंगूर का रस/वाइन), और जैतून का तेल।
- "प्रति वर्ष" - इसका मतलब है कि यह दशमांश हर साल अलग किया जाना था, और इसका हिसाब खेत की पैदावार के नए वर्ष के अनुसार रखा जाता था।

## रब्बियों की व्याख्या और उनकी शिक्षाएँ

1 □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ - □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ रब्बी योहानान ने कहा: "दशमांश दो ताकि तुम समदृध्य बनो" □

                                            <img alt="List icon" data-bbox="

लालच में आकर दशमांश नहीं दिया, और अगले साल उसकी उपज आधी रह गई। जब उसने

**दोबारा दशमांश देना शुरू किया, तो उपज फिर से बढ़ गई।**

□ "असर, शेलो टिल्खसर" ("तुम्हें देना चाहिए ताकि तुम्हें कमी न हो") □

□ "תאקי תּוּמָה וְהַבָּא כִּי בְּמָנָנוּ סְקִיחָה") – מען תלמוד ליראה את ה' אלהיך כל הימיןך"

□ जब लोग यरूशलेम में जाकर अपने दशमांश का दूसरा भाग खाते थे, तो वे मंदिर में याजकों

और धर्मशास्त्रियों से मिलते थे, जिससे उनकी आध्यात्मिक समझ बढ़ती थी।

**4** - ?

□ "अनाज, दाखरस और जैतून का तेल" – □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

A horizontal row of 20 empty square boxes, each with a thin black border, intended for children to write their names in.

#### अन्य उत्पादों पर भिन्न मतः

- कुछ रब्बियों के अनुसार, सभी प्रकार के फल और सब्जियाँ दशमांश में शामिल हो सकते हैं।
  - मशरूम और जंगली उगने वाले पौधे दशमांश में नहीं आते, क्योंकि वे बीज से नहीं

## उगते।

5 □ □□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□

- "राने शाना" - ("हर वर्ष") - इसका अर्थ है कि हर साल की नई उपज के लिए दशमांश

## अलग-अलग निकाला जाना चाहिए □

- "गमार मलाखा" - जब तक अनाज पूरी तरह तैयार न हो जाए, तब तक दशमांश निकालना आवश्यक नहीं।

6 □ □ □□□□□ □ □ □□□□□

□ **प्रथम दशमांश (Ma'aser Rishon)** – □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□

□ **द्वितीय दशमांश (Ma'aser Sheni)** – □□□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□□□

□□□ □□□□□ □□□

□ तीसरे और छठे वर्ष में, यह गरीबों के लिए दिया जाता था (Ma'aser Ani)।

## आज के मसीही चर्च में दशमांश का क्या महत्व है?

### ✓ क्या मसीहियों को दशमांश देना चाहिए?

□ □ □ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □ □ □□□□□□ □ □ 10%

□□□□□□ □□□ □ □ □□□ □□□□, □□□□□ □ □ □□□□□□ □□□ □ □ □ □ हमें

अपनी संपत्ति का कुछ हिस्सा देना चाहिए।

### ✓ यीशु मसीह की शिक्षा

- मत्ती 23:23 - यीशु ने फ़रीसियों को ताने मारते हुए कहा: "तुम पुढ़ीना, साँफ और जीरा का दशमांश तो देते हो, परंतु न्याय, दया और विश्वास को छोड़ देते हो।"

□ □□□ □□□ □ □ □□ □ केवल दशमांश देना पर्याप्त नहीं है, बल्कि न्याय और दया

**भी महत्वपूर्ण हैं।**

## ✓ प्रेरितों का दृष्टिकोण

२ कुरिन्धियों ९:७ - "हर एक जन जैसा मन में ठाने वैसा ही दान दे, न कुड़-कुड़ाकर और न

**दबाव से, क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देनेवाले को प्रेम करता है।”**

□ इस पद में दशमांश की बजाय मन की इच्छा से देने की बात कही गई है।

✓आज के चर्च में दशमांश का पालन

निष्कर्ष

1 पुराने नियम में दशमांश एक अनिवार्य आदेश था □□□□□□□□□□, □□□□□□, □□

२ रब्बियों ने दशमांश को समद्धि, सुरक्षा, और आध्यात्मिक उन्नति का स्रोत माना।

३ यीशु मसीह ने न्याय, दया, और विश्वास को दरमांश से अधिक महत्वपूर्ण बताया।

4□ आज के मसीही चर्च में दशमांश को कई तरीकों से देखा जाता है - कुछ इसे अनिवार्य मानते हैं, कुछ वैकल्पिक।

P129 Nu.18:26 On Levites' giving tenth of their tithe to the Cohanim

## गिनती 18:26 - हिंदी में बाइबल पद

**"तू लेवियों से यह कह, जब तुम इस्राएलियों से वह दशमांश लो, जिसे मैं ने तुम्हारी निज  
भाग के लिये उन को दिया है, तब उसका दशमांश तुम यहोवा को अर्पण किया हुआ उठावा  
अन्न समझकर अर्पण करना।"**

---

## समझाने का प्रयास

इस पद में परमेश्वर लेवियों को यह निर्देश देते हैं कि जब वे इस्राएलियों से दशमांश (तिथ / टाइट) लेते हैं, तो उन्हें भी उस दशमांश का एक भाग (दशमांश का दशमांश) यहोवा को अर्पण करना चाहिए। इस विशेष अर्पण को "तेरूमत माहसर" (תְּרוּמָת מִזְבֵּחַ) कहा जाता है। यह व्यवस्था इसलिए थी क्योंकि लेवीय जाति को कोई भूमि विरासत में नहीं मिली थी, और उन्हें इस्राएलियों द्वारा दी जाने वाली भेंटों और दशमांश पर निर्भर रहना था।

इस नियम के पीछे मुख्य रूप से तीन कारण बताए गए हैं:

1. **लेवियों को भूमि का कोई भाग नहीं दिया गया था, इसलिए उनका जीविकोपार्जन अन्य इस्राएलियों के द्वारा दिए गए दशमांश से होता था। लेकिन परमेश्वर ने यह सुनिश्चित किया कि वे भी अपने अंश का एक भाग यहोवा को अर्पित करें।**
2. **यह एक धार्मिक दायित्व था, जिससे लेवियों को याद दिलाया जाता था कि जो कुछ भी वे प्राप्त करते हैं, वह अंततः परमेश्वर का आशीर्वाद है।**
3. **यह कोहनियों (याजकों) का समर्थन करने के लिए था, क्योंकि लेवियों को जो**

दशमांश मिलता था, उसमें से एक भाग कोहनीम (याजकों) के लिए समर्पित किया जाता था।

---

## रब्बियों की व्याख्याएँ

### 1. विरासत के बदले दशमांश:

- बेखोर शोर (Bekhor Shor) और चिज़कुनी (Chizkuni) कहते हैं कि लेवियों को यह दशमांश इसाएलियों की भूमि के बदले दिया गया था।
- हकतव वेहकबालाह (HaKtav VeHaKabalah) ने तर्क दिया कि अगर लेवियों को भूमि मिलती, तो उन्हें केवल 1/12 भाग मिलता। लेकिन दशमांश के रूप में उन्हें इससे अधिक प्राप्त होता था, इसलिए उन्हें भी एक भाग देना आवश्यक था।
- मालबिम (Malbim) और रेजियो (Reggio) भी इस विचार को समर्थन देते हैं कि यह दशमांश भूमि की विरासत के बदले दिया गया था।

### 2. "मिमेनू" (ממן - "उसमें से") का अर्थ:

- रालबाग (Ralbag) और तोरा तेमीमा (Torah Temimah) बताते हैं कि इस शब्द का अर्थ है कि यह अर्पण उसी प्रकार की उपज से किया जाना चाहिए, जिससे दशमांश प्राप्त हुआ है।
- कित्सुर बाल हातूरिम (Kitzur Ba'al HaTurim) भी बताते हैं कि नया और पुराना अनाज मिश्रित नहीं किया जाना चाहिए, और एक फसल को दूसरी फसल से अलग रखना चाहिए।
- मालबिम (Malbim) कहते हैं कि यह "मिट्टी में उग रहे अनाज" से नहीं बल्कि पहले ही

**काटे गए अनाज से देना चाहिए।**

- **बेरखोर शोर (Bekhor Shor)** स्पष्ट करते हैं कि यह "दशमांश का दशमांश" देना है, न कि **कोई बड़ा अर्पण (Terumah Gedolah)।**

### 3. इस दशमांश का स्रोतः

- **तोरा तेमीमा (Torah Temimah)** रब्बी यहोशूआ बेन लेवी के हवाले से कहते हैं कि यह **केवल इस्राएलियों द्वारा दी गई उपज से देना आवश्यक था।**
  - अगर कोई लेवी किसी अन्य जाति के व्यक्ति से अनाज खरीदता, तो उसे इस दशमांश को अलग करने की ज़रूरत नहीं थी।
  - अगर गलती से कोई कोहेन (याजक) दशमांश प्राप्त कर लेता, तो उसे जबरदस्ती वापस नहीं लिया जाता।
- 

### आज के मसीही चर्च में इसका क्या महत्व है?

#### 1. क्या मसीही विश्वासी भी दशमांश दें?

मसीही चर्च में दशमांश को लेकर अलग-अलग विचार हैं। कुछ चर्च मानते हैं कि मसीही विश्वासियों को भी अपनी आय का दशमांश देना चाहिए, जबकि कुछ इसे पुराने नियम का नियम मानकर अनिवार्य नहीं मानते।

#### 2. मसीही चर्च में दशमांश का उद्देश्यः

- **चर्च का संचालन –** आज के चर्चों में दशमांश और भेंटों का उपयोग चर्च की देखभाल,

**प्रचार-कार्य, मिशनरी सेवा और जरूरतमंदों की मदद के लिए किया जाता है।**

- **पास्टरों और सेवकों का समर्थन** - पुराने नियम में जैसे लेवियों को दशमांश दिया जाता था, उसी प्रकार मसीही चर्चों में पास्टर और प्रचारकों को समर्थन देने के लिए भी यह लागू किया जाता है।
- **प्रभु यीशु ने दशमांश पर क्या कहा?**
  - मत्ती 23:23 में प्रभु यीशु ने फरीसियों को यह कहकर लताड़ा कि वे दशमांश तो देते हैं, लेकिन न्याय, दया और विश्वास को नज़रअंदाज़ करते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि **दशमांश से अधिक महत्वपूर्ण परमेश्वर का न्याय और प्रेम है।**
  - पौलुस ने 2 कुरिन्थियों 9:7 में कहा कि ”हर एक जन जैसा मन में ठाने, वैसा ही दान करे; न कुढ़-कुढ़ के और न दबाव से, क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देने वाले को प्रिय जानता है।”

### 3. मसीही चर्च और ”तिथ ऑफ तिथ“ (Dithe of Tithe) का संबंध:

मसीही चर्चों में दशमांश का दशमांश देने की कोई अनिवार्य प्रथा नहीं है, लेकिन कुछ चर्च संगठन अपने चर्चों से मिलने वाले अंश का एक भाग अपने केंद्र या मुख्य मिशन संगठन को भेजते हैं।

### 4. नई वाचा में मसीही दशमांश का क्या रूप होना चाहिए?

- बाइबल कहती है कि अब मसीही विश्वासी परमेश्वर के राज्य के लिए अपने समय, धन और संसाधनों का उपयोग करें।
- दशमांश को अनिवार्य नियम की तरह न देखते हुए, इसे स्वेच्छा से दिया जाना चाहिए।
- परमेश्वर के प्रति प्रेम और विश्वास को दर्शाने के लिए दिया जाना चाहिए, न कि किसी

## दबाव में आकर।

---

### **निष्कर्ष**

गिनती 18:26 में लेवियों को सिखाया गया कि उन्हें दशमांश के रूप में जो कुछ भी मिलता है, उसका भी एक भाग परमेश्वर को अर्पण करना चाहिए। रब्बियों ने इस पर विस्तार से चर्चा की और यह बताया कि यह नियम लेवियों की भूमि-विहीन स्थिति के कारण लागू किया गया था।

आज के मसीही चर्च में भी दशमांश की अवधारणा मौजूद है, लेकिन यह अनिवार्य नहीं बल्कि स्वैच्छिक है। मसीही विश्वास में यह ज़रूरी नहीं कि "दशमांश का दशमांश" दिया जाए, लेकिन चर्च और मिशनरी संगठनों को सहयोग करने के लिए कुछ लोग ऐसा करते हैं। **सबसे महत्वपूर्ण यह है कि जो कुछ भी हम देते हैं, वह प्रेम, विश्वास और परमेश्वर की आराधना के भाव से दिया जाए।**

P130 De.14:28 To set aside the poor-man's tithe in 3rd and 6th year

**व्याख्या: व्यवस्थाविवरण 14:28 (Deuteronomy 14:28) हिंदी में**

**बाइबल पद:**

"तीन वर्ष के अंत में अपने सारी उपज के दसवें अंश को निकालकर अपने

**नगरों में रख छोड़ना।"**

(व्यवस्थाविवरण 14:28, हिंदी बाइबल - BSI)

## हिंदी में विस्तृत व्याख्या

व्यवस्थाविवरण 14:28 में "तीसरे वर्ष का दशमांश" या "त्रिवार्षिक दशमांश" (triennial tithe)

का वर्णन किया गया है।

सामान्य रूप से, इसाएली लोग प्रत्येक वर्ष दो दशमांश (tithes) निकालते थे:

1. **प्रथम दशमांश** (First Tithe - מִשְׁאָר רָשָׁעָה) - यह लेवियों (याजकों) को दिया जाता था क्योंकि उनके पास कोई व्यक्तिगत संपत्ति या कृषि भूमि नहीं थी।
2. **द्वितीय दशमांश** (Second Tithe - מִשְׁרָשָׁר עֲנֵי) - यह व्यक्ति खुद यरूशलेम ले जाकर अपने परिवार के साथ खाता था।

परंतु तीसरे और छठे वर्ष में यह दूसरा दशमांश गरीबों के लिए समर्पित कर दिया जाता था।

इसे "गरीबों का दशमांश" (ma'aser ani - עֲנֵי מִשְׁרָשָׁר) कहते हैं। यह विशेष रूप से उन लोगों के लिए था जो जरूरतमंद थे, जैसे कि:

- लेवी (जिनके पास अपनी भूमि नहीं थी)
- परदेसी (अजनबी, जो इसाएली समाज में बसे थे)
- अनाथ (जिनके माता-पिता नहीं थे)
- विधवा (जिनका पति नहीं था और वे स्वयं जीविका नहीं कर सकती थीं)

इस दशमांश को यरूशलेम ले जाने की बजाय स्थानीय नगरों में संग्रहीत किया जाता था ताकि इसे गरीबों में बांटा जा सके।

## रब्बियों की व्याख्या

### 1. राशी (Rashi)

- यदि किसी ने पहले और दूसरे वर्ष का दशमांश देने में देरी कर दी थी, तो उसे तीसरे वर्ष में उसे निकालने और बांटने की विशेष आज्ञा थी।

### 2. बेखोर शोर (Bekhor Shor)

- पहले और दूसरे वर्ष में, पहला दशमांश लेवियों को और दूसरा दशमांश यरूशलेम में स्वयं खाने के लिए होता था।
- तीसरे वर्ष में, दूसरा दशमांश समाप्त हो जाता था और उसकी जगह गरीबों का दशमांश आ जाता था।

### 3. मालबीम (Malbim)

- पहले दो वर्षों में *ma'aser sheni* (दूसरा दशमांश) को यरूशलेम ले जाकर खाया जाता था।
- तीसरे वर्ष में इसकी जगह *ma'aser ani* (गरीबों का दशमांश) लिया जाता था।
- तीसरे वर्ष के अंत में, (संभवतः फसह के समय) बचा हुआ दशमांश निकालकर इसे पूरी तरह वितरित करना होता था।

### 4. रब्बी शमशोन रेफेल हिर्श (Rav Hirsch)

- उन्होंने इसे विशेष रूप से तीसरे और छठे वर्षों में दिया जाने वाला दशमांश बताया।
- इसे गरीबों और जरूरतमंदों के लिए स्थानीय नगरों में रखा जाता था, ताकि वे इसे

आसानी से प्राप्त कर सकें।

## 5. तोरा तेमीमा (Torah Temimah)

उन्होंने इसे सीधे *Sifrei* (प्राचीन यहूदी ग्रंथ) से जोड़कर कहा कि यह दशमांश केवल गरीबों के लिए था और इसे स्थानीय स्तर पर वितरित किया जाता था।

## 6. चिज़कुनी (Chizkuni)

- उन्होंने बताया कि यह दशमांश यरूशलेम नहीं ले जाया जाता था, बल्कि स्थानीय नगरों में ही रखा जाता था, ताकि गरीब इसे प्राप्त कर सकें।

## उदाहरण:

एक इस्राएली किसान याकोव (Yaakov) को लें।

### 1. पहले और दूसरे वर्ष में:

- वह अपनी फसल का पहला दशमांश लेवियों को देता है।
- दूसरा दशमांश यरूशलेम ले जाता है और वहीं खाता है।

### 2. तीसरे वर्ष में:

- पहला दशमांश लेवियों को जाता है।
- दूसरा दशमांश गरीबों का दशमांश बन जाता है, जो स्थानीय नगर में जरूरतमंदों के लिए छोड़ दिया जाता है।

इसका अर्थ है कि हर तीन साल में एक बार गरीबों को सीधा समर्थन मिलता था।

---

## आज के मसीही चर्च में इसका क्या महत्व है?

### 1. क्या मसीही विश्वास में त्रैवार्षिक दशमांश का पालन किया जाता है?

- आधुनिक ईसाई चर्च में यहूदियों की तरह त्रैवार्षिक दशमांश (triennial tithe) का कोई विशिष्ट नियम नहीं है।
- परंतु, मसीही चर्च दान (charity) और जरूरतमंदों की सहायता पर विशेष बल देता है।

### 2. नए नियम (New Testament) में तिथिंग (Tithing) का क्या महत्व है?

- यीशु मसीह ने तिथिंग (tithing) की आलोचना नहीं की, बल्कि कहा कि इसे सच्चे न्याय, दया और विश्वास के साथ किया जाना चाहिए (मत्ती 23:23)।
- प्रेरितों के काम 2:44-45 में लिखा है कि प्रारंभिक मसीही विश्वासियों ने अपनी संपत्ति बेचकर गरीबों में बांट दी।
- 2 कुरिन्थियों 9:7 कहता है कि ”हर एक जन जैसा मन में ठाने वैसा ही दान दे, न कुड़कुड़ाकर और न दबाव से, क्योंकि परमेश्वर आनंद से देनेवाले से प्रेम रखता है।”

### 3. क्या आज के चर्च में ”गरीबों के लिए दशमांश“ की अवधारणा लागू होती है?

- हाँ! कई चर्च गरीबों की मदद के लिए विशेष दान एकत्रित करते हैं।
  - कुछ चर्चों में "बेनिवालेंट फंड" (Benevolent Fund) होता है, जो विधवाओं, अनाथों और जरूरतमंदों की मदद के लिए रखा जाता है।
  - कुछ चर्च हर कुछ वर्षों में विशेष सामूहिक दान अभियान (charity drives) चलाते हैं, जिससे वे गरीबों की सहायता कर सकें।
- 

## निष्कर्षः

1. व्यवस्थाविवरण 14:28 में बताया गया त्रैवार्षिक दशमांश मुख्य रूप से गरीबों की देखभाल के लिए था।
  2. यह प्रत्येक तीन वर्षों में लिया जाता था और स्थानीय नगरों में संग्रहीत किया जाता था, ताकि जरूरतमंद इसे आसानी से प्राप्त कर सकें।
  3. रबियों ने इसे विभिन्न दृष्टिकोणों से समझाया, परंतु मूल भावना यह थी कि यह गरीबों की सहायता का एक व्यवस्थित तरीका था।
  4. आज के ईसाई चर्च में तिथिंग को अनिवार्य नियम के रूप में नहीं देखा जाता, लेकिन गरीबों की सहायता, दान, और चर्च द्वारा जरूरतमंदों की मदद करना इस सिद्धांत का ही एक रूप है।
- 

## क्या यह नियम आज भी लागू है?

ईसाई धर्म में, प्रभु यीशु ने गरीबों और जरूरतमंदों की मदद पर बहुत जोर दिया (मत्ती 25:35-40)।

हालांकि, चर्च में दशमांश (tithe) की परंपरा यहूदी नियमों के अनुसार लागू नहीं होती, लेकिन

मसीही विश्वास में यह आज भी एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है कि हमें अपनी संपत्ति में से गरीबों की सहायता करनी चाहिए।

□ अतः व्यवस्थाविवरण 14:28 की भावना आज भी प्रासंगिक है, क्योंकि यह गरीबों की सहायता और समाज में न्याय को स्थापित करने पर जोर देता है।

P131 De.26:13 A declaration made when separating the various tithes

### व्यवस्था-विवरण 26:13

‘तब तू अपने परमेश्वर के सामने यह घोषित करना, “मैंने अपने घर में से पवित्र अंश को निकाल लिया। जो आज्ञाएं तूने मुझे दी हैं, उनके अनुसार मैंने वह अंश लेकीय जन, प्रवासी, पितृहीन और विधवा को दे दिया। इस प्रकार मैंने तेरी आज्ञाओं का उल्लंघन नहीं किया और न मैं उनको भूला ही हूँ।’

### व्यक्तिगत दशमांश घोषणा (תְּדוּרִי מַעֲשָׂרָה) – व्यवस्थाविवरण 26:13

व्यवस्थाविवरण 26:13 में दिए गए कथन को “दशमांश की घोषणा” (תְּדוּרִי מַעֲשָׂרָה - विदुई मासरोट) कहा जाता है। यह घोषणा इमाएली व्यक्ति द्वारा की जाती थी जब उसने अपनी उपज से पिछले तीन वर्षों के सभी आवश्यक दशमांश (तिथ) सही ढंग से अलग कर दिए होते और उन्हें नियत प्राप्तकर्ताओं को दे दिया होता। यह घोषणा यरूशलेम के मंदिर (बेइत हमिकदाश) में की जाती थी। आइए इस पद को तोड़कर देखें और विभिन्न रबियों की व्याख्याओं का विश्लेषण करें।

"मैंने अपने घर से पवित्र वस्तुओं को हटा दिया है ( בְּעָרָתִי הַקָּדָשׁ מִן־הַבַּיִת )"

इस उद्घाटन वाक्य का अर्थ है कि व्यक्ति ने अपने घर से पवित्र चीजों (कोदेश) को पूरी तरह से हटा दिया। विभिन्न रबियों ने यह समझाने की कोशिश की कि यह "पवित्र वस्तु" किन चीजों को संदर्भित करती है-

1. **राशी** - वे बताते हैं कि यहाँ "कोदेश" का अर्थ द्वितीय दशमांश (מעשר שְׁנִי) - माइसर शेनी) और चौथे वर्ष की दाख की उपज (נְטוּ רְבָעִי) - नेटा रेवाई से है, क्योंकि इन दोनों को कोदेश कहा गया है। यदि किसी ने पहले दो वर्षों में द्वितीय दशमांश यरूशलेम नहीं पहुँचाया था, तो अब उसे लाना आवश्यक है।
2. **बेखोर शोर** – वे राशी की व्याख्या पर सवाल उठाते हैं क्योंकि "घर से" (גַּבְּהַן) शब्द का प्रयोग किया गया है, जबकि द्वितीय दशमांश को यरूशलेम में खाया जाता है, न कि घर में रखा जाता है। इसलिए, वे मानते हैं कि यह प्रथम दशमांश (מעשר רָאשִׁים) - माइसर क्रशोन) को संदर्भित कर सकता है।
3. **चिजकुनी** - वे मानते हैं कि "कोदेश" पहली उपज (बिकुरिम - מְרַכְּבָּה) को संदर्भित करता है, क्योंकि इन्हें मंदिर में लाना आवश्यक था और यदि ऐसा नहीं किया गया तो उन्हें नष्ट करना पड़ता।
4. **गुर आर्येह** - वे राशी के दृष्टिकोण का समर्थन करते हैं और बताते हैं कि क्योंकि तीसरे वर्ष में द्वितीय दशमांश नहीं होता, इसलिए यहाँ "पवित्र वस्तु हटाने" का अर्थ पिछले दूसरे वर्ष के दशमांश को यरूशलेम लाना हो सकता है।
5. **मालबिम** - वे भी इसे द्वितीय दशमांश मानते हैं क्योंकि बाइबिल में इसे स्पष्ट रूप से कोदेश कहा गया है।

6. **हआमेक दावर** – वे इसे व्यापक रूप से देखते हैं और मानते हैं कि इसमें तेरुमा (הארמה -

याजकों को दी जाने वाली उपज), द्वितीय दशमांश, और गरीबों के लिए छोड़ी गई उपज (लेकेट, शिख्वा, पएह) भी शामिल हो सकती है।

7. **तोरा तेमीमा** - वे मिश्रा के आधार पर इसमें द्वितीय दशमांश, नेटा रेवाई और हल्ला (आटे का अर्पण) को भी शामिल मानते हैं।

8. **रव हिर्श** - वे इसे मुख्य रूप से द्वितीय दशमांश से जोड़ते हैं लेकिन मानते हैं कि इसका तात्पर्य अन्य धार्मिक अर्पणों से भी हो सकता है।

"और मैंने इसे लेवी, परदेशी, अनाथ और विधवा को दिया (וְגַם נָתַתִּי לְלֵבִי וְלֹגֶר לִיתּוֹם וְלְאַלְמָנוֹה)"

यह वाक्य दशमांश के सही वितरण को दर्शाता है।

1. **राशी** – वे बताते हैं कि "लेवी को" देने का अर्थ प्रथम दशमांश है, और "परदेशी, अनाथ, विधवा" से गरीबों का दशमांश (מעשר עני) - माअसेर अनी है।

2. **बेखोर शोर** - वे भी इस व्याख्या से सहमत हैं और कहते हैं कि द्वितीय दशमांश इसमें शामिल नहीं है।

3. **गुर आर्येह** – वे यह समझाते हैं कि "भी (מו)" शब्द तेरुमा और बिक्कुरिम को भी इस सूची में शामिल करता है।

4. **मालबिम** - वे मानते हैं कि यहाँ प्रथम दशमांश का उल्लेख है, और "भी" (מו) से तेरुमत माअसेर (लेवियों द्वारा याजकों को दी जाने वाली उपज) को भी शामिल किया जाता है।

5. **हआमेक दावर** - वे समझाते हैं कि "लेवी को" में कोहेन (याजक) भी शामिल हो सकता है।

6. तोरा तेमीमा - वे इसे प्रथम दशमांश, तेरूमा, गरीबों के दशमांश और खेतों में छोड़ी गई उपज (लेकेट, शिर्खा, पाएह) से जोड़ते हैं।
7. रव हिर्श - वे भी इस क्रम को मानते हैं और जोर देते हैं कि अर्पणों को सही क्रम में वितरित करना आवश्यक था।

"तेरी सारी आज्ञाओं के अनुसार, जो तूने मुझे दी हैं (ככל מצותך אשא ענה לך)"

इस वाक्य का अर्थ यह है कि व्यक्ति ने परमेश्वर द्वारा दी गई दशमांश संबंधित सभी आज्ञाओं का पालन किया है।

1. राशी - वे कहते हैं कि यह विशेष रूप से सही क्रम में दशमांश देने को संदर्भित करता है: पहले बिक्कुरिम, फिर तेरूमा, फिर प्रथम दशमांश, और अंत में द्वितीय दशमांश।
2. गुर आर्यह - वे भी इस क्रम को आवश्यक मानते हैं और बताते हैं कि अगर कोई इस क्रम को तोड़ता है तो वह इस घोषणा को नहीं कह सकता।
3. हआमेक दावर - वे मानते हैं कि इसमें लिखित और मौखिक दोनों कानूनों का पालन करना शामिल है।
4. तोरा तेमीमा - वे इसे देरी किए बिना दशमांश देने के सिद्धांत से जोड़ते हैं।
5. रव हिर्श - वे जोर देते हैं कि यह सही समय और क्रम में दशमांश देने को संदर्भित करता है।
6. रेज्जियो - वे इसे समय पर पालन करने से जोड़ते हैं ताकि देरी न हो।

"मैंने तेरी किसी भी आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया (לא עבירה ממצוותך)"

यह वाक्य व्यक्ति की धार्मिक निष्ठा को व्यक्त करता है-

1. **राशी** - वे कहते हैं कि इसका अर्थ है कोई भी दशमांश सही प्राप्तकर्ता से भिन्न किसी और को नहीं दिया गया।
2. **गुर आर्येह** - वे इसे यहूदी कानून के अनुसार सही प्रक्रिया का पालन करने से जोड़ते हैं।
3. **हआमेक दावर** - वे इसे धार्मिक आज्ञाओं के सम्पूर्ण पालन की घोषणा के रूप में देखते हैं।
4. **तोरा तेमीमा** - वे इस वाक्य को यह सिद्ध करने के रूप में देखते हैं कि व्यक्ति ने दशमांश देने में लापरवाही नहीं की।
5. **रव हिर्श** - वे बताते हैं कि इसका तात्पर्य यह है कि कोई भी अर्पण किसी अनुचित कार्य के लिए उपयोग नहीं किया गया।

### **व्यवस्थाविवरण 26:13 का आज के मसीही चर्च में अर्थ और प्रासंगिकता**

**1. यह व्यवस्था पुराने नियम में क्यों दी गई थी?**

- इसाएलियों को आदेश दिया गया था कि वे अपनी पैदावार का दशमांश (tithe) और अन्य भेंटें विधवाओं, अनाथों, परदेशियों और लेवियों को दें।
- यह एक सामाजिक व्यवस्था थी जिससे जरूरतमंदों की देखभाल की जा सके और यहोवा की आज्ञा का पालन हो।
- यह दशमांश देने की व्यवस्था हर तीन साल में होती थी, जिसे "तीसरा दशमांश" (Third-year Tithe) कहा जाता था।

## 2. मसीही चर्च में इसका क्या महत्व है?

यद्यपि मसीही विश्वासियों के लिए □□□□ □□ □□□□□□□ (律法, Law) □□ □□□□□  
 □□□□□□□ □□□□ □□ (रोमियों 6:14, गलातियों 3:23-25), फिर भी इसके पीछे का  
 सिद्धांत आज भी चर्च में लागू होता है।

### A. चर्च में दशमांश और भेंट देने का सिद्धांत

✓प्रेम और उदारता – प्रभु यीशु ने हमें सिखाया कि हमें प्रेम और दयालुता से दूसरों की मदद  
 करनी चाहिए (मत्ती 22:39, लूका 6:38)।

✓जरूरतमंदों की देखभाल – पुराने नियम में अनाथों, विधवाओं और परदेशियों की मदद  
 करने की आज्ञा थी। आज यह चर्च की ज़िम्मेदारी है कि वे गरीबों, जरूरतमंदों और असहायों  
 की मदद करें (याकूब 1:27)।

✓परमेश्वर के कार्य के लिए देना – आज दशमांश देने का उद्देश्य चर्च के प्रचार कार्य, सेवकाई  
 और जरूरतमंदों की सेवा करना है।

□ □ □ □□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□

- यीशु ने कहा कि दशमांश देना अच्छा है, लेकिन न्याय, दया और विश्वास को  
 प्राथमिकता देनी चाहिए (मत्ती 23:23)।
- प्रेरित पौलुस ने कहा, ”हर एक जन जैसा मन में ठाने वैसा ही दान करें; न कुढ़-कुढ़ कर  
 और न दबाव से, क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देनेवाले से प्रेम रखता है।” (2 कुरिन्थियों 9:7)।

□ □□□□□□: आज के चर्च में दशमांश और भेंट देना अनिवार्य नियम नहीं बल्कि प्रेम  
 और विश्वास से किया जाने वाला कार्य है।

### 3. चर्च और विश्वासी इस पद का पालन कैसे कर सकते हैं?

- समय, धन, और संसाधनों से प्रभु की सेवा करें।
  - गरीबों, विधवाओं, अनाथों और जरूरतमंदों की सेवा करें।
  - अपने चर्च और मिशनरी कार्यों को सहयोग दें।
  - प्रभु को अपने जीवन और संसाधनों का पहला स्थान दें।
- 

#### निष्कर्ष (Conclusion)

व्यवस्थाविवरण 26:13 का संदेश आज भी मसीही विश्वासियों के लिए महत्वपूर्ण है।

- यह हमें उदारता, समाज सेवा, और परमेश्वर की आज्ञाकारिता सिखाता है।
- चर्च और विश्वासी अपने संसाधनों का उपयोग परमेश्वर के राज्य के विस्तार और जरूरतमंदों की सेवा में करें।
- दशमांश देना नियम से अधिक प्रेम और विश्वास का विषय है।

- क्या आज के मसीही विश्वासी को दशमांश देना चाहिए?
  - हाँ, लेकिन विवशता से नहीं, बल्कि प्रेम और उदारता से (2 कुरिन्थियों 9:7)।
  - प्रभु को प्राथमिकता देने और दूसरों की मदद करने का यह एक तरीका है।
  - ”हे प्रभु, हमें उदारता, प्रेम और दूसरों की सेवा करने का मन दे, ताकि हम तेरी इच्छा के अनुसार जीवन जी सकें!”

## पवित्र शास्त्र पद हिंदी में:

### व्यवस्थाविवरण 26:5

“फिर तेरे लिये जो यहोवा तेरा परमेश्वर स्थान ठहराए, उसमें उस याजक के समुख कह,  
मेरे पुरखा एक मारा-मारा फिरनेवाला अरामी था; और वह गिनती में थोड़े लोगों समेत  
मिस्र में जा बसा, और वहां पर वह एक बड़ी, बलवन्त और बहुत लोगों की जाति बन गया।”

---

## इस पद का अर्थ और विभिन्न व्याख्याएँ

यह पद इस्राएलियों द्वारा प्रथम फल (बिक्कुरिम) भेंट करते समय मंदिर में बोले जाने वाले कथन का हिस्सा था। यह कथन इस्राएलियों के इतिहास का एक संक्षिप्त सारांश देता है, जहाँ यह बताया गया है कि उनका पूर्वज एक अरामी था, जो भटकता फिरता था और जो अंततः मिस्र गया, जहाँ उसकी संतति एक महान जाति बन गई।

इस पद की मुख्य दो व्याख्याएँ हैं:

### 1. राशी (Rashi) और ओनकेलोस (Onkelos) की व्याख्या:

- उन्होंने कहा कि “अरामी” से तात्पर्य लाबान (याकूब का ससुर) से है, जिसने याकूब को नष्ट करने का प्रयास किया था।
- यहूदी परंपरा में, अगर कोई अन्य जातियाँ इस्राएल को नष्ट करने का प्रयास करती हैं, तो परमेश्वर उनके उद्देश्य को उनके कार्यों के समान ही मानते हैं।
- यह व्याख्या पासओवर हग्गदाह (Passover Haggadah) में भी पाई जाती है।

### 2. इब्र ए़ज़रा (Ibn Ezra) और रशबाम (Rashbam) की व्याख्या:

- उनके अनुसार "अरामी" का अर्थ याकूब स्वयं है, और "अोबेद (אֹבֶד)" का अर्थ "भटकता" या "गरीब" होना है।
  - उनका कहना है कि इस पद का सही अनुवाद होगा:  
**"मेरा पिता एक भटकता हुआ अरामी था।"**
  - यह याकूब के संघर्षपूर्ण जीवन को दर्शाता है, जब वह लाबान के घर में एक गरीब व्यक्ति था, और जब वह मिस्र गया तो वह और उसका परिवार बहुत कम संख्या में था।
  - इस व्याख्या के अनुसार, यह पद इस्राएलियों को यह सिखाने के लिए था कि वे अपने पूर्वजों की कठिनाइयों को याद रखें और अहंकार न करें।
- 

## रब्बियों की विभिन्न व्याख्याएँ और उदाहरण

### 1. रशी (Rashi) और ओनकेलोस (Onkelos): लाबान ने याकूब को नष्ट करने की योजना बनाई

रशी कहते हैं कि "अरामी" लाबान था, जिसने याकूब और उसके परिवार को नष्ट करने की कोशिश की थी।

#### □ उदाहरण:

जब लाबान ने याकूब को धोखा दिया और उसे राहेल की जगह लिआह से विवाह करने को मजबूर किया (उत्पत्ति 29:25-27), तो यह उसका पहला षड्यंत्र था।  
बाद में, जब याकूब अपने परिवार के साथ चला गया, लाबान ने उसका पीछा किया और

**संभवतः उसे नुकसान पहुंचाने की योजना बनाई थी (उत्पत्ति 31:22-29)।**

---

## 2. इब्र एज़रा (Ibn Ezra): याकूब एक गरीब और भटकता हुआ अरामी था

### □ उदाहरणः

- जब याकूब अपने भाई एसाव से डरकर भागा, तब उसके पास कुछ भी नहीं था (उत्पत्ति 28:10-11)।
  - वह लाबान के यहाँ एक नौकर की तरह रहा और उसने चौदह साल तक बिना किसी संपत्ति के राहेल और लिंआह से विवाह करने के लिए काम किया (उत्पत्ति 29:18-20)।
- 

## 3. रशबाम (Rashbam): याकूब और उसके पूर्वज निर्वासित थे

रशबाम ने कहा कि यह वाक्यांश इसाएलियों की जड़ें एक परदेशी लोगों में होने को दर्शाता है।

### □ उदाहरणः

- अब्राहम को परमेश्वर ने कहा था कि वह अपने देश को छोड़ दे और एक अज्ञात भूमि में चला जाए (उत्पत्ति 12:1)।
  - याकूब के पुत्रों को भी भोजन की तलाश में मिस्र जाना पड़ा (उत्पत्ति 42:1-3)।
- 

## 4. स्फोर्नो (Sforno): परमेश्वर की कृपा को दिखाने वाला पद

स्फोर्नों के अनुसार, इस पद का मुख्य उद्देश्य इस्राएलियों को याद दिलाना था कि वे कभी

**शक्तिशाली लोग नहीं थे, बल्कि परमेश्वर की कृपा से एक महान राष्ट्र बने।**

□ **उदाहरण:**

परमेश्वर ने इस्राएलियों को मिस्र से छुड़ाया, न कि वे स्वयं किसी शक्ति से स्वतंत्र हुए।

---

## आज के मसीही चर्च में इसका क्या अर्थ है?

### 1. यीशु मसीह में सभी लोग यात्री और परदेशी हैं

- बाइबल हमें सिखाती है कि हम इस संसार में परदेशी और यात्री हैं (1 पतरस 2:11)।
- जिस तरह याकूब और इस्राएली अपने अंतिम घर (प्रतिज्ञा की हुई भूमि) की ओर बढ़ रहे थे, उसी तरह मसीही विश्वासी स्वर्ग की ओर अग्रसर हैं।

### 2. परमेश्वर अपनी संतान की रक्षा करता है

- लाबान ने याकूब को नष्ट करने की योजना बनाई, लेकिन परमेश्वर ने हस्तक्षेप किया और उसे बचाया।
- आज भी, शैतान और संसार के प्रलोभन हमें गिराने की कोशिश करते हैं, लेकिन परमेश्वर हमारी रक्षा करता है।

### 3. विश्वास और कृतज्ञता का पाठ

- जैसे इस्राएलियों को याद दिलाया गया कि वे एक समय निर्धन और कमज़ोर

थे, वैसे ही मसीहियों को यह नहीं भूलना चाहिए कि यीशु ने हमें छुटकारा दिया

है।

- इसलिए, हमें गर्व नहीं करना चाहिए, बल्कि परमेश्वर की कृपा के लिए  
धन्यवाद करना चाहिए।
- 

## निष्कर्ष

”अरामी ओबेद अबी“ (ארמי אבד אב') का यह पद इसाएलियों की प्रारंभिक स्थिति और परमेश्वर की कृपा को दर्शाता है।

□ यह हमें सिखाता है कि परमेश्वर अपनी संतान को बचाता है, उसकी अगुवाई करता है,  
और उसे आशीष देता है।

✓ आज भी, मसीही विश्वासी इस पद से यह सीख सकते हैं कि हमें अपने जीवन में परमेश्वर की कृपा को नहीं भूलना चाहिए, बल्कि उसके प्रति कृतज्ञता रखनी चाहिए।

P133 Nu.15:20 On the first portion of the Challah given to the Cohen

बाइबल पद (हिन्दू बाइबल से) - हिंदी में

गिनती 15:17-21

”तुम अपनी पहली गूँधी हुई रोटी में से एक भाग उठाकर अर्पण करना; जिस प्रकार तुम खलिहान से अर्पण चढ़ाते हो, उसी प्रकार इसे भी चढ़ाना।“

## हिंदी में व्याख्या

**यह मित्त्वाह (आदेश)** इस बात पर ज़ोर देता है कि जब इस्राएली लोग कनान देश में प्रवेश करेंगे और वहाँ की उपज से भोजन बनाएंगे, तो उन्हें अपने आटे का पहला भाग यहोवा को अर्पित करना होगा। इस अर्पण को "चल्लाह" कहते हैं, और यह परमेश्वर को धन्यवाद देने और आशीर्वाद प्राप्त करने का एक तरीका है। यह अनाज की भेंट के समान है जो पहले मंदिर में दी जाती थी।

### मुख्य बातें:

**पहला अंश यहोवा का होता है –** इसका अर्थ यह है कि जो कुछ भी हमें प्राप्त होता है, वह

पहले परमेश्वर का है, और हमें उसका सम्मान करना चाहिए।

**परमेश्वर की उपस्थिति का स्मरण –** जब हम अपनी मेहनत से रोटी बनाते हैं, तो हमें यह

याद रखना चाहिए कि यह सब परमेश्वर की कृपा से संभव हुआ है।

**सामाजिक पहल –** यह दान को दर्शाता है, क्योंकि यह हिस्सा कोहनियों (याजकों) को दिया

जाता था जो मंदिर में सेवा करते थे।

## रब्बियों की व्याख्याएँ

1. **रब्बी योहनान -** उन्होंने इस आदेश को मूर्ति पूजा के त्याग से जोड़ा। उनका कहना था कि जो व्यक्ति चाल्लाह का पालन करता है, वह मूर्तिपूजा से दूर रहता है।

**उदाहरण:** जब कोई व्यक्ति अपने पहले फल, अनाज, या रोटी का पहला टुकड़ा यहोवा को अर्पित करता है, तो वह यह दिखाता है कि वह सिर्फ परमेश्वर की आराधना करता है,

**न कि अन्य देवताओं की।**

2. **रेश लाकीश** - उन्होंने नीतिवचन 6:26 ("व्यभिचारिणी स्त्री के कारण मनुष्य एक टुकड़े रोटी के लिए लाया जाता है") को इस आदेश से जोड़ा। उन्होंने कहा कि यदि कोई चाल्लाह न निकाले, तो यह आध्यात्मिक गिरावट की ओर ले जाता है।

**उदाहरण:** अगर कोई रोटी बनाकर परमेश्वर का हिस्सा अलग नहीं करता, तो यह अनैतिक व्यवहार की शुरुआत हो सकती है।

3. **मिद्राश (रब्बी तन्खुमा)** – उन्होंने चाल्लाह को परमेश्वर की स्वीकृति का प्रतीक बताया। उन्होंने एक पद (सभोपदेशक 9:7) का उल्लेख किया:

"जा, अपनी रोटी आनंद के साथ खा, और अपने दाखरस को प्रसन्न मन से पी; क्योंकि यहोवा ने तेरे कामों को पहले ही स्वीकार कर लिया है।"

इसका अर्थ यह है कि जब चाल्लाह अर्पित की जाती है, तो परमेश्वर हमारे भोजन को स्वीकार करता है और उसे शुद्ध करता है।

4. **राशि** - उन्होंने समझाया कि चाल्लाह तब अनिवार्य हुई जब इस्राएलियों ने कनान में प्रवेश किया और यह आदेश जंगल में मन्त्रा के नियमों से जुड़ा हुआ है।

**उदाहरण:** जैसे जंगल में मन्त्रा एक ओमरप्रति व्यक्ति दिया जाता था, वैसे ही चाल्लाह के लिए भी एक माप निर्धारित किया गया।

5. सफोर्नो - उन्होंने कहा कि यह आदेश इमाएल के पापों के कारण दिया गया, ताकि हर घर में आशीष बनी रहे।

**उदाहरण:** जब एलियाह भविष्यवक्ता ने विधवा से पहले अपने लिए एक छोटी रोटी बनाने को कहा (1 राजा 17:13-16), तब विधवा के आटे और तेल का घट जाना बंद हो गया।

---

## आज के मसीही चर्च में चाल्लाह का महत्व

मसीही धर्म में चाल्लाह सीधे तौर पर कोई अनिवार्य आदेश नहीं है, लेकिन यह कई आध्यात्मिक सिद्धांतों से मेल खाता है:

1. **पहले फल की भेट – प्रभु यीशु ने सिखाया कि हमें अपने पहले और सर्वश्रेष्ठ को परमेश्वर को देना चाहिए।**
  - “पहले परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज करो, तो ये सब वस्तुएँ भी तुम्हें दी जाएँगी।” (मत्ती 6:33)
2. **रोटी और आशीष का सिद्धांत – प्रभु यीशु ने पाँच रोटी और दो मछलियाँ लेकर पहले परमेश्वर को धन्यवाद दिया, और फिर हजारों लोगों को खिलाया (मत्ती 14:19)।**
  - इससे यह सिद्धांत मिलता है कि जब हम परमेश्वर को पहला हिस्सा समर्पित करते हैं, तो वह हमें अधिक आशीष देता है।
3. **यीशु ही जीवन की रोटी हैं – प्रभु यीशु ने कहा:**

- "मैं जीवन की रोटी हूँ जो मेरे पास आता है, वह कभी भूखा न होगा।" (यूहन्ना 6:35)
  - चाल्लाह का उद्देश्य शारीरिक भोजन को शुद्ध करना था, लेकिन मसीह ने खुद को आत्मिक जीवन की रोटी बताया।
- 

## चल्लाह से जुड़ी मसीही प्रार्थना

हे स्वर्गीय पिता,

हम तुझे धन्यवाद देते हैं कि तूने हमें जीवन, रोटी, और आशीष दी। जैसे

इस्माएलियों ने अपना पहला भाग तुझे अर्पित किया, वैसे ही हम भी अपने जीवन

का पहला और सबसे उत्तम भाग तुझे समर्पित करते हैं।

प्रभु यीशु, तूने हमें सिखाया कि तू ही जीवन की रोटी है। हमें आत्मिक और भौतिक

भोजन दे, और हमें हर दिन तेरी उपस्थिति में बने रहने की आशीष दे। जैसे तूने पाँच

रोटियों को तोड़कर हजारों को खिलाया, वैसे ही हमारी छोटी भेंट को भी बढ़ा और

दूसरों के लिए आशीष बना।

हम प्रार्थना करते हैं कि हमारे घरों में तेरी आशीष बनी रहे, और हम तुझे प्रथम स्थान

दें। यीशु मसीह के नाम में, आमीन।

---

## निष्कर्ष

- चाल्लाह का मूल आदेश यह दिखाता है कि परमेश्वर पहले स्थान पर है, और हमें उसके लिए अपनी पहली भेंट देनी चाहिए।

- रब्बियों ने इसे आध्यात्मिक शुद्धता, आशीष, और समाज में दान से जोड़ा।
- मसीही चर्च में यह सिद्धांत यीशु के द्वारा दी गई रोटी, कृतज्ञता, और भेंट देने की भावना से मेल खाता है।
- हम अपने जीवन का पहला और सर्वश्रेष्ठ भाग यीशु को अर्पित करके इस सिद्धांत को आत्मिक रूप से अपना सकते हैं।

## **THE SABBATICAL YEAR**

P134 Ex.23:11 On ownerless produce of the Sabbatical year (shemittah)

### **### 1. बाइबल का पद (हिंदी में)**

**निर्गमन 23:11 (Exodus 23:11) -**

"परन्तु सातवें वर्ष में तू उसे विश्राम करने देगा, और उसे परती छोड़ देगा; तब तेरे लोगों के दीन-हीन उसकी उपज खाएँगे, और जो कुछ उनके बाद बचेगा, उसे वन के पश्च खाएँगे। अपनी दाख की बारी और जैतून के बगीचे के साथ भी ऐसा ही करना।"

(हिंदी बाइबल, O.V. संस्करण)

---

### **### 2. हिंदी में समझाइए**

यह पद यहूदी धर्म में \*शिमता\* (Sabbatical Year) की आज्ञा से संबंधित है। \*शिमता\* का अर्थ है सातवें वर्ष में भूमि को विश्राम देना। इस वर्ष में किसान अपनी जमीन पर कोई कृषि कार्य नहीं करते, जैसे जुताई, बुआई, या खाद डालना। जो कुछ भी जमीन से अपने आप उगता है (जैसे अनाज, फल, या सब्जियाँ), उसे मालिक अपने लिए नहीं रखता, बल्कि उसे गरीबों और जंगली जानवरों के लिए छोड़ देता है। यह नियम दाख की बारियों (अंगूर के बगीचे) और जैतून के बगीचों पर भी लागू होता है। इसका उद्देश्य यह है कि भूमि को आराम मिले, गरीबों को भोजन मिले, और यह दिखाया जाए कि सारी सृष्टि परमेश्वर की है, न कि केवल मनुष्य की।

---

### **### 3. रब्बियों ने क्या-क्या कहा (उदाहरण सहित)**

यहाँ विभिन्न रब्बियों की व्याख्याएँ हैं जो \*शिमता\* के नियमों और इसके अर्थ को समझाती हैं। मैं इन्हें संक्षेप में और उदाहरण सहित हिंदी में प्रस्तुत करूँगा:

#### ##### (अ) "तिश्मटेनाह" और "उनेताष्टा" का अर्थ

- \*\*राशि (Rashi)\*\*: दो व्याख्याएँ दीं-

1. "तिश्मटेनाह" का मतलब है "जमीन को विश्राम देना" यानी जुताई न करना, और "उनेताष्टा" का मतलब है "उसे छोड़ देना" यानी उसकी उपज को \*बितर\* (हटाने का समय) के बाद न खाना।
2. दूसरी व्याख्या में, "तिश्मटेनाह" का मतलब जुताई और बुआई जैसे मुख्य कामों से रुकना, और "उनेताष्टा" का मतलब खाद डालना या निराई करना भी नहीं।

\*उदाहरण\*: अगर कोई किसान सातवें साल में खेत में खाद डालता है, तो यह नियम के खिलाफ है।

- \*\*बर्टेनुरा (Bartenura)\*\*: राशि की दूसरी व्याख्या को समर्थन देते हुए कहा कि "उनेताष्टा" का संबंध भी जमीन से है, न कि केवल उपज से, ताकि व्याकरण सही रहे।

- \*\*इब्र एज्रा (Ibn Ezra)\*\*: "तिश्मटेनाह" का मतलब कर्ज छोड़ना (जैसे ऋण माफी), और "उनेताष्टा" का मतलब जमीन को ऐसा छोड़ना जैसे वह आपकी न हो। लेकिन \*\*रंबन (Ramban)\*\* ने इसे गलत ठहराया और कहा कि "उनेताष्टा" का मतलब बुआई न करना है।

\*उदाहरण\*: रंबन के अनुसार, सातवें साल में अंगूर की बारी में बीज बोना मना है।

- \*\*चिजकुनी (Chizkuni)\*\*: "उनेताष्टा" का मतलब है "जमीन को परती छोड़ना" और उसकी उपज को अपने लिए न इकट्ठा करना।

- \*\*मालबिम (Malbim)\*\*: "हिश्मटाह" का मतलब जमीन से हाथ हटाना और

"नेतिशत" का मतलब पूरी तरह अलग होना, यहाँ तक कि बाद में उगी उपज को भी न खाना।

\*उदाहरण\*: सातवें साल में अपने आप उगे गेहूँ को मालिक नहीं खा सकता, वह गरीबों के लिए है।

- \*\*शदाल (Shadal)\*\*: "तिश्मटेनाह" यानी जमीन पर काम न करना, और "उनेताष्टा" यानी उसकी उपज को छोड़ देना।

#### (ब) लाभार्थी: "गरीब खाएँगे" (\*Ve'akhalu Evyonei Amekha\*)

- \*\*बिरकत आशेर (Birkat Asher)\*\*: पूछा कि जब उपज सबके लिए स्वामित्वीन है, तो केवल गरीबों का ही जिक्र क्यों? \*\*स्फोर्नो (Sforno)\*\* ने कहा कि "भी" शब्द जोड़ा जाए- "गरीब भी खाएँगे," यानी गरीबों को विशेष लाभ मिलता है।

\*उदाहरण\*: सातवें साल में एक अमीर और गरीब दोनों अंगूर खा सकते हैं, लेकिन गरीब को यहाँ प्राथमिकता है।

- \*\*चिजकुनी (Chizkuni)\*\*: कहा कि जब उपज बहुत हो, तो सब खा सकते हैं,

लेकिन कमी हो तो केवल घर के लोग (नौकर सहित)।

- \*\*मालबिम (Malbim)\*\*: यह नियम \*बितर\* (हटाने का समय) के बाद लागू होता है, जब केवल गरीब खा सकते हैं।

#### (स) जानवरों के लिए बचा हुआ: "वन के पशु खाएँगे" (\*Ve'yitram Tokhal Chayat Hasadeh\*)

- \*\*राशि (Rashi)\*\*: यह जानवरों को खिलाने की आज्ञा नहीं, बल्कि यह बताता है

कि जैसे जानवर बिना दशमांश (tithe) के खाते हैं, वैसे ही गरीब सातवें साल में खाते हैं।

\*उदाहरण\*: एक हिरण खेत में घास खाता है, उसे दशमांश की जरूरत नहीं।

- \*\*स्फोर्नो (Sforno)\*\*: "यित्रम" का मतलब "गरीबों के बाद बचा हुआ," यानी गरीब पहले खाएँ, फिर जानवर।

- \*\*मालबिम (Malbim)\*\*: जंगली और पालतू जानवरों में अंतर बताया, यहाँ जंगली जानवरों की बात है जो बिना दशमांश के खाते हैं।

##### (द) "दाख की बारी और जैतून के बगीचे के साथ भी ऐसा ही करना" (\*Ken Ta'aseh Lekarmekha Lezeitekha\*)

- \*\*राशि (Rashi)\*\*: नियम खेतों की तरह ही दाख की बारी और जैतून के बगीचों पर लागू होता है।

\*उदाहरण\*: सातवें साल में जैतून का तेल निकालना मना है।

- \*\*हामेक दावर (Haamek Davar)\*\*: यह इसलिए कहा गया ताकि कोई न सोचे कि दाख की बारी को छोड़ने से नुकसान होगा।

---

### 4. आज के मसीही चर्च में इसका क्या महत्व है?

\*श्रिमता\* यहूदी धर्म का नियम है और बाइबल के पुराने नियम (Old Testament) से लिया गया है। आज के मसीही चर्च में इसका सीधा पालन नहीं किया जाता, क्योंकि मसीही विश्वास में नए नियम (New Testament) पर जोर है, और प्रभु यीशु मसीह

ने नियमों को आत्मिक स्तर पर पूर्ण किया। हालाँकि, इसके सिद्धांतों का प्रतीकात्मक और नैतिक महत्व हो सकता है:

- \*\*विश्राम का महत्व\*\*: मसीही चर्च में सब्ब (Sabbath) और विश्राम का विचार महत्वपूर्ण है। \*शिमता\* से प्रेरणा लेकर, कुछ मसीही समुदाय पर्यावरण की देखभाल और विश्राम के लिए समय निकालने पर जोर देते हैं।

\*उदाहरण\*: कई चर्च "हरा मसीहियत" (Green Christianity) को बढ़ावा देते हैं, जिसमें पृथ्वी को विश्राम देने की बात होती है।

- \*\*गरीबों की मदद\*\*: \*शिमता\* में गरीबों के लिए उपज छोड़ने का नियम मसीही शिक्षाओं से मेल खाता है, जैसे "अपने पड़ोसी से प्रेम करो" (मत्ती 22:39)।

**\*उदाहरण\***: चर्च अक्सर दान और सेवा कार्यों को प्रोत्साहित करते हैं।

- \*\*परमेश्वर पर भरोसा\*\*: \*शिमता\* में यह विश्वास है कि परमेश्वर सातवें साल में भी भोजन प्रदान करेगा। मसीही विश्वास में भी प्रभु पर निर्भरता सिखाई जाती है (मत्ती 6:26 - "आकाश के पक्षियों को देखो")।

हालाँकि, आधुनिक मसीही चर्च में \*शिमता\* का शाब्दिक पालन (जैसे खेती न करना) दुर्लभ है। यह यहूदी परंपरा में अधिक प्रचलित है।

---

### 5. प्रभु यीशु मसीह के जीवन से जुड़ी प्रार्थना

यीशु मसीह ने अपने जीवन में गरीबों की मदद, विश्राम, और परमेश्वर पर भरोसे को

महत्व दिया। यहाँ \*शिमता\* के सिद्धांतों से प्रेरित एक प्रार्थना है, जो यीशु की

शिक्षाओं से मेल खाती है:

**\*\*प्रार्थना\*\*:**

”हे प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर के पुत्र,

आपने हमें सिखाया कि हम अपने पड़ोसी से प्रेम करें और अपनी चिंताएँ आपके हाथों में

सौंप दें।

जैसे \*शिमता\* में भूमि को विश्राम दिया जाता है, वैसे ही हमें अपने जीवन में विश्राम और शांति

प्रदान करें।

जैसे गरीबों को उपज दी जाती है, वैसे ही हमें उदार हृदय दें ताकि हम जरूरतमंदों की मदद

करें।

जैसे आपने कहा, ’आकाश के पक्षियों को देखो, वे न बोते हैं, न काटते हैं, फिर भी पिता

उनका पालन करता है,’

हमें विश्वास दें कि आप हमारी हर जरूरत पूरी करेंगे।

आपके पवित्र नाम में हम यह प्रार्थना करते हैं, आमेन।”

P135 Ex.34:21 On resting the land on the Sabbatical year

### 1. बाइबल का पद हिंदी में (निर्गमन 34:21)

”छह दिन तक तो तू काम करना, परन्तु सातवें दिन तुझे विश्राम करना; चाहे हल

जोतने का समय हो या कटनी का, तुझे विश्राम करना।”

(यहाँ "हल जोतने का समय" और "कटनी का समय" का उल्लेख खेती के व्यस्त मौसम को दर्शाता है।)

---

### ### 2. हिंदी में व्याख्या

यह पद यहूदी धर्म में सब्ज (सातवाँ दिन, शनिवार) के पालन की बात करता है। यह कहता है कि छह दिन तक मेहनत करो, लेकिन सातवें दिन विश्राम करना अनिवार्य है, भले ही वह खेती का सबसे व्यस्त समय हो जैसे हल जोतने (बुवाई) या कटाई का समय। यहाँ "हल जोतने का समय और कटनी का समय में विश्राम करो" का दोहराव इस बात पर जोर देता है कि कोई भी काम, चाहे कितना जरूरी क्यों न हो, सब्ज के विश्राम को भंग नहीं कर सकता। यह ईश्वर के प्रति आज्ञाकारिता और उस पर भरोसा करने का प्रतीक है कि वह हमारी जरूरतों को पूरा करेगा।

---

### ### 3. रब्बियों की व्याख्याएँ उदाहरणों के साथ

कई रब्बियों ने इस पद की व्याख्या अलग-अलग तरीकों से की है, खासकर "हल जोतने का समय और कटनी का समय में विश्राम करो" के दोहराव को लेकर। यहाँ उनकी प्रमुख व्याख्याएँ हैं:

#### #### (i) सब्जवर्ष (शमिता) के नियमों का विस्तार

- \*\*राशि\*\*: उनका कहना है कि यह सब्जवर्ष (हर सातवें साल जब खेती वर्जित है) से

संबंधित है। छठे साल में ऐसा हल नहीं जोतना चाहिए जो सातवें साल की फसल

को लाभ दे, और आठवें साल में सातवें साल की उपज को पवित्र मानकर उसका

सम्मान करना चाहिए। \*\*उदाहरण\*\*: अगर छठे साल में गेहूँ का खेत जोता जाए

और उसका लाभ सातवें साल में मिले, तो यह गलत है।

- \*\*बेखोर शोर\*\*: यह सब्तवर्ष के लिए सावधानी का नियम है।

- \*\*दिवरे डेविड (रब्बी अकीवा)\*\*: यह छठे साल के अंत और आठवें साल की

शुरुआत में अतिरिक्त समय की बात करता है जब कुछ खेती के काम वर्जित हैं।

**\*\*उदाहरण\*\*:** सफेद गेहूँ का खेत सब्तवर्ष के करीब न जोता जाए।

- \*\*रिवा\*\*: छठे साल में ऐसा हल जोतना मना है जो सातवें साल की फसल को

बढ़ाए।

#### ##### (ii) ओमर की कटाई में सब्त पर छूट

- \*\*रब्बी इश्माएल (राशि द्वारा उद्धृत)\*\*: यह साप्ताहिक सब्त की बात करता है। हल जोतना हमेशा वैकल्पिक होता है, और कटाई भी तब मना है जब वह वैकल्पिक हो।

लेकिन ओमर (पास्का के दूसरे दिन चढ़ाया जाने वाला जौ का भेंट) एक आज्ञा है, इसलिए अगर यह सब्त पर पड़ता है तो कटाई की अनुमति है। **\*\*उदाहरण\*\*:** ओमर के लिए जौ काटना सब्त पर भी जायज़ है।

#### ##### (iii) सब्त पर सामान्य निषेध

- \*\*कास्सुटो\*\*: यहाँ फसह के समय (कटाई की शुरुआत) के करीब होने से पता चलता है कि कटाई जैसे जरूरी काम भी सब्त पर नहीं होंगे।

- \*\*इब्र एज्जा\*\*: हल और कटाई का उल्लेख इसलिए है क्योंकि ये जीवन के लिए

सबसे जरूरी हैं, फिर भी इन्हें सब्त पर रोकना विश्राम के महत्व को दर्शाता है।

**\*\*उदाहरण\*\*:** गेहूँ की कटाई बीच में रोकनी पड़ेगी अगर सब्त शुरू हो जाए।

- **\*\*रशबम\*\*:** यह विश्राम अच्छे स्वास्थ्य के लिए है। अगर ये बड़े काम मना हैं, तो छोटे काम तो निश्चित रूप से मना हैं।

- **\*\*हकतव वेहकबाला\*\*:** साधारण अर्थ है कि सब्त पर हर काम, चाहे कितना जरूरी हो, मना है।

#### ##### (iv) पवित्र समय में सांसारिक समय जोड़ना (तोसाफोत)

- यह सब्त और सब्तवर्ष से पहले और बाद में थोड़ा समय जोड़ने की बात करता है ताकि पवित्रता बनी रहे। **\*\*उदाहरण\*\*:** सब्त से पहले हल जोतना बंद करना।

---

#### ### 4. आज के मसीही चर्च में इसके क्या मायने हैं?

मसीही चर्च में यहूदी सब्त (शनिवार) की जगह रविवार को "प्रभु का दिन" माना

जाता है, क्योंकि यीशु मसीह रविवार को मृतकों में से जी उठे थे। निर्गमन 34:21 का सीधा पालन मसीही चर्च में नहीं होता, लेकिन विश्राम का सिद्धांत महत्वपूर्ण है।

मसीही मानते हैं कि यीशु ने सब्त को पूरा किया और अब वह स्वयं विश्राम का स्रोत हैं (मत्ती 11:28-30: "मेरे पास आओ... और मैं तुम्हें विश्राम दूँगा")।

- **\*\*आज की प्रासंगिकता\*\*:** मसीही चर्च में रविवार को आरधना और विश्राम का

दिन माना जाता है। यह काम और आराम के बीच संतुलन को प्रोत्साहित करता है।

## लोग इस दिन प्रार्थना, परिवार के साथ समय, और ईश्वर पर चिंतन के लिए रखते हैं।

हैं।

- \*\*अंतर\*\*: यहूदी धर्म में सब्ल के सख्त नियमों (जैसे कोई काम न करना) के बजाय, मसीही इसे प्रभु के साथ संबंध और आत्मिक विश्राम के रूप में देखते हैं।

---

### ### 5. प्रभु यीशु मसीह के जीवन से प्रेरित प्रार्थना

यीशु ने अपने जीवन में काम और विश्राम का संतुलन दिखाया। वह लोगों को चंगा करते थे, सिखाते थे, लेकिन अकेले प्रार्थना के लिए भी समय निकालते थे (मरकुस 1:35)। यहाँ एक प्रार्थना है:

"प्रिय प्रभु यीशु मसीह,

आपने हमें अपने जीवन से सिखाया कि काम के बीच विश्राम कितना जरूरी है।

आपने थके हुए लोगों को अपने पास बुलाया और उन्हें शांति दी। हम आपसे

प्रार्थना करते हैं कि हमें अपने काम में मेहनत करने की शक्ति दें और विश्राम के

समय में आपकी उपस्थिति का अनुभव करने दें। जैसे आप सुबह जल्दी उठकर

अपने पिता से प्रार्थना करते थे, वैसे ही हमें भी हर दिन आपके साथ समय बिताने

की प्रेरणा दें। हमारे जीवन में संतुलन लाएँ, ताकि हम आपकी सेवा करें और आप

में विश्राम पाएँ। आपके पवित्र नाम में, आमीन।"

## P136 Le.25:10 On sanctifying the Jubilee (50th) year

□ □□□□□□□□□□ 25:10 (Leviticus 25:10) □□□□□ □□□

**"और तुम पचासवें वर्ष को पवित्र ठहराना, और देश में रहनेवाले सब रहनेवालों के लिये स्वतंत्रता का प्रचार करना। वह तुम्हारे लिये जुबली का वर्ष ठहरे, और तुम में से हर एक अपने निज भाग को फिर पावे, और हर एक अपने कुल के पास लौट जाए।"**

The banner consists of two rows of squares. The top row has 25 squares, with the 10th square from the left containing the text "25:10". The bottom row has 10 squares.

यह पद "जुबली वर्ष" (Jubilee Year) के बारे में बताता है, जो कि हर पचासवें वर्ष मनाया जाता था। इस वर्ष के दौरानः

1. वर्ष को पवित्र ठहराया जाता था - इसे विशेष रूप से यहोवा के लिये समर्पित किया जाता था।
  2. स्वतंत्रता का प्रचार किया जाता था - सभी गुलामों को आज़ाद किया जाता था।
  3. भूमि अपने मूल मालिकों को लौटाई जाती थी - जिनके पास से ज़मीन गई थी, उन्हें वापस मिलती थी।
  4. हर व्यक्ति अपने परिवार के पास लौट जाता था - गुलाम और बंधुआ मजदूर अपने परिवार में लौट आते थे।

इसका मुख्य उद्देश्य यह था कि इमारिल में आर्थिक और सामाजिक संतुलन बना रहे। अमीर लोग गरीबों की ज़मीन और अधिकारों पर हमेशा के लिए कब्ज़ान कर लें, इसलिए हर पचासवें वर्ष सबकुछ पुनः स्थापित कर दिया जाता था।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □

1 □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

- रब्बी इशमाएल ने कहा कि जुबली वर्ष रोश हशाना (यहूदी नववर्ष) से शुरू होता था, लेकिन गुलामों को पूरी स्वतंत्रता यौम किप्पूर (प्रायशिच्त दिवस) पर रातोर (नरसिंगा) बजने के बाद मिलती थी।
- रब्बी एलिअ़ज़र ने कहा कि यह साल पूरा पवित्र होता है, न कि सिर्फ कुछ दिन।

## 2 □ स्वतंत्रता की घोषणा (रारा - ड्रोअर)

- राशी (Rashi): "ड्रोअर" का अर्थ गुलामी से मुक्ति है, जिसमें वे भी शामिल थे जिनकी गुलामी छह साल से अधिक बढ़ गई थी।
- रब्बी यहूदा: "ड्रोअर" का अर्थ व्यक्ति का स्वतंत्र रूप से कहीं भी जाने का अधिकार है।
- डेविड ज़वी हॉफमैन: "ड्रोअर" का अर्थ भूमि और संपत्ति को भी स्वतंत्र करना है।
- रब्बी हि�र्श: "ड्रोअर" का अर्थ है व्यक्ति की गरिमा और स्वतंत्रता को पुनः स्थापित करना।

□ □ □ □ □ :

□ अगर किसी व्यक्ति ने अपनी ज़मीन बेच दी थी और आर्थिक रूप से कमज़ोर हो गया था, तो जुबली वर्ष में उसकी ज़मीन बिना किसी भुगतान के वापस मिल जाती थी।

## 3 □ भूमि और परिवार में वापसी (गाओआ - अपनी संपत्ति और गाओशम - अपने परिवार)

- **राशी:** हर व्यक्ति अपनी पैतृक भूमि को वापस पा लेता है।
- **रब्बी मिजराची:** भूमि के मालिकों की वापसी का मतलब यह नहीं कि वे वहाँ रहें, बल्कि वे फिर से अपने अधिकार में भूमि ले सकते हैं।
- **गुर आर्यः:** भूमि का वापसी का अर्थ यह नहीं कि वहाँ कोई बसना ज़रूरी है, बल्कि यह व्यक्ति का संवैधानिक अधिकार है।

#### 4 □ "यूबेल" (לַבָּל) शब्द का अर्थ

- **राशी:** "यूबेल" शब्द का संबंध शोफार (नरसिंगा) से है, जो यौम किप्पूर के दिन बजता था।
- **नचमानीइस (Ramban):** "यूबेल" का अर्थ केवल नरसिंगा नहीं, बल्कि आजादी और पुनर्स्थापन (restoration) का वर्ष है।
- **हिर्शः:** "यूबेल" का अर्थ है सबको उनके असली स्थान पर वापस लाना।

□ □ □ □ □ :

□ अगर कोई व्यक्ति गुलामी में था और परिवार से बिछड़ गया था, तो जुबली वर्ष में उसे मुक्त कर दिया जाता था और वह अपने घर लौट जाता था।

#### 5 □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ ?

- जुबली केवल तब मनाया जाता था जब इस्राएल की सभी 12 जातियाँ अपने मूल स्थानों में बसी होतीं।
- अगर कुछ जातियाँ निर्वासित होतीं या इज़राइल की भूमि में पूरी तरह न होतीं, तो जुबली नहीं मनाया जाता था।

मसीही विश्वास में, जुबली वर्ष यीशु मसीह की आत्मिक स्वतंत्रता का प्रतीक बन गया है।

- जब यीशु नासरत की सभा में गए, तो उन्होंने यशायाह 61:1-2 को पढ़ा, जिसमें कहा गया

था:

**”प्रभु यहोवा का आत्मा मुझ पर है, क्योंकि उसने मुझे अभिषिक्त किया कि मैं**

कंगालों को सुसमाचार सुनाऊँ, और बंधुओं के लिए स्वतंत्रता की घोषणा करूँ,

और कैदियों के लिए छुटकारे का प्रचार करूँ।” (□□□□ 4:18)

आध्यात्मिक जुबली का परा करने वाला बताया।

## मसीही चर्च में जुबली का अर्थ

10 आध्यात्मिक स्वतंत्रता – □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□

10

20 क्षमा और पुनर्स्थापन – □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□

A horizontal row of 20 empty square boxes, likely for students to draw or write in.

3) हर प्रकार की गुलामी से मुक्ति - शारीरिक, मानसिक, और आत्मिक रूप से।

□ □□□□ □□□ हर समय जुबली को मानता है क्योंकि यीशु में हमें सच्ची स्वतंत्रता मिली है।

A horizontal row of 20 empty square boxes, intended for children to write their names in. The boxes are arranged in two rows of ten.

”हे परमेश्वर, तू अनुग्रहकारी और दयालु है। तूने अपने पुत्र यीशु मसीह को भेजा कि हम पाप, मृत्यु और गुलामी से स्वतंत्र हो सकें। जिस प्रकार जुबली वर्ष में लोग स्वतंत्र किए जाते थे, वैसे ही हम मसीह यीशु में स्वतंत्रता पाते हैं। हम प्रार्थना करते हैं कि तू हमें आत्मिक और शारीरिक बंधनों से छुड़ाए। हमें हमारे परिवार, संबंधों, और हमारे मूल उद्देश्य की ओर पुनर्स्थापित कर। जिस तरह यीशु ने गरीबों को आशा दी, बंधनों को तोड़ा, और खोए हुओं को वापस लाया, वैसे ही हमें भी अपने प्रेम, दया और उद्धार में बढ़ने दे। यीशु मसीह के नाम में, आमीन।” □

---



जुबली वर्ष केवल यहूदियों के लिए आर्थिक और सामाजिक पुनर्स्थापन का वर्ष नहीं था, बल्कि मसीही विश्वास में यीशु मसीह की मुक्ति योजना का प्रतीक है। आज भी, यह हमें स्वतंत्रता, पुनर्स्थापन, और परमेश्वर की कृपा को दर्शाने □ □ □ □ □ □ □ □ □

P137 Le.25:9 Blow Shofar on Yom Kippur in the Jubilee & slaves freed



”तब तू सातवें महीने के दसवें दिन, अर्थात् प्रायश्चित (कफारा) के दिन नरसिंगा का शब्द करना; तुम अपने सारे देश में नरसिंगा का शब्द करना।” (Leviticus 25:9, हिंदी बाइबल)

---



यह पद योवेल (Jubilee) वर्ष के बारे में है, जो हर पचासवें वर्ष में आता था। इस वर्ष में सभी गुलामों को आज्ञाद कर दिया जाता था, और बेची गई ज़मीनें उनके मूल स्वामियों को लौटा दी जाती थीं। इस वर्ष की घोषणा यौम किप्पुर (प्रायश्चित/कफारा का दिन) पर Shofar (नरसिंगा) फूंककर की जाती थी। यह एक महत्वपूर्ण आदेश था जिससे यहूदियों को उनकी जमीनी संपत्ति और स्वतंत्रता लौटाई जाती थी।

यह नियम इस बात को दर्शाता है कि "यहोवा ही भूमि का मालिक है और लोग केवल उसके प्रबंधक हैं।" यह सिद्धांत हमें यह भी सिखाता है कि हमें लालच में नहीं पड़ना चाहिए और किसी को स्थायी रूप से गुलाम नहीं बनाना चाहिए।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ :

1. रशी (Rashi) – रशी के अनुसार, योवेल वर्ष में यौम किप्पुर पर नरसिंगा फूंकना सब्ल (शनिवार) के नियम को भी अधिग्रहण कर सकता था, जबकि रोश हशानाह (नए साल) का नरसिंगा केवल बैत दीन (यहूदी अदालत) में फूंका जाता था।

2. उदाहरण: जैसे आज हम देखते हैं कि अगर कोई आवश्यक अलार्म बजाना हो, तो उसे बजाना ज़रूरी होता है, चाहे कोई भी नियम हो। वैसे ही, योवेल वर्ष की घोषणा सब्ल के दिन भी आवश्यक मानी गई।

3. बर्टेनुरा (Bartenura) – "इस वर्ष की घोषणा सब्ल के दिन भी आवश्यक मानी गई।"

- वे बताते हैं कि "सातवें महीने के दसवें दिन" शब्द भ्रम पैदा कर सकता था, क्योंकि अगर हम निसान (ईश्वर द्वारा तय किया गया पहला महीना) से गिनते, तो यह तिशरी (सातवाँ महीना) की बजाय तमूज़ (चौथा महीना) होता। इसलिए, "यौम किप्पुर" का स्पष्ट उल्लेख किया गया।

4. **बेखोर शोर** (Bekhor Shor) – बेखोर शोर शोर शोर शोर शोर शोर  
शोर:

- रशी के अनुसार, यौम किप्पुर पर नरसिंगा पूरे देश में बजाना आवश्यक था, केवल बैत दीन में नहीं। यह पूरी जनता के लिए स्वतंत्रता की घोषणा थी।

5. **उदाहरण:** जैसे हम स्वतंत्रता दिवस पर पूरे देश में झंडा फहराते हैं, उसी तरह योवेल वर्ष में स्वतंत्रता का संकेत नरसिंगा था।

6. **चाताम सोफर** (Chatam Sofer) – चाताम सोफर चाताम सोफर चाताम सोफर  
चाताम सोफर चाताम सोफर चाताम सोफर?

- उन्होंने कहा कि यौम किप्पुर का नरसिंगा गुलामी को समाप्त करने और भूमि वापस लौटाने की प्रक्रिया को पूरा करता था। इसका प्रभाव बहुत बड़ा था, इसलिए इसे सब्त के ऊपर रखा गया।

7. **डेविड ज्वि हॉफमॉन** (David Zvi Hoffmann) – डेविड ज्वि हॉफमॉन डेविड ज्वि हॉफमॉन  
डेविड ज्वि हॉफमॉन डेविड ज्वि हॉफमॉन:

- पहले नरसिंगा बैत दीन द्वारा बजाया जाता था, और फिर हर व्यक्ति को भी इसे बजाना होता था।

8. **गुर अर्येह** (Gur Aryeh) – गुर अर्येह गुर अर्येह गुर अर्येह  
गुर अर्येह:

- जैसे यौम किष्पुर पापों से स्वतंत्रता देता है, वैसे ही योवेल वर्ष गुलामी और भूमि के बंधन से स्वतंत्रता देता है।
9. □ □□□□□ □□□□□□□□ (HaKtav VeHaKabalah) – □□□□□□□  
□□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□:

- यह न केवल दासों को स्वतंत्र करता है, बल्कि यह भी दर्शाता है कि हम सब परमेश्वर के दास हैं और हमारे पास जो कुछ भी है, वह परमेश्वर का है।
- 

□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□  
□□□□□:

यीशु मसीह ने खुद को "सच्चा योवेल" बताया, क्योंकि उन्होंने अपने बलिदान से सभी को आत्मिक गुलामी से मुक्त कर दिया। जब उन्होंने नाज़रेथ की आराधनालय (सिनगॉग) में

**यशायाह 61:1-2 पढ़ा:**

"यहोवा का आत्मा मुझ पर है, क्योंकि उसने मुझे अभिषिक्त किया, कि मैं दरिद्रों को सुसमाचार सुनाऊँ, बंधुओं को छुटकारा दूँ और अंधों को दृष्टि दूँ, और कुचले हुओं को स्वतंत्र करूँ, और प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करूँ।" (लूका 4:18-19)

तब उन्होंने कहा कि यह भविष्यवाणी उनके द्वारा पूरी हो गई। इसका मतलब है कि योवेल वर्ष केवल भूमि और दासों की स्वतंत्रता नहीं थी, बल्कि यह पाप से पूर्ण स्वतंत्रता की ओर इशारा करता था।

---

□ □□ □□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□

(□□□□ □□□□ □□ □□□□□□):

हे प्रभु यीशु मसीह,

आपने हमें हर बंधन से मुक्त करने के लिए अपने प्राण दे दिए। जैसा कि लेवितिकस 25:9 में  
योवेल वर्ष में स्वतंत्रता का नरसिंगा बजाया गया, वैसे ही आप हमारे उद्धार के तूरही की धनि  
हैं।

आज, हम आपके सामने प्रायश्चित (यौम किप्पुर) की विनती लेकर आते हैं। हमारी आत्मा को  
पापों की दासता से छुड़ाकर सत्य और अनुग्रह की स्वतंत्रता में चलने की शक्ति दें। हमें याद  
दिलाएं कि हम केवल इस दुनिया के प्रबंधक हैं, और सब कुछ आपके अधीन है।

हमारी आत्मा, मन और शरीर को शुद्ध करें ताकि हम आपके राज्य में दूसरों को स्वतंत्रता की  
घोषणा कर सकें। हमें प्रेम, करुणा और नम्रता में जीने दें, और हमें कभी किसी को आर्थिक,  
सामाजिक, या आध्यात्मिक रूप से दबाने का अवसर न दें।

"यहोवा का आत्मा मुझ पर है, क्योंकि उसने मुझे अभिषिक्त किया, कि मैं दरिद्रों को  
सुसमाचार सुनाऊँ, बंधुओं को छुटकारा दूँ और कुचले हुओं को स्वतंत्र करूँ।" (लूका 4:18)

इस वचन को हमारे जीवन में पूरा करें। यीशु मसीह के नाम में,  
आमीन। □

P138 Le.25:24 Reversion of the land to ancestral owners in Jubilee yr

□□□□□□□□□□□ 25:24 (Leviticus 25:24) □□□□□□  
□□□□□□

**"तुम जो जो भूमि अपने अधिकार में रखोगे, उस सारी भूमि में छुटकारे का प्रबंध करना।"**

(Leviticus 25:24, हिंदी बाइबल - Hindi Bible: Easy-to-Read Version (ERV-HI))

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

यह पद इसाएल के लोगों के लिए यहोवा द्वारा दी गई आज्ञाओं का एक भाग है, जो भूमि की खरीद-बिक्री और उसके छुटकारे (Redemption) से संबंधित है।

□ मुख्य विचार:

- भूमि हमेशा के लिए बेची नहीं जा सकती क्योंकि यह यहोवा की है और वह इसे इसाएल को अपनी कृपा से देता है।
  - यदि कोई व्यक्ति अपनी ज़मीन बेचने के लिए मजबूर हो जाता है, तो उसके परिवार के किसी सदस्य (निकटतम रिश्तेदार) को इसे वापस खरीदने की अनुमति दी गई है (पद 25)।
  - यदि कोई रिश्तेदार इसे नहीं छुड़ा सकता, तो स्वयं विक्रेता को इसे जितनी जल्दी संभव हो, छुड़ाने का अधिकार है।
  - यदि छुटकारा नहीं किया गया, तो यौवेल (Jubilee) वर्ष में भूमि स्वाभाविक रूप से मालिक को लौट जाएगी (पद 28)।
- 

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □ □ □

□ रब्बी रशी (Rashi):

"לכבה" (संपूर्ण) शब्द यह दिखाता है कि केवल भूमि ही नहीं, बल्कि गुलाम (हिन्दू सेवक)

और शहरों के मकान भी छुटकारे के दायरे में आते हैं।

उन्होंने तल्मूद (Kiddushin 21a) के आधार पर कहा कि रिश्तेदार केवल खेत ही नहीं,

बल्कि मकान और सेवकों को भी छुड़ा सकते हैं।

↑<sup>†</sup>उदाहरण: यदि किसी गरीब व्यक्ति ने अपना घर बेच दिया हो, तो उसका भाई या चाचा

उसे वापस खरीद सकता है।

□ रब्बी चिज्जकुनी (Chizkuni):

- भूमि का बेचना स्थायी नहीं था, बल्कि यह कर्ज के बदले एक व्यवस्था थी।
- यह व्यवस्था गरीबों की रक्षा करने के लिए थी ताकि वे हमेशा के लिए अपनी संपत्ति से वंचित न हों।

□ रब्बी रामबान (Nachmanides - Ramban):

- उन्होंने इसे यहोवा के स्वामित्व से जोड़ा और कहा कि यौवेल (Jubilee) वर्ष में भूमि यहोवा द्वारा छुड़ाई जाती है।
- यह एक भविष्यसूचक संकेत भी है कि यहोवा स्वयं इस्राएल को छुड़ाने वाला है।

□ रब्बी स्फोर्नो (Sforno):

- उन्होंने कहा कि यह कानून केवल इस्राएल के अंदर लागू होता था और अन्य देशों में नहीं।

□ रब्बी अडेरत एलियाह (Aderet Eliyahu):

- उनके अनुसार "भूमि" केवल भौतिक भूमि नहीं, बल्कि आत्मिक धरती (Spiritually Lower World) को भी दर्शाता है।
  - जब हम धार्मिक कार्य और अच्छे कर्म करते हैं, तो हम आध्यात्मिक छुटकारे में भाग लेते हैं।
- 



\_\_\_\_\_ ?

आज के समय में इसका मसीही सिद्धांतः

- यह पद हमें यह सिखाता है कि यहोवा ने हर चीज़ को बनाया है, और हम केवल उसकी धरोहर के रखवाले हैं।
- यह छुटकारे (Redemption) के आध्यात्मिक पहलू की ओर भी संकेत करता है—जैसे भूमि छुटकारे से वापस मिलती थी, वैसे ही मसीह में हमारा आत्मिक छुटकारा संभव है।
- प्रभु यीशु मसीह ने हमारे पापों का मूल्य चुका कर हमें पिता परमेश्वर के राज्य में पुनः स्थापित किया (1 पतरस 1:18-19)।

1. छुटकारे (Redemption) का प्रतीकः

- यीशु मसीह ने हमें पाप के बंधन से छुड़ाया जैसे इमाएल में भूमि छुड़ाई जाती थी।
- हम भी यीशु के बलिदान के द्वारा पिता परमेश्वर के राज्य में वापस आए।

2. प्रभु के स्वामित्व की स्वीकृति:

- यह हमें सिखाता है कि हम जो कुछ भी रखते हैं, वह परमेश्वर का है।
- हमें धन-संपत्ति को यहोवा की इच्छा के अनुसार इस्तेमाल करना चाहिए न कि लालच में पड़कर।

□ 3. गरीबों और जरूरतमंदों की देखभाल:

- यह कानून गरीबों को संरक्षण देने के लिए बनाया गया था।
- आज के समय में, चर्च और मसीही समाज को गरीबों और पीड़ितों की सहायता करनी चाहिए।

□ 4. अनन्त छुटकारे की आशा:

- जैसे भूमि यौवेल वर्ष में अपने असली मालिक को लौटती थी, वैसे ही यीशु के दूसरे आगमन पर संसार परमेश्वर के अधीन पूरी तरह आ जाएगा।
- प्रकाशितवाक्य 21:3-4 हमें यह आशा देता है कि एक नया स्वर्ग और नई पृथ्वी आएगी, जहां कोई दुःख, रोना या मृत्यु नहीं होगी।

□ □

□ □ □ □ □ □

हे स्वर्गीय पिता,

मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि तूने हमें सिखाया कि सब कुछ तेरा है और हम केवल इसके रखवाले हैं।

प्रभु यीशु मसीह,

- जैसे तूने हमें पाप के दासत्व से छुड़ाया, वैसे ही हमें पवित्र आत्मा के द्वारा सच्ची स्वतंत्रता में चलने दे।
- हमारी ज़िन्दगी में तेरी इच्छा पूरी हो, और हम तेरी आशीषों को अपनी ही नहीं, बल्कि दूसरों की भलाई के लिए भी इस्तेमाल करें।
- हमें गरीबों, पीड़ितों और जरूरतमंदों की मदद करने की समझ दे और हमारे दिलों को उदार बना।

हे प्रभु, हमें वह दिन देखने दे जब तेरा राज्य पूरी तरह स्थापित हो और हर चीज़ तेरा गुणगान करे!

यीशु मसीह के नाम में प्रार्थना करता हूँ। आमीन। □

---

□ □ □ □ □ □

- लैब्यववस्था 25:24 हमें सिखाता है कि भूमि, लोग और सभी चीजें परमेश्वर की हैं।
- यह मसीह के छुटकारे का एक प्रतीक है, जो हमें पाप से स्वतंत्र करता है।
- यह सिखाता है कि हमें गरीबों और जरूरतमंदों की सहायता करनी चाहिए।
- इस पद का आधुनिक मसीही अर्थ यह है कि हम परमेश्वर के राज्य के लिए जीएं और उसकी महिमा करें।

P139 Le.25:24 On the redemption of a house within a year of the sale

□ Leviticus 25:24 □ □ □ □ □ □

**"और तुम्हारी अधिकार भूमि में से किसी भूमि के बिक जाने पर, उसे छुड़ाने की छूट देनी चाहिए।"**

(लेव 25:24 - Hindi Bible: Easy-to-Read Version)

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □  
□ □ □ □ □ □ □ □

**यह पद इस्राएलियों को यह सिखाता है कि जो भूमि उन्हें विरासत में मिली है, वह परमेश्वर की संपत्ति है। इसलिए, यदि किसी को अपनी ज़मीन बेचनी पड़े, तो यह बिक्री स्थायी नहीं होगी। विक्रेता या उसका निकटतम संबंधी कभी भी भूमि को छुड़ा सकता है। यदि वह ऐसा नहीं कर सकता, तो यह भूमि 50वें वर्ष के यूबली (Jubilee) वर्ष में स्वाभाविक रूप से उसे वापस मिल जाएगी।**

□ □ □ □ □ □ (Redemption of Land) □ □ □ □ □ □ □ :

1. **भूमि परमेश्वर की है** - इस्राएली इसे केवल परमेश्वर से किराए पर लेते हैं, वे इसके स्थायी मालिक नहीं होते।
2. **भूमि बेचने की अनिवार्यता हो सकती है** - यदि कोई व्यक्ति गरीबी के कारण ज़मीन बेचता है, तो यह बिक्री अस्थायी मानी जाती है।
3. **रिश्तेदारों द्वारा छुड़ाने का अधिकार** - परिवार के सदस्य, जैसे कि भाई, चाचा या चचेरे भाई, भूमि को खरीदकर अपने परिवार में वापस ला सकते हैं।
4. **यूबली वर्ष में भूमि की वापसी** - हर 50वें वर्ष में सभी बेची गई ज़मीनें उनके मूल मालिकों को वापस कर दी जाती हैं।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □ □ □

□ 1. □ □ □ □ □ □ (Bekhor Shor)

उन्होंने कहा कि यह पद सिखाता है कि इसाएल में भूमि बेचना केवल अस्थायी होता है, स्थायी नहीं। भूमि को विक्रेता या उसके रिश्तेदार द्वारा किसी भी समय छुड़ाया जा सकता है, या फिर यह यूबली वर्ष में वापस आ जाती है।

□ 2. □ □ □ □ □ □ □ (Chizkuni)

उन्होंने इसे कर्ज़ और गिरवी से जोड़ा। वे कहते हैं कि भूमि बेचना असल में भूमि को ऋण (Loan) के बदले गिरवी रखना है, न कि स्थायी बिक्री।

**उदाहरण:** अगर किसी व्यक्ति ने कर्ज़ लिया और अपनी ज़मीन गिरवी रख दी, तो

वह ज़मीन को छुड़ाने का अधिकार रखता है, या फिर उसके परिवारजन इसे छुड़ा सकते हैं।

□ 3. □ □ □ □ □ □ (Ralbag Beur HaMilot)

रालबाग ने समझाया कि यदि किसी ने भूमि बेच दी, तो भी उसे छुड़ाने का अधिकार बना रहता है, और खरीदार इसे रोक नहीं सकता।

□ 4. □ □ □ □ (Rashi) - □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ **पहली व्याख्या:** भूमि के साथ-साथ घर और हिन्दू दास □ □ □ □ □ □ □ □ □ □  
□ □ □ □ □ □ □

□ **दूसरी व्याख्या:** कोई व्यक्ति अपनी भूमि दो साल बाद छुड़ा सकता है, और खरीदार उसे

बाध्य नहीं कर सकता।

**उदाहरण:** अगर किसी व्यक्ति ने अपनी ज़मीन बेची, तो दो साल के बाद उसे खुद या उसका परिवार छुड़ा सकता है।

#### □ 5. रामबान (Ramban)

रामबान ने कहा कि यह नियम विशेष रूप से यूबली वर्ष से जुड़ा है। भूमि को स्वामी को बिना किसी भुगतान के लौटा देना होता है, क्योंकि परमेश्वर ही सच्चा मालिक है।

#### □ 6. मल्बिम (Malbim)

उन्होंने कहा कि "गालाए" (Redemption) का मुख्य अर्थ परिवार द्वारा छुड़ाने की प्रक्रिया है, न कि केवल यूबली में भूमि की वापसी।

#### □ 7. अदेरेट इलियाहु - Kabballistic Interpretation)

उन्होंने कहा कि "अहङ्कार भूमि" का तात्पर्य केवल इस संसार से नहीं बल्कि आध्यात्मिक भूमि से भी है।

इसका अर्थ है कि संसारिक कार्यों को परमेश्वर की महिमा के लिए करना भी छुटकारे का एक रूप है।

**उदाहरण:** जब हम ईमानदारी से व्यापार करते हैं और उचित आचरण रखते हैं, तो हम इस संसार को आध्यात्मिक रूप से छुड़ा रहे होते हैं।

#### □ 8. हामेक दावर (Haamek Davar)

उन्होंने कहा कि यह नियम गैर-यहूदियों को बेची गई ज़मीन पर भी लागू होता है। भूमि को

छुड़ाना यहूदियों के लिए एक अनिवार्य कर्तव्य है, खासकर यदि भूमि यहूदी नियंत्रण से बाहर चली जाए।

**उदाहरण:** अगर कोई इस्माएली अपनी ज़मीन गैर-यहूदी को बेचता है, तो यहूदी

समुदाय को उसे वापस खरीदने का प्रयास करना चाहिए।

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □  
□ □ □ □ ?

† 1. □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ (Redemption in Christ)

मसीही मान्यता में, यह पद आध्यात्मिक छुटकारे (Spiritual Redemption) की ओर संकेत करता है।

"क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हारा छुटकारा चांदी या सोने जैसी नाशवान

वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ, पर निर्दोष और निष्कलंक में अर्थात् मसीह के

बहुमूल्य लहू के द्वारा हुआ।"

(1 पतरस 1:18-19)

**उदाहरण:** जैसे भूमि का स्थायी मालिक परमेश्वर है, वैसे ही हम भी यीशु मसीह के द्वारा छुड़ाए गए हैं और हम परमेश्वर के हैं।

† 2. □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ (New Heaven & New Earth)

यह पद हमें याद दिलाता है कि परमेश्वर की योजना में न केवल भूमि बल्कि पूरा संसार

**पुनःस्थापित होगा।**

**"फिर मैंने एक नया आकाश और नई पृथ्वी को देखा। क्योंकि पहला आकाश**

**और पहली पृथ्वी जाती रही थी।"**

**(प्रकाशितवाक्य 21:1)**

**† 3. इतिहास इतिहास इतिहास इतिहास (Economic Justice in the Church)**

**मसीही सिद्धांतों के अनुसार, गरीबों की सहायता करना और ज़रूरतमंदों को उनके अधिकार लौटाना परमेश्वर की इच्छा है।**

**"अगर तेरा कोई भाई गरीब हो जाए, तो उसकी सहायता कर।"**

**(लैंब्यव्यवस्था 25:35)**

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ - □ □ □ □  
□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

**हे पिता यहोवा,**

**आप ही हमारी सच्ची विरासत और जीवन के मालिक हैं।**

**जैसे आपने इस्राएलियों को भूमि का छुटकारा करने की व्यवस्था दी, वैसे ही आपने हमें यीशु मसीह के लहू द्वारा छुड़ाया।**

**हमें सिखाएं कि हम गरीबों की मदद करें, ईमानदारी से जिएं, और आपके राज्य के लिए कार्य करें।**

**जैसे मसीह ने हमारे लिए बलिदान दिया, हमें भी दूसरों की सेवा करने की शक्ति दें।**

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ ! □

---

□ □ □ □ □ □ :

1. भूमि बेचने का मतलब स्थायी बिक्री नहीं बल्कि अस्थायी थी।
2. परिवार के लोग ज़मीन को छुड़ा सकते थे।
3. यूबली वर्ष में भूमि स्वतः वापस मिल जाती थी।
4. **यीशु मसीह ने हमें भी छुड़ाया, इसलिए यह पद आध्यात्मिक छुटकारे को भी दर्शाता है।**
5. **चर्च को गरीबों की मदद करनी चाहिए।**

P140 Le.25:8 Counting and announcing the years till the Jubilee year

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ 25:8-9 (Leviticus 25:8-9)

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

**"तू अपने लिये सात सब्बों के वर्षों की गिनती करना, अर्थात् सात गुना सात वर्ष; जिससे सातों सब्बों के वर्षों की अवधि उन्नास वर्ष हो जाए। तब सातवें महीने के दसवें दिन को तू पूरे देश में नरसिंगा को ज़ोर से फँकवाना, यह प्रायश्चित्त के दिन हो; और तुम पूरे देश में नरसिंगा फँकवाना।"**

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □

यह आज्ञा यहोवा (ईश्वर) द्वारा दी गई थी और इस्राएल में यहोबेल (जुबली) वर्ष को मनाने के लिए दी गई थी। इसमें दो मुख्य बातें हैं:

**1. सात सब्लों के वर्षों की गिनती - अर्थात् हर 7 साल में एक सब्लिक वर्ष होता था**

(जिसमें भूमि विश्राम करती थी), और ऐसे 7 सब्लिक वर्षों ( $7 \times 7 = 49$ ) पूरे होने पर **50वाँ**

**वर्ष 'यहोबेल वर्ष' कहलाता था।**

**2. यहोबेल वर्ष की घोषणा - इस विशेष वर्ष को पूरे देश में एक विशेष नरसिंगा (शोफ़ार)**

बजाकर घोषित किया जाता था, और यह यौम किष्टूर (प्रायश्चित्त का दिन) के दिन

**किया जाता था।**

---

**□ □□□□□ (Jubilee) □□□□ □□ □□□□**

- **भूमि वापस लौटाई जाती थी:** यदि कोई व्यक्ति आर्थिक कठिनाइयों के कारण अपनी भूमि बेच देता था, तो यहोबेल वर्ष में वह भूमि उसके मूल स्वामी को वापस मिल जाती थी।
  - **दास मुक्त किए जाते थे:** यदि कोई इस्राएली कर्ज के कारण दास बन गया था, तो यहोबेल वर्ष में उसे आज़ादी दी जाती थी।
  - **कोई खेती नहीं होती थी:** इस वर्ष में भूमि को पूरी तरह आराम दिया जाता था, जिससे यहोवा पर भरोसा बना रहे।
- 

**□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□**

**1□ □□□ (Rashi)**

- इस्राएल को सात बार सात साल गिनने का आदेश दिया गया, जिससे लोग गलती से लगातार 7 साल तक सब्लिक वर्ष न मना लें।

- उन्होंने यह भी कहा कि यह नियम यह नहीं कहता कि अगर सब्जिक वर्षों का पालन नहीं किया गया तो यहोबेल नहीं मनाया जाएगा।

## 2 □ रामायण (Bartenura)

- वह बताते हैं कि यह 'ओमर गिनने' (जो कि फसह और शावूओत के बीच 49 दिनों की गिनती होती है) की तरह है। जैसे ओमर गिनना ज़रूरी था, वैसे ही यहोबेल की गिनती भी महत्वपूर्ण थी।

## 3 □ मल्बिम (Malbim)

- वह इस गिनती को यह सुनिश्चित करने का तरीका मानते हैं कि यहोबेल को ठीक से गिना जाए और कोई गलती न हो।
- उन्होंने यह भी कहा कि यह नियम इस बात की पुष्टि करता है कि यहोबेल और सब्जिक वर्ष अलग-अलग अवधारणाएँ हैं, और दोनों की गिनती आवश्यक है।

## 4 □ सफोर्नो (Sforno)

- वह इस बात को स्पष्ट करते हैं कि यहोबेल वर्ष को सौर कैलेंडर (solar calendar) के अनुसार गिना जाना चाहिए ताकि कृषि के चक्र में कोई असंगति न हो।

## 5 □ हामेक दावर (Haamek Davar)

- उन्होंने इस आज्ञा को आध्यात्मिक रूप से समझाया कि यहोबेल वर्ष एक नई शुरुआत का प्रतीक था, जहां लोग अपनी पुरानी बंधनों से मुक्त हो जाते थे।

## 6 □ राब्बेनु बह्या (Rabbeinu Bahya)

- उन्होंने इसे आध्यात्मिक उत्तरति से जोड़ा और इसे '49 समझदारी के द्वार' (49 Gates of

## Understanding) से संबंधित बताया।

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ ?

1 □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

- जिस तरह यहोबेल वर्ष में दासों को मुक्ति किया जाता था, उसी तरह यीशु मसीह ने हमें पाप की दासता से मुक्ति किया।
- लूका 4:18-19 में यीशु कहते हैं:

**"प्रभु का आत्मा मुझे पर है; क्योंकि उसने मुझे अभिषिक्त किया कि मैं कंगालों को सुसमाचार सुनाऊँ, उसने मुझे भेजा कि मैं बंदियों को स्वतंत्रता और अंदरों को दृष्टि दूँ और सताए हुओं को छुड़ाऊँ, और प्रभु के अनुग्रह के वर्ष का प्रचार करूँ।"**

- यहाँ पर "प्रभु के अनुग्रह का वर्ष" यहोबेल वर्ष की ओर संकेत करता है!

2 □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

- यहोबेल वर्ष हमें सिखाता है कि हमें भरोसा करना चाहिए कि यहोवा हमारी आवश्यकताओं को पूरा करेगा।
- जैसे इस्राएली खेती नहीं करते थे, फिर भी यहोवा उन्हें जीवित रखता था, वैसे ही हमें प्रभु पर निर्भर रहना सीखना चाहिए।

3 □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

- जब कोई मसीह में आता है, तो वह नई सृष्टि (2 कुरिन्यियों 5:17) बन जाता है। यह यहोबेल की तरह है, जहाँ सब कुछ नए सिरे से शुरू होता है।

□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□

(□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□)

□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□:

\*\*\*"हे यहोवा, तू अनुग्रहकारी और महान परमेश्वर है। तूने इसाएल को यहोबेल का वरदान दिया, जिससे दास मुक्त होते थे, भूमि वापस मिलती थी, और हर चीज़ को नई शुरुआत मिलती थी। मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि तूने यीशु मसीह को भेजा, जिसने हमें पाप और बंधनों से छुटकारा दिया। जैसा कि उसने कहा, 'बंदियों को स्वतंत्र करने और प्रभु के अनुग्रह के वर्ष का प्रचार करने आया हूँ' - मैं तुझसे विनती करता हूँ कि मेरे जीवन में भी यहोबेल वर्ष लाए।

मेरे हृदय की जंजीरों को तोड़, मेरे पापों को क्षमा कर, और मुझे एक नई शुरुआत दे। मेरे जीवन में तेरी इच्छा पूरी हो और मैं तुझ पर भरोसा करूँ जैसे इसाएली तुझ पर यहोबेल वर्ष में भरोसा करते थे।

यीशु मसीह के नाम से, आमीन।"\*\*

✓ □□□□□□

- लैब्यव्यवस्था 25:8-9 में यहोबेल (Jubilee) वर्ष की गिनती और नरसिंगा बजाने की आज्ञा दी गई थी।
- यह दासों की मुक्ति, भूमि की वापसी, और नई शुरुआत का समय था।
- रब्बियों ने इस नियम के महत्व पर विस्तृत व्याख्या दी है, जिसमें गणना, आध्यात्मिक समझ, और शांति का प्रतीक शामिल हैं।

- मसीही जीवन में, यहोबेल वर्ष का सिद्धांत आत्मिक छुटकारे और यीशु मसीह में नई

**शुरुआत को दर्शाता है।**

- इस वर्ष में देशी से तू ले सकता है, परन्तु जो तेरा भाई हो उसे जो तेरा उसके

पास है, उस पर तेरा हाथ न पड़े।

P141 De.15:3 All debts are annulled in the Sabbatical year, but...

### **व्याख्या: व्यवस्थाविवरण 15:3 (Deuteronomy 15:3)**

**"परन्तु परदेशी से तू ले सकता है, परन्तु जो तेरा भाई हो उसे जो तेरा उसके**

**पास है, उस पर तेरा हाथ न पड़े।"**

(व्यवस्थाविवरण 15:3 - हिंदी बाइबल)

#### **इस पद का अर्थ**

इस पद में शेमिटाह (साब्बातिक वर्ष) के नियम को स्पष्ट किया गया है, जिसमें यहूदियों को अपने यहूदी भाइयों के ऋण को माफ करने का निर्देश दिया गया है।

- "जो तेरा भाई हो" – यहाँ "भाई" का अर्थ यहूदियों से है, जिससे संकेत मिलता है कि यह नियम एक यहूदी से दूसरे यहूदी के ऋण को माफ करने के बारे में है।
- "परदेशी से तू ले सकता है" - इसका मतलब है कि गैर-यहूदी (विदेशी) के ऋण की वसूली की जा सकती है, क्योंकि वे यहूदियों के शेमिटाह नियमों के अधीन नहीं हैं।
- "जो तेरा उसके पास है" - अगर ऋणी के पास धन या संपत्ति है, तो भी यदि वह यहूदी है, तो उसका ऋण छोड़ देना चाहिए।

यह व्यवस्था आर्थिक समानता और सामाजिक न्याय को सुनिश्चित करने के लिए थी ताकि

गरीब यहूदियों को हर सातवें वर्ष वित्तीय राहत मिले।

---

## रब्बियों की व्याख्याएँ और उनके दृष्टिकोण

### 1. बेखोर शोर (Bekhor Shor)

उन्होंने तर्क दिया कि यह नियम यहूदी किसानों की वित्तीय कठिनाई के कारण था। चूंकि यहूदी लोग साब्बातिक वर्ष में खेती नहीं कर सकते थे, इसलिए उनके लिए ऋण चुकाना मुश्किल होता था। परन्तु गैर-यहूदी कृषि कार्य जारी रखते थे, इसलिए उनसे ऋण वसूलना अनुचित नहीं था।

### 2. चिज़कुनी (Chizkuni)

उन्होंने भी यही विचार रखा कि गैर-यहूदी कृषि गतिविधियाँ जारी रख सकते थे, इसलिए वे अपनी आय से ऋण चुका सकते थे। इस कारण, यहूदी उनसे ऋण की माँग कर सकते थे।

### 3. सिफ्री (Sifri) और राम्बान (Ramban)

- सिफ्री ने इस पद के दो भागों को एक सकारात्मक और एक नकारात्मक आज्ञा के रूप में देखा:
  - यहूदियों से ऋण माँगना निषिद्ध है (नकारात्मक आज्ञा)।
  - गैर-यहूदियों से ऋण माँगना अनुमति प्राप्त है (सकारात्मक आज्ञा)।
- राम्बान ने इसे एक अनिवार्य आदेश नहीं, बल्कि यहूदियों के प्रति दयालुता का संकेत माना।

### 4. रब्बेइनु बाह्या (Rabbeinu Bahya) और तोरा तेमीमा (Torah Temimah)

- उन्होंने कहा कि यदि ऋणदाता के पास पहले से ही कोई गिरवी रखी हुई संपत्ति है, तो ऋण माफ करने की आवश्यकता नहीं है।
- इसका कारण यह है कि "जो तेरा उसके पास है" का तात्पर्य किसी भी ऋण से है जो ऋणी के पास शेष बचा है, न कि वह जो पहले से ही ऋणदाता के पास मौजूद है।

## 5. हिलेल का 'प्रुज्जबोल' (Hillel's Pruzbul) नियम

- कई यहूदी लोग ऋण देने से बचने लगे क्योंकि उन्हें डर था कि शेमिटाह वर्ष में उनका ऋण माफ हो जाएगा।
- हिलेल ने एक नया कानूनी तरीका (प्रुज्जबोल) पेश किया, जिसमें ऋण को न्यायालय को साँप दिया जाता था। इस प्रकार, ऋणदाता सीधे तौर पर ऋण नहीं माँगता था, बल्कि न्यायालय ऋण की वसूली कर सकता था।
- इससे यहूदी समुदाय में ऋण देने की परंपरा बनी रही और गरीबों को वित्तीय सहायता मिलती रही।

## आज के मसीही चर्च में इसका क्या महत्व है?

### 1. आध्यात्मिक ऋण क्षमा

- प्रभु यीशु मसीह ने सिखाया कि हमें दूसरों के अपराधों और देनों को क्षमा करना चाहिए, जैसे परमेश्वर ने हमारे पापों को क्षमा किया (मत्ती 6:12)।
- व्यवस्थाविवरण 15:3 हमें सिखाता है कि हमारे भाई-बहनों की जरूरतों के प्रति संवेदनशील रहें और उनकी आर्थिक कठिनाइयों को दूर करें।

### 2. आर्थिक न्याय और उदारता

- चर्च समुदाय में भी हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि आर्थिक रूप से कमज़ोर लोगों की मदद की जाए।
- प्रारंभिक मसीही कलीसिया में भी संपत्ति साझा करने और गरीबों की मदद करने की परंपरा थी (प्रेरितों के काम 4:32-35)।

### 3. यीशु मसीह और कर्ज़ माफी

- यीशु ने कहा:
- ”यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा।” (मत्ती 6:14)
- 
- यह दिखाता है कि आर्थिक या अन्य प्रकार की क्षमा केवल वित्तीय ही नहीं बल्कि आत्मिक भी हो सकती है।

### इससे जुड़ी एक मसीही प्रार्थना

**हे स्वर्गीय पिता,**

आपने हमें अपने अनुग्रह और प्रेम से बचाया है। प्रभु यीशु मसीह ने हमें सिखाया कि हमें अपने भाई-बहनों को क्षमा करना चाहिए, जैसे आपने हमारे पापों को क्षमा किया।

हम प्रार्थना करते हैं कि आप हमें उदार और दयालु हृदय प्रदान करें, ताकि हम उन लोगों की मदद कर सकें जो आर्थिक या आध्यात्मिक संकट में हैं। हमें ऐसा प्रेम और करुणा दें कि हम

**स्वेच्छा से दूसरों का बोझ उठाएँ और उनके साथ भलाई करें।**

**प्रभु, हमें स्वार्थ और लोभ से बचाएँ, और हमें उस आत्मा से भर दें जो यीशु मसीह में थी -**

**जो दूसरों की जरूरतों को पहले रखता था और उदारता से देता था।**

**हम यीशु मसीह के नाम से प्रार्थना करते हैं।**

**आमीन।**

---

### **निष्कर्ष**

**व्यवस्थाविवरण 15:3 शेमिटाह वर्ष की अवधारणा** को प्रस्तुत करता है, जहाँ यहूदी लोग अपने यहूदी भाइयों के ऋण को माफ करने के लिए बुलाए जाते थे। विभिन्न रब्बियों ने इस नियम की गहराई से व्याख्या की, और यह नियम आज भी यहूदी और मसीही विश्वासियों के लिए आर्थिक और आध्यात्मिक शिक्षा देता है।

**यीशु मसीह ने इस सिद्धांत को आत्मिक क्षमा में विस्तारित किया, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि न केवल आर्थिक ऋण बल्कि हमारे हृदयों में भी क्षमा और प्रेम की भावना होनी चाहिए।**

P142 De.15:3 ...one may exact a debt owed by a foreigner

### **व्यवस्थाविवरण 15:3 - बाइबल पद हिंदी में**

**"परन्तु परदेशी से तू ले सकता है, परन्तु जो तेरा भाई हो उसे जो तेरा उसके पास है, उस पर तेरा हाथ न पड़े।"**

**(व्यवस्थाविवरण 15:3 - हिंदी बाइबल)**

## इस पद की व्याख्या

व्यवस्थाविवरण 15:3 साब्बातिक वर्ष (Shemitah) और क्रण माफी के नियम को समझाने वाला एक महत्वपूर्ण पद है।

### मुख्य बिंदु:

1. "परदेशी से तू ले सकता है" - इसका अर्थ है कि यदि कोई गैर-यहूदी (विदेशी) कर्जदार है, तो उससे क्रण वापस लिया जा सकता है।
2. "परन्तु जो तेरा भाई हो" - "भाई" का अर्थ यहाँ यहूदी समुदाय के लोग हैं।
3. "जो तेरा उसके पास है, उस पर तेरा हाथ न पड़े" - इस भाग का अर्थ है कि यदि कोई यहूदी भाई क्रणी है, तो हर सातवें वर्ष (साब्बातिक वर्ष) में उसका क्रण माफ कर दिया जाए।

### इस आदेश का उद्देश्य:

- यह गरीबों की सहायता करने के लिए था ताकि वे हमेशा क्रण के बोझ में न दबे रहें।
- यह सामाजिक समानता बनाए रखने और भाईचारे को मजबूत करने के लिए था।

## रब्बियों की व्याख्याएँ और उनके दृष्टिकोण

### 1. बेखोर शोर (Bekhor Shor)

- उनका तर्क कि यह नियम यहूदियों के लिए इसलिए था क्योंकि वे खेती करना बंद कर देते थे और उनकी आय नहीं होती थी।
- गैर-यहूदी खेती जारी रख सकते थे, इसलिए उनसे ऋण वसूला जा सकता था।

## 2. चिज़कुनी (Chizkuni)

- उन्होंने कहा कि गैर-यहूदी खेती और व्यापार कर सकते थे, जिससे वे ऋण चुकाने में सक्षम होते थे।
- इसलिए यहूदी उनसे ऋण वापस लेने के लिए स्वतंत्र थे।

## 3. सिफ्री (Sifri) और रांबान (Ramban)

- सिफ्री ने इसे एक सकारात्मक और एक नकारात्मक आज्ञा के रूप में देखा:
  - यहूदियों से ऋण न लेना निषिद्ध है।
  - गैर-यहूदियों से ऋण लेना अनुमति प्राप्त है।
- रांबान ने इसे अनिवार्य आदेश नहीं बल्कि यहूदियों के प्रति दयालुता का संकेत माना।

## 4. रब्बेइनु बाह्या (Rabbeinu Bahya) और तोरा तेमीमा (Torah Temimah)

- उन्होंने कहा कि यदि ऋणदाता के पास पहले से ही कोई गिरवी रखी हुई संपत्ति है, तो ऋण माफ करने की आवश्यकता नहीं है।
- इसका कारण यह है कि "जो तेरा उसके पास है" का तात्पर्य किसी भी ऋण से है जो ऋणी के पास शेष बचा है, न कि वह जो पहले से ही ऋणदाता के पास मौजूद है।

## 5. हिलेल का 'प्रुज़बोल' (Hillel's Pruzbul) नियम

- कई यहूदी ऋण देने से बचने लगे क्योंकि उन्हें डर था कि शेमिटाह वर्ष में उनका ऋण माफ हो जाएगा।
  - हिलेल ने 'प्रुजबोल' की व्यवस्था बनाई, जिसमें ऋण को न्यायालय को सौंप दिया जाता था, जिससे ऋण की वसूली संभव हो जाती थी।
  - यहूदी गरीबों की मदद करने से न डरें, इसलिए यह उपाय लागू किया गया।
  - ✓**खेती की ज़मीन** - परमेश्वर की ओर से विरासत, इसलिए जुबली में लौटाई जाती थी।
  - ✗**शहर के मकान** - व्यापारिक और अस्थायी संपत्ति, इसलिए जुबली में नहीं लौटते थे।
- 

□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□

□□?

□ नहीं, यह नियम आज के समय में कानूनी रूप से लागू नहीं होता।

□ □□□□□ □□□□ **आध्यात्मिक महत्व आज भी है:**

- परमेश्वर हमें भौतिक चीज़ों से अधिक आत्मिक चीज़ों पर ध्यान देने को कहते हैं।
- हमारी स्थायी संपत्ति पृथ्वी पर नहीं, बल्कि स्वर्ग में है (मत्ती 6:19-21)।
- यीशु मसीह ने कहा कि हम केवल इस संसार के नागरिक नहीं, बल्कि परमेश्वर के राज्य के नागरिक हैं (फिलिप्पियों 3:20)।

## **आज के मसीही चर्च में इसका क्या महत्व है?**

## 1. आत्मिक ऋण की क्षमा

यीशु मसीह ने हमें आर्थिक और आत्मिक दोनों तरह की क्षमा का महत्व सिखाया।

प्रभु की प्रार्थना में कहा गया:

**"हमारे अपराध क्षमा कर, जैसे हम भी अपने अपराधियों को क्षमा करते हैं।"** (मत्ती 6:12)

इसी प्रकार, हमें दूसरों को आर्थिक और आत्मिक रूप से क्षमा करने का दिल रखना चाहिए।

## 2. गरीबों और जरूरतमंदों की मदद

- प्रारंभिक मसीही कलीसिया में संपत्ति साझा करने और गरीबों की मदद करने की प्रतिरक्षा थी (प्रेरितों के काम 4:32-35)
- यह सिद्धांत आज भी चर्चों में दान, उदारता और सामाजिक न्याय के रूप में देखा जाता है।

## 3. यीशु मसीह और कर्ज़ माफी

- यीशु ने कहा:

**"यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा।"** (मत्ती 6:14)

- यह दिखाता है कि आर्थिक या अन्य प्रकार की क्षमा केवल वित्तीय ही नहीं बल्कि आत्मिक भी हो सकती है।
- 

## इससे जुड़ी एक मसीही प्रार्थना

□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□□□□ □

**हे परमेश्वर,**

**आपने इस्राएल को ज़मीन का नियम दिया ताकि वे अपनी विरासत न खोएं।**

**हमें याद दिलाइए कि हमारी सच्ची विरासत स्वर्ग में है, न कि इस पृथ्वी पर।**

**हमें लालच और सांसारिक चीज़ों की चिंता से मुक्त करिए।**

**हमें आपकी योजनाओं में चलने की समझ दीजिए, ताकि हम आपके राज्य में स्थायी**

**संपत्ति बना सकें।**

□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□, □□□□□ □

□ □□□□□□□

**व्यवस्थाविवरण 15:3 शेमिटाह वर्ष की अवधारणा को प्रस्तुत करता है, जहाँ यहूदी लोग अपने यहूदी भाइयों के ऋण को माफ करने के लिए बुलाए जाते थे।**

□ □□□:

1 □ □□□□ दूसरों को क्षमा करने का हृदय रखना चाहिए - चाहे वह आर्थिक रूप से हो या आत्मिक रूप से।

2 □ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ गरीबों की सहायता और

**सामाजिक न्याय** □□□ □□□ □□□□ □□□□□

3 □ □ □ □ □□□ विनम्रता, प्रेम और दूसरों के प्रति करुणा की शिक्षा देता है।

यही तो मैं पूछना चाहता था मान लो किसी ने अपनी ज़मीन गिरवी रख दी जो शहर में है और 1 साल में भी नहीं छुड़ाई लेकिंग वो जुबली के वर्ष में या ये देख कर की वो कहाँ रहेगा वो अपने पास रख ले और जुबली के वर्ष में उसे लौटा दे, हलाकि ये नियम के खिलाफ है और इससे उधार देने वाले को कोई फ़ायदा नहीं, पर पर प्रभु इससे खुश होगा

ChatGPT said:

□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□□  
□□□□□□□ □□□□□ □□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□?

**आपका प्रश्न गहरा और व्यावहारिक है:**

□ अगर कोई व्यक्ति अपनी शहर की ज़मीन गिरवी रखता है और उसे छुड़ाने में असमर्थ रहता है, तो क्या उधार देने वाला उसे जुबली के वर्ष में लौटा सकता है, भले ही नियम इसकी अनुमति न दे? और क्या प्रभु इससे खुश होगा?

इसका उत्तर बाइबलीय कानून और यीशु मसीह की शिक्षा के बीच के संतुलन में है।

□ 1. □□□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□ □□□□□□ □□□□□  
□□?

□ बाइबल के कानून के अनुसार, शहर की ज़मीन जुबली में वापस नहीं मिलती थी

(लैब्यव्यवस्था 25:29-30)।

□ लेकिन क्या किसी व्यक्ति ने स्वेच्छा से अपनी संपत्ति लौटाई? हाँ!

□ नीतिवचन 19:17

"जो गरीब पर अनुग्रह करता है, वह यहोवा को उधार देता है, और वह उसके इस भले काम का प्रतिफल देगा।"

□ नेहेम्याह 5:1-12 - एक ऐतिहासिक उदाहरण

- जब यहूदी लोग गरीबी के कारण अपनी ज़मीन और घर अमीरों के पास गिरवी रख चुके थे, तब नेहेम्याह ने अमीरों से आग्रह किया कि वे अपनी संपत्ति गरीबों को लौटा दें।
- आश्चर्यजनक रूप से, वे सहमत हुए और अपनी ज़मीन और घर वापस कर दिए!
- यह बाइबल में एक उदाहरण है जहाँ कानूनी रूप से संपत्ति वापस करने की कोई बाध्यता नहीं थी, लेकिन फिर भी इसे वापस किया गया।

□ परिणाम: परमेश्वर की आशीष मिली और समाज में न्याय स्थापित हुआ।

---

□ 2. □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□

□□□□?

+ हाँ, बिल्कुल! यीशु मसीह ने कानून से भी ऊपर प्रेम और करुणा को रखा।

□ मत्ती 6:19-21

"अपने लिए पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो... परन्तु स्वर्ग में धन इकट्ठा करो।"

□ लूका 6:35

**"अपने शत्रुओं से प्रेम करो, और उधार दो, बिना कुछ पाने की आशा किए। तब तुम्हारा प्रतिफल महान होगा।"**

□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□:

- ✓ कभी-कभी कानून से बढ़कर प्रेम और दया दिखाना परमेश्वर की इच्छा होती है।
  - ✓ अगर कोई अमीर व्यक्ति अपनी गिरवी रखी हुई ज़मीन जुबली में लौटा दे, तो यह परमेश्वर के प्रेम और न्याय को दर्शाएगा।
  - ✓ यह समाज में दया और करुणा का उदाहरण बनेगा, जैसे नेहेम्याह ने किया था।
- 

□ 3. □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□  
□□□□?

कानूनी रूप से ऋणदाता को कोई आर्थिक लाभ नहीं होगा।

लेकिन आध्यात्मिक रूप से वह परमेश्वर की कृपा पाएगा।

□ लूका 14:12-14

"जब तुम भोज करो, तो गरीबों, लंगड़ों और अंधों को बुलाओ। और तुझे आशीष मिलेगी, क्योंकि उनके पास तुझे बदला देने को कुछ नहीं है, परन्तु धर्मियों के पुनरुत्थान में तुझे इसका बदला मिलेगा।"

□ जो व्यक्ति दूसरों की भलाई के लिए आर्थिक नुकसान सहता है, उसे परमेश्वर महान प्रतिफल देता है।

□ नीतिवचन 11:25

“उदार व्यक्ति समृद्ध होगा, और जो दूसरों को तृप्त करता है, वह स्वयं भी तृप्त किया जाएगा।”

□ इसलिए, अगर कोई साहूकार स्वेच्छा से जुबली में ज़मीन लौटाता है, तो प्रभु उसे आशीष देगा।

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ - □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □

हे स्वर्गीय पिता,

आपने हमें प्रेम और करुणा सिखाई है।

हमें अपने धन और संपत्ति पर नहीं, बल्कि आपकी इच्छा पर भरोसा करने की शक्ति दीजिए।

हमें उदार और दयालु बनने की समझ दीजिए, ताकि हम जरूरतमंदों की मदद कर सकें।

हमें यह एहसास दिलाइए कि असली संपत्ति स्वर्ग में संचित करनी है, न कि पृथ्वी पर।

हमारे हृदय को बदलिए, ताकि हम यीशु मसीह के समान प्रेम और अनुग्रह दिखा सकें।

यीशु मसीह के नाम में, आमीन। □

---

❖ □ □ □ □ □ □ □

✓ कानूनी रूप से, गिरवी रखी हुई ज़मीन जुबली में वापस नहीं मिलती थी।

✓ लेकिन यदि कोई इसे स्वेच्छा से लौटा दे, तो यह प्रेम और दया का कार्य होगा।

✓बाइबल में नेहेम्याह ने ऐसा किया, और परमेश्वर ने उसे आशीष दी।

✓यीशु मसीह ने सिखाया कि प्रेम और उदारता कानून से ऊपर हैं।

✓परमेश्वर उदार व्यक्ति को महान प्रतिफल देता है।

## **CONCERNING ANIMALS FOR CONSUMPTION**

P143 De.18:3 The Cohen's due in the slaughter of every clean animal

**व्यवस्थाविवरण 18:3 हिंदी में:**

"और यह याजकों का लोगों से मिलनेवाला हिस्सा होगा, अर्थात् जो कोई बैल वा भेड़-  
 बकरी का वध करे, उसको याजक को कंधा और दोनों जबड़े और पेट की आँतें देनी होंगी।"

---

**हिंदी में समझाव:**

**1. "और यह याजकों का लोगों से मिलनेवाला हिस्सा होगा"**

शब्द "हिस्सा" (הַבָּנָה - मिष्यात) यह दर्शाता है कि यह याजकों का एक उचित अधिकार है। यह  
 केवल एक दान नहीं, बल्कि एक न्यायसंगत व्यवस्था है जो उन्हें उनकी सेवा के बदले में मिलती  
 है। तालमूद (Chullin 130b) में यह स्पष्ट किया गया है कि यह याजकों का विधिक अधिकार  
 (*legal right*) है, जिसे वे कानूनी रूप से भी माँग सकते हैं। लेकिन रवी हिर्श कहते हैं कि यह संपूर्ण  
 याजक वर्ग के लिए एक अधिकार है, लेकिन किसी एक याजक के लिए यह अदालत में दावा  
 करने योग्य संपत्ति (property without a specific claimant) नहीं है।

**2. "लोगों से" (מִעַם הַמְלֻאָה - מִמְלֻאָה)**

इसका अर्थ है कि यह उपहार सामान्य इस्राएली लोगों से दिया जाना चाहिए। लेकिन याजकों  
 को यह आपस में देने की आवश्यकता नहीं है। यदि कोई याजक स्वयं पशु का वध करता है, तो  
 उसे दूसरे याजक को यह भाग देने की जरूरत नहीं।

**3. "वध करनेवालों से" (מִבְּנֵי הַבָּנָה - מִבְּנֵי הַבָּנָה)**

यह इंगित करता है कि यह दायित्व उसी व्यक्ति पर है जो पशु का वध करता है। हक्तव

वेहाकबाला कहते हैं कि इस उपहार का अधिकार याजक को वध के समय ही मिल जाता है।

यदि कोई व्यक्ति याजक को उसका हिस्सा देने के बजाय उसे बेच दे, तो याजक कानूनी रूप से उसकी कीमत माँग सकता है।

#### 4. "यदि बैल या भेड़ हो" (הא שור אם פשׁור - אם שור)

यह दर्शाता है कि यह नियम केवल पालतू पशुओं पर लागू होता है, न कि जंगली जानवरों (חיה - चयाह) पर। रशी के अनुसार, यह नियम केवल बैल, भेड़ और बकरी तक सीमित है। तालमूद (Chullin 132b) कहता है कि यह नियम संकर (hybrid) पशुओं और *koy* (एक अज्ञात वर्ग का पशु) पर भी लागू हो सकता है।

#### 5. "याजक को देना होगा" (ונתן לכהן לאנשׁים)

यह वचन इस बात को स्पष्ट करता है कि यह याजक को स्वयं नहीं लेना चाहिए, बल्कि यह उसे दिया जाना चाहिए। यह दान किसी एंजेंट या बिचौलिए के माध्यम से नहीं दिया जाना चाहिए, बल्कि सीधे याजक को दिया जाना चाहिए।

#### 6. "कंधा (Foreleg)" (עראזא - עראזא)

रशी बताते हैं कि यह हिस्सा घुटने से लेकर कंधे तक होता है। आदेरेत एलियाहु कहते हैं कि यह केवल दाएँ हाथ का अगला पैर होता है।

#### 7. "जबड़े" (Cheekbones) (מִלְּבָדָה - מִלְּבָדָה)

रशी और गुर आर्ये के अनुसार, इसमें जबड़ा और जीभ शामिल होती है। तालमूद कहता है कि इसमें भेड़ों के सिर के ऊन और मेढ़ों की दाढ़ी के बाल भी शामिल हो सकते हैं।

#### 8. "पेट की आँतें" (Stomach) (הבַּקְעָה - הַבְּקָעָה)

यह चौथा पेट (abomasum) है, जो जुगाली करने वाले जानवरों में पाया जाता है। आदेरेत

एलियाहु कहते हैं कि इसमें दो प्रकार की चर्बी भी शामिल होती है।

---

## रब्बियों की अन्य व्याख्याएँ:

### 1. याजकों की जीविका के लिए प्रबंध

- रबेइनु बन्धा कहते हैं कि चूँकि याजकों को भूमि विरासत में नहीं मिली थी, इसलिए यह उपहार उनकी जीविका के लिए अनिवार्य था।
- हा'अमेक दावार भी कहते हैं कि याजकों के पास खुद की खेती करने की ज़मीन नहीं थी, इसलिए यह उनके लिए एक सहायता व्यवस्था थी।

### 2. पिन्हास (Phinehas) की कहानी से संबंध

- कुछ व्याख्याकार कहते हैं कि यह तीन अंग पिन्हास के कार्यों का प्रतीक हैं। उसने हाथ से भाला उठाया (Foreleg), उसने परमेश्वर से प्रार्थना की (Cheekbones - जबड़ा), और भाले से ज़िम्री को उसके पेट में मारा (Stomach)।

### 3. मूर्ति पूजा के विपरीत एक संकेत

- कुछ यहूदी टीकाकार इसे मूर्तिपूजकों के बलिदानों के विपरीत देखते हैं। मूर्तिपूजक अपने देवताओं के लिए जानवरों के पूरे शरीर का बलिदान करते थे, लेकिन यहोवा केवल तीन भाग माँगता था, ताकि मनुष्य को बाकी भाग खाने को मिले।
-

## मसीही चर्च में इसका क्या महत्व है?

आज के मसीही चर्च में, याजकों को पशु के इन तीन भागों को देने की यह विशेष प्रथा नहीं पाई जाती है। हालाँकि, इसका आत्मिक महत्व कुछ इस प्रकार समझा जाता है:

1. **यीशु मसीह स्वयं याजक हैं** (इब्रानियों 4:14-16)। वे नई वाचा में हमारे लिए परमेश्वर के पास मध्यस्थ हैं।
  2. **यीशु ने स्वयं को बलिदान कर दिया**, इसलिए अब पशुबलियों की आवश्यकता नहीं (इब्रानियों 10:10-12)।
  3. **विश्वासियों को परमेश्वर की सेवा के लिए देने के लिए प्रेरित किया जाता है** (कुरिन्यियों 9:6-8)।
  4. **यीशु की सेवा में हम अपने समय, धन, और संसाधनों को दे सकते हैं**, जैसा कि इसाएली याजकों को पशु के भाग देते थे।
- 

इससे जुड़ी एक प्रार्थना प्रभु यीशु मसीह से:

हे यहोवा, जो कुछ मैं हूँ और जो कुछ मेरे पास है, वह सब तेरी ही देन है। जैसे पुराने समय में तेरे याजकों को उपहार दिए जाते थे, वैसे ही मैं आज अपनी ज़िंदगी, समय, और संसाधनों को तुझे अर्पित करता हूँ।

मुझे शक्ति दे कि मैं अपनी सेवा और भक्ति से तुझे आदर दूँ। यीशु मसीह के द्वारा मैं यह प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

P144 De.18:4 On the first of the fleece to be given to the Cohen

## **व्याख्या: व्यवस्थाविवरण 18:4 (Deuteronomy 18:4)**

## बाइबल पद (हिंदी):

**"तेरे अन्न, नये दाखमधु, और तेल की पहिली उपज और तेरी भेड़ों के पहिलाँठे ऊन को तू उसे देना।"**

(व्यवस्थाविवरण 18:4, हिंदी बाइबल)

## हिंदी में व्याख्या:

इस पद में यहोवा ने इस्राएलियों को आज्ञा दी कि वे अपनी उपज का "पहिला भाग" (श्रेष्ठतम भाग) और अपनी भेड़ों की पहली ऊन याजकों (कोहेन) को दें। यह दान इस्राएलियों की आस्था और आज्ञाकारिता को दर्शाता था।

## 1. "पहिला भाग" ( - राशीत ) का अर्थ:

- यह शब्द श्रेष्ठ, उत्तम और पहला □□□□□□□ □□ □□□用 □□□□ □□□ □□□
  - यह दान कोई भी साधारण अन्न या ऊन नहीं था, बल्कि सबसे अच्छा और उत्तम भाग था।
  - यह अन्य दानों (जैसे, गरीबों के लिए खेत के कोने छोड़ना) से अलग था। गरीबों को शेष अन्न मिलता था, लेकिन याजकों को सबसे बढ़िया भाग दिया जाता था।

## रज्जियों की व्याख्या:

## 1. पहला और सबसे उत्तम भाग क्यों?

रब्बी यूसुफ खर्झम (*Aderet Eliyahu*) बताते हैं कि यह दान केवल "बचा हुआ" अन्न नहीं था, बल्कि सबसे अच्छा हिस्सा था। यह याजकों को सम्मान देने के लिए था, जो परमेश्वर की सेवा में कार्यरत थे।

Haamek Davar के अनुसार, "अन्न, दाखमधु, और तेल" का अर्थ है कि यह खेतों में कटाई के बाद प्रसंस्कृत (processed) किया गया सबसे अच्छा भाग था।

लेकिन "भेड़ों की पहली ऊन" का मतलब सचमुच पहला कतरन (first shearing) था।

## 2. कितना देना था?

- बाइबल में कोई विशेष मात्रा निर्धारित नहीं की गई है, लेकिन रब्बियों ने तीन श्रेणियां तय कीं:
  - 1/60 (कंजूस का दान)
  - 1/50 (सामान्य व्यक्ति का दान)
  - 1/40 (उदार व्यक्ति का दान)
- यह गणना यहेजकेल 45:13 और गिनती 18:12 के आधार पर की गई।
- "पहली ऊन" के लिए, रब्बियों ने तय किया कि यह कम से कम इतना होना चाहिए कि एक छोटी कमरबंद (belt) बनाई जा सके।

## 3. किस प्रकार की उपज और भेड़ें?

- Haamek Davar के अनुसार,
  - "अन्न" - सभी प्रकार के अनाज।
  - "नया दाखमधु" - केवल अंगूर का रस, अन्य फलों का नहीं।
  - "तेल" - केवल जैतून का तेल।

- “भेड़ की ऊन” - केवल भेड़ों की ऊन, बकरियों की नहीं।
- Torah Temimah जोड़ते हैं कि यह केवल इस्राएलियों की भूमि पर उगाई गई उपज से लागू होता था, गैर-यहूदी भूमि से नहीं।

#### 4. न्यूनतम भेड़ों की संख्या

- Talmud (*Bekhor Shor*) के अनुसार, कम से कम दो भेड़ें जिनसे एक विशेष मात्रा में ऊन प्राप्त हो।
  - लेकिन रब्बी अकीवा के अनुसार, कम से कम पांच भेड़ें होनी चाहिए, यह 1 शमूएल 25:18 से व्याख्या की गई थी।
- 

#### आज के मसीही चर्च में इसका क्या महत्व है?

##### 1. परमेश्वर को पहला और श्रेष्ठतम भाग देना

- पुराने नियम में याजकों को देने की परंपरा थी, लेकिन नए नियम में यह सिद्धांत अब कलीसिया के लिए और परमेश्वर के राज्य के कार्यों के लिए दिया जाता है।
- मत्ती 6:33 - ”पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता को खोजो, तो ये सब वस्तुएँ तुम्हें मिल जाएँगी।”
- इसका अर्थ है कि हमें अपनी आमदनी, समय, और संसाधनों का पहला और सर्वोत्तम भाग परमेश्वर को समर्पित करना चाहिए।

##### 2. विश्वासयोग्यता और आभार का प्रदर्शन

- प्रेरित पौलस ने 2 कुरिन्थियों 9:7 में कहा -

**”हर एक जन जैसा मन में ठाने, वैसा ही दान करे, न कुढ़-कुढ़कर और न दबाव से,**

**क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देनेवाले से प्रेम रखता है।”**

- पुराने नियम में ”अन्न, दाखमधु, और तेल” दिया जाता था, लेकिन आज मसीही विश्वासी अपना समय, दान, और संसाधन परमेश्वर के कार्यों में लगाकर यही सिद्धांत पूरा करते हैं।

### 3. याजकों और सेवकों का समर्थन

- पुराने नियम में यह उपहार याजकों के लिए था, आज यह चर्च के पास्टर्स, मिशनरियों और सेवकों के लिए लागू हो सकता है।
- 1 तीमुथियुस 5:17-18 में लिखा है -  
”जो प्राचीन अच्छा प्रबन्ध करते हैं, विशेष करके जो वचन सुनाने और सिखाने में परिश्रम करते हैं, वे दोहरे आदर के योग्य समझे जाएँ।”

### प्रार्थना (प्रभु यीशु मसीह के जीवन से प्रेरित):

”हे स्वर्गीय पिता,

जैसे तूने अपने लोगों को अपनी पहली और उत्तम भेंट तुझे अर्पित करने की आज्ञा दी, वैसे ही हम भी अपने जीवन का पहला और सर्वोत्तम भाग तुझे अर्पित करना चाहते हैं।

जैसे यीशु मसीह ने अपना सम्पूर्ण जीवन तेरे कार्य के लिए दिया, वैसे ही हम भी अपना समय, संसाधन और आशीर्वाद तेरी सेवा में लगाएँ। हमें स्वार्थ से मुक्त कर और तू हमें उदार और विश्वासयोग्य बना।

जैसे तूने अपने लोगों को सिखाया कि याजकों और सेवकों का ध्यान रखें, वैसे ही हमें भी उन

लोगों का समर्थन करने के लिए तैयार कर जो तेरे राज्य का कार्य कर रहे हैं।

हमारे दिलों को उदारता से भर, ताकि हम खुशी से, प्रेम से और निष्ठा से तेरी सेवा में अपना सब

कुछ लगा सकें।

**हम यह प्रार्थना प्रभु यीशु मसीह के नाम में करते हैं। आमीन।”**

P145 Le.27:21, 28 (Cherem vow) one devoted thing to God, other to Cohanim

**लेवीव्यवस्था 27:21 (Leviticus 27:21) हिंदी में**

“परन्तु यदि उसने किसी के अधिकार में से खेत को मोल लिया और यहोवा के लिये पवित्र ठहराया हो, तो वह खेत यरूबिल के समय उसी के अधिकारवाले को, अर्थात् जिसके वंश में वह हो, फिर मिल जाएगा।”

## इस पद का हिंदी में समझाव

यह पद एक ऐसे खेत के बारे में है जिसे किसी व्यक्ति ने मोल लिया था और बाद में उसे यहोवा

के लिए समर्पित कर दिया। यदि वह व्यक्ति इसे छुड़ा नहीं पाता और यरूबिल (Jubilee Year -

पचासवें वर्ष) का समय आ जाता है, तो यह खेत किसी अन्य व्यक्ति के पास जाने के बजाय सीधे

याजकों (पुरोहितों) का हो जाता है।

इसका कारण यह है कि बाइबल में यरूबिल वर्ष के दौरान सभी भूमि अपनी मूल स्थिति में लौट आती हैं। यदि कोई अपनी पैतृक भूमि बेचता है, तो यरूबिल के समय वह भूमि उसे वापस मिल जाती है। परंतु यह विशेष मामला तब उत्पन्न होता है जब कोई भूमि को मोल लेकर उसे यहोवा के लिए समर्पित कर देता है। इस स्थिति में भूमि सामान्य रीति से उसके पूर्व मालिक को नहीं लौटती बल्कि याजकों की संपत्ति बन जाती है।

---

## रब्बियों की व्याख्याएं और उनके उदाहरण

### 1. "पवित्र यहोवा के लिए" और "समर्पित (Cherem) क्षेत्र" का अर्थ

- राशी (Rashi) और रेगियो (Reggio) समझाते हैं कि "पवित्र यहोवा के लिए" का अर्थ यह नहीं है कि भूमि मंदिर (Temple Treasury) को दी जाएगी। इसके बजाय, यह "एक समर्पित क्षेत्र (Cherem field)" के समान हो जाती है, जो याजकों को मिलती है (गिनती 18:14 के अनुसार: "इसाएल में जो कुछ समर्पित किया गया है वह तेरा होगा")।
- मिजराची (Mizrachi) और सिफ्टे चखामिम (Siftei Chakhamim) भी इस व्याख्या का समर्थन करते हैं।

□ □ □ □ □ :

कल्पना करें कि किसी व्यक्ति ने एक खेत खरीदा और इसे यहोवा के लिए समर्पित कर दिया। यदि उसने इसे छुड़ाया नहीं, तो यरूबिल वर्ष में यह मंदिर को वापस नहीं जाता बल्कि उन याजकों को दिया जाता है जो उस समय मंदिर में सेवा कर रहे हैं।

---

## 2. "याजकों की संपत्ति हो जाएगी" का अर्थ

राशी, रेगियो और मिजराची बताते हैं कि यह खेत उन याजकों को बाँट दिया जाता है जो

यरूबिल के दिन (यौम किप्पूर - Day of Atonement) सेवा कर रहे होते हैं।

**मालबिम (Malbim)** कहते हैं कि अगर कोई याजक ही इस खेत को खरीदता है, तब भी यह

उसकी व्यक्तिगत संपत्ति नहीं बनेगी बल्कि सभी याजकों में बाँट दी जाएगी।

**दाऊद ज़वी हॉफमैन (David Zvi Hoffmann)** बताते हैं कि "उसकी संपत्ति होगी"

वाक्यांश का अर्थ याजकों को दिया जाना है, न कि इसे पुनः बेचा जाना।

□ □ □ □ □ □ :

यदि किसी व्यक्ति ने यहोवा को एक खेत समर्पित कर दिया और उसे छुड़ाने में असमर्थ रहा, तो जब यरूबिल वर्ष आएगा, यह खेत याजकों को बाँट दिया जाएगा, न कि इसकी मूल भूमि के मालिक को लौटाया जाएगा।

## 3. "Cherem (समर्पित)" क्षेत्र और इसकी तुलना

- बाइबल में चरम (Cherem) शब्द का उपयोग उन चीज़ों के लिए किया जाता है जो यहोवा के लिए पूर्ण रूप से समर्पित होती हैं और वापस नहीं ली जा सकतीं।
- तोरा तेमीमा (Torah Temimah) बताते हैं कि यदि किसी याजक ने अपनी खुद की भूमि को *Cherem* घोषित किया, तो उसे अपनी भूमि पर व्यक्तिगत अधिकार नहीं मिलेगा, बल्कि उसे सभी याजकों में बाँट दिया जाएगा।
- मालबिम इस पद का उपयोग यह सिद्ध करने के लिए करते हैं कि समर्पित भूमि याजकों को जाती है, न कि मंदिर को।

□ □ □ □ □ :

यदि कोई व्यक्ति अपना खेत Cherem घोषित कर देता है, तो वह पूरी तरह से यहोवा के लिए हो जाता है और उसकी संतानों को वापस नहीं मिलता।

---

## आज के मसीही चर्च में इसका क्या महत्व है?

### 1. यीशु मसीह में पवित्र समर्पण:

- जैसे यह खेत पूरी तरह से यहोवा के लिए समर्पित हो जाता था और वापस नहीं लिया जा सकता था, वैसे ही एक सच्चे मसीही विश्वासी का जीवन भी पूरी तरह प्रभु यीशु को समर्पित होना चाहिए।
- प्रेरित पौलुस कहते हैं:
 

“अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित हूँ।” (गलातियों 2:20)

### 2. यीशु मसीह ही सच्चा याजक हैं:

- इब्रानियों 7:24-25 के अनुसार, यीशु मसीह हमारा सदा बना रहने वाला महायाजक हैं। यह खेत जिस प्रकार याजकों के पास जाता था, वैसे ही हमारा जीवन भी मसीह के हाथों में होना चाहिए।

### 3. मसीही जीवन में यरूबिल (Jubilee) का महत्व:

- यरूबिल का अर्थ स्वतंत्रता और बहाली है। यीशु ने कहा:
 

“प्रभु का आत्मा मुझ पर है, क्योंकि उसने मुझे अभिषेक किया कि मैं दरिद्रों को सुसमाचार सुनाऊँ... और कुचले हुओं को स्वतंत्र करूँ।” (लूका 4:18)

- मसीह हमें पाप के दासत्व से मुक्त करते हैं और नया जीवन देते हैं।
- 

## इससे जुड़ी एक मसीही प्रार्थना (यीशु मसीह के जीवन से प्रेरित)

† ○○○○○○○○○○:

**हे यहोवा पिता,**

हम अपने जीवन को तेरे सामने समर्पित करते हैं, जैसे इस्राएल में पवित्र भूमि तुझसे संबंधित होती थी। हम अपने विचारों, कार्यों, और भविष्य को तेरे हाथों में छोड़ते हैं।

हम प्रार्थना करते हैं कि हमें अपने जीवन का यरूबिल (Jubilee) अनुभव करने दे - जहाँ हमें तेरे अनुग्रह से पुनःस्थापना और स्वतंत्रता मिले। प्रभु यीशु ने कहा कि वे दरिद्रों को सुसमाचार देने आए, इसलिए हमें भी उनकी तरह दूसरों के लिए एक आशीष बना।

हे यीशु, तू हमारा महायाजक है, हमारी भूमि, हमारी आत्मा, और हमारी आशा को स्वीकार कर, और इसे तेरे राज्य के लिए पवित्र कर। हमें इस सत्य को समझने की बुद्धि दे कि जैसे पवित्र भूमि याजकों के अधिकार में जाती थी, वैसे ही हमारा जीवन तेरा होना चाहिए।

**प्रभु यीशु मसीह के नाम में, आमीन।**

---

**निष्कर्ष:**

- लेवीव्यवस्था 27:21 हमें सिखाता है कि समर्पण का एक स्थायी प्रभाव होता है।
- यह पद यहोवा के लिए पूर्ण समर्पण का प्रतीक है, जो मसीहियों को अपने जीवन को प्रभु यीशु को सौंपने का संदेश देता है।
- आज के चर्च में, इसका महत्व यह है कि मसीहियों को अपने जीवन को पूरी तरह परमेश्वर को समर्पित करना चाहिए, जैसे कि समर्पित खेत याजकों की संपत्ति बन जाता था।
- इस पद से प्रेरित प्रार्थना यह सिखाती है कि हमें अपना जीवन मसीह के लिए पूर्ण रूप से अर्पण करना चाहिए।

<sup>†</sup> “जिसने अपना जीवन बचाना चाहा, वह उसे खोएगा, परन्तु जो मेरे लिए अपना जीवन खोएगा, वह उसे पाएगा।” (मत्ती 16:25)

□ □□□□ □□□□ □□□□ □□?

इस पद में प्रभु यीशु मसीह ने एक गहरी आत्मिक सच्चाई प्रकट की है। यह संसारिक जीवन और अनन्त जीवन के बीच के अंतर को दर्शाता है।

#### 1. “जिसने अपना जीवन बचाना चाहा, वह उसे खोएगा” –

- यदि कोई व्यक्ति सिर्फ अपनी खुद की इच्छाओं, सुख-सुविधाओं और सांसारिक लाभ को प्राथमिकता देता है और परमेश्वर की इच्छा को अनदेखा करता है, तो वह आखिरकार अपना जीवन (आत्मिक और अनन्त जीवन) खो देगा।
- यह हमें यह सिखाता है कि यदि हम केवल सांसारिक चीज़ों, धन-दौलत, प्रतिष्ठा और भौतिक सुखों के पीछे भागते हैं और परमेश्वर के मार्ग पर नहीं चलते, तो

यह जीवन व्यर्थ हो जाएगा।

2. "परन्तु जो मेरे लिए अपना जीवन खोएगा, वह उसे पाएगा" –

- यदि कोई व्यक्ति यीशु मसीह के लिए अपना जीवन समर्पित करता है और उसके मार्ग का अनुसरण करता है, भले ही उसे कष्ट, पीड़ा या कठिनाइयों का सामना करना पड़े, तो वह वास्तव में अनन्त जीवन पाएगा।
- इसका अर्थ है कि जो व्यक्ति यीशु के नाम पर अपने स्वार्थ, अभिमान और सांसारिक इच्छाओं को त्याग देगा, वह अनन्त जीवन में महिमा पाएगा।

□ :

1. रब्बी हAILEL का सिद्धांत था:

- "यदि मैं अपने लिए नहीं हूं तो कौन मेरे लिए होगा? और यदि मैं केवल अपने लिए हूं तो मैं क्या हूं?"
- यह इस विचार से मेल खाता है कि केवल अपने स्वार्थ के लिए जीना अंततः हमें खोखला बना देता है।

2. संत ऑगस्टीन (St. Augustine) ने कहा:

- "यदि हम ईश्वर के लिए अपने जीवन को छोड़ते हैं, तो हम उसे अनन्त रूप से अधिक प्राप्त करते हैं।"
- इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर के लिए अपने जीवन को समर्पित करने में ही सच्चा जीवन है।

3. संत टेरेसा ऑफ़ अवीला (St. Teresa of Avila) ने कहा:

- "जो आत्मा अपने प्रभु को पूर्ण रूप से समर्पित कर देती है, वही सच्ची स्वतंत्रता और आनंद प्राप्त करती है।"
- यहाँ वही सिद्धांत दिखता है कि यीशु के लिए अपने जीवन को समर्पित करना ही असली जीवन है।

□ □ □ □ □ □ :

### 1. प्रेरित पौलुस (Paul the Apostle) –

- उन्होंने मसीह के लिए अपना जीवन समर्पित किया, तमाम यातनाएँ सही, और अंततः अपने बलिदान के द्वारा अनन्त जीवन प्राप्त किया।
- उन्होंने कहा: "मेरे लिए जीवित रहना मसीह है और मरना लाभ है।" (फिलिप्पियों 1:21)

### 2. मसीही शहीद (Christian Martyrs) –

- प्रारंभिक चर्च में बहुत से मसीही विश्वासियों ने यीशु मसीह के नाम पर अपने प्राणों की आहुति दी और अनन्त जीवन की आशा में संसारिक जीवन को महत्व नहीं दिया।
- संत स्टेफन (Stephen), जो पहले मसीही शहीद थे, उन्होंने अपने जीवन को समर्पित कर दिया लेकिन स्वर्गीय महिमा प्राप्त की।

▲ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ ?

### 1. समर्पण और बलिदान का सिद्धांत –

- यह पद हमें सिखाता है कि हमें यीशु मसीह के लिए अपने जीवन को समर्पित करना चाहिए। इसका अर्थ यह नहीं कि हमें अपना जीवन समाप्त कर लेना है, बल्कि अपनी इच्छाओं को यीशु के अधीन कर देना है।
- आज के मसीही विश्वासी अपनी इच्छाओं को छोड़कर परमेश्वर की इच्छा के अनुसार जीवन जीते हैं।

## 2. संसारिक लाभ और आत्मिक जीवन के बीच चुनाव –

- दुनिया की नज़र में जो लोग यीशु मसीह के लिए अपना जीवन खोते हैं, वे मूर्ख लग सकते हैं, लेकिन परमेश्वर की दृष्टि में वे अनन्त जीवन के उत्तराधिकारी बनते हैं।
- चर्च में यह पद परीक्षा, कठिनाइयों, और बलिदान सहने की शक्ति देता है।

## 3. मसीही सेवा (Christian Ministry) –

- बहुत से लोग इस वचन के आधार पर चर्च सेवा, मिशनरी कार्य, और गरीबों की सहायता करने के लिए अपने सांसारिक आराम को छोड़ देते हैं।
- जैसे मदर टेरेसा ने गरीबों की सेवा में अपना जीवन समर्पित किया।

□ □□□ □□□□ □ □ □□□□□□□ (□□□□ □□□ □□□ □ □ □□□  
□ □ □□□□□□)

+ हे प्रभु यीशु मसीह,

मैं तुझसे प्रार्थना करता हूँ कि मेरी आत्मा तेरे प्रेम और अनुग्रह में स्थिर बनी रहे।

जो कुछ मैं संसार में चाहता हूँ, उससे मेरा मन हटाकर तेरी इच्छा को खोजने में लगाऊँ।

मेरे जीवन को अपने हाथों में ले ले ताकि मैं तेरे मार्ग पर चल सकूँ।

मुझे वह बल दे कि मैं अपनी इच्छाओं को त्यागकर तेरी महिमा और तेरा प्रेम दूसरों को दिखा सकूँ।

जैसे तूने हमें सिखाया, मैं अपनी जीवन को संसार की चीजों के लिए नहीं, बल्कि तेरे लिए दे सकूँ।

प्रभु, जब परीक्षा आए, जब कठिनाइयाँ आएँ, तब भी मैं तुझमें विश्वास बनाए रखूँ।

मुझे आत्मिक बलिदान के लिए तैयार कर और अनन्त जीवन के लिए मार्गदर्शन कर।

**यीशु मसीह के नाम में, आमीन!**

---

### बाइबल पदः

#### लैब्यव्यवस्था 27:28

"परन्तु जो कुछ किसी व्यक्ति की वस्तुओं में से यहोवा के लिये अर्पित (हरम) किया गया हो, वहे मनुष्य हो, वहे पशु, वहे उसकी निज भूमि में से कुछ, वह बेचा न जाए और न छुटकारे में छोड़ा जाए; क्योंकि वह अर्पित (हरम) की गई वस्तु परमपवित्र है यहोवा के लिये।"

#### गिनती 18:14

"इस्राएल में जो कुछ अर्पित (हरम) किया जाएगा वह तेरा ही होगा।"

---

### 1. अर्पित (हरम) (मरम - Cherem) का अर्थः

बाइबल में "अर्पित (हरम)" एक ऐसी वस्तु या व्यक्ति होता है जो पूरी तरह यहोवा को समर्पित

कर दिया गया हो और जिसे न तो बेचा जा सकता है और न ही छुड़ाया जा सकता है। यह वस्तु परमपवित्र मानी जाती थी। इसका अर्थ दो तरीकों में आता है:

1. **पूरी तरह यहोवा को समर्पित वस्तु, जैसे मंदिर के रखरखाव के लिए दी गई भूमि या संपत्ति।**
  2. **नाश किए जाने के लिए समर्पित वस्तु, जैसे जब किसी शहर या वस्तु को यहोवा के न्याय में नष्ट करने के लिए दे दिया जाता था (यहोशू 6:17 - परीहो का अर्पित (हरम) किया जाना)।**
- 

## **2. अर्पित (हरम) की व्याख्या:**

अर्पित (हरम) के बारे में रब्बियों की अलग-अलग राय थी कि जब कोई चीज़ अर्पित (हरम) की जाती है, तो वह किसके पास जानी चाहिए।

### **(i) मंदिर को दिया गया अर्पित (हरम)**

कुछ रब्बियों का मानना था कि जब कोई वस्तु या भूमि अर्पित (हरम) की जाती थी और उसका कोई विशेष स्थान नहीं बताया जाता था, तो वह मंदिर (*Bedek HaBayit* - בְּדֵק הַבָּיִת) के लिए होती थी।

**राशी (Rashi)** के अनुसार, यदि किसी व्यक्ति ने किसी वस्तु को अर्पित (हरम) किया, तो वह मंदिर के खजाने में चला जाता था, जिससे मंदिर की मरम्मत और रखरखाव हो सके।

### **(ii) याजकों को दिया गया अर्पित (हरम)**

दूसरी ओर, कुछ रबियों का मानना था कि अर्पित (हरम) की गई वस्तु याजकों (Kohanim - מנהים) को मिलती थी।

गिनती 18:14 के आधार पर, तनै काम्मा (Tanna Kamma) और राशी ने भी इस दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया कि अर्पित (हरम) की गई वस्तुएँ याजकों की संपत्ति बन जाती थीं और वे इसे अपने उपयोग में ला सकते थे।

---

### 3. कौन-कौन सी चीज़ें अर्पित (हरम) हो सकती थीं?

(i) अर्पित (हरम) की जाने योग्य चीज़ें:

- गुलाम (परन्तु केवल कनानी गुलाम)
- पालतू पशु
- पैतृक भूमि (ancestral field)

(ii) कौन-सी चीज़ें अर्पित (हरम) नहीं की जा सकती थीं?

- हिन्दू गुलाम - क्योंकि वे स्थायी रूप से बेचे नहीं जा सकते थे।
  - बेटा या बेटी - क्योंकि माता-पिता को उन पर पूर्ण अधिकार नहीं होता।
  - खरीदी हुई भूमि - क्योंकि यह व्यक्ति की पैतृक संपत्ति नहीं होती।
- 

### 4. अर्पित (हरम) का आध्यात्मिक महत्व और न्याय

(i) यहोशू और यरीहो का अर्पित (हरम) (यहोशू 6:17-19)

जब इस्राएली यरीहो शहर में घुसे, तब यहोवा ने आज्ञा दी कि पूरा शहर अर्पित (हरम) कर दिया जाए। इसका अर्थ था कि लोग उसे अपने उपयोग के लिए नहीं रख सकते थे; सब कुछ यहोवा के लिए समर्पित था या नष्ट कर दिया जाना था।

लेकिन अखान नाम के व्यक्ति ने चोरी से कुछ वस्तुएँ रख लीं, जिससे इस्राएल पर विपत्ति आ गई (यहोशू ७)। इससे यह स्पष्ट होता है कि अर्पित (हरम) की गई चीज़ें परमपवित्र होती थीं और उनका अनादर यहोवा की दृष्टि में पाप था।

#### (ii) यहेफ्ताह की बेटी का अर्पित (हरम) (न्यायियों 11:30-39)

यहेफ्ताह ने यहोवा से वादा किया कि यदि वह युद्ध जीतता है, तो वह जो भी सबसे पहले उसके घर से निकलेगा, उसे अर्पित (हरम) कर देगा। दुर्भाग्य से, उसकी बेटी बाहर निकली। चूँकि अर्पित (हरम) की गई चीज़ें न तो बेची जा सकती थीं और न ही छुड़ाई जा सकती थीं, उसकी बेटी को आजीवन कँवारी रहने दिया गया।

## 5. आज के मसीही चर्च में अर्पित (हरम) का क्या महत्व है?

मसीही सिद्धांत में, अर्पित (हरम) की संकल्पना का सीधा अनुप्रयोग नहीं किया जाता, क्योंकि यीशु मसीह ने अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा पुराने नियम की बलिदान व्यवस्था को पूरा कर दिया (इब्रानियों 10:10-14)।

हालाँकि, आध्यात्मिक दृष्टिकोण से अर्पित (हरम) का सिद्धांत हमें सिखाता है कि हमें अपने जीवन को पूरी तरह से परमेश्वर को समर्पित कर देना चाहिए।

यीशु ने कहा:

**”जिसने अपना जीवन बचाना चाहा, वह उसे खोएगा, परन्तु जो मेरे लिए अपना जीवन खोएगा, वह उसे पाएगा।” (मत्ती 16:25)**

इसका अर्थ यह है कि जो व्यक्ति परमेश्वर के लिए अपने जीवन को पूरी तरह से समर्पित कर देता है, वही सच्चे अर्थ में जीवन पाता है।

---

## 6. प्रभु यीशु मसीह से संबंधित एक प्रार्थना:

अर्पित (हरम) का सिद्धांत हमें यह सिखाता है कि हमें स्वयं को पूरी तरह से यहोवा को समर्पित करना चाहिए। प्रभु यीशु मसीह ने भी यही किया जब उन्होंने कहा:

”हे पिता, यदि तू चाहे तो इस कटोरे को मुझ से हटा ले; तौभी मेरी नहीं, परन्तु तेरी ही इच्छा पूरी हो।” (लूका 22:42)

### प्रार्थना:

”हे स्वर्गीय पिता, मैं अपने जीवन को तेरे चरणों में समर्पित करता हूँ। जैसे यीशु मसीह ने तेरी इच्छा को पूरी करने के लिए स्वयं को समर्पित किया, वैसे ही मैं भी अपना सब कुछ तुझे अर्पित करता हूँ। मेरी आत्मा, मेरी बुद्धि, और मेरे कार्य - सब कुछ तेरी महिमा के लिए हो। मेरे मन में कोई भी चीज़ ऐसी न रहे जो तुझसे दूर करती हो। जो भी मैं करूँ, वह तेरी इच्छा के अनुसार हो, और मेरा जीवन तेरा ही हो। यीशु मसीह के नाम में, आमीन।”

---

### निष्कर्ष:

**अर्पित (हरम) का अर्थ यहोवा के लिए पूरी तरह समर्पित वस्तु होता है।**

कुछ रब्बियों के अनुसार, अर्पित (हरम) की गई वस्तुएँ मंदिर के लिए होती थीं, जबकि अन्य के अनुसार, वे याजकों को दी जाती थीं।

**उदाहरण: यरीहो का अर्पित (हरम), यहेफ्ताह की प्रतिज्ञा।**

आज के मसीही विश्वास में इसका अर्थः हमें अपने जीवन को पूरी तरह से यहोवा को समर्पित करना चाहिए।

**यीशु मसीह ने हमें पूर्ण समर्पण का उदाहरण दिया, और हमें उनके समान प्रार्थना करनी**

**चाहिए कि हमारी इच्छा नहीं, बल्कि परमेश्वर की इच्छा पूरी हो।**

P146 Le.12:21 Slaughtering animals, according to Torah, before eating

**लेवितिकस 13:21 (हिंदी बाइबल पद)**

**"परन्तु यदि याजक उसे देखे, और देखे कि उसमें श्वेत केश नहीं है, और वह त्वचा से गहरी नहीं है, और वह धुंधली है, तो याजक उसे सात दिन के लिये अलग रखे।"**

**इस पद की हिंदी में व्याख्या**

यह पद त्वचा की बीमारी (सरात - कुष या अन्य चमड़ी रोग) की पहचान और जांच के बारे में है।

याजक (पुरोहित) को यह जांच करनी थी कि कोई व्यक्ति शुद्ध (स्वस्थ) है या अशुद्ध (रोगी)।

**यदि त्वचा का दाग:**

**श्वेत केश (सफेद बाल) नहीं दिखाता,**

**त्वचा की सतह से गहरी नहीं होती,**

## धुंधली होती है (यानि, तेज सफेद नहीं होती)

तो याजक उस व्यक्ति को तुरंत अशुद्ध घोषित नहीं करता, बल्कि उसे 7 दिन तक अलग

(क्वारंटाइन) रखता। यदि सात दिन बाद लक्षण बदलते हैं, तो वह उसे शुद्ध या अशुद्ध

घोषित करता।

---

## रब्बियों की व्याख्याएं और उनके दृष्टिकोण

### 1. "याजक उसे देखे" (וְרָא נָהָר)

#### मालबिम (Malbim):

इस पद में "याजक उसे देखे" का दोहराव यह बताता है कि याजक को पूरी चमड़ी की स्थिति

एक साथ देखनी चाहिए, न कि केवल एक भाग।

#### इब्र एज़रा (Ibn Ezra):

- उन्होंने व्याकरणिक रूप से समझाया कि "רָא נָהָר" शब्द में 'ר' अक्षर में *dagesh* (एक व्याकरणिक बिंदु) इसलिए है क्योंकि इसमें *heh* की अनुपस्थिति को दर्शाया गया है, जैसे अन्य समान हिब्रू शब्दों में होता है।
- 

### 2. "और देखे कि उसमें श्वेत केश नहीं है" (וְהִנֵּה אֵין בָּה שְׁעָר לְבָן)

#### रलबग (Ralbag):

- यदि चमड़ी में सफेद बाल नहीं आया, तो यह पूर्ण कुष नहीं माना जाता।

□ **तोरा तेमीमा (Torah Temimah):**

- “इसमें नहीं है” का अर्थ यह है कि न केवल रोगित क्षेत्र में सफेद बाल नहीं होना चाहिए, बल्कि उसके पास के हिस्से में भी नहीं।

□ **मालबिम (Malbim):**

- यदि जलने या धाव के स्थान पर सफेद बाल आता है, तो यह बिमारी का संकेत हो सकता है।
- 

3. "और वह त्वचा से गहरी नहीं है" (אינה מן העור)

□ **राशी (Rashi):**

- यदि सफेद बाल नहीं है और दाग गहरा नहीं है, तो यह गंभीर बीमारी का संकेत नहीं है।

□ **चिजकुनी (Chizkuni):**

- “इन्हेना” शब्द को प्रश्नवाचक रूप में भी देखा जा सकता है: क्या यह गहरी नहीं है? इससे स्पष्ट होता है कि यदि रोग की तीव्रता हल्की है, तो व्यक्ति को अभी अलग रखना चाहिए।

□ **रलबग (Ralbag):**

- यदि दाग त्वचा की गहराई से भिन्न नहीं है, तो यह बहरत (एक प्रकार का कुष्ठ) नहीं है, बल्कि एक साधारण फफोला हो सकता है।

□ **रव हिर्श (Rav Hirsch):**

- यह पद त्वचा रोगों के विभिन्न स्तरों को दर्शाता है। यदि दाग गहरा नहीं है, तो इसका रंग हल्का हो सकता है।
- 

#### 4. "और वह धुधली है" (והיא כהה)

**बरकात अशर (Birkat Asher):**

- यदि सफेद चमड़ी हल्की है, तो याजक इंतजार करेगा क्योंकि यह रोग गहरा भी हो सकता है।

**चिजकुनी (Chizkuni):**

- यदि दाग न अधिक गहरा है, न अधिक सफेद है, तो 7 दिनों तक प्रतीक्षा करना सही होगा।

**दाविद ज़्वी हॉफमैन (David Zvi Hoffmann):**

- यदि त्वचा सफेद नहीं हुई, तो यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि वह समय के साथ कैसे बदलती है।
- 

#### 5. "तो याजक उसे सात दिन के लिये अलग रखें" (ואהגירו הכהן שבעת ימים)

**रलबग (Ralbag):**

- यह दिखाता है कि रोग की पहचान तुरंत नहीं होती; इसलिए एक परीक्षण आवश्यक है।

स्टेन्साल्ट्ज़ (Steinsaltz):

- रोग को स्पष्ट करने के लिए अलग रखने की प्रक्रिया की आवश्यकता थी।
- 

## आज के मसीही चर्च में इसका क्या महत्व है?

### 1. आध्यात्मिक रोग (पाप) का प्रतीक:

- कुष का रोग अक्सर पाप का प्रतीक माना गया है। जैसे याजक रोग की जांच करता था, वैसे ही परमेश्वर हमारे पापों को परखते हैं।

### 2. शुद्धि की प्रक्रिया:

- जैसे याजक ने रोगी को अलग रखा, वैसे ही प्रभु यीशु ने हमें आत्मिक शुद्धि की प्रक्रिया में डाला ताकि हम पवित्र बन सकें।

### 3. यीशु मसीह के द्वारा चंगाईः

- यीशु ने कुष रोगियों को चंगा किया (लूका 17:12-14), जो दिखाता है कि केवल परमेश्वर की शक्ति हमें शुद्ध कर सकती है।

### 4. समाज और देखभाल:

- पुराने नियम में कुष रोगी को अलग रखा जाता था, लेकिन मसीही समुदाय को बीमारों की सेवा करने और सहायता देने के लिए बुलाया गया है (मत्ती 25:36)।
-

## प्रार्थना (यीशु मसीह के जीवन से प्रेरित)

हे यहोवा,

हम आपके अनुग्रह के लिए धन्यवाद करते हैं। जैसे याजक ने रोगी की जांच की, वैसे ही आप हमारे दिलों की जांच करें और हमें शुद्ध करें। हम आपके प्रेम और दया के लिए धन्यवाद करते हैं, जिससे आपने यीशु मसीह के द्वारा हमें शुद्ध किया। जैसे यीशु ने कुष रोगियों को चंगा किया, वैसे ही हमारे आत्मिक और शारीरिक रोगों को ठीक करें। हमें धैर्य दें कि हम आपकी योजना के अनुसार चल सकें। प्रभु यीशु के नाम में, आमीन।

P147 Le.17:13 Covering with earth the blood of slain fowl and beast

#### बाइबल पदः लैब्यव्यवस्था 17:13 (हिंदी में)

"और इस्राएलियों में से वा उनके बीच रहनेवाले परदेशियों में से जो कोई शिकार करके कोई पशु वा पक्षी, जो खाने योग्य हो, पकड़े, वह उसका लह बहाकर मिट्टी से ढाँप दे।"

(हिंदी बाइबल: *Hindi Bible - O.V.*)

---

## हिंदी में (Explanation in Hindi)

लैब्यव्यवस्था 17:13 में यह आज्ञा दी गई है कि इस्राएल के लोगों और उनके बीच रहने वाले परदेशियों को, जब वे शिकार करें और कोई जंगली पशु (जैसे हिरण) या पक्षी (जैसे कबूतर) पकड़ें जो खाने के योग्य हो, तो उसका लह जमीन पर बहाना होगा और फिर उस लह को मिट्टी से ढक देना होगा। यह नियम दो मुख्य बातों पर जोर देता है:

1. \*\*लहू बहाना\*\* - पशु या पक्षी को मारने के बाद उसका खून जमीन पर डालना।

2. \*\*मिट्टी से ढकना\*\* - खून को मिट्टी या धूल से पूरी तरह छिपा देना।

यह नियम यहूदी धर्म में खून के प्रति सम्मान और पवित्रता को दर्शाता है, क्योंकि बाइबल के

अनुसार "प्राण लहू में है" (लैब्यव्यवस्था 17:11)। इसलिए खून को खाना मना था और उसे

ढकना जरूरी था ताकि वह अपवित्र न हो या गलत इस्तेमाल न हो सके।

---

### रब्बियों की व्याख्या और उदाहरण (Rabbinic Interpretations with Examples in Hindi)

यहूदी रब्बियों ने इस आयत के अलग-अलग हिस्सों की गहरी व्याख्या की है। नीचे कुछ मुख्य बिंदु और उदाहरण दिए गए हैं:

#### #### 1. "जो शिकार करके पकड़े" (Who takes in hunting)

- \*\*राशि (Rashi):\*\* कहते हैं कि यह नियम सिर्फ जंगली शिकार तक सीमित नहीं है। उदाहरण के लिए, अगर कोई घर में पाले हुए हंस या मुर्गी को मारता है, तो भी उसका खून ढकना जरूरी है। "शिकार" शब्द का मतलब यहाँ व्यापक है - जो पहले से पकड़ा हुआ हो, वह भी शामिल है।

- \*\*बिरकत आशेर (Birkat Asher):\*\* कहते हैं कि "शिकार" शब्द यह सिखाता है कि मांस खाने से पहले इंसान को मेहनत और तैयारी की मानसिकता रखनी चाहिए। जैसे कोई शिकारी मेहनत करता है, वैसे ही मांस को हल्के में नहीं लेना चाहिए। इससे मांस की लालसा कम हो सकती है। उदाहरण: अगर कोई हर दिन मांस खाता है, तो उसे गरीबी का डर रहता है।

- \*\*तोरा तमीमा (Torah Temimah):\*\* कहते हैं कि यह नियम उन जानवरों पर भी लागू होता है

**जो शिकार से नहीं, बल्कि खरीदे गए, उपहार में मिले या विरासत में मिले हों।**

#### #### 2. "पशु या पक्षी" (Beast or Fowl)

- \*\*चिजकुनी (Chizkuni):\*\* यह नियम जंगली जानवरों (जैसे हिरण) और ज्यादातर पक्षियों (जैसे कबूतर) पर लागू है, लेकिन पालतू जानवरों (जैसे गाय, भेड़) पर नहीं। उदाहरण: गाय का खून बलि के लिए वेदी पर चढ़ाया जाता है, इसलिए उसे टकने की जरूरत नहीं।
- \*\*मालबिम (Malbim):\*\* "या" शब्द यह दिखाता है कि पशु और पक्षी अलग-अलग श्रेणियाँ हैं, और दोनों के खून को टकना जरूरी है।

#### #### 3. "जो खाने योग्य हो" (That may be eaten)

- \*\*राशि और मालबिम:\*\* यह नियम सिर्फ शुद्ध (कोषेर) जानवरों और पक्षियों पर लागू है। अशुद्ध जानवर (जैसे सुअर) या घायल जानवर (तेरेफाह) का खून टकने की जरूरत नहीं। उदाहरण: अगर कोई सुअर को मारता है, तो यह नियम लागू नहीं होगा।

#### #### 4. "उसका लह बहाकर" (Pour out its blood)

- \*\*डेविड ज्वी हॉफमैन (David Zvi Hoffmann):\*\* कहते हैं कि खून को सही तरीके से बहाना चाहिए, जैसे कि शेचिता (यहूदी विधि से हलाल करना)। उदाहरण: अगर कोई जानवर को गलत तरीके से मारे, तो वह खाने योग्य नहीं होगा।
- \*\*मालबिम:\*\* खून को सम्मान से बहाना चाहिए, पैर से नहीं, ताकि आज्ञा का आदर हो।

#### #### 5. "मिट्टी से ढाँप दे" (Cover it with dirt)

- \*\*गमारा (Gemara):\*\* "मिट्टी" का मतलब सिर्फ धूल नहीं, बल्कि कोई भी चीज जो पौधे उगाने में मदद करे, जैसे कुचले पत्थर या राख। उदाहरण: रेत या गोबर काम नहीं करेगा।

- \*\*बेखोर शोर (Bekhor Shor):\*\* खून के नीचे और ऊपर मिट्टी होनी चाहिए, ताकि वह पूरी

तरह ढक जाए।

- \*\*रंबन (Ramban):\*\* कहते हैं कि खून को ढकने का कारण यह है कि इसमें प्राण होता है,

और इसे सम्मान देना चाहिए। उदाहरण: जैसे किसी इंसान के शरीर को दफनाया जाता है।

- \*\*स्फोर्नो (Sforno):\*\* कहते हैं कि जंगली इलाकों में खून को ढकने से शैतानी ताकतों

को दूर रखा जाता है।

### **कारण (Reasons for Covering):**

- सम्मान: खून में प्राण होता है, इसलिए उसे ढकना सम्मान का प्रतीक है।

- खून खाने से रोकना: कली याकर कहते हैं कि यह खून को अखाद्य बनाता है।

- मूर्तिपूजा से बचाव: इब्र एज्ञा कहते हैं कि यह मूर्तियों को चढ़ाए गए खून से भ्रम रोकता है।

---

### **आज के मसीही चर्च में इसका महत्व (Importance in Christianity**

#### **Today)**

आज मसीही चर्च में लैब्यव्यवस्था 17:13 का यह नियम \*\*प्रचलन में नहीं है\*\*। मसीही लोग पुराने नियम के इन खाद्य और बलि नियमों का पालन नहीं करते। प्रभु यीशु मसीह के क्रूस पर बलिदान के बाद, मसीहियों का मानना है कि ऐसे नियमों की जरूरत खत्म हो गई, क्योंकि यीशु का लहू सारी मानवता के लिए अंतिम बलिदान था (इब्रानियों 10:10)।

हालांकि, इस आयत से कुछ व्यापक सिद्धांत मसीही धर्म में देखे जा सकते हैं:

1. \*\*सृष्टि के प्रति सम्मान:\*\* जानवरों के खून को ढकने का विचार सृष्टि और जीवन के प्रति

**सम्मान को दर्शाता है।**

2. \*\*लहू का महत्व:\*\* मसीही धर्म में लहू का बहुत महत्व है, खासकर यीशु के बलिदान के संदर्भ में।

---

### **प्रभु यीशु मसीह के जीवन से जुड़ी प्रार्थना (Prayer in Hindi)**

यह प्रार्थना लैव्यव्यवस्था 17:13 के सम्मान और जीवन के महत्व के थीम पर आधारित है, और यीशु मसीह के बलिदान को ध्यान में रखती है:

"प्रिय स्वर्गीय पिता,

हम तेरी सृष्टि और जीवन के उपहार के लिए धन्यवाद करते हैं। प्रभु यीशु मसीह, तूने कूस पर अपना लहू बहाकर हमें पापों से छुटकारा दिया। हम प्रार्थना करते हैं कि तू हमें तेरी सृष्टि के प्रति सम्मान और कृतज्ञता का हृदय दे। हमें सिखा कि हम जो कुछ खाते और जीते हैं, उसमें तेरे प्रेम और बलिदान को याद करें। हमें अपने बनाए हुए संसार के जिम्मेदार प्रबंधक बना, और करुणा व श्रद्धा के साथ जीवन जिएँ। तेरे पवित्र नाम में, आमीन।"

यह प्रार्थना यीशु के जीवन और बलिदान से प्रेरित है, जो मसीही विश्वास का केंद्र है।

P148 De.22:7 On setting free the parent bird when taking the nest

### **बाइबल पद: व्यवस्थाविवरण 22:6-7 (हिंदी में)**

"यदि मार्ग में किसी वृक्ष पर वा भूमि पर चलते हुए तुम्हें कोई चिड़िया का घोंसला मिले, जिसमें बच्चे हों वा अण्डे हों, और माता उन बच्चों वा अण्डों पर बैठी हो, तो \*\*तुम माता को बच्चों समेत न लेना\*\*, परन्तु \*\*माता को निश्चय उड़ा देना\*\*, और बच्चों को अपने

**लिए ले लेना; \*\*जिससे तुम्हारा भला हो, और तुम्हारी आयु बढ़े\*\*।"**

(हिंदी बाइबल: *Hindi Bible - O.V.J*)

### हिंदी में (Explanation in Hindi)

व्यवस्थाविवरण 22:6-7 में यह आज्ञा (मित्ज़वाह) दी गई है कि अगर कोई व्यक्ति रास्ते में किसी पेड़ पर या जमीन पर चिड़िया का घोंसला देखे, जिसमें बच्चे या अंडे हों और माँ चिड़िया उन पर बैठी हो, तो उसे माँ को बच्चों या अंडों के साथ नहीं लेना चाहिए। पहले माँ चिड़िया को उड़ा देना जरूरी है, और फिर बच्चे या अंडे ले सकते हैं। इस आज्ञा को पूरा करने का इनाम यह है कि "तुम्हारा भला हो और तुम्हारी आयु बढ़े।"

यह नियम प्रकृति के प्रति दया और जीवन के सम्मान को सिखाता है। यह आसान लगने वाला कार्य है, लेकिन इसके पीछे गहरे नैतिक और आध्यात्मिक अर्थ हैं, जिन्हें रबियों ने विस्तार से समझाया है।

### रबियों की व्याख्या और उदाहरण (Rabbinic Interpretations with Examples in Hindi)

यहूदी रबियों ने इस मित्ज़वाह के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला है। नीचे उनकी मुख्य व्याख्याएँ और उदाहरण दिए गए हैं:

#### 1. प्रजाति की रक्षा (Protection of the Species)

- \*\*नचमनाइड्स (Nachmanides):\*\* कहते हैं कि यह नियम चिड़िया की प्रजाति को खत्म होने से बचाने के लिए है। अगर माँ और बच्चे दोनों ले लिए जाएँ, तो उस प्रजाति का अंत हो

सकता है। उदाहरणः अगर कोई हर घोंसले से माँ और अंडे ले ले, तो चिड़ियाँ खत्म हो जाएँगी।

## 2. दया और क्रूरता रोकना (Empathy and Prevention of Cruelty)

- \*\*माइमोनाइडेस (रंबम):\*\* कहते हैं कि यह मित्ज़वाह माँ चिड़िया के दुख को रोकने के लिए है। माँ अपने बच्चों से बहुत प्यार करती है, और उन्हें छीनना उसके लिए पीड़ादायक है। यह नियम हमें जानवरों के प्रति दया सिखाता है। उदाहरणः जैसे बछड़े और उसकी माँ को एक ही दिन में मारना मना है, वैसे ही यहाँ भी क्रूरता रोकने का ध्यान है।

- \*\*त्सेएनह उरेएनह:\*\* कहते हैं कि माँ का अपने बच्चों के लिए प्यार बहुत गहरा होता है, इसलिए हमें उसकी भावनाओं का सम्मान करना चाहिए।

## 3. आसान मित्ज़वाह का बड़ा इनाम (Reward for a "Light" Mitzvah)

- \*\*राशि (Rashi):\*\* कहते हैं कि यह एक आसान आज्ञा है जिसमें कोई पैसा खर्च नहीं

होता, फिर भी इसके लिए बड़ा इनाम (भला और लंबी उम्र) वादा किया गया है। इससे पता चलता है कि कठिन आज्ञाओं का इनाम और भी बड़ा होगा। उदाहरणः अगर घोंसला मुफ्त में मिले, तो भी यह करना जरूरी है।

- \*\*गुर आर्ये (Gur Aryeh):\*\* कहते हैं कि यहाँ इनाम का जिक्र इसलिए है ताकि हम समझें कि बड़ी मित्ज़वोत का फल कितना महान होगा।

- \*\*तोरा तमीमा (Torah Temimah):\*\* गमारा से उद्धृत करते हैं कि यह मित्ज़वाह एक छोटे सिक्के जितनी हल्की है, फिर भी इसका इनाम बड़ा है।

## 4. लंबी उम्र का इनाम (Long Life as a Specific Reward)

- \*\*हामेक दावर (Haamek Davar):\*\* कहते हैं कि यहाँ "लंबी उम्र" इस दुनिया (\*Olam HaZeh\*) के लिए है, जबकि माता-पिता के सम्मान में "जमीन पर लंबे दिन" का मतलब

## आत्माओं की दुनिया (\*Olam HaNeshamot\*) से है।

- \*\*किल्ज़ुर Baal HaTurim:\*\* कहते हैं कि "और तुम्हारी आयु बढ़े" (וְאַתָּה מִימֵרְתָּךְ) का गिमत्रिया "एक पूरी तरह लंबी दुनिया" (וְאַתָּה מִלְבָד) के बराबर है, जो मृत्यु के बाद की जिंदगी को दर्शाता है।

- \*\*चटम सोफर (Chatam Sofer):\*\* कहते हैं कि यहाँ लंबी उम्र अपनी मेहनत से मिलती है, न कि दूसरों से ली गई उम्र की तरह। उदाहरण: यह योशुआ और कालेब के मामले से अलग है।

## 5. प्रतीकात्मक व्याख्या (Allegorical Interpretations)

- \*\*आदरेत एलियाहु (Aderet Eliyahu):\*\* कहते हैं कि "चिड़िया का घोंसला" मसीहा के प्रकट होने की जगह का संकेत है। यह मित्ज़वाह पश्चाताप और तोरा अध्ययन से मुक्ति से जुड़ी है।

- \*\*रोश (Rosh):\*\* कहते हैं कि "माँ" यरूशलेम है और "बच्चे" इस्राएल हैं। माँ को उड़ाना यरूशलेम के विनाश के बाद निर्वासन का प्रतीक है।

## 6. कब्बालाई व्याख्या (Kabbalistic Interpretations)

- \*\*चोमत अनाख (Chomat Anakh):\*\* कहते हैं कि माँ को उड़ाना परमेश्वर के क्रोध को दूर करने और अंतिम मुक्ति की प्रतीक्षा से जुड़ा है।

- \*\*मालबिम (Malbim):\*\* कहते हैं कि "שָׁגָן לְשָׁגָן" (निश्चय उड़ा देना) इस कार्य की महत्ता को दर्शाता है।

- \*\*सेफर हबहिर (Sefer Habahir):\*\* कहते हैं कि "माँ" बिनाह (आध्यात्मिक उत्पत्ति) है और

"बच्चे" सृष्टि के सात दिनों और सुक्कोत का प्रतीक हैं।

### 7. नैतिक विकास (Ethical Development)

- \*\*रालबाग (Ralbag):\*\* कहते हैं कि यह संभावित जीवन को नष्ट होने से बचाता है। उदाहरण:

अगर अंडे अभी नहीं चाहिए, तो घोंसले को छोड़ देना चाहिए ताकि प्रजाति बनी रहे।

---

## आज के मसीही चर्च में इसका महत्व (Importance in Christianity

### Today)

मसीही चर्च में यह मित्ज़वाह \*\*सीधे तौर पर लागू नहीं होती\*\*। मसीही लोग पुराने नियम की सभी आज्ञाओं का पालन नहीं करते, क्योंकि प्रभु यीशु मसीह के नए नियम ने इन नियमों को बदल दिया। फिर भी, इस मित्ज़वाह के पीछे के सिद्धांत मसीही मूल्यों से मेल खाते हैं:

1. \*\*दया और करुणा:\*\* जानवरों के प्रति दया दिखाना मसीही प्रेम और देखभाल के शिक्षण

से मिलता-जुलता है।

2. \*\*जीवन का सम्मान:\*\* प्रजाति को बचाना जीवन के प्रति सम्मान को दर्शाता है, जो परमेश्वर

को जीवन का दाता मानने से जुड़ा है।

3. \*\*सृष्टि की देखभाल:\*\* प्रजातियों की रक्षा करना मसीही सिद्धांत से मेल खाता है कि

मनुष्य को परमेश्वर की सृष्टि का प्रबंधक होना चाहिए।

हालांकि, मसीही धर्म में इस विशिष्ट आज्ञा का पालन करने की कोई बाध्यता नहीं है।

---

## प्रभु यीशु मसीह के जीवन से जुड़ी प्रार्थना (Prayer in Hindi)

इस मिल्ज़वाह के दया और जीवन के सम्मान के थीम को ध्यान में रखते हुए, और प्रभु यीशु की करुणा से प्रेरित एक प्रार्थना:

”हे दयालु परमेश्वर, सारी सृष्टि के रचयिता,

हम तेरी सुंदर और विविध सृष्टि के लिए धन्यवाद करते हैं। प्रभु यीशु मसीह, तूने अपने जीवन

में दया और प्रेम का उदाहरण दिया। हम प्रार्थना करते हैं कि तू हमें सभी प्राणियों के कल्याण

के प्रति संवेदनशील हृदय दे। हमें तेरे बनाए संसार के जिम्मेदार प्रबंधक बना, ताकि हम

अनावश्यक हानि से बचें और तेरे प्रेम व करुणा को प्रतिबिंబित करें। तेरे पवित्र नाम में,

आमीन।”

यह प्रार्थना यीशु के जीवन से प्रेरित है, जो दया और सृष्टि के प्रति प्रेम सिखाते हैं।

P149 Le.11:2 Searching for prescribed signs in beasts, for eating

बाइबल पद हिंदी में:

**लैब्यवरस्था 11:2 (Leviticus 11:2) - "इस्राएलियों से कहो, 'ये जीवधारी हैं जिन्हें तुम**

**पृथ्वी पर के सब पशुओं में से खा सकते हो।"**

### हिंदी में समझाइए:

यह पद लैब्यवरस्था अध्याय 11 की शुरुआत है, जो यहूदी धर्म में कोषेर (शुद्ध) खाद्य नियमों

को बताता है। इसमें परमेश्वर मूसा और हारून को निर्देश देते हैं कि वे इस्राएलियों को बताएं

कि कौन से जानवर खाने के लिए शुद्ध हैं और कौन से अशुद्ध। ”ज़ोत हचाया अशेर तोखेलु”

का अर्थ है ”ये जीवधारी हैं जिन्हें तुम खा सकते हो।” यहाँ यह समझाया गया है कि परमेश्वर ने

यह नियम इसाएलियों को इसलिए दिया ताकि वे पवित्र जीवन जिएं और अन्य राष्ट्रों से

अलग पहचाने जाएं। यह नियम यह भी दिखाते हैं कि कुछ जानवरों को खाने की अनुमति है  
(जैसे गाय, भेड़), जबकि कुछ निषिद्ध हैं (जैसे सूअर, ऊंट)।

### रब्बियों की व्याख्या और उदाहरण:

1. \*\*राशि (Rashi):\*\*

- राशि कहते हैं कि ”ज़ोत“ (ये) का मतलब है कि मूसा ने हर जानवर को हाथ में लेकर इसाएलियों को दिखाया और कहा, ”यह खा सकते हो, यह नहीं खा सकते।“ उदाहरण: मूसा ने एक गाय को दिखाकर कहा, ”यह शुद्ध है,“ और एक सूअर को दिखाकर कहा, ”यह अशुद्ध है।“

- ”हचाया“ (जीवधारी) का मतलब जीवन से है, जो यह दिखाता है कि इसाएलियों को जीवन देने वाले जानवर खाने चाहिए, क्योंकि वे परमेश्वर से जुड़े हैं।

2. \*\*मालबिम (Malbim):\*\*

- मालबिम कहते हैं कि ”ज़ोत“ का मतलब कुछ ऐसा है जो पास और सामने हो। यहाँ यह संकेत है कि मूसा ने जानवरों को सामने लाकर दिखाया। वे यह भी कहते हैं कि ”हचाया“ और ”बेहेमा“ (पशु) अलग-अलग श्रेणियाँ हो सकती हैं, लेकिन यहाँ ”हचाया“ में सभी शामिल हैं।

उदाहरण: गाय और हिरण दोनों ”हचाया“ में आते हैं।

3. \*\*तोरा तेमिमा (Torah Temimah):\*\*

- वे कहते हैं कि ”चाया अखोल शाइना चाया ला तोखाल“ का मतलब है ”जो जीवित है उसे खाओ, जो जीवित नहीं है उसे मत खाओ।“ इसका मतलब है कि अगर कोई जानवर ट्रैफा

(घातक दोष वाला) है, तो उसे नहीं खाना चाहिए। उदाहरणः अगर किसी भेड़ का पैर टूटा हो

और वह मरने वाला हो, तो वह अशुद्ध है।

#### 4. \*\*ओर हचाइम (Or HaChaim):\*\*

- वे कहते हैं कि मूसा और हारून ने हर तरह के जानवर को लेकर दिखाया और कहा, "यह खाओ, यह मत खाओ।" वे यह भी कहते हैं कि शुद्ध जानवरों में कोई बुराई नहीं होती। उदाहरणः बकरी शुद्ध है क्योंकि उसमें कोई आध्यात्मिक अशुद्धता नहीं है।

#### 5. \*\*स्फोर्नो (Sforno):\*\*

- स्फोर्नो कहते हैं कि ये नियम इस्राएलियों के चरित्र और बुद्धि को शुद्ध करने के लिए हैं ताकि वे अनन्त जीवन पा सकें। उदाहरणः सूअर खाने से मन अशुद्ध हो सकता है, इसलिए उसे मना किया गया।

#### 6. \*\*रब्बीनु बह्या (Rabbeinu Bahya):\*\*

- वे एक रहस्यमयी व्याख्या देते हैं कि शुद्ध जानवरों में बुराई नहीं होती और वे चार तत्वों (पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि) से जुड़े हैं। उदाहरणः गाय पृथ्वी से जुड़ी है और शुद्ध है।

#### 7. \*\*चटम सोफर (Chatam Sofer):\*\*

- वे कहते हैं कि सूअर जैसे जानवरों पर रोक शायद अस्थायी है, और भविष्य में जब दुनिया ठीक होगी, तो यह बदल सकता है। उदाहरणः सूअर को अभी मना किया गया है, लेकिन भविष्य में अनुमति मिल सकती है।

**आज के मसीही चर्च में इसका महत्वः**

आज के अधिकांश मसीही चर्चों में लैब्यव्यवस्था 11 के कोषेर नियमों का पालन नहीं किया जाता। मसीही मानते हैं कि ये नियम पुराने नियम के हैं और प्रभु यीशु मसीह के आने के बाद ये बाध्यकारी नहीं रहे। नया नियम, जैसे मरकुस 7:19 ("इस प्रकार उसने सब भोजन को शुद्ध ठहराया") और कुलुस्सियों 2:16 ("इसलिए कोई तुम्हें खाने-पीने के विषय में दोषी न ठहराए"), यह सिखाता है कि भोजन से ज्यादा मन की शुद्धता महत्वपूर्ण है। इसलिए, आज मसीही चर्चों में ये नियम धार्मिक रूप से लागू नहीं होते, और लोग सूअर, झींगा आदि खा सकते हैं। हालांकि, कुछ छोटे समूह या मसीही यहूदी शायद इन नियमों का पालन करें, पर यह आम नहीं है।

### **प्रभु यीशु मसीह के जीवन से प्रार्थना:**

यीशु ने अपने जीवन में प्रार्थना को बहुत महत्व दिया, जैसे मत्ती 6:9-13 में "हमारे पिता" प्रार्थना। लैब्यव्यवस्था 11 के संदर्भ में, हम एक प्रार्थना बना सकते हैं जो यीशु के जीवन से प्रेरित हो और भोजन व मन की शुद्धता पर ध्यान दे:

#### **\*\*प्रार्थना:\*\***

"हे हमारे स्वर्गीय पिता,

हम तेरी महिमा करते हैं और तेरे प्रेम के लिए धन्यवाद देते हैं।

जैसे प्रभु यीशु ने हमें सिखाया कि सच्ची शुद्धता मन से आती है,

हम प्रार्थना करते हैं कि तू हमें हर दिन का भोजन दे और हमारे हृदय को शुद्ध कर।

हमारी आत्मा को तेरे प्रेम और सत्य से भर दे,

ताकि हम तेरे पुत्र यीशु मसीह के समान जीवन जिएं।

तेरे राज्य, शक्ति और महिमा के लिए, हमेशा-हमेशा। आमेन।"

यह प्रार्थना यीशु के संदेश पर आधारित है कि बाहरी नियमों से ज्यादा आंतरिक पवित्रता मायने रखती है, जैसा कि उन्होंने मत्ती 15:11 में कहा, "जो मुंह में जाता है वह मनुष्य को अशुद्ध नहीं करता, पर जो मुंह से निकलता है वही उसे अशुद्ध करता है।"

P150 De.14:11 Searching for the prescribed signs in birds, for eating

### **व्याख्या और अनुवाद:**

**व्यवस्थाविवरण 14:11 (Deuteronomy 14:11) हिंदी में:**

"हर एक शुद्ध पक्षी को तुम खा सकते हो।"

### **हिन्दू वाक्य का हिंदी में अर्थ:**

यह पद स्पष्ट रूप से बताता है कि सभी शुद्ध (पवित्र) पक्षियों को खाने की अनुमति दी गई है।

---

### **रब्बियों की व्याख्या और उनके विचार:**

#### **1. सभी शुद्ध पक्षियों की अनुमति:**

इस पद का मुख्य अर्थ यह है कि जिन पक्षियों को शुद्ध माना गया है, वे खाने के लिए अनुमेय हैं।

#### **2. कोढ़ी (साफ किए जाने वाले व्यक्ति) के लिए छोड़ा गया पक्षी**

#### **(משולחת של מצורע) भी शामिल है:**

कुछ रब्बियों ने इस बारे में चर्चा की कि क्या "כ" (सब) शब्द का अर्थ यह भी है कि कोढ़ी की

शुद्धि के लिए छोड़ा गया पक्षी भी खाने योग्य है।

- **राशी (Rashi)** – उन्होंने सिफरी देवारिम और किदूशिन 57a का हवाला देते हुए कहा कि "נָטָר" का मतलब यह है कि यहाँ तक कि कोट्री की शुद्धि के लिए छोड़ा गया पक्षी भी खाने योग्य है।
  - **मालबीम (Malbim)** — उन्होंने स्पष्ट किया कि "נָטָר" का मतलब है कि हर एक शुद्ध पक्षी खाने योग्य है, और यह चिंता करने की कोई ज़रूरत नहीं कि वह कोट्री का छोड़ा हुआ पक्षी हो सकता है।
  - **सीफतेई चखामिम (Siftei Chakhamim)** — उन्होंने भी यह बताया कि "נָטָר" शब्द में कोट्री के छोड़े गए पक्षी भी शामिल हैं।
  - **पानेआच रजा (Paaneach Raza)** — उन्होंने "רְאֵפָצָל" (सभी पक्षी) शब्दों की गणना की और इसे "רְאֵה טְבָע" (शुद्ध पक्षी) के बराबर बताया।
- 

### 3. "ג/צִפּוּר" (Tzippor) और "ג/ע" (Of) के बीच का

#### अंतर:

रब्बियों ने चर्चा की कि हिब्रू में "רְאֵפָצָל" (चिड़िया/पक्षी) और "טְבָע" (पक्षी/उड़ने वाले जीव) में क्या अंतर है।

- **चिज्कुनी (Chizkuni)** — उन्होंने कहा कि जब भी बाइबल में "רְאֵפָצָל" (चिड़िया) शब्द आता है, तो वह हमेशा एक शुद्ध पक्षी को ही दर्शाता है।
- **रलबाग (Ralbag)** – उन्होंने कहा कि इस पद का अर्थ है कि सभी शुद्ध पक्षी बिना

किसी अतिरिक्त स्पष्टीकरण के खाने योग्य हैं।

- इब्र एजरा (Ibn Ezra) – उन्होंने कहा कि "רְאֵנָה" (चिड़िया) एक सामान्य शब्द है, जिसमें कबूतर और फाख्ता (dove & turtledove) जैसी उप-श्रेणियाँ आती हैं।
- 

## 4. मसीही चर्च में इस पद का आज क्या महत्व है?

मसीही विश्वास में, यीशु मसीह ने भोजन संबंधी व्यवस्थाओं को नया रूप दिया। नए नियम में, मरकुस 7:18-19 और प्रेरितों के काम 10:11-16 में स्पष्ट किया गया कि जो कुछ भी परमेश्वर ने शुद्ध किया है, उसे अशुद्ध न समझा जाए।

- मरकुस 7:18-19 – यीशु ने कहा कि बाहर से आने वाली चीज़ें व्यक्ति को अशुद्ध नहीं करतीं, बल्कि जो कुछ व्यक्ति के मन से निकलता है, वही अशुद्ध करता है।
- प्रेरितों के काम 10:11-16 – पतरस को एक दर्शन मिला, जिसमें परमेश्वर ने सभी भोजन को शुद्ध घोषित किया।

### निष्कर्ष:

आज अधिकांश मसीही चर्च इस पद को केवल एक ऐतिहासिक संदर्भ के रूप में देखते हैं, क्योंकि नए नियम में भोजन की पवित्रता को नए दृष्टिकोण से देखा गया है।

---

## 5. इस पद से संबंधित एक मसीही प्रार्थना:

चूंकि यह पद भोजन की पवित्रता और शुद्धता से संबंधित है, हम यीशु मसीह की शिक्षाओं को

ध्यान में रखते हुए एक प्रार्थना कर सकते हैं:

### प्रार्थना:

"हे प्रभु यीशु मसीह, तूने हमें सिखाया कि केवल बाहरी भोजन ही नहीं, बल्कि हमारे हृदय की शुद्धता भी महत्वपूर्ण है। हम तुझसे प्रार्थना करते हैं कि हमारे मन और आत्मा को भी तू शुद्ध कर, ताकि हम तेरी इच्छा के अनुसार जीवन जी सकें। हम तुझ पर भरोसा रखते हैं कि जो कुछ तूने शुद्ध किया है, वह हमारे लिए आशीष का कारण बने। आमीन।"

---

### संक्षेप में:

यह पद सभी शुद्ध पक्षियों को खाने की अनुमति देता है।

रब्बियों ने कोढ़ी के शुद्धिकरण से जुड़े पक्षी की भी चर्चा की।

"רֱאֵת" और "נָאע" शब्दों के बीच के अंतर को लेकर भी व्याख्या हुई।

मसीही चर्च में, इस पद को पुराने नियम की व्यवस्था के रूप में देखा जाता है, क्योंकि यीशु ने

भोजन को शुद्ध करने का नया दृष्टिकोण दिया।

हम इस पद से यह शिक्षा ले सकते हैं कि न केवल भोजन, बल्कि हमारे मन और आत्मा की शुद्धता भी महत्वपूर्ण है।

---

“लेकिन जो उड़नेवाले छोटे जन्तु चार पाँव के होते हैं, उनमें से जिनके पिछले पाँवों के ऊपर और जोड़वाले पैर होते हैं, ताकि वे पृथ्वी पर छलाँग लगा सकें, वही तुम्हारे लिए खाने योग्य होंगे।”

---

## इस पद की व्याख्या

इस पद में परमेश्वर ने यह स्पष्ट किया कि सभी उड़नेवाले छोटे जीव (जैसे टिड़ियाँ और टिक्के जैसे कीड़े) अशुद्ध नहीं होते। कुछ ऐसे हैं जिन्हें खाया जा सकता है, और उनकी मुख्य विशेषता यह है कि उनके पास जोड़वाले पैर होते हैं जो उनके चलने वाले पैरों के ऊपर होते हैं और उन्हें कूदने में मदद करते हैं।

---

## रब्बियों की व्याख्या

### 1. राशी (Rashi)

- “ऊपर उनके पैरों” का अर्थ यह है कि ये जोड़वाले पैर उनके गर्दन के पास होते हैं।
- इन अतिरिक्त दो पैरों से वे उड़ते समय और कूदने में सहायता पाते हैं।
- उन्होंने यह भी कहा कि भले ही कुछ कीड़े बाहरी रूप से यह सभी गुण रखते हों, फिर भी यह ज़रूरी है कि वे “चागव” (locust) नाम की जाति से हों।
- उनके समय में यह पहचानना मुश्किल था कि कौन सा कीड़ा सही मायने में “चागव” है, इसलिए उन्होंने इनके खाने पर अनिश्चितता जताई।

### 2. इब्र एज्रा (Ibn Ezra)

- वे इस पद के शब्दों की व्याकरणिक व्याख्या देते हैं और बताते हैं कि "ले-नतर"
- शब्द का अर्थ "कूदना" है।

### 3. बारतेनूरा (Bartenura)

- उन्होंने राशी की व्याख्या को दोहराते हुए कहा कि केवल वही टिक्कियाँ और टिक्के खाने योग्य हैं, जिनके शरीर की पहचान "चागव" जाति में होती है।
- यदि उनके सिर का आकार लंबा हो या उनकी पूँछ न हो, तो उन्हें "चागव" कहलाने की प्रमाणिकता होनी चाहिए।

### 4. बिरकत आशेर (Birkat Asher)

- राशी के अनुसार, अगर किसी कीड़े में सभी सही लक्षण भी मिल जाएँ, लेकिन यह प्रमाणित न हो कि वह "चागव" जाति में आता है, तो उसे खाने की अनुमति नहीं है।
- यहूदी परंपरा में यमन और मोरक्को में कुछ समुदायों ने इन्हें खाने की अनुमति दी, क्योंकि उन्होंने इन्हें पारंपरिक रूप से खाया है।
- और हचाईम (Or HaChaim) इस दृष्टिकोण का विरोध करते हैं और कहते हैं कि यदि किसी कीड़े के जोड़वाले पैर गर्दन के पास नहीं हैं, तो वह निषिद्ध है।

### 5. डेविड ज़्वी हॉफमैन (David Zvi Hoffmann)

- उन्होंने स्पष्ट किया कि यह नियम सामान्य सिद्धांत (जोड़वाले पैर) और विशिष्ट उदाहरणों (चार प्रकार की टिक्कियों) में विभाजित है।
- उन्होंने पाँच मुख्य विशेषताएँ बताईं जो किसी कीड़े को शुद्ध (कोशेर) बनाती हैं:
  1. चार चलने वाले पैर।

2. दो बड़े जोड़वाले पैर (कूदने के लिए)।

3. चार पंख।

4. पंख शरीर को ढकते हों।

5. इसका नाम "चागव" हो।

## 6. अडेरत एलियाहु (Aderet Eliyahu)

- उन्होंने यह जोड़ा कि यदि किसी टिक्के के पैर प्रारंभ में नहीं होते लेकिन बाद में विकसित होते हैं, तब भी वह खाने योग्य हो सकता है।

## 7. रलबाग (Ralbag Beur HaMilot)

- उन्होंने बताया कि ये पैर उड़ने के लिए नहीं बल्कि केवल कूदने के लिए होते हैं।

## 8. रेगियो (Reggio)

- उन्होंने सहमति जताई कि ये पैर गर्दन के पास होते हैं और उड़ने, चलने और कूदने के अतिरिक्त साधन के रूप में काम करते हैं।

## 9. स्टेन्साल्ट्ज़ (Steinsaltz)

- उन्होंने उल्लेख किया कि कई उत्तर अफ्रीकी और यमनी यहूदी परंपराओं में कुछ टिक्कों को खाने की परंपरा थी, लेकिन अन्य यहूदी समूहों ने इसे संदेह के कारण निषिद्ध माना।

**आज के मसीही चर्च में इसका क्या महत्व है?**

मसीही चर्च में यह नियम आज शाब्दिक रूप से पालन नहीं किया जाता, क्योंकि यीशु मसीह के आगमन के बाद आहार संबंधी नियमों की अनिवार्यता को समाप्त कर दिया गया (मरकुस 7:19, प्रेरितों के काम 10:15)।

हालाँकि, इस पद से एक आत्मिक शिक्षा ली जा सकती है:

- जिस प्रकार परमेश्वर ने अपने लोगों को शुद्ध और अशुद्ध आहार के माध्यम से पवित्रता का पाठ सिखाया, वैसे ही आज हमें आत्मिक रूप से पवित्रता का ध्यान रखना चाहिए।
- पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 10:31 में लिखा, "इसलिए तुम चाहे खाओ, चाहे पियो, चाहे जो कुछ करो, सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिए करो।"

इससे जुड़ी एक प्रार्थना (यीशु मसीह के जीवन से प्रेरित)

हे प्रभु यीशु,

आपने हमें सिखाया कि शुद्धता केवल बाहरी नियमों से नहीं, बल्कि हमारे हृदय की स्थिति से आती है।

जैसे आपने हमें पवित्र और अपवित्र चीज़ों के बीच अंतर करना सिखाया, वैसे ही हमें अपने जीवन में सही और गलत के बीच अंतर करने की समझ दें।

हमें उन चीज़ों से दूर रखें जो हमारे आत्मिक जीवन को दूषित करती हैं।

जैसे आपने कहा, "मनुष्य केवल रोटी से नहीं, परंतु परमेश्वर के मुँह से निकलने वाले प्रत्येक वचन से जीवित रहता है," हमें आपकी शिक्षा का पालन करने की शक्ति दें।

हमारे विचारों, शब्दों और कार्यों को शुद्ध करें, ताकि हम आपकी महिमा के लिए जी सकें।

## आमीन।

P152 Le.11:9 Searching for the prescribed signs in fish, for eating

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ 11:9 (Leviticus 11:9) - □ □ □ □ □ □ □

"जो जलचर प्राणी तुम्हारे खाने के योग्य हैं, वे ये हैं: जिन प्राणियों के पंख और छिलके हों, वे चाहे समुद्र में रहते हों या नदियों में, उन्हें तुम खा सकते हो।"

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

यह पद यहूदी धर्म में कोषेर (शुद्ध) माने जाने वाले जलीय प्राणियों की पहचान करने के नियम को स्पष्ट करता है। इसके अनुसार, केवल वही जलचर प्राणी खाने योग्य हैं जिनके पास

(1) पंख (fins) और (2) छिलके (scales) होते हैं। यदि किसी जलीय प्राणी में ये दोनों लक्षण नहीं हैं, तो वह अशुद्ध (non-kosher) माना जाता है और यहूदी आहार कानून (Kashrut) के अनुसार उसे खाना निषिद्ध है।

इस नियम का यह अर्थ है कि मछलियाँ, जिनमें पंख और छिलके होते हैं, वे खाई जा सकती हैं (जैसे सामन (salmon), टूना (tuna), ट्राउट (trout), आदि)। लेकिन झींगे (shrimp), केकड़े (crabs), लॉबस्टर (lobster), सीप (oysters) और अन्य ऐसे समुद्री जीव, जिनमें पंख और छिलके नहीं होते, वे यहूदी आहार के अनुसार वर्जित हैं।

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

# □ 1. □□□ (Rashi) □□ □□□□□□□□□:

रशी बताते हैं कि:

- "ਸ਼੍ਰਵਿਰ" (ਗੀਤ) ਕਾ ਅਰ्थ ਹੈ ਪੰਖ, ਜਿਸਦੇ ਮਛਲੀ ਤੈਰਤੀ ਹੈ।
  - "ਕਰਕਰੋਤ" (ਗੀਤ) ਕਾ ਅਰਥ ਹੈ ਛਿਲਕੇ, ਜੋ ਮਛਲੀ ਦੇ ਸ਼ਰੀਰ ਪਰ ਹੋਤੇ ਹਨ।
  - ਵੇਡ ਉਦਾਹਰਣ ਦੇਤੇ ਹਨ ਕਿ ਜਿਸ ਪ੍ਰਕਾਰ ਸੈਨਿਕ ਕਵਚ (armor) ਪਹਨਤੇ ਹਨ, ਉਸੀ ਪ੍ਰਕਾਰ ਮਛਲੀ ਦੇ ਸ਼ਰੀਰ ਪਰ ਛਿਲਕੇ ਹੋਤੇ ਹਨ।
  - ਵੇਡ ਯਹ ਭੀ ਕہتੇ ਹਨ ਕਿ ਯदਿ ਕਿਸੀ ਮਛਲੀ ਵਿੱਚ ਛਿਲਕੇ ਹਨ, ਤਾਂ ਉਸ ਵਿੱਚ ਪੰਖ ਭੀ ਅਵਵਧ ਹੋਣਗੇ, ਇਸਲਿਏ ਕੇਵਲ ਛਿਲਕੇ ਦੀ ਪਹਿਚਾਨ ਹੀ ਪਰਾਪਤ ਹੈ।

**उदाहरण:** सामन (Salmon) मछली के शरीर पर स्पष्ट छिलके होते हैं, इसलिए वह कोषेर (शुद्ध) है।

2. □□□□□ (Ramban) □□ □□□□□□□□□□:

रांबा ने यह स्पष्ट किया कि छिलके का अर्थ वही होना चाहिए, जिसे हाथ से अलग किया जा सके। यदि कोई मछली ऐसी हो जिसमें छिलके बहुत सख्त हों और अलग न किए जा सकें, तो उसे कोषेर नहीं माना जाएगा।

**उदाहरण:** केटफिश (Catfish) में पंख होते हैं लेकिन छिलके नहीं होते, इसलिए वह अशुद्ध मानी जाती है।

**तलमृद् (Chullin 66b) में कहा गया है:**

**"जिस किसी में छिलके हैं, उसमें पंख अवश्य होंगे।"**

इसका अर्थ यह है कि अगर किसी मछली में छिलके दिख जाएँ, तो उसके पंखों को देखने की जरूरत नहीं होती।

**उदाहरण:** टूना (Tuna) मछली कोषेर है क्योंकि उसमें छिलके होते हैं, भले ही वे छोटे और हल्के हों।

---

□ 4. □□□□□ □□□□□ □□□□□ (David Zvi Hoffmann) □□ □□□□□□□:

उन्होंने बताया कि शब्द "ר'גנו" (पंख) और "תשלק" (छिलके) के अर्थ में हिन्दू भाषा में गहराई से अध्ययन किया गया है। उन्होंने तलमुद के आधार पर यह सिद्ध किया कि पंख तैरने के लिए होते हैं और छिलके मछली के शरीर की सुरक्षा के लिए होते हैं।

---

□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□

□□?

मसीही विश्वास के अनुसार, प्रभु यीशु मसीह ने व्यवस्था को पूरा किया (मत्ती 5:17), और नए नियम में मसीहियों के लिए सभी भोजन शुद्ध घोषित किए गए।

- **मरकुस 7:19** - "यीशु ने कहा कि जो कुछ मनुष्य के भीतर जाता है वह उसे अशुद्ध नहीं करता, बल्कि जो उसके मन से निकलता है वही उसे अशुद्ध करता है।"
- **प्रेरितों के काम 10:10-15** - पतरस ने एक दर्शन में देखा कि स्वर्ग से एक चादर नीचे आई, जिसमें सभी प्रकार के जानवर थे, और प्रभु ने कहा: "जो कुछ मैंने शुद्ध कर दिया है, उसे तू अशुद्ध न कह।"

इसलिए, अधिकांश मसीही संप्रदायों में कोषेर नियमों का पालन नहीं किया जाता है, और सभी प्रकार की मछलियाँ और समुद्री भोजन खाने की अनुमति है।

हालाँकि, कुछ मेसीही यहूदी (Messianic Jews) और अन्य परंपरागत मसीही समूह अभी भी इस नियम को मानते हैं और केवल उन्हीं मछलियों को खाते हैं जिनमें पंख और छिलके होते हैं।

---

## □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ (Prayer Inspired by Jesus Christ)

□ "परमेश्वर का धन्यवाद करें कि उसने हमें भोजन दिया" □

"हे स्वर्गीय पिता, हम तेरा धन्यवाद करते हैं कि तूने हमें यह भोजन दिया।

हमें तेरी महिमा के लिए जीने की शक्ति दे।

हम तुझसे प्रार्थना करते हैं कि हम अपनी आत्मा और शरीर दोनों को शुद्ध रखें,

और जो कुछ भी हम खाते हैं, वह तेरे प्रेम और आशीर्वाद से भरपूर हो।

जैसे यीशु ने अपने चेलों को धन्यवाद की रोटी दी, वैसे ही हम भी तेरा धन्यवाद करते हैं।

यीशु मसीह के नाम में, आमीन।"

---

□ □ □ □ □ □ □ □ :

1. **लैब्यववस्था 11:9** बताता है कि केवल वही जलचर प्राणी खाए जा सकते हैं जिनके पास पंख और छिलके होते हैं।
2. **रब्बियों की व्याख्याओं** में यह स्पष्ट किया गया है कि छिलके हाथ से अलग किए जा सकने चाहिए और पंख तैरने के लिए होते हैं।

3. मसीही चर्च में यह नियम अनिवार्य नहीं है क्योंकि प्रभु यीशु मसीह ने सभी भोजन शुद्ध घोषित कर दिए हैं।
4. प्रार्थना: हमें अपने जीवन में परमेश्वर को धन्यवाद देना चाहिए और उसकी महिमा के लिए भोजन ग्रहण करना चाहिए।

## FESTIVALS

P153 Ex.12:2; Sanhedrin to sanctify New Moon, & reckon yrs & seasons

### निर्गमन 12:2 का हिंदी अनुवाद:

**"यह महीना तुम्हारे लिये महीनों का सिरा होगा; यह तुम्हारे लिये वर्ष का पहला महीना ठहरे।"**

---

### इस पद की हिंदी में व्याख्या:

निर्गमन 12:2 वह पद है जिसमें परमेश्वर ने मूसा और हारून को मिस्र में यह आज्ञा दी कि निसान महीना (यहूदी कैलेंडर का पहला महीना) इस्राएल के लिए महीनों की गिनती का पहला महीना होगा। इस आज्ञा का मुख्य उद्देश्य मिस्र से छुटकारे की स्मृति को बनाए रखना था।

### मुख्य बिंदु:

1. "यह महीना तुम्हारे लिये महीनों का सिरा होगा" - निसान महीना अन्य महीनों में सबसे महत्वपूर्ण होगा।

2. "यह तुम्हारे लिये वर्ष का पहला महीना ठहरे" - इस्राएलियों के लिए महीनों की

गिनती निसान से शुरू होगी, ताकि वे अपने छुटकारे को हमेशा याद रखें।

---

## रब्बियों की व्याख्याएँ:

### 1. इसका महत्व और क्रमः

- "सिरा" (שִׁירָה) शब्द का अर्थ - यह केवल संख्यात्मक रूप से पहला महीना नहीं बल्कि सबसे महत्वपूर्ण महीना भी है।
- "पहिला" (פָּרָאשָׁרָה) शब्द का अर्थ - निसान को विशेष महत्व देकर यह सुनिश्चित किया गया कि यह इस्राएल के इतिहास में सबसे प्रमुख रहेगा।

### 2. छुटकारे की स्मृति (रम्बान - Ramban)

रम्बान (Nachmanides) कहते हैं कि यह आज्ञा इस्राएलियों के लिए एक निरंतर अनुस्मारक (reminder) है कि परमेश्वर ने उन्हें मिस्र से छुड़ाया। यह गिनती इसलिए दी गई ताकि हर महीना इस घटना की स्मृति को बनाए रखे, जैसे सप्ताह के दिनों की गिनती सब्ज की ओर संकेत करती है।

### 3. कैलेंडर का नियंत्रण (रबेइनू बाह्या - Rabbeinu Bahya)

- शब्द "तुम्हारे लिये" (לְךָ - लखेम) का अर्थ यह भी है कि महीनों की गणना और चंद्रमास की घोषणा करने का अधिकार यहौदी धर्मगुरुओं (Sanhedrin) को दिया गया।

- इसका अर्थ यह है कि यह कैलेंडर परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार नियंत्रित किया जाना चाहिए, न कि किसी अन्य जाति या समाज की प्रणाली को अपनाकर।

#### 4. "यह" (הה - ह़हे) शब्द का महत्व (राशी - Rashi, चिज़कुनी -

Chizkuni)

- राशी कहते हैं कि परमेश्वर ने स्वयं मूसा को नये चाँद की स्थिति दिखाई और कहा, "**इस तरह जब चंद्रमा प्रकट हो, तब महीना घोषित करो।**"
- चिज़कुनी आगे कहते हैं कि मूसा यह नहीं समझ पाए कि कब चंद्रमा की उपस्थिति को "**नया महीना**" माना जाए, इसलिए परमेश्वर ने उन्हें चंद्रमा का एक स्पष्ट संकेत दिया।

#### 5. मूर्तिपूजा का विरोध (कली याकर - Kli Yakar)

मिस्र में मेष राशि (Aries) के महीने को महत्वपूर्ण माना जाता था, क्योंकि वे मेष (भेड़) को पूजते थे।

परमेश्वर ने निसान को पहला महीना बनाकर और फसह बलिदान (Passover Sacrifice) में भेड़ का बलिदान कराकर मिस्र की मूर्तिपूजा का खंडन किया।

#### 6. अन्य कैलेंडरों से भिन्नता (माल्बीम - Malbim)

- यहूदी कैलेंडर को चंद्रमास के अनुसार व्यवस्थित किया गया, जबकि अन्य जातियाँ सूर्य-आधारित कैलेंडर का उपयोग करती थीं, जो अक्सर सूर्य-पूजा से जुड़ा था।
- परमेश्वर ने यहूदी कैलेंडर को सूर्य-पूजा से अलग रखने के लिए चंद्र-आधारित बनाया।

## उदाहरणः

- बाइबल में त्योहारों की गणना इसी नियम के अनुसार होती है:
  - **फसह (Passover)** – पहले महीने (निसान) के 14वें दिन।
  - **शवूओत (Pentecost)** – तीसरे महीने (सिवान) में।
  - **रोश हशाना (यहूदी नया साल)** – सातवें महीने (तिशरी) में।
  - **सुक्कोत (झोपड़ियों का पर्व)** – सातवें महीने (तिशरी) में।
- यह गिनती इसाएलियों को निसान से शुरू करके छुटकारे की कहानी को हमेशा याद दिलाती है।

## मसीही चर्च में इसका महत्व आज

### 1. यीशु मसीह और फसह

- यीशु मसीह का मृत्यु और पुनरुत्थान भी निसान महीने में हुआ।
- फसह (Passover) में मेमने का बलिदान होता था, और यीशु को परमेश्वर का मेमना (**Lamb of God**) कहा जाता है (यूहन्ना 1:29)।
- इसलिए, कई मसीही परंपराएँ ईस्टर (Passover से संबंधित) को विशेष रूप से महत्वपूर्ण मानती हैं।

### 2. मसीही नया जन्म और छुटकारा

- जैसे यहूदी निसान को छुटकारे का महीना मानते हैं, वैसे ही मसीही इसे आत्मिक छुटकारे का प्रतीक मानते हैं।
- यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा मसीही लोग मानते हैं कि वे आत्मिक रूप से मिस्र (पाप) से छुटकारा पाकर नए जीवन में प्रवेश करते हैं।

### 3. आत्मिक कैलेंडर

- यहूदी कैलेंडर शारीरिक छुटकारे (मिस्र से छुटकारा) पर केंद्रित है, जबकि मसीही विश्वास आत्मिक छुटकारे (पाप से मुक्ति) को प्राथमिकता देता है।
  - मसीही लोग मानते हैं कि यीशु ने नया नियम स्थापित किया (लूका 22:20), जो छुटकारे को नया अर्थ देता है।
- 

## इससे जुड़ी मसीही प्रार्थना (यीशु मसीह के जीवन से प्रेरित)

हे स्वर्गीय पिता,

तेरा धन्यवाद करते हैं कि तूने हमें छुटकारा दिया, जैसे तूने इसाएलियों को मिस्र से निकाला।

जैसे तूने निसान को नए जीवन और आशा का महीना बनाया, वैसे ही हमें भी मसीह यीशु में नया जीवन दिया।

जैसे निसान का महीना यहूदी जाति के लिए नए अध्याय का आरंभ था, वैसे ही हम भी तुझ में नई सृष्टि हैं (2 कुरिन्दियों 5:17)।

हम प्रार्थना करते हैं कि तू हमें सिखा कि हम तेरा समय और तेरी योजनाओं को पहचाने। जिस तरह यीशु ने फसह के समय खुद को बलिदान किया, वैसे ही हम भी अपने जीवन को तेरी महिमा के लिए समर्पित करें।

प्रभु यीशु मसीह के नाम में, आमीन।

---

### **निष्कर्षः**

- निर्गमन 12:2 यहदियों के लिए निसान महीने को प्रथम महीना घोषित करता है, ताकि वे अपने छुटकारे को याद रखें।
- यह कैलेंडर नियंत्रण, मूर्तिपूजा के खंडन, और छुटकारे की स्मृति से जुड़ा है।
- मसीही विश्वास में, निसान और फसह यीशु मसीह के बलिदान और छुटकारे से संबंधित है।
- हम आज यह प्रार्थना कर सकते हैं कि जैसे यहां मिथ्र से निकले, वैसे ही हम भी पाप से मुक्त होकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करें।

P154 Ex.23:12 On resting on the Shabbat

### **निर्गमन 23:12 का हिंदी अनुवादः**

"छः दिन तक तू अपना काम काज करना, परन्तु सातवें दिन विश्राम करना, ताकि तेरा बैल और गदहा विश्राम करें, और तेरी दासी का पुत्र और परदेशी विश्राम पा सकें।"

---

## हिंदी में विस्तृत व्याख्या

इस पद में परमेश्वर इस्राएलियों को सब्ब (Sabbath) का नियम देते हैं, जिसमें वे छः दिन काम कर सकते हैं, लेकिन सातवें दिन उन्हें विश्राम करना आवश्यक है। यह न केवल स्वयं इस्राएलियों के लिए है, बल्कि उनके पशुओं, नौकरों और परदेशियों (विदेशियों) के लिए भी है।

**"दासी का पुत्र"** (גַּתָּם אַבָּ) और **"परदेशी"** (גַּגָּה) कौन हैं?

यहाँ "दासी का पुत्र" और "परदेशी" को विशेष रूप से उल्लेख किया गया है, क्योंकि वे इस्राएली समाज में कमज़ोर वर्ग के थे। पुराने यहूदी विद्वानों (रब्बियों) ने इनके बारे में निप्रलिखित व्याख्याएँ दी हैं:

### 1. "दासी का पुत्र" (גַּתָּם אַבָּ) का अर्थः

- राशी (Rashi), मिजराची (Mizrachi), गुर आर्येह (Gur Aryeh) और मास्किल ले-दाविद (Maskil LeDavid) कहते हैं कि यह एक **"कनानी दास"** (Canaanite servant) को दर्शाता है जो अभी हाल ही में खरीदा गया हो और जिसका खतना (circumcision) नहीं हुआ हो।
- इस तरह के सेवक को इस्राएली व्यवस्था के अनुसार एक वर्ष के भीतर खतना करवाना होता था, और तब वह एक पूर्ण "इब्रानी सेवक" (Hebrew servant) बन जाता।
- इस पद में इसका उल्लेख यह दिखाने के लिए किया गया है कि वह चाहे पूर्ण रूप से इस्राएली व्यवस्था का हिस्सा न हो, फिर भी सब्ब के दिन उसे भी विश्राम देना आवश्यक है।

## 2. "परदेशी" (ग्रन्थ) का अर्थ:

- यहूदी परंपरा में "परदेशी" दो प्रकार के होते थे:
  1. "**गर तज्जेक**" (Ger Tzedek) - जो पूर्ण रूप से यहूदी धर्म में परिवर्तित हो चुके थे।
  2. "**गर तोशव**" (Ger Toshav) - जो गैर-यहूदी होते हुए भी मूर्तिपूजा त्याग कर इस्राएली समाज में रहते थे और नोहीदी नियमों (Noahide Laws) का पालन करते थे।
- **राशी, मिजराची, गुर आर्येह, और स्टेन्सल्ट्ज़ (Steinsaltz)** इस शब्द को "गर तोशव" से जोड़ते हैं, जो इस्राएल में रहने वाला ऐसा गैर-यहूदी था जिसने मूर्तिपूजा छोड़ दी थी लेकिन यहूदी धर्म में पूर्ण रूप से परिवर्तित नहीं हुआ था।
- **इब्र एज्ञा हाकात्ज़ार (Ibn Ezra HaKatzar)** के अनुसार, यह एक ऐसा व्यक्ति हो सकता है जो कृषि कार्य में लगा हुआ एक मज़दूर हो।

## रब्बियों के मत और उदाहरण

### 1. क्यों इन वर्गों को विशेष रूप से शामिल किया गया?

- **चिज़कुनी (Chizkuni)** - यह लोग सामान्यतः गरीब और परिश्रमी होते थे, इसलिए वे विश्राम के विशेष रूप से पात्र थे।
- **रव हिर्श (Rav Hirsch)** - सब्त केवल यहूदियों के लिए नहीं बल्कि सभी जीवों की भलाई के लिए दिया गया है। यह दिन हर एक व्यक्ति और पशु को सम्मान देने का समय

है।

- **एम लामिक्रा (Em LaMikra)** - यहाँ तक कि वे लोग जो यहूदी समाज के पूर्ण सदस्य नहीं थे (जैसे "गर तोशव" या "बिना खतना वाला दास"), वे भी सब्ल के आशीर्वाद में भाग लेते हैं।
- **हाक्तव वेहाकबाला (HaKtav VeHaKabbalah)** - सब्ल का मुख्य उद्देश्य परमेश्वर की सृष्टि को स्मरण करना है, और सभी को इसमें भाग लेने दिया जाता है।

## 2. "विश्राम" (Rest) का अर्थ क्या है?

- **रेजियो (Reggio)** - यहूदी के लिए "तिशबोत" (तिशगाब - काम बंद करना) कहा गया है, लेकिन नौकरों और परदेशियों के लिए "विनफेश" (विनफेश - आत्मिक और शारीरिक ताज़गी) कहा गया है, जिससे संकेत मिलता है कि उनके लिए यह दिन केवल थकान मिटाने का है।
- **पर्डेस योसेफ (Pardes Yosef)** - "यनूआ" (यनोआ - आराम करना) जानवरों के लिए कहा गया, क्योंकि वे बिल्कुल निष्क्रिय हो जाते हैं, लेकिन "विनफेश" (विनफेश - तरोताजा होना) सेवकों के लिए कहा गया, क्योंकि वे कुछ हल्की गतिविधियों में लगे रह सकते हैं।
- **मालबिम (Malbim)** - सेवकों का विश्राम यहूदी त्योहारों (यौम तोव) की तरह होता था, जहाँ कुछ हल्की गतिविधियाँ की जा सकती थीं।

## 3. यह नियम अन्य आदेशों से कैसे संबंधित है?

- **राशी और तोरा तेमीमा (Torah Temimah)** - सब्ल की यह आज्ञा विशेष रूप से यह दिखाने के लिए दी गई थी कि शमिता वर्ष (सातवें वर्ष में भूमि का विश्राम) होने के

**बावजूद साप्ताहिक विश्राम आवश्यक है।**

- **मिजराची और सिफ्टे चाखमिम (Siftei Chakhamim)** – यह इस बात पर जोर देने के लिए दिया गया है कि यहां तक कि गैर-यहूदी सेवक और परदेशी भी सब में शामिल हैं।
- 

## आज के मसीही चर्च में इसका क्या महत्व है?

ईसाई धर्म में सब्ल का महत्व बना हुआ है, लेकिन अधिकांश चर्च रविवार को "प्रभु का दिन" (Lord's Day) के रूप में मानते हैं।

**ईसाई परिप्रेक्ष्य से इसके मुख्य तत्व:**

1. **दया और करुणा** - यीशु मसीह ने सब्ल के दिन सेवा और प्रेम की प्राथमिकता पर बल दिया (लूका 13:10-17)।
  2. **सभी के लिए विश्राम** - यीशु ने कहा, "सभी जो बोझ से दबे हैं, मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूँगा" (मत्ती 11:28)।
  3. **सामाजिक न्याय और श्रम अधिकार** - सब्ल का सन्देश यह है कि हर इंसान, चाहे उसकी सामाजिक स्थिति कुछ भी हो, उसे विश्राम का अधिकार है।
- 

## प्रभु यीशु मसीह के जीवन से प्रेरित एक प्रार्थना

"हे स्वर्गीय पिता, हम धन्यवाद करते हैं कि तूने हमें विश्राम का वरदान दिया। तूने अपने प्रेम

से हमें सब्ल का नियम दिया कि हम काम से थककर ताज़गी प्राप्त कर सकें। हम प्रार्थना करते हैं कि हर मजदूर, सेवक, गरीब और परदेशी को भी यह विश्राम और चैन मिले। हम प्रभु यीशु मसीह के उदाहरण से सीखें कि कैसे प्रेम और दया से दूसरों की सेवा करें। हमें ज्ञान और साहस दे कि हम अपने जीवन में हर किसी के लिए विश्राम और न्याय सुनिश्चित कर सकें। यीशु के नाम से प्रार्थना करते हैं। आमीन।”

---

### **निष्कर्ष:**

निर्गमन 23:12 का संदेश यह है कि हर प्राणी को विश्राम का अधिकार है, चाहे वह मालिक हो, नौकर हो, या परदेशी हो। यीशु मसीह ने भी इसी भावना को अपने जीवन में दिखाया और हमें प्रेम व दया का मार्ग सिखाया।

P155 Ex.20:8 On declaring Shabbat holy at its onset and termination

### **निर्गमन 20:8 (Exodus 20:8) हिंदी में:**

“सब्ल के दिन को पवित्र मानने के लिये स्मरण रखना।”

---

## **व्याख्या और महत्व**

### **1. बाइबल में सब्ल (साबत) का उद्देश्य**

**सब्ज का दिन ईश्वर के सृष्टिकर्म को याद करने और उनकी उपासना करने के लिए निर्धारित**

**किया गया था। यह दिन हमें यह स्मरण दिलाता है कि ईश्वर ने छह दिन में सृष्टि की और**

**सातवें दिन विश्राम किया (निर्गमन 20:11)। इसलिये, यह दिन आराम, ईश्वर की आराधना**

**और आध्यात्मिक उन्नति के लिए समर्पित है।**

## 2. "स्मरण रखना" का अर्थ

"स्मरण रखना" (רִמָּא - ज़ाख्बोर) केवल एक दिन को याद करने की बात नहीं करता, बल्कि यह

इंगित करता है कि हमें सप्ताह के प्रत्येक दिन सब्ज के लिए मानसिक और भौतिक रूप से

**तैयार रहना चाहिए।**

- कुछ यहूदी विद्वान मानते हैं कि हर दिन को सब्ज से जोड़कर देखना चाहिए।
- "पवित्र मानने के लिए" (ל'קָדְשָׁה - ल'क्ष्डेशो) का अर्थ है कि यह दिन दूसरों से अलग हो, जिसमें विशेष रूप से ईश्वर की आराधना, भक्ति, और अच्छे कार्य किए जाएं।

## रब्बियों के दृष्टिकोण और उनके उदाहरण

1. "रामाश" (स्मरण रखना) और "रामश" (पालन करना) साथ बोले गए

बाइबल में, निर्गमन 20:8 में "स्मरण रखना" (रामा) आता है, लेकिन व्यवस्थाविवरण 5:12

में "पालन करना" (रामश - शमोअर) शब्द आता है।

- रब्बियों का कहना है कि ईश्वर ने ये दोनों बातें एक साथ कही थीं, जिससे पता चलता है कि सिर्फ याद रखना ही नहीं, बल्कि इसे जीवन में लागू करना भी आवश्यक है।

- राशी (Rashi) बताते हैं कि यह कई अन्य बाइबलीय आदेशों की तरह एक साथ बोले गए आदेशों में से एक है।
- सिफ्टे चखामिम (Siftei Chakhamim) कहते हैं कि "स्मरण रखना" निषेधाज्ञाओं का पालन करने का एक रूप है, और "पालन करना" सक्रिय रूप से इसे पवित्र बनाने की प्रक्रिया को दर्शाता है।

## 2. सप्ताह भर सब्त की तैयारी

- तालमूद (Beitzah 16a) के अनुसार, जब भी किसी को सप्ताह में अच्छा भोजन या कोई विशेष वस्तु मिले, तो उसे सब्त के लिए रख देना चाहिए।
- शमाई (Shammai) नामक रब्बी सप्ताह के हर दिन यह सोचते थे कि क्या यह वस्तु सब्त के लिए उपयुक्त है। अगर कुछ बेहतरीन मिलता, तो वे उसे सब्त के लिए सुरक्षित रखते।
- हिलेल (Hillel) नामक रब्बी ने यह दृष्टिकोण अपनाया कि ईश्वर अपने भक्तों के लिए उचित प्रबंध करेंगे, लेकिन कुछ विद्वानों का मानना है कि उन्होंने भी भोजन के अलावा अन्य वस्तुओं की तैयारी में योगदान दिया।

## 3. सब्त की पवित्रता और किदूश (Kiddush) अनुष्ठान

- "
- "
- "
- इस प्रार्थना के शब्दों में सब्त को सृजन के स्मरण, मिस्र से मुक्ति और ईश्वर के प्रेम का संकेत माना जाता है।



## 4. सब्त और पापों की क्षमा

■क्षमा" (Sanctification - पवित्रता) को बनाए रखने के लिए शक्तिशाली गत और

- रब्बेनू बह्या (Rabbeinu Bahya) कहते हैं कि यदि कोई व्यक्ति पूर्ण निष्ठा से सब्ल का पालन करता है, तो उसके सभी पाप क्षमा कर दिए जाते हैं, यहाँ तक कि मूर्तिपूजा भी।
- 

## आधुनिक मसीही चर्चों में सब्ल का महत्व

### 1. ईसाई धर्म में सब्ल का रूपांतरण

- आरंभिक मसीही चर्च ने सब्ल (शनिवार) के बजाय रविवार को विश्राम और उपासना का दिन बनाया, क्योंकि यीशु मसीह रविवार को मृतकों में से जी उठे (लूका 24:1)।
- कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट चर्च में रविवार को "प्रभु का दिन" (Lord's Day) कहा जाता है, और यह दिन आराधना और विश्राम के लिए रखा गया है।
- कुछ चर्च जैसे सेवेंथ डे एडवेंटिस्ट (Seventh-Day Adventist) अब भी शनिवार को ही सब्ल मानते हैं और उसे ईश्वर की उपासना के लिए पवित्र मानते हैं।

### 2. आधुनिक पालन की विधियाँ

- चर्च में प्रार्थना और बाइबल अध्ययन करना।
  - रविवार को किसी भी प्रकार के व्यापारिक कार्य या अनावश्यक श्रम से बचना।
  - परिवार और समाज के साथ समय बिताना, ताकि परमेश्वर के प्रेम को साझा किया जा सके।
-

## यीशु मसीह के जीवन से संबंधित प्रार्थना

यीशु मसीह ने सब्ब का सही अर्थ समझाया और बताया कि सब्ब मनुष्य के लिए बनाया गया है, न कि मनुष्य सब्ब के लिए (मरकुस 2:27-28)।

### प्रार्थना:

"हे प्रभु यीशु मसीह, आपने हमें विश्राम और उपासना का महत्व सिखाया। जैसे आपने सब्ब के दिन असहायों की मदद की और अपने शिष्यों को सच्चा विश्राम दिया, वैसे ही हमें भी विश्राम में आपकी शांति मिले। हमें इस दिन को ईश्वर की महिमा के लिए समर्पित करने की बुद्धिंदें और अपने परिवार एवं जरूरतमंदों के साथ प्रेम बांटने की शक्ति दें।"

"हे प्रभु, हमें इस दिन को पवित्र मानने, इसे भक्ति, उपासना और परोपकार में बिताने की शिक्षा दें। हम आपकी उपस्थिति में सच्चा विश्राम प्राप्त करें, क्योंकि आपने कहा, 'हे सब परिश्रम करने वालों और बोझ से दबे लोगों, मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूंगा' (मत्ती 11:28)। आमेन।"

### निष्कर्ष

सब्ब ईश्वर के सृष्टि कार्य का स्मरण और उसकी पवित्रता को दर्शाने का दिन है।

यह दिन केवल विश्राम का नहीं, बल्कि परमेश्वर की भक्ति, प्रेम और सेवा का दिन भी है।

यीशु मसीह ने हमें दिखाया कि सच्चा सब्ब केवल नियमों का पालन नहीं, बल्कि ईश्वर के प्रेम और अनुग्रह में विश्राम करना है।

**आधुनिक ईसाई चर्च इसे "प्रभु के दिन" के रूप में मानते हैं, लेकिन उसका उद्देश्य वही रहता है—ईश्वर को याद रखना और उसकी आराधना करना।**

P156 Ex.12:15 On removal of chametz, leaven(ed), on (Nisan 14) Pesach

**निर्गमन 12:15 (Exodus 12:15) हिंदी में:**

"सात दिन तक तुम बिना खमीर की रोटी खाओ; और पहले ही दिन से अपने घरों से खमीर निकाल देना; क्योंकि जो कोई पहले दिन से सातवें दिन तक खमीर वाली रोटी खाएगा, वह जीवात्मा इस्राएल में से काट डाली जाएगी।"

---

**हिंदी में व्याख्या:**

इस पद में परमेश्वर इस्राएलियों को आदेश देते हैं कि वे सात दिन तक केवल बिना खमीर की रोटी (मज़ाह) खाएँ और अपने घरों से सभी खमीर (चमेट्ज़) को निकाल दें।

1. पहले दिन से खमीर हटाने का आदेश:

- इस्राएलियों को फसह पर्व के लिए खुद को तैयार करने हेतु 14वें दिन (पास्का बलिदान के दिन) से ही अपने घरों से खमीर हटा देना था।
- रब्बियों ने इस पद पर विचार करते हुए कहा कि "पहले दिन" वास्तव में त्योहार के शुरू होने से एक दिन पहले, यानी 14वें दिन की ओर इशारा करता है।

2. बिना खमीर की रोटी खाने का आदेश:

- सात दिनों तक खमीर की कोई भी वस्तु खाना मना था।
- लेकिन रब्बियों में मतभेद है कि क्या सातों दिन बिना खमीर की रोटी खाना अनिवार्य था, या केवल पहले दिन।

### 3. खमीर खाने का दंड:

- यदि कोई इस अवधि में खमीर खाता है, तो उसे "इस्राएल में से काट डाला जाएगा" यानी उसे आध्यात्मिक दंड (करेत) दिया जाएगा।
- 

## रब्बियों की व्याख्याएँ:

### 1. बिना खमीर की रोटी (मत्ज़ाह) खाने की अनिवार्यता

#### राशी:

- "सात दिन तक बिना खमीर की रोटी खाओ" और "छः दिन तक बिना खमीर की रोटी खाओ" (व्यवस्थाविवरण 16:8) इन दोनों पदों में विरोधाभास दिखाई देता है।
- इसलिए उन्होंने समझाया कि सात दिन तक खाना अनिवार्य नहीं, बल्कि पहले दिन (फसह की पहली रात) खाना अनिवार्य है।
- बाकी दिनों में यह ऐच्छिक है, जब तक कोई खमीर ना खाए।

#### गुर आर्ये:

- यदि सातों दिन अनिवार्य होते, तो लिखा होता "सात दिन तुम खाओगे", लेकिन यहाँ ऐसा नहीं लिखा।

- इसका मतलब है कि केवल पहले दिन खाना अनिवार्य है और बाकी दिनों में खमीर नहीं खाने की पाबंदी है, लेकिन बिना खमीर की रोटी खाना आवश्यक नहीं।

#### रलबागः

- पहले दिन मत्ज़ाह खाने की अनिवार्यता सीधे "संध्या को मत्ज़ाह खाओ" (निर्गमन 12:18) से आती है।
- बाकी दिन बिना खमीर की रोटी खाना ऐच्छिक है, लेकिन यदि रोटी खाई जाती है, तो वह बिना खमीर की होनी चाहिए।

#### 2. खमीर हटाने का आदेश (תשב'ת - तशबीतु का अर्थ)

#### राशीः

"तशबीतु" का अर्थ केवल जलाना नहीं, बल्कि किसी भी प्रकार से खमीर को समाप्त करना

है।

#### रामबाम (माइमोनाइड्स)ः

- "खमीर हटाने" का अर्थ केवल जलाना नहीं, बल्कि उसे "धूल के समान" मानकर मानसिक रूप से त्याग देना (बिटुल चमेट्ज़ा) भी शामिल है।

#### मालबिमः

- "शबात" (तशबीतु का मूल शब्द) का अर्थ है किसी चीज़ को रोक देना।
- यहाँ खमीर को पूरी तरह से नष्ट करने की बात नहीं, बल्कि उसे उपयोग से बाहर करने की बात है।

### 3. खमीर खाने का दंड - "करेत" (आत्मिक दंड)

राशी:

"इस्राएल में से काट डाला जाएगा" का अर्थ है कि यदि कोई जानबूझकर खमीर खाता है, तो

उसे परमेश्वर से अलग कर दिया जाएगा।

रलबागः

- यदि कोई जानबूझकर खमीर खाए, तो उसे "करेत" का दंड मिलेगा।
- यदि गलती से खाए, तो पापबलि (कुर्बानी) देना होगी।

मालबिमः

- यह दंड किसी अन्य राष्ट्र में भेजे जाने का संकेत नहीं देता, बल्कि आत्मिक रूप से परमेश्वर की उपस्थिति से कट जाने का संकेत देता है।
- 

### आज के मसीही चर्च में इसका महत्वः

#### 1. अंतिम भोज और परमप्रसाद (होली कम्पूनियन)

- प्रभु यीशु मसीह ने अंतिम भोज (Last Supper) के दौरान बिना खमीर की रोटी का उपयोग किया, जो आज भी होली कम्पूनियन में उपयोग की जाती है।
- "यह मेरी देह है" कहकर यीशु ने इस रोटी को अपने बलिदान का प्रतीक बनाया।

#### 2. निष्कलंक जीवन का प्रतीक

- खमीर पाप का प्रतीक माना जाता है, इसलिए बिना खमीर की रोटी का सेवन मसीही जीवन में पवित्रता और निष्कलंकता का प्रतीक बन गया।

### 3. नए वाचा (New Covenant) का संकेत

- मसीह ने अपने बलिदान द्वारा यह नया नियम स्थापित किया कि हम अब पाप से स्वतंत्र हैं, जैसे इसाएली मिस्र की गुलामी से स्वतंत्र हुए।
- 

## प्रभु यीशु मसीह से संबंधित प्रार्थना:

हे स्वर्गीय पिता,

हम तेरी आराधना करते हैं और तेरा धन्यवाद करते हैं कि तूने हमें प्रभु यीशु मसीह में पूर्ण स्वतंत्रता दी। जैसे तूने इसाएल को मिस्र की गुलामी से छुड़ाया, वैसे ही तूने हमें पाप की गुलामी से छुड़ाया।

हम प्रार्थना करते हैं कि हम अपने जीवन से पाप रूपी खमीर को दूर करें और तेरे सामने शुद्ध और निष्कलंक जिएँ। हम बिना खमीर की रोटी के रूप में प्रभु यीशु मसीह को ग्रहण करते हैं और उसमें अपनी आस्था रखते हैं।

हमारे हृदयों को निर्मल कर, ताकि हम तेरे प्रेम और अनुग्रह में बने रहें। इस पवित्र फसह के अवसर पर हमें स्मरण कर कि तूने अपने पुत्र को हमारे लिए बलिदान किया, ताकि हम नया जीवन प्राप्त कर सकें।

प्रभु यीशु मसीह के नाम में, आमीन।

## निष्कर्षः

**निर्गमन 12:15** हमें यह सिखाता है कि बिना खमीर की रोटी केवल भोजन का नियम नहीं था,

बल्कि एक आत्मिक संदेश था—पवित्रता, पाप से मुक्ति, और परमेश्वर के साथ नई यात्रा का

संकेत। यह संदेश आज भी मसीही विश्वासियों के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह प्रभु यीशु के

बलिदान और पुनरुत्थान की गवाही देता है।

P157 Ex.13:8 Tell of Exodus from Egypt 1st night Pesach, (Nisan 15)

## निर्गमन 13:8 हिंदी में:

"और उस दिन अपने पुत्र से कहना, 'जो कुछ यहोवा ने मेरे लिए किया, इस कारण जब मैं

मिस्र से निकला तब ऐसा हुआ।"

## 1. इस पद का अर्थ और आदेश

यह पद इस्राएलियों को आदेश देता है कि वे फसह (पासओवर) के दिन अपने पुत्रों को मिस्र से

निकलने की कहानी सुनाएँ। यह परमेश्वर की एक आज्ञा है कि हर पीढ़ी को यह बताया जाए कि

कैसे यहोवा ने अपने लोगों को चमत्कारी रूप से दासत्व से छुड़ाया।

"और उस दिन" का क्या अर्थ है?

रबियों ने समझाया है कि "उस दिन" का तात्पर्य विशेष रूप से **फसह की रात (15 निसान)** से है, जब फसह का भोजन किया जाता है, जिसमें फसह का बलिदान, अखमीरी रोटी (मत्ज़ा), और कड़वे साग (मारोर) होते हैं।

**"और तुम अपने पुत्र से कहना"** का क्या अर्थ है?

यह वचन केवल उन लोगों के लिए नहीं है जिनके पुत्र हैं, बल्कि हर इसाएली (यहूदी) के लिए है कि वे इस घटना को स्वयं से भी कहें। यदि कोई पिता नहीं है, तो भी यह कहानी सुनाना आवश्यक है।

---

## 2. "הַבְעֵבָר" (इस कारण) का अर्थ

इस वाक्यांश के कई व्याख्याएँ दी गई हैं:

### (1) परमेश्वर की आज्ञाओं के लिए

- राशी और इब्र एज्ञा के अनुसार "इस कारण" का तात्पर्य यह है कि **परमेश्वर ने हमें छुड़ाया ताकि हम उसकी आज्ञाओं का पालन करें।**
- यह विशेष रूप से फसह के बलिदान, मत्ज़ा (रोटी), और मारोर (कड़वे साग) के संदर्भ में कहा गया है।

**उदाहरण:** एक पिता अपने पुत्र से कहता है, "देखो, हम यह अखमीरी रोटी खाते हैं

**क्योंकि परमेश्वर ने हमें मिस्र से निकाला।"**

### (2) परमेश्वर के चमत्कारों के लिए

- रम्बान और रब्बेनु बाह्या के अनुसार, "इस कारण" का अर्थ है कि परमेश्वर ने जो आश्चर्यकर्म किए, उनके कारण हम यह त्योहार मनाते हैं।
- यह "यह" (הה) शब्द उन चमत्कारी कार्यों की ओर संकेत करता है जो मिस्र में हुए थे, जैसे दस विपत्तियाँ और लाल समुद्र का विभाजन।

**उदाहरण:** यदि कोई पुत्र पूछता है, "हम यह क्यों करते हैं?" तो उत्तर होगा, "क्योंकि परमेश्वर ने चमत्कार किए और हमें मिस्र से छुड़ाया।"

### (3) परमेश्वर की महिमा के लिए

- रब्बेनु बाह्या (कब्बालाह के दृष्टिकोण से) कहते हैं कि यह सब परमेश्वर के नाम की महिमा के लिए हुआ ताकि दुनिया जान सके कि वही सच्चा परमेश्वर है।
- मिस्र के लोगों की गलत धारणाएँ दूर करने के लिए परमेश्वर ने अपनी शक्ति प्रकट की।

**उदाहरण:** जब मूसा ने फ़िराँन से कहा, "परमेश्वर कहता है कि मेरा नाम सारी पृथ्वी पर महिमान्वित हो," तब वह इसी सत्य को प्रकट कर रहे थे।

### (4) मूसा के कारण

- चोमत अनख नामक टीका कहता है कि यह वचन मूसा के कारण भी हो सकता है, क्योंकि मूसा को कभी-कभी "यह व्यक्ति" (היא הה) कहा जाता है।

**उदाहरण:** यदि कोई पूछे, "क्यों छुड़ाया गया?" तो एक उत्तर हो सकता है, "क्योंकि परमेश्वर ने मूसा को भेजा।"

### 3. इस पद का पासओवर हगगदाह और चार पुत्रों से

#### संबंध

फसह हगगदाह में कहा गया है कि यह पद दुष्ट पुत्र के प्रश्न का उत्तर देता है।

- जब दुष्ट पुत्र पूछता है, "यह सेवा तुम्हारे लिए क्या है?" (अर्थात् वह खुद को इससे अलग करता है), तो उत्तर दिया जाता है, "परमेश्वर ने यह मेरे लिए किया, तुम्हारे लिए नहीं। यदि तुम वहाँ होते, तो तुम्हारा उद्धार न होता।"
  - गुर आर्य और सिफतेई चखामिम समझाते हैं कि दुष्ट पुत्र को यह सिखाया जाता है कि यदि वह परमेश्वर के नियमों का पालन नहीं करेगा, तो वह इस आशीष का भागी नहीं होगा।
- 

### 4. आज के मसीही चर्च में इस पद का महत्व

#### (1) प्रभु भोज (लॉईस सपर) और क्रूस

प्रभु यीशु ने फसह की रात प्रभु भोज (लॉईस सपर) की स्थापना की, और उसी रात उन्हें पकड़ लिया गया।

- "यह मेरे शरीर के लिए है, जो तुम्हारे लिए दिया गया। यह मेरे लहू का नया वाचा है।" (लूका 22:19-20)
- इसलिए, यह पद मसीह के बलिदान की याद दिलाता है कि कैसे उसने हमें पाप से छुड़ाया, जैसे परमेश्वर ने इस्राएल को मिस्र से छुड़ाया।

## (2) उद्धार की कहानी सुनाना

- जैसे यहूदी लोग फसह की रात अपने पुत्रों को उद्धार की कहानी सुनाते हैं, वैसे ही मसीही लोग अपने बच्चों को यीशु मसीह के बलिदान और पुनरुत्थान की कहानी सुनाते हैं।
- पॉल (प्रेरित पौलुस) ने भी कहा, "हमें सुसमाचार को अगली पीढ़ी तक पहुँचाना है।"  
(2 तीमुयियुस 2:2)

## (3) फसह और पुनरुत्थान पर्व

- मसीही लोग पुनरुत्थान रविवार (ईस्टर) को यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान की स्मृति में मनाते हैं, जो फसह के समय हुआ था।
- 

## 5. इस पद पर आधारित मसीही प्रार्थना

**प्रार्थना:**

हे स्वर्गीय पिता,

आपने इस्राएलियों को मिस्र की दासता से छुड़ाया और आपने हमें भी प्रभु यीशु मसीह के द्वारा पाप की दासता से छुड़ाया। जैसे आपने अपने अद्भुत कार्यों को हर पीढ़ी को सुनाने की आज्ञा दी, वैसे ही हमें भी मसीह के उद्धार की कहानी को संसार में सुनाने दें।

हे प्रभु यीशु मसीह,

आपने अपने लहू से हमें बचाया, जैसे फसह के मेघे का लहू इस्राएलियों के घरों पर लगाया गया

था। हम आपके बलिदान को स्मरण करते हैं और आपकी महिमा करते हैं। हमें यह सुसमाचार अपने बच्चों और अगली पीढ़ियों तक पहुँचाने की बुद्धि और सामर्थ्य दें।

**पवित्र आत्मा,**

हमारे हृदयों में परमेश्वर के वचन को जिला दें, ताकि हम अपने परिवारों को आपके प्रेम और उद्धार की महिमा के बारे में सिखा सकें। हमें विश्वास में दृढ़ करें और हमें दुनिया के सामने आपके सत्य का प्रचार करने की शक्ति दें।

**प्रभु यीशु मसीह के नाम में, आमीन।**

---

**निष्कर्ष:**

- यह पद फसह और उद्धार की कहानी सुनाने की आज्ञा देता है।
- यह हमें सिखाता है कि हम परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करें और अगली पीढ़ी को बताएं।
- मसीही दृष्टिकोण से, यह यीशु के बलिदान और उद्धार की ओर संकेत करता है।
- यह हमें अपने परिवार और संसार को यीशु के उद्धार के बारे में सिखाने की प्रेरणा देता है।

P158 Ex.12:18 On eating Matzah the first night of Pesach, (Nisan 15)

**निर्गमन 12:18 हिंदी में:**

"प्रथम महीने में, चौदहवें दिन संध्या समय से लेकर, उसी महीने के इककीसवें दिन की संध्या

**तक तुम्हें अखमीरी रोटी (मल्ज़ा) खाना चाहिए।”**

---

## 1. इस पद का अर्थ और आदेश

यह पद स्पष्ट रूप से यह बताता है कि फसह (पासओवर) के पर्व के दौरान सात दिनों तक

**अखमीरी रोटी (मल्ज़ा) खानी चाहिए और खमीरी रोटी (चमेट्ज़ा) से बचना चाहिए।**

**“चौदहवें दिन की संध्या से” का क्या अर्थ है?**

- रब्बियों ने स्पष्ट किया है कि यह आदेश 14 निसान की संध्या (यानी सूर्यास्त के बाद, जब यह 15 निसान बन जाता है) से शुरू होता है।
- यह अगले 21 निसान की संध्या (सूर्यास्त) तक जारी रहता है।

**“मल्ज़ा खाना चाहिए” का क्या अर्थ है?**

- पहली रात (14 की संध्या, यानी 15 निसान की रात) को मल्ज़ा खाना अनिवार्य (आज्ञा) है।
  - बाकी के छह दिनों में, मल्ज़ा खाना अनिवार्य नहीं लेकिन अनुशंसित है, क्योंकि खमीरी रोटी वर्जित है।
- 

## 2. रब्बियों की व्याख्याएँ और चर्चाएँ

**(1) राशी और चिज़कुनी - दिन और रात का समावेश**

- **समस्या:** निर्गमन 12:15 पहले ही कहता है, "सात दिन तक मत्ज़ा खाओ।" तो यह पद दोबारा क्यों दोहराया गया?
- **राशी:** यह सुनिश्चित करने के लिए कि सात दिनों में रातें भी शामिल हैं, केवल दिन नहीं।
- **चिङ्गाकुनी:** कोई यह सोच सकता था कि "सात दिन" का मतलब केवल दिन के समय है, इसलिए यह पद पुष्टि करता है कि रातें भी गिनी जाती हैं।

**उदाहरण:** यदि एक व्यक्ति सोचता है कि 15 निसान की रात खमीरी रोटी खा

सकता है, तो यह पद उसे रोकता है।

---

## (2) हामेक दावर - मत्ज़ा खाना अनिवार्य या वैकल्पिक?

- पहली रात (14 की संध्या) को मत्ज़ा खाना अनिवार्य (मंदेटरी) है।
- बाकी के दिनों में यह अनिवार्य नहीं, बल्कि केवल खमीरी रोटी से बचने का एक तरीका है।

**उदाहरण:**

- **पहली रात:** "तुम्हें मत्ज़ा खाना चाहिए।"
  - **बाकी के दिन:** "अगर तुम रोटी खाना चाहते हो, तो केवल मत्ज़ा खा सकते हो, चमेट्ज़ नहीं।"
- 

## (3) रालबाग - आदेश और अनुमति

यह आदेश केवल पहली रात को मत्ज़ा खाने के लिए बाध्य करता है।

बाकी के दिन, मत्ज़ा खाने की अनुमति दी गई है, लेकिन यह आवश्यक नहीं है।

### **उदाहरण:**

- यदि कोई व्यक्ति 16 निसान को भूखा है और रोटी खाना चाहता है, तो वह सिर्फ मत्ज़ा खा सकता है, चमेट्ज़ नहीं।
- 

### **(4) तोराह तेमीमा - चमेट्ज़ हटाने का समय**

- यह पद यह भी संकेत देता है कि चमेट्ज़ (खमीरी रोटी) 14 निसान की संध्या से पहले ही हटा देना चाहिए।
- यरुशलेम तालमूद के अनुसार, यह बताता है कि चमेट्ज़ निषेध 14 निसान की संध्या से प्रभावी हो जाता है।

**उदाहरण:** फसह से एक दिन पहले, यहूदी परिवार अपने घर से पूरी चमेट्ज़ साफ़ कर देते हैं।

---

## **3. आज के मसीही चर्च में इसका महत्व**

### **(1) यीशु मसीह और फसह (पासओवर) का संबंध**

- यीशु मसीह को "परमेश्वर का मेश्वा" कहा गया है (यूहन्ना 1:29)।
- उन्होंने फसह की रात (14 निसान की संध्या) को अंतिम भोज (लास्ट सपर) मनाया

और अपने चेलों को ब्रेड और दाखरस दिया।

- ब्रेड (रोटी) को उनके शरीर का प्रतीक माना गया।

**लूका 22:19:**

"तब उसने रोटी ली, धन्यवाद किया, तोड़ी और उन्हें दी, और कहा, 'यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिए दी जाती है। मेरे स्मरण में यही किया करो।'"

## (2) खमीरी और अखमीरी रोटी का आध्यात्मिक अर्थ

- चमेट्ज़ (खमीरी रोटी) = पाप और अभिमान
- मल्ज़ा (अखमीरी रोटी) = पवित्रता और आज्ञाकारिता

**1 कुरिन्थियों 5:7-8:**

"पुराने खमीर को दूर करो, कि तुम नया आटा बन जाओ, जैसे कि तुम अखमीरी हो। इसलिए आओ, हम उत्सव मनाएँ, न पुराने खमीर के साथ, न बुराई और दुष्टता के खमीर के साथ, परंतु सत्य और ईमानदारी की अखमीरी रोटी के साथ।"

- यह पद शुद्ध हृदय और पवित्र जीवन जीने का निर्देश देता है, जैसे यीशु मसीह ने हमें सिखाया।

## (3) प्रभु भोज (लॉईस सपर) और फसह

- मसीही विश्वासियों के लिए, प्रभु भोज हर बार स्मरण दिलाता है कि प्रभु यीशु मसीह ही हमारी मुक्ति का ऋत हैं।
- जैसा कि यहूदी लोग फसह पर चमेट्ज़ से बचते हैं, वैसे ही मसीही लोग पाप से दूर रहने

**के लिए बुलाए गए हैं।**

---

## 4. इस पद पर आधारित मसीही प्रार्थना

**प्रार्थना:**

**हे प्रभु यीशु मसीह,**

आपने फसह के दिन अपने चेलों को सिखाया कि आप ही जीवन की रोटी हैं। आपने अपने शरीर को हमारे लिए तोड़ा ताकि हम जीवन पा सकें।

**हे परमेश्वर पिता,**

जैसे इस्राएलियों को आपने चमेट्ज़ (खमीर) से दूर रहने को कहा, वैसे ही हमें भी पाप और बुराई से दूर रख। हमें सिखा कि हम अपने जीवन से हर प्रकार की बुराई और अभिमान को हटा दें।

**पवित्र आत्मा,**

हमें वह शक्ति दे कि हम अखमीरी रोटी की तरह निर्मल, विनम्र, और पवित्र जीवन जिएँ।

**प्रभु यीशु मसीह के नाम में, आमीन।**

---

## 5. निष्कर्ष

- यह पद फसह के सात दिनों में चमेट्ज़ से बचने और मत्झा खाने के नियम को स्पष्ट

**करता है।**

- यह सिखाता है कि पहली रात मल्जा खाना अनिवार्य है, और बाकी दिनों में चमेट़ज़ से बचना अनिवार्य है।
- मसीही दृष्टिकोण से, यह पवित्रता और यीशु मसीह के बलिदान का प्रतीक है।
- प्रभु भोज इस पद के आध्यात्मिक महत्व को प्रतिदिन जीवित रखता है।

P159 Ex.12:16 On resting on the first day of Pesach

### **निर्गमन 12:16 (Exodus 12:16) हिंदी में**

**"पहले दिन तुम्हारे लिये एक पवित्र सभा होगी और सातवें दिन भी तुम्हारे लिये एक पवित्र सभा होगी; उन दिनों में कोई काम न किया जाए, केवल वही जो हर व्यक्ति को खाने के लिये आवश्यक हो, वही मात्र किया जा सकता है।"**

---

### **इस पद का हिंदी में विवरण**

निर्गमन 12:16 परमेश्वर द्वारा इस्ताएलियों को दी गई आज्ञा का हिस्सा है, जिसमें उन्होंने फसह (Pesach) और अखमीरी रोटी के पर्व (Feast of Unleavened Bread) को मनाने का आदेश दिया। इस पद में दो महत्वपूर्ण बातें कही गई हैं:

1. **पहले और सातवें दिन का विशेष महत्व - ये दोनों दिन "पवित्र सभा" के रूप में मनाए जाने चाहिए।**
2. **सामान्य कार्य निषेध - इन दिनों में कोई भी काम नहीं किया जाना चाहिए, सिवाय उस**

## काम के जो भोजन की तैयारी के लिए आवश्यक हो।

इसका मतलब यह हुआ कि ये दिन विश्राम और आराधना के लिए निर्धारित किए गए हैं।

हालांकि, खाने से संबंधित कार्यों की अनुमति है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि यह सब्द

(Sabbath) की तुलना में थोड़ा अधिक लचीला है, क्योंकि सब्द पर कोई भी कार्य करना पूरी

तरह निषिद्ध है।

## रब्बियों की व्याख्याएँ

### 1. "पवित्र सभा" (שָׁאַקָּרָה קָדְשָׁה - Mikra Kodesh) का अर्थ

- **राशी (Rashi)** - उन्होंने "पवित्र सभा" का अर्थ यह बताया कि इन दिनों को पवित्र मानना और इन्हें भोज, उत्सव, और विशेष वस्त्रों के साथ मनाना आवश्यक है।
- **मेखिलता (Mekhilta)** - इसाएली समाज को इन दिनों को सार्वजनिक रूप से पवित्र घोषित करने और इसे विशेष रूप से मनाने की आवश्यकता है।
- **मालबिम (Malbim)** - उनका कहना है कि सभी त्योहारों को पवित्र रूप से मनाने का आदेश है, और यह पवित्रता खाने-पीने और विशेष आयोजनों के द्वारा प्रकट की जाती है।
- **रालबाग (Ralbag)** - उन्होंने कहा कि यह "पवित्र सभा" हमें परमेश्वर के साथ एक नई संगति (renewed assembly with God) में प्रवेश करने का अवसर प्रदान करती है।
- **इब्र ए़ज़रा (Ibn Ezra)** - उन्होंने पहले दिन को मिस्र से इस्राएलियों के निकलने के ऐतिहासिक दिन के रूप में पहचाना।

## 2. "कोई कार्य न किया जाए" - כל מלאכה לא יעשה בה (Kol Melakha

### Lo Ye'aseh Bahem)

- **राशी (Rashi)** – उन्होंने इसे इस प्रकार समझाया कि इस दिन कोई भी काम नहीं किया जाना चाहिए, चाहे वह यहूदी स्वयं करे या किसी अन्य व्यक्ति से करवाए।
- **रंबान (Ramban)** - वे इस बात पर जोर देते हैं कि गैर-यहूदी द्वारा काम करवाने की मनाही केवल रब्बियों की एक व्याख्या है, न कि सीधे तौर पर बाइबल की आज्ञा।
- **मालबिम (Malbim)** - उन्होंने व्याकरण के आधार पर बताया कि निषेधाज्ञा यहूदी को सीधे तौर पर संबोधित करती है, लेकिन किसी गैर-यहूदी से व्यक्तिगत लाभ के लिए काम करवाना अप्रत्यक्ष रूप से मना किया गया है।
- **दात झेकेनिम (Da'at Zekenim)** - उन्होंने सुझाव दिया कि यहाँ "अन्य लोग" शब्द का अर्थ छोटे बच्चों से हो सकता है, लेकिन यह भी निषिद्ध माना जाता है।
- **हाक्तव वेहाकबाला (HaKtav VeHaKabbalah)** - उन्होंने निषेधाज्ञा के विभिन्न व्याकरणिक रूपों का अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि यह निषेधाज्ञा विशेष रूप से यहूदियों के लिए है।

## 3. "खाने के लिए आवश्यक कार्य की अनुमति" - אך אשר יאכל לכל נפש (Akh Asher Ye'akhel Lekhol Nefesh)

- **राशी (Rashi)** - उन्होंने स्पष्ट किया कि भोजन तैयार करना, यहाँ तक कि जानवरों के लिए भी, अनुमत है। हालांकि, गैर-यहूदियों के लिए खाना पकाना निषिद्ध है।
- **रंबान (Ramban)** - उन्होंने इस्त्राएलियों के लिए इस आज्ञा की व्याख्या की और बताया कि जानवरों के लिए खाना पकाने की अनुमति कुछ परिस्थितियों में हो सकती है, लेकिन सामान्य रूप से यह प्रतिबंधित है।

- **मालबिम (Malbim)** - उन्होंने यहूदियों के लिए इस छूट को चार स्तरों में विभाजित किया:

1. केवल वे कार्य जो पर्व पर आवश्यक हैं
  2. केवल इस्राएलियों के लिए
  3. केवल वे कार्य जिनका तत्काल उपभोग किया जाएगा
  4. कोई अतिरिक्त, अप्रासंगिक कार्य नहीं
- 

## आज के मसीही चर्च में इसका क्या अर्थ है?

### 1. मसीही विश्वास और विश्राम का महत्व

- यीशु मसीह ने यह सिखाया कि विश्राम का उद्देश्य ईश्वर से संगति है, न कि मात्र नियमों का पालन करना (मरकुर 2:27 - "सब नाथ के लिए बनाया गया था, न कि मनुष्य सब के लिए")।
- मसीही परंपरा में, रविवार (Lord's Day) को एक पवित्र दिन के रूप में माना जाता है, जब लोग चर्च जाते हैं, प्रार्थना करते हैं, और परिवार के साथ समय बिताते हैं।

### 2. यीशु मसीह में आत्मिक विश्राम

- निर्गमन 12:16 में दिए गए परमेश्वर के विश्राम के आदेश का एक गहरा आत्मिक अर्थ भी है।
- मत्ती 11:28 में यीशु कहते हैं: "हे सब परिश्रम करने वालों और बोझ से दबे लोगों, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूँगा।"

- मसीही विश्वास में विश्राम का अर्थ केवल शारीरिक आराम नहीं है, बल्कि यह आत्मिक विश्राम भी है, जो हमें पाप और जीवन की चिंताओं से मुक्ति दिलाता है।

### 3. पर्वों और आराधना का महत्व

- मसीही चर्च में विभिन्न पर्वों (क्रिसमस, ईस्टर, पेंटेकोस्ट) को सम्मानपूर्वक मनाया जाता है, जैसे कि यहूदी लोग फसह और अखमीरी रोटी का पर्व मनाते हैं।
  - इन पर्वों का उद्देश्य ईश्वर की महान कार्यों को स्मरण करना और धन्यवाद देना है।
- 

## इससे संबंधित एक प्रार्थना (यीशु मसीह के जीवन से प्रेरित)

हे स्वर्गीय पिता,

हम तेरा धन्यवाद करते हैं कि तूने हमें विश्राम और आराधना के दिन दिए हैं, जिससे हम तुझसे और अधिक घनिष्ठता से जुड़ सकें। हम प्रार्थना करते हैं कि हम तेरे द्वारा स्थापित पवित्र समय का सम्मान करें और इसे केवल शारीरिक आराम के लिए नहीं, बल्कि तुझमें आत्मिक विश्राम पाने के लिए भी प्रयोग करें।

जैसे प्रभु यीशु मसीह ने हमें सिखाया, हमें अनुग्रह दे कि हम अपनी चिंताओं को तुझ पर डालें और अपने जीवन के हर क्षेत्र में तुझ पर भरोसा करें। हम प्रार्थना करते हैं कि हम तेरे प्रेम और तेरे राज्य की महिमा के लिए जी सकें।

प्रभु यीशु मसीह के नाम में, आमीन।

## निष्कर्षः

निर्गमन 12:16 हमें सिखाता है कि परमेश्वर के पवित्र दिनों का सम्मान करना आवश्यक है। यहूदी परंपरा इसे विश्राम और आराधना का दिन मानती है, जबकि मसीही विश्वास में इसे आत्मिक विश्राम और परमेश्वर की संगति के अवसर के रूप में देखा जाता है। यीशु मसीह हमें सिखाते हैं कि सच्चा विश्राम केवल परमेश्वर में ही पाया जा सकता है।

P160 Ex.12:16 On resting on the seventh day of Pesach

## निर्गमन 12:16 (Exodus 12:16) हिंदी में

**"पहले दिन तुम्हारा पवित्र सभा होगी, और सातवें दिन भी तुम्हारी पवित्र सभा होगी; उन दिनों में कोई काम न किया जाए, केवल जो हर व्यक्ति को खाने के लिए आवश्यक हो, वही किया जा सकता है।"**

## निर्गमन 12:16 का हिंदी में विवरण

इस पद में परमेश्वर ने इस्राएलियों को फसह (Passover) और अखमीरी रोटी के पर्व (Feast of Unleavened Bread) की व्यवस्था दी। सात दिनों तक अखमीरी रोटी (खमीर रहित रोटी) खानी थी और पहले और सातवें दिन को पवित्र मानकर उसमें कोई भी श्रमसाध्य काम न करने का आदेश दिया गया।

## 1. "पहले और सातवें दिन पवित्र सभा होगी"

- "पवित्र सभा" (שְׁמָרָה - Mikra Kodesh) का अर्थ है कि ये दिन केवल परमेश्वर की उपासना और पवित्र कार्यों के लिए अलग किए गए थे।
  - राशी (Rashi) के अनुसार, "पवित्र सभा" का अर्थ है इन दिनों को पवित्र घोषित करना और इनका सम्मान करना, जिसमें अच्छा भोजन करना, अच्छे वस्त्र पहनना और धार्मिक रीति-रिवाजों का पालन करना शामिल है।
  - मालबिम (Malbim) के अनुसार, अन्य पर्वों की तरह ये भी "शְׁמָרָה" (पवित्र सभा) कहे गए हैं, क्योंकि इन दिनों में लोग इकट्ठा होकर परमेश्वर की आराधना करते थे।
  - रालबाग (Ralbag) कहते हैं कि यह सभा ईश्वर के साथ पुनः एकजुट होने और पर्वों के पवित्र उद्देश्य को पूरा करने के लिए थी।
  - इब्राहिम (Ibn Ezra) बताते हैं कि पहला दिन मिस्र से निकलने की याद में था और सातवाँ दिन लाल समुद्र पार करने की घटना को दर्शाता है।
- 

## 2. "उन दिनों में कोई काम न किया जाए"

- राशी के अनुसार, "कोई काम न किया जाए" का अर्थ यह है कि न केवल स्वयं कोई श्रमसाध्य कार्य न करें, बल्कि दूसरों से भी काम न करवाएं, चाहे वह इस्माइली हो या कोई अन्य।
- रम्बान (Ramban) इस बात पर असहमति जताते हैं और बताते हैं कि गैर-यहूदियों को कार्य करवाना एक रब्बीनिक (Rabbinic) प्रतिबंध है, न कि बाइबलीय (Biblical) निषेध।
- चित्सकुनी (Chizkuni) के अनुसार, यह आदेश "रचनात्मक कार्य" (creative work)

करने से रोकता है, न कि सभी प्रकार के कार्यों से।

- **मालबिम (Malbim)** इस बात को स्पष्ट करते हैं कि निषेधाज्ञा का वाक्य " לא יעשה" (लॉ यिए' अशे बहेम - No work shall be done in them) निष्क्रिय (passive) रूप में लिखा गया है, जो यह दर्शाता है कि किसी भी माध्यम से श्रमसाध्य कार्य नहीं किया जाना चाहिए।
  - **टोराह तेमीमाह (Torah Temimah)** बताते हैं कि इस निषेधाज्ञा में यहूदियों के लिए खाद्य-संबंधी कार्यों को छोड़कर अन्य सभी कार्य निषिद्ध हैं।
- 

### 3. "केवल जो हर व्यक्ति को खाने के लिए आवश्यक हो, वही किया जा सकता है"

- राशी के अनुसार, भोजन पकाने की अनुमति केवल उन लोगों के लिए है जो यहूदी समुदाय में शामिल हैं।
  - **चिज़कुनी (Chizkuni)** बताते हैं कि यह आवश्यक था क्योंकि यदि यह छूट नहीं होती तो भोजन तैयार करना भी वर्जित हो जाता।
  - **मालबिम (Malbim)** इस वाक्य में प्रयुक्त "גא" ("गा - केवल) और "הא לבן" (वह मात्र) जैसे शब्दों पर ध्यान देते हैं, जो यह बताते हैं कि केवल वही कार्य किए जा सकते हैं जो यथासंभव पहले से तैयार नहीं किए जा सकते थे।
- 

## आज के मसीही चर्च में इस पद का महत्व

यद्यपि अधिकांश मसीही विश्वासी फसह का यहूदी परंपरा के अनुसार पालन नहीं करते, फिर भी इस पद में बताए गए कुछ सिद्धांत मसीही विश्वास में महत्वपूर्ण हैं:

## 1. विश्राम और पवित्रता

- जैसे यहूदियों के लिए यह दिन एक पवित्र विश्राम का दिन था, वैसे ही मसीही विश्वास में “सब्ब का विश्राम” (Sabbath Rest) और ”प्रभु का दिन” (Sunday) का विशेष स्थान है।
- मसीही विश्वासी रविवार को परमेश्वर की उपासना, आत्मिक विश्राम, और परिवार के साथ समय बिताने के लिए अलग रखते हैं।
- प्रभु यीशु ने भी सब्ब के दिन को मनाया (लूका 4:16)।

## 2. शुद्धता और पवित्रता का पालन

- फसह के दौरान खमीर रहित रोटी खाने का आदेश मसीही विश्वास में ”पाप से दूर रहने“ का प्रतीक माना जाता है (1 कुरिन्यियों 5:7-8)।
- यह दिन आत्म-निरीक्षण और पवित्रता को बनाए रखने की प्रेरणा देता है।

## 3. आत्मिक पोषण और परमेश्वर पर निर्भरता

- जैसे फसह के दिनों में भोजन का विशेष महत्व था, वैसे ही मसीही विश्वास में यीशु मसीह को ”जीवन की रोटी“ कहा गया (यूहन्ना 6:35)।
- प्रभु यीशु मसीह ने यह भी कहा: ”मनुष्य केवल रोटी से नहीं जीता, परन्तु प्रत्येक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है।“ (मत्ती 4:4)।

## प्रभु यीशु मसीह से संबंधित प्रार्थना

”प्रिय स्वर्गीय पिता, हम तेरा धन्यवाद करते हैं कि तूने हमें विश्राम और पवित्रता का आदेश

दिया। जैसे इस्राएलियों ने फसह के पर्व को तेरी आज्ञा के अनुसार मनाया, वैसे ही हम भी अपने हृदयों को तुझमें विश्राम देने और तेरे वचन का पालन करने के लिए तैयार करें।

हम तुझसे प्रार्थना करते हैं कि तू हमें आत्मिक भोजन दे, जो केवल यीशु मसीह के द्वारा संभव है। हमें अपने पापों से शुद्ध कर, और हमें अपने मार्ग में चलने की सामर्थ्य दे। हम मसीह के बलिदान को याद रखते हुए पवित्रता में जीने का प्रयास करें।

जैसे तूने इस्राएलियों को मिस्र की गुलामी से छुड़ाया, वैसे ही हमें भी पाप की गुलामी से मुक्त कर। हम तुझ पर भरोसा रखते हैं और तेरा धन्यवाद करते हैं कि तूने हमें यीशु मसीह के द्वारा अनंत जीवन दिया। प्रभु यीशु मसीह के नाम में, आमीन।”

---

## निष्कर्ष

निर्गमन 12:16 यह सिखाता है कि परमेश्वर ने अपने लोगों को पवित्रता, विश्राम, और आत्मिक भोजन पर ध्यान देने के लिए विशेष दिन दिए। यह आज भी मसीही विश्वासियों को पवित्रता और आत्मिक विश्राम में परमेश्वर के करीब आने की प्रेरणा देता है।

“प्रभु यीशु मसीह ही हमारा सच्चा विश्राम (Sabbath Rest) और जीवन की रोटी है!” (मत्ती 11:28)

P161 Le.23:35 Count the Omer 49 days from day of first sheaf Nisan 16

लेविटिकस 23:35 - हिंदी में बाइबल पद:

**"पहले दिन पवित्र महासभा होगी; तुम कोई परिश्रम का काम न करना!"**

---

## **"पवित्र महासभा" (שְׁדַבֵּר מִקְרָא) और "कोई परिश्रम का काम न करना"**

**पवित्र महासभा (שְׁדַבֵּר מִקְרָא קָדֵשׁ - Mikra Kodesh):**

इसका अर्थ है कि यह दिन विशेष और पवित्र होता है। यह दिन अन्य दिनों से अलग रखा जाता है। राशी के अनुसार, इसका अर्थ है कि इस दिन विशेष वस्त्र पहने जाएँ और उचित प्रार्थनाएँ की जाएँ। कुछ त्योहारों पर यह दिन खाने-पीने के साथ भी पवित्र किया जाता है।

**"कोई परिश्रम का काम न करना" (כָל מְלָאכָת עֲבוֹדָה לֹא תַעֲשֶׂ) - Kol Melahet Avodah Lo Ta'asu):**

इसका अर्थ यह है कि सामान्य दैनिक श्रम या काम इस दिन निषिद्ध है। यह विश्राम और आराधना का दिन है, ठीक वैसे ही जैसे सब्ल (सब्बाथ) का दिन होता है।

---

### **रब्बियों की विभिन्न व्याख्याएँ:**

#### **1. अद्वेत एलियाह:**

इस दिन की पवित्रता भोजन, पेय और स्वच्छ वस्त्रों के द्वारा प्रकट होती है। यह राशी की व्याख्या से मेल खाता है कि त्योहारों को खाने-पीने और अच्छे वस्त्रों से विशेष बनाया जाता है।

#### **2. बिरकत आशोर:**

उन्होंने इस बात पर ध्यान दिया कि राशी ने "שָׁמַרְאָ קָדָשָׁ" की व्याख्या इस पद पर क्यों की, जबकि यह शब्द पहले भी प्रकट हो चुका है (उदाहरण: लैब्यववस्था 23:7, 23:27)। **שִׁמְמָתִ' חַכְמִים** (शफतेई हखामिम) भी इसी प्रश्न पर चर्चा करते हैं, विशेषकर यौम किप्पुर (प्रायशिच्त का दिन) से संबंधित संदर्भ में।

### **3. दिव्रे डेविडः**

उन्होंने इस बात पर चर्चा की कि राशी ने "कोई परिश्रम का काम न करना" की व्याख्या पहले क्यों की और "पवित्र महासभा" की बाद में। वे कहते हैं कि राशी का तर्क संभवतः यौम किप्पुर की विशेषता से संबंधित है, जो अन्य पर्वों से अलग होता है।

### **4. लवुशा हा-ओरा:**

उन्होंने सुझाव दिया कि राशी ने पहले "कोई परिश्रम का काम न करना" पर चर्चा की क्योंकि प्रश्न उठ सकता है कि क्या यह निषेध रात्रि में भी लागू होता है। यौम किप्पुर में भी "שָׁמַרְאָ קָדָשָׁ" शब्द प्रयुक्त होता है, और वहाँ रात्रि भी पवित्र मानी जाती है।

### **5. मास्किल ले-डेविडः**

उन्होंने कहा कि राशी पहले "कोई परिश्रम का काम न करना" समझाते हैं ताकि यह स्पष्ट हो कि यह निषेध रात में भी लागू होता है। इसके बाद "שָׁמַרְאָ קָדָשָׁ" की व्याख्या इस रूप में की जाती है कि यह पवित्रता दिन-रात बनी रहती है।

### **6. पारदेस योसेफः**

उन्होंने विभिन्न पर्वों में "שָׁמַרְאָ קָדָשָׁ" के प्रयोग की तुलना की। उन्होंने उल्लेख किया कि यह शब्द

अलग-अलग पर्वों में अलग संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है। उदाहरण के लिए,

- फसह (पासओवर) और शावौत (पेंटेकोस्ट) में इसका अर्थ काम बंद करना होता है।
- रोश हशाना में यह स्मरण और शफार बजाने से जुड़ा है।
- सुकोत में, जहाँ "וְאַתָּה" (शब्दतोन) शब्द भी प्रयुक्त होता है, यहाँ इसे भोजन और पीने के साथ विशेष बनाया जाता है।

## 7. मालबिमः

उन्होंने "पवित्रता" का एक व्यापक अर्थ बताया-पृथक रहना। यह पृथकता वाणी (घोषणा द्वारा) और कर्मों (विशेष कपड़े, विशेष भोजन) द्वारा प्रकट होती है, जैसा कि नहेमायाह 8:10 में उल्लेख है।

---

## आज के मसीही चर्च में इसका क्या महत्व है?

आज के कई मसीही समुदायों में सुकोत (Tabernacles - तंबूओं का पर्व) को यहां दी परंपरा के रूप में देखा जाता है, लेकिन कुछ मसीही समूह इस पर्व को मसीह के आगमन और हमारे साथ उसके निवास के प्रतीक के रूप में मानते हैं।

### 1. यीशु और सुकोतः

- यूहन्ना 1:14 कहता है:

"और वचन देहधारी हुआ और हमारे बीच में डेरा किया" ("Tabernacled among us")।

- सुकोत पर्व अस्थायी निवास का प्रतीक है, और मसीही मानते हैं कि यीशु मसीह हमारे बीच अस्थायी रूप से आए, और पुनः लौटेंगे।

## 2. आध्यात्मिक विश्राम:

- सुकोत के दौरान ”कोई परिश्रम का काम न करना” की आज्ञा विश्राम (Rest) का प्रतीक है।
- मसीही इसे यीशु मसीह में विश्राम पाने (मत्ती 11:28) से जोड़ते हैं: ”हे सब परिश्रम करनेवालों और बोझ से दबे लोगों, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूँगा।”

## 3. सर्वजातीय आराधना का पर्व:

- जकर्या 14:16-19 कहता है कि जब मसीह का राज्य आएगा, तब सारी जातियाँ सुकोत का पर्व मनाएँगी।
  - यह पर्व यहूदी और अन्यजातियों (Gentiles) को एक साथ लाने का प्रतीक बन जाता है।
- 

## प्रार्थना:

”हे स्वर्गीय पिता, हम तेरे नाम की महिमा करते हैं क्योंकि तूने हमें विश्राम और आराधना के दिन प्रदान किए हैं। जैसे सुकोत पर्व पर तेरा वचन हमें पवित्र महासभा का आदेश देता है, वैसे ही हम अपने जीवन में तुझे प्रथम स्थान दें। प्रभु यीशु मसीह में हमें विश्राम और शांति प्राप्त होती है। हमें सिखा कि हम अपनी चिंताओं को तेरे चरणों में रखें और तेरे साथ समय बिताएँ। हमारे हृदयों को इस पर्व के संदेश से भर दे कि तू हमारे साथ वास करता है।

## प्रभु यीशु मसीह के नाम में, आमीन।"

---

### **निष्कर्षः**

- "שְׁמֵךְ אֶת־אָרוֹן" का अर्थ है दिन को पवित्र और विशेष बनाना।
- कई रब्बियों ने इसकी व्याख्या वस्त्र, भोजन, और प्रार्थना से की।
- मसीही विश्वास में, यह पर्व प्रभु यीशु मसीह में पूर्ण होता है, जो हमारे साथ वास करते हैं।
- यह हमें याद दिलाता है कि हमें सांसारिक कार्यों से परे, परमेश्वर में विश्राम लेना चाहिए।

P162 Le.23 On resting on Shavuot

### **लैब्यव्यवस्था 23:1 (Leviticus 23:1) हिंदी में:**

"तब यहोवा ने मूसा से कहा,"

### **व्याख्या:**

लैब्यव्यवस्था अध्याय 23 यहोवा के ठहराए हुए पर्वों (त्योहारों) के बारे में बताता है। यह अध्याय विशिष्ट दिनों की सूची देता है जिन्हें पवित्र सभा (मिकलरै कादेश - मִקְלָעַ אֶת־אָרוֹן) के रूप में मनाया जाना चाहिए। इस अध्याय की शुरुआत यहोवा के इस आदेश से होती है कि मूसा इस्राएलियों को यह पर्व बताएं।

इस अध्याय में सबसे पहले सब्ज (शब्बत) का उल्लेख है और फिर अन्य वार्षिक पर्वों का वर्णन किया गया है, जैसे फसह (पासओवर), पेंतेकोस्त (शवुओत), यौम किप्पूर (प्रायश्चित का दिन),

आदि। लेकिन कई यहूदी विद्वानों ने इस बात पर चर्चा की है कि सब्ज को इन पर्वों की सूची में क्यों रखा गया है? क्या सब्ज भी एक "मौअद" (ठहराया गया पर्व) है?

---

## रब्बियों की व्याख्याएँ:

### 1. अबरबनेल (Abarbanel) की टिप्पणी:

अबरबनेल ने कई सवाल उठाएः

- यदि सब्ज को मौअद (त्योहारों) में गिना जाता है, तो क्यों इसे बाकी पर्वों की सूची से अलग रखा गया है?
- अध्याय के अंत में "शब्बत के अलावा" (ה שבתות מלבד) क्यों कहा गया?
- सब्ज के लिए विशिष्ट बलिदानों का उल्लेख क्यों नहीं है, जबकि अन्य पर्वों के लिए हैं?

□ उत्तर: अबरबनेल निष्कर्ष निकालते हैं कि सब्ज का उल्लेख यहाँ इसलिए है क्योंकि यह एक "स्वतः ठहराया गया पर्व" (Divinely Fixed Festival) है, जबकि अन्य पर्व इस्राएलियों के द्वारा नए चंद्रमा (Rosh Chodesh) के निर्धारण पर निर्भर करते हैं।

---

### 2. अल्शेख (Alshekh) की व्याख्या:

- "אללה מזעע" (ये यहोवा के पर्व हैं) वाक्य बार-बार क्यों दोहराया गया?
- क्यों कहा गया कि ये "मौअदी हैं" (मेरे पर्व) हैं, ना कि "मौअदियेचेम" (तुम्हारे पर्व)?

□ उत्तर: अल्शेख कहते हैं कि पहला "मौअदी हैं" उन्हीं दिनों को संदर्भित करता है जो स्वतः

पवित्र हैं (जैसे सब्ल), जबकि दूसरा "שְׁאֵלָה מִקְרָא' קָדָשׁ" (जो तुम पवित्र सभाएँ कहकर बुलाओगे) उन पर्वों के लिए है जो यहदी अदालत (Sanhedrin) के निर्णय पर निर्भर होते हैं।

---

### 3. डेविड ज़्वी हॉफमैन (David Zvi Hoffmann):

- वे ध्यान देते हैं कि यह अध्याय एक पवित्र कैलेंडर का निर्माण करता है।
  - वह बताते हैं कि कुछ लोगों को यह भ्रम हो सकता था कि सब्ल भी वार्षिक पर्वों में गिना गया है, इसलिए बाद में "תְּלַמֵּשׁ הַלְאָה" (ये पर्व हैं) को फिर से दोहराया गया।
  - वे रम्बान (Nachmanides) का उल्लेख करते हैं, जो कहते हैं कि सब्ल को इन पर्वों से अलग करना आवश्यक था क्योंकि इसकी पवित्रता अधिक है (शब्त शब्तोन - पूर्ण विश्राम का दिन) और यह चंद्र कैलेंडर पर निर्भर नहीं करता।
- 

### 4. हआमेक दावर (Haamek Davar):

- वे कहते हैं कि ये पर्व केवल इसाएलियों के लिए ही पवित्र नहीं हैं, बल्कि ये पूरी सृष्टि के लिए विशेष रूप से ठहराए गए हैं।
- मिष्नाह (Mishnah) के अनुसार, ये पर्व केवल धार्मिक ही नहीं बल्कि प्राकृतिक और ऐतिहासिक घटनाओं से भी जुड़े हैं।

□ **उदाहरण:** रोश हशानाह (नया साल) केवल इसाएल के लिए नहीं, बल्कि पूरी दुनिया के लिए न्याय का दिन है।

---

## 5. मालबीम (Malbim):

- वे इस बात को स्पष्ट करते हैं कि त्योहारों की तिथियों को निर्धारित करने की शक्ति यहूदी अदालत (Sanhedrin) के पास है।
  - "שַׁׁעֲרָא אַתָּם מִקְרָא קָדְשָׁה" (जो तुम पवित्र घोषित करोगे) का अर्थ यह है कि पर्वों की पवित्रता का निर्धारण इस्राएली सभा (Sanhedrin) द्वारा किया जाता है।
- उदाहरण: यदि यहूदी अदालत गलती से गलत दिन को नया चाँद घोषित करे, तो भी वह पर्व वैध होगा।
- 

## 6. रब्बी शमशोन रेफाल हिर्श (Rav Hirsch):

- वे कहते हैं कि यह अध्याय मंदिर में बलिदान की विधि के संदर्भ में आता है।
  - वे "स्थानिक पवित्रता" (Spatial Holiness - मंदिर) और "काल की पवित्रता" (Temporal Holiness - पर्व) के बीच अंतर समझाते हैं।
  - सब को एक साप्ताहिक पर्व और अन्य पर्वों को वार्षिक पर्वों के रूप में देखते हैं।
- उदाहरण: यहूदी मंदिर का स्थान स्थायी रूप से पवित्र था, जबकि पर्व समय-समय पर पवित्रता प्रदान करते हैं।
- 

## आज के मसीही चर्च में इसका क्या महत्व है?

हालांकि लैब्यवरस्था 23 यहूदी पर्वों का वर्णन करता है, लेकिन मसीही विश्वासियों के लिए

**भी यह अध्याय महत्वपूर्ण है क्योंकि:**

1. **सब्ल और यीशु मसीहः** यीशु ने कहा, "मनुष्य का पुत्र भी सब्ल का प्रभु है" (मत्ती 12:8)।  
इस से पता चलता है कि सब्ल का गहरा आध्यात्मिक अर्थ मसीह में पूरा हुआ।
  2. **फसह और कूसः** फसह (पासओवर) के पर्व के दौरान यीशु को कूस पर चढ़ाया गया।  
इसलिए, फसह मसीह के बलिदान की छाया थी (1 कुरिन्थियों 5:7 - "मसीह हमारा फसह बलिदान हुआ")।
  3. **पिन्तेकुस्त और पवित्र आत्मा: शावुओत (पिन्तेकुस्त)** के दिन पवित्र आत्मा का अवतरण हुआ (प्रेरितों 2:1-4)।
  4. **यौम किष्पूर और उद्धारः** यह प्रायश्चित का दिन मसीह के बलिदान का संकेत करता है, जिसने एक ही बार में पापों के लिए प्रायश्चित कर दिया।
- 

**इससे जुड़ी एक प्रार्थना (यीशु मसीह के जीवन से**

**प्रेरित):**

हे परमेश्वर, तू जो समय और अनंतकाल का स्वामी है, तेरे पर्वों के पीछे तेरी योजना प्रकट होती है।

जैसे तूने सब्ल को विश्राम का दिन ठहराया, वैसे ही हमें मसीह में शांति और विश्राम दे।

जैसे फसह के मेघे का बलिदान हुआ, वैसे ही यीशु मसीह ने हमें पाप से छुड़ाया।

जैसे पिन्तेकुस्त के दिन आत्मा का अवतरण हुआ, वैसे ही हमें अपने आत्मा से भर दे।

हमें तेरे पवित्र समयों की गहरी समझ दे, ताकि हम अपने जीवन को तेरी महिमा के लिए अर्पित कर सकें।

## **यीशु मसीह के नाम में, आमीन।**

---

### **निष्कर्षः**

लैब्यव्यवस्था 23:1 यह दिखाता है कि परमेश्वर ने समय को कैसे पवित्र किया और उसे मनाने का तरीका बताया। सब्ज और अन्य पर्वों का महत्व यहूदी और मसीही दोनों परंपराओं में गहरा है। यीशु मसीह में, ये पर्व एक नई पूर्णता को प्राप्त करते हैं और हमें परमेश्वर की योजना में हमारी भूमिका समझने के लिए प्रेरित करते हैं।

### **लेवितिकुस 23:2 हिंदी में**

“इस्राएलियों से कहो, ‘यहोवा के ठहराए हुए पर्व जो तुम पवित्र सभाओं के रूप में बुलाओगे, वे ये हैं, ये मेरे पर्व हैं।’”

---

### **लेवितिकुस 23:2 की व्याख्या**

यह पद परमेश्वर के ठहराए हुए पर्वों के बारे में बताता है, जिन्हें इस्राएलियों को पवित्र सभाओं के रूप में मानना था। यहाँ “माना: ‘एग्गा’” (परमेश्वर के नियत समय) का उल्लेख किया गया है, जो विशिष्ट समय होते थे जब इस्राएलियों को परमेश्वर की आराधना और बलिदान चढ़ाने के लिए एकत्रित होना होता था।

इस पद के अनुसार:

1. परमेश्वर स्वयं इन पर्वों को ठहराते हैं।
  2. इन पर्वों को "पवित्र सभाएँ" (מִשְׁׁעָרָן אֲגַדּוֹן) कहा गया है, जिसका अर्थ है कि इन दिनों को केवल छुट्टी के रूप में ही नहीं, बल्कि आराधना और पवित्रता के लिए समर्पित करना था।
  3. इस्राएलियों को इन पर्वों की घोषणा करनी थी। इसका अर्थ यह भी है कि इन्हें यहूदियों की धार्मिक व्यवस्था और यहूदी महायाजकों के द्वारा सही समय पर मनाने का अधिकार दिया गया था।
- 

## रब्बियों की व्याख्या

### 1. राशी (Rashi)

वे समझाते हैं कि "मोआदे ह" (परमेश्वर के पर्व) का अर्थ है कि इन्हें सही समय पर मनाने के लिए इस्राएलियों को अभ्यास में लाया जाए। इसके लिए यहूदी महासभा (Sanhedrin) leap year (अतिरिक्त महीना) जोड़ती थी ताकि लोग समय पर यरूशलाम पहुँच सकें।

### 2. इब्न ए़ज़रा (Ibn Ezra) और चिज़कुनी (Chizkuni)

वे बताते हैं कि "मान्या" (मेरे पर्व) का बहुवचन रूप इस बात को दर्शाता है कि ये केवल पर्व ही नहीं, बल्कि हर सप्ताह का सब्द भी परमेश्वर द्वारा ठहराया गया समय है।

### 3. रामबान (Nachmanides)

वे समझाते हैं कि इस पद का एक अर्थ यह भी है कि इसाएलियों को पवित्र पोशाक पहननी चाहिए, प्रार्थना करनी चाहिए, और इन दिनों को आराधना और शिक्षा के लिए समर्पित करना चाहिए।

#### **4. राशबाम (Rashbam)**

वे बताते हैं कि "तिक्रउ" (तुम बुलाओगे) का अर्थ यह है कि इन दिनों को विशिष्ट रूप से पवित्र घोषित किया जाना चाहिए और इनके समय को स्थिर किया जाना चाहिए।

#### **5. रब्बी शमशोन राफेल हिर्श (Rav Hirsch)**

वे इसे एक कानूनी सिद्धांत बताते हैं और यह समझाते हैं कि यहूदी महासभा के द्वारा घोषित समय ही वास्तव में परमेश्वर के पर्व होते हैं।

#### **6. स्फोर्नो (Sforno)**

वे कहते हैं कि ये पर्व विशिष्ट रूप से आध्यात्मिक कार्यों के लिए अलग किए गए हैं, ताकि लोग अपनी सांसारिक चिंताओं से अलग होकर परमेश्वर की ओर ध्यान केंद्रित करें।

#### **7. ओर हचैम (Or HaChaim)**

वे यह कहते हैं कि केवल सब्बा को छोड़कर, बाकी सभी पर्वों की तिथियाँ यहूदी महासभा द्वारा निर्धारित की जाती थीं।

#### **8. तोलेदोत यित्तच (Toledot Yitzchak)**

वे बताते हैं कि जब महासभा कोई पर्व तय करती थी, तो परमेश्वर भी इसे स्वीकार करते थे।

## उदाहरण:

इसाएली धार्मिक परंपरा में निसान महीने में फसह पर्व (Passover) आता है। यह पद यह दिखाता है कि यह पर्व केवल परमेश्वर द्वारा ठहराया गया नहीं है, बल्कि यह महासभा की आधिकारिक घोषणा पर निर्भर करता है। यदि फसह पर्व वसंत ऋतु में नहीं पड़ता, तो महासभा एक अतिरिक्त महीना जोड़ती थी ताकि यह सही समय पर मनाया जा सके।

इसी तरह, यह नियम अन्य पर्वों जैसे यौम किप्पुर (प्रायश्चित का दिन), शावूत (पेंटेकॉस्ट), और सक्कोत (झोपड़ियों का पर्व) पर भी लागू होता है।

## आज के मसीही चर्च में इसका क्या महत्व है?

मसीही धर्म में, यहूदी पर्वों को ज्यादातर उसी रूप में नहीं मनाया जाता जैसा कि यहूदी धर्म में किया जाता है, लेकिन उनके आध्यात्मिक अर्थों को इसा मसीह में पूरा हुआ माना जाता है:

1. **फसह (Passover) और प्रभु भोज (The Lord's Supper)** - मसीही विश्वास में, फसह के मेमने का बलिदान यीशु मसीह के बलिदान का प्रतीक है।
2. **शावूत (Pentecost) और पवित्र आत्मा का आगमन** - यह पर्व पेंटेकॉस्ट (Pentecost) में पूरा हुआ, जब पवित्र आत्मा प्रेरितों पर उतरा (प्रेरितों के काम 2:1-4)।
3. **यौम किप्पुर और यीशु का क्रूस पर बलिदान** - यह दिन प्रायश्चित का पर्व है, और यीशु का बलिदान इसे पूरा करता है।
4. **सब और यीशु में विश्राम** - यहूदी सब का पूर्ण अर्थ यीशु मसीह में विश्राम पाने से जुड़ा

है (मत्ती 11:28)।

हालांकि कुछ मसीही समुदाय (विशेष रूप से मेसियैनिक यहूदी) अभी भी इन पर्वों को एक मसीही दृष्टिकोण से मनाते हैं, अधिकांश चर्चों में इनका पालन अनिवार्य नहीं है, क्योंकि यीशु मसीह ने इनका पूर्णता दी है।

---

## इससे जुड़ी एक प्रार्थना (यीशु मसीह के जीवन से प्रेरित)

### प्रार्थना:

\*\*\*“हे परमेश्वर, हमारे उद्धारकर्ता, तेरे द्वारा ठहराए गए पर्वों में तेरी पवित्रता को देखने के लिए हमारी आत्मा को जाग्रत कर। जिस प्रकार तूने इम्माएलियों को पवित्र समय दिया, वैसे ही हम भी अपने जीवन में तुझे प्राथमिकता दें। यीशु मसीह ने अपने जीवन और बलिदान के द्वारा इन पर्वों की पूर्णता को प्रकट किया, इसलिए हम तुझ में विश्राम पाते हैं। हमें तेरे साथ संगति में जीवन व्यतीत करने के लिए सिखा, ताकि हम सच्ची आराधना कर सकें और तेरे प्रेम को दुनिया तक पहुँचा सकें।

हे प्रभु, जैसे तूने अपने शिष्यों को पवित्र आत्मा से भर दिया, वैसे ही हमें भी अपने आत्मा से भर दे, ताकि हम तेरी सच्चाई और अनुग्रह में चल सकें। यीशु मसीह के नाम में, आमीन।”\*\*

---

### निष्कर्ष:

लेवितिकुस 23:2 यह दिखाता है कि परमेश्वर ने निश्चित समय ठहराए जिनमें उनकी आराधना

की जानी थी। यहूदी धर्म में ये पर्व धार्मिक और आध्यात्मिक रूप से महत्वपूर्ण थे। मसीही धर्म में, यीशु मसीह को इन पर्वों की पूर्ति माना जाता है, और इसलिए वे नई वाचा के तहत एक नई व्याख्या प्राप्त करते हैं।

□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□! □□

□ □□□□□□□□□□□□□□□ 23:3 (Leviticus 23:3) □□□□□ □□□

”छः दिन काम-काज किया जाए, परन्तु सातवां दिन विश्राम का विश्राम, पवित्र सभा का दिन होगा; उस दिन कोई काम-काज न करना। वह दिन यहोवा का विश्रामदिन होगा तुम्हारे सब रहने के स्थानों में।”

A horizontal row of 20 empty rectangular boxes, likely for students to write their names in during a classroom activity.

यह पद सब्ज (विश्राम) के दिन को स्थापित करता है और इसे पवित्र घोषित करता है। इसे चार मरव्य भागों में बाँटा जा सकता है:

## 1 इः दिन काम करना:

- यह दिखाता है कि सामान्य रूप से श्रम करना आवश्यक है, लेकिन यह भी संकेत देता है कि इंसान को केवल काम के लिए नहीं बनाया गया है।

## 2. सातवाँ दिन विश्राम का दिन:

- यहाँ "शब्दत शब्दातोन" ((תְּבִיבָה שְׁבִיבָה) का उल्लेख है, जिसका अर्थ है "पूर्ण

### विश्राम का दिन।"

- यह दिखाता है कि सब्ल केवल सामान्य विश्राम का दिन नहीं है, बल्कि यह पूरी तरह परमेश्वर को समर्पित पवित्र दिन है।

### 3. पवित्र सभा (मिकरा कोदश - שְׁדָאַרָּה מִקְרָאַה):

- सब्ल केवल व्यक्तिगत विश्राम का समय नहीं है, बल्कि सामूहिक आराधना और परमेश्वर की संगति का समय है।

### 4. कोई काम न करना (कोल मेलाखा - מְלָאָכָה לְאַל):

- इस दिन कोई भी श्रम न करने की आज्ञा दी गई है। यह आज्ञा सामान्य कामों के साथ-साथ व्यापार, कृषि, और अन्य प्रकार के परिश्रम को भी शामिल करती है।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □

## 1 सब्ल और पर्व (मोड़ाई - מְאוֹד) का संबंध

□ राशी (Rashi) और टोराह तेमीमाह (Torah Temimah) "सिफ्रा" से उद्धृत करते हैं कि सब्ल और यहोवा के पर्वों को एक साथ रखा गया है ताकि यह समझाया जाए कि त्योहारों का उल्लंघन करना सब्ल के उल्लंघन के समान है।

□ गुर आर्ये (Gur Aryeh) इस बात को जोड़ते हैं कि सात पर्व (फसह, मक्का की पहली फसल, सब्ल, तुरही का दिन, प्रायश्चित का दिन, झाँपड़ी का पर्व, और अतिरिक्त पर्व) सातवें दिन के समान हैं, क्योंकि वे सब्ल के ही प्रकार हैं।

□ रव हिर्श (Rav Hirsch) बताते हैं कि सब्ल परमेश्वर द्वारा स्थापित है, जबकि पर्वों की तिथि मनुष्यों द्वारा घोषित की जाती थी (महीने के नए चाँद को देखकर)। इसलिए, सब्ल को तोड़ा नहीं जा सकता, लेकिन पर्वों को गलत तरीके से मनाया जा सकता है।

---

## 2 □ सब्ल के दिन 'काम' (הַעֲלָמָה - मेलाखा) का अर्थ

□ अदरेट एलियाहु (Aderet Eliyahu):

- सब्ल का उल्लंघन न केवल बड़े श्रम में होता है बल्कि छोटे कार्यों में भी होता है, जैसे दो अक्षर लिखना।

□ रालबाग (Ralbag):

- "मेलाखा" का मतलब केवल शारीरिक श्रम नहीं है, बल्कि वह सब कुछ जो किसी उद्देश्य की पूर्ति करता है, जैसे कि खाना बनाना, यात्रा करना, या व्यापार करना।

□ दाविद ल्ज़वी हॉफमैन (David Zvi Hoffmann):

- "मेलाखा" शब्द "लाख" (לָאַח) से आया है, जिसका अर्थ "सेवा करना" होता है। इस प्रकार, सब्ल पर किसी भी सेवा या काम को रोकना आवश्यक है।

□ हामेक दावार (Haamek Davar):

- सब्ल पर भोजन तैयार करने का भी निषेध है, जबकि त्योहारों पर भोजन तैयार करने की छूट दी गई है।
-

### 3 □ "शब्दत शब्दातोन" (שְׁבָדְת שְׁבָדָתָן) का अर्थ

□ दाविद ल़ावी हॉफमैनः

- "शब्दत शब्दातोन" शब्द को दोहराने का अर्थ है कि यह पूर्ण विश्राम का दिन है, जैसा कि योम किप्पुर (प्रायश्चित का दिन) है।

□ हामेक दावारः

- "शब्दातोन" शब्द अन्य संदर्भों में थोड़ा अलग अर्थ रखता है, लेकिन यहाँ इसका तात्पर्य पूर्ण और संपूर्ण विश्राम से है।
- 

### 4 □ "मिकरा कोदश" (מִקְרָא קֹדֶשׁ - पवित्र सभा) का अर्थ

□ अदरेट एलियाहः

- सब्द केवल विश्राम नहीं, बल्कि एक पवित्र दिन है, जिसे खाने-पीने और पवित्र कपड़े पहनने से भी सम्मान दिया जाना चाहिए।

□ रव हिर्शः

- यह दिन केवल आराम के लिए नहीं, बल्कि परमेश्वर के साथ संबंध को मजबूत करने का समय है।

□ किल्जुर बाल हतुरिमः

- "मिकरा कोदश" शब्द की संख्या गणना ("गेमात्रिया") का अर्थ "भोजन" (הַשְׁמָה -

मिष्टेह) होता है, जिससे यह संकेत मिलता है कि सब्ब को उत्सव की तरह मनाया जाना चाहिए।

---

## 5 □ "बेखोल मोशवतेइखेम" (מִשְׁבַּת מִשְׁבַּת - तुम्हारे सभी निवास स्थानों में) का अर्थ

### □ इब्र एज्ञा और हिज़कुनी:

- सब्ब इज़राइल या मंदिर तक सीमित नहीं है, बल्कि सभी स्थानों में मनाया जाना चाहिए।

### □ सफोर्नो:

- सब्ब का आरंभ और अंत स्थान के अनुसार होता है, यह यरूशलेम के कैलेंडर पर निर्भर नहीं करता।

### □ रव हिर्श:

- सब्ब की पवित्रता राष्ट्रीय या भौगोलिक नहीं, बल्कि सार्वभौमिक है।
- 

† □□□□□□□□□□□□□□□□□□  
□□□□□

### → ईसाई धर्म में सब्ब का स्थान:

- ईसाई धर्म में, सब्ब का पालन शनिवार को नहीं, बल्कि रविवार (प्रभु का दिन) को

**किया जाता है क्योंकि यीशु मसीह उसी दिन मरे हुओं में से जी उठे।**

- प्रेरित पौलुस ने सब्ल को अनिवार्य नहीं बताया (कुलुस्सियों 2:16), बल्कि मसीही जीवन को पूरी तरह प्रभु के लिए समर्पित करने पर जोर दिया।

→ज्ञान और तकनीक पर नैतिक सीमाएँ:

- यह विचार कि इंसान को सप्ताह में एक बार अपने श्रम और तकनीक से पूर्ण रूप से दूर रहना चाहिए, आधुनिक जीवन में भी महत्वपूर्ण है।

→मसीही विश्वास में सब्ल की व्याख्या:

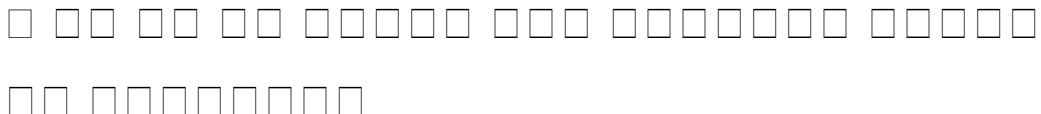
- मसीही धर्म में सब्ल का आध्यात्मिक रूप से विश्राम और परमेश्वर के साथ संगति का प्रतीक माना जाता है (मत्ती 11:28-30)।

□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□  
□□□□□□□

हे परमेश्वर, हम तेरा धन्यवाद करते हैं कि तूने हमें विश्राम का दिन दिया, जिससे हम तेरी आराधना में समय बिता सकें। जैसे यीशु मसीह ने विश्राम के वास्तविक अर्थ को समझाया और हमें सच्ची शांति प्रदान की, वैसे ही हम भी इस दिन को तेरी संगति में बिताएँ। हमें अपनी व्यस्तताओं से परे तुझमें शरण लेने दे, ताकि हम आत्मिक रूप से बलवंत बन सकें।  
यीशु मसीह के नाम में, आमीन। □□

**"यहोवा के ठहराए हुए पर्व ये हैं, अर्थात् पवित्र सभाएँ, जिनकी तुम उनके नियत समयों पर घोषणा करोगे।"**

---



यह पद यहोवा के नियत पर्वों (मोड़ाई 'ה') का परिचय कराता है, जिनका समय और पवित्रता यहूदियों की धार्मिक परंपराओं और बेइत दीन (यहूदी अदालत) द्वारा निश्चित किए जाते हैं। इस पद का केंद्रबिंदु यह है कि पर्वों का समय स्वर्गीय रूप से निर्धारित नहीं है, बल्कि यहूदी बेइत दीन को अधिकार दिया गया है कि वे इन पर्वों को घोषित करें।

**मुख्य विषय हैं:**

1. **"यहोवा के नियत पर्व" (מועדי ה)**
  - यह पर्व कोई सामान्य छुट्टियाँ नहीं, बल्कि यहोवा द्वारा ठहराए गए विशेष समय हैं, जिनका पालन अनिवार्य है।
2. **"पवित्र सभाएँ" (מקראים קודש - मिकरा कोदश)**
  - इसका अर्थ है कि यह पर्व केवल व्यक्तिगत उत्सव नहीं हैं, बल्कि सामूहिक रूप से मनाए जाने वाले परमेश्वर के पवित्र दिन हैं।
3. **"तुम्हें उनकी घोषणा करनी है" (אשר תקראו אותם - אשר תקראו אתֶם)**
  - इसका अर्थ यहूदी विद्वानों के अनुसार यह है कि पर्वों का समय यहूदी अदालत

## (Beit Din) के निर्णय पर निर्भर करता है।

---

□ □

□ □ □ □ □ □ □ □

### 1 □ "מֹאֲ" (तुम) शब्द का महत्व

- तलमूद (Rosh Hashanah 25a) और रब्बी बेनामोज़ेग (Rabbi Benamozegh) बताते हैं कि यदि बेइत दीन गलती से (शोगग), जानबूझकर (मेज़ीदिन), या गलत सूचना के कारण (מַוְתָּעָה) पर्व घोषित करता है, तब भी वह पर्व सही माना जाता है।
  - टोराह तेमीमाह (Torah Temimah) कहते हैं कि "מֹאֲ מֹאֲ מֹאֲ" तीन बार दोहराने का तात्पर्य यह है कि चाहे किसी भी परिस्थिति में बेइत दीन पर्व घोषित करे, वह वैध होता है।
  - पार्देस योसेफ (Pardes Yosef) बताते हैं कि अगर बेइत दीन चंद्र दर्शन में गलती करे, गलत साक्षियों के आधार पर निर्णय ले, या गलत तरीके से नया वर्ष घोषित करे, फिर भी उनके द्वारा घोषित पर्व मान्य होता है।
  - मालबीम (Malbim) भाषाई दृष्टिकोण से समझाते हैं कि जब "מֹאֲ אַרְקָגָ" में "מֹאֲ" शब्द आता है, तो यह बेइत दीन को अधिकार प्रदान करता है कि वे पर्व को वैध घोषित करें।
- 

2 □ □ □ □ □ □ (□ □ □ □ □ □ □) □ □ □ □ □ □ □

### □ इब्र एज़रा (Ibn Ezra):

- पर्वों का समय केवल खगोलीय गणनाओं पर नहीं बल्कि बेइत दीन के निर्णय पर भी

## निर्भर करता था।

### □ राशी (Rashi) और मिज़राची (Mizrachi):

- वे बताते हैं कि लैब्यवस्था 23:2 वर्ष के निर्णय (Leap Year) से संबंधित है, जबकि लैब्यवस्था 23:4 महीने के निर्णय (Sanctification of the Month) से संबंधित है।

### □ गुर आर्ये (Gur Aryeh):

- वे दोहराए गए "ה 'דיעו" को यह समझाने के लिए उपयोग करते हैं कि एक भाग वर्ष के समायोजन (intercalation) के लिए और दूसरा पर्व के दिन निर्धारित करने के लिए दिया गया है।

### □ रालबाग (Ralbag):

- वे बताते हैं कि बेइत दीन द्वारा घोषित पर्व, भले ही गलती से निर्धारित किए जाएँ, फिर भी परमेश्वर द्वारा मान्य माने जाते हैं।

3□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□

### □ नेटिनाह लागेर (Netinah LaGer):

- "שׁאָדָא אֶתְמָמָה קָרְאָה" दर्शाता है कि पर्वों की पवित्रता बेइत दीन की घोषणा पर निर्भर करती है, जबकि सब्त पहले से ही पवित्र है।

### □ मिद्रश (Nachalat Ya'akov और Tze'enah Ure'enah):

- इसमें दिखाया गया है कि परमेश्वर यहूदी अदालत के निर्णयों से सहमत होते हैं और

उनके अनुसार स्वर्गीय अदालत भी पर्वों को स्वीकार करती है।

---

† □□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□

#### → मसीही धर्म में पर्वों की भूमिका:

- मसीही धर्म में यहूदी पर्वों को ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण माना जाता है, लेकिन उनमें से कई को नई व्यवस्था (New Covenant) में मसीह की पूर्णता के रूप में देखा जाता है।

#### → सब्ज और पर्वों का महत्व:

- मसीहियों के लिए सब्ज को प्रभु का दिन (रविवार) के रूप में पुनः स्थापित किया गया, क्योंकि यीशु मसीह उसी दिन मरे हुओं में से जी उठे।

#### → यीशु मसीह ने पर्वों को कैसे पूरा किया:

- फसह (Passover) -> यीशु मसीह परमेश्वर का मेघा बन गए और उनके बलिदान से छुटकारे का मार्ग खुला।
- पिन्तेकुस्त (Shavuot) -> यह वही दिन था जब पवित्र आत्मा प्रेरितों पर उत्तरी (प्रेरितों के काम 2:1-4)।

#### → ईसाइयों के लिए पर्वों की शिक्षा:

- यह परमेश्वर द्वारा ठहराए गए समय को स्वीकार करने और उन्हें मसीह में पूर्णता के रूप में देखने का अवसर प्रदान करता है।
- पर्वों की घोषणा का सिद्धांत परमेश्वर के राज्य को स्थापित करने और उसकी

सच्चाई का प्रचार करने की जिम्मेदारी दिखाता है।

---

□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□  
□□□□□□□□

हे परमेश्वर, हम तेरा धन्यवाद करते हैं कि तूने हमें अपने ठहराए हुए समय में संगति और आराधना करने का अवसर दिया। जैसे तूने अपनी प्रजा को पर्वों को घोषित करने का अधिकार दिया, वैसे ही हमें भी अपनी आत्मिक यात्रा में तेरे समय को पहचानने और उसका सम्मान करने की बुद्धि दे। यीशु मसीह के माध्यम से हम तेरे राज्य के समय को पहचान सकें और उसे अपने जीवन में लागू कर सकें। हमें अपनी आत्मा से मार्गदर्शन दे ताकि हम तेरी योजना में चल सकें और तेरी इच्छा को पूरा कर सकें। यीशु मसीह के नाम में, आमीन। □□

□ □□□□□□□□□ 23:5 (Leviticus 23:5) □□□□□ □□□

“पहले महीने के चौदहवें दिन संध्या समय यहोवा के लिये फसह का पर्व होगा।”

---

□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□□□ □□□□□  
□□ □□□□□□□

यह पद फसह (Passover) बलिदान के बारे में बताता है, जो यहादी इतिहास और धार्मिक परंपरा में अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

□ □ □ □ □ □ □ □ :

## 1□ फसह का समय - "בֵין הַעֲרָבִים" (संध्या समय)

### 2□ "בֵין הַעֲרָבִים" (फसह का बलिदान यहोवा के लिए)

---

## □ 1□ "बीन हारवाम" (संध्या समय) का क्या अर्थ है?

### □ राशी (Rashi):

- "בֵין הַעֲרָבִים" का अर्थ दोपहर के छः घंटे (12:00 PM) के बाद से लेकर सूर्यास्त तक का समय है।
- जैसे-जैसे सूरज पश्चिम की ओर झुकता है, प्रकाश कम होने लगता है, इसलिए इसे संध्या कहा जाता है।
- यह व्याख्या उन्होंने निर्गमन 12:6 के संदर्भ में भी दी है।

### □ मिजराची (Mizrachi):

- वे राशी की व्याख्या को ही दोहराते हैं और जोड़ते हैं कि संध्या दो चरणों में होती है:
  1. पहला संध्या तब जब सूरज झुकने लगता है (सातवें घंटे से)।
  2. दूसरा संध्या तब जब रात का अंधकार आता है।
- इसलिए "בֵין הַעֲרָבִים" का समय दोपहर से रात होने तक है।

### □ रालबाग (Ralbag Beur HaMilot):

- "बिन हा-अरविम" (בֵין הַעֲרָבִים) दोपहर से लेकर सूर्यास्त तक का समय है।

□ रब्बी बेनामोज़ेग (Rabbi Benamozegh):

उन्होंने अन्य भाषाओं में "संध्या" शब्द की तुलना करके बताया कि कई संस्कृतियों में संध्या का समय दोपहर से ही शुरू माना जाता है।

□ मालबीम (Malbim):

- वे समझाते हैं कि "בָּרָע" (संध्या) तब होता है जब इसे "גַּאֲבָה" (सुबह) के मुकाबले में देखा जाता है, जिससे दिन के दो भाग होते हैं।
- लेकिन जब "בָּרָע" (संध्या) को "מִן" (दिन) के संदर्भ में देखा जाता है, तो यह पूर्ण रूप से रात का संकेत करता है।

□ चिज़कुनी (Chizkuni):

- वे बताते हैं कि 14 निसान की दोपहर और 15 निसान की रात दोनों को "फसह" कहा जाता है, क्योंकि उस समय बलिदान और उसका सेवन होता था।
- बाकी के दिनों को "अजमेरी रोटी का पर्व" (גָזְמָה גַּת) कहा जाता था।

□ 2 □ "הַלְלוּ יְהוָה" (फसह का बलिदान यहोवा के लिए)

**का क्या अर्थ है?**

□ राशी (Rashi):

- यह फसह बलिदान (Passover sacrifice) को संदर्भित करता है।
- "הַלְלוּ" नाम इसलिए पड़ा क्योंकि परमेश्वर ने मिस्र में इस्राएलियों के घरों को छोड़

## दिया ("Skipped over")।

### □ मिजराची (Mizrachi):

- "ה ל נוֹנָנָה" का मतलब है "फसह बलिदान परमेश्वर के लिए"।
- 14 निसान का दिन खुद "फसह" नहीं कहलाता, बल्कि यह बलिदान का दिन है।

### □ रव हिर्श (Rav Hirsch):

- फसह केवल एक बलिदान नहीं था, बल्कि यह यहूदी परिवारों और आत्माओं को परमेश्वर को समर्पित करने का समय था।
- यह मृत्यु और जीवन, गुलामी और स्वतंत्रता के बीच के समय का प्रतीक था।

### □ ओर हा-चाइम (Or HaChaim):

- "ה ל נוֹנָנָה" का अर्थ है कि बलिदान का एक भाग परमेश्वर के लिए था (रक्त का छिड़काव और चर्बी जलाना), और दूसरा भाग इसाएलियों के लिए था (बलिदान खाना)।
- पहला फसह मिस्र में एक तत्काल लाभ था, लेकिन बाद के फसह परमेश्वर की याद में मनाए गए।

### □ स्फोर्नो (Sforno):

- 14 निसान को "पवित्र सभा" नहीं कहा गया, फिर भी यह यहूदी वर्ष का केंद्र बिंदु बन गया, क्योंकि इस दिन बलिदान हुआ।

### □ बिरकत अशेर (Birkat Asher):

- "נוֹנָה" (फसह) का अर्थ परमेश्वर द्वारा मिस्र में यहूदी घरों को छोड़ना (Skipping Over) है।
- "גַּתְּאַתְּ מִצְרָיִם" (अजमेरी रोटी का पर्व) का अर्थ यहूदी लोगों की जल्दी में मिस्र छोड़ने के कारण रोटी के नहीं फूले हुए होने से है।

□ डेविड ज़्यवी हॉफमैन (David Zvi Hoffmann):

- वे बताते हैं कि वास्तव में पूरे पर्व को "גַּתְּאַתְּ מִצְרָיִם" (अजमेरी रोटी का पर्व) कहा जाता है, जबकि बलिदान को "נוֹנָה" कहा जाता था।
- 

† □□□□□□□□□□□□□□□□□□  
□□□□□□?

→ फसह और यीशु मसीह

- फसह का पर्व मसीही विश्वास में यीशु मसीह के बलिदान का प्रतीक बन गया।
- यीशु मसीह को "परमेश्वर का मेस्त्रा" (John 1:29) कहा गया, जो पापों के लिए बलिदान हुआ।
- यीशु मसीह को फसह के मेस्त्रे की तरह क्रूस पर चढ़ाया गया (1 कुरिन्थियों 5:7)।

→ प्रभु भोज (Lord's Supper) और फसह

प्रभु भोज (Holy Communion) फसह के ही समय स्थापित किया गया (लूका 22:15-20)।

यीशु ने कहा: "यह मेरा लहू है जो बहुतों के लिए बहाया जाता है।"

→ मसीही जीवन में इसका क्या अर्थ है?

- जैसे इसाएली फसह के मेघे के लहू से बचाए गए, वैसे ही मसीही लोग यीशु मसीह के लहू से छुटकारा पाते हैं।
  - फसह पाप की गुलामी से स्वतंत्रता का प्रतीक है, जैसे कि यीशु हमें पाप से मुक्त करते हैं।
- 

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ - □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

**हे स्वर्गीय पिता,**

तूने मिस्र से इस्राएलियों को छुड़ाने के लिए फसह का आदेश दिया, और उसी प्रकार तूने हमें छुड़ाने के लिए यीशु मसीह को भेजा।

हम धन्यवाद करते हैं कि मसीह हमारा फसह मेघा बना, जिसका लहू हमें मृत्यु से बचाता है।

हमें अपने बलिदान को समझने, तेरे अनुग्रह में बढ़ने, और पवित्र जीवन जीने की शक्ति दे।

हम मसीह में नया जीवन पाएं और तेरे प्रेम में बने रहें।

**यीशु मसीह के नाम में, आमीन। □□**

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ 23:6 (Leviticus 23:6) □ □ □ □ □ □ □

**"पन्द्रहवें दिन से यहोवा के लिए बिना खमीर की रोटी का पर्व आरंभ होगा; सात दिन तक तुम बिना खमीर की रोटी खाना।"**

□ □

□ □

यह पद "बिना खमीर की रोटी का पर्व" (Festival of Unleavened Bread) के बारे में है, जो फसह (Passover) बलिदान के बाद शुरू होता है और सात दिन तक चलता है।

□ □ □ □ □ □ □ □ :

1□ समय और अवधि - सात दिन का पर्व

2□ मट्ज़ा (बिना खमीर की रोटी) खाने का आदेश

3□ "גַּזְאָה גַּחַן" (बिना खमीर की रोटी का पर्व) का नाम और उद्देश्य

---

□ 1□ □ □ □ □ □ □ □ □ - □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ स्टीन्सल्ट्ज़ (Steinsaltz):

- पन्द्रहवें दिन से यह पर्व शुरू होता है, जो चौदहवें दिन के फसह बलिदान के बाद होता है।
- यह पर्व सात दिन तक चलता है, जिसमें बिना खमीर की रोटी (मट्ज़ा) खाने का आदेश है।

□ रब्बी डेविड ज़ेवी हॉफमैन (David Zvi Hoffmann):

- वे बताते हैं कि, जबकि पूरे सात दिन को "גַּזְאָה גַּחַן" (बिना खमीर की रोटी का पर्व) कहा जाता है, लैब्यव्यवस्था 23:6 में यह नाम पन्द्रहवें दिन के लिए विशेष रूप से दिया गया है, जो "גַּחַן" (उत्सव) के रूप में मान्यता प्राप्त करता है।

- इस दृष्टि से, सुक्कोट के मुकाबले, जहां पूरे सात दिन को "ת�וֹתָה גּוֹ" (सुक्कोट का पर्व) कहा जाता है, यहाँ पर सिर्फ पन्द्रहवां दिन विशेष रूप से "גּוֹ" के रूप में उल्लेखित किया गया है।
- 

□ **20 अंगठी (अंगठी अंगठी अंगठी)**

अंगठी अंगठी अंगठी

□ **आदरेट एलियाहु (Aderet Eliyahu):**

- वे स्पष्ट करते हैं कि सात दिनों तक मट्ज़ा खाने की आज्ञा सभी मट्ज़ा पर लागू होती है, हालांकि कुछ विशेष मामलों में जैसे "नैज़ीर का बिना खमीर की रोटी" या "धन्यवाद बलिदान" के दौरान खमीर की रोटी खाई जा सकती है।
- सामान्यतः मट्ज़ा को खाने का आदेश पूरे सात दिन तक है, यह फसह के बलिदान से जुड़ा हुआ है।

□ **चिजकुनी (Chizkuni):**

- वे भी यही कहते हैं कि मट्ज़ा खाने का आदेश पूरे सात दिन तक है, जो फसह की आज्ञा को पूरा करता है।
- हालांकि, अगर "धन्यवाद बलिदान" के दौरान खमीर वाली रोटी खाई जाए, तो यह इसके आदेश के बाहर मानी जाती है।

□ **रालबाग (Ralbag Beur HaMilot):**

- वे बताते हैं कि इन सात दिनों में, कोई भी रोटी खाई जाए तो वह मट्ज़ा ही होनी चाहिए,

लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि सातों दिन पूरी तरह मट्ज़ा खानी ही चाहिए (पहले दिन के बाद)। उनका यह तर्क यहूदी परंपरा में विस्तार से समझाया गया है।

#### □ रव हिर्श (Rav Hirsch):

- वे सात दिन के मट्ज़ा खाने को एक वार्षिक समारोह के रूप में मानते हैं, जिसमें यहूदी लोग परमेश्वर के सामने एकजुट होते हैं।
  - मट्ज़ा उन्हें गुलामी के समय की याद दिलाता है और स्वतंत्रता के इस नए जीवन का प्रतीक है, जिसे परमेश्वर ने उन्हें दिया है।
  - वे यह भी समझते हैं कि "मट्ज़ा" का आदेश यह दिखाता है कि यदि व्यक्ति रोटी खाता है, तो वह मट्ज़ा ही होनी चाहिए।
- 

#### □ 3 □ "הַמְצָוָה גַּת" (बिना खमीर की रोटी का पर्व) का

## नाम और उद्देश्य

#### □ हामेक दावर (Haamek Davar):

- "הַלְאֵת מִצְוָה גַּת" का अर्थ यह है कि यह नाम परमेश्वर के आदेश से आया है कि सात दिनों तक मट्ज़ा खानी चाहिए।
- यह नाम सुक्कोट के पर्व से भिन्न है, जहां पूरे सात दिनों को "גַּת מִצְוָה גַּת" (सुक्कोट का पर्व) कहा जाता है, जबकि यहाँ पन्द्रहवें दिन को ही "גַּת מִצְוָה גַּת" कहा गया है।

#### □ तोरा तेमिमा (Torah Temimah):

- वे यह भी जोड़ते हैं कि "הא שדאול" का प्रयोग लैब्यव्यवस्था 23:6 में इस बात को स्पष्ट करता है कि पन्द्रहवें दिन मट्ज़ा खाने का आदेश विशेष रूप से है, जो सुककोट के पर्व से भिन्न है, जहां मट्ज़ा का सेवन एक निश्चित समय तक नहीं होता।
- 

□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□

□ **डेविड ज़वी हॉफमैन (David Zvi Hoffmann):**

- वे व्याख्या करते हैं कि मट्ज़ा को "लेहम ओनी" (दुःख की रोटी) के रूप में खाने की आज्ञा दी गई है, जो मिस्र से भागने की जल्दी को दर्शाता है।
  - उनका कहना है कि खमीर से बचना परमेश्वर की इच्छा के अनुसार अपने इच्छाओं को नियंत्रित करने का प्रतीक है।
- 

† □□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□  
□□□□ □□?

→ मसीही विश्वास में मट्ज़ा और यीशु मसीह:

- मट्ज़ा यीशु मसीह के शरीर का प्रतीक बन गई है।
- यीशु ने अंतिम भोज (Last Supper) में मट्ज़ा को लिया और कहा: "यह मेरा शरीर है, जो तुम्हारे लिए दिया जाता है।" (लूका 22:19)
- मसीही विश्वास में मट्ज़ा पाप से मुक्त होने और स्वतंत्रता पाने का प्रतीक है, जैसा कि यहूदी लोग मट्ज़ा खाने के दौरान मिस्र की गुलामी से छुटकारा पाते हैं।

## → प्रभु भोज (Lord's Supper) और मट्ज़ा:

- प्रभु भोज के दौरान मट्ज़ा का सेवन यीशु के शरीर के बलिदान का प्रतीक है।
  - मसीही लोग प्रभु भोज के समय मट्ज़ा खाते हैं, जो कि फसह और मसीह के बलिदान से जुड़ा होता है।
- 

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ - □ □ □ □ □ □ □ □ □ □  
□ □ □ □ □ □ □ □ □

### हे स्वर्गीय पिता,

तूने हमें मसीह यीशु के माध्यम से नए जीवन का उपहार दिया। जैसे तुमने इमाएलियों को मिस्र  
की गुलामी से छुटकारा दिलाया, वैसे ही मसीह ने हमें पाप से मुक्ति दी।

हम तुझसे प्रार्थना करते हैं कि जैसे मट्ज़ा हमारे छुटकारे का प्रतीक है, वैसे ही हम भी तेरी इच्छा  
के अनुसार जीवन जीने के लिए समर्पित रहें।

हम तुझसे बलिदान के लिए धन्यवाद करते हैं और यीशु मसीह के नाम में प्रार्थना करते हैं,  
आमीन।

यीशु मसीह के नाम में, आमीन। □

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ 23:7 (Leviticus 23:7) □ □ □ □ □ □ □

“पहले दिन तुम्हें पवित्र मेला करना चाहिए; कोई भी कठिन श्रम नहीं करना चाहिए।”

---

□ □

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

**यह पद "बिना खमीर की रोटी के पर्व" (Festival of Unleavened Bread) के पहले दिन की धार्मिक अनुष्ठान और कार्य निषेध का वर्णन करता है।**

□ □ □ □ □ □ :

### **1 □ पवित्र मेला (Holy Convocation)**

**2 □ कठिन श्रम से बचने का आदेश**

**3 □ रब्बियों द्वारा "מְהֻדָּבָעַת לְאַמִּים" (काम) के बारे में व्याख्या**

---

### **1 □ □ □ □ □ □ □ □ (Holy Convocation)**

**□ आदरेट एलियाहु (Aderet Eliyahu):**

- "שְׁאַדָּר אֶלְيָהוּ מְקֹרָא" का अर्थ है कि यह एक पवित्र सभा का समय है, जिसमें लोग एकत्र होते हैं और पवित्र मामलों पर ध्यान केंद्रित करते हैं।
- यह शब्द "पवित्रता" को व्यक्त करता है, जैसे कि साफ-सुधरे कपड़े पहनने, और खाने-पीने की सही तैयारी के माध्यम से पवित्रता का पालन किया जाता है।

**□ डेविड ज़ेवी हॉफमैन (David Zvi Hoffmann):**

- वे बताते हैं कि यह दिन पूरे पर्व के सबसे पवित्र दिनों में से एक है और इस दिन कोई भी धार्मिक कार्यों में व्यस्त होने के बजाय अपने दिल और मन को पवित्रता की ओर मोड़े।

## 2□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□

□ "כל מלאכת עבודה לא תעשו" (तुम कोई भी कठिन श्रम नहीं करोगे):

- **मालाक्त उबोदा** का अर्थ है कठिन और परिश्रमपूर्ण काम, जो इस दिन के लिए निषेधित है।
- इस आदेश का उद्देश्य लोगों को आध्यात्मिक कार्यों में जुटने के लिए प्रेरित करना है और उन्हें शारीरिक श्रम से मुक्त रखना है ताकि वे परमेश्वर के साथ अपनी संबंधों में अधिक ध्यान केंद्रित कर सकें।

## 3□ "מְלָאכָת עֲבוֹדָה" (काम) के बारे में रब्बियों की

### व्याख्या

□ डेविड ज़्यवी हॉफमैन (David Zvi Hoffmann):

- वे बताते हैं कि "मलाक्त उबोदा" का निषेध पहले और अंतिम दिन दोनों में लागू होता है, और यह दिन में एक "अत्यधिक पवित्रता" (קדושה יגירה) को दर्शाता है।
- राशी के अनुसार, "मलाक्त उबोदा" में वो काम भी आते हैं जो आर्थिक रूप से नुकसान का कारण बन सकते हैं यदि न किए जाएं ("דבר האבר"), लेकिन यह काम Chol HaMoed (मध्य दिनों) में किया जा सकता है, जबकि Yom Tov (उत्सव दिनों) में यह निषेधित है।
- रामबान इसका विरोध करते हुए कहते हैं कि यदि यह सही होता तो शब्बत और योम

**किष्पुर पर भी यह निषेध होना चाहिए था। उनका कहना है कि "מְלָאכָת עֲבוֹדָה" का मतलब है केवल वह काम जो भोजन की तैयारी के लिए नहीं है (जो अक्सर कहलाता है)।**

□ **रब्बेइनु चैनल (Rabbeinu Chananel):**

- वे "מְלָאכָת עֲבוֹדָה" को भौतिक संपत्ति या आजीविका अर्जित करने से जुड़े कामों के रूप में समझते हैं, जैसे कि बीज बोना, खुदाई करना, हल चलाना और फसल काटना।
- वे स्पष्ट रूप से कहते हैं कि भोजन की तैयारी इस निषेध में नहीं आती।

□ **रव हिर्श (Rav Hirsch):**

- वे "מְלָאכָת עֲבוֹדָה" को पृथ्वी सेवा के रूप में समझते हैं, जबकि "שׁוֹבֵן" (भोजन की तैयारी का काम) व्यक्तिगत आनंद के लिए नहीं, बल्कि संसारिक आवश्यकता के लिए होता है।

□ **टूर हारोक्ह (Tur HaArokh):**

- वे "मְלָאכָת עֲבוֹדָה" का अनुवाद "कठिन श्रम" के रूप में करते हैं, और रामबान के दृष्टिकोण को सही ठहराते हुए कहते हैं कि यह भोजन की तैयारी को छोड़कर सभी प्रकार के काम को निषेधित करता है।

□ **स्टेन्साल्ट्ज़ (Steinsaltz):**

- वे बताते हैं कि "מְלָאכָת עֲבוֹדָה" का मतलब है कठिन श्रम जो भोजन की तत्काल तैयारी के अलावा किसी भी काम को निषेधित करता है।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

सभी रब्बियों का एक सामान्य मत है कि "מִהְעָדָת עַבְדָּת לְאַכְלָת" का निषेध भोजन की तैयारी पर लागू नहीं होता। यह सिद्धांत निर्देश से लिया गया है जो निर्वासन से बाहर निकलने के लिए पवित्र भोजन तैयार करने की अनुमति देता है (Exodus 12:16)।

---

† □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ ?

→ मसीही विश्वास में शब्दत और उत्सव दिवसः

- मसीही विश्वास में, ईश्वर के साथ सामूहिक जुड़ाव और पवित्रता की भावना को अत्यधिक महत्व दिया जाता है।
- मसीही लोग प्रभु भोज के दौरान और पवित्र दिनों में काम से बचने का पालन करते हैं ताकि वे ईश्वर के साथ आत्मिक संबंध बना सकें।

→ प्रभु यीशु का दृष्टिकोणः

- यीशु मसीह ने अंतिम भोज (Last Supper) के दौरान अपने शिष्यों को सिखाया कि "यह मेरा शरीर है" (लूका 22:19)। इस दिन भी मसीही लोग किसी भी कठिन श्रम से बचते हुए अपनी आत्मिक स्थिति पर ध्यान केंद्रित करते हैं।
- 

□ □ □ □ □ □ □ □ - □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □

**हे हमारे स्वर्गीय पिता,**

तू हमें अपना प्रेम और पवित्रता दिखाने के लिए यीशु मसीह को भेजा। जैसा कि हम इस विशेष दिन को मानते हैं, हम तुझसे प्रार्थना करते हैं कि हम अपनी सारी मेहनत और परेशानियों को छोड़कर, सिर्फ तुझसे जुड़ने के लिए समय निकालें।

हम तुझसे शक्ति मांगते हैं कि हम अपनी कार्यों को तुझे समर्पित करें और अपनी आत्मिक यात्रा में तुझे पूरी तरह से सम्मान दें।

तू हमारे जीवन का मार्गदर्शन कर, और हमें सही पथ पर चलने का साहस दे।

हम यीशु मसीह के नाम में प्रार्थना करते हैं, आमीन। □

**यीशु मसीह के नाम में, आमीन। □**

□ □□□□□□□□□ 23:7 (Leviticus 23:7) □□□□□ □□□

"पहले दिन तुम्हें पवित्र मेला करना चाहिए; कोई भी कठिन श्रम नहीं करना चाहिए।"

□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□□□ □□□□□

□□ □□□□□□□

यह पद "बिना खमीर की रोटी के पर्व" (Festival of Unleavened Bread) के पहले दिन की धार्मिक अनुष्ठान और कार्य निषेध का वर्णन करता है।

□ □□□□ □□□□:

1 □ **पवित्र मेला (Holy Convocation)**

## 2 □ कठिन श्रम से बचने का आदेश

### 3 □ रब्बियों द्वारा "מְלָאכָת עֲבוֹדָה" (काम) के बारे में व्याख्या

---

## 1 □ अदरेट एलियाहु (Holy Convocation)

### □ आदरेट एलियाहु (Aderet Eliyahu):

- "שְׁאַדָּא קָרָא מְלָאכָת" का अर्थ है कि यह एक पवित्र सभा का समय है, जिसमें लोग एकत्र होते हैं और पवित्र मामलों पर ध्यान केंद्रित करते हैं।
- यह शब्द "पवित्रता" को व्यक्त करता है, जैसे कि साफ-सुधरे कपड़े पहनने, और खाने-पीने की सही तैयारी के माध्यम से पवित्रता का पालन किया जाता है।

### □ डेविड झीवी हॉफमैन (David Zvi Hoffmann):

- वे बताते हैं कि यह दिन पूरे पर्व के सबसे पवित्र दिनों में से एक है और इस दिन कोई भी धार्मिक कार्यों में व्यस्त होने के बजाय अपने दिल और मन को पवित्रता की ओर मोड़े।
- 

## 2 □ अदरेट एलियाहु (Holy Convocation)

### □ "כָּל מְלָאכָת עֲבוֹדָה לֹא תַעֲשֶׂה" (तुम कोई भी कठिन श्रम नहीं करोगे):

- मलाचत लाक्षण्य का अर्थ है कठिन और परिश्रमपूर्ण काम, जो इस दिन के लिए निषेधित है।
- इस आदेश का उद्देश्य लोगों को आध्यात्मिक कार्यों में जुटने के लिए प्रेरित करना है।

और उन्हें शारीरिक श्रम से मुक्त रखना है ताकि वे परमेश्वर के साथ अपनी संबंधों में अधिक ध्यान केंद्रित कर सकें।

---

### 3□ "מְלָאכָת עֲבוֹדָה ל'" (काम) के बारे में रब्बियों की व्याख्या

#### □ डेविड ज़्रवी हॉफमैन (David Zvi Hoffmann):

- वे बताते हैं कि "מְלָאכָת עֲבוֹדָה ל'" का निषेध पहले और अंतिम दिन दोनों में लागू होता है, और यह दिन में एक "अत्यधिक पवित्रता" (קדשה יתירה) को दर्शाता है।
- राशी के अनुसार, "מְלָאכָת עֲבוֹדָה ל'" में वो काम भी आते हैं जो आर्थिक रूप से नुकसान का कारण बन सकते हैं यदि न किए जाएं ("דבר האבך"), लेकिन यह काम Chol HaMoed (मध्य दिनों) में किया जा सकता है, जबकि Yom Tov (उत्सव दिनों) में यह निषेधित है।
- रामबान इसका विरोध करते हुए कहते हैं कि यदि यह सही होता तो शब्बत और योम किप्पुर पर भी यह निषेध होना चाहिए था। उनका कहना है कि "מְלָאכָת עֲבוֹדָה ל'" का मतलब है केवल वह काम जो भोजन की तैयारी के लिए नहीं है (जो שפניאल कहलाता है)।

#### □ रब्बेइनु चैनल (Rabbeinu Chananel):

- वे "מְלָאכָת עֲבוֹדָה ל'" को भौतिक संपत्ति या आजीविका अर्जित करने से जुड़े कामों के रूप में समझते हैं, जैसे कि बीज बोना, खुदाई करना, हल चलाना और फसल काटना।

- वे स्पष्ट रूप से कहते हैं कि भोजन की तैयारी इस निषेध में नहीं आती।

□ रव हिर्श (Rav Hirsch):

- वे "מְלָאכָת עֲבוֹדָה" को पृथ्वी सेवा के रूप में समझते हैं, जबकि "שְׁפָנִים" (भोजन की तैयारी का काम) व्यक्तिगत आनंद के लिए नहीं, बल्कि संसारिक आवश्यकता के लिए होता है।

□ टूर हारोक (Tur HaArokh):

- वे "מְלָאכָת עֲבוֹדָה" का अनुवाद "कठिन श्रम" के रूप में करते हैं, और रामबान के दृष्टिकोण को सही ठहराते हुए कहते हैं कि यह भोजन की तैयारी को छोड़कर सभी प्रकार के काम को निषेधित करता है।

□ स्टेन्साल्ट्ज़ (Steinsaltz):

- वे बताते हैं कि "מְלָאכָת עֲבוֹדָה" का मतलब है कठिन श्रम जो भोजन की तत्काल तैयारी के अलावा किसी भी काम को निषेधित करता है।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

सभी रब्बियों का एक सामान्य मत है कि "מְלָאכָת עֲבוֹדָה" का निषेध भोजन की तैयारी पर लागू नहीं होता। यह सिद्धांत निर्देश से लिया गया है जो निर्वासन से बाहर निकलने के लिए पवित्र भोजन तैयार करने की अनुमति देता है (Exodus 12:16)।

† □□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□  
 □□□□□□□□?

→ मसीही विश्वास में शब्दत और उत्सव दिवसः

- मसीही विश्वास में, ईश्वर के साथ सामूहिक जुड़ाव और पवित्रता की भावना को अत्यधिक महत्व दिया जाता है।
- मसीही लोग प्रभु भोज के दौरान और पवित्र दिनों में काम से बचने का पालन करते हैं ताकि वे ईश्वर के साथ आत्मिक संबंध बना सकें।

→ प्रभु यीशु का दृष्टिकोणः

- यीशु मसीह ने अंतिम भोज (Last Supper) के दौरान अपने शिष्यों को सिखाया कि "यह मेरा शरीर है" (लूका 22:19)। इस दिन भी मसीही लोग किसी भी कठिन श्रम से बचते हुए अपनी आत्मिक स्थिति पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

□□□□□□□□□ - □□□□□□□□□□□□  
 □□□□□□□

हे हमारे स्वर्गीय पिता,

तू हमें अपना प्रेम और पवित्रता दिखाने के लिए यीशु मसीह को भेजा। जैसा कि हम इस विशेष दिन को मानते हैं, हम तुझसे प्रार्थना करते हैं कि हम अपनी सारी मेहनत और परेशानियों को छोड़कर, सिर्फ तुझसे जुड़ने के लिए समय निकालें।

हम तुझसे शक्ति मांगते हैं कि हम अपनी कार्यों को तुझे समर्पित करें और अपनी आत्मिक यात्रा में तुझे पूरी तरह से सम्मान दें।

तू हमारे जीवन का मार्गदर्शन कर, और हमें सही पथ पर चलने का साहस दे।

हम यीशु मसीह के नाम में प्रार्थना करते हैं, आमीन।

**यीशु मसीह के नाम में, आमीन। □**

□ □□□□□□□□□□ 23:8 (Leviticus 23:8) - □□□□□ □□□  
□□□□□ □□

"और तुम सात दिनों तक प्रभु के लिये आग से भेंट चढ़ाना, और सातवें दिन एक पवित्र मेला होगा; तुम कोई भी कठिन श्रम नहीं करोगे।"

---

□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□□□

यह पद "बिना खमीर की रोटी के पर्व" (Festival of Unleavened Bread) के सातवें दिन की बात करता है। इस दिन विशेष रूप से आग से भेंट चढ़ाने और पवित्र मेला आयोजित करने की बात की गई है। यह दिन विशेष रूप से पवित्र होता है और इस पर कठिन श्रम को करने से मना किया गया है।

□ □□□□□ □□□

1 □ "(आग से भेंट चढ़ाना)"

2 □ "(सातवें दिन पवित्र मेला और कठिन श्रम से बचना)"

---

## **1□ "הַלְא בַתְמָא שָׁא לֹה" (आग से भेंट चढ़ाना)**

### **□ रशी (Rashi):**

- रशी के अनुसार, "आग से भेंट" का तात्पर्य है सात दिनों तक हर दिन सामूहिक आग से चढ़ाई जाने वाली भेंट, जो त्योहार के दौरान की जाती हैं।
- रशी बताते हैं कि "आग से भेंट" से यह सिद्ध होता है कि ये भेंट एक-दूसरे में बाधित नहीं होती, अर्थात् यदि एक प्रकार का जानवर उपलब्ध नहीं है, तो दूसरे प्रकार के जानवर की भेंट चढ़ाई जा सकती है।
- रशी ने यह भी कहा कि "הַלְא שָׁא" का अर्थ है कि इन भेंटों को किसी भी परिस्थिति में चढ़ाना चाहिए, यदि बैल उपलब्ध नहीं हैं, तो भेंट चढ़ाई जा सकती हैं, और यदि वे भी उपलब्ध नहीं हैं, तो बकरियां चढ़ाई जा सकती हैं।

### **□ इब्र एज़रा (Ibn Ezra), मालबिम (Malbim), और रेगियो (Reggio):**

- ये सभी यह मानते हैं कि "आग से भेंट" का विवरण पिनचास के पराशा (नम्र 28-29) में विस्तार से दिया गया है, और यही नियम इस पर्व पर लागू होते हैं।

### **□ रालबाग (Ralbag):**

- रालबाग कहते हैं कि "पिनचास पराशा" में जो संख्या दी गई है, वह पूरे आज्ञा के पालन के लिए है, लेकिन यह संख्या एक सख्त आवश्यकता नहीं है। उदाहरण के लिए, यदि दो बैल उपलब्ध नहीं हैं, तो एक बैल चढ़ाया जा सकता है; अगर बैल नहीं हैं तो बकरियां चढ़ाई जा सकती हैं।

### **□ हामेक दावर (Haamek Davar):**

- वे यह बताते हैं कि "आग से भेंट" के बारे में जो संख्या दी गई है, वह केवल देश-विशेष की स्थिति के लिए है, और मिश्रित स्थानों में ऐसा सख्त पालन नहीं था।

□ **तोरा तेमिमा (Torah Temimah):**

- वे "מִתְמָמָה" (किसी भी स्थान/परिस्थिति से) का अर्थ यह समझते हैं कि भले ही पशु शुद्ध न हों, फिर भी भेंट चढ़ाई जानी चाहिए।
- 

**ב' ים השביעי מקרא קדש יהיה לא תעשו כל מלאכת "עבדה" 2□  
(सातवें दिन पवित्र मेला और कठिन श्रम से बचना)**

□ **रशी (Rashi):**

- रशी के अनुसार, "מלאכת עבדה" (कठिन श्रम) का अर्थ यह है कि वह कार्य भी निषिद्ध है, जो महत्वपूर्ण और आवश्यक हो, जैसे कि वह काम जिसे न करने पर आर्थिक नुकसान हो सकता है ("דבר האבד" )।
- रशी इस विचार को "टोरात कोहनिम" से निकालते हैं, जो चोल हामोएद (मध्य दिनों) में "דבר האבד" की अनुमति देने के विपरीत यम तव पर कठिन श्रम को निषिद्ध करते हैं।

□ **रामबान (Ramban):**

- रामबान रशी की व्याख्या से असहमत हैं। उनका कहना है कि अगर "מלאכת עבדה" में "דבר האבד" शामिल होता, तो यह शब्द त और योम किप्पुर में भी समान रूप से निषिद्ध

होता। वे यह भी कहते हैं कि "דבר האב" के लिए चोल हामोएद में जो नियम हैं, वे सिर्फ सज्जनियों द्वारा निर्धारित किए गए हैं, न कि यह सीधे तौर पर तोरा में लिखा गया है।

□ **डेविड ज़वी हॉफमैन (David Zvi Hoffmann):**

- वे बताते हैं कि "מלאת עבדה" का निषेध पहले और सातवें दिनों में लागू होता है और इसका अर्थ है "अत्यधिक पवित्रता"।

□ **गुर आर्ये (Gur Aryeh) और लेवुष हाओरा (Levush HaOrah):**

ये दोनों रशी और रामबान के बीच विवाद को समझाते हैं, विशेष रूप से "מלאת עבדה" के अर्थ के बारे में। वे कहते हैं कि रशी के अनुसार यम तव पर, यहां तक कि "दूसरी श्रेणी के काम", जो वित्तीय नुकसान से जुड़ा नहीं होता, भी निषिद्ध होता है, जबकि शब्बत पर सभी श्रम निषिद्ध होते हैं।

□ **स्टेन्साल्टज़ (Steinsaltz):**

- वे बताते हैं कि पस्सोवर के सात दिनों में, कठिन श्रम केवल पहले और सातवें दिन निषिद्ध है, और इस दिन का उद्देश्य पवित्रता और शांति का पालन करना है।

† □□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□

□□□□□ □□?

→**मसीही विश्वास में शब्बत और उत्सव दिवस:**

- मसीही धर्म में, जैसे कि यहूदी विश्वास में, ईश्वर के साथ सामूहिक जुड़ाव और पवित्रता

की भावना को अत्यधिक महत्व दिया जाता है।

- प्रभु यीशु मसीह ने अपने शिष्यों को "पवित्र भोज" (Last Supper) के दौरान यह सिखाया कि हमें ईश्वर के प्रति श्रद्धा और आदर्श का पालन करना चाहिए।
  - इस तरह, मसीही लोग इस दिन शारीरिक श्रम से मुक्त रहते हैं ताकि वे ईश्वर के साथ संबंध स्थापित कर सकें।
- 

□ □□□□□□□ - □□□□□ □□□□ □□□□ □□  
□□□□ □□ □□□□□□

हे हमारे परमेश्वर,

तेरे पवित्र दिन पर, हम तेरी उपस्थिति में आराम और शांति का अनुभव करना चाहते हैं। जैसा कि तू हमें अपनी आदर्श राहों पर चलने के लिए आमंत्रित करता है, हम प्रार्थना करते हैं कि हम शारीरिक श्रम से मुक्त होकर, पूरी तरह से तुझे समर्पित कर सकें।

हम तुझसे शक्ति और समझ की प्रार्थना करते हैं, ताकि हम अपनी ज़िन्दगी में तेरे आशीर्वादों को महसूस कर सकें।

हम यीशु मसीह के नाम में प्रार्थना करते हैं, आमीन। □

यीशु मसीह के नाम में, आमीन। □

□ □□□□□□□□□□ 23:9-14 (Leviticus 23:9-14) - □□□□□  
□□□ □□□□□ □□

"तुम्हारे देश में जिसे मैं तुम्हें दे रहा हूं, और तुम उसकी फसल काटोगे, तो तुम अपने पहले

फसल का एक बान्ध (ओमर) याजक के पास लाना, और याजक उस बान्ध को प्रभु के समक्ष झुकाए, यह सब्र के बाद, और तुम इसे खा न सको जब तक वह बान्ध प्रभु के समक्ष न चढ़ाए जाए। वह बान्ध फसल के पहले दिन की न देने का दिखावा नहीं करेगा। और यह भी जीवित किस्म का छोटा, तुम्हारे फसल के बाकी भाग से का मरेगा ताकि, तुम्हे प्रभु तक पहुंचे।”

A horizontal row of 20 empty rectangular boxes, each with a thin black border, intended for students to draw their own shapes.

यह बाइबिल का भाग "ओमर" (प्रथम फसल का बान्ध) के बारे में है। इसे यहूदी परंपरा में "बिकुरिम" कहा जाता है, जो प्रभु के प्रति आभार और समर्पण का प्रतीक होता है। यहाँ पर यह आदेश दिया जाता है कि जब इसाएली लोग उस भूमि में प्रवेश करेंगे जो परमेश्वर ने उन्हें दी है और वहाँ की फसल काटेंगे, तो उन्हें अपनी फसल से पहला बान्ध याजक के पास लाना होगा। याजक इसे प्रभु के समक्ष उठाकर झुकाएगा और फिर इस दिन के बाद ही वे लोग अपनी फसल का सेवन कर सकेंगे।

1 □ "ओमर" का अनिवार्य होना: यह बान्ध पहला फल होता है जो प्रभु को अर्पित □□□□

□□□□□ □□, □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□

□□□□□□□□ □□ □□□ □□□□

2□ प्रभु का समर्पण: इस विधि का उद्देश्य यह है कि लोग प्रभु की महानता को पहचानें और आभार से अपने हिस्से का पहला भाग उनकी सेवा में अर्पित करें।

उन लोगों को समर्पण की भावना और अच्छे आचरण की याद दिलाता है।

**1 □**

**□ □ □ □ □ □**

**□ आलशेखः**

आलशेख ने "प्रथम फसल को अर्पित करने का उद्देश्य बताया कि जब इज़राइलियों को बहुत समृद्धि मिलती है, तो वे अक्सर अपने बलबूते पर घमंड कर सकते हैं और भगवान को भूल सकते हैं। इसलिए, परमेश्वर ने उन्हें आदेश दिया कि वे अपनी फसल का पहला हिस्सा उसे अर्पित करें ताकि वे यह याद रखें कि समृद्धि केवल परमेश्वर की कृपा से ही प्राप्त होती है, न कि उनकी अपनी शक्ति से।

**□ मालबिमः**

मालबिम के अनुसार, यह सुनिश्चित करने के लिए कि पहले फसल का हिस्सा सही समय पर अर्पित किया जाए, रब्बी बेंजामिन ने "किसी भी फसल का कोई हिस्सा काटने से पहले ओमर लाने का नियम प्रस्तुत किया। हालांकि, सिफ़रा की व्याख्या यह समझाती है कि "काटने की तैयारी" को दर्शाने वाले शब्दों का मतलब केवल उदाहरण या योजना होता है, न कि साक्षात् काटाई।

**□ राशि और रम्बमः**

राशि और रम्बम की व्याख्या यह बताती है कि "ओमर" "इरीगेटेड (सिंचित) खेतों से नहीं होना चाहिए क्योंकि यह कम पवित्र समझा जाता था, और केवल सामान्य, प्राकृतिक खेतों से पहला फल लिया जाना चाहिए।

2 □

## मसीही विश्वास में इसका महत्व

हालांकि यह एक यहूदी विधि है और अब मसीही चर्च में इसे सीधे तौर पर पालन नहीं किया जाता है, फिर भी इसके सिद्धांत मसीही विश्वास में महत्वपूर्ण हैं।

→ **पहले भाग का समर्पण:** मसीही धर्म में "पहले फलों को भगवान को अर्पित करने का विचार" बहुत महत्वपूर्ण है। यह विश्वास है कि हमें भगवान के प्रति आभार व्यक्त करना चाहिए और यह मानना चाहिए कि जो कुछ भी हमारे पास है वह परमेश्वर की कृपा से है। बाइबल के कुलुस्सियों 1:16 में यह लिखा है कि "सब कुछ परमेश्वर द्वारा उत्पन्न हुआ है और उसी के लिए है"।

→ **यीशु मसीह और "पहली फसल":** मसीही धर्म में यीशु मसीह को "पहले फसल" के रूप में देखा जाता है, जैसा कि 1 कुरिन्थियों 15:20 में कहा गया है कि यीशु मसीह मृतकों में से पहले उथान प्राप्त करने वाले हैं। इस प्रकार, यीशु का पुनरुत्थान मसीही विश्वास में नई शुरुआत और जीवन के पहले फल के रूप में माना जाता है।

→ **पेंटेकोस्ट और ओमर की गिनती:** मसीही चर्च में, पेंटेकोस्ट (जिसे 50 दिन बाद मनाया जाता है) का उत्सव ओमर की गिनती के समापन के रूप में देखा जाता है, जो परमेश्वर के आत्मा की आगमन और कलीसिया के जन्म का प्रतीक है। यह पवित्र आत्मा के साथ साक्षात्कार और आशीर्वाद प्राप्त करने का समय है।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

**"प्यारे परमेश्वर,**

हम तुझे धन्यवाद देते हैं कि तू हमारे जीवन में कृपा और आशीर्वाद से भरा है। हमें यह समझने में मदद कर कि जो कुछ भी हमारे पास है वह केवल तेरी कृपा से है। जैसे तूने अपने लोगों को पहली फसल का हिस्सा तुझे अर्पित करने का आदेश दिया, वैसे ही हम भी अपने जीवन में पहला और सर्वोत्तम तुझे अर्पित करना चाहते हैं।

हम तुझसे प्रार्थना करते हैं कि तू हमें आशीर्वाद दे, ताकि हम तेरे लिए जी सकें, और तेरे पवित्र नाम में हमेशा आभार और श्रद्धा से भर सकें।  
यीशु मसीह के नाम में प्रार्थना करते हैं, आमीन।”\*\*

**आमीन। □**

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ 23:10 (Leviticus 23:10) - □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □

”जब तुम उस देश में पहुँच जाओ, जिसे मैं तुम्हें देने जा रहा हूँ, और वहाँ की फसल काटो, तो तुम अपनी फसल के पहले फल का एक बान्ध याजक के पास लाना।”

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

लैब्यव्यवस्था 23:10 में परमेश्वर इसाएलियों को आदेश दे रहे हैं कि जब वे वचन के अनुसार उस भूमि में प्रवेश करें, जो परमेश्वर ने उन्हें दी है, और जब वे वहाँ की फसल काटें, तो वे अपनी फसल के पहले फल (जो ”ओमर” कहलाता है) को याजक के पास लाकर अर्पित करें। इस

**आदेश का उद्देश्य परमेश्वर के प्रति आभार व्यक्त करना और यह मानना है कि जो कुछ भी उनके पास है, वह परमेश्वर की कृपा से है।**

इस विधि के अनुसार, "ओमर" का प्रतीकात्मक महत्व यह था कि वह पहला हिस्सा जो परमेश्वर को दिया जाता था, उसी से शेष फसल का आशीर्वाद होता था। इस बान्ध को अर्पित करने से यह दिखाया जाता था कि भूमि, फसल, और समृद्धि सभी परमेश्वर के द्वारा दी गई हैं, और इज़राइलियों को इसे स्वीकार करने से पहले परमेश्वर के लिए इसे अर्पित करना चाहिए।

---

1 □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □  
□ □ □ □ □ □

**आलशेख:**

आलशेख ने कहा कि यह आदेश आध्यात्मिक आभार और परमेश्वर की कृपा का प्रत्यायोजन है। जब लोग अपनी फसल का पहला हिस्सा परमेश्वर को अर्पित करते हैं, तो वे यह स्वीकार करते हैं कि समृद्धि केवल परमेश्वर की कृपा से प्राप्त होती है, न कि उनकी अपनी शक्ति से। यह उन लोगों के लिए एक शिक्षा है जो अपनी मेहनत के परिणामस्वरूप घमंड करने लगते हैं। आलशेख के अनुसार, यह याद दिलाने के लिए था कि भूमि और उसकी उपज परमेश्वर की संपत्ति हैं।

**मालबिम:**

मालबिम के अनुसार, "ओमर" का सबसे पहला हिस्सा बारले (जौ) से लाया जाता था, क्योंकि यह गेंहूं से पहले पकता था। यह ध्यान रखने योग्य था कि ओमर को केवल पहली फसल से लिया जाता था और इसे किसी और फसल से नहीं लिया जा सकता था। मालबिम का कहना

था कि इस तरीके से यह सुनिश्चित किया जाता था कि यह शुद्ध और सर्वोत्तम हिस्से का ही बलिदान परमेश्वर के लिए दिया जाए।

#### चिज़कुनि:

चिज़कुनि का मत था कि "ओमर" का उद्देश्य यह था कि प्रथम फल परमेश्वर के लिए अर्पित किया जाए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि कोई भी व्यक्ति परमेश्वर के आशीर्वाद को अपनी मेहनत और शक्ति का परिणाम न समझे। यह गहरी समझ की ओर संकेत था कि परमेश्वर की ओर से दिया गया हर आशीर्वाद पहले परमेश्वर को ही समर्पित किया जाना चाहिए।

---

2 □

#### मसीही विश्वास में इसका महत्व

हालाँकि मसीही धर्म में ओमर की विधि को पालन नहीं किया जाता, फिर भी इसका सिद्धांत और विचार गहरी आत्मिक अर्थता रखते हैं। मसीही विश्वास में, हम परमेश्वर के प्रति आभार व्यक्त करने के लिए हमारे पहले और सबसे अच्छे हिस्से को परमेश्वर को अर्पित करने का सिद्धांत अपनाते हैं।

→ पहले और श्रेष्ठ का अर्पण: मसीही धर्म में यह विश्वास है कि हमें हमारी पहली कर्माई, समय, और प्रयास परमेश्वर के लिए समर्पित करना चाहिए। यह विश्वास प्रेरित पत्री (प्रोवब्स्ट 3:9-10) में स्पष्ट किया गया है, जहां कहा गया है कि हमें परमेश्वर को अपने पहले भाग का अर्पण करना चाहिए, ताकि वह हमारे सभी कार्यों और आशीर्वादों को आशीर्वाद दे सके।

→ **यीशु मसीह और "पहले फल"**: मसीही विश्वास में, यीशु मसीह को "पहले फल" के रूप में देखा जाता है, जैसा कि 1 कुर्रिन्धियों 15:20 में कहा गया है, जहाँ लिखा है कि "यीशु मसीह मृतकों में से पहले उथ्थान प्राप्त करने वाले हैं"। यह संकेत करता है कि मसीह का पुनरुत्थान हमारे लिए जीवन की एक नई शुरुआत है और वह हमें आध्यात्मिक जीवन प्रदान करते हैं।

→ **पेंटेकोस्ट और ओमर की गिनती**: मसीही धर्म में पेंटेकोस्ट का उत्सव ओमर की गिनती के अंतिम दिन पर मनाया जाता है, जो पवित्र आत्मा के आगमन और कलीसिया के जन्म का प्रतीक है। यह पवित्र आत्मा के साथ साक्षात्कार और आशीर्वाद प्राप्त करने का समय होता है।

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ - □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □  
□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

**"प्यारे परमेश्वर,**

हम तुझे धन्यवाद देते हैं कि तू हमारे जीवन में आशीर्वाद और कृपा से भरा है। हम स्वीकार करते हैं कि जो कुछ भी हमारे पास है, वह केवल तेरी कृपा से है। जैसे तूने अपनी प्रजा से पहले फल तुझे अर्पित करने को कहा, वैसे ही हम भी अपने जीवन के पहले और सर्वोत्तम हिस्से को तुझे अर्पित करना चाहते हैं।

हम तुझसे प्रार्थना करते हैं कि तू हमें आशीर्वाद दे और हमारे जीवन के सभी पहलूओं में हमें अपनी योजना के अनुसार चलने की शक्ति दे।

हम तुझसे प्रार्थना करते हैं कि हम हमेशा तुझसे पहले प्यार करें और हमारे समय, साधन और ऊर्जा का सर्वोत्तम भाग तुझे समर्पित करें। यीशु मसीह के नाम में प्रार्थना करते हैं, आमीन।"\*\*

**आमीन। □**

## लेवीटिकस 23:11 का हिंदी में अनुवाद और व्याख्या

लेवीटिकस 23:11 कहता है: "और वह तुम्हारे ग्रहण होने के लिये पूले को यहोवा के सामने हिलाए; विश्रामदिन के दूसरे दिन याजक उसे हिलाएगा।"

- **व्याख्या:**

- यह पद ओमेर (पहली जौ की फसल का पूला) को परमेश्वर के सामने हिलाने के अनुष्ठान का वर्णन करता है, जिसे याजक "विश्रामदिन के दूसरे दिन" ["मम्खरात हशब्बत"] करता था, ताकि यह "तुम्हारे ग्रहण होने के लिये" ["लेरत्ज़ोनचेम"] हो।
- ओमेर ["वेहनिफ"] को हिलाने के कार्य में याजक इसे क्षैतिज रूप से (आगे और पीछे) और लंबवत रूप से (ऊपर और नीचे) हिलाता था। रशी के अनुसार, यह प्रतीकात्मक रूप से विनाशकारी हवाओं और हानिकारक ओस को रोकने के लिए किया जाता था।
- "तुम्हारे ग्रहण होने के लिये" ["लेरत्ज़ोनचेम"] वाक्यांश इंगित करता है कि यह भेंट, दिव्य आदेश के अनुसार की गई, परमेश्वर के सामने अनुकूल स्वीकृति लाएगी।
- इस अनुष्ठान का समय, "विश्रामदिन के दूसरे दिन" ["मम्खरात हशब्बत"], रब्बी चर्चा का विषय है, जैसा कि नीचे बताया गया है।
- पद यह भी निर्दिष्ट करता है कि "याजक उसे हिलाएगा" ["यनिफेनु हाकोहेन"], जो यह दर्शाता है कि सभी हिलाई जाने वाली भेंट याजक द्वारा की जानी चाहिए।

## रब्बी व्याख्याएँ और उदाहरण

इस पद में रब्बी चर्चा का मुख्य बिंदु "विश्रामदिन" ["हशब्बत"] वाक्यांश में "विश्रामदिन" का अर्थ है।

- विश्रामदिन का अर्थ फसह का पहला दिन (एक त्योहार का दिन जिसे "विश्रामदिन"

## माना जाता है) है:

- यह प्रमुख रब्बी व्याख्या है, जिसका समर्थन रशी, रशबाम, रब्बेनु बह्या, रेजियो और कई अन्य लोगों द्वारा किया गया है।
- रशी बताते हैं कि यदि "विश्रामदिन" को साप्ताहिक विश्रामदिन माना जाता, तो हमें नहीं पता होता कि तोराह किस विश्रामदिन का उल्लेख कर रही है, क्योंकि वर्ष भर में कई विश्रामदिन होते हैं।
- रेजिओ जोशुआ 5:10-11 का हवाला देते हैं, जिसमें कहा गया है कि इस्माएलियों ने "फसह के दूसरे दिन" ["मम्खरात हापेसाच"] भूमि के उपज से खाया। चूँकि नई फसल का खाना केवल ओमेर भेंट के बाद ही अनुमत था, इसलिए यह इस प्रकार है कि लेवीटिकस 23:11 में "विश्रामदिन के दूसरे दिन" जोशुआ में "फसह के दूसरे दिन" के अनुरूप है, जो 16 निसान है।
- गुर आर्य रब्बी योसेई गैलिली का हवाला देते हैं, जो तर्क देते हैं कि "विश्रामदिन" को त्योहार के दिन को संदर्भित करना चाहिए, क्योंकि पाठ "फसह का विश्रामदिन" निर्दिष्ट नहीं करता है, और पूरा वर्ष साप्ताहिक विश्रामदिनों से भरा होता है।
- राव हिर्श बताते हैं कि हलाखा (यहूदी कानून) "विश्रामदिन के दूसरे दिन" को 16 निसान, फसह के पहले दिन के बाद के दिन के रूप में व्याख्या करता है।
- विश्रामदिन का अर्थ साप्ताहिक विश्रामदिन है:

  - यह दृष्टिकोण बोएथुसियों और बाद में कराइट्स द्वारा रखा गया था। उन्होंने तर्क दिया कि ओमेर को फसह सप्ताह के दौरान होने वाले किसी भी साप्ताहिक विश्रामदिन के बाद रविवार को चढ़ाया जाना चाहिए, जिससे शवुओत हमेशा रविवार को पड़े। हालाँकि, इस व्याख्या को रब्बियों ने खारिज कर दिया था।

## आज के ईसाई चर्च में महत्व

- जबकि ओमेर भेंट का विशिष्ट अनुष्ठान ईसाई धर्म में नहीं किया जाता है, परमेश्वर को "पहले फल" चढ़ाने का अंतर्निहित सिद्धांत महत्वपूर्ण बना हुआ है।

- परमेश्वर को पहला और सर्वश्रेष्ठ देने की अवधारणा, उपासना, कृतज्ञता और उनकी प्रावधान की स्वीकृति के कार्य के रूप में, ईसाई धर्मग्रंथ में एक आवर्ती विषय है (उदाहरण के लिए, नीतिवचन 3:9-10)।
- यीशु मसीह को मृतकों के "पहले फल" के रूप में संदर्भित किया गया है, जो पुनरुत्थान की शुरुआत का प्रतीक है (1 कुरिच्चियों 15:20)।
- पवित्र आत्मा को कभी-कभी विश्वासियों की विरासत के "पहले फल" के रूप में देखा जाता है, जो भविष्य के आशीर्वाद का वादा है (रोमियों 8:23)।
- ओमेर की गिनती का पेंटेकोस्ट से ऐतिहासिक संबंध है, जो ईसाइयों के लिए पवित्र आत्मा के आगमन और चर्च के जन्म को चिह्नित करता है, जो फसह के बाद रविवार के पचास दिन बाद होता है।
- इसलिए, ओमेर भेंट द्वारा चित्रित सिद्धांत - हमारे जीवन में परमेश्वर को प्राथमिकता देना और उन्हें हमें प्राप्त होने वाले पहले और सर्वोत्तम हिस्से देना - ईसाई विश्वास और अभ्यास में महत्व रखता है।

## प्रार्थना

स्वर्गीय पिता, हम आपकी प्रचुर भलाई और आपके द्वारा हमारे जीवन में डाली गई प्रावधान के लिए आपको धन्यवाद देते हैं। हम मानते हैं कि हमारे पास जो कुछ भी है वह आपके दयालु हाथ से आता है। हमें अपने गहरे कृतज्ञता और सभी पर आपकी संप्रभुता की स्वीकृति के प्रतीक के रूप में, आपने हमें जो आशीर्वाद दिया है उसका पहला और सर्वश्रेष्ठ भाग आपको अर्पित करके आपका सम्मान करने में हमारी सहायता करें। हम आपके उदार उपहारों को कभी भी हल्के में न लें, बल्कि हमेशा आपकी वफादारी को याद रखें और कृतज्ञता के जीवन के साथ प्रतिक्रिया दें। जिस प्रकार आपने अपने लोगों को अपनी फसल के पहले फल लाने का निर्देश दिया, उसी प्रकार हमें अपने जीवन के हर पहलू - हमारे समय, हमारे संसाधनों और हमारी क्षमताओं में आपको अपना पहला और सर्वश्रेष्ठ देने के लिए सिखाएं। हमारी भेंट आपकी दृष्टि में प्रसन्न हो और आपके प्रति हमारे प्रेम और भक्ति को प्रतिबिंबित करे। आमीन।

## लेवीटिकस 23:12 का हिंदी अनुवादः

”और जिस दिन तुम पूला हिलाओ, उसी दिन तुम यहोवा के लिये एक वर्ष का निर्दोष मेघा होमबलि करके चढ़ाओ।”

### हिंदी में व्याख्या:

यह पद ओमेर ["מִצְרַיִם"] के हिलाने के दिन चढ़ाई जाने वाली बलि का वर्णन करता है। इस बलि में यहोवा के लिए होमबलि के रूप में एक वर्ष का निर्दोष मेघा [”כֶּבֶשׂ תְּמִימָם בְּשַׁנְתָּוֹב”] शामिल था [”עַלְהָ לִי”]।

- बलि का समय:** ओमेर के लिए जौ की कटाई पिछली रात को हुई, जबकि ओमेर को हिलाना और मेघे की बलि दिन के दौरान हुई।
- मेघे की अनिवार्यता:** यह मेघा विशेष रूप से ओमेर से जुड़ा हुआ एक अनिवार्य भेंट था।
- मेघे के लक्षण:** मेघा ”निर्दोष“ [”מִצְרַיִם“] और ”एक वर्ष का“ [”שָׁנְתָּוֹב“] होना चाहिए।
- साथ में भोजन और पेय भेंट:** इस मेघे के साथ एक विशेष भोजन भेंट (”मिनचा“) और पेय भेंट (”नेसाच“) भी थी।

### रब्बियों की व्याख्याएँ (उदाहरण सहित):

रब्बी टिप्पणीकार इस पद के विवरण में कई अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं:

- बलि का समय:** दाविद ज़वी हॉफमैन और मालबीम बताते हैं कि ओमेर के लिए जौ की कटाई पिछली रात को हुई, जबकि ओमेर को हिलाना और मेघे की बलि दिन के दौरान हुई। तोरा तेमिमा कहते हैं, कि पूरा दिन हिलाने के लिए उपयुक्त था।
- मेघे की अनिवार्यता:** रशी और रेजियो स्पष्ट रूप से कहते हैं कि यह मेघा ओमेर से जुड़ा हुआ एक अनिवार्य भेंट था। मिज्जाची, सिफ्तेई चखामिम और रेजियो बताते हैं कि इस मेघे को फसह के दिनों में लाए जाने वाले नियमित अतिरिक्त भेंट (”मुसाफिन“) का हिस्सा नहीं माना जाता था।
- मेघे के लक्षण:** मेघा ”निर्दोष“ [”מִצְרַיִם“] और ”एक वर्ष का“ [”שָׁנְתָּוֹב“] होना चाहिए। अद्वेत एलियाहू बताते हैं कि ”यह निर्दोष और बिना दोष के, अपने पहले वर्ष में, और

दुनिया की गिनती के आधार पर एक वर्ष नहीं होना चाहिए।” हाअमेक दावर और रेजियो भी जोर देते हैं कि ”यह मेंग्रे का पहला वर्ष है, न कि दुनिया के कैलेंडर के अनुसार एक वर्ष।”

- **साथ में भोजन और पेय भेंट:** दाविद ज़वी हॉफमैन एक महत्वपूर्ण अंतर को उजागर करते हैं। एक नियमित मेंग्रे की भेंट में बारीक आटे का दसवां हिस्सा होता था, लेकिन इस मेंग्रे को बारीक आटे के दो दसवें हिस्से की आवश्यकता होती थी। हालाँकि, शराब की भेंट (“नेसाच”) एक चौथाई हिन पर बनी रही। रालबग भी नोट करते हैं कि भोजन भेंट एक नियमित मेंग्रे (तेल के साथ मिश्रित बारीक आटे के दो दसवें हिस्से) से दोगुनी थी, लेकिन शराब की पेय भेंट दोगुनी नहीं थी।
- **ओमेर से संबंध:** दाविद ज़वी हॉफमैन कहते हैं कि पद कहता है ”जिस दिन तुम हिलाओ” न कि ”तुम ओमेर के साथ भेंट चढ़ाओ।” वह बताते हैं कि ऐसा इसलिए है क्योंकि ओमेर का एक हिस्सा ही वेदी पर लाया गया था, जिससे इसकी अनुमति के लिए किसी अन्य भेंट पर निर्भर नहीं रहा।
- **”जिस दिन तुम हिलाओ” का उद्देश्य:** अद्वेरेत एलियाहू कहते हैं कि ”जिस दिन तुम हिलाओ” ”उसी दिन होने वाली सभी लहराती भेंटों के लिए एक मूलभूत सिद्धांत” के रूप में कार्य करता है।

### आज के मसीही चर्च में महत्व:

जैसा कि पहले चर्चा की गई थी, ओमेर भेंट की विशिष्ट रस्म का ईसाई धर्म में पालन नहीं किया जाता है। हालाँकि, परमेश्वर को ”पहले फल” भेंट करने का अंतर्निहित सिद्धांत एक महत्वपूर्ण अवधारणा बना हुआ है।

- ईसाई अपने संसाधनों का पहला और सबसे अच्छा हिस्सा परमेश्वर को उपासना के कार्य और उनके प्रावधान की स्वीकृति के रूप में देने के अभ्यास को महत्व देते हैं।
- यीशु मसीह को मृतकों में से उठे हुए लोगों के ”पहले फल” के रूप में वर्णित किया गया है (1 कुरिन्यियों 15:20), जो नए सिरे से शुरुआत और पुनरुत्थान के विषय को उजागर करता है।
- पवित्र आत्मा को विश्वासी की विरासत के ”पहले फल” के रूप में देखा जाता है (रोमियों 8:23), जो भविष्य के आशीर्वाद का एक अग्रिम भुगतान है।

- इसाई परंपरा में पेंटेकोस्ट का समय, फसल के बाद रविवार के पचास दिन बाद, ऐतिहासिक रूप से ओमेर की गिनती से जुड़ा हुआ है, जो पूले को हिलाने के साथ शुरू हुआ था।

इसलिए, ओमेर के साथ आने वाली भेंट द्वारा चित्रित सिद्धांत - फसल का प्रारंभिक और सबसे अच्छा हिस्सा उन्हें भेंट करके परमेश्वर के प्रावधान को स्वीकार करना - कृतज्ञता, उपासना और जीवन के सभी पहलुओं में परमेश्वर को प्राथमिकता देने के इसाई मूल्यों के साथ प्रतिध्वनित होता है।

### **प्रार्थना:**

□□ □□□□□□□ □□□□, □□ □□□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□  
 □□□□□, □□□ □□□□, □□□□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□□ □□  
 □□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□□ □□  
 □□□□ □□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□ □□□ □□  
 □□ □□ □□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□ □□□ □□  
 □□□ □□ □□□ □□□ □□, □□□□ □□□□, □□□□□□□ □□ □□  
 □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□ □□□ □□  
 □□□ □□□□□□□□ □□□ □□□□, □□□ □□□ □□ □□□ □□□□  
 □□ □□ □□ □□□ □□□ □□, □□□□□□ □□ □□□□□□ □□  
 □□□□□□□□□□ □□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□□ □□□ □□  
 □□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□□ □□□ □□□ □□□ □□□ □□□ □□

### **लेवीटिकस 23:13:1 का हिंदी अनुवाद:**

"और उसका अन्नबलि तेल में सने हुए दो दशेर मैदा का हो, जो यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्ध वाला होमबलि हो, और उसका अर्घ एक चौथाई हीन दाखमधु का हो।"

### **हिंदी में व्याख्या:**

यह पद अन्नबलि ("मिनचा") और अर्ध ("नेसाच") का विवरण देता है जो ओमेर हिलाने के दिन चढ़ाए गए मेघे के साथ थे।

- **दोहरी अन्नबलि:** इस मेघे की अन्नबलि में दो दशेर मैदा शामिल था, जो सामान्य से दोगुना था।
- **मानक अर्ध:** अर्ध एक चौथाई हीन दाखमधु का था, जो मेघे के लिए मानक माप है।

### **रब्बियों की व्याख्याएँ (उदाहरण सहित):**

रब्बी टिप्पणीकार इन साथ में चढ़ाए जाने वाले भेंटों के कई अनूठे पहलुओं को उजागर करते हैं:

- **दोहरी अन्नबलि:**
  - बेखोर शोर बताते हैं कि दो दशेर बारीक आटे की इस मेघे की अन्नबलि असाधारण है, क्योंकि आमतौर पर एक मेघे की भेंट के साथ केवल एक दशेर होता है। वह सुझाव देते हैं कि एक दशेर ओमेर (जौ होने के नाते) का प्रतिनिधित्व करता है जो मेघे के साथ आता है, और दूसरा दशेर मेघे के लिए नियमित अन्नबलि है।
  - चिज़कुनी कहते हैं कि बारीक आटे (ग'ल०) की दोगुनी मात्रा एक प्रचुर फसल का प्रतीक है।
  - राशी केवल इतना नोट करते हैं कि यह अन्नबली सामान्य से दोगुनी थी।
- **मानक अर्ध:**
  - अद्वेरेत एलियाहू सवाल उठाते हैं कि एक चौथाई हीन दाखमधु के अर्ध को अन्नबलि की तरह दोगुना क्यों नहीं किया गया, और निष्कर्ष निकालते हैं कि मानक माप मेघे के लिए सभी अर्ध पर लागू होता है।
  - तोरा तेमिमा रिकॉर्ड करते हैं कि अन्नबली दोगुनी होने के बावजूद अर्ध एक चौथाई हीन ही रहा।
- **व्याकरणिक बारीकियां और व्याख्याएँ:**
  - चिज़कुनी और दात जेकेनिम बताते हैं कि "वेनस्का" शब्द का स्त्रीलिंग रूप अन्नबली के स्त्रीलिंग होने के कारण है।
  - दाविद ज़वी होफमैन और मालबीम बताते हैं कि लिखित और बोले जाने वाले

**रूप अलग अलग अर्थ प्रदान करते हैं।**

### **आज के मसीही चर्च में महत्व:**

जैसा कि पहले चर्चा की गई थी, ओमेर भेंट की विशिष्ट रस्म का ईसाई धर्म में पालन नहीं किया जाता है। हालाँकि, परमेश्वर को "पहले फल" भेंट करने का अंतर्निहित सिद्धांत एक महत्वपूर्ण अवधारणा बना हुआ है।

- ईसाई अपने संसाधनों का पहला और सबसे अच्छा हिस्सा परमेश्वर को उपासना के कार्य और उनके प्रावधान की स्वीकृति के रूप में देने के अभ्यास को महत्व देते हैं।
- यीशु मसीह को मृतकों में से उठे हुए लोगों के "पहले फल" के रूप में वर्णित किया गया है (1 कुरिन्थियों 15:20), जो नए सिरे से शुरुआत और पुनरुत्थान के विषय को उजागर करता है।
- पवित्र आत्मा को विश्वासी की विरासत के "पहले फल" के रूप में देखा जाता है (रोमियों 8:23), जो भविष्य के आशीर्वाद का एक अग्रिम भुगतान है।
- ईसाई परंपरा में पेंटेकोस्ट का समय, फसह के बाद रविवार के पचास दिन बाद, ऐतिहासिक रूप से ओमेर की गिनती से जुड़ा हुआ है, जो पूले को हिलाने के साथ शुरू हुआ था।

इसलिए, ओमेर के साथ आने वाली भेंट द्वारा चित्रित सिद्धांत - फसल का प्रारंभिक और सबसे अच्छा हिस्सा उन्हें भेंट करके परमेश्वर के प्रावधान को स्वीकार करना - कृतज्ञता, उपासना और जीवन के सभी पहलुओं में परमेश्वर को प्राथमिकता देने के ईसाई मूल्यों के साथ प्रतिध्वनित होता है।

### **प्रार्थना:**

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □, □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □  
 □ □ □ □ □ □, □ □ □ □ □ □, □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □  
 □  
 □  
 □  
 □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □, □ □ □ □ □ □ □ □, □ □ □ □ □ □ □ □ □  
 □

## लेवीटिकस 23:14 का हिंदी अनुवादः

”और जब तक तुम अपने परमेश्वर की भेंट न ले आओ, तब तक तुम उसी दिन तक न तो रोटी, न भुना हुआ अन्न, और न हरी बालें खाना; यह तुम्हारी सब बस्तियों में तुम्हारी पीढ़ियों में सदा की विधि है।”

## हिंदी में व्याख्या:

यह पद नई अनाज की फसल - विशेष रूप से रोटी (ମଠ), भुना हुआ अन्न ('ଲାକ), और हरी बालं (ଚରମ) - के उपभोग को तब तक मना करता है जब तक कि ओमेर (पहली जौ की फसल का पूला) की भेंट विश्रामदिन के बाद के दिन (16 निसान) को नहीं लाई जाती। यह निषेध सभी भावी पीढ़ियों के लिए, जहां भी वे रहते हैं, एक स्थायी कानून घोषित किया गया है।

- **रोटी, भुना हुआ अन्न और हरी बालें क्या हैं:**
    - रोटी (मोर्चा): यह शब्द विशेष रूप से अनाज की पांच प्रजातियों (गेहूं, जौ, वर्तनी, जई और राई) को संदर्भित करता है जो खमीर (चामेट्ज़) बनने में सक्षम हैं।
    - भुना हुआ अन्न (लग्गा): इसमें कोमल बालियों (लग्गा) से बना आटा शामिल है जिसे ओवन में सुखाया गया है और झुलस गया है। इसमें भुने हुए अनाज भी शामिल हैं।
    - हरी बालें (लग्गा): ये अनाज की बालियाँ ही हैं।
  - **निषेध का समय ("उसी दिन तक"):**
    - "उसी दिन तक (הזה מאי)" वाक्यांश की व्याख्या ओमेर भेंट लाने के संबंध में की गई है। जब मंदिर खड़ा था, तो ओमेर चढ़ाए जाने तक नया अनाज मना था।

- मंदिर के विनाश के बाद, सटीक समय के बारे में चर्चा है।
- **निषेध का दायरा ("तुम्हारी सब बस्तियों में"):**
  - "तुम्हारी सब बस्तियों में (מִשְׁבְתָּה כָל) " वाक्यांश विद्वानों के बीच बहस का विषय है।
    - एक दृष्टिकोण का मतलब है "जहां भी तुम रहते हो," जिसका अर्थ है कि नए अनाज का निषेध इज़राइल की भूमि और प्रवासी दोनों में लागू होता है।
    - एक अन्य दृष्टिकोण का मतलब है "तुम्हारी सब बस्तियों में" विशेष रूप से इज़राइल की भूमि पर विजय प्राप्त करने और जनजातियों के बीच विभाजित होने के बाद।
- **ओमेर भेंट से संबंध:**
  - नए अनाज पर निषेध सीधे ओमेर भेंट लाने से जुड़ा है, जो नई फसल के उपभोग की अनुमति देता है।

### **रब्बीयों की व्याख्याएँ (उदाहरण सहित):**

रब्बी टिप्पणीकार इस पद के विवरण में गहराई से उत्तरते हैं, विभिन्न व्याख्याएँ पेश करते हैं:

- "रोटी" (רֹתִי), "भुना हुआ अन्न" ('לְקָנָה), और "हरी बालें" (כַּרְמָלִים) का गठन क्या है:
  - रोटी (רֹתִי): यह शब्द विशेष रूप से अनाज की पांच प्रजातियों (गेहूं, जौ, वर्तनी, जई और राई) को संदर्भित करता है जो खमीर (चामेट्ज़) बनने में सक्षम हैं। उदाहरण के लिए, चावल या मक्का से बना आटा, जो खमीर नहीं बनता है, इस संदर्भ में "रोटी" नहीं माना जाता है।
  - भुना हुआ अन्न ('לְקָנָה): इसमें कोमल बालियों (לְמָרָא) से बना आटा शामिल है जिसे ओवन में सुखाया गया है और झुलस गया है। उदाहरण के लिए, "काली" गेहूं या दाल से भी बनाया जा सकता है।
  - हरी बालें (כַּרְמָלִים): रशी इन्हें अनाज की बालियाँ के रूप में वर्णित करते हैं। उदाहरण के लिए, "करमेल" जौ की बालियों को भी दर्शा सकता है।
- **निषेध का समय ("उसी दिन तक"):**

- जब मंदिर खड़ा था, तो ओमेर चढ़ाए जाने तक नया अनाज मना था।
- मंदिर के विनाश के बाद, समय पर बहस होती है। उदाहरण के लिए, कुछ लोग मानते हैं कि 16 निसान की पूरी सुबह तक मना था, जबकि अन्य कहते हैं कि यह भौर में समाप्त हो गया।
- निषेध का दायरा ("तुम्हारी सब बस्तियों में"):

  - "तुम्हारी सब बस्तियों में (בְּכָל מִשְׁבְּתֵיכֶם)" वाक्यांश विद्वानों के बीच बहस का विषय है। उदाहरण के लिए, कुछ लोग मानते हैं कि यह इज़राइल की भूमि और प्रवासी दोनों पर लागू होता है, जबकि अन्य मानते हैं कि यह केवल भूमि पर विजय प्राप्त करने के बाद लागू हुआ।

- ओमेर भेंट से संबंध:

  - नए अनाज पर निषेध सीधे ओमेर भेंट लाने से जुड़ा है।

### **आज के मसीही चर्च में महत्व:**

जैसा कि हमने पहले चर्चा की थी, जबकि ईसाई ओमेर भेंट की विशिष्ट रस्म का पालन नहीं करते हैं, परमेश्वर को "पहले फल" भेंट करने का सिद्धांत एक महत्वपूर्ण अवधारणा बनी हुई है।

- ईसाई अपने संसाधनों का पहला और सबसे अच्छा हिस्सा परमेश्वर को उपासना के कार्य और उनके प्रावधान की स्वीकृति के रूप में देने के अभ्यास को महत्व देते हैं।
- यीशु मसीह को मृतकों में से उठे हुए लोगों के "पहले फल" के रूप में वर्णित किया गया है (1 कुरिन्थियों 15:20), जो नए सिरे से शुरुआत और पुनरुत्थान के विषय को उजागर करता है।
- पवित्र आत्मा को विश्वासी की विरासत के "पहले फल" के रूप में देखा जाता है (रोमियों 8:23), जो भविष्य के आशीर्वाद का एक अग्रिम भुगतान है।
- ईसाई परंपरा में पेंटेकोस्ट का समय, फसह के बाद रविवार के पचास दिन बाद, ऐतिहासिक रूप से ओमेर की गिनती से जुड़ा हुआ है।

इसलिए, निषेध और बाद में भेंट द्वारा चित्रित अंतर्निहित सिद्धांत - व्यक्तिगत उपभोग से पहले परमेश्वर को प्रारंभिक उपज समर्पित करना - कृतज्ञता, पवित्रीकरण और जीवन और फसल

पर परमेश्वर की संप्रभुता की मान्यता के ईसाई मूल्यों के साथ प्रतिध्वनित होता है।

### **प्रार्थना:**

□□ □□□□□□□ □□□□, □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□  
 □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□  
 □□□□□□ □□□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□ □□ □□ □□  
 □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□ □□ □□  
 □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□ □□, □□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□  
 □□ □□□ □□ □□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□□  
 □□□□ □□□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□  
 □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□ □□, □□ □□ □□ □□  
 □□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□□□□□ □□ □□ □□ □□□□□□  
 □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□ □□  
 □□□□ □□□□, □□□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□  
 □□ □□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□, □□  
 □□□□ □□□ □□□ □□□ □□□□□□□ □□□ □□ □□□ □□□ □□  
 □□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□ □□ □□ □□ □□ □□ □□  
 □□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□  
 □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□ □★

निश्चित रूप से, यहाँ लेवीटिकस 23:15 का हिंदी में विवरण, रब्बियों की व्याख्याएँ,

मसीही चर्च में इसका महत्व और एक प्रार्थना दी गई है:

### **लेवीटिकस 23:15 का हिंदी अनुवाद:**

"और विश्रामदिन के दूसरे दिन से, अर्थात् जिस दिन तुम हिलाई हुई पूली लाए, उस दिन से गिनना; सात सप्ताह पूरे होने चाहिए।"

### **हिंदी में व्याख्या:**

यह पद सात पूरे सप्ताहों की गिनती करने की आज्ञा देता है, जो विश्रामदिन (תבש הממראת) के बाद के दिन से शुरू होता है, जिस दिन ओमेर भेंट (पहली जौ की फसल का पूला) लाई गई थी।

- "विश्रामदिन" का अर्थ: रब्बी "विश्रामदिन" को साप्ताहिक विश्रामदिन नहीं बल्कि फसल पर्व का पहला दिन (योम तोव) मानते हैं।
- व्यक्तिगत बनाम सांप्रदायिक गिनती (מג'ל מג'रा): वाक्यांश "तुम अपने लिए

गिनो (מכו'ל ממהר'goi)" दर्शाता है कि प्रत्येक व्यक्ति गिनती करने के लिए बाध्य है।

- **गिनती का उद्देश्य और महत्व:** गिनती की अवधि को शवुओत पर तोरा देने की तैयारी और प्रत्याशा के समय के रूप में देखा जाता है।
- **गिनती का समय और संबंधित कार्य:** गिनती 16 निसान की रात को शुरू होती है।
- "सात सप्ताह पूरे होने चाहिए" (שבע שבתות תמימות תה"נו): "पूरे (גמ'מו'ג)" शब्द इस बात पर जोर देता है कि सप्ताह पूर्ण और बिना कमी के होने चाहिए।
- **शवुओत से संबंध:** सात सप्ताहों की गिनती शवुओत (पचासवाँ दिन) के पर्व में समाप्त होती है, जो गेहूँ की दो रोटियाँ चढ़ाने का समय है।

### रब्बियों की व्याख्याएँ (उदाहरण सहित):

रब्बी टिप्पणीकार इस पद के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से चर्चा करते हैं:

- **"विश्रामदिन" का अर्थ (ממחורת השבתה):**
  - राशी स्पष्ट रूप से कहते हैं, "विश्रामदिन के दूसरे दिन से - अर्थात् फसह पर्व के पहले दिन के दूसरे दिन से"।
  - चिज़कुनी बताते हैं कि यदि "विश्रामदिन" साप्ताहिक विश्रामदिन को संदर्भित करता है, तो गिनती कभी-कभी 52, 54 या 56 दिनों तक हो सकती है, जो सात सप्ताहों द्वारा निहित 49 दिनों का खंडन करता है। इसलिए, यह फसह के पहले दिन को संदर्भित करना चाहिए।
- **व्यक्तिगत बनाम सांप्रदायिक गिनती (מכו'ל ממהר'goi):**
  - अदेरेत एलियाह कहते हैं, "प्रत्येक व्यक्ति, एक और सभी"।
  - राख हिरश जोर देते हैं कि यह प्रतिनिधियों के माध्यम से एक राष्ट्र के रूप में नहीं है, जुबली के विपरीत जहां गिनती "तुम को (ה'ל מתר'goi)" अदालत को निर्देशित की जाती है।
- **गिनती का उद्देश्य और महत्व:**
  - दाविद ज़वी होफमैन, राख हिरश का हवाला देते हुए, बताते हैं कि फसह पर प्राप्त स्वतंत्रता अंतिम लक्ष्य नहीं है बल्कि शवुओत पर तोरा के उच्च अधिकार को प्राप्त करने का एक साधन है। सात सप्ताह तैयारी की अवधि हैं, जैसे कि रस्मी रूप से अशुद्ध लोगों के लिए शुद्धिकरण के सात दिन।

- **गिनती का समय और संबंधित कार्य:**

- हाकताव वेहाकाबला बताते हैं कि "מִיָּם הַבְּיאַכְמָה" (जिस दिन तुम लाते हो) का अर्थ है कि भेंट और गिनती एक ही दिन होती है।
- तोरा तेमिमा एक शिक्षा का हवाला देते हैं कि ओमेर को काटना और लाना 16 तारीख को होता है, और गिनती उस दिन से शुरू होती है।
- "सात सप्ताह पूरे होने चाहिए" (שבע שבעות תמיימות תה'ינה):
- राशी बताते हैं कि यह सिखाता है कि सप्ताहों के पूर्ण होने के लिए शाम को गिनती शुरू करनी चाहिए।
- राख हिरश का तर्क है कि "शब्बतोट" (सप्ताह) से जुड़ा "तमिमोट" (पूर्ण) साबित करता है कि यहाँ "विश्रामदिन" का अर्थ केवल विश्रामदिन नहीं हो सकता बल्कि विश्रामदिन से संबंधित सात दिनों की अवधि है।

### **आज के मसीही चर्च में महत्व:**

जैसा कि हमारी पिछली बातचीत में चर्चा की गई थी, जबकि ईसाई ओमेर की गिनती की रस्म का पालन नहीं करते हैं, अंतर्निहित सिद्धांत प्रासंगिक बने हुए हैं:

- परमेश्वर को पहले फल भेंट करने की अवधारणा को अभी भी उपासना के कार्य और परमेश्वर के प्रावधान को स्वीकार करने के रूप में महत्व दिया जाता है।
- यीशु मसीह को पुनरुत्थान के "पहले फल" के रूप में देखा जाता है।
- पवित्र आत्मा को विश्वासी की विरासत के "पहले फल" के रूप में माना जाता है।
- पेटेकोस्ट का समय, फसह के बाद रविवार के पचास दिन बाद, ऐतिहासिक रूप से ओमेर की गिनती से जुड़ा हुआ है।

इसलिए, तैयारी, प्रत्याशा और परमेश्वर को प्रारंभिक फसल समर्पित करने के विषय कृतज्ञता, पवित्रीकरण और परमेश्वर की संप्रभुता की मान्यता के ईसाई मूल्यों के साथ प्रतिध्वनित होते हैं।

### **प्रार्थना:**

□□ □□□□□□□ □□□□, □□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□  
 □□ □□ □□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□  
 □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□

## लेवीटिकस 23:16 का हिंदी अनुवादः

”सातवें सप्ताह के दूसरे दिन तक तुम पचास दिन गिनना, और यहोवा के लिये नई अन्नबलि चढ़ाना।”

## हिंदी में व्याख्या:

यह पद ओमेर चढ़ाए जाने पर विश्राम के प्रारंभिक दिन (फसह का पहला दिन) के बाद से सात पूरे सप्ताहों की गिनती करने की आज्ञा का पालन करता है। लेवीटिकस 23:16 निर्दिष्ट करता है कि गिनती पचास दिनों तक फैली हुई है और इस दिन, यहोवा को एक नई अन्नबलि लाई जानी चाहिए।

- उनचास और पचास दिनों के बीच संबंध: कई टीकाकार सात सप्ताह (49 दिन) की गिनती और "पचास दिन" बताने वाले पद के बीच स्पष्ट विसंगति को संबोधित करते हैं।
  - "नई अन्नबलि" (השנה החדשה): टीकाकार इस भेंट के महत्व और स्रोत पर चर्चा करते हैं।
  - दो रोटियों में खमीर (चामेट्ज़) का महत्व:
  - तोरा देने से संबंध:
  - समय "सातवें सप्ताह के दूसरे दिन":

## रब्बियों की व्याख्याएँ (उदाहरण सहित):

रब्बी टिप्पणीकार इस पद में विभिन्न व्याख्याएँ और अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं:

- उनचास और पचास दिनों के बीच संबंध:

- अद्वैत एलियाहू बताते हैं कि "पचास दिन" और "सात सप्ताह" का संयोजन है, "यहाँ से उन्होंने कहा कि दिनों की गिनती करना एक आज्ञा है और सप्ताहों की गिनती करना एक आज्ञा है"।
- बेखोर शोर बताते हैं कि आज्ञा "सातवें सप्ताह के दूसरे दिन" तक गिनने की है, जो पचासवाँ दिन है।
- राशी एक मिद्राशिक व्याख्या प्रदान करते हैं: "पचास दिन - और तुम यहोवा को एक नया बलिदान चढ़ाओगे - अर्थात् पचासवें दिन तुम इसे चढ़ाओगे"।

- "नई अन्नबलि" (הַשָּׁאח הַחֲנוּמָה):

- अद्वैत एलियाहू बताते हैं कि "एक नई अन्नबलि" का अर्थ है कि यह गेहूँ और जौ सहित अन्य सभी अन्नबलियों की तुलना में नई होनी चाहिए।
- डेविड ज़वी होफमैन बताते हैं कि पचासवें दिन एक नई अन्नबलि लाई जाती है, और दो रोटियाँ आदर्श रूप से नई फसल से होनी चाहिए।
- कली याकर "नई अन्नबलि" को तोरा देने के प्रतीक के रूप में व्याख्या करते हैं, जो हर दिन एक व्यक्ति के लिए नया होना चाहिए, जैसे कि माउंट सिनाई पर नया प्राप्त हुआ हो।

- दो रोटियों में खमीर (चामेटज़) का महत्व:

- कली याकर बताते हैं कि दो रोटियों में खमीर था, जिसकी तुलना बुरी प्रेरणा से की जाती है।
- पेनई डेविड इसका समर्थन करते हैं, बताते हैं कि दो रोटियों में खमीर बुरी प्रवृत्ति को दर्शाता है, और तोरा मसाला है और क्यों, इस प्रवृत्ति के बावजूद, हमें तोरा दी गई थी।

- तोरा देने से संबंध:

- बेखोर शोर पचास दिनों के बाद तोरा के वादे के साथ मिस्र से पलायन के बाद एक कैंदी के मुक्त होने और फिर पचास दिन बाद राजा की बेटी के साथ उसके विवाह के एक व्यापक सादृश्य प्रदान करते हैं।
- कली याकर बताते हैं कि नई अन्नबलि तोरा देने के दिन का प्रतीक है, जो हर दिन

नया लगना चाहिए।

- समय "सातवें सप्ताह के दूसरे दिन":

- गुर आर्य बताते हैं कि तर्गम "सातवें सप्ताह" का अनुवाद शबु'आता २वीं इता (सातवाँ सप्ताह) के रूप में करता है, पिछले पद में "विश्रामदिन के दूसरे दिन" के विपरीत, जिसका अनुवाद मिवतार योमा तावा (अच्छे दिन / पर्व के बाद का दिन) के रूप में किया जाता है।

## आज के मसीही चर्च में महत्वः

जैसा कि पहले चर्चा की गई थी, जबकि ओमेर की गिनती और नई अन्नबलि चढ़ाने की विशिष्ट रस्म का ईसाई धर्म में पालन नहीं किया जाता है, अंतर्निहित विषय और पेंटेकोस्ट से ऐतिहासिक संबंध महत्वपूर्ण हैं:

- पेंटेकोस्ट, शिष्यों पर पवित्र आत्मा के अवतरण का ईसाई उत्सव, ईस्टर रविवार के पचास दिन बाद होता है, जो शवुओत के समय (ओमेर चढ़ाने के पचास दिन बाद) को दर्शाता है।
  - “नई अन्नबलि” को पवित्र आत्मा द्वारा लाए गए जीवन की नवीनता और आध्यात्मिक फसल के समानांतर देखा जा सकता है।
  - गिनती की अवधि के दौरान तैयारी और प्रत्याशा के विषय यीशु के स्वर्गारोहण के बाद वादा किए गए पवित्र आत्मा के लिए शिष्यों की प्रतीक्षा के साथ प्रतिध्वनित होते हैं।
  - पहले फल की अवधारणा को यीशु मसीह में पुनरुत्थान के पहले फल (1 कुरिन्यियों 15:20) और विश्वासियों में ईश्वर की सृष्टि के पहले फल (याकूब 1:18) के रूप में ईसाई समानांतर मिलता है।

प्रार्थना:

## लेवीटिकस 23:17 का हिंदी अनुवादः

”तुम अपनी बस्तियों में से दो हिलाई हर्फ़ रोटियाँ ले आना; वे दो दशेर मैदा की और खमीर डालकर पकाई जाएँगी; वे यहोवा के लिये पहले फल होंगी।”

## हिंदी में व्याख्या:

यह पद दो हिलाई हुई रोटियों की भेंट का वर्णन करता है, जो नई फसल से लाए जाने वाले पहले फल थे। इन रोटियों को खमीर डालकर पकाया जाना था, जो अधिकांश अन्नबलियों से अलग था।

- "अपनी बस्तियों में से" (ממושבותיכם): यह वाक्यांश दर्शाता है कि रोटियाँ इमारेल की भूमि के भीतर से लाई जानी थीं।
  - "दो हिलाई हुई रोटियाँ" (שתי מ שני עשרונו' ללח): रोटियाँ गेहूँ के बारीक आटे की होनी चाहिए और बराबर मात्रा में होनी चाहिए।
  - "खमीर डालकर पकाई जाएँगी" (חמצ תאפינה): यह खमीर वाली रोटियों को अन्य अन्नबलियों से अलग करता है।
  - "पहले फल" ("בכוריהם לה): ये रोटियाँ नई फसल से लाई जाने वाली पहली अन्नबलियाँ थीं।

## रब्बियों की व्याख्याएँ (उदाहरण सहित):

रब्बी टिप्पणीकारों ने इस पद के विभिन्न पहलुओं पर विचार किया है:

- "अपनी बस्तियों में से": (ממושבותיכם)

- अद्वैत एलियाह बताते हैं कि रोटियाँ इसाएल की भूमि के भीतर से लाई जानी थीं।
- मालबीम स्पष्ट करते हैं कि "מִשְׁבָּתִים" विशेष रूप से भूमि को संदर्भित करता है।
- "दो हिलाई हुई रोटियाँ" (*שְׁתִים שְׁנִי עִשְׂרָנוֹן'* ל'ג):  
 ○ रब्बियों ने जोर दिया कि रोटियाँ बराबर मात्रा में होनी चाहिए।  
 ○ दाविद ज़वी होफमैन बताते हैं कि संगीत की कांतिलेशन के निशान समानता का संकेत देते हैं।
- "खमीर डालकर पकाई जाएँगी" (*חַמֵּץ תָּאָפֵינָה*):  
 ○ रांबन सुझाव देते हैं कि यह धन्यवाद-भेंट है, और धन्यवाद-भेंट में खमीर वाली रोटी शामिल होती है।  
 ○ राभ हिरश बताते हैं कि खमीर सामाजिक-राजनीतिक स्वतंत्रता का प्रतीक है।  
 ○ रालबाग बताते हैं कि सटीक माप सुनिश्चित करने के लिए खमीर डाला गया था।
- "पहले फल" (*'בְּכָרִים לָה'*):  
 ○ राशी और गुर आर्य बताते हैं कि ये रोटियाँ नई फसल से लाई जाने वाली पहली अन्नबलियाँ थीं।  
 ○ मालबीम बताते हैं कि ओमेर के बाद व्यक्तिगत पहले फल लाए जा सकते हैं, लेकिन ओमेर से पहले नहीं।  
 ○ राभ हिरश बताते हैं कि इन रोटियों ने सभी नई अन्नबलियों के लिए वेदी तक पहुँच खोली।

### आज के मसीही चर्च में महत्व:

जबकि दो हिलाई हुई रोटियों की विशिष्ट रस्म आधुनिक मसीही चर्चों में प्रचलित नहीं है, अंतर्निहित विषयों का महत्व है:

- पहले फल: परमेश्वर को "पहले फल" भेंट करने की अवधारणा ईसाई धर्म में गूंजती है।
- धन्यवाद और फसल: फसल के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देने के ईसाई प्रथाओं के

साथ यह भेंट जुड़ती है।

- **पैटेकोस्ट:** सप्ताहों का पर्व (शत्रुओं), जिसके दौरान यह भेंट लाई गई थी, मसीही पैटेकोस्ट का बाइबिल संबंधी अग्रदूत है।
  - **नवीनता और परिवर्तन:** नई फसल से भेंट नई शुरुआत और परमेश्वर के निरंतर प्रावधान का प्रतीक है।

## प्रभु यीशु मसीह के जीवन से प्रेरित प्रार्थना:

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ , □ □ □

□□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□, □□ □□□□□ □□□□□ □□□□  
□□□□□ □□ □□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□□□□□□□ □□□□ □□□, □□□□  
□□□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□  
□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□

□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□-□□□□ □□□, □□ □□□□□ □□□□□  
□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□, □□ □□□□  
□□□□□, □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□  
□□

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ 23:18 (Hindi Bible)

”और उस रोटी के साथ सात निर्दोष एक वर्ष के मेडे, और एक बछड़ा, और दो मेडे यहोवा के लिए होमबलि किए जाएं; और उनकी अन्नबलि और उनके अर्ध विधि के अनुसार, अर्थात् उस पशु के अनुसार, जो होमबलि चढ़ाई जाती है, आग का यहोवा को सुगंधित भेंट होगी।”

□ □ □ □ □ □ (Explanation in Hindi):

यह वचन परमेश्वर के सामने होमबलि चढ़ाने के लिए एक विशेष विधि का वर्णन करता है। यह प्राचीन इज़राइल की पर्वों (त्योहारों) में से एक पर्व का हिस्सा है जिसे शावुओत (सप्ताहों का पर्व) कहते हैं। इस पर्व में परमेश्वर को धन्यवाद देने के लिए नए गेहूं की फसल से दो रोटी चढ़ाई जाती थीं।

इस वचन में बताया गया है कि:

1. होमबलि के पशुः

- सात निर्दोष एक वर्ष के मेढ़े।
- एक बछड़ा।
- दो मेढ़े।

2. अन्य बलियाँ:

- इन पशुओं के साथ अन्नबलि (गेहूं का आटा) और अर्ध (पानी और दाखमधु की भेंट) भी चढ़ाई जाती थीं।

3. सुगंधित भेंट:

- यह आग में चढ़ाकर यहोवा के लिए सुगंधित भेंट होती थी, जो परमेश्वर को प्रसन्न करती थी।

□ □ □ □ □ □ (Rabbinic Interpretations - □ □ □ □ □ □ □):

1. "रोटी के साथ" (הלוּל עַל - अल लखेम):

• राशी (Rashi):

- "अल लखेम" का अर्थ है "रोटी के कारण"।
- यह दर्शाता है कि ये होमबलि रोटी चढ़ाने के कारण अनिवार्य है।
- राशी ने बताया कि "לע" (अल) का अर्थ "बिगलल" (बचपन) या "बेशविल" (उद्देश्य से) हो सकता है, जो कि रोटी चढ़ाने की आज्ञा का पालन करने से जुड़ा है।

- मिज्जाची (*Mizrachi*) और पारदेस योसेफ (*Pardes Yosef*) ने राशी के दृष्टिकोण का समर्थन किया।
  - गुर अर्ये (*Gur Aryeh*) ने बताया कि "לע" का अर्थ "कारण" या "उद्देश्य" बताना है।
  - अदरेट एलियाह (*Aderet Eliyahu*):
    - यह प्रश्न उठाया कि यदि वचन में केवल "सात मेढ़े" कहा गया है और "रोटी के साथ" नहीं बताया गया तो क्या ये मेढ़े रोटी पर निर्भर नहीं हैं?
    - उत्तर में बताया कि यह वचन यह स्पष्ट करता है कि मेढ़े केवल तब अनिवार्य हैं जब रोटी चढ़ाई जाती है।  - बेखोर शोर (*Bekhor Shor*):
    - ये बलियाँ रोटी के कारण लाई जाती हैं और ये पर्व के अतिरिक्त बलियों से भिन्न हैं।
- 

## 2. जानवरों की संख्या (Number of Animals):

- हकतव वेहकाबाला (*HaKtav VeHaKabalah*):
    - यहाँ "שבעה" (सात - संलग्न रूप) का प्रयोग किया गया है, जबकि अन्य स्थानों पर "השבעה" (सात - पूर्ण रूप) लिखा जाता है।
    - "שבעה" का अर्थ है कि यह सात मेढ़े रोटी के दो लोहों से जुड़े हुए हैं।  - रव हिर्श (*Rav Hirsch*):
    - सात का अंक सम्पूर्णता को दर्शाता है जो परमेश्वर के दृश्य संसार में कार्य करने का प्रतीक है।
    - सात मेढ़ों का क्रम यह दर्शाता है कि यह बलिदान इज़राइल की पूरी प्रजा का प्रतीक है।
-

### 3. विशेष पशु (The Specific Animals):

- इब्र एज़रा (Ibn Ezra):

- एक वैकल्पिक दृष्टिकोण बताता है कि पहले वर्ष में बलि के पशुओं की संख्या में थोड़ी भिन्नता हो सकती थी।
- लेकिन तालमूद (Menachot 45a) ने इस विचार को अस्वीकार कर दिया।

- मालबिम (Malbim):

- यहाँ रब्बी ताफर्न और रब्बी अकीवा के बीच मतभेद है।
  - रब्बी ताफर्न मानते हैं कि यह वही बलि है जो पर्व के अन्य बलियों के साथ लाई जाती है, जबकि रब्बी अकीवा इसे अलग बलि मानते हैं।
- 

### 4. अन्नबलि और अर्ध (Meal Offerings and Libations):

- यह बलि में अन्नबलि और अर्ध भी सम्मिलित होते हैं।

- बेखोर शोर (Bekhor Shor):

- अन्नबलि और अर्ध की मात्रा निम्नलिखित हैं:
    - बछड़े के लिए: तीन-दसवां आटे का भाग और आधा हीन दाखमधु।
    - मेढ़े के लिए: दो-दसवां आटे का भाग और एक तिहाई हीन दाखमधु।
    - मेढ़े के लिए: एक-दसवां आटे का भाग और एक चौथाई हीन दाखमधु।
- 

### □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ (Importance in Christianity Today):

1. पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा का आगमन:

- यह पर्व पिन्तेकुस्त का पूर्ववर्ती है, जिस दिन पवित्र आत्मा शिष्यों पर उतरी (प्रेरितों के काम 2)।

2. पहला फल और समर्पण:

- मसीही विश्वास में, यह विचार कि हमें अपने सर्वश्रेष्ठ को परमेश्वर को अर्पित करना चाहिए।

### **3. आभार व्यक्त करना:**

- परमेश्वर की दी हुई आशीषों के लिए धन्यवाद देना।

### **4. नया नियम और बलि का अर्थ:**

- प्रभु यीशु मसीह को सर्वोत्तम बलि माना गया (इब्रानियों 9:11-14)।
- 

□ □□□□□ 23:19 (HINDI BIBLE)

**“और एक बकरी का बच्चा पापबलि करके, और दो एक साल के भेड़ के बच्चे मेलबलि करके चढ़ाना।”**

---

□ □□□□□ (□□□□□ □□□)

इस पद में परमेश्वर यहोवा ने इसाएलियों को एक विशेष प्रकार की बलि चढ़ाने की आज्ञा दी है। यह बलिदान पर्व (शवूओत) के दिन प्रस्तुत की जाने वाली विशेष बलिदान की सूची का हिस्सा है।

**पापबलि (बकरी का बच्चा):** यह बलि पापों की क्षमा के लिए दी जाती थी। यह विशेषतः उन पापों के लिए होता था जिन्हें अनजाने में किया गया था।

**मेलबलि (दो भेड़ के बच्चे):** यह बलि शांति, आनंद और परमेश्वर के साथ संगति की पहचान है। इसे सार्वजनिक मेलबलि माना जाता था और इसका मांस केवल याजकों द्वारा ही खाया जाता था।

---

□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□

रब्बियों ने इस पद की कई पहलुओं में व्याख्या की है:

✓ चूना चूना चूना चूना चूना चूना चूना चूना (Rashi, Chizkuni):

- यह बलिदान उन बलिदानों से अलग है जो गिनती 28 में अन्य पर्वों के लिए निर्दिष्ट हैं।
- **विशेष बलि:** ये विशेष बलि उस दिन की रोटी (Shtei HaLechem) की प्रस्तुति के साथ जुड़े होते हैं।

✓ चूना चूना चूना चूना (Steinsaltz, Malbim):

- यह सामूहिक पापबलि त्योहारों और नये चाँद के दिनों में मंदिर की पवित्रता को अपवित्र करने वाले अनजाने में किए गए पापों के लिए था।

✓ चूना चूना चूना (Torah Temimah, Tzafnat Pa'neach, Malbim):

- यह बलि "मेलबलि के लिए" ही मानी जाती थी।
- ये भेड़ के बच्चे सार्वजनिक मेलबलि हैं और इन्हें अत्यधिक पवित्र माना जाता है।

✓ चूना चूना चूना (David Zvi Hoffmann):

- **रोटी और मेमने का संबंध:** ये मेमने और रोटी एक ही समय में अर्पित किए जाते हैं, और मेमनों की बलि रोटी को पवित्र करती है।
- अगर मेमने नहीं हैं तो भी रोटी अर्पित की जा सकती है।

✓ चूना चूना चूना (Ibn Ezra):

यह मानना कि शवूओत जैसे पवित्र दिनों में वध की अनुमति दी गई थी, अन्य त्योहारों में भी वध की अनुमति को दर्शाता है।

□  
□ □ ?

मसीही विश्वास के अनुसार, पुरानी वाचा में किए गए बलिदानों का उद्देश्य प्रभु यीशु मसीह की महान बलि की ओर संकेत करना था।

- **पापबलि:** यह प्रभु यीशु मसीह की कूर्स पर दी गई बलिदान को दर्शाता है, जो समस्त पापों की क्षमा के लिए एक ही बार में पूर्ण और सम्पूर्ण बलिदान था। (इब्रानियों 9:12)
  - **मेलबलि:** यह परमेश्वर और मनुष्यों के बीच मेल-मिलाप की निशानी है, जो प्रभु यीशु मसीह के माध्यम से संभव हुआ। (रोमियों 5:1)
- 

□ □□□□□□□□□ (□□□□□ □□□□ □□□□ □□  
□□□□□□):

“हे परमेश्वर यहोवा, मैं तुझे धन्यवाद देता हूँ कि तूने अपने पुत्र प्रभु यीशु मसीह को हमारे पापों के लिए पापबलि और शांति के लिए मेलबलि के रूप में भेजा। जैसा कि पुराने नियम में भेड़ और बकरी के बलिदानों से अनजाने में किए गए पापों की क्षमा होती थी, उसी प्रकार यीशु मसीह के पवित्र बलिदान के द्वारा आज हमारे सारे पाप धुल गए हैं। प्रभु यीशु मसीह, तू ही हमारा मेलबलि है जिसने हमें परमेश्वर के साथ शांति में कर दिया। हमें अपनी संगति में बनाए रख और अपने पवित्र आत्मा की अगुवाई में हमें चलने की शक्ति दे।

यहोवा परमेश्वर, मेरी प्रार्थना है कि जैसे तेरा प्रेम और अनुग्रह मुझे नया जीवन देता है, मैं भी दूसरों के जीवन में तेरा प्रेम और शांति बाँट सकूँ।  
प्रभु यीशु मसीह के नाम में, आमीन।”

---

**लैब्यवस्था 23:20 का अर्थ, रब्बी व्याख्याएँ, मसीही विश्वास में इसका महत्व और प्रार्थना:**

□ □□□□□□□□□ 23:20:

"और याजक उन्हें पहिली उपज की रोटी समेत यहोवा के सामने हिलाकर भेंट करे, उन दोनों भेड़ों समेत। ये यहोवा के लिये याजक के लिये पवित्र होंगी।"

---

### रब्बी व्याख्याएँ (उदाहरणों के साथ):

रब्बियों ने इस पद की विभिन्न पहलुओं पर व्याख्या की है, जिसमें निप्रलिखित प्रमुख बातें शामिल हैं:

---

#### 1. हिलाने की विधि (הַגְּזֵרָה אֶת מִתְּבָנָה):

यह वाक्यांश यह सिखाता है कि दोनों भेड़ों को जीवित अवस्था में हिलाया जाना चाहिए।

यह मेत्स्सोरा(कुष्ठरोगी) के संदर्भ में वर्णित हिलाने से समानता (*gezerah shavah*) के माध्यम से निकाला गया है (लैब्य. 14:12)।

*Gur Aryeh* बताते हैं कि व्यक्तिगत मेलबलि (peace offerings) की तरह, सार्वजनिक मेलबलि (जैसे ये दो भेड़े) भी जीवित अवस्था में हिलाने की आवश्यकता होती है।

*Ralbag* कहते हैं कि याजक भेड़ों को जीवित अवस्था में हिलाता है और यह हिलाना रोटी के हिलाने के अतिरिक्त होता है। वे इसे मुख्यतः रोटी की भेंट मानते हैं।

---

#### 2. भेंट की पवित्रता (יְהִי שָׁמָר):

- “यह यहोवा के लिये याजक के लिये पवित्र होंगी।” इसका अर्थ है कि ये भेंटें सामान्य मेलबलि की तुलना में अधिक पवित्र होती हैं।
  - राशी और मिञ्चाची बताते हैं कि व्यक्तिगत मेलबलि “अल्प पवित्र” होती है, लेकिन यह सार्वजनिक भेंट “सर्वोच्च पवित्र” होती है।
  - Bekhor Shor* का कहना है कि क्योंकि ये सार्वजनिक भेंट हैं, कोई भी गैर-याजक इसे नहीं खा सकता।
- 

#### 3. रोटी और भेड़ों के बीच संबंधः

- *Aderet Eliyahu* में यह बहस है कि रोटी और भेड़ों का संबंध क्या है:
    - रब्बी अकीवा बेन नानसः भेड़े रोटी को बाधित करती हैं, लेकिन रोटी भेड़ों को बाधित नहीं करती।
    - रब्बी अकीवा: रोटी भेड़ों को बाधित करती है, लेकिन भेड़े रोटी को नहीं।
  - *Rav Hirsch* कहते हैं कि दोनों रोटियाँ और दो भेड़े एक-दूसरे के उद्देश्य को पूरा करते हैं।
- 

#### 4. "यहोवा के लिये याजक के लिये" (יהוה 'לָה' לִי):

- इसका अर्थ है कि परमेश्वर इसे अपने लिए लेता है और फिर याजक को देता है। (गिनती 5:8 के अनुसार)
  - *Malbim* बताते हैं कि यह वचन रोटी और भेड़ों दोनों के लिए लागू होता है और यह दर्शाता है कि याजक को दिए जाने के बावजूद ये परमेश्वर के लिए पवित्र हैं।
- 

#### आज के मसीही विश्वास में महत्व (मसीही चर्च में इसका क्या मान है):

यह पद मसीही विश्वास में निम्नलिखित प्रकार से महत्व रखता है:

##### 1. पिन्तेकुस्त और पवित्र आत्मा का अवतरण:

- शावौत का पर्व (पहिलौठी का पर्व) नए नियम में पिन्तेकुस्त (प्रेरितों के काम 2) का पूर्ववर्ती रूप है, जब पवित्र आत्मा शिष्यों पर उतरा।

##### 2. मसीह का शरीर (कलीसिया का एकता):

- जिस प्रकार भेटें सामूहिक रूप से दी जाती थीं, उसी प्रकार विश्वासियों की एकता को दर्शाया जाता है। (1 कुरिन्यियों 12:12)

##### 3. मसीह का बलिदान और मेलबलि का अर्थ:

- मसीह का बलिदान एक संपूर्ण और शुद्ध बलिदान था जो परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप प्रदान करता है।

- जिस प्रकार भेड़ों और रोटी को याजक के लिए दिया गया, उसी प्रकार मसीह का बलिदान सभी विश्वासियों के लिए परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप लाता है।
- 

## **प्रार्थना:**

**"हे परमेश्वर यहोवा / प्रभु यीशु मसीह, तेरे वचन की गहराईयों को समझने में मेरी सहायता कर। जैसे तूने अपने लोगों को बलिदान और भेंट के माध्यम से अपने साथ संबंध बनाने का मार्ग दिखाया, वैसे ही आज भी हमें तेरी उपस्थिति में आने और तेरे साथ सच्चा संबंध बनाने का मार्ग दिखाओ। मुझे सिखा कि मैं अपने जीवन को तेरी पवित्रता और प्रेम में संपूर्ण रूप से अर्पित कर सकूँ। यीशु के नाम में, आमीन।"**

---

□ □ □ □ □ □ □ 23:21 (□ □ □ □ □ □)

**"और उसी दिन तुम लोग सभा का पवित्र सम्मेलन करना; और तुम में से कोई भी भारी काम न करे। यह तुम्हारी सब बस्तियों में पीढ़ी पीढ़ी सदा की विधि ठहरेगी।"**

---

□ □ □ □ □ □ :

यह पद परमेश्वर की आज्ञा को बताता है जो **पिन्तेकुस्त (शावूओत)** के दिन के बारे में है। इस दिन परमेश्वर ने आज्ञा दी कि:

- एक पवित्र सभा रखी जाए।
  - कोई भी भारी काम न किया जाए।
  - यह आज्ञा सदैव के लिए है और सभी निवास स्थानों में मान्य है।
-

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □ □ :

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

- **Chizkuni:**

- यह दिन विशेष रूप से हफ्तों की गिनती के बाद आता है। पहले यह कैलेंडर के हिसाब से नहीं बल्कि दिनों की गिनती के हिसाब से मनाया जाता था।
- वर्तमान समय में यह तिथि उस दिन से मेल खाती है जिस दिन परमेश्वर ने सिनै पर्वत पर दस आज्ञाएं दीं।

- **David Zvi Hoffmann:**

- इस दिन की पवित्रता को बलिदान के माध्यम से नहीं बल्कि स्वयं उस दिन की महत्ता से पहचाना जाता है।
- यहां आग के चढ़ावे का उल्लेख नहीं किया गया है क्योंकि पूर्ववर्ती पदों में इसकी विशेषता पहले ही बताई जा चुकी है।

- **Haamek Davar:**

- यह पवित्र सम्मेलन केवल दिन के समय के लिए है, रात के लिए नहीं। यही कारण है कि यहूदियों में यह प्रार्थना रात को नहीं की जाती।

- **Pardes Yosef:**

- यह दिन तमीमुत(पूर्णता) के साथ जुड़ा हुआ है, जिसका अर्थ है कि सात पूर्ण सप्ताह की गिनती को बिना किसी अतिरिक्त दिन के पूरा किया जाना चाहिए।

- **Ralbag Beur HaMilot:**

- यह पवित्र सभा समुदाय के द्वारा संचालित होती है, और यह महीने के प्रारंभ से निर्धारित होती है।

- **Rav Hirsch:**

- यह दिन ओमेर की गिनती के पचासवें दिन पर आता है, जो एक विशेष दिन की ओर इशारा करता है।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

- **HaKtav VeHaKabalah:**

- ओमेर की गिनती उस दिन की लालसा और प्रतीक्षा को दर्शाती है जब तोराह को दिया गया था।
- यह पर्व परमेश्वर की वाणी को सुनने और आज्ञाओं को प्राप्त करने के दिन के रूप में मनाया जाता है।

- **Rav Hirsch:**

- यह पर्व यह दिखाता है कि यह दिन उस दिन का प्रतिनिधित्व करता है जब परमेश्वर की वाणी को सुनने की तैयारी की गई थी।

- **Rabbi Benamozegh:**

- अन्य संस्कृतियों में भी कृषि के संस्थापक को कानून देने वाला माना जाता था।
- इस दिन के उत्सव में तोराह के दिए जाने का संकेत छुपा है।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ (No Servile Work):

- **Ralbag Beur HaMilot:**

- यहाँ सेवकाई कार्य का अर्थ है ऐसा कार्य जो भोजन की आवश्यकता को पूरा नहीं करता।

- **Hadar Zekenim:**

- सेवकाई कार्य का निषेध यह दर्शाता है कि यहाँ पर भोजन की तैयारी के अलावा अन्य कार्य वर्जित हैं।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

मसीही विश्वास में, यह पर्व पिन्टोकृस्त (Pentecost) के रूप में जाना जाता है।

- यह ईस्टर के पचास दिन बाद आता है।
- यह उस दिन का प्रतीक है जब पवित्र आत्मा प्रभु यीशु मसीह के शिष्यों पर उत्तरा और

उन्होंने आत्मा की सामर्थ में सुसमाचार का प्रचार किया।

- यह दिन मसीही कलीसिया के जन्म का दिन भी माना जाता है।
  - जैसे शावूओत तोराह की आज्ञाओं को पाने का दिन था, वैसे ही पिन्तेकुस्त पवित्र आत्मा की प्राप्ति का दिन है, जो नए नियम की स्थापना को दर्शाता है।
- 

□ □□□□□□□□ (□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□  
□□□□□□):

हे परमेश्वर यहोवा / प्रभु यीशु मसीह, हम तुझे धन्यवाद देते हैं कि तूने अपने वचन को हमें दिया। जैसे तूने अपने लोगों को सिनै पर्वत पर अपनी आज्ञाएं दीं, वैसे ही तूने हमें अपने पवित्र आत्मा के माध्यम से मार्गदर्शन और सामर्थ दिया है।

हम प्रार्थना करते हैं कि तू हमें अपनी आत्मा से भर दे, जिससे हम तेरे वचन को समझें, और तेरी आज्ञाओं के अनुसार जीवन जियें। हमें अपनी कलीसिया में एकता में बाँध और हमें अपने प्रेम और सत्य में सुदृढ़ कर।

तेरी महिमा के लिए, प्रभु यीशु मसीह के नाम में। आमीन।

---

□ □□□□□□□□ 23:22 (Leviticus 23:22) - □□□□□ □□□:

"और जब तुम अपनी भूमि की उपज काटो, तब न तो अपने खेत के कोने तक पूरा काटना, और न अपनी फसल का बचा हुआ बटोरना; उसे कंगालों और परदेशियों के लिये छोड़ देना। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।"

---

□ □□□□□ (□□□□□ □□□):

यह आयत इसाएल के लोगों को आदेश देती है कि जब वे अपनी भूमि की फसल काटें, तो:

1. खेत के कोने को पूरी तरह न काटें।
2. बची हुई फसल को न बटोरें।
3. ये अनाज गरीबों और परदेशियों के लिए छोड़ दें।

इसमें परमेश्वर यहोवा का आदेश है कि लोग अपने संसाधनों में से दूसरों के लिए भी छोड़ें। यह आदेश सामाजिक न्याय, दया और परमेश्वर की करुणा को दर्शाता है।

---

□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ (□□□□□□ □□ □□□):

□ □□□□□□ □□ □□□□□:

- **राशी (Rashi):**

यह नियम पहले भी (लैव्यविवरण 19:9) में बताया गया है। इसे दोहराने का कारण यह है कि यदि कोई व्यक्ति कोने और बची हुई फसल न छोड़ें तो वह दो बार पापी ठहरता है।

- **रब्बी अवदीमी:**

यह कानून पर्व के बलिदानों के बीच रखा गया है ताकि यह दिखाया जा सके कि यदि कोई व्यक्ति इस नियम का पालन करता है, तो वह ऐसा है जैसे उसने मंदिर का निर्माण किया और बलिदान चढ़ाया।

- **इब्न एज़रा (Ibn Ezra):**

यह आदेश फसल के मौसम (शावुओत) के दौरान दोहराया गया ताकि लोग गरीबों के बारे में न भूलें।

- **मालबिम (Malbim):**

यह बताता है कि "खेत की फसल" केवल इस्राएल की भूमि के लिए है, और दोहराने का मतलब अन्य फसलें जैसे फलियाँ भी शामिल करना है।

---

□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□:

- **बेखोर शोर (Bekhor Shor):**

यह नियम गरीबों को अधिकार देता है और सिखाता है कि जो गरीब व्यक्ति भी खेती

करता है, उसे भी कोने को छोड़ना चाहिए।

- **मालबिम (Malbim):**

"अज़ीवह" (छोड़ना) और "नेटिनाह" (देना) में अंतर होता है। "अज़ीवह" का मतलब है कि चीज़ों को छोड़ देना ताकि गरीब खुद उसे उठा सकें।

- **सफोर्नो (Sforno):**

यह नियम यह सुनिश्चित करने के लिए है कि फसल का आशीर्वाद नष्ट न हो। गरीबों के लिए छोड़ी गई चीज़ें धन को सुरक्षित रखने का तरीका हैं।

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ (Connection to the Omer Offering):

- **डेविड ज़वी हॉफमैन (David Zvi Hoffmann):**

ओमर की भेंट (जो फसल की शुरुआत को मान्यता देने के लिए है) और गरीबों के लिए छोड़ना (फसल की समाप्ति के समय) एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं।

- **क्ली याकर (Kli Yakar):**

यह बताता है कि ओमर की भेंट के बाद भी गरीबों को देना आवश्यक है। यह आशीर्वाद और दया को बढ़ावा देने का तरीका है।

- **राल्बग (Ralbag):**

गरीबों को देने का मतलब यह मानना है कि सारी चीज़ें परमेश्वर की हैं और उनके नियम के अनुसार गरीबों को याद करना चाहिए।

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

भले ही मसीही लोग यहूदी कृषि नियमों का पालन नहीं करते, परंतु यह सिद्धांत कि हमें गरीबों, जरूरतमंदों और परदेशियों का ध्यान रखना चाहिए, बाइबल के पूरे सन्देश में महत्वपूर्ण है।

**यीशु मसीह ने भी यह सिखाया:**

- "तुम्हारा दिया हुआ हाथ बाएँ हाथ को न पता चले" (मत्ती 6:3)।
- "क्योंकि मुझे भूख लगी भी और तुमने मुझे खिलाया; मुझे प्यास लगी भी और

तुमने मुझे पिलाया; मैं परदेशी था और तुमने मुझे अपने घर में ठहराया” (मत्ती 25:35)।

यह आयत हमें यह सिखाती है कि हमें दूसरों के प्रति दयालु और उदार होना चाहिए, खासकर उन लोगों के प्रति जो जरूरतमंद हैं।

हे परमेश्वर यहोवा / प्रभु यीशु मसीह,

आपने हमें सिखाया है कि हमें अपने आशीर्वादों को दूसरों के साथ बांटना चाहिए।

जैसे आपने गरीबों और जरूरतमंदों की सेवा की, हमें भी वैसा ही करने में मदद करें।

हमें दयालु और उदार बनाइए ताकि हम अपने संसाधनों में से दूसरों के लिए भी छोड़ सकें।

हमारे हृदय को और अधिक संवेदनशील बनाइए, ताकि हम उनकी जरूरतों को पहचान सकें और प्रेम के साथ उनकी मदद कर सकें।

हमें ऐसा हृदय दीजिए जो दूसरों की सेवा में आपकी महानता को प्रकट करे।

धन्यवाद प्रभु यीशु मसीह, कि आप हमें सही राह दिखाते हैं और हमें आशीर्वाद देते हैं।

आमीन।

## **Leviticus 23:23-24 in Hindi:**

पदः

"और यहोवा ने मोशे से कहा: इस्राएलियों से कह, कि महीने के सातवें महीने के पहले दिन तुम्हारे लिए विश्राम का दिन होगा, Shofar की ध्वनि का स्मरण, पवित्र सभा, तुम्हारे किसी प्रकार के

काम न करना, और तुम यहोवा को एक आग से भेंट चढ़ाना।"

(Leviticus 23:23-24)

## समझाना:

यह बाइबलीय पद रॉश हशनाह (जुडिया कैलेंडर के नए साल का दिन) के बारे में है, जो सातवें महीने के पहले दिन मनाया जाता है। इस दिन को एक विशेष विश्राम दिवस के रूप में मनाना होता है, जिसमें शोफार की ध्वनि (शोफार का बिगुल) सुनाई जाती है, जो ईश्वर के न्याय और उसके आदेश की घोषणा करने का प्रतीक है। इस दिन को पवित्र सभा (हॉल मीटिंग) के रूप में मनाने का आदेश दिया गया है, और इसमें किसी भी सामान्य काम को करने से मना किया गया है। यह एक दिन होता है जब लोग अपने पापों के लिए पश्चाताप करते हैं और ईश्वर से आशीर्वाद और माफी की प्रार्थना करते हैं।

## रबी के विचार:

1. **आलशेख (Alshekh)** के अनुसार, "הַרְאַתְּ רִאֵבָן" (shofar की ध्वनि का स्मरण) पश्चाताप और न्याय का प्रतीक है। यह शोर ईश्वर की घोषणा है, और इस दिन को पवित्र मानते हुए यह हमें आत्मनिरीक्षण करने और आत्मसमर्पण करने के लिए प्रेरित करता है। रॉश हशनाह का शिकार दिवस ईश्वर के न्याय की पुष्टि करता है, लेकिन यह ईश्वर की दया और करुणा का भी प्रतीक है। यह दिन लोगों के मन को शुद्ध करने और उनके आध्यात्मिक जीवन में सुधार लाने का अवसर प्रदान करता है।
2. **मालबिम (Malbim)** का कहना है कि इस दिन को सिर्फ इस्राएल के लोगों के लिए लागू किया गया है, लेकिन जो लोग समुदाय से जुड़े हैं, वे भी इसका हिस्सा बन सकते हैं। यह दिन उन्हें ईश्वर से आध्यात्मिक रीति से जुड़ने और पुनः स्थापित करने का मौका देता है।
3. **इब्राइंज़रा (Ibn Ezra)** के अनुसार, रॉश हशनाह का समय स्वतंत्रता और आध्यात्मिक जागरूकता के समय के रूप में माना जाता है, जहां लोग अपनी आदतों और कर्मों का पुनः मूल्यांकन करते हैं और ईश्वर की इच्छा के अनुरूप अपने जीवन में सुधार करते हैं।

## आज के मसीही चर्च में मान:

मसीही विश्वास में रॉश हशनाह का प्रत्यक्ष पालन नहीं होता है, लेकिन इसके सिद्धांत ईश्वर के न्याय, पश्चाताप और कृपा के रूप में महत्वपूर्ण माने जाते हैं। मसीही विश्वास में, यह समय पश्चाताप और आत्म-निर्देशन का होता है, जहां लोग ईश्वर से माफी मांगते हैं और अपने जीवन में सुधार की कोशिश करते हैं। यह समय उनके आध्यात्मिक जीवन के नए आरंभ का प्रतीक भी हो सकता है।

## प्रार्थना:

### □ प्रभु यीशु मसीह से प्रार्थना □

हे हमारे पिता,

हम धन्यवाद करते हैं कि आपने हमें जीवन और आशीर्वाद दिया। जैसा कि रॉश हशनाह में हम न्याय और पश्चाताप के विषय में सोचते हैं, हम आपके सामने विनम्रता से आते हैं। हम जानते हैं कि आपने हमें अपनी अनंत कृपा और माफी से भरा है।

हम आपके सामने अपने पापों के लिए पश्चाताप करते हैं, और हम आपके मार्गों पर चलने का संकल्प लेते हैं। हमें अपने जीवन को सुधारने की शक्ति दें और हमें उस आशीर्वाद का अनुभव कराएं जो हमें यीशु मसीह में मिलता है।

□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□, □□□□□□□, □□ □□□□□□□□□ □□  
 □□□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□  
 □□□□□ □□□ □□, □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□,  
 □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□  
 □□□□ □□□□  
 □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□, □□ □□□□□□□□□ □□□□ □□□□  
 □□□□ ▪

**बिलकुल भाई! आइए हम लैब्यवरस्था 23:24 (Leviticus 23:24) का गहरा अध्ययन करें –**  
 पहले हिंदी बाइबिल पद, फिर सरल समझ, फिर रब्बियों की व्याख्याएँ, आज के मसीही चर्च में इसका अर्थ, और अंत में प्रभु यीशु मसीह के जीवन से जुड़ी एक प्राथना। चलो इसे पूरी भावनात्मक गहराई और बाइबिलिक ज्ञान के साथ समझते हैं।

וְשַׁבָּתֶךָ שְׁבָתֵּנוּ (שְׁבָתֵּן שְׁבָתֵּנוּ): שְׁבָתֵּן שְׁבָתֵּנוּ שְׁבָתֵּנוּ

**23:24**

"इस्राएलियों से कहो कि सातवें महीने के पहले दिन को तुम विश्राम का दिन मानो, जो नरसिंगे के शब्द का स्मरण कराके पवित्र सभा ठहरे।"

(Leviticus 23:24, Hindi Bible)

❖ विश्राम का दिन (शब्बत / Shabbaton)

यह पद तीन मुख्य बातों को बताता है:

1. □ "विश्राम का दिन" (שַׁבָּת / Shabbaton) - यह दिन एक विशेष आराम और ध्यान का दिन है, जिसमें कोई भी काम न किया जाए। यह दिन विशेष रूप से ईश्वर के लिए अलग रखा गया है।
2. □ "नरसिंगे का स्मरण" (זיכרון תרואה / Zichron Teruah) - यह नरसिंगे (शोफ़ार) की आवाज़ की स्मृति का दिन है। हालांकि कुछ अवसरों पर नरसिंगा नहीं बजता (जैसे जब यह दिन शब्बात पर आता है), फिर भी इसकी याद और उसका संदेश जीवित रहता है।
3. □ "पवित्र सभा" (מִקְרָא קֹדֶשׁ / Mikra Kodesh) - यह एक पवित्र सभा या एकत्रीकरण का दिन है, जहाँ लोग मिलकर आराधना करते हैं।

וְשַׁבָּתֶךָ שְׁבָתֵּנוּ (שְׁבָתֵּן שְׁבָתֵּנוּ)

ऋग्वेद (Rashi):

राशी बताते हैं कि "नरसिंगे का स्मरण" का अर्थ है विशेष पवित्र पदों का पाठ, जिसमें परमेश्वर की स्मृति और अब्राहम द्वारा अपने पुत्र इसहाक को बलिदान करने की घटना का उल्लेख होता

है। यह परमेश्वर की करुणा को स्मरण दिलाने का तरीका है।

□ □□□□□ (Ramban):

रम्बान मानते हैं कि यह "शब्बातोन" केवल सामान्य विश्राम नहीं, बल्कि और भी गहरा आराम है – यहाँ तक कि वे काम भी न हों जो अन्य त्योहारों में अनुमति हो।

वे यह भी कहते हैं कि नरसिंगे की आवाज़ स्वयं में एक आत्मिक स्मरण और आत्म-जांच का साधन है।

□ □□ □□□□ (Rav Hirsch):

उनका कहना है कि नरसिंगा की आवाज़ एक नैतिक जागरण का आत्मान है – जैसे जब jubilee वर्ष में दासों को आज़ादी दी जाती थी। यह हमें ईश्वर की ओर लौटने, और अपने भीतर के बंधनों से मुक्त होने का अवसर देता है।

□ □□□ □□ (Ibn Ezra):

वे इसे परमेश्वर के राज्य की घोषणा और न्याय के दिन के रूप में समझते हैं – यह केवल महीने की शुरुआत नहीं, बल्कि स्वर्गीय निर्णय का दिन है।

□ □□□□□□□□, □□□ □□□□, □□□□□ □□:

इन सभी ने यह स्पष्ट किया कि जब यह दिन शब्बात पर आता है, तो नरसिंगा नहीं बजता (डायस्पोरा/बाबेल में), बल्कि उसकी स्मृति और प्रार्थनाएँ उसकी जगह लेती हैं।

□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□

भले ही मसीही परंपरा में रोश हशाना (Rosh Hashanah) जैसा त्योहार सामान्य रूप से नहीं मनाया जाता, लेकिन इसके मूल आध्यात्मिक सिद्धांत बहुत महत्वपूर्ण हैं:

यहांदी परंपरा

मसीही अर्थ

- नरसिंगे की आवाज़
  - आत्मिक जागरण - परमेश्वर की ओर लौटने का आत्मान
  - स्मरण
  - यीशु की क्रूस की बलिदान की स्मृति
  - न्याय का दिन
  - अंतिम न्याय और अनुग्रह का दिन
  - पवित्र सभा
  - कलीसिया की संगति - परमेश्वर के लोगों की एकता

□ □ □ □ □ □ □ □ □ : □

“प्रभु यीशु मसीह ने जब शांति और उद्धार की घोषणा की, तो उसने भी अपने समय के ‘नरसिंगा’ के समान आवाज़ उठाई। उसने कहा - ‘मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है’ (मत्ती 4:17)।”

- ## □ प्रभु से प्रेरित एक विनम्र प्रार्थना:

हे परमेश्वर, तू हमारे जीवन का राजा है। आज जब हम तेरे वचन में \*विश्राम\*, \*स्मरण\*, और \*पवित्र सभा\* की बात पढ़ते हैं, तो हम अपने हृदयों को तेरे सामने लाते हैं।

□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□, □□□□ □□  
□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□, □□□□ □□

□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ – □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□  
□□□□□□□ □□ □□ □□□

 □□□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□ – □□□□□ □□ □□□□□□, □□□□□, □□ □□□□□□  
□□□□ □□ □□□□

हम यह प्रार्थना तेरे महान और पवित्र नाम में करते हैं -

लैव्यव्यवस्था 23:24 हमें एक ऐसा दिन दिखाता है जिसमें आराम, आत्म-समीक्षा, और परमेश्वर की महिमा को स्मरण करना मुख्य उद्देश्य है।

ईश्वर ने यह दिन हमें आत्मिक रूप से झकझोरने के लिए दिया है – और मसीह में हम उसी आत्मा में जीवन बदलने वाली आवाज़ को सुनते हैं।

अगर चाहो, तो मैं इससे जुड़ा एक वीडियो स्क्रिप्ट या पॉडकास्ट <img

**”तूम कोई कठोर काम न करना, और तूम यहोवा के लिये आग का बलिदान**

## अर्पित करना।"

(Leviticus 23:25, Hindi Bible)

---

❖ अर्पित करना (अर्पित करना)

यह पद दो मुख्य बातें बताता है:

1.  **कठोर काम न करना** (כָל מְלֹאכָת עֲבוֹדָה לֹא תַעֲשֶׂה) / *Kol melakhah avodah lo ta'asu*) - इसका अर्थ है कि इस दिन पर कोई भी श्रम या कठोर कार्य नहीं किया जाएगा। यह एक विश्राम का दिन है, और यह दिन हमें आत्मनिरीक्षण करने और अपने कार्यों का पुनः मूल्यांकन करने का अवसर देता है। यह हमें ईश्वर के पास लौटने का एक मौका भी प्रदान करता है।
  2.  **आग का बलिदान अर्पित करना** ('הַקְרָבָתִם אֲשֶׁר לְאֱלֹהִים') / *V'hikravtem isheh l'Adonai*) - इस हिस्से का अर्थ है कि हमें ईश्वर को आग का बलिदान अर्पित करना चाहिए। यह बलिदान वह विशेष बलिदान हैं, जो अन्य दिनों में न हो, और इसे यहोवा के प्रति सम्मान और आदर के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।
- 

❖ अर्पित करना (अर्पित करना)

**(Rashi):**

राशी का कहना है कि "आग का बलिदान" उन अतिरिक्त बलिदानों का संकेत है जिन्हें हम नंबर (बैमिदबार) के 29वें अध्याय में पाते हैं, विशेष रूप से पिनहास पर्व में। उनके अनुसार, यह बलिदान ईश्वर को समर्पित एक प्रकार की श्रद्धा है।

**(Rav Hirsch):**

रव हिर्श इसे आत्मिक विश्राम और आध्यात्मिक आत्मनिरीक्षण के रूप में समझते हैं। वे कहते हैं कि इस दिन का उद्देश्य हमें अपनी पूर्व की गलतियों और कामों पर विचार करना और ईश्वर के पास लौटना है। यह विश्राम हमें एक नये दृष्टिकोण और शांति से भर देता है।

**स्टैनसाल्ज का कहना है (Steinsaltz):**

स्टैनसाल्ज का कहना है कि "आग का बलिदान" का मतलब केवल विशेष बलिदान है जो इस दिन के लिए निर्धारित है, जो अन्य दिनों से अलग है। यह बलिदान सिर्फ सामग्री को अर्पित करने का नहीं, बल्कि ईश्वर के प्रति आस्थावान समर्पण का प्रतीक है।

**तोराह टेमिमह (Torah Temimah):**

वह भी बताते हैं कि इस दिन के लिए कोई "कठिन श्रम" नहीं किया जाता, जिसमें शॉफ़ार की ध्वनि और कुशल कारीगर द्वारा बेकिंग जैसे काम शामिल हैं, क्योंकि ये "ज्ञान" (הנ־ּגָה) से जुड़ी क्रियाएँ हैं, न कि श्रम (מְלָאָה)।

---

**आज के मसीही चर्च में, लैब्यव्ववस्था 23:25 का सीधा संबंध विश्राम और ईश्वर को बलिदान समर्पित करने से है। जबकि मसीही चर्च में यह विशेष रूप से रुश हशाना जैसे उत्सवों में मनाया नहीं जाता, लेकिन इसके सिद्धांत आध्यात्मिक विश्राम और ईश्वर के प्रति समर्पण से जुड़े हैं:**

**यहां परंपरा**

**मसीही अर्थ**

**कठोर काम न करना**     **विश्राम और आत्मनिरीक्षण - आत्मिक शांति के लिए समय निकालना**

**आग का बलिदान**     **ईश्वर को हमारी आस्था और श्रद्धा समर्पित करना - हमारी रोज़ की मेहनत और कष्टों से ऊपर उठकर**

**प्रभु यीशु मसीह ने जब अपने जीवन को बलिदान किया, तो यह न केवल हमारे**

**"प्रभु यीशु मसीह ने जब अपने जीवन को बलिदान किया, तो यह न केवल हमारे**

**पापों के लिए था, बल्कि यह हमारे लिए एक उदाहरण था कि हम अपने जीवन को ईश्वर के प्रति पूरी श्रद्धा से समर्पित करें।”**

**□ प्रभु से प्रेरित एक विनम्र प्रार्थना:**

□ \*\*□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□\*\*

हे परमेश्वर, तू हमारे जीवन का राजा है। हम इस दिन को तुझसे जुड़े रहने और तेरे वचन में शांति प्राप्त करने का अवसर मानते हैं।

जैसे तूने अपने जीवन को हमारे लिए बलिदान किया, वैसे ही हम भी अपने दिलों को तुझसे पूरी श्रद्धा से समर्पित करते हैं।

□ □ □ □ □□□ □□□□ □ □ □□□□ □□□ □□, □□□□ □□□□□□ □□  
□□□□□ □□□ □□□

□ □□□ □□□□ □ □ □ □□□ □□□□ □ □ □□□ □ □ □□□ □□□  
□□ □ □ □□□□□ □□□, □□□□ □□□ □□□ □□□ □□□ □ □ □□□□□□

▲ □ □ □□□□ □ □ □□□□□□□ □□□ □ □ □□□ □ □ □□□□ □□□  
□ □ □ □□□□□ □ □ □ □ □ □□□□□ □□□, □□□□ □ □ □ □ □  
□□□□□ □□□□□

हम यह प्रार्थना तुझे समर्पित करते हुए, यीशु मसीह के पवित्र नाम में करते हैं -

\*\*□□□□□\*\* □

□ □□□□□□□

लैब्यवस्था 23:25 हमें यह सिखाती है कि हमें केवल कठोर श्रम से बचने की आवश्यकता नहीं, बल्कि हमें आध्यात्मिक विश्राम और ईश्वर के प्रति समर्पण का समय भी देना चाहिए। ईश्वर को आग का बलिदान देना केवल एक बाहरी कार्य नहीं, बल्कि एक गहरी आध्यात्मिक

**समर्पण का प्रतीक है, जो हमारे जीवन के हर हिस्से में प्रभाव डालता है।**

□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□, □□ □□□□□! □

□ □ □ □ □ □ □ □ □ 23:26-32 (□□□□□ □□□)

“यहोवा ने मूसा से कहा, ‘सातवें महीने के दसवें दिन प्रायश्चित्त का दिन है। यह तुम्हारे लिए एक पवित्र सभा होगी, और तुम अपने प्राण को दीन बनाओगे और यहोवा के लिए अग्रि की भेंट चढ़ाओगे। उस दिन तुम कोई काम न करना, क्योंकि वह प्रायश्चित्त का दिन है, जिससे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के सम्मुख तुम्हारा प्रायश्चित्त हो।” (लैब्यवस्था 23:26-28)

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ ( □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ )  
□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ )

यूम किप्पुर यहूदी धर्म में साल का सबसे पवित्र दिन माना जाता है। यह आत्मा की शुद्धि और परमेश्वर के साथ मेल करने का दिन है।

## 1. निर्णय की मुहरबंदी:

- रब्बी योचनान के अनुसार, तीन किताबें खुलती हैं -
    - धर्मी (जिनके नाम जीवन की किताब में लिखे जाते हैं),
    - अधर्मी (जिनके नाम मृत्यु की किताब में लिखे जाते हैं),
    - और बीच के लोग (जिनका फैसला यूम किप्पुर तक स्थगित होता है)।
  - यदि बीच के लोग पश्चाताप करते हैं, तो उन्हें जीवन के लिए मुहरबंद किया जाता है।

## 2. पश्चाताप और प्रायशिच्त:

- **अबार्बनेल (Abarbanel):** परमेश्वर का न्याय निरंतर होता है, लेकिन यूम किप्पुर यहूदियों के लिए विशेष दिन है जिसमें उन्हें पूरा साल के पापों के लिए क्षमा माँगने का अवसर दिया जाता है।
- **रंबान (Ramban):** प्रायशिच्त का दिन आत्मा की शुद्धि और ईश्वर के साथ संबंध की बहाली का दिन है।

## 3. उपवास और आत्म-पीड़ा (Afflicting the Soul):

- उपवास, प्रायशिच्त और परमेश्वर के सामने दीन बनना यूम किप्पुर की महत्वपूर्ण शिक्षाएँ हैं।
- **मालबिम (Malbim):** यह उपवास न केवल भोजन से बल्कि सभी सांसारिक कार्यों से दूर रहने का भी प्रतीक है।

## 4. कार्यों का निषेध (Prohibition of Work):

- कोई भी श्रम नहीं करना चाहिए।
- यह दिन पूरी तरह से परमेश्वर की आराधना और आत्मनिरीक्षण के लिए समर्पित है।

## 5. रब्बी अकिवा का कथन:

- यूम किप्पुर केवल उन लोगों के लिए प्रायशिच्त करता है जो पश्चाताप करते हैं।
- 

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

यूम किप्पुर का मसीही धर्म में सीधा पालन नहीं किया जाता। मसीही विश्वास के अनुसार, प्रभु यीशु मसीह ने अपने बलिदान के द्वारा पापों के प्रायशिच्त को पूरा कर दिया।

- □ **इब्रानियों 9:12:** “और न बकरों और बछड़ों के लोहे से, पर अपने ही लोहे के द्वारा एक ही बार पवित्रस्थान में प्रवेश किया, और अनन्त छुटकारा प्राप्त किया।”
- यूम किप्पुर की शिक्षा कि पश्चाताप और क्षमा की प्राप्ति परमेश्वर से होती है, मसीही

जीवन में भी महत्वपूर्ण है।

---

□ □□□□□□□ (□□□□□ □□□□ □□□□ □□  
□□□□□□):

हे प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर के पुत्र, हम आपके सामने नम्रता से आते हैं। हम जानते हैं कि हमारे पाप और गलतियाँ हमें आपसे दूर करती हैं।

कृपया हमें क्षमा करें और हमारे हृदय को शुद्ध करें।

हम अपने पापों को स्वीकार करते हैं और आपसे कृपा की याचना करते हैं।

जैसे आपने क्रूस पर हमारे लिए अपने प्राण दे दिए, वैसे ही हमें अपनी आत्मा से भर दीजिए।

हमें आपकी राह पर चलने की शक्ति दें, ताकि हम आपकी इच्छा को पूरी कर सकें।

हमें अपने प्रेम, दया और अनुग्रह में दृढ़ बनाए रखें।

यीशु मसीह के नाम में हम यह प्रार्थना करते हैं। आमीन।

---

□ □□□□ □□ (□□□□□ □□):

**लेवियों 23:27-28**

“सातवें महीने के दसवें दिन प्रायश्चित्त का दिन है। यह तुम्हारे लिये पवित्र सभा होगी; और तुम अपने अपने प्राण को दुःख देना, और यहोवा के लिये एक आग का चढ़ावा चढ़ाना। उस दिन कुछ भी काम न करना, क्योंकि वह तुम्हारे लिये प्रायश्चित्त का दिन है, जिस में तुम्हारे लिये यहोवा तुम्हारे पापों को शुद्ध कर देगा।”

---

□ □□□□□ (□□□□□ □□):

## यौम किप्पूर (प्रायश्चित्त का दिन) का महत्व:

यौम किप्पूर, सातवें महीने के दसवें दिन आता है और यह अन्य पर्वों से भिन्न है। जहां अन्य पवित्र सभाएँ (मिकरा कोदेश) खाने-पीने और आनन्द के साथ मनाई जाती हैं, वहाँ यौम किप्पूर को आत्म-दमन ("अपने प्राण को दुख देना") के रूप में मनाया जाता है, जो परंपरागत रूप से उपवास और सभी कार्यों से विराम के रूप में देखा जाता है। यह दिन विशेष रूप से "प्रायश्चित्त का दिन" कहा गया है, जो पापों के लिए क्षमा मांगने और पवित्रता प्राप्त करने का समय होता है।

---

□ "יְהוָה יְהוּדָה וְיְהוּנָן וְיְהוּנָה וְיְהוּנָה (יְהוּנָה, יְהוּנָה וְיְהוּנָה, יְהוּנָה):"

यह शब्द कई अर्थ दे सकता है:

1. **विपरीतता को दर्शाना:** यौम किप्पूर को अन्य पर्वों से अलग दिखाना।
  2. **सीमित करना:** यौम किप्पूर केवल उन्हीं के लिए प्रायश्चित्त करता है जो पश्चाताप करते हैं।
    - **राशी कहते हैं:** "अच... यौम किप्पूर का अर्थ सीमित करना है। यह केवल उन लोगों के लिए प्रायश्चित्त करता है जो पश्चाताप करते हैं।"
    - **कित्सुर बा'अल हा'तुरिम:** "अच, यह एक सीमा है कि यह केवल उन लोगों के लिए प्रायश्चित्त करता है जो पश्चाताप करते हैं और उन लोगों के लिए नहीं करता जो नहीं करते।"
  3. **निश्चयता को दिखाना:** यह दर्शाता है कि यह प्रायश्चित्त का दिन निश्चित और सच्चा है।
- 

□ יְהוּנָה וְיְהוּנָה וְיְהוּנָה וְיְהוּנָה:

1. **रब्बीनू बाब्या:** प्रायश्चित्त की क्षमता केवल हमारे ईमानदारी से पश्चाताप करने पर निर्भर करती है। यदि कोई पश्चाताप नहीं करता, तो उसे क्षमा नहीं मिलती।
2. **ओर हाचाइम:** उनका मत है कि यह दिन स्वयं में प्रायश्चित्त का दिन है और इसे सही रूप

से मानने का अलग से इनाम है।

3. **हक्तव वेहकबालाह:** आत्म-पीड़ा का अर्थ केवल शरीर को कष्ट देना नहीं है, बल्कि आत्मा को भी पवित्र करना है। केवल शरीर का कष्ट पर्याप्त नहीं है।
  4. **कली याकर:** यह बताता है कि यौम किप्पूर रोश हशानाह के बाद आता है ताकि लोग इन दस दिनों में पश्चाताप करें।

A horizontal row of 20 empty square boxes, intended for students to draw or write in.

मसीही विश्वास में यह माना जाता है कि प्रभु यीशु मसीह ने अपने बलिदान द्वारा पापों का पूर्ण प्रायश्चित्त कर दिया है।

- इब्रानियों 9:12 कहता है, “और वह बकरों और बछड़ों के लहू के द्वारा नहीं, परन्तु अपने ही लहू के द्वारा एक ही बार पवित्र स्थान में प्रवेश कर गया, और अनन्तकाल का छुटकारा प्राप्त कर लिया।”
  - इसलिए मसीहीयों के लिए यौम किष्यूर विशेष रूप से नहीं मनाया जाता, क्योंकि वे मानते हैं कि मसीह का बलिदान पूर्ण और सम्पूर्ण था।

प्यारे परमेश्वर यहोवा / प्रभु यीशु मसीह,

हम अपने पापों और कमज़ोरियों को मानकर तेरे सम्मुख आते हैं। हम जानते हैं कि हम अपने बल पर शुद्ध नहीं हो सकते, परन्तु तेरी कृपा और बलिदान के कारण हमारे पाप क्षमा किए गए हैं।

प्रभु यीशु मसीह, हमने तेरी शिक्षाओं को समझने और उनके अनुसार चलने में कई बार असफलता पाई है। परन्तु आज हम अपने हृदय में सच्चा पश्चाताप लेकर तेरे पास लौटते हैं। हमें अपना मार्ग दिखा और हमारे मन को शुद्ध कर, ताकि हम तेरे प्रेम में और तेरे सत्य में चलते रहें।

हमें वह शक्ति और साहस दे कि हम अपने पापों को स्वीकारें, पश्चाताप करें और अपने जीवन को तेरे अनुसार ढालें। धन्यवाद तेरे असीम प्रेम और अनुग्रह के लिए।

□  
□ □

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ 23:28 (□ □ □ □ □ □ □)

"और उस दिन कोई काम न करना, क्योंकि वह प्रायश्चित का दिन है, कि तुम्हारे लिए यहोवा तुम्हारे परमेश्वर के सम्मुख प्रायश्चित किया जाए।"

---

□ □ □ □ □ □ (□ □ □ □ □ □):

यह पद यहोवा के पर्व प्रायश्चित के दिन (योम किप्पुर) के बारे में है, जो इसाएलियों के लिए बहुत ही पवित्र और गंभीर दिन माना जाता था।

- **प्रायश्चित का दिन (योम किप्पुर):** यह दिन पूरे वर्ष में एक बार आता था, जिसमें सभी लोगों को अपने पापों का प्रायश्चित करने का अवसर मिलता था।
  - **कोई काम न करना:** यह पूर्ण रूप से विश्राम का दिन है, जहाँ किसी भी प्रकार का काम (constructive work) करना मना था।
  - **ईश्वर के सामने प्रायश्चित:** यह दिन परमेश्वर के सामने आत्म-निरीक्षण और आत्मिक शुद्धि का दिन था।
- 

□ □

□ **काम न करने की मनाही (לֹא תַעֲשֶׂה מְלָאכָה ל' א):**

- **Chizkuni:** इस नियम की तुलना सामान्य सब्ज से की गई है, जहाँ हर प्रकार का रचनात्मक काम (constructive work) वर्जित है।
  - **Steinsaltz:** योम किप्पुर में सभी प्रकार के कार्यों की मनाही है, जैसे सब्ज में होती है, जबकि अन्य पर्वों में केवल मेहनत वाले काम (demeaning labour) वर्जित होते हैं।
  - **Alshekh:** यह दिन एक पवित्र सभा (holy convocation) और आत्म-दमन (self-affliction) का मिश्रण है। यहाँ खाना पकाने का काम भी वर्जित है, जैसे कि सब्ज में होता है।
  - **Malbim:** काम करने की मनाही का उल्लंघन करने की सजा विनाश (excision) है, जो बताता है कि इस दिन की पवित्रता को काम करने से नुकसान पहुँचता है।
  - **Sforno:** आत्म-दमन न करना तो लालच का परिणाम हो सकता है, लेकिन जानबूझकर काम करना परमेश्वर के आदेशों की अवहेलना को दर्शाता है।
- 

□ "बिल्कुल उसी दिन" (הַיּוּ מִנְחָתָם):

- **Ramban और Malbim:** यह वाक्य यह दिखाने के लिए है कि यह नियम केवल योम किप्पुर के दिन पर लागू होता है, न कि उसके पहले या बाद में।
  - **Rabbeinu Bahya:** यह दिखाता है कि मंदिर न होने पर भी यह दिन प्रायश्चित की सामर्थ्य रखता है।
  - **Rav Hirsch:** यह दिन परमेश्वर के अनुग्रह से प्रायश्चित प्राप्त करने का दिन है, जो पूरी तरह से उस दिन पर निर्भर करता है।
  - **Or HaChaim:** इस दिन का महत्व यह है कि यह परमेश्वर की आशीषों को पाने का अवसर है और सामान्य काम में उलझना उस आशीष से वंचित कर देता है।
- 

□ :

आज के मसीही चर्च में, योम किप्पुर को प्रभु यीशु मसीह के क्रूस पर दिए गए बलिदान के रूप में देखा जाता है।

- मसीही विश्वास के अनुसार, प्रभु यीशु मसीह ने पाप का प्रायश्चित् अपने बलिदान द्वारा एक बार ही कर दिया। (इब्रानियों 9:28)
  - योम किष्टुर का दिन हमें आत्म-निरीक्षण, परेचाताप, और परमेश्वर के साथ हमारे संबंध को सुधारने की याद दिलाता है।
  - मसीही मान्यता यह है कि अब बलिदान की आवश्यकता नहीं है क्योंकि यीशु मसीह ने सभी का पूर्ण प्रायश्चित् कर दिया।
- 

□ □ □ □ □ □ □ □ :

**प्रिय परमेश्वर यहोवा / प्रभु यीशु मसीह,**

हम तेरा धन्यवाद करते हैं कि तूने हमें प्रायश्चित् और पापों की क्षमा का मार्ग दिखाया।

जैसे योम किष्टुर में प्रायश्चित् का महत्व था, वैसे ही हम जानते हैं कि प्रभु यीशु मसीह का बलिदान हमारे लिए प्रायश्चित् का परम मार्ग है।

हम तुझसे प्रार्थना करते हैं कि तू हमारे हृदयों को शुद्ध कर, हमें पाप से मुक्त कर, और अपने अनुग्रह में हमें नया जीवन दे।

हमें सिखा कि हम अपने कर्मों से न भटकें और हर दिन तेरे वचनों पर चलें।

तेरी पवित्रता और प्रेम में हमें और गहरा ले चल।

**यीशु मसीह के नाम में, आमीन। □□**

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ 23:29 (□ □ □ □ □ □ □)

**“क्योंकि जो कोई व्यक्ति उस दिन दुःख न उठाए, वह अपनी प्रजा में से नाश किया जाएगा।”**

---

□ □ □ □ □ (□ □ □ □ □ □):

यह पद यहोवा के दिन अर्थात् यौम किष्टुर (प्रायश्चित् का दिन) से संबंधित है। यह एक विशेष

दिन था जब इसाएलियों को अपने पापों की क्षमा प्राप्त करने के लिए उपवास और आत्म-दमन (दुःख उठाना) करना आवश्यक था। यहोवा ने यह नियम रखा कि जो कोई व्यक्ति उस दिन आत्म-दमन नहीं करता अर्थात् उपवास नहीं करता, उसे अपनी प्रजा से नाश कर दिया जाएगा।

---

□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ (□□□□□□  
□□□□):

□ 1. □□□□-□□□ □□ □□□□ (Fasting/□□□□□ □□□□):

- **रेगियो:** 'तेऊनह' (*pu'a*/रूप) का अर्थ है कि वह व्यक्ति जो भोजन और पानी से बंचित रहता है, उसे आत्म-दमन माना जाता है।
- **इब्र एज्जा:** यह नियम इस बात को सुनिश्चित करता है कि लोग प्रायश्चित्त के लिए ध्यान केंद्रित कर सकें।

□ □□□□□□:

अगर किसी व्यक्ति ने यौम किप्पूर के दिन भोजन कर लिया, तो वह आत्म-दमन के नियम को तोड़ता है।

---

□ 2. □□□□□ (Karet - □□□□□ □□ □□□ □□□):

- **चिज्जकुनी:** यह बताता है कि आत्म-दमन न करने का परिणाम यह होगा कि व्यक्ति भविष्य में अपनी प्रजा से नाश कर दिया जाएगा।
  - **डेविड ज़्वी हॉफमैन:** 'वेनिख्रेताह' का अर्थ यहोवा की प्रजा से पूर्ण नाश होना है।
  - **रव हिर्श:** 'करेत' का अर्थ है 'अस्तित्व का नाश'।
- 

□ 3. □□□□□□□□ □□□ (Passive Form - □□□□□□□□ □□□):

- **डेविड ज़्वी हॉफमैन:** 'तेऊनह' (*nif'a*/रूप) में होता है क्योंकि यह निष्क्रिय रूप में होता है और 'वेनिख्रेताह' का विषय भी बनता है।

□ 4. ଯୌମ କିପ୍ପୂର (On this very day - ଯୌମ କିପ୍ପୂର):

- यह पद बताता है कि यह नियम सिर्फ यौम किप्पूर के दिन ही लागू होता है।
- नाचमानिदेसः 'बेत्ज़ेम' का अर्थ है उसी दिन की वास्तविकता।

□ 5. ଶି'ଉର (Shi'ur - ପରିମା):

- **पର୍ଦେସ ଯୋସେଫ:** রবିଯ়োন নে যহ তয কিয়া কি যୌମ কିପ୍ପୂର ପର 'କୋତେବେଟ' (ଖଜୂର କେ ବରାବର ମାପ) ସେ ଅଧିକ ଖାନା କରେତକେ ଅନ୍ତର୍ଗତ ଆତା ହେଲା।
- ଆଗର କୋଈ ସିର୍ଫ ଥୋଡ଼ା ସା ଖାତା ହେଲା, ତୋ ଵହ ମାପ ମେ ନହିଁ ଆତା ଲେକିନ ଫିର ଭୀ ପାପ ସମଝା ଜାତା ହେଲା।

□ 6. ରହିବାର କାର୍ଯ୍ୟ କରନ୍ତୁ କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା (Purpose of Resting):

- **ଇନ୍ଦ୍ରାଜା:** ଉପବାସ କେ ସାଥ-ସାଥ କାର୍ଯ୍ୟ ନ କରନା ଭୀ ଆଵଶ୍ୟକ ହେଲା ତାକି ବ୍ୟକ୍ତି ଅପନେ ପାପଙ୍କ କେ ପ୍ରାୟଶିଚ୍ତ ମେ ପୂରୀ ତରହ ଧ୍ୟାନ ଦେ ସକେ।
- **ରବ ହିର୍ଷ:** ଯହ ଇସ ବାତ କା ସଂକେତ ହେଲା କି ପ୍ରଭୁ ଯହୋବା କେ ସାମନେ ଅପନେ ପାପଙ୍କ କେ ସ୍ଵିକାର କରନା ଓ ଅପନେ କାର୍ଯ୍ୟ କେ ଶୁଦ୍ଧି କେ ଲିଏ ଯହ ଆଵଶ୍ୟକ ହେଲା।

□ ଯୌମ କିପ୍ପୂର ମରାଣିମାନଙ୍କ କିମ୍ବା କିମ୍ବା ?

यୌମ କିପ୍ପୂର ମରାଣିମାନଙ୍କ ମେ ପ୍ରତ୍ୟକ୍ଷ ରୂପ ସେ ନହିଁ ମନାଯା ଜାତା। ଲେକିନ ଇସକା ଗହରା ଅର୍ଥ ହେଲା କ୍ୟାହିଁ କି ଯହ ପ୍ରଭୁ ଯୀଶୁ ମରାଣିମାନଙ୍କ କେ ପୂର୍ଣ୍ଣ ବଲିଦାନ କେ ଓର ସଂକେତ କରନା ହେଲା।

- **ପ୍ରଭୁ ଯୀଶୁ ମରାଣିମାନଙ୍କ ବଲିଦାନ:** ଜବ ପ୍ରଭୁ ଯୀଶୁ ନେ କ୍ରୂସ ପର ଅପନେ ପ୍ରାଣ ଦିଏ, ତୋ ଉନ୍ହୋନେ ହମାରେ ସଭୀ ପାପଙ୍କ କେ ଲିଏ ଏକ ବାର ଓ ସଦା କେ ଲିଏ ପ୍ରାୟଶିଚ୍ତ କର ଦିଯା। (ଇନ୍ଦ୍ରାଜିତଙ୍କ 10:10)
- ମରାଣିମାନଙ୍କ ବଲିଦାନ କେ ଅନୁସାର, ଆତମ-ଦମନ ଓ ଉପବାସ କା ମୁଖ୍ୟ ଉଦ୍‌ଦେଶ୍ୟ ପ୍ରଭୁ କେ ନିକଟ ଆନା ଓ ଅପନେ ପାପଙ୍କ କେ ଲିଏ ପଶ୍ୟାତାପ କରନା ହେଲା।

- मसीहियों के लिए यह दिन आत्म-निरीक्षण और प्रार्थना का समय होता है।
- 

□ □□□□□□□□ (□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□  
□□□□□□):

**प्यारे प्रभु यीशु मसीह,**

मैं अपने पापों के लिए तहे दिल से पश्चाताप करता हूँ। आपने कृस पर मेरे  
लिए अपना प्राण दिया और मुझे नए जीवन का मार्ग दिखाया।

जैसे आपने अपने जीवन में प्रार्थना और उपवास से परमेश्वर यहोवा की इच्छा  
को पूरा किया, वैसे ही मुझे भी कृपा करके शक्ति और समझ प्रदान करें ताकि  
मैं आपके प्रेम और सत्य में चल सकूँ।

मेरे जीवन में आपकी पवित्र आत्मा की अगुवाई और प्रायश्चित्त का सच्चा  
अर्थ प्रकट करें।

धन्यवाद प्रभु यीशु मसीह, कि आपने मेरे पापों को क्षमा कर दिया और मुझे  
नया जीवन दिया।

आपके नाम में मैं यह प्रार्थना करता हूँ, आमीन।

---

□ □□□□□□□□ 23:30 (Leviticus 23:30 - Hindi Bible)

”और जो कोई उस दिन कुछ भी काम करे, उसको मैं उसके लोगों में से नाश कर  
दूँगा।”

---

□ □□□□□:

इस पद में परमेश्वर यहोवा / प्रभु यीशु मसीह यह कह रहे हैं कि जो व्यक्ति उस दिन (यानी  
प्रायश्चित्त के दिन - यौम किप्पूर) काम करेगा, उसे उसकी प्रजा में से नाश कर दिया

जाएगा। यह चेतावनी इस दिन की गंभीरता और पवित्रता को दर्शाता है, जो पापों के प्रायश्चित्त के लिए निर्धारित किया गया था।

---

□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□:

### 1. "और मैं उसे नाश कर दूंगा" ('גַּאֲבָהָא - ve'avadeti) का अर्थः

- राशीः

- यहां "नाश कर दूंगा" का तात्पर्य है कि वह व्यक्ति खो जाएगा। उन्होंने कहा कि यह "करत" (גַּרְא - काट देना) को स्पष्ट करता है, जिसका अर्थ है खो जाना।

- डेविड ज़वी हॉफमैनः

- "गַּאֲבָהָא" इस बात की पुष्टि करता है कि "करत" का अर्थ है "खो जाना"।

- हक्कतव वेहक्कबालाः

- "करत" का अर्थ पूर्ण रूप से काट देना हो सकता है, या यह सिर्फ एक अलगाव भी हो सकता है।
- लेकिन "गַּאֲבָהָא" बताता है कि यह एक खोने की स्थिति है जो फिर से प्राप्त हो सकती है।
- वे यशायाह 27:13 का हवाला देते हैं जहाँ खोए हुए लोग लौटते हैं।

- रेगियोः

- उन्होंने भी यही बात कही कि "करत" का अर्थ है खो जाना, लेकिन दया की संभावना भी होती है।
- वे यह सवाल उठाते हैं कि यदि "करत" पूर्ण नाश होता तो सभी इस्राएलियों का उद्धार कैसे होता?

- मस्किल लेडविडः

- उनके अनुसार, "आत्मा का नाश" का अर्थ है कि उसकी स्थायित्वता नहीं रहेगी,

जैसे कुछ खो जाने के बाद फिर नहीं मिलता।

- उन्होंने कहा कि यह सख्त दंड सिर्फ मूर्तिपूजा जैसी गंभीर पापों के लिए है। अन्य पापों में केवल जीवन को छोटा कर दिया जाता है।
  - **आदरेट एल्याहः**
  - "גָּדוּבָהּ" का अर्थ है कि "करत" का अर्थ है खो जाना।
  - **तोरा तेमिमा:**
  - उन्होंने भी यही कहा कि "גָּדוּבָהּ" सिखाता है कि "करत" का अर्थ है खो जाना।
- 

□ □ □ □ □ □ :

अगर कोई व्यक्ति योम किष्पूर के दिन जानबूझकर काम करता है तो वह उस पवित्र दिन की महिमा को ठुकराता है और परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करता है। यह ऐसा है जैसे कोई पवित्र उपहार को लात मार दे। यह दंड का कारण बनता है क्योंकि वह व्यक्ति परमेश्वर की पवित्रता को अस्वीकार कर रहा होता है।

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

मसीही विश्वास में, योम किष्पूर को विशेष रूप से मनाया नहीं जाता क्योंकि प्रभु यीशु मसीह ने अपने बलिदान के द्वारा सभी पापों के लिए एक ही बार में प्रायश्चित्त किया।

**इब्रानियों 10:10:**

"और उसी इच्छा के कारण यीशु मसीह का शरीर एक ही बार चढ़ाए जाने के द्वारा हम पवित्र ठहराए गए हैं।"

यह पद दिखाता है कि प्रभु यीशु मसीह का बलिदान अंतिम और परिपूर्ण था। फिर भी, यह हमें यह सिखाता है कि हमें पवित्रता और आज्ञाकारिता के साथ जीवन जीना चाहिए, और प्रभु यीशु मसीह के बलिदान की महिमा का अपमान न करें।

□ □ □ □ □ □ □ □ :

### **प्रिय प्रभु यीशु मसीह,**

हम आपके अद्भुत और सिद्ध बलिदान के लिए धन्यवाद करते हैं जिसने हमें  
पापों से छुटकारा दिया। कृपया हमें आज्ञाकारिता और पवित्रता के साथ चलने की  
शक्ति दें।

जैसे आपने अपने प्रेम और अनुग्रह से हमें बचाया है, वैसे ही हम आपके पवित्र मार्ग  
पर चल सकें।

प्रभु, हमें अपने प्रेम में स्थिर रहने की शिक्षा दें और पाप की शक्ति से सुरक्षित रखें।

हम यह प्रार्थना आपके अद्भुत और सामर्थी नाम में करते हैं।

**आमीन।**

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ 23:31 (□ □ □ □ □ □ □)

"तुम कोई काम न करना; यह तुम्हारी पीढ़ियों के लिये तुम जो कहीं भी रहते हो, सदा की  
विधि ठहरी।"

□ □ □ □ □ □ :

इस पद में परमेश्वर यहोवा ने यह आज्ञा दी है कि यौम किप्पूर (प्रायश्चित का दिन) पर कोई भी  
काम करना मना है। यह आज्ञा सिर्फ उसी समय के लिए नहीं दी गई थी, बल्कि यह सदा के  
लिए है, और यह आज्ञा उन सभी लोगों के लिए लागू होती है जो कहीं भी रहते हों।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

□ 1. रशी (Rashi) का विवरण (Ibn Ezra):

**दोहराव का महत्व:**

जब यह लिखा गया है "कोई काम न करना" (यहाँ और लैव्यव्यवस्था 23:30 में), तो  
इसका उद्देश्य है:

जो भी यौम किप्पूर पर काम करता है, वह कई आज्ञाओं का उल्लंघन  
करता है।

यह आदेश दिन और रात दोनों के लिए है। यानि कि यौम किप्पूर की रात  
और दिन दोनों में काम करना मना है।

□ रात और दिन का अंतर: कुछ लोग मान सकते थे कि "इस दिन" का अर्थ  
केवल दिन का समय होता है। इसलिए दोहराया गया ताकि यह स्पष्ट हो  
कि यह नियम रात में भी लागू होता है।

□ 2. चिज्कुनी (Chizkuni):

- यह आदेश पीढ़ियों के लिए स्थाई नियम है, चाहे वे कहीं भी निवास कर रहे हों।

□ 3. अल्शेख (Alshekh):

- यह नियम तब भी लागू होता है जब मंदिर नष्ट हो जाए।
- इस दिन काम न करना और स्वयं को कष्ट देना (उपवास रखना) दोनों मिलकर पवित्रता  
और आराम की स्थिति में ले जाते हैं।
- मंदिर के बिना भी यह नियम लागू रहता है।

□ 4. हामेक दावर (Haamek Davar):

- यह नियम "शब्बातोन" (पूर्ण विश्राम) के सिद्धांत से जुड़ा हुआ है।
- केवल काम करना ही मना नहीं है, बल्कि यह भी आवश्यक है कि हम स्वयं को कष्ट दें और  
परमेश्वर यहोवा के सामने नम्र रहें।

□ ५. राब्बी बेनामोजेह (Rabbi Benamozegh):

- "पीढ़ी" (ר'א) का अर्थ है "निवास" (ה'א)।
- यह आज्ञा हमारे रहने की पूरी अवधि के लिए लागू होती है।

□ राब्बी बेनामोजेह (Rabbi Benamozegh):

**मसीही विश्वास में, प्रभु यीशु मसीह ने क्रूस पर अपने बलिदान के द्वारा सभी पापों के लिए अंतिम और पूर्ण प्रायश्चित किया (इब्रानियों 10:10)।**

- ✓ राब्बी बेनामोजेह (Rabbi Benamozegh) प्रभु यीशु मसीह ने उस प्रायश्चित की पूर्णता को पूरा कर दिया जो यौम किप्पूर में प्रतीकात्मक रूप से प्रकट की जाती थी।
- राब्बी बेनामोजेह, राब्बी बेनामोजेह परमेश्वर के साथ समय बिताना और उसकी उपासना के लिए अपने जीवन से समय अलग करना आवश्यक है।
- राब्बी बेनामोजेह हमारा सच्चा आराम और पवित्रता केवल उसमें मिलने से आती है। (मत्ती 11:28-30)

□ राब्बी बेनामोजेह (Rabbi Benamozegh):

**प्रिय प्रभु यीशु मसीह,**

हम आपके पास आते हैं, जो सच्चा विश्राम और शांति देने वाले हैं। जैसे आपने संसार के पापों को उठा लिया और हमें पवित्र और निर्दोष ठहराया, वैसे ही हम भी आपके सामने अपने हृदय को समर्पित करते हैं।

कृपया हमें सिखाइए कि हम कैसे हर दिन आपके साथ समय बिताएं और आपकी उपस्थिति में विश्राम पाएं। हमें पवित्र बनाएं और हमें आपकी आज्ञाओं के अनुसार चलने में सहायता करें।

प्रभु, हमें सच्ची भक्ति और समर्पण का अर्थ समझने में सहायता करें।  
हम यह प्रार्थना आपके पवित्र और सामर्थी नाम में करते हैं, आमीन।

---

□ □□□□□□□□□□□□□□ 23:32 (Leviticus 23:32) -  
□□□□□ □□□

“यह तुम्हारे लिये विश्राम का दिन होगा, और तुम अपने प्राणों को दुःख दोगे; यह महीना के नौवें दिन की संध्या से लेकर अगले दिन की संध्या तक तुम्हारे विश्राम का दिन रहेगा।”

---

□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□ (□□□□□  
□□□□□ □□ □□□□□):

□ 1. शब्बत शब्बातोन (שבת שבת - विश्राम का विश्राम):

यह वचन यह बताता है कि यौम किप्पूर (प्रायश्चित का दिन) एक विशेष विश्राम का दिन है।

- Aderet Eliyahu: जैसे सब्ब के दिन कुछ काम वर्जित हैं, वैसे ही यौम किप्पूर में भी कुछ गतिविधियाँ वर्जित हैं।
- Haamek Davar: इसे 'असेह' (सकारात्मक आज्ञा) के रूप में माना गया है, न कि 'कारेत' (आध्यात्मिक दंड) के रूप में।
- Ibn Ezra: यह 'तुम्हारा सब्ब' कहता है क्योंकि अन्य सब्बों परमेश्वर की होती हैं, लेकिन यह इसाएलियों के लिए विशिष्ट है।
- Malbim: दो बार 'शब्बत' का उल्लेख यह दिखाने के लिए है कि यह सभी प्रकार के सब्बों को सम्मिलित करता है, जैसे त्यौहार।

□ 2. व'अनीतेम एत नपराओतेखेम (ועניתם את נפשתיכם) - और तुम अपने प्राणों को दुःख दोगे):

यह वचन उपवास और आत्मदमन का आदेश देता है।

- यहूदी परंपरा में, इसका मतलब है भोजन और पानी से वंचित रहना, और कुछ अन्य कष्ट सहना।
- 

□ 3. बतीशा ल'खोदेश ब'एरेव (בגשעה לחדש בערבה - महीना के नौवें दिन की संध्या):

- यह आदेश देता है कि उपवास नौवें दिन की संध्या से शुरू होता है, हालांकि यौम किप्पूर दसवें दिन मनाया जाता है।
  - तलमूद (Berachot 8a): अगर कोई नौवें दिन भोजन और पानी ग्रहण करता है, तो उसे ऐसा माना जाता है जैसे उसने नौवें और दसवें दिन दोनों उपवास किया हो।
  - Chibbah Yeterevah: नौवें दिन खाने-पीने से व्यक्ति दसवें दिन पूरी तरह उपवास रखने के लिए तैयार हो जाता है।
- 

□ 4. म'एरेव अद एरेव (ברב ע"ד ערב מ"ה - संध्या से संध्या तक):

यह बताता है कि यह उपवास और विश्राम संध्या से संध्या तक (पूरा 24 घंटे) होना चाहिए।

- Chizkuni: यह दर्शाता है कि दिन की शुरुआत रात से होती है।
  - Malbim: इसका मतलब है कि पवित्र दिन की शुरुआत और अंत में कुछ समय जोड़ना चाहिए।
- 

□ 5. तिशबोतु शब्बात्केम (מכתבת שבתת - और तुम अपने विश्राम को मानना):

यह उस सिद्धांत की ओर संकेत करता है जिसे "पवित्र के साथ सामान्य से जोड़ना" कहा जाता है।

- Haamek Davar: यह आदेश बताता है कि त्योहारों और सब्जों में समय जोड़कर उसका

सम्मान करना चाहिए।

- Torah Temimah: यह सिद्धांत यौम किप्पूर, सब्ब और त्यौहारों के लिए लागू होता है।
- 

❖ □□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□□:

यहूदी परंपरा में, यौम किप्पूर के दिन प्रायशिच्त और आत्म-निरीक्षण के लिए विशेष प्रार्थनाएँ और प्रायशिच्त के गीत गाए जाते हैं।

---

□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□  
□□?

मसीही विश्वास में, यौम किप्पूर का महत्व इस बात में है कि यह उस प्रायशिच्त को दर्शाता है जो प्रभु यीशु मसीह ने संसार के पापों के लिए कूस पर बलिदान देकर पूरा किया।

- इब्रानियों 9:11-12: यह बताता है कि प्रभु यीशु मसीह ने एक बार ही प्रायशिच्त कर दिया, जिससे सभी के लिए मुक्ति और पापों की क्षमा का प्रावधान किया गया।
  - आज के चर्च में, यह दिन प्रायशिच्त और आत्म-निरीक्षण का प्रतीक है, लेकिन मसीह के बलिदान की पूर्णता पर विश्वास भी।
- 

□ □□□□□□□ (□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□  
□□□□□□):

**प्यारे परमेश्वर यहोवा / प्रभु यीशु मसीह,**  
मैं तुझसे विनती करता हूँ कि जैसे तूने अपने अनुग्रह से कूस पर मेरे लिए पूर्ण प्रायशिच्त किया है, वैसे ही मुझे भी सच्चे मन से अपने पापों का पश्चाताप करने और तुझ पर पूरी तरह विश्वास करने की समझ और सामर्थ्य प्रदान कर।  
कृपया मुझे पवित्र आत्मा के द्वारा शुद्ध और पवित्र कर, और मुझे उन सभी बातों से मुक्त कर जो मुझे तुझसे दूर ले जाती हैं।

प्रभु, मुझे अपने प्रेम में स्थिर रख और मुझे अनुग्रह दे कि मैं तेरा अनुसरण कर सकूं,  
जैसा तू चाहता है।

यह प्रार्थना मैं तुझसे प्रभु यीशु मसीह के पवित्र नाम में करता हूँ।  
आमीन।

---

□ □□□□□ □ (□□□□□□□□□□□□□ 23:33-43)

”तब यहोवा ने मूसा से कहा, “इस्राएलियों से कह, सातवें महीने के पंद्रहवें दिन से यहोवा के लिये सात दिन तक ‘झाँपड़ियों का पर्व’ ठहरेगा। पहले दिन पवित्र महासभा होगी; उस दिन कोई काम न करना। सात दिन तक यहोवा के लिये आग से चढ़ाई जाने वाली भेंट चढ़ाना। आठवें दिन फिर से पवित्र महासभा होगी और तुम यहोवा के लिये आग से चढ़ाई जाने वाली भेंट चढ़ाना। यह एक पवित्र सभा होगी; उस दिन कोई काम न करना।” (लैब्यव्यवस्था 23:33-36,  
**HINDI BIBLE**)

---

□ □□□□□ (Sukkot / □□□□□□□□□ □ □ □□□□)

□ **Sukkot** □ □ □□□:

- Sukkot यहोवा द्वारा दिए गए पर्वों में से एक है जो सात दिन तक मनाया जाता है।
  - यह पर्व इस बात की याद दिलाता है कि जब परमेश्वर यहोवा ने इस्राएलियों को मिस्र से बाहर निकाला, तो उन्होंने जंगल में झाँपड़ियों (सुक्का) में निवास किया।
  - यह पर्व हर साल सातवें महीने के पंद्रहवें दिन से आरंभ होता है और इसमें पहला और आठवां दिन पवित्र महासभा के रूप में मनाया जाता है।
-

□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□:

□ **Abarbanel:**

Sukkot की तिथि को क्यों नहीं कहा गया कि “इस दिन को” (on this very day)? क्योंकि यह एक विशिष्ट घटना (जैसे कि फसह) के स्मरण के बजाय परमेश्वर की देखरेख और उनके संरक्षण की याद दिलाने के लिए है। सातवें महीने का महत्वः यह माह यौम किप्पुर (प्रायश्चित का दिन) के बाद आता है, जब लोग अपने पापों की क्षमा पाते हैं और यह पर्व परमेश्वर के साथ पुनः मिलन का प्रतीक है।

□ **Alshekh:**

- यह पर्व परमेश्वर की महिमा का उत्सव है और यह गोल्डन बछड़ा (सोने का बछड़ा) की घटना के बाद पुनःस्थापन (Restoration) का प्रतीक है।
- Alshekh का मानना है कि यह पर्व हमें यह याद दिलाता है कि संसार में हम केवल यात्री हैं और हमारी असली जगह स्वर्ग में परमेश्वर के साथ है।
- Sukkot को ‘झोंपड़ियों का पर्व’ कहने का कारण यह है कि यह हमें इस संसार की अस्थायित्व (Temporary Nature) और परमेश्वर की अनंतता (Eternal Nature) की ओर इंगित करता है।

□ **Malbim:**

- यह पर्व ”अस्सीफ” (फसल एकत्रित करना) से भी जुड़ा है लेकिन मुख्यतः यह झोंपड़ियों में निवास करने की आज्ञा का पालन करना है।
- Malbim यह भी बताते हैं कि यह पर्व आज भी मनाया जाता है ताकि लोग समझ सकें कि हमारे स्थायी निवास (Permanent Dwellings) केवल परमेश्वर के साथ हैं।

□ □□□□□ □□□□ □□ **Sukkot □□ □□□□ (Today's Christian Understanding)**

- आज के मसीही चर्च में Sukkot का अर्थ परमेश्वर यहोवा के प्रावधान, सुरक्षा और देखरेख की याद दिलाना है।

- कुछ मसीही विश्वास करते हैं कि यह पर्व यीशु मसीह में पूर्ण हुआ क्योंकि उन्होंने मनुष्य के रूप में संसार में निवास किया (यूहन्ना 1:14 - "वचन देहधारी हुआ और हमारे बीच में डेरा किया")।
  - यह पर्व यह भी दर्शाता है कि जैसे झोंपड़ियाँ अस्थायी हैं, वैसे ही यह संसार अस्थायी है और हमारा स्थायी घर स्वर्ग में परमेश्वर के साथ है।

हे परमेश्वर यहोवा / प्रभ यीश मसीह,

“तू इस्राएलियों से कह, पन्द्रहवें दिन, इसी सातवें महीने में, यहोवा के लिये सात दिन का पवित्र पर्व अर्थात् झाँपड़ी का पर्व होगा।”

झाँपड़ी का पर्व (सुक्कोत) एक यहूदी पर्व है जो सातवें महीने के पंद्रहवें दिन से शुरू होता है और यहोवा के लिए सात दिनों तक मनाया जाता है। यह पर्व मुख्यतः तीन बातों को दर्शाता है:

### 1. परमेश्वर का प्रावधान और सुरक्षा:

यह पर्व इस्राएलियों को स्मरण कराता है कि जब वे मिस्र से निकल कर रेगिस्तान में यात्रा कर रहे थे, तब परमेश्वर ने उन्हें सुरक्षा और प्रावधान दिया।

### 2. संकल्पना और विनम्रता:

झाँपड़ी में रहना यह दिखाता है कि इंसान की स्थायी आश्रयगृह परमेश्वर में है, न कि किसी भौतिक चीज़ में।

### 3. फ़सल का पर्व:

यह उस समय का भी प्रतीक है जब फ़सल काटी जाती थी और लोग परमेश्वर को धन्यवाद देते थे।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ (□ □ □ □ □ □ □ □ □)

#### Aderet Eliyahu:

यह समझाता है कि सुक्कोत पर्व विशेष रूप से झाँपड़ी में रहने की आज्ञा देता है। वह मानता है कि यह पर्व केवल उसी प्रकार से मनाया जा सकता है, जैसे परमेश्वर ने निर्देश दिया है।

#### Haamek Davar:

यह रब्बी कहता है कि “यह सातवां महीना” शब्द केवल सुक्कोत के लिए ही विशेष है क्योंकि यह पर्व वर्षा और फ़सल की प्रार्थना से जुड़ा है। यह पर्व यहोवा की कृपा और बरकत की याद दिलाता है।

#### Rav Hirsch:

यह बताता है कि यह पर्व यौम किप्पुर (प्रायशिच्त के दिन) के बाद आता है और हमें सिखाता है कि जब हम परमेश्वर की क्षमा प्राप्त कर लेते हैं, तब हमें उसके साथ हर्ष और आनन्द में रहना चाहिए। झाँपड़ी में रहना विश्वास और समर्पण का प्रतीक है।

---

**Torah Temimah:**

यह पर्व के पहले दिन के महत्व को समझाता है कि जैसे फसह पर्व में मक्का खाना अनिवार्य है, वैसे ही सुक्कोत पर्व में झाँपड़ी में रहना आवश्यक है।

---

**Ralbag:**

यह समझाता है कि झाँपड़ी को सामान्य घर नहीं माना जा सकता, बल्कि यह एक अस्थाई संरचना होनी चाहिए।

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □  
(□ □ □ □ □ □)

मसीही विश्वास में, झाँपड़ी का पर्व (सुक्कोत) को एक आत्मिक सन्देश के रूप में समझा जाता है:

**1. परमेश्वर का प्रावधान:**

जैसे इस्राएलियों को परमेश्वर ने सुरक्षा और भोजन दिया, वैसे ही प्रभु यीशु मसीह ने हमें अपनी सुरक्षा और अनन्त जीवन का आश्वासन दिया है।

**2. यीशु मसीह का देहधारण:**

प्रभु यीशु ने इस संसार में आकर हमारे बीच में वास किया। (यूहन्ना 1:14 – “और वचन देहधारी हुआ और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में निवास किया।”)

**3. आत्मिक यात्रा:**

यह पर्व हमें याद दिलाता है कि हमारी असली घर वापसी परमेश्वर के साथ स्वर्ग में होगी।

---

□ □□□□□□□□ (□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□  
□□□□□□):

**प्रिय परमेश्वर यहोवा / प्रभु यीशु मसीह,**

हम तेरी महिमा करते हैं कि तूने अपने लोगों को मरुभूमि में सुरक्षा और प्रावधान दिया।

प्रभु यीशु, जैसा कि तूने इस संसार में आकर हमारे बीच में निवास किया और हमें अनुग्रह और सत्य की राह दिखाई, वैसे ही हमें भी अपने प्रेम और सुरक्षा में हर दिन बनाए रख।

हमें यह समझने में मदद कर कि यह संसार एक अस्थाई निवास है और हमारी वास्तविक आश्रयगृह केवल तेरे साथ है।

हमें विनग्रता और विश्वास से परिपूर्ण कर और अपने अनुग्रह में बनाए रख।

इस झोंपड़ी के पर्व की तरह, हमारे हृदय में भी तेरी उपस्थिति का आनंद और शांति सदा वास करे।

□ □ □ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □ □ □ □ □ □  
□□□□ □□□□ □

---

□ □□□□□□ 23:35 (□□□□□ □□□)

”पहले दिन पवित्र सभा होगी; तुम कोई कठिन परिश्रम न करना।”

---

□ □

इस पद में परमेश्वर ने इस्लाएलियों को यह आदेश दिया कि सुककोत (झोपड़ियों का पर्व) का पहला दिन एक "पवित्र सभा" होगा, और उस दिन कोई कठिन परिश्रम नहीं किया जाएगा।

□ "पवित्र सभा" का अर्थ है कि यह दिन धार्मिक रूप से विशेष रूप से अलग □ □ □

□ □ □ □ □ □

□ "कोई कठिन परिश्रम न करना" का तात्पर्य है कि यह दिन विश्राम और आराधना का दिन होगा।

□ **आराधना, पवित्रता**  
और विश्राम महत्वपूर्ण हैं।

---

□ □

□ □ □ □ (Rashi)

- "पवित्र सभा" का अर्थ है कि इसे अच्छे वस्त्र पहनकर और प्रार्थना के द्वारा विशेष बनाया जाए।
- अन्य पर्वों में यह भोजन और पेय के माध्यम से भी मनाया जाता है, लेकिन यौम किप्पुर (प्रायश्चित का दिन) में भोजन निषिद्ध है, इसलिए इसे अच्छे वस्त्र और प्रार्थना से मनाया जाता है।
- उन्होंने यह भी बताया कि यह नियम रात को भी लागू होता है, और इसीलिए इसे खासतौर पर समझाया गया है।

□ □ □ □ □ □ □ (Birkat Asher)

- वे इस बात पर आश्चर्य व्यक्त करते हैं कि राशी ने इस पद पर ही "पवित्र सभा" की व्याख्या क्यों की, जबकि यह पहले भी आया है।
- उनका मानना है कि यौम किप्पुर का "पवित्र सभा" अन्य पर्वों से अलग था, इसलिए राशी ने इसे यहीं स्पष्ट किया।

□ □ □ □ □ □ □ (Siftei Chakhamim)

- उन्होंने बताया कि राशी ने यहां "पवित्र सभा" की व्याख्या इसलिए की क्योंकि यह रात को भी कार्य निषेध करने की ओर संकेत करता है।
- उनके अनुसार, अच्छे वस्त्र पहनना और प्रार्थना करना पर्व को पवित्र करने का हिस्सा है।

□ □□□□ (Malbim)

- उन्होंने "पवित्रता" को अलगाव के रूप में परिभाषित किया:  
"पवित्रता का अर्थ है किसी चीज़ को अन्य दिनों से अलग करना।"
- यह भिन्नता भाषण (उसे पवित्र कहकर), वस्त्र और भोजन से व्यक्त की जाती है।

□ □□□□□ □□□□ (Pardes Yosef)

- उन्होंने समझाया कि राशी ने अन्य पर्वों पर "पवित्र सभा" की व्याख्या नहीं की, क्योंकि वह केवल विश्राम का संकेत देता है।
  - लेकिन सुककोत में यह "आराधना और अच्छे वस्त्र" द्वारा भी पवित्र किया जाता है।
- 

□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□

□ यीशु मसीह ने हमें सिखाया कि सच्ची आराधना केवल बाहरी रीति-रिवाजों से नहीं, बल्कि हृदय की पवित्रता और आत्मा की सच्चाई से होती है (यूहन्ना 4:23-24)।

□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□

परमेश्वर की आराधना में विशेष दिन अलग रखना आवश्यक है, और इसे श्रद्धा और पवित्रता के साथ मनाना चाहिए।

□ साबत (आराम का दिन) और अन्य धार्मिक पर्वों को परमेश्वर के साथ निकटता बढ़ाने का अवसर मानना चाहिए।

□ □□ □□□ यीशु मसीह में आत्मिक विश्राम (मत्ती 11:28) के महत्व की भी याद दिलाता है।

□ सुककोत का आध्यात्मिक अर्थ:

1. पृथ्वी पर जीवन अस्थायी है, स्वर्गीय निवास स्थायी है।

2. परमेश्वर हमारे साथ वास करता है, जैसा कि यीशु ने किया (यूहन्ना 1:14 - "वचन देहधारी हुआ और हमारे बीच निवास किया")।
  3. आराधना और विश्राम का महत्व।
- 

□ □

**हे स्वर्गीय पिता,**

तेरा नाम पवित्र माना जाए।

जैसे तूने अपने लोगों को सिखाया कि वे तुझमें विश्राम करें,

वैसे ही हमें भी अपने जीवन में विश्राम और आराधना का महत्व सिखा।

**हे यीशु मसीह,**

तू विश्राम और पवित्रता का स्रोत है।

हमें आत्मिक विश्राम दे,

हमें अपने आत्मा से भर कि हम सच्चाई और पवित्रता में तेरा नाम ज़पूँ।

हम अपने जीवन को तेरी सेवा के लिए अर्पित करते हैं।

हमें पवित्र कर कि हम अपने कार्यों, वचनों और विचारों में तुझे आदर दें।

**हम यीशु मसीह के नाम से यह प्रार्थना करते हैं।**

**आमीन!** ☺✿

---

✿□□□□□ □□□:

✓□□□□□□□□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

✓□□□□□ □□□ □□□-□□□□ □□□, □□□□ □□□ □ □ □□□□□ □ □ □□□□ □□□

✓□□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□□ □ □ □□□□□□□ □ □ □□□

□□□□□ □ □ □□□ □ □ □□□ □□□ □ □ □□□□□ □ □ □□□□□

✓□□□□□□□□, □□□□ □□□ □ □ □□□□□ □□□ □ □ □□□□□ □ □

□□□□□□□ □ □ □ □ □ □ □ □

- "आओ, हम आराधना करें और दण्डवत करें, अपने सृष्टिकर्ता यहोवा के सामने घुटने टेकें।" (भजन संहिता 95:6)

□ □□□□□□□ 23:36 (□□□□□ □□□)

"आठवें दिन तुम्हारी पवित्र सभा होगी, और तुम यज्ञ द्वारा यहोवा के लिए एक हव्य अर्पित करोगे। यह एक विशेष सभा होगी; तुम कोई कठिन परिश्रम न करना।"

---

□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□□□□

यह पद शेमिनी अत्तसेरेट (שְׁמִינִי עַצְּרוֹת) की बात करता है, जो सुककोत के बाद का आठवां दिन है।

- "पवित्र सभा" (שְׁמִינִי עַצְּרוֹת) – □□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□□
  - "हव्य अर्पित करना" – □□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□□
  - "अत्तसेरेट" (עַצְּרוֹת) का अर्थ - "रुक जाना" या "एकत्रित होना"। परमेश्वर अपने लोगों को अपने निकट रहने के लिए बुलाते हैं।
  - "कोई कठिन परिश्रम न करना" - यह दिन एक पवित्र विश्राम और आराधना का समय है।
- 

□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□  
□□□□□□□□

1 □ "□□□□□□□" □□ □□□□ – □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□

□ □□□ (Rashi): अत्तसेरेट शब्द का अर्थ है "रोकना"। वे इसे एक राजा के दृष्टांत से समझाते

हैं:

**एक राजा ने अपने पुत्रों को कई दिनों तक भोज पर बुलाया। जब विदाई का समय आया, तो उसने कहा, "मेरे प्यारे पुत्रो, मेरे लिए तुमसे बिछड़ना कठिन है, कृपया एक दिन और रुक जाओ!"**

□ □□□ □□□, □□□□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□ □□□, "मुझे तुम्हारे साथ रहना अच्छा लगता है, बस एक दिन और मेरे साथ बिताओ!"

□ □□□ □□□ (**Bekhor Shor**), **हदार झेकेनिम (Hadar Zekenim)** और **रम्बान (Ramban)** भी यही दृष्टिंत साझा करते हैं।

**2** □ "□□□□□□□" □ □ □□ □□□ □ □

□ □□ □□□□□ (**Rav Hirsch**): चूँकि बाइबल में सुककोत के लिए सात दिनों का उल्लेख किया गया है, इसलिए आठवां दिन सुककोत का भाग नहीं है, बल्कि एक स्वतंत्र पर्व है।

□ □□□□□□ (**Sukkah 47a**) में बताया गया है कि इस पर्व को अलग मानने के तीन संकेत हैं:

- इस दिन एक ही बैल की बलि दी जाती है, जबकि सुककोत में बलिदान की संख्या घटती जाती है।
- "आठवां दिन" वाक्य "और" (!) के बिना आता है, जिससे यह अलग पर्व सिद्ध होता है।
- इस दिन विशिष्ट प्रार्थनाएँ और आशीष दी जाती हैं।

**3** □ □□ □□□ □□ □□□□□

□ □□□ (**Rashi**): इस दिन कोई कठिन परिश्रम (**laborious work**) नहीं करना चाहिए, इसका मतलब यह नहीं कि कोई भी काम नहीं कर सकते, बल्कि वे काम जो आजीविका या व्यापार से संबंधित हैं, वे वर्जित हैं।

□ □□□□□□ (**Malbim**): वे विभिन्न पर्वों पर काम करने की पाबंदियों की तुलना करते हैं:

- सब्ज और योम किष्युर में कोई भी काम नहीं किया जा सकता।
- अत्तसेरेट में कुछ कार्य (जैसे भोजन बनाना) की अनुमति है, परंतु व्यापारिक कार्य वर्जित

हैं।

4 इसका विवरण है-

□ **हामेक दावर (Haamek Davar):** यह पर्व परमेश्वर के मंदिर में इकट्ठा होने और शिक्षा ग्रहण करने का अवसर है।

□ **सफोर्नो (Sforno):** यह दिन परमेश्वर के वचन को याद करने और उसकी आज्ञाओं पर चिंतन करने के लिए दिया गया है।

---

□ **प्राप्ति विश्वास:** इसका विवरण है-

1 यीशु मसीह ही परमेश्वर के साथ हमारे संगति का पूर्णता है।

- जैसे परमेश्वर ने इस्राएलियों से कहा "मुझे तुम्हारे साथ रहना अच्छा लगता है", वैसे ही यीशु ने कहा, "मैं तुम्हें कभी नहीं छोड़ूँगा" (मत्ती 28:20)।
- यीशु ही हमारे अंतिम विश्राम (सब्ब) हैं।

2 पेंतेकोस्त का पर्व (Acts 2) अत्तसेरेट की तरह है।

- ठीक वैसे ही जैसे शेमिनी अत्तसेरेट सात दिनों के पर्व के बाद आता है, वैसे ही पेंतेकोस्त भी फसह के बाद आता है।
  - पेंतेकोस्त में पवित्र आत्मा उंडेला गया, जिससे यह दिखाता है कि परमेश्वर चाहता है कि हम उसके साथ गहरे संबंध में रहें।
- 

□ **प्रिय प्रभु यीशु मसीह,**

हम आपको धन्यवाद देते हैं कि आपने हमें अपने प्रेम में रोक रखा है, जैसे एक राजा अपने पुत्रों को रोकता है।

जैसे शेमिनी अत्तसेरेट में परमेश्वर ने अपने लोगों को एक और दिन ठहरने को कहा, वैसे ही हमें आपके प्रेम में ठहरना सिखाइए।

पवित्र आत्मा से हमें भर दीजिए ताकि हम आपकी उपस्थिति में बने रहें और आपकी आराधना करते रहें।

हम आपकी उपस्थिति को छोड़ना नहीं चाहते, क्योंकि आप ही हमारा विश्राम और शांति हैं।

**यीशु मसीह के नाम में, आमीन। □□**

---

□ □□□□□□

✓ शेमिनी अत्तसेरेट केवल एक और छट्टी नहीं, बल्कि परमेश्वर के साथ संगति बनाए रखने का निमंत्रण □□□

✓ □□□□□ □□□□□□□ □□□ □ □□□ □□□ □□□□□□ □ □ □ यीशु हमें अपने साथ बनाए रखते हैं और हमें कभी नहीं छोड़ते।

✓ आज भी मसीही चर्च में इसका महत्व है क्योंकि यह हमें परमेश्वर की उपस्थिति में ठहरने और उसकी आत्मा से भरने का संदेश देता है।

□ □□□ 23:37 □□□□□ □□□

"ये यहोवा की ठहराई हुई नियुक्ति की पर्व सभाएँ हैं, जिन्हें तुम पवित्र सभा के रूप में घोषित करोगे, ताकि यहोवा को अग्नि द्वारा चढ़ाई जानेवाली भेंट चढ़ाओ-होमबलि और अन्नबलि, मेलबलि और अर्ध, हर दिन का बलिदान उसके दिन पर।"

---

□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□

1 □ □□□□□□□ □□ □□□□□□:

इस पद में चार प्रकार के बलिदानों का उल्लेख किया गया है-

**1. होमबलि (Olah - הַלְעָם) □**

- यह संपूर्ण रूप से जलाया जानेवाला बलिदान था।
- रब्बी हिर्श के अनुसार, यह बलिदान परमेश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण को दर्शाता है।

**2. अन्नबलि (Minchah - הַמִּנְחָה) □**

- यह आमतौर पर महीन आटे, तेल और लोबान का मिश्रण था।
- राशी कहते हैं कि यहाँ पर 'अन्नबलि' से तात्पर्य उस अन्नबलि से है जो पेयबलि (अर्ध) के साथ लाई जाती थी।

**3. मेलबलि (Zevach - זֶבָּח) □**

- यह एक पशु बलिदान था, जिसमें कुछ भाग याजकों और बलिदान लाने वाले के लिए बचाया जाता था।
- हा-आमेक दावार (Haamek Davar) के अनुसार, ज़ेवाख का मतलब केवल मेलबलि नहीं बल्कि होमबलि भी हो सकता है।

**4. अर्ध (Nesachim - נֶסֶחִים) □**

- यह दाखरस (वाइन) की अर्ध-बलि थी, जिसे वेदी पर चढ़ाया जाता था।
- अदेरेट एलियाहु (Aderet Eliyahu) कहते हैं कि यदि मेलबलि नहीं चढ़ाया गया, तो अर्ध भी नहीं चढ़ाया जा सकता था।

**2□ "हर दिन का बलिदान उसके दिन पर" ("אָמֵן בְּרוּךְ") □**

इस वाक्यांश का अर्थ है कि प्रत्येक पर्व पर निर्धारित बलिदान उसी दिन चढ़ाए जाने चाहिए।

- राशी कहते हैं कि यह नियम यह दर्शाता है कि हर पर्व पर चढ़ाए जाने वाले बलिदानों की मात्रा गिनती की किताब (गिनती 28-29) के अनुसार निर्धारित होती थी।
- मालबिम बताते हैं कि बलिदानों का क्रम महत्वपूर्ण था-यदि किसी बलिदान को छोड़ दिया जाता, तो उसका कोई विकल्प नहीं था।



मसीही दृष्टिकोण से, यीशु मसीह ने स्वयं को पूर्ण बलिदान के रूप में प्रस्तुत किया।

□ इब्रानियों 10:10 – "और उसी इच्छा के अनुसार हम यीशु मसीह के शरीर के एक ही बार बलिदान चढ़ाए जाने के द्वारा पवित्र किए गए हैं।"

□ यीशु ही अंतिम बलिदान हैं - अब हमें पशुओं, अनाज, या दाखरस की भेंट चढ़ाने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि यीशु ने अपना लहू बहाकर पूर्ण बलिदान दिया।

﴿ आज मसीही चर्च में हम हर दिन परमेश्वर की आराधना करते हैं, और यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा हम अनुग्रह में जीवित हैं।

---

□ □□□□□□□□: □□□□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□  
□□□□□□

**हे स्वर्गीय पिता,**

हम धन्यवाद करते हैं कि तूने यीशु मसीह को हमारे लिए अंतिम और सिद्ध बलिदान के रूप में भेजा।

जैसे पुराने नियम में प्रतिदिन विशेष बलिदान दिए जाते थे, वैसे ही हम आज अपने जीवन को तेरे लिए पूर्ण समर्पित करें।

हमें आत्मिक आराधना करने की समझ और सामर्थ्य दे, ताकि हम हर दिन अपने जीवन को तुझ पर चढ़ा सकें।

जैसे यीशु ने कहा, "हे पिता, तेरी इच्छा पूरी हो," वैसे ही हम भी अपने जीवन में तेरी इच्छा को पूरा करें।

**यीशु मसीह के नाम में, आमीन! □+□**

---

□ आराधना गीत के लिए सुझाव:

□ "□□□□ □□□□□□ □□"  
□ "□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□"

□ आज का सन्देश: बलिदान केवल भौतिक चीज़ें नहीं, बल्कि हमारा हृदय, प्रेम, और आज्ञाकारिता □□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□! □□

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ 23:38 (Leviticus 23:38) – □ □ □ □ □  
 □ □ □ □ □ □ □ □ □

"ये यहोवा के विश्राम दिनों को छोड़कर, और तुम्हारी भेंटों को छोड़कर, और तुम्हारी सारी मन्त्रतों को छोड़कर, और तुम्हारी सब स्वेच्छा-भेंटों को छोड़कर, जो तुम यहोवा को दोगे।"

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

यह पद बताता है कि जो पर्वों पर चढ़ाए जाने वाले बलिदान हैं, वे अन्य बलिदानों से अलग हैं और उनके अतिरिक्त चढ़ाए जाने चाहिए। यहाँ चार प्रकार की भेंटों का उल्लेख किया गया है:

**1. सब्ब के दिन के बलिदान (ה מלבד שבעתת נ' - "Sabbath offerings")**

- सब्ब (विश्राम दिन) के लिए विशेष बलिदान थे जो पर्वों के दिनों में भी अर्पित किए जाते थे। इसका मतलब यह था कि अगर कोई पर्व सब्ब के दिन पड़ता, तो दोनों के बलिदान अलग-अलग चढ़ाए जाते।
- □ **उदाहरण:** यह नम्बरों 28:9-10 में उल्लेखित सब्ब के बलिदानों के साथ जोड़ा जा सकता है।

**2. अन्य भेंटें और उपहार (ה מלבד מתנותיכם - "Besides your gifts")**

- ये वे भेंटें थीं, जो लोग स्वेच्छा से या किसी वचन के अनुसार परमेश्वर को अर्पित करते थे।
- □ **उदाहरण:** प्रथम फल (पहला फल), दसवांश (मसीही सिद्धांत में टिथिंग) और अन्य चढ़ावे।

**3. निजी मन्त्रतों और नज़राने (ה מלבד כל נדריכם - "Besides all your vows")**

- ये वे बलिदान थे, जो किसी प्रतिज्ञा के अनुसार अर्पित किए जाते थे।
- □ **उदाहरण:** किसी कठिन परिस्थिति में यदि किसी ने वचन दिया कि वह परमेश्वर को कुछ अर्पित करेगा, तो उसे पूरा करना आवश्यक था।

#### 4. स्वेच्छा-भेंटे (Besides all your freewill offerings)

- यह स्वेच्छा से दिए गए बलिदान थे, जिन्हें बिना किसी प्रतिज्ञा के लोग परमेश्वर के प्रति प्रेम और धन्यवाद प्रकट करने के लिए अर्पित करते थे।
  - □ **उदाहरण:** हन्ना ने 1 शमूएल 1:11 में एक प्रतिज्ञा की थी कि यदि परमेश्वर उसे संतान देगा, तो वह उसे परमेश्वर को समर्पित कर देगी।
- 

□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□

□ **रशी (Rashi):** उन्होंने कहा कि यह पद हमें सिखाता है कि पर्वों के बलिदान अन्य सभी प्रकार के बलिदानों से अलग होते हैं और प्रत्येक को उनके निर्धारित समय पर चढ़ाना आवश्यक है।

□ **डेविड ज़्वी हॉफमैन (David Zvi Hoffmann):** उन्होंने समझाया कि यह आदेश इसलिए दिया गया था ताकि लोग पर्वों के समय अपने व्यक्तिगत भेंटों को परमेश्वर के मंदिर में लाने में देरी न करें।

□ **मालबिम (Malbim):** उन्होंने उल्लेख किया कि "כבל מ" और "מ כבל..." (अर्थात् "अतिरिक्त" और "छोड़कर") के उपयोग से यह स्पष्ट होता है कि पर्वों के बलिदान किसी भी अन्य बलिदानों का स्थान नहीं ले सकते।

□ **रव हिर्श (Rav Hirsch):** उन्होंने कहा कि यह आदेश लोगों को याद दिलाता है कि पर्वों पर दिया गया बलिदान ही पर्याप्त नहीं है; उन्हें अन्य व्यक्तिगत भेंटों और प्रतिज्ञाओं को भी पूरा करना चाहिए।

---

□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□

✓**यीशु मसीह परम बलिदान हैं:**

- पुराने नियम में बलिदानों की व्यवस्था मसीह की पूर्णता में पूरी हुई (इब्रानियों 10:10)।  
यीशु ने क्रूस पर स्वयं को एक बार और सदा के लिए बलिदान कर दिया।

### ✓ दसमांश और भेंटें:

- मसीही चर्च में विश्वासियों को प्रोत्साहित किया जाता है कि वे अपने दसमांश और भेंटें प्रेम से दें, ताकि चर्च और जरूरतमंदों की सहायता की जा सके (2 कुरिन्धियों 9:7)।

### ✓ स्वेच्छा-भेंटें और धन्यवाद:

- आज मसीही विश्वासी अपनी भेंटों और सेवाकार्यों के माध्यम से परमेश्वर की स्तुति और आराधना कर सकते हैं।

### ✓ त्योहारों का आध्यात्मिक अर्थ:

- यीशु में, पर्वों की पूर्णता आ गई है। उदाहरण के लिए, फसह पर्व अब हमें यीशु के बलिदान की याद दिलाता है।
- 

□ □ □ □ □ □ □ □ □ : □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

**हे स्वर्गीय पिता,**

तेरा धन्यवाद हो कि तूने यीशु मसीह में हमें पूर्णता दी। जैसे पुराने नियम में लोग अपने भेंट और बलिदान तुझमें लाते थे, वैसे ही हम अपने जीवन, समय, संसाधन और भेंट तुझे अर्पित करना चाहते हैं।

**प्रभु यीशु,**

तूने हमें सिखाया कि सच्चा बलिदान आत्मिक होता है - जब हम अपने हृदय और आत्मा को पूरी तरह से तुझे सौंपते हैं। आज हम अपने जीवन को तेरा मंदिर बनने के लिए अर्पित करते हैं (रोमियों 12:1)।

हमें उदार और आज्ञाकारी बना, ताकि हम अपने भेंटों और सेवाकार्यों द्वारा तेरा नाम महिमा दें। हमारी इच्छाओं को अपनी इच्छा के साथ जोड़ दे, और हमें सिखा कि तेरी सेवा में कैसे जीना है।

**हम यीशु के नाम से यह माँगते हैं। आमीन। □+\***

---

□ □ □ □ □ □ □ □

- लेवितिकुस 23:38 हमें सिखाता है कि परमेश्वर के लिए समर्पण केवल पर्वों तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि यह हमारे जीवन का निरंतर हिस्सा होना चाहिए।
- मसीहियों के लिए यह पद यीशु मसीह के पूर्ण बलिदान की ओर इंगित करता है और हमें प्रेमपूर्वक देने के लिए प्रेरित करता है।
- हम आज अपने जीवन, समय और संसाधनों को स्वेच्छा से परमेश्वर को समर्पित करने के लिए बुलाए गए हैं।

**"यहोवा को अपनी संपत्ति का पहिलौठा अर्पित कर, तब तेरे खत्ते भरे रहेंगे।"** –

(□ □ □ □ □ □ □ 3:9-10) □ □

□ □ □ □ □ □ □ 23:39 (□ □ □ □ □ □)

**"तो भी सातवें महीने के पंद्रहवें दिन जब तुम देश की उपज इकट्ठी कर लो, तब तुम यहोवा के पर्व को सात दिन मनाना; पहिले दिन विश्राम का दिन हो, और आठवें दिन भी विश्राम का दिन हो।"**

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

**यह पद सुककोत (पर्व) के बारे में बताता है, जिसे "पड़ावों का पर्व" या "तंबुओं का पर्व" भी कहा जाता है।**

□ **समय और उद्देश्य:** □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ (□ □ □ □ □) □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □

□ **विश्राम के दिन:** □

(□ □ □ □ □ □ □) □ □ □ □ □ □, □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □

□ **धन्यवाद और आनंद:** यह पर्व परमेश्वर के आशीषों के लिए धन्यवाद देने और उसकी कृपा

का जश्न मनाने का समय है।

---

□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□

□□□□□□□□

### 1 □ "तो भी" (जा - 'अख') का महत्व

- **राशी:** "जा" (अख) शब्द एक सीमित करने वाला शब्द है, जो कि पर्व के सप्ताह के किसी भी दिन मनाया जा सकता है, लेकिन इसे सब्त के साथ नहीं मिलाया जा सकता है।
  - **कली याकर:** "जा" इस बात को इंगित करता है कि पर्व को सप्ताह के किसी भी दिन मनाया जा सकता है, लेकिन इसे सब्त के साथ नहीं मिलाया जा सकता है।
  - **इब्र एङ्ग्रा:** यह शब्द दर्शाता है कि यह पर्व यौम किष्पुर (प्रायश्चित का दिन) के विपरीत खुशी का समय है।
- 

### 2 □ "□□□□□□□□ □□" □□ □□□□ □□□□

- **राम्बान:** यह पर्व हमेशा शरदऋतु के समय (अक्टूबर अंत तक नवंबर तक) में मनाया जाता है।
  - **रालबाग:** इसका उद्देश्य लोगों को यह याद दिलाना है कि हर चीज़ परमेश्वर से आती है।
  - **रब्बी बाख्या:** "पंद्रहवें दिन" की पुनरावृत्ति इस पर्व की आध्यात्मिक और भौतिक दोनों महत्वताओं को दर्शाती है।
- 

### 3 □ "□□ □□□ □□□ □□ □□□ □□□□□□ □□ □□"

- **बेखोर शोर:** यह पर्व विशेष रूप से फ़सल के पूरे होने के बाद मनाया जाता है, जो अक्टूबर तक अंत तक अप्रूप रूप से अनेक विशेष रूप से फ़सल के पूरे होने के बाद मनाया जाता है।
- **हदार ज़केनीम:** सुककोत सबसे बड़ा आनंद पर्व है क्योंकि यह न केवल भौतिक आशीष का बल्कि यौम किष्पुर के बाद मिली आत्मिक शुद्धि का भी उत्सव है।

- मालबिम:** यह वाक्य दर्शाता है कि जैसे पास्का (फसह) वसंत ऋतु से जुड़ा है, वैसे ही सुककोत शरद ऋतु की कटाई से जुड़ा है।

- राशी: "तचोगू" (ગ્રહ) शब्द का अर्थ केवल आनंद मनाना नहीं, बल्कि पर्व के लिए बलिदान

- गर आर्यः यह शब्द विशेष रूप से शांति बलिदान (שָׁלֹמִי חִימָגָה) - शालमसे हणिगा)

A horizontal row of 20 empty white squares, likely representing a sequence of data or a set of empty cells in a grid.

- मालबिमः सुक्कोत को "चग" (उत्सव) कहा गया है क्योंकि इसमें शांति बलिदान चढ़ाए जाते हैं।

- डॉ. डेविड ज़्यू हॉफमैन: पहला और आठवाँ दिन आराम और आराधना के लिए निर्धारित किए गए हैं, लेकिन ये पूर्ण सक्त □□□□□□□□□□

- सफोर्नोः आठवें दिन को एक अलग महत्व दिया गया है, क्योंकि यह परमेश्वर के साथ नए आरंभ □□□□□□□□□

- रालबागः ये दोनों दिन हमें परमेश्वर की उपस्थिति में पूर्णता और विश्राम का अनुभव करने का अवसर देते हैं।

?

- यीश ही हमारी "सूक्का" (आश्रय) हैं:

- योहन 1:14 - "वचन देहधारी हुआ और हमारे बीच में आकर डेरा किया।" (सूक्का में रहने

### का संदर्भ)

- यीशु वह सच्चा आश्रय हैं जो हमें पाप से बचाते हैं।

#### □ पवित्र आत्मा और आनंद:

- सुककोत परमेश्वर के साथ आनंद मनाने का पर्व है, और मसीही जीवन भी पवित्र आत्मा में आनंदित होने के बारे में है (रोमियों 14:17)।

#### □ यीशु ने सुककोत में जल और ज्योति पर उपदेश दिया:

- योहन 7:37-38 - "यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आए और पीए।"
- यह सुककोत पर्व के जल समारोह से संबंधित था, जिसमें वे मसीह की ओर इशारा करते हैं।

#### □ परमेश्वर के साथ अनंतकाल:

- प्रकाशितवाक्य 21:3 - "देखो, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में होगा।"
  - सुककोत इस भविष्यवाणी का एक संकेत है कि हम अनंतकाल में परमेश्वर के साथ रहेंगे।
- 

□ □

#### □ हे अनंत पिता,

हम तेरा धन्यवाद करते हैं कि तूने हमें यीशु मसीह में सच्चा आश्रय दिया। जैसे इस्राएली जंगल में तंबुओं में रहते थे, वैसे ही हमें स्मरण दिला कि यह संसार भी हमारे लिए अस्थायी है और हमारा स्थायी घर तेरे साथ स्वर्ग में है।

जैसे तूने सुककोत में अपनी आशीष दी, वैसे ही हमें अपने आत्मा से भर दे, ताकि हम तुझमें सच्ची शांति और आनंद प्राप्त कर सकें। यीशु ने कहा, "जो मुझ पर विश्वास करता है, उसके हृदय से जीवन का जल बहेगा।" हमें अपने आत्मा की ताजगी और आनन्द से भर दे।

† हे प्रभु, हमारी प्रार्थना स्वीकार कर, और हमें तेरी शरण में रख।

## यीशु मसीह के नाम में, आमीन। □

---

□ आप इस पर्व को परमेश्वर की भलाई के लिए धन्यवाद देने और यीशु मसीह में आनंदित होने के समय के रूप में मना सकते हैं! □

□ □□□□□□□ 23:40 (□□□□□ □□□)

”और तुम पहले दिन अच्छे वृक्ष का फल, खजूर की डालियां, घने वृक्ष की शाखाएं और नदी के किनारे की बेंतें लो, और अपने परमेश्वर यहोवा के समुख सात दिन तक आनन्द करो।”

---



यह पद यहोवा के पर्व सुक्कोत (झोपड़ियों का पर्व) के संदर्भ में दिया गया है। इसमें चार पौधों को लेने और सात दिन तक परमेश्वर के सामने आनन्द मनाने की आज्ञा दी गई है। ये चार पौधे हैं:

1. अच्छे वृक्ष का फल (Etrog - एत्रोग/निम्बू के समान फल) □
2. खजूर की डालियां (Lulav - लूलाव) □
3. घने वृक्ष की शाखाएं (Hadass - हदास/मिर्टल की शाखाएं) □
4. नदी के किनारे की बेंतें (Aravah - अरवाः/बेंत की टहनियां) □

इन पौधों को एक साथ लेकर यहूदी लोग परमेश्वर की उपस्थिति में आनंदित होने और उसके प्रति आभार प्रकट करने का कार्य करते हैं।

---

□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□  
□□□□ □□□□

## 1 इतर वृक्षों का उपयोग (Etrog - इतर वृक्षों का उपयोग)

- **रब्बी रशी:** यह वह वृक्ष है जिसकी छाल और फल एक जैसे स्वाद के होते हैं, यह हर वर्ष पेड़ पर बना रहता है।
  - **रब्बी अब्राहम इन्ह एज्ञा:** सबसे सुंदर फल एत्रोग ही है।
  - **मिद्रश:**
    - यह हृदय इतर वृक्षों का उपयोग
    - यह धर्मी व्यक्ति को दर्शाता है जिसके पास ज्ञान और अच्छे कर्म दोनों हैं।
    - यह अब्राहम को दर्शाता है, जिन्होंने एक परमेश्वर की अवधारणा को फैलाया।
- 

## 2 लुलाव का उपयोग (Lulav - लुलाव)

- **रब्बी यहूदा:** इसे बाकी पौधों के साथ बांधने की जरूरत है।
  - **मालबिम:** "कफोत" का अर्थ है बहुत से पत्तों का एक साथ गुच्छा बनाना।
  - **मिद्रश:**
    - यह रीढ़ की हड्डी इतर वृक्षों का उपयोग
    - यह एक आम इजराइली व्यक्ति को दर्शाता है जिसके पास कर्म हैं लेकिन ज्ञान नहीं।
    - यह यशायाह की भविष्यवाणी से मेल खाता है, जहां लूलाव ऊँचा उठता है।
- 

## 3 हाडस का उपयोग (Hadass - हाडस)

- **तत्पूद (Sukkah 32b):** "अवोत" का अर्थ है घना पत्ता जो लकड़ी को पूरी तरह ढक देता है।
  - **मिद्रश:**
    - यह आँखों इतर वृक्षों का उपयोग
    - यह व्यक्ति को दर्शाता है जिसके पास ज्ञान है लेकिन अच्छे कर्म नहीं।
    - यह याकूब को दर्शाता है जिनकी संतानों का एक बड़ा वंश था।
-

## 4. अरावह (Aravah - अरावह)

- तल्मूद (Sukkah 33b): यह वृक्ष नदी के पास उगता है, लेकिन यह आवश्यक नहीं कि सिर्फ वहां ही हो।
  - मिद्रशः
    - यह होठों अरावह
    - यह उन लोगों का प्रतीक है जिनके पास न तो ज्ञान है और न ही अच्छे कर्म।
    - यह यूसुफ को दर्शाता है, जिनका जीवन संघर्षों से भरा था।
- 

इन चार पौधों को एक साथ लेकर, यहूदी परंपरा एकता

अवलोकन करती है –  
 ✓ अरावह (Etrog),  
 ✓ लुलाव (Lulav),  
 ✓ हादास (Hadass),  
 ✓ अरावह (Aravah) □

लेकिन जब वे सब एक साथ होते हैं, तो परमेश्वर उन्हें स्वीकार करता है □ □

---

इन चार पौधों को एक साथ लेकर, यहूदी परंपरा एकता

द्रष्टव्य अवलोकन करती है –  
 5:17), यहोवा में आनंद मनाने और एकता

– "मैं दाखलता हूँ, तुम डालियाँ हो" (यूहन्ना 15:5), जो हमें  
 बताता है कि हमें यीशु से जुड़े रहना चाहिए ताकि हम फलदार हों।

1. आनंदित (4:4)

2. फलदार बनें (5:22-23)

३ □ एकता में रहना □ ( 17:21 ) □

---

□ एकता में रहना ( १७:२१ )

**हे स्वर्गीय पिता,**

हम तेरा धन्यवाद करते हैं कि तूने हमें अपने वचन में आनन्दित होने की आज्ञा दी। ठीक जैसे चार पौधों को एक साथ लेकर यहूदी लोग तेरा जयजयकार करते हैं, वैसे ही हम तुझमें आनन्दित होना चाहते हैं।

**हे प्रभु यीशु मसीह,**

तूने हमें सिखाया कि सच्चा फल वही है जो आत्मा में बढ़ता है। हमें आत्मिक रूप से फलदार बना, ताकि हम तेरे प्रेम, आनंद, और धैर्य में बढ़ें। हमें एकता में रख, ताकि हम सब एक परिवार की तरह रहें।

हम यीशु मसीह के नाम से यह प्रार्थना करते हैं।

**आमीन।** □ ✡

---

□ एकता में रहना

✓ आनन्दित रहो □

✓ फलदार बनो □

✓ एकता में रहो।

□ " एकता में रहना, एकता में रहना, एकता में रहना" ( ३७:४ ) □

□ २३:४ (Leviticus 23:41) – एकता में रहना

**"तुम इसे यहोवा के लिये वर्षभर सात दिन तक पर्व रूप में मनाना। यह तुम्हारी पीढ़ियों के लिये सदा की विधि ठहरेगी। सातवें महीने में तुम इसे मानना।"**

---

□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□

यह पद सुक्कोत (Tabernacles) नामक पर्व के पालन की आज्ञा देता है, जिसे यहोवा के लिए सात दिनों तक मनाया जाना चाहिए। यह उत्सव इसाएलियों के लिए एक स्थायी विधि है, जिसे वे पीढ़ी दर पीढ़ी मनाते रहेंगे।

□ □□□□□□□ □□ □□□□

यह पर्व निर्गमन की याद दिलाता है, जब इसाएली जंगल में अस्थायी झोपड़ियों (सुक्काओं) में रहते थे और परमेश्वर ने उनकी रक्षा की।

यह फसल के मौसम का भी उत्सव है, जब लोग अपनी उपज इकट्ठी करते थे।

यह परमेश्वर की विश्वासयोग्यता और उसकी देखभाल का प्रतीक है।

---

□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□

□ 1. □□□ □□□ □□ □□□□ □□□□?

□ □□□□□□□ □□□□ (Baraita) - यह बताती है कि पहले दिन का विशेष महत्व है, लेकिन पूरे सात दिन आनंद और आराधना के लिए दिए गए हैं।

□ □□□□□ (Ralbag) - यह सुनिश्चित करता है कि यह त्योहार हर साल सातवें महीने में ही मनाया जाए, भले ही फसल की कटाई पूरी हुई हो या नहीं।

□ 2. "□□□□□ □□□□" □□ □□□

□ □□□□□ (Malbim) - यह सातवें महीने में ही रखने की ज़रूरत इसलिए थी ताकि लोग इसे मौसम या कृषि से जोड़कर ना देखें, बल्कि इसे केवल परमेश्वर की आज्ञा के रूप में मानें।

□ □□□□ □□□ (Haamek Davar) - यदि किसी कारणवश फसल की कटाई में देरी हो,

तो भी यह पर्व सातवें महीने में ही मनाया जाना चाहिए।

□ ३. □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□

□ □□□□□ (Alshekh) –

- यह निर्गमन और परमेश्वर की सुरक्षा की याद दिलाता है।
- यह निवास का प्रतीक है कि परमेश्वर अपने लोगों के बीच में रहता है।
- यह इस आशा को दर्शाता है कि हमारा असली घर परमेश्वर के साथ है।

□ □□□ □□□□ □□□□ (David Zvi Hoffmann) – यह इस बात को मजबूत करता है कि यह पर्व केवल कृषि से संबंधित नहीं है, बल्कि यह सभी समयों के लिए परमेश्वर की योजना का हिस्सा है।

---

□ □□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□

हालाँकि ईसाई धर्म में यह पर्व प्रत्यक्ष रूप से नहीं मनाया जाता, लेकिन इसका महत्व यीशु मसीह में पूरा होता है:

- प्रकाशित वाक्य 21:3 – "देखो, परमेश्वर का तंबू मनुष्यों के बीच में है!" यह दिखाता है कि सुककोत का असली अर्थ परमेश्वर का अपने लोगों के साथ निवास करना है, जो यीशु मसीह में सिद्ध हुआ।
  - यूहन्ना 7:37-38 - यीशु ने सुककोत के समय कहा: "**यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आए और पीए। जो मुझ पर विश्वास करता है, उसके हृदय से जीवित जल की नदियाँ बहेंगी।**" यह बताता है कि यीशु ही सच्ची तृप्ति और उद्धार का स्रोत हैं।
  - यीशु का देहधारण (John 1:14) – "**वचन देहधारी हुआ और हमारे बीच में तंबू (सुकका) गाढ़कर रहा।**" यह बताता है कि सुककोत के पर्व का अंतिम उद्देश्य यीशु मसीह में पूरा हुआ।
-

## प्रिय स्वर्गीय पिता,

हम धन्यवाद करते हैं कि आपने हमें सुक्कोत का पर्व दिया, जो हमें आपकी देखभाल, सुरक्षा और उपस्थिति की याद दिलाता है।

जैसे आपने इसाएलियों को जंगल में अस्थायी झोपड़ियों (सुक्काओं) में रखा और उनकी रक्षा की, वैसे ही आपने हमें यीशु मसीह में आश्रय दिया, जो हमारी चट्टान और उदधार हैं।

इस संसार में नहीं.

A horizontal row of 20 empty rectangular boxes, likely used for input fields or placeholder text in a form.

Digitized by srujanika@gmail.com

इसरों की सेवा करें और अपने पड़ोसियों से मेहम करें।

— १० —

याशु मसाह के नाम म हम प्राथना करत ह, आमान। □★

--	--	--	--	--	--	--	--	--

✓ सुक्कोत परमेश्वर की उपस्थिति और विश्वासयोग्यता का पर्व है।

✓ यह हमें याद दिलाता है कि यीशु ही सच्चा तंबू (सुकका) हैं, और हम उनके द्वारा परमेश्वर के साथ सदा रहेंगे।

✓ इस पर्व से हम सीख सकते हैं कि हमें परमेश्वर पर भरोसा रखना चाहिए और उसकी आराधना में आनन्दित रहना चाहिए। □

□ □□□□□□□ 23:42 (Leviticus 23:42) – □□□□□ □□□

**"सात दिन तक तुम झोपड़ियों में निवास करना; इस्राएल में उत्पन्न हर एक निवासी झोपड़ियों में रहे।"**

---

□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□

**यह पद सुक्कोत (Sukkot) पर्व की एक मुख्य आज्ञा देता है - सात दिनों तक झोपड़ियों (सुक्काओं) में रहना।**

□ □□□□□□□ □□ □□□□□

- यह हमें इस्राएलियों की जंगल यात्रा की याद दिलाता है, जब वे अस्थायी झोपड़ियों में रहते थे और परमेश्वर ने उनकी रक्षा की।
  - यह मानव जीवन की अस्थायी प्रकृति को दर्शाता है - हमारी स्थायी आश्रय केवल परमेश्वर में है।
  - यह परमेश्वर की देखभाल और सुरक्षा की गवाही देता है, जो उसने इस्राएलियों के साथ किया और आज भी हमारे साथ करता है।
- 

□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□

**□ 1. "हर एक निवासी" (הַרְאָה – ha-Ezrach) का अर्थ**

□ महिलाओं की अनिवार्यता नहीं – कई विद्वानों के अनुसार, "הַרְאָה" में "ה" (ha) विशेष रूप से महिलाओं को सुक्के में रहने की अनिवार्यता से बाहर करता है। यह उस नियम के अनुरूप है कि महिलाएँ समय-निर्धारित सकारात्मक आज्ञाओं (time-bound positive commandments) से मुक्त होती हैं।

□ बालकों का समावेश - शब्द "kol" - हर एक) से यह निष्कर्ष निकाला गया कि छोटे बच्चों को भी इस पर्व में शामिल किया जाना चाहिए।

- स्थायी निवासी – बेखोर शोर (Bekhor Shor) और क्ली याकर (Kli Yakar) बताते हैं कि "הַרְאָה" विशेष रूप से उन इस्राएलियों को संदर्भित करता है जो इस्राएल में स्थायी रूप से रहते थे। यह इस तथ्य को दर्शाता है कि वे अपने स्थायी घरों को छोड़कर सुकका में रहकर परमेश्वर पर निर्भरता सीखें।
  - यात्रियों का अपवाद – रम्बान (Ramban) के अनुसार, समुद्री यात्रा करने वाले या सफर पर गए लोग, जिनके लिए झोपड़ी में रहना असंभव हो, वे इस आदेश से बाहर हो सकते हैं।
  - प्रत्येक इस्राएली पर अनिवार्यता – हामेक दवार (Haamek Davar) बताता है कि "הַרְאָה" की पुनरावृत्ति इस बात पर बल देती है कि हर इस्राएली को इस आदेश का पालन करना चाहिए।
- 

## □□ 2. "इस्राएल में" – ב'ישראל' (b'Yisrael) का अर्थ

- परदेशियों और मुक्त दासों का समावेश – राशी (Rashi) बताते हैं कि "ב'ישראל" यह सुनिश्चित करता है कि अभी हाल ही में इस्राएल में शामिल हुए गैर-यहूदी धर्मान्तरित (gerim) और दासों को भी इस आज्ञा में शामिल किया जाए।
  - पवित्रता और एकता का प्रतीक – मिजराची (Mizrachi) यह समझाता है कि सुकका में रहने की आज्ञा सिर्फ इस्राएलियों के लिए ही नहीं, बल्कि उन सभी के लिए है जो इस्राएल की आस्था और व्यवस्था में आते हैं।
- 

□ □

## 1□ निसान (फसह) की तुलना तिशरी (सुककोत) से –

- बिरकत अशेर (Birkat Asher) एक तर्क देता है कि यदि महिलाओं को मट्ज़ा खाने (जो कि एक समय-निर्धारित आदेश है) की आज्ञा दी गई है, तो क्या उन्हें सुकका में रहने की आज्ञा नहीं दी जानी चाहिए?
- यहाँ "הַרְאָה" में "ה" का उपयोग करके यह दिखाया जाता है कि वे इस आदेश से मुक्त

हैं।

## 2□ झोपड़ी किसी और की भी हो सकती है –

- तोरा तेमीमा (*Torah Temimah*) कहते हैं कि जैसे लूलाव (Lulav) को कोई उधार नहीं ले सकता, वैसे सुकका का नियम भिन्न है - कोई भी किसी और की झोपड़ी में जाकर आज्ञा पूरी कर सकता है।
  - मिन्हत शाय (*Minchat Shai*) यह जोड़ता है कि "गाँव" (सुकका का बहुवचन) से यह शिक्षा मिलती है कि पूरी इमाएली जाति एक ही सुकका में बैठने योग्य है।
- 



हालाँकि ईसाई धर्म में सुककोत का पर्व प्रत्यक्ष रूप से नहीं मनाया जाता, लेकिन यह यीशु मसीह में पूर्ण होता है:

- यूहन्ना 1:14 – "वचन देहधारी हुआ और हमारे बीच में तंबू (सुकका) गाढ़कर रहा।"
    - यह दर्शाता है कि यीशु स्वयं हमारे बीच में निवास करने वाले सुकका हैं।
  - यूहन्ना 7:37-38 - यीशु ने सुककोत के पर्व के दौरान कहा:
 

"यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आए और पीए। जो मुझ पर विश्वास करता है, उसके हृदय से जीवित जल की नदियाँ बहेंगी।"

    - यहाँ यीशु हमारे आत्मिक आश्रय और जीवन के जल का स्रोत हैं।
  - प्रकाशित वाक्य 21:3 –
 

"देखो, परमेश्वर का तंबू मनुष्यों के बीच में है!"

    - यह दिखाता है कि परमेश्वर की उपस्थिति हमारे साथ सदा के लिए रहेगी।
- 



□ प्रिय स्वर्गीय पिता,

हम धन्यवाद करते हैं कि आपने हमें सुक्कोत का पर्व दिया, जो हमें आपकी देखभाल, सुरक्षा और उपस्थिति की याद दिलाता है।

□ □□□□, □□□ □□□□□□□ □□□ □□ □ झोपड़ियों में रहते थे, वैसे ही हमें सिखाइए कि हमारी असली आश्रय आप ही हैं □

□ □□□ □□□, □□ **जीवित जल** □□□, □□□ □□□ □□□□□ □□ □□ □□ □  
□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□

□ □□□ □□□□ □□ □ इस संसार में हम केवल यात्री हैं, और हमारा स्थायी घर आपके साथ स्वर्ग में है □

□ □□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □ एक-दूसरे की सेवा करें और आपके प्रेम को संसार में बाँटें।

**यीशु मसीह के नाम में हम प्रार्थना करते हैं, आमीन। □♦**

---

□ □□□□□□□

✓ सुक्कोत हमें याद दिलाता है कि हमारा असली आश्रय परमेश्वर में है।

✓ यीशु मसीह स्वयं "सुक्का" हैं, जो हमारे बीच निवास करते हैं।

✓ हमें इस पर्व के आत्मिक संदेश को अपनाना चाहिए - विनग्रता, आश्रय, और परमेश्वर पर पूर्ण विश्वास। □

□ □□□□□□□□□ 23:43

"ताकि तुम्हारी पीढ़ियां जानें कि जब मैं इसाएलियों को मिस्र देश से निकाल लाया, तब मैं ने उनको झोपड़ियों में बसाया। मैं यहोवा तुम्हारा परमेश्वर हूँ।"

---

□ □□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□

परमेश्वर ने इस्राएलियों को आज्ञा दी कि वे सात दिन तक झाँपड़ियों (सुककाओं) में रहें ताकि वे याद रखें कि जब वह उन्हें मिस्र से बाहर लाए थे, तब उन्होंने अस्थायी निवास (झाँपड़ियों) में रहकर यात्रा की थी।

लेकिन, "झाँपड़ियाँ" या "गाँव" (सुककोत) का सही अर्थ क्या है? इस विषय पर यहां दो रबियों के बीच विभिन्न व्याख्याएं हैं।

---

□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□

❖ 1. □□□□ (Rashi) - □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□

राशी और तारगुम ऑनकेलोस के अनुसार, "झाँपड़ियाँ" केवल अस्थायी घर नहीं थे, बल्कि परमेश्वर की महिमा के बादल (Clouds of Glory) थे, जिन्होंने इस्राएलियों को रेगिस्तान में आश्रय दिया।

"मैंने इस्राएलियों को बादलों की छाया में रखा था, ताकि वे सूरज की गर्मी और अन्य प्राकृतिक कठिनाइयों से बचें।"

□ 2. □□□ □□□□□□ (Rabbi Eliezer) - □□ □□□□ □□□□□□□□□□□

रबी एलीएज़र का मत था कि ये बादल नहीं, बल्कि वास्तविक झाँपड़ियाँ थीं, जिन्हें इस्राएलियों ने रेगिस्तान में रहने के लिए बनाया था।

उन्होंने इस विचार का समर्थन निर्गमन 12:37 से किया:

"तब इस्राएली लोग रामसेस से सुककोत नामक स्थान तक यात्रा किए।"

□ 3. □□□ □□□□□ (Rabbi Akiva) - □□□□□ □□□□ □□□

कुछ जगह रबी अकिवा ने बादलों की व्याख्या का समर्थन किया, तो कुछ स्थानों पर वे झाँपड़ियों को असली निवास मानते हैं।

उनका विचार था कि यह परमेश्वर की देखभाल का प्रतीक है, चाहे वह बादलों के रूप में हो या अस्थायी झाँपड़ियों के रूप में।

□ 4. ○○○○ ○○○○○ (Chatam Sofer) - ○○ ○○○○○ ○○ ○○○ ○○  
○○○○○ ○○

उन्होंने कहा कि सुक्कोत केवल रेगिस्तान की यात्रा का स्मरण नहीं कराते, बल्कि यह भी याद दिलाते हैं कि कैसे इस्राएलियों ने युद्ध के समय अस्थायी शिविर बनाए थे।

□ 5. ○○○○○○ (Ramban) - ○○ ○○○○○○○○○○ ○○ ○○○○○○ ○○

रांबान के अनुसार, परमेश्वर चाहता था कि इस्राएली यह सीखें कि वे स्वयं की शक्ति पर नहीं, बल्कि पूरी तरह परमेश्वर पर निर्भर रहें।

□ 6. ○○○○○ ○○○○○ ○○○○○ ○○○○ (Rav Hirsch) - ○○○○○○○ ○○  
○○○○○○○ ○○ ○○○○○

उनका मानना था कि सुक्कोत त्योहार मनुष्य की नश्वरता और परमेश्वर की अनंत सुरक्षा की शिक्षा देता है।

---

□ ○○○○○ ○○○○ ○○ ○○○○○○○ ○○ ○○○○○

□ ○○○○○○ ○○○○○○ ○○○○○ ○○ ○○○○○○○ ○○, ○○○○○  
○○○○○ ○○○○○○ ○○ ○○ ○○○○○○○○○ ○○:

**1. यीशु मसीह ही परमेश्वर का सच्चा आश्रय हैं।**

- जैसे इस्राएली झोंपड़ियों में रहे, वैसे ही हमें यीशु में रहना है (यूहन्ना 15:4)।
- मसीह में हमारा सच्चा घर है, न कि इस संसार में।

**2. यीशु ने सुक्कोत के दौरान जल और ज्योति पर प्रचार किया।**

- यूहन्ना 7:37-38 में यीशु ने कहा:

**"जो कोई प्यासा हो, वह मेरे पास आए और पीए। जो मुझ पर विश्वास करता है, उसके हृदय से जीवन का जल बह निकलेगा।"**

- यह वचन सुक्कोत के जल के अनुष्ठान के दौरान दिया गया था।

### 3. स्वर्गीय राज्य का प्रतीक

- प्रकाशितवाक्य 21:3 में कहा गया है:

**”देखो, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच है।“**

- सुक्कोत नई यरूशलेम में हमारे अनंत निवास का भी प्रतीक है।

□ □ □ □ □ □ □ □ - □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □,

हम धन्यवाद करते हैं कि तूने इस्राएलियों को जंगल में सुरक्षित रखा और उनकी हर ज़रूरत को पूरा किया। हम जानते हैं कि यीशु मसीह ही हमारा सच्चा आश्रय हैं। जैसे तूने बादलों की छाया दी, वैसे ही हमें अपनी कृपा और अनुग्रह से ढँक ले।

हमें सिखा कि हम अपने सांसारिक जीवन को अस्थायी मानें और केवल तुझ पर भरोसा करें। जैसे सुक्कोत हमें नम्रता और निर्भरता सिखाता है, वैसे ही हमें अपनी संपत्ति और शक्ति पर घमंड न करने दे। यीशु मसीह के नाम में हम प्रार्थना करते हैं।

□ □ □ □ □ □

### 🔥 मुख्य बातें (संक्षेप में)

💡 रब्बियों के विचार	💡 झोपड़ियाँ क्या थीं?
❖ राशी	परमेश्वर के महिमा के बादल 🌙
🏡 रबी एलीएज़र	असली झोपड़ियाँ 🎩
🐰 रबी अकिवा	दोनों संभव
✖️ हताम सोफेर	युद्ध में बनाई झोपड़ियाँ
💻 रांबान	आत्मनिर्भरता की परीक्षा
🏡 रव हिर्श	विनम्रता और निर्भरता

## □ लेवीव्यवस्था 23:44

□ □□□□□□□□□ 23:44

"तब मूसा ने यहोवा के पर्वों की निश्चित तिथियाँ इस्राएलियों से कह दीं।" (דבר משה את )  
("मुदि ह' अल बनी इश्राएल")

---

□ □□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□

इस पद में मूसा यहोवा के निर्धारित त्योहारों (म०'ए'ल) के बारे में इस्राएलियों को बताते हैं। यह एक महत्वपूर्ण पाठ है क्योंकि यह दर्शाता है कि मूसा ने यह आदेश समय पर दिया, ताकि प्रत्येक त्योहार अपने समय पर मनाया जाए और इसके महत्व को सही तरीके से समझा जा सके।

---

□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□

### 1. समय पर कानूनों का शिक्षण (Teaching the Laws in Their Time)

कुछ टिप्पणियाँ मानती हैं कि इस पद का उद्देश्य यह दिखाना है कि मूसा ने प्रत्येक त्योहार के समय उस त्योहार से संबंधित कानूनों को बताया।

- अदरेट एलीयाहू का कहना है कि मूसा ने पस्चाहा (पासोवर) के बारे में उस समय, अत्सेरेत (वीक्स का पर्व) के बारे में उस समय, और सुक्कोत (झोंपड़ी का पर्व) के बारे में उस समय बताया। यह टिप्पणी यह भी कहती है कि मूसा ने धार्मिक कानूनों के साथ-साथ त्योहारों से जुड़ी कथाएँ भी साझा कीं, ताकि लोगों को धार्मिक और आस्थापूर्ण रूप से सही समझ मिल सके।

- मालबिम के अनुसार, शब्द *רַבָּא'* (वह बोले) यह संकेत देता है कि मूसा ने इन त्योहारों के बारे में लंबी व्याख्या की और मौखिक कानूनों को विस्तार से बताया, जबकि *רַמָּא'* (कहा) शब्द के उपयोग से यह संकेत मिलता है कि मूसा ने जो लिखा था, वही उन्होंने बताया।

## 2. मौखिक कानून और कैलेंडर (The Oral Law and Calendar)

कुछ व्याख्याएँ इस पद को मौखिक कानून और कैलेंडर के प्रक्षिप्तिकरण के संदर्भ में देखती हैं।

- तारगुम ओनकेलोस का अनुवाद "और मूसा ने यहोवा के पर्वों की क्रमबद्धता को बताया और इस्राएलियों को सिखाया" है, जो यह इंगीत करता है कि मूसा ने त्योहारों की कृत्तिकाओं के क्रम (intercalation) के बारे में मौखिक रूप से बताया, जिसे वह सिनाई पर्वत पर प्राप्त करते थे।
- रांबान के अनुसार, ओनकेलोस के द्वारा जो "क्रम (order)" जोड़ा गया है, वह संकेत करता है कि मूसा ने चाँद के नवमाह, वर्ष में अतिरिक्त महीने जोड़ने, और त्योहारों के समय को ठीक करने के नियमों को मौखिक रूप से सिखाया।

## 3. आदेश का दायरा (The Scope of the Commandment)

इस पद में "इस्राएल के बच्चों से" शब्द का उपयोग क्यों किया गया है?

- रांबान के अनुसार, पहले की शास्त्रियों ने केवल आरोन और उनके बेटों के लिए बलि देने के आदेश दिए थे, लेकिन यह त्योहारों से संबंधित आदेश पूरी इस्राएली जाति पर लागू होता है, क्योंकि इनमें मुख्यतः विश्राम और पवित्र सभा की घोषणा शामिल है।
- इब्र एज़रा का कहना है कि मूसा ने सभी इस्राएलियों से नहीं कहा, क्योंकि वह सभी को नहीं बोल सकते थे।

## 4. नई श्रद्धाएँ (Inclusivity of Previously Unmentioned Offerings)

तोरा तेमिमा के अनुसार, यह पद ओमेर अर्पण और दो रोटियाँ जैसे त्योहारों के उल्लिखित समय में लाए जाने का आदेश भी देता है, जो पिनचास के पर्वों में खास तौर से नहीं उल्लिखित थे।

A horizontal row of 20 empty square boxes, intended for children to draw or write in.

मसीही दृष्टिकोण में इस पद का महत्व यीशु मसीह के जीवन के संदर्भ में है, जो समय-समय पर यहूदी पर्वों का पालन करते थे।

## यीशु और पर्वी का पालनः

यीशु ने पस्सोवर और सुक्कोत जैसे त्योहारों को मनाया, जिससे यह सिद्ध होता है कि यीशु ने यहूदी परंपराओं का पालन किया था।

यूहन्ना 7:37-39 में यह उल्लेख है कि सुककोत के दौरान यीशु ने जल के बारे में बात की और कहा:

”जो कोई प्यासा हो, वह मेरे पास आए और पीए।”

## ईश्वर के आदर्श समय का पालनः

इस पद में जब मूसा ने यहोवा के पर्वों का पालन करने के नियम बताये, तो मसीही मानते हैं कि हमें भी परमेश्वर के आदर्श समय का पालन करना चाहिए, जैसे यीशु ने समय-समय पर पूजा और संतुलन को बनाए रखा।

## यीशु और समय की पूरी पृतिः

यीशु ने हर समय में परमेश्वर के आदेशों का पालन किया, और यह हमें भी प्रेरित करता है कि हम परमेश्वर के साथ सही समय पर जुड़े रहें, चाहे वह प्रार्थना का समय हो या उत्सव का।

$$\square \square \square \square \square \square \square \square \square - \square \square \square \square \square \square \square \square = \square \square \square \square \square \square \square \square$$

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ ,

□□□□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□ □□  
 □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□  
 □□ □□□ □□ □□□□□, □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□  
 □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□  
 □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□  
 □□□□□, □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□ □□□□  
 □□□□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□, □□□□ □□□□ □□ □□□  
 □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□  
 □□□□ □

---

## 🔑 मुख्य बिंदु

💡 रब्बियों के विचार	🕒 समय और पालन
❖ अदरेट एलीयाहू	समय पर त्योहारों के कानूनों की शिक्षा
● मालबिम	लंबी व्याख्या और मौखिक कानून
⌚ रांबान	मौखिक कानूनों का पालन
🌙 इन्ह एजरा	सभी इस्लाएलियों से बात नहीं की गई

- ◆ परमेश्वर का आदर्श समय ◆
- ◆ यीशु ने सही समय पर पालन किया ◆
- ◆ हमें भी परमेश्वर के आदेशों का पालन करना चाहिए ◆

P163 Le.23:24 On resting on Rosh HaShannah

□ □□□□□ □□ (□□□□□□□□□□□□□□

**23:24) - □□□□□ □□□**

**"तू इस्लाएलियों से कह कि सातवें महीने के पहिले दिन तुम्हारे लिये विश्राम का दिन और**

**पवित्र सभा हो, और स्मरण दिलाने के लिये तुरही फूंकी जाए।"**

□ "ज़िखरोन तेरुआ" (*תְּרוּעָה*)

## का अर्थ और व्याख्या

"ज़िखरोन" (*תְּרוּעָה*) का अर्थ - स्मरण, याद रखना

"तेरुआ" (*תְּרוּעָה*) का अर्थ - तुरही की ध्वनि, जयजयकार, या चित्कार

इसलिए "ज़िखरोन तेरुआ" का शाब्दिक अर्थ हुआ "तुरही के द्वारा स्मरण" या "एक स्मरणीय तुरही ध्वनि"। यह पद यहूदी पर्व रोश हशनाह (यहूदी नया साल) के संदर्भ में आता है, जहाँ तुरही (शोफार) बजाई जाती है ताकि परमेश्वर को स्मरण किया जाए और आत्म-परीक्षण किया जाए।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □

### ↑ 1. □□□□ (Rashi)

□ "ज़िखरोन" का अर्थ है बाइबल के वे पद जो परमेश्वर की याद दिलाते हैं।

□ "तेरुआ" का अर्थ है *Shofar* (मेंटे के सींग) की ध्वनि।

□ □ □ □ □ □: यह अब्राहम द्वारा इसहाक का बलिदान (आकेदा) स्मरण करने का दिन है,

जब परमेश्वर ने इसहाक के स्थान पर एक मेंटे को दिया था (उत्पत्ति 22:13)।

□ 2. □□□□ □□□□□□ □ □ □□□□

□ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □ □ □ "ज़िखरोन" का अर्थ ज़िखरोनोट (स्मरणीय घटनाएँ) और

”तेरूआ” का अर्थ शोफरोत (शोफार की धनि) है।

- □ □□□□□□: यहां लोग रोश हशनाह की प्रार्थना में ज़िखरोनोट (स्मरण) और शोफ़ार के पद पढ़ते हैं।

- शोफार बजाना आत्म-परीक्षण और पश्चाताप का संकेत है।
  - यह न्याय का दिन है, लेकिन परमेश्वर की दया इसमें समाहित रहती है।
  - □ □ □ □ □ : यह योम किप्पुर (प्रायश्चित्त का दिन) की ओर बढ़ने का संकेत देता है, जहाँ लोग अपने पापों से मुक्ति मांगते हैं।

- "तेरूआ" के द्वारा परमेश्वर हमें याद करता है (॥१०॥ 10:9) □
  - जब रोश हशनाह शब्बात पर पड़ता है और शोफ़ार नहीं बजाया जाता, तब यहूदी प्रार्थनाओं में ही "ज़िख्करोन तेरूआ" कहा जाता है।
  - □ □ ॥१०॥: शब्बात के दिन केवल शब्दों द्वारा शोफ़ार की याद की जाती है।

- इसके अलावा यह नीति भी दर्शाती है कि जगन्नाथ की विशेषता वह है कि वह एक आत्मिक स्वतंत्रता का प्रतीक है।
  - इसके अलावा यह नीति भी दर्शाती है कि जगन्नाथ की विशेषता वह है कि वह एक आत्मिक स्वतंत्रता का प्रतीक है।

□ "तेरूआ" राजा के प्रति विजयोल्लास की ध्वनि है।

□ □ □□□□□: यह भजन संहिता 81 से जुड़ा हुआ है, जिसमें परमेश्वर को न्याय का राजा कहा गया है।

A horizontal row of twelve empty square boxes, intended for children to draw or color in.

"  "

A horizontal row of 20 empty square boxes, intended for students to write their answers in a handwriting practice exercise.

1 □ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ – 1 □□□□□□□□□□ 4:16

□□□□□□□□ □□ □□□□□□□; □□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□, □□□□□□□□

11

2 □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ = □ □ □ □ □ 3:2

□ □ □ □ □ □ □ □

3 [REDACTED] = [REDACTED] 8:2

$$\square \quad \square \quad - \quad \square \quad \square \quad \square \quad \square$$

A horizontal row of ten empty square boxes, intended for children to draw or color in.

A horizontal row of 14 empty square boxes, intended for children to draw or write in.

## प्रिय स्वर्गीय पिता,

प्रभु यीश मसीह के नाम में, आमीन।



✓ “ज़िखरोन तेरुआ” तुरही के द्वारा परमेश्वर के स्मरण का दिन है।

✓ न्याय और दया, आत्म-परीक्षण और पश्चाताप का समय

✓ तुरही, पश्चाताप, और नए जीवन

✓ इस दिन को परमेश्वर की याद, आत्मिक जागरण, और मसीह की वापसी के रूप में

मसीही अर्थों में भी मनाया जा सकता है।

□ "जो कान रखता है, वह सुने कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है!"

(□□□□□□□□□□ 3:22) □

P164 Le.16:29 On fasting on Yom Kippur

□ □□□□□□□ 16:29 (Leviticus

16:29) - □□□□□ □□□

"यह तुम्हारे लिए युग-युग की विधि ठहरे कि सातवें महीने के दसवें दिन तुम अपने अपने प्राण को दुःख देना और न तो कोई काम धंधा करना, न देशी न तुम्हारे बीच रहनेवाला परदेशी।"

□ □□□□□□□ 16:29 □□

□□□□□□□□□

यह वचन यौम किष्टुर (प्रायश्चित्त दिवस) के नियमों को स्पष्ट करता है:

1. **युग-युग की विधि (ולם - Chukat Olam)** - यह आदेश हमेशा के लिए स्थायी है।
2. **सातवें महीने के दसवें दिन (עשר לחודש השביעי) - यह तिशरी महीने की 10वीं तारीख को मनाया जाता है।**
3. **प्राण को दुःख देना (תענו את נפשיכם - Ta'anu Et Nafshoteichem)** - इसका तात्पर्य **उपवास और आत्मसंयम से है।**
4. **कोई काम न करना (וכל מלאכה לא תעשו - Kol Melacha Lo Ta'asu)** – इस दिन

**सभी प्रकार के कार्यों पर रोक लगाई गई है।**

**5. देशी और परदेशी दोनों के लिए (הארהה והגר בתוככם - Ha'ezrach VeHager**

**Hagar Betochechem) – यह नियम सिर्फ यहूदियों के लिए नहीं, बल्कि उनके बीच रहने वाले परदेशियों के लिए भी था।**

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □ □

1 □ "□ □ □ □ □ □ □ □ : □ □ □ □" (□ □ □ □ □  
□ □ □ □ □ □ □ □)

- **इन्ह एज्जा** - आत्मसंयम का अर्थ मुख्य रूप से भोजन और जल से वंचित रहना है।
- **रालबाग** – उपवास करने से भौतिक इच्छाएं कम होती हैं और आत्मा प्रभु के करीब आती है।
- **तोरा तेमीमा** - आत्मसंयम के पाँच रूप हैं:
  1. **भोजन और जल से दूर रहना**
  2. **स्नान न करना**
  3. **शरीर पर तेल न लगाना**
  4. **चमड़े के जूते न पहनना**
  5. **वैवाहिक संबंधों से दूर रहना**

□ □ □ □ □ □ :

□ **यशायाह 58:10** में आत्मसंयम का अर्थ भूखे को भोजन देना और जरूरतमंदों की मदद करना बताया गया है।

**2□ "□□□ □□□ □ □□□□" (□□□□□□□ □□  
□□□□)**

**मालबिम - यौम किप्पुर में काम करने की मनाही सबसे कड़ी होती है, यहाँ तक कि यह  
शब्बात के नियमों के समान है।**

**बेखोर शोर - यह दिन सिर्फ आराम करने के लिए नहीं, बल्कि आत्मिक रूप से प्रायश्चित्त  
और प्रार्थना करने के लिए दिया गया है।**

□ □□□□□:

**□ मेगिल्ला 7b में कहा गया है कि यौम किप्पुर पर कोई भी काम करना प्रभु के आदेश की  
अवहेलना है।**

**3□ "□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□  
□□□" (□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□)**

- **सिफरा - यह नियम स्त्रियों और पुरुषों दोनों पर लागू होता है।**
- **ओर हाचाइम - इस आदेश में याजकों, मूसा और हारून को भी शामिल किया गया**  
**था, जिससे पता चलता है कि यह परमेश्वर का सार्वभौमिक नियम है।**

□ □□□□□:

**□□□□□□□□□□□□ योना 3:5 - जब नीनवे के लोगों ने पश्चाताप किया, तो उन्होंने भी  
उपवास रखा और परमेश्वर ने उन पर दया दिखाई।**

□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□



यौम किप्पुर यहूदी धर्म का सबसे पवित्र दिन है, लेकिन इसका महत्व मसीही विश्वास में भी परिलक्षित होता है:

### 1□ यीशु मसीह हमारा महायाजक हैं □

- इब्रानियों 9:11-12 - प्रभु यीशु मसीह एक बार ही सभी के पापों के लिए बलिदान बने और अनंतकाल के लिए उद्धार लाए।
- मसीही धर्म में यह मान्यता है कि प्रभु यीशु ने स्वयं को बलिदान देकर यौम किप्पुर की पूर्णता दी।

### 2□ उपवास और आत्मनिरीक्षण □

- मत्ती 4:2 - यीशु ने चालीस दिन तक उपवास किया, जिससे आत्म-संयम और प्रार्थना का महत्व पता चलता है।
- मत्ती 6:16-18 - प्रभु यीशु ने कहा कि उपवास को दिखावे के लिए नहीं, बल्कि सच्चे पश्चाताप के लिए किया जाना चाहिए।

### 3□ पापों की क्षमा ✤

- 1 यूहन्ना 1:9 - "यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह विश्वासयोग्य और धर्मी है, कि हमारे पापों को क्षमा करे और हमें सारी अधर्मता से शुद्ध करे।"
- प्रभु यीशु के बलिदान के कारण, हम हर दिन पश्चाताप कर सकते हैं और परमेश्वर से क्षमा प्राप्त कर सकते हैं।

A horizontal row of fifteen empty rectangular boxes, each with a thin black border, intended for drawing or writing.

A horizontal row of 20 empty square boxes, intended for children to draw or color in.

“हे अनुग्रहकारी परमेश्वर, हम तेरे सामने पश्चाताप के साथ आते हैं। जैसे आपने यौम किंचुर में अपने लोगों को क्षमा करने का वचन दिया, वैसे ही हमें भी अपने पवित्र लहू से शुद्ध कर। प्रभु यीशु, आपने क्रूस पर अपने प्राण देकर हमें अनंत जीवन दिया। हमें आत्म-संयम, प्रार्थना और उपवास के द्वारा तेरे करीब आने की शक्ति दे। हमारी आत्माओं को नया कर, हमें पापों से शुद्ध कर, और हमें अपनी कृपा में स्थिर रख। हमें तेरे अनुग्रह में चलने की समझ दे, ताकि हम हर दिन तेरे प्रेम और करुणा में बढ़ते जाएं। प्रभु यीशु मसीह के नाम में, आमीन।”



□ यौम किप्पुर □□□□□□□□□□□□, □□□□□□□ □ □ □□□□□□□ □ □ □□□□

A horizontal row of 20 empty square boxes, intended for children to draw or write in.

A horizontal row of 30 empty square boxes, likely for drawing or writing practice.

A horizontal row of 20 empty square boxes, intended for children to draw or write in.

A horizontal bar consisting of 20 small, light-colored squares arranged side-by-side. The 10th square from the left is highlighted with a green background.

□ □□□□□□□ 16:29 (□□□□□ □□□)

**"और यह तुम्हारे लिये एक सदा की विधि ठहरे कि सातवें महीने के दसवें दिन को तुम**

**अपने प्राणों को दुःख देना, और कोई काम न करना, न तो देशी, और न तुम्हारे बीच रहने  
वाला परदेशी।"**

---

□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□□□ □□□□

**यह पद यौम किष्पुर (प्रायश्चित्त का दिन) के बारे में निर्देश देता है।**

□ "यह तुम्हारे लिये एक सदा की विधि ठहरे"

□ **इसका अर्थ है कि यह आदेश स्थायी और अनंत है, अर्थात् यह हमेशा के लिए लागू रहेगा।**

**"तुम्हारे लिये" शब्द इज़राइलियों के लिए विशेष रूप से निर्देशित है।**

□ "सातवें महीने के दसवें दिन"

□ □□ **हिन्दू कैलेंडर के अनुसार तीश्री माह का दसवां दिन है, जो कि यौम किष्पुर कहलाता है।**

**यह दिन पूरे इस्राएल के लिए आत्म-निरीक्षण और पापों से शुद्धि का दिन है।**

□ "तुम अपने प्राणों को दुःख देना"

□ **यहाँ "दुःख देना" का अर्थ है उपवास करना। यह भौतिक सुखों को त्यागने और आत्मिक  
शुद्धि पर ध्यान केंद्रित करने की आज्ञा देता है।**

□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□:

1. **भोजन और पानी का त्याग □□**

2. **स्नान न करना □X**

3. सुगंधित तेल का उपयोग न करना ☐
  4. चमड़े के जूते न पहनना ☐ X
  5. वैवाहिक संबंधों से दूर रहना ☐

## □ “कोई काम न करना”

सब्ब (विश्राम दिवस) में कार्य निषिद्ध होता है।

□ “न तो देशी, और न तुम्हारे बीच रहने वाला परदेशी”

- यह आदेश न केवल यहांी जन्मजात लोगों के लिए है, बल्कि उनके बीच रहने वाले परदेशियों (गेर) के लिए भी लागू होता है।

A horizontal row of 20 empty square boxes, intended for children to write their names in. The boxes are arranged in two rows of ten.

**1** □

□ **ओर हाख्यिम** - वे कहते हैं कि यह आदेश सभी पर लागू होता है, चाहे वे मूसा और हारून

□ रालबाग - वे मानते हैं कि यह उपवास शारीरिक इच्छाओं को वश में करने के लिए है ताकि मनुष्य आत्मा की ओर अधिक केंद्रित हो सके।

□ मालबिम - वे बताते हैं कि "हाज़राह" शब्द सभी यहूदी पुरुषों और स्त्रियों को सम्मिलित करता है, और "गेर" (परदेशी) में नए और पुराने धर्मान्तरित लोग शामिल हैं।

---

□ ?

मसीही विश्वास में, यौम किप्पुर प्रत्यक्ष रूप से मनाया नहीं जाता, **क्योंकि प्रभु यीशु मसीह को परमेश्वर के मेघे के रूप में देखा जाता है, जिसने कूस पर अपना बलिदान देकर संपूर्ण मानव जाति के लिए पूर्ण प्रायश्चित्त कर दिया (इब्रानियों 9:12)।**

✓**पुराना नियम** – □

✓**नया नियम** - प्रभु यीशु मसीह ने कूस पर अपना लहू बहाया और स्वयं को अंतिम बलिदान के रूप में दिया (यूहन्ना 1:29)।

हालाँकि, मसीही विश्वासी आत्म-परीक्षण, पश्चाताप और उपवास को महत्वपूर्ण मानते हैं, विशेष रूप से लेंट (चालीस दिन का उपवास) के दौरान।

---

□ □ □ □ □ □ □ □ - □

**हे प्रेमी और दयालु पिता,**

हम तेरा धन्यवाद करते हैं कि आपने अपने पुत्र प्रभु यीशु मसीह को पूर्ण प्रायश्चित्त के रूप में हमें दिया। जैसे तूने अपने वचन में हमें आत्मिक शुद्धि और पश्चाताप की ओर बुलाया, वैसे ही

**हम अपने मन और आत्मा को जाँचने के लिए तेरे सामने आते हैं।**

हम अपने सभी पापों को स्वीकार करते हैं और तुझसे प्रार्थना करते हैं कि हमें शुद्ध कर, ठीक जैसे यौम किप्पुर में इमाएली अपने पापों से शुद्ध किए जाते थे।

हम प्रार्थना करते हैं कि हम भौतिक सुखों से अधिक आत्मिक आशीषों पर ध्यान केंद्रित करें, और हमारे हृदय तेरी इच्छा के अनुसार बनें। हमें तू अपने अनुग्रह से पवित्र कर, ताकि हम तेरे प्रेम और बलिदान के योग्य बन सकें।

हम यह प्रार्थना प्रभु यीशु मसीह के नाम में करते हैं। आमीन! ☺✿

✿□□□□□□□:

□ □□□□□□ 16:29 □□□□□□□ □ □ □□ □ यौम किप्पुर (प्रायश्चित्त का दिन) □□

□□□□□□ □□□□ □□□

□ □ □ □□□-□□□□□□□, □□□□□, □ □ □□□□ □□□□□ □ □ □□ □□□

□ प्रभु यीशु मसीह ने हमारे लिए अंतिम प्रायश्चित्त किया, इसलिए मसीही विश्वास में हम

**पश्चाताप और उपवास के माध्यम से आत्मिक शुद्धि की ओर बढ़ते हैं।**

□ □□□□□□ 16:31 (Leviticus 16:31) □□□□□ □□□

"यह तुम लोगों के लिए विश्राम का दिन होगा, और तुम अपने प्राणों को दीन करोगे; यह सदा के लिये एक विधि होगी।"

□ □□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□

यह पद यौम किप्पुर (प्रायश्चित्त दिवस) की महत्ता को दर्शाता है और इसमें तीन महत्वपूर्ण निर्देश दिए गए हैं:

**1. "यह तुम लोगों के लिए विश्राम का दिन होगा"**

- यह दिन एक पूर्ण विश्राम (शब्दशः "शब्बत शब्बातोन") है।
- इसका अर्थ है कि इस दिन किसी भी प्रकार का कार्य नहीं किया जाएगा, ठीक वैसे ही जैसे सब्ब (शब्बत) के दिन होता है।

**2. "तुम अपने प्राणों को दीन करोगे"**

- "आत्मा का दीन करना" का तात्पर्य यहूदी परंपरा में उपवास (खाने-पीने से परहेज) से लिया जाता है।
- इसके अलावा, पाँच प्रकार की शारीरिक इच्छाओं से भी बचना होता है: भोजन, स्नान, सुगंधित तेल का प्रयोग, चमड़े के जूते पहनना और वैवाहिक संबंध।

**3. "यह सदा के लिये एक विधि होगी"**

- यह आज्ञा केवल पुराने नियम के समय तक सीमित नहीं थी, बल्कि अनंत काल के लिए लागू की गई थी।
- यह प्रायश्चित्त के दिन को एक स्थायी नियम बनाता है, जो हर पीढ़ी के लिए लागू रहेगा।

- □□□□ □□□□□: यह आत्मा और शरीर दोनों के लिए विश्राम का संकेत करता है।
- □□□□□: इसमें "पूर्ण और अतिरिक्त विश्राम" का भाव है, न केवल श्रम से, बल्कि सभी भौतिक इच्छाओं से भी।

- □□□□ □□□□□: यह दिन अन्य सब्जों से अलग है क्योंकि यह केवल परमेश्वर की महिमा के लिए विश्राम नहीं है, बल्कि अपने अस्तित्व को विनम्र करने का दिन भी है।
- 

**2 □ "□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□□"** □□ □□□□

- □□□□□ (□□□□ 74b): यहाँ "आत्मा का दीन करना" उपवास (खाने-पीने से परहेज) को इंगित करता है।

- **रालबाग:** यह हमारी शारीरिक इच्छाओं को दबाने और आत्मिक रूप से परमेश्वर की ओर लौटने का समय है।

- □□□□□□□: यह दिन केवल उपवास का नहीं, बल्कि पूर्ण समर्पण और आत्मिक बलिदान का दिन है।
- 

**3 □ "□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□"** □□ □□□□

- □□□□□□: मंदिर के विधंस के बाद भी, यौम किष्पुर का दिन प्रायश्चित्त और आत्मा की पवित्रता के लिए महत्वपूर्ण बना रहेगा।

- □□□□□□□□□□□: यह केवल मंदिर और याजकों की सेवा पर निर्भर नहीं था, बल्कि सभी लोगों के लिए व्यक्तिगत रूप से लागू किया गया था।
-

□ ?

## 1. यीशु मसीह के बलिदान से नया दृष्टिकोण

- मसीही विश्वास में, यीशु मसीह को "हमारे महायाजक" माना जाता है (इब्रानियों 4:14-16)।
- यहूदियों के लिए, यौम किप्पुर का अर्थ प्रायश्चित्त और पापों की क्षमा था, लेकिन मसीही विश्वास में, यीशु का बलिदान एक बार और सदा के लिए पूर्ण प्रायश्चित्त प्रदान करता है (इब्रानियों 9:12)।

## 2. उपवास और आत्म-परीक्षण का महत्व

- भले ही मसीही यौम किप्पुर को न मनाते हों, लेकिन उपवास और आत्म-परीक्षण की भावना आज भी प्रासंगिक है।
- मसीही जगत में, लेंट (Lent) और गुड फ्राइडे आत्म-शुद्धि और आत्मा के दीन होने के समय माने जाते हैं।

## 3. सब्ब और विश्राम

- मसीही विश्वास में, सच्चा विश्राम (Sabbath Rest) प्रभु यीशु मसीह में पूरा हुआ (मत्ती 11:28-30)।
- हालाँकि, इस दिन का सबक यह है कि हमें संसार की चिंताओं से हटकर परमेश्वर में विश्राम खोजना चाहिए।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ : □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □

**हे अनुग्रहकारी परमेश्वर,**

हम इस पवित्र दिन की महत्ता को समझते हैं और आपके सामने अपने हृदय को दीन करते हैं।

जैसे लेवितिकुस 16:31 में लिखा है, यह एक पूर्ण विश्राम और आत्मा के दीन होने का दिन है।

**हे प्रभु यीशु,**

- जिस प्रकार तूने चालीस दिन उपवास करके आत्मिक विजय प्राप्त की, हमें भी संसार की इच्छाओं पर विजय पाने की शक्ति दे।
- जिस प्रकार तूने गेटसेमनी में अपने आप को समर्पित किया, वैसे ही हम भी तेरी इच्छा को अपने जीवन में सर्वोपरि मानें।
- जिस प्रकार आपने सब के लिए बलिदान दिया, वैसे ही हम अपने अभिमान और स्वार्थ को छोड़कर दूसरों की भलाई के लिए जीएं।

**हे प्रभु, हमें आत्मिक विश्राम और सच्ची शांति दे, जो केवल तुझ में मिलती है।**

हम अपने प्राणों को तेरे आगे दीन करते हैं और तेरा धन्यवाद करते हैं कि तूने हमारे लिए सच्चा प्रायश्चित किया।

**प्रभु यीशु मसीह के नाम में, आमीन!** □ ✡

□ □ □ □ □ □ □ :

✓ □ □ □ □ □ □ □ 16:31 विश्राम, आत्मिक दीनता और प्रायश्चित □ □ □ □ □ □ □

□ □ □

✓ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ यौम किष्पुर का अनिवार्य नियम है।

✓ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ पूर्ण प्रायश्चित्त प्रदान किया,

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

✓ □ □ □ □ □ □ □ उपवास, आत्म-परीक्षण, और धीशु के बलिदान की सराहना कर सकते हैं।

P166 Le.23:35 On resting on the first day of Sukkot

□ 23:35 – □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □

"पहले दिन पवित्र सभा होगी; उस में कोई परिश्रम का काम न करना!"

❖ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

इस पद में परमेश्वर यह आदेश देते हैं कि पहले दिन (जो यहाँ पर कूर्मोत्सव / सुक्कोत पर्व का संदर्भ देता है) "पवित्र सभा" (שְׁמִקְרָא קּוֹדֵשׁ - *mikra kodesh*) आयोजित की जाए और "कोई परिश्रम का काम" (כָּל מְלָאכָת עֲבוֹדָה - *kol melakhet avodah*) न किया जाए।

□ "पवित्र सभा" (שְׁמִקְרָא קּוֹדֵשׁ) का अर्थ

इसका सीधा अर्थ है कि यह दिन एक विशेष रूप से अलग और पवित्र दिन होगा, जिसमें लोग इकट्ठा होकर परमेश्वर की आराधना करेंगे।

□ राशी (Rashi):

- वे समझाते हैं कि "पवित्र सभा" का अर्थ है दिन को विशेष रूप से अलग करना।
- वे इसे उत्तम वस्त्र पहनने और प्रार्थना करने से जोड़ते हैं, ताकि यह अन्य दिनों से अलग दिखे।
- अन्य पर्वों में यह भोजन और पेय से होता था, लेकिन यहाँ यह मुख्य रूप से प्रार्थना और वस्त्रों द्वारा होता है।
- यह व्याख्या विशेष रूप से यौम किप्पूर (प्रायश्चित दिवस) के लिए लागू होती है, जहाँ उपवास करने के कारण भोजन शामिल नहीं होता।

□ **बिरकात आसेर (Birkat Asher):**

- वे प्रश्न करते हैं कि राशी ने अपनी व्याख्या यहाँ क्यों रखी, जबकि "पवित्र सभा" पहले भी कई बार आया है (लैव्यव्यवस्था 23:7, 27 में)।

□ **सिफ्ते चाखामिम (Siftei Chakhamim):**

- वे समझाते हैं कि "पवित्र सभा" का उल्लेख यहाँ इसलिए किया गया क्योंकि यह यौम किप्पूर के साथ जुड़ा है और यह बताता है कि पवित्रता का यह रूप रात तक फैला हुआ है।

□ **मस्किल ले-दाविद (Maskil LeDavid):**

- वे मानते हैं कि राशी ने जानबूझकर इस वाक्य को इस तरह रखा ताकि समझाया जा सके कि जैसे कार्य-विराम रात में चलता है, वैसे ही "पवित्र सभा" भी।

□ **पर्देस योसेफ (Pardes Yosef):**

- वे बताते हैं कि राशी अलग-अलग पर्वों के लिए "पवित्र सभा" को भिन्न रूप से

## परिभाषित करते हैं।

- सुककोत (तंबुओं का पर्व) में यह भोजन और उत्सव से संबंधित है, लेकिन यौम किप्पूर में  
यह मुख्य रूप से प्रार्थना और वस्त्रों द्वारा ही संभव है।

### □ मालबिम (Malbim):

- वे "पवित्रता" को "अलगाव" के रूप में परिभाषित करते हैं।
  - इस दिन के लिए आवश्यक है कि इसे भाषण, वस्त्र, और व्यवहार से अलग किया जाए।
- 

### □ "कोई परिश्रम का काम न करना" (כל מלאכת שבת) का अर्थ

- इसका तात्पर्य है कि कोई कठिन श्रम या परिश्रम वाला कार्य न किया जाए।
  - इस निषेध का स्तर सब्ब (Sabbath) से कुछ हल्का है, क्योंकि यह विशेष रूप से "परिश्रम का काम" (toilsome labor) को प्रतिबंधित करता है, जबकि सब्ब पर सभी कार्य निषेध होते हैं।
  - कुछ रब्बियों का मानना है कि यह विशेष रूप से उद्योग और व्यापार जैसे श्रम-प्रधान कार्यों पर लागू होता है, जबकि व्यक्तिगत जरूरतों के कुछ हल्के कार्य की अनुमति हो सकती है।
- 

□ ?

↙ ईसाई विश्वास में "पवित्र सभा" का विचार महत्वपूर्ण है।

- चर्च की सभाओं में सामूहिक प्रार्थना और उपासना की परंपरा यही सिद्धांत दर्शाती है कि विशिष्ट दिनों को परमेश्वर के लिए अलग किया जाए।
- हालाँकि, मसीही धर्मग्रंथों में सुककोत पर्व या यहौदी त्योहारों का पालन अनिवार्य रूप से ईसाइयों के लिए नहीं बताया गया है, लेकिन यह पर्व मसीही विश्वासियों के लिए एक प्रतीकात्मक अर्थ रखता है।
- यीशु मसीह के समय में यह पर्व मनाया जाता था, और यूहन्ना 7:37-38 में यीशु ने सुककोत के अंतिम दिन "जीवन के जल" का संदर्भ दिया।

□ नया नियम (New Testament) इस पद को कैसे दर्शाता है?

- इब्रानियों 10:25 में कहा गया है, "हम अपनी सभा में जाना न छोड़ें, जैसा कुछ लोगों की रीति है, परन्तु एक दूसरे को उत्साहित करें।"
- यीशु मसीह ने भी विश्राम और आराधना के महत्व को सिखाया, यह दिखाते हुए कि केवल बाहरी नियमों से अधिक, हृदय की सच्ची उपासना आवश्यक है (यूहन्ना 4:24)।

□ कुछ मसीही समूह, विशेषकर मेसियानिक यहौदी और इवेंजेलिकल ईसाई, सुककोत को यीशु मसीह के दूसरे आगमन की प्रतीकात्मकता से जोड़ते हैं।

□ □□□□□□□□ - □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□  
□□□□□□□

हे अनंत और पवित्र परमेश्वर,

हम तेरा धन्यवाद करते हैं कि आपने हमें आराम और उपासना के दिन दिए हैं, जब हम एकत्र होकर तेरा नाम ऊँचा कर सकते हैं।

❖ □□□□□, □□□ □□□ □□□ □□□□ □ □ □□□□□ □ □ सच्ची आराधना

आत्मा और सच्चाई से होती है, हम प्रार्थना करते हैं कि हमारे हृदय भी तेरा नाम सच्चाई से महिमा दें।

□ जैसे प्रभु यीशु ने पवित्रता और विश्राम का आदर्श स्थापित किया, वैसे ही हम भी अपने जीवन को तुझ में समर्पित करें।

□ □ □ □□□□ □□□ □ □ □□□□□ □ □ □□□ □ □ पवित्र बुलाहट हो, जहाँ हम अपने व्यर्थ के परिश्रम से दूर होकर तेरी आराधना में मग्न रहें।

□ हे प्रभु, हमारे जीवन को एक जीवित बलिदान बना, ताकि हम अपने कार्यों और जीवन से तेरी महिमा कर सकें।

□ प्रभु यीशु मसीह के नाम में, आमीन।

---

□ □□□□□□□

✓ □□□□□□□□□□ 23:35 □□□ पवित्र सभा और कार्य-विराम □ □ □□□□ □ □

□□□

✓ □□ □□□□□□ □□□ □ □ □□□□□ □ □ □□□ □□□ □ □ □ □□□□  
□□□□ □□, □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□, □□□□□□□□ □ □  
□□□□□□ □ □ □□□□□□ □□□ □□□ □□□

✓ □□□□ □□□□□□ □ □□ □□, आराधना के लिए एक विशेष समय निर्धारित करना

महत्वपूर्ण है □

✓ □ सच्ची उपासना हृदय से होती है,

जो इस पद की भावना को पूर्ण करती है।

P167 Le.23:36 On resting on (the 8th day) Shemini Atzeret

□ 23:36 (Leviticus  
23:36) - □ □ □ □ □ □ □

"सात दिन तक तुम यहोवा के लिये हवन करनी होगी; और आठवें दिन भी तुम्हारे लिये  
पवित्र सभा होगी, और तुम यहोवा के लिये हवन चढ़ाना; वह औपचारिक महासभा (תְּצִיר)

- Atzeret) होगी; उस दिन कोई परिश्रम का काम न करना!"

## ❖ "Atzeret" (תְּצִיר) का अर्थ और समझ

बाइबल में "अत्सेरेत" (Atzeret) शब्द का अर्थ "रोकना" या "ठहराना" होता है। यह दिन परमेश्वर  
द्वारा अपने लोगों को और अधिक समय तक अपने साथ रोकने का प्रतीक है। सात दिनों के  
पर्व के बाद आठवां दिन एक विशेष पवित्र सभा के रूप में मनाया जाता था, जहाँ कोई कठिन  
श्रम नहीं किया जाता था।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

### 1 □ □ □ □ (Rashi) - □ □ □ □ □ □ □

राशी ने इसे एक राजा के दृष्टांत से समझाया। जैसे एक पिता अपने बच्चों के साथ अधिक समय बिताना चाहता है, वैसे ही परमेश्वर अपने लोगों के साथ अधिक समय बिताना चाहता है, इसलिए आठवां दिन "अत्सेरेत" दिया गया।

□ **उदाहरण:** जैसे कोई परिवार मिलकर सात दिन की छुट्टियाँ बिताता है और जब लौटने का समय आता है, तो माता-पिता बच्चों से कहते हैं, "एक दिन और ठहर जाओ," क्योंकि वे उन्हें छोड़ना नहीं चाहते। इसी तरह, परमेश्वर हमें अपने साथ और समय बिताने को कहता है।

### 2 □ □ □ □ □ □ (Bekhor Shor) - □ □ □ □ □ □

वे कहते हैं कि क्यों केवल सुकोत (Sukkot) के बाद "अत्सेरेत" होता है, लेकिन फसह (Passover) और शावुओत (Shavuot) के बाद नहीं? क्योंकि सुकोत के बाद अगला पर्व (फसह) दूर था, इसलिए परमेश्वर ने अपने लोगों को और एक दिन रोक लिया।

### 3 □ □ □ □ □ □ □ (HaKtav VeHaKabalah) -

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

वे मानते हैं कि यह केवल परमेश्वर का हमें रोकना नहीं, बल्कि हमारा भी परमेश्वर से जुड़ाव को बनाए रखने की इच्छा दर्शाता है। इस दिन हम पर्व के दौरान प्राप्त की गई आध्यात्मिक शिक्षाओं को आत्मसात करते हैं।

### 4 □ □ □ □ □ (Rav Hirsch) - □ □ □ □ □

□ □ □ □ □

वे "अत्सेरेत" को एक ऐसा दिन मानते हैं जब हम नई शिक्षाएँ प्राप्त नहीं करते, बल्कि जो सीखा

है उसे स्थायी बनाते हैं। यह हमें पर्व के बाद की सामान्य दिनचर्या में खोने से रोकता है।

**5 □ □□□□□ (Ramban) - □□□□ □□ □□□□□□**

रम्भान इसे सृष्टि के सात दिनों और उसके बाद के विश्राम से जोड़ते हैं। वे इसे पवित्रता और संपूर्णता का प्रतीक मानते हैं।

**6 □ □□□□□ (Sforno) - □□□□□□ □□ □□□□□**

वे इसे केवल विश्राम का दिन नहीं मानते, बल्कि इसे एक दिन बताते हैं जब हम अधिक प्रार्थना और अध्ययन में समय बिताते हैं।

**7 □ □□□□□ □□□□□ (Maskil LeDavid) -**

□□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□

वे बताते हैं कि क्यों यह पर्व बाकी राष्ट्रों से अलग केवल इस्राएलियों के लिए रखा गया था - यह परमेश्वर के और उनके बीच के विशेष संबंध को दर्शाता है।

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□□□□□

**"अत्सेरेत" का मसीही जीवन में गहरा अर्थ है।**

□ □ □ □□□ □□□□□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □  
 □ □ □ □□□, □□□□ □ □ □ □□□□□ □ □ □ □ □ □ □ □ □  
 □□□ □□□ □□□□□

□ □□□ □□□ □ □ □□, "मेरे साथ बने रहो, और मैं तुम में बना रहूँगा।"

(□□□□□ 15:4) – □ □ "□□□□□□" □ □ □□□□□ □ □ □ □ □ □ □ □ □  
 □□□ □□□□□□ □ □ □□□□ □ □ □ □ □ □ □ □  
 □ □ □□□ □□□ □ □ □□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □ - □ □ □ □ □ □, □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

---

## □ प्रार्थना - यीशु मसीह के जीवन से प्रेरित होकर

**प्रिय स्वर्गीय पिता,**

हम धन्य हैं कि आपने हमें अपने प्रेम में बुलाया और हमें अपनी उपस्थिति में ठहरने के लिए

आमंत्रित किया। जैसे आपने पर्व के आठवें दिन इसाएलियों को अपने पास रखा, वैसे ही हमें

भी अपने प्रेम में स्थिर बनाए रखिए।

□ □ □ □ □ □, □ □ □ □ □, "जो मुझ में बना रहता है और मैं उसमें, वही बहुत फल

**लाता है।" (इश्योर 15:5) – □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □**

□ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □, □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □

□ □ □ □

□ □

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □, □

□ □

**प्रभु यीशु के नाम में, आमीन! □ ✤**

P168 Le.23:42 On dwelling in a Sukkah (booth) for seven days

## □ लैव्यव्यवस्था 23:42 (Leviticus 23:42) - हिंदी में

**"तुम सात दिन तक झोपड़ियों में रहोगे; इसाएल में जन्मे हुए सब लोग झोपड़ियों में रहेंगे।"**

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

यह पद हमें परमेश्वर द्वारा दी गई सुक्कोत (झोपड़ियों का पर्व) की आज्ञा देता है। इसाएलियों को सात दिनों तक झोपड़ियों (सुक्काह) में रहना था ताकि वे याद रखें कि जब परमेश्वर ने उन्हें मिस्र से निकाला, तब वे अस्थायी निवास में रहते थे और केवल परमेश्वर की सुरक्षा पर निर्भर थे।

□ मुख्य उद्देश्य:

1. **परमेश्वर की देखभाल और संरक्षण को याद करना।**
  2. **भरोसे का सबक -** जिस तरह इसाएली परमेश्वर पर निर्भर थे, वैसे ही हमें भी अपनी सुरक्षा और आशीषों के लिए केवल परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए।
  3. **सच्ची खुशी और कृतज्ञता -** यह पर्व कटनी (फसल) के मौसम में मनाया जाता था, इसलिए यह हमें यह भी सिखाता है कि हमारी सभी आशीषें परमेश्वर से आती हैं।
- 

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

भिन्न-भिन्न रबियों ने इस पद की अलग-अलग व्याख्या दी है:

1 □ □ □ □ (Rashi)

□ "झोपड़ियों में रहना" का अर्थ है वास्तव में सुक्काह (झोपड़ी) में रहना, केवल औपचारिकता नहीं। यह दर्शाता है कि हमें अपनी रोजमरा की ज़िंदगी को अस्थायी मानकर, परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए।

## 2 □ राम्बन (Ramban)

□  
इसाएलियों को जंगल में परमेश्वर ने बादलों के द्वारा सुरक्षा दी थी।

## 3 □ क्ली याकर (Kli Yakar)

□ उन्होंने बताया कि यह पर्व मानव अभिमान को तोड़ता है। जब कोई अपनी स्थायी सुख-सुविधा छोड़कर एक साधारण झोपड़ी में रहता है, तो उसे याद आता है कि सच्चा आश्रय केवल परमेश्वर में ही है।

## 4 □ मल्बिम (Malbim)

□ "□ □ □ □ □" □, बल्कि यह एक आध्यात्मिक प्रतीक है कि हमें दुनिया की क्षणिक चीज़ों से अधिक, आत्मिक चीज़ों पर ध्यान देना चाहिए।

## 5 □ राव हिर्श (Rav Hirsch)

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ "□ □ □ □ □ □" □ □ □ □ □ □ □ □ □  
आध्यात्मिक पुनर्निर्माण है, जो हमारे जीवन को परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप ढालता है।

□ □ □ □ □ □ □ □ ?

यद्यपि मसीही विश्वास में सुककोत एक आधिकारिक पर्व के रूप में नहीं मनाया जाता, फिर भी यह कई गहरे आत्मिक संदेश देता है:

1. **प्रभु यीशु मसीह में पूर्णता** - प्रभु यीशु ने कहा, "मनुष्य केवल रोटी से नहीं जीता, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है" (मत्ती 4:4)। इोपड़ी में रहना हमें यह सिखाता है कि असली सुरक्षा परमेश्वर के वचनों में है, न कि सांसारिक चीज़ों में।
2. **प्रभु यीशु ही हमारी सच्ची सुरक्षा है** - जिस तरह इस्राएली जंगल में परमेश्वर पर निर्भर थे, वैसे ही प्रभु यीशु मसीह हमारे जीवन का असली आश्रय और उद्धारकर्ता हैं।
3. **अनंत जीवन की प्रतीक्षा** - यह पर्व हमें याद दिलाता है कि हमारा यह पृथ्वी पर जीवन अस्थायी है, और हमें स्वर्ग के अनंत घर की ओर देखना चाहिए।

□ **यूहन्ना 1:14** – "वचन देहधारी हुआ और हमारे बीच में डेरा किया (tabernacled among us)।"

(यह दिखाता है कि यीशु ही हमारा "सच्चा सुककाह" है, जिसमें हम शरण लेते हैं।)

□ **प्रभु यीशु मसीह के जीवन से प्रेरित एक प्रार्थना**

**प्रिय प्रभु यीशु मसीह,**

□ □ □ □ , □

□ □

□ □ □ □ □ □ , □

□ □ □ □ □ □ , □

□ □ □ □ , □ □ □ □ □ तेरी अनंत कृपा पर ध्यान दें। हम अपने जीवन में तेरी उपस्थिति को प्राथमिकता दें, ठीक वैसे ही जैसे तेरा वचन हमारे बीच "डेरा" डाले रहा।

□ ,

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ हमारा असली घर स्वर्ग में है, जहाँ तूने हमारे लिए स्थान तैयार किया है।

□ □ □ □ □ , □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ , □ □ □ □ □ □ □

□ , □ □ □ □ □ □

□ □

□ हम प्रभु यीशु मसीह के नाम से यह प्रार्थना करते हैं। आमीन। □

---

## ❖ □ □ □ □ □ (Summary)

- सुक्कोत पर्व □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □
- □ □ □ □ □ □ □ □ □ हमारा असली आश्रय केवल परमेश्वर है □
- यीशु मसीह ही हमारा सच्चा "सुक्काह" (आश्रय) हैं □
- हमें संसार में परदेशी समझाकर स्वर्ग की ओर देखना चाहिए।

P169 Le.23:40 On taking a Lulav (the four species) on Sukkot

□ □ □ □ □ □ □ □ 23:40 - □ □ □ □ □ □ □ □

”और तुम पहले दिन अपने लिये सुंदर वृक्ष का फल, खजूर की डालियाँ, घने वृक्ष की टहनियाँ, और नदियों के किनारे की बल्लरी लो, और सात दिन तक अपने परमेश्वर यहोवा के सामने आनंद मनाओ।“

---

## □ □ □ □ □ □ □ □ □ (Four Species)

□ □ □ □ □ □

1 □ פרי עץ הדר (Peri Etz Hadar) - सुंदर वृक्ष का फल (Etrog)  
- एत्रोग)

□ □ □ □ □ □ (citron) □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ रब्बियों की व्याख्या:

- राशी (Rashi): यह एक ऐसा पेड़ है, जिसका लकड़ी और फल दोनों एक ही स्वाद के होते हैं।
- रम्बान (Nachmanides): *Hadar* शब्द अरामी भाषा में ”मनोरम“ या ”प्रिय“ के लिए आता है, जो एत्रोग को दर्शाता है।
- रब्बी हिर्श (Rav Hirsch): यह फल कई वर्षों तक पेड़ पर रह सकता है, जो इसे विशेष बनाता है।
- क्ली याकर (Kli Yakar): यह उन लोगों का प्रतीक है, जिनके पास ज्ञान (Torah) और अच्छे कर्म (Good Deeds) दोनों होते हैं।

- **तोरा तमीमा (Torah Temimah):** एत्रोग को देखने का सपना देखने से व्यक्ति

**परमेश्वर की दृष्टि में प्रिय बनता है।**

## मसीही संदेशः

यह हमें यीशु मसीह की पूर्णता की याद दिलाता है, जिनके पास ज्ञान और अच्छे कर्म दोनों

૪

2□ כפת תמרים (Kapot Temarim) - खजूर की डालियाँ

## (Lulav - लूलाव)

## रबियों की व्याख्या:

- **राशी (Rashi):** यह नाम "कपट" इस कारण दिया गया क्योंकि इसकी पत्तियाँ एक साथ बंधी होती हैं।
  - **क्ली याकर (Kli Yakar):** यह उन लोगों को दर्शाता है जिनके पास ज्ञान (Torah) तो है, लेकिन अच्छे कर्म कम हैं।
  - **पारदेस योसेफ (Pardes Yosef):** यह रीढ़ की हड्डी जैसा सीधा होता है, जो विश्वास की मजबूती दिखाता है।

## □ मसीही संदेशः

**यीशु हमें सिखाते हैं कि केवल ज्ञान पर्याप्त नहीं, हमें अपने विश्वास को कर्मों में प्रकट करना**

**चाहिए। (याकूब 2:17)**

---

### 3□ ענף עבאות (Anaf Etz Avot) - घने वृक्ष की टहनियाँ

**(Hadass - हदास / मर्टल)**

□ □

**□ रब्बियों की व्याख्या:**

- **राशी (Rashi):** यह तीन पत्तियों के समूहों में उगता है, जो इसे "बुना हुआ" (braided) रूप देता है।
- **क्ली याकर (Kli Yakar):** इसकी महक तो होती है, लेकिन यह खाने योग्य नहीं, इसलिए यह उन लोगों का प्रतीक है जिनके पास अच्छे कर्म हैं, लेकिन ज्ञान नहीं।

**□ मसीही संदेश:**

**यीशु ने हमें सिखाया कि अच्छे कर्म अनिवार्य हैं, लेकिन हमें परमेश्वर का ज्ञान भी चाहिए।**

**(मत्ती 5:16)**

---

### 4□ נחל (Arvei Nachal) - नदियों के किनारे की वल्लरी

**(Willow - विलो पेड़)**

□ □

□ रब्बियों की व्याख्या:

- **राशी (Rashi):** यह उन विलो पेड़ों को दर्शाता है, जो सिर्फ पानी के पास बढ़ते हैं।
- **क्ली याकर (Kli Yakar):** इसमें ना तो स्वाद होता है, ना ही खुशबू। यह उन लोगों को दर्शाता है जिनके पास ना तो ज्ञान (Torah) है और ना ही अच्छे कर्म।
- **तोरा तमीमा (Torah Temimah):** फिर भी, इसे बाकी तीन प्रजातियों के साथ मिलाकर रखना अनिवार्य है, क्योंकि यह समुदाय की एकता को दर्शाता है।

□ मसीही संदेश:

यीशु ने हमें सिखाया कि परमेश्वर सभी को स्वीकार करते हैं, यहां तक कि वे भी जो कमज़ोर हैं या जिनमें अच्छे कर्म नहीं हैं। (लूका 19:10)

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □

✓ □

**एकता** □ □ □ □ □ □ □

✓ □

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

✓ सुखोत (सूकॉट) पर्व हमें याद दिलाता है कि यीशु हमारा "परमेश्वर के साथ निवास"

**(Emmanuel - God with us)** है। (यूहन्ना 1:14)

---

॥ अवाहनः अवाहनः ॥  
॥ अवाहनः अवाहनः ॥

**प्रिय प्रभु यीशु मसीह,**

॥ अवाहनः अवाहनः ॥  
॥ अवाहनः अवाहनः ॥, अवाहनः अवाहनः ॥,  
॥ अवाहनः अवाहनः ॥  
॥ अवाहनः अवाहनः ॥, अवाहनः अवाहनः ॥  
॥ अवाहनः ॥  
॥ अवाहनः अवाहनः ॥, अवाहनः ॥  
★ ॥ अवाहनः अवाहनः ॥, अवाहनः ॥  
॥ अवाहनः ॥  
॥ अवाहनः ॥, ॥!

★ ॥ अवाहनः ॥:

॥ अवाहनः ॥ **विविधता में एकता** ॥  
॥ अवाहनः ॥  
॥ अवाहनः ॥  
॥ अवाहनः ॥ **यीशु मसीह की उपस्थिति का प्रतीक है।**  
॥ अवाहनः ॥

P170 Nu.29:1 On hearing the sound of the Shofar on Rosh HaShannah

## गिनती 29:1 का हिंदी अनुवाद

"सातवें महीने के पहले दिन तुम्हारे लिये एक पवित्र सभा होगी; उस दिन कोई परिश्रम का

**काम न करना। वह दिन तुरही का दिन ठहराया जाए।” (गिनती 29:1)**

---

## इसका अर्थ और व्याख्या

यह पद सातवें महीने के पहले दिन की विशेषता को दर्शाता है, जिसे यहूदी परंपरा में ”रोश हशाना“ (नया वर्ष) कहा जाता है। यह एक पवित्र दिन है, जिसमें कोई श्रमसाध्य कार्य नहीं किया जाता, और इसे शोफार (तुरही) फूंकने का दिन बताया गया है। इस दिन आत्म-निरीक्षण, पश्चाताप और प्रार्थना का विशेष महत्व होता है।

---

## रब्बियों की व्याख्याएं और उनके दृष्टिकोण

### 1. अबरबनेल

- वे कहते हैं कि ”यौम तेरूआह“ (शोफार का दिन) और ”यौम हकिपुरिम“ (प्रायशिच्त का दिन) एक साथ जुड़े हुए हैं।
- यह दिन सिर्फ एक उत्सव नहीं, बल्कि आत्मनिरीक्षण और आत्मा की शुद्धता का अवसर भी है।

### 2. हाअमेक दवार

- वे इसे ”याद करने का दिन“ मानते हैं और इसे लैब्यव्यवस्था 23:24 से जोड़ते हैं, जहां

**लिखा है:**

**"सातवें महीने के पहले दिन विश्राम का दिन होगा, जो तुरही फूंकने का स्मरण कराएगा।"**

### **3. इन्हें एज़रा**

- वे सवाल उठाते हैं कि अगर यह दिन "तुरही फूंकने का दिन" है, तो यह अन्य त्योहारों के लिए क्यों नहीं कहा गया?
- वे यह भी स्पष्ट करते हैं कि बलिदान के समय बजाई जाने वाली ध्वनि एक "तेकिआ" होती है, जबकि यहाँ तिशेष रूप से "तेरूआह" (टूटी हुई ध्वनि) का उल्लेख है।

### **4. रलबाग बेतर हमीलोत**

- वे बताते हैं कि इस दिन का मुख्य अनुष्ठान शोफार बजाना है, लेकिन बलिदानों को भी अनिवार्य किया गया है।
- रोश हशाना पर चढ़ाया जाने वाला बलिदान नए चंद्र माह के बलिदान से अलग होता है, क्योंकि इसमें केवल एक बैल चढ़ाया जाता है, जबकि अन्य महीनों में दो बैल चढ़ाए जाते थे।

### **5. रब्बी हिर्श**

- वे इसे एक आत्मिक पुनरावलोकन का दिन मानते हैं।

- सातवें महीने को विश्राम और आत्मिक पुनर्जीवन का महीना कहा जाता है, जैसे सातवां दिन (सब्बा) एक पवित्र विश्राम का दिन होता है।
- वे शोफार को आत्मा को जगाने और मनुष्य को परमेश्वर की ओर वापस बुलाने का प्रतीक मानते हैं।

## 6. स्टेन्सल्टज़

- वे सीधे तौर पर कहते हैं कि यह दिन एक पवित्र सभा है, जिसमें कोई कठिन परिश्रम नहीं किया जाता और इसे "शोफार का दिन" कहा जाता है।

## 7. तोराह तेमीमाह

- वे तलगुद (Talmud) की व्याख्याओं को उद्धृत करते हैं:
  - इस दिन किए जाने वाले कामों में शोफार फूंकना शामिल है, लेकिन आटा गूंथना निषिद्ध है।
  - शोफार फूंकना केवल दिन के समय किया जा सकता है, रात में नहीं।
  - यदि यह दिन सब्बा (शनिवार) के दिन आए, तो शोफार फूंकने के बजाय सिर्फ इसे याद किया जाता है।

## आज के मसीही चर्च में इसका क्या महत्व है?

यद्यपि यह पर्व यहूदी परंपरा का हिस्सा है, लेकिन इसके कई आत्मिक संदेश मसीही विश्वास में भी महत्वपूर्ण हैं:

### 1. यीशु और तुरही की प्रतीक्षा:

- प्रकाशितवाक्य 11:15 में लिखा है कि "सातवें स्वर्गदूत ने तुरही फूंकी, और स्वर्ग में यह बड़ा शब्द हुआ: 'संसार का राज्य हमारे प्रभु और उसके मसीह का हो गया, और वह युगानुयुग राज्य करेगा!'"
- मसीही विश्वासियों के लिए, यह दिन प्रभु यीशु के पुनरागमन और परमेश्वर के राज्य की स्थापना का प्रतीक बन सकता है।

### 2. पश्चाताप और आत्मिक जागृति:

- यह दिन आत्मनिरीक्षण, प्रायशिच्छा और पुनः समर्पण का समय है, जो मसीही जीवन में भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।
- जैसे यहूदियों के लिए यह नया वर्ष एक नया आरंभ है, वैसे ही मसीही विश्वासी इसे आत्मिक नवीकरण का अवसर मान सकते हैं।

### 3. यीशु मसीह - अंतिम बलिदान:

- जबकि यहूदी रोश हशाना पर बलिदान चढ़ाते थे, यीशु मसीह ही परम बलिदान

हैं, जिन्होंने एक ही बार में हमारे सभी पापों के लिए बलिदान दिया (इब्रानियों

10:10)।

---

## इससे जुड़ी एक मसीही प्रार्थना

□ प्रार्थना: आत्मिक जागृति और प्रभु के राज्य की प्रतीक्षा □

□ "हे प्रभु यीशु, हम तेरे पुनरागमन की तुरही की प्रतीक्षा करते हैं!"

प्रिय परमेश्वर,

आपने अपने वचन में हमें तुरही फूंकने का दिन दिया, जो आत्मिक जागृति और नए आरंभ का प्रतीक है।

□ हम प्रार्थना करते हैं कि आप हमारे दिलों को जगाए, ताकि हम पश्चाताप करें और

अपने जीवन को आपके अनुरूप बना सकें।

□ जैसे यह दिन नए वर्ष का आरंभ करता है, वैसे ही आप हमारे जीवन में एक नया आरंभ कर।

□ हमें आत्मिक रूप से पुनर्जीवित कर, ताकि हम आपके राज्य की खोज में लगे रहें।

□ हम विश्वास करते हैं कि एक दिन स्वर्गदूत तुरही फूंकेंगे और आपका राज्य स्थिर होगा।

□ हमें तैयार कर, कि जब आप आकर हमें बुलाए, तो हम तैयार और योग्य पाए जाएं।

□ प्रभु यीशु मसीह के नाम में, आमीन! □

---

□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□:

□ □□□□ 29:1 □□ □**रोश हशाना (शोफार का दिन)** □□ □□□□□□ □□

□ □□□□□□□ □□ □□ □**आत्मिक पुनरावलोकन, पर्चाताप, और परमेश्वर की ओर लौटने का दिन** □□□□

□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□ **यीशु के पुनरागमन, आत्मिक जागृति, और नए आरंभ** □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□

□ **यीशु मसीह ही अंतिम बलिदान हैं, जिन्होंने एक ही बार में पापों का नाश कर दिया।**  
**□ तुरही की प्रतीक्षा में, हम अपने जीवन को परमेश्वर के लिए तैयार रखें।**

□ "□□ □□□□ □□□□, □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□!" □★

## COMMUNITY

P171 Ex.30:12 - 13 On every male giving half a shekel annually to Temple

□ □□□□ □□: □□□□□□ **30:12**

"जब तू इस्राएलियों की गिनती ले, तो उनके गिने जाने के समय, हर व्यक्ति अपनी प्राण-रक्षा के लिए यहोवा को प्रायश्चित दान दे, ताकि जब उनकी गिनती हो, तो उन पर कोई विपत्ति न पड़े।"

★ □□ □□ □□□□□□

इस पद में परमेश्वर ने इस्राएलियों की गिनती लेने का एक विशेष नियम बताया। जब भी उनकी जनगणना हो, प्रत्येक व्यक्ति को आधा शेकेल देना होगा। यह "कोफेर नेफेर" (प्राण का

**प्रायश्चित्त** कहलाता है। यह दान इस्राएलियों को विपत्ति (नेगेफ़ - महामारी या संकट) से बचाने के लिए था।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ ?

1 □ **सीधी गिनती से बचावः** इस्राएलियों की सीधी गिनती करने से आयिन हरह(बुरी नजर)

लग सकती थी, जिससे विपत्ति आ सकती थी।

2 □ **प्रायश्चित्त और सुरक्षा:** □ □ □ □ - □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

3 □ **मिलापवाले तंबू के लिए चंदा:** इसे पवित्र स्थान के निर्माण और आराधना के लिए

इस्तेमाल किया जाता था।

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ (Rashi)

- “सीधी गिनती न करके आधे-शेकेल के द्वारा गिनती लो, ताकि बुरी नजर न लगे।”

- राजा दाऊद ने जब बिना यह नियम माने इस्राएलियों की गिनती की, तो उन पर

**महामारी आ गई** (2 शमूएल 24:10-15)।

- इस्राएलियों की दो बार गिनती इसी विधि से हुई - पहली बार तंबू के निर्माण के लिए, दूसरी बार सार्वजनिक बलिदानों के लिए।

□ □ □ □ □ □ (Ramban)

- यह नियम केवल मूसा के समय के लिए नहीं, बल्कि हर पीढ़ी के लिए है।

- राजा दाऊद की गलती यही थी कि उसने बिना आधा-शोकेल के इसाएल की गिनती करवा दी, जिससे विपत्ति आई।

#### □ □□□ □□□□□ (Or HaChaim)

- "की तिसा" का अर्थ केवल गिनती नहीं, बल्कि आत्मिक उन्नति (spiritual elevation) भी है।
- आधा-शोकेल आत्मा की शुद्धिं का माध्यम है, ताकि परमेश्वर के लोग ऊंचे उठ सकें।

#### □ □□□□□ (Malbim)

- आधा-शोकेल देने का अर्थ यह भी है कि हम अकेले पूर्ण नहीं हैं, बल्कि हमें एक-दूसरे की ज़रूरत है।

#### □ □□□ □□□ (Kli Yakar)

- यह दान आत्मिक रक्षा के लिए था, ताकि इसाएल परमेश्वर की दृष्टि में सुरक्षित रहें।

#### □ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□

#### □ 1. मसीह में हमारी गिनती हो चुकी है!

- यीशु मसीह ने क्रूस पर हमारे लिए अपना लहू बहाकर वह प्रायश्चित्त किया, जो आधे-

**शेकेल के द्वारा किया जाता था।**

- अब हमें किसी भौतिक सिक्के की आवश्यकता नहीं, बल्कि हमें अपना हृदय समर्पित करना है। (1 पतरस 1:18-19)

## □ 2. सामूहिक उत्तरदायित्व और दान

- मसीही विश्वासियों को चर्च और जरूरतमंदों की सहायता के लिए दान देना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे आधा-शेकेल तंबू के लिए दिया जाता था। (2 कुरिन्थियों 9:7)

## □ 3. आध्यात्मिक सुरक्षा और आत्मिक उन्नति

- यह नियम हमें यह सिखाता है कि हमें ईश्वर पर भरोसा रखना चाहिए, और खुद को आत्मिक रूप से सुरक्षित रखना चाहिए।

□ □□□□□□□□ (□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□)

**हे प्रेमी प्रभु यीशु मसीह,**

आपने हमारे लिए अपना जीवन दे दिया, जिससे हम अब स्वतंत्र होकर परमेश्वर के साथ संगति में रह सकें। जैसे इस्राएलियों ने आधा-शेकेल देकर प्रायश्चित किया, वैसे ही आपने अपने लहू से हमें छुटकारा दिया। हम प्रार्थना करते हैं कि आप हमें आत्मिक रूप से सुरक्षित रखें और हमें अपनी सेवा और भक्ति में आगे बढ़ाएं।

• हमारी गिनती आपके राज्य में हो, और हम आपके प्रेम और अनुग्रह में बढ़ते जाएं।

**प्रभु यीशु मसीह के नाम में आमीन! □**

निष्कर्षः

अपना जीवन प्रभु को समर्पित

**करते हैं** □

“प्रभु की गिनती में हम सदा बने रहें!” □□

□ □ □ □ □ □ □ 30:13 (Exodus 30:13) - □ □ □ □ □ □ □

**”जो कोई गिने जाने वालों में हो, वह आधा रुपये दे; जो पवित्रस्थान के रुपये दे, उनसार हो, (एक रुपये बीस गेरा का होता है), वही यहो वा के लिये भेंट ठहरे।”**

A horizontal sequence of 20 empty rectangular boxes, likely used for input fields or placeholder text in a form.

इस पद में परमेश्वर ने इस्माएलियों को आदेश दिया कि जब उनकी गणना हो, तो प्रत्येक पुरुष को "आधा रोकेल" देना होगा। यह भेंट परमेश्वर के लिए दी जाती थी और यह आत्मिक रूप से उनकी आत्मा के लिए प्रायश्चित (अपराध मुक्ति) का प्रतीक थी। यह राशि सभी के लिए समान थी—न तो धनी अधिक दे सकता था और न गरीब कम।

□ मुख्य बिंदुः

1□ □□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□

□□□□□□□□□□

2□ □□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□

3□ □□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□

□□□

---

□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□

**1□ "הַנְּהִי" (यह वे देंगे) - आधा शेकेल का रहस्य**

□ **राशी (Rashi):** परमेश्वर ने मूसा को एक आग के सिक्के (fiery coin) का दर्शन दिया और कहा, "ऐसा ही वे देंगे।" यह दर्शाता है कि मूसा इस आदेश को लेकर असमंजस में थे।

□ **गुर आर्ये (Gur Aryeh):** तौमुद (Talmud) कहता है कि मूसा को तीन चीज़ों को समझने में कठिनाई हुई-मेनोरा, नया चाँद, और छोटे जीव-जन्तु। यरुशलाम तौमुद में चौथी चीज़ 'आधा शेकेल' भी शामिल है।

□ **ओर हचैम (Or HaChaim):** "הַנְּהִי" शब्द एक संकेत है कि परमेश्वर ने एक विशेष वस्तु दिखाई-यहाँ यह आग का सिक्का था, जो पवित्रता का प्रतीक है।

□□□□□□:

जैसे किसी गरीब व्यक्ति को थोड़े से पैसे देकर उसकी मदद की जाए, वैसे ही यह आधा शेकेल स्वेच्छा से देने से आत्मिक आशीर्वाद मिलता था।

---

**2□ "כָל הַעֲוֹר עַל הַפְּקוֹדִים" (जो गिने जाने वालों में हो)**

□ राशी: इसका अर्थ यह है कि लोग गणना के समय एक-एक करके आएं □□□□□□□

□□□

□ कली याकर (Kli Yakar): यह बछड़े की मूर्ति (Golden Calf) के पाप का प्रायशिचित था।

□ हकतव वेहकबाला (HaKtav VeHaKabbalah): यह दायित्व था, न कि केवल गणना का हिस्सा।

□ □ □□□□□:

जैसे मसीही विश्वासी यीशु मसीह के बलिदान को स्वीकार करते हैं, वैसे ही इसाएलियों ने इस आधे शोकेल के माध्यम से परमेश्वर के प्रति अपनी निषा दिखाई।

---

### 3□ "מחצית השכל" (आधा शोकेल) - आधेपन का रहस्य

□ राशी: यह बछड़े की मूर्ति की पूजा के आधे दिन (6 घंटे) के पाप का प्रायशिचित □□□

□ रबी बाह्या (Rabbeinu Bahya): यह व्यक्ति की आत्मा और शरीर के बीच संतुलन का प्रतीक था।

□ कली याकर: यह आधा शोकेल संपूर्णता और साझेदारी का संकेत था—हर इंसान अकेला अधूरा होता है, उसे परमेश्वर और समुदाय की आवश्यकता होती है।

□ □ □□□□□:

जैसे पति-पत्नी मिलकर एक पूर्ण परिवार बनाते हैं, वैसे ही आधा शोकेल यह बताता था कि हर इंसान अकेला अधूरा है, उसे परमेश्वर से जुड़ना आवश्यक है।

---

### 4□ "תרומה לה" (यहोवा के लिए भेंट) - आज के मसीही चर्च में

## इसका महत्व

✓ मसीहियों के लिए यह पद क्यों महत्वपूर्ण है?

1 □ बलिदान और दान: यीशु ने कहा, "जहाँ तेरा धन है, वहाँ तेरा मन भी लगा रहेगा।" (३:२१)

2 □ समानता: आधा शेकेल दर्शाता है कि सभी परमेश्वर के सामने बराबर हैं। पौलुस भी कहता है, "इसमें न कोई यहौदी है, न यूनानी; न कोई दास है, न स्वतंत्र।" (गलातियों ३:२८)

3 □ प्रायशिचित: □□□□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□□□□□ □□ □□  
□□□□□□ □□, □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□  
□□□□□□□□□ □□□□ (५:११) □

4 □ एकता: आधा शेकेल यह दिखाता था कि सभी मिलकर एक संपूर्ण समुदाय बनाते हैं। प्रभु यीशु भी अपने शिष्यों से यही चाहते थे कि वे एकता में रहें (यूहन्ना १७:२१)।

□ □ □□□□□:

जैसे चर्च में हर कोई अपनी सामर्थ्य के अनुसार दान देता है, वैसे ही आधा शेकेल हर किसी को देने की प्रेरणा देता था।

□ □□□□□□□□ (५:११)  
□□□□□□)

प्रिय स्वर्गीय पिता,

हम तेरा धन्यवाद करते हैं कि तूने हमें अपनी वाणी के द्वारा सिखाया कि हर इंसान तेरे सामने समान है। जैसे इस्राएलियों ने आधा शेकेल दिया, वैसे ही हम भी अपने दिल से तुझे भेंट देना चाहते हैं—न केवल धन, बल्कि प्रेम, सेवा और सच्चाई के साथ।

हे प्रभु यीशु मसीह, आपने अपने जीवन को हमारे लिए अर्पित कर दिया। हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि हम भी दूसरों की सेवा, करुणा और प्रेम में आगे बढ़ें। हमें एकता में चलना सिखा और हमें अपने पवित्र आत्मा के द्वारा सशक्त कर कि हम तेरे नाम की महिमा करें।

**“हे प्रभु, हमें एक-दूसरे के साथ आधे अधूरे नहीं, बल्कि तेरी उपस्थिति में पूर्णता पाने दो। हमें आत्मिक और शारीरिक रूप से बलिदान और भक्ति में बढ़ा।”**

प्रभु यीश मसीह के नाम में, आमीन! ☺

A horizontal row of ten empty square boxes, each with a black border, intended for children to draw or write in.

□ □ □ □ □ □ □ □ □ त्याग, समानता, प्रायश्चित, और एकता □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ यीश के पूर्ण बलिदान और चर्च में दान और सेवा □ □

□ □ □ □ □ सच्ची भक्ति, प्रभु के प्रति पूर्ण समर्पण, और दूसरों की सेवा की प्रेरणा देता

५१

P172 De.18:15 On heeding the Prophets

□ □ □ □ □ □ □ □ □ : □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ **18:15**

"तुम्हारे बीच से, तुम्हारे भाइयों में से तुम्हारे लिए यहोवा तुम्हारा परमेश्वर मेरे

**समान एक भविष्यद्वक्ता को उत्पन्न करेगा; तुम्हें उसी की सुननी होगी।”**

(व्यवस्थाविवरण 18:15, हिंदी बीएसआई)



इस पद में मूसा इस्राएलियों को बताता है कि परमेश्वर उनके लिए उनके बीच से एक भविष्यद्वक्ता को उठाएगा, और उन्हें उसकी बात सुननी होगी।

1. "तुम्हारे बीच से" → □□ □□□□□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□

□□□□ □□ □□□□, □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□

2. "तुम्हारे भाइयों में से" → □□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□

□□□□, □□□□□□□□ □□□□ □□□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□

□□ □□ □□□□□□

3. "मेरे समान" → □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□

□□□ □□□ □□□□, □□□□□ □□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□

4. "उसी की सुननी होगी" → इस भविष्यद्वक्ता को मानना आवश्यक होगा, क्योंकि वह

परमेश्वर का संदेश लाएगा।

□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□

□ "मर्गराज" (तुम्हारे बीच से):

- रम्भम (मैमोनाइड्स): भविष्यद्वक्ता को इस्राएल में ही उठाया जाएगा, और वह अपने

अच्छे कर्मों और धार्मिकता के कारण पहचाना जाएगा।

- रशी: मूसा के समान ही वह इस्राएलियों में से होगा।

□ "גַּם אֶחָד" (तुम्हारे भाइयों में से):

- **रशी:** इसका अर्थ है कि वह किसी अन्य जाति से नहीं, बल्कि यहूदी समुदाय से आएगा।
- **गुर आर्यः:** यह सुनिश्चित करता है कि इस्राएल कभी बाहरी भविष्यद्वक्ताओं पर निर्भर न रहे।

□ "כִּמְנוּ" (मेरे समान):

- **राशबामः:** इसका अर्थ है कि भविष्य के भविष्यद्वक्ता भी मूसा की तरह परमेश्वर की बात बिना बदलाव के कहेंगे।
- **रम्बनः:** यह यहूदी परंपरा के अनुसार यह सिद्ध करता है कि मूसा के बाद भी सच्चे भविष्यद्वक्ता आते रहेंगे।
- **इब्र एज़रा:** इसका तात्पर्य यह है कि वह जादूगरों और शकुन-विद्या करने वालों के विपरीत सच्चा ईश्वरीय संदेशवाहक होगा।
- **स्फोर्नोः:** यह एक संकेत है कि परमेश्वर समय-समय पर इस्राएल को मार्गदर्शन देने के लिए भविष्यद्वक्ता भेजेगा।

□ "אֶלְעָלָה תִּשְׁמַע" (उसी की सुननी होगी):

- **चिल्डकुनीः:** यह यहोशू (जो मूसा के बाद आया) के लिए भी लागू होता है।

- रव हिर्शः यह भविष्यवाणी करती है कि लोग परमेश्वर के भविष्यद्वक्ता की अवहेलना

नहीं कर सकते।

---

□ □

मसीही विश्वास के अनुसार, यह भविष्यद्वाणी प्रभु यीशु मसीह में पूरी हुई।

- प्रभु यीशु मसीह इस्राएली समुदाय से आए (यहोशू की तरह)
- उन्होंने मूसा की तरह शिक्षा दी, चमत्कार किए, और परमेश्वर की आज्ञाएँ दीं
- यीशु ने कहा: "मुझे सुनो" (मत्ती 17:5)
- प्रेरितों के काम 3:22-23 में पतरस ने स्पष्ट किया कि यह पद प्रभु यीशु मसीह के बारे में है।

□ आज के चर्च में यह पद हमें सिखाता है कि हमें प्रभु यीशु मसीह की बातों को मानना

और उनके बताए मार्ग पर चलना आवश्यक है।

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ : □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □

हे स्वर्गीय पिता,

आपकी वाणी को सुनने और उस पर चलने में हमारी सहायता कर।

जैसे आपने मूसा के द्वारा मार्गदर्शन दिया, वैसे ही हमें प्रभु यीशु मसीह में पूर्ण सत्य दिखा।

हमें अपने जीवन में आपके वचन का पालन करने की शक्ति दे।

हम यीशु की आज्ञाओं को मानें, उसकी राहों में चलें, और उसकी शिक्षाओं का पालन करें।

हमारे हृदय को कोमल बना, ताकि हम तेरा सत्य समझ सकें और उसका पालन कर सकें।

प्रभु यीशु मसीह के नाम में, आमीन! □□

P173 De.17:15 On appointing a king

□ □□□□□ □□ (**Deuteronomy 15:11**) □□□□□ □□□

"क्योंकि देश में दरिद्र लोग सदा बने रहेंगे, इस कारण मैं तुझे आज्ञा देता हूँ कि तू अपने देश के दरिद्र और दीन भाइयों के लिये उदारता से हाथ खोलना।"

---

□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□ □□□□

इस पद में परमेश्वर एक महत्वपूर्ण सच्चाई बता रहे हैं कि इस संसार में गरीबी हमेशा बनी रहेगी। फिर भी, यह हमें गरीबों की मदद करने से रोकता नहीं है। बल्कि, यह हमें आज्ञा देता है कि हम अपने गरीब भाइयों और बहनों की सहायता करने के लिए अपने हाथ खुले रखें।

यह पद हमें दिखाता है कि गरीबी केवल एक सामाजिक समस्या नहीं है, बल्कि यह एक आत्मिक जिम्मेदारी भी है। परमेश्वर हमें दूसरों की मदद करने के लिए बुलाते हैं, खासकर उन लोगों की जो ज़रूरतमंद हैं।

---

□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□

## 1 □ इसका उत्तराधिकारी कौन है?

- **Rashbam:** इसका उत्तराधिकारी वह है जो अपने गरीबों की समस्याओं का समाधान करता है।
- **Ralbag:** इसका उत्तराधिकारी वह है जो अपने गरीबों की समस्याओं का समाधान करता है।
- **Rav Hirsch:** इसका उत्तराधिकारी वह है जो अपने गरीबों की समस्याओं का समाधान करता है।
- **Torah Temimah:** मसीह के युग तक गरीबी बनी रहेगी।

## 2 □ "इस कारण" (יכלע) का अर्थ

- **Rashi:** इसका उत्तराधिकारी "इस कारण" का "इस कारण" का उत्तर है।
- **Siftei Chakhamim:** इसका उत्तराधिकारी वह है जो अपने गरीबों की समस्याओं का समाधान करता है।
- **Divrei David:** यह सलाह के रूप में भी लिया जा सकता है—यदि गरीबी बनी ही रहेगी, तो मदद करने का आदेश क्यों? इसका उत्तर यह है कि यह देना सिर्फ गरीबों की मदद के लिए नहीं, बल्कि देने वालों के लिए भी आशीष का कारण बनता है।

## 3 □ इसका उत्तराधिकारी कौन है?

- **Alshekh:** इसका उत्तराधिकारी वह है जो अपने गरीबों की समस्याओं का समाधान करता है।
- **Chizkuni:** ज़रूरतमंदों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए—पहले अपने परिवार, फिर अपने नगर के लोग, फिर अन्य।
- **Malbim:** अमीरों की संपत्ति गरीबों के लिए भी एक "ट्रस्ट" की तरह है।

## 4 □ इसका उत्तराधिकारी कौन है?

- **Alshekh:** इसका उत्तराधिकारी वह है जो अपने गरीबों की समस्याओं का समाधान करता है।

□ Chatam Sofer: गरीबी संसार की प्राकृतिक स्थिति है, लेकिन परमेश्वर की कृपा से इसे बदला जा सकता है।

---

□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□□

□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□  
□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□:

□ "जो कुछ तुमने मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों में से किसी एक के साथ किया, वह तुमने मेरे साथ किया।" (मत्ती 25:40)

□ मसीही विश्वास में यह पद हमें सिखाता है कि:

- दान केवल दयालुता नहीं, बल्कि परमेश्वर की आज्ञा का पालन है।
- जरूरतमंदों की सेवा करने से हम स्वयं भी आशीष पाते हैं।
- गरीबी को हल करने का उत्तर केवल धन नहीं, बल्कि प्रेम और करुणा है।

□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□  
□□□□ □□□:  
□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□  
□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□  
□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□

---

□ □□□□□□□□ (□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□  
□□□□□□)

**प्रिय प्रभु यीशु मसीह,**

आपने गरीबों से प्रेम किया, बीमारों को चंगा किया और ज़रूरतमंदों की सहायता की।

हमें भी वही करुणा और प्रेम दीजिए ताकि हम अपने ज़रूरतमंद भाइयों और बहनों की सेवा कर सकें।

हमें एक उदार हृदय दीजिए, जिससे हम खुशी से अपना हाथ खोलें और देने में संकोच न करें।

जैसे आपने कहा, ”धन्य हैं वे जो दयालु हैं, क्योंकि उन पर भी दया की जाएगी।”

हमें आपकी दया और अनुग्रह से भर दीजिए, ताकि हम आपके प्रेम के सच्चे साक्षी बनें।

**प्रभु यीशु मसीह के नाम में, आमीन। □ ✡**

---

□ □ □ □ □ □ □ □

□  
 □  
 □ □ □ □ □ □

□  
 □  
 □  
 □

**✡ ”प्रेम और दया से बढ़कर कोई बलिदान नहीं।” ✡**

P174 De.17:11 On obeying the Great Court (Sanhedrin)

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ 17:11 (Deuteronomy 17:11) -

□ □ □ □ □ □ □

**"तू उस बात के अनुसार करना, जो वे तुझे उस स्थान में सिखाएँ जहाँ यहोवा तेरा परमेश्वर  
उसे चुन लेगा; और जिस रीति से वे तुझे व्यवस्था देंगे, उसी रीति से तू करना, और उस बात  
से न दाएँ मुड़ना, न बाएँ।"**

---

□ □

**यह पद धार्मिक और न्यायिक अधिकार की संकल्पना को स्पष्ट करता है। इस पद के अनुसार,  
परमेश्वर ने लोगों को न्याय करने और धर्म का मार्ग दिखाने के लिए धार्मिक अगुओं और  
न्यायाधीशों को नियुक्त किया। यदि न्यायालय (सन्हेद्रिन) कोई निर्णय करता है, तो लोगों को  
उसका पालन करना चाहिए, चाहे वह उनके अपने विचारों से मेल खाए या नहीं।**

**इसका उद्देश्य यह है कि व्यवस्था (Torah) में एकता बनी रहे और हर कोई अपने-अपने  
अनुसार इसे न समझे। यदि हर कोई अपनी ही व्याख्या के अनुसार चलेगा, तो समाज में  
अराजकता फैल जाएगी।**

---

□ □

□ □ □ □ (Rashi)

**राशी ने लिखा कि भले ही तुम्हें लगे कि न्यायाधीश गलत कह रहे हैं, फिर भी तुम्हें उनकी बात  
माननी होगी। उन्होंने उदाहरण दिया कि "यदि वे कहें कि दाएँ हाथ को बाएँ मानो, तो भी  
उनका अनुसरण करो।"**

→ **उदाहरण:** यदि कोई न्यायालय यह निर्णय करे कि किसी विशिष्ट प्रकार का भोजन शुद्ध

(कोशेर) है, जबकि तुम्हें संदेह हो कि वह अशुद्ध है, तो भी तुम्हें उनकी बात माननी होगी।

---

#### □ □□□□□ (Ramban)

उन्होंने कहा कि यदि इस नियम का पालन न किया जाए, तो हर व्यक्ति अपने-अपने अनुसार व्यवस्था की व्याख्या करेगा, जिससे बहुत भ्रम और टकराव उत्पन्न होगा।

→ उदाहरण: यदि दो व्यक्ति यह निर्णय लेने में असमर्थ हों कि किसी धार्मिक रीति को कैसे निभाना है, और वे अपनी-अपनी व्याख्या पर अड़ जाएँ, तो इससे समाज में संघर्ष उत्पन्न होगा।  
इसलिए, एक निश्चित प्राधिकरण का पालन करना आवश्यक है।

---

#### □ □□□□□ (Mizrachi)

उन्होंने इस विचार को स्पष्ट किया कि यदि न्यायालय की गलती स्पष्ट हो, तब भी इसे स्वीकार करना होगा, क्योंकि यही परमेश्वर की व्यवस्था है।

→ उदाहरण: यदि एक न्यायालय किसी कार्य को करने का आदेश दे, और वह किसी व्यक्ति को गलत लगे, तब भी उसे पालन करना होगा, ताकि धार्मिक व्यवस्था बनी रहे।

---

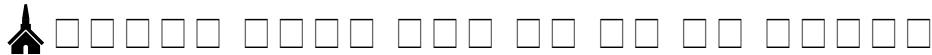
#### □ □□□□ (Sifrei)

उन्होंने कहा कि "यह पद यह सिखाने के लिए है कि हमें न्यायाधीशों की आज्ञा का पालन करना चाहिए, चाहे हमें लगे कि वे गलती कर रहे हैं।"

→ उदाहरण: यदि कोई व्यक्ति यह मानता है कि अमुक दिन पर्व मनाना गलत है, लेकिन धार्मिक

अगुवे उसे सही मानते हैं, तो उसे उनकी बात माननी चाहिए।

---



**यह पद न्यायिक और धार्मिक अनुशासन के बारे में सिखाता है। हालाँकि मसीही विश्वास में यहूदी धर्म की तरह सख्त धार्मिक न्यायालय प्रणाली नहीं है, फिर भी चर्च में आध्यात्मिक अगुओं और बाइबलीय शिक्षकों का सम्मान किया जाता है।**

□ □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□:

**चर्च की शिक्षाओं और नेतृत्व का पालन - चर्च के पादरी, पास्टर, और धार्मिक शिक्षक जो भी बाइबलीय शिक्षाएँ देते हैं, उनका पालन करना आवश्यक है।**

**आध्यात्मिक अनुशासन - बाइबल की शिक्षाओं के अनुसार, चर्च के भीतर एकता बनाए**

**रखने के लिए विश्वासियों को अपने अगुवों की सलाह का पालन करना चाहिए।**

**प्रभु यीशु मसीह का उदाहरण - प्रभु यीशु ने भी फ़रीसियों और शास्त्रियों को सिखाया कि**

**परमेश्वर के मार्ग पर चलना अनिवार्य है।**

→ **उदाहरण: जब यीशु ने कहा, "जो कुछ वे (धार्मिक शिक्षक) तुमसे कहते हैं, उसे मानो,**

**लेकिन उनके कार्यों का अनुसरण मत करो" (मत्ती 23:3), तो उन्होंने यह स्पष्ट किया कि**

**धार्मिक अगुओं की शिक्षा का पालन करना महत्वपूर्ण है, परंतु सच्ची धार्मिकता के साथ।**

□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ - □□□□□ □□□□ □□

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ हे परमेश्वर, जो सत्य और ज्ञान का स्रोत है,

हम तुझसे प्रार्थना करते हैं कि आप हमें अच्छे आध्यात्मिक अगुवों के अधीन रहने की बुद्धि और विनप्रता प्रदान कर।

जैसे प्रभु यीशु मसीह ने आपका अनुसरण किया और आपका वचन संपूर्ण रूप से माना, वैसे ही हम भी तेरी आज्ञाओं और चर्च में नियुक्त अगुओं के सही मार्गदर्शन का पालन कर सकें।

+ हे प्रभु यीशु, हमें झुकने का और सुनने का मन दे।

हम अपने अहंकार को त्याग कर तेरी सिखाई आज्ञाओं के अनुसार चल सकें।

यदि कभी हमें लगता है कि हम सही हैं, लेकिन हमारे अगुवे कुछ और कह रहे हैं, तो हमें विनप्रता दे कि हम आपकी इच्छा को पहचान सकें।

□ हे पवित्र आत्मा, हमें अनुशासन और सत्य का ज्ञान दे,

ताकि हम अपने चर्च, परिवार, और समाज में एकता और प्रेम ला सकें।

हम किसी भी भ्रम या विद्रोह में न पड़ें, बल्कि आपकी आज्ञाओं में चलें।

प्रभु यीशु मसीह के नाम में, आमीन! □

□ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ धार्मिक और न्यायिक अनुशासन □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ परमेश्वर द्वारा नियुक्त अगुओं का पालन करना

चाहिए □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □□□□ □□□ □□ □ □ □□□□□□□□ □□, □□□□□□ □चर्च में एकता

**बनाए रखने के लिए आध्यात्मिक अगुओं का मार्गदर्शन आवश्यक है।**

□ □□□□ □□□ □□ □ □ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□  
□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□

P175 Ex.23:2 On in case of division, abiding by a majority decision

□ □□□□□□ 23:2 (□□□□□ □□□)

"तू बहुतेरों के पीछे बुराई करने के लिये न चलना, और मुकद्दमे में बहुतेरों की मान कर न्याय  
बिंगाइने को न फिरना।"

---

❖ □□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□

यह पद हमें सिखाता है कि हमें बहुसंख्यक लोगों की नकल नहीं करनी चाहिए यदि वे बुराई कर  
रहे हैं। केवल इसलिए कि बहुत सारे लोग कुछ कर रहे हैं, इसका मतलब यह नहीं कि वह सही है।  
खासकर न्याय और सत्य के मामलों में हमें ईमानदारी और निष्पक्षता बनाए रखनी चाहिए।

---

□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□

□□□□□□□□

□ 1. □□□□□□ □□□□□

इसका सीधा अर्थ यह है कि यदि बहुत से लोग गलत कर रहे हैं, तो हमें केवल संख्या के आधार पर उनका अनुसरण नहीं करना चाहिए। सत्य और न्याय किसी भी परिस्थिति में महत्वपूर्ण हैं।

□ 2. ○○○○○○○ ○○○○○○ (○○○○○○○○○ ○○ ○○○○○○  
○○○)

यह आयत विशेष रूप से न्यायालय में फैसले के संदर्भ में भी समझी जाती है। यदि किसी को मृत्युदंड देना हो, तो केवल एक व्यक्ति की राय के आधार पर निर्णय नहीं लिया जा सकता। अपराध साबित करने के लिए दो से अधिक न्यायाधीशों की सहमति आवश्यक होती है।

□ 3. ○○○○○○○○○○○ ○○ ○○○ ○○○○○○

□ **राशी:** यदि कोई व्यक्ति देखता है कि बहुत से लोग न्याय को विकृत (बिगाड़) कर रहे हैं, तो उसे भी उनके साथ शामिल नहीं होना चाहिए।

□ 4. ○○○ ○○○○○ ○○○○ ○○ ○○○ ○○○○○○ ○○  
○○○○○○○○

□ **मालबिम:** किसी व्यक्ति को दोषी ठहराने के लिए साधारण बहुमत (1 से अधिक) पर्याप्त नहीं है, बल्कि कम से कम दो लोगों का बहुमत आवश्यक है।

□ 5. ○○○○○○ ○○○ ○○ ○○○ ○○○○○○ ○○ ○○○○○○ ○  
○○○○

□ **हामेक दावर:** आगर कोई भी इसका तौर पर बुराई कर रही हो, तो भी हमें उनका अनुसरण नहीं करना चाहिए, चाहे वे कितने ही अधिक हों।

□ 6. ○○○○ ○○○ ○○○○○ ○○ ○○○○○○ ○○○○

□ **इन्हें एज़रा:** यदि बहुमत गलत नहीं है, तो हमें उनके साथ जाना चाहिए क्योंकि बहुमत भलाई

के लिए हो सकता है।

---

□ "□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□□□  
□□ □□□□□□ □ □□□□" (□□□□□ □□□ □□  
□□□□□□□)

□ 1. □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□  
□□□□□

□ **स्फोर्नो:** एक न्यायाधीश को बहुमत की राय से प्रभावित नहीं होना चाहिए। यदि वह न्यायाधीश है, तो उसे अपने विवेक से ही न्याय करना चाहिए।

□ 2. □□□□ □□□ □ □□□□□

□ **ओन्केलोस और राशी:** यदि कोई न्याय के बारे में सच्चाई जानता है, तो उसे बहुमत से प्रभावित होकर अपनी राय नहीं छुपानी चाहिए।

□ 3. □□□□□ □ □ □□□□□□□□ □ □□□

□ **रश्मबाम:** किसी कानूनी मामले में बहुमत के साथ केवल इसलिए न जुँड़े क्योंकि वे अधिक संख्या में हैं, यदि वे अन्याय कर रहे हैं।

□ 4. □□□□-□□□□□ □ □ □□□□□□□□ □□□□ □□□

□ **बेहोर शोर:** अपनी राय स्पष्ट रूप से कहें, क्योंकि हो सकता है कि बहुमत भी आपकी बात मान जाए और न्यायिक प्रणाली निष्पक्ष हो सके।

□ 5. □□□□□ □ □ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □  
□□□□□□ □ □□□

□ मालबिमः न्याय को बिगाड़ने के लिए बहुमत की गलती को न दोहराएँ।

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

1 □ सत्य और न्याय के लिए खड़े रहें – ईसाईयों को प्रभु यीशु के समान सत्य के पक्ष में खड़े रहना चाहिए, चाहे दुनिया कुछ भी कहे।

2 □ सामाजिक दबाव में न आएं – समाज और संस्कृति कई बार अनैतिक मार्ग दिखा सकते हैं, लेकिन हमें बाइबल की शिक्षाओं के अनुसार जीना चाहिए।

3 □ सच्चाई की गवाही दें - प्रभु यीशु ने कभी भी झूठ का समर्थन नहीं किया, हमें भी सत्य को अपनाना चाहिए।

4 □ चर्च नेतृत्व में निष्पक्षता – चर्च में भी निर्णय लेते समय केवल बहुमत के आधार पर नहीं, बल्कि परमेश्वर की इच्छा के अनुसार निर्णय होने चाहिए।

---

□ □ □ □ □ □ □ □ (□ □ □ □ □ □ □  
□ □ □ □ □ □ □ □)

हे स्वर्गीय पिता,

हमें सत्य और न्याय के मार्ग पर चलने की शक्ति दें। हमें भीड़ की प्रवृत्ति के अनुसार नहीं, बल्कि आपके वचन के अनुसार कार्य करने की बुद्धि प्रदान करें।

जब संसार हमें गलत मार्ग पर चलने के लिए बाध्य करे, तब हमें प्रभु यीशु मसीह की तरह साहसी और सच्चा बनाएँ।

जैसे यीशु ने सत्य के लिए अपना जीवन दिया, वैसे ही हम भी सच्चाई की गवाही

देने वाले बनें।

हमारी आत्मा को मजबूत करें कि हम कभी अन्याय का समर्थन न करें और सच्चाई के मार्ग पर अड़िग रहें।

प्रभु यीशु मसीह के नाम में प्रार्थना करते हैं, आमीन।

□ □□□□□□□

□ □□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□, □□□□□□□  
□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□  
□ □□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□, □□□□□□□□□□  
□□□□□□□□□□□□□□□□  
□ □□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□  
□□□□□□□□□□□□□□□□  
□ □□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□, □□□□  
□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□  
□ "□□□□□□□□□□□□□□□□" (□□□□□□□ 8:32) □

P176 De.16:18 Appointing Judges & Officers of the Court in every town

□ □□□□□□□□□□□ 16:18 (Deuteronomy  
16:18)

"अपने सब नगरों में, जिन को तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे दे, तू अपने गोत्रों के अनुसार न्यायी  
और हाकिम ठहरा, और वे लोगों का उचित न्याय करें।"

□ □□□□□ □□□ □□□□□□□:

यह पद इसाएलियों को यह आज्ञा देता है कि वे अपनी भूमि में न्यायधीश (जज) और

अधिकारी (अफसर) नियुक्त करें जो लोगों का निष्पक्ष और उचित न्याय करें।

□ □□□□□ □□□□□:

1 □ न्यायधीश और अधिकारी: □□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□, □□

□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□

2 □ "अपने सब नगरों में": □ □ □□□□□□□ □ □ □□ □□ □□□□ □□□□, □□□□

□□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□

3 □ "उचित न्याय करें": न्याय निष्पक्ष होना चाहिए, किसी भी प्रकार की पक्षपात या रिश्वत से

बचना चाहिए।

□ □□□□□□□ □ □ □□□□□:

□ 1. □□□□ (Rashi):

□ उन्होंने समझाया कि हर गोत्र (tribe) को अपने-अपने नगरों में न्यायधीश और अधिकारी

नियुक्त करने चाहिए।

□ 2. □□□□ □□□□ (Ibn Ezra):

□ न्यायधीशों को सिर्फ़ फैसले नहीं सुनाने चाहिए बल्कि यह भी देखना चाहिए कि वे निष्पक्ष

और धर्मी लोग हों।

□ 3. □□□□□□ (Ramban):

□ न्याय को जन-जन तक पहुँचाने के लिए स्थानीय और केंद्रीय न्यायालय दोनों की जरूरत है।

□ 4. ओर हाचाइम (Or HaChaim):

□ न्यायधीशों को अपने स्वार्थ और लालच से बचकर सही निर्णय लेने चाहिए।

□ 5. मल्बिम (Malbim):

□ न्यायप्रिय और सत्यवादी हों।

□ 6. अदेरेट एलियाहु (Aderet Eliyahu):

□ जब धर्मी न्यायधीश होते हैं, तो यह सिद्ध करता है कि परमेश्वर ने इस्राएल को भूमि

धार्मिकता में दी है।

---

□ अन्य विषयों:

□ रब्बी एलिअजर ने न्याय के महत्व को दिखाते हुए खुद के खेत में उसी प्रकार का न्याय लागू

किया जो उन्होंने दूसरों को दिया, ताकि वह निष्पक्ष दिखें।

---

□ अन्य विषयों:

□ अन्य विषयों?

यद्यपि यह आज्ञा विशेष रूप से इस्राएल के लिए थी, लेकिन इसके सिद्धांत आज भी प्रासंगिक हैं:

✓ न्याय और सच्चाई: न्यायप्रिय और सत्यवादी हों।

□□□□□ (□□□□□□□ 7:24 - "□□□□□ □ □ □□□□□ □□□")□

✓ अच्छे नेतृत्व की जरूरतः □□□□□ □□□□□ (leaders) □ □ □□□□□ □□□□ □ □

□ □ □□□□□□□ □ □ □□□□□□□□□ □□□ □□□□□

✓ स्थानीय स्तर पर न्यायः हमें अपने जीवन और चर्च में उचित और धर्मी फैसले लेने चाहिए।

❖ □□□□ □□□□ □ □ □□□□ □ □ □□□□□□:

1 □ □ □ □□□□ □□□□ □ □ □□□, "जो सबसे बड़ा बनना चाहता है, वह सबसे छोटा बने"

(□□□□ 20:26) – □ □ □□□□□□ □ □ □□□ □□□□□□□□ □ □

2 □ □□□□ □□□□ □ □ □□□□□□□□ □ □ □ □□□ □□□□□ □□□□, □□□□□

दया और प्रेम से न्याय को पूरा किया (यूहन्ना 8:1-11 - व्यभिचारी स्त्री का प्रसंग)।

---

□ □□□□□□□□:

□ हे प्रभु यीशु मसीह,

आपने हमें सच्चाई और न्याय की राह दिखाई। हमें ऐसा नेतृत्व प्रदान करें जो धर्मी और निष्पक्ष हो। हमें सिखाएं कि हम अपने निर्णयों में पक्षपात से बचें और आपके सत्य पर चलें। हमें शक्ति दें कि हम अपने चर्च और समाज में न्याय, प्रेम और करुणा का प्रकाश फैलाएँ।

"हे प्रभु, हमें ऐसा हृदय दो जो सत्य को स्वीकार करे और दूसरों के साथ दया और न्याय

करे।"

प्रभु यीशु के नाम में, आमीन। □❖

□ □ □ □ □ □ □ □ 19:15 (□ □ □ □ □ □ □)

**"तू न्याय में अन्याय न करना, न तो दरिद्र का पक्ष लेना और न बड़े व्यक्ति का सम्मान करना;**

**परन्तु धर्म से अपने पड़ोसी का न्याय करना।"** ✶

---

□ □

यह पद न्याय और निष्पक्षता की शिक्षा देता है। यह कहता है कि:

1 □ "तू न्याय में अन्याय न करना" – न्याय में किसी भी प्रकार का पक्षपात या बेर्इमानी नहीं

होनी चाहिए। अगर न्याय भ्रष्ट होता है, तो समाज में अन्याय और अराजकता फैलती है।

2 □ "न तो दरिद्र का पक्ष लेना" – गरीब व्यक्ति को केवल दया या सहानुभूति के कारण न्याय में

अनावश्यक लाभ नहीं दिया जाना चाहिए। यद्यपि गरीबों की सहायता करना अच्छा है, परंतु

न्याय के निर्णय निष्पक्ष होने चाहिए।

3 □ "न बड़े व्यक्ति का सम्मान करना" – धनवान, प्रभावशाली या ऊँचे पद पर बैठे व्यक्ति को

उसके दर्जे के कारण विशेष सम्मान नहीं दिया जाना चाहिए। न्याय सबके लिए समान होना

चाहिए।

4 □ "परन्तु धर्म से अपने पड़ोसी का न्याय करना" – न्याय पूरी सच्चाई और धर्म के अनुसार

होना चाहिए। न्याय का आधार परमेश्वर का सत्य होना चाहिए, न कि किसी की स्थिति, संपत्ति

या शक्ति।

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □

## □ □ □ □ □ (Rashi)

राशी कहते हैं कि:

- न्यायाधीश को न तो गरीब के लिए दयालु बनकर पक्षपात करना चाहिए और न ही अमीर को शर्मिंदा करने से डरना चाहिए।
- एक अमीर व्यक्ति को देखकर यह नहीं सोचना चाहिए कि ”मैं इसे शर्मिंदा नहीं करना चाहता,” और एक गरीब व्यक्ति के लिए यह नहीं सोचना चाहिए कि ”उसे न्यायालय में सम्मानपूर्वक सहायता मिले।”

□ उदाहरण: अगर एक गरीब और एक अमीर व्यक्ति अदालत में खड़े हैं, तो न्यायाधीश को निष्पक्ष रहना चाहिए और केवल सबूतों और सच्चाई के आधार पर निर्णय लेना चाहिए।

## □ □ □ □ □ □ (Kli Yakar)

- न्यायाधीश को वही नियम अपने लिए भी लागू करने चाहिए, जो वह दूसरों के लिए तय करता है।
- यदि न्यायाधीश खुद किसी गलती को सही मानकर स्वीकार करता है, तो वह दूसरों पर गलत निर्णय कैसे दे सकता है?

□ उदाहरण: यदि न्यायाधीश किसी व्यक्ति को झूठ बोलने के लिए दंडित करता है, परंतु वह खुद झूठ बोलता है, तो यह न्याय नहीं होगा।

□ □ □ □ □ □ □ (Rav Hirsch)

- यह वचन न्याय और दया के बीच संतुलन बनाने की शिक्षा देता है।
- यह सिखाता है कि न्यायिक व्यवस्था निष्पक्ष होनी चाहिए और इसमें अमीर या गरीब का भेदभाव नहीं होना चाहिए।

□ उदाहरण: किसी चर्च के नेता को न्यायालय में दूसरे सदस्यों से विशेष सम्मान नहीं मिलना चाहिए, क्योंकि न्याय सभी के लिए समान है।

---

† □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ न्याय और ईमानदारी: मसीही विश्वासी होने के नाते हमें अपने जीवन में ईमानदारी और सत्यनिष्ठा को बनाए रखना चाहिए। हमें किसी भी प्रकार के पक्षपात से बचना चाहिए।

□ गरीबों और अमीरों के साथ समान व्यवहार: परमेश्वर हमें सिखाते हैं कि गरीब और अमीर दोनों समान हैं और हमें उनकी स्थिति देखकर न्याय नहीं करना चाहिए।

□ नेताओं और प्रभावशाली लोगों से सावधान रहना: कई बार चर्च या समाज के बड़े लोग अपने प्रभाव का गलत उपयोग करते हैं, लेकिन हमें यह वचन सिखाता है कि हम किसी भी व्यक्ति को उसके पद या पैसे के कारण विशेष लाभ न दें।

□ यीशु मसीह का उदाहरण:

- प्रभु यीशु ने गरीबों और अमीरों दोनों को समान रूप से प्यार किया।

- उन्होंने भ्रष्ट फ़रीसियों को फटकारा और गरीबों तथा पापियों को सत्य से न्याय दिया।
  - जब एक धनी जवान ने यीशु से पूछा कि उसे अनन्त जीवन कैसे मिलेगा, तो प्रभु यीशु ने उससे कहा कि वह अपनी संपत्ति बेचकर गरीबों को दे और उसके पीछे चले (मत्ती 19:21)।
- 

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ ( □ □ □ □ □ □ □  
□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ )

**हे परमेश्वर,**

आपका वचन हमें न्याय और धर्म की राह पर चलना सिखाता है। हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि  
आप हमें सच्चाई और निष्पक्षता से न्याय करने की बुद्धि दे।

□  
□  
□  
□  
□  
□  
□  
□ □

**प्रभु यीशु मसीह के नाम में, आमीन! □ ✝**

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ 5:1 (Leviticus 5:1) - □ □ □ □ □ □ □

**"यदि कोई व्यक्ति पाप करे, और यह सुने कि शपथपूर्वक साक्षी देने के लिये उसे बुलाया**

**गया है, और वह साक्षी है, चाहे उसने देखा हो, या जानता हो, यदि वह यह प्रगट न करे, तो वह  
अपना अधर्म सहन करेगा।"**

---

❖ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

यह पद एक महत्वपूर्ण सिद्धांत को प्रस्तुत करता है कि यदि कोई व्यक्ति किसी घटना का  
साक्षी है और वह न्यायिक कार्यवाही में गवाही देने के लिए बुलाया जाता है, तो उसका यह कर्तव्य  
बनता है कि वह सत्य को उजागर करे। यदि वह गवाही देने से इनकार करता है, तो वह पाप का  
भागी होता है।

□ मुख्य बिंदुः

1. "शपथपूर्वक साक्षी देने के लिये बुलाया गया" - यदि कोई व्यक्ति न्यायालय या समाज

में किसी अन्य व्यक्ति की सच्चाई को उजागर करने के लिए बुलाया जाए, तो उसे सच  
बोलना आवश्यक है।

2. "उसने देखा हो या जानता हो" - सिर्फ वही व्यक्ति साक्षी नहीं है जिसने प्रत्यक्ष रूप से

देखा हो, बल्कि जो किसी भी अन्य प्रमाण के माध्यम से सच्चाई जानता हो, वह भी गवाह  
है।

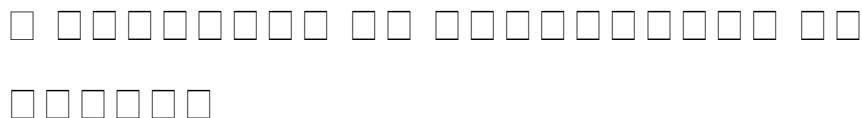
3. "यदि वह यह प्रगट न करे" - यदि कोई साक्षी होते हुए भी मौन रहता है, तो वह पाप

करता है।

4. "वह अपना अधर्म सहन करेगा" - इसका अर्थ है कि गवाही न देने की गलती के लिए

व्यक्ति स्वयं दोषी ठहराया जाएगा और उसे इसका दंड भुगतना पड़ेगा।

---



**राशी (Rashi):**

राशी कहते हैं कि "शपथपूर्वक साक्षी देने" का अर्थ है कि जब न्यायाधीश या कोई व्यक्ति किसी गवाह को शपथ दिलाकर सत्य बताने के लिए कहता है, तब उसकी ज़िम्मेदारी बनती है कि वह सत्य बोले।

**उदाहरण:** मान लीजिए कि दो लोगों के बीच व्यापारिक विवाद हुआ, और एक व्यक्ति जानता है कि वास्तव में पैसे का लेन-देन हुआ था। यदि वह व्यक्ति साक्षी होते हुए भी न्यायालय में चुप रहता है, तो वह इस नियम का उल्लंघन कर रहा है।

**इब्र एज़रा (Ibn Ezra):**

वे इस बात पर ज़ोर देते हैं कि साक्षी का कर्तव्य सिर्फ़ एक कानूनी दायित्व नहीं बल्कि एक नैतिक कर्तव्य भी है। जो सत्य को छुपाता है, वह ईश्वर के सामने दोषी ठहराया जाता है।

**मालबिम (Malbim):**

मालबिम समझाते हैं कि "साक्षी" (Ty - Ed) का मतलब है कि व्यक्ति को प्रत्यक्ष प्रमाण है या उसने पहले से कोई सूचना प्राप्त की है। अगर व्यक्ति यह कहता है कि "मैं गवाही नहीं देना चाहता," तो यह एक बड़ा अपराध है।

**उदाहरण:** मान लीजिए कि किसी व्यक्ति ने चोरी होते हुए देखी, और जब पुलिस या न्यायालय पूछताछ करता है, तो वह यह कहकर मुकर जाता है कि "मैं कुछ नहीं जानता।" ऐसे व्यक्ति ने न केवल सच्चाई को दबाया बल्कि अपराधी को भी बचाया।

□ **ओर हाचाइम (Or HaChaim):**

वे बताते हैं कि यदि कोई व्यक्ति न्यायालय में शपथ ग्रहण करता है कि वह सच बोलेगा, और फिर भी वह झूठ बोलता है या चुप रहता है, तो उसे दंड भुगतना पड़ेगा।

**उदाहरण:** कोई व्यक्ति अदालत में झूठी गवाही देकर निर्दोष को दोषी ठहरा दे या दोषी को बचा ले, तो वह गंभीर अपराध करता है।

□ **रब्बी हिर्श (Rabbi Hirsch):**

वे समझाते हैं कि यह पद केवल कानूनी गवाही तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक जीवन में भी लागू होता है। यदि हम किसी के बारे में सत्य जानते हैं और उसे छुपाते हैं, तो यह भी गलत है।



□ □ □ □ ?

1. **सत्य की गवाही देना:** प्रभु यीशु ने स्वयं सत्य की गवाही दी, भले ही इसके कारण उन्हें

यातना सहनी पड़ी (यूहन्ना 18:37)। इसी प्रकार, हमें भी बिना डरे सत्य की रक्षा करनी चाहिए।

2. **अन्याय के विरुद्ध खड़े होना:** मसीही विश्वासी होने के नाते हमें सत्य के लिए खड़े होना

है, ताकि अन्याय पराजित हो।

**3. सत्य बोलने का आत्मिक महत्व:** प्रभु ईसा मसीह ने कहा, "तुम्हारा हाँ हाँ और ना ना हो" (मत्ती 5:37), अर्थात् हमें सच्चाई के प्रति ईमानदार रहना चाहिए।

**4. झूठ न बोलना और सच्चाई को न छुपाना:** कई बार लोग सोचते हैं कि "चुप रहना" झूठ बोलने के बराबर नहीं है, लेकिन बाइबल स्पष्ट रूप से कहती है कि जो व्यक्ति सत्य छुपाता है, वह भी दोषी होता है।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

□ **इफिसियों 4:25 -** "इस कारण, झूठ बोलना छोड़कर हर एक अपने पड़ोसी से सच बोले, क्योंकि हम आपस में एक दूसरे के अंग हैं।"

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □ □

□ **सत्य की रक्षा के लिए प्रार्थना:**

**हे स्वर्गीय पिता,**

आपने हमें सत्य का मार्ग दिखाया है। हमें साहस दें कि हम हमेशा सत्य के पक्ष में खड़े रहें और कभी भी झूठ का साथ न दें। यदि हम किसी अन्याय के साक्षी बनें, तो हमें शक्ति दें कि हम न्याय और सच्चाई की गवाही दें।

**जैसे प्रभु यीशु ने पीलातुस के सामने सत्य की गवाही दी, वैसे ही हमें भी सत्य को दृढ़ता से प्रकट करने का साहस दें। हमें आत्मिक ज्ञान दें कि हम यह समझ सकें कि कब और कैसे सत्य की रक्षा**

करनी है।

हे प्रभु, यदि कभी हमने किसी कारणवश सत्य को छुपाया हो, तो हमें क्षमा करें। हमें अपने जीवन में न्याय, सत्य, और प्रेम की राह पर चलने में सहायता करें।

हम यह प्रार्थना प्रभु यीशु मसीह के नाम में करते हैं।

आमीन! □ ✨

A horizontal row of ten empty rectangular boxes, each with a thin black border, intended for children to draw or write in.

लैब्यवस्था 5:1 हमें सिखाता है कि:

A horizontal row of 20 empty square boxes, each with a small black checkmark icon in the top-left corner, intended for manual grading.

A horizontal row of 20 empty square boxes for writing answers, preceded by a checked checkbox.

A horizontal row of eight empty square boxes, each with a thin black border, intended for children to practice writing their names.

A horizontal row of 18 empty square boxes, likely for students to draw or write in.

□ चुनौती: □

□□□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□, □□□□□□□

A horizontal row of 20 empty square boxes, intended for children to draw or write in.

P179 De.13:15 The testimony of witnesses shall be examined thoroughly

## बाइबल पद हिंदी में:

**"और तू पूछ-पाछ करके, और खोज कर, और यत्नपूर्वक पूछताछ करके भली-भाँति जाँच करना।"** (व्यवस्थाविवरण 13:15)

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

यह पद इस बात पर जोर देता है कि किसी भी गंभीर आरोप, विशेष रूप से यदि कोई पूरी नगर मूर्तिपूजा में गिर जाए, तो जाँच-पड़ताल बहुत सावधानी और पूर्ण सत्यापन के साथ होनी चाहिए।

यह केवल यह नहीं कहता कि "तू पूछ" (पूछताछ कर), बल्कि तीन अलग-अलग शब्दों का प्रयोग करता है:

1. **"पूछ-पाछ कर"** (תשאדו - वद्वाश्वत) - सामान्य पूछताछ
2. **"खोज कर"** (וחקירה - वाचकरत) - गहरी खोज
3. **"यत्नपूर्वक पूछताछ करके"** (בשאלה היטוב - वशाल्त हेतेव) - विस्तारपूर्वक प्रश्न करना

□ क्यों? क्योंकि न्याय केवल अफवाहों या सतही साक्ष्यों पर आधारित नहीं होना चाहिए, बल्कि ठोस सत्यापन पर आधारित होना चाहिए।

---

□♂ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

यह पद यहूदी न्याय-प्रणाली के लिए एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है। कई रबियों ने इसे साक्ष्य और जाँच के नियमों का आधार माना है:

1. सात जाँच (שבע חקירות) - שבע חקירות

रबियों ने सात मुख्य प्रश्नों को आवश्यक बताया:

✓ घटना कब हुई?

- सप्ताह (जयंती चक्र में)
- वर्ष (सात साल के चक्र में)
- महीना
- महीने का कौन सा दिन?
- सप्ताह का कौन सा दिन?
- घंटा?
- स्थान?

उदाहरण: यदि कोई कहे कि उसने किसी को मूर्तिपूजा करते हुए देखा, लेकिन वह यह नहीं

बता सकता कि यह कब हुआ-तो उसकी गवाही मान्य नहीं होगी।

रबी हिर्श: यदि एक भी प्रश्न का उत्तर "मुझे नहीं पता" (איני ידוע) हो, तो गवाही

**अमान्य हो जाती है!**

□ 2. **विस्तृत पूछताछ (גָּדִיקָה - בְּקִיּוֹת)**

इसके अतिरिक्त, न्यायालय विस्तृत पूछताछ भी करता था, जैसे:

- जिस जगह घटना हुई, वहाँ मिट्टी का रंग क्या था?
- लोग कौन-कौन से कपड़े पहने थे?
- यदि कोई पेड़ के नीचे था, तो पेड़ की पत्तियाँ कैसी थीं?

□ मतलब: यह जाँच सत्यता को परखने के लिए थी। अगर दो गवाह एक-दूसरे से मूल तथ्यों में विरोधाभास करते, तो उनकी गवाही गिर जाती।

---

□ □

**ईसा मसीह ने भी सत्य की गवाही दी!**

□ "तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।" (यूहन्ना 8:32)

□ :

1. **सत्य को जाँचना और उसे धैर्य से समझना ज़रूरी है।**
2. **अफवाहों या अधूरी जानकारी पर निर्णय नहीं लेना चाहिए।**

3. विश्वास की परीक्षा होनी चाहिए, ताकि हम किसी झूठे प्रचार या गलत शिक्षाओं में न फँसे।

4. प्रभु यीशु मसीह ने भी अपने अनुयायियों को परखने और विवेक से काम लेने के लिए प्रेरित किया।

□ उदाहरण: जब प्रभु यीशु मसीह पर आरोप लगे, तो पीलातुस ने भी सत्य को खोजने का

प्रयास किया-

"सत्य क्या है?" (यूहन्ना 18:38)

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ : □ □ □ □ □ □ □ □  
□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

हे प्रभु यीशु मसीह,

आप सत्य और जीवन है! हमें ज्ञान और विवेक दे कि हम हर बात को भली-भांति जाँच सकें।

अफवाहों और अर्धसत्य से हमें बचा, और अपने वचन के सत्य में स्थिर रख। हमें वही हृदय दे,  
जैसा तूने पीलातुस के सामने दिखाया—एक ऐसा हृदय जो सत्य के लिए खड़ा हो, चाहे

परिस्थितियाँ कैसी भी हों।

हम प्रार्थना करते हैं कि हमारे चर्च और समाज में न्याय, सत्य और दया का साम्राज्य हो। हमें वो  
आंखें दे, जो सत्य को स्पष्ट रूप से देख सकें, और वो हृदय दे, जो निष्पक्ष और न्यायपूर्ण निर्णय ले  
सके।

प्रभु यीशु मसीह के नाम में, आमीन! □ +

**निष्कर्षः:**

**व्यवस्थाविवरण 13:15** हमें सिखाता है कि जाँच-पड़ताल सतही नहीं, बल्कि गहरी होनी

चाहिए। यह सिखाता है कि न्याय केवल भावनाओं या अफवाहों पर आधारित नहीं होना

चाहिए, बल्कि सत्यापन, साक्ष्य और विवेक से संचालित होना चाहिए।

यीशु मसीह ने भी सत्य को प्राथमिकता दी, और हमें भी सत्य को पूरी तरह परखकर उस

पर चलना चाहिए!

P180 De.19:19 On condemning witnesses who testify falsely

P180 De.19:19 False witnesses punished, as they intended upon  
accused

इन्द्रियोः १९:१९

**बाइबल पद हिंदी में:**

"और जैसा उसने अपने भाई के साथ करने की युक्ति सोची थी, वैसा ही तुम उसके साथ

करो; इस प्रकार तुम अपने बीच से उस बुराई को दूर करोगे।" (व्यवस्थाविवरण 19:19)

इन्द्रियोः

इन्द्रियोः

यह पद झूठे गवाहों के विरुद्ध एक कठोर सिद्धांत प्रस्तुत करता है। अगर कोई व्यक्ति झूठी

गवाही देकर किसी निर्दोष व्यक्ति को दंडित करवाना चाहता है, और बाद में यह सिद्ध हो जाता है कि उसकी गवाही झूठी थी, तो उस झूठे गवाह को वही दंड दिया जाएगा जो वह निर्दोष व्यक्ति के लिए चाहता था।

लेकिन रब्बियों ने इसमें एक महत्वपूर्ण व्याख्या दी:

□ "כאר שר זם ולא כאר שר עשה" - "जैसा उसने सोचा था, न कि जैसा उसने किया।"

**मतलब, अगर झूठे गवाहों के कारण निर्दोष व्यक्ति को मृत्युदंड नहीं दिया गया, तो झूठे गवाहों को वही सजा दी जाएगी जो वे उसके लिए चाहते थे।**

**लेकिन अगर निर्दोष व्यक्ति पहले ही दंडित हो चुका है, तो झूठे गवाहों को मृत्युदंड नहीं दिया जाएगा।**

---

□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□

□□□□

□ 1. □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□

**रब्बी रशी और रामबान** □□□□ □□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□

□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□,

□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□□□□

□□□□ □□□

**□ "ताकि लोग न्यायाधीशों पर यह आरोप न लगाएं कि उन्होंने झूठे गवाहों पर भरोसा कर निर्दोष को मार दिया।"**

□ 2. □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□

## रब्बी सफेती और मालविम

□ "अगर एक निर्दोष व्यक्ति की हत्या झूठी गवाही से होती है, और फिर उन झूठे गवाहों को भी मार दिया जाए, तो उनके परिवार वाले बदला लेंगे। इस तरह यह सिलसिला कभी खत्म नहीं होगा।"

**कुछ रब्बी, जैसे चातम सोफर,** □□□□ □□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□

□ "यदि परमेश्वर ने किसी को झूँठे आरोप के कारण मरने दिया, तो शायद उस व्यक्ति को किसी अन्य अज्ञात पाप के लिए यह दंड मिला।"

## 4. **(Intent)**

□ "क्योंकि इन्हीं गवाही देना एक अलग अपराध है, और इसे ही सजा मिलती है।"

### **1□ पत्नी की बेवफाई का झाठा आरोप:**

अगर झूठे गवाह किसी याजक की बेटी पर व्यभिचार का आरोप लगाते हैं (जिसकी सजा जलाया जाना था) लेकिन झूठ पकड़ लिया जाता है, तो उन्हें उसी व्यक्ति की सजा दी जाएगी, जिससे वह जुड़ी थी—अर्थात् उसका साथी। इस मामले में, झूठे गवाहों को गला घोंटकर मारा जाएगा।

## 2 धन संबंधी मामलों में क्या होता है?

□ इन सभी मामलों में क्या होता है?  
 □ इन सभी मामलों में क्या होता है?

□ **रमबाम** □ इन सभी मामलों में क्या होता है?  
 □ इन सभी मामलों में क्या होता है?, □ इन सभी मामलों में क्या होता है?  
 □ इन सभी मामलों में क्या होता है?

□ **रावाद** कहते हैं कि यह नियम केवल मृत्यु दंड तक सीमित है, पैसे के मामलों में नहीं।

---

□ इन सभी मामलों में क्या होता है?  
 □ इन सभी मामलों में क्या होता है?

□ **यीशु मसीह** ने भी झूठी गवाही के खिलाफ शिक्षा दी:

□ "तू झूठी साक्षी न देना।" (निर्गमन 20:16)

□ इन सभी मामलों में क्या होता है?  
**1 अद्यता** - □ इन सभी मामलों में क्या होता है?

**2 दया और क्षमा** - □ इन सभी मामलों में क्या होता है?

□ इन सभी मामलों में क्या होता है?, □ इन सभी मामलों में क्या होता है?

**3 झूठे आरोपों का सामना** - प्रभु यीशु स्वयं झूठे गवाहों के कारण सूली पर चढ़ाए गए थे

(मत्ती 26:59-60)।

□ **सबकः** हमें किसी के विरुद्ध झूठी गवाही नहीं देनी चाहिए, और दूसरों के झूठे आरोपों के कारण जल्दबाजी में निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए।

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ : □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □ □

**हे स्वर्गीय पिता,**

आप न्याय और सत्य का परम स्रोत हैं। हमें उस सच्चाई पर चलने की शक्ति दे, जिसे आपने हमें अपने पुत्र प्रभु यीशु मसीह के द्वारा सिखाया।

जब दुनिया में लोग झूठे आरोप लगाते हैं, जब बेकसूरों को दोषी ठहराया जाता है, तब हमें उस साहस से भर कि हम सच्चाई के पक्ष में खड़े हों।

जैसे प्रभु यीशु ने झूठी गवाहियों को सहा, वैसे ही हमें धैर्य और सत्यनिष्ठा में स्थिर बना। झूठे आरोपों से हमें बचा और जब हम न्याय करें, तो हम सही विवेक का उपयोग करें।

"हे प्रभु, हमें जाँचने की बुद्धि दे, सत्य की रक्षा करने का साहस दे, और न्याय में चलने का अनुग्रह दे।"

हम प्रभु यीशु मसीह के नाम में यह प्रार्थना करते हैं,

**आमीन। □ ✡**

---

□ □ □ □ □ □ □

व्यवस्थाविवरण 19:19 सत्य और न्याय की रक्षा पर बल देता है। झूठे गवाहों को उनके इरादे के अनुसार सजा मिलनी चाहिए, लेकिन उनके झूठ का परिणाम अगर हो चुका है, तो प्रतिशोध का चक्र रोकना आवश्यक है।

□ यीशु मसीह ने भी सत्य की गवाही दी और हमें सिखाया कि झूठे आरोपों का सामना भी

साहस और दया से करना चाहिए। □

P181 De.21:4 On Eglah Arufah, on the heifer when murderer unknown

□ □□□□□□□□□□□□□□ 21:4 (Deuteronomy)

**21:4) - □□□□□ □□□**

"और उन नगरों के पुरनिये उस बछिया को किसी ऐसे नाले में ले जाएं, जिसमें  
सदा जल बहता हो, और जिसे कभी जोता-बोया न गया हो; और उसी नाले में  
उस बछिया की गर्दन तोड़ डालें।"

---

□ **व्याख्या: "नाचल ईतान" (נחל איתן) का अर्थ क्या**

है?

"नाचल ईतान" (ナחֶל אַיְתָן) को विद्वानों ने दो तरीकों से समझाया है:

1 □ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□

□ "नाचल ईतान" एक कठोर, बंजर, और अनजुत भूमि है।

- राशी - "ईतान" का अर्थ है कठोर भूमि, और "नाचल" का अर्थ घाटी या मैदान।
- ओन्केलोस, येरुशलमी, इब्र एज़रा - यह भूमि कभी जोती-बोई नहीं गई।
- चिज़कुनी - "प्राचीन भूमि" जो प्रारंभ से ही बंजर रही है।
- रव हिर्श - कठोर चट्टानी ज़मीन।

२० अन्याय (अनुचितव्याय) २१ अनुचितव्या

□ "नाचल ईतान" एक तेज़ बहती हुई जलधारा है।

- मल्बीम - "ईतान" का अर्थ तेज़ और शक्तिशाली जलधारा।
- बाइबिल में भी इसका उपयोग नदी की शक्ति को दर्शाने के लिए हुआ है (भजन 74:15)।

□ अर्थ:

- राशी की व्याख्या - बंजर भूमि में बलिदान।
  - रम्बाम की व्याख्या - तेज़ नदी में बलिदान।
- 

□ अन्याय अनुचितव्या के लिए नगर को दोषमुक्त करना।  
अनुचितव्या के लिए नगर को दोषमुक्त करना।

□ एक अनसुलझे हत्या के लिए नगर को दोषमुक्त करना।  
निष्पाप बछिया को एक विशेष स्थान पर बलिदान देना।  
प्रतीक: किसी निर्दोष व्यक्ति की हत्या के लिए प्रायश्चित्त करना।

□ "अश्र लो ये आबद बो वलो पिज्जा" – (אֲשֶׁר לֹא יִעַבֶּד בָו וְלֹא יִזְרָעַ) – क्या

यह भविष्य में भी प्रतिबंधित है?

- रबी योशियाह - यह भूमि पहले से जोती-बोई न गई हो।
- रबी योनाथन - इस भूमि को भविष्य में भी नहीं जोता-बोया जाएगा।
- रावा – आगे भी खेती करना वर्जित रहेगा।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □  
□ □ □ □ □ ?

### ✓ यीशु मसीह - पूर्ण और अंतिम बलिदान:

- यह बलिदान एक प्रतीक था कि कोई निर्दोष व्यक्ति मारा गया।
- यीशु मसीह ने संसार के पापों के लिए अपना बलिदान दिया।
- अब हमें किसी बलिदान की आवश्यकता नहीं, क्योंकि प्रभु यीशु मसीह ही हमारा "बलिदान का मेमना" है (यूहन्ना 1:29)।

□ आज की प्रार्थना: "नाचल ईतान का बलिदान और मसीह का बलिदान"

हे	प्रभु	यीशु,
आपने अपना बलिदान दिया ताकि हम जीवन प्राप्त करें।		
जैसे नाचल ईतान में निर्दोष बछिया का बलिदान हुआ,		
वैसे ही आपने हमारे पापों के लिए अपना जीवन दिया।		
हमें सिखाएं कि हम दूसरों के लिए प्रेम और दया दिखाएं,		
और अपने जीवन से आपके बलिदान का आदर करें।		
<b>आमीन। □</b>		

1□ □□ □□□□□□ □□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□  
 2□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□  
 □□ □□□□ □□□□ □□□□  
 3□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□,  
 □□□□□□□ प्रभु यीश मसीह ने क्रूस पर सब कुछ पूरा किया! □□

P182 De.19:3 On establishing Six Cities of Refuge

□ □□□□□□□: □□□□□□□□□□ 19:3

”तू अपने लिये मार्ग तैयार करना, और अपने देश को, जिसे तेरा परमेश्वर<sup>1</sup>  
 यहोवा तुझे भाग में देगा, तीन भागों में बाँटना; ताकि जो कोई मनुष्य को  
 अनजाने में मारे, वह वहां भाग कर जा सके।” (व्यवस्थाविवरण 19:3)

□ □□□□□ □□ □□□□□□:

इस पद में दो प्रमुख बातें कही गई हैं:

1. मार्ग तैयार करना - जो कोई अनजाने में हत्या करे, उसके लिए शरण लेने के मार्ग को स्पष्ट, सुगम और बाधारहित बनाया जाए।
2. देश को तीन भागों में बाँटना - ताकि हर कोई निकटतम शरण-नगर तक जल्दी पहुँच सके।

□ □□□□□□□ □□ □□□□□□:

1. □ राशी: हर चौराहे पर ”शरण! शरण!” लिखे गए संकेत लगाए जाते थे, ताकि भागने वाले को रास्ता आसानी से दिखे।
2. □ □□□□□□□: रास्ते को चौड़ा किया जाता था और जगह-जगह मार्गदर्शक संकेत

होते थे।

- □□□□ □□□□□□□: सड़कें ठीक की जाती थीं, बाधाएँ हटाई जाती थीं, नदियों पर पुल बनाए जाते थे ताकि भागने में कोई परेशानी न हो।
  - □□□□□: ये रास्ते सामान्य सड़कों से दो गुना चौड़े होते थे (32 हाथ)। अदालतें सुनिश्चित करती थीं कि मार्ग हमेशा व्यवस्थित रहे।

A horizontal row of fifteen empty square boxes, followed by a vertical ellipsis (three dots) indicating continuation.

- पूरे देश को इस तरह विभाजित किया गया कि तीनों नगरों की दूरी समान हो।
  - कुल भूमि 400 परसा लंबी मानी गई और प्रत्येक नगर के बीच लगभग 100 परसा की दूरी थी।
  - इन नगरों को इस तरह व्यवस्थित किया गया कि वे समान दूरी पर रहें, जिससे हर कोई आसानी से वहाँ पहुँच सके।
  - "तीन भागों में विभाजन" का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि कोई भी व्यक्ति अपने निकटतम शरण-नगर तक बिना किसी रुकावट के पहुँच सके।

A horizontal row of 15 empty square boxes, followed by one box containing a large black question mark.

1. **प्राविद्युतीकरण:** चाहे हत्या जानबूझकर हो या अनजाने में, हर कोई पहले शरण ले सकता था, लेकिन बाद में न्यायिक प्रक्रिया के आधार पर निर्णय लिया जाता था।

2. ✎ ☐☐☐☐☐☐: इस व्यवस्था का उद्देश्य था कि पीड़ित परिवार जल्दबाजी में बदला न ले,

बल्कि न्यायालय का निर्णय आए।

3. दो दो दोऽद्वयः दोऽद्वयः दोऽद्वयः: यह प्रश्न उठता है कि क्या महिलाएँ

भी शरण ले सकती थीं? आमतौर पर पुरुषों को अधिक भागना पड़ता था, लेकिन

महिलाओं के लिए विशेष परिस्थितियाँ हो सकती थीं।



A horizontal row containing six identical groups of four empty square boxes. Each group is separated by a small gap from the others. These boxes are intended for labeling specific components or regions within a larger diagram.

A horizontal row of five empty square boxes, each with a black border. To the right of the last box is a black colon character.

## 1. प्रभु यीशु मसीह - हमारी शरणः

- पुराने नियम में शरण-नगर निर्दोष को सुरक्षा देने के लिए बनाए गए थे, जबकि  
**प्रभु यीशु मसीह खुद हमारे शरण-स्थान बन गए हैं (मत्ती 11:28 - ”हे सब  
परिश्रम करने वालों और बोझ से दबे लोगों, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम  
दूँगा।”)**
  - जैसे पुराने नियम में नगर में प्रवेश करने से सुरक्षा मिलती थी, वैसे ही प्रभु यीशु  
में विश्वास करने से पापों की क्षमा और उद्धार मिलता है।

## 2. हमारी जिम्मेदारी:

- जैसे इस्लामियों को मार्ग तैयार करने और संकेत लगाने का आदेश दिया गया

या, वैसे ही हमें लोगों को प्रभु यीशु मसीह तक पहुँचने का मार्ग दिखाना

**चाहिए (मत्ती 5:16 - "तुम्हारा उजियाला लोगों के सामने ऐसा चमके कि वे**

तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की महिमा करें।”)

- चर्च को एक "आत्मिक शरण-स्थान" बनना चाहिए, जहाँ लोग अपने पापों, परेशानियों और दुखों से सुरक्षित महसूस करें।

### 3. समान न्याय और अनुग्रहः

- जैसे शहरों को समान दूरी पर रखा गया था, वैसे ही ईश्वर का प्रेम और अनुग्रह हर किसी के लिए उपलब्ध है, चाहे वह किसी भी जाति, वर्ग, पृष्ठभूमि या संस्कृति का हो (गला. 3:28 - "न तो यहूदी, न यूनानी, न दास, न स्वतंत्र, न नर, न नारी; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो।")

A horizontal row of ten empty rectangular boxes, each with a thin black border. To the right of the tenth box is a vertical ellipsis consisting of three small black dots.

प्रिय प्रभु यीशा,

□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□ □□ □□, □□  
□□□□□□□ □□□ □□□□□□□□□□ □□ □□ □□□ □□□  
□ □□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□  
□□ □□□ □□□□ □□□ □□□ □□□  
□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□, □□□□ □□ □□□□□□  
□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□  
⛪ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□ □□□, □□□□ □□ □□□□□□  
□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□  
† □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□□□□□ □□

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

**प्रभु यीशु मसीह के नाम में, आमीन! □**

---

P183 Nu.35:2 Give cities to Levites - who've no ancestral land share

□ □ □ □ □ □ □ : □ □ □ □ □ **35:2**

"इस्राएलियों को आज्ञा दे कि वे अपने निज भाग से लेवियों को नगर दें जिन में वे रहें, और नगरों के आस पास उनके लिये चरागाह की भूमि भी दो।"

---

❖ □ □ □ □ □ : □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □  
 '□ □ □ □ □ □' (□ □ □ □ □ □)

लेवी गोत्र को इस्राएल में कोई भूमि स्वामित्व में नहीं मिली, क्योंकि वे परमेश्वर की सेवा के लिए नियुक्त थे। इसलिए, परमेश्वर ने आज्ञा दी कि बाकी इस्राएली गोत्र अपने हिस्से में से लेवियों को नगर दें, जिनमें वे रह सकें।

इन नगरों के चारों ओर 'मिग्राश' (खुली भूमि) भी दी गई, जो मुख्यतः दो कारणों से थी:

**शहर की सुंदरता और व्यवस्थित योजना □**

**पशुपालन और कृषि के लिए खुला स्थान □ □**

---

1 □ □ □ □ □ (Rashi)

- राशी के अनुसार 'मिग्राश' केवल एक खुली भूमि थी, जिसका उपयोग न तो घर बनाने के लिए किया जा सकता था और न ही खेती के लिए। यह भूमि केवल नगर की शोभा बढ़ाने के लिए थी।

उदाहरण:  
कल्पना करें कि एक नगर के चारों ओर एक हरा-भरा क्षेत्र है, जो इसे सुंदर और खुला बनाता है।  
वहाँ कोई निर्माण नहीं हो सकता, केवल एक साँदर्यात्मक स्थान है।

**2□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ (Rabbeinu Bahya)**

- उन्होंने स्पष्ट किया कि 'मिग्राश' नगर की दीवारों से 1,000 हाथ (cubits) तक फैली खुली भूमि थी, जिसे खेती के लिए नहीं बल्कि लेवियों के पशुओं के चरने के लिए रखा गया था।

**उदाहरण:**  
एक नगर जिसके चारों ओर 1,000 हाथ की दूरी तक हरी-भरी भूमि है, जहाँ लेवियों की गायें और भेड़ें स्वतंत्र रूप से चर सकती हैं।

3□ □ □□□□□ (Ramban)

- □ □ □ □ □ □ □ □ 35:4-5 □ □ □ □ □ □ □ □ आयाम की अस्पृष्टता  
को समझाने की कोशिश की।

- पहला 1,000 हाथ (cubits) → □□□□ □□□□ □□□□ □□ (□□□□ □□  
□□□□□□)
- अगला 1,000 हाथ → □□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□□□□
- कुल मिलाकर 2,000 हाथ का एक वर्गाकार क्षेत्र नगर को घेरे रहता था।

□

**उदाहरण:**

नगर के चारों ओर 500 हाथ की दूरी तक खुली भूमि (पहला 1,000 हाथ चारों ओर बँटकर)  
और उसके आगे का क्षेत्र खेती के लिए (अगले 1,000 हाथ) था।

---

4□ □ □□ □□□□ (Rav Hirsch)

□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ नगर नियोजन (Urban Planning) का सिद्धांत  
बताया।

नगरों को उनके 'मिग्राश' क्षेत्र से बाहर फैलने की अनुमति नहीं थी, ताकि खेती योग्य  
भूमि संरक्षित रहे।

यदि जनसंख्या बढ़ती, तो नया नगर बसाया जाता, न कि पुराना नगर फैलाया जाता।

□

**आज****का****उदाहरण:**

बड़े महानगरों में हरे-भरे पार्क और खुले क्षेत्र बनाए जाते हैं, ताकि शहर में पर्यावरणीय संतुलन  
बना रहे और अतिक्रमण न हो।

**5□ □ □□□□□□ □□□□ (Haamek Davar)**

□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□  
यह एक सीधी आज्ञा थी ('א' – आदेश), ताकि लेवियों  
को तुरंत नगर और 'मिग्राश' मिले।

**6□ □ □□ □□□□□ (Or HaChaim)**

□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□  
अपनी  
भूमि का उत्तराधिकारी होने का अधिकार नहीं था, लेकिन वे उपहार स्वरूप भूमि स्वीकार  
कर सकते थे।



□□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□

□□ ?

1□ □ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□□□

- जैसे लेवियों को परमेश्वर ने विशेष सेवा के लिए चुना, वैसे ही **आज चर्च में पास्टर,**  
**मिशनरी और सेवक विशेष बुलाहट से नियुक्त किए जाते हैं।**
- उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने में समुदाय की **ज़िम्मेदारी होती है।**

2□ □ □□□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□

- **'मिग्राश' की संकल्पना हमें शहरों को संतुलित और पर्यावरण-अनुकूल बनाने की**  
**प्रेरणा देती है।**

- हमें कंक्रीट के जंगलों में बदलने के बजाय हरियाली और खुली जगहें बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए।

3□ □ □□-□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□

- इस व्यवस्था में हर गोत्र को अपने हिस्से से लेवियों को नगर देना था।
  - इसी प्रकार, आज मसीही समुदाय को एक-दूसरे की भलाई के लिए योगदान देना चाहिए।
- 

□ □□□□□□□□: □□□□□□□□ □□ □□ □□□□  
□□ □□□□ □□□□ □□ □□□

हे	स्वर्गीय	पिता,
आपने लेवियों को उनकी सेवा के लिए नगर और 'मिग्राश' दिया। वैसे ही, हमारे जीवन में भी हमें आपकी सेवा करने के लिए एक स्थान दें।		

जैसे आपने प्रभु यीशु मसीह को हमारी सेवा और उद्धार के लिए भेजा, वैसे ही हमें निस्वार्थ सेवा का हृदय दें।

□ □□□ □□□□□ □ हम अपने संसाधनों को आपके राज्य के लिए इस्तेमाल करें □  
□ □□□ दूसरों की भलाई के लिए देने वाला दिल दें □  
□ □□□□ कलीसियाओं को भी आपकी योजना के अनुसार व्यवस्थित करें।

प्रभु यीशु मसीह के नाम में, आमीन! □□

□ □□□□□□□□: □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□  
□□□□□□□□ □□!

गिनती 35:2 हमें यह सिखाता है कि परमेश्वर की व्यवस्था न केवल न्यायपूर्ण है, बल्कि इसमें  
हर व्यक्ति के लिए देखभाल और योजना है। हमें भी अपने जीवन और चर्च को इसी सिद्धांत  
पर आधारित करना चाहिए।

P184 De.22:8 Build fence on roof, remove potential hazards from home

**व्यवस्थाविवरण 22:8 (Deuteronomy 22:8) - हिंदी बाइबल पद**

”जब तू नये घर का निर्माण करे, तब अपनी छत पर मुँडेर बनाना, ऐसा न हो कि यदि कोई  
वहाँ से गिर पड़े तो उसका दोष तुझ पर आए।”

## बाइबल की व्याख्या

यह पद सुरक्षा और जिम्मेदारी की शिक्षा देता है। यह निर्देश देता है कि जब कोई नया घर बनाए,  
तो छत पर मुँडेर (railings or parapet) बनानी चाहिए ताकि कोई गिरकर घायल न हो या मर न  
जाए। इस व्यवस्था का उद्देश्य लोगों को नुकसान से बचाना और समाज में ज़िम्मेदारी की  
भावना को बढ़ावा देना है।

प्राचीन यहूदी समाज में घरों की छतें समतल हुआ करती थीं और लोग वहाँ समय बिताते थे।  
यदि छत पर मुँडेर न हो, तो कोई गिर सकता था, जिससे गृहस्वामी पर दोष आ सकता था।

इससे हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें अपने कार्यों में सुरक्षा के उपाय करने चाहिए और दूसरों

की भलाई की चिंता करनी चाहिए।

---

## यहूदी रब्बियों की राय और उदाहरण

यहूदी विद्वानों (रब्बियों) ने इस आदेश को "पड़ोसी की सुरक्षा" और "सामाजिक जिम्मेदारी" के व्यापक सिद्धांत के रूप में देखा।

1. **रम्बाम (Maimonides)** – उन्होंने कहा कि यह नियम केवल घरों तक सीमित नहीं है,

बल्कि किसी भी संभावित खतरे से बचाव के लिए लागू होता है, जैसे कुएँ को खुला न छोड़ना या घर में कोई खतरनाक वस्तु न रखना।

2. **तलमूद (Talmud, Bava Kamma 15b)** – यह कहता है कि यदि कोई जानबूझकर

खतरनाक चीज़ को खुला छोड़ देता है और उससे किसी को नुकसान होता है, तो वह व्यक्ति दोषी ठहराया जाएगा।

## उदाहरण:

- यदि कोई व्यक्ति अपने घर के बाहर गद्वा खोदता है और उसे खुला छोड़ देता है, जिससे कोई गिरकर घायल हो जाता है, तो यह व्यक्ति दोषी होगा।
  - यदि कोई दुकान का मालिक गीली ज़मीन पर चेतावनी बोर्ड नहीं लगाता और कोई फिसल जाता है, तो यह उसकी ज़िम्मेदारी होगी।
-

## आज के मसीही चर्च में इसका क्या महत्व है?

आज के चर्चों में इस पद को नैतिक और व्यावहारिक जिम्मेदारी के रूप में देखा जाता है।

1. **शारीरिक रूप से** - मसीही संगठनों और चर्चों को सुनिश्चित करना चाहिए कि उनके भवन और कार्यक्रम सुरक्षा मानकों के अनुरूप हों, जिससे किसी को नुकसान न हो।
2. **आधात्मिक रूप से** - यह पद सिखाता है कि हमें अपने कार्यों और निर्णयों में दूसरों की भलाई का ध्यान रखना चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि कोई मसीही शिक्षक गलत शिक्षा देता है और लोग उससे भटक जाते हैं, तो वह शिक्षक दोषी होगा।

### आधुनिक उदाहरण:

- यदि कोई कंपनी अपने उत्पाद में सुरक्षा उपायों की अनदेखी करती है और लोगों को नुकसान होता है, तो यह इस पद के सिद्धांत का उल्लंघन होगा।
- चर्च में यदि कोई नेता किसी झूठी शिक्षा का प्रचार करता है जिससे लोग पाप में पड़ जाते हैं, तो यह भी एक प्रकार की "छत पर मुँडेर न बनाना" होगा।

### इससे जुड़ी एक प्रार्थना (प्रभु यीशु मसीह के जीवन से प्रेरित)

**हे प्रभु यीशु मसीह,**

आपने हमें सिखाया है कि हम एक-दूसरे से प्रेम करें और उनकी भलाई का ध्यान रखें। जैसे आपने अपने शिष्यों की रक्षा की और उन्हें सत्य की राह दिखाई, वैसे ही हमें भी दूसरों की सुरक्षा

**और कल्याण की चिंता करने के लिए प्रोत्साहित करें।**

हमें ज्ञान और समझ दें कि हम अपने घरों, कार्यस्थलों और समाज में ज़िम्मेदारी से कार्य करें, ताकि किसी को कोई हानि न हो। हमें आपके प्रेम और अनुग्रह में चलने की शक्ति दें, ताकि हम दूसरों के लिए आशीष का कारण बनें।

**प्रभु यीशु मसीह के नाम में, आमीन।**

### ***IDOLATRY***

P185 De.12:2; On destroying all idolatry and its appurtenances

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ **12:2 (Deuteronomy 12:2)**

”तुम उन सब स्थानों को अवश्य नष्ट कर देना, जहाँ जिन जातियों का तुम अधिकारी होने जा रहे हो, उन्होंने अपने देवताओं की उपासना की है, ऊँचे पहाड़ों, पहाड़ियों और हर हरे-भरे पेड़ के नीचे।”

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

परमेश्वर यहोवा ने इस्राएलियों को आज्ञा दी कि जब वे प्रतिज्ञा किए हुए देश में प्रवेश करें, तो वे उन सभी स्थानों को नष्ट कर दें जहाँ अन्य जातियाँ अपने झूठे देवताओं की उपासना करती थीं।

□ ”अवश्य नष्ट कर देना” – इसका अर्थ है कि सिर्फ मूर्तियों को हटाना ही नहीं, बल्कि उनका हर चिन्ह मिटा देना, ताकि कोई दोबारा उनकी पूजा न कर सके।

□ "ऊँचे पहाड़ों और पहाड़ियों पर" – प्राचीन काल में मूर्तिपूजा करने वाले ऊँचाई वाले स्थानों पर अपने देवताओं की उपासना करते थे, क्योंकि वे मानते थे कि ऊँचाई पर उनकी प्रार्थनाएँ सुनी जाएंगी।

□ "हरे-भरे पेड़ों के नीचे" - यह विशेष रूप से अशोरा वृक्षों (Asherah Trees) की ओर संकेत करता है, जिनका उपयोग मूर्तिपूजा में किया जाता था।

---

□ □

□ 1. □ □ □ □ □ "□ □ □ □ □ □ □" □ □ □ □ □ □ □ □ □ ?

"|אָבָדָת בָּבָא" (अवश्य नष्ट कर देना) में दोहराव महत्वपूर्ण है।

□ □ □ □ □ : "इसका अर्थ है बार-बार नष्ट करना! अगर कोई मूर्ति दोबारा स्थापित हो जाए, तो

उसे	फिर	से	उखाड़	दो।"
-----	-----	----	-------	------

□ □ □ □ □ □ : यदि एक अशोरा वृक्ष काट दिया जाए और वह फिर से उग आए, तो उसे फिर

से	काटना	आवश्यक	है।
----	-------	--------	-----

□ □ □ □ □ □ □ : मूर्तिपूजा को पूरी तरह नष्ट करने के दो तरीके हैं -

1 □

2 □

□ □ □ □ □ □ □

□ 2. □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ ?

□ बेखोर शोर: "नहीं, यह आज्ञा भूमि को नष्ट करने की नहीं, बल्कि मूर्तिपूजा के चिह्नों को मिटाने की है।"

□ रव हिर्श: "धरती परमेश्वर की है, उसे नष्ट करने की नहीं, बल्कि मूर्तिपूजा से शुद्ध करने की

**आज्ञा है।"**

□ 3. □□□□□ □□□□□□□ □ □ □□□□□□ □ □ □□□ □□□□ □□□□ □□□ ?

□ **इन्हे एज़रा:** "□□□-□□□ □□□□□□□ □ □ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□  
□□□□□□□ □ □ □□□□□□□ □□□ □ □ □□□ □□□ □ □ □□□ □□□ □□□ □□  
□□□□ □ □ □□□□□ □□□□ □ □ □□□□ □□□ □ □ □□□□ □□□ □□□ □□"

□ **रालबागः** "अगर कोई मूर्ति पेड़ के नीचे रखी जाए, तो केवल मूर्ति हटानी चाहिए। लेकिन यदि  
पेड़ खुद मूर्तिपूजा के लिए लगाया गया हो, तो उसे भी उखाड़ देना चाहिए।"



1□ **मूर्तिपूजा से दूर रहना** – □□□□□ □□□ □□□ □ □ □□□□□ □□□ □□  
□□□□□□ □ □ □□□ □□□□□□□ □□□□□ □ □ □□□□□ □□□ □□□□□  
(□□□□□ 4:10) □

2□ **पवित्रता बनाए रखना** – □□ □□□□□ □ □□□ □□□□□□□□ □ □ □□□□□ □□  
□□, □□□□□ □ □ □□□□□  
□□ □□□□□ □□□□□□□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

3□ **एक सच्चे स्थान पर आराधना** - व्यवस्थाविवरण 12 के आगे के पद बताते हैं कि परमेश्वर  
ने एक ही स्थान (यरूशलाम) को आराधना के लिए चुना था। आज प्रभु यीशु मसीह के द्वारा, हम  
किसी भी स्थान पर सच्चे हृदय से आराधना कर सकते हैं (यूहन्ना 4:23-24)।

□ □□□□□□□□ (□□□□□ □□□□ □□□□ □ □ □□□□ □□  
□□□□□□)

★ हे प्रभु यीश मसीह,

आपने हमें सिखाया कि केवल एक ही सच्चा परमेश्वर यहोवा है, और हमें केवल उसी की आराधना करनी चाहिए।

जैसे आपने शैतान से कहा: "तू केवल प्रभु यहोवा की उपासना कर और केवल उसी की सेवा कर" (मत्ती 4:10), वैसे ही हमें भी हर प्रकार की मर्तिपूजा और इन्हें विश्वासों से दूर रखिए।

The image displays a collection of horizontal bars, each consisting of a sequence of small, light-blue square icons. The bars are arranged vertically and vary in length. Some bars are fully visible, while others are partially cut off at the bottom. The colors of the bars include white, light green, and light blue. The overall pattern suggests a visual representation of data, such as a progress bar or a set of status indicators.

प्रभु यीशु मसीह के नाम में, आमीन। □ ✝

P186 De.13:17 The law about a city that has become apostate/perverted

1

”और उस नगर की सारी लूट को चौक के बीच में इकट्ठा करना, और नगर को और उसकी सारी लूट को पूरी रीति से यहोवा अपने परमेश्वर के लिये जला देना; और वह सदा के लिये टीलों के समान ढेर बना रहे, और कभी फिर न बसाया जाए।”

□ Ir HaNidachat (וְרַחֲנָנָת - וְרַחֲנָנָתִים וְרַחֲנָתִים  
וְרַחֲנָת) - וְרַחֲנָתִים וְרַחֲנָתִים וְרַחֲנָתִים

Ir HaNidachat एक ऐसा नगर था जो सामूहिक रूप से मूर्तिपूजा (idol worship) में फंस गया था। परमेश्वर ने इस तरह के नगर को पूरी तरह नष्ट करने का आदेश दिया ताकि इस्राएल में कोई भी मूर्तिपूजा को न अपनाए।

## □ आदेश का उद्देश्यः

- मूर्तिपूजा के पाप से पूरी तरह छुटकारा पाना।
  - अन्य नगरों के लिए चेतावनी देना।
  - परमेश्वर की पवित्रता को बनाए रखना।

A horizontal row of 15 empty square boxes, intended for children to draw or write in.

□ 1. □□□ □□ □□□□□□□ □□□ **(Square)** □□□ □□□□□□□ □□□□

**”सारी लूट को चौक में इकट्ठा करो”**

□ **Malbim** - यदि नगर में चौक नहीं है, तो एक चौक बनाया जाए।



□ □ □ □ □ :

जैसे कोई मूर्तिपूजा करने वाला नगर अपनी संपत्ति को कहीं और छिपा दे, तो भी उसे खोजकर परमेश्वर के लिए नष्ट करना होगा।

---

□ 2. □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

**"नगर और उसकी लूट को पूरी तरह जलाओ"**

□ Ibn Ezra – □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ Rashi – □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □  
□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ Rabbi Shimon - ऐसा करने से यह एक पूर्ण बलिदान (Whole Burnt Offering) के समान होगा।



□ □ □ □ □ :

बाइबल में जब इस्राएल ने मूर्तिपूजा की, तो मूसा ने परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार उस पाप को समाप्त किया (निर्गमन 32:27)।

---

□ 3. □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

**"वह सदा के लिए टीलों के समान ढेर बना रहे"**

□ Ibn Ezra - "टील" का अर्थ एक ऐसा ऊँचा स्थान जो अब रहने लायक नहीं है □

□ Rabbeinu Gershom – □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □  
□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ Rabbi Akiva - नगर को उसके पहले जैसी स्थिति में नहीं बसाया जाना चाहिए, लेकिन खेती के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

- Malbim – "सदैव नष्ट" का अर्थ यह है कि इसे कभी दोबारा नगर के रूप में पुनः स्थापित नहीं

**करना चाहिए।**



□□□□□□:

यिर्म्याह 50:39-40 में बाबुल का भी ऐसा ही विनाश बताया गया है, कि वह फिर कभी नहीं बसाया जाएगा।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□□□□□ □□?

□ 1. मूर्तिपूजा से बचना - प्रभु यीशु मसीह ने हमें सिखाया कि हम केवल परमेश्वर की आराधना

करें (मत्ती 4:10)।

□ 2. पवित्रता बनाए रखना - पौलस ने कहा कि हम परमेश्वर का मंदिर हैं और हमें किसी भी

अपवित्रता से बचना चाहिए (1 कुरिन्थियों 3:16-17)।

□ 3. न्याय और दया - प्रभु यीशु ने हमें पाप से नफरत करना सिखाया, लेकिन पापियों के प्रति

दया दिखाना भी (यूहन्ना 8:11)।

□ 4. आध्यात्मिक मूर्तिपूजा - आज मूर्तिपूजा केवल मूर्तियों की आराधना नहीं बल्कि पैसे,

प्रसिद्धि, और सांसारिक इच्छाओं की पूजा भी हो सकती है (1 यूहन्ना 5:21)।

□ 5. आत्मिक युद्ध - आज हमें शारीरिक नगरों को जलाने की जरूरत नहीं है, लेकिन हमें अपने

जीवन में हर प्रकार की बुराई को नष्ट करना चाहिए (इफिसियों 6:12)।

A horizontal sequence of 20 empty rectangular boxes, likely used for input fields or placeholder text in a form.

□ हे प्रभु यीशु मसीह,

हमारे हृदय को शुद्ध कर कि हम किसी भी प्रकार की मूर्तिपूजा में न फँसे।

से बचें।

जैसे आपने पाप को क्स पर नह किया।

आपका नाम हमेशा ऊँचा रहे, और हमारी आत्मा आपकी सच्चाई में बढ़े।

A horizontal green bar containing 20 empty square boxes followed by an exclamation mark inside a final square box.

A decorative footer element consisting of a horizontal line of small squares and rectangles. In the center of this line is the time '13:17'. At the right end of the line is a small, stylized starburst or spark icon.

P187 De.20:17 On the law about destroying the seven Canaanite nations

**"बल्कि तुम्हें हिती, एमोरी, कनानी, परिज्जी, हिक्वियों और यबूसी लोगों को पूरी तरह से नाश करना है, जैसा कि यहोवा परमेश्वर ने तुम्हें आज्ञा दी है।"**

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

इस पद में परमेश्वर ने इस्राएलियों को आज्ञा दी कि वे कनान के सात राष्ट्रों को पूरी तरह से नाश कर दें। लेकिन यहाँ सिर्फ छह राष्ट्रों का उल्लेख किया गया है, जबकि गिर्गाशी नाम की सातवीं जाति का नाम गायब है। इसका कारण क्या है? कई यहूदी रब्बियों ने इस पर व्याख्या की है।

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

### □ 1. रशी (Rashi)

- रशी बताते हैं कि "जैसा कि यहोवा ने आज्ञा दी" यह वाक्यांश गिर्गाशियों को भी सम्मिलित करता है।
- कारण: गिर्गाशी लोग पहले ही इस्राएलियों के आगमन से पहले ही भूमि छोड़कर चले गए थे।

### □ 2. सिफ्टे चखामिम (Siftei Chakhamim)

- वे कहते हैं कि गिर्गाशी का नाम न होने के बावजूद, यह आज्ञा उनके लिए भी लागू होती है।
- उदाहरण: यदि कोई गिर्गाशी कनान की अन्य जातियों के बीच बचा हुआ पाया जाता, तो उस पर भी यह आदेश लागू होता।

### □ 3. अदेरेट ईलियहु (Aderet Eliyahu)

- यह बताते हैं कि गिर्गाशी पहले ही वहाँ से भाग चुके थे, लेकिन यदि कोई शेष बचता, तो यह नियम उस पर भी लागू होता।

#### ❖ 4. □□□□□ □□□□□□ (Maskil LeDavid)

- यह स्पष्ट करते हैं कि परमेश्वर पहले से जानता था कि गिर्गाशी स्वेच्छा से भूमि छोड़ देंगे, इसलिए उनका नाम यहाँ नहीं दिया गया।

#### □ 5. □□□□□ (Reggio)

- वे भी यही मानते हैं कि गिर्गाशी का नाम छोड़ने का कारण यह था कि वे पहले ही भूमि छोड़कर जा चुके थे।

#### □ 6. □□□□□ □□□□□ (Rabbeinu Bahya)

- वे दो कारण देते हैं:
  1. गिर्गाशी की संख्या कम थी।
  2. उन्होंने युद्ध से पहले ही भूमि छोड़ दी थी।

#### □ 7. □□'□□□□ □□□□ (Haamek Davar)

- वे समझाते हैं कि यह आदेश युद्ध के समय के लिए था, न कि उन शहरों के लिए जो इसाएली पहले ही जीत चुके थे।

□ 8. इसाएलियों का संपूर्ण नाश करने का आदेश दिया गया (Chizkuni)

- वे बताते हैं कि इसाएलियों को इन राष्ट्रों का संपूर्ण नाश करने का आदेश दिया गया

था, लेकिन उनकी संपत्ति और घरों को रखने की अनुमति थी।

□ 9. यदि ये राष्ट्र परमेश्वर की व्यवस्था को मान लेते, तो क्या उन्हें जीवित रहने की अनुमति मिलती? (Gur Aryeh)

- वे चर्चा करते हैं कि यदि ये राष्ट्र परमेश्वर की व्यवस्था को मान लेते, तो क्या उन्हें जीवित रहने की अनुमति मिलती?

- वे कहते हैं कि यदि वे पूरी तरह से पश्चाताप कर परमेश्वर की ओर मुड़ते, तो परमेश्वर उन्हें स्वीकार कर सकता था।

↑ इसाएलियों को क्या करना चाहिए?

□ □ ?

1. आत्मिक युद्ध का प्रतीक □

- मसीही विश्वास में यह पद आत्मिक युद्ध का प्रतीक है, जहाँ मसीही विश्वासियों को पाप, दुष्टता और बुराई से पूरी तरह से अलग होने के लिए बुलाया जाता है।

- उदाहरण: जैसे इसाएलियों को कनान की बुरी जातियों को पूरी तरह से हटाने का आदेश दिया गया, वैसे ही मसीहियों को अपने जीवन से पापों को पूरी तरह

**से निकालने का प्रयास करना चाहिए।**

## 2. न्याय और दया का संतुलन ✎

- यह पद परमेश्वर के न्याय को दर्शाता है, लेकिन साथ ही यह भी दिखाता है कि  
**यदि कोई पश्चाताप करता है, तो परमेश्वर दयालु हैं (यहना 3:16)।**

## 3. नई वाचा में परिवर्तन +

- **प्रभु यीशु मसीह ने अपने अनुयायियों को शारीरिक युद्ध नहीं, बल्कि प्रेम और सुसमाचार प्रचार द्वारा जीतने की शिक्षा दी।**
- **"अपने शत्रुओं से प्रेम रखो, और जो तुम्हें सताते हैं उनके लिए प्रार्थना करो।"**  
**(मत्ती 5:44)**

□ □ □ □ □ □ □ □ □ ( □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ )  
□ □ □ □ □ □ □ )

**हे प्रभु यीशु मसीह,**

**आपने हमें सिखाया कि हम आत्मिक युद्ध लड़ें, न कि मनुष्यों के विरुद्ध, बल्कि पाप और बुराई के विरुद्ध। जैसे इस्राएलियों को शुद्ध जीवन जीने की आज्ञा दी गई, वैसे ही हमें भी अपने जीवन से पाप को हटाने की शक्ति दे।**

जैसे आपने क्रूस पर अपने शत्रुओं के लिए प्रार्थना की, हमें भी अपने हृदय में प्रेम और क्षमा रखने की शक्ति प्रदान करे। हम आपने मार्ग अपनाएँ और अपने जीवन को पवित्र और धार्मिक बनाएँ।

**प्रभु यीशु मसीह के नाम में, आमीन!**

□ □□□□□□□□:

- व्यवस्थाविवरण 20:17 हमें परमेश्वर की पवित्रता, न्याय और आज्ञाकारिता का महत्व सिखाता है।
- मसीही विश्वास में, इस पद को आत्मिक शुद्धता और परमेश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण के रूप में समझा जाता है।
- प्रभु यीशु मसीह के द्वारा, हमें प्रेम और क्षमा के माध्यम से विजय पाने के लिए बुलाया गया है।

P188 De.25:19 On the extinction of the seed of Amalek

□ □□□□□□□□□□□ 25:19 (Deuteronomy 25:19)

"इसलिए जब तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें चारों ओर के तुम्हारे शत्रुओं से विश्राम दे देगा, उस देश में जिसे तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें निज भाग के रूप में देता है, तब तुम्हें स्मरण रखना चाहिए कि अमालेक ने तुम्हारे साथ क्या किया था। तुम्हें स्वर्ग के नीचे से अमालेक की स्मृति मिटा देनी चाहिए; इसे मत भूलना।"

□ □□□□□ □□□ □□□□□□□□:

इस पद में अमालेक को पूरी तरह से मिटाने का आदेश दिया गया है। यह तब लागू होना था जब इस्राएल ने कनान देश में बस कर अपने शत्रुओं से विश्राम प्राप्त कर लिया हो।

□ अमालेक को नष्ट करने का कारण:

1. अमालेक ने इस्राएल पर हमला किया जब वे मिस्र से निकलकर यात्रा कर रहे थे (निर्गमन 17:8-16)।
2. वे कायरता से हमला करते थे - अमालेक ने थके-माँदे और पीछे छूटे इस्राएलियों पर हमला किया।
3. वे परमेश्वर के विरुद्ध थे - उन्होंने परमेश्वर के लोगों से युद्ध करके परमेश्वर की योजना को रोकने का प्रयास किया।

□ "स्मृति मिटाना" का अर्थ सिर्फ लोगों का नाश नहीं था, बल्कि यह सुनिश्चित करना था कि अमालेक का कोई चिन्ह, नाम, या अस्तित्व न रहे।

---

□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□:

1 □ □□□ (Rashi) – □□□□□ □□□□□ □ □ □□□□

□ राशी ने कहा कि "अमालेक का नाम तक नहीं बचना चाहिए"। यहां तक कि उनकी पशु-संपत्ति को भी नष्ट किया जाना चाहिए, □□□□ □□□ □□ □ □□ –

□ "यह अमालेक की गाय है" या "यह अमालेक की ऊँटनी है।"

2 □ □□ □□□□ (Gur Aryeh) – □□□□□ □□□□□

□ उन्होंने समझाया कि जब परमेश्वर ने कहा "अमालेक की स्मृति मिटाओ", तो यह पुरुष, स्त्री,

## बच्चे, और उनकी भूमि तक का संपूर्ण विनाश था।

**3□ □□□□□□ (Mizrachi) – □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□**

□ उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि अमालेक की कोई निशानी भी नहीं बचनी चाहिए, जैसे कि उनके पेड़-पौधे, पत्थर, या भवन।

**4□ □□ □□□□ (Rav Hirsch) – □□□□□ □□□□□**

□ उन्होंने कहा कि "मत भूलो" □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□,  
 □□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□ □□ –  
 □ हमें कभी किसी के साथ अन्याय नहीं करना चाहिए □  
 □ हमेशा परमेश्वर के न्याय और धार्मिकता को प्राप्तिकर्ता देनी चाहिए।

**5□ □□□□□□ (Sforno) – □□□□□□ □□ □□□□**

□ उन्होंने कहा कि अमालेक ने इस्राएल पर हमला करके परमेश्वर की महिमा का अनादर किया। इसलिए, उनका संपूर्ण विनाश परमेश्वर की महिमा की पुनर्स्थापना था।

**6□ □□□□□□ □□□□ (Rabbeinu Bahya) – □□□□□□ □□**

□□□□□□ □□ □□□□

□ □□□□□□ □□□□ □□ परमेश्वर पहले स्वर्ग में अमालेक को मिटाएगा, और फिर इस्राएल को पृथ्वी पर उन्हें नष्ट करने की आज्ञा दी गई।

**7□ □□□□ □□□□ (Haamek Davar) – □□□□□□□□ □□**

□□□□ □□□□

□ □□□□□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□□□□□□ □□ □□ □□  
 अमालेक अंततः स्वाभाविक रूप से मिट जाएंगे, लेकिन इस्राएलियों को भी उन्हें पूरी तरह से नष्ट करने का आदेश दिया गया।

□ ?

लेकिन आध्यात्मिक रूप में, अमालेक को एक प्रतीक के रूप में देखा जाता है:

	3.	"मत भूलना"	=	आत्मिक जागरूकता
				पाप हमेशा हमला करने के लिए तैयार
रहता				है
		मसीह में विजय दी है और हमें सावधान रहने की		

A horizontal row of 20 empty square boxes, intended for children to draw or color in.

□ हे परमेश्वर, हमारे जीवन में हर अमालेक को मिटा दे! □

**प्रिय**                    **प्रभु**                    **यीश**                    **मसीह,**

**चालों को पूरी तरह मिटा सकें।**

□ □ □ □ □ □ □ □ हमारी असली लड़ाई मनूषों से नहीं, बल्कि अधर्मी आत्माओं

से है ( ०००००००००० ) ६:१२

□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□, □□□ □ **हमें हर**

**दिन** आत्मिक विजय प्रदान करें □

□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ हम कभी भी पाप

## के प्रलोभन में न पड़ें □

हम यह प्रार्थना करते हैं, प्रभु यीश मसीह के नाम में। □ आमीन। □

✓ अमालेक के किसी भी चिन्ह को मिटाने के रूप में समझाया।

✓ इसका उत्तराधिकारी पाप और शैतान के खिलाफ आत्मिक संघर्ष

□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□

✓ ☰ ☰ ☰ ☰ ☰ ☰ ☰ हमें आत्मिक अमालेक (पाप) को पूरी तरह से मिटाने

## का मार्ग दिखाया।

P189 De.25:17 On remembering the nefarious deeds of Amalek to Israel

□ □ □ □ □ □ □ (□ □ □ □ □ □ □)

### व्यवस्थाविवरण 25:17

"याद रखो कि जब तुम मिस्र से निकल कर मार्ग में चले जा रहे थे, तब अमालेक ने तुम्हारे साथ क्या किया।

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

### अमालेक ने क्या किया?

1. **अकारण हमला** – अमालेक ने इस्राएलियों पर बिना किसी कारण हमला किया, न ही उन्हें भूमि चाहिए थी और न ही धन।
2. **अचानक हमला** – अन्य शत्रुओं की तरह अमालेक ने चेतावनी नहीं दी; उसने गुप्त रूप से वार किया।
3. **कमज़ोरों पर वार** – अमालेक ने इस्राएल की सेना से सामना करने के बजाय पीछे रह गए कमज़ोर, थके हुए और निर्बल लोगों पर हमला किया।

4. परमेश्वर का अनादर – अन्य जातियाँ यहोवा के चमत्कार देखकर डर गईं, परंतु

अमालेक ने यहोवा के भय को नहीं माना और इस्राएलियों पर हमला किया।

5. पूर्ण नाश की योजना – कुछ विद्वानों के अनुसार अमालेक सिफ़्र युद्ध नहीं चाहता था,

बल्कि इस्राएल को पूरी तरह मिटाना चाहता था।

---

□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□

□ "□□□ □□□" □□ "□□ □□□□" □□ □□□□

- "याद रखो" (רִאֵה - ज़खोर) → □□□□ □□□□ शारीरिक और मौखिक रूप से याद रखना (जैसे, हर साल इसे पढ़ना)।

- "मत भूलो" (הַשְׁגַת אֶל - लो तिशकाख) → □□□□ □□□□ हृदय में रखना और हमेशा सतर्क रहना।

□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□

1. बदला लेने की प्रेरणा - जब समय सही हो, तो अमालेक का नाम मिटाना ज़रूरी है।

2. चेतावनी - यदि इस्राएली बेईमानी (जैसे, व्यापार में गलत तोल) करेंगे, तो शत्रु फिर से आ सकते हैं।

3. आत्मिक लड़ाई - कुछ यहूदी व्याख्याओं में अमालेक को पाप, अविश्वास और बुरी

**आदतों का प्रतीक माना गया है।**

A horizontal row of 20 empty square boxes, each with a thin black border, intended for children to write their names in.

रक्षी

## उनकी व्याख्या

राशी (Rashi)

**यदि कोई व्यापार में बेईमानी करता है, तो अमालेक जैसा शत्रु  
उसे नष्ट कर सकता है।**

## मल्बीम (Malbim)

अमालेक का युद्ध केवल भूमि के लिए नहीं, बल्कि यहोवा के विरुद्ध विद्रोह था।

# सफर हाचिनुच (Sefer HaChinuch)

इस्राएलियों ने शबात ज़ख्मीर नामक दिन (पुरिम से पहले का सब्बा) रखा ताकि इसे हर साल याद किया जाए।

## हामेक दवार (Haameek Dayar)

अमालेक ने इसाएलियों पर हमला किया क्योंकि वे यहोवा की उपस्थिति पर संदेह कर रहे थे।

A horizontal sequence of 21 empty square boxes. The first 20 boxes are evenly spaced, and the 21st box is positioned to the right of the 20th box, creating a visual pattern of increasing spacing.

मसीही विश्वास में अमालेक को पाप, शैतान और आत्मिक संघर्ष का प्रतीक माना जा सकता है।

1. शैतान की योजनाएँ छिपी होती हैं - जैसे अमालेक ने छिपकर हमला किया, वैसे ही

**शैतान धोखे से हमला करता है (यूहन्ता 10:10)।**

2. कमज़ोरों की रक्षा ज़रूरी है - प्रभु यीशु ने हमेशा कमज़ोरों, बीमारों, अनाथों और

**दीनों की रक्षा की (मत्ती 25:40)।**

3. पाप के विरुद्ध सतर्कता - जैसा कि यहूदी व्याख्याएँ बताती हैं कि अमालेक बुरी

आदतों का प्रतीक है, वैसे ही मसीही लोग पाप के खिलाफ़ जागरूक रहने के लिए

**बुलाए गए हैं (1 पतरस 5:8)।**

4. परमेश्वर यहोवा की शक्ति पर विश्वास - इसाएलियों की सबसे बड़ी भूल थी कि

उन्होंने सोचा कि यहोवा उनके साथ नहीं है (निर्गमन 17:7)। प्रभु यीशु हमें विश्वास करने

**के लिए कहते हैं (मत्ती 21:22)।**

□ □

□ □ □ □ □ □ □ □ □

"हे प्रभु यीशु मसीह, हमें याद दिला कि अमालेक के समान शत्रु कभी भी हमला कर सकते

हैं, चाहे वह शारीरिक हो या आत्मिक। हमें सतर्क और मजबूत बना, ताकि हम तेरे अनुग्रह

**में स्थिर रह सकें।**

जैसे तूने निर्बलों की रक्षा की, वैसे ही हमें भी उन लोगों की सहायता करने दे जो कमज़ोर हैं।

हमें सिखा कि हम न केवल अपने बाहरी शत्रुओं से बच्ना चाहते हैं, बल्कि अपने भीतर के पापों से भी लड़ें।

हमें अपने नाम में शक्ति दे कि हम पाप के विरुद्ध खड़े हो सकें, और तेरे प्रेम में बढ़ते रहें।

आमीन।”

□ ”प्रभु यीशु मसीह के नाम में, आमीन!” □

## WAR

P190 De.20:11 - 12 Regulations for wars other than ones commanded in Torah

□ □□□□□□□□□□ 20:11 (Deuteronomy 20:11) – □□□□□ □□□

”और यदि वह तुझ को शान्ति का उत्तर दे, और अपने फाटक खोल दे, तो वहां के सब रहने वाले तेरे करदाता हो जाएं, और तेरी सेवा करें।”

---

❖ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□

□ 1. □□□□□ □□ □□□□□□□□

बाइबल में यह आदेश दिया गया है कि जब इसाएली किसी नगर पर चढ़ाई करें, तो पहले उस नगर को शांति का प्रस्ताव दें।

- रब्बी योसेफ खाइम कहते हैं कि यरूशलेम के पुनर्निर्माण के लिए भी सबसे पहले आंतरिक शांति ज़रूरी है। यदि इसाएल में परस्पर द्वेष रहेगा, तो बाहरी विजय भी असंभव होगी।

- मिजराची यह प्रश्न उठाते हैं कि क्या यह नियम केवल वैकल्पिक युद्धों (reshut) पर लागू होता है या अनिवार्य युद्धों (mitzvah) में भी? रम्बान (Ramban) का मत है कि यह आदेश सात कनानी जातियों पर भी लागू होता है।
- 

□ 2. □□□□□ □□□□□□□ □□□□

शांति केवल नाममात्र की नहीं, बल्कि पूर्ण आत्मसमर्पण की होनी चाहिए।

- मालबिम कहते हैं कि यदि कोई नगर सिफ़र कर (tribute) देने को तैयार हो लेकिन अपने फाटक नहीं खोलता, तो यह स्वीकार्य नहीं है।
  - तोरा तेमीमा जोड़ते हैं कि "संपूर्ण नगर" का आत्मसमर्पण आवश्यक है, न कि आंशिक।
- 

□ 3. "□□ □□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□" – □□□□□ □□?

यह एक विवादास्पद विषय रहा है कि क्या यह आदेश कनानी जातियों पर भी लागू होता है,

जिन्हें मूल रूप से नष्ट करने का आदेश दिया गया था।

- राशी कहते हैं कि यदि कनानी नगर ने शांति स्वीकार कर ली, तो उन्हें जीवित रहने की अनुमति मिल सकती है।
- सिफरी (Sifrei) भी इस विचार की पुष्टि करते हैं।

- गुर आर्य प्रश्न उठाते हैं कि यदि व्यवस्थाविवरण 21:10 ("और तू उनके बंधुओं को बंदी बनाकर लाएगा") पहले से कनानियों को जीवित रखने की अनुमति देता है, तो इस पद की आवश्यकता क्यों है? वे उत्तर देते हैं कि 21:10 विशेष रूप से "सुंदर कैदी स्त्री" (Yefat Toar) के लिए लागू होता है, जबकि व्यवस्थाविवरण 20:11 एक सामान्य आदेश है।
- 

#### □ 4. भूमि (Tribute) और भूमिका (Servitude)

यदि कोई नगर आत्मसमर्पण कर देता है, तो वहां के लोग करदाता और सेवक बन जाते हैं।

- राशी कहते हैं कि दोनों - कर और सेवा - स्वीकार करना अनिवार्य है, केवल एक नहीं।
  - रम्भान स्पष्ट करते हैं कि कर का अर्थ केवल कर चुकाना नहीं, बल्कि सार्वजनिक कार्यों में सेवा देना भी है। यह किसी क्रूर शोषण के लिए नहीं, बल्कि सामाजिक कार्यों जैसे लकड़ी काटना और जल लाना आदि के लिए था।
  - मिजराची कहते हैं कि अन्य राष्ट्रों के लिए कर और सेवा आवश्यक नहीं थे, लेकिन कनानी जातियों के लिए यह अनिवार्य था ताकि वे मूर्तिपूजा छोड़ दें।
- 

#### □ 5. अन्य अन्य अन्य अन्य (अन्य 9:3-27)

गिबोनी लोग धोखे से इस्राएल से संधि कर लेते हैं।

- जब इस्राएल को यह ज्ञात हुआ कि गिबोनी पास के लोग हैं, तब भी उन्होंने अपने शांति-

## संधि की शपथ निर्भाई।

- यहोशू ने उन्हें लकड़ी काटने और जल लाने का कार्य सौंपा, जो व्यवस्थाविवरण 20:11 के आदेश के अनुरूप था।
- 



□ □ □ □ □ □ □ ?

प्रेम और शांति की महत्ता - प्रभु यीशु ने भी अपने अनुयायियों को शांति स्थापित करने का आदेश दिया (मत्ती 5:9 - "धन्य हैं वे जो मेल कराते हैं")।

शांति का प्रस्ताव पहले देना चाहिए - जैसे यीशु ने यहूदियों और अन्य जातियों को सुसमाचार की शांति का संदेश पहले दिया, वैसे ही मसीही विश्वासियों को भी दूसरों तक प्रेम और मेल-मिलाप का संदेश पहले पहुँचाना चाहिए।

आत्मसमर्पण और नई आज्ञाएँ - व्यवस्था में नगरों को आत्मसमर्पण करने का आदेश था, लेकिन मसीही सन्दर्भ में यह आत्मसमर्पण परमेश्वर की इच्छा के अधीन होना दर्शाता है।

---

□ □ □ □ □ □ □ □ : □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

**हे स्वर्गीय पिता,**

हम आपके सामने सिर झुकाते हैं और आपसे विनती करते हैं कि हमारे हृदयों को  
शांति और मेल-मिलाप से भर दें।

जैसे प्रभु यीशु ने हमें प्रेम और दया का मार्ग दिखाया, वैसे ही हम भी अपने  
विरोधियों को शांति का प्रस्ताव दे सकें।

हमें क्षमा करना सिखाएं, जैसे आपने हमें क्षमा किया।  
हमें मार्गदर्शन दें कि हम न्याय और करुणा के साथ चलें, और अपने जीवन से  
आपकी महिमा कर सकें।

**प्रभु यीशु मसीह के नाम में, आमीन। □**



□□□□□□□□□□ 20:11 □□□□ □□□□□□ □ □ □ □□□□ □ □ □□□  
□□□□□ □ □ □□□□□ □□□□□□ □□ □ □ □□□ □□□□□□ □□□□□□  
□□□□□□ □ □ □□ □□□ □□, □□□□□ □ □ □ □□□ □□□□□ □ □ □□□-  
□□□□□ □ □ □□ □□□□□ □□□ □ □ □□□□□□□ □□□ □ □ □□□□□ □□□  
□□□□ □ □ □□ □□□□□□□ □ □ □□ □□□□□□ □ □ □□□ □□□□□ □  
□□□□ □ □ □ □□ □□□□□□ □

□ □□□□□□□□□ 20:12 (Deuteronomy 20:12) – □□□□□ □□□

"और यदि वह तुझ से मेल करना न चाहे, परन्तु तुझ से लड़ाई करे, तो तू उसके चारों ओर घेरा  
डाल देना।"



□ 1. □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□

इस पद में यह दर्शाया गया है कि यदि कोई नगर इस्राएल के शांति प्रस्ताव को अस्वीकार कर देता है और युद्ध छेड़ देता है, तो इस्राएल को उस पर घेरा डालना होगा।

- राशी कहते हैं कि यदि कोई नगर शांति स्वीकार नहीं करता, तो अंततः वह इस्राएल पर आक्रमण करेगा। इसलिए, इस्राएल को उस नगर की घेराबंदी करनी होगी और उसकी आपूर्ति रोकनी होगी।
- इब्राहिम एज़रा संक्षेप में बताते हैं कि "तशलीम" (מִלְשָׁת) का अर्थ "शांति स्थापित करना" है।
- हाअमेक दावर का मत है कि जब तक इस्राएल ने उस नगर पर आक्रमण नहीं किया, तब तक कोई खतरा नहीं है, लेकिन यदि युद्ध शुरू हो गया है, तो पीछे हटना अनुचित होगा।
- मालबिम इस बात को स्पष्ट करते हैं कि "यदि वह शांति नहीं करेगा, तो वह अवश्य युद्ध करेगा" - इसका अर्थ यह है कि शांति को अस्वीकार करने का परिणाम हमेशा युद्ध ही होता है।

□ 2. □□□ □□ □□□□□□□ (Seige) □□ □□□□ □□□□□□

जब कोई नगर शांति प्रस्ताव को ठुकरा देता है और युद्ध में कूद पड़ता है, तो इस्राएल को उसे

## घेर लेना चाहिए।

- अदरेट एलियाहू और सिफ्तोई चखामिम इस बात पर ज़ोर देते हैं कि घेराबंदी के दौरान भोजन और पानी की आपूर्ति काट देना एक रणनीतिक कदम था।
  - रलबाग बेउर हमीलोत यह स्पष्ट करते हैं कि यदि कोई नगर आत्मसमर्पण नहीं करता और युद्ध करता है या किलेबंद रहता है, तो इस्राएल को उसे पूरी तरह से घेर लेना चाहिए। जब यहोवा उस नगर को इस्राएल के हाथ में दे देगा, तो वयस्क पुरुषों को मार दिया जाएगा, जबकि महिलाएँ, बच्चे, पशु और अन्य वस्तुएँ लूट के रूप में ले ली जाएँगी।
- 



□□ ?

1. **आध्यात्मिक संघर्ष में धैर्य** - यह पद हमें यह सिखाता है कि जब बुराई हमारे खिलाफ उठे, तो हमें धैर्य और विश्वास के साथ खड़े रहना चाहिए। जैसे इस्राएल को नगर को पूरी तरह घेरने का निर्देश दिया गया था, वैसे ही हमें भी अपने आध्यात्मिक युद्ध में डटे रहना चाहिए (इफिसियों 6:12)।
2. **शांति का प्रस्ताव पहले दें** - प्रभु यीशु ने हमें सिखाया कि पहले मेल-मिलाप की कोशिश करें (मत्ती 5:9 - "धन्य हैं वे जो मेल कराते हैं")।
3. **परमेश्वर की विजय में विश्वास रखें** - इस्राएल को घेराबंदी के बाद नगर को जीतने

का आश्वासन था। आज भी, जब हम कठिनाइयों का सामना करते हैं, तो हमें विश्वास रखना चाहिए कि परमेश्वर हमें सामर्थ्य देगा।

---

□ □□□□□□□□: □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□  
□□□□□

**हे स्वर्गीय पिता,**

जब हम अपने जीवन की लड़ाइयों का सामना करें, तो हमें धैर्य और विश्वास प्रदान करें।

हमें सिखाएं कि पहले शांति का प्रयास करें, लेकिन जब विरोध आता है, तो हमें अपने आत्मिक संघर्ष में स्थिर खड़े रहने दें।

जैसे आपने इसाएल को मार्गदर्शन दिया, वैसे ही हमें भी अपने जीवन की हर घेराबंदी में आपकी योजना पर भरोसा करने दें।

हमें अपनी आत्मिक लड़ाइयों में सामर्थ्य दें, ताकि हम बुराई पर जय पा सकें और आपकी महिमा कर सकें।

**प्रभु यीशु मसीह के नाम में, आमीन। □**

---

❖ □□□□□□□

□□□□□□□□□ 20:12 □ □ □□□□□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □  
□□□□□□□ □□□□□□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □, □ □ □ □ □ □ □ □  
□□□□□  
□□□□□□□□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □  
□□□□□□□□, □

P191 De.20:2 Cohen for special duties in war; also men unfit return

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ 20:2-4 (Deuteronomy 20:2-4) –

--	--	--	--	--	--	--	--

“और जब तुम लोग लड़ाई के लिये निकट पहुँचो, तब याजक आगे बढ़कर लोगों से बातें  
करे, और उनसे कहे, ‘हे इम्राएल, सुन, तुम आज अपने शत्रुओं के साथ युद्ध करने को  
निकले हो; तुम्हारा मन कच्चा न हो, न डरो, न भरभराओ, और न उनके सामने भय खाओ।  
क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे संग चलता है, कि तुम्हारी ओर से तुम्हारे शत्रुओं से  
लड़कर तूम्हें बचाए।”

1. □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

इस पद में एक विशेष याजक का ज़िक्र है जिसे "मशूअख मिल्खामा" (משוח מלחהמה) – युद्ध के लिए अभिषिक्त याजक कहा जाता था। यह याजक युद्ध के समय लोगों को हिन्दू भाषा में प्रोत्साहित करता था और उन्हें याद दिलाता था कि युद्ध में उनके साथ परमेश्वर भी है।

- राशी बताते हैं कि जब इस्राएली अपनी भूमि की सीमा छोड़कर रात्रु के निकट पहुँचते थे, तब याजक पहली बार उन्हें संबोधित करता था। यह दूसरा संबोधन युद्ध के ठीक

पहले होता था।

- इन्हे एज़रा संक्षेप में यह स्पष्ट करते हैं कि यहाँ जिस याजक की बात हो रही है, वह वही है जो विशेष रूप से युद्ध के लिए अभिषिक्त किया गया था।
- गुर आर्य बताते हैं कि यह संबोधन न तो बहुत पहले किया जाता था, न ही युद्ध के बहुत निकट, बल्कि एक सही समय पर ताकि सैनिक मानसिक रूप से तैयार हो सकें।
- मालबिम भाषा के आधार पर स्पष्ट करते हैं कि "जब तुम युद्ध के निकट पहुँचो" का अर्थ है शत्रु के प्रदेश के निकट आना, जबकि "तुम आज युद्ध के लिए निकले हो" का अर्थ है युद्ध का वास्तविक प्रारंभ।
- मिजराची बताते हैं कि यह याजक, प्रधान याजक के अधीन था और यह कि वह परमेश्वर का वचन लोगों तक पहुँचाता था।

□ 2. □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

याजक यह संदेश क्यों देता था? क्योंकि युद्ध के समय डर सैनिकों की शक्ति को कम कर सकता था और वे हार सकते थे। इसीलिए, याजक ने उन्हें याद दिलाया कि यह युद्ध केवल उनका नहीं बल्कि परमेश्वर का भी था, और वह स्वयं उनके लिए लड़ेगा।

- रलबाग बताते हैं कि याजक का उच्च पद होना आवश्यक था ताकि लोग उसकी बात गंभीरता से लें और उसकी कहीं गई बातों से बल पाएं।

- तोरा तेमीमा तर्क देते हैं कि यह संबोधन माउंट सीनै पर मूसा के परमेश्वर से बात करने से जोड़ा गया है, और इसी कारण यह हिन्दू भाषा में किया जाता था।

10

1. भय से मुक्त होकर जीना - प्रभु यीशु ने भी अपने अनुयायियों को सिखाया कि "मत डर, केवल विश्वास कर" (मरकुस 5:36)।
  2. युद्ध केवल शारीरिक नहीं, आत्मिक भी है - इफिसियों 6:12 में लिखा है कि हमारा संघर्ष मनुष्यों से नहीं बल्कि आध्यात्मिक शक्तियों से है।
  3. परमेश्वर हमारे साथ है - यह वचन हमें याद दिलाता है कि जब हम कठिनाइयों से गुज़रते हैं, तो हमें भरोसा रखना चाहिए कि परमेश्वर हमारे साथ है (रोमियों 8:31)।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ : □

## हे स्वर्गीय पिता,

जब हम अपने जीवन के युद्धों का सामना करें, तो हमें भयभीत न होने दें।

जैसे आपने इसाएल को आश्वासन दिया, वैसे ही हमें भी याद दिलाएं कि आप

## हमारे साथ हैं।

हमें विश्वास, हिम्मत और स्थिरता प्रदान करें ताकि हम शत्रु के विरुद्ध खड़े रह

सकें।

हमें डर से मुक्त करें और अपने वचन पर भरोसा करने दें।

प्रभु यीशु मसीह के नाम में, आमीन। □



**व्यवस्थाविवरण 20:2-4** यह सिखाता है कि जब हम किसी भी संघर्ष का सामना करें, तो डरने की बजाए परमेश्वर पर भरोसा करें। □

P192 De.23:14 - 15 Prepare place beyond the camp, so to keep sanitary &...

**(Deuteronomy 23:14)**

”तेरे हथियारों में एक फावड़ा भी तेरे पास होना चाहिए; और जब तू बाहर बैठने को जाए, तब उसी से गढ़ा खोदना और फिर मुंह फेर कर अपनी गंदगी ढांप देना।”

(Hindi Bible:ERV)

A horizontal row of 20 empty square boxes, each with a small vertical line on its left side, intended for handwritten responses.

यह आदेश सैनिकों के लिए दिया गया था कि जब वे युद्ध या यात्रा के दौरान शिविर में हों और

उन्हें शौच जाना हो, तो वे बाहर जाकर एक ग़ड्ढा खुदें और बाद में अपनी गंदगी को ढकें।

यह सिर्फ शारीरिक स्वच्छता की बात नहीं है, बल्कि पवित्रता और सम्मान की भी बात है -

क्योंकि अगले ही पद में लिखा है कि "परमेश्वर तेरे शिविर में चलता है"।

---

□ □

□ □ □ □ □ □ □ □ :

❖ □ :

- **राशी (Rashi):** "तेरे हथियारों में" का अर्थ है कि फावड़ा भी युद्ध के उपकरणों में शामिल हो। शिविर की पवित्रता बनाए रखना अनिवार्य है क्योंकि ईश्वर वहां उपस्थित रहते हैं।

- **चिज्कुनी (Chizkuni):** पुराने समय में जहाँ पुरुष, स्त्री और बच्चे सब साथ होते थे, वहाँ दीवारें बनती थीं, लेकिन युद्ध में यह संभव नहीं। इसलिए, बाहर जाकर ग़ड्ढा खोदना और गंदगी ढंकना आवश्यक है।

- **रब्बेनु बह्या (Rabbeinu Bahya):** यह केवल सफाई नहीं, आत्मिक जागरूकता की भी बात है - जब इज़राइल के लोग पापरहित थे और मन्त्रा खा रहे थे, तब उन्हें यह ज़रूरत नहीं थी।
-

□ □□□□□□□□□□□□ – “□□□□□□□□□□□□”;

**कुछ रबी इसे शाब्दिक से अधिक आध्यात्मिक रूप में समझते हैं:**

- बर काप्पारा (Talmud - Kiddushin 5a): "तेरे कान" का अर्थ है, अगर तू कोई अशुद्ध पा अपवित्र बात सुने, तो अपनी उंगली अपने कानों में डाल ले - जैसे फावड़ा गंदगी ढंकता है, वैसे ही कानों को गंदगी से ढांपा।
  - किल याकर (Kli Yakar): बुरे वचन (लज्जाजनक बातें, चुगली) से बचने के लिए चुप्पी और धैर्य ही असली हथियार हैं।
  - अल्शेख (Alshekh): "फावड़ा तेरे कान पर हो" का अर्थ है सीखने और सुनने की इच्छा, ताकि तू पर्चाताप करे और पवित्रता में चले।

A horizontal sequence of 20 white rectangular boxes, followed by a vertical ellipsis.

A horizontal row of 20 empty rectangular boxes for writing responses.

- यह पद आज के मसीही विश्वासियों को सिखाता है कि परमेश्वर की उपस्थिति हमारे साथ रहती है, और इसलिए हमें अपने जीवन, विचारों, बोलचाल और व्यवहार को पवित्र बनाए रखना चाहिए।
  - शारीरिक सफाई से कहीं बढ़कर, यह पद आत्मिक शुद्धता और परमेश्वर के प्रति आदर की शिक्षा देता है।

□ □ □ □ □ □ □ (New Testament) □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

- इफिसियों 4:29: "तुम्हारे मुंह से कोई गंदी बात न निकले, पर वही जो सुधार के लिये  
उत्तम हो..."
  - फिलिप्पियों 4:8: "...जो बातें सत्य हैं, जो आदरणीय हैं... उन्हीं पर ध्यान करो।"
- 

□ □

□ □ □ □ □ □ □ □

†\*\*\* □ □ □ □ □ □ □ □ □ – □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □  
□ □ □ □ □ □ \*\* †

हे परमेश्वर,

जैसे आप अपने लोगों के बीच चलते थे, वैसे ही आज भी आप मेरे जीवन में उपस्थित हैं।

जैसे आपने उन्हें बाहरी और आंतरिक शुद्धता की शिक्षा दी, वैसे ही मुझे भी अपने विचारों, वचनों और कर्मों में पवित्रता बनाए रखने की समझ दें।

हे प्रभु यीशु,

जैसे आपने कभी कोई गंदी बात नहीं बोली, और पापियों के बीच भी पवित्र बना रहा, वैसे ही मुझे भी हर तरह की अपवित्रता से बचा,

मेरे कानों को बुरी बातों से दूर रख, और मेरे मन को अपने वचन से भर दे।

मुझे सिखा कि जब मैं कुछ गलत सुनूँ, तो जैसे तेरे दासों ने सिखाया -

मैं अपने “कान पर फावड़ा” रख सकूँ – अर्थात्, \*\*मौन, संयम और ध्यान।\*\*

मेरे हृदय में सदा आपकी उपस्थिति का भय बना रहे,

और मैं पवित्रता में जीवन व्यतीत करूँ, जैसे आपने हमें बुलाया है।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

---

P193 De.23:15 ...so include a digging tool among war implements

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

1 □ □ □ □ □ □ (□ □ □ □ □ □)

#### □ व्यवस्थाविवरण 23:15

“क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे छावनी के मध्य में चलता फिरता है कि वह तुझे बचाए,  
और तेरे शत्रुओं को तेरे वश में कर दे; इस कारण तेरा छावनी पवित्र रहे, कि वह तेरे बीच में  
कोई अशुद्ध वस्तु देख कर तुझ से फिर न जाए।”

---

2 □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ यह पद हमें बताता है कि परमेश्वर की उपस्थिति हमारे जीवन में पवित्रता पर निर्भर करती  
है।

□ जब परमेश्वर हमारे साथ होता है, तो वह हमारी रक्षा करता है और हमें शत्रुओं पर विजय  
देता है।

□ लेकिन यदि हमारे जीवन में पाप, अपवित्रता या अनैतिकता होती है, तो वह हमसे दूर हो सकता है।

□ इसीलिए, हमें अपने जीवन और चर्च को पवित्र बनाए रखना चाहिए ताकि परमेश्वर की उपस्थिति बनी रहे।

---

3 □ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□

□ "तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे छावनी के मध्य में चलता फिरता है"

✓**राशी (Rashi):** □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□□ □□ □□□□□□

□□□□ □ □□□□□

✓**चिज़कुनी (Chizkuni):** □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□, □□

□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□

✓**सफोर्नो (Sforno):** □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□

□□□□ □□, □ □□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□

✓**राब्बी हिर्श (Rabbi Hirsch):** यह पद यह सिखाता है कि परमेश्वर केवल बाहरी पराक्रम से नहीं बल्कि आंतरिक शुद्धता और आत्मसंयम से हमारे साथ रहता है।

□ "तेरा छावनी पवित्र रहे"

✓**तलमूद (Talmud, Berakhot 25a):** इस पद के आधार पर यहूदी विद्वानों ने यह नियम बनाया कि कोई भी गंदे स्थान में प्रार्थना या तोराह का अध्ययन नहीं कर सकता।

✓**राब्बी योहानान (Rabbi Yohanan):** "□□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□

□□ □□□□ □□□"

✓**रालबाग (Ralbag):** यदि छावनी अपवित्र होगी, तो परमेश्वर वहाँ से चला जाएगा और शत्रु विजयी होंगे।

"वह तुझ से फिर न जाए"

✓ राब्बी चिस्दा (Rabbi Chisda): यदि इस्राएल ने पाप किया, तो परमेश्वर की उपस्थिति

हट जाएगी □

✓ नेटिनाह लागेर (Netinah LaGer): परमेश्वर का "मुँह फेर लेना" संकेत करता है कि उसकी आशीष और सुरक्षा हट सकती है।

#### □ पवित्रता और परमेश्वर की उपस्थिति

और नैतिक रूप से पवित्र बनाए रखना आवश्यक है □

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □, "धन्य हैं वे जो शुद्ध हृदय वाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे"

(मत्ती 5:8) □

□ यदि हम परमेश्वर की संगति चाहते हैं, तो हमें पाप से दूर रहना होगा और अपने दिल को

## शुद्ध रखना होगा।

## □ यद्ध में विजय का सिद्धांत

आज मसीही विश्वासियों के आत्मिक युद्ध में यह

आवश्यक है □

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □, "हमारा युद्ध शरीर और रक्त के विरुद्ध नहीं, परन्तु आत्मिक

दुष्ट शक्तियों के विरुद्ध है” (इफिसियों 6:12) □

## योजनाओं पर विजय देता है।

### □ चर्च और विश्वासी का आत्मिक शुद्धिकरण

□ इसके लिए यह एक अत्यधिक महत्वपूर्ण उपाय है, जिसके द्वारा आत्मिक शुद्धि की जाती है।

□ "तुम स्वयं को शुद्ध करो, क्योंकि परमेश्वर पवित्र है" (1 पतरस 1:16)।

---

**5 □ अपनी जीवनी (प्रार्थना का अध्ययन)**

### □ पवित्रता के लिए प्रार्थना □

हे परमेश्वर,

□ इसके लिए यह एक अत्यधिक महत्वपूर्ण उपाय है, जिसके द्वारा आत्मिक शुद्धि की जाती है।

□ इसके लिए यह एक अत्यधिक महत्वपूर्ण उपाय है, जिसके द्वारा आत्मिक शुद्धि की जाती है।

□ इसके लिए यह एक अत्यधिक महत्वपूर्ण उपाय है, जिसके द्वारा आत्मिक शुद्धि की जाती है।

**हृदय से पवित्र और**

**निर्मल रहना चाहिए (प्रार्थना 5:8) □**

□ इसके लिए यह एक अत्यधिक महत्वपूर्ण उपाय है, जिसके द्वारा आत्मिक शुद्धि की जाती है।

□ इसके लिए यह एक अत्यधिक महत्वपूर्ण उपाय है, जिसके द्वारा आत्मिक शुद्धि की जाती है।

□ इसके लिए यह एक अत्यधिक महत्वपूर्ण उपाय है, जिसके द्वारा आत्मिक शुद्धि की जाती है।

**पवित्र निवासस्थान □, प्रार्थना का अध्ययन**

□ इसके लिए यह एक अत्यधिक महत्वपूर्ण उपाय है, जिसके द्वारा आत्मिक शुद्धि की जाती है।

**शैतान के सभी प्रलोभनों**

□ इसके लिए यह एक अत्यधिक महत्वपूर्ण उपाय है, जिसके द्वारा आत्मिक शुद्धि की जाती है।

**आमीन! □**

---

□ □□□□□□□:

□ □□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□ □□ पवित्र रहेंगे, तो परमेश्वर हमारे साथ

रहेगा, हमारी रक्षा करेगा और हमें विजय देगा □

□ आइए, हम अपने जीवन और चर्च को शुद्ध रखें ताकि परमेश्वर की महिमा प्रकट हो!

## SOCIAL

P194 Le.5:23 On a robber to restore the stolen article to its owner

□ □□□□□□□ 5:23

### हिन्दू (Torah)

"और यह होगा कि जब कोई पाप करे और दोषी ठहराया जाए, तो वह जिस वस्तु को उसने

लूटा हो, या जिस चीज़ को उसने छल-कपट से लिया हो, या जो वस्तु उसके पास गिर्वा

रखी गई हो, या जो खोई हुई वस्तु उसे मिली हो, वह सब लौटा दे।"

□ □□ □□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□

□□□□

यह आयत मुख्य रूप से इस बात को स्पष्ट करती है कि अगर किसी ने चोरी, धोखा, या छल द्वारा

किसी अन्य व्यक्ति की कोई वस्तु ली है, तो वह उसे वापस लौटाना चाहिए।

✓मुख्य बिंदु:

1 □ पाप का एहसास: □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□

२० वस्तु लौटाने की अनिवार्यता: □□□□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□

A horizontal row of 20 empty square boxes, each with a thin black border, intended for children to practice writing their names.

3□ नैतिक और आत्मिक शिक्षा: यह नियम केवल भौतिक चीजों की चोरी के बारे में नहीं,

बल्कि किसी भी तरह के धोखे और गलत व्यवहार की आत्मिक सज़ा के बारे में भी सिखाता है।

A horizontal row of 20 empty square boxes, intended for students to draw or write in.

A horizontal row of nine empty square boxes, each with a thin black border, intended for children to draw or color in.

□ □ □ □ □ □ □ □ : उन्होंने इस आयत के शब्द "חוּרִי" (चोरी) की गई वस्तु

लौटाए) पर जोर दिया और कहा कि "अगर चोरी की गई वस्तु वैसी की वैसी है, तो उसे

वापस करना अनिवार्य है। लेकिन यदि वह बदल गई है या किसी अन्य रूप में बदल दी गई

है, तो उसकी कीमत लौटानी होगी।”

□ **उदाहरण:** यदि किसी ने गेहूं चुराया और उसे पीसकर आटा बना लिया, तो वह आटा

**लौटाने की बजाय गेहूं की कीमत चुकाएगा।**

□ **उदाहरण:** यदि कोई व्यक्ति जानबूझकर किसी और की मेहनत का श्रेय लेता है पा किसी

की छवि को नुकसान पहुँचाने के लिए झूठ बोलता है, तो यह भी इस नियम के अंतर्गत आता

है।

3 इन्होंने कहा कि "जब तक व्यक्ति चोरी की गई वस्तु को वापस नहीं करता,

**तब तक उसकी पश्चाताप (तौबा) अधूरी मानी जाती है।"**

उदाहरण: यदि कोई व्यक्ति चोरी के लिए ईश्वर से क्षमा माँगता है लेकिन पीड़ित को उसका हक नहीं लौटाता, तो उसकी क्षमा अधूरी रहती है।

---

इन्होंने कहा कि "जब तक व्यक्ति चोरी की गई वस्तु को वापस नहीं करता,

तब तक उसकी पश्चाताप (तौबा) अधूरी मानी जाती है।"

**प्रभु यीशु मसीह की शिक्षा और इस आयत का संबंध:**

- प्रभु यीशु मसीह ने हमेशा पश्चाताप और सही कार्य करने की शिक्षा दी।
- उन्होंने ज़क्कर्ई के उदाहरण से दिखाया कि सच्चा पश्चाताप तभी होता है जब हम अपने गलत कार्यों को सुधारते हैं।

लूका 19:8

"ज़क्कर्ई ने प्रभु से कहा, 'हे प्रभु, देख! मैं अपना आधा धन गरीबों को देता हूँ. और यदि मैंने किसी से कुछ छल-कपट से लिया है, तो मैं उसे चार गुणा लौटा दूँगा।'"

इससे क्या सीख मिलती है?

उन्होंने कहा कि "जब तक व्यक्ति चोरी की गई वस्तु को वापस नहीं करता,

तब तक उसकी पश्चाताप (तौबा) अधूरी मानी जाती है।"

उन्होंने कहा कि "जब तक व्यक्ति चोरी की गई वस्तु को वापस नहीं करता,

□ □ □ □ □ □ □ □ □ : □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □

”हे परमेश्वर, मैं आपके सामने अपने हृदय को खोलता हूँ। यदि मैंने किसी भी रूप में किसी के साथ अन्याय किया है—शब्दों, कर्मों, या विचारों से—तो मृग्ने क्षमा करें।

जैसे ज़कर्कड़ ने अपने जीवन को सुधारने का निर्णय लिया, वैसे ही मुझे भी हिम्मत दीजिए कि मैं  
अपने पापों को सुधार सकूँ।

यदि मैंने किसी से कुछ छीना है, धोखा दिया है, या किसी को ठेस पहुँचाई है, तो मुझे मार्ग दिखाइए कि मैं उसे सही कर सकूँ।

**मुझे न्याय, दया, और सच्चाई के मार्ग पर चलने की शक्ति दीजिए।**

प्रभु यीशु मसीह के नाम में, आमीन।”

लेवितिकुस 5:23 (या लेवितिकुस 6:4) हमें सिखाता है कि चोरी, धोखा, और छल-कपट से बचना चाहिए। अगर हमने कोई गलती की है, तो उसे सुधारने के लिए हमें न केवल ईश्वर से क्षमा माँगनी चाहिए, बल्कि पीड़ित व्यक्ति को भी उचित हजारना देना चाहिए। प्रभु यीशु मसीह ने भी यही शिक्षा दी कि "पश्चाताप सिर्फ शब्दों से नहीं, बल्कि कर्मों से भी होना चाहिए।" □ ✝

P195 De.15:8; On to give charity to the poor

□ □□□□□ □□ (□□□□□ □□□):

**"परन्तु तू अपना हाथ उस दरिद्र के लिए खुला रखना, और जो कुछ उसे  
आवश्यक हो उतना उधार देना, जिससे उसकी घटी पूरी हो जाए।"**

– व्यवस्थाविवरण 15:8 (Deuteronomy 15:8)

---

□ □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□

(□□□□□ □□□):

यह पद हमें सिखाता है कि जब हमारे बीच कोई दरिद्र (गरीब) व्यक्ति हो, चाहे वह हमारा भाई हो

या किसी द्वार का निवासी, हमें अपने हृदय को कठोर नहीं बनाना चाहिए और ना ही अपनी

**मुट्ठी बंद रखनी चाहिए।**

**बल्कि हमें खुले दिल और खुले हाथ से उसकी मदद करनी चाहिए, और उसकी ज़रूरत के**

**अनुसार उसे देना चाहिए, ताकि उसकी घटी पूरी हो सके।**

---

□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□

□□□□□□:

□ "לְאַתָּה תִּפְתַּח חֹתֶם אֶת יָדך" — "तू अपना हाथ उसके लिए खुला रखना":

- □ दोहराव "חֹתֶם חֹתֶם" (Pato'ach Tiftach):

रब्बी राशी और रबेन्त बह्या बताते हैं कि इसका अर्थ है – **बार-बार देना। एक बार**

**नहीं, जितनी बार ज़रूरत हो, उतनी बार मदद करो।**

- □□□□:

**टोरा तेमीमा और रव हिर्श बताते हैं कि यह केवल अपने नगर या परिवार तक सीमित नहीं है, बल्कि बाहर के दरिद्रों के लिए भी है।**

- □□□□ □□ □□□ □□□:

**कित्सुर बाअल हातुरिम बताते हैं कि "हाथ" खोलने का अर्थ केवल धन देना नहीं,**

**बल्कि मीठे और दिलासा देने वाले शब्दों से मदद करना भी है।**

**यदि गरीब व्यक्ति शर्माता है, तो उसके घर जाकर मदद पहुंचानी चाहिए, ताकि उसे शर्म महसूस न हो।**

- □□□□□ □□ □□□□:

**कुछ रब्बियों का मानना है कि जब हम दरिद्र के लिए अपना हाथ खोलते हैं, तो**

**परमेश्वर हमारे लिए स्वर्ग के द्वार खोलता है।**

□ "וְהַעֲבֹט תִּעֲבִיט נָנוּ" — "**और तू उसे उधार दे**":

- □□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□□:

**रशी कहते हैं कि अगर गरीब व्यक्ति साहस या लज्जा के कारण उपहार नहीं ले**

**सकता, तो उसे उधार दो, ताकि उसका आत्मसम्मान बना रहे।**

- "□□ □□□□□ □□ □□□□":

**कुछ व्याख्याकार जैसे हआमेक दावर कहते हैं – एक उधार उनके लिए जिनके पास**

**थोड़ा कुछ है, और दूसरा उनके लिए जो कुछ नहीं चाहते लेना, लेकिन ज़रूरत है।**

---

□ "ד' מהתורה אשר יחת לו" — "उसकी आवश्यकता के अनुसार जो कुछ उसकी घटी हो उसे देना":

- □ □□□□□ □□□□□□, □□ □□□□ □□□□:  
रशी कहते हैं, इसका अर्थ है – उसे ज़रूरत के अनुसार दो, पर अमीर बनाने का आदेश नहीं है।
  
  
  
- □ □□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□:  
यदि वह पहले घोड़े पर चलता था, या नौकर रखता था, तो उसके सम्मान के अनुसार उसकी मदद करो।

- □ "יְ" (उसके लिए) — विवाह के लिए भी सहायता:  
कई रब्बियों ने कहा है कि "उसके लिए" का अर्थ है – उसे विवाह करने में मदद करो,  
क्योंकि "उसके लिए एक सहायक बनाऊँगा" (उत्पत्ति 2:18) इसी शब्द "יְ" से आता है।
- 

□ □□□□□ □□□□□□□ □□□ □□ □□□□  
□□□□:

यीशु मसीह ने इस सिद्धांत को अपने जीवन और सेवकाई में पूरी तरह से जीकर दिखाया।

↑ "जो एक इन छोटे भाइयों में से किसी को भी एक कप ठंडा पानी देता है, वह

**अपना प्रतिफल खोएगा नहीं।”**

**– मत्ती 10:42**

- प्रभु यीशु ने गरीबों, रोगियों, विधवाओं और अनाथों की सेवा की।
  - उन्होंने सिखाया कि जो किसी को देता है, वह वास्तव में परमेश्वर को देता है।
  - चर्चों में आज भी इस पद का मूल्य बहुत है:
    - **भोजन कार्यक्रम,**
    - **गरीबों के लिए दान पेटियां,**
    - **मिशन कार्य,**
    - **और विवाह सहायता कार्यक्रम आदि इस शिक्षा का पालन करते हैं।**
- 

□ □ □ □ □ □ □ □ — □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □ □ :

markdown

CopyEdit

\*\*□ □ □ □ □ □ □ : □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ \*\*

हे प्रेमी पिता परमेश्वर,

मैं आपका धन्यवाद करता हूँ कि आपने मेरे जीवन में बहुतायत से दिया है।

जैसे आपने अपने पुत्र यीशु मसीह को दिया, जो गरीबों, दुखियों और पापियों के साथ बैठा,

वैसे ही मुझे भी एक \*\*करुणामयी हृदय\*\* दे।

मुझे \*\*अपनी मुट्ठी नहीं, पर अपना हाथ खोलना सिखा\*\*,

जैसे आपने कूस पर अपने हाथ खोले।

मुझे सिखा कि मैं किसी की \*\*घटी पूरी कर सकूँ\*\* -

चाहे वह भोजन हो, वस्त्र हो, या प्रेम।

प्रभु यीशु जैसा आपने कहा – "जो गरीबों को देता है, वह मुझे देता है",

मुझे वही जीवन जीने दे।

□□□□ □□□□□□ , □□□□□□ □□ □□ □□ □□□ □□□

A horizontal row of ten empty square boxes, intended for children to draw or write in.

\*\*प्रभु यीशु मसीह के नाम में मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।\*\*

□ □ □ □ □ □ □ □ □ :

यह पद न केवल एक आर्थिक निर्देश है, बल्कि एक आत्मिक बुलाहट ॥ ॥ —

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ ,

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ ,

A horizontal row of fifteen empty square boxes, likely used for grading student responses.

P196 De.15:14 On giving gifts to a Hebrew bondman upon his freedom

## **(Deuteronomy 15:14 in Hindi)**

“तू उसको अपने पशुओं में से, अपने खलिहान के अन्न में से, और अपने कोल्ह

के दाखरस में से यथायोग्य देना; जैसा तेरा परमेश्वर यहोवा तझे आशीष दे,

**वैसा ही त उसे देना।”**

(व्यवस्थाविवरण 15:14)

---

❖ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ (□ □ □ □ □ □)

जब कोई इब्रानी दास छह वर्ष की सेवा के बाद आज्ञाद किया जाता है, तब यहोवा की आज्ञा है

कि उसका स्वामी उसे खाली हाथ न जाने दे।

बल्कि अपने झुंड, अनाज, और दाखरस में से उसे यथोचित रूप से उपहार दे, ताकि वह स्वतंत्र

जीवन शुरू कर सके।

□ □ □ □ □ दयालुता, आदर, और ईश्वर की दी गई आशीष को बाँटने की शिक्षा है।

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □ □ (□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □)

1. □ “העניק לו” (उसे भरपूर दो):

- ”आभूषण/सम्मान”:

□ *Ibn Ezra* कहते हैं कि इसका अर्थ है ”उसे गरिमा के साथ विदा करना।”

जैसे कोई गुलाम को गहनों से सम्मानित कर के विदा करे।

- ”शक्ति देना”:

□ *HaKtav VeHaKabalah* का कहना है कि इसका मतलब है उसे गले लगाना, उसे

मज़बूती देना, ताकि वो आत्मनिर्भर हो सके।

- "फिटिंग गिफ्ट":

- Reggio के अनुसार, यह उपहार ऐसा हो जो उसका कुछ समय तक सहारा बन सके - जैसे कुछ भेड़ें, अनाज, और दाखरस।

- "दो बार देना":

- Torah Temimah और Tzafnat Pa'neach कहते हैं कि "הענין קתענו" के दोहराव से पता चलता है कि अगर दास कई बार छोड़ा जाए, तो हर बार देना अनिवार्य है - एक बार नहीं, बार-बार।

- "आशीष पर निर्भर नहीं":

- भले ही मालिक को आशीर्वाद मिला हो या नहीं, देने का आदेश हर हालत में लागू होता है।
- 

2. □ □ □ "□ □ □ □ □ □ □, □ □ □ □ □ □ □ □ □ □" □ □

□ □ □ □ :

- आवश्यकताएँ:

- Chizkuni के अनुसार, यह रोटी, मांस और दाखरस का प्रतीक है - जीविका की मूलभूत ज़रूरतें।

- आशीर्वाद देने वाली वस्तुएँ:

- Rashi और Mizrachi बताते हैं कि ये तीनों चीज़ें स्वाभाविक रूप से बढ़ती हैं

(प्रजनन करती हैं), इसीलिए इन्हें चुना गया – जैसे भेड़ें बच्चे देती हैं, अनाज उपजता है,  
दाखरस तैयार होता है।

- मूल्यवान लेकिन पुनरुत्पादन रहित चीजें बाहर:

□ जैसे गधे या पैसा जो बढ़ता नहीं – इन्हें बाहर रखा गया।

---

3. □ "הַמְלֵאָה תִּתְהִלָּה בְּבָרֶא וְבָרֶא יְהִי כָּלֵל הַמְלֵאָה":

- सब कुछ शामिल है:

□ *Malbim* और *Mizrachi* कहते हैं कि यह केवल तीन चीज़ों तक सीमित नहीं है – यदि  
कोई और चीज़ है जिससे परमेश्वर ने तुझे आशीष दी है, वो भी देना चाहिए।

- ईश्वर की आशीष से देना:

□ *Reggio* बताते हैं कि यह संपत्ति तेरी नहीं, ईश्वर की है – “उसके अपने में से ही उसे  
दे”।

- आशीष के अनुसार देना:

□ *Ralbag* और *Torah Temimah* कहते हैं कि जितनी आशीष तुझे मिली है, उतनी  
उदारता से देना तेरा धर्म है।

---

4. ! הַמְלֵאָה תִּתְהִלָּה בְּבָרֶא :

- स्व-बेचे हुए दास को नहीं:

□ Torah Temimah के अनुसार यह प्रावधान केवल उन दासों के लिए है जिन्हें

अदालत ने बेचा हो, स्वयं बिके हुए लोगों के लिए नहीं।

- **उत्तराधिकारियों पर विवाद:**

□ इसका विवाद यह है कि यह दासों के लिए अनुचित है कि वे अपने दासों को बेच सकें। इसका विवाद यह है कि यह दासों के लिए अनुचित है कि वे अपने दासों को बेच सकें।

- **कितना देना है?:**

□ Rabbi Judah के अनुसार, कम से कम 30 शेकेल की संपत्ति - जैसे कि एक बैल द्वारा मारे गए दास की कीमत (निर्गमन 21:32)।

□ इसका विवाद यह है कि यह दासों के लिए अनुचित है कि वे अपने दासों को बेच सकें।

मसीही दृष्टिकोण से यह पद हमें यीशु मसीह की शिक्षाओं की जड़ दिखाता है:

- □ **दयालुता और उदारता:**

जैसे प्रभु यीशु ने कहा - “जो तुमने मेरे इन छोटे भाइयों में से एक के लिए किया, वह तुमने मेरे लिए किया” (मत्ती 25:40)

- □ **दूसरों की सहायता करना:**

चर्च में आज यह शिक्षण आर्थिक सहायता, पुनर्वास सेवाओं, पुनर्स्थापना कार्यक्रमों आदि में दिखता है।

- □ **दयावान जीवनशैली:**

**एक मसीही को दया, सम्मान और उदारता से लोगों की सेवा करनी चाहिए - ठीक वैसे**

**जैसे इस पद में स्वामी को आदेश है।**

---

□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□□

**(प्रेरित: यीशु का स्वभाव - दया, सेवा, उदारता)**

□ \*\*□□□□□□□□: □□□□ □□□□ □□ □□□\*\*

**हे प्रभु यीशु मसीह,**

**जिस तरह आपने हमें बिना किसी मूल्य के प्रेम और उद्धार दिया,**

**वैसे ही हमें भी दूसरों को देने की आत्मा दे।**

**हमें वह दृष्टि दे कि हम आपकी दी हुई आशीषों को**

**अपने भाई-बहनों के साथ बाँट सकें,**

**विशेषकर उन लोगों के साथ जो कमज़ोर हैं, थके हुए हैं,**

**या जीवन में एक नई शुरुआत करना चाहते हैं।**

**जैसे आपने कहा, "मुफ़्त पाया है, मुफ़्त दो",**

**हमें उसी तरह आपका हाथ और आपके हृदय का विस्तार बना दे।**

**हम यह प्रार्थना आपके पवित्र नाम में करते हैं,**

□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□ \*\*□□□□\*\*□ □

### **बाइबल पद (निर्गमन 22:24):**

**"यदि तू मेरे लोगों में किसी दरिद्र को, जो तेरे संग रहता हो, रूपया उधार दे, तो  
उस से महाजन की नाई व्यवहार न करना; उस पर ब्याज मत लगाना।"**

### **पद की व्याख्या:**

**"यदि तू मेरे लोगों में किसी दरिद्र को, जो तेरे संग रहता हो, रूपया उधार दे":**

**यह वाक्यांश यह दर्शाता है कि जब हम अपने समुदाय के गरीब सदस्यों को उधार  
देते हैं, तो यह एक नैतिक कर्तव्य है। यह केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि एक  
अपेक्षित आचरण है।**

**"तो उस से महाजन की नाई व्यवहार न करना":**

**इसका अर्थ है कि उधार देते समय हमें कठोर या निर्दयी महाजन की तरह व्यवहार  
नहीं करना चाहिए। हमें सहानुभूति और दया के साथ पेश आना चाहिए, न कि  
उधार लेने वाले को दबाव में डालना चाहिए।**

**"उस पर ब्याज मत लगाना":**

**यह स्पष्ट आदेश है कि हमें अपने गरीब भाइयों से ब्याज नहीं लेना चाहिए। ब्याज  
लेना उनके आर्थिक बोझ को बढ़ा सकता है और उनकी स्थिति को और कठिन  
बना सकता है।**

## रब्बियों की व्याख्याएँ और उदाहरण:

- ऋण देना सर्वोत्तम दान है:

- कई रब्बियों का मानना है कि उधार देना सीधे दान देने से भी बड़ा पुण्य है, क्योंकि यह व्यक्ति की आत्म-सम्मान को बनाए रखता है। मैमोनाइडस (रामबाम) ने इसे दान का उच्चतम स्तर माना है।

- उधार देने में प्राथमिकता:

- रब्बियों ने यह भी सिखाया है कि उधार देने में कुछ प्राथमिकताएँ होनी चाहिए:
  - अपने यहूदी भाइयों को गैर-यहूदियों पर प्राथमिकता दें।
  - गरीबों को अमीरों पर प्राथमिकता दें।
  - अपने परिवार के गरीब सदस्यों को पहले मदद करें।
  - अपने नगर के गरीबों को अन्य नगरों के गरीबों पर प्राथमिकता दें।

- उधार देने वाले का व्यवहार:

- उधार देने वाले को दयालु और सहानुभूतिपूर्ण होना चाहिए। रशी कहते हैं कि यदि उधार लेने वाला गरीब है, तो ऋणदाता को उसे शर्मिंदा नहीं करना चाहिए या उस पर दबाव नहीं डालना चाहिए।

- ब्याज का निषेध:

- ब्याज लेना सख्त वर्जित है। रशी इसे "नशेख" (काटना) कहते हैं, जो सांप के काटने की तरह धीरे-धीरे नुकसान पहुंचाता है। यह निषेध न केवल उधार देने

वाले पर, बल्कि गवाहों और उन सभी पर लागू होता है जो इस प्रक्रिया में  
शामिल होते हैं।

## आज के मसीही चर्च में इसका महत्व:

मसीही विश्वास में भी गरीबों की सहायता करना और बिना स्वार्थ के देना महत्वपूर्ण माना जाता है। यीशु मसीह ने सिखाया:

**“जो तुझ से मांगता है, उसे दे; और जो तुझ से उधार लेना चाहता है, उससे मुह न  
मोड़।” (मत्ती 5:42)**

इसलिए, आज के चर्च में यह शिक्षा दी जाती है कि हमें जरूरतमंदों की सहायता बिना किसी स्वार्थ या ब्याज के करनी चाहिए, जिससे हम प्रभु की प्रेम और दया को दर्शा सकें।

## प्रभु यीशु मसीह से प्रेरित प्रार्थना:

□ हे प्रेमी परमेश्वर,

आपकी □□□□ □□□ □ □ □□□□ □ □ □□□ □□□□□□ □□□ □□□ □□□□□□  
 □ □ □ □□□□ □□□□ □ □□□□□ □ □ □□□□ □□□□ □□□□ □□□  
 □□□□□□ □ □ □□□□□, □□□ □□□□, □□□ □ □ □□□□□□□□□□  
 □□□ □ □ □ □□□□□ □ □ □ □□□ □ □ □ □ □ □ □ □ □□□□□□  
 □ □ □□□□ □ □ □□□□ □ □ □□□□ □□□, □□□□ □□□ □□□□  
 □□□□ □ □ □ □□□□ □ □ □□□□ □ □ □ □ □ □ □ □ □□□□  
 □□□ □ □□□□□□ □ □ □□□□ □ □ □□□ □□□□ □□□□ □ □ □□  
 □ □ □ □□□□□□ □ □ □□□□ □ □ □□□ □□□□ □□□□ □ □ □□

बहुत बढ़िया और व्यावहारिक सवाल है – जब हम दूसरों की मसीही प्रेम और उदारता से मदद

करते हैं, तो कुछ लोग उसका गलत प्रायदा भी उठाते हैं। ऐसे में हमें कैसे व्यवहार करना चाहिए? आइए इसे बाइबिल के प्रकाश में और समझदारी ...

---

□ 1. □□□□ □□ □□□□□ - □□□□, □□□□□ □□□□□□□ □□

यीशु ने कहा:

“जो तुझ से मांगता है, उसे दे; और जो तुझ से उधार लेना चाहता है, उससे मुह न मोड़।” (मत्ती 5:42)

लेकिन उन्होंने यह भी सिखाया:

“मैं तुम्हें भेड़ों की नाई भेड़ियों के बीच भेजता हूं। इसलिए साँपों की नाई चतुर और कबूतरों की नाई भोले बनो।” (मत्ती 10:16)

□ □□□ □□□□ दयालु और उदार होना चाहिए, लेकिन साथ ही बुद्धिमानी और विवेक से काम लेना चाहिए।

---

□ □□ □□□ □□□-□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□...

ऐसे में क्या करें?

1. ✓□□□□□:

- क्या यह व्यक्ति वास्तव में ज़रूरतमंद है?
- क्या वह मदद के बाद भी बदलने की कोशिश कर रहा है?

2. □ "□□" □□□□ □□ □□□□□□:

- अगर कोई बार-बार बिना सुधरे, सिफ़्र फायदा उठाने आता है, तो ना कहना  
**बाइबिल-विरोधी नहीं है।**
- **2 पिस्सलुनीकियों 3:10 में पौलुस कहता है:**

**"यदि कोई काम करना नहीं चाहता, तो खाने भी न पाए।"**

3. □ □□□ □□□□□□□□ □□□□:

- मदद करें, लेकिन सीमा के साथ। जैसे:
  - एक निश्चित राशि तक ही मदद करना।
  - अगली मदद से पहले उस व्यक्ति से कोई ज़िम्मेदारी लेना (जैसे कोई काम करना, सुधार दिखाना)।

4. □ □□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□:

- हर निर्णय से पहले प्रार्थना करें और पवित्र आत्मा से सही मार्गदर्शन माँगें।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ - □ □ □ □ □ □ □ □

**यीशु ने गिरे हुए लोगों की मदद की, लेकिन उन्हें बदलाव के लिए प्रेरित भी किया।**

जैसे:

- **व्यभिचारी स्त्री से कहा - “जा, और अब पाप मत करना”** (यूहन्ता 8:11)।
- **जवकर्ड ने जब पश्चाताप किया, तब यीशु उसके घर आया (लूका 19)।**

**मदद के साथ सच्चाई और मार्गदर्शन देना भी मसीही प्रेम का हिस्सा है।**

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ (□ □ □ □ □ - □ □ □ □ □ □ □ □)

□ "प्रभु यीशु,

तूने हमें दया और प्रेम दिखाया है। हमें भी दूसरों की मदद करने की समझ और सामर्थ दें। लेकिन हे प्रभु, जब कोई हमारे प्रेम और मदद का गलत उपयोग करे, तो हमें बुद्धि दे कि हम सही निर्णय लें - प्रेम के साथ, पर विवेकपूर्वक। हमारी सहायता कर कि हम ना तो कठोर हों, और ना ही अंधे बनें। हम तेरे मार्गदर्शन में चलें।

प्रभु यीशु के नाम में,

आमीन। □

---

अगर आप चाहें तो मैं बुद्धिमानी से मदद करने के कुछ व्यावहारिक तरीके या सीमाएँ □ □

□ इनमें से कोई व्यक्ति नहीं (जिसका लोगों की सच्ची जिम्मेदारी का अवलोकन होता है)

□ इनमें से कोई व्यक्ति नहीं! □ इनमें से कोई व्यावहारिक तरीकों और सीमाओं की जो आप (या आपका चर्चा) अपना सकते हैं ताकि आप लोगों की सच्ची दिल से मदद करें, लेकिन गलत फायदा उठाने से भी बचें।

---

□ इनमें से कोई व्यक्ति नहीं (जिसका लोगों की सच्ची जिम्मेदारी का अवलोकन होता है)

1. □ इनमें से कोई व्यक्ति नहीं/इनमें से कोई व्यक्ति नहीं

- जब कोई व्यक्ति सहायता माँगे (पैसे, खाना, उधारी), तो उससे एक सादा फॉर्म

**भरवाएं:**

- उसका नाम, संपर्क, परिवार की स्थिति
  - क्या वह पहले भी मदद ले चुका है?
  - काम करता है या नहीं?
  - किस वजह से सहायता चाहिए?
- **फायदा:** यह गंभीरता और पारदर्शिता लाता है। साथ ही, जो झूठ बोलकर मदद लेते हैं, वे अक्सर पीछे हट जाते हैं।

## 2. □ "मद्दत के बजाय, कुछ ज़िम्मेदारी या भागीदारी माँगिए:

- बिना शर्त मद्दत के बजाय, कुछ ज़िम्मेदारी या भागीदारी माँगिए:
  - जैसे: चर्च में कुछ सेवा (सफाई, भोजन पैकिंग, अन्य मद्दत)
  - या, एक प्रेरणादायक बैठक में भाग लेना

□ इसके अलावा फायदा लेने वाले नहीं, बल्कि परिवर्तन की ओर प्रेरित होते हैं।

---

## 3. □ लिमिट सपोर्ट (Limit Support)

- किसी भी व्यक्ति या परिवार को:
  - हर महीने में एक बार ही आर्थिक मद्दत
  - या, तीन बार से अधिक सहायता नहीं, जब तक कोई स्पष्ट सुधार ना हो।

□ नीति बनाएं और सबको समान रूप से लागू करें।

---

## 4. □ ज़रूरतमंद को सीधे पैसा देने की जगह, उन्हें:

- ज़रूरतमंद को सीधे पैसा देने की जगह, उन्हें:
  - राशन खरीदकर दो

- दवा, स्कूल फीस या बिजली बिल खुद भर दो

- या खाने का कृपन या वातचर दो

□ सही जगह लगे, न कि शराब, जुआ या  
किसी और गलत चीज़ में।

---

## 5. □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

- हर मदद के साथ:

- प्रार्थना, बाइबिल वचन, और
- यदि संभव हो, आर्थिक योजना की थोड़ी सलाह दें।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ "□ □ □ □ □ □" □ □ □ □ □ □ □ □, □ □ □ □  
□ □ □ □ □ □ - "सुधार कैसे करें", "बजट कैसे बनाएँ", "ईमानदारी से उबरें"।

---

## □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ "तुम्हारी दया बिना दिखावे के हो; बुद्धिमान बनो पर निर्दयी नहीं।" -

रोमियों 12:8 (संक्षिप्त सारांश)

✓ दयालुता और चतुराई साथ-साथ चलें - ये एक-दूसरे के विरोधी नहीं बल्कि सहयोगी हैं।

**विषय****तरीका****बार-बार फायदा****फॉर्म या रिकॉर्ड रखें****उठाना****धोखाधड़ी से बचाव****नकद की बजाय सामग्री सहायता****परिवर्तन में मदद****सेवा या मीटिंग की भागीदारी****प्रेम के साथ सख्ती****सीमाएँ तय करें, पर हार्दिक रवैया  
रखें****दीर्घकालिक बदलाव**    **सलाह, प्रार्थना, और शिक्षा जोड़ें**

P198 De.23:21 On lending money to the foreigner with interest

□ □ □ □ □ □ □ ( □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ 23:21)

- □ □ □ □ □ □ □

"परदेशी को तू ब्याज पर उधार दे सकता है; परन्तु अपने भाई को ब्याज पर

उधार न देना, ताकि जिस देश के अधिकारी होने को तू जाने पर तेरा परमेश्वर

यहोवा तुझे वहां सब कामों में आशीष दे।"

□ व्यवस्थाविवरण 23:21 (Deuteronomy 23:20 in English Bible numbering)

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

इस पद में परमेश्वर अपने लोगों को आर्थिक नैतिकता का एक सिद्धांत सिखा रहे हैं:

- परदेशी (गैर-यहूदी) को ब्याज पर उधार देना अनुमति है – क्योंकि उनका उद्देश्य व्यापारिक लाभ हो सकता है।
  - अपने भाई (यहूदी समुदाय के सदस्य) को ब्याज पर उधार देना मना है – क्योंकि यह आपसी सहयोग, दया और भाईचारे के विरुद्ध है।
  - अगर तुम इस नियम को मानोगे, तो परमेश्वर तुम्हारे कार्यों को आशीष देंगे, विशेष रूप से जब तुम उस भूमि में जाओ जिसे परमेश्वर ने तुम्हें देने का वादा किया है।
- 

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □

## □ 1. □□□□□ (Permission)

कुछ रब्बियों का मानना है कि यह पद केवल एक अनुमति □□□□ □□ — □□□□ 6 □□□

□ □ □ □ □ □ □ □ 7 □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ **उदाहरण:** एक यहूदी व्यापारी किसी परदेशी को \$1000 उधार देता है और ब्याज लेता है -

**यह उसकी अनुमति के तहत है।**

---

□ **2. □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ (Positive Commandment)**

**माइमोनिदेस (Rambam)** और Sefer HaChinuch के अनुसार, "परदेशी को ब्याज देना" एक मूलभूत आदेश है – यानी यह एक मित्रवाह(धार्मिक कर्तव्य) है।

**HaKtav VeHaKabalah** कहता है:

अगर आपने किसी गैर-यहूदी से ब्याज पर कर्ज लिया है, तो आपका फर्ज है कि आप ब्याज

समय पर दें – ताकि परमेश्वर का नाम अपमानित न हो।

□ **उदाहरण:** एक गैर-यहूदी ने किसी यहूदी को 5% ब्याज पर कर्ज दिया है। अब यहूदी को उस ब्याज को समय पर चुकाना है – क्योंकि यह सच्चाई और भरोसे की बात है।

---

□ **3. □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ (Sforno)**

Sforno कहते हैं – जब गैर-यहूदी आपसे ब्याज मांगता है, तो उसे ना देना विश्वासघात होगा,

इसलिए यह वचन सच्चाई और नैतिकता की सीख है।

---

□ **4. □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ (Lav Haba Miklal Aseh)**

कुछ रब्बियों का मानना है कि "परदेशी को ब्याज देना" की अनुमति, वास्तव में "अपने भाई से ब्याज न लो" को और ज़ोर देती है।

□ "□□□□ □□□ □□ □□□□□ □ □□□□" – □□□□□

□□□□□:

1. **यह निषेध (Prohibition) है** – जो दो बार आता है (Deut 23:20 और 23:21), जिससे

**यह दो अलग-अलग आज्ञाओं का उल्लंघन बनता है।**

2. **कारण:**

- □ **भाईचारा:** आर्थिक सहायता को मुनाफे का ज़रिया न बनाओ।
- □ **गरीबी में सहायता:** ज़रूरतमंद को बोझ नहीं, सहारा दो।
- □ **बुरी आदतों से बचाव:** Talmud कहता है कि अगर ब्याज की छूट सबको मिल जाए, तो लोग बुरी चालों में पड़ सकते हैं।

3. **"भाई"** का दायरा:

- **यह शब्द** सिर्फ खून के रिश्तेदारों के लिए नहीं है, बल्कि धर्म के अनुसार चलने वालों, यहां तक कि धर्मान्तरित यहूदियों के लिए भी है।

4. **ब्याज के प्रकार:**

- □ **पैसे का ब्याज**
- □ **सामान में ब्याज**(100 गेहूं देकर 120 वापिस लेना)
- □ **बातों का ब्याज**(अत्यधिक सम्मान दिखाना ताकि वापसी सुनिश्चित हो)

▲ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□

□□□□ □□□□□ □□?

प्रभु यीशु मसीह ने ब्याज और धन के मामलों को गहराई से समझाया:

**"जो तुमसे उधार मांगता है, उससे मुँह न मोड़ो"** - मत्ती 5:42

**"धन से प्रेम सब बुराइयों की जड़ है"** - 1 तीमुथियुस 6:10

□ □□□□ □□□□□ □□□ □□:

- **मसीही प्रेम में दयालुता और मदद को प्राथमिकता दी जाती है।**
  - **चर्च समाज से कहता है कि जरूरतमंद की मदद बिना किसी स्वार्थ या मुनाफे के की जाए।**
  - **"Prosperity Gospel" के युग में भी, बाइबल की जड़ें हमें न्याय, दया और भाईचारे की ओर ले जाती हैं।**
- 

□ □□□□ □□□ □□□ □□

□□□□□□□ (□ □□□□ □□□□□□  
□□ □□□ □□ □□□):

\*\* □□□□□□□: □□□□□, □□□□ □□□ □□ □□ □□ □\*\*

हे स्वर्गीय पिता,

जैसे आपके पुत्र यीशु ने हमें बिना स्वार्थ प्रेम करना सिखाया,

वैसे ही हमें भी दूसरों को मदद देने की भावना दे।

जब हमारे पास देने को हो,

तब हम दिल खोल कर दें – बिना ब्याज, बिना अपेक्षा।

जब कोई हमसे उधार मांगे,

तो हम उनके चेहरे में तेरा चेहरा देख सकें।

प्रभु यीशु, तूने हमें दिखाया कि सच्चा खजाना पृथ्वी पर नहीं,

बल्कि स्वर्ग में है।

हमें अपने धन को दूसरों की सेवा में लगाने की बुद्धि और साहस दे।

❖ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ —

कि हम भाईचारे, सच्चाई और दया में बढ़ते जाएं,

जैसे आपने हमें सिखाया -

प्रभु यीशु मसीह के नाम में \*\*आमेन।\*\*

□ \*"□ □ □□□□, □□□□ □□□ □□ □ □ □□□□ □□□□,

□□□□□ □□□□□ □□□"\*

P199 De.24:13; On restoring a pledge to its owner if he needs it

□ □□□□□ □□ (□□□□□ □□□) -

□□□□□□□□□□□ 23:13

13 तेरे पास अपने डेरे के बाहर एक स्थान होना चाहिए, जहाँ तू बाहर जाया करे।

□ □□□□□ □□□ □□□□□□□:

यह आज्ञा इस बात से संबंधित है कि जब इस्माएल की सेना युद्ध के समय शिविर बनाती, तो उन्हें अपने शिविर के बाहर एक स्थान निर्दिष्ट करना था जहाँ वे अपने शारीरिक आवश्यकताओं (बॉडी फंक्शन्स) के लिए जाते। उन्हें आदेश था कि वे स्वच्छता बनाए रखें - अपने मल को मिट्टी में गाड़ें ताकि परमेश्वर की उपस्थिति के योग्य पवित्रता बनी रहे।

## मुख्य उद्देश्य:

- शिविर की पवित्रता बनाए रखना
- स्वच्छता और स्वास्थ्य का ध्यान
- परमेश्वर की उपस्थिति का सम्मान

□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□  
□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□:

### □ 1. "यद" (יְד) का अर्थ – स्थान

- राशी, इन्ह एज्ञा, रशबाम – "यद" का अर्थ है एक विशिष्ट स्थान। जैसे गिनती 2:17 में "हर व्यक्ति अपनी जगह (יְד) पर" लिखा है।
- टोरा टेमीमा भी इसे एक स्थायी व्यवस्था के रूप में देखता है।

### □ 2. "शिविर के बाहर" (מחוץ למחנה):

- राशी - यह स्थान "महिमा के बादलों" (clouds of glory) के बाहर था, यानी पवित्रता की सीमा के बाहर।

- **बिरकत आशेर** - यह नियम सिर्फ जंगल में नहीं, बल्कि हर समय और हर स्थान पर लागू है।
- **स्टेन्साल्ट्ज़** - इसे सामान्य स्वच्छता व्यवस्था के रूप में समझते हैं।

□ 3. "खँटी" (गा') और शौच\*\*

- **रालबाग और रव हिर्श** – यह खँटी ज़मीन में गड्ढा करने के लिए थी, जिससे मल को ढका जा सके और दुर्गंध ना फैले।

□ 4. राहनन रव राहनन (राहनन)

- जो व्यक्ति अपने पापों को पूरी तरह से नहीं छोड़ता, उसके लिए "बाहर का स्थान" गहनन (Gehenna) बन जाता है – पापों की शुद्धि के लिए।

□ 5. राहनन रव राहनन (Rosh)

- "तेरे लिए एक स्थान होगा" यह यहूदियों की निर्वासन में भी परमेश्वर की उपस्थिति की आशा का संकेत देता है।

↑ राहनन रव राहनन राहनन राहनन :

□ राहनन रव राहनन राहनन राहनन राहनन राहनन  
(राहनन 5:17):

यह नियम आज मसीही जीवन में शाब्दिक रूप से लागू नहीं है, पर इसके आत्मिक और

## नैतिक सिद्धांत अब भी उपयोगी हैं:

□ 1. रामेश्वर की उपस्थिति:

- जैसे शिविर परमेश्वर की उपस्थिति का स्थान था, वैसे ही हर मसीही का जीवन "पवित्र आत्मा का मंदिर" है (1 कुरिन्थियों 6:19)। इसलिए हमें अपने जीवन को पवित्र और शुद्ध रखना है।

□ 2. रामेश्वर की उपस्थिति:

- यह आज भी जीवनशैली में लागू है - सफाई रखना, दूसरों की भलाई का ध्यान रखना।

□ 3. रामेश्वर की उपस्थिति:

- मल को ढकने का कार्य आज हमारे पापों को ढाँकने और छोड़ने का प्रतीक बन सकता है - ताकि हम परमेश्वर की उपस्थिति में निर्भय खड़े हो सकें।

□ रामेश्वर की उपस्थिति:

□ रामेश्वर (Purity Prayer in Jesus'

Style)

□ \*\*रामेश्वर की उपस्थिति - रामेश्वर की उपस्थिति\*\*

प्रिय स्वर्गीय पिता,

जैसे आप अपने लोगों से पवित्रता और शुद्धता की मांग करते थे,

वैसे ही आज मैं तेरे सामने आता हूँ।

हे प्रभु यीशु,

आपने हमें सिखाया कि शुद्ध मन वाले धन्य हैं,

क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे (मत्ती 5:8)।

मुझे ऐसा दिल दे जो आपके सामने पवित्र और नम्र हो।

मेरे जीवन से हर गंदगी,

हर पाप और अपवित्र विचार को आप दूर कर दे।

जैसे शिविर के बाहर गड्ढा खोदकर ढाँका जाता था,

वैसे ही मैं अपने पुराने पापों को ढककर छोड़ देता हूँ।

मेरी आत्मा को शुद्ध कर,

ताकि मैं आपकी उपस्थिति में स्थायी रूप से रह सकूँ।

मुझे वह "खूँटी" दे जिससे मैं अपने जीवन के अस्वच्छ भागों को हटाकर

आपके लिए पवित्र स्थान बना सकूँ।

प्रभु यीशु के नाम में प्रार्थना करता हूँ,

\*\* □ □ □ □ \*\* □ □

## □ बाइबल पदः व्यवस्थाविवरण 24:15 (Hindi Bible)

”उसकी मजदूरी उसी दिन देना, और सूर्य अस्त होने न पाए; क्योंकि वह

कंगाल है और उसका मन उसी पर लगा रहता है; ऐसा न हो कि वह तेरे विरुद्ध

यहोवा की दोहाई दे, और तुझ में पाप लग जाए।”

(व्यवस्थाविवरण 24:15, Hindi O.V.)

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

यह पद हमें यह सिखाता है कि अगर आपने किसी गरीब मजदूर को काम पर रखा है, तो उसकी

मजदूरी उसी दिन दे दो—सूरज डूबने से पहले।

क्यों?

क्योंकि वह गरीब है और उसी मजदूरी पर उसकी और उसके परिवार की जिंदगी टिकी हुई है।

अगर उसे समय पर पैसे नहीं मिले, और वह दुखी होकर परमेश्वर से तेरे विरुद्ध दोहाई दे, तो तू पापी ठहरेगा।

यह सिर्फ एक सामाजिक नियम नहीं है, बल्कि परमेश्वर की दृष्टि में धार्मिकता का मामला है।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

□ □ □ □ □ :

□ 1. □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

- **रम्बान (Ramban):** दिन के मजदूर को सूर्यास्त से पहले भुगतान किया जाए क्योंकि

वह उस रात के भोजन पर निर्भर करता है।

- **छिज़कुनी (Chizkuni) और तलमूद (Bava Metzia 111b):**

- □□□ □□ □□□□□ → □□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□
- □□□ □□ □□□□□ → □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□

- **कतव वे-हाल्बाह (HaKtav VeHaKabalah):**

- "शखर" (वेतन) और "पाओलाह" (कार्य की मजदूरी) में अंतर बताते हैं लेकिन भुगतान समय पर देना दोनों पर लागू होता है।

□ 2. □□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□□: "□□□□ □□  
□□□ □□ □□□ □□□□ □□"

**रशी (Rashi):** मजदूर कभी-कभी जोखिम उठाकर (जैसे पेड़ पर चढ़कर) काम करता है, इस

उम्मीद में कि उसे वेतन मिलेगा।

**इब्र एज़रा (Ibn Ezra):** वह व्यक्ति अपनी आत्मा उसी मजदूरी पर टिकाए रहता है, ताकि जीवनयापन कर सके।

**रलबग (Ralbag):** गरीब पूरी तरह मजदूरी पर निर्भर है, अगर देर हुई, तो वह परमेश्वर से फरियाद कर सकता है।

**ओर हाचाइम (Or HaChaim):** वेतन न देना उसके प्राण को संकट में डालना है, जो हत्या के समान है।

□ 3. □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□: "□□ □□□ □□□

□ □ □ □ □ □ □ □"

- **रशी और मिज्जाची:** अगर मजदूर परमेश्वर से न भी दोहाई दे, फिर भी देर करना पाप है।
  - **मालबिम (Malbim):** परमेश्वर गरीब की पुकार का जल्दी उत्तर देता है।
  - **रेजियो (Reggio):** गरीब शर्म के मारे मांग नहीं पाता, लेकिन परमेश्वर उसकी व्यथा सुनता है।
- 

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ ?

►1. □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

**प्रभु यीशु ने बार-बार गरीबों, मजदूरों, और ज़रूरतमंदों की चिंता की (लूका 4:18; मत्ती 25:40)।**

यह पद मसीहियों को सिखाता है कि वे आर्थिक रूप से कमज़ोर लोगों का शोषण न करें, बल्कि न्याय, प्रेम और समय पर सहायता करें।

►2. □ □ □ □ □ 5:4 □ □ □ □ □ □ :

"देखो, जिन मजदूरों ने तुम्हारे खेतों में काटा, उनकी दबाई हुई मज़दूरी चिल्ला रही है, और लवने वालों की दोहाई सेनाओं के प्रभु के कानों तक पहुँच गई है।"

यह याकूब का पत्र सीधे व्यवस्थाविवरण 24:15 की चेतावनी को दोहराता है।

►3. □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

आधुनिक चर्चों में यह पद व्यवसायियों और मालिकों को यह सिखाने के लिए प्रयोग किया जाता है कि वे अपने अधीनस्थों के साथ न्याय करें और समय पर उनका पारिश्रमिक दें।

---

A horizontal row of fifteen empty rectangular boxes, likely intended for students to draw or write in.

□ □ □ □ □ □ □ □ □ (Deut. 24:15 □ □ □ □ □ □):

”हे प्रभु यीशा,

आपने गरीबों और दबे-कचले लोगों की चिंता की, आपने कहा कि जो छोटे से

छोटे जन की सेवा करता है, वह तेरी सेवा करता है।

हमें वह करुणा दे कि हम भी अपने अधीन काम करने वालों के साथ न्याय करें।

प्रभु, हमें सिखा कि हम किसी की आशा को तोड़े नहीं, किसी की मजदूरी में देर न

करें, और प्रेमपूर्वक उनकी आवश्यकताओं को समझें।

जब हम आर्थिक रूप से दूसरों के लिए उत्तरदायी हों, तब तू हमें विवेक दे, दया दे

और समय पर हर कार्य करने का सामर्थ्य दें।

जैसे आपने अपने प्राण दूसरों के लिए दे दिए, वैसे ही हम भी अपने लाभ से

**बढ़कर दूसरों की भलाई को देखें।**

**प्रभु यीशु मसीह के नाम में हम यह प्रार्थना करते हैं। आमीन।"**

अगर आप चाहें तो मैं इस विषय पर एक छोटा उपदेश या चर्च नोट्स भी तैयार कर सकता हूँ।  
जो आप कलीसिया में बॉट सकें। चाहें तो बताइए!

## व्यवस्थाविवरण 23:25

25 जब तू अपने पड़ोसी के दाख की बारी में जाए, तब अपनी इच्छा से दाख खा

सकता है जितना तुझे अच्छा लगे, परन्तु अपनी टोकरी में कुछ न रखना।

---

□ :

इन पदों में परमेश्वर यह आदेश देते हैं कि यदि कोई व्यक्ति अपने पड़ोसी की दाख की बारी

(अंगूर का खेत) या खड़े खेत (अनाज का खेत) में जाए, विशेषकर एक मजदूर या दिहाड़ी

मजदूर के रूप में, तो वह अपनी भूख मिटाने के लिए वहाँ से अंगूर या बालें (गेहूं की) खा सकता

है। लेकिन वह उन्हें इकट्ठा करके अपने साथ नहीं ले जा सकता, और हथियार (जैसे हंसिया)

का उपयोग नहीं कर सकता जिससे वह अपनी जरूरत से अधिक ले सके।

यह व्यवस्था मजदूर की जरूरत को ध्यान में रखती है, लेकिन स्वार्थ और चोरी से बचने के

लिए सीमाएं भी निर्धारित करती है।

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

### 1. मजदूर का अधिकार - Rashi, Sifrei, Mizrachi:

यह कानून विशेष रूप से वह मजदूर पर लागू होता है जो खेत में काम कर रहा है।

“अपने पात्र में न रखना” यह दिखाता है कि मजदूर खाने के लिए खा सकता है, लेकिन

अपने बर्तन में भरकर नहीं ले जा सकता।

### 2. “अपनी तृप्ति तक” - Rashi, Yerushalmi, Malbim:

**मजदूर केवल उतनी मात्रा में खा सकता है जितनी उसे भूख मिटाने के लिए चाहिए।**

*Yerushalmi* में यह जोड़ा गया है कि उसे ज्यादा खाकर फिर उल्टी नहीं करनी चाहिए -

**यानी अति से बचना चाहिए।**

**Malbim** कहते हैं, यह पहले से मौजूद अधिकार है, लेकिन परमेश्वर इसकी मर्यादा तय

**करते हैं।**

### **3. “हंसिया न चलाना” - Ralbag, HaKtav VeHaKabalah:**

- हाथ से तोड़ना खाने के लिए है, हंसिया से काटना व्यावसायिक इकट्ठा करने जैसा है, जो मना है।
- यह मजदूर को अपने काम से हटकर व्यक्तिगत लाभ से रोकता है।

### **4. उद्देश्य - Rabbeinu Bahya:**

- यदि परमेश्वर यह अनुमति न देते, तो गरीब मजदूर भूख के कारण चोरी कर सकते थे।
- इसलिए उन्हें भूख मिटाने की अनुमति है, लेकिन नियंत्रण के साथ।

### **5. केवल मालिक की संपत्ति में - Mizrachi, Or HaChaim:**

- यह नियम केवल यहूदी पड़ोसी की संपत्ति पर लागू होता है, और न कि गैर-यहूदी या मंदिर की संपत्ति पर।

□ □ □ □ □ □ :

**जैसे एक मजदूर दिन भर अंगूर की फसल तोड़ता है और उसे भूख लगती है, तो वह वहीं अंगूर**

**खा सकता है, लेकिन वह अंगूर को पॉलीथीन या टोकरी में भरकर घर नहीं ले जा सकता।**

**यह अनुमति भूख मिटाने के लिए है, मालिक के नुकसान के लिए नहीं।**

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

हालाँकि यह विशेष व्यवस्था इस्राएलियों की कृषि व्यवस्था से जुड़ी थी, लेकिन इसके पीछे के नैतिक सिद्धांत आज भी मसीही विश्वास में गहराई से मान्य हैं:

† 1. □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

- याकूब 5:4 कहता है: “देखो, जिन मजदूरों ने तुम्हारे खेत काटे और जिनकी मजदूरी तुमने रोक रखी है, वह चिल्ला रही है...”
- प्रभु यीशु भी अक्सर जरूरतमंदों के लिए करुणा दिखाते थे (मत्ती 12:1-8 में शिष्य खेत में बालें तोड़ते हैं)।

† 2. □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

- यह पद हमें सिखाता है कि हमें अपनी भूख के अनुसार लेना चाहिए, लेकिन अपने स्वार्थ के लिए संग्रह नहीं करना चाहिए।

† 3. □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

- प्रभु यीशु ने स्वयं कहा: “मजदूर अपनी मजदूरी का हकदार है” (लूका 10:7)।
- 

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ (□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □)

□ □ □ □ □ □ □ :

**हे दयालु पिता परमेश्वर,**

हम आपसे धन्यवाद करते हैं कि आप हमारी ज़रूरतों को जानता हैं और उन्हें पूरी करता है।

प्रभु यीशु, आपने भूखों को रोटी दी, श्रमिकों की चिंता की, और हमें दूसरों के लिए न्याय और करुणा का उदाहरण दिया।

हम प्रार्थना करते हैं कि हम भी अपने आस-पास के ज़रूरतमंदों का ध्यान रखें, कभी किसी पर अन्याय न करें, और हर किसी को सम्मान और अधिकार दें। हमें लालच से बचा, और सिखा कि कैसे हम अपनी आवश्यकता के अनुसार जीएँ,

और दूसरों की भलाई के लिए अपने संसाधनों का उपयोग करें।  
प्रभु यीशु मसीह के नाम में,  
आमीन।

□ □ □ □ □ □ □ :

**व्यवस्थाविवरण 23:25-26** केवल एक पुरानी व्यवस्था नहीं, बल्कि आज के समाज के लिए भी एक नैतिक और सामाजिक दृष्टांत है। यह हमें सिखाता है:

- ज़रूरतमंद को तृप्त करने की अनुमति, लेकिन स्वार्थ और चोरी की रोकथाम।
- काम करने वाले को उसका अधिकार, पर न्याय और नियंत्रण के साथ।
- खुले दिल से देना, लेकिन ईमानदारी से लेना।

मसीही विश्वास में यह आज भी उतना ही महत्वपूर्ण है क्योंकि प्रभु यीशु ने भी हर कार्य में प्रेम, न्याय और दया को सर्वोच्च स्थान दिया।

आगर चाहो तो मैं इससे जुड़े बाइबल अध्ययन, संडे स्कूल सामग्री, या चरित्र नाटक भी तैयार कर सकता हूँ।

### 1. बाइबल पद (व्यवस्थाविवरण 23:26) हिंदी में:

**व्यवस्थाविवरण 23:26 (Hindi Bible - Pavitra Bible Society Version):**

26 और जब तू अपने पड़ोसी के खड़े अनाज के खेत में जाए, तब तू हाथ से बालें

तोड़ सकता है, परन्तु अपने पड़ोसी के खड़े अनाज पर हँसिया न चलाना।

### 2. सरल हिंदी में व्याख्या:

ये पद एक व्यावहारिक और नैतिक नियम सिखाते हैं। यदि कोई व्यक्ति अपने पड़ोसी के खेत या दाख की बारी में जाता है (विशेष रूप से एक मज़दूर या काम करने वाला), तो वह अपने भूख मिटाने के लिए अंगूर या अनाज खा सकता है।

लेकिन दो सीमाएँ रखी गई हैं:

- वह अपने साथ कोई बर्तन या टोकरी नहीं ला सकता जिससे वह ज्यादा अंगूर ले जाए।
- वह हँसिया (कटाई का औज़ार) इस्तेमाल नहीं कर सकता, जिससे वह बड़ी मात्रा में अनाज काट सके।

इसका उद्देश्य यह है कि व्यक्ति अपनी तत्काल आवश्यकता पूरी कर सके, पर स्वार्थवश या चोरी की नीयत से अधिक न ले।

---

### 3. रब्बियों की व्याख्याएँ (उदाहरणों के साथ):

□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□□  
□□□□□□□ □□ □□□?

- राशी, गुर आर्ये, मिजराही, और टोरा तेमीमा बताते हैं कि यह नियम मज़दूरों के लिए है जो खेत में काम कर रहे हैं।

**उदाहरण:** कोई अंगूर चुनने वाला मज़दूर, जो मालिक के लिए काम कर रहा है, वह अपने हाथ से थोड़े अंगूर खा सकता है।

- इब्र एज़रा ने बताया कि कुछ लोग इसे आम राहगीरों पर लागू करते हैं, पर शदाल इसे अस्वीकार करते हैं क्योंकि शास्त्र में "जब तू आए" (אַבָּג) लिखा है, न कि "जब तू गुज़रे" (רָאַבָּג)।

इससे यह संकेत मिलता है कि यह अनुमति किसी ऐसे व्यक्ति को है जिसे वहां रहने या काम करने की अनुमति मिली है।

---

□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□?

- हआमेक डावर बताते हैं कि हँसिया का प्रयोग बड़ी मात्रा में काटने के लिए होता है, जो केवल खाने के उद्देश्य से नहीं होता।

**उदाहरणः अगर कोई मज़दूर अनाज को हँसिए से काटने लगे तो यह मालिक के हक में  
अनावश्यक हस्तक्षेप होगा।**

---

□ अनाज को क्या करता है, अनाज को क्या करता है?

- **बेखोर शोर कहते हैं कि "खड़ा अनाज" सिर्फ गेहूं तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें अन्य ऊँची फसलें जैसे जैतून, खजूर, सेब आदि भी शामिल हैं।**
- 

□ अनाज को क्या करता है, अनाज को क्या करता है:

- **"मेलीलगा"** (अनाज की बालियाँ) - रेजियो कहते हैं ये पकी हुई बालियाँ हैं जो आसानी से झड़ जाती हैं।
  - **"גַּלְעָד"** (pluck) - यह शब्द अथ्यूब 30:4 में भी इसी अर्थ में उपयोग हुआ है।
- 

#### 4. आज के मसीही चर्च में इसका क्या महत्व है?

यद्यपि मसीही आज मूसा की व्यवस्था के अधीन नहीं हैं, फिर भी इसके नीतिगत सिद्धांत आज भी लागू होते हैं:

- **मज़दूर का अधिकारः** यीशु ने कहा, "मज़दूर अपने भोजन का अधिकारी है" (मत्ती 10:10, लूका 10:7)।

- **ईमानदारी और आत्मसंयमः** मसीही जीवन में लालच के स्थान पर संतोष और न्याय होना चाहिए।
- **संपत्ति का आदरः** व्यवस्था चोरी के विरुद्ध है (निर्गमन 20:15)।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

हमें दूसरों की संपत्ति का आदर करना चाहिए, जरूरतमंदों को मदद करनी चाहिए,  
और अपने लालच को वश में रखना चाहिए।

---

## 5. प्रभु यीशु मसीह के जीवन से संबंधित प्रार्थना:

### प्रार्थना:

हे परमेश्वर, आप हमारे जीवन की प्रत्येक आवश्यकता को जानते हैं। जैसे आपने प्राचीन काल में खेत के मज़दूरों के लिए भोजन का प्रावधान किया, वैसे ही आज भी आप हमारे लिए चिंता करते हैं।

हे प्रभु यीशु, आपने स्वयं कहा कि “मज़दूर अपने भोजन का अधिकारी है।” आपने न्याय और दया सिखाई, और दूसरों की भलाई में अपनी इच्छा रखी।

हमें सिखा कि हम आत्मसंयम रखें, ईमानदार बनें, और दूसरों की संपत्ति का आदर करें।

हम प्रार्थना करते हैं कि हम हमेशा अपने व्यवहार में आपकी महिमा करें, और ज़रूरतमंदों के प्रति दयालु हों।

**प्रभु यीशु के नाम में,**

**आमीन।**

---

#### **6. निष्कर्ष (संक्षेप में):**

- व्यवस्थाविवरण 23:26 एक नैतिक और सामाजिक व्यवस्था है जो मज़दूरों के अधिकार, आत्मसंयम, और न्याय को बढ़ावा देती है।
  - रब्बी इस बात पर सहमत हैं कि यह अनुमति सिर्फ उसी मज़दूर को है जो खेत में काम कर रहा है।
  - यह नियम आज भी मसीही जीवन में न्याय, संयम, और दूसरों के प्रति सम्मान के रूप में नैतिक शिक्षा देता है।
  - प्रभु यीशु मसीह ने भी इन सिद्धांतों को अपने जीवन और शिक्षाओं में आगे बढ़ाया।
- 

अगर आप चाहें, तो मैं इससे संबंधित एक छोटा नाटक, बच्चों की बाइबल कहानी, या रविवार स्कूल गतिविधि भी तैयार कर सकता हूँ।

P202 Ex.23:5 On helping unload when necessary a tired animal

□ 1. □□□□□ □□ (□□□□□□□□□□□□ 23:5) - □□□□□ □□□  
**(Pavitra Bible Society Version)**

**व्यवस्थाविवरण 23:4-5**

“अम्मोनी और मोआबी यहोवा की मण्डली में कभी प्रवेश न करें; वह उन की

दसवीं पीढ़ी में भी यहोवा की मण्डली में प्रवेश न करने पाए।

इसलिये कि जब तुम मिस्र से निकलते हुए मार्ग में थे तब उन्होंने तुम्हें रोटी और

पानी ले कर भेट नहीं दी, और उन्होंने मिस्सर के फतन के पुत्र बिलाम को तुम्हारे

ऊपर शाप देने के लिये पटोर नाम नगर से जो अराम-नहरैम में है, बुलवाया था।”

## □ 2. □□□ □□□□□ □□ □□□□□□□

इस पद में परमेश्वर इस्राएलियों को आज्ञा दे रहा है कि अम्मोनी और मोआबी लोग कभी भी प्रभु की मण्डली में (यानी इस्राएली समुदाय के पवित्र संबंधों में) प्रवेश न करें, यहाँ तक कि दसवीं पीढ़ी तक भी नहीं।

**कारण दो हैं:**

1. **बिना दया के व्यवहार:** जब इस्राएली मिस्र से थक हार कर निकले, तब इन राष्ट्रों ने रोटी और पानी देकर उनका स्वागत नहीं किया। यह **अतिथि-सत्कार** और मानवता की कमी थी।
2. **शत्रुता का कार्य:** मोआबियों ने बिलाम नामक भविष्यवक्ता को बुलाकर इस्राएलियों को शाप देने की कोशिश की।

## □ 3. □□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□

✓□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□?

- हकटव वेहकबाला कहते हैं कि "तुमसे मिलने नहीं आए" (מִצְמָא קָל) शब्द का बहुवचन

दिखाता है कि दोनों राष्ट्र - अमोन और मोआब - इस व्यवहार में दोषी हैं।

- हआमेक डावर का मानना है कि हो सकता है उन्होंने खाना बेचा हो, पर परंपरागत स्वागत और सेवा नहीं दी - जो उस समय एक सामाजिक कर्तव्य था।

□ “शब्द” (שׁבֵד) का मतलब क्या है?

- राशी, मिजराही, और गुर आर्ये “רַבָּד לְעֵל” (उस बात के कारण) को “बुरी सलाह” से जोड़ते हैं। वे कहते हैं कि अमोन और मोआब ने न केवल भोजन नहीं दिया, बल्कि बिलाम की सलाह पर चलकर इम्राएल को पाप में गिराने की योजना बनाई।
- कली याकर का कहना है कि भोजन न देने के पीछे इरादा था कि इम्राएली कमज़ोर हो जाएँ और फिर मोआबी स्त्रियों द्वारा यौन पाप और मूर्तिपूजा में फँस जाएँ (गिनती 25)।

□ ?

- यवमोत (Talmud) में रब्बियों ने निष्कर्ष निकाला कि यह निषेध केवल पुरुषों पर लागू होता है, क्योंकि परंपरा के अनुसार स्वागत करने और भोजन लाने की जिम्मेदारी पुरुषों की होती थी।
- इसलिए रूत, जो मोआबी महिला थी, को यहूदी धर्म में प्रवेश और राजा दाऊद की पूर्वज बनने की अनुमति मिली।

□ □ □ □ □ □ □ :

**इन राष्ट्रों ने न केवल प्रेम और दया से मुह मोड़ा, बल्कि जानबूझकर शत्रुता दिखाई।**

**इसलिए उन्हें प्रभु की मण्डली में प्रवेश से वंचित किया गया।**

▲ 4. □ ?

यद्यपि मसीही अब मूसा की व्यवस्था के अधीन नहीं हैं, फिर भी इस पद का नैतिक महत्व आज भी है:

□ □ □ □ □ :

**दया और अतिथि-सत्कार – प्रभु यीशु ने खुद कहा, ”मैं भूखा था, तुम ने मुझे खाना दिया”**

(मत्ती 25:35)।

**शत्रुता के बजाय प्रेम – प्रभु यीशु ने सिखाया कि “अपने शत्रुओं से प्रेम करो” (मत्ती 5:44)।**

**परमेश्वर का चयन हृदय से होता है, वंश से नहीं – जैसे रूत को अपनाया गया।**

□ □ □ □ □ □ :

**प्रभु यीशु मसीह की वंशावली में रूत को जगह मिलना इस बात का प्रमाण है कि प्रभु अनुग्रह से वंश के प्रतिबंधों को भी तोड़ देता है, जब व्यक्ति सच्चे दिल से उसकी ओर आता है।**

□ 5. □ :

**प्रार्थना:**

**हे पिता परमेश्वर, आप न्यायी और दयालु हैं। आपने अपने लोगों को यह सिखाया**

**कि प्रेम, दया, और अतिथि-सत्कार कितने महत्वपूर्ण हैं।**

**प्रभु यीशु, आपने हमें सिखाया कि हमें भूखों को भोजन देना है, प्यासों को पानी देना है, और शत्रुओं से प्रेम करना है।**

**हमारी आत्मा से वह कठोरता निकाल दे, जो दूसरों की ज़रूरतों को अनदेखा करती है। हमें रूत की तरह विनप्रता और तेरी इच्छा के प्रति समर्पण दे।**

**जैसे आपने शत्रुता को प्रेम में बदला, वैसे ही हमारे हृदय को भी रूपांतरित कर, कि हम तेरी मण्डली का हिस्सा बन सकें।**

**प्रभु यीशु के नाम में,**

**आमीन।**

---

**□ 6. रुत का विवरण (रुत का विवरण):**

- **व्यवस्थाविवरण 23:5** अमोनियों और मोआबियों को इस्राएल की मण्डली से बाहर रखने का कारण बताता है – उनकी अतिथि-सत्कार की कमी और बिलाम को शाप देने के लिए बुलाना।
- रब्बियों ने इसे केवल व्यवहार की नहीं, बल्कि इरादे की गम्भीरता से भी जोड़ा।
- स्त्रियों को इससे बाहर रखा गया, जिससे रूत को परमेश्वर की योजना में स्थान मिला।
- मसीही दृष्टिकोण में यह पद दयालुता, स्वागत और आत्मिक विशुद्धता की शिक्षा देता है।

- प्रभु यीशु मसीह के जीवन से हम सीखते हैं कि सबको अनुग्रह मिलता है, यदि वे सच्चे मन से प्रभु की ओर लौटें।
- 

P203 De.22:4 On assisting a man loading his beast with its burden

**व्याख्याविवरण 22:4 - बाइबल पद (हिंदी में):**

"यदि तू अपने भाई का गधा या बैल मार्ग में गिरा हुआ देखे, तो अनदेखी न करना; तू उसे उसके साथ फिर खड़ा करने में सहायता करना।"

(Deuteronomy 22:4 – Hindi Bible)

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

यह पद हमें सिखाता है कि अगर हम अपने भाई (या पड़ोसी) का जानवर रास्ते में गिरा हुआ देखें, तो उसे अनदेखा करना पाप है। इसके बजाय, हमें उस जानवर को फिर से खड़ा करने में उसके मालिक के साथ मिलकर सहायता करनी चाहिए।

यह केवल जानवर की बात नहीं है, बल्कि एक जीवन मूल्य है - किसी भी व्यक्ति की सहायता करना जब वह बोझ से दबा हो, चाहे वह हमारा मित्र हो या शत्रु।

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

□ 1. "उसे उसके साथ..." – (ony / "with him")

राशी और मिज़राही बताते हैं कि यह वाक्यांश दर्शाता है कि मदद तभी की जाए जब मालिक

**भी प्रयास कर रहा हो। अगर मालिक बैठा रहे और खुद कुछ न करे, तो मदद करने का दायित्व**

**समाप्त हो सकता है - सिवाय उस स्थिति के जब जानवर दुख में हो।**

**उदाहरण:** अगर कोई वृद्ध या असहाय है और जानवर गिरा हुआ है, तो फिर भी सहायता करना अनिवार्य है।

□ 2. "अनदेखी न करना..." (לא תראו... וְהַתִּיעַלְמָה)

हकतव वेहलבकह बताता है कि यह वाक्य केवल देखना नहीं, बल्कि "देखकर नजरअंदाज करना" की मनःस्थिति की निंदा करता है।

रेजियो कहते हैं कि यह छिपी हुई उदासीनता है - जब हम जानबूझकर मदद से बचते हैं।

**उदाहरण:** किसी को गिरा देख कर चुपचाप आगे बढ़ जाना, यह इस आज्ञा का उल्लंघन है।

□ 3. "तेरा भाई" (ר'חָא / your brother)

रंबान और रब्बी बाह्ये समझाते हैं कि यह शब्द हमारे "शत्रु" को भी "भाई" मानने का न्योता है।

टोराह तेमीमा के अनुसार, यह हमारे "येत्सर हारा"- बुरे स्वभाव को पराजित करने की शिक्षा है।

**उदाहरण:** अगर किसी ऐसे व्यक्ति की मदद करनी है जिससे हमारा झगड़ा है, तो इस आज्ञा का पालन करने से वह हमारा "भाई" बन सकता है।

□ 4. □□□□ □□□□ □□?

हआमेक दावर कहते हैं कि जानवर की पीड़ा और मालिक की आर्थिक या शारीरिक हानि को रोकना इस नियम का उद्देश्य है।

**रंबम (मैमोनिडीज) के अनुसार, यह मानव करुणा और सामुदायिक जिम्मेदारी को प्रकट करता है।**

यह पद प्रभु यीशु की "अपने पड़ोसी से प्रेम करो जैसे अपने आप से" (मरकुस 12:31) की आज्ञा को दर्शाता है।

✓2. □□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ (□□□ 10:25-37):

**व्यक्ति की मदद करें - न कि देखें कि वह मित्र है या शत्रु।**

**✓3.** □□□□ □□ □□□□:

प्रभु यीशु ने स्वयं अपने जीवन से दूसरों की सेवा करना सिखाया - उन्होंने बीमारों को चंगा किया, भूखों को खिलाया और दुखियों को सहारा दिया। यह पद भी हमें वैसे ही सेवा भाव में जीने को कहता है।

□ □□□□□□□□□ (□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□  
□□□□□□□):

”हे स्वर्गीय पिता,

हम आपके पुत्र यीशु मसीह का धन्यवाद करते हैं, जिन्होंने अपने जीवन से हमें करुणा और सेवा का उदाहरण दिया। हमें वह दृष्टि और हृदय दे, जो दूसरों की पीड़ा को देखकर चुप न बैठे। जब हमारे आस-पास कोई गिरा हो, चाहे शारीरिक रूप से या आत्मिक रूप से, हमें उनके साथ उठने और उन्हें सहारा देने का साहस दे।

प्रभ, हमें भले सामरी जैसा बना, जो बिना भेदभाव के प्रेम और सहायता करता है।

**प्रभु यीशु के नाम में,**

**आमीन।”**

---

□ □ □ □ □ □ □ □ :

**व्यवस्थाविवरण 22:4** केवल जानवर की सहायता की आज्ञा नहीं है, बल्कि यह एक जीवित नैतिक सिद्धांत है - कि हम दूसरों की परेशानी को देखकर चुप न रहें। चाहे वह हमारा भाई हो या शत्रु, हमारा कर्तव्य है कि हम उनकी मदद करें, साथ चलें, बोझ उठाएं।

यह आज्ञा पुराने नियम में भी है और नए नियम में भी - और यह आज भी हमें एक ऐसे समाज की ओर बुलाती है जहाँ प्रेम, करुणा, और सहभागिता से हम एक-दूसरे के सहायक बनें। यही मसीही जीवन का सार है।

P204 De.22:1; On that lost property must be returned to its owner

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ 22:1 – □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

**”जब तू अपने भाई का बैल वा भेड़ को भटक कर निकले हुए देखे, तब तुम अपने आप को उनसे छिपा न लेना; तुझे निश्चय उन्हें अपने भाई के पास लौटा देना होगा।”**

(व्यवस्थाविवरण 22:1, हिंदी ओवी)

□ □ □ □ □ □ □ □ □ :

यह पद हमें यह सिखाता है कि यदि तुम अपने किसी भाई (या पड़ोसी) का कोई पशु - जैसे बैल

या भेड़ - भटका हुआ या खोया हुआ देखो, तो तुम उस बात की अनदेखी नहीं कर सकते।

तुम्हें वह पशु ज़रूर लौटाना होगा।

यह एक साधारण “दयालुता” नहीं बल्कि एक आदेश है - ”तुझे निश्चय लौटाना होगा” (हिन्दू में:

תַּבְשִׁיבָה) - यानी चाहे कितनी बार भी लौटाना पड़े, तुम्हें करना ही होगा।

□ □□□□□□□ □ □ □□□□□□□□ □ □ □□□□□□:

□ "और तुम उनसे छिप न जाना" (מזהתעלמת מהו):

- राशी कहते हैं: इसका अर्थ है जैसे कोई अपनी आँखें बंद कर लेता है ताकि उसे वह वस्तु न दिखाई दे।
- Gur Aryeh समझाते हैं कि यह शारीरिक रूप से छुपना नहीं बल्कि ऐसे दिखाना है मानो तुमने देखा ही नहीं।

□ □ □ □□□ □ □ □□□□□ □ (Exemptions):

**बाबा मेतसिया (Bava Metzia)** और **सिफरी** के अनुसार:

- यदि कोई सम्मानित बुज्जुर्ग (ഭാഗ) है और उसके लिए यह कार्य करना उसकी मर्यादा के विपरीत है।
- यदि कोई याजक (Kohen) है और वह कब्रस्थान में है, जिससे उसे अशुद्धता होगी।
- यदि किसी व्यक्ति का काम बहुत अधिक महत्वपूर्ण है और यह काम छोड़ने से वह

**आर्थिक रूप से भारी नुकसान उठाएगा।**

- **Paneach Raza:** "והתעלמת מהם" का गणितीय मान (**gematria**) बताता है कि कुछ मामलों में छिपना उचित होता है।
- **Kli Yakar:** जब पशु इतना भटक गया हो कि उसे पाना असंभव हो जाए, तब छिपने की छूट मिलती है।

- **Rav Hirsch:** छिपना केवल दिखावा है, परमेश्वर इसे देखता है – हमें किसी की ज़रूरत को नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए।
- 

- "תַּעֲשֶׂה נִשְׁכָּנָה לְאַתָּה נָהָגָה" (ההשׁיב מם):

  - **बाबा मेतसिया 30b:** यदि पशु बार-बार भागता है, तो भी तुम्हें उसे हर बार लौटाना होगा।
  - **HaKtav VeHaKabalah:** "בַּשְׂנָה" का रूप बताता है कि यह एक लगातार जिम्मेदारी है।
  - **Ramban:** यदि मालिक घर पर नहीं है, तब भी पशु को सुरक्षित जगह में छोड़कर लौटाना वैध है।
  - **Malbim:** जब तक पशु को मालिक की रक्षा-सीमा (**property**) में न पहुँचा दो, कार्य पूरा नहीं हुआ।

□ "तेरे भाई" (ר'גא) का अर्थः

- Ibn Ezra: यहां "भाई" से तात्पर्य है इज़राइली समुदाय का सदस्य, पर युद्ध में भी यह नियम लागू होता है।
- Sifrei और Malbim: "तेरे शत्रु" (निर्गमन 23:4) के पद से यह सिद्ध होता है कि भले ही वह शत्रु हो, उसे सहायता करनी चाहिए।

□ □□□□□□□□□ □□□□ □ □ □□□□ □□□□□  
(□□□□□□□ □ □ □□□□□):

- Alshekh: जैसे कैदी स्त्री की स्थिति में हमें लगता है कि खोया हुआ व्यक्ति किसी योग्य नहीं, वैसे ही इस पद से समझ आता है कि हर खोए व्यक्ति को बचाया जाना चाहिए।
- Or HaChaim: "बैल" और "भेड़" उन लोगों का प्रतीक हैं जो आध्यात्मिक रूप से भटक गए हैं। "तेरा भाई" का मतलब परमेश्वर भी हो सकता है। यह मित्ज्वा सिखाता है कि हमें दूसरों को परमेश्वर के पास लौटाना है।
- Chatam Sofer: खोया हुआ पशु = एक आत्मा जो पश्चाताप से दूर हो गई हो। तुम्हारा कर्तव्य है कि तुम उसे परमेश्वर की ओर वापस लाओ।
- Tzror HaMor: यह आज्ञा दयालुता, विनम्रता और सहानुभूति को बढ़ावा देती है – जैसे तुम चाहते हो कि कोई तुम्हारी मदद करे, वैसे ही तुम्हें दूसरों की करनी चाहिए।

- **Rabbeinu Bahya:** यह प्रेम की शिक्षा है – ”अपने पड़ोसी की वस्तु से ऐसा प्रेम रखो

**जैसे वह तुम्हारी हो।”**

उन्होंने इसे दफन के नियमों से भी जोड़ा – जैसे किसी को उसकी चीज़ लौटाते हैं, वैसे ही अंतिम संस्कार में भी।

यीशु मसीह ने हमें यह सिखाया:

**”अपने पड़ोसी से वैसे ही प्रेम रखो जैसे अपने आप से।”** (लुका 10:27)

और उन्होंने "सामरी के दृष्टिंत" (Good Samaritan) में बताया कि भले ही वह शत्रु

हो, अगर वह मुसीबत में है तो उसकी मदद करना हमारा कर्तव्य है।

A horizontal row of twelve empty square boxes, used for input fields or list items, followed by a colon at the end.

- **दयालु बनो**
  - **नज़रअंदाज़ मत करो**
  - **हर खोए हुए व्यक्ति या वस्तु को वापस लाओ, चाहे जितनी बार ज़रूरत हो।**

□□□□□□□ □□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□ □□□ □□□□□ □□,  
 □□□□□ □ □ □□□ □□□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□□  
 □□□ □□□ □□□□□□□ □ □□, □□□□□ □□□ □□□□□ □□□□□  
 □□ □□□□, □□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□, □□□□  
 □□□□□ □□□□, □□ □□□□□ □□□ □□□□□□□ □□□□□□□  
 □□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□, □□□□□ □

---

### □ □□□□□□ (Conclusion):

**व्यवस्थाविवरण 22:1 केवल पशु लौटाने की आज्ञा नहीं है, बल्कि एक आजीवन नैतिक सिद्धांत है:**

- करुणा से देखो
- दयालुता से काम करो
- जिम्मेदारी से जीवन जियो

यह पद हमें सिखाता है कि हमें केवल स्वयं की नहीं, बल्कि अपने समाज और पड़ोसियों की भी चिंता करनी चाहिए। यह मित्ज्वा आज भी उतना ही प्रासंगिक है – चाहे वह खोई हुई वस्तु हो या एक खोई आत्मा।

**जो खो गया है उसे ढूँढना, लौटाना, और प्रेम से अपनाना – यही परमेश्वर का**

**हृदय है।**

अगर चाहो तो मैं इसका चार्ट, छोटा सारांश या बच्चों के लिए रूपांतरण भी बना सकता हूँ।

P205 Le.19:17 On being required to reprove the sinner

### बाइबल पद (व्यवस्थाविवरण 19:17) हिंदी में:

**"तब वे दोनों पुरुष जिनके बीच मुकदमा है, यहोवा के समुख और उस समय**

**के याजकों और न्यायियों के सामने खड़े किए जाएं।"**

(व्यवस्थाविवरण 19:17 - Hindi Bible:ERV)

### हिंदी में सरल व्याख्या:

यह पद एक न्यायिक प्रक्रिया का वर्णन करता है। जब दो लोगों के बीच कोई विवाद होता है,

तो उन्हें ईश्वर (यहोवा) के सामने, अर्थात् न्याय के प्रतिनिधियों - याजकों और न्यायियों - के सामने खड़ा किया जाना चाहिए।

यह बताता है कि न्याय एक पवित्र और ईश्वरीय कार्य है, और जो लोग न्याय के लिए आते हैं, उन्हें यह मानकर आना चाहिए कि वे सिर्फ इंसानों के सामने नहीं, स्वयं परमेश्वर के सामने खड़े हैं। यह उन्हें ईमानदारी और सत्यता से बोलने की प्रेरणा देता है।

### रबियों की व्याख्याएँ और उनके उदाहरणों सहित विवेचन:

1. “दो पुरुष” - गवाह या पक्षकार?

- राशी, गुर आर्य और मिजराची □□ □□□□□ □□ "□□ □□□□" □□□□

(witnesses) □□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□  
□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□, □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□  
□□□□□ □□□

□ उदाहरणः यदि कोई गवाह झूठ बोलता है, और दो अन्य पुरुष उसे झूठा प्रमाणित करते हैं, तो यह पद उन दो पुरुषों की बात करता है।

- बेखोर शोर, टोरा तेमीमा, और हक्तव वेहकबाला के अनुसार ये "दो पुरुष" वे वास्तविक पक्षकार हैं जिनके बीच विवाद है। ये दोनों व्यक्ति खड़े रहकर न्यायालय में अपना पक्ष रखते हैं।

#### 2. "खड़े किए जाएं" - क्यों खड़े होना अनिवार्य है?

- न्यायालय में खड़े होना, सम्मान और निष्पक्षता को दर्शाता है।
- टोरा तेमीमा □□ □□□□□, □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□  
□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□ □ □□□  
□ उदाहरणः अगर एक पक्ष बैठा हो और दूसरा खड़ा, तो न्याय में असमानता का संकेत होता है।

#### 3. "यहोवा के समुख" - यह क्यों कहा गया?

- राशी कहते हैं कि यह व्यक्ति को यह याद दिलाता है कि वह इंसानों के नहीं, ईश्वर के सामने खड़ा है, जो अंतःकरण जानता है।
- राव हिर्श के अनुसार, यह विश्वास दिलाता है कि पूरी न्यायिक प्रक्रिया परमेश्वर की निगरानी में है, और जो निर्णय होता है वह ईश्वरीय कानून के अनुसार होना चाहिए।

#### 4. "उस समय के याजकों और न्यायियों" - इस बात का क्या अर्थ है?

- राशी कहते हैं कि इसका अर्थ है कि भले ही वर्तमान के न्यायी पुराने न्यायियों जितने

**योग्य न हों, फिर भी उनकी आज्ञा मानना अनिवार्य है।**

□ उदाहरणः यिप्ताह अपने समय का न्यायी था, पर शमूएल की तरह नहीं; फिर भी उसकी आज्ञा वैध मानी गई।

- रब्बी बह्ये के अनुसार यह बताता है कि यह नियम स्थानीय अदालतों पर भी लागू होता है, न कि सिर्फ यरुशलम की सैनहेड्रिन पर।

## स्त्रियाँ गवाह क्यों नहीं बन सकतीं?

- गिनती "दो पुरुष" से यह संकेत मिलता है कि स्त्रियाँ आमतौर पर न्यायिक गवाह नहीं बन सकतीं।
- परंतु बिर्कत अषेर ने कई उदाहरण दिए हैं जहाँ स्त्रियों की गवाही स्वीकार की जाती है:
  - जब विषय स्त्रियों के कार्यक्षेत्र का हो (जैसे तिथियों की पुष्टि)।
  - यदि पति की मृत्यु का प्रमाण देना हो।
  - पति-पत्नी के बीच के मामलों में।
  - जब कोई अन्य गवाह उपलब्ध न हो, और स्त्री के पास विशेष जानकारी हो।
- यह निष्कर्ष निकलता है कि महिला की गवाही पूरी तरह निष्क्रिय नहीं है, बल्कि वह विशेष परिस्थितियों में मान्य होती है।

## मसीही दृष्टिकोण में इसका अर्थ और उपयोगः

- यद्यपि यह पद विशेष रूप से यहां न्याय व्यवस्था का है, इसका आत्मिक सन्देश

**मसीही विश्वास में भी बहुत महत्वपूर्ण हैः**

- **प्रभु यीशु मसीह ने कहा, "न्याय, दया और विश्वास" ये तीन बातें सबसे अधिक**

**महत्वपूर्ण हैं (मत्ती 23:23)।**

- **न्याय करते समय हम भी "ईश्वर के सामने" खड़े हैं, और हमें सत्य, प्रेम और**

**निष्पक्षता के साथ निर्णय करना चाहिए।**

□ **उदाहरणः** जब प्रभु यीशु ने उस स्त्री को क्षमा किया जिसे व्यभिचार करते पकड़ा

**गया था (यूहन्ना 8), उन्होंने दिखाया कि न्याय में सिर्फ कानून ही नहीं, दया और**

**अंतःकरण की भी भूमिका होती है।**

## प्रार्थना (प्रभु यीशु मसीह से प्रेरितः)

**हे हमारे न्यायी परमेश्वर,**

**हम प्रार्थना करते हैं कि जैसे प्रभु यीशु मसीह ने न्याय और दया दोनों को संतुलित**

**किया, वैसे ही हमें भी सत्य बोलने का साहस, और न्याय करने में निष्पक्षता दे।**

**जब भी हम किसी विवाद या निर्णय की स्थिति में हों, तो हमें यह एहसास हो कि**

**हम तेरे सामने खड़े हैं, न कि केवल मनुष्यों के सामने।**

**प्रभु, हमें अपने जीवन में ऐसे निर्णय लेने दे जो तेरे राज्य को प्रतिबिंबित करें -**

**दयालु, सत्यनिष्ठ और धार्मिक।**

**प्रभु यीशु के नाम में, आमीन।**

---

### **निष्कर्षः**

**व्यवस्थाविवरण 19:17** एक अत्यंत गूढ़ और नैतिक दृष्टि से समृद्ध पद है। यह न्यायिक प्रक्रिया को पवित्र मानते हुए न्याय करने वालों और गवाही देने वालों से सच्चाई और ईश्वर-भय की अपेक्षा करता है। यह हमें यह भी सिखाता है कि हमारे समय के नेतृत्व का सम्मान करना चाहिए, भले वे पहले जैसे न हों। यह मसीही परिप्रेक्ष्य में भी न्याय, दया, और सत्यनिष्ठा के मूलभूत सिद्धांतों को पुष्ट करता है।

यदि आप चाहें तो मैं इसी पर आधारित एक छोटा नाट्य रूपांतरण या बाइबिल स्टडी गाइड भी तैयार कर सकता हूँ।

P206 Le.19:18 On love your neighbor as yourself

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

### **लेवियों 19:18 (Leviticus 19:18):**

"तू पलटा लेने या अपने जाति भाई से बैर रखने न देना; और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना; मैं यहोवा हूँ।"

(Leviticus 19:18, Hindi Bible)

---

□ □□□□□ □□□ □□□□ □ □ □□□□□□□:

इस पद का सीधा अर्थ है कि जैसे हम अपने लिए भलाई, सुरक्षा, सुख और सम्मान चाहते हैं,

वैसे ही हम अपने पड़ोसी (या साथी मानव) के लिए भी वैसी ही भावना और व्यवहार रखें।

यह आज्ञा केवल भावना की बात नहीं करती, बल्कि प्रभावी प्रेम – यानी व्यवहारिक करुणा,

दया और न्याय – की बात करती है।

---

□ □□□□□□□ □ □ □□□□□□□ □ □ □□□□ (□□□□ □□□□□□  
□ □):

✓ इसीलिए इसीलिए (Rabbi Akiva):

उन्होंने कहा –

"□ □ □ □ □ □ □ □ □ (□□□□□□) □ □ □ □  
□ □ □ □ □ □ □ □" □

□ यानी, यदि कोई इस एक सिद्धांत का पालन करता है, तो वह अन्य नैतिक  
आदेशों का भी पालन कर लेता है।

---

✓ इसीलिए इसीलिए (Hillel the Elder):

जब एक गैर-यहूदी ने उनसे कहा कि वह एक पैर पर खड़े होकर तोराह सीखना चाहता है, तो  
हिलेल ने उत्तर दिया:

"जो तुझको बुरा लगे, वह अपने पड़ोसी के साथ मत कर; यही पूरी तोराह है,

**बाकी सब उसकी व्याख्या है।"**

यह “नकारात्मक स्वर्ण नियम” है – किसी को वही न करना, जो हम अपने लिए न चाहते हों।

---

✓ राम्बान (राम्बान राम्बान - Ramban):

राम्बान ने माना कि ”अपने समान” प्रेम करना स्वाभाविक रूप से असंभव हो सकता है, लेकिन इसका मतलब है –

”जैसा हम अपने लिए हर भलाई चाहते हैं, वैसा ही हम दूसरों के लिए भी निष्कलंक रूप से चाहें।”

उदाहरण: योन्हातान और दाऊद – योन्हातान ने दाऊद के लिए वह सब चाहा, जो अपने लिए होता।

---

✓ बेन अज्जाई (Ben Azzai):

उन्होंने कहा:

”उत्पत्ति 5:1 – ‘यह है मनुष्य की वंशावली की पुस्तक’ – इससे भी बड़ा सिद्धांत है।”

क्योंकि इससे यह बात स्पष्ट होती है कि हम सब ईश्वर की समान सृष्टि हैं –

इसलिए प्रेम और समानता हमारी प्रकृति का हिस्सा होना चाहिए।

---

✓ हामेक दावर (Haamek Davar):

उन्होंने एक सुंदर उदाहरण दिया –

**"यदि एक हाथ मांस काटते समय दूसरे हाथ को गलती से काट दे, तो क्या पहला**

**हाथ दूसरे पर गुस्सा करेगा?"**

**इसी तरह, दूसरों को नुकसान पहुँचाना खुद को ही चोट पहुँचाना है।**

---

✓ ☐ ☐ ☐ ☐ (Rav Hirsch):

उन्होंने कहा:

**"यह वचन सामाजिक व्यवहार के हर कार्य, विचार और वाणी के लिए अंतिम**

**सारांश है।"**

---

□ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐ :

□ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐ (Matthew 22:37–40):

जब प्रभु यीशु से पूछा गया कि सबसे बड़ा आदेश क्या है, उन्होंने कहा:

**"तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन, और सारे प्राण, और सारी बुद्धि से प्रेम**

**रख। यह बड़ा और पहला आज्ञा है। और दूसरी भी वैसी ही है – 'तू अपने पड़ोसी**

**से अपने समान प्रेम रख।"**

□ प्रभु यीशु ने इसे संपूर्ण व्यवस्था और भविष्यवाणी का सार कहा।

---

□ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐ :

1. नीति और नैतिकता की नींव — हर विश्वासयोग्य मसीही को दूसरों के साथ प्रेम, दया

**और न्याय का व्यवहार करना सिखाया जाता है।**

## 2. दुर्मनों से प्रेम (Matthew 5:44):

**प्रभु यीशु ने कहा:**

"**अपने विरोधियों को अपने लिए प्रार्थना की जाना चाहिए।**  
**वे आपको बुलाकर बदलना चाहते हैं, लेकिन वे आपको बदलना चाहते हैं,**  
**जब तक वे आपको बदलना चाहते हैं, तब वे आपको बदलना चाहते हैं।**

## 3. ईश्वर से प्रेम का प्रमाण:

**जब हम दूसरों से प्रेम करते हैं, हम उस प्रेम को दिखाते हैं जो हमें ईश्वर से मिला है।**

**(1 यूहन्ना 4:20)**

---

अपने दूसरों को :

**हे प्रेममय परमपिता,**

**आप जिसने हमें अपने स्वरूप में रचा, और अपने पुत्र यीशु मसीह के माध्यम से हमें**

**प्रेम का परिपूर्ण उदाहरण दिखाया -**

**हम स्वीकार करते हैं कि हम अक्सर अपने पड़ोसियों से वैसा प्रेम नहीं कर पाते,**

**जैसा आप चाहते हैं।**

**हमें अपने भीतर से स्वार्थ, धृणा और उदासीनता को हटाने में सहायता कर।**

**आप हमें पवित्र आत्मा से भर दे, कि हम आपकी दृष्टि से लोगों को देखें -**

**प्रेमपूर्वक, दयालुता से, और निस्वार्थ सेवा के साथ।**

**जैसे प्रभु यीशु ने क्रूस पर अपने विरोधियों के लिए प्रार्थना की -**

**”हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं”,**

**वैसा ही प्रेम हमारे हृदयों में भी भर दे।**

**हम आपके पुत्र यीशु मसीह के नाम से प्रार्थना करते हैं।**

**आमीन।**

---

□ □ □ □ □ □ □ □ (Conclusion in Hindi):

**”तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख”** – यह केवल एक नैतिक आदेश नहीं, बल्कि ईश्वर की इच्छा का सार है –

कि हम अपने जीवन को दूसरों की भलाई, न्याय, करुणा और सेवा के लिए समर्पित करें।

यह प्रेम कोई भावुकता नहीं, बल्कि एक दृढ़ संकल्प है – कि हम हर मनुष्य के साथ वैसा ही व्यवहार करें, जैसा हम अपने लिए चाहते हैं। यह आदेश हमें हमारे स्वार्थ से बाहर निकालकर सामूहिक दया, भाईचारे और न्याय की ओर ले जाता है।

---

अगर आप चाहें तो हम इस विषय पर एक बाइबल अध्ययन श्रृंखला, या प्रचार संदेश, या PowerPoint प्रस्तुति भी तैयार कर सकते हैं। क्या आप उसमें रुचि रखते हैं?

## व्यवस्थाविवरण 10:19

“तुम परदेशी से प्रेम रखना, क्योंकि तुम भी मिस्र देश में परदेशी थे।”

❖ □□□□□ □□□ □□□□□□□ (Explanation in Hindi):

यह पद परमेश्वर द्वारा इस्लाएलियों को दिया गया एक महान नैतिक आदेश है – परदेशी (अजनबी, प्रवासी, गैर-स्थानीय व्यक्ति) से प्रेम रखना। कारण भी सीधा है – “क्योंकि तुम भी मिस्र में परदेशी थे।”

इसका संदेश है कि:

“जैसे तुमने परदेश में दमन और तिरस्कार झोला, वैसे तुम अपने देश में किसी दूसरे के साथ मत करो। उसकी मदद करो, उसका आदर करो और उससे प्रेम करो।”

यह आदेश केवल सहानुभूति नहीं, प्रेम (הבהא - Ahavah) का आदेश है। यह एक सक्रिय प्रेम है – ऐसा जो स्वागत करे, सुरक्षा दे, और गरिमा प्रदान करे।

□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□

□□□□□□

□ 1. □□□ (Rashi):

- जब तुम स्वयं मिस्र में परदेशी थे, तो तुम्हें शर्मिंदगी या तिरस्कार मिला। इसलिए किसी को उस कमी के लिए मत कोसो जो कभी तुम्हारे अंदर भी थी।

- **उदाहरण:** यदि कोई प्रवासी भाषा या संस्कृति नहीं जानता, तो उसका मज़ाक मत

उड़ाओ – क्योंकि तुम भी कभी वैसे ही थे।

---

## □ 2. गुर अरेह (Gur Aryeh):

- “परदेशी से प्रेम रखो” इसलिए नहीं कि वह परदेशी है, बल्कि इसलिए कि तुम उसे नीचा मत समझो, क्योंकि तुममें भी वही “निशान” है।
  - यह आदेश धृणा से रोकने के लिए है, प्रेम करने का कारण नहीं है, लेकिन वह प्रेम धृणा का इलाज है।
- 

## □ 3. हामेक दावर (Haamek Davar):

- यह आदेश उन लोगों के लिए है जो स्वयं को श्रेष्ठ समझते हैं (धनी, अधिकारी) – उन्हें याद दिलाया जाता है कि परमेश्वर ने तुम्हें भी तब अपनाया जब तुम परदेशी थे।

- अंतरः

- **व्यवस्थाविवरण 10:19** – विचार और भावना में प्रेम।
  - **लैंव्यवस्था 19:34** – व्यवहार और कार्य में प्रेम।
-

□ 4. मल्बिम (Malbim):

- जैसे परमेश्वर ने परदेशियों (इस्राएलियों) से दया की, वैसे ही तुम भी दूसरे परदेशियों से प्रेम रखो – यह ईश्वर का चरित्र अपनाना है।
- 

□ 5. मस्किल लेडाविड (Maskil LeDavid):

- यदि परदेशी कभी बोझ जैसा लगे, तो भी उसे प्रेम करो, क्योंकि जब तुम मिस्र में थे तब तुम भी शायद मिस्रियों के लिए बोझ ही थे।
  - यह आदेश ”प्रेम में सहने“ का है, केवल सहानुभूति का नहीं।
- 

□ 6. मिश्राची (Mizrachi):

- यह चेतावनी है कि परदेशी का अपमान मत करो, नहीं तो वह कह सकता है, ”तुम भी तो कभी परदेशी थे।“
  - यह मानव गरिमा की रक्षाका सिद्धांत है।
- 

□ 7. राल्बग (Ralbag):

- परदेशी का कोई सहारा नहीं होता, इसलिए उसे प्रेम देना उसका सामाजिक संरक्षण है।

□ 8. राव हिर्श (Rav Hirsch):

- परदेशी से प्रेम रखना यह दर्शाता है कि तुम्हारी सभ्यता मानवता की गहराई को पहचानती है – जाति, भाषा, संपत्ति नहीं, बल्कि आत्मा का मूल्य।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ चर्चा (Christian Perspective):

प्रभु यीशु मसीह ने परदेशी, ग़ारीब, और अनाथ के लिए विशेष प्रेम और चिंता दिखाई।

□ मत्ती 25:35-40 में यीशु कहता है:

”मैं परदेशी था और तुम ने मुझे अपने घर में आने दिया... जब तुम ने इन सबसे छोटे भाइयों में से किसी के लिए यह किया, तो मेरे ही लिए किया।”

यह स्पष्ट करता है कि मसीही दृष्टिकोण में ‘परदेशी से प्रेम’ करना सीधे यीशु से प्रेम करने के समान है।

आज चर्चा में:

शरणार्थियों की सेवा

प्रवासी समुदायों का स्वागत

आप्रवासियों की सहायता

– इन सब में यह पद जीवंत होता है।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ - □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ :

"हे हमारे प्रेमी स्वर्गीय पिता,

आपने हमें परदेश में भी अपनाया,

और अपने पुत्र यीशु मसीह में हमें घर दिया।

जैसे आपने हमसे प्रेम किया जब हम अनजान थे,

वैसे ही हम भी परदेशी, अजनबी, और बाहरी लोगों से प्रेम करें।

हमें ऐसा हृदय दे जो दूसरों को अपनाएँ,

ऐसी दृष्टि दे जो हर व्यक्ति में तेरी छवि देखे।

जब हम घमंड या डर से दूसरों को ठुकराने लगें,

तो हमें याद दिला कि हम भी परदेशी थे।

प्रभु यीशु मसीह के नाम में यह प्रार्थना करते हैं।

आमेन।"

□ □ □ □ □ □ □ (Conclusion):

व्यवस्थाविवरण 10:19 केवल अजनबियों के लिए सहानुभूति की बात नहीं करता, बल्कि

सक्रिय प्रेम की आज्ञा देता है।

रब्बियों की व्याख्याओं से स्पष्ट होता है कि यह आदेश समाज में न्याय, करुणा, और आत्म-  
चिंतन को उत्पन्न करता है।

**प्रभु यीशु मसीह ने इस आदेश को अपने जीवन और शिक्षा के माध्यम से पूर्ण किया।**

आज भी, जब हम प्रवासियों, हाशिए पर खड़े लोगों या अनजानों से प्रेम करते हैं, हम उस ईश्वर की छवि को अपनाते हैं जो प्रेम और दया का स्रोत है।

---

P208 Le.19:36 On the law of accurate weights and measures

---

□ □□□□ □ □ □□□□ □□□ (Leviticus 19:36):

**”तुम्हारे पास ठीक तराजू, ठीक बाट, ठीक एपा और ठीक हिन होनी चाहिए। मैं तुम्हारा यहोवा परमेश्वर हूँ, जो तुम्हें मिस्र देश से निकाल लाया।”**

— लैव्यवस्था 19:36

---

□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□□□:

**यह पद हमें ईमानदारी और न्याय की शिक्षा देता है – खासकर ब्यापार और लेन-देन में।**

”ठीक तराजू, बाट, एपा और हिन” – ये सब नापने और तौलने के साधन थे:

- **तराजू (Balances)** – वजन करने का यंत्र
- **बाट (Weights)** – वजन तय करने वाले पत्थर
- **एपा (Ephah)** – सूखी वस्तुओं का नाप (जैसे गेहूँ)
- **हिन (Hin)** – द्रव पदार्थों का नाप (जैसे तेल या दाखरस)

**इसका संदेश है: ईमानदार रहो, चाहे लेन-देन बड़ा हो या छोटा।**

फिर अंत में याद दिलाया गया है: "मैं वही परमेश्वर हूँ जिसने तुम्हें मिस्र से छुड़ाया", ताकि हम समझें कि जैसा परमेश्वर ने हमारे साथ न्याय और कृपा की, वैसे ही हमें भी दूसरों के साथ करना चाहिए।

---

□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□:

### 1. राशी (Rashi):

- परमेश्वर ने मिस्र में पहला जन्म लेने वालों और बाकी में भेद किया – यह दिखाने को कि वो छुपी बातों को भी देखता है।
- □□□ □□□ □□□ □□ □□□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□,
- □□□ □□ □□□□□ □□
- **उदाहरणः** व्यापारी जो हल्के बाट से ज्यादा पैसा लेता है, लेकिन सोचता है कि कोई नहीं देख रहा – परमेश्वर जरूर देखता है।

### 2. मालबीम (Malbim):

- यह आदेश व्यक्ति और समाज दोनों पर लागू होता है।
- स्थानीय न्यायालयों और प्रशासकों को देख-रेख करनी चाहिए कि कोई धोखा न दे।

### 3. हाचाम सोफेर (Chatam Sofer):

- "ठीक तराजू" का अर्थ केवल मरीन नहीं, बल्कि जीवन में संतुलन और सत्य

**भी है।**

- हर "हाँ" सच्ची होनी चाहिए, और "ना" भी सच्ची।

#### 4. तोसेफुता और तोराह तेमीमा:

- मिस्र से निकलने की शर्त थी – कि तुम मेरे सिद्धांतों का पालन करोगे।
  - यदि कोई बाट में बेर्इमानी करता है, तो वो परमेश्वर के उद्धार को अस्वीकार करता है।

#### 5. Siftei Chakhamim और रिवायातें

- कुछ लोग बाटों को नमक में डुबोते थे ताकि उनका वजन बदल जाए - यह छुपा हुआ पाप है, लेकिन परमेश्वर इसे देखता है।

A horizontal sequence of 20 empty rectangular boxes arranged in a single row.

हालाँकि यह पद सीधे मसीही धर्मशास्त्र में बहुत चर्चित नहीं है, परन्तु इसका सार अत्यंत महत्वपूर्ण है।

- प्रभ यीश मसीह ने बार-बार सत्य, ज्ञाय और ईमानदारी पर बल दिया।

- मत्ती 23:23 में कहा: "तुमने न्याय, दया और विश्वास की बातों को छोड़ दिया" –  
यही लैव्यवस्था 19:36 की आत्मा है।

- चर्च आज इस पद को व्यक्तिगत ईमानदारी, व्यापार में नैतिकता, और पारदर्शिता का आधार मानता है।
  - यह पद प्रेरित पौलुस की बातों से भी मेल खाता है जैसे:

”हे परमेश्वर, आप जो सत्य और न्याय का स्रोत हैं,

**जैसे आपने हमें मिस्र की दासता से छुड़ाया,**

**वैसे ही हमें पाप और कपट से भी मुक्त कर।**

## प्रभु यीशु मसीह की तरह,

## हम सच्चाई से जियें,

**हमारे मापदंड और बोल दोनों निर्दोष हैं।**

**हमारे व्यापार, हमारे विचार, हमारे शब्द – सब तुझसे भय रखने वाले हैं।**

**हमें ऐसा दिल दे, जो न केवल सही बाट रखे,**

**बल्कि दूसरों के लिए भी न्याय की बाट रखें।**

प्रभु यीशु के नाम में मांगते हैं - आमीन।”

□ □ □ □ □ □ □ □ □ (Conclusion in Hindi):

**लैब्यरस्था 19:36** केवल व्यावसायिक नियम नहीं है – यह एक गहरी नैतिक शिक्षण है।

परमेश्वर हमें याद दिलाता है कि वो केवल आराधना के समय नहीं, बल्कि हमारे व्यापार,

**व्यवहार, और बोलचाल में भी उपस्थित है।**

रब्बियों ने इसे केवल शारीरिक बाटों तक सीमित नहीं रखा, बल्कि मन के न्याय और वचन की सच्चाई तक विस्तृत किया।

प्रभु यीशु मसीह ने भी यही सिखाया – ”तुम्हारा हाँ हाँ हो, और ना ना”।

आज के युग में, जहां धोखा और कपट आम बात है, यह पद हमें धर्म, सत्य और न्याय के मार्ग पर चलने को पुकारता है।

---

## FAMILY

P209 Le.19:32 On honoring the old (and wise)

---

□ □□□□ □□ (□□□□□ □□□):

**लैब्यव्यवस्था 19:32**

”तू पके बालों वाले के सामने उठ खड़ा हो, और पुराने पुरुष के सम्मुख आदर कर; और अपने परमेश्वर का भय मानः मैं यहोवा हूँ।”

---

□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□

□□□□:

यह पद हमें बुजुर्गों और ज्ञानी लोगों का आदर करने की शिक्षा देता है।

- "पके बालों वाले" (הַבָּשָׂר – शहवा): उप्रदराज व्यक्ति - चाहे वो ज्ञानी हों या न हों।
- "बुज़ुर्ग" (בָּגָר – ज़ाका): ऐसे लोग जो ज्ञान, अनुभव या विशेष रूप से धार्मिक शिक्षा में परिपक्व हैं।
- "उठ खड़ा हो": सिर्फ शारीरिक खड़े होना नहीं, बल्कि आदर और सम्मान का भाव दिखाना।
- "और अपने परमेश्वर का भय मान": यह दिखाता है कि बुज़ुर्गों का आदर सिर्फ सामाजिक शिष्टाचार नहीं, बल्कि आध्यात्मिक आज्ञा है – परमेश्वर की आराधना से जुड़ा।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ (Hebrew Tradition):

□ □ "शहवा" – उप्रदराज व्यक्ति का सम्मान:

रबी ईसी बेन यहूदा: कहते हैं कि "शहवा" का मतलब है कोई भी बुज़ुर्ग — चाहे ज्ञानी हो या न हो।

रबी योखानान: गैर-यहूदी बुज़ुर्गों के लिए भी खड़े होते थे – यह दिखाता है कि उप्र का आदर वैश्विक नैतिक मूल्य है।

इब्र एज्ञा: कहते हैं कि बुज़ुर्ग मृत्यु के निकट होते हैं, इसलिए उनका आदर स्वाभाविक है।

□ □ "बगा" – ज्ञानी या धार्मिक बुज़ुर्ग का आदर:

- रशी और रब्बी योसी गलीली: ज़ाकेन वह है जो "होकमा" (ज्ञान) प्राप्त कर चुका हो।
- रब्बी बाख्या: "יָתָא" एक संज्ञा है: "הַמְּנֻחָה שֶׁקְרֹבָה" – जो ज्ञान में परिपक्व हो।
- स्फोर्नो: "הַבִּשְׁעָן" अनुभव का आदर है, और "יָתָא" धार्मिक विद्या और चरित्र का।

□ "תְּרַדְּדָה" (आदर करना) और "מִזְמָה" (उठ खड़ा

होना):

टोरा तेमीमा और रशी: केवल खड़े होना ही नहीं, बल्कि उनके स्थान पर न बैठना, उनकी

बात न काटना, सम्मान से पेश आना शामिल है।

□ "תְּרַדְּדָה תְּרַדְּדָה תְּרַדְּדָה תְּרַדְּדָה":

रशी: क्योंकि आदर दिखाना बाहरी कार्य है, लेकिन परमेश्वर अंतर्मन को जानता है।

टोरा तेमीमा: यदि कोई जानबूझकर न देखने का बहाना करता है, तो यह परमेश्वर के भय

का उल्लंघन है।

❖ त्रद्ददददद:

- रब्बी योखानान का गैर-यहूदी बुजुर्गों के लिए खड़ा होना - यह सार्वभौमिक आदर की मिसाल है।
- टोरा स्कॉलर का आदर करना और टोरा स्कॉल के लिए खड़ा होना - ज्ञान और पवित्रता का आदर।

□ आज के मसीही चर्च में इसका महत्व:

हालाँकि मसीही धर्मशास्त्र यहूदी हलाकहा से भिन्न है, फिर भी यह सिद्धांत सम्मान, करुणा

और आदर के रूप में मसीही विश्वास का हिस्सा है:

- **1 तीमुथियुस 5:1-2:** "बुजुर्ग को कठोरता से न डाँटो, परन्तु पिता के समान समझा-  
बुझाकर कहो।"
- **याकूब 3:17:** "जो ऊपर से आने वाला ज्ञान है वह शान्तिपूर्ण, कोमल, और आज्ञाकारी  
होता है।"

**मसीही परंपरा में यह सिखाया जाता है कि हर व्यक्ति में परमेश्वर की छवि है, विशेषकर वे**  
**जिन्होंने जीवन में अधिक अनुभव, कष्ट और विश्वास में बढ़ोतरी पाई है।**

□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□□

□□□□□□□□:

"हे प्रभु यीशु मसीह, आपने अपने जीवन में सबका आदर किया – छोटे-बड़े,

गरीब-अमीर, विद्वान और अज्ञानी सभी से प्रेम किया। मुझे भी ऐसा ही नम्र

हृदय दे कि मैं बुजुर्ग, अपने से ज्ञानी और अनुभवी लोगों का आदर करूँ। जब

मुझे सम्मान करने का अवसर मिले, तो मैं सिर्फ दिखावा न करूँ, बल्कि अपने

हृदय से आदर करूँ, क्योंकि आप मेरे हृदय को जानते हैं। आपका भय और

आपके वचन का सम्मान मेरे जीवन का आधार बने। प्रभु यीशु मसीह की नाम

में आमेन।"

□ □□□□□□ (Conclusion in Hindi):

"शिवा" (उप्रदराज) और "ज्ञाकेन" (ज्ञानी बुज्जुर्ग) दोनों का आदर करना केवल सामाजिक मर्यादा नहीं, बल्कि ईश्वरीय आज्ञा है। यह पद हमें सिखाता है कि जैसे-जैसे कोई उम्र में या ज्ञान में बढ़ता है, हम उनके अनुभव, शिक्षा, और जीवन-यात्रा का सम्पादन करें। यह सम्पादन परमेश्वर के भय से जुड़ा है – हम दूसरों में परमेश्वर की छवि देखें, और उसी दृष्टिकोण से उन्हें आदर दें।

P210 Ex.20:12 On honoring parents

□ □□□□□ □□ (□□□□□ □□□)

**निर्गमन 20:12**

"अपने पिता और अपनी माता का आदर करना, ताकि तेरा जीवन उस देश में लंबा हो, जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देगा।"

(Exodus 20:12, Hindi Bible -ERV)

□ □□□□□ □□□ □□□□□□□

यह आज्ञा दस आज्ञाओं में से पाँचवीं है और वह भी उस खंड में आती है जो परमेश्वर और मनुष्य के रिश्ते से संबंधित मानी जाती है। इसका यह अर्थ है कि माता-पिता का आदर करना सिर्फ सामाजिक नहीं बल्कि आत्मिक आदेश भी है, क्योंकि वे परमेश्वर के सहभागी हैं हमारे जीवन को इस धरती पर लाने में।

- यह आज्ञा सिर्फ बाल अवस्था में पालन करने के लिए नहीं है, बल्कि जीवनभर की जिम्मेदारी है, खासकर जब माता-पिता वृद्ध हो जाते हैं।
  - इस आज्ञा के साथ प्रत्यक्ष रूप से एक वादा जुड़ा हुआ है—”तू लंबे समय तक जीवित रहेगा”, अर्थात् जीवन में स्थायित्व, शांति और आशीष।
- 

## □ रब्बियों की शिक्षाएँ (हिंदी में व्याख्या और उदाहरणों सहित)

### 1. रब्बी रब्बेनु बाह्या (Rabbeinu Bahya):

- माता-पिता को आदर देना ऐसे है जैसे परमेश्वर का आदर करना, क्योंकि वे उसकी सृष्टि में सहभागी हैं।
- जैसे हम स्वर्गीय पिता का आदर करते हैं, वैसे ही हमें अपने पार्थिव माता-पिता का भी करना चाहिए।

### 2. अबर्बनेल (Abarbanel):

- माता-पिता का आदर देना मनुष्य और परमेश्वर के बीच की आज्ञाओं के स्तर पर आता है, क्योंकि वह परंपरा और विश्वास की नींव रखते हैं।

### 3. क्ली याकर (Kli Yakar):

- मनुष्य के तीन निर्माता होते हैं: परमेश्वर, पिता और माता। शरीर माता-पिता से और आत्मा परमेश्वर से आती है। इसलिए, इन तीनों का समान आदर आवश्यक है।

#### 4. टोराह तेमीमा (Torah Temimah):

- माता-पिता का आदर करना केवल शब्दों से नहीं, व्यवहारिक रूप से उनकी सेवा करने से होता है—भोजन देना, कपड़े देना, देखभाल करना, ज़रूरतों में मदद करना।

□ **उदाहरण:** यदि एक वृद्ध माँ चल नहीं सकती और बेटे को बार-बार मदद के लिए बुलाती है, तो उसका क्रोधित होना गलत है। आदर का अर्थ है धैर्य, प्रेम और सेवा से माता-पिता की सहायता करना।

#### 5. रशी (Rashi):

- यदि कोई माता-पिता की आज्ञा के विरुद्ध परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करे, तो यह गलत है। माता-पिता का आदर परमेश्वर की आज्ञा तक सीमित होना चाहिए—  
“परमेश्वर की आज्ञा सर्वोपरि है।”

#### □ आज के मसीही चर्च में इसका महत्व

□ □□□□□□ □□□ □□□□□□:

- इफिसियों 6:1-3 — “हे बालकों, अपने माता-पिता की आज्ञा में प्रभु में रहकर चलो,

क्योंकि यह उचित है। 'अपने पिता और अपनी माता का आदर कर'-यह पहली आज्ञा है

जिसमें प्रतिज्ञा भी है—कि तेरा भला हो और तू पृथ्वी पर दीर्घायु हो।"

□ □□□□ □□□□□□□:

- माता-पिता का आदर करना मसीहियों के लिए एक आत्मिक अभ्यास है।
- यह केवल पालन-पोषण का बदला नहीं, बल्कि परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता का प्रतीक है।
- चर्च में यह शिक्षा दी जाती है कि जैसे प्रभु यीशु ने पृथ्वी पर अपने माता मरियम और यूसुफ का आदर किया, वैसे ही हमें भी करना चाहिए।

□ **उदाहरणः** यीशु ने क्रूस पर मरते समय भी अपनी माँ की देखभाल की—यूहन्ना 19:26-27 में

उसने अपने शिष्य यूहन्ना से कहा, "यह तेरी माता है।" यह माता के लिए प्रेम और चिंता का परम आदर्श है।

□ □□□□ □□□□ □□□□ □□

□□□□ □□ □□□□□□

□□□□□□□□

"प्रभु यीशु, आपने अपने जीवन में अपने माता-पिता का आदर किया, और

क्रूस पर भी अपनी माता का ख्याल रखा। मुझे भी वही हृदय दे, जिससे मैं

अपने माता-पिता से प्रेम करूँ, उन्हें आदर दूँ, और उनकी सेवा करूँ। जब वे

कमज़ोर हों, तब मैं उनका सहारा बनूं। मुझे धैर्य, प्रेम, और नम्रता दे ताकि मैं

तेरी आज्ञा पूरी कर सकूं। मेरे हृदय को किसी भी कटूता या अशांति से दूर

रख, और मेरी वाणी से तुझे आदर मिले जैसा मैंने अपने माता-पिता को

आदर दिया हो। प्रभु यीशु मसीह के नाम से माँगता हूँ। आमीन।”

□ □□□□□□ (□□□□□□):

- माता-पिता का आदर करना सिर्फ एक सामाजिक नियम नहीं, आध्यात्मिक दायित्व है, जिसे यहूदी और मसीही दोनों परंपराओं में अत्यंत महत्व दिया गया है।
- यह आज्ञा पृथ्वी पर दीर्घायु और समृद्ध जीवन के वादे के साथ आती है।
- रबियों ने इसे परमेश्वर की आज्ञा के समान माना है, और कहा कि इसका पालन हर अवस्था में होना चाहिए, सिवाय तब जब यह परमेश्वर की आज्ञा के विरुद्ध हो।
- मसीही चर्च में भी यह आज्ञा आज प्रासंगिक है, और माता-पिता के प्रति सम्मान और सेवा को ईश्वरीय आज्ञाकारिता माना जाता है।
- प्रभु यीशु मसीह ने अपने जीवन में इस आज्ञा का उत्तम पालन कर हमें उदाहरण दिया।

□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□ (□□□□□□ 19:3):

**"तब मूसा परमेश्वर के पास पर्वत पर चढ़ा, और यहोवा ने उसको पर्वत पर से**

**पुकार कर कहा, 'तू याकूब के घराने से यों कह, और इस्राएलियों को यह बता,'**

**" (निर्गमन 19:3, Hindi Bible:ERV)**

❖ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

यह पद उस पल का वर्णन करता है जब परमेश्वर ने मूसा को सीनै पर्वत पर बुलाया और कहा कि वह "याकूब के घराने" और "इस्राएलियों" को उसका सन्देश दे। यह कोई साधारण निर्देश नहीं था; यह तोरा (Torah) के देने से पहले की विशेष तैयारी थी।

- "याकूब का घराना" = स्त्रियाँ (महिलाएँ)
- "इस्राएली" = पुरुष
- "तू कह" (רֹמָאָת) = कोमल शब्दों में बोलना (नरमी से समझाना)
- "बता" (דִּיאָגָת) = कठोरता से बताना (गंभीर और चेतावनीपूर्ण ढंग से)

□ □ □ □ □ □ □ □ □ :

□ 1. □ □ □ (Rashi):

"ב' ב' י' ע' ק' ב'" स्त्रियों के लिए है – उनसे कोमल भाषा में बात करो।

"ב' ב' י' ש' ר' א'" पुरुषों के लिए है – उन्हें कड़े शब्दों में आदेश दो।

□ 2. □ □ □ □ □ □ □ (Rabbeinu Bahya):

- महिलाएं जीवन की व्यवस्था और बच्चों की शिक्षा में प्रमुख होती हैं; उन्हें नैतिक शिक्षा

**और मूलभूत बातें कोमलता से सिखाई जाती हैं।**

- पुरुषों को तोराह के विस्तृत नियम और दण्ड चेतावनी सहित बताना ज़रूरी है।**

□ 3. **बैट हलेवी (Beit HaLevi):**

- पहले महिलाओं को पुरस्कार की बात बताओ ताकि वे आकर्षित हों। फिर पुरुषों को दण्ड और नियमों की गंभीरता समझाओ।**

□ 4. **चोमाट अनाख (Chomat Anakh):**

- गिम्म से मुक्ति स्त्रियों के पुण्य से हुई, इसलिए उन्हें पहले संबोधित किया गया।**

□ 5. **नाचल केदुमिम (Nachal Kedumim):**

- स्त्रियाँ विषय का सार पकड़ सकती हैं और बच्चों को धार्मिकता की ओर ले जाती हैं।**

□ 6. **टोलेडोट यित्शाक (Toledot Yitzchak):**

- आदम और हवा की कथा से सीखा कि महिलाओं को स्पष्ट शिक्षा देना ज़रूरी है ताकि वे दूसरों को भी ठीक राह पर ले जाएँ।**

□ 7. **हामेक दावर (Haamek Davar):**

"בָּבִין יִשְׂרָאֵל" आम जनता है जिन्हें सरल भाषा चाहिए, "בָּבִין יִשְׂרָאֵל" वे हैं जिन्हें गहराई और विवेचन चाहिए।

□ 8. **ओर हाचाइम (Or HaChaim):**

- आत्मिक परिपक्वता के आधार पर - कोमल और कठोर भाषण का उपयोग।

हालाँकि यह पद सीधे तौर पर नए नियम (New Testament) में नहीं उद्धृत होता, फिर भी इसकी शिक्षा और सिद्धांत आज के चर्चों में गहरे मायने रखते हैं।

#### 1. सन्देश को सुनने वाले के अनुसार बाँटना:

प्रभु यीशु भी अपने शिष्यों और भीड़ से उनके स्तर और समझ के अनुसार बात करते थे

- स्त्रियों से कोमलता से, फरीसियों से सख्ती से।

## **2. परिवारों को अलग-अलग जरूरतों के अनुसार सेवा देना:**

आज चर्च में महिला सभा, बच्चों की कक्षा, पुरुष सभा — सभी को अलग रूप से सेवा देना इस सिद्धांत से मेल खाता है।

### 3. शिक्षा में क्रम और दिया:

पहले प्रेम और इनाम की शिक्षा, फिर जिम्मेदारी और अनुशासन – यही मसीही शिक्षा का भी तरीका है।

”हे पिता परमेश्वर, जैसे आपने अपने वचनों को प्रेम और सच्चाई में बाँटा, और जैसे प्रभु यीशु ने स्त्रियों को कोमलता से, और धार्मिक अग्रवाओं को सच्चाई

**की गंभीरता से उपदेश दिया - वैसे ही मुझे भी बुद्धि दे कि मैं तेरे वचन को हर व्यक्ति के हृदय के अनुसार बाँट सकूँ। मुझे दया और दृढ़ता दोनों दे, ताकि मैं आपकी सन्तान को प्रेम और सत्य में बढ़ा सकूँ। प्रभु यीशु के नाम में माँगता हूँ, आमीन।”**

---

✓ □□□□□□□ (Conclusion in Hindi):

**“कोमलता और स्पष्टता” – यही इस पद की आत्मा है।**

**परमेश्वर ने मूसा को सिखाया कि हर आत्मा को एक ही ढंग से सिखाया नहीं जा सकता।**

**किसी को प्रेम और पुरस्कार की बातों से, तो किसी को नियमों और चेतावनियों से। यह सन्देश**

**आज भी उतना ही प्रासंगिक है – चर्च में, परिवार में, और हर शिक्षण में।**

प्रभु यीशु मसीह ने भी यही किया – वह हर व्यक्ति से उसकी ज़रूरत और हृदय की स्थिति के अनुसार मिला।

---

P212 Ge.1:28 On to be fruitful and multiply

□ □□□□ □□ □□□□□ □□□ (□□□□□□□ 1:28):

**“तब परमेश्वर ने उन्हें आशीर्वाद दिया, और उनसे कहा, ‘फलवन्त और बहुवन्त होओ, और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में करो; और समुद्र की मछलियों, आकाश के पक्षियों और पृथ्वी पर चलने वाले प्रत्येक जीवजन्तु पर अधिकार रखो।’”**

(उत्पत्ति 1:28, हिंदी बाइबल)

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □ □ :

यह पद ईश्वर द्वारा मनुष्य को दिया गया पहला आशीर्वाद और आदेश है। इसमें चार मुख्य बातें कही गई हैं:

1. **"फलवन्त और बहुवन्त होओ"** – अर्थात् संतान उत्पत्ति करो।
  2. **"पृथ्वी में भर जाओ"** – पूरी धरती पर बसो और परिवारों द्वारा समाज का निर्माण करो।
  3. **"उसे अपने वश में करो"** – प्राकृतिक संसाधनों पर नियंत्रण रखो, खेती करो, निर्माण करो।
  4. **"प्राणियों पर अधिकार रखो"** – जीव-जंतुओं, मछलियों और पक्षियों पर शासन करो।
- 

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ :

**1. आशीर्वाद और आज्ञा अलग हैं:**

- **रम्बान (Ramban):** मछलियों को केवल आशीर्वाद मिला था, लेकिन मनुष्यों को आशीर्वाद और आज्ञा दोनों दी गई।

- रब्बी निसीमः "फलवन्त होओ" एक आज्ञा है, जबकि "अधिकार रखो" एक आशीर्वाद है।

## 2. "उसे अपने वश में करो" (השכּוֹ):

- रशी (Rashi): यह शब्द अधूरा लिखा गया है (वाव नहीं है), जिससे व्याख्या होती है कि यह पुरुष के लिए आज्ञा है – क्योंकि पुरुष का स्वभाव "वश में करने" का है।
- सफोर्नोः यह वश में करना केवल शारीरिक नहीं बल्कि बुद्धिमत्ता और आत्म-नियंत्रण द्वारा है।
- सादिया गाओँ: मनुष्य की यह श्रेष्ठता कृषि, निर्माण, खनन, और तकनीक के माध्यम से है।

## 3. "अधिकार रखो" (אָרַא):

- मालबिमः यह अधिकार तभी प्राप्त होता है जब मनुष्य अपने अंदर के पशु स्वभाव को भी वश में रखता है।
- रव हिर्शः जब तक मनुष्य ईश्वर के आदेश में चलता है, वह सब पर अधिकार रख सकता है; यदि नहीं, तो वह पशुओं से भी नीचा हो जाता है।

## 4. "पृथ्वी में भर जाओ" (זְמַלְאָ אֶת הָאָرֶץ):

- **रेजियो:** यह आदेश है कि मनुष्य केवल एक स्थान पर न रुके (जैसे बाबेल की मीनार में हुआ), बल्कि पूरी पृथ्वी में फैलकर ईश्वर की महिमा को दर्शाए।

A decorative horizontal bar at the bottom of the page. It features a small icon of a church steeple on the left, followed by a sequence of approximately 20 empty square boxes of varying widths, some containing thin vertical lines, arranged in a staggered pattern.

यह पद मसीही विश्वास में भी बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है:

## 1. पहली ईश्वरीय आज्ञा और आशीर्वादः

ईश्वर ने मनुष्य को सृजित किया और सबसे पहले परिवार निर्माण, संतानोत्पत्ति, और धरती पर शासन का आदेश दिया।

## २. पर्यावरणीय उत्तरदायित्वः

**"वर में करना" और "अधिकार रखना" का अर्थ केवल नियंत्रण नहीं बल्कि संरक्षण और सेवा करना भी है – ईश्वर की सृष्टि की देखभाल।**

### **3. परिवार और जीवन की पवित्रता:**

यह पद विवाह, संतानोत्पत्ति, और जीवन के मूल्य की नींव है। प्रभु यीशु ने भी विवाह और परिवार को महत्वपूर्ण बताया (मत्ती 19:4-6)।

प्रभु यीशु के जीवन से ज़ुड़ी एक प्रार्थना (आधारित इस पद पर):

**हे स्वर्गीय पिता,**

आपने आदम और हव्वा को आशीर्वाद दिया – फलवन्त होने, पृथ्वी में भरने और  
सृष्टि की देखभाल करने के लिए। प्रभु यीशु मसीह में आपने हमें नया जीवन दिया,  
और हमें फिर से आपकी सृष्टि के अच्छे भण्डारी होने को बुलाया है।

**हम प्रार्थना करते हैं कि:**

- हमारे परिवार आपके भय में बढ़ें और आपकी आज्ञाओं का पालन करें।
- हम पर्यावरण और सभी जीवों की देखभाल ईश्वरीय प्रेम से करें।
- हम प्रभु यीशु की तरह दया, सेवा और बलिदान के जीवन में चलें।

प्रभु, हमें बुद्धि और विनग्रता दें कि हम आपके दिए हुए अधिकार का उपयोग

आपके गौरव के लिए करें।

**प्रभु यीशु के नाम में प्रार्थना करते हैं, आमीन।**

□ □ □ □ □ □ □ :

उत्पत्ति 1:28 केवल सृष्टि की कहानी नहीं, बल्कि मनुष्य के उद्देश्य और उत्तरदायित्व की  
घोषणा है:

- यह एक आशीर्वाद है: जीवन, परिवार, समाज निर्माण के लिए।
- यह एक आज्ञा है: प्रजनन, विस्तार, और सृष्टि की देखभाल के लिए।
- यह एक परीक्षा है: क्या हम अपने अधिकार का उपयोग प्रभु की महिमा के लिए करते

हैं?

यह पद आज भी हमें प्रेरित करता है कि हम प्रभु की सृष्टि में सार्थक जीवन जियें - अपने परिवार, समाज और प्रकृति के प्रति जिम्मेदारी के साथ।

---

P213 De.24:1 On the law of marriage

□ □□□□□ □□ (□□□□□□□□□□□□ 24:1) –

□□□□□ □□□:

"यदि कोई पुरुष किसी स्त्री से विवाह करे, परन्तु वह उसके अनुग्रह में न रहे

क्योंकि उसने उसमें कोई अशोभनीय बात पाई हो, तब वह उसे त्यागपत्र

लिखकर उसके हाथ में दे और अपने घर से निकाल दे।

---

□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□□□□□:

यह व्यवस्था विवाह, तलाक, और पुनर्विवाह से संबंधित है:

यदि किसी पति को अपनी पत्नी में कुछ "अशोभनीय बात" (यानी नैतिक या व्यवहारिक दोष) दिखाई दे और वह उसे तलाक दे देता है – उसे लिखित रूप में (त्यागपत्र या get) देना होगा।

यदि वह स्त्री फिर किसी और पुरुष से विवाह करे और दूसरा पति भी या तो उसे तलाक दे

तब पहला पति उसे फिर से वापस नहीं ले सकता। यह परमेश्वर के सामने "घृणित"

(To'eva) है।

यह नियम इसलिए है ताकि इसराएल की भूमि में पाप का प्रवेश न हो, जैसा कि अन्य

जातियों में होता था जहाँ विवाह का अपवित्रीकरण आम था।

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ :

## 1. "अशोभनीय बात" (רשות דבָר 'ervat davar) का अर्थ:

- **शमैय के अनुयायी (Beit Shammai):** केवल नैतिक दोष (जैसे व्यभिचार) होने पर ही तलाक वैध है।
- **हिल्लेल के अनुयायी (Beit Hillel):** यदि पत्री ने खाना जला दिया हो, तो भी तलाक का कारण बन सकता है।
- **रब्बी अकीवा:** यदि पति को कोई और स्त्री ज्यादा सुंदर लगे, तो भी वह अपनी पत्री को तलाक दे सकता है।

□ इन तीनों व्याख्याओं से पता चलता है कि रब्बियों के बीच तलाक के कारणों पर मतभेद था - क्षण इसे गंभीर पाप से जोड़ते हैं, तो क्षण केवल व्यक्तिगत पसंद से।

## 2. तलाक की प्रक्रिया:

- **"त्यागपत्र" (Sefer Keritut):** लिखित दस्तावेज़ जो विवाह को समाप्त करता है।
- **"उसके हाथ में देना":** तलाक पत्र उसे दिया जाना चाहिए - उसके अधिकार क्षेत्र में।
- **"घर से निकाल देना":** उसे भौतिक और सामाजिक रूप से पति के घर से बाहर कर दिया जाता है।

→ यह सब दर्शाता है कि विवाह केवल भावना नहीं, बल्कि विधिक (*legal*) समझौता भी है जिसे सही प्रक्रिया से जोड़ा जाना चाहिए।

---

### 3. पुनर्विवाह पर निषेधः

- यदि पत्नी किसी दूसरे से विवाह कर चुकी हो, तो पहले पति को उससे दोबारा विवाह करना मना है।
  - “यह घृणित है” – यह शब्द दर्शाता है कि यह नैतिक पतन की ओर ले जाता है।
  - **राल्बाग (Ralbag):** यह प्राचीन मिस्र की तरह पतनशील संस्कृति से इजराइल को अलग रखने के लिए है।
- 

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ :

1. **विवाह की पवित्रता:** प्रभु ईसा मसीह ने विवाह को परमेश्वर की ओर से स्थापित पवित्र सम्बन्ध बताया (मत्ती 19:6) – “जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, मनुष्य उसे न अलग करे।”
2. **तलाक पर दृष्टिकोणः** मसीही विश्वास में तलाक को अनुमति दी गई है केवल व्यभिचार या परित्याग जैसे गंभीर कारणों पर (मत्ती 5:32, 1 कुरिन्थियों 7)।
3. **पुनर्विवाहः** कुछ चर्च इस नियम को मानते हैं कि यदि किसी का तलाक पाप के कारण

हुआ है, तो पुनर्विवाह को सीमित रखा जाए, खासकर पहले पति/पत्नी से।

- आज भी यह पद हमें विवाह की गंभीरता और उसका आदर करने की शिक्षा देता है – यह एक स्थायी प्रतिज्ञा है, न कि अस्थायी समझौता।
- 

□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□

□□□□□□□:

हे स्वर्गीय पिता, जैसा आपने हमें अपने प्रेम से जोड़ दिया है, वैसा ही विवाह में स्थायित्व और पवित्रता बनी रहे। हे यीशु, आप जो मण्डली का सच्चा दूल्हा है, हमें अपने वैवाहिक संबंधों में भी वैसा ही प्रेम, क्षमा और समर्पण सिखा। जहां टूटन आई हो, वहां तू मेलमिलाप कर, जहां कठोरता हो, वहां तू कोमलता भर, और जहां असमर्थता हो, वहां तू अपनी शक्ति दे। विवाह को केवल सांसारिक बंधन नहीं, बल्कि एक आत्मिक मिलन के रूप में देखने की समझ दे। हम प्रभु यीशु मसीह के नाम से प्रार्थना करते हैं, आमीन।

✓□□□□□□:

व्यवस्थाविवरण 24:1-4 एक गम्भीर सामाजिक और आध्यात्मिक सन्देश देता है – विवाह एक पवित्र समझौता है जो जिम्मेदारी, आदर और परमेश्वर की आज्ञाओं पर आधारित है। तलाक केवल आवश्यक परिस्थिति में होना चाहिए और उसे भी सम्मानपूर्वक और वैध प्रक्रिया से किया जाना चाहिए। पुनर्विवाह के नियम, विशेष रूप से पहले पति से, विवाह की गंभीरता और

सामाजिक नैतिकता को बनाए रखने के लिए हैं।

□ मसीही दृष्टिकोण से, प्रभु यीशु ने विवाह को परमेश्वर की योजना का केंद्र बताया है, और हमें इसमें ईश्वर के प्रेम का प्रतिर्बिंब देखना चाहिए।

---

P214 De.24:5 On bridegroom devotes himself to his wife for one year

---

□ □□□□□ □□ (□□□□□□): □□□□□□□□□□□ 24:5

”जब कोई पुरुष किसी नयी स्त्री से व्याह करे, तब वह न तो लड़ाई में जाए और न उस पर कोई और काम थोपा जाए; एक वर्ष भर वह अपने घर में स्वतंत्र रहे, और अपनी व्याही हुई स्त्री को सुखी करे।”

(ERV Hindi, Easy-to-Read Version)

---

◆◆◆◆◆◆ ◆◆ ◆◆◆◆◆◆◆

यह नियम परमेश्वर की ओर से विवाह के आरंभिक वर्ष को बहुत महत्वपूर्ण मानता है। एक नवविवाहित पुरुष को एक वर्ष तक युद्ध या अन्य सरकारी कार्यों से मुक्त किया जाता है ताकि वह पूरी तरह से अपने घर पर ध्यान दे और अपनी पत्नी को खुश रख सके। यह न केवल व्यक्तिगत जीवन में शांति और स्थायित्व लाता है, बल्कि पूरे समाज की नींव-परिवार-को मजबूत करता है।

□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ (□□□□□□ □□□):

### 1. "नई स्त्री" का अर्थ क्या है?

**राशी:** "नई स्त्री" का मतलब वह है जो उस पुरुष के लिए नई है, चाहे वह विधवा क्यों न हो।

लेकिन वह अपनी तलाकशुदा पत्नी से पुनर्विवाह करता है, तो यह नियम लागू नहीं होता।

**गुर आर्य:** यदि केवल कन्या (कुंवारी) की बात होती, तो शास्त्र में स्पष्ट लिखा होता। इसलिए,

विधवा या तलाकशुदा स्त्री भी इसमें शामिल हो सकती है, जब तक वह उस पुरुष के लिए नई है।

**अबारबानेल:** चाहे स्त्री कन्या हो, विधवा या तलाकशुदा, अगर वह उस व्यक्ति के लिए नई है और पहले किसी और के साथ नहीं रही है, तो वह इस कानून में आती है।

### 2. सेना और अन्य जिम्मेदारियों से छूट

**राशी:** वह न केवल युद्ध से, बल्कि सैन्य आवश्यकताओं जैसे भोजन, पानी और रास्तों की मरम्मत से भी छूटता है।

**मिजराची और सिफरी:** यह पूरी तरह की छूट है, सिर्फ युद्ध से नहीं, बल्कि युद्ध संबंधी कोई भी कार्य नहीं किया जाएगा।

**रव हिर्श और रामबाम:** वह करों, सरकारी कार्यों और अन्य सामाजिक जिम्मेदारियों से भी मुक्त रहता है।

### 3. इस छूट का उद्देश्य

- **अबारबानेल:** ताकि पति-पत्नी में प्रेम और समझदारी विकसित हो और बाद में विवाह टूटने की नौबत न आए।
- **रव हिर्शः** पत्नी की आशाओं को पूरा करना और विवाह को सफल बनाना पति की सबसे बड़ी जिम्मेदारी है।
- **छत्तम सोफेरः** इसे आत्मिक दृष्टि से "पुनः समर्पण" (repentance) की प्रक्रिया माना जाता है - जैसे आत्मा का नया विवाह परमेश्वर से।
- **रब्बैनू बह्या:** यह एक साल का समय वैसा ही है जैसे परमेश्वर का सिनाई पर एक वर्ष तक ठहरना-एक आध्यात्मिक विवाह का प्रतीक।

#### 4. समय सीमा: एक वर्ष

- **रालबागः** विवाह के दिन से एक वर्ष तक।
- **तोरा तेमीमा:** जैसे एक स्त्री को 12 महीने चाहिए नवजीवन के लिए, वैसे ही घर और अंगूर का बाग भी एक वर्ष तक फल नहीं देता।

#### 5. अन्य छूटों से संबंध

- **राशीः** यह छूट उसी तरह की है जैसे एक नया घर बनाने वाला या अंगूर का बाग लगाने वाला युद्ध से छूटता है (व्यवस्थाविवरण 20)।

A decorative horizontal border at the bottom of the page. It starts with a small icon of a church steeple, followed by a series of small, empty square boxes arranged in a grid-like pattern. The pattern repeats several times, ending with a single question mark at the far right.

हालांकि यह नियम यहूदी व्यवस्था में दिया गया था, इसके पीछे का सिद्धांत आज के मसीही विश्वासियों के लिए भी गहराई से महत्वपूर्ण है:

## 1. विवाह को प्राथमिकता देना:

प्रभु यीशु ने विवाह को एक पवित्र संबंध बताया (मत्ती 19:4-6)। यह पद सिखाता है कि शादी के बाद शुरुआती समय को एक-दूसरे के लिए समर्पित करना बहुत ज़रूरी है।

## 2. परिवार की नींव मजबूत करना:

मजबूत विवाह से मजबूत चर्च और समाज बनता है। इस पद के अनुसार एक नवविवाहित जोड़े को समय और स्वतंत्रता मिलनी चाहिए ताकि वे एक-दूसरे को समझ सकें।

### 3. मसीही विवाह परामर्शः

कई चर्चों में आज नवविवाहितों के लिए विशेष काउंसलिंग या ”प्रेम और विश्वास में बढ़ने” के सेमिनार आयोजित होते हैं – यह उसी विचार की आधुनिक झलक है।

#### 4. सेवा और परिवार का संतुलनः

यह पद सिखाता है कि हमें अपनी सेवा और जिम्मेदारियों को संतुलित करते हुए अपने परिवार को अनदेखा नहीं करना चाहिए।

”हे स्वर्गीय पिता, आप जो प्रेम और संबंधों का रचयिता है, मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप मेरे विवाह को वैसा ही पवित्र बनाये जैसे आपने काना के विवाह में अपने पुत्र यीशु के द्वारा आशीष दी थी। जैसे प्रभु यीशु मसीह ने अपने लोगों के साथ एक विश्वासयोग्य वर के समान संबंध बनाए, वैसे ही मैं भी अपने जीवनसाथी के साथ प्रेम, बलिदान और समझदारी से चल सकूँ। आप मुझे वह सामर्थ्य दे कि मैं अपने घर को आनंद और शांति का स्थान बना सकूँ, जहाँ आपका नाम आदर पाए। प्रभु यीशु मसीह के नाम में माँगता हूँ। आमीन।”

---

□ □ □ □ □ □ □ (Summary):

व्यवस्थाविवरण 24:5 केवल एक सामाजिक नियम नहीं है, बल्कि एक गहरा आत्मिक और व्यावहारिक सिद्धांत सिखाता है: प्रेम और समझ की नींव पर परिवार की रचना। यह नियम दर्शाता है कि परमेश्वर विवाह को कितना महत्वपूर्ण मानता है। यह छूट केवल सैनिक सेवा से नहीं, बल्कि समस्त सामाजिक बोझों से नवविवाहित को मुक्त करती है ताकि वह अपनी पक्षी के साथ एक मजबूत रिश्ता बना सके। मसीही दृष्टिकोण से यह सिखाता है कि हमें अपने रिश्तों को प्राथमिकता देते हुए, यीशु के समान प्रेमपूर्ण और बलिदानी जीवन जीना है।

---

P215 Ge.17:10; On circumcising one's son

**उत्पत्ति 17:10 (Genesis 17:10) - हिंदी में बाइबल पद:**

”यह है मेरी वाचा, जिस को तुम्हें और तेरे बाद तेरे वंश को माननी है: तुम्हारे जितने पुरुष हैं सब का खतना किया जाए।”

(हिंदी बाइबल: उत्पत्ति 17:10)

---

## हिंदी में विस्तारपूर्वक समझावनः

यह पद परमेश्वर और अब्राहम के बीच एक विशेष वाचा (covenant) को स्थापित करता है।

इस वाचा का चिन्ह खतना (circumcision) है – एक शारीरिक चिन्ह जो आत्मिक प्रतिबद्धता और परमेश्वर की आज्ञा के प्रति समर्पण को दर्शाता है।

**“यह मेरी वाचा है...”** - यह कोई साधारण नियम नहीं है, बल्कि परमेश्वर का एक पवित्र समझौता है।

**“जिसे तू और तेरे वंशज मानें...”** - इसका अर्थ है कि यह वाचा अब्राहम और उसके संतान, अर्थात् इज़राइल राष्ट्र के लिए है।

**“सब पुरुषों का खतना किया जाए...”** - हर पुरुष बच्चे का खतना इस वाचा में प्रवेश का चिन्ह बनता है।

---

## रब्बियों की व्याख्याएँ (Rabbinic Interpretations) –

### हिंदी में सारांश के साथ:

#### 1. रब्बी हिर्श (Rav Hirsch):

- उन्होंने कहा कि जैसे नूह की वाचा का चिन्ह इंद्रधनुष था, वैसे ही अब्राहम की वाचा का चिन्ह खतना है।

- यह केवल शरीर की क्रिया नहीं, बल्कि आत्मिक अनुशासन और आत्मिक पवित्रता की प्रतिज्ञा है।
- खतना एक संकेत है कि एक व्यक्ति देह की इच्छाओं पर नियंत्रण रखकर आत्मा के अधीन जीता है।

## 2. रदाक (Radak):

- "तुम्हारे बाद तेरे वंश" में याकूब और उसकी संतान सम्मिलित हैं।
- "तुम सब" कहने का मतलब है अब्राहम और उसके सभी परिवारजन।
- यह आज्ञा केवल अब्राहम के लिए नहीं, बल्कि समस्त भविष्य की पीढ़ियों के लिए भी है।

## 3. रशी (Rashi):

- "तुम सब" का तात्पर्य केवल अब्राहम नहीं बल्कि उसके साथ रहने वाले सभी लोगों से है।
- यह वाचा सभी पीढ़ियों के लिए स्थायी नियम है।

## 4. मालबिम (Malbim):

- उन्होंने इसे सिर्फ एक शारीरिक क्रिया नहीं, बल्कि हृदय, विचार, वाणी, और आत्मा के

**खतने की आवश्यकता बताया।**

- शरीर की “अवरोधक परत” (foreskin) हटाकर आत्मिक जीवन को पूर्णता से जीने की क्षमता पाई जाती है।

## 5. तोलदोत यित्सहाक (Toledot Yitzchak):

- खतना को बलिदान की तरह माना गया है – जैसे बलिदान का लहू पापों की क्षमा के लिए होता है, वैसे ही खतना का लहू आत्मिक शुद्धता का प्रतीक है।

## 6. शदाल (Shadal):

- उन्होंने कहा कि मिस्र के पुजारी भी खतना करते थे, लेकिन परमेश्वर ने अब्राहम से हर पुरुष का खतना करवाया ताकि उसका पूरा वंश याजकों का राज्य (Exodus 19:6) बन जाए।

## आज के मसीही चर्च में खतना का महत्व:

- मसीहियत में खतना का आत्मिक अर्थ है, शारीरिक नहीं।

## 1. पौलुस की शिक्षा (रोमियों 2:28-29; गलातियों 5:6):

- “क्योंकि न खतना कुछ है, न ही खतनारहित होना, परंतु एक नई सृष्टि होना।”

- खतना अब आत्मा का होता है – हृदय का खतना (spiritual circumcision), जो पवित्र आत्मा द्वारा किया जाता है।

## 2. प्रभु यीशु मसीह में वाचा की पूर्ति:

- यीशु मसीह ने वाचा को अपने लहू से पूर्ण किया (मत्ती 26:28)।
- अब हम खतना नहीं, बल्कि बप्तिस्मा के द्वारा उस वाचा में प्रवेश करते हैं (कुलुस्सियों 2:11-12)।

## 3. आज के मसीही चर्च में:

- शारीरिक खतना कोई आवश्यक विधि नहीं है।
- परमेश्वर अब हृदय की सच्चाई, पवित्रता, और मसीह के प्रति समर्पण देखता है।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

हे पिता परमेश्वर,

जैसे आपने अब्राहम को बुलाया और वाचा बाँधी, उसी प्रकार आपने हमें भी प्रभु  
यीशु मसीह के द्वारा बुलाया है।

**आपने मसीह में हमें नया हृदय और पवित्र आत्मा दिया है।**

**प्रभु, आप हमारे हृदय का खतना करे – हमारी इच्छाओं, सोचों, और जीवन के सभी**

**क्षेत्रों में आपकी आज्ञा का पालन करने की सामर्थ्य दे।**

**जैसा मसीह ने अपने शरीर में वाचा की पूर्ति की, वैसा ही जीवन हम भी जिएं।**

**हमें आत्मिक बलिदान बना, और आपने वचन में स्थिर रख।**

**प्रभु यीशु के नाम से प्रार्थना करते हैं, आमीन।**

## **निष्कर्षः**

उत्पत्ति 17:10 में खतना केवल एक शारीरिक क्रिया नहीं, बल्कि परमेश्वर और मानव के बीच एक गंभीर आत्मिक प्रतिबद्धता का चिन्ह है। रबियों ने इसे गहराई से समझाया, शारीरिक और आत्मिक रूप से। मसीही विश्वास में, यह वाचा प्रभु यीशु मसीह के द्वारा पूर्ण हुई, और अब हृदय का खतना ही परमेश्वर के साथ हमारे रिश्ते का प्रमाण है।

**हमारे लिए मसीह में खतना का अर्थ है – आत्मिक शुद्धता, पवित्रता, और परमेश्वर के लिए**

**पूर्ण समर्पण।**

P216 De.25:5 If a man dies childless his brother marry widow, or...

### **1. बाइबल पद - व्यवस्थाविवरण 25:5**

**व्यवस्थाविवरण 25:5-6 (ERV-Hindi):**

“जब एक साथ रहने वाले भाइयों में से कोई मर जाए और उसका पुत्र न हो, तो

उसकी विधवा बाहर किसी पराये पुरुष से विवाह न करे। उसका जेठ (भाई) उसके

पास जाए और उसे अपनी पत्नी बना ले। वह उस स्त्री से पति का कर्तव्य निभाए।

उस स्त्री से जो पहला पुत्र उत्पन्न हो, वह मरे हुए भाई के नाम पर कहलाएगा ताकि

उसका नाम इमारेल में से मिट न जाए।”

---

## 2. हिंदी में सरल व्याख्या:

इस व्यवस्था को *यिबूम (levirate marriage)* कहते हैं। इसके अनुसार:

- जब दो भाई एक साथ रहते हों और उनमें से एक की मृत्यु हो जाए और उसकी संतान न हो,
  - तो मृतक की पत्नी (जिसे *यवमाह* कहा जाता है) किसी पराए पुरुष से विवाह नहीं कर सकती।
  - इसके बजाय, मृतक का भाई (*यवाम*) उससे विवाह करे, ताकि उनका पहला पुत्र मृतक भाई के नाम से जाना जाए।
  - यह प्रथा मृतक की वंशावली और विरासत को बनाए रखने के लिए है – ताकि उसका नाम इमारेल में से मिट न जाए।
- 

## 3. रब्बियों की व्याख्याएं (यहूदी परंपरा में):

✓ “וְאֵלֹהִים יָשַׁבּוּ אֲחִים יְחִדָּיו” (Hebrew: *ki yeshvu achim yachdav*):

- **राशी:** इसका मतलब है कि दोनों भाई एक ही समय में जीवित थे, चाहे वे साथ रहते हों या नहीं। अगर एक की मृत्यु के बाद दूसरा जन्म लेता है, तो यिबूम लागू नहीं होता।
- **चिज़कुनी:** दोनों का एक ही पिता होना चाहिए; मां से संबंधित भाई इस नियम में नहीं आते।
- **शादाल:** पहले यह literal रहने को लेकर था, लेकिन बाद में यह नियम बना कि साथ जीना समय के संदर्भ में है।

### उदाहरण:

रूबेन और शिमोन दो भाई हैं। रूबेन की मृत्यु हो जाती है और उसकी कोई संतान नहीं होती। शिमोन उसका सगा भाई है जो जीवित है – तो अब वह रूबेन की विधवा से विवाह कर सकता है।

---

✓ “וְאֵלֹהִים יָשַׁבּוּ אֲחִים יְחִדָּיו” (Hebrew: *u'ben ein lo*):

- **राशी:** इसका मतलब है - कोई भी संतान नहीं, ना बेटा, ना बेटी, ना पोता।
- **हकतेव वेहकब्बाला:** यदि मृतक की कहीं और कोई संतान भी हो (जैसे अविवाहित संबंध से), तब भी यिबूम की आवश्यकता नहीं।
- **इन्ह एज़रा:** केवल यदि कोई संतान नहीं है तो यिबूम लागू होता है।

### उदाहरण:

यदि मृतक की एक बेटी है, तो यिबूम की ज़रूरत नहीं। परंतु यदि कोई संतान नहीं है, तब यिबूम आवश्यक होता है।

---

✓"וְאִם־בָּת־מֵת־הַמֵּת־בְּתוֹךְ־הַחֲצֹזֶה־לְעֵשֶׂב־זָר׃"

(Hebrew: *lo tihyeh eshet hamet hachutzah le'ish zar*):

- **मालबिम:** यह चेतावनी है कि जब तक यिबूम या चलित्सा (ritual release) न हो जाए, विधवा किसी और से विवाह नहीं कर सकती।
  - **बेखोर शोर:** यह विवाह पूरी तरह से निषिद्ध है।
- 

✓“וְאִם־בָּת־מֵת־הַמֵּת־בְּתוֹךְ־הַחֲצֹזֶה־לְעֵשֶׂב־זָר׃” (Hebrew:

*veyibbemah*):

- **बेखोर शोर:** विवाह का प्रारंभिक कार्य सहवास (*bi'ah*) द्वारा होता है।
  - **ओर हाखायिम:** यह केवल अनुमति नहीं बल्कि एक कर्तव्य (obligation) है।
  - **स्फोर्नों:** जब यवाम यह कार्य करता है, तो स्त्री की “यवमाह” की स्थिति समाप्त हो जाती है और वह सामान्य पत्नी बन जाती है।
- 

#### 4. आज के मसीही चर्च में इसका क्या महत्व है?

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

- मसीहियत में यिबूम को सीधा पालन नहीं किया जाता, क्योंकि प्रभु यीशु मसीह ने व्यवस्था को पूर्ण किया है (मत्ती 5:17)।
- नये नियम में विवाह को लेकर अधिक व्यक्तिगत और आत्मिक दृष्टिकोण है।
- मरकुर्स 12:18-27 में सदूकी यिबूम का प्रश्न उठाते हैं, और प्रभु यीशु बताते हैं कि पुनरुत्थान में न कोई विवाह करेगा, न विवाह करवाएगा।  
यह दर्शाता है कि यिबूम का नियम केवल इस जीवन के लिए था, न कि अनंत जीवन के लिए।

□ □ □ □ □ □ □ :

- यह नियम हमें परिवार की जिम्मेदारी, नाम और वंश को बनाए रखने, और मरे हुए के प्रति आदर का संदेश देता है।
- मसीही आज इसे एक आत्मिक रूपक की तरह देख सकते हैं:  
जैसे यवाम ने मृतक की विरासत को संभाला, वैसे ही प्रभु यीशु मसीह ने हमारे लिए अनंत जीवन और पहचान की विरासत संभाली।

## 5. प्रभु यीशु मसीह के जीवन से संबंधित एक प्रार्थना:

हे प्रभु यीशु मसीह,

आप वह हैं जिसने हमारे लिए अपना जीवन दिया, ताकि हम जो आत्मिक रूप से

मरे हुए थे, हमें नया जीवन और पहचान मिले।

जैसे यिबूम द्वारा एक नाम और विरासत कायम रहती है, वैसे ही तूने हमें स्वर्गीय विरासत और परमेश्वर की संतान का नाम दिया है।

हमें सिखा कि हम अपने परिवारों और समाज में उत्तरदायित्व निभाएं, विशेषकर उन लोगों के लिए जो अकेले हैं या जिनकी कोई आशा नहीं है।

हम भी तेरे समान दूसरों के लिए उद्धार और पुनर्स्थापन का मार्ग बनें।

**प्रभु यीशु मसीह के नाम में, आमीन।**

---

## 6. निष्कर्षः

- यिबूम की व्यवस्था एक समाजिक-धार्मिक उत्तरदायित्व थी, जो मृत व्यक्ति की वंशावली और विरासत को बनाए रखने के लिए बनी।
- यह नियम केवल उन्हीं भाइयों पर लागू होता है जो एक साथ जीवित रहे हों और जिनका मृतक भाई संतानहीन था।
- यहूदी परंपरा में इसे बहुत गंभीरता से लिया गया और अनेक रब्बियों ने इसके शब्दों की गहराई से व्याख्या की।
- मसीहियत में यह व्यवस्था शारीरिक रूप में लागू नहीं होती, परंतु इसका आत्मिक मूल्य

**उद्धार, उत्तरदायित्व और नाम की स्थिरता में निहित है।**

- **यीशु मसीह ने हमें यह दिखाया कि कैसे किसी की विरासत और नाम को अनंत जीवन में पुनर्स्थापित किया जा सकता है।**
- 

P217 De.25:9 ...release her/the-widow (Chalitzah)

□ □ □ □ □ □ □ : □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ 25:9 (Hindi

**Bible - Pavitra Bible Society Version)**

"तब उसकी भाभी बड़े के सामने उसके पास जाकर, उसके पांव से जूती खोलकर उसके मुंह पर थूक दे, और उत्तर देकर कहे, 'जिस मनुष्य ने अपने भाई का घर नहीं बसाया, उसके साथ ऐसा ही किया जाता है।'"

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ ( □ □ □ □ □ □ □ □ □  
□ □ □ ):

यह व्यवस्था उस समय की है जब किसी पुरुष की मृत्यु हो जाती है और उसकी पत्नी (जिसके कोई संतान न हो) अकेली रह जाती है। उस विधवा स्त्री को अधिकार था कि उसका देवर (पति का भाई) उससे विवाह करे ताकि मृत भाई का वंश बना रहे। इस रीति को "यिबूम" (levirate marriage) कहा जाता है।

पर यदि देवर विवाह से मना करे, तो उस स्त्री को बड़ों (नगर के बुजुर्गों) के सामने जाना होता था।

वहाँ वह:

1. **देवर का जूता खोलती है** - यह संकेत है कि वह अब उसका उत्तराधिकारी नहीं बनेगा।
  2. **उसके सामने धूकती है** - यह तिरस्कार और अपमान का संकेत है।
  3. **और कहती है** - “जिसने अपने भाई का घर नहीं बसाया, उसके साथ ऐसा ही किया जाता है।”
- 

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

(□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □):

## 1. जूते की भूमिका:

- **चिज़कुनी और बेखोर शोर:** जूता चमड़े का होना चाहिए (यहेजकेल 16:10 से संदर्भ), यह मानवीय सम्मान और अधिकार का प्रतीक है।
- **रलबाग:** दाहिने पैर का जूता खोलना चाहिए, और पट्टी से बंधा होना चाहिए।
- **रेग्ज़यो:** ”हलिज़ा“ शब्द का अर्थ है पट्टियों से बंधे जूते को खोलना।

## 2. धूकने का महत्व:

**राशी:** धूक सीधे मुँह पर नहीं, ज़मीन पर गिरना चाहिए, अपमान के लिए।

**गुरु आर्य:** ”ब'फानाव“ (उसके सामने) का अर्थ है उसकी उपस्थिति में, ताकि elders देख

सकें।

**अबाये (तालमुद):** अगर हवा थूक को उड़ा ले जाए तो हलिज़ा अमान्य हो जाती है।

### 3. घोषणा का अर्थ:

- **रशी:** यह कहने का अर्थ है कि अब यह पुरुष स्थायी रूप से विवाह से विवाह नहीं कर सकता।
- **हामेक दावर:** यह घोषणा बताती है कि देवर ने भाई का घर नहीं बसाया, मतलब उसने आत्मिक और पारिवारिक ज़िम्मेदारी नहीं निभाई।

### 4. रूथ और बोअज़ का उदाहरण (रूत 4):

- **चिज़कुनी:** बोअज़ का विवाह रूत से यिबूम जैसा लगता है।
- **रव हिर्श:** यह सच्चा यिबूम नहीं था, क्योंकि बोअज़ मृत पति का भाई नहीं था, और रूत उस समय यहूदी नहीं थी।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ :

### मसीही दृष्टिकोण:

- मसीही धर्म में लेविराते विवाह्या हलिज़ाका कोई अनुष्ठान नहीं होता, क्योंकि प्रभु यीशु मसीह के आने के बाद नए नियम ने विवाह और उत्तराधिकारी की व्यवस्था को आत्मिक स्तर पर परिवर्तित कर दिया है।
- मसीही विश्वास में, हर विश्वासी की आत्मा का उत्तराधिकारी स्वयं प्रभु यीशु मसीह है, जो हमें नया जीवन और वंश देता है।
- विवाह अब कोई पारिवारिक कर्तव्य नहीं बल्कि व्यक्तिगत और आत्मिक चुनाव है।

## आत्मिक शिक्षा:

- इस घटना से यह शिक्षा मिलती है कि जब कोई कर्तव्य से पीछे हटता है, तो वह अपमान और ज़िम्मेदारी से मुँह मोड़ने का प्रतीक बन जाता है।
- लेकिन मसीही दृष्टिकोण कहता है कि प्रभु यीशु ने हमारा कर्तव्य अपने ऊपर ले लिया, और हमारी आत्मा को छुटकारा दिया।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □ :

”हे प्रभु यीशु, आप वह सच्चा आत्मिक भाई हैं जिसने हमारी आत्मा के उद्धार के लिए अपना जीवन दे दिया। जैसे हलिज़ा में विधवा तिरस्कृत अनुभव करती है, वैसे ही हम भी कई बार त्यागे हुए महसूस करते हैं। परन्तु आपने हमें स्वीकार किया, हमारी आत्मा को नया जीवन दिया, और

हमें परमेश्वर के घर में स्थान दिया। हमें कभी भी आत्मिक ज़िम्मेदारी से पीछे न हटने देना। आप हमें दूसरों के जीवन में आप जैसा प्रेम और सेवा दिखाने की शक्ति दे। आमेन।”

---

✓ □ □ □ □ □ □ :

- हलिज़ा यहूदी परंपरा में एक गंभीर प्रक्रिया है जो विधवा को स्वतंत्र करती है जब देवर विवाह करने से मना करता है।
- इसके हर कार्य - जूता खोलना, थूकना, और घोषणा - एक सांकेतिक और सामाजिक न्याय का रूप है।
- रब्बी इसे आत्मिक, क़ानूनी और प्रतीकात्मक रूपों में समझाते हैं।
- मसीही विश्वास में इसका शारीरिक रूप नहीं है, पर इसकी आत्मिक शिक्षा यह है कि प्रभु यीशु मसीह वह भाई है जिसने हमारे उद्धार का कार्य पूरा किया।
- हम उससे यह सीख सकते हैं कि सेवा, जिम्मेदारी, और प्रेम को कभी न टालें।

P218 De.22:29 A violator must marry the virgin/maiden he has violated

□ □ □ □ □ □ □ - □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ 22:29 (Deuteronomy 22:29)

- □ □ □ □ □ □ :

“तब वह पुरुष उस लड़की के पिता को चांदी के पचास सिक्के दे, और वह

उसकी पत्नी हो, क्योंकि उसने उसे लज्जित किया है; वह जीवन भर उस को

## त्याग न सके।"

(व्यवस्थाविवरण 22:29, हिंदी ओरंगी)

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

यह पद उस स्थिति की बात करता है जब कोई पुरुष किसी अविवाहित कन्या (जो किसी से वादत नहीं है) से बलपूर्वक संबंध बनाता है। तब:

1. **वह पुरुष लड़की के पिता को 50 चाँदी के सिक्के देगा - यह उस समय की कन्या-मूल्य (bride price) मानी जाती थी।**
2. **वह उससे विवाह करेगा - उसका कार्य एक अपराध था, और विवाह करना उसके प्रति एक सामाजिक और नैतिक जिम्मेदारी मानी जाती थी।**
3. **वह उसे जीवनभर नहीं त्याग सकता - इस विवाह को स्थायी माना जाता है; पुरुष को तलाक देने का अधिकार नहीं है।**

□ :

□ 1. □ □ □ □ □ □ 50 □ □ □ □ □ :

- यह कन्या मूल्य है।
- HaKtav VeHaKabalah और Torah Temimah बताते हैं कि यह केवल बलात्कार के

**लिए दंड नहीं, बल्कि शारीरिक सुख (enjoyment) के लिए जुर्माना भी है।**

□ 2. विवाह के दंडों के विवरण:

- Chizkuni कहते हैं कि यह विवाह उसकी जिम्मेदारी के रूप में दिया गया आदेश है।
- Ralbag बताते हैं कि यदि पति उसे तलाक देता है तो वह एक आज्ञा-उल्लंघन करता है,  
और उसे वापस विवाह करना पड़ेगा।

□ 3. विवाह के अनुसार पुरुष को चार प्रकार के दंड देने होते हैं:

- **कन्या मूल्य (कन्स)**
- **लज्जा (תשׁוֹב / शर्म)**
- **क्षति (מִזְרָב / दोष)**
- **पीड़ा (רעצָה / मानसिक व शारीरिक दर्द)**

□ 4. विवाह के अनुसार लड़की को दी जाती है:

- अगर लड़की के पिता नहीं हैं, तब चाँदी की राशि लड़की को दी जाती है।
- अगर लड़की बालिंग (बोगेरेट) है, तो वह स्वयं निर्णय कर सकती है और राशि भी स्वयं  
रख सकती है।
- Torah Temimah बताते हैं कि विवाह तभी अनिवार्य है जब दोनों पक्ष वैवाहिक दृष्टि से

**अनुमेय हों (यानि निषिद्ध संबंध न हो)।**

---

□ □□□□□ - □□□□ □□:

बाइबल में ऐसा सीधा उदाहरण कम है, लेकिन यहूदी कानूनों में ऐसे दंडात्मक विवाह के अनेक संदर्भ मिलते हैं।

□ □□□□□□ □□□□□:

"वह उसी पात्र से पीए जो उसने चुना है।"

- यह कहावत बलात्कारी को यह समझाने के लिए कही जाती थी कि उसने जो किया है, उसे उसी बोझ को उठाते हुए जीवन बिताना होगा।

---

□ □ □ □ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□?

**मसीही धर्म में बलात्कारी से विवाह की व्यवस्था को नहीं माना जाता। यह व्यवस्था यहूदी कानून के संदर्भ में थी, जो उस समय की सामाजिक सुरक्षा को ध्यान में रखती थी।**

❖ □□□□ □□□ □ □ □□□□ □□ □□ □□□□□□□:

- प्रभु यीशु ने स्त्रियों की गरिमा और सम्मान को हमेशा ऊँचा रखा।
- जब पापिनी स्त्री को पत्थर मारने लाया गया (यूहन्ना 8:1-11), यीशु ने कहा:

**"जो तुम में निष्पाप हो वही पहले उस पर पत्थर डाले।"**

- उन्होंने न केवल स्त्रियों को न्याय दिया, बल्कि उन्हें समाज में पुनर्स्थापित किया।

□ मसीही सिद्धांत कहता है कि बलात्कार एक पाप है और पीड़िता को सम्मान, संरक्षण, और प्रेम मिलना चाहिए, न कि उस पर विवाह का दबाव।

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ - □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

‘हे प्रेमी परमेश्वर,

आप न्याय और करुणा का स्रोत है।

हम उन सब स्त्रियों के लिए प्रार्थना करते हैं जो किसी के पाप के कारण आहत हुई हैं।

जैसे आपने उस पापिनी स्त्री को क्षमा किया और समाज में उसकी गरिमा बहाल की,

वैसे ही आप हर पीड़ित हृदय को चंगा करें

हमें साहस दे कि हम अन्याय के विरुद्ध खड़े हों,

और आपकी दृष्टि में सबको सम्मान दें।

प्रभु यीशु मसीह के नाम में यह प्रार्थना करते हैं। आमीन।’\*\*

---

□ □ □ □ □ □ □ (Conclusion in Hindi):

व्यवस्थाविवरण 22:29 यहूदी कानून की वह व्यवस्था है जिसमें बलात्कारी को दंड स्वरूप विवाह और चाँदी का भुगतान करना पड़ता है। यह व्यवस्था स्त्री की सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए थी। रब्बियों ने इसे दंड, जिम्मेदारी, और स्थायी प्रतिबद्धता के रूप में देखा।

मसीही दृष्टिकोण में यह व्यवस्था लागू नहीं होती, क्योंकि यीशु मसीह ने स्त्रियों की गरिमा को पुनःस्थापित किया और बल की जगह प्रेम व न्याय को स्थान दिया। आज के चर्चों में यह

सिखाया जाता है कि पीड़िता को विवाह का नहीं, बल्कि चंगाई और समर्थन का अधिकार है।

---

P219 De.22:18 - 19 The defamer of his bride is flogged & may never divorce

---

□ □□□□□□□□□□ 22:18 – □□□□□ □□ (□□□□□ □□□):

"तब नगर के पुरनिए उस पुरुष को पकड़कर ताड़ना देंगे।"

(हिंदी ओ.वी. बाइबल - *Deuteronomy 22:18*)

---

□ □□□□□ □□□ □□□□□□□

यह पद उस स्थिति के बारे में है जब कोई पुरुष विवाह के बाद अपनी पत्नी पर झूठा आरोप लगाता है कि वह कुँवारी नहीं थी। यदि यह सिद्ध होता है कि उसका आरोप झूठा था, तब नगर के पुरनिए उस पुरुष को पकड़कर ताड़ना (फटकार/शारीरिक दंड) देंगे।

"ताड़ना" का अर्थ यहाँ केवल डांटना नहीं बल्कि शारीरिक रूप से मारे जाने (कोड़े/चाबुक) से है

- ताकि समाज में झूठे आरोप लगाने वालों के लिए एक चेतावनी हो।

---

□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ (□□□□□ □□□□□ □□□):

♦ □□□ (Rashi):

- "ताड़ना" का अर्थ है - मल्कोत (lashes, कोड़े मारना)।

♦ □□□ □□□□□ □□ □□□□□□□:

- "ताइना" शब्द की तुलना करते हैं विद्रोही पुत्र (Deut. 21:18) के साथ – वहाँ भी यही शब्द आया है और इसका अर्थ शारीरिक दंड से है।

◆ □ □ □ □ □ (Rav Hirsch):

- यह मामला एकमात्र ऐसा है जहाँ आदमी को दोनों दंड मिलते हैं – शारीरिक (मल्कोत) और वित्तीय जुर्माना (100 रोकल लड़की के पिता को)।
- इससे समाज में नारी की प्रतिष्ठा की रक्षा होती है।
- झूठे आरोपों से किसी की इज़्ज़त मिट्टी में न मिले इसलिए सख्त सज़ा दी जाती है।

◆ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

- सभी यहूदी टीकाकार मानते हैं कि "ताइना" का अर्थ सिर्फ शब्दों से डांटना नहीं, बल्कि सार्वजनिक रूप से शारीरिक सज़ा देना है।
- झूठे आरोप लगाने को एक सामाजिक अपराध माना गया है, जो समुदाय की मूलभूत नैतिकता पर हमला करता है।

□ □ □ □ □ □ :

कल्पना करें कि एक पुरुष विवाह के बाद दावा करता है कि उसकी पत्नी कुंवारी नहीं थी, लेकिन लड़की के माता-पिता प्रमाण प्रस्तुत करते हैं कि वह झूठ बोल रहा है। ऐसे में:

- उसे कोड़े मारे जाते हैं।
  - 100 शेकल जुर्माना लड़की के पिता को दिया जाता है।
  - वह महिला को जीवनभर तलाक नहीं दे सकता।
- 

□ ?

हालाँकि यह कानून पुराने नियम का हिस्सा है, मसीही धर्म इसकी आत्मिक सच्चाई पर ध्यान देता है, जैसे:

### 1. सच्चाई बोलना (Speak the Truth):

झूठे आरोपों से बचना - यह हमें प्रभु यीशु की शिक्षा की याद दिलाता है:

"तुम्हारी बात हाँ की हाँ और नहीं की नहीं हो..." (मत्ती 5:37)

### 2. सम्मान और मर्यादा की रक्षा:

जैसा कि यह कानून लड़की की प्रतिष्ठा की रक्षा करता है, मसीही दृष्टिकोण में हर व्यक्ति

ईश्वर की प्रतिमा है और सम्मान के योग्य है।

### 3. झूठ का दंड:

प्रेरित पौलुस कहते हैं कि झूठ बोलने वाले राज्य के अधिकारी नहीं होंगे (1 कुरिञ्चियों

6:9-10)

□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□:

”हे प्रभु यीशुआप जो सत्य और जीवन है, हमें ऐसा मन दे कि हम कभी भी झूठ का सहारा न लें। हमें साहस दे कि हम सत्य के पक्ष में खड़े रहें, भले ही वह कठिन हो। जिस प्रकार आपने उस स्त्री की प्रतिष्ठा बचाई जिसे दोषी ठहराया जा रहा था (यूहन्ना 8), उसी प्रकार हमें भी दूसरों की मर्यादा की रक्षा करने वाला बना। हमारे शब्द, हमारे काम - सब में तेरा प्रेम और न्याय प्रकट हो। आमीना”

□ □□□□□□ (Summary):

Deuteronomy 22:18 में एक झूठे आरोप लगाने वाले पति को सजा देने की बात है।

रब्बियों के अनुसार, यह सजा कोड़े (lashes) के रूप में दी जाती थी, साथ ही आर्थिक दंड भी लगता था।

यह कानून समाज में सत्य, न्याय और नारी सम्मान की स्थापना करता था।

मसीही दृष्टिकोण में, प्रभु यीशु हमें सिखाते हैं कि झूठ से बचें, और दूसरों की प्रतिष्ठा की रक्षा करें।

आज के चर्चों में यह पद हमें सत्य बोलने, ईमानदार जीवन जीने, और दूसरों की प्रतिष्ठा की रक्षा करने की प्रेरणा देता है।

P219 De.22:18 - 19

□ □□□□□ □□ – □□□□□□□□□□□□ 22:19 (Hindi Bible – Hindi O.V.)

"और वे उसका जुर्माना कर के सौ सिक्का चाँदी कन्या के पिता को दें, क्योंकि उसने  
इस्राएल की एक कुँवारी को बदनाम किया है; और वह कन्या उसकी पत्नी बनी रहे, वह  
अपने जीवन भर उसे त्याग न दे।"

---

□ □□□□□□ □□□ □□□ □□□□□□□□:

यदि कोई पुरुष विवाह के बाद अपनी पत्नी पर झूठा आरोप लगाए कि वह विवाह से पहले  
कुँवारी नहीं थी, और यह आरोप झूठा साबित हो जाए, तो उस पुरुष को दो दंड दिए जाते हैं:

1. **वित्तीय दंड (100 चाँदी के सिक्के):** यह रकम लड़की के पिता को दी जाती है क्योंकि  
उसकी बेटी की प्रतिष्ठा को बदनाम किया गया। यह रकम सामान्य विवाह दहेज (50  
सिक्के) से दुगुनी होती है।
  2. **न्यायिक दंड:** वह व्यक्ति उस स्त्री को जीवन भर तलाक नहीं दे सकता। यह एक "जैसे  
को तैसा" न्याय है—चूंकि वह उसे बिना किसी कारण से छोड़ना चाहता था, अब वह उससे  
अलग नहीं हो सकता।
- 

□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ (Rabbinic Interpretations):

□ 1. □□□□□□ □□□□?

- **माहमानिदेस (Maimonides)** और **रब्बेनु बह्या** कहते हैं कि यह दंड एक चोर की तरह है जो चोरी में पकड़ा गया और उससे दोगुना वसूल किया गया।
- **रेगियो:** यह आदमी चाहता था कि वह बिना कुछ दिए उसे छोड़ दे, इसलिए उसे दोगुना देना पड़ा।

□ 2. □□□□ □□□□ □□□□ □□□?

- **तोरा टेमीमा:** यह रकम केवल तब पिता को दी जाती है जब कन्या "नआरा" (युवती) हो, न कि "बोगरेट" (वयस्क)। यदि पिता मर चुका हो, तो यह रकम लड़की को जाती है।

□♂ 3. □□□□ □ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□?

- **चिज़कुनी और रालबाग:** यह सज़ा इसलिए दी गई कि पति ने झूठ फैलाकर विवाह तोड़ने की कोशिश की थी, तो अब वह इसे छोड़ नहीं सकता।
- **रब्बी हिर्श:** यह एकमात्र उदाहरण है जहाँ आदमी को **शारीरिक दंड (कोड़े)** और **आर्थिक दंड (100 सिक्के)** दोनों मिलते हैं। आम तौर पर दोनों एक साथ नहीं होते।
- **रालबाग:** यदि पति फिर भी तलाक देता है, तो वह ज़बरदस्ती उससे पुनः विवाह करेगा-जब तक कि वह उस पर प्रतिबंधित न हो (जैसे व्यभिचार के कारण)।

□ 4. "□□□□□□□ □□ □□□□□□" □□□□ □□□□?

- **मालबिम:** यह शब्द पूरी इस्माएली नारी जाति की गरिमा को दर्शाता है। जब कोई व्यक्ति किसी एक को बदनाम करता है, तो वह पूरी कौम को अपमानित करता है।

□ □□□□□ (Example):

कल्पना कीजिए कि रमेश नामक एक व्यक्ति ने सुषमा से विवाह किया। विवाह के कुछ समय बाद, रमेश झूठा आरोप लगाता है कि सुषमा विवाह के पहले कुँवारी नहीं थी। सुषमा के माता-पिता सबूतों से सिद्ध करते हैं कि यह आरोप झूठा है।

**परिणाम:**

- रमेश को 100 चाँदी के सिक्के जुर्माना देना होगा।
- वह सुषमा को जीवन भर तलाक नहीं दे सकता।

□ □□□□□ □□□□□□□ (Christian Church Perspective Today):

यद्यपि यह व्यवस्था यहूदी कानून का हिस्सा है, परंतु इससे जुड़े नैतिक सिद्धांत आज भी मसीही जीवन में मूल्यवान हैं:

1. **सत्य बोलना:** प्रभु यीशु ने सिखाया - "तुम्हारा हाँ हाँ और नहीं नहीं हो।" (मत्ती 5:37)
2. **चरित्र की रक्षा:** झूठे आरोप किसी की ज़िंदगी को बर्बाद कर सकते हैं।
3. **दंड के बदले अनुग्रह:** प्रभु यीशु ने व्यभिचारी स्त्री को क्षमा किया और भीड़ को चुनौती दी  
- "जो पापरहित है, वही पहला पत्थर मारे।" (यूहन्ना 8:7)

- निंदा और आरोपों से बचें।
  - स्त्री के सम्मान और गरिमा की रक्षा करें।
  - झूठ बोलने से उत्पन्न सामाजिक और आत्मिक नुकसान को समझें।
- 

□ □□□□□□□ (Prayer Inspired by Jesus):

"हे हमारे स्वर्गीय पिता,

हम आपके पुत्र यीशु मसीह के नाम से प्रार्थना करते हैं। आप हमें झूठे आरोपों से बचा, और हमारी ज़ुबान को सच्चाई और करुणा से भर दे।

जैसे आपने उस स्त्री को क्षमा किया जिसे लोगों ने पत्थर मारना चाहा, वैसे ही हम भी न्याय की जगह अनुग्रह चुनें।

हमें सिखा कि हम दूसरों की प्रतिष्ठा की रक्षा करें और न्याय के साथ प्रेम से चलें।

प्रभु, हमारी आँखें खोल कि हम अपने ही पापों को पहचानें और दूसरों को दया की दृष्टि से देखें।

प्रभु यीशु के नाम में, आमीन।\*\*

---

□ □□□□□□ (Conclusion):

**व्यवस्थाविवरण 22:19** हमें न्याय, मर्यादा, और झूठ से होने वाले नुकसान के बारे में सिखाता है। यह बताता है कि झूठ बोलकर किसी के चरित्र को अपमानित करने की सज़ा गंभीर होती है - यह न केवल आर्थिक बल्कि सामाजिक दंड भी लाता है। रब्बियों ने इस पर विस्तृत व्याख्या दी है।

मसीही दृष्टिकोण में, हम इस व्यवस्था को नैतिक शिक्षा की तरह ग्रहण करते हैं - जहाँ हम यीशु से प्रेरणा लेकर सत्य, प्रेम, और क्षमा का मार्ग अपनाते हैं।

P220 Ex.22:16 - 24 On the seducer must be punished according to the law

बिलकुल! आइए हम क्रम से चलते हैं:

---

॥ २२:१६ ॥ 22:16 — यदि कोई किसी कुंवारी को जो किसी से ब्याही न गई हो फुसलाकर उससे  
in Hindi Bible):

**"यदि कोई किसी कुंवारी को जो किसी से ब्याही न गई हो फुसलाकर उससे  
संसर्ग करे, तो वह उसका महर देकर उसे अपनी पत्नी बना ले।"**

(निर्गमन 22:16, हिंदी बाइबल – *Hindi Bible:ERV*)

---

॥ २२:१७ ॥ 22:17 (Verse Explanation in Hindi):

यह पद एक ऐसे व्यक्ति के बारे में है जो किसी कुंवारी लड़की (जो मंगनीशुदा नहीं है) को  
फुसलाकर (प्रलोभन देकर) उसके साथ शारीरिक संबंध बना लेता है। बाइबल के अनुसार:

- उस व्यक्ति को महर (**dowry**) देना होगा, जो विवाह की कीमत या मुआवज़ा होता है।
- साथ ही उसे उस लड़की से विवाह करना चाहिए।

यह व्यवस्था उस लड़की की इज़्ज़त और भविष्य को सुरक्षित रखने के लिए बनाई गई थी

क्योंकि उस समय समाज में विवाह से पहले कौमार्य (**virginity**) को अत्यंत महत्व दिया जाता

था।

□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ (What Rabbinic Commentaries Say):

**1. "फुसलाना" (Entice - *yifteh*) का अर्थः**

- **राशी (Rashi):** इसका मतलब है कोमल वाणी से लड़की को मना लेना ताकि वह राजी हो जाए।
- **रंबान (Ramban):** वह कहते हैं कि यह “झूठे वादों” द्वारा किसी भोले व्यक्ति को बहकाना है।
- **विरकात Asher:** राशी और रंबान के बीच के मतभेद को उजागर करते हैं और कहते हैं कि पिटूइ (pitui) का मतलब धोखा देना भी हो सकता है।

**2. "कुंवारी जो मंगनीशुदा नहीं थी" (Betulah asher lo orasah):**

इन्हें एज़रा: मंगनी एक कानूनी संबंध होता है। अगर लड़की मंगनीशुदा होती और तब यह होता, तो सजायें सख्त होतीं।

हर्ष (Rav Hirsch): गैर-यहूदी व्यवस्था में "मंगनी" की अहमियत नहीं होती, पर यहूदी धर्म में यह पहले से एक रिश्ता बना देता है।

**3. "महर" (Dowry - *mohar*) का अर्थः**

- **राशी:** यह विवाह अनुबंध (Ketubah) के रूप में लड़की को कुछ राशि देना है।

- **रंबान:** वे इससे असहमत हैं; कहते हैं कि Ketubah रब्बियों की व्यवस्था है, न कि बाइबिल की।
- **गुर आर्य:** महर Ketubah ही हो सकता है क्योंकि वह विवाह के लिए सहमति की एक शर्त है।
- **हर्षः** इसे एक तरह से दहेज नहीं बल्कि विवाह के साथ मिलने वाला आर्थिक सहारा मानते हैं।

#### 4. क्या विवाह करना ज़रूरी है?:

- **हकटव वेहागाला:** विवाह अनिवार्य नहीं, परंतु अनुमति है यदि लड़की और पिता मान जाएँ।
- **बेखोर शोर:** विवाह अगर लड़की को पसंद हो, तो किया जाए, वरना आर्थिक मुआवजा दिया जाए।
- **टूर हारोख:** अगर पिता विवाह न चाहे तो भी व्यक्ति को महर देना होगा।

#### 5. यदि पिता विवाह से मना करे:

- तब भी व्यक्ति को 50 चाँदी के सिक्के (Deut 22:29 के अनुसार) देना ही होगा।
- यह लड़की की हानि (उसकी कौमार्य खोना) के बदले न्याय और सम्मान की व्यवस्था है।

## **Meaning Today):**

## आज के मसीही विश्वास में:

- यह पद हमें पवित्रता और ज़िम्मेदारी सिखाता है – कि शारीरिक संबंध केवल विवाह के बाद ही उचित हैं।
  - प्रभु यीशु ने हमें सिखाया कि न केवल कार्य, बल्कि मन की लालसा भी पाप है (मत्ती 5:28)।
  - इस व्यवस्था का उद्देश्य था लड़की की मर्यादा की रक्षा और पुरुष द्वारा उसकी जिम्मेदारी को स्वीकार करना।

□ □ □ □ □ □ □ :

अगर कोई युवक किसी युवती को भावनात्मक रूप से बहलाकर विवाह से पहले संबंध बनाता है, तो बाइबिल यह सिखाती है कि वह उसके साथ विवाह करे या उसके लिए आर्थिक ज़िम्मेदारी उठाए – ताकि वह समाज में अपमानित न हो। यह सामाजिक न्याय और मर्यादा का सिद्धांत है।

**”हे प्रेमी प्रभु यीशू,**

आपने हमें पवित्रता और आत्मिक जिम्मेदारी सिखाई।

जब आप दोषरहित थे, तब भी पापिन स्त्री को पत्थर मारने से बचाया और उसे नया

जीवन दिया।

उसी करुणा से हमें भी भर दीजिए।

हमारी आँखों, विचारों और कार्यों को पवित्र कीजिए।

यदि हमने किसी की आत्मा या शरीर को चोट पहुँचाई हो, तो हमें अपने पापों को

मानकर सुधारने की शक्ति दीजिए।

हमें आपकी तरह प्रेम करना, क्षमा करना और मर्यादा में रहना सिखाइए।

प्रभु यीशु के नाम में मांगते हैं, आमीन।\*\*

❖ (Conclusion in Hindi):

निर्गमन 22:16 एक ऐसी व्यवस्था है जो लड़की की मर्यादा, पवित्रता और सामाजिक स्थिति की रक्षा के लिए बनाई गई थी। यह दिखाता है कि शारीरिक संबंध केवल विवाह के अंदर ही पवित्र होते हैं और अगर कोई लड़की को बहकाकर उसका फायदा उठाता है, तो उसे उसका दायित्व लेना चाहिए – या तो विवाह करके या आर्थिक रूप से उसकी भरपाई करके।

आज के मसीही जीवन में यह हमें पवित्र जीवन, सम्मानजनक व्यवहार, और प्रभु यीशु की

दया और न्याय को अपनाने की सीख देता है।

□ (Conclusion in Hindi) (22:17 - Hindi Bible):

परन्तु यदि उसका पिता उसे देने को बिल्कुल इनकार करे, तो कुकर्म करने

## वाला कन्याओं के मोल की रीति के अनुसार रूपये तौल देः॥

— निर्गमन 22:17 (*Hindi Bible - Pavitra Bible Society*)

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

यह पद एक ऐसी स्थिति के लिए है जहाँ कोई पुरुष किसी ऐसी कुंवारी लड़की के साथ यौन संबंध बनाता है जिसकी अभी मंगनी नहीं हुई है:

- यदि वह उसे बहलाकर या बहकाकर ऐसा करता है, तो वह व्यक्ति उस कन्या से विवाह करे और उसके पिता को विवाह के लिए दहेज (dowry) दे।
  - अगर पिता इस विवाह से इंकार करता है, तो भी वह व्यक्ति कन्याओं के सामान्य विवाह मूल्य (लगभग 50 चाँदी के सिक्के) के अनुसार मुआवज़ा देगा।
  - इसका उद्देश्य उस कन्या की इज़्ज़त, भविष्य, और विवाह की संभावनाओं की रक्षा करना है।
- 

□  
□ □ □ :

### **1. दहेज (Mohar):**

- राशी और चिज़कुनी बताते हैं कि सामान्य दहेज 50 रोकल था, जैसे बलात्कार के केस

में (व्यवस्थाविवरण 22:29)।

- शडाल और रेगियो बताते हैं कि यह भुगतान इस लिए है क्योंकि अब वह कन्या समाज में कम वांछनीय मानी जाएगी, इसलिए उसका विवाह करना कठिन हो जाएगा।

## 2. Ketubah (विवाह पत्र):

- रब्बी यिश्माएल (Torah Temimah) कहते हैं कि यह *mohar* असल में *ketubah* है – यहूदी विवाह अनुबंध जो एक महिला को विवाह में वित्तीय सुरक्षा देता है।
- कुछ रब्बियों ने शब्द "राहामा" को संख्यात्मक रूप से 200 जु़ज़ (zuz) बताया, जो एक कन्या की *ketubah* में होता है।

## 3. पिता और लड़की का अधिकार:

- Cassuto और चिज़कुनी कहते हैं कि विवाह करने का अंतिम निर्णय लड़की और उसके पिता के पास है।
- यदि वह इनकार करते हैं, तब भी पुरुष को पैसे देने होते हैं, लड़की के भविष्य के नुकसान की भरपाई के लिए।

## 4. व्यावहारिक उद्देश्य:

- यह कानून केवल न्याय के लिए नहीं है, बल्कि उस कन्या की मान-सम्मान और

**सामाजिक स्थिति को सुरक्षित रखने का उपाय भी है।**

---

□ □

□ □ □ □ □ □ :

## 1. प्रभु यीशु का दृष्टिकोण:

**यीशु मसीह ने स्त्रियों के प्रति सम्मान, करुणा और न्यायपूर्ण व्यवहार को प्रोत्साहित**

**किया। (यूहन्ना 8:3-11 - व्यभिचारिणी स्त्री)**

**उन्होंने स्त्री को मनुष्य की बराबरी में रखा, न कि किसी की संपत्ति के रूप में।**

## 2. मसीही चर्च में महत्वः

- **आज यह पद नैतिक शिक्षा, न्याय और लैंगिक समानता की दृष्टि से प्रासंगिक है।**
  - **यह हमें सिखाता है कि यौन संबंध केवल विवाह के अंदर सम्मानजनक हैं।**
  - **साथ ही, यह पद यह भी दर्शाता है कि यदि किसी की आज़ादी या सम्मान को ठेस पहुँचे, तो समाज और व्यक्ति को न्याय और प्रायश्चित के रूप में कदम उठाना चाहिए।**
- 

□ □

□ □ □ □ □ □ □ :

**”हे प्रभु यीशु,**

आपने हमें सिखाया कि हम एक दूसरे को शुद्धता, सम्मान और सच्चे प्रेम से देखें।

यदि हमसे कभी कोई गलती हो जाए, तो हमें साहस दो कि हम उसके लिए

उत्तरदायी बनें,

और उस व्यक्ति की मर्यादा और भविष्य की रक्षा करें।

जैसे आपने व्यभिचारिणी स्त्री को क्षमा किया, वैसे ही हमें भी दूसरों को न्याय के

साथ क्षमा और प्रेम देना सिखाये

हमारे समाज को ऐसा बना, जहाँ हर स्त्री और पुरुष को समान अधिकार, इज़्ज़त

और अवसर मिले।

**प्रभु यीशु मसीह के नाम में आमीन।” □**

✓ □ □ □ □ □ □ □ ( □ □ □ □ □ ):

- **निर्गमन 22:16-17** यौन नैतिकता, न्याय, और महिला की प्रतिष्ठा को संरक्षित करने का सिद्धांत प्रस्तुत करता है।
- यहूदी परंपरा में इसे 50 शेकल के भुगतान और विवाह या उसके बदले मुआवज़ा के रूप में देखा जाता है।
- **मसीही दृष्टिकोण** में यह पद हमें सिखाता है कि सच्चा प्रेम उत्तरदायित्व के साथ आता है, और गलती होने पर पश्चाताप और मर्यादा की पुनर्स्थापना परमेश्वर की

इच्छा है।

- यीशु मसीह का जीवन यही दिखाता है – पाप से उद्धार और सम्मान की पुनःस्थापना।
- 
- 

□ □□□□□□ 22:18 (□□□□□ □□□□□)

**"जादूगरनी को जीवित न रहने देना।"**

(Hindi Bible, Pavitra Bible Society version)

---

□ □□□□□ □□□ □□□□□ (□□□ □□□□□□ □□□)

इस पद में परमेश्वर कहता है कि जादू-टोना करनेवाली स्त्री को जीवित नहीं छोड़ा जाए।

यह एक कठोर आज्ञा है, जो दर्शाती है कि इसाएल के समाज में जादू-टोने, टोने-टोटके या

आत्मिक धोखे की कोई जगह नहीं थी। इस तरह की क्रियाएं मूर्तिपूजा, पाखंड और परमेश्वर की सत्ता को नकारने के समान मानी जाती थीं।

यहाँ "जादूगरनी" (מַחְשֵׁה - *mekhashéfah*) शब्द आया है, परन्तु रब्बियों ने समझाया है कि यह केवल स्त्री नहीं, पुरुष जादूगर (*mekhashéf*) पर भी लागू होता है।

---

□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□

□ □ □ □ □ □

## ❖ 1. "□□□□□□□" □□□ □□?

- महिलाएँ ही क्यों?

रब्बियों ने कहा कि स्त्रियाँ इस प्रकार की गुप्त साधनाओं में ज़्यादा लिप्त होती थीं,

इसलिए स्त्रीलिंग शब्द का प्रयोग किया गया, पर यह कानून दोनों लिंगों पर लागू है।

(संज्ञा के रूप में *mekhashefah* स्त्रीलिंग है)

- माया नहीं, असली कामः

रशी (Rashi) और अन्य रब्बियों ने समझाया कि यह निषेध केवल भ्रम या जादू के खेल

पर नहीं है, बल्कि उन पर है जो वास्तव में आत्मिक शक्तियों का दुरुपयोग करते हैं।

- छुपी हुई प्रथाएँ:

रशबाम (Rashbam) कहते हैं कि जादूगरनियाँ अक्सर अंधकारमय स्थानों जैसे गुफाओं

में छिपकर कार्य करती थीं, जिससे समाज को भ्रमित किया जा सके।

## □ 2. "□□□□□ □ □□□□ □□□□" — □□□□ □□□□ □□□□?

- नकारात्मक आज्ञा:

यह केवल दंड नहीं, एक सक्रिय चेतावनी है। "Lo tekhayeh" (הִתְחַיֵּה) एक

निषेधात्मक वाक्य है – इसका तात्पर्य है कि न्यायिक अधिकारी इसे नजरअंदाज़ नहीं

कर सकते।

- **तुरंत कार्रवाई की अनुमति:**

कुछ रब्बियों ने कहा कि यदि कोई जानता है कि कोई व्यक्ति जादू-टोना कर रहा है, तो उसे पकड़कर तुरंत न्याय की प्रक्रिया शुरू करनी चाहिए ताकि वह और नुकसान न पहुँचा सके।

- **उदाहरण:**

शिमोन बेन शेताख्बने अश्केलोन नगर में 80 स्त्रियों को एक दिन में फाँसी दी जो जादू-टोना कर रही थीं। यह दर्शाता है कि प्राचीन यहूदी समाज में इसे अत्यंत गंभीर अपराध माना जाता था।

---

□ 3. □□□□□□ □□□ □□ □□□□□?

- **बाइबल स्पष्ट नहीं कहती:**

यह पद सिर्फ "जीवित न रहने देना" कहता है, परंतु मृत्यु की विधि नहीं बताता।

- **रब्बी अकीवा के अनुसार:**

यह दंड पत्थर मारकर मरने (stoning) के समान है, जैसा कि मूर्तिपूजा या पशु-संबंधी पापों के लिए होता है।

---

□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□

□□?

A horizontal row of fifteen empty square boxes, followed by a vertical ellipsis (three dots) indicating continuation.

## 1. यीशु ने दया और उद्धार दिखाया:

जहाँ परमेश्वर ने पुराने नियम में कठोर दंड दिए, वही प्रभु यीशु मसीह ने गिरे हुए लोगों  
को मौका दिया बदलने का। वह पाप से घृणा करते हैं, पर पापी से प्रेम करते हैं।

## 2. चर्च का उत्तरदायित्वः

आज के चर्च को आत्मा की पहचान और परीक्षण करना चाहिए (1 यूहन्ना 4:1)।

- हमें जादू-टोने, तंत्र-मंत्र, ज्योतिष, क्रिस्टल हीलिंग, टैरोट कार्ड आदि से दूर रहना है।
  - ये सभी बातें आत्मिक धोखा हैं, जो विश्वासियों को प्रभु यीशु से दूर कर सकती हैं।

### 3. बाइबिल की सलाहः

- "अंधकार के निष्फल कामों में सहभागी न बनो, वरन् उन्हें प्रगट करो।"  
**(इफिसियों 5:11)**
  - "जो लोग जादू-टोना करते हैं... वे परमेश्वर के राज्य में भाग नहीं पाएंगे।" (गला.  
**5:19-21)**

**हे स्वर्गीय पिता,**

मैं आपका धन्यवाद करता हूँ कि आप एक सच्चे, शक्तिशाली और पवित्र परमेश्वर है।

प्रभु यीशु मसीह, आपने क्रूस पर मेरे लिए अपनी जान दी ताकि मैं अंधकार से निकलकर आपके प्रकाश में चल सकूँ।

मैं हर प्रकार की जादू-टोना, झूठी आत्माओं और दुष्ट प्रेरणाओं से इनकार करता हूँ।

मुझे आपकी पवित्र आत्मा से भर दे ताकि मैं आपकी इच्छा को समझ सकूँ और उसके अनुसार जीवन जी सकूँ।

जैसे आपने मरियम मगल्दली को छुड़ाया, वैसे ही मुझे और मेरे परिवार को भी हर आत्मिक बंधन से छुड़ा।

मुझे आपकी सुरक्षा, ज्ञान और आत्मिक विवेक दे।

प्रभु यीशु के नाम में मैं प्रार्थना करता हूँ।

आमीन।

## □ □ □ □ □ □ □ (Summary)

निर्गमन 22:17 एक गंभीर चेतावनी है कि जादू-टोना एक ऐसा पाप है जो केवल व्यक्ति को नहीं, पूरे समाज को आत्मिक रूप से भ्रष्ट करता है। रब्बी इसे मूर्तिपूजा, धोखा और सामाजिक खतरे से जोड़ते हैं। आज के युग में, यह हमें स्मरण कराता है कि हमें अपने जीवन से हर प्रकार की आत्मिक धोखेबाज़ी, टोना-टोटका, और झूठी शिक्षाओं को हटाना है। प्रभु यीशु मसीह ही हमारे लिए सच्चाई, जीवन और मार्ग हैं। उनके साथ चलकर ही हम आत्मिक रूप से सुरक्षित रह सकते हैं।

हैं।

---

□ 1. अवश्यकता का (अवश्यक विषय):

**निर्गमन 22:19 (Hindi Bible -ERV):**

“जो कोई किसी पशु से समागम करे, वह अवश्य मार डाला जाए।”

---

□ 2. अवश्यकता का विवरण:

यह वचन एक बहुत ही गंभीर और नैतिक रूप से भ्रष्ट कर्म - पशु के साथ शारीरिक संबंध

(bestiality) - के विरुद्ध है। यह केवल एक सामाजिक अपराध नहीं, बल्कि आत्मिक

अशुद्धता और ईश्वर की रचना का अपमान माना गया है।

- यह आज्ञा केवल पुरुष पर नहीं, स्त्री और पुरुष दोनों पर लागू होती है।
  - इस कुकर्म में जो व्यक्ति सक्रिय (करनेवाला) हो या निष्क्रिय (जिसके साथ हुआ), दोनों को मृत्युदंड की सज़ा दी जाती थी।
  - इसके अलावा, वह पशु भी मार दिया जाता था, जिससे यह पाप हुआ।
- 

□ 3. अवश्यकता का विवरण:

□ (1) □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□:

- हिन्दू में “*הַמְבָּהֵם*” (*im behemah*) – ”पशु के साथ” – यह ”*im*” शब्द का प्रयोग दर्शाता है कि दोनों पक्ष दोषी हैं।
- *HaKtav VeHaKabalah* और *Torah Temimah* बताते हैं कि प्रथम दृष्ट्या दोनों - **व्यक्ति और पशु - को मारना अनिवार्य है**, क्योंकि यह पाप एकदूसरे की भागीदारी से होता है।

□ (2) □□□□ □□□□□□□:

- इस अपराध की सुनवाई एक 23 सदस्यीय यहूदी अदालत (*Sanhedrin*) करती थी, जैसे हत्या के मामलों में होता है।

□ (3) □□□ – □□□□□□ (stoning):

- *राशी (Rashi)* और *Chizkuni* बताते हैं कि ”मौत की सज़ा“ का अर्थ है – पत्थरबाह द्वारा मृत्यु।
- यह निर्णय **लैब्यवस्था 20:16** में ”उनका खून उन पर होगा“ इस वाक्य पर आधारित है।

□ (4) □□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□:

- *Shadal* और *Cassuto* बताते हैं कि यह व्यवहार **मूर्तिपूजक संस्कृतियों** में प्रचलित था (जैसे मिस्र या कनान में) जहाँ पशुओं को देवी/देवता माना जाता था।

- *Bekhor Shor* और *Haamek Davar* यह भी बताते हैं कि जादू-टोना (witchcraft)

और पशु के साथ संबंध आत्मिक भ्रष्टता और बुरी आत्माओं की उपस्थिति को दर्शाते हैं।

- उदाहरण: बालाम (Balaam) और उसका गधा (गिनती 22) - इसे कुछ रब्बी एक छिपे संकेत के रूप में देखते हैं।
- 

#### □ 4. □□□□□ □□□□□□□□ (Christian Perspective Today):

✓(1) □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□:

- यद्यपि मसीही विश्वासी पुरानी व्यवस्था के दंड कानून का पालन नहीं करते (जैसे पत्थरवाह), परंतु नैतिक सिद्धांत आज भी पवित्रता और शुद्धता की दृष्टि से लागू होते हैं।

✓(2) □□□ □□□□ □□□ □□□□□□:

- पौलुस कहता है:

“अपने शरीर को पवित्र बनाए रखो, क्योंकि यह पवित्र आत्मा का मंदिर है।” (1 कुरन्यियों 6:19-20)

- मसीही विश्वास में, इस प्रकार के पाप को “शरीर को भ्रष्ट करनेवाला” माना जाता है

(रोमियों 1:24-27)।

✓(3) इस वाक्य के अनुवान है – मनुष्य को पशुओं पर  
अधिकार दिया गया, न कि उनके साथ संबंध बनाने का अधिकार।

---

□ 5. इस वाक्य के अनुवान (इस वाक्य के अनुवान  
पर ध्यान दें):

**प्रार्थना - शुद्धता और आत्मिक बल के लिए (Inspired by Jesus in the wilderness –**

**Matthew 4:1-11):**

हे स्वर्गीय पिता,

आपने मुझे अपने स्वरूप में बनाया है।

मेरे हृदय को, मेरी सोच को, और मेरे शरीर को शुद्ध रख।

जैसे प्रभु यीशु ने शैतान के प्रलोभनों का सामना किया और आपका वचन थामा,

वैसे ही मुझे भी हर पाप की इच्छा से मुक्ति दे।

मुझे आत्मिक विवेक दे, कि मैं आपकी इच्छा को समझूँ और जी सकूँ।

हे पवित्र आत्मा, मेरी रक्षा कर, ताकि मैं शुद्धता और पवित्रता में चलूँ।

प्रभु यीशु के नाम में माँगता हूँ,

आमीन।

## □ 6. □□□□□□□ (Conclusion):

- निर्गमन 22:18 एक गंभीर नैतिक अपराध की ओर संकेत करता है, जो केवल **शारीरिक नहीं बल्कि आत्मिक अशुद्धता है।**
- रबियों ने इसे दंडनीय अपराध माना और यहां न्याय प्रणाली में इसकी पुष्टि की।
- मसीही दृष्टिकोण में, यद्यपि दंड लागू नहीं होता, लेकिन पवित्रता की बुलाहट आज भी **कायम है।**
- यह वचन हमें जीवन की शुद्धता, देह की पवित्रता और आत्मिक विवेक को बनाए **रखने की शिक्षा देता है।**
- प्रभु यीशु का जीवन और उनका आत्म-नियंत्रण हमें प्रेरित करता है कि हम संसार की **बुराइयों से दूर रहकर ईश्वर की महिमा के लिए जीएं।**

## □ 1. □□□□□ □□ (□□□□□ □□□):

### निर्गमन 22:20 (Hindi ERV):

**"जो कोई यहोवा को छोड़ किसी अन्य देवता के लिये बलिदान करे, वह पूरी रीति से नाश किया जाए।"**

(English KJV: "He that sacrificeth unto any god, save unto the Lord only, he shall be utterly destroyed.")

---

□ 2. □□□ □□□□□ □□□ □□□□□□□:

यह पद यह सिखाता है कि:

- यहोवा के अलावा किसी और को बलिदान चढ़ाना (यानी किसी और को पूज्य मानकर उसकी सेवा करना) परम निषिद्ध है।
  - ऐसा करने वाला नाश (पूर्ण विनाश) का भागी होगा।
  - इस पद का मुख्य उद्देश्य ईश्वर की उपासना की शुद्धता को बनाए रखना है – कोई भी मिश्रित या दोहरी भक्ति (dual worship) स्वीकार्य नहीं है।
- 

□ 3. □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□  
□□□□□□:

□ Rashi (רashi):

- “לֹא־ה' לְאֱלֹהִים” (ल'एलोहीम) शब्द में *patach* या *kametz* होने से स्पष्ट है कि यह झूठे देवताओं/मूर्तियों की ओर इशारा करता है।
- यदि यह बलिदान यहोवा को दिया गया होता तो *tzere* होता।

- यदि कोई व्यक्ति मंदिर जैसी उपासना विधियाँ जैसे बलिदान, धूप, अर्घ आदि मूर्तियों को चढ़ाए, तो उसे मृत्यु दंड मिलता है।

□ Ibn Ezra (इब्न ईज़्रा):

- “לְאֱלֹהִים” शब्द का अर्थ है - विदेशियों (strangers) के पूज्य देवता।
- यह पद दिखाता है कि यह निषेध सिर्फ इमाएलियों पर नहीं, बल्कि धर्मान्तरितों (converts) पर भी लागू होता है।

□ Ramban (राम्बन):

- बलिदान केवल यहोवा को हो सकता है। अगर कोई और को देता है, तो यह दस आज्ञाओं का उल्लंघन है।
- “מְרֻמָּא” (याख्यार) का अर्थ है - मृत्यु और सम्पत्ति की समाप्ति, यानी पूरी तरह से मिटा दिया जाना।

□ Bekhor Shor:

- यह वचन टोने-टोटके करने वालों पर भी लागू होता है जो दानवों या आत्माओं को धूप अर्पित करते थे।

□ Malbim:

- यह पद बताता है कि यहाँ तक कि अगर कोई यहोवा के साथ किसी और को भी पूजे,

**जैसे कि कूथियों (Cuthites) ने किया, तो भी वह पाप है।**

□ **Rabbeinu Bahya:**

**वह बताते हैं कि बलिदान मूर्ति या फरिश्तों को देना भी घोर पाप है, क्योंकि इससे**

**परमेश्वर का अपमान होता है।**

□ **Haamek Davar:**

- इस पद में उल्लिखित बलिदान का संबंध गुप्त (internal) पूजा क्रियाओं से है, जैसे धूप, अर्ध देना आदि।
- 

□ **4. रामायण का विवरण:**

✓**1. रामायण का विवरण:**

- यह पद ईश्वर की विशिष्टता और पूर्ण भक्ति पर बल देता है – यह मसीही विश्वास का मूल स्तंभ है:

**“तू प्रभु अपने परमेश्वर को ही दंडवत कर और उसी की सेवा कर।” - मत्ती 4:10**

✓**2. रामायण का विवरण:**

- प्रभु यीशु ने हमें सिखाया कि परमेश्वर को पूरे मन, प्राण और बल से प्रेम करना ही सच्ची उपासना है (मत्ती 22:37)।

**✓3.** □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

- आज चर्च में इस पद का अर्थ यह है कि हमारी निष्ठा, आराधना और समर्पण केवल और केवल प्रभु यीशु के प्रति होनी चाहिए।
  - कोई भी मिश्रित भक्ति (जैसे यीशु + कोई और गुरु, संत, या आध्यात्मिक शक्ति) निंदनीय और अस्वीकार्य है।

**5.** ( ):

**प्रार्थना - एकनिष्ठ भक्ति के लिए (Inspired by Jesus' response to Satan in the wilderness, Matthew 4:10):**

हे प्रभु यीशा,

जैसे आपने जंगल में शैतान को उत्तर दिया:

“तू प्रभु अपने परमेश्वर को ही दंडवत कर, और उसी की सेवा कर,”

वैसे ही मैं भी अपने हृदय को, आत्मा को और बल को केवल आपके ही चरणों में

अर्पित करता हूँ।

आप ही मेरे उद्धारकर्ता हैं, आप ही मेरे राजा हैं, और आप ही मेरे एकमात्र

परमेश्वर है।

मुझे संसार की झूठी आत्माओं, झूठे देवताओं और मिथ्या आशाओं से दूर रख।

मेरी आराधना, मेरी सेवा और मेरा बलिदान केवल आपमें केंद्रित हो।

हे प्रभु यीशु मुझे पवित्र आत्मा से भर, और मुझे आपका शुद्ध और निष्कलंक  
आराधक बना।

प्रभु यीशु के सामर्थी नाम में,

आमीन।

---

## □ 6. □□□□□□□ (Conclusion):

- निर्गमन 22:20 हमें सिखाता है कि एक सच्चे परमेश्वर की आराधना ही स्वीकार्य है -  
कोई मिश्रण नहीं।
  - यह पद यहूदियों और मसीहियों दोनों के लिए एकेश्वरवाद (Monotheism) की नींव है।
  - रब्बियों ने इस पद को मूर्तिपूजा के विरुद्ध गहन चेतावनी के रूप में देखा है।
  - यीशु मसीह का जीवन इस सच्चाई की पूर्ण अभिव्यक्ति है - एकनिष्ठ भक्ति, और  
परमेश्वर की आराधना में पूर्ण समर्पण।
  - आज के मसीही चर्च के लिए यह पद भक्ति की शुद्धता, आत्मिक जागरूकता और  
परमेश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण का आत्मान है।
-

## निर्गमन 22:21:

"तू परदेशी पर अन्धेर न करना और न उसे दबाना, क्योंकि तुम भी मिस्र देश में

परदेशी थे।"

---

□ □

यह आज्ञा परमेश्वर द्वारा इस्राएलियों को दी गई थी कि वे परदेशी यानी जो बाहर से आए हैं, उन्हें सताएं नहीं, क्योंकि वे स्वयं मिस्र में परदेशी रह चुके थे। इस आज्ञा में करुणा, सहानुभूति, और न्याय की मांग की गई है।

- "अन्धेर न करना" (הַגָּת אֶל - Lo Tona) का अर्थ है: शब्दों से सताना, ताना मारना, अपमानित करना।
- "न उसे दबाना" (הַלְא תִּלְחַצֵּן - Velo Tilchatzenu) का अर्थ है: धन, अधिकार या स्थिति का अनुचित उपयोग करके उसे शोषण करना।

यह शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक उत्पीड़न से दूर रहने का आदेश है।

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ (Rashi):

- "तू मत कहना परदेशी को कि तू पहले मूर्तिपूजक था," क्योंकि वह भी उत्तर देगा कि "तू भी कभी मिस्र में परदेशी था।"

□ □□□□ (Nachmanides):

- यह आज्ञा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर स्वयं परदेशियों की रक्षा करता है। मिस्र में  
इसाएलियों को जैसे परमेश्वर ने छुड़ाया, वैसे ही वह परदेशियों के लिए न्याय करता है।

□ □□□ □□□ (Ibn Ezra):

- कहता है कि इसाएली अब शक्तिशाली हैं, लेकिन उन्हें याद रखना है कि वे भी एक  
समय पर कमज़ोर थे, इसलिए घमंड न करें।

□ □□ □□□ (Rav Hirsch):

- यह "मानव समानता" की शिक्षा है – हर किसी का मूल्य उसकी आत्मिक स्थिति से है,  
न कि जाति या जन्म से।

□ □□□ □□□□ (Torah Temimah):

- बताता है कि इस एक विषय (परदेशियों के साथ व्यवहार) पर तोरा में 36 से 46 बार  
चेतावनी दी गई है। इससे पता चलता है कि परमेश्वर का हृदय परदेशियों के लिए  
कोमल है।

□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□:

- परदेशी कमज़ोर होते हैं, इसलिए उन्हें कानूनी सुरक्षा और दया की आवश्यकता होती है।

प्रभु यीशु मसीह ने इस आज्ञा को अपने जीवन और शिक्षाओं में सिद्ध कर दिया।

□ □□□ □ □ □□□□□□□:

- प्रभु यीशु ने हमेशा परदेशियों, पापियों, और उपेक्षितों को अपनाया (जैसे शमरोनी स्त्री, सूअर चराने वाला बेटा, कर लेने वाला जक्कई)।
- मत्ती 25:35 में यीशु कहता है:  
"मैं परदेशी था और तुम ने मुझे अपने घर में ठहराया।"

□ □ □ □ □□□□ □□□□ □□□:

- यह पद आज भी सामाजिक न्याय, शरणार्थियों, गरीबों और अल्पसंख्यकों की सेवा में प्रेरणा देता है।
- यह मसीही विश्वासियों को याद दिलाता है कि हम सब इस धरती पर "परदेशी और यात्री" हैं (1 पतरस 2:11)।

□ □□□□ □□□□ □ □ □□□ □ □ □□□□□□ □ □ □□□□□□□□

"हे प्रभु यीशु मसीह, जिसने हर परदेशी और तिरस्कृत को अपनाया, मुझे भी एक दयालु और न्यायप्रिय हृदय दे। जैसे आपने शमरोनी स्त्री से बात की, वैसे ही मुझे भी हर जाति और पृष्ठभूमि के लोगों से प्रेम करना सिखा। मेरी वाणी से कभी तिरस्कार या अपमान न निकले। मुझे आपकी तरह करुणाशील बना, जो न्याय और सत्य में

चलता है। प्रभु यीशु मसीह के नाम में आमेन।”

---

□ □ □ □ □ □ □ □

**निर्गमन 22:21** सिर्फ एक सामाजिक कानून नहीं, बल्कि एक आत्मिक सिद्धांत है:

- यह करुणा का कानून है – अजनबी के लिए।
  - यह याद का कानून है – हमारे अतीत को न भूलें।
  - यह परमेश्वर के हृदय का प्रकटीकरण है – वह उपेक्षितों के साथ खड़ा होता है।
  - मसीही दृष्टिकोण में, यीशु मसीह ने इस आज्ञा को पूर्णतः जीवित करके दिखाया।
- 

□ 1. □ □ □ □ □ □ □ (□ □ □ □ □ □ □)

**निर्गमन 22:22 (Exodus 22:21):**

“तू किसी विधवा या अनाथ को दुःख न देना।”

(अनुवाद: Hindi Bible, BSI)

---

□ 2. □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

यह पद एक अत्यंत गंभीर चेतावनी है। इसमें परमेश्वर सीधे तौर पर कह रहे हैं कि विधवाओं

और अनाथों को दुःख, पीड़ा या शोषण मत करना।

- "विधवा (הננה אלמןא - Almanah)": ऐसी स्त्री जिसने अपने पति को खो दिया है। चाहे वह अमीर हो या गरीब, वह भावनात्मक रूप से अकेली और असहाय मानी जाती है। रब्बियों के अनुसार, विधवा का "मुँह" नहीं होता - यानी कोई जो उसके लिए बोले, वह नहीं रहता।
- "अनाथ (yatōm)": ऐसे बच्चे जिनके पिता नहीं हैं। पिता की कमी उन्हें मार्गदर्शन, सुरक्षा और संरक्षण से वंचित कर देती है। उन्हें "हाथ" नहीं माना जाता - यानी जो उन्हें धार्म।
- "दुःख न देना (לען תען - Lo Te'anun)": यह शारीरिक ही नहीं, बल्कि मानसिक, भावनात्मक, और कानूनी उत्पीड़न से भी संबंधित है। इसका अर्थ है उन्हें अपमानित न करना, उनका हक न छीनना, और ना ही उन्हें उपेक्षित समझना।

□ 3. □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□

□ 1. □□□□ (Rashi):

- कहते हैं कि यह आज्ञा विशेष रूप से विधवाओं और अनाथों के लिए है क्योंकि ये सबसे अधिक पीड़ित होते हैं, लेकिन यह हर व्यक्ति पर लागू होती है। विधवाएं-अनाथ केवल उदाहरण हैं।

□ 2. □□□□□□□□ □□ □□□ □□□□□ (Mekhilta, Gur Aryeh):

- "תענו לא" के बहुवचन रूप से निष्कर्ष निकाला कि यह आज्ञा पूरे समाज के लिए है। जो उत्पीड़न होते देखकर चुप रहते हैं, वे भी दोषी हैं।

□ 3. नाख्मानिडेस (Nachmanides):

- कहते हैं कि धनी विधवाएं भी इस संरक्षण में आती हैं क्योंकि वे भीतर से टूटी होती हैं। उत्पीड़न का परिणाम भी गंभीर है - जो ऐसा करेगा, उसके घर की स्त्रियाँ विधवा और बच्चे अनाथ होंगे।

□ 4. रव हिर्श (Rav Hirsch):

- "उन्हें उनकी दुर्बलता का अहसास मत कराओ" - यह चेतावनी समाज के लिए है कि कमज़ोर को कमज़ोर महसूस मत कराओ। यह उच्च नैतिकता की मांग है।

□ 5. चिज्कुनी (Chizkuni):

- "לו" (कोई भी) शब्द यह दिखाता है कि यह हर विधवा/अनाथ पर लागू है, चाहे वह अमीर हो या गरीब। बहुवचन रूप इसलिए है कि देखने वाले जो विरोध नहीं करते, वे भी दोषी हैं।

□ 6. रबीयोसे चाइम (Rabbi Yosef Chaim):

- उदाहरण: एक अनाथ के केस में देरी करना, न्याय में फिलाई, या उसकी संपत्ति का अनुचित प्रयोग - ये सब उत्पीड़न की श्रेणी में आते हैं।

□ 7. ଅଲ୍ଶେଖ (Alshekh):

- "הַגְּנָבָה תִּגְנַּבְתָּ" दोहराए जाने से यह दोहरी पीड़ा दर्शाता है – एक तो उत्पीड़न, और दूसरा उनके अपने नुकसान की याद दिलाना। जैसे विधवा कहती है, "अगर मेरा पति होता, तो..." – ये भावनात्मक घाव हैं।

□ 8. ରାଲ୍ବାଗ (Ralbag):

- यह केवल शारीरिक उत्पीड़न नहीं, बल्कि शब्दों और व्यवहार से दुख पहुंचाना भी पाप है।

□ 9. ଇବନ୍ ଇସ୍ରା (Ibn Ezra):

- उत्पीड़न को देखकर चुप रहने वाला भी उसी दंड का अधिकारी है।

□ 10. ସଫରୋନୋରୋ (Sforno):

- यदि अनाथ को सिखाने के लिए थोड़ा सख्त व्यवहार किया जाए, पर वह उनके लाभ के लिए हो – तो वह प्रेम का कार्य माना जा सकता है।

□ 4. ପ୍ରଭୁ ଯୀଶୁ ମସୀହ କି ଦୃଷ୍ଟି:

प्रभु यीशु मसीह ने अपने पूरे सेवकाई जीवन में विधवाओं और अनाथों जैसे कमज़ोर वर्गों

को अपनाया।

□ □ □ □ □ □ :

**लूका 7:12-15:** नाईन नगर की विधवा का बेटा - यीशु ने न केवल उसे सांत्वना दी, बल्कि

उसके बेटे को पुनर्जीवित कर दिया।

**मत्ती 23:14:** यीशु ने धार्मिक नेताओं को डांटा क्योंकि वे विधवाओं के घरों को निगलते थे।

**याकूब 1:27:** "पवित्र और निष्कलंक धर्म यह है कि अनाथों और विधवाओं की उनके कष में

सुधि लेना।"

## चर्च की भूमिका:

- चर्चों को विधवाओं, अनाथों, अकेले रहने वालों, और कमज़ोर लोगों की सेवा करने के लिए बुलाया गया है – यह सेवा केवल दया नहीं, बल्कि एक ईश्वरीय आदेश है।

□ 5. □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □ □ □

## प्रार्थना:

"हे मेरे प्रभु यीशु मसीह, आपने हर विधवा और अनाथ की करुणा से सहायता की।

जैसे आपने नाईन की विधवा को सांत्वना दी, वैसे ही मुझे भी ऐसा हृदय दे जो दुःखी को अपनाए। मुझे कभी किसी कमज़ोर व्यक्ति को दुःख देने वाला नहीं, बल्कि

आशा देने वाला बना। मेरी आंखें देख सकें, मेरे कान सुन सकें, और मेरा दिल तेरे  
 समान दया से भर जाए। मेरी वाणी कभी किसी को नीचा न दिखाए। मैं आपके  
 अनुग्रह से प्रेम करना, न्याय करना और नप्रता से चलना चाहता हूँ। प्रभु यीशु मसीह  
 के नाम से प्रार्थना करता हूँ आमेन।”

---

## □ 6. □□□□□□□

**निर्गमन 22:22** एक गहरा सामाजिक और आत्मिक सिद्धांत प्रस्तुत करता है:

- यह हमें सिखाता है कि समाज के सबसे कमज़ोर सदस्यों की रक्षा और सम्मान हमारा  
 कर्तव्य है।
  - रब्बी बताते हैं कि उत्पीड़न केवल बाहरी नहीं, बल्कि शब्दों, व्यवहार और चुप्पी से भी  
 होता है।
  - प्रभु यीशु मसीह ने इस आज्ञा को न केवल सिखाया, बल्कि जीवित करके दिखाया।
  - आज का चर्च भी बुलाया गया है कि वह विधवाओं और अनाथों के लिए एक प्रेमपूर्ण  
 आश्रय बने।
- 

## □□□□□□ 22:23 (Hindi Bible):

“यदि तू उनको किसी प्रकार से कष्ट देगा, और वह मुझ से दुहाई देंगे, तो मैं निश्चय ही उनकी  
 दुहाई सुनूंगा।”

---

❖ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

यह पद उन लोगों के लिए चेतावनी है जो विधवाओं और अनाथों को कष्ट देते हैं। इस पद में परमेश्वर कहता है कि यदि वे मुझसे दुहाई देंगे, तो मैं उनकी सुनूंगा, और तुम पर दंड लाऊंगा, ताकि तुम्हारी पत्नियां विधवा और तुम्हारे बच्चे अनाथ हो जाएं।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

1. वह परमेश्वर स्वयं उनकी ओर से लड़ेगा।
  2. माप तौल कर (measure for measure) दंड देगा, जैसा तुमने किया वैसा तुम्हारे साथ होगा।
- 

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

□ 1. □ □ □ □ □' □ □ □ □ □ □ □ □ (Measure for Measure – □ □ □ □ □ □ □ □ □ □)

- Rashbam, Chizkuni, Cassuto, Steinsaltz: अगर कोई अनाथ या विधवा को पीड़ित करता है, तो बदले में उसकी पत्नी विधवा और उसके बच्चे अनाथ हो जाएंगे।
- उदाहरण: कोई धनी व्यक्ति किसी गरीब विधवा को कानूनी मदद देने से इंकार करता है। उसका उद्देश्य सिर्फ खुद को लाभ पहुँचाना है। यदि विधवा परमेश्वर से दुहाई देती है, तो उसकी ही पत्नी युद्ध में विधवा हो सकती है।

□ 2. □ □ □ □ □ □ □ □ :

- Sforno: यह वही क्रोध है जो परमेश्वर ने मिस्र में इस्राएलियों के दुःख को देखकर प्रकट किया था।

- **Chibbah Yeteirah:** अनाथों और विधवाओं का दर्द समझाना जरूरी है, इसलिए

**परमेश्वर स्वयं चेतावनी देता है।**

□ 3. □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□□□:

- **Haamek Davar:** विधवा की पुकार पूरी होने से पहले ही परमेश्वर न्याय करता है।

- **Tur HaArokh:** विधवा और अनाथ के पास संसारिक सहायता नहीं होती, इसलिए

**परमेश्वर उनकी ओर से खुद खड़ा होता है।**

□ 4. □□□ □□ □□□□□□:

- **Rashi:** यह केवल मृत्यु नहीं, बल्कि "जीवित विधवापन" है - जब पति का पता न हो और पत्नी विवाह न कर सके।

- **Rabbi Eliezer (Torah Temimah):** बच्चे उत्तराधिकार नहीं पा सकते क्योंकि पिता की मृत्यु प्रमाणित नहीं हो सकती।

❖ 5. □□□□ □□□□ □□ □□□□□:

- **Malbim और Talmud:** विधवाओं के साथ दुर्व्यवहार के कारण बारिश रुक जाती है, युद्ध

**आते हैं।**

- **Kitzur Ba'al HaTurim:** ब्याज लेना और अनाथों का धन हड़पना भी इसी श्रेणी का

**पाप है।**

- Shadal: यह दंड लोगों के हृदय को द्रवित करने के लिए है कि वे विधवाओं के दुःख को महसूस करें।

1. यीशु मसीह ने बार-बार दुखी और उपेक्षित लोगों की चिंता की, जैसे विधवा नाइन (लूका 7:11-17), जिसने अपना इकलौता पुत्र खो दिया था।
  2. याकूब 1:27: "परमेश्वर और पिता की दृष्टि में शुद्ध और निर्मल धर्म यही है, कि अनाथों और विधवाओं की उनकी कठिनाई में सुधि लेना।"
  3. मसीही चर्चों में आज भी "विधवाओं और अनाथों की सेवा" को एक पवित्र कार्य माना जाता है, और इसके लिए कई सेवा संस्थाएं भी हैं।

प्रार्थना:

## हे प्रेममय पिता परमेश्वर,

आप वह हैं जो विधवाओं और अनाथों का न्याय करता है, और आपने अपने पुत्र  
यीश मसीह को भेजा ताकि वह हर टूटी आत्मा को चंगा करे।

हे प्रभु यीशु, आपने नाइन की विधवा पर दया की, उसके दुःख को देखा और उसे

**सांत्वना दी।**

उसी करुणा से हमें भी भर दे, ताकि हम किसी को पीड़ा न पहुँचाएँ, विशेषकर उन लोगों को जो अकेले, असहाय और दुखी हैं।

हमें ऐसा हृदय दे जो तुझसे डरता है और दूसरों के लिए कोमलता से भरा हो।

जब हम गलती करें, तब हमारी आत्मा को झकझोर दे, और हमें सुधार दे।

हम भी तेरे समान प्रेम और दया में चलें।

**प्रभु यीशु के नाम में मांगते हैं, आमीन।**

✓□□□□□□□:

- यह पद एक गम्भीर चेतावनी है कि विधवाओं और अनाथों के साथ अन्याय करना, स्वयं अपने ऊपर न्याय बुलाना है।
- परमेश्वर उनकी पुकार को अवश्य सुनता है।
- रबियों की व्याख्याएं बताती हैं कि यह केवल शारीरिक नहीं, भावनात्मक और कानूनी उत्पीड़न पर भी लागू है।
- मसीही विश्वास में भी यह गहराई से जुड़ा हुआ है, क्योंकि यीशु स्वयं दया और करुणा का उदाहरण हैं।
- हमें प्रभु की तरह सहानुभूति और न्याय से भरकर जीना चाहिए।

□ □□□□□□ 22:24 (Hindi Bible)

**निर्गमन 22:23-24**

**और मेरा क्रोध भड़क उठेगा, और मैं तलवार से तुम्हें घात करूँगा, और तुम्हारी स्त्रियाँ विधवा और तुम्हारे लड़के अनाथ हो जाएंगे।"**

(*Hindi Bible:ERV*)

□ □□□□□ □□□ □□□□□□□□

इस पद में परमेश्वर विधवाओं और अनाथों की रक्षा के लिए बहुत सख्त चेतावनी देते हैं।

- यदि कोई उन्हें दुःख देता है और वे परमेश्वर से फरियाद करते हैं, तो परमेश्वर निश्चय उनकी पुकार सुनते हैं।
- और परिणामस्वरूप, दण्ड "माप के बदले माप" के सिद्धांत पर आधारित है-जैसे उन्होंने दूसरों को अनाथ और विधवा बनाया, वैसा ही उनके साथ होगा।
- यह दर्शाता है कि परमेश्वर कमज़ोरों के प्रति कितने संवेदनशील और न्यायप्रिय हैं।

□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□

#### 1. Bekhor Shor

- "अगर तुम उन्हें दुःख दो" यह वाक्यांश दोहराया गया है ताकि यह स्पष्ट हो जाए कि

## परमेश्वर निश्चित रूप से प्रतिक्रिया देंगे।

- उदाहरण: यदि कोई वारिस अपनी सम्पत्ति नष्ट करता है, तो वह जान-बूझकर हानि करता है—वैसे ही विधवाओं और अनाथों को नुकसान देना जानबूझकर अपराध है।

### 2. Birkat Asher (Ibn Ezra)

- एक व्यक्ति विधवा को तंग कर रहा है, और दूसरा यह देखकर भी चुप है—तो वह चुप रहने वाला भी दोषी है।

### 3. Cassuto

- माप के बदले माप: जिस प्रकार तुमने दूसरों को दुख दिया, वैसा ही दुख तुम्हारी पत्नी और बच्चों को मिलेगा।

### 4. Chibbah Yetereah

- इसाएली मिस्र में परदेशी थे, इसलिए वे परदेशी का दुख समझ सकते थे—but वे विधवाओं/अनाथों का दुख नहीं समझते थे।
- इसलिए परमेश्वर ने सख्त दण्ड बताया।

### 5. Haamek Davar

- युद्ध और विनाश के समय विधवाओं की कराह विशेष रूप से परमेश्वर को झकझोरती है।

## 6. Malbim

- माइमोनिडीज ने कहा कि परमेश्वर का क्रोध केवल मूर्तिपूजा पर होता है, लेकिन इस पद में अन्याय के लिए भी परमेश्वर का क्रोध दिखाई देता है।

## 7. Rashi

- "तुम्हारी स्त्रियाँ विधवा होंगी" - इसका अर्थ यह नहीं कि वे केवल पति के मरने से विधवा होंगी, बल्कि वे ऐसे विधवा होंगी जिनके पति के मारे जाने का कोई गवाह नहीं होगा, जिससे वे पुनः विवाह नहीं कर सकेंगी।

## 8. Rabbeinu Bahya

- जो विधवाओं और अनाथों से दया करते हैं, वे परमेश्वर की दया के पात्र बनते हैं-even अगर उनके ऊपर न्याय का निर्णय हो चुका हो।

## 9. Sforno

- परमेश्वर मिश्रियों से जैसे क्रोधित हुए, वैसे ही क्रोध उनपर भी आता है जो विधवाओं को सताते हैं।

## 10. Torah Temimah

कहता है कि विधवाएं और अनाथ पुनर्विवाह या संपत्ति की इच्छा करेंगे, परंतु उनका मार्ग अवरुद्ध रहेगा।



## 1. यीशु मसीह का हृदय दया से भरपूर था।

- **लूका 7:12-15 में, जब वह एक विधवा के बेटे को मरा हुआ देखता है, तो वह उसे जीवित करता है।**
- **मत्ती 18:6 में, यीशु कहते हैं: “जो इन छोटे में से एक को गिराएगा, उसके लिए चक्की का पाट गले में लटकाकर समुद्र में डाल दिया जाना अच्छा है।”**

## 2. चर्च की जिम्मेदारी है कि वह समाज के कमज़ोर वर्गों की रक्षा करे।

- **याकूब 1:27: “परमेश्वर के सामने शुद्ध और निर्मल भवित्ति यही है—कि अनाथों और विधवाओं की उनकी दुख-पीड़ा में सुधि ली जाए।”**

## 3. आधुनिक चर्च में सीख़:

- **चर्चों को अनाथों, विधवाओं, बेसहारा महिलाओं, और पीड़ितों के लिए समर्पित सेवाएं आरंभ करनी चाहिए।**
- **यदि कोई मसीही विधवा को दुःख पहुंचाता है, तो वह न केवल सामाजिक रूप से, बल्कि आत्मिक रूप से भी परमेश्वर के न्याय का पात्र बनता है।**



## प्रार्थना:

हे प्रेमी प्रभु यीशु मसीह

जैसे आपने नाइन की विधवा के आंसू देखे और उसके पुत्र को पुनर्जीवित किया,

वैसे ही हमें भी आपकी सी दृष्टि और दया दे,

कि हम विधवाओं, अनाथों, और दुखी जनों को सम्मान दें।

हमें संवेदनशील हृदय दे कि हम उनकी पुकार अनसुनी न करें।

हमें वह प्रेम दे जो आपने क्रूस पर दिखाया,

ताकि हम तेरा प्रतिनिधि बनकर अन्याय के विरुद्ध खड़े हो सकें।

प्रभु यीशु मसीह के नाम में प्रार्थना करते हैं—आमीन।



- **निर्गमन 22:23-24** एक गहरी चेतावनी है कि परमेश्वर कमज़ोरों की पुकार को नजरअंदाज नहीं करते।
- यहां दीर्घियों की व्याख्या से हमें यह समझ आता है कि यह न्याय "माप के बदले माप" का है।
- **यीशु मसीह का जीवन, दया और करुणा** का एक जीवंत उदाहरण है—विशेषकर समाज के हाशिए पर खड़े लोगों के लिए।
- आज का चर्च उनकी करुणा को प्रतिर्द्वित करने के लिए बुलाया गया है—विशेषकर विधवाओं और अनाथों के लिए।

यदि आप चाहें, मैं इस विषय पर एक चर्चा बाइबल अध्ययन गाइड भी तैयार कर सकता हूँ या  
युवा समूह के लिए प्रस्तुति बना सकता हूँ।

P221 De.21:11 Captive women treated according to special regulations

---

**बाइबल पद - व्यवस्थाविवरण 21:11-14 (Hindi Bible)**

11 और यदि तू बंधुओं में किसी रमणी को जो रूपवती हो देखे, और तू उसे

**चाहता हो कि**

यह आदेश युद्ध में बंदी बनाई गई स्त्रियों के संदर्भ में है, जहाँ एक इसाएली सैनिक किसी

सुंदर स्त्री को देखकर उसकी इच्छा करता है। परमेश्वर उसकी वासना के आगे झुकने की

**अनुमति देता है – लेकिन कुछ शर्तों के साथ।**

1. **सैनिक उसे युद्ध में जबरन नहीं ले सकता।**

2. **उसे अपने घर लाकर, उसे एक महीने का समय देना होगा, जहाँ वह अपने माता-पिता**

**के लिए शोक मनाए।**

**3. उसका सिर मुँडवाना, नाखून बढ़ाना/कटवाना, और बंदी के वस्त्र उतारना - ये सब**

उसकी सुंदरता को कम करने और उसकी पहचान को बदलने का प्रतीक है।

**4. इस समय के बाद, यदि सैनिक फिर भी उसे चाहता है तो वह उससे विवाह कर सकता है।**

**5. परन्तु यदि वह अब उसे पसंद नहीं करता, तो वह उसे आज़ाद छोड़ देगा, बेचेगा नहीं,**

**और उसे फिर से अपमानित नहीं करेगा।**

---

□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ (□□□□□  
□□□□□ □□□):

**1. यह बुरे झुकाव (Yetzer Hara) के लिए छूट है**

- राशी (Rashi):** यह व्यवस्था मानव की कामुक प्रवृत्ति को ध्यान में रखकर दी गई है।

यदि परमेश्वर यह अनुमति न देता, तो सैनिक ज़बरदस्ती कर बैठता।

- गमाराह (Kiddushin):** बेहतर है कि किसी पाप से बचने के लिए व्यवस्था बनायी जाए, बजाय सैनिक को स्वतंत्र रूप से पाप करने देने के।

**2. "सुंदर स्त्री" (Yefat To'ar) का अर्थ**

- कुछ रब्बियों ने कहा कि यह सुंदरता वास्तविक साँदर्य नहीं बल्कि आकर्षण मात्र है -**

हो सकता है वह स्त्री सुंदर न हो, पर सैनिक उस क्षण में उसे चाहने लगा हो।

- **Or HaChaim:** यह बाहरी सुंदरता नहीं बल्कि उस स्त्री की आत्मा की सुंदरता हो

सकती है, जो युद्ध में घायल हो चुकी है।

### 3. क्या वह स्त्री विवाहित हो सकती है (Eshet Ish)?

- यहूदी कानून के अनुसार, गैर-यहूदी विवाह को मान्यता नहीं दी जाती, इसलिए युद्ध में बंदी बनाई गई महिला विवाहित भी हो तो यह व्यवस्था लागू होती है।

### 4. एक महीने का समय क्यों?

- **Ramban:** यह उसकी मातृभूमि के लिए शोक और पहचान बदलने का समय है।
- **Rav Hirsch:** यह समय सैनिक को शारीरिक आकर्षण से हटकर विचार करने का अवसर देता है कि क्या वह उस स्त्री से सच में विवाह करना चाहता है या नहीं।

### 5. बेचना क्यों मना है?

- क्योंकि सैनिक ने उस स्त्री को इच्छाओं की पूर्ति के लिए चुना था, इसलिए अब वह उसे दास नहीं बना सकता, अपमानित नहीं कर सकता।
- **Or HaChaim:** सैनिक ने उसकी आत्मा का लाभ उठाया, इसलिए अब उसे आज़ादी देनी होगी।

□ □

## (Today in Church)

### 1. मानव की कमजोरी और परमेश्वर की दया

- यह व्यवस्था मनुष्य की कमजोरी को ध्यान में रखती है और उसे नियमों और समय के माध्यम से सही निर्णय लेने का अवसर देती है।
- प्रभु यीशु मसीह ने मनुष्य की दुर्बलताओं को स्वयं पर ले लिया, और हमें पवित्रता से जीवन जीने की शक्ति दी।

### 2. विवाह की पवित्रता

- यह खंड स्पष्ट करता है कि यौन इच्छा मात्र से विवाह नहीं होना चाहिए, बल्कि यह समर्पण और सम्मान पर आधारित हो।
- प्रभु यीशु ने भी (मत्ती 5:28) कहा कि जो कोई स्त्री को कुविचार से देखता है, वह मन में व्यभिचार करता है।

### 3. सम्मान और स्वतंत्रता

- यह खंड सिखाता है कि किसी महिला को कभी जबरन या बिना इच्छा के नहीं लिया जा सकता। मसीही दृष्टिकोण में हर व्यक्ति परमेश्वर की सृष्टि है और उसका आदर होना चाहिए।

□ :

”हे पिता, जैसे आपने अपने पुत्र यीशु मसीह को मनुष्यों की दुर्बलताओं को धारण

करने के लिए भेजा, वैसे ही हमें भी अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण रखने की शक्ति

दे। हमें सिखा कि हम अपने मन और आंखों को पवित्र रखें। हम दूसरों को वस्तु के रूप में न देखें, बल्कि आपके स्वरूप में बने एक एक जन के रूप में आदर करें। जैसे

प्रभु यीशु ने किसी को अपमानित नहीं किया, वैसा ही जीवन हम भी जी सकें।

आमीन।”

□ □ □ □ □ □ □ □ (Conclusion):

व्यवस्थाविवरण 21:11-14 एक अत्यंत व्यावहारिक और गहरी व्यवस्था है, जो मानवीय

कमजोरियों को स्वीकारते हुए, एक नैतिक और नियंत्रित मार्ग प्रस्तुत करती है। यह दिखाता

है कि कैसे कामना और शक्ति का संतुलन परमेश्वर के मार्गदर्शन में लाया जा सकता है। यह

कानून सिखाता है कि:

- इच्छा की पूर्ति का मार्ग विवेक और समय के साथ हो।
- हर व्यक्ति, चाहे वह शत्रु हो या बंदी, आदर योग्य है।
- प्रेम और विवाह का आधार सिर्फ आकर्षण नहीं, बल्कि सम्मान और समर्पण है।

P222 De.24:1 The law of divorce, only be means of written document

□ □□□□□ □□ (□□□□□ □□□) —

□□□□□□□□□□□□ 24:1

**1 जब कोई पुरुष किसी स्त्री को व्याह करके पति हो, और उसके बाद वह स्त्री**

**उसको अप्रिय जान पड़े क्योंकि उसने उसमें कोई अश्लील बात पाई, तब वह उसे**

**त्यागपत्र लिखकर उसके हाथ में दे, और उसको अपने घर से निकाल दे।**

---

□ □□□□□ □□□ □□□□□□□ □□□ □□□□

□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□□ (□□ 1):

- अगर कोई पुरुष स्त्री से विवाह करता है और फिर उस स्त्री में कुछ "अश्लील बात" (Hebrew: רַבָּת עֲרָות) पाकर वह उसे अप्रिय समझने लगता है, तो उसे एक तलाकनामा (Get - गेट) लिखकर, उसके हाथ में देकर अपने घर से भेज देना चाहिए।
- 

□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□

□□□□□□

□ 1. "क्योंकि उसने उसमें कोई अश्लील बात पाई" (רַבָּת עֲרָות):

रब्बी

व्याख्या

**बेत शम्मै**

केवल तब तलाक संभव है जब स्त्री में यौन अनाचार

(sexual immorality) का प्रमाण मिले।

**बेत हिल्लेल**

किसी भी कारण से तलाक संभव - यहाँ तक कि वह  
खाना जला दे तो भी।

**रब्बी अकीवा**

यदि पति को कोई और स्त्री ज्यादा सुंदर लगे, तो भी वह  
तलाक दे सकता है।

**राशी**

यदि स्त्री पति की दृष्टि में अब प्रिय नहीं रही, तो उसे  
तलाक देना कर्तव्य है।

**रव हिर्श**

"अश्लीलता" कोई भी व्यवहार जो विवाह को जारी  
रखने में बाधा बने, जैसे सम्मान की कमी, दुर्ब्यवहार  
आदि।

2. "तलाकनामा" (כְּרִתָּה) – Get):

- **बेखोर शोर:** इसमें लिखा होता है - "अब तू हर किसी से विवाह कर सकती है"।
- **हकतव वा'ल़ज़ाह़:** यह दस्तावेज़ पूर्ण और निर्विवादित अलगाव को दर्शाता है।
- **रव हिर्श:** यह दस्तावेज़ केवल तभी मान्य होता है जब उसे इच्छा पूर्वक और उद्देश्य से  
लिखा गया हो।

□ 3. "उसके हाथ में दे" (וְנִתְן בַּיָּדָה):

- उसे व्यक्तिगत रूप से या उसके प्रतिनिधि को देना अनिवार्य है।
- रव हिर्शः यह स्वतंत्रता का प्रतीक है - उसे उसकी इच्छा और समझ के साथ देना चाहिए।

□ 4. "उसे अपने घर से निकाल दे" (וְשִׁלְחוּ מִבֵּיתוּ):

- यह एक कानूनी अलगाव है, न कि केवल शारीरिक।
  - अगर वह नहीं जाती या पति उसे घर से बाहर नहीं करता, तो तलाक पूर्ण नहीं माना जाता।
- 

□ □

**24:1 □ □ □ □ □**

□ 1. तलाक की अनुमति व्यवस्था में दी गई थी, पर यह परमेश्वर की आदर्श

**इच्छा नहीं थी।**

जैसा कि प्रभु यीशु ने स्पष्ट किया:

"जिसे परमेश्वर ने एक किया है, उसे मनुष्य अलग न करे।" – मरकुस 10:9

"सिवाय व्यभिचार के कारण, कोई भी तलाक उचित नहीं।" – मत्ती 5:32

□ आज मसीही चर्च इस बात को गंभीरता से लेता है कि:

- विवाह एक पवित्र वाचा (covenant) है, अनुबंध नहीं।
  - तलाक को अंतिम उपाय माना जाता है, वह भी बहुत सोच-समझकर, प्रार्थना और आत्मिक परामर्श के बाद।
- 

□ 2. इसका उद्देश्य: इसका उद्देश्य इसका उद्देश्य

चर्च आज यह सिखाता है कि:

- विवाह को टूटने से बचाया जाए – इसके लिए परामर्श, मध्यस्थता, और प्रार्थना की जाए।
  - अगर व्यभिचार, घरेलू हिंसा, या गंभीर उपेक्षा हो, तो पीड़ित को सुरक्षा और सहारा दिया जाए।
  - अगर तलाक हो भी जाए, तो कोई भी दोषी ठहराया न जाए, बल्कि प्रेम और पुनर्स्थापन (restoration) की ओर बढ़ाया जाए।
- 

□ 3. इसका उद्देश्य:

- कि हम क्षमा, नम्रता और बलिदान से अपने रिश्तों को निभाएं।
- कि हम उनके प्रेम और आत्मा से परिपक्व हों।

- कि टूटे हुए लोग भी पुनः स्थापित किए जाएं - दया, अनुग्रह और सच्चाई से।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □ □

**हे मेरे उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह,**

**आपने विवाह को पवित्र और स्थायी वाचा के रूप में स्थापित किया -**

**आपका प्रेम जो कभी समाप्त नहीं होता, वह हमारे रिश्तों का आधार है।**

**प्रभु, जब हमारे विवाह में संघर्ष आता है, अहंकार और असहमति हमारे बीच**

**दीवार बनाती है,**

**तब हमें आपकी नम्रता, धीरज और क्षमा की आत्मा दे।**

**हे यीशु, जब हमारे मन टूट जाते हैं,**

**तब आप हमें चंगाई दीजिए;**

**जब संबंध बिखरने लगते हैं,**

**तब आप पुनः जोड़नेवाला बनिए।**

**हे प्रभु यीशु मसीह, अगर कभी तलाक की परिस्थिति आ जाए,**

**तो हमें आपकी करुणा और न्याय से मार्गदर्शन दीजिए;**

**न कि कठोरता से, पर प्रेम और समझदारी से।**

**जो विवाहित हैं – उन्हें आपके प्रेम में मजबूत बनाइए;**

**जो टूटी वाचा से गुज़रे हैं – उन्हें आपकी शांति और नया आरंभ दीजिए।**

**हमारा विवाह, हमारा घर – आपके हाथों में सौंपते हैं, हे प्रभु।**

**हमें आपके जैसा प्रेम करना सिखाइए।**

**आपके पवित्र नाम में माँगते हैं – आमीन।**

---

## ❖ (Summary in Hindi)

- **व्यवस्थाविवरण 24:1** यहादियों के लिए तलाक की कानूनी प्रक्रिया और नैतिक सीमाएं बताता है।
- रब्बियों ने इस पर विविध और गहरी व्याख्याएं दीं – कुछ सख्त, कुछ उदार।
- प्रभु यीशु ने इस व्यवस्था को और उच्च स्तर पर लाकर, परमेश्वर की मूल इच्छा पर ध्यान दिलाया – स्थायी और पवित्र विवाह।
- आज मसीही चर्च में तलाक अनुशंसा नहीं की जाती, पर समझदारी और करुणा से परिस्थिति देखी जाती है।
- हमें प्रभु यीशु से प्रेम, क्षमा और सामर्थ्य की प्रार्थना करनी चाहिए ताकि हम अपने संबंधों को संभाल सकें।

P223 Nu.5:15 - 27 Suspected adulteress has to submit to the required test

**यह रहा गिनती 15:15 (Numbers 15:15) का हिंदी बाइबल पद:**

**"सभासमूह के लिये, और तुम्हारे बीच रहने वाले परदेशी के लिये, एक ही विधि**

**होनी चाहिये; यह तुम्हारी पीढ़ियों के लिये एक सदा की विधि ठहरेगी; जैसे तुम**

**हो, वैसे ही परदेशी भी यहोवा के समुख हों।"**

— गिनती 15:15, हिंदी ओ.वी.

□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□□□:

**यह पद यह सिखाता है कि परदेशी (गैर-इस्राएली जो इस्राएलियों के बीच रहते हैं या**

**धर्मान्तरित होते हैं) और इस्राएली दोनों के लिए एक ही धार्मिक कानून और व्यवस्था होनी**

**चाहिए।**

**परमेश्वर के सामने कोई भेदभाव नहीं है – जैसे इस्राएली परमेश्वर की उपासना करते हैं, वैसे ही**

**परदेशी को भी वैसी ही उपासना और आज्ञापालन करना चाहिए।**

**यह आदेश केवल एक समय के लिए नहीं बल्कि पीढ़ियों तक स्थायी (सदा की विधि) है।**

□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ (□□□□□ □□□ □□□□□□□  
□□□):

#### **1. इब्र एज़रा (Ibn Ezra):**

- शब्द "לְהַקְהָה" (सभासमूह) में "हे" को कुछ लोग "ओ सभासमूह!" के रूप में पुकार समझते

हैं।

- लेकिन इन्हें कहते हैं कि यह "है" केवल एक निश्चितता को दर्शाता है, न कि पुकारने के लिए।

## 2. राशी (Rashi):

- "גַּם מִצְרָיִם" (जैसे तुम, वैसे ही परदेशी) – यह एक हिन्दू मुहावरा है जो पूर्ण समानता दर्शाता है।
- उदाहरण: "जैसे यहोवा की बारी, वैसी मिस्र की भूमि" – यहाँ पूर्ण समानता का संकेत है।

## 3. रालबग (Ralbag):

- यह पद दिखाता है कि जब कोई धर्मान्तरित होता है, तो उसे पूरी व्यवस्था स्वीकार करनी होती है, जैसे बलिदान की व्यवस्था।

## 4. मालबिम (Malbim):

यह नियम पुरुष और स्त्री दोनों पर लागू होता है। स्त्री धर्मान्तरितों को भी बलिदान के मामलों में समान अधिकार प्राप्त हैं।

यह भी स्पष्ट किया गया कि परमेश्वर के सामने बलिदान को स्वीकारने में कोई भेदभाव नहीं है।

## 5. बिरकत अशेर (Birkat Asher):

- (a) "एक ही विधि" – यह बताता है कि कानून की दृष्टि से कोई भेद नहीं।
- (b) धर्मान्तरित वही आज्ञाएँ स्वीकार करता है जो इसाएली करते हैं।

#### **6. हामेक दावर (Haamek Davar):**

- यह पद आदेशों से संबंधित है जो सीधे तौर पर यहोवा की व्यवस्था से जुड़े हैं।

#### **7. रेजिओ (Reggio):**

- "हे" का प्रयोग पुकार के रूप में – "हे सभासमूह!"
- धर्मान्तरित अब उस सभासमूह का हिस्सा है।

#### **8. रव हिर्श (Rav Hirsch):**

- परमेश्वर के सामने पूर्ण समानता का संकेत।
- "हक़" (हक्का) शब्द को वह क़ानूनी अधिकार के रूप में समझते हैं।

#### **9. शादाल (Shadal):**

- रशी की मिस्र और बारी की तुलना से असहमति।
- धर्मान्तरितों को यह दिखाने के लिए कि वे अपने पुराने धर्मों को वापस न लाएं – उन्हें भी पूरी जिम्मेदारी दी गई।

#### **10. तोरा तेमीमा (Torah Temimah):**

- धर्मान्तरित भी अब्राहम जैसे हैं - जो परमेश्वर के साथ वाचा में बलिदान और स्नान के द्वारा शामिल हुए।

#### 11. स्टेन्साल्ट्ज़ (Steinsaltz):

- बलिदान, अन्न भेंट और अर्ध्य में बराबरी।

#### 12. The Torah: A Women's Commentary:

- बलिदानों में, फसह बलिदान को छोड़कर, बाकी सब में परदेशी को समान माना गया।
- 

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

- यीशु मसीह में सभी एक हैं** (गलातियों 3:28): यह पद हमें याद दिलाता है कि परमेश्वर का नियम और प्रेम जाति या पृथ्बूमि नहीं देखता।
  - धर्मान्तरितों को अपनाना:** जैसे यहूदी व्यवस्था में परदेशी को समान माना गया, वैसे ही चर्च को भी नए विश्वासियों और पृथ्बूमि से आने वालों को पूर्ण सम्मान और **अपनापन देना चाहिए।**
  - एक देह, एक आत्मा:** यह पद चर्च में एकता और सामूहिक उपासना की प्रेरणा है।
- 

□ :

"हे स्वर्गीय पिता, जैसे आपने अपने लोगों के लिए एक व्यवस्था बनाई और परदेशी  
 को भी अपनाया, वैसे ही हम भी प्रभु यीशु मसीह के नाम में सबको गले लगाना  
 सीखें। आपने अपने पुत्र के द्वारा हमें अपने परिवार में अपनाया, वैसे ही हमें दूसरों  
 को भी अपने प्रेम में स्थान देना सिखा। हमारी कलीसिया को एकता, करुणा और  
 सच्चे प्रेम से भर दे, ताकि हम तेरे नाम की महिमा कर सकें। यीशु मसीह के नाम में  
 प्रार्थना करते हैं। आमीन।"

---

□ □ □ □ □ □ □ (Summary):

- **गिनती 15:15** यह सिखाता है कि परमेश्वर के सामने सभी समान हैं – इस्राएली और परदेशी, पुरुष और स्त्री।
- रब्बियों की व्याख्याओं से स्पष्ट है कि धर्मान्तरितों को पूरी व्यवस्था स्वीकार करनी होती है और उनके साथ कोई भेदभाव नहीं किया जा सकता।
- आज के मसीही चर्च में यह पद एकता, अपनापन और मसीही प्रेम की मिसाल है।
- **प्रभु यीशु मसीह** में, हम सभी एक नई पहचान में गढ़े गए हैं, जहाँ कोई अलगाव नहीं।

□ □ □ □ □ □ (□ □ □ □ □ □)

### गिनती 15:16

"तुम लोगों के लिए और तुम्हारे साथ रहने वाले परदेशी के लिए एक ही व्यवस्था और एक ही विधि होगी।"

---

यह पद कहता है कि चाहे कोई इस्त्राएली जन्म से हो या कोई परदेशी (जो इस्त्राएलियों के बीच रह रहा हो और सच्चे परमेश्वर को मानता हो), उन सभी के लिए एक ही नियम और एक ही व्यवस्था होगी।

इसका अर्थ है कि ईश्वर की दृष्टि में कोई भेदभाव नहीं है – जो उसकी प्रजा में शामिल होता है, वह पूरी तरह से उसी व्यवस्था का हिस्सा बनता है।

यह समावेशिता का एक शक्तिशाली सन्देश है – यह न्याय, समानता और ईश्वर के राज्य में सभी को एक समान स्थान देने की बात करता है।

## 1. Haamek Davar

- "Torah" (व्यवस्था) का अर्थ है वह शिक्षा जो हर पीढ़ी में रब्बियों द्वारा दी गई।
  - "Mishpat" (विधि) ऐसे न्यायसंगत निर्णय हैं जो तर्क के आधार पर निकाले गए।
  - दोनों ही – यहोवा की प्रजा और परदेशी – पर लागू होते हैं।

## 2. Ibn Ezra

“एक ही व्यवस्था” का अर्थ है कि बलिदानों से संबंधित नियमों में कोई अंतर नहीं है – जैसे कि अनाज का अंश देना, यह भी परदेशी पर उतना ही लागू होता है जितना जन्मजात इस्राएली पर।

### **3. Nachal Kedumim**

- परदेशियों का सात बार उल्लेख किया गया है इस अध्याय में, जो यह दिखाता है कि वे अब केवल "सात नूह की आज्ञाओं" तक सीमित नहीं हैं, बल्कि अब वे पूरी व्यवस्था में सहभागी बन जाते हैं।
- तलमूदी दृष्टिकोणों के अनुसार, कुछ यह मानते हैं कि उन्हें पहले के पापों के लिए पश्चाताप करना चाहिए, जबकि अन्य कहते हैं कि वे नया जन्म पाते हैं (newborn) और पुराने पाप मिट जाते हैं।

#### 4. Rav Hirsch

- यह पद इस बात की घोषणा करता है कि परदेशी भी ईश्वर के सामने पूर्ण रूप से समान अधिकार रखते हैं।
- उनके बलिदानों और नष्टावन (wine libations) में भागीदारी यह दर्शाती है कि वे पूरी तरह ईश्वर के वाचा में शामिल हैं, जैसे इस्राएली।

#### 5. Steinsaltz

- यह नियम और विधि केवल बलिदान तक सीमित नहीं है – पूरी व्यवस्था के सभी सिद्धांतों पर समान रूप से लागू होता है।

#### 6. Torah Temimah

- "Mishpat" शब्द यह दर्शाता है कि रूपांतरण (conversion) न्यायिक प्रक्रिया के तहत होता है, जिसमें तीन न्यायाधीश आवश्यक होते हैं।

यह पद मसीही विश्वासियों के लिए यह सिखाता है कि:

- परमेश्वर का राज्य सभी के लिए खुला है – यहौदियों और अन्यजातियों के लिए समान रूप से।
  - प्रभु यीशु मसीह में, कोई भेद नहीं है – ”न यहौदी है, न यूनानी, न दास, न स्वतंत्र, न पुरुष, न स्त्री – क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो।” (गलातियों 3:28)
  - यह पद इंगित करता है कि हर कोई, चाहे उसका मूल कुछ भी रहा हो, अगर वह परमेश्वर को स्वीकार करता है, तो वह पूरी तरह से उसकी प्रजा का भाग है।

प्रार्थना:

## हे प्रेमी प्रभु यीशु मसीह,

आपने सबको अपने प्रेम में आमंत्रित किया - यहूदी, गैर-यहूदी, स्त्री, पुरुष, अमीर,

## गरीब - हर एक को।

जैसे आपने समारी स्त्री को स्वीकार किया, जैसे आपने सूबेदार के विश्वास को

सराहा,

वैसे ही आज हम प्रार्थना करते हैं कि हम भी किसी के साथ भेदभाव न करें।

हमें एक समान प्रेम, एक समान सेवा और एक समान दया देनेवाले बनाइए।

जैसे आपने कहा, "जो कोई मेरी ओर आए, मैं उसे कभी न निकालूंगा" -

वैसे ही हम भी सबको अपने जीवन में स्थान दें, और आपकी व्यवस्था को एक समान मानें।

हम प्रार्थना करते हैं कि हम सबमें एक ही आत्मा, एक ही विश्वास और एक ही प्रभु की आराधना हो।

प्रभु यीशु के नाम में, आमीन।

#### □ □ □ □ □ □ □ □ (Conclusion in Hindi):

गिनती 15:16 यह सिखाता है कि परमेश्वर की व्यवस्था में भेदभाव के लिए कोई स्थान नहीं है।

जो कोई भी ईश्वर की प्रजा में शामिल होता है, वह समान अधिकार, समान कर्तव्य और समान संबंध का भागीदार होता है।

रब्बियों ने इसे गहराई से समझाते हुए दिखाया कि यह कानून केवल बाहरी रीति-रिवाज़ तक सीमित नहीं, बल्कि एक गहरे, आत्मिक समर्पण और पूर्ण समानता का प्रतीक है।

मसीही विश्वास में यह पद प्रभु यीशु मसीह की समावेशी सेवा, प्रेम, और उद्धार के सार्वभौमिक बुलावे को प्रतिबिंबित करता है।

#### बाइबल पद (गिनती 15:17) - हिंदी में:

गिनती 15:17-21 (Hindi Bible -ERV):

## 17 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

---

### हिंदी में सरल व्याख्या:

यह नियम इस्राएलियों को तब दिया गया जब वे प्रतिज्ञात देश (कनान) में प्रवेश करने वाले थे। जब वे उस देश की भूमि पर उगाए गए गेहूँ से रोटी बनाएँगे, तब उन्हें आटे का एक हिस्सा (पहला हिस्सा) यहोवा को भेंट के रूप में देना होगा। इस हिस्से को चल्ला (*challah*) कहा जाता है। यह भेंट याजकों (पुरोहितों) को दी जाती थी जो परमेश्वर की सेवा करते थे।

इस भेंट को देना यह दर्शाता है कि जो कुछ हमें प्राप्त होता है वह परमेश्वर की ओर से है, और हम उसका धन्यवाद करते हैं। इससे घरों में आशीष आती है।

---

### रब्बियों की व्याख्याएँ (उदाहरणों के साथ):

#### 1. रब्बी योहानान (Megalleh Amukkot में):

वे कहते हैं कि चल्ला की आज्ञा मूर्तिपूजा के खंड के बाद आती है, क्योंकि जो व्यक्ति चल्ला का नियम मानता है, वह मानो मूर्तिपूजा का नाश करता है।

□ **उदाहरण:** यदि कोई व्यक्ति परमेश्वर को उसका भाग नहीं देता, तो वह आत्मिक रूप से एक "रोटी की पूजा" करने लगता है—अपने भोजन और भौतिकता को ही सब कुछ समझता है।

#### 2. रब्बी तन्हुमा:

वे इसे Ecclesiastes 9:7 ("अपनी रोटी आनन्द से खाओ") □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □

□ □, □

□ चल्ला/देना इस सच्चाई की पहचान है कि हमारी रोटी (जीवन की जरूरतें) परमेश्वर की स्वीकृति का फल है।

### **3. रब्बी हिर्श:**

वे चल्ला/और नसाखिम(तरल बलिदान) के बीच संबंध बताते हैं। जैसे नसाखिमपूरी जाति के लिए थे, वैसे चल्ला □□□□□□□□ □□□ □□ □□□□□□□ □ □ □□□□□ □  
 □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □, □ □ □ □ □□□□□□ □ □ □□□□□  
 □ □, □ □ चल्ला/द्वारा हम उसका आदर करते हैं।

### **4. अडिन स्टेन्सल्ज़:**

वे केवल यह ध्यान दिलाते हैं कि यह आज्ञा केवल कनान में प्रवेश के बाद ही लागू होती है।  
 जब तक वे मन्त्रा खा रहे थे, तब तक यह लागू नहीं थी।

---

### **आज के मसीही चर्चों में इसका क्या महत्व है?**

सीधा बाइबिल आधारित मसीही संदर्भ इस नियम से नहीं जुड़ा है, क्योंकि यह यहूदी व्यवस्था का हिस्सा है और याजकीय सेवा पर केंद्रित था। लेकिन इसके आध्यात्मिक सिद्धांत मसीही विश्वासियों के लिए आज भी प्रासंगिक हैं:

#### **पहला फल परमेश्वर को देना:**

मसीही विश्वास में यह सिखाया जाता है कि हमारे संसाधनों का पहला और सर्वश्रेष्ठ भाग परमेश्वर को देना चाहिए - जैसे दशमांश (tithes) और भेंट।

## **यीशु मसीह ही "जीवन की रोटी" हैं:**

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ (□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □),  
 □  
 □ यूहन्ना 6:35 - "यीशु ने कहा, मैं जीवन की रोटी हूँ। जो मेरे पास आएगा वह कभी भूखा  
 न होगा।"

## **हमारी रोटी के पीछे परमेश्वर की कृपा:**

जब हम आशीष प्राप्त करते हैं - घर, भोजन, परिवार - हमें याद रखना चाहिए कि ये सब  
 परमेश्वर की दया से हैं, न कि केवल हमारे प्रयासों से।

---

## **प्रार्थना (प्रभु यीशु मसीह के जीवन के अनुरूप):**

**हे पिता परमेश्वर,**

जैसे तूने प्राचीन काल में अपने लोगों को पहली रोटी तुझे अर्पण करने की आज्ञा  
 दी, वैसे ही आज हम तुझे अपने जीवन का पहला और सर्वोत्तम भाग समर्पित करते  
 हैं।

हे यीशु, तू जीवन की सच्ची रोटी है। तूने अपने आप को हमारे लिए तोड़ दिया  
 ताकि हम अनंत जीवन पा सकें।

हमारी आज की रोटी, हमारे संसाधन, हमारे घर - सब कुछ तेरे हाथ से है।

हमें यह समझ दे कि कोई भी आशीष तुझसे बाहर नहीं है।

हमारे हृदय में कभी कोई मूर्तिपूजा न हो - न धन की, न भोजन की, न अभिमान

की।

हम चला/के सिद्धांत के अनुसार, तुझमें अपनी आशा रखें और सब कुछ तुझको समर्पित करें।

**यीशु मसीह के नाम में, आमीन।**

---

### **निष्कर्षः**

गिनती 15:17-21 में चला/का नियम हमें यह सिखाता है कि:

- हर भौतिक आशीष के पीछे परमेश्वर की देखभाल है।
- हम जब उसे उसका भाग अर्पण करते हैं, तो हम मूर्तिपूजा से दूर रहते हैं।
- यह न केवल राष्ट्रीय समृद्धि, बल्कि व्यक्तिगत घर की देखभाल को दर्शाता है।
- यद्यपि यहां व्यवस्था में इसकी धार्मिक भूमिका थी, आज यह मसीही विश्वास में आभार, समर्पण और परमेश्वर-केन्द्रित जीवन के रूप में प्रासंगिक है।

चाहो तो मैं इस पर एक छोटा संदेश या उपदेश (sermon outline) भी बना सकता हूँ - बताना बस।

□ □□□□ 15:18 □ □ □□□□ □ (Hindi Bible - HINDI O.V.):

“इस्राएलियों से कह, कि जब तुम उस देश में, जिसमें मैं तुम्हें पहुंचाने वाला हूँ, पहुंचो।”

(गिनती 15:18)

---

□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□□□:

यह पद उस आज्ञा की शुरुआत है जिसमें परमेश्वर कहता है कि जब इस्राएली कनान देश (वाचा की भूमि) में प्रवेश करेंगे और वहाँ की उपज से रोटी खाएंगे, तब वे उस रोटी का एक भाग परमेश्वर के लिए अलग रखें। इसे “चल्ला” (Challah) कहा जाता है—आटा गूंथते समय उसमें से एक हिस्सा याजक को देने की यह आज्ञा है।

यह आज्ञा एक पहचान है कि सब कुछ परमेश्वर की ओर से आता है – और हम उसके पहले फल को उसे अर्पित करके उसकी प्रभुता को स्वीकारते हैं।

---

□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□:

### 1. रब्बी इश्माएल और रशी:

- वाक्य “אַרְאָה אֶל הַמִּזְבֵּחַ” (जब तुम भूमि में आओगे) से यह सिद्ध करते हैं कि यह आज्ञा भूमि में प्रवेश करते ही लागू हो जाती है, भूमि के पूरी तरह कब्जे या विभाजन की प्रतीक्षा नहीं करती।

### 2. रव हृना और तोराह तेमीमा:

- “तुम सबके आने पर” – इसका अर्थ यह निकाला कि यह आज्ञा तभी पूर्ण रूप से लागू

होती है जब सम्पूर्ण इस्राएली राष्ट्र भूमि में आ जाए। यह बताता है कि ऐत्रा के समय में, जब कुछ ही लोग वापस आए थे, तब चाल्ला की आज्ञा रबिनिक स्तर पर लागू थी, न कि बाइबिलिक रूप से।

### 3. बरतेनुरा और गुर आर्ये:

- बताते हैं कि अन्य आज्ञाओं के मुकाबले “बवोआखेम” शब्द तुरंत पालन का संकेत देता है। जबकि ”אָבָגָה יְ'“ जैसे शब्दों में आज्ञा का पालन भूमि में पूर्ण निवास के बाद होता है।

### 4. विरकत आसर और मास्किल ले-दाविद:

- चर्चा करते हैं कि जब इस्राएल मन्त्रा खाना बंद करके भूमि का अन्न खाने लगे, तभी चाल्ला की आज्ञा लागू हो गई।

### 5. रालबाग (Ralbag):

- “रोटी” का उल्लेख केवल पाँच प्रकार के अन्न (गेहूं, जौ, जई, राई, स्पेल्ट) से बनी रोटी के लिए है – तभी चाल्ला देना आवश्यक है।

### 6. मेगालेह अमुक्कोत और नहाल केदुमीम:

- चाल्ला को मूर्ति-पूजा के विरुद्ध पहचान कहा गया। जो चाल्ला देता है, वह यह मानता है कि उसका अन्न परमेश्वर की देन है, न कि किसी अन्य शक्ति की।

□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□ □□□ □□□ □□□□□:

**चाल्ला की आज्ञा मसीही परंपरा में शाब्दिक रूप से लागू नहीं होती क्योंकि यह याजकीय व्यवस्था और मंदिर से जुड़ी है। परंतु इसका आत्मिक सिद्धांत आज भी बहुत महत्वपूर्ण है:**

1. **यीशु मसीह ने स्वयं कहा — “मनुष्य केवल रोटी से नहीं जीवित रहेगा, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है।”**(मत्ती 4:4)
2. **प्रभु भोज (Holy Communion) में रोटी हमारे लिए यीशु की देह का प्रतीक बन जाती है – यह भी एक “अलग किया गया भाग” है जो हमें परमेश्वर की उपस्थिति और बलिदान की याद दिलाता है।**
3. **मसीही जीवन में चाल्ला का सिद्धांत हमें सिखाता है कि हर आशीष का पहला भाग परमेश्वर को समर्पित करें, चाहे वह समय हो, धन हो या सामर्थ्य।**

□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□:

**हे परमेश्वर पिता,**

**हम आपका धन्यवाद करते हैं कि तू ही हमारी रोटी, हमारी आवश्यकताओं और हमारे जीवन का स्रोत है।**

**जैसे आपने इसाएल को भूमि में लाकर उन्हें आशीर्वाद दिया, वैसे ही आपने हमें प्रभु यीशु मसीह में अनन्त जीवन दिया।**

**जैसे रोटी का भाग आपकी समर्पित होता था, वैसे ही हम अपने जीवन का सर्वोत्तम**

**भाग आपके चरणों में अर्पित करते हैं।**

**प्रभु यीशु की तरह हमें भी विनग्र, आज्ञाकारी और समर्पित बनना सिखा।**

**आपके वचन के अनुसार जीने की शक्ति दे, और जो कुछ भी हमारे पास है, उसमें  
आपकी महिमा हो।**

**प्रभु यीशु मसीह के नाम में हम यह प्रार्थना करते हैं। आमीन।**

□ □ □ □ □ □ □ (Conclusion):

गिनती 15:18 केवल एक धार्मिक आदेश नहीं है, बल्कि एक दिल से निकली पहचान है कि  
सब कुछ परमेश्वर की देन है। रब्बियों ने इस पद के एक शब्द से भी गहराई के अर्थ निकाले-  
समय, स्थान, उद्देश्य और आत्मिक सन्देश पर। यह आदेश हमें आभार, समर्पण, और ईश्वर की  
प्रभुता स्वीकार करने की शिक्षा देता है।

मसीही दृष्टिकोण से, यह पद हमें स्मरण दिलाता है कि हमारे जीवन की पहली प्रार्थनिकता  
प्रभु होनी चाहिए, और हम जो कुछ भी पाते हैं, उसमें से पहला भाग उसे समर्पित करें-अपने  
हृदय से।

□ □ □ □ □ □ (□ □ □ □ 15:19) — □ □ □ □ □ □

**"और जब तुम उस देश की रोटी खाओगे, जिसे मैं तुम्हें देता हूँ, तब उसका उठाया हुआ अंश**

## यहोवा के लिए उठाना।"

(गिनती 15:19, हिंदी ओवी)

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

यह पद यहोवा द्वारा इस्राएलियों को दी गई आज्ञा है कि जब वे वाचा के देश (कनान) में प्रवेश करें और वहाँ की रोटी खाएं (अर्थात् वहाँ की भूमि का अन्न खाएं), तब उन्हें उस आटे में से एक भाग को चल्ला (अर्थात् उठाया गया अंश) के रूप में परमेश्वर के लिए अलग करना होगा। यह उठाया गया भाग याजकों को दिया जाता था, जो परमेश्वर की सेवा करते थे।

यह चल्ला एक प्रकार की भेंट (*terumah*) है, जो यह दर्शाती है कि व्यक्ति जो भी खाता है, वह परमेश्वर की कृपा से प्राप्त होता है, और उसका प्रथम भाग उसे समर्पित करना परम है।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ — □ □ □ □ □ □ □

□ 1. □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

उन्होंने कहा कि जो कोई चाल्ला की आज्ञा पूरी करता है, वह मानो मूर्तिपूजा को नष्ट कर रहा है।

□ *Proverbs 6:26* से यह जोड़ा गया – "क्योंकि वेश्या के कारण मनुष्य एक रोटी तक गिरता है।" इसका अर्थ यह है कि जब लोग भेंट (चाल्ला) नहीं देते, तो वे आध्यात्मिक पतन की ओर बढ़ते हैं।

□ 2. □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ (Megalleh Amukkot):

उन्होंने चाल्ला और दाखमधु की भेंट (नेसाखिम) के मिलन को जोड़ा – जैसे भोजन रोटी से परिभाषित होता है और पर्व दाखमधु से, वैसे ही चाल्ला और दाख भेंट यह दर्शाते हैं कि परमेश्वर

**ने हमारे कर्मों को स्वीकार किया है।**

□ 3. □□□□□□□□□□□□□□□□□□:

- चाल्ला की आज्ञा सिर्फ इस्राएल की भूमि में रोटी से जुड़ी है।
- केवल 5 प्रकार के अनाज (गेहूँ, जौ, राई, स्पेल्ट, और जई) से बनी रोटी पर चाल्ला की आज्ञा लागू होती है।

□ 4. □□□□□□ (□□□□□□□□□□□□):

यदि आटे से चाल्ला अलग नहीं की गई, तो पकी हुई रोटी से भी उसे अलग करना अनिवार्य है।

□ 5. □□□□□□□□□□ (Torah Temimah):

यदि कोई गैर-यहूदी आटे का स्वामी बन जाए, तो उस आटे से चाल्ला नहीं निकाली जाती।

---

▲ □□□□□□□□□□□□□□□□□□?

यद्यपि चाल्ला की आज्ञा मसीही धर्म में लागू नहीं होती क्योंकि यह यहूदी व्यवस्था का हिस्सा है, परन्तु इसका आत्मिक सिद्धांत मसीही विश्वास में अत्यंत मूल्यवान है:

- रोटी का विशेष महत्व है (जैसे प्रभु भोज में)।
  - मसीही विश्वास में हर आशीष को परमेश्वर की देन मानते हुए प्रथम फल या प्रथम आय परमेश्वर को समर्पित करने की भावना है।
  - यह आज्ञा हमें सिखाती है कि हम जो भी कमाते हैं, खाते हैं, उसका पहला और उत्तम भाग परमेश्वर को समर्पित करना चाहिए – आभार, भक्ति और समर्पण के रूप में।
-

□ :

**हे स्वर्गीय पिता, जैसे आपने इस्राएल को भूमि दी और उनसे चाल्ला के रूप में अंश**

**मांगा, वैसे ही आपने हमें अपने पुत्र यीशु मसीह के द्वारा जीवन की रोटी दी है। हम**

**आपने धन्यवाद देते हैं आपने हर एक आशीर्वाद के लिए। हमें सिखा कि हम जो**

**कुछ भी कमाएं, उसका उत्तम भाग आपने राज्य के लिए समर्पित करें – प्रेम, सेवा**

**और विश्वास के साथ। यीशु मसीह के नाम में हम प्रार्थना करते हैं। आमेन।**

□ □ □ □ □ □ □ :

गिनती 15:19 की आज्ञा यह सिखाती है कि जब हम परमेश्वर के दिए गए संसाधनों का उपयोग करते हैं, तो हमें पहले उसे स्मरण कर धन्यवाद देना चाहिए। चाल्ला की आज्ञा न केवल एक धार्मिक कार्य है, बल्कि यह परमेश्वर के प्रति श्रद्धा, आभार और समर्पण का प्रतीक है। मसीही विश्वासियों के लिए यह हमें सिखाता है कि हम हर आशीर्वाद को परमेश्वर का उपहार मानें और उससे पहले अपने हृदय, समय और संसाधन समर्पित करें।

□ □ □ □ □ □ □ (□ □ □ □ □ □ 15:20) – □ □ □ □ □ □ :

**"तुम्हारे गुंधे हुए आटे की पहली रोटी एक भेंट के रूप में उठाई जाए, जैसे**

**खलिहान की भेंट होती है, वैसे ही यह उठाई जाए।"**

*(गिनती 15:20 - Hindi Bible - Pavitra Bible Society)*

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

यह आज्ञा इस बात को दर्शाती है कि जब इस्राएली लोग प्रतिज्ञा किए हुए देश (कनान) में प्रवेश

करेंगे और वहाँ की उपज से रोटी बनाएंगे, तो उन्हें उस आटे से "पहली रोटी" (अर्थात्

हला/Challah) को परमेश्वर के लिए अलग करना है। यह हिस्सा याजकों (कोहनों) को देना होता था।

"हला" (Challah) यहाँ पर सिर्फ आज की यहूदी रोटी नहीं, बल्कि हर उस आटे का हिस्सा है जो पांच अनाज (गेहूं, जौ, जई, स्पेल्ट, राई) से बना हो और इंसानों के खाने के लिए हो। यह परमेश्वर को पहले फल (first fruits) समर्पित करने की एक विधि है - जो यह दिखाता है कि हम जो कुछ पाते हैं, वह सबसे पहले उसी का है।

□ ♂ ○○○○○○○○ □ □ ○○○○○○○○ □ □ ○○○○○○:

□ "○○○○○○○○○" (○○○○○○○○ ○○○○○ ○○○ ○○○)

- HaKtav VeHaKabalah और Rav Hirsch के अनुसार, यह शब्द आटे के उस प्रारंभिक चरण को संदर्भित करता है जहाँ पानी और आटा मिलते हैं - यानी रोटी बनाने की शुरुआत।

- Rashi कहते हैं कि "तुम्हारे गुंधे हुए आटे" से तात्पर्य जंगल में इस्राएलियों द्वारा बनाए जाने वाले आटे की माप से है (एक ओमेर प्रति व्यक्ति)।
- Torah Temimah कहती हैं कि यह माप 43 और 1/5 अण्डों के बराबर होता है - यही न्यूनतम मात्रा है जिससे हला/निकालना अनिवार्य होता है।

□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□?

- तोरा के अनुसार, कोई निश्चित माप नहीं है - थोड़ी सी भी मात्रा से यह आदेश पूरा हो सकता है (जैसे एक दाना)।

- रबियों ने निर्धारित किया:

- व्यक्तिगत गृहस्वामी को कुल आटे का  $1/24$ वां हिस्सा देना होता था।
  - रोटी बेचने वाले बेकर्स को  $1/48$ वां हिस्सा देना होता था।
- 

□ □□□□□□□□□ □□□□:

- Megalleh Amukkot कहता है कि जो हला की आज्ञा का पालन करता है, वह मानो मूर्तिपूजा को त्यागता है।
  - Sforno कहते हैं कि यह आज्ञा, इसाएलियों को घर-घर में आशीर्वाद देने के लिए दी गई, विशेषकर जब उन्होंने देश में प्रवेश किया।
  - Rav Hirsch कहते हैं कि जैसे खेत की भेंट फसल में आशीर्वाद लाती है, वैसे ही घर की रोटी में हला/निकालने से घर में आत्मिक आशीर्वाद आता है।
- 

□ □ □ □ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□□:

मूल यहूदी आदेश के रूप में हला का पालन आज भी यहूदी धर्म में होता है, लेकिन अधिकांश मसीही चर्चों में यह आदेश सीधे नहीं निभाया जाता। परंतु इसकी भावना - परमेश्वर को

## ”प्रथम फल” देना - मसीही सिद्धांतों में गहराई से जुड़ी हुई है।

- मसीही विश्वास में यह सिद्धांत मत्ती 6:33 में व्यक्त होता है:

“पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करो...”

- यह दर्शाता है कि हमें अपनी हर चीज़ में पहले परमेश्वर को स्थान देना चाहिए – चाहे वह समय हो, धन, या संसाधन।

□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□

(Challah □□ □□□□□□):

**हे स्वर्गीय पिता,**

जैसे आपसे हमें सिखाया कि हमारी हर रोटी आपसे आती है,

वैसे ही हम अपने जीवन की ”पहली फल” - अपनी मेहनत, समय, और प्रेम -

आपको अर्पित करते हैं।

प्रभु यीशु, आपने स्वयं को ”जीवन की रोटी” कहा,

हमें सिखा कि हम भी अपनी रोटी, अपने संसाधन, और अपना हृदय

दूसरों के लिए तोड़ सकें - जैसे आपने कूस पर किया।

आप हमें सिखाये कि हर आशीर्वाद में आपको पहले स्थान दें,

और हर छोटे कार्य को भी आराधना के रूप में अर्पित करें।

**आमेन।**

□ □ □ □ □ □ □ □ □ :

हला(Challah) की आज्ञा यह सिखाती है कि हमें हर आशीर्वाद में परमेश्वर को पहले स्थान देना चाहिए। यह न केवल बाहरी क्रिया है, बल्कि यह आंतरिक समर्पण का प्रतीक है। यद्यपि मसीही चर्चों में यह विशेष प्रथा नहीं अपनाई जाती, फिर भी उसकी आत्मा - परमेश्वर को "पहले फल" देना - यीशु मसीह की शिक्षाओं का मूल है।

अगर आप चाहें तो मैं एक सुंदर चार्ट या इन्फोग्राफिक भी बना सकता हूँ जो हलाकी प्रक्रिया, बाइबल के पद, रबियों की टिप्पणियाँ और मसीही संबंध को दर्शाए। क्या आप चाहेंगे?

□ □ □ □ □ □ □ □ □ (□ □ □ □ □ □ □ □):

गिनती 15:21

”आप अपनी गूंधी हुई रोटी के पहले अंश को यहोवा को अर्पण करना, वह पीढ़ी दर पीढ़ी तम्हारी ओर से अर्पण होता रहेगा।”

(अनुवाद: BSI Hindi Bible)

A decorative banner at the bottom of the page. It features a starburst icon on the left, followed by a sequence of twelve empty square boxes arranged horizontally, intended for the user to write their name.

इस पद में परमेश्वर इस्राएलियों को यह आदेश दे रहे हैं कि जब भी वे आटा गूँधें (विशेषकर पाँच प्रमुख अनाजों से), तो उस आटे का एक भाग – ”पहले अंश” – यहोवा को अर्पण करें। यह अंश “चल्ला (challah)” कहलाता है और यहोवा के लिए अलग रखा जाता है। यह अर्पण याजकों (कोहिन) को दिया जाता था, जो परमेश्वर की सेवा करते थे।

□ यहां रब्बियों की व्याख्या है ("ראשיה" और "مراشا" पर ध्यान केंद्रित):

□ 1. रशी (Rashi):

- यदि केवल "ראשיה" (प्रथम) लिखा होता, तो यह समझा जा सकता था कि पूरी पहली रोटी/आटा देना होगा।
- इसलिए "مراشا" (प्रथम से) जोड़ा गया ताकि स्पष्ट हो कि पूरी रोटी नहीं, केवल उसका एक भाग देना है।

□ उदाहरण: अगर किसी ने तीन आटे गूंथे, तो पूरी पहली रोटी देने की जरूरत नहीं है – केवल उसका एक अंश पर्याप्त है।

□ 2. गुर अर्यह (Gur Aryeh):

- "ראשיה" का अर्थ यह न लिया जाए कि केवल पहली रोटी ही देना है।
- "مراشا" जोड़कर यह सिखाया गया कि हर बार जब आटा तैयार हो, तो उसमें से एक हिस्सा प्रभु को देना है।

□ उदाहरण: हर बार जब आप रोटी बनाएं, उस रोटी से पहले एक भाग प्रभु को अलग कीजिए।

□ 3. मल्बिम (Malbim):

- "ראשיה" से लगता है कि पूरी पहली रोटी देनी है।
- "مراشا" से यह स्पष्ट होता है कि केवल एक भाग देना है, और यह तभी लागू होता है

जब रोटी "देश की रोटी" यानी पांच प्रमुख अनाज (गेहूं, जौ, इत्यादि) से बनी हो।

---

□ 4. भेक्षण शूर (Bekhor Shor):

संक्षेप में कहते हैं: यह पद केवल "एक भाग" को अलग करने का आदेश देता है, न कि पूरी रोटी को।

---

□ 5. मस्किल लेडवाइड (Maskil LeDavid):

- यदि "גָּרָא שִׁישׁ" केवल भाग का तात्पर्य है, तो "पहले फल" (बिकुरिम) में क्यों पूरा नहीं लिया जाता?
  - उत्तर: क्योंकि चला/विशेष रूप से "देश की रोटी" से जुड़ा है, और यहां भाग का निर्धारण आवश्यक है।
- 

□ "הַרְמָה" (अर्पण) और मात्रा (Gift and Quantity):

❖ अर्पण:

- पद में "तुम अर्पण करना" लिखा है, परन्तु माप नहीं बताया गया। इसका मतलब है कि अर्पण इतना हो कि "उपहार" समझा जाए।

□ मात्रा:

- रब्बी निर्धारित करते हैं:

- गृहस्थ (Householder): 1/24 भाग
- रोटी बनाने वाला (Baker): 1/48 भाग

□ उदाहरण: अगर आपने 2.4 किलो आटा गूंथा, तो एक गृहस्थ को 100 ग्राम (लगभग) challah अलग करनी चाहिए।

□ □□□□□:

- दो उद्देश्य:

1. रोटी को पवित्र बनाना (tevel से मुक्त करना)
  2. याजक को अर्पण देना
- पहला उद्देश्य न्यूनतम मात्रा से पूरा होता है, पर दूसरा उद्देश्य "अर्पण" की भावना से जुड़ा है, जिसके लिए पर्याप्त मात्रा आवश्यक है।

□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□:

हालाँकि चल्ला का आदेश यहूदी व्यवस्था का हिस्सा है, परन्तु इसका आध्यात्मिक सन्देश आज भी मसीही विश्वासियों के लिए गृद्ध और सामर्थ्य है:

✓ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□:

- यह हमें पहले फल (First Fruits) के सिद्धांत की याद दिलाता है।

- मसीही विश्वास में, हम अपने जीवन के "पहले भाग" – समय, संसाधन, और हृदय – प्रभु को समर्पित करते हैं।

□ 1 कुरिन्थियों 15:20:

"परन्तु वास्तव में मसीह मरे हुओं में से जी उठा है, और जो सो गए हैं, उनका पहिला फल □ □

□ □ □ □ □ स्वयं "पहिला फल" हैं। जैसे इसाएली आटे से पहिला भाग देते थे, वैसे ही हम यीशु में अपने जीवन का पहिला और सर्वोत्तम भाग समर्पित करते हैं।

□ :

- यह अभ्यास चल्ला के रूप में नहीं होता, लेकिन सिद्धांत सिखाया जाता है:
  - प्रभु को पहले स्थान पर रखें।
  - अपने संसाधनों और कार्यों में से पहिला भाग परमेश्वर को समर्पित करें।
  - दसवां हिस्सा (Tithing) और सेवकाई में योगदान इसी सिद्धांत से जुड़ा है।

□ :

"हे परमेश्वर, जैसे आपने इसाएलियों से कहा कि वे अपनी रोटी का पहिला अंश

तुझको अर्पण करें, वैसे ही मैं भी अपने जीवन, समय, सामर्थ्य और हर आशीर्वाद

का पहिला और सर्वोत्तम भाग आपको अर्पित करता हूँ। प्रभु यीशु, आप ही मेरे

जीवन का पहिला फल है – आप मेरी आशा और उद्धार का प्रारंभ है। मुझे यह

अनुग्रह दे कि मैं हर कार्य में पहले आपको ढूँढूं और आपसे आरंभ करूँ। मेरी भेट

आपको स्वीकार्य हो, जैसे आपने अपने को मेरे लिए समर्पित किया। आमीन।"

□ □□□□□□ (Summary):

- गिनती 15:21 हमें सिखाता है कि हम जो कुछ भी बनाते हैं, उसका पहला और सर्वोत्तम भाग परमेश्वर को समर्पित करें।
- रब्बी व्याख्याएं इस बात को स्पष्ट करती हैं कि यह केवल पहली रोटी नहीं, बल्कि हर रोटी से एक भाग देना है – एक प्रतीकात्मक अर्पण।
- मसीही दृष्टिकोण में यह सिद्धांत "पहिले फल" और "समर्पण" के रूप में जीवित है।
- यीशु मसीह स्वयं पहले फल हैं – हमारे लिए पूर्ण समर्पण का आदर्श।

□ □□□□ 15:22 – □□□□□ □□□□□ □□:

"और यदि तुम भूल से उन सब आज्ञाओं को जो यहोवा ने मूसा से कहीं, नहीं

**मानो,"**

(*Hindi Bible: गिनती 15:22*)

□ □□□□ □□□ □□□□□□□:

यह पद उस स्थिति की बात करता है जब पूरी मण्डली या समाज अनजाने में (भूलवश) ईश्वर की किसी विशेष या सभी आज्ञाओं को तोड़ देती है, विशेषकर मूल विश्वास के विरुद्ध, जैसे कि अज्ञानता में मूर्तिपूजा करना। यह पाप अनजाना होता है, परंतु फिर भी गंभीर होता है क्योंकि यह ईश्वर की सम्पूर्ण व्यवस्था के विरुद्ध होता है।

यहाँ "सब आज्ञाएँ" कहने का तात्पर्य है – वह मूल आज्ञा जिसकी अवहेलना करना ऐसा है मानो सम्पूर्ण व्यवस्था को ठुकरा दिया हो, जैसे कि एक ईश्वर को न मानना।

---

□ :

□ 1. □ □ □ (Rashi):

- रशी कहते हैं कि यह आपत अनजाने में की गई मूर्तिपूजा की ओर संकेत करती है।
- वे कहते हैं, "जब कोई एक ऐसी आज्ञा को तोड़ता है जो सब आज्ञाओं के बराबर है," तो वो व्यक्ति ईश्वर की प्रभुता को अस्वीकार करता है – जैसे मूर्तिपूजा करना।
- □ उदाहरण: जब कोई अनजाने में यह विश्वास करता है कि दो ईश्वर हो सकते हैं, और उसी आधार पर पूजा करता है।

□ 2. □ □ □ □ □ (Sifrei):

- "सभी आज्ञाएँ" कहने का मतलब है कि कोई एक ऐसा कार्यकर रहा है जो ईश्वर की सम्पूर्ण व्यवस्था के मूल सिद्धांत को तोड़ता है – यानी ईश्वर को छोड़कर अन्य देवताओं की ओर जाना।

□ 3. □□□□□□ (Abarbanel):

- वे इसे ”पूरे समाज द्वारा की गई अनजानी अविश्वासिता“ मानते हैं।
- वे कहते हैं कि इसका बलिदान व्यवस्था (एक जल-बलि और एक पापबलि) यह दर्शाता है कि यह साधारण भूल नहीं बल्कि गंभीर विश्वास की भूल है।

□ 4. □□□□□ (Ramban):

- वह इसे केवल एक साधारण आज्ञा उल्लंघन न मानकर ईश्वर को छोड़कर अन्य मार्गों की ओर जानेकी बात बताते हैं।

□ 5. □□□□□ (Malbim):

जब कोई समाज गलती से ऐसी रीति-नीति अपना लेता है जो मूर्तिपूजा के बराबर होती है, तो यह वैसी ही गंभीर बात होती है जैसे पूरी व्यवस्था को नकार देना।

□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□□□:

यद्यपि यह पद विशेष रूप से यहुदी समाज के लिए प्राचीन काल में लिखी व्यवस्था से संबंधित है, फिर भी आज के मसीही विश्वास में यह गहरी चेतावनी देता है कि:

- गलत विश्वास प्रणाली (जैसे येशु मसीह की प्रभुता को न मानना, या किसी और को ईश्वर मानना) एक गंभीर आत्मिक भूल है, भले ही वह अनजाने में हो।
- चर्चों को यह समझना चाहिए कि प्रभु की शिक्षाओं और आत्मिक सच्चाइयों से

**भटकना, चाहे अज्ञानता से हो, भी ध्यान देने योग्य और प्रायश्चित्त योग्य होता है।**

- येशु मसीह ने कहा, "मैं ही मार्ग, सत्य और जीवन हूँ: मेरे द्वारा बिना कोई पिता के पास नहीं पहुँचता" (यूहन्ना 14:6) – यानी अगर कोई इस सत्य से अनजाने में भी भटकता है, तो उसे आत्मिक जागृति और पश्चाताप की आवश्यकता है।
- 

□ :

**प्रभु यीशु मसीह,**

जब हम अनजाने में आपकी आज्ञाओं से भटकते हैं, जब हम अपने विचारों,

परंपराओं, या सामाजिक दबावों के कारण आपके सत्य को नहीं पहचानते,

तब कृपया हमें क्षमा कर और हमें अपनी आत्मा द्वारा जागृत कर।

हमें यह ज्ञान दे कि आप ही जीवित परमेश्वर हैं, और आपकी आज्ञाएं ही जीवन का मार्ग हैं।

जैसे आपने क्रूस पर हमारे लिए क्षमा मांगी – “हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं” – वैसे ही हमारे अनजाने पापों को क्षमा कर।

हमें अपने प्रेम और सच्चाई में स्थिर बना, और कभी भी अपने मार्ग से भटकने न दे।

**प्रभु यीशु के नाम में माँगते हैं। आमीन।**

□ □ □ □ □ □ □ :

- गिनती 15:22 मुख्य रूप से समूह द्वारा अनजाने में की गई गंभीर आत्मिक भूल की बात करता है – विशेषकर मूर्तिपूजा जैसी स्थिति की।
  - रब्बियों के अनुसार, यह ईश्वर की सम्पूर्ण व्यवस्था को नकारने जैसा है।
  - यह आज भी मसीही विश्वास में चेतावनी देता है कि सत्य से भटकना, चाहे अनजाने में ही क्यों न हो, आत्मिक सुधार की आवश्यकता होती है।
  - मसीही प्रार्थना और पश्चाताप – प्रभु यीशु की क्षमा और अनुग्रह पर आधारित होती है, जो हर अनजानी भूल को शुद्ध करने में सक्षम है।

□ □ □ □ □ 15:23 – □ □ □ □ □ □ □ □ □ (Hindi Bible Verse)

**”उस सब की जिसे यहोवा ने मूसा के द्वारा तुम से आज्ञा दी है, अर्थात् उस दिन से जब**

यहोवा ने आज्ञा दी थी और तुम्हारी पीढ़ियों के लिये जो कुछ उसने ठहराया है..."

(गिनती 15:23)

यह पद उन आज्ञाओं के बारे में है जिन्हें परमेश्वर ने मूसा के द्वारा इस्राएलियों को दी थीं।

यह विशेष रूप से उस समय की बात करता है जब लोग अनजाने में कोई पाप करते हैं, विशेषकर

जब वे गलती से मूर्तिपूजा (idolatry) में पड़ जाते हैं।

**पिछले पद (15:22) में लिखा है:**

"और यदि तुम अनजाने में कोई ऐसा काम करो जो यहोवा ने मूसा के द्वारा करने को नहीं कहा..." यानि जब कोई पूरी क्रौम या व्यक्ति बिना जानबूझे परमेश्वर की किसी बड़ी आज्ञा को तोड़ दे।

गिनती 15:23 में इस गलती को संपूर्ण आज्ञाओं की अवहेलना के समान बताया गया है।

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ (Interpretations by Various Rabbis):

#### 1. राशी (Rashi):

- मूर्तिपूजा को पूरे तोराह (व्यवस्था) का इनकार मानते हैं।
- कहते हैं कि अगर कोई व्यक्ति मूर्तिपूजा को स्वीकार करता है, तो उसने मानो सारी आज्ञाओं को तोड़ दिया।

#### 2. रशबाम (Rashbam):

- मूर्तिपूजा करना सारी आज्ञाओं को तोड़ने के समान है।
- वह समझाते हैं कि "उस दिन से..." का मतलब सीनै पर्वत से है, जब परमेश्वर ने दस आज्ञाएँ दीं।

#### 3. मिजराही (Mizrachi):

- कहते हैं कि जो मूर्तिपूजा को स्वीकार करता है, वह अब्राहम, इसहाक और याकूब के समय से लेकर अब तक की सारी आज्ञाओं को अस्वीकार करता है।

#### **4. हामेक दावर (Haamek Davar):**

- यह वचन केवल लिखित व्यवस्था नहीं बल्कि मौखिक व्यवस्था (Oral Torah) को भी शामिल करता है।
- भविष्य में जो धर्मशास्त्री और विद्वान नियमों को समझेंगे, वो भी सीनै से मिली आज्ञा की निरंतरता का हिस्सा हैं।

#### **5. रेज्जिओ (Reggio):**

- केवल वही आज्ञाएँ जो परमेश्वर ने मूसा के द्वारा दीं, सच्ची हैं।
- मनुष्यों द्वारा बनाए गए नियम मूर्तिपूजा के समान हैं।

#### **6. रेन्साल्ज़ (Steinsaltz):**

- मूर्तिपूजा सबसे पहली आज्ञा का उल्लंघन है ("तू मेरे सिवा किसी और को ईश्वर न माने")।
- यदि गलती से हुआ है तो पश्चाताप का मार्ग है; जानबूझ कर हुआ हो तो क्षमा नहीं।

#### **7. एम लामिक्रा (Em LaMikra):**

- यह पद तोराह की शाश्वतता (eternity) को दिखाता है।
  - ”उस दिन से...” का मतलब है कि यह नियम हमेशा लागू रहेगा।

□ ?

- मसीही दृष्टिकोण में, यह पद हमें यह सिखाता है कि अनजाने पाप भी गंभीर होते हैं।
  - मसीहियों का विश्वास है कि यीशु मसीह ने क्रूस पर बलिदान देकर ऐसे अनजाने और जानबूझकर किए पापों का मूल्य चुका दिया (इब्रानियों 10:26)।
  - मूर्तिपूजा, चाहे वह लकड़ी-पत्थर की हो या मन की (जैसे पैसे, ताकत या लालच), परमेश्वर से दूर करने वाली है।

A horizontal row of 15 empty rectangular boxes, each with a thin black border, intended for handwritten names or signatures.

“तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन, सारी आत्मा और सारे बल से प्रेम कर।”

(मर्ती 22:37)

यानी हमारा ध्यान केवल परमेश्वर पर केंद्रित रहना चाहिए।

”हे पिता परमेश्वर, मैं आपका धन्यवाद करता हूँ कि आपने अपने वचन द्वारा मुझे सिखाया। यदि मैंने अनजाने में तेरी आज्ञाओं को तोड़ा है, तो कृपा कर मुझे क्षमा

कर। मुझे समझा दे कि मैं किसी भी प्रकार की मूर्तिपूजा से बचा रहूँ - चाहे वह मन

की हो या बाहरी। प्रभु यीशु मसीह के नाम से मैं प्रार्थना करता हूँ - आमीन।"

□ □□□□□ (Conclusion in Hindi):

- गिनती 15:23 केवल एक पाप की बात नहीं करता, बल्कि यह बताता है कि मूर्तिपूजा करना सारी व्यवस्था को नकारने के समान है।
- रब्बियों की व्याख्या से स्पष्ट है कि यह पाप सबसे गंभीर है, क्योंकि यह परमेश्वर की संपूर्ण सत्ता को नकारता है।
- आज मसीहियों के लिए यह वचन हमें सावधान करता है कि हम किसी भी वस्तु को परमेश्वर से ऊपर न रखें।
- यीशु मसीह में क्षमा और उद्धार है, पर उसके लिए पश्चाताप और विनग्रता जरूरी है।

□ □□□□ □ (□□□□ 15:24 - □□□□ □□□):

"तो यदि यह बात अनजाने में हो जाए, और सभा को यह बात ज्ञात हो, तब सारी मण्डली

एक बछड़ा होमबलि करके यहोवा को सुगन्धित सुखदायक बलि चढ़ाए, और उसके साथ

उसका अन्नबलि और उसके साथ उसकी अर्ध रीति के अनुसार, और एक बकरा पापबलि

के लिये चढ़ाएँ।"

(गिनती 15:24, हिंदी ओवी)

★ □ □ □ □ □ □ ( □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ ) :

यह आयत उस स्थिति की बात करती है जहाँ पूरी मण्डली (congregation) ने अनजाने में (शगगा - भूल से) पाप किया हो – विशेष रूप से नेताओं (Sanhedrin / अदालत) द्वारा दिए गए गलत निर्णय के कारण।

यहाँ "आँखें (ע'נ'" शब्द नेताओं या न्यायपीठ (Sanhedrin) की बुद्धि और दृष्टि को दर्शाता है। अगर उन्होंने गलती से किसी पाप को अनुमति दे दी और लोगों ने उस पर विश्वास करके वैसा ही किया, तो यह "अनजाने का पाप" माना जाता है।

## Rashi:

”आँखों” का अर्थ ”नेता” हैं – जब नेता भूल से कोई ग़लत धार्मिक आदेश देते हैं और लोग उस पर अमल करते हैं, तब यह सामूहिक भल मानी जाती है।

## Gur Aryeh:

यह "रागा" (भूल) केवल लोगों की नहीं, बल्कि संघिन (अदालत) की ओर से हुई गलती है, और वह गलती पाप को जन्म देती है।

## **□ HaKtav VeHaKabalah:**

उन्होंने बताया कि यह 71 सदस्यों वाली बड़ी अदालत (Great Sanhedrin) की गलती थी।

अगर लोग जानते थे कि अदालत गलत है और फिर भी मान लिया, तब यह अनजाना पाप नहीं

माना जाएगा।

**उदाहरण:** अदालत ने गलती से कह दिया कि "आधा झुक कर मूर्ति को प्रणाम करना" पाप नहीं है – लोग ऐसा करते हैं, तब यह भूल से किया गया पाप है।

□ **Kli Yakar:**

इसे मूर्ति पूजा से जोड़ते हैं और कहते हैं कि यह पूरे धर्म का इंकार करना है। इसलिए पहले

**होमबलि** (विचारों की शुद्धि) और फिर **पापबलि** (काम की शुद्धि) दी जाती है।

□ **Rav Hirsch:**

उन्होंने कहा कि यह देश के नेतृत्व (Sanhedrin) की बुद्धि है। जब संपूर्ण राष्ट्र ने उनके गलत निर्णय के अनुसार पाप किया, तब इसे सुधारने हेतु दो प्रकार के बलिदान – होमबलि और पापबलि – चढ़ाए जाते हैं।

॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॥

आज के मसीही विश्वास में यह आयत दर्शाती है कि:

1. **नेताओं का बड़ा उत्तरदायित्व होता है।** अगर वे गलती से लोगों को ग़लत राह पर ले जाएँ, तो पूरे समाज पर उसका प्रभाव पड़ता है।
  
  
  
2. **यह हमें प्रभु यीशु मसीह की मध्यस्थता की आवश्यकता दिखाता है।** आज हम होमबलि या पापबलि नहीं चढ़ाते, क्योंकि यीशु मसीह ही एकमात्र बलिदान हैं जिसने हमारे अनजाने पापों के लिए भी कूस पर प्रायश्चित किया।

□ □

□ □ □ □ □ □ □ □ (□ □ □ □ □ □ □):

हे स्वर्गीय पिता,

जैसे आपने मूसा के समय में संपूर्ण सभा की अनजानी गलती को क्षमा किया, वैसे

ही आज हम भी आपके सामने दीन होकर आते हैं।

यदि हमारे चर्च, हमारे अगुवे या हम स्वयं किसी बात में अनजाने में पाप कर बैठे हैं,

तो हे प्रभु यीशु, आप हमारे लिए मध्यस्थ बनकर क्षमा दिला।

हमारे हृदयों और विचारों को शुद्ध कर, और हमें आपके सत्य मार्ग में चलना

सिखा।

हम स्वीकार करते हैं कि आप ही पूर्ण बलिदान हैं, और हम आपके प्रेम और

आज्ञाकारिता में चलना चाहते हैं।

प्रभु यीशु के नाम में प्रार्थना करते हैं। आमीन।

□ □ □ □ □ □ □ (□ □ □ □ □ □):

- गिनती 15:24 हमें सिखाता है कि अगुवों की गलती पूरी मण्डली को प्रभावित कर सकती है।
- परमेश्वर उन पापों को भी गंभीरता से लेता है जो भूलवश किए गए हैं।
- परंतु वह साथ ही क्षमाशील और दयालु भी है, और बलिदान के द्वारा क्षमा का मार्ग देता है।
- यीशु मसीह हमारे लिए वह पूर्ण बलिदान हैं जिन्होंने हमारे हर प्रकार के पाप (जान-

बूझकर या अनजाने) का प्रायश्चित कर दिया।

---

□ □ □ □ □ 15:25 (Hindi Bible)

"और याजक इस्राएलियों की सारी मण्डली का प्रायश्चित्त करेगा, तब उन को  
क्षमा मिल जाएगी; क्योंकि यह भूल थी, और वे अप्री भेंट-यहोवा की अन्न भेंट,  
और अपनी पापबलि यहोवा के सम्मुख लाए थे।"

(गिनती 15:25 - Hindi O.V.)

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ (Explanation in Hindi):

यह पद उन परिस्थितियों के बारे में है जहाँ सारी मण्डली (पूरी जाति या समुदाय) से कोई अनजाने में पाप हो जाता है। यह "शगागा" (הַשְׁגַע) शब्द दर्शाता है – यानी अनजाने में किया गया पाप (Unintentional sin)। तब याजक (काहेन) उनके लिए दो प्रकार की बलिदान चढ़ाता है:

1. **होमबलि (बैल)** — जो पूरी तरह जलाया जाता है और परमेश्वर को अर्पित होता है (इश्वरे ह ल'आदोनाई - "इश्वरे ह ला'हा'ओवा")।
2. **पापबलि (बकरी)** – जो पाप के लिए होता है और "यहोवा के सम्मुख" अर्पित किया जाता है ("लिफ्ने यहोवा")।

इन बलिदानों के बाद परमेश्वर की ओर से क्षमाशीलता (forgiveness) आती है क्योंकि यह

पाप जान-बूझकर नहीं किया गया था।

---

□ □□□□ □□□□□□□ □ □ □□□□□ □□□□□□□ (Rabbinic

Interpretations in Hindi):

□ □□□□□ □□□□ □□?

- राशी (Rashi) और रेजियो (Reggio) बताते हैं कि "होमबलि" में बैल और "पापबलि" में

नर बकरी चढ़ाई जाती थी।

- इब्र एज़रा (Ibn Ezra) कहते हैं कि "सईर म'אע" (sei'r izzim) का अर्थ है – युवा नर

बकरी।

- मिज़राही (Mizrachi) साफ़ करते हैं कि यह बली लेवियों की पुस्तक में उल्लिखित बैल

पापबलि से अलग है।

□ "□□□□" (□□□□□ □□ □□):

मालबिम (Malbim) कहते हैं कि "शागागा ही" यह दिखाता है कि यह पाप जानबूझकर नहीं

था। अगर जान-बूझकर (बेज़दोन) होता, तो क्षमा नहीं मिलती।

रेजियो बताते हैं कि गलती बड़ी भी हो सकती है, लेकिन जब तक वह जानबूझकर नहीं की

गई हो, क्षमा संभव है।

सिफ्री (Sifrei) के अनुसार, कुछ रब्बी (जैसे रब्बी एलीएज़ेर) मानते हैं कि अगर पूरी

मण्डली जानबूझकर भी पाप करे, पर उन्हें लगता हो कि वे सही कर रहे हैं (जैसे गलत न्यायिक आदेश पर चलना), तो भी वह "शागागा" माना जाएगा।

□ "यहोवा के सामने" (ה'וה נפנ'ל - Lifnei Hashem) का अर्थ:

- नहमानिदेस (Nachmanides) और रबेन् बहया (Rabbeinu Bahya) बताते हैं कि यह शब्द दर्शाता है कि यह पाप स्वर्गीय न्याय के सामने लाया गया है – यानी यह केवल दया (Mercy) से नहीं, बल्कि न्याय (Justice) से भी क्षमा मांगता है, विशेषकर मूर्तिपूजा (Idolatry) जैसे गंभीर पाप के लिए।

□ □ □ □ □ □ :

- रबी योनाथन और रबी यशिया कहते हैं कि अगर किसी एक गोत्र की अदालत ने गलती की और दूसरों ने उसका अनुसरण किया, तो कौन बलिदान चढ़ाएगा?
  - एक कहता है सभी, दूसरा कहता है केवल वही जिन्होंने उस गोत्र के आदेश का पालन किया।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ ?

**मसीही विश्वास में यह पद दर्शाता है कि:**

- प्रभु यीशु मसीह स्वयं हमारे लिए महायाजक (High Priest) और बलिदान दोनों हैं।
- जैसे पुराने नियम में याजक पूरे समाज के लिए बलिदान चढ़ाते थे, वैसे ही यीशु ने पूरी

## मानवता के लिए एक बार में बलिदान चढ़ाया (इब्रानियों 9:11-14)।

- मसीही चर्च में यह सिखाया जाता है कि:
  - अनजाने में किए गए पाप भी गंभीर हैं।
  - परन्तु यीशु का लहू उन सभी पापों के लिए पर्याप्त है, जब हम सच्चे मन से पश्चाताप करते हैं।
- होली कम्पूनियन (पवित्र भोज) भी इस सच्चाई की याद दिलाता है कि यीशु ने अपने शरीर और लहू को हमें पवित्र और क्षमा किया हुआ बनाने के लिए अर्पित किया।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ (Inspired Prayer):

**हे स्वर्गीय पिता,**

आप अनुग्रह और न्याय दोनों का स्रोत हैं। जैसे आपने इस्माएल की मण्डली की अनजानी गलती पर क्षमा दी, वैसे ही हम भी, जो अक्सर अपनी सीमाओं और समझ की कमी के कारण गिर जाते हैं, आपकी दया मांगते हैं।

हम धन्यवाद करते हैं कि आपने अपने पुत्र यीशु मसीह को भेजा, जो हमारा महायाजक बनकर हमारे पापों के लिए बलिदान बना।

प्रभु यीशु, आपने कूस पर हमारे लिए वह बलिदान चढ़ाया जो हमें जीवन और क्षमा देता है। हम आपसे विनती करते हैं – हमें अपने आत्मा से मार्गदर्शन दे, जिससे हम

**आपके वचन में चल सकें, और अनजाने पापों से भी बचे रहें।**

**हमारे ऊपर दया कर, और हमें सामूहिक रूप से भी पवित्रता में बढ़ने की शक्ति दे।**

**प्रभु यीशु के नाम में प्रार्थना करते हैं, आमीन।**

---

□ □ □ □ □ □ □ □ (Conclusion in Hindi):

गिनती 15:25 एक महत्वपूर्ण पद है जो समूह की जिम्मेदारी, अनजाने पाप, और प्रायश्चित्त के विधान को दर्शाता है। यह हमें यह सिखाता है कि:

- पाप चाहे अनजाने में हो, फिर भी वह क्षमा योग्य है – लेकिन इसके लिए बलिदान और पश्चाताप आवश्यक है।
  - यह सिद्धांत मसीही विश्वास में भी जीवित है, जहाँ यीशु मसीह वह अंतिम बलिदान और महायाजक बन गए।
  - यह पद हमें आज भी पवित्रता, नप्रता, और सामूहिक उत्तरदायित्व की ओर बुलाता है।
- 

□ □ □ □ □ 15:26 — □ □ □ □ □ □ (□ □ □ □ □ □):

**"और इस से समस्त इस्राएली समुदाय और उनके बीच रहने वाले परदेशी को**

**क्षमा किया जाएगा, क्योंकि सब लोगों ने अज्ञानता से पाप किया था।"**

(गिनती 15:26, हिंदी बाइबिल)

---

❖ □ □ □ □ □ □ □ — □ □ □ □ □ □ □ :

यह पद बताता है कि जब पूरा समुदाय (इस्राएल की संपूर्ण सभा) और उनके बीच रहने वाले गौर-यहूदी (परदेशी) लोग अनजाने में (बिना जानबूझे) पाप कर बैठते हैं, तो परमेश्वर उनकी क्षमा करता है – लेकिन यह क्षमा केवल "अनजाने पाप" के लिए होती है, जानबूझकर किए गए पाप के लिए नहीं।

**मुख्य बातें:**

- यह केवल तब लागू होता है जब पूरे समुदाय ने मिलकर गलती की हो, जैसे कि उन्होंने अपने अगुवों या न्यायालय की गलत शिक्षाओं को मान लिया हो।
  - इसमें यह भी स्पष्ट है कि जो लोग इस्राएल में रहते हैं लेकिन इस्राएली नहीं हैं (परदेशी/गौर-यहूदी), उन्हें भी इस क्षमा में शामिल किया जाता है।
  - परमेश्वर की यह व्यवस्था सामूहिक ज़िम्मेदारी और करुणा को दर्शाती है।
- 

□  
□ □ □ □ :

**1. Haamek Davar:**

**जब पूरी कौम कोई पाप करती है, तो माना जाता है कि उन्होंने जानबूझ कर नहीं, अपने नेताओं की बात मानकर गलती की है। इसलिए सभी के लिए यह एक अनजाना पाप है।**

## 2. Steinsaltz:

**अगर न्यायालय ने कोई गलत आदेश दिया और लोग उस पर चले, तो वह पाप पूरे समुदाय का पाप बन जाता है और पूरे समूह के लिए एक ही बलिदान लाया जाता है।**

## 3. Ralbag:

वह कहता है कि परदेशियों को भी शामिल करना ज़रूरी है, ताकि यह न लगे कि वे बलिदान या क्षमा से बाहर हैं। इसलिए वे उसी गोत्र के साथ गिने जाते हैं जिनके बीच वे रहते हैं।

## 4. Ramban:

परदेशी (गैर-यहूदी) लोग अक्सर अपने पुराने विश्वास (जैसे मूर्तिपूजा) में फिर से लौट सकते हैं, इसलिए उन्हें ज़िक्र करना ज़रूरी है ताकि उनके लिए भी क्षमा की व्यवस्था हो।

## 5. Rav Hirsch:

एक नवपरिवर्तित व्यक्ति (convert) अगर मूर्तिपूजा की ओर अनजाने में फिर से लौटता है, तो यह गंभीर relapse माना जा सकता है। इसलिए परमेश्वर उन्हें विशेष रूप से क्षमा प्रदान करता है।

## 6. Tzafnat Pa'neach:

**वह कहता है कि यहाँ स्त्रियों को भी शामिल किया गया है, जबकि अन्य बलिदानों में उन्हें शामिल नहीं किया जाता। यह पद हमें बताता है कि यह क्षमा केवल पुरुषों के लिए नहीं, बल्कि पूरे समुदाय - स्त्री, पुरुष, और परदेशी - सभी के लिए है।**

## 7. Torah Temimah:

वह बताता है कि अगर न्यायालय की गलती से समुदाय पाप करे, तो वह पूरे समुदाय का अनजाना पाप माना जाता है, चाहे वह व्यक्तिगत रूप से जानते भी न हों।

## 8. Rabbi Yehuda (Jerusalem Talmud):

एक गोत्र (tribe) की गलती भी बाकी सबको दोषी ठहरा सकती है, क्योंकि सभी गोत्र एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं।

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

हालाँकि यह पद सीधे तौर पर मसीही बाइबिल में उद्धृत नहीं होता, लेकिन इसके पीछे की आत्मा और सिद्धांत आज भी प्रभु यीशु मसीह की सेवकाई में पूरी होती है:

- प्रभु यीशु ने कहा, ”हे पिता! इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं।”  
(लूका 23:34) – यह वाक्य इस बात का सुंदर उदाहरण है कि कैसे अनजाने में पाप करने वालों के लिए भी क्षमा उपलब्ध है।
  
  - मसीहियों में यह मान्यता है कि यीशु ने समस्त मानव जाति का पाप अपने ऊपर लिया, चाहे वह यहूदी हो, या गैर-यहूदी (gentile)।
  
  - इस पद का सिद्धांत आज चर्च में एकता, सामूहिक पश्चाताप, और करुणा के रूप में कार्य करता है।
-

□  
□ □ □ □ □ □ □ :

”हे प्रेमी पिता, हम आपसे क्षमा माँगते हैं उन पापों के लिए जिन्हें हमने अनजाने में  
किया। आप जानता है हमारे मन को, हमारी कमज़ोरियों को। जैसे तूने अपने लोगों  
को समुदाय के रूप में क्षमा किया, वैसे ही आज हम सबके लिए आपकी दया माँगते  
हैं – स्त्री, पुरुष, बच्चों, और उन सभी के लिए जो आपकी शरण में आते हैं। हे यीश,  
आपने कृस पर हमारे लिए क्षमा माँगी, हमें भी वैसी ही दया और करुणा से भर दे।  
हमें सिखा कि हम दूसरों के पापों को समझदारी से देखें और सामूहिक रूप से  
तुझसे क्षमा माँगो। आमीन।”

---

□ □ □ □ □ □ □ □ :

- **गिनती 15:26** सामूहिक क्षमा और परमेश्वर की न्यायपूर्ण करुणा का एक सुंदर चित्र है।
  
  
  
- यह बताता है कि नेतृत्व की गलतियाँ भी पूरी कौम को प्रभावित कर सकती हैं – और परमेश्वर इसे समझते हैं।
  
  
  
- **हर व्यक्ति की गिनती होती है** – चाहे वह जन्म से इसाएली हो, या कोई नवपरिवर्तित गैर-यहूदी।
  
  
  
- यीशु मसीह के जीवन और मृत्यु में यह बात पूर्ण होती है कि हर पापी को क्षमा मिल सकती है, यदि वह पश्चाताप करता है – जानबूझ कर हो या अनजाने में।

- यह पद आज भी हमें एकजुटता, आत्म-जांच, और सामूहिक पश्चाताप की शिक्षा देता है।

□ □□□□ 15:27 □□ □□□□□ □□□□□ □□:

**"और यदि कोई एक ही व्यक्ति अनजाने में पाप करे, तो वह एक वर्ष की एक मादा बकरी पापबलि करके चढ़ाए।"**

(गिनती 15:27 - Hindi Bible:ERV)

---

□ □□□□ □□ □□□□□□□:

यह पद उस व्यवस्था को बताता है जब कोई व्यक्ति अनजाने में पाप करता है, विशेष रूप से यह पाप मूर्तिपूजा (अर्थात् अविद्या से किया गया अति गंभीर अपराध) को संदर्भित करता है। ऐसे पाप के लिए उस व्यक्ति को एक वर्ष की मादा बकरी को पापबलि (sin offering) के रूप में चढ़ाना होता था।

□ "अनजाने में पाप करना" (शागगाह - הַגָּגָה):

- इसका अर्थ है कि व्यक्ति ने जान-बूझकर नहीं, बल्कि गलती से, अज्ञानता या भ्रम में पड़कर पाप किया।
- मूर्तिपूजा, भले ही अनजाने में हो, एक गंभीर आत्मिक हानि मानी जाती है।

□ "एक मादा बकरी" (הַגָּתָה בְּזַעַם):

- यह offering (बलिदान) विशेष रूप से मूर्तिपूजा के अनजाने पाप के लिए निर्धारित है।
  - अन्य प्रकार के पापों के लिए व्यक्ति भेड़ या बकरी ला सकता था, परंतु यहाँ विशेष रूप से मादा बकरी की मांग है।

□ □ □ □ □ (Rashi):

- वे स्पष्ट करते हैं कि यह पद अनजाने मूर्तिपूजा (idolatry) से संबंधित है।
  - मूर्तिपूजा का संदर्भ पिछले पदों से जुड़ा हुआ है (गिनती 15:22-26, जो सामूहिक मूर्तिपूजा के बारे में है)।

□ □ □ □ □ □ □ □ (Gur Aryeh):

- बताते हैं कि यह "व्यक्ति" (गोआ ४७ - एक आत्मा) सिर्फ कोई आम इंसान ही नहीं, बल्कि हर वर्ग (साधारण, नासी/नेता, महायाजक) को सम्मिलित करता है।
  - क्योंकि मूर्तिपूजा आत्मा को गहराई तक प्रभावित करती है, यह offering हर किसी के लिए एक समान है।

□ □ □ □ □ □ □ (Malbim):

- कहते हैं कि अनजाने में की गई मूर्तिपूजा भी आत्मा को बहुत हानि पहुँचाती है, इसलिए इसकी offering विशिष्ट है।

□ □□□□□ (Chizkuni):

- बताते हैं कि मादा बकरी इसलिए चुनी गई क्योंकि मूर्तिपूजक समाज में पुरुष बकरों (सेईर) को शैतानी बलिदानों के लिए इस्तेमाल किया जाता था।
- यह offering उसी प्रथा से व्यक्ति को अलग करने का प्रतीक है।

□ □□□ □□□□□ (Torah Temimah):

- एक बरेझता के हवाले से कहते हैं कि यह offering राजा, उच्च याजक, या आम व्यक्ति - सभी के लिए समान है।

□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□:

मसीही विश्वास में, पुराना नियम (Old Testament) की बलिदानों की व्यवस्था यीशु मसीह के बलिदान में पूरी हुई मानी जाती है।

□ इब्रानियों 10:10:

"हम यीशु मसीह के शरीर के एक ही बार चढ़ाए जाने से पवित्र किए गए हैं।"

**इसका महत्व:**

- यह पद हमें सिखाता है कि हमारे अनजाने में किए गए पाप भी गंभीर होते हैं और हमें परेचाताप और आत्म-निरीक्षण करना चाहिए।
- प्रभु यीशु मसीह ही अंतिम पापबलि हैं, जिनके द्वारा हमारे सभी पापों का प्रायश्चित्त हो गया, चाहे वे जानबूझकर हों या अनजाने में।

□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□ (□□□□□□□□□  
□□ □□□ □□□□ □□□□):

हे परमेश्वर, आप जो पवित्र और सच्चे हैं, मैं आपसे क्षमा माँगता हूँ यदि मैंने किसी  
भी रूप में अनजाने में तुझसे विमुख होकर किसी और को तेरे स्थान पर रखा हो। मैं  
तुझे अपना एकमात्र प्रभु स्वीकार करता हूँ, और अपने हृदय में हर उस विचार और  
आदत को त्यागता हूँ जो तुझसे दूर ले जाती है।

प्रभु यीशु मसीह, आप ही मेरा उद्धारकर्ता हैं। मैं तुझसे निवेदन करता हूँ कि आप  
मेरे हृदय को शुद्ध कर, मुझे हर प्रकार की मूर्तिपूजा और आत्मिक धोखे से बचा  
कर अपने सत्य में बनाए रख। मुझे पवित्र आत्मा से भर दे, कि मैं आपकी उपस्थिति  
में स्थिर रह सकूँ। आमीन।

□ □□□□□□□:

- गिनती 15:27 एक ऐसा नियम है जो अनजाने में की गई मूर्तिपूजा के लिए एक निश्चित offering का आदेश देता है।
- यह दर्शाता है कि अनजाने में किया गया पाप भी गंभीर होता है, विशेषकर यदि वह आत्मिक विश्वासघात (जैसे मूर्तिपूजा) से जुड़ा हो।
- यहां विद्वान इस offering की प्रकृति, पाप की गंभीरता और इसमें शामिल व्यक्तियों के स्तर की समता पर ज़ोर देते हैं।

- मसीही विश्वास के अनुसार, यह offering हमें यीशु मसीह की बलिदान की पूर्णता की ओर इंगित करती है, जिसने एक बार के लिए सभी पापों का निवारण कर दिया।
- यह पद हमें पश्चाताप, आत्म-जांच और परमेश्वर के प्रति निष्ठा में स्थिर रहने की शिक्षा देता है।

## **JUDICIAL**

P224 De.25:2 On whipping transgressors of certain commandments

**बाइबल पद - व्यवस्थाविवरण 25:2 (Deuteronomy 25:2) - हिंदी में:**

2 और यदि दोषी को मारना आवश्यक हो, तो न्यायाधीश उसे अपने सामने

लिटवाए और उसकी दुष्टा के अनुसार उसे निश्चित संख्या में कोड़े मरवाए।"

**हिंदी में समझाइए:**

यह व्यवस्था उस स्थिति को बताती है जब कोई व्यक्ति किसी अपराध के कारण अदालत में

दोषी ठहराया जाता है और उसे शारीरिक दंड (कोड़े मारना) दिया जाना आवश्यक हो। यह दंड

एक न्यायाधीश की निगरानी में, नियंत्रित और निर्धारित संख्या में दिया जाना चाहिए। यह दंड

अत्यधिक नहीं होना चाहिए, बल्कि उसकी दुष्टा के अनुसार होना चाहिए, जिससे न्याय हो

लेकिन अत्याचार न हो।

**रब्बियों द्वारा विभिन्न व्याख्याएँ (उदाहरण सहित):**

1. "यदि वह दृष्ट पिटने योग्य हो" (वचन 2 का आरंभ):

- Torah Temimah के अनुसार यह दंड केवल उन्हीं लोगों के लिए होता है जिन्होंने निषेधाज्ञा (Negative Commandment) का उल्लंघन किया हो, जिसके साथ कोई सकारात्मक आदेश (Positive Commandment) जुड़ा न हो।
- Ibn Ezra कहते हैं कि “wicked” (दुष्ट) शब्द दिखाता है कि वह व्यक्ति कोई हिंसा या अन्य गंभीर अपराध कर चुका है।
- Or HaChaim के अनुसार, ”ben” शब्द का उच्चारण यह दर्शाता है कि दंड देने वाला व्यक्ति यह देखे कि आरोपी इस दंड को सह सकता है या नहीं।

## 2. "जज उसे लिटवाए" (לִפְנֵהוּ – vehippilo):

Rashi और Talmud (Makkot 22b) के अनुसार, व्यक्ति को न खड़ा और न बैठा, बल्कि झुकाकर (लीन अवस्था में) लिटाया जाता है ताकि दंड ठीक से दिया जा सके।

Malbim के अनुसार, यह “गिराना” प्रतीकात्मक है - उसे उसकी स्थिति से झुकाना, ताकि दंड ठीक से और संयम में दिया जाए।

Kitzur Ba'al HaTurim कहते हैं कि ”vehippilo” शब्द की *gematria* (संख्यात्मक मूल्य) “दोहरा” (double) के बराबर है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि कोड़े की पट्टी दोहरी होनी चाहिए।

## 3. "न्यायाधीश के सामने कोड़े मारे जाएं":

- Chizkuni बताते हैं कि न्यायाधीश की उपस्थिति अनिवार्य है ताकि दंड देने में कोई अति

## न हो।

- **Malbim** बताते हैं कि दंड देने वाला न्यायाधीश नहीं होता, लेकिन यह उसकी निगरानी में होता है, ताकि जब दंड सीमा पार करने लगे तो उसे रोका जा सके।

## 4. "उसकी दुष्टता के अनुसार" (כדי רשות – k'dei rish'ato):

- **Chizkuni** कहते हैं कि यद्यपि यह वाक्यांश किसी गिनती की बात नहीं करता, परंतु परंपरा अनुसार अधिकतम 39 कोड़े ही दिए जाते हैं।
- **HaKtav VeHaKabalah** के अनुसार यह वाक्य यह दर्शाता है कि दंड केवल दुष्टता के लिए है - प्रतिशोध के लिए नहीं।
- **Rambam** (मिश्रे तोराह) कहते हैं कि कोड़ों की संख्या उस व्यक्ति की ताकत के अनुसार निर्धारित होती है।

## 5. "गिनती में" (במיספר – b'mispar):

- **Rashi** कहते हैं कि "गिनती में" का मतलब है - 40 तक, लेकिन 1 कम, यानी 39 कोड़े।
- **Rabbeinu Bahya** इसका गहरा अर्थ बताते हैं - 39 का गणितीय मूल्य "tal" (ओस) होता है, जो पुनरुत्थान का संकेत है - यह दंड आत्मा की शुद्धि हेतु होता है।
- **Gur Aryeh** कहते हैं कि शरीर के पिछले हिस्से (पीठ) पर दो-तिहाई और सामने (छाती) पर एक-तिहाई कोड़े पड़ते हैं - ताकि व्यक्ति उस पाप के गम्भीरता को समझे और

**पश्चाताप करें।**

---

## आज के मसीही चर्च में इसका क्या महत्व है?

आज के ईसाई चर्चों में यह व्यवस्था शाब्दिक रूप से लागू नहीं होती, क्योंकि यीशु

मसीह ने व्यवस्था का उद्देश्य पूरा कर दिया (मत्ती 5:17)।

### मसीही दृष्टिकोण से मुख्य बातें:

यह व्यवस्था न्याय, संतुलन और करुणा के महत्व को दर्शाती है - दंड तो हो, परंतु सीमित

और विवेकपूर्ण हो।

मसीही सिद्धांतों में शारीरिक दंड के स्थान पर पश्चाताप, क्षमा और सुधार को

प्राथमिकता दी जाती है।

यीशु मसीह स्वयं को निर्दोष होते हुए भी पिटवाते हैं - न केवल दुष्टों के लिए, बल्कि सबके

लिए (यशायाह 53:5)।

---

### इससे संबंधित एक मसीही प्रार्थना:

"हे प्रभु यीशु मसीह, आप जिसने हमारे पापों का भार अपने शरीर पर उठाया, आप

जिसे बिना अपराध के भी कोड़े खाए, हम आपके अनुग्रह के लिए धन्यवाद करते

हैं।

**आपने न्याय और दया का आदर्श स्थापित किया।**

**हमें ऐसा हृदय दे कि हम न्याय करें, करुणा दिखाएँ, और नम्र होकर आपके साथ चलें।**

**जब हम दूसरों के अपराध देखें, तो हमें कठोरता नहीं, बल्कि विवेक और दया से देखने की बुद्धि दे।**

**हमें सिखा कि दंड केवल सुधार के लिए हो, न कि अपमान के लिए।**

**प्रभु यीशु मसीह नाम में, आमीन।”**

---

### **निष्कर्ष:**

व्यवस्थाविवरण 25:2 न्यायिक दंड की प्रक्रिया को दर्शाता है - व्यक्ति को उसकी दुष्टता के अनुसार, परंतु न्यायपूर्ण और सीमित कोड़ों से दंडित किया जाए। यह दंड न्यायाधीश की निगरानी में होता है ताकि सीमा का उल्लंघन न हो। रब्बी व्याख्याएँ इस प्रक्रिया को शारीरिक, नैतिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण से गहराई से देखती हैं।

आज के मसीही विश्वास में, यह व्यवस्था यीशु मसीह की शिक्षा द्वारा पूर्ण की गई मानी जाती है, जहाँ करुणा, पश्चाताप और आत्मिक पुनःस्थापन को प्राथमिकता दी जाती है।

**यीशु स्वयं को दंडित होने देने वाला न्यायी है, जो हमें सिखाते हैं कि सच्चा दंड वह है जो उद्धार और परिवर्तन की ओर ले जाए, न कि केवल प्रतिशोध की ओर।**

---

**बिलकुल, आइए इस पूरे विषय को क्रमबद्ध ढंग से हिंदी में विस्तार से समझते हैं:**

□ □ □ □ □ □ □ □ (Bible Verse in Hindi):

## **गिनती 35:25 (Numbers 35:25)**

”तो समाज उस घातक को, जो खून का पलटा लेनेवाले से भाग गया हो, छुड़ाकर शरण के नगर में पहुंचा देगा, और वह वहाँ महायाजक के मरने तक बना रहेगा, जिसको अभिषेक के तेल से अभिषेक किया गया हो।

A horizontal row of 20 empty square boxes, intended for children to draw or write in.

**(Explanation in Hindi):**

जो व्यक्ति अनजाने में (अप्रत्याशित रूप से) किसी की हत्या कर देता है, उसे "शरण के नगर" में भागना होता था ताकि खून का पलटा लेने वाला (पीड़ित के परिवार का सदस्य) उसे मार न सके। लेकिन वह व्यक्ति उस नगर में महायाजक की मृत्यु तक ही रह सकता था। जब महायाजक मर जाते थे, तभी वह व्यक्ति वापस अपने घर लौट सकता था।

**Interpretations in Hindi):**

## राशी (Rashi):

**महायाजक जीवन बढ़ाता है, और हत्यारा जीवन घटाता है; इस कारण, हत्यारे का**

**उसके निकट रहना अनुचित है।**

महायाजक को प्रार्थना करनी चाहिए थी कि ऐसी घटना न हो; उसकी कमी मानी जाती है।

**बार्टेनुरा (Bartenura):**

वह इसे जीवन और मृत्यु की उपस्थिति के बीच संघर्ष मानते हैं।

**रब्बेनु बह्या (Rabbeinu Bahya):**

महायाजक पूरी प्रजा के लिए प्रायश्चित्त करता है, इसलिए वह हत्या की ज़िम्मेदारी में

**भागीदार भी है।**

**क्ली याकर (Kli Yakar):**

हारून, पहला महायाजक, शांति का प्रतीक था; उसे पीढ़ी के लिए प्रार्थना करनी थी।

**गुर आर्ये (Gur Aryeh):**

हत्यारा और महायाजक आध्यात्मिक रूप से परस्पर विरोधी हैं; एक दाहिनी ओर से (माइकेल), दूसरा बाईं ओर से (सामएल) से संबंध रखता है।

**हादार ज़केनिम (Hadar Zekenim):**

जब तक महायाजक जीवित रहते हैं, तब तक जनता को यह संतोष होता है कि न्याय

हुआ; नए महायाजक पर दोष नहीं लगाया जा सकता।

□ □□□□□□□□□□□ □ □ □□□□□□□□:

- **एम लामिकरा (Em LaMikra):**

- धर्मी व्यक्ति की मृत्यु सारी प्रजा के लिए प्रायशिच्त है; इसलिए महायाजक की मृत्यु एक सांत्वना है।

- **तोरा तेमीमा (Torah Temimah):**

- यरुशलम तालमूद के अनुसार, अनजाने में हत्या का कोई प्रायशिच्त नहीं था जब तक महायाजक की मृत्यु को इसका आधार नहीं बनाया गया।

- **रब्बेनु बह्या:**

- पीड़ित परिवार को सांत्वना देने हेतु महायाजक की मृत्यु का विधान हुआ।

□ □□□□ □ □ □□□□ □ □ □□□□□□ □ □

□□□□□□□□□□:

- **सफोर्नो (Sforno):**

- हर हत्या का स्तर अलग होता है - कभी दुर्घटनावश, कभी लापरवाही से।

महायाजक की मृत्यु समय की लंबाई को ईश्वर नियंत्रित करता है।

- **हक्ताव वेहकबाला (HaKtav VeHaKabalah):**

- प्रत्येक हत्यारे की अवधि अलग हो सकती है क्योंकि ईश्वर जानता है किसे कितनी सज़ा मिलनी चाहिए।
- 

- □ □ □ □ □ □ (Example):

कल्पना कीजिए कि किसी व्यक्ति से गलती से किसी की मृत्यु हो जाती है – जैसे कि वह पेड़ काट रहा था और कुल्हाड़ी की धातु उड़कर किसी को लग जाती है। अब वह व्यक्ति तुरन्त शरण के नगर भागता है। जब तक उस समय के महायाजक जीवित हैं, वह नगर नहीं छोड़ सकता। यदि महायाजक का देहांत हो जाए, तब ही वह अपने घर लौट सकता है।

---

- □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

- □ □ □ (Importance in Today's Christian Church):

- □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

- मसीह यीशु हमारे "महायाजक" हैं (इब्रानियों 4:14) और उन्होंने अपने बलिदान से हमारा प्रायशिच्त किया।
- पुराने नियम में एक निर्दोष व्यक्ति (महायाजक) की मृत्यु से अपराधी छूटता था। नये नियम में भी, मसीह की मृत्यु से हम पाप से मुक्त होते हैं।

□ □□□□□□□□□ □ □ □ □□□□□:

- मसीह में शरण लेने का अर्थ है अपने पापों से भागकर उसके अनुग्रह में जाना।
  - जब तक हम पाप में हैं, हमें "शरण" की आवश्यकता है, और मसीह की मृत्यु हमें वापस जीवन में लौटने का मार्ग देती है।
- 

□ □□□□□□□ (Prayer in the Life of Jesus):

**हे प्रेमी प्रभु यीशु मसीह,**

आप ही हमारे सच्चे महायाजक हैं, जिन्होंने अपने लहू से हमें छुटकारा दिया।

हम भी उस अनजाने हत्यारे की तरह दोषी थे, पर आपने अपनी मृत्यु से हमें मुक्ति दी।

जैसे शरण के नगर में सुरक्षा मिली, वैसे ही आप में हमें शांति और जीवन मिला।

हम प्रार्थना करते हैं कि हम कभी आपके अनुग्रह से दूर न हों और सदा आपके चरणों में शरण लें।

हमें विवेक दीजिए कि हम दूसरों के जीवन को महत्व दें, और पवित्रता से चलें।

**प्रभु यीशु मसीह के नाम में,**

**आमीन।**

---

□ □□□□□□ (Conclusion in Hindi):

शरण के नगर में रहकर महायाजक की मृत्यु की प्रतीक्षा करने की व्यवस्था यह दिखाती है कि

ईश्वर न्याय, दया और नेतृत्व की जिम्मेदारी को बहुत गंभीरता से लेते हैं। यह व्यवस्था महायाजक और अपराधी दोनों की आत्मिक स्थिति को उजागर करती है। मसीही दृष्टिकोण से, यह व्यवस्था यीशु मसीह में पूरी होती है, जो हमारा महायाजक बनकर, हमारी जगह मर गए और हमें परमेश्वर के पास वापस लाए। यह हमें प्रेरित करता है कि हम भी पवित्र जीवन जिएं, और दूसरों को भी क्षमा और अनुग्रह में चलना सिखाएं।

---

P226 Ex.21:20 On beheading transgressors of certain commandments

## **निर्गमन 21:20 का बाइबल पद (हिंदी में):**

### **निर्गमन 21:20-21 (Hindi Bible -ERV):**

20 “यदि कोई पुरुष अपने दास या दासी को लाठी से मारे और वह मर जाए,  
तो उस पुरुष को दण्ड अवश्य दिया जाएगा।

---

## **हिंदी में सरल व्याख्या:**

इस पद में उस स्थिति का वर्णन है जब एक स्वामी अपने दास को अनुशासन के लिए मारता है।  
यदि मारने के कारण दास तुरन्त मर जाता है, तो उस स्वामी को सज़ा दी जाएगी – यह दर्शाता है  
कि उसका कार्य हत्या के समान है।

लेकिन यदि दास एक या दो दिन जीवित रहता है और फिर मरता है, तो यह माना जाता है कि  
मारना जानबूझकर हत्या नहीं थी, बल्कि अनुशासनात्मक कार्य था, और उस स्वामी को मौत की

सज्जा नहीं दी जाएगी। यह इस आधार पर है कि दास को उस समय "स्वामी की संपत्ति" माना जाता था।

---

## यहूदियों (रब्बियों) की टीका और विचार:

### 1. यह किस प्रकार के दास की बात है?

- **कनानी दास:** अधिकांश रब्बी मानते हैं कि यह आदेश केवल कनानी दास के लिए है (विदेशी गुलाम)। यह इस वाक्यांश "क्योंकि वह उसका धन है" से स्पष्ट होता है।
    - **इन्हे एज़रा और बेखोर शोरः**: वे स्पष्ट करते हैं कि यह इज़राइली सेवक के लिए नहीं है, जो केवल छह वर्षों के लिए सेवा करता है और उसे स्वतंत्रता मिलती है।
- 

### 2. "लाठी" का प्रयोग (טבש - Shevet):

- **चिज़कुनी और मालबिम:** लाठी का प्रयोग अनुशासन का सामान्य तरीका था, यह तलवार या खंजर जैसा घातक हथियार नहीं था।
- **रशबाम और रशी:** यदि स्वामी तलवार या अन्य घातक हथियार से मारता है, तो उसे दण्ड ज़रूर दिया जाएगा, चाहे दास एक-दो दिन बाद मरे – क्योंकि तब उसका इरादा मारने का माना जाएगा।

### 3. "उसके हाथ के नीचे मर जाए" (מֵת תחת יד):

- इसका अर्थ है कि मृत्यु मारने के तुरंत बाद हो। तभी स्वामी को मृत्यु-दण्ड (execution by sword) मिलेगा।
- अगर दास एक-दो दिन जीवित रहा, तो मान लिया जाता है कि यह अनुशासन था, हत्या नहीं।

### 4. "दण्ड अवश्य दिया जाएगा" (מֵת יִנְקַם):

- यह वाक्यांश सज्ञा (विशेषकर मौत की सज्ञा) की ओर इशारा करता है।
- रबी हिर्शः कहते हैं कि यहाँ "बदला लेना" शब्द इस बात पर ज़ोर देता है कि गुलाम की हत्या भी उतनी ही गंभीर है जितनी किसी स्वतंत्र व्यक्ति की।

### 5. विशेष नियम का सामान्य नियम से अपवाद (דבר שהיה בכלל עצים):

- यह एक हलाखिक सिद्धांत है जिसमें कोई विशेष मामला सामान्य नियम से निकाला गया हो, जैसे यहाँ।
- इसका मतलब यह है कि गुलाम की मृत्यु के मामले में जो ढील दी गई है (एक-दो दिन

**जीवित रहने पर सज़ा नहीं), वह किसी स्वतंत्र व्यक्ति की हत्या पर लागू नहीं होती।**

---

## उदाहरण:

कल्पना करें कि एक स्वामी अपने कनानी गुलाम को अनुशासन के लिए डांटते हुए लाठी से मारता है। यदि वह गुलाम उसी दिन मर जाए, तो स्वामी को मृत्युदण्ड होगा।

लेकिन यदि वह गुलाम दो दिन जीवित रहा और फिर मरा, तो इसे गैर-इरादतन माना जाएगा और स्वामी को जान से मारने की सज़ा नहीं मिलेगी – क्योंकि वह ”उसकी संपत्ति” है।

---

## मसीही चर्च में आज इसका क्या महत्व है?

1. **मूल्य और सम्मान:** आज के मसीही चर्च में इस पद का नैतिक सन्देश ज़्यादा महत्वपूर्ण है। हर व्यक्ति ईश्वर की प्रतिमा में रचा गया है (उत्पत्ति 1:27)। दास हो या स्वतंत्र, सभी का जीवन पवित्र है।
  
  
  
2. **यीशु का दृष्टिकोण:** प्रभु यीशु ने कहा कि जो किसी छोटे से को भी चोट पहुँचाता है, वह खुद परमेश्वर के विरुद्ध पाप करता है (मत्ती 25:40)।
  
  
  
3. **दासता की समाप्ति का आव्वान:** प्रभु यीशु मसीह की शिक्षा ने परस्पर प्रेम, दया, और समानता का प्रचार किया, जिससे कालांतर में मसीही प्रभाव से विश्व में दासता को समाप्त करने के लिए आंदोलन खड़े हुए।

## प्रभु यीशु मसीह के जीवन से प्रेरित प्रार्थना:

**हे यीशु मसीह,**

आपने प्रत्येक प्राणी को प्रेम की दृष्टि से देखा – चाहे वह निर्धन हो या दास।

आपने हमें सिखाया कि हम एक-दूसरे की सेवा करें और किसी पर अधिकार न जमाएं।

हे प्रभु, मेरे हृदय को नम्र करें कि मैं दूसरों को तुच्छ न समझूँ।

बल्कि हर जन को आपकी प्रतिमा में बना मानकर आदर दूँ।

कृपया हमें वह अनुग्रह दें कि हम अन्याय के विरुद्ध खड़े हों

और प्रेम और न्याय से परिपूर्ण जीवन जीएं।

**प्रभु यीशु मसीह के नाम में, आमीन।**

## निष्कर्ष (Conclusion):

निर्गमन 21:20-21 एक संवेदनशील सामाजिक व्यवस्था की ओर इशारा करता है जो यहूदी समाज में उस समय मौजूद थी। रब्बी टीकाकारों ने इस पद के माध्यम से न्याय और इरादा दोनों के बीच संतुलन पर प्रकाश डाला।

हालांकि मसीही विश्वास आज इस पद को ऐतिहासिक रूप से देखता है, इसके नैतिक और आत्मिक सन्देश – हर जीवन का मूल्य, करुणा और प्रभु यीशु के द्वारा दिखाया गया प्रेम – आज भी उतने ही सामयिक हैं।

P227 Ex.21:16 On strangling transgressors of certain commandments

□ □□□□□ □□ (□□□□□□□ 21:16)

Hindi (ERV):

“जो कोई किसी व्यक्ति को चुरा कर उसे बेचे, या यदि वह व्यक्ति उसके पास पाया जाये, तो वह  
चोर अवश्य मार डाला जाये।”

❖ □□□□□ □□ □□□□□□□:

यह पद मानव अपहरण की सख्त निंदा करता है। कोई भी व्यक्ति जो किसी अन्य व्यक्ति को  
चुराता है (अर्थात् उसका अपहरण करता है), चाहे उसे बेच दिया हो या वो अब भी उसके पास  
पाया जाए, उसकी सज़ा मृत्युदंड है। यह दिखाता है कि पवित्रशास्त्र में व्यक्ति की स्वतंत्रता और  
प्रतिष्ठा को कितना महत्व दिया गया है।

□ □□□□□□□ □□ □□□□□ (Rabbinic Commentary):

□ 1. □□□□□ □□ □□□□□□□:

- Rashi बताते हैं कि यह पद इसलिए ज़रूरी है क्योंकि व्यवस्थाविवरण 24:7 में यह पुरुषों  
के लिए लिखा गया है, लेकिन यह पद स्पष्ट करता है कि चोरी या अपहरण करने वाला  
कोई भी हो – पुरुष, स्त्री, टूमटूम (लिंग अस्पष्ट व्यक्ति), या एंड्रोजिनस (दोनों लिंगों  
वाला व्यक्ति) – सब पर यही दंड लागू होता है।

□ 2. "मनुष्य" का अर्थ:

- Gur Aryeh लिखते हैं कि "मनुष्य" शब्द यह स्पष्ट करने के लिए है कि यदि कोई मरे हुए बच्चे (stillborn) को चुराए तो वह इस दंड के अंतर्गत नहीं आता, लेकिन जीवित या सक्षम बच्चे (viable child) को चुराना दंडनीय है।

□ 3. अपहरण का अर्थ:

- Ramban के अनुसार, "यदि वह उसके हाथ में पाया जाए" का अर्थ है कि अपहरणकर्ता ने उस व्यक्ति को अपने अधिकार में लिया हो, जैसे चोरी की संपत्ति पर अधिकार आवश्यक होता है।
- Rashi का मत है कि गवाहों ने चोरी और बिक्री दोनों देखी होनी चाहिए, और चोरी से पहले वह व्यक्ति उसके पास मिला हो।

□ 4. अपहरण का अर्थ:

- Rabbeinu Saadyah Gaon बताते हैं कि यह पद माता-पिता को मारने और शाप देने वाले पदों के बीच इसलिए रखा गया है, क्योंकि अपहरण किए गए बच्चे जब बड़े होकर वापस लौटते हैं, तो वे अपने माता-पिता को पहचान नहीं पाते और उन्हें गलती से मार या शाप दे सकते हैं। इसका नैतिक दायित्व अपहरणकर्ता पर आता है।

□ 5. अपहरण का अर्थ:

- Rashi और Chizkuni दोनों मानते हैं कि जहाँ मौत का ज़िक्र है लेकिन तरीका नहीं लिखा, वहाँ "गला घोटना" (Strangulation/गग) मरणदंड का तरीका है।

□ □ □ □ □ □ :

कल्पना कीजिए कि किसी बच्चे को एक तस्कर चुराकर दूसरे देश में बेच देता है। वह बच्चा बड़ होकर अपने असली माता-पिता को पहचान नहीं पाता और गलती से उनसे क्रोध करता है या उनका अपमान करता है। इस त्रासदी का मूल कारण अपहरण ही था, इसलिए यह अपराध बाइबिल में अत्यंत घृणित माना गया है।

▲ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

1. **मानव तस्करी के खिलाफ सशक्त सन्देश:** यह पद आज भी मसीही चर्चों में मानव तस्करी, बाल तस्करी, जबरन श्रम और यौन दासता के विरुद्ध एक ठोस आधार प्रदान करता है।
2. **मनुष्य की गरिमा:** यह सिखाता है कि हर व्यक्ति परमेश्वर की प्रतिमा में रखा गया है (उत्पत्ति 1:27), और उसकी स्वतंत्रता छीनना परमेश्वर की रचना का अपमान है।
3. **यीशु का दृष्टिकोण:** प्रभु यीशु ने जब लूका 4:18 में कहा - “उसने मुझे भेजा है... बंदियों को रिहाई की घोषणा करने,” तो यह उन सब के लिए था जो किसी भी प्रकार की गुलामी में हैं। यह पद उसकी सेवा के मूल उद्देश्य को दर्शाता है।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

## हे प्रभु यीशु

आपने हमें सत्य के द्वारा स्वतंत्र किया है। (यूहन्ना 8:36)

जो बंधन में हैं, जो अपहरण के कारण अपनों से बिछुड़ गए हैं, उन्हें आप छुड़ाइए।

हम प्रार्थना करते हैं कि हम किसी की स्वतंत्रता न छीनें, बल्कि उसे आज़ादी और

प्रेम में बढ़ने दें।

जैसे आपने अपने जीवन को बलिदान किया, वैसे ही हम भी दूसरों की रक्षा के

लिए खड़े हों।

प्रभु, चर्च को जागृत कीजिए कि वह मानव तस्करी के विरुद्ध आवाज़ उठाए, और

पीड़ितों को आश्रय दे।

यह प्रार्थना हम आपके पवित्र नाम में करते हैं। आमीन।

□ □ □ □ □ □ □ :

निर्गमन 21:16 केवल एक कानून नहीं, बल्कि व्यक्ति की गरिमा और स्वतंत्रता की परम घोषणा है। यह पद यह दिखाता है कि परमेश्वर समाज में न्याय, समानता और संरक्षण चाहता है। यह आज के मसीही चर्च को भी यह सिखाता है कि वे उन सभी के लिए खड़े हों जिनकी स्वतंत्रता छीनी गई है, और यीशु की तरह उद्धार और प्रेम का संदेश फैलाएं।

P228 Le.20:14 On burning transgressors of certain commandments

□ □ □ □ □ □ □ (□ □ □ □ □ □ □ □):

**लेवियों 20:14 (Leviticus 20:14, Hindi Bible):**

"यदि कोई पुरुष किसी स्त्री और उसकी माता के साथ विवाह करे, तो यह कुकर्म है; वे सब आग में जला दिए जाएँगे, वह पुरुष भी और वे दोनों भी, कि तुम्हारे बीच में ऐसा कुकर्म न रहे।"

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

इस पद में परमेश्वर ने यह निर्देश दिया है कि अगर कोई पुरुष किसी स्त्री और उसकी माँ - दोनों से संबंध बनाए या विवाह करे, तो यह एक धृणित और अशुद्ध कार्य (कुकर्म) माना जाता है। यह एक प्रकार का अनाचार (incest) है, और इसके लिए सज़ा बहुत कठोर थी - आग में जलाना।

यह व्यवस्था इस बात को दर्शाती है कि पवित्रता और नैतिकता का स्तर इस्राएली समाज में कितना ऊँचा था। परिवार और रिश्तों की पवित्रता बनाए रखना ईश्वर की इच्छा थी।

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ (Rabbinic Interpretations):

□ 1. "वे सब (וְסִבְבָּא)" का अर्थ क्या है?

- रब्बी इशमाएल (Rabbi Ishmael):

"वे दोनों" नहीं, बल्कि "उनमें से एक" (either mother or daughter) पर दंड लागू होता है, विशेष रूप से उस पर जिससे दूसरा सम्बन्ध अवैध था।

**उदाहरण:** यदि किसी पुरुष ने पहले बेटी से विवाह किया (जो वैध है) और फिर उसकी माँ से, तो माँ पर दंड लगेगा।

- रब्बी अकीवा (Rabbi Akiva):

**"वे दोनों" अर्थात् माँ और बेटी दोनों को जलाया जाए, लेकिन यह केवल तब जब पत्नी**

**जीवित हो और पति फिर उसकी माँ से विवाह करे।**

**रावा (Rava) कहते हैं कि यदि पत्नी मर चुकी है, तो माँ से विवाह करने पर आग में**

**जलाने की सज्जा नहीं दी जाएगी, परन्तु वह "श्रापित" (cursed) माना जाएगा।**

---

## □ 2. "लेना (לְנָה)" का अर्थ क्या है?

यह शब्द केवल यौन-संबंध के लिए नहीं, बल्कि विवाह करने के अर्थ में उपयोग हुआ है।

- **सिफरा और यवामोतः:** यह तब लागू होता है जब पुरुष एक स्त्री से विवाह करता है और फिर उसकी माँ से यौन संबंध रखता है।
  - **मालबिम और अगारा एलियाहः:** यह विवाह जैसे स्थायी संबंधों को दर्शाता है, न कि बलात्कारी या धोखे से बनाए गए अस्थायी संबंधों को।
- 

## □ 3. "कुकर्म (המִזְמָה - Zimmah)" और Gezeirah Shavah का विस्तारः

रबियों ने इस शब्द को अन्य पदों (जैसे लेवियों 18:17) से जोड़ा जहाँ पुत्री, पोती, सौतेली बेटी,

आदि के साथ अनैतिक संबंधों की बात की गई है।

- **छिज़कुनी और डेविड़ होफमैनः:** कहते हैं कि इस शब्द का उपयोग यह दर्शने के लिए किया गया है कि यह दंड (जैसे जलाना) उन सभी रिश्तों पर लागू हो सकता है।

- **तोरा तेमीमा:** यह अन्य संबंधित रिश्तों (जैसे माँ की माँ, सास की माँ) पर भी लागू होता है।
- 

□ □□□ □□ □□□□□□ :

- **तलमूद (Sanhedrin 52a):** यह "भीतर जलाना" था – शरीर के अंदर कुछ दहनशील तरल डाल कर आंतरिक जलन दी जाती थी।
  - **राव हिर्शः** इसे आत्मिक जलन कहते हैं – यानी आत्मा का विनाश।
  - **रालबागः** यह नादाब और अबीहू के मामले की तरह हो सकता है जहाँ शरीर नहीं जला लेकिन आत्मा का न्याय हुआ।
- 

□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□□ □□□□

□□□□ :

- मसीहियों के लिए पुराने नियम की विधियाँ प्रभु यीशु मसीह के द्वारा पूरी की गई मानी जाती हैं (मत्ती 5:17)।
- मसीह का नया नियम प्रेम, अनुग्रह और आत्मिक शुद्धता पर आधारित है – न कि शारीरिक दंडों पर।
- यह पद अब सीधे लागू नहीं होता, परन्तु नैतिक शिक्षा अब भी मूल्यवान है – जैसे कि

## रिश्तों की पवित्रता, परिवार का सम्मान, और आत्म-नियंत्रण।

### □ आज का सन्दर्भ:

चर्च आज भी इस प्रकार के अनैतिक संबंधों को पाप मानता है, परन्तु न्याय का स्थान अब कानूनी प्रक्रिया, प्रेम और पश्चाताप द्वारा होता है, न कि पुराने नियम के दंडों द्वारा।

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □ □ :

“हे परमेश्वर, आप जो पवित्र और न्यायी है, हमें आपके पुत्र यीशु मसीह के अनुग्रह और बलिदान के द्वारा शुद्ध और पवित्र बना। हमारी इच्छाओं को आपके वचन के अनुसार ढाल दे। हम अपने परिवारों को सम्मान देना सीखें, और आपकी दृष्टि में शुद्ध जीवन जी सकें। हे पवित्र आत्मा, हमें भीतर से जलाकर परिशुद्ध कर, ताकि हम अनैतिकता से दूर रहें और प्रभु यीशु के समान पवित्रता में चलें। आमीन।”

---

□ □ □ □ □ □ □ □ :

लेवियों 20:14 यौन और पारिवारिक पवित्रता की एक गंभीर चेतावनी है। रब्बियों ने इसके अर्थ को गहराई से समझाया और विभिन्न परिस्थितियों में इसके दंड के मापदंड स्पष्ट किए। मसीही दृष्टिकोण इसे प्रभु यीशु के अनुग्रह और सिखावनों के आलोक में देखता है – जहाँ प्रेम, पवित्रता और आत्मिक अनुशासन पर बल है। आज हमें शारीरिक दंड नहीं, पर आत्मिक सुधार और

पवित्रता की आवश्यकता है, जिससे हम परमेश्वर की इच्छा में चलें।

---

P229 De.22:24 On stoning transgressors of certain commandments

□ □□□□□□□□□□□□ (Deuteronomy) 22:24 — □□□□□ □□ □□□□□ □□□:

”तब तुम उन दोनों को उस नगर के फाटक पर ले जाकर पथराव करके मार डालना; उस जवान स्त्री को इसलिये कि वह नगर में रहते हुए भी नहीं चिल्लाई, और उस पुरुष को इसलिये कि उसने अपने पड़ोसी की पत्नी को नीचा दिखाया; इस प्रकार तू अपने बीच से ऐसी बुराई को दूर कर देना।”

— व्यवस्थाविवरण 22:24 (Hindi Bible)

---

□ □□□□□ □□□ □□□□□□:

यह पद उस स्थिति को बताता है जब कोई पुरुष किसी ऐसी स्त्री से शारीरिक संबंध बनाता है जो पहले से किसी और से विवाह हेतु वाचा (betrothed) में है – जैसे आज के समय में सगाई की स्थिति।

यह घटना नगर (शहर) में होती है, और स्त्री बचाव के लिए चिल्लाती नहीं है। तब दोनों – पुरुष और स्त्री – को पथराव से मृत्यु दंड देने का आदेश है।

- स्त्री को इसलिए दंड मिलता है क्योंकि उसने चिल्लाकर सहायता नहीं मांगी, जिससे यह मान लिया जाता है कि वह सहमत थी।
  
- पुरुष को इसलिए दंड मिलता है क्योंकि उसने अपने पड़ोसी की पत्नी को अपमानित

## किया।

यह व्यवस्था समाज की नैतिकता और विवाह की पवित्रता को बनाए रखने के लिए दी गई थी।

---

□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□ (Rabbinic Interpretations):

□♀ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□? — □□□□ □□□□  
□□□□ □□?

1. **Chizkuni:**

शहर में मदद आसानी से मिल सकती है। यदि स्त्री वास्तव में मजबूर की गई होती, तो वह जरूर चिल्लाती। उसकी चुप्पी सहमति की ओर इशारा करती है।

2. **Rabbeinu Bahya:**

वह कहता है कि अगर कोई वास्तव में संकट में होता, तो मदद के लिए चिल्लाता।  
उसकी चुप्पी को उसकी सहमति माना गया।

3. **Ralbag:**

वह कहता है कि अगर स्त्री को मजबूरी थी, तो उसे मदद की उम्मीद में चिल्लाना चाहिए था। चुप रहने का मतलब है वह पूरी तरह मजबूर नहीं थी।

4. **Reggio:**

वह स्वीकार करता है कि चुप रहना सहमति को दर्शाता है, लेकिन यह निर्णय न्यायालय द्वारा साक्ष्यों के आधार पर किया जाना चाहिए।

5. **Tur HaArokh:**

शहर में चिल्लाने पर लोगों के द्वारा सहायता मिल सकती थी। अगर उसने चिल्लाया नहीं, तो यह उसकी सहमति मानी जाती है।

#### 6. Kitzur Ba'al HaTurim:

वह मानता है कि कभी-कभी स्त्री चिल्लाती है, लेकिन वह पीड़ा के कारण हो सकता है, ना कि अनिच्छा के कारण।

---

□ "उत्तरदायी पुरुष" — 'उसने नीचा दिखाया' (הנו):

##### 1. Haamek Davar:

Ramban के अनुसार, "नीचा दिखाना" (afflicted) का अर्थ है कि पुरुष ने बिना प्रेम या आकर्षण के केवल शारीरिक संबंध बनाया, जिससे स्त्री अब अपने मंगेतर के लिए अनुपयुक्त हो गई।

##### 2. Sforno:

वह कहता है कि पुरुष ने स्त्री की पत्नी बनने की योग्यता को खत्म कर दिया।

##### 3. Steinsaltz:

"उत्तरदायी" शब्द यह दर्शाता है कि चाहे स्त्री सहमत थी या नहीं, उसका विवाहिक भविष्य नष्ट हो गया।

##### 4. Tur HaArokh:

यदि पुरुष ने सहमति नहीं ली, तो यह बलात्कार जैसा माना गया, भले ही स्त्री विरोध न करे।

## 5. HaKtav VeHaKabalah:

**”नीचा दिखाया” मतलब पुरुष ने स्त्री की मर्यादा और भविष्य को गिरा दिया।**

---

□ □□□□ □□ □□□ □□□□□?

### Chizkuni:

क्योंकि वह कुंवारी थी और अपने पिता के घर से ऐसी बुराई हुई, इसलिए परिवार की प्रतिष्ठा को नुकसान हुआ।

### Haamek Davar:

यह सजा इसलिए दी गई क्योंकि इस प्रकार की घटनाएँ समाज को अंदर से गिरा देती हैं।

### Bekhor Shor:

यदि स्त्री नाबालिंग हो, तो पुरुष को ही सजा दी जाती है, स्त्री को नहीं।

---

□ □□□□□□□□□ □□□ □ □ □□□□□ □ "□□□□" □□□□ □□□  
□□□?

### 1. Ibn Ezra:

”पड़ोसी की पत्नी” शब्द दर्शाता है कि मंगेतर स्त्री भी धार्मिक दृष्टिकोण से पत्नी के समान होती है।

### 2. Reggio:

वह बताता है कि विवाह से पहले भी स्त्री को पत्नी के समान आदर दिया जाता था।

### 3. Steinsaltz:

वह कहता है कि जैसे याकूब ने राहेल को "मेरी पत्नी" कहा, वैसे ही मंगेतर स्त्री को पत्नी माना जाता है।

---

□ □□□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□ — "□□□ □□ □□□□ □□":

### 1. Malbim:

पथराव वहीं किया जाता है जहां अपराध हुआ, ताकि समाज को चेतावनी मिले।

### 2. Netinah LaGer:

"नगर का फाटक" केवल न्यायालय का स्थान नहीं बल्कि अपराध की जगह भी हो सकती है।

### 3. Torah Temimah:

सजा वहीं दी जाती है जहां अपराध हुआ, ताकि दूसरों को डर और चेतावनी मिले।

---

□ □□□□□ □□□□□□ (Hatra'ah):

### 1. Malbim:

"רַבָּד לְעַל" शब्द दर्शाता है कि अपराध से पहले गवाहों की चेतावनी जरूरी है।

### 2. Torah Temimah:

रब्बी के अनुसार, यह सिखाता है कि यदि चेतावनी दी गई थी, तभी अपराध माना जाएगा।

□ □□□□□ (Example):

### कल्पना करें:

सारा नाम की एक युवती की मंगनी याकूब से हो चुकी है। एक दिन नगर में वह दाऊद नामक व्यक्ति से मिलती है और वे दोनों शारीरिक संबंध बना लेते हैं। यदि सारा चिल्लाई नहीं, तो यह माना जाएगा कि उसने सहमति दी। तब न्याय के अनुसार दोनों को नगर के फाटक पर ले जाकर पथराव किया जाएगा। यह समाज को संदेश देता है कि विवाह की पवित्रता का उल्लंघन कितना गंभीर अपराध है।

□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□:

### प्रभु यीशु मसीह ने कहा:

"मैं व्यवस्था या भविष्यद्वक्ताओं को रद्द करने नहीं, परन्तु पूरी करने आया हूं" (मत्ती

5:17)

□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □ □ □□□□□ □□□□ □ □ □□-

□□□□□□□□□ □ □ कानूनी रूप से लागू नहीं करते, क्योंकि यीशु मसीह ने हमें अनुग्रह

और क्षमा का मार्ग दिखाया।

**मूल नैतिक शिक्षा – विवाह की पवित्रता और पाप की गंभीरता – आज भी बनी रहती है।**

**परंतु इसके प्रतिकार में अब दया, पश्चाताप और पुनर्स्थापन का स्थान है।**

□ □□□□□ □□□□ □□□□ □ □ □□□□□□ □ □ □□□□□□□□:

**हे यीशु,**

जैसे आपने व्यभिचार में पकड़ी गई स्त्री से कहा,

"मैं भी तुझे दोष नहीं देता, जा, फिर कभी पाप मत करना" (यूहन्ना 8:11),

वैसे ही हमें भी क्षमा, दया और पवित्र जीवन का मार्ग दिखा।

हमें यह अनुग्रह दे कि हम अपने जीवन को तेरी आज्ञाओं के अनुसार शुद्ध रखें,

विवाह और संबंधों की पवित्रता को बनाए रखें,

और हर परिस्थिति में तेरे प्रेम और पवित्रता को दिखाएं।

**आमीन।**

---

□ □ □ □ □ □ □ :

**व्यवस्थाविवरण 22:24** एक गंभीर सामाजिक और नैतिक नियम है, जो विवाह से पूर्व और

विवाह के बीच संबंधों की पवित्रता को बनाए रखने के लिए है।

रब्बियों की व्याख्याएँ इसे गहराई से समझने में मदद करती हैं – यह केवल दंड का कानून नहीं बल्कि समाज की आत्मा की रक्षा की चेष्टा है।

मसीही विश्वास इस शिक्षा को यीशु के प्रेम, क्षमा और पुनर्स्थापन की दृष्टि से देखता है।

हमारे लिए आज सबसे ज़रूरी बात यह है कि हम पवित्रता, निष्ठा और पश्चाताप में जीवन बिताएं।

आगर आप चाहें तो मैं इसी पर आधारित एक छोटा वीडियो स्क्रिप्ट, Sunday School teaching, या चर्च चर्चा के लिए प्रश्नावली भी बना सकता हूँ।

P230 De.21:22 Hang after execution, violators of certain commandments

□ □□□□□□□□□□ 21:22 — □□□□□ □□□□□ □□

**"और यदि किसी पुरुष ने ऐसा पाप किया हो जो मृत्यु दण्ड के योग्य हो, और वह मर डाला गया हो, और तुम उसको किसी काठ पर टांग दो,"**

(ओ. वि. वि. 21:22 – Hindi Bible)

---

□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□□□:

यह पद यह व्यवस्था देता है कि यदि कोई व्यक्ति ऐसा अपराध करता है जो मृत्यु की सज़ा के योग्य हो, और उसे मार दिया गया हो, तो कभी-कभी उसकी लाश को एक पेड़ (या लकड़ी के खंभे) पर टांगा जाता था। यह फांसी देने का तरीका नहीं था, बल्कि मौत के बाद उसका सार्वजनिक प्रदर्शन था ताकि लोग सबक लें।

परंतु आगे पद 23 (जो इससे जुड़ा है) कहता है कि उसकी लाश रातभर पेड़ पर न टंगी रहे, बल्कि उसी दिन दफना दी जाए क्योंकि लटकी हुई लाश "ईश्वर की दृष्टि में श्रापित" मानी जाती है।

---

□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□:

### 1. रबी एलीएज़र की राय (Rabbi Eliezer)

- उनके अनुसार, जो कोई पत्थरवाह (stoning) से मारा जाता है, उसे बाद में लटकाया जाता है।

- उन्होंने इस विचार को इस आधार पर स्थापित किया कि जो व्यक्ति परमेश्वर की निंदा करता है (blasphemy), उसे पत्थरवाह के बाद लटकाया जाता है, और यही नियम सभी पर लागू होता है।

## 2. चाचामिम (साधुजन / The Sages)

साधारण रूप से मान्यता यह है कि केवल वे लोग जो परमेश्वर की निंदा करते हैं या मूर्तिपूजा करते हैं, उन्हें ही पत्थरवाह के बाद लटकाया जाता है।

उनका मानना है कि यह अपमान और चेतावनी का प्रतीक था, पर हर अपराधी पर यह नियम लागू नहीं होता।

## 3. रंबान (Ramban)

- उन्होंने कहा कि लाश को रातभर टांगना अशुद्धि और अपवित्रता फैलाता है। वह कहते हैं कि कोई भी इंसान—even अपराधी—परमेश्वर की छवि में बना है, इसलिए उसका अपमान भी परमेश्वर का अपमान है।

## 4. चिज़कुनी और रशी

- चिज़कुनी ने यह स्पष्ट किया कि यह लकड़ी के खंभे पर टांगने की बात है, न कि जीवित पेड़ पर।
- रशी ने इसे *rebel son* के नियमों से जोड़ा, यह बताते हुए कि यदि ऐसे पुत्र को समय रहते रोका न जाए तो वह ऐसे अपराध कर सकता है जो उसे पत्थरवाह और फांसी तक ले

जाएं।

## 5. रव हिर्श और टोराह टेमीमा

- रव हिर्श ने कहा कि यह कानून मुख्यतः ईश्वर के अपमान के लिए है – न कि महज चेतावनी के लिए।
  - टोराह टेमीमा ने तलमूद के माध्यम से बताया कि यह फांसी मृत्यु के बाद दी जाती थी, मृत्यु का तरीका नहीं थी।
- 

□ गुणों का विवरण:

कल्पना कीजिए कि किसी व्यक्ति ने सार्वजनिक रूप से परमेश्वर को अपमानित किया या मूर्तिपूजा की, और गवाहों द्वारा उसे दोषी ठहराया गया। उसे पत्यरवाह से मृत्युदंड दिया गया। फिर, उसे लकड़ी के खंभे पर थोड़े समय के लिए लटकाया गया ताकि पूरा समुदाय यह देखे कि ऐसे पापों का अंजाम क्या होता है। लेकिन सूर्यास्त से पहले उसे ज़रूर दफ़नाना होता था।

---

□ इन गुणों का विवरण क्या है?

ग्रहण और उद्धार के सन्देश के अनुसार, यीशु मसीह ने क्रूस पर मृत्यु के द्वारा हमारे पापों का दंड अपने ऊपर ले लिया।

गलातियों 3:13 कहता है:

"मसीह ने हमें उस शाप से छुड़ाया जो व्यवस्था के अधीन था, क्योंकि लिखा है, 'जो कोई

**लकड़ी पर टांगा गया है वह शापित है।”**

इसका तात्पर्य है कि जो व्यवस्था मृत्यु और शाप लाती थी, मसीह ने स्वयं उस शाप को अपने ऊपर लेकर हमें नया जीवन दिया।

आज मसीही चर्चों में यह नियम शाब्दिक रूप से नहीं लागू होता। इसकी जगह, यह बिंदु यीशु के बलिदान की गंभीरता और पाप की भयावहता को दर्शाता है।

---

□ □□□□□□□ (□□□□□ □□□□ □□□□ □ □ □□□□□□):

”हे परमेश्वर पिता, जैसे आपके पुत्र यीशु मसीह ने हमारे पापों के लिए स्वयं को शापित बना लिया, कृपया हमारी आत्मा को उस बलिदान की गहराई समझने दे। हमें कभी अपने दोषों को हल्के में न लेने दे। हमें अनुग्रह से भर दे कि हम दूसरों को भी क्षमा और उद्धार का सन्देश दे सकें। हमारे जीवन को ऐसा बना कि उसमें मसीह की महिमा प्रकट हो। आमीन।”

---

□ □□□□□□□:

व्यवस्थाविवरण 21:22 एक गम्भीर व्यवस्था है जो यह दर्शाती है कि कुछ पाप इतने घातक माने जाते थे कि मृत्यु के बाद भी एक सार्वजनिक चेतावनी दी जाती थी। परन्तु मसीही विश्वास में यीशु मसीह ने इस व्यवस्था को पूरा किया और प्रेम, क्षमा और अनुग्रह की एक नई व्यवस्था स्थापित की।

**जो शरीर कभी शापित था, वही क्रूस पर लटकाकर उद्धार का मार्ग बन गया।**

---

यदि आप चाहें तो हम अगला पद - व्यवस्थाविवरण 21:23 - भी इसी ढंग से विस्तार से देख सकते हैं।

P231 De.21:23 On burial on the same day of execution

□ □□□□□□□□□□ 21:23 (Deuteronomy 21:23) — □□□□□ □□□□□ □□:

”उसकी लोथ को उस रात को पेड़ पर लटकाए न रहने देना, उसे उसी दिन मिट्टी देना; क्योंकि जो कोई लटकाया गया वह परमेश्वर का शापित होता है। इसलिये उस देश को अशुद्ध न करना, जिसे तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे निज भाग के रूप में देता है।”

❖ □□□□□ □□□ □□□ □□□□□□□:

यह पद बताता है कि यदि किसी को अपराध के कारण मृत्युदण्ड देकर पेड़ पर लटकाया जाए, तो उसकी लाश को रात भर पेड़ पर लटकने नहीं देना चाहिए, बल्कि उसी दिन उसे दफना देना चाहिए/ क्योंकि ऐसा व्यक्ति परमेश्वर की दृष्टि में शापित माना जाता है। यदि उसे रात भर लटकाया जाए, तो यह धरती को अपवित्र कर देता है, खासकर वह भूमि जो परमेश्वर ने अपने लोगों को दी है।

□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□:

#### 1. राशी (Rashi):

राशी ने ”क्योंकि वह परमेश्वर का शापित है“ (כללת אלהים תלוי) को इस तरह समझाया:

**"मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप में बना है, और यदि कोई यहादी पेड़ पर लटका हो, तो  
लोग परमेश्वर की छवि का अपमान मान सकते हैं।"**

#### □ उदाहरण:

उन्होंने एक दृष्टिकोण दिया:

**दो जुड़वां भाई थे-**एक राजा बन गया, दूसरा चोर बन गया और फांसी पर चढ़ा। लोग देखकर सोचेंगे कि राजा को फांसी दी गई है। यही कारण है कि मृत शरीर को लटकाए न रखा जाए।

---

#### 2. बेखोर शोर (Bekhor Shor):

अगर कोई व्यक्ति ईश्वर को शाप देता है या मूर्ति पूजा करता है, तो उसे पत्थरबाह करके मारा जाता है और फिर पेड़ पर लटकाया जाता है।

लेकिन पेड़ पर रात भर लटकाना मना है क्योंकि लोग सोच सकते हैं कि परमेश्वर को शाप दिया गया है और इस तरह परमेश्वर की महिमा का अपमान (Chillul Hashem) होता है।

---

#### 3. चिजकुनी (Chizkuni):

लोग सोच सकते हैं कि अपराधी को उसकी सजा मिल गई है, फिर क्यों उसे और अपमानित किया जा रहा है? इसलिए उसे उसी दिन दफनाना आवश्यक है।

---

#### 4. रामबान (Ramban):

**"तू अपनी भूमि को अपवित्र न करना"** – यह एक स्वतंत्र आज्ञा है। लटका हुआ शव भूमि को

अशुद्ध करता है, विशेष रूप से जब वह भूमि परमेश्वर की दी हुई हो।

---

#### **5. शादाल और हदार ज़केनिम (Shadal & Hadar Zekenim):**

आगर लाश लटकी रहे, तो लोग न्यायाधीशों को दोष देंगे, उन्हें शाप देंगे, यह परमेश्वर के प्रतिनिधियों का भी अपमान होगा।

---

#### **6. टोरा तेमीमा (Torah Temimah):**

यह केवल लटका हुआ शव नहीं, बल्कि हर मृत शरीर के लिए यह नियम लागू होता है कि उसे उसी दिन दफनाया जाए। यदि सम्मान देने के लिए देर हो तो वह अनुमति प्राप्त है।

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

यद्यपि यह नियम मूसा की व्यवस्था से संबंधित है, लेकिन यीशु मसीह के क्रूस पर लटकने को लेकर इसका बहुत गहरा अर्थ है:

**गलातियों 3:13** – "मसीह ने हमारे लिए शापित बनकर हमें व्यवस्था के शाप से छुड़ाया... क्योंकि लिखा है, 'जो कोई लकड़ी पर लटकाया गया है, वह शापित है।'"

मसीही विश्वास के अनुसार, यीशु ने पापियों के लिए स्वयं शापित होना स्वीकार किया ताकि हम पर कोई दोष या शाप न रहे।

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□□□□□□□□□:

**"हे यीशु, आपने क्रूस पर लटककर हमारे पापों का बोझ उठाया और उस शाप को सह लिया जो हमारे लिए था। आपने हमारी शर्म को अपने ऊपर लिया और हमें परमेश्वर की महिमा में स्थान दिया। कृपया हमें कभी भी किसी की गरिमा को ठेस न पहुँचाने की समझ दें। हमें वह नम्रता दें जो आपको क्रूस तक ले गई। हमें ऐसा मन दीजिए कि हम हर इंसान में परमेश्वर की छवि को पहचानें और उसका सम्मान करें। आमीन।"**

---

✓□□□□□□□:

व्यवस्थाविवरण 21:23 केवल मृत शरीर के जल्दी दफन की बात नहीं करता, बल्कि यह हमें गहराई से सिखाता है कि:

- हर मनुष्य में परमेश्वर की छवि होती है।
- शाप और अपमान को सार्वजनिक रूप से बढ़ावा देना परमेश्वर के नाम का अपमान है।
- भूमि, न्याय, और परमेश्वर की महिमा को शुद्ध बनाए रखना एक पवित्र जिम्मेदारी है।

मसीही दृष्टिकोण में, यीशु मसीह ने यह शाप अपने ऊपर लेकर न केवल व्यवस्था को पूरा किया बल्कि हमें शुद्धता, क्षमा, और नया जीवन प्रदान किया।

---

□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□□  
 □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□

## **SLAVES**

## P232 Ex.21:2 On the special laws for treating the Hebrew bondman

□ □ □ □ □ □ □ □ (□ □ □ □ □ □ □ □ 21:2) – □ □ □ □ □ □ □ □ :

**”जब तू इब्रानी दास को खरीदे, तब वह छः वर्ष तक सेवा करे, और सातवें वर्ष  
वह बिना मूल्य के स्वतंत्र होकर चला जाए।”**

(निर्गमन 21:2, हिंदी बाइबल)

इस पद में परमेश्वर ने यह व्यवस्था दी है कि यदि कोई इब्रानी (इस्राएली) पुरुष किसी कारण से दास बन जाए – चाहे चोरी के कारण न्यायालय द्वारा बेचा गया हो, या गरीबी के कारण स्वयं को बेच दिया हो – तो भी वह केवल छह वर्षों तक ही सेवा करेगा। सातवें वर्ष में उसे बिना किसी कीमत के स्वतंत्र कर देना होगा। यह व्यवस्था इस्राएलियों को यह याद दिलाती है कि वे कभी मिस में दास थे, और परमेश्वर ने उन्हें छुड़ाया, इसलिए वे अपने ही भाइयों को स्थायी दास न बनाएँ।

A horizontal sequence of 20 empty rectangular boxes arranged in a single row.

- दास जो न्यायालय द्वारा बेचा गया हो: जैसे कि कोई व्यक्ति चोरी करे और चुकाने को कुछ न हो।
- दास जो स्वयं को बेचे गरीबी में: जैसे कोई अत्यंत निर्धन होकर अपने जीविकोपार्जन हेतु खुद को बेचे।

✓2. ﴿۱۷۳﴾ ﴿۱۷۴﴾ ﴿۱۷۵﴾ ﴿۱۷۶﴾ - ﴿۱۷۷﴾, ﴿۱۷۸﴾ ﴿۱۷۹﴾  
﴿۱۸۰﴾ ﴿۱۸۱﴾:

- यह मुक्ति का वर्ष मिस्र से निकाले जाने की स्मृति दिलाता है। जैसे परमेश्वर ने इसाएलियों को छुड़ाया, वैसे ही हर दास को स्वतंत्र करना मालिक का कर्तव्य है।
- उदाहरण: जैसे परमेश्वर ने छः दिनों में सूर्णि की और सातवें दिन विश्राम किया, वैसे ही दास को भी सातवें वर्ष में विश्राम मिलना चाहिए।

✓3. ﴿۱۸۲﴾ ﴿۱۸۳﴾ ﴿۱۸۴﴾ ﴿۱۸۵﴾ - ﴿۱۸۶﴾ ﴿۱۸۷﴾  
﴿۱۸۸﴾ ﴿۱۸۹﴾:

- दस आज्ञाओं में पहली आज्ञा ”मैं हूँ तेरा परमेश्वर जो तुझे मिस्र देश से, दासत्व के घर से निकाल लाया” इसी को आधार बनाकर बताया कि इसाएली एक-दूसरे को स्थायी दास नहीं बना सकते।
- उदाहरण: कोई चोर भी अगर दास बना है, तो भी उसके साथ न्याय और सम्मान से व्यवहार किया जाए।

✓4. "רְבָנִי" शब्द का महत्व – रशी, कली याकर, मालबीम:

- इसका अर्थ है "इब्रानी व्यक्ति जो दास बना है", न कि किसी इब्रानी के दास को।
  - कली याकर के अनुसार, यह व्यक्ति यद्यपि पापी हो, पर वह अब्राहम का वंशज है और भाई बना रहता है।
  - मालबीम के अनुसार, यह शब्द उनके इसाएली भाई होने की पहचान कराता है, जो उन्हें दास के रूप में नहीं पर एक भाई के रूप में देखने को प्रेरित करता है।

A decorative horizontal bar at the bottom of the page. It features a small icon of a church steeple on the left, followed by a series of ten empty square boxes arranged horizontally. This bar serves as a placeholder for user input or a drawing activity.

यद्यपि मसीही लोग यहूदी कानूनों के अधीन नहीं हैं, लेकिन इस पद में वर्णित मूल भावना (न्याय, करुणा, और स्वतंत्रता) मसीही सिद्धांतों से मेल खाती है।

- यीशु ने स्वयं कहा, "मैं तुम्हें स्वतंत्र करने आया हूँ" (लूका 4:18)।
  - मसीह में सब लोग दासत्व से मुक्त होते हैं – चाहे वह पाप का दासत्व हो या किसी अन्य प्रकार का।
  - उदाहरण: पॉलुस ने फिलेमोन को लिखा कि ओनेसिमुस अब दास नहीं बल्कि भाई बन गया है (फिलेमोन 1:16)।

□ □□□□□□□□□ (□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□):

हे प्रभु यीशु,

आपने दासों को स्वतंत्रता दी, बंदियों को छुड़ाया, और हमें परमेश्वर की संतान होने का अधिकार दिया।

जैसे आपने पाप के बंधनों को तोड़ा, वैसे ही हमें हर प्रकार के अन्याय, पराधीनता और आत्मिक दासत्व से मुक्त कीजिए।

हमें सिखाइए कि हम अपने भाइयों और बहनों को सम्मान और प्रेम से देखें, और न्याय और करुणा से भरा जीवन जीएँ।

आमीन।

---

#### □ □ □ □ □ □ □ (Summary in Hindi):

"יְהוָה עָבֹד (इब्रानी दास)" की व्यवस्था इस्राएलियों को उनकी स्वतंत्रता की स्मृति दिलाती है और यह सिखाती है कि किसी भी व्यक्ति को स्थायी दास नहीं बनाया जाना चाहिए। यहूदी रबियों ने इसे मिस्र से मुक्ति और सृष्टि के सातवें दिन से जोड़ा। उन्होंने यह भी सिखाया कि एक अपराधी भी सम्मान का अधिकारी है क्योंकि वह परमेश्वर की सृष्टि है। मसीही दृष्टिकोण से यह व्यवस्था पाप से मुक्ति और दूसरों के प्रति करुणा व न्याय का प्रतीक बनती है। यह हमें प्रेरित करती है कि हम भी दूसरों के जीवन में स्वतंत्रता और गरिमा लाएँ - जैसा कि यीशु मसीह ने हमारे लिए किया।

---

अगर आप चाहें, तो मैं इसके लिए एक PowerPoint स्लाइड या स्टडी गाइड भी बना सकता हूँ जो आप चर्च में सिखाने के लिए प्रयोग कर सकें। क्या आप ऐसा चाहेंगे?

P233 Ex.21:8 Hebrew bondmaid married to her master or his son, or...

### **निर्गमन 21:8 (Exodus 21:8) - बाइबल पद हिंदी में:**

"यदि वह स्वामी की दृष्टि में अप्रिय ठहरे, जिस ने उसे अपने लिये व्याह करने को रखा था,  
तो वह उसे छुड़ाने दे; परन्तु वह उसे पराए लोगों को बेचने न पाए, क्योंकि उसने उसके साथ  
विश्वासघात किया है।"

(हिंदी संयुक्त बाइबल, विश्व बाइबल समाज)

### **❖ अनुवाद और विवरण (Explanation in Hindi):**

यह पद एक ऐसी कन्या की स्थिति को दर्शाता है जिसे उसके पिता ने एक इब्री (यहूदी) स्वामी  
को नौकरानी (दासी) के रूप में बेचा था, लेकिन इस आशय से कि वह उसका विवाह कर लेगा।  
यदि वह स्वामी उसे विवाह के लिए उपयुक्त न माने, तो वह उसे स्वतंत्रता देने और छुड़ाने का  
प्रबंध करें। लेकिन उसे किसी "पराए" यानी गैर-इब्री (अथवा ऐसे व्यक्ति जो उससे विवाह नहीं  
कर सकता) को बेचने की अनुमति नहीं है, क्योंकि यह उसके साथ विश्वासघात होगा।

### **□ रब्बिनिक अनुभाव (Rabbinic Interpretations):**

1. "यदि वह स्वामी की दृष्टि में अप्रिय ठहरे" (אִם־רַעַעַת בְּעֵינֵי אֲדֹנָיו)

- **राशी (Rashi):** इसका अर्थ है कि वह स्वामी को पसंद नहीं आई, इसलिए वह उससे  
विवाह नहीं करना चाहता।
- **Chizkuni:** यह उसकी शारीरिक सुंदरता या स्वभाव के कारण हो सकता है।

- **Aderet Eliyahu:** यह दर्शाता है कि स्वामी ने उसके साथ कोमलता नहीं दिखाई।

## 2. "जिसने उसे अपने लिए ब्याह करने को रखा था" (הַשְׁבִּיעַ לְרַבְעָן)

- **राशी:** खरीदने का आशय ही विवाह करना था, और उसका मूल्य विवाह के "किट्टुशिन"
- (wedding money) के रूप में माना जाता है।
- **Rav Hirsch:** यह विवाह की ओर संकेत करता है, और लड़की की सहमति भी मानी जाती है।
- **Sefer HaChinuch:** यह दया दिखाने का कार्य है – गरीब कन्या को सम्मानित करना।

## 3. "तो वह उसे छुड़ाने दे" (הַגְּזִין)

- **Rashi:** उसे छुड़ाने में मदद करनी चाहिए, अर्थात् जो वर्ष उसने सेवा की, उसका मूल्य काटकर छोड़।
- **Chizkuni:** जैसे-जैसे लड़की बड़ी होती है, उसकी सेवा का मूल्य बढ़ता है, इसलिए वह पहले छुड़ जाए तो मालिक का नुकसान होता है, फिर भी उसे सहायता करनी है।
- **Torah Temimah:** यह दिखाता है कि वह खुद को कम मूल्य में भी छुड़ा सकती है।

## 4. "पराए लोगों को बेचने न पाए" (לֹא עַמְּךָ רְכִיבֵי לְמִנְחָה)

- **Mechilta:** यह गैर-यहूदियों को बेचने की मनाही है ताकि यहूदी कन्याओं का अपमान न

हो।

- Ramban: यह किसी भी ऐसे व्यक्ति को दोबारा नहीं बेचा जा सकता जिससे उसका विवाह नहीं हो सकता।
- Rav Hirsch: “पराए लोग” का अर्थ है ऐसा परिवार जिससे उसका विवाह नहीं हो सकता – सिर्फ ऐसे को ही बेचा जा सकता है जो विवाह योग्य हो।
- Shadal: यह अदालतों के लिए चेतावनी है कि वे पिता को फिर से बेचने की अनुमति न दें।

## 5. "क्योंकि उसने उसके साथ विश्वासघात किया है" (הנִּזְבֵּחַ)

- Rashi: दो अर्थ –
  - स्वामी ने वचन तोड़ा और विवाह नहीं किया।
  - या पिता ने विश्वासघात किया जब उसने कन्या को नौकरानी के रूप में बेच दिया।
- Rabbi Akiva vs Rabbi Eliezer (Talmud):
  - एक कहता है कि उसने विवाह का वादा किया और फिर छोड़ा (यह उसकी “पोशाक” बन गई थी)।
  - दूसरा कहता है कि उसने कभी विवाह का वादा ही नहीं किया, फिर भी उसे बेचना

विश्वासघात है।

- Rav Hirsch: "बगद" (वस्त्र) का अर्थ है – मानवीय व्यवहार। जब कोई वस्त्र (बाहरी दिखावा) होता है, लेकिन अंदर मानवीयता नहीं होती, तो यह विश्वासघात है।

A horizontal row of 20 empty square boxes, intended for children to write their names in, likely as part of a classroom activity or name recognition exercise.

## □□? (Relevance in Today's Christian Church):

हालाँकि यह व्यवस्था विशेष रूप से प्राचीन यहूदी सामाजिक संरचना और दासप्रथा को लेकर है, फिर भी इसके पीछे जो आत्मिक सिद्धांत हैं वे आज भी मसीही विश्वासियों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं:

1. **हर जीवन का मूल्यः** प्रभु यीशु ने सिखाया कि हर व्यक्ति परमेश्वर की दृष्टि में अनमोल है, चाहे वह कितना भी निर्धन या दुर्बल क्यों न हो (मत्ती 25:40)।
  2. **स्वतंत्रता और मुक्तिः** यह पद मुक्ति और न्याय की ओर संकेत करता है – ठीक वैसे ही जैसे यीशु मसीह ने हमें पाप की दासता से छुड़ाया (यूहन्ना 8:36)।
  3. **विश्वासघात के विरुद्ध चेतावनीः** यह पद यह भी सिखाता है कि वचन तोड़ना और किसी को धोखा देना पाप है – यीशु ने कहा, ”तुम्हारा हाँ हाँ, और नहीं नहीं हो” (मत्ती 5:37)।
  4. **गरीबों के प्रति दयाः** प्रभु यीशु ने गरीबों, अनाथों, और विधवाओं के प्रति करुणा दिखाई; यह पद भी गरीब कन्या के प्रति न्याय और दया की व्यवस्था है।

□ □□□□ □□□ □□□ □ □ □□□□□ □ □ □□□□□□□:

**हे मेरे उद्धारकर्ता यीशु,**

आपने मुझे पाप और अपमान की दासता से छुड़ाया।

आपने उस समय मुझे गले लगाया जब संसार ने मुझे त्याग दिया।

हे प्रभु, आप जो विश्वासघात में भी विश्वासयोग्य रहे,

मुझे सिखाइए कि मैं दूसरों के साथ न्याय, प्रेम और करुणा से पेश आऊँ।

जो लोग उपेक्षित, बेचे गए या धोखा खाए हैं,

उन्हें आपकी उपस्थिति और मुक्ति का अनुभव हो।

मुझे उपयोग कीजिए – उनकी मुक्ति और पुनःस्थापना का माध्यम बनने के लिए।

**यीशु के नाम में, आमीन।**

□ □□□□□□ (Conclusion):

**निर्गमन 21:8** केवल एक दासी के अधिकारों की बात नहीं करता, बल्कि एक धर्मसिद्धांत को

उजागर करता है – कि परमेश्वर न्यायशील, करुणामय, और विश्वासयोग्य है।

हर मानव – चाहे वह दासी हो या राजा – परमेश्वर की दृष्टि में समान मूल्य रखता है।

इस व्यवस्था में छिपा हुआ प्रेम और रक्षा का भाव ही हमें मसीह में परिपूर्ण रूप से दिखाई देता है

– जिसने हमें न खरीदा, बल्कि हमें अपनाया और छोड़ा नहीं।

यदि आप चाहें, मैं इस विषय पर एक चार्ट या दृष्टान्त चित्र भी बना सकता हूँ जो इसे और सरल रूप में दिखाए।

P234 Ex.21:8 ...allow the redemption to the Hebrew bondmaid

□ □ □ □ □ □ □ □ **21:8 -** □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □ □ □

❖ □ □ □ □ □ □ (Exodus 21:8):

"यदि वह स्वामी की दृष्टि में अप्रिय ठहरे, जिस ने उसे अपने लिये व्याह करने को रखा था, तो वह उसे छुड़ाने दे; परन्तु वह उसे पराए लोगों को बेचने न पाए, क्योंकि उसने उसके साथ विश्वासघात किया है।"

(निर्गमन 21:8 - हिंदी संयुक्त बाइबल, विश्व बाइबल समाज)

□ □ □ □ □ □ □ □ :

यह पद एक हिन्दू दासी के अधिकारों और उसके साथ न्यायपूर्ण व्यवहार की मांग करता है।

आइए इस पद को चार मुख्य बिंदुओं में समझें:

1 □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

यह तब होता है जब स्वामी को अपनी दासी पसंद नहीं आती या विवाह की इच्छा नहीं रखता। ऐसे में उसकी स्वतंत्रता का सम्मान करना होता है, न कि उसे अपनी सुविधा के अनुसार त्याग देना।

2 □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

यदि वह दासी अब उसकी पत्नी नहीं बन सकती, तो स्वामी को उसे स्वतंत्र होने का अवसर देना चाहिए – यानी वह खुद को छुड़ा सके या कोई अन्य उसे छुड़ा सके।

---

**3 □ □□□□□□□□□ □ □ □ □□□□□ □□**

ईश्वर का स्पष्ट आदेश है कि वह दासी को किसी विदेशी या गैर-यहूदी को नहीं बेचे, क्योंकि इससे उसका शोषण हो सकता है। यह समाज में मानवता और सम्मान का प्रतीक है।

---

**4 □ □□□□□□□□□ (□□□□) X □**

यदि स्वामी ने उसे पत्नी बनाने का वचन दिया था, लेकिन उसे निभाया नहीं – यह एक गंभीर धोखा है। यह पद इस प्रकार के नैतिक और भावनात्मक न्याय को भी महत्व देता है।

---

□ □□□□□□□ □ □ □□□□□□□:

- **रशी:** स्वामी ने विवाह हेतु दासी को लिया था, और यदि वह उसे पत्नी नहीं बनाता, तो वह दोषी है और उसे छुड़ाने देना चाहिए।
  
- **मेकहिल्टा:** दासी को स्वतंत्रता की ओर मार्गदर्शन मिलना चाहिए, न कि उसे बाहरी लोगों को सौंपना।
  
- **अदरत एलीयाह:** "राह" यानी असफल विवाह – अगर स्वामी वचन नहीं निभाता, तो यह विश्वासघात है।

▲ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□:

आज के समय में, मसीही चर्च बंधुआ सेवा का समर्थन नहीं करता, लेकिन यह पद हमें मानवाधिकार, न्याय और स्वतंत्रता की गहरी शिक्षा देता है। यीशु मसीह ने स्वयं लोगों को स्वतंत्रता का संदेश दिया।

□ यीशु का वचन:

"यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र कर दे, तो तुम सचमुच स्वतंत्र हो।" (यूहन्ना 8:36)

□ □□□□□□□:

"प्रभु यीशु, आप जो हमें सच्ची स्वतंत्रता प्रदान करते हैं, हमें यह सिखाइए कि हम एक-दूसरे को आज़ादी और सम्मान दें। हम आपकी तरह दूसरों के साथ धोखा न करें और न ही उनके अधिकारों का उल्लंघन करें। हमें सच्ची न्यायप्रियता और दया के साथ जीवन जीने की शक्ति दें, जैसा कि आपने हमें दिखाया है। हम आपके नाम में प्रार्थना करते हैं। आमीन।"

□ □□□□□□□:

□ Exodus 21:8 यह सिखाता है कि किसी भी व्यक्ति को जबरन किसी रिश्ते में नहीं रखा जाना चाहिए। उसे स्वतंत्रता, न्याय और सम्मान का अधिकार है। यह पद हमें यीशु मसीह के प्रेम और मुक्ति के संदेश की ओर इंगित करता है, जो हर व्यक्ति को मूल्यवान और स्वतंत्र मानते हैं।

P235 Le.25:46 On the laws for treating an alien bondman

□ □□□□□□□□□□ 25:46 – □□□□□ □□ (□□□□□  
□□□)

"और तुम उन्हें अपने बाद अपने पुत्रों के लिए सम्पत्ति के रूप में पा सकते हो;  
तुम उन्हें सदा के लिए गुलाम बना सकते हो; परन्तु अपने भाई इस्राएलियों पर  
तुम एक-दूसरे पर कठोरता से प्रभुता न करना।"

- (लैव्यव्यवस्था 25:46, हिंदी संयुक्त बाइबल)

□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□□□□:

यह पद दो हिस्सों में बाँटा गया है:

□ 1. □□□-□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□:

- परमेश्वर ने इस्राएलियों को यह अनुमति दी कि वे आस-पास की अन्य जातियों से गुलाम (दास-दासियाँ) ले सकते हैं।
- उन दासों को "सम्पत्ति" की तरह अगली पीढ़ी को सौंपा जा सकता है - ठीक वैसे ही जैसे भूमि को विरासत में दिया जाता है।
- उन्हें "सदैव के लिए दास" बनाए रखा जा सकता है, यानी यौबेल वर्ष (jubilee year) में भी वे स्वतन्त्र नहीं होते।

□ 2. ଶାରୀରିକ ପରିମାଣ ଅନୁଷ୍ଠାନିକ କାର୍ଯ୍ୟଙ୍କୁ:

- अपने भाई इस्राएलियों के साथ ऐसा व्यवहार नहीं किया जाना चाहिए।
  - कठोर प्रभुता (harsh rule) इस्राएली से इस्राएली के बीच वर्जित है। यानी भाईचारे की भावना से, सहानुभूति और दया के साथ व्यवहार करना अनिवार्य है।
- 

□ ଶାରୀରିକ ପରିମାଣ ଅନୁଷ୍ଠାନିକ କାର୍ଯ୍ୟଙ୍କୁ:  
□ 1.

□ 1. ରାଶି (Rashi):

- "מִתְנָחָתָהּ" (वहतनखालतेम) का अर्थ है: उन्हें अपने अधिकार में रखना, परंपरागत रूप से सौंपना।
- यह "विरासत देने" के अर्थ में न होकर, उन्हें स्वामित्व में रखना है।

□ 2. ଡେଓଡାର ହୋଫମାନ ହୋଫମାନ (David Zvi Hoffmann):

- उन्होंने बताया कि ये दास यौबेल वर्ष में मुक्त नहीं होते।
- उनके अनुसार यह आज्ञा मात्र अनुमति नहीं, बल्कि एक सकारात्मक आज्ञा (positive commandment) है।

□ 3. राब्बी अकिवा (Rabbi Akiva):

- उन्होंने इस पद को कर्तव्य की तरह देखा - यानी इन दासों को सदा सेवा में बनाए रखना आवश्यक है।

□ 4. राब्बी इशमेल (Rabbi Ishmael):

- उनके अनुसार यह अनुमति है, बाध्यता नहीं।

□ 5. टोराह टेमिमह (Torah Temimah):

- उन्होंने यह स्पष्ट किया कि यह दास भूमि जैसे अधिग्रहण के रूप में होते हैं, लेकिन यौन संबंधों के माध्यम से नहीं।
- उन्होंने कहा कि यह दास सिर्फ कार्य के लिए होते हैं, शोभा के लिए नहीं।

□ 6. पर्डेस योसेफ (Pardes Yosef):

- वे बताते हैं कि अगर कोई व्यक्ति आधा स्वतंत्र और आधा दास हो, तो उसे लेकर कानून कैसे लागू होगा, इस पर भी विचार किया गया है।

□ □

□ □ □ □ :

यद्यपि आज का कोई भी मसीही चर्च दासता या गुलामी की प्रथा का समर्थन नहीं करता, फिर

भी इस पद से तीन प्रमुख शिक्षाएं मिलती हैं:

□ 1. ○○○○○○○ ○○ ○○○○○○:

यीशु मसीह ने सिखाया कि हर व्यक्ति ईश्वर की संतान है। इस दृष्टिकोण से, किसी को भी गुलाम बनाकर रखना मानवता के खिलाफ है।

□ 2. ○○○○○ ○○ ○○○ ○○ ○○○○○○○:

यीशु ने कहा, ”जैसा तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे साथ करें, वैसे ही तुम भी उनके साथ करो।”

(लूका 6:31)

□ 3. ○○○○○○ ○○ ○○○○○○:

यीशु ने कहा:

”यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र कर दे, तो तुम सचमुच स्वतंत्र हो।” (यूहन्ना 8:36)

इससे यह शिक्षा मिलती है कि प्रत्येक आत्मा को पाप, बंधन और अन्याय से छुटकारा पाने का अधिकार है।

---

□ ○○○○○○○○○ (○○○○○ ○○○○ ○○ ○○○○ ○○  
○○○○○○○):

”हे प्रभु यीशु, आप जो संसार को सच्ची स्वतंत्रता देने आए, कृपया हमें यह ज्ञान दें कि हम दूसरों को भी वही सम्मान, करुणा और प्रेम दे सकें जिसकी वे पात्र हैं। हमें सिखाइए कि हम किसी के ऊपर कठोर प्रभुता न करें, बल्कि सेवा और भलाई के साथ उनका साथ दें। जैसे आपने हमारे लिए अपना जीवन दिया,

**वैसे ही हम भी दूसरों के जीवन को सम्मानित करें। आमीन।”**

---

□ □ □ □ □ □ □ :

**लैब्यव्यवस्था 25:46** एक ऐतिहासिक संदर्भ में दास-प्रथा को परिभाषित करता है, लेकिन साथ ही न्याय, भाईचारा, और दया के सिद्धांतों को उजागर करता है। यह हमें सिखाता है कि:

- सभी मनुष्यों के साथ सम्मान और करुणा से पेश आना चाहिए।
  - किसी भी प्रकार की कठोरता और शोषण का परमेश्वर के राज्य में कोई स्थान नहीं है।
  - यीशु मसीह की शिक्षाएं हमें आज भी यह दिखाती हैं कि सच्ची स्वतंत्रता केवल सांसारिक नहीं, बल्कि आत्मिक होती है – और वह हर एक व्यक्ति का अधिकार है।
- 

## CIVIL SUITS

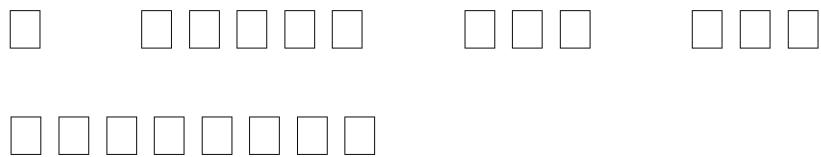
P236 Ex.21:18 On the penalty for a person inflicting injury

□ □ □ □ □ □ (□ □ □ □ □ □ 21:18) - Hindi Bible Verse

”और यदि दो पुरुष झगड़ें, और एक दूसरे को पत्थर से, वा घूंसे से मारे, और वह मरने पर तो न हो, पर खाट पर पड़ जाए;”

(निर्गमन 21:18, हिंदी ओ.वी.)

---



यह पद उस स्थिति का वर्णन करता है जब दो पुरुष इगड़ते हैं और मारपीट होती है। उनमें से एक, दूसरे को या तो पत्थर से या धूंसे से चोट पहुँचाता है। यहाँ मुख्य बात यह है कि मारा गया व्यक्ति मरा नहीं, बल्कि इतनी गंभीर चोट लगती है कि वह बिस्तर पर पड़ा रहता है, यानी काम करने के योग्य नहीं रहता।

## रब्बियों की व्याख्या (Rabbinic Commentary)

1. इगडा क्यों उल्लेखित है?

रब्बियों के अनुसार, झागड़े का उल्लेख इसलिए किया गया क्योंकि मारपीट अक्सर वाद-विवाद या झागड़े के बाद ही होती है। यह दिखाता है कि चोट जानबूझकर या झागड़े की उत्तेजना में हुई है, भले ही यह पूर्व-नियोजित (premeditated) न हो।

## 2. "पत्थर या धूंसे" का अर्थः

- "धूंसा" (ધૂંગર, Agruf) કો આમતૌર પર મુશ્કિલ સે મારા ગયા મુક્કા સમજા ગયા હૈ।
  - કછ રબ્બિયોં ને "ধूંસા" કો પત્થર, મિટ્ટી કા ઢેલા યા ઈંટ જૈસા ઠોસ પદાર્થ ભી માના હૈ,

खासकर उन परिस्थितियों में जब सिर्फ एक मुक्के से मौत असंभव लगती है।

- तर्गुम उनकुलोस (Targum Onkelos) में 'घूंसे' का अनुवाद 'सफेद पत्थर के टुकड़े' जैसा किया गया है।

### 3. चोट का आकलन (Estimation):

न्यायधीशों को आकलन करना होता है कि क्या पत्थर या घूंसे से लगी चोट जानलेवा हो सकती थी।

यदि घूंसा या पत्थर से मार इतनी गंभीर थी कि वह मृत्यु का कारण बन सकती थी, तो अपराधी पर अधिक गंभीर दंड लागू होता है।

### 4. "खाट पर पड़ जाए" (Bed-ridden) का अर्थ:

- इसका अर्थ है कि घायल व्यक्ति काम करने में असमर्थ हो जाता है।
- तर्गुम उनकुलोस के अनुसार यह "कार्य से निष्क्रिय" हो जाने को दर्शाता है।

**5.** **मसीहाई** **निष्कर्षः**  
रब्बियों के अनुसार, यदि घायल व्यक्ति फिर से उठकर बाहर चलने लगे (भले ही लाठी का सहारा लेकर), तो हमला करने वाला मृत्यु दंड से बच जाता है, लेकिन उसे आर्थिक क्षतिपूर्ति करनी पड़ती है:

- काम का नुकसान (Loss of Time)

- इलाज का खर्च (Medical Expenses)
  - दर्द, अपंगता और अपमान का मुआवजा (Pain, Disability, Shame)
- 

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

**आज के मसीही विश्वास में इस पद से हम कई महत्वपूर्ण सिद्धांत सीखते हैं:**

### 1. शारीरिक हिंसा की निंदा:

मसीही विश्वास में हिंसा को पाप माना गया है। यीशु मसीह ने शिक्षा दी कि दूसरों को क्षमा करें और प्रेम करें, चाहे कोई भी परिस्थिति हो (मत्ती 5:39 - "जो तेरे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे, उसके सामने अपना दूसरा गाल भी फेर दे।")

### 2. उत्तरदायित्व और पुनर्स्थापन (Responsibility and Restoration):

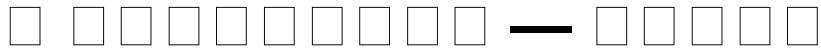
यदि हमने किसी को चोट पहुँचाई है, तो केवल पछताना पर्याप्त नहीं; हमें उसकी भरपाई करनी चाहिए – उनकी जरूरतों को पूरा करने में मदद करना यीशु के अनुग्रह का पालन करना है।

### 3. दयालु न्याय:

यह पद सिखाता है कि न्याय केवल सजा देने के लिए नहीं बल्कि पीड़ित की बहाली के लिए होना चाहिए। यीशु भी पापियों को दंडित करने से अधिक उन्हें चंगा करने और

पुनस्थापित करने आए थे।

---



### प्रार्थना:

”हे प्रिय प्रभु यीशु मसीह,

जिस प्रकार आपने उन सब को चंगा किया जिन्होंने आपको चोट पहुँचाई या अपमानित किया,  
वैसे ही मेरी भी सहायता कीजिए कि मैं हिंसा से दूर रहूं।  
अगर मैं कभी किसी को शारीरिक या मानसिक रूप से चोट पहुँचाऊं, तो मुझे साहस दीजिए कि  
मैं उसकी सच्चे मन से क्षमा मांग सकूं और उसके नुकसान की भरपाई कर सकूं।  
आपके प्रेम और दया की शिक्षा मेरे जीवन में झलकती रहे।  
मेरे हृदय में क्रोध नहीं, प्रेम और करुणा भरी रहे, ताकि मैं सच्चे मसीही के समान चल सकूं।  
यीशु मसीह के नाम में मैं यह प्रार्थना करता हूं। आमीन।”

---



**निर्गमन 21:18** हमें सिखाता है कि ईश्वर के न्याय में संतुलन है – हिंसा को रोका जाए, पीड़ित को न्याय मिले, और अपराधी को जिम्मेदारी उठानी पड़े।

रब्बी और यहूदी परंपराओं में इस पद का गहरा अध्ययन किया गया है, और मसीही विश्वास इसे प्रेम, दया और न्याय के संदेश से जोड़ता है। प्रभु यीशु ने स्वयं क्रोध और हिंसा के स्थान पर क्षमा और पुनर्स्थापना का मार्ग दिखाया। आज भी मसीही चर्च में यह सिखाया जाता है कि न केवल अपराध से बचना है, बल्कि यदि गलती हो जाए तो सच्चे मन से सुधार और हर्जाना करना चाहिए।

---

P237 Ex.21:28 On the law of injuries caused by an animal

---

### **निर्गमन 21:28 (Exodus 21:28) – बाइबल पद हिंदी में**

”यदि कोई बैल किसी पुरुष या स्त्री को सींग मारकर मार डाले, तो उस बैल को पत्थरों से मारा जाए और उसका मांस न खाया जाए; परन्तु उस बैल के स्वामी को दोषी न ठहराया जाएगा।”

(निर्गमन 21:28, हिंदी आसान अनुवाद)

---

### **इस पद का सरल हिंदी में**

### **विवरण**

यह आयत उस स्थिति के बारे में निर्देश देती है जब कोई बैल (या अन्य जानवर) किसी पुरुष या स्त्री

को सींग मारकर मार डालता है।

इस परिस्थिति में:

- उस बैल को पत्थरों से मारा जाएगा (पब्लिक स्टोनिंग द्वारा)।
  - उस बैल का मांस खाना या उससे कोई लाभ उठाना मना होगा।
  - परंतु बैल के मालिक को इस दुर्घटना के लिए दोषी नहीं ठहराया जाएगा, यदि यह पहली घटना थी और बैल के बारे में पहले से खतरनाक होने की कोई जानकारी नहीं थी।
- 

## **रब्बियों के अनुसार विवरण और**

### **उदाहरण**

#### **1. किस जानवर पर लागू होता है:**

- भले ही यहाँ विशेष रूप से "बैल" का उल्लेख है, रब्बियों ने स्पष्ट किया कि यह कानून सभी पालतू पशुओं, जंगली जानवरों और यहाँ तक कि पक्षियों पर भी लागू होता है।

#### **उदाहरण:**

यरूशलेम में एक मुर्गे (rooster) को भी एक बच्चे की मृत्यु के कारण पत्थरवाह किया गया था।

## 2. "सींग मारना" (Goring) शब्द का अर्थ:

- इब्रानी शब्द "נָגַח" (*nagach*) मनुष्यों को घायल करने के लिए प्रयोग होता है।
- यदि जानवर दूसरे जानवर को घायल करे, तो अलग शब्द "נָגָף" (*nagaf*) का प्रयोग होता है।
- कुछ रब्बियों के अनुसार, मनुष्यों के प्रति जानवर का आक्रामक व्यवहार किस्मत (*mazzal*) से भी जुड़ा हो सकता है, परन्तु इस पर मतभेद भी है।

## 3. बैल को पत्थरवाह करना:

- बैल को पत्थरों से मारना दंड के रूप में नहीं, बल्कि इस बात के चिन्ह के रूप में है कि मानव जीवन की पवित्रता सर्वोपरि है।
- नाहमानीदेस (Nachmanides) कहते हैं कि यह मालिक की लापरवाही पर कठोर चेतावनी भी है।

## 4. मांस खाना मना क्यों है:

- क्योंकि बैल को विधिवत वध (ritual slaughter) द्वारा नहीं मारा गया।
- यहां तक कि यदि निर्णय के बाद किसी ने बैल को शुद्ध विधि से मार दिया हो, तब भी मांस निषिद्ध रहता है।

- न केवल मांस, बल्कि चमड़ा, रक्त, चर्बी आदि से भी कोई लाभ उठाना मना है।
- बैल का गोबर (dung) हालांकि उपयोग के लिए वैध है।

#### **5. "स्वामी निर्दोष है":**

मालिक पर कोई दंड या फिरौती (ransom) नहीं लगेगी यदि यह बैल का पहला अपराध था।

लेकिन अगर बैल पहले से खतरनाक साबित हुआ होता (mu'ad बैल), तो स्वामी को भारी दंड या मृत्यु दंड (स्वर्गीय न्याय से) भुगतना पड़ सकता था।

#### **6. आज के सन्दर्भ में:**

- यद्यपि आज संहिद्रिन (Sanhedrin) नहीं है, और पत्यरवाह की प्रक्रिया लागू नहीं होती, फिर भी "दूसरों की सुरक्षा के प्रति जिम्मेदारी" आज भी महत्वपूर्ण शिक्षा है।
- यदि कोई व्यक्ति खतरनाक जानवर पालता है और वह जानवर किसी को नुकसान पहुँचाता है, तो उसे धार्मिक बहिष्कार (excommunication) तक का सामना करना पड़ सकता है।

## **आज के मसीही चर्च में इसका**

# क्या अर्थ है?

मसीही दृष्टिकोण से यह आयत हमें सिखाती है:

- मानव जीवन की पवित्रता को हमेशा सर्वोच्च स्थान देना चाहिए।
  - जिम्मेदारी और उत्तरदायित्व का सिद्धांतः जो कुछ भी हमारे अधिकार या नियंत्रण में है (जानवर, साधन, संपत्ति), यदि वह किसी को हानि पहुँचाता है, तो प्रभु हमारी जिम्मेदारी पूछ सकते हैं।
  - प्रभु यीशु मसीह ने भी सिखाया कि दूसरों को ठेस पहुँचाने के अपराध से बचना चाहिए ("जो छोटों में से किसी को ठेस पहुँचाए, उसके लिए अच्छा होता कि उसके गले में चक्की का पाट बाँधा जाता और वह समुद्र में डुबो दिया जाता" – मत्ती 18:6)।
- 

## प्रभु यीशु मसीह के जीवन से

### प्रेरित एक प्रार्थना

"हे परमेश्वर हमारे पिता,  
जैसे प्रभु यीशु मसीह ने हमें दूसरों की रक्षा करने, प्रेम करने और उनकी भलाई के लिए जीने का  
उदाहरण दिया,

वैसे ही मेरी जीवन की हर जिम्मेदारी में, चाहे वह छोटे कार्य हों या बड़ी जिम्मेदारियाँ,  
मुझे सचेत, चौकस और दयालु बनाइये।  
मुझे इस योग्य बनाइये कि मैं अपने कार्यों और संपत्ति से किसी भी जन को हानि न पहुँचाऊँ।  
आपकी दी हुई हर चीज़ का मैं विवेकपूर्ण और उत्तरदायी उपयोग करूँ।  
प्रभु यीशु मसीह के नाम में मैं यह प्रार्थना करता हूँ। आमीन।”

---

## निष्कर्ष

- **निर्गमन 21:28** यह सिखाता है कि मानव जीवन की कीमत बहुत बड़ी है और उसे कोई भी चीज़ - जानवर या वस्तु - क्षति नहीं पहुँचा सकती बिना गंभीर दंड के।
  - रब्बी व्याख्याओं के अनुसार, यह नियम सभी प्रकार के जानवरों और पक्षियों तक विस्तारित होता है, और जानबूझकर या लापरवाही से जानबूझकर उत्पन्न नुकसान के खिलाफ कड़ी चेतावनी है।
  - आज मसीही चर्च में भी यह एक महत्वपूर्ण सन्देश है कि हम अपने जीवन में दूसरों की सुरक्षा और भलाई के लिए उत्तरदायी बनें।
  - प्रभु यीशु मसीह के जीवन और शिक्षा से हमें दयालुता, उत्तरदायित्व और दूसरों के लिए सेवा की प्रेरणा मिलती है।
-

P238 Ex.21:33 - 34 On the law of injuries caused by an pit

□ □□□□ □ □ (□□□□□□□ 21:33) □□□□□  
□□□

"यदि कोई मनुष्य कोई कुआँ खोदे, या कोई कुआँ खोला जाए, और वह उसे न  
ढाँपे, और कोई बैल या गधा उसमें गिर पड़े,"

(निर्गमन 21:33 - हिंदी ओवी संस्करण)

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

इस पद में प्रभु यह सिखा रहे हैं कि यदि कोई व्यक्ति जानबूझकर गड्ढा (कुआँ) बनाता है या पहले से बने गड्ढे को खोलता है, लेकिन उसे ठीक से टकता नहीं है, और उसमें किसी का पशु गिरकर मर जाए या घायल हो जाए, तो गड्ढा बनाने वाले व्यक्ति को उसकी भरपाई करनी होगी।  
सिखावन: जो दूसरों के लिए खतरा उत्पन्न करे, वह जिम्मेदार होगा।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □  
□ □ □ □ □ □ □ □ (□ □ □ □ □ □ □ □ □)

□ □ □ □ )

## 1. "उधेड़ना" और "खोदना" दोनों शब्दों का महत्व

- "खोलना" (uncover) का मतलब है पहले से मौजूद ढंके गड़े को खोल देना।
- "खोदना" (dig) का मतलब है नया गड़ा बनाना।

□ □ □ □ □ □ :

- किसी ने बाजार में पहले से बना ढका हुआ गड़ा फिर से खोल दिया - "खोलने" की जिम्मेदारी।
- किसी ने खुद नया गड़ा खोदा - "खोदने" की जिम्मेदारी।

## 2. 'दूसरे खोदने वाले' (Digger after Digger) की धारणा

- अगर पहले व्यक्ति ने 9 हथेलियों गहरा गड़ा खोदा, जो जानलेवा नहीं था, और दूसरा व्यक्ति 1 हथेली और गहरा कर देता है (10 हथेलियाँ = जानलेवा मानक), तो दूसरा व्यक्ति दोषी माना जाएगा।

□ □ □ □ □ □ :

- राम ने गड़ा खोदा (9 हथेली गहरा)। श्याम ने थोड़ा और गहरा किया (10 हथेली)। अब यदि कोई पशु गिरा, तो श्याम जिम्मेदार होगा।

### 3. सार्वजनिक बनाम निजी स्थान

- अगर गङ्गा सार्वजनिक स्थान (सड़क आदि) पर बनाया गया, तो दोषी ठहराया जाएगा।
- अगर किसी के निजी खेत में बना, तो उसपर लागू नहीं होता (क्योंकि लोग बिना अनुमति वहाँ नहीं आते)।

### 4. मनुष्य और वस्तुओं पर छूट

- यह कानून पशुओं (गाय, गधा आदि) पर लागू होता है, लेकिन मनुष्यों और वस्तुओं (जैसे बर्तन) के नुकसान पर नहीं।
- क्यों? क्योंकि मनुष्य को खुद देखभाल करनी चाहिए (आँखें और समझ होती है), और वस्तुएँ बिना चेतना के होती हैं।

□ □ □ □ □ □ :

- अगर कोई गधा गङ्गे में गिरा – मुआवजा देना होगा।
- अगर कोई आदमी गिरा – मुआवजा नहीं।
- अगर कोई बर्तन गिरा और टूट गया – मुआवजा नहीं।

### 5. "मृत शरीर उसका होगा" (Carcass shall be his)

- नुकसान भरपाई करने के बाद मरने वाला पशु (dead body) गङ्गा बनाने वाले को मिल

जाता है।

- यह दिखाता है कि उसे नुकसान के बदले कुछ मिला (कानूनी संतुलन)।



आज के चर्च में, इस पद से यह शिक्षा ली जाती है:

✓ **जिम्मेदारी:** विकास के लिए जिम्मेदारी लेना, उत्तम विकास के लिए जिम्मेदारी लेना।



✓आध्यात्मिक गड़े: ☎ ०१२३४५६७८९०१०१०१०१, 📩 ०१२३४५६७८९०१०१०१०१

✓ **मसोह का उदाहरण:** पोशु मसोह ने स्वयं दूसरों के लिए राह को सरल और सुरक्षित बनाया, न कि ठोकर का कारण बने।



## प्रार्थना:

"हे प्रेमी प्रभु यीशु मसीह,

आपने हमें सिखाया कि हम अपने पड़ोसियों से प्रेम करें और उनकी भलाई का ध्यान रखें।

हमें सिखाइए कि हम अपनी जिम्मेदारियों को नज़रअंदाज़ न करें, न शारीरिक और

न आत्मिक रूप से।

प्रभु, हमारे जीवन से हर वह गद्बा दूर कीजिए जो दूसरों के लिए खतरा बन सकता है।  
हमारे हाथों और कार्यों को आशीषित कीजिए ताकि हम सुरक्षा, शांति और प्रेम के वाहक बनें।

हमें आपके चरित्र की तरह दूसरों के लिए आश्रय और सहारा बनने दीजिए।  
यीशु मसीह के पवित्र नाम में प्रार्थना करते हैं। आमीन।"



**निर्गमन 21:33** हमें यह सिखाता है कि:

- हमारी लापरवाही से यदि कोई नुकसान होता है तो हम जिम्मेदार हैं।
- समाज में सुरक्षित वातावरण बनाना केवल कानून नहीं, बल्कि परमेश्वर की इच्छा भी है।
- मसीही विश्वास में यह पद हमें सिखाता है कि हम अपने भाई-बहनों के लिए बाधा नहीं, बल्कि सहारा बनें।

- प्रभु यीशु मसीह ने हमें ठोकर खाने वालों की मदद करने और रास्ता साफ करने का आदर्श उदाहरण दिया है।
- 
- 

### **Exodus 21:34**

”जब कोई गड्ढा खोदे, या कोई गड्ढा खोद कर उसे ढांके नहीं, और उसमें कोई बैल या गधा गिर जाए, तो गड्ढे का मालिक पशु के मालिक को चाँदी लौटाएगा; और मरा हुआ पशु उसी का हो जाएगा।”

---

### **२. हिंदी में विस्तृत समझः**

यह व्यवस्था बताती है कि यदि कोई व्यक्ति ज़मीन में गड्ढा खोदता है या किसी गड्ढे को खुला छोड़ देता है और उसमें किसी का पशु (जैसे बैल या गधा) गिरकर मर जाता है, तो उस गड्ढे का मालिक (जिसने गड्ढा खोदा या उसे खुला छोड़ा) जिम्मेदार ठहराया जाएगा।

- उसे पशु के मालिक को क्षतिपूर्ति देनी होगी – चाँदी में या किसी भी मूल्यवान वस्तु द्वारा।
- बदले में, मरा हुआ पशु गड्ढे के मालिक का हो जाएगा।

यह व्यवस्था यह सिखाती है कि अगर आप कोई खतरा पैदा करते हैं, तो आप उसके परिणामों के लिए जिम्मेदार हैं।

---

### ३. रब्बियों के विचार (उदाहरण सहित):

#### (क) गड्ढे का मालिक कौन है?

- रब्बियों ने समझाया कि "गड्ढे का मालिक" (הבר בער) का अर्थ केवल वह नहीं जो ज़मीन का मालिक है, बल्कि वह है जिसने जोखिम पैदा किया है।
- चाहे गड्ढा सार्वजनिक स्थान पर खोदा गया हो, जिसने भी उसे खोदा या खुला छोड़ा, वही जिम्मेदार है।

#### उदाहरण:

अगर कोई बाजार के बीच में गड्ढा खोदता है और उसे बिना ढके छोड़ देता है, और कोई बैल उसमें गिरकर मर जाता है, तो खोदने वाला व्यक्ति जिम्मेदार होगा।

#### (ख) क्षतिपूर्ति कैसे दी जाए?

- "चाँदी लौटाए" का अर्थ केवल चाँदी देना नहीं है। कोई भी वस्तु जिसका मूल्य बराबर हो, वह दी जा सकती है।
- रब्बियों ने सिखाया कि यहाँ तक कि बहुत साधारण चीजें, जैसे भूसी (bran - सूप), भी क्षतिपूर्ति के रूप में दी जा सकती हैं, अगर उनका मूल्य सही है।

#### उदाहरण:

अगर किसी के पास चाँदी नहीं है लेकिन उसकी पास इतनी कीमत की भूसी है, तो वह भी देकर नुकसान की भरपाई कर सकता है।

### (ग) मरे हुए पशु का स्वामित्व किसका होगा?

- रब्बियों के अनुसार ”मरा हुआ पशु“ मालिक के पास ही रहेगा, और उसकी कीमत को नुकसान की राशि से घटा दिया जाएगा।
- अगर पशु के मरने के बाद उसके शव का मूल्य कम हो जाता है (जैसे सड़ने से), तो वह नुकसान पशु के असली मालिक को ही सहना होगा।

### उदाहरण:

यदि बैल जीवित अवस्था में 100 सिक्कों का था, और शव 30 सिक्कों का है, तो गड्ढे का मालिक केवल 70 सिक्के देगा, और शव बैल के मालिक का रहेगा।

### (घ) गहरी व्याख्या:

- रब्बी योसेफ खाइम ने इसे आत्मिक दृष्टि से समझाया कि कोई व्यक्ति अगर समाज में कोई नया पाप फैलाता है, तो वह उस गड्ढे खोदने वाले की तरह है।
- वह केवल अपने पाप का नहीं, बल्कि उसके कारण दूसरों के पाप में गिरने का भी दोषी है।

### उदाहरण:

अगर कोई व्यक्ति समाज में एक बुरी आदत फैलाता है (जैसे झूठ बोलना सामान्य बनाना), तो उसके फैलाए पापों के कारण जितने भी लोग बाद में गिरते हैं, उसका जिम्मा भी उसी व्यक्ति पर है।

## ४. आज के मसीही चर्च में इसका महत्व:

- आध्यात्मिक खतरे:** यह पद आज भी हमें चेतावनी देता है कि हम अपने कार्यों और शब्दों द्वारा दूसरों के लिए बाधा या खतरा न बनें।
- जिम्मेदारी का सिद्धांतः** प्रभु यीशु ने भी सिखाया कि "जो किसी छोटे को गिराए, उसके लिए अच्छा होगा कि उसकी गर्दन में चक्की का पत्थर बांधकर उसे समुद्र में डुबा दिया जाए" (लूका १७:२)।
- कलीसिया में सेवा करते समयः** जब हम चर्च में दूसरों के लिए मार्गदर्शन करते हैं, हमें यह देखना चाहिए कि हम किसी भी आत्मिक गड्ढे या बाधा का कारण न बनें।
- सामाजिक दायित्वः** अपने आस-पास के समाज में भी अगर हम कोई खतरा या बुराई फैलाते हैं, तो हम परमेश्वर के सामने जवाबदेह हैं।

## ५. प्रभु यीशु मसीह के जीवन से संबंधित प्रार्थना:

हे	प्रेमी	प्रभु	यीशु	मसीह,
आपने हमें सिखाया कि हम एक-दूसरे की सहायता करें और दूसरों को ठोकर खाने से				बचाएँ।
प्रभु, मेरी मदद करें कि मैं अपने कार्यों, वचनों, और जीवन से किसी के लिए भी आध्यात्मिक	गड्ढा		न	बनूं।

यदि कभी अनजाने में मैंने किसी को गिराया हो, तो मुझे क्षमा करें और मुझे सुधारने

की	कृपा	दें।
----	------	------

मुझे ऐसा प्रेम, दया और समझ प्रदान करें कि मैं दूसरों को उठाने वाला और मार्ग

दिखाने	वाला	बनूं।
--------	------	-------

जैसे आपने हमें बचाया, वैसे ही मुझे दूसरों की भलाई के लिए जीने की शक्ति दें।

यीशु मसीह के नाम में प्रार्थना करता हूँ, आमीन।

---

#### **६. निष्कर्ष:**

**निर्गमन २१:३४** केवल एक पुरानी व्यवस्था नहीं है, बल्कि आज भी बहुत गहरी सच्चाइयों को सिखाती है:

**जिम्मेदारी:** अपने द्वारा पैदा किए गए खतरों के लिए उत्तरदायी होना।

**न्याय और क्षतिपूर्ति:** नुकसान के लिए उचित हर्जाना देना।

**आत्मिक शिक्षा:** दूसरों के जीवन में ठोकर न बनने का प्रयास करना।

**प्रभु यीशु का दृष्टिकोण:** प्रेम, रक्षा, और दूसरों के लिए मार्गदर्शन करना।

यह हमें बुलाता है कि हम अपने कार्यों के प्रभाव को गंभीरता से लें और दूसरों के लिए आशीष का साधन बनें, न कि नुकसान का कारण।

---

P239 Ex.21:37 - 22:3 On the law of punishment of thieves

## निर्गमन 21:37

### 1. बाइबल पद (Hindi Bible Verse)

"यदि कोई पुरुष बैल या भेड़ चुराए और उसको मार डाले या बेच डाले, तो वह बैल के बदले पाँच बैल और भेड़ के बदले चार भेड़ें देगा।"

(निर्गमन 21:37, हिंदी अनुवाद)

---

### 2. इसका हिंदी में स्पष्टीकरण

इस वचन में परमेश्वर ने एक विशेष व्यवस्था दी है। यदि कोई किसी का बैल या भेड़ चुराता है और उसे मार डालता है या बेच देता है, तो वह साधारण चोरी से अधिक दण्ड पाएगा।

सामान्य चोरी में चोर को चुराई गई वस्तु का दुगुना वापस करना पड़ता था, लेकिन यदि चुराई गई वस्तु को नष्ट कर दिया जाए (जैसे मार दिया जाए या बेच दिया जाए ताकि वह मूल मालिक को लौटाई न जा सके), तब दण्ड चार गुना या पाँच गुना देना होता है।

- बैल के लिए 5 गुना देना होता था।
- भेड़ के लिए 4 गुना देना होता था।

इससे चोरी के गंभीर परिणामों और संपत्ति के नुकसान की भरपाई का सिद्धांत स्थापित होता

है।

---

### **3. रब्बी लोगों के अनुसार व्याख्या (Rabbinic Interpretation with Examples)**

#### **(i) श्रम का मूल्य (Value of Labour)**

- रब्बी मीर (Rabbi Meir) और रब्बी सादिया गाओन (Rabbi Saadiah Gaon) ने समझाया कि बैल कृषि कार्यों में अत्यधिक उपयोगी होता है (जैसे हल चलाना)।
- जब कोई बैल चोरी कर लेता है, तो मालिक का श्रम साधन भी चला जाता है। इसलिए दण्ड अधिक है - 5 गुना।
- वहीं भेड़ मुख्यतः ऊन और मांस के लिए पाली जाती है, श्रम में योगदान कम होता है, इसलिए उसका दण्ड 4 गुना रखा गया।

#### **उदाहरण:**

अगर कोई व्यक्ति किसी किसान का हल चलाने वाला बैल चुरा ले और उसे बेच दे, तो किसान को केवल बैल का मूल्य ही नहीं, बल्कि उसकी कृषि में हुई हानि भी होती है। इसलिए चोर को पाँच बैल चुकाने का आदेश है।

---

#### **(ii) चोर के अपमान पर विचार (Human Dignity - Rabban Jochanan ben Zaccai)**

- रब्बन योहानान बेन जव्वकर्फ़ ने कहा कि भेड़ को चुराने वाला चोर भेड़ को अपने कंधे पर उठाकर ले जाता है, जो उसके लिए अपमानजनक स्थिति है।
- इस अपमान को ध्यान में रखते हुए भेड़ की चोरी पर दण्ड एक गुना कम (चार गुना) रखा गया।
- परन्तु बैल स्वयं चलते हैं, उन्हें खींच कर ले जाना चोर के लिए अपमान नहीं होता, इसलिए पाँच गुना दण्ड है।

### **उदाहरण:**

एक चोर अगर भेड़ को उठा कर ले जाए, तो उसे शर्मिदगी का सामना करना पड़ता है। इसलिए दया स्वरूप उसका दण्ड थोड़ा कम है।

---

### **(iii) पाप में जड़ जमाना (Persistence in Sin)**

- जब चोर चुराए हुए जानवर को मारता या बेचता है, तो वह न केवल चोरी करता है बल्कि उसे स्थायी भी बनाता है।
- इसलिए गुनाह गहरा हो जाता है और दण्ड भी बढ़ जाता है।

### **उदाहरण:**

चोरी करके जानवर को मारना या बेचना यह दिखाता है कि चोर केवल गलती से नहीं बल्कि जानबूझकर और पूरी योजना से अपराध कर रहा है।

---

#### (iv) परमेश्वर का अपमान (Insult to God)

- चोरी छुपकर होती है, जिससे चोर यह मानता है कि मनुष्य तो देख सकता है परं परमेश्वर नहीं।
  - यह सोच परमेश्वर के सर्वज्ञानी और सर्वव्यापी स्वभाव का अपमान है।
  - इसलिए कठोर दण्ड निर्धारित किया गया।
- 

#### (v) ऐतिहासिक और रूपक अर्थ (Midrashic and Allegorical Interpretations)

- बछड़े की मूरत (Golden Calf) का पाप: बैल के पाँच गुना दण्ड को सोने के बछड़े के पाप से जोड़ा गया है।
  - यूसुफ की बिक्री (Sale of Joseph): यूसुफ को "भेड़" के समान बेचा गया था। इस घटना से मिस्र में 400 वर्षों की गुलामी आई। भेड़ की चोरी पर चार गुना दण्ड इस ऐतिहासिक दर्द को दर्शाता है।
  - दाऊद और ऊरिय्याह का प्रसंग (King David): दाऊद के पाप को भी भेड़ की चोरी के रूपक से जोड़कर समझाया जाता है।
-

#### **4. आज के मसीही चर्च में इसका अर्थ (Christian Church)**

## **Application Today)**

- आज के मसीही चर्च में यह वचन हमें यह सिखाता है कि चोरी केवल कानूनी अपराध नहीं है, यह आत्मिक पाप भी है।
  - परमेश्वर हमसे ईमानदारी, जिम्मेदारी और पश्चाताप की अपेक्षा करते हैं।
  - यह वचन दिखाता है कि जब हम दूसरों की संपत्ति का नुकसान करते हैं, तो उसकी भरपाई केवल ”मूल” नुकसान से नहीं, बल्कि अधिक करके करना उचित है।
  - प्रभु यीशु मसीह ने भी हमें सिखाया कि हम केवल न्याय न करें, बल्कि दया और करुणा से भी काम लें।

आज का शिक्षा:

## 5. प्रभु यीश मसीह के जीवन से एक प्रार्थना (Prayer)

**Based on the Life of Jesus Christ)**

प्रार्थना:

”ह

प्र० समय

प्रभ

यीशा

मसीह.

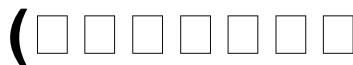
आपने हमें सिखाया है कि हम अपने पड़ोसी से प्रेम करें जैसे स्वयं से करते हैं। हे प्रभु, हमारे दिल को सच्चाई, ईमानदारी और दया से भर दीजिए। यदि हमने कभी दूसरों को नुकसान पहुँचाया हो, तो हमें पश्चाताप की सच्ची भावना दीजिए। हमें साहस दीजिए कि हम न केवल अपने पापों को स्वीकार करें, बल्कि उन्हें सुधारने के लिए चार गुना या पाँच गुना प्रेम और सेवा से भरपाई करें। हे प्रभु, हमें आपकी तरह दूसरों के अधिकारों का सम्मान करना सिखाइए। आपके नाम से हम यह प्रार्थना करते हैं।  
आमीन।”

---

## 6. निष्कर्ष (Conclusion)

निर्गमन 21:37 हमें सिखाता है कि चोरी केवल वस्तु चुराना नहीं है, बल्कि यह आत्मिक अपराध है जो परमेश्वर और मनुष्य दोनों के प्रति अपराध है। रबी व्याख्याओं से हमें समझ आता है कि न्याय, दया और जिम्मेदारी का संतुलन परमेश्वर के हृदय का हिस्सा है। आज के मसीही जीवन में भी यह आवश्यक है कि हम दूसरों के साथ पूरी ईमानदारी से व्यवहार करें, नुकसान की सच्ची भरपाई करें, और प्रभु यीशु मसीह की शिक्षा अनुसार पश्चाताप और प्रेम में चलें।

---



**22:1-2,**

□ □ □ □ □ □ □ )

## निर्गमन 22:1-2

**”यदि कोई चोर सेंध लगाते हुए पकड़ा जाए और उसे मारा जाए, जिससे उसकी मृत्यु हो जाए, तो उसके मारने वाले पर खून का दोष नहीं लगेगा। परन्तु यदि सूर्य उसके ऊपर उदय हो चुका हो, तो खून का दोष लगेगा; वह अवश्य प्रतिफल देगा;**

**यदि उसके पास कुछ न हो, तो उसकी चोरी के लिये बेच दिया जाएगा।”**

(हिंदी अनुवाद पर स्वतंत्र सत्यापन करना उचित रहेगा।)

□ □

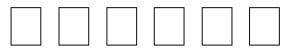
□  
 □  
 □  
 □  
 → □  
 □  
 □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □ □ □ — □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ — □ □ □ □ □ □ □  
 □ □ □ □ □ □ □ □ □ — □ □ □ □ □ □ □ □ □ □, □ □  
 □  
 → □,  
 □

यदि चोर पकड़ा जाए और उसके पास चुराया गया सामान न हो, तो उसे प्रतिफल देना पड़ेगा; यदि वह कुछ भी नहीं चुका सकता, तो उसे दासत्व में बेच दिया जाएगा ताकि

चोरी का हजारा पूरा किया जा सके।

---



## 1. "बिमखतेरेट" (בִּמְחַטֵּת) — सेंध लगाना

- **राशी (Rashi):** "बिमखतेरेट" का अर्थ है जब चोर घर में घुसने के लिए दीवार में सेंध लगाते हुए पकड़ा जाता है। वह चोरी करते समय पकड़ा गया है, न कि पहले से बने छेद में पाया गया।
- **रव हिर्श (Rav Hirsch):** दिन में चोरी करना सामान्यतः असंभव होता है, इसलिए "बिमखतेरेट" विशेष रूप से रात के समय की स्थिति को दर्शाता है।

**उदाहरण:** यदि कोई चोर आधी रात को दीवार में छेद करके घर में घुसता है और पकड़े जाने पर संभावित हिंसा कर सकता है, तो उस स्थिति में उसे रोकने के लिए घातक उपाय उचित समझा जाएगा।

---

## 2. "एन लो डामिम" (אֱנָלֶוּ דָמִימָה) — उस पर खून का दोष नहीं

- **राशी:** चोर को जीवित मनुष्य के समान नहीं माना जाता जब वह सेंध लगा रहा हो; उसे मृत समान समझा जाता है।

- **शाड़ाल (Shadal):** हत्या करने वाले पर कोई दोष नहीं होता क्योंकि चोर खुद अपनी जान जोखिम में डाल चुका है।
- **इब्र एजरा (Ibn Ezra):** हत्या करने वाले पर खून का दोष नहीं लगता क्योंकि वह आत्मरक्षा में काम कर रहा होता है।

**उदाहरण:** यदि एक गृहस्वामी अचानक रात को किसी को अपने घर में सेंध लगाते देखे, और उसे रोकने के प्रयास में चोर मारा जाए, तो गृहस्वामी निर्दोष माना जाएगा।

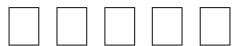
---

### 3. "यदि सूर्य चोर पर उदित हो" – दिन में मारना

- यदि स्पष्ट रूप से यह दिखता है कि चोर किसी की जान नहीं लेना चाहता, जैसे दिन में, तो उसे मारना हत्या कहलाएगा।
- **रव हिर्श:** "सूर्य का चोर पर उदय होना" का अर्थ है परिस्थितियाँ ऐसी हैं कि चोर जानलेवा खतरा नहीं बन रहा।

**उदाहरण:** यदि कोई चोर दिन के उजाले में चोरी करते पकड़ा जाए और वह भागने की कोशिश करे, तो उसे मारना हत्या माना जाएगा और मारने वाले पर दोष लगेगा।

---



- आज के मसीही चर्च में यह पद सिखाता है कि आत्मरक्षा का सिद्धांत सही परिस्थितियों में नैतिक रूप से स्वीकार्य है।
  
  
  
  
  
- प्रभु यीशु मसीह ने भी आत्मरक्षा के अधिकार को नकारा नहीं, बल्कि सिखाया कि जीवन की पवित्रता सर्वोच्च है ("जो तलवार उठाएगा, तलवार से नष्ट होगा" – मत्ती 26:52)।
  
  
  
  
  
- परंतु यीशु ने यह भी सिखाया कि बदला लेने की बजाय प्रेम, क्षमा और शांति की राह अपनानी चाहिए।
  
  
  
  
  
- अतः मसीही विश्वासी परिस्थिति देखकर निर्णय करते हैं: जहाँ जान का सीधा खतरा हो, आत्मरक्षा उचित है; अन्यथा, प्रेम और क्षमा का मार्ग अपनाना चाहिए।

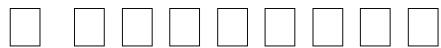


हे परमेश्वर, हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम में, हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप हमें विवेक प्रदान करें, कि हम संकट की घड़ी में साहस के साथ सही निर्णय ले सकें। जैसे यीशु ने क्रूस पर क्षमा और प्रेम दिखाया, वैसा ही प्रेम और क्षमा हम अपने जीवन में

प्रदर्शित कर सकें।

हे प्रभु, हमें हिंसा से दूर रखें, और हमारी आत्मा को सुरक्षा और शांति का प्रकाश दीजिए।  
 हमारा विश्वास सदा आपके संरक्षण पर टिका रहे।  
 यीशु मसीह के नाम में प्रार्थना करते हैं। आमीन।

---



- निर्गमन 22:1-2 में आत्मरक्षा के सिद्धांत की पुष्टि होती है, विशेषतः उस स्थिति में जब जान का खतरा हो।
- चोर को मारने का दोष तब नहीं माना जाता जब वह रात में सेंध लगाकर प्रवेश कर रहा हो और जान का खतरा बना हो।
- लेकिन यदि चोर दिन में पकड़ा जाए और खतरा स्पष्ट रूप से न हो, तो उसे मारना हत्या के दोष के अंतर्गत आएगा।
- रब्बियों ने इसे "Roddef" (पीछा करने वाला जो जान लेने की कोशिश करता है) के सिद्धांत से जोड़ा है।
- आज के मसीही चर्च में यह पद हमें आत्मरक्षा और शांति दोनों के बीच संतुलन सिखाता है।
- प्रभु यीशु का प्रेम, क्षमा और विवेकपूर्ण निर्णय आज भी हमारे आचरण का मार्गदर्शन

करता है।

## निर्गमन 22:2 (Exodus 22:2) - बाइबल पद हिंदी

में

निर्गमन

22:2

”यदि चोर सेंध लगाते समय पकड़ा जाए और मारा जाए, तो उसके खून का दोष उस पर नहीं लगाया जाएगा।”

---

## सरल शब्दों में हिंदी में अर्थ

इस पद में यह कहा गया है कि यदि कोई व्यक्ति रात के समय चोरी करते पकड़ा जाता है और उस समय गृहस्वामी द्वारा मारा जाता है, तो गृहस्वामी पर हत्या का दोष नहीं लगेगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि रात में अंदेशा रहता है कि चोर गृहस्वामी या परिवार पर जानलेवा हमला कर सकता है। इसलिए अपनी रक्षा में यदि चोर मारा जाए, तो गृहस्वामी निर्दोष समझा जाएगा।

परन्तु, यदि यह घटना दिन के उजाले में होती है (जैसा कि अगले पद में कहा गया है), तो हत्या का दोष लगेगा, क्योंकि दिन में खतरे का स्तर कम माना जाता है और चोर को बिना मारे भी रोका जा सकता था।

---

# रब्बियों ने क्या कहा - उदाहरणों के साथ

1. **शब्द "אֵלֶּה שְׁמָשׁ עַל־מִזְבֵּחַ"** (यदि सूर्य उस पर चमक गया) के बारे में:

- **साधारण अर्थ (Literal Meaning):**

कई रब्बी इस वाक्यांश को सीधे "दिन का समय" मानते हैं। अर्थात् यदि दिन में चोरी करते पकड़ा गया चोर मारा जाए तो हत्या का दोष लगेगा, क्योंकि दिन में जान का खतरा कम रहता है।

- **राशी (Rashi) की व्याख्या:**

राशी कहते हैं कि "यदि सूर्य उस पर चमक गया" का अर्थ है कि जैसे सूर्य सबके लिए शांति और स्पष्टता लाता है, वैसे ही यदि यह स्पष्ट है कि चोर जानलेवा इरादे से नहीं आया, तो उसे मारना हत्या कहलाएगा।

**उदाहरण:** अगर एक पिता अपने पुत्र के घर चोरी करने द्युसे, तो स्वाभाविक है कि वह अपने पुत्र को मारने नहीं आया है। अतः पुत्र यदि पिता को मार दे तो वह हत्या के दोषी होगा।

- **तलमूद (Gemara) की समझः**

तलमूद में यह विचार भी आता है कि "सूर्य का चमकना" यह संकेत देता है कि यदि यह "साफ" है कि चोर जान से मारने के लिए आया है, तो उसे मारना उचित होगा। यदि संदेह है कि वह जान नहीं लेगा, तो उसे मारना अनुचित होगा।

- **ओन्केलोस (Onkelos) की टीका:**

ओन्केलोस इस वाक्यांश को "यदि उस पर गवाहों की दृष्टि पड़ी" के रूप में अनुवाद करते हैं। अर्थात् यदि गवाहों की उपस्थिति है, तो चोर जान से मारने की संभावना कम होती है, इसलिए उसे मारना हत्या कहलाएगा।

**उदाहरण:** यदि गवाह मौजूद हैं, और चोर जानता है कि उसे पहचान लिया गया है, तो वह मरने-मारने पर नहीं उतरेगा।

- **रम्बान (Ramban) और शडाल (Shadal):**

रम्बान और शडाल बताते हैं कि गवाहों की उपस्थिति होने पर व्यक्ति पर कानून द्वारा कार्रवाई होनी चाहिए, न कि अपने हाथों से न्याय करना चाहिए।

---

## आज के मसीही चर्च में इसका क्या महत्व है

आज के मसीही चर्च में इस पद का शाब्दिक अनुपालन नहीं होता, क्योंकि यीशु मसीह ने व्यवस्था को पूरा किया और नई वाचा स्थापित की (मत्ती 5:17)। फिर भी इस पद के पीछे के सिद्धांत आज भी महत्वपूर्ण हैं:

- **न्याय और प्रतिपूर्ति का सिद्धांत (Justice and Restitution):**

किसी के द्वारा किए गए अपराध के लिए उचित दंड और हानि की भरपाई जरूरी है।

- **जीवन की पवित्रता (Sanctity of Life):**

जब तक जान का सीधा खतरा न हो, किसी को मारना अनुचित है। मसीही दृष्टिकोण से,

**जान बचाना सर्वोच्च प्राथमिकता है।**

- **स्वयं बदला लेने के बजाय कानून का पालन करना:**

प्रभु यीशु ने सिखाया कि व्यक्तिगत प्रतिशोध के बजाय प्रेम, क्षमा और कानून द्वारा न्याय की प्रक्रिया को प्राथमिकता दें।

- **जैसे ज़कर्कई का उदाहरण (लूका 19:1-10):**

ज़कर्कई ने जब यीशु से मुलाकात की, तो उसने अपनी चोरी का चार गुना लौटाया। इस प्रकार मसीह के साथ मुलाकात से उसके जीवन में आत्मिक और नैतिक परिवर्तन आया। यही आज चर्च में शिक्षा दी जाती है - अपराधियों का हृदय परिवर्तन और पुनर्स्थापन।

## **प्रभु यीशु मसीह के जीवन से जुड़ी एक प्रार्थना**

हे स्वर्गीय पिता,

आपके वचन के लिए धन्यवाद, जो हमें न्याय, दया और जीवन की पवित्रता सिखाता है। हे प्रभु यीशु, आपने हमें सिखाया कि हम अपने शत्रुओं से भी प्रेम करें और दुष्ट के सामने प्रतिशोध न लें। आपने ज़कर्कई जैसे पापियों को बदलने की शक्ति दिखाई। हम प्रार्थना करते हैं कि जब हम अन्याय का सामना करें, तो हम बुद्धिमानी और संयम के साथ कार्य करें।

हमें अपनी संपत्ति की रक्षा करने का विवेक दें, परंतु कभी भी क्रोध या भय में आकर अनावश्यक हिंसान करें।

जिन्होंने हमें नुकसान पहुँचाया है, उनके लिए भी हमें क्षमा और पुनर्स्थापन का मार्ग दिखाइए। हमें न्याय के साथ दया करनेवाले और प्रेम में दृढ़ बने रहने वाला बनाइए। हमारे जीवनों में आपके प्रेम और न्याय का प्रकाश चमकता रहे। यीशु मसीह के नाम में प्रार्थना करते हैं। आमीन।

---

## निष्कर्ष

**निर्गमन 22:2** हमें सिखाता है कि परिस्थिति के अनुसार न्याय और प्रतिक्रिया में भेदभाव करना चाहिए। रात्रि में चोरी करते पकड़े गए चोर को मारना आत्मरक्षा के अंतर्गत हो सकता है, परन्तु दिन में ऐसा करना हत्या कहलाएगा। रब्बियों ने इस वचन की गहन व्याख्या की है – कभी इसे समय के प्रकाश के प्रतीक के रूप में, कभी चोर के इरादों की स्पष्टता के प्रतीक के रूप में। आज के मसीही चर्च में इस सिद्धांत को जीवन की पवित्रता, न्याय की महत्ता, और आत्मिक पुनर्स्थापन के दृष्टिकोण से समझा जाता है। यीशु मसीह ने प्रेम, क्षमा, और आंतरिक परिवर्तन का मार्ग दिखाया, जो हमें अपराधियों और पापियों के लिए भी करुणा रखने की प्रेरणा देता है।

जो हाँ, अब मैं आपकी बातों को क्रम से पूरी तरह हिंदी में, आपके अनुरोध के अनुसार सम्मानपूर्वक प्रस्तुत कर रहा हूँ:

## निर्गमन 22:3 – हिंदी में बाइबल

### पद

”यदि चोरी किया हुआ पशु उसके हाथ में जीवित पाया जाए, चाहे बैल हो, चाहे गदहा हो, चाहे भेड़ हो, तो वह उसका दूना भरपाई करे।”

(निर्गमन 22:3, हिंदी ओवरी – ऑल इंडिया बाइबिल सोसाइटी अनुवाद)

## आयत का सरल हिंदी में विवरण

यह आयत चोरी के न्याय और दंड के सिद्धांत को बताती है। यदि कोई चोर पकड़ा जाता है और चुराया गया पशु (बैल, गदहा या भेड़) उसके पास जीवित पाया जाता है, तो उसे चोरी के पशु की कीमत का दोगुना लौटाना पड़ता है।

- यदि पशु मारा गया होता या बेच दिया गया होता, तो उसे चार या पाँच गुना भरपाई करनी पड़ती (जैसे निर्गमन 22:1 में बताया गया है)।
  
  
- लेकिन यदि पशु सही सलामत उसके पास मिलता है, तो सजा हल्की होती है – केवल दो गुना।

यह व्यवस्था न्याय, क्षतिपूर्ति (restitution) और चोर को सुधारने के सिद्धांत को दर्शाती है।

---

## रब्बियों की व्याख्याएँ और

### उदाहरण

#### 1. "उसके हाथ में जीवित पाया जाए" (ב'ז / מ"ג) — मतलब क्या है?

- "हाथ में" का अर्थ केवल शाब्दिक 'हाथ' नहीं, बल्कि उसके अधिकार क्षेत्र (possession) में होना है – जैसे उसकी जेब, घर, आँगन, इत्यादि।
- अगर जानवर उसके पास जीवित मिलता है, मतलब उसने उसे न तो मारा, न बेचा – तो दोहरा दंड देना है।

#### उदाहरण:

अगर कोई व्यक्ति एक भेड़ चुराता है और वह भेड़ उसके घर में जीवित मिलती है, तो उसे मालिक को दो भेड़ों का मूल्य देना होगा।

---

#### 2. "बैल, गदहा या भेड़" क्यों विशेष उल्लेख?

- ये केवल उदाहरण हैं। रब्बियों ने समझाया कि यह सिद्धांत सभी चल संपत्ति (movable property) पर लागू होता है – जैसे कपड़े, बर्तन, जेवर आदि भी।
  
- भूमि (जमीन), गुलाम, या दस्तावेज़ पर यह कानून लागू नहीं होता क्योंकि वे स्थायी संपत्ति माने जाते हैं।

#### **उदाहरण:**

यदि किसी ने सोने का हार चुराया, और वह जीवित (अर्थात् बरकरार) मिला, तो उसे भी दोहरा मूल्य लौटाना होगा।

---

### **3. "जीवित" का गहरा अर्थ क्या है?**

- **सरल अर्थ:** जानवर ज़िंदा होना चाहिए।
  
- **गहरा अर्थ:** चुराते समय जानवर जैसे था (स्वस्थ, मोटा), उसी हालत के अनुसार कीमत चुकानी होगी।
  - यदि चोरी के बाद जानवर कमज़ोर हो गया, तो भी चोर को पूरा मूल्य देना होगा।

#### **उदाहरण:**

अगर चुराई गई भेड़ चोरी के समय 10,000 रुपये की थी लेकिन पकड़ते समय कमज़ोर होकर 5,000 रुपये की हो गई, तो चोर को 20,000 रुपये (दोगुना) देना होगा, न कि कमज़ोर हालत का

मूल्य।

## 4. "दूना भरपाई" (Double Payment) क्यों?

रबियों ने कई कारण बताएः

- **न्याय का सिद्धांतः** चोरी का अपराध सिर्फ क्षति नहीं, भरोसे का भी उल्लंघन है।
- **दंड और सुधारः** चोर को उसकी गलती का अहसास हो।
- **आत्मिक कारणः** चोर यह सोचता है कि "ऊपर आँख" (ईश्वर) नहीं देख रही है - इसलिए उसे कड़ा दंड दिया जाता है।
- **आदर्श शिक्षाः** चोरी के प्रति सख्त रवैया रखना समाज में अन्याय रोकता है।

## आज के मसीही चर्च में इसका

### महत्व

आज के चर्च में इस पद से हमें कई महत्वपूर्ण शिक्षाएँ मिलती हैं:

- **न्याय और दया का संतुलनः** परमेश्वर दंड भी देता है और सुधरने का अवसर भी।

- **ईमानदारी का मूल्य:** जो चीजें हमने गलत तरीके से प्राप्त की हैं, उनकी भरपाई हमें पूरी करनी चाहिए (मत्ती 5:23-24; लूका 19:8 में जक्कई का उदाहरण)।
  - **आत्मिक शिक्षा:** गुप्त पाप भी परमेश्वर के सामने प्रकट हैं। हमें अपने कार्यों में न केवल मनुष्यों से, बल्कि परमेश्वर से भी डरना चाहिए।
  - **सच्चा पश्चाताप और बहाली:** यदि हम सच्चे दिल से अपने अपराधों को स्वीकार करते हैं और उचित भरपाई करते हैं, तो परमेश्वर क्षमा करता है।
- 

## प्रभु यीशु मसीह के जीवन से

### प्रेरित एक प्रार्थना

हे स्वर्गीय पिता,  
आपके पुत्र प्रभु यीशु मसीह के नाम में मैं आता हूँ।  
जैसे यीशु ने हमें सिखाया कि सच्चा पश्चाताप केवल शब्दों से नहीं, बल्कि कार्यों से भी होता है, वैसे ही मेरी भी सहायता करें कि यदि मैंने किसी के साथ अन्याय किया है तो मैं उसे सुधार सकूँ।  
मेरे जीवन से चोरी, छल, कपट दूर करें और मुझे सच्चे हृदय वाला, ईमानदार और न्यायप्रिय बनाएं।

**यीशु मसीह के समान, जो हर बात में सत्य और प्रेम में चलते थे, मुझे भी वैसा चलना सिखाइए।**

मैं अपने सभी छुपे पापों से पश्चाताप करता हूँ और आपसे शुद्ध जीवन माँगता हूँ।  
**यीशु के नाम से प्रार्थना करता हूँ, आमीन।**

---

## **निष्कर्ष**

**निर्गमन 22:3** हमें सिखाता है कि चोरी केवल भौतिक नुकसान नहीं, बल्कि नैतिक और आध्यात्मिक

उल्लंघन	भी	है।	
---------	----	-----	--

यदि चुराया गया वस्तु जीवित अवस्था में मिलती है, तो दोगुना भरपाई करना न्याय का हिस्सा है।

रब्बियों ने इसे केवल कानूनी नियम नहीं, बल्कि आत्मिक शिक्षा के रूप में भी प्रस्तुत किया है।

मसीही जीवन में भी यह सिद्धांत हमें ईमानदारी, पश्चाताप, और परमेश्वर के भय में जीवन बिताने की शिक्षा देता है।

**प्रभु यीशु मसीह के जीवन से हम सीखते हैं कि सच्चा पश्चाताप केवल दिल से नहीं, बल्कि कार्यों से भी प्रकट होना चाहिए।**

---

P240 Ex.22:4 On the law of a judgment for damage caused by a beast

---

## **निर्गमन 22:4 (Exodus 22:4) - हिंदी में**

# बाइबल पद

**निर्गमन 22:4 (Hindi Bible Verse):**

“यदि कोई व्यक्ति अपने पशुओं को छोड़ दे और वे किसी अन्य के खेत या  
दाख की बारी में चर जाएं, तो वह अपने सबसे अच्छे खेत और अपनी सबसे  
अच्छी दाख की बारी से उसकी क्षतिपूर्ति करेगा।”

(निर्गमन 22:4 - सामान्य हिंदी अनुवाद)

## निर्गमन 22:4 का हिंदी में सरल व्याख्या

### (Explanation)

यह पद बताता है कि यदि किसी व्यक्ति के पशु, चाहे जानबूझकर या लापरवाही से, दूसरे व्यक्ति  
के खेत या बग़ीचे में जाकर फसल खा जाएं या उसे नष्ट कर दें, तो उस व्यक्ति (पशु के मालिक)  
को इस नुकसान की भरपाई करनी होगी।

भरपाई केवल सामान्य गुणवत्ता से नहीं, बल्कि उसके स्वयं के सबसे अच्छे खेत और सबसे  
अच्छी दाख की बारी से करनी होगी।

इससे यह सिखाया जाता है कि अपने कार्यों और अपने पशुओं की निगरानी की जिम्मेदारी  
व्यक्ति पर होती है।

# रब्बियों की टिप्पणियां और उनकी

## व्याख्याएं (Rabbinic

### Interpretations)

यहाँ रब्बी परंपराओं के अनुसार मुख्य बिंदु दिए गए हैं – उदाहरणों के साथ:

#### 1. हानि के प्रकार: पैर (לֶגֶר - Regel) और दांत (שֵׁן - Shen)

"उसने पशु भेजा" (הַלְא) – पशुओं द्वारा पैरों से राँदना।

"और चर लिया" (רָבָע) – पशुओं द्वारा दांत से खाना।

#### उदाहरण:

अगर आपकी गाय लापरवाही से दूसरे के खेत में चली गई और पैर से अनाज कुचल दिया – तो

यह "पैर से हानि" (Regel) है।

अगर आपकी भेड़ अंगूर खा गई – तो यह "दांत से हानि" (Shen) है।

उत्तरदायित्वः दोनों ही स्थितियों में मालिक को भरपाई करनी होगी।

#### 2. हानि की स्थिति: दूसरे के निजी खेत में (בשדה אחרה - In another's field)

- रब्बी रशी (Rashi) बताते हैं कि यदि नुकसान निजी संपत्ति में हुआ है, तब ही पूर्ण भरपाई करनी होगी।
- यदि सार्वजनिक स्थान (जैसे सड़क) पर कोई फल खा लिया गया, तो केवल उस लाभ के लिए भुगतान होगा जो पशु ने प्राप्त किया।

### **उदाहरण:**

अगर आपकी भेड़ सड़क पर पड़ी घास खा गई, तो आपसे बस घास का मूल्य वसूल किया जाएगा – पूरा नुकसान नहीं।

---

### **3. भरपाई कैसे करें: सर्वश्रेष्ठ गुणवत्ता से (בֶּטִיחַת - Meitav)**

- भुगतान मालिक की सबसे अच्छी जमीन से करना चाहिए।
- मकसद:
  - दूसरों को नुकसान पहुँचाने से रोकना।
  - न्याय करना कि पीड़ित को बेहतरीन मुआवजा मिले।

### **उदाहरण:**

अगर आपकी सबसे अच्छी खेत की कीमत ₹ 1000 प्रति बीघा है और औसत खेत की कीमत ₹ 700 है, तो भी आप ₹ 1000 वाली जमीन से ही नुकसान का मूल्य चुकाएंगे।

- चल संपत्ति से भुगतान:

- अगर पैसे या जानवर देकर भरपाई हो रही हो तो "सर्वश्रेष्ठ" की बाध्यता कम होती है। क्योंकि पैसे को कहीं भी इस्तेमाल किया जा सकता है।
- 

#### 4. आध्यात्मिक और ऐतिहासिक दृष्टि (रब्बी अल्शेख - Alshekh)

- रब्बी अल्शेख इस भौतिक कानून को आध्यात्मिक शिक्षा से जोड़ते हैं।
- वे कहते हैं कि जैसे कोई अपने "खेत" (आत्मिक जीवन) को दुनियावी इच्छाओं ("पशु") के कारण खराब कर देता है, वैसे ही व्यक्ति को अपने जीवन के सर्वश्रेष्ठ कार्यों से क्षतिपूर्ति करनी होगी।
- साथ ही यह यूनानी निर्वासन (Greek Exile) के प्रतीक के रूप में भी देखा जाता है, जहाँ यहूदियों को उनकी आत्मिक भूमि खोनी पड़ी।

#### आध्यात्मिक उदाहरण:

अगर आप अपनी आत्मा को दुनियावी मोह में फँसा लेते हैं, तो आपको अपनी श्रेष्ठ आत्मिक गुणवत्ता (प्रार्थना, भक्ति) से क्षतिपूर्ति करनी होगी।

---

## आज के मसीही चर्च में इसका महत्व

# (Significance for Today's Christian Church)

आज भी मसीही चर्च इस सिद्धांत को नैतिक रूप से सिखाता है:

- **जिम्मेदारी लें:** आपके कार्यों से यदि किसी को नुकसान होता है, तो उसकी जिम्मेदारी आप पर है।
- **सर्वश्रेष्ठ देना:** क्षमा मांगते समय और सुधार करते समय केवल औपचारिकता नहीं, बल्कि अपने सर्वोत्तम प्रयास से करना चाहिए।
- **आत्मिक खेत की रक्षा:** यीशु मसीह ने भी सिखाया कि हमें अपने हृदय और आत्मा की रक्षा करनी चाहिए (मत्ती 13:3-9 - बीज बोने वाले का दृष्टांत)।

---

## प्रभु यीशु मसीह से संबंधित एक

### प्रार्थना (Prayer Related to Jesus

#### Christ's Life)

## प्रार्थना:

"हे प्रेमी यीशु मसीह,

आपने हमें सिखाया है कि हम अपने कार्यों के लिए उत्तरदायी हैं।

कृपया हमारी सहायता करें कि हम अपने जीवन रूपी खेत की रक्षा करें,

अपने कार्यों और शब्दों से दूसरों को हानि न पहुँचाएं।

यदि कभी हमारी लापरवाही से किसी का नुकसान हो,

तो हमें साहस दें कि हम अपनी सबसे अच्छी भलाई से उसकी भरपाई करें।

और हमें हमेशा याद दिलाइए कि हमारी आत्मा की भूमि आपके लिए सुरक्षित

और फलदायक बनी रहे।

आमीन।"

## निष्कर्ष (Conclusion)

- निर्गमन 22:4 हमें सिखाता है कि जब हमारी लापरवाही से दूसरों को हानि पहुँचती है, तो हमें न केवल उसकी भरपाई करनी है, बल्कि वह भी हमारे सर्वश्रेष्ठ से करनी है।
- रब्बी व्याख्याओं से यह स्पष्ट होता है कि "दांत" और "पैर" से हुई हानि के नियम भले अलग दिखें, पर जिम्मेदारी सदा मालिक पर है।
- आज के मसीही विश्वास में भी इसी सिद्धांत को आत्मिक जिम्मेदारी और प्रेम की शिक्षा के रूप में अपनाया जाता है।

- प्रभु यीशु मसीह ने भी अपने जीवन और शिक्षाओं द्वारा हमें सिखाया कि अपने से छोटे से छोटे नुकसान की भी भरपाई दिल से करनी चाहिए, न कि केवल औपचारिकता से।
- 

P241 Ex.22:5 On the law of a judgment for damage caused by a fire

□ □ □ □ □ □ :

### निर्गमन २२:५ (Exodus 22:5)

"यदि आग लगे और झाड़ियों में फैल जाए, और खलिहान, या खड़ी फसल, या  
खेत जल जाए, तो जिसने आग लगाई है उसे अवश्य पूरा भुगतान करना  
होगा।"

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □ :

इस पद में आग से होने वाले नुकसान के लिए एक महत्वपूर्ण नियम बताया गया है।

यदि कोई व्यक्ति आग जलाता है और वह आग अनजाने में फैलकर दूसरे के खेत, खलिहान या  
खड़ी फसल को जला देती है, तो वह व्यक्ति जो आग लगाने वाला है, पूरा हर्जाना चुकाने के  
लिए जिम्मेदार ठहराया जाएगा।

यह नियम इस बात पर ज़ोर देता है कि आपको न केवल अपने कार्यों के लिए, बल्कि उन

कार्यों से दूसरों को हुए नुकसान के लिए भी जिम्मेदार ठहराया जाएगा। आग भले ही अपने आप फैली हो, लेकिन चूंकि आपने उसे शुरू किया था, इसलिए उसकी पूरी जिम्मेदारी आपकी है।

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ :

## १. मूल अर्थ और उत्तरदायित्वः

आग जलाने वाले की जिम्मेदारी तय की गई है।

भले ही आग साधारण हवा (רָהַיְצָמָה) से फैली हो, फिर भी जिसने आग लगाई है वही

दोषी माना जाएगा।

"अगर आग भड़क उठे" (עַג אַזְתָּא) से स्पष्ट होता है कि आग फैलने का भी उत्तरदायित्व

आग जलाने वाले का ही है।

## २. नुकसान के प्रकार और वस्तुएँ:

- तीन मुख्य वस्तुओं का उल्लेख हुआ है:

- झाड़ियाँ (काँटे) - जल्दी जलने वाली चीजें।

- खलिहान (कटाई की गई फसल का टेर) - बड़ी संपत्ति का प्रतीक।

- खड़ी फसल - जो अब भी खेत में लगी हुई है।

- खेत - ज़मीन और मिट्टी तक का नुकसान।

राशी (Rashi) बताते हैं कि ज़मीन के जलने से खेत फिर से जोतना पड़ता है।

### ३. उत्तरदायित्व का प्रकार:

- रब्बी यहूदा नसीया ने सिखाया कि आग से नुकसान को "तीर" (Arrow) से किए नुकसान की तरह माना गया है।  
(जैसे तीर छोड़ने के बाद जो भी क्षति होती है, उसकी पूरी जिम्मेदारी तीर चलाने वाले की होती है।)
- आग को "मालिकाना संपत्ति" (Mamon) भी माना गया है, जिसे ठीक से सुरक्षित न रखने के कारण नुकसान होता है।  
इस आधार पर अगर आग ने छुपी चीज़ें भी जलाई (जैसे फसल के नीचे रखे बीज), तो भी कुछ मामलों में क्षतिपूर्ति करनी होगी।

### ४. आध्यात्मिक और रूपक अर्थ:

- यरूशलेम के मंदिर के विनाश को भी इस पद से जोड़ा गया है:

- जब मंदिर जलाया गया, तो यह माना गया कि परमेश्वर ने खुद आग लगाई,  
इसलिए वह खुद फिर से पुनःस्थापित करेगा।

- दुष्टों और धर्मियों का प्रतीक:

- इशाइयाँ दुष्ट लोगों का संकेत हैं (רִשְׁעִים)
- कटाई का टेर धर्मियों (צדיקים) का प्रतीक है।
- जब दुनिया में पाप फैलता है, तो सबसे पहले धर्मी लोगों को दुख सहना पड़ता है ताकि वे बाकी लोगों के लिए प्रायशिचित कर सकें।

- अंतिम उत्तरदायित्व:

- ओर हैचाईम (Or HaChaim) लिखते हैं कि जब आग (दंड) फैलती है, तो अंततः दोषी व्यक्ति (המבעים) - यानी पापी या शैतान - को दंडित किया जाएगा।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □ □ □ :

यद्यपि आज के चर्च में यह कानून लागू नहीं होता जैसे प्राचीन इज़राइल में था, फिर भी इसके सिद्धांत आज भी बहुत महत्वपूर्ण हैं:

## १. व्यक्तिगत जिम्मेदारी:

- प्रभु यीशु मसीह ने हमें सिखाया, "अपने पड़ोसी से वैसे ही प्रेम करो जैसे अपने आप से करते हो।" (मत्ती 22:39)
- इसका अर्थ है: आगर आपके किसी कार्य से दूसरे को हानि पहुँचे, तो उसकी जिम्मेदारी आपकी ही है।

## २. न्याय और पुनर्स्थापन (Restitution):

यदि आपसे गलती हो गई है और दूसरों को नुकसान पहुँचा है, तो आपको उसकी भरपाई करनी चाहिए। यही परमेश्वर का न्याय का तरीका है।

## ३. लापरवाही के गंभीर परिणाम:

- छोटी-सी लापरवाही (जैसे एक छोटी आग) भी बड़े नुकसान का कारण बन सकती है।
- पाप भी अक्सर इसी तरह छोटे रूप में शुरू होता है और फिर फैलता है।

## ४. आध्यात्मिक शिक्षा:

- जिस तरह आग फैलती है, उसी तरह संघर्ष, घृणा और पाप भी फैल सकते हैं।
- हमें चाहिए कि हम अपने कार्यों और शब्दों को बहुत ध्यान से चुनें ताकि किसी को ठेस न पहुँचे।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □ □ □ :

**हे स्वर्गीय पिता,**

आपके पुत्र यीशु मसीह के उदाहरण से हम सीखते हैं कि प्रेम, करुणा और उत्तरदायित्व हमारे

**जीवन के केंद्र में होने चाहिए।**

**हे प्रभु यीशु,**

जैसे आपने हर कार्य में सावधानी और दूसरों के कल्याण का ध्यान रखा, वैसे ही हमें भी सतर्क बनाइए।

हमें अपने कार्यों के संभावित प्रभाव को समझने की बुद्धि दीजिए।

जहाँ हमने लापरवाही से किसी को चोट पहुँचाई हो, वहाँ हमें विनप्रतापूर्वक अपनी गलती स्वीकार करने और क्षमा माँगने का साहस दीजिए।

हमें ऐसा बनाइए कि हम नफरत नहीं बल्कि प्रेम फैलाएँ; नुकसान नहीं बल्कि पुनर्स्थापन करें।

पवित्र आत्मा से भरकर हमें चलाइए ताकि हम आपके नाम की महिमा कर सकें।

**प्रभु यीशु मसीह के नाम में हम प्रार्थना करते हैं।**

**आमीन।**

□ □ □ □ □ □ □ □ :

**निर्गमन 22:5 सिर्फ एक पुरानी कानूनी व्यवस्था नहीं है, बल्कि यह आज भी आपके और मेरे जीवन के लिए गहरी नैतिक शिक्षा देता है।**

- यह हमें हमारी जिम्मेदारी और लापरवाही के गंभीर परिणामों की याद दिलाता है।
- यह हमें सिखाता है कि प्रेम, न्याय, और पुनर्स्थापन ईश्वर के दिल के मूल गुण हैं।
- प्रभु यीशु मसीह ने इस प्रकार की शिक्षाओं को अपने जीवन में पूर्णतः जीया और हमें भी वैसा ही जीवन जीने का आत्मान किया है।

इस पद को अपनाकर, आप एक ऐसे जीवन की ओर बढ़ सकते हैं जो दूसरों के लिए आशीष का स्रोत बने, और जो परमेश्वर की महिमा करे।

P242 Ex.22:6 - 8 On the law of an unpaid guardian

□ □ □ □ □ □ □ (□ □ □ □ □ □ □ 22:6) – Hindi Bible (ERV-HI):

**"यदि कोई मनुष्य अपने पड़ोसी को रूपया या बर्तन रखवाली के लिये सौंपे, और वह उस मनुष्य के घर से चोरी हो जाए, तो यदि चोर मिले, तो वह दुगना हरजाना भरे।"**

□ □ □ □ □ □ □ (Explanation in Hindi):

इस पद में एक "धरोहर (अमानत)" की बात की गई है – जब कोई व्यक्ति अपने पड़ोसी को

रुपया या कोई वस्तु रखवाली के लिए देता है। यह पड़ोसी बिना किसी भुगतान (unpaid guardian - शोमेर हिन्नाम) के उसकी देखरेख करता है।

यदि उस वस्तु की चोरी हो जाए, और चोर पकड़ा जाए, तो वही चोर उस वस्तु का दुगना मूल्य लौटाता है। इस नियम में दो मुख्य बातें हैं:

1. **असली ज़िम्मेदार चोर है, न कि वह व्यक्ति जिसने वस्तु की देखरेख की।**
  2. **यदि चोर नहीं पकड़ा जाता, तो अगले पदों (22:7-8) में बताया गया है कि उस रखवाले को शपथ लेकर यह साबित करना होगा कि उसने वस्तु का दुरुपयोग नहीं किया।**
- 

□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ (Rabbinic Commentary with Examples):

□ □□□□□ □□□□□□ (Unpaid Guardian):

रब्बी इस आयत को शोमेर हिन्नाम के संदर्भ में समझते हैं – वह जो बिना किसी वेतन के अमानत की रक्षा करता है।

□ Rashi (רashi):

राशी का मानना है कि "उसके घर से चोरी हो गई" केवल रखवाले का दावा है, न कि स्थापित तथ्य। इसलिए अगले पदों में शपथ का वर्णन किया गया है।

□ Ramban (רמבן):

रंबान इससे असहमत हैं और मानते हैं कि यह एक वास्तविक चोरी का वर्णन है। और यदि चोर पकड़ा जाए, तो वही दुगना हरजाना देता है।

□ Rav Hirsch (רַבּ הִירש):

वे इस बात पर बल देते हैं कि हिब्रू क्रिया "בְּגָזָה" (गुनेव) के व्याकरणिक रूप से स्पष्ट नहीं होता कि चोरी वास्तव में हुई है या नहीं – यह संदिग्ध स्थिति को दर्शाता है।

□ □□□□□:

- यदि किसी ने अपने पड़ोसी को 10,000 रुपये की धरोहर दी और वह चोरी हो गया, और चोर पकड़ा गया, तो चोर को 20,000 रुपये लौटाने होंगे।
- यदि चोर नहीं पकड़ा गया, तो पड़ोसी को यह साबित करना होगा कि उसने ईमानदारी से वस्तु की रक्षा की।

□ □□□□□ □ □ □□□:

यदि वह व्यक्ति केवल उस वस्तु को वैसे ही सुरक्षित रखता है जैसे वह अपनी चीज़ों को रखता है, और चोरी हो जाए, तो वह दोषी नहीं ठहराया जाएगा।

---

▲ □□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□□ (Christian Church Relevance Today):

मसीही परिप्रेक्ष्य में, यह पद हमें ईमानदारी, ज़िम्मेदारी, और विश्वास की शिक्षा देता है। प्रभु यीशु ने कहा:

**"यदि तुम दूसरे के माल में विश्वासयोग्य नहीं निकले, तो कौन तुम्हें तुम्हारा अपना धन साँपेगा?"** (लूका 16:12)

मसीही चर्च में इसे एक आत्मिक सिद्धांत की तरह देखा जाता है – जब परमेश्वर आपको कोई

जिम्मेदारी सौंपता है, तो वह अपेक्षा करता है कि आप उसमें ईमानदारी से कार्य करेंगे, भले ही आपको उसके लिए कुछ न मिले। यह पद यह भी दर्शाता है कि दोषी को ही दंड मिलना चाहिए, न कि निर्दोष को।

---

□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□  
□□□□□□□□:

**हे स्वर्गीय पिता,**

जैसे तूने अपने पुत्र यीशु मसीह को हमारी आत्माओं की रखवाली के लिए भेजा,  
वैसे ही हमें भी तू विश्वासयोग्य और निःस्वार्थ संरक्षक बना।

हमारे जीवन में जो ज़िम्मेदारियाँ और रिश्ते तूने हमें सांपे हैं,  
उन्हें हम पूरे ईमानदारी और प्रेम से निभाएँ।

यदि कोई चीज़ हमारे भरोसे रखी जाए,  
तो हम उसे तेरी इच्छा के अनुसार संभालें।

यदि हम पर कोई झूठा दोष लगाया जाए,  
तो हम भी यीशु के समान नम्रता और सत्य में स्थिर रहें।  
हम तेरे न्याय और अनुग्रह में भरोसा रखते हैं।  
यीशु के नाम में, आमीन।

---

□ □□□□□□ (Conclusion):

निर्गमन 22:6 यह सिखाता है कि:

- जब कोई व्यक्ति बिना लाभ के किसी चीज़ की रक्षा करता है, तो उस पर सीमित

**ज़िम्पेदारी होती है।**

- असली चोर पर ही दंड लागू होता है, और यदि चोर नहीं पकड़ा जाता, तो ईमानदार व्यक्ति को गलत साबित करने की कोशिश नहीं होनी चाहिए – बल्कि वह परमेश्वर के सामने शपथ लेकर अपनी सच्चाई सिद्ध कर सकता है।
  - यह पद न्याय, सच्चाई, और ईमानदारी की बुनियादी शिक्षा देता है, जो आज के मसीही जीवन और चर्च दोनों के लिए प्रासंगिक है।
- 

□ □□□□□ 22:7 — □□□□□ □□□□□□:

**"और यदि चोर न मिले, तो घर का मालिक न्यायियों के पास ले जाया जाए, और परमेश्वर के सामने शपथ खाकर कहे कि उसने अपने पड़ोसी की वस्तु पर अपना हाथ नहीं बढ़ाया था।"**

(Exodus 22:7 — Hindi Bible translation)

---

□ □□□□ □□□ □□□□□□□:

यह व्यवस्था उस स्थिति की है जब कोई व्यक्ति किसी की वस्तु (जैसे धन या बर्तन) उसकी सुरक्षा के लिए लेता है, और वह चोरी हो जाती है, पर चोर नहीं पकड़ा जाता। उस स्थिति में यह सिद्ध करने के लिए कि उस व्यक्ति (घर के मालिक या रखवाले) ने उस वस्तु का दुरुपयोग नहीं किया, उसे न्यायाधीशों के सामने जाकर परमेश्वर के नाम पर शपथ लेनी होती है। यदि वह सच्चा सिद्ध

होता है, तो वह जिम्मेदार नहीं ठहराया जाएगा। यह व्यवस्था प्राचीन इस्राएली न्याय प्रणाली में ईमानदारी, भरोसे और उत्तरदायित्व की सीमाओं को दर्शाती है।

---

□ □□□□□□□ □ □ □□□□□□□ (□□□□□□□ □□□):

- "שומר חינם" (Shomer Chinam) यानी **बिना वेतन वाला रखवाला** वह व्यक्ति है जिसके पास सामान रखा गया था।
  - यदि चोरी हो जाए और चोर न मिले, तो वह न्यायाधीशों के पास जाकर शपथ लेता है कि उसने वस्तु का दुरुपयोग नहीं किया।
  - **राशी (Rashi)** के अनुसार, शपथ का मुख्य बिंदु यह है कि उसने "अपना हाथ नहीं बढ़ाया" – यानी उसने उसे चुराया या इस्तेमाल नहीं किया।
  - **रम्बान (Ramban)** के अनुसार, यह शपथ की शर्त है – केवल तब वह छूट सकता है जब उसने पहले से वस्तु का उपयोग न किया हो। यदि उसने पहले ही उपयोग किया, तो उसकी जिम्मेदारी बनती है, चाहे चोरी किसी और ने की हो।
- 

▲ □□□□□ □□□□□□□ □□□ □□□□ □□□□□ (□□□□□□□ □□□  
□□□□□□□□, □□□□□ □□□□□ □ □ □□□□□□ □□□□):

आज की मसीही कलीसिया इस प्रकार की व्यवस्थाओं को ईमानदारी, उत्तरदायित्व, और विश्वास के प्रबंधन के उदाहरण के रूप में देख सकती है। यीशु मसीह ने भी विश्वास के मामलों में दिल की नीयत और ईमानदारी पर ज़ोर दिया था (मत्ती 5:37 – "तुम्हारा हाँ हाँ, और नहीं नहीं

हो")। यह आयत मसीही सिद्धांतों के साथ इस रूप में मेल खा सकती है कि एक विश्वासी को अपने पास रखी किसी वस्तु के लिए नैतिक रूप से जिम्मेदार और जवाबदेह होना चाहिए।

---

□ □□□ □□□ □ □ □□□ □ □ □□□□□ □□□□□□□ (□□□ □ □  
□□□□□□ □ □ □□□□□□):

**हे परमेश्वर,**

मैं आपके सामने सिर झुकाकर विनती करता हूँ कि मुझे उस प्रकार की ईमानदारी और जिम्मेदारी प्रदान करें जो आपके वचन में दिखती है।

जैसे आपने अपने पुत्र यीशु मसीह को हमें सच्चाई और विश्वास का मार्ग दिखाने भेजा, वैसे ही मुझे भी सिखाइए कि मैं जो भी अपने पास रखूँ - चाहे वह किसी का विश्वास हो या किसी की वस्तु - मैं उसे पूर्ण ईमानदारी से संभालूँ।

हे प्रभु, जब मुझसे गलती हो, तब मुझे स्वीकार करने का साहस दीजिए, और जब मैं सही होऊँ, तब मुझे आपकी सच्चाई में स्थिर बनाए रखिए।

यह प्रार्थना मैं यीशु मसीह के नाम में करता हूँ। आमीन।

---

□ □□□□□ 22:8 – □□□□ □□□ □□□□□□ □□

**"यदि चोर न पाया जाए, तो घर का स्वामी न्याय के सामने लाया जाए, कि उसने अपने पड़ोसी की वस्तु पर हाथ नहीं बढ़ाया है।"**

---

□ □□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□□□□

यह पद उन स्थितियों को संबोधित करता है जहाँ कोई व्यक्ति अपने पड़ोसी की वस्तु की

देखभाल के लिए जिम्मेदार होता है, और वह वस्तु चोरी हो जाती है। यदि चोर नहीं पाया जाता, तो संदेह होता है कि कहीं वस्तु की देखभाल करने वाले ने ही उसे चुराया तो नहीं। ऐसे में, उस व्यक्ति को न्याय के सामने लाया जाता है, जहाँ वह शपथ लेकर यह प्रमाणित करता है कि उसने अपने पड़ोसी की वस्तु पर हाथ नहीं बढ़ाया। यदि न्यायालय उसे दोषी पाता है, तो उसे दोगुना प्रतिदान देना होता है।

---

□ □□□□ □□□□□□□□ □ □ □□□□□

### 1. "कि वह कहे, 'यह वही है'" (*הא א' כ'*)

- आंशिक स्वीकारोक्ति (*מואדה במציאות*): यहूदी कानून में, यदि कोई व्यक्ति किसी दावे का आंशिक रूप से स्वीकार करता है, तो उसे शपथ लेनी पड़ती है। उदाहरण के लिए, यदि कोई कहता है, "मैंने 100 में से 50 लिए हैं," तो उसे शपथ लेकर यह साबित करना होता है कि उसने शेष 50 नहीं लिए।

### 2. न्यायालय की भूमिका (*עד האלים יבא דבר שנייהם*):

- यह वाक्यांश दर्शाता है कि विवादों को न्यायालय में लाया जाना चाहिए, जहाँ न्यायाधीश साक्ष्यों के आधार पर निर्णय लेते हैं। यदि कोई दोषी पाया जाता है, तो उसे दोगुना प्रतिदान देना होता है।

### 3. उदाहरण:

- यदि एक व्यक्ति अपने पड़ोसी को एक भेड़ की देखभाल के लिए देता है, और

वह भेड़ चोरी हो जाती है, तो यदि चोर नहीं पाया जाता, तो देखभाल करने वाले को न्यायालय में यह साबित करना होता है कि उसने चोरी नहीं की। यदि वह दोषी पाया जाता है, तो उसे दो भेड़ों का प्रतिदान देना होता है।

---

□ □□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□

मसीही परंपरा में, यह पद ईमानदारी, जिम्मेदारी, और न्याय के सिद्धांतों को रेखांकित करता है। यह सिखाता है कि हमें दूसरों की संपत्ति की देखभाल ईमानदारी से करनी चाहिए और किसी भी हानि की स्थिति में उत्तरदायी होना चाहिए।

---

□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□

**हे प्रभु यीशु मसीह,**

हमें सत्यनिष्ठा और ईमानदारी के मार्ग पर चलने की शक्ति दें।

हमें दूसरों की संपत्ति की देखभाल जिम्मेदारी से करने की बुद्धि दें।

जब हम पर संदेह किया जाए, तो हमें सत्य के साथ खड़े रहने का साहस दें।

आपके नाम में हम प्रार्थना करते हैं। आमीन।

---

□ □□□□□□

निर्गमन 22:8 हमें सिखाता है कि हमें दूसरों की संपत्ति की देखभाल ईमानदारी और जिम्मेदारी

से करनी चाहिए। यदि कोई विवाद उत्पन्न होता है, तो न्यायालय के माध्यम से सत्य की खोज की जानी चाहिए। यह पद हमें न्याय, ईमानदारी, और उत्तरदायित्व के महत्वपूर्ण सिद्धांतों की याद दिलाता है, जो आज भी हमारे जीवन में प्रासंगिक हैं।

---

P243 Ex.22:9 - 12 On the law of a paid guardian

## **1. बाइबल पद (Exodus 22:9) - हिंदी में अनुवाद:**

**निर्गमन 22:9** (कुछ हिंदी अनुवादों में यह पद 22:10 के अंतर्गत आता है):

“यदि कोई अपने पड़ोसी को गधा, बैल, भेड़, या कोई और पशु रखने को दे, और वह मर जाए, या घायल हो जाए, या बन्धुआई में चला जाए, और कोई देखनेवाला न हो।”

---

## **2. बाइबल पद की हिंदी में व्याख्या:**

इस पद में उस स्थिति को समझाया गया है जब एक व्यक्ति किसी पशु (जैसे गधा, बैल, भेड़) को अपने पड़ोसी को रखने (संभालने) के लिए देता है। यह पड़ोसी एक रखवाला होता है – जिसे भाड़े पर नियुक्त किया गया हो सकता है (paid bailee).

यह पद उस परिस्थिति को बताता है जहाँ:

- पशु मर जाता है,
- घायल हो जाता है,
- या किसी ने जबरन उसे बंधक बना लिया हो (जैसे डाकू या लुटेरे ले गए हों),
- और घटना के समय कोई प्रत्यक्षदर्शी नहीं होता (הא לא – "कोई देखनेवाला नहीं").

इसका मतलब है कि यह घटना छिपी हुई है, और सत्य जानने का कोई बाहरी प्रमाण नहीं है। ऐसे में, न्याय के लिए भरोसा उस व्यक्ति की ईमानदारी की शपथ पर रखा जाता है – कि वह सच कह रहा है और उसने लापरवाही नहीं की।

---

### 3. रब्बियों की व्याख्या (Rabbinic

#### Commentaries):

□ □□□ □□ □□□□□?

यह पद शोमेर सखर (שומר שׁוּר) यानी भाड़ का रखवाला के विषय में है।

पिछले पदों (Exodus 22:6-8) में निःशुल्क रखवाले (שומר חורב) का वर्णन है।

□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□:

1. "मर गया" (גמ) - प्राकृतिक मृत्यु या दुर्घटना।

2. "घायल हुआ" (רַבְשָׁנָה) - जानवर को गंभीर चोट लगी, संभवतः गिरने से या किसी जानवर के हमले से।

3. "बंधक बना लिया गया" (הַבְשָׁנָה) - बलपूर्वक छीन लिया गया, जैसे डाकुओं द्वारा।

ये तीनों घटनाएं अनिवार्य आपदा (אִוְנֶסִין – onessin) मानी जाती हैं, यानी ऐसी स्थितियाँ जिन पर रखवाले का कोई नियंत्रण नहीं होता।

□ “कोई देखनेवाला नहीं” (הַאֲרָא | אִאָ) का महत्त्व:

- यदि कोई साक्षी नहीं है, तो रखवाले को ईश्वर के सामने शपथ लेकर खुद को निर्दोष सिद्ध करना होता है।
- यदि साक्षी मौजूद होते, तो शपथ की आवश्यकता नहीं होती, बल्कि गवाहों की गवाही दी जाती।

□ □ □ □ □ □ □ :

1. अगर किसी व्यक्ति ने गधे की देखभाल के लिए पैसे लिए और वह गधा रात को मर गया, तो कोई साक्षी न होने की स्थिति में वह शपथ लेकर खुद को निर्दोष बता सकता है।
2. यदि किसी चरवाहे का देखरेख किया गया बैल किसी खड़े में गिरकर घायल हो गया, और उस समय कोई और वहाँ नहीं था – तो वह शपथ लेकर छूट सकता है।

3. यदि लुटेरे जानवर को ले गए, और कोई देखनेवाला नहीं था, तो रखवाला शपथ से छूट सकता है।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □  
□ □ □ □ □ □ □ :

अगर रखवाले ने जानवर को अपने निजी काम के लिए उपयोग किया (जिसे “अपना हाथ बढ़ाना” - יד יַלְש – कहा गया है), और फिर वह मरा या घायल हुआ — तो वह दोषी माना जाएगा।

यदि घटना ऐसी जगह पर हुई जहाँ गवाह मौजूद हो सकते थे, और वह उन्हें लाने में असफल रहा, तो उसकी शपथ पर्याप्त नहीं मानी जाएगी।

#### **4. मसीही चर्च में आज इसका महत्व:**

हालांकि आज के मसीही चर्च में यह पद सीधे तौर पर चर्चा में नहीं आता, लेकिन इसके पीछे के सिद्धांत बहुत ही प्रासंगिक हैं:

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □  
**(Stewardship):**

यह पद हमें सिखाता है कि यदि हमें किसी चीज़ की जिम्मेदारी दी जाती है – चाहे वह संपत्ति हो या लोग – तो हमें उसका ईमानदारी से ख्याल रखना चाहिए। मसीहियत में हम सब ईश्वर के भण्डारी (stewards) माने जाते हैं।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

### **□ □ □ (Integrity in secret):**

“कोई देखनेवाला नहीं” – यह पंक्ति हमें याद दिलाती है कि हमारी ईमानदारी परमेश्वर के सामने होनी चाहिए, चाहे कोई मनुष्य देख रहा हो या नहीं।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ (Shepherding):

यहाँ पशुओं का ज़िक्र है – जो बाइबल में अक्सर लोगों के प्रतीक होते हैं। यीशु मसीह को “अच्छा चरवाहा” कहा गया है, जो अपनी भेड़ों के लिए जान देता है। उसी तरह से, हमें दूसरों की देखभाल, नेतृत्व और सेवा करनी चाहिए।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ (Compassion & Justice):

ईश्वर न्यायप्रिय है, लेकिन वह दयालु भी है – जैसे इस पद में एक निर्दोष रखवाले को केवल शपथ से छूट दी जाती है।

---

## **5. प्रार्थना – प्रभु यीशु मसीह के**

### **जीवन से संबंधित:**

**प्रभु यीशु की तरह एक अच्छा रखवाला बनने की प्रार्थना:**

□ हे स्वर्गीय पिता,

आपने हमें जो कुछ भी सौंपा है – समय, संसाधन, परिवार, कलीसिया – हम उसके लिए आपके आगे उत्तरदायी हैं।

जैसे आपने अपने पुत्र यीशु मसीह को हमारे जीवन का चरवाहा बनाकर भेजा, जिसने अपने इंद्र की रक्षा के लिए अपना जीवन दिया, वैसे ही हमें भी सच्चाई, दया और ईमानदारी से अपनी जिम्मेदारियाँ निभाने की बुद्धि और सामर्थ्य दें।

जब कोई देख न रहा हो, तब भी हमें आपकी आँखों के सामने चलने की इच्छा दें।

हमें अनुशासित, न्यायप्रिय और विश्वसनीय सेवक बनाइए।

जब हम असमर्थ हों, तब हमें आपकी कृपा में विश्राम करना सिखाइए।

यह प्रार्थना हम प्रभु यीशु मसीह के नाम से माँगते हैं।

**आमीन।**

---

## 6. निष्कर्षः

**निर्गमन 22:9** एक न्यायिक दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण पद है, जो भाड़े के रखवाले की जिम्मेदारी और छूट के नियमों को स्पष्ट करता है।

जब रखवाले की ओर से लापरवाही नहीं होती और घटना का कोई गवाह नहीं होता, तो ईश्वर के सामने शपथ उसे निर्दोष ठहराने का माध्यम बनती है।

इसका आध्यात्मिक सन्देश यह है कि ईमानदारी, ज़िम्मेदारी, और सेवा भावना – ये सब गुण प्रभु यीशु मसीह के जीवन से मेल खाते हैं। आज के मसीही चर्च में यह पद हमें याद दिलाता है कि हम सब ईश्वर के साँपे हुए जीवन और लोगों के प्रति जवाबदेह हैं।

---

**निर्गमन 22:10 का हिंदी में बाइबल पद (Hindi Bible - Hindi O.V. version):**

### **निर्गमन 22:10-11**

”यदि कोई अपने पड़ोसी को गधा वा बैल वा भेड़ वा और कोई पशु इसलिये साँपे  
कि वह उसकी रखवाली करे, और वह मर जाए वा लंगड़ा हो जाए वा कोई उसको ले  
जाए, और कोई देखनेवाला न हो,

---

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □ :

यह व्यवस्था उस स्थिति को दर्शाती है जब कोई व्यक्ति किसी जानवर को अपने पड़ोसी को  
सुरक्षित रखने के लिए देता है - जैसे कि गधा, बैल, भेड़ या अन्य पशु - और वह पशु मर जाता है,  
घायल हो जाता है या कोई उसे चुरा लेता है, **बिना किसी गवाह के।**

इस स्थिति में:

- यदि रखवाले ने उसका उपयोग अपने स्वार्थ के लिए नहीं किया है, और पशु  
प्राकृतिक कारणों से मर गया, घायल हो गया या छीन लिया गया है,
  
  
  
- तो वह व्यक्ति ”यहोवा की शपथ“ खाता है कि उसने कुछ गलत नहीं किया,
  
  
  
- और पशु का मालिक उस शपथ को स्वीकार करेगा,
  
  
  
- और रखवाले से कुछ नहीं मांगेगा, यानी कोई हर्जाना या भरपाई नहीं होगी।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

## 1. "यदि उसने हाथ नहीं बढ़ाया" का अर्थ:

- **राशी (Rashi):** यदि किसी ने रखवाली करते समय जानवर का अपने लाभ के लिए उपयोग किया (जैसे उस पर सवारी की या उससे कोई काम करवाया), और फिर वह मर गया, तो वह दोषी माना जाएगा, क्योंकि उसने "हाथ बढ़ाया"।
- **रब्बीनू बाह्या:** "हाथ बढ़ाने" का मतलब है उस वस्तु का स्वार्थी प्रयोग करना - जैसे पशु का या किसी बर्तन का प्रयोग।
- तलमूद में बहस होती है: क्या रखवाले की ज़िम्मेदारी केवल तब बनती है जब उसने वस्तु को नुकसान पहुंचाया हो? जवाब: नहीं, सिर्फ उसका उपयोग भी उसे उत्तरदायी बनाता है, भले ही कोई हानि न हुई हो।

## 2. "यहोवा की शपथ उनके बीच होगी":

- **टोरा तमीमा (Torah Temimah):** "उनके बीच" से यह सिखाया गया कि यह केवल उन्हीं दोनों (रखवाला और मालिक) के बीच का मामला है।  
न्यायालय जबरन शपथ नहीं दिलाता; यह नैतिक स्तर पर आधारित है।
- **हर्श (Rav Hirsch):** यदि शपथ झूठी हो, तो दोष रखवाले पर है; और अगर सच्ची हो, तो

यह दिखाता है कि मालिक को सही व्यक्ति को चुनने में सावधानी रखनी चाहिए थी।

### **3. "और वह कुछ नहीं चुकाए":**

- **शडल (Shadal):** यदि जानवर मर गया है, मालिक केवल उसका शव ले सकता है। यदि जानवर गायब है, तो शपथ स्वीकारनी होगी।
  
- **गुर आर्यः:** यह वेतन पाने वाले रखवाले (paid keeper) की बात है। यदि चोरी हो जाए, तो उसे हजारना देना होगा; लेकिन अगर दुर्घटनावश हानि हो, और उसने उपयोग नहीं किया था, तो वह शपथ खाकर मुक्त हो सकता है।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ :

यद्यपि मसीही चर्च आज इस पद की कानूनी व्यवस्था को सीधे लागू नहीं करता, फिर भी इसके सिद्धांत आज भी उपयोगी हैं:

### **1. भरोसे और ज़िम्मेदारी का सिद्धांतः**

यह पद सिखाता है कि जब किसी को कुछ सौंपा जाता है, तो वह ईमानदारी और ज़िम्मेदारी से उसे संभाले। यीशु ने भी विश्वासयोग सेवक की प्रशंसा की (मत्ती 25:21)।

### **2. सच्चाई और शपथः**

यीशु ने कहा: "तुम्हारा हाँ हाँ, और नहीं नहीं हो" (मत्ती 5:37)। इसका मतलब है कि मसीही विश्वासी की सच्चाई इतनी स्पष्ट होनी चाहिए कि शपथ की ज़रूरत न पड़े।

### **3. परमेश्वर साक्षी है:**

यह पद दिखाता है कि परमेश्वर सब कुछ जानता है - यहां तक कि जब कोई गवाह न हो, तब भी।

यही शिक्षा हमें यीशु के जीवन में भी मिलती है - वे हृदय की बातों को जानते थे (यूहन्ना 2:24-25)।

---

□ □ □ □ □ □ □ □ : □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □ □

**हे स्वर्गीय पिता,**

आपने हमें अपनी सच्चाई और विश्वासयोग्यता के साथ जीवन जीने का बुलावा दिया है।

जैसे यीशु मसीह हर बात में निष्ठावान और ईमानदार थे, वैसे ही हमें भी बनाइए।

जब हमें दूसरों की संपत्ति, समय, या जिम्मेदारियाँ सौंपी जाएं,

तब हम उन्हें आपकी तरह संभालें - प्रेम, ज़िम्मेदारी, और सच्चाई के साथ।

हमें वह साहस दीजिए कि जब हम निर्दोष हों, तब भी हम सच बोलें,

और जब गलती हो, तो उसे स्वीकार करें।

हमारी "हाँ" सच्ची हो और "ना" ईमानदार हो, ताकि हम बिना शपथ के भी विश्वास के योग्य हों।

हमें ऐसा मन दीजिए जो सच्चाई से भरा हो,

और जीवन ऐसा जो आपकी गवाही हो - न्याय, करुणा, और विश्वास का।

यीशु मसीह के नाम में प्रार्थना करते हैं,  
आमीन।

---

✓ □ □ □ □ □ □ :

**निर्गमन 22:10-11** एक न्यायिक सिद्धांत है जो यह सिखाता है कि:

- जब हमें किसी की चीज़ दी जाती है,
- और हम उसका स्वार्थ में उपयोग नहीं करते,
- और यदि कुछ नुकसान अनजाने में हो जाता है,
- तो हम परमेश्वर के सामने सत्य बोलकर उत्तरदायित्व से मुक्त हो सकते हैं।

रब्बियों ने इस कानून को बहुत गहराई से समझाया - विशेष रूप से शपथ, विश्वास, और उपयोग की सीमाओं को लेकर।

आज के मसीही जीवन में, यह पद हमें सिखाता है कि:

- हमें ईमानदार, उत्तरदायी और भरोसेमंद बनना है,
  - क्योंकि हमारा हर काम परमेश्वर की दृष्टि में है।
-

## 1. बाइबल पद हिंदी में (Exodus 22:12)

### निर्गमन 22:12 (Hindi Bible -ERV)

”और यदि चोर पकड़ा नहीं गया, तो उसे (संभालने वाले को) परमेश्वर के सामने यह शपथ लेनी होगी कि उसने अपने पड़ोसी की वस्तु पर हाथ नहीं बढ़ाया है।”

---

## 2. पद की व्याख्या हिंदी में

यह पद उस व्यवस्था का भाग है जो इसाएलियों के बीच न्याय और उत्तरदायित्व की बात करती है। संदर्भ यह है कि कोई व्यक्ति अपने पड़ोसी की वस्तु – जैसे कोई जानवर – कुछ समय के लिए उसकी देखभाल के लिए लेता है। यदि वह वस्तु चोरी हो जाती है और चोर नहीं पाया जाता, तो देखभाल करने वाला व्यक्ति परमेश्वर के नाम पर शपथ लेता है कि उसने चोरी नहीं की है या लापरवाही नहीं की। यदि उसकी शपथ को स्वीकार कर लिया जाता है, तो उसे मुआवज़ा नहीं देना पड़ता।

**मुख्य बातें इस पद से:**

- अगर चोरी हुई और चोर नहीं मिला,
- और अगर देखभाल करने वाला ईमानदारी से शपथ लेता है कि उसने कुछ गलत नहीं किया,
- तो उसे मुआवज़ा नहीं देना होगा।

- यह व्यवस्था विश्वास, न्याय, और सत्यवादिता पर आधारित है।
- 

### **3. रब्बियों की व्याख्याएँ (Rabbinic Views with Examples)**

#### **(1) चुकता करने की ज़िम्मेदारी किसकी?**

Bekhor Shor, Reggio, Cassuto, Steinsaltz, Malbim, Shadal जैसे रब्बियों ने इस बात को स्वीकार किया है कि:

- अगर कोई शुल्क लेकर वस्तु की रखवाली करता है (shomer sakhar), और वस्तु चोरी हो जाती है, तो उसे मुआवज़ा देना होगा।

- क्योंकि उसे उसकी सेवा के लिए भुगतान मिला था, उसकी ज़िम्मेदारी बनती है कि वह वस्तु की रक्षा करता।

□ **उदाहरणः**यदि कोई व्यक्ति किसी का बैल देखभाल के लिए लेता है और उसे उसका भुगतान मिलता है, और फिर बैल चोरी हो जाता है – तो यह रब्बियों के अनुसार उसकी ज़िम्मेदारी बनती है कि वह बैल की कीमत चुकाए।

#### **(2) "בְּגַנְגַּב" (ganav yigganev) — दोहराव क्यों?**

रब्बी Rav Hirsch, Torah Temimah, Malbim बताते हैं:

- यह दोहराव सामान्य चोरी से अधिक घटनाओं को शामिल करने के लिए है जैसे कि

## चुपचाप खो जाना (avedah)।

- यह बताता है कि चोरी केवल चोर द्वारा ही नहीं, बल्कि किसी भी अनदेखी घटना से भी हो सकती है, और रखवाले को सावधान रहना चाहिए।

□ **उदाहरण:** अगर जानवर खुद ही भाग गया, और यह घटना बिना देखे हुई – रब्बी हिरश के अनुसार इसे भी चोरी माना जा सकता है, क्योंकि रखवाले की अनुपस्थिति में यह हुआ।

### (3) "אִמְמָה" (मीम्मो) – 'उससे' का अर्थ क्या है?

**Malbim और Torah Temimah** बताते हैं:

- यह शब्द उस अवस्था को दर्शाता है जहां वस्तु किसी के अधिकार में होते हुए चोरी हुई।
- अगर वस्तु किसी मुख्य चरवाहे (noqed) के पास थी, तो वह उत्तरदायी है।
- पर यदि वह कनिष्ठ सहायक (tzo'er) को साँप दी गई थी, तो उसे ज़िम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता।

□ **उदाहरण:** यदि बैल मुख्य चौकीदार के पास था और चोरी हो गया, तो वही ज़िम्मेदार होगा, ना कि वह युवा सहायक जिसे उसने ज़िम्मेदारी दी थी।

## 4. मसीही चर्च में इसका आज क्या महत्व है?

हालाँकि यह व्यवस्था यहूदी कानून से संबंधित है, परंतु मसीही चर्च में इसके नैतिक सिद्धांत आज भी महत्वपूर्ण हैं:

- **ईमानदारी और उत्तरदायित्वः** यीशु ने सिखाया कि छोटे कार्यों में विश्वासयोग्य होना ही बड़े कार्यों के लिए योग्य बनाता है (लूका 16:10)।
  - ध्यान रखना कि जो दिया गया है, वह प्रभु की ओर से है, चाहे वह धन हो, समय हो, या अन्य की वस्तु। विश्वासयोग्य रहना मसीही जीवन का हिस्सा है।
  - यीशु मसीह को खुद एक सच्चा चरवाहा कहा गया है (यूहन्ना 10:11), जो अपनी भेड़ों के लिए प्राण देता है – यह जिम्मेदारी की चरम मिसाल है।
- 

## 5. यीशु मसीह के जीवन से प्रेरित प्रार्थना

**प्रार्थना:**

हे स्वर्गीय पिता,

हम आपके सामने अपने हृदय खोलते हैं। आपने हमें जीवन में कई वस्तुओं और लोगों की देखभाल का ज़िम्मा सौंपा है।

प्रभु यीशु मसीह, आपने एक सच्चे और विश्वासयोग्य रखवाले के रूप में अपने प्राण हमारे लिए दे दिए।

हम भी चाहते हैं कि जो कुछ भी आपने हमें सौंपा है, हम उसकी ज़िम्मेदारी से देखभाल करें।

हमें सदैव ईमानदारी से चलने की सामर्थ्य दें – चाहे हम कार्यस्थल में हों, घर में, या चर्च में।

जब हम असफल हों, तब हमें सत्य स्वीकार करने और सुधार करने की विनम्रता दें।

हमें ऐसा जीवन जीने दें जो आपकी सच्चाई और विश्वासयोग्यता को दर्शाए।

यीशु मसीह के नाम में हम यह प्रार्थना करते हैं,

**\*\*आमीन।\*\***

---

## 6. निष्कर्ष

निर्गमन 22:12 एक गहरी और न्याय आधारित व्यवस्था प्रस्तुत करता है जहाँ विश्वास और जिम्मेदारी को सर्वोपरि माना गया है।

रब्बी इसे शुल्क पाने वाले रखवाले (shomer sakhar) की ज़िम्मेदारी बताते हैं, खासकर चोरी या गायब होने की स्थिति में।

शब्दों की गहराई — "בְּנֵי גַּג" और "לִמְעָם" — यह दर्शाती है कि यह केवल शारीरिक चोरी नहीं, बल्कि विश्वास की चोरी और लापरवाही के विरुद्ध भी चेतावनी है।

आज के मसीही जीवन में, यह पद हमें सिखाता है कि हम जो कुछ प्रभु से पाते हैं, उसकी रखवाली ईमानदारी, निष्ठा और जिम्मेदारी से करें, जैसा कि यीशु मसीह ने किया।

---

□ □□□□□ 22:14 (□□□□□ □□□□□ -

### Hindi Bible Version):

"यदि कोई अपने पड़ोसी से कोई पशु उधार ले, और वह घायल हो जाए, या मर जाए, और उसका स्वामी उसके संग न हो, तो वह उसकी पूरी क्षतिपूर्ति करेगा।"

(English: "If a man borrows anything from his neighbour, and it is injured or dies, the owner not being with it, he shall surely make restitution." - Exodus 22:14)

---

□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□□□:

यह पद बताता है कि यदि कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति से कोई वस्तु (जैसे बैल, गधा, उपकरण आदि) उधार ले और वह वस्तु क्षतिग्रस्त हो जाए या मर जाए, और उस समय उसका मालिक वहाँ उपस्थित न हो, तो उधार लेने वाले को पूरा हर्जाना देना होगा।

यह नियम इस बात को स्पष्ट करता है कि जब कोई कुछ उधार लेता है और पूरा लाभ उसे ही मिलता है, तो वह उसके प्रति पूरी जिम्मेदारी भी लेता है—even अगर नुकसान अनजाने में हुआ हो।

---

□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□

### (Rabbinic Explanations):

1. **उधारकर्ता** (שׂואל – Sho'el) की जिम्मेदारी सबसे ज्यादा होती है, क्योंकि वह पूरे लाभ का भागी होता है और कुछ भुगतान नहीं करता।
  
  
  
2. यदि वस्तु का नुकसान स्वाभाविक रूप से (जैसे दुर्घटना, मौत, टूटना) हुआ हो, तब भी वह जिम्मेदार होता है।

3. "उसका स्वामी उसके संग न हो" का अर्थ केवल शारीरिक उपस्थिति नहीं, बल्कि यहूदी परंपरा के अनुसार यह देखा जाता है कि क्या मालिक उस समय उधार लेने वाले के लिए कार्य कर रहा था। यदि मालिक किसी भी रूप में उधारकर्ता की सेवा में था, तो उधारकर्ता दोषमुक्त होता है। इसे कहते हैं "שא'alah b'be'alim" (Sha'alah b'be'alim)।

□ □ □ □ □ :

- रियूबेन ने शिमोन से बैल उधार लिया। यदि शिमोन उस समय रियूबेन के लिए पानी ला रहा था, तो यह माना जाएगा कि वह "उसके संग" था, और यदि बैल मर गया, तो रियूबेन को हजारा नहीं देना होगा।
- लेकिन यदि शिमोन उस समय कोई सेवा नहीं दे रहा था, और बैल मर गया, तो रियूबेन को हजारा देना होगा।

4. **राव हिर्श (Rav Hirsch)** कहते हैं कि यह नियम न्याय के गहरे सिद्धांत को दर्शाता है – जब मालिक स्वयं सेवक के रूप में पहले से कार्यरत होता है, तब उस पर विशेष जिम्मेदारी डालना उचित नहीं।

5. **Malbim** और **Torah Temimah** यह भी स्पष्ट करते हैं कि "पड़ोसी से" (העර מעם) शब्द यह दर्शाता है कि उधार की प्रक्रिया मालिक की संपत्ति से अलग होने के बाद शुरू होती है, तभी जिम्मेदारी आरंभ होती है।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ :

**मसीही दृष्टिकोण में यह पद हमें उत्तरदायित्व और भरोसे की शिक्षा देता है:**

- जब हमें कोई चीज़ साँपी जाती है – चाहे वह धन, संसाधन, या कोई आत्मिक जिम्मेदारी – हम उसके लिए उत्तरदायी होते हैं।
  - प्रभु यीशु ने स्वयं बताया कि जो छोटी बातों में विश्वासयोग्य है, वही बड़ी बातों में भी विश्वासयोग्य होगा (लूका 16:10)।
  - यह पद हमें स्मरण कराता है कि जो कुछ हमें परमेश्वर से "उधार" मिला है – जैसे जीवन, अवसर, सेवकाई – उसके प्रति हमें पूरी ईमानदारी और जवाबदेही से चलना है।
- 

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □ □ □ :

**"हे स्वर्गीय पिता,**

जिस प्रकार तेरे पुत्र यीशु मसीह ने प्रत्येक बात में भरोसेमंद और उत्तरदायी होकर अपना जीवन

अर्पित किया,

वैसे ही मुझे भी तू ऐसी आत्मा दे कि मैं जो कुछ तू मुझे साँपे – वह धन, समय, या तेरी सेवकाई – उसमें मैं पूरी जिम्मेदारी निभा सकूँ।

यदि तू किसी को मेरी देखभाल में दे, तो मैं उसे तेरे भय और प्रेम से सँभाल सकूँ।

मुझे ऐसे सेवक का हृदय दे जो अपने मालिक की अनुपस्थिति में भी वफादार बना रहे।

यीशु के नाम में,  
आमीन।”

---

□ □ □ □ □ □ □ □ (Conclusion):

**निर्गमन 22:14** यह सिखाता है कि जब कोई वस्तु उधार ली जाती है, तो उधारकर्ता उसकी पूरी जिम्मेदारी लेता है, विशेषकर यदि मालिक उस समय उसके साथ नहीं है। यह नियम हमें विश्वास, उत्तरदायित्व और सेवा की भावना सिखाता है। यहूदी परंपरा में यह कानून गहराई से समझाया गया है कि यदि मालिक उस समय उधारकर्ता की सेवा में है, तो उधारकर्ता दोषमुक्त है। मसीही विश्वास में यह सिद्धांत हमें प्रभु द्वारा दिए गए कार्यों और संसाधनों के प्रति हमारी जिम्मेदारी को समझने में सहायता करता है। प्रभु यीशु स्वयं उत्तरदायित्व और भक्ति का उत्तम उदाहरण हैं।

---

P245 Le.25:15 On the law of buying and selling

## 1. निर्गमन 22:15 – हिंदी अनुवाद

”यदि कोई अपने पड़ोसी से कोई वस्तु उधार ले, और वह क्षतिग्रस्त हो जाए या मर जाए, जबकि उसका स्वामी उसके साथ न हो, तो वह उसका पूरा मुआवजा देगा।”

---

## 2. वचन का हिंदी में स्पष्टीकरण

यह वचन उधार लेने और देने के संदर्भ में जिम्मेदारी और जवाबदेही को स्पष्ट करता है:

- **उधारकर्ता की जिम्मेदारी:** यदि कोई व्यक्ति अपने पड़ोसी से कोई वस्तु (जैसे जानवर) उधार लेता है और वह वस्तु क्षतिग्रस्त हो जाती है या मर जाती है, जबकि उसका मालिक मौजूद नहीं है, तो उधारकर्ता को पूर्ण मुआवजा देना होता है।
  - **मालिक की उपस्थिति:** यदि मालिक उस समय मौजूद होता है, तो उधारकर्ता को मुआवजा नहीं देना पड़ता, क्योंकि मालिक की उपस्थिति यह दर्शाती है कि उसने जोखिम को स्वीकार किया है।
  - **किराए पर लेना:** यदि वस्तु किराए पर ली गई है, तो किराया उस जोखिम को कवर करता है, और उधारकर्ता को मुआवजा नहीं देना पड़ता।
- 

### 3. विभिन्न रबियों की व्याख्याएँ

रबियों ने इस वचन की विभिन्न व्याख्याएँ प्रस्तुत की हैं:

- **मालिक की उपस्थिति:** रबी रशी और अन्य टिप्पणीकारों के अनुसार, यदि मालिक उधार लेने के समय मौजूद था, तो उधारकर्ता को मुआवजा नहीं देना पड़ता, भले ही मालिक नुकसान के समय मौजूद न हो।
- **किराए पर लेना:** रबी रशी के अनुसार, यदि वस्तु किराए पर ली गई है, तो किराया उस जोखिम को कवर करता है, और उधारकर्ता को मुआवजा नहीं देना पड़ता।

- **नैतिक शिक्षा:** रब्बी मैथू हेनरी के अनुसार, यह वचन हमें सिखाता है कि हमें न केवल जानबूझकर किए गए कार्यों के लिए, बल्कि अनजाने में हुई गलतियों के लिए भी जिम्मेदार ठहराया जा सकता है।
- 

## 4. आज के मसीही चर्च में इसका

### महत्व

हालांकि यह वचन प्राचीन इस्राएल के नागरिक कानून का हिस्सा है, इसके सिद्धांत आज भी मसीही जीवन में प्रासंगिक हैं:

- **जिम्मेदारी और जवाबदेही:** यह वचन हमें सिखाता है कि हमें दूसरों की संपत्ति के प्रति जिम्मेदार होना चाहिए।
  - **प्रबंधन (Stewardship):** हम जो कुछ भी उपयोग करते हैं, वह परमेश्वर का है, और हमें उसका सही प्रबंधन करना चाहिए।
  - **ईमानदारी और न्याय:** यह वचन हमें ईमानदारी और न्याय के साथ जीवन जीने की प्रेरणा देता है।
- 

## 5. प्रभु यीशु मसीह के जीवन से

## संबंधित एक प्रार्थना

हे हमारे स्वर्गीय पिता,

हम आपके सामने आते हैं, जो सभी चीजों के परम स्वामी हैं। आपने हमें जीवन, आत्मा और वह सब कुछ सौंपा है जो हमारे पास है। हम मानते हैं कि हम केवल प्रबंधक हैं, और एक दिन आपको उस सब के लिए हिसाब देना होगा जो आपने हमें दिया है।

हम प्रभु यीशु मसीह के जीवन पर विचार करते हैं, जो आपके प्रति पूर्ण रूप से आज्ञाकारी रहे और आपके संसाधनों का पूर्ण निष्ठा के साथ प्रबंधन किया। उन्होंने हमें सिखाया कि आपके प्रति वफादार रहना और हमें सौंपी गई छोटी से छोटी चीजों में भी विश्वसनीय होना कितना महत्वपूर्ण है (लूका 16:10)। यीशु ने स्वयं को हमारे लिए त्याग दिया, सबसे बड़ा बलिदान किया, भले ही हम आपके साथ रहते हुए आपकी संपत्ति (हमारे जीवन और आत्माओं) को नुकसान पहुँचाते रहे। उन्होंने हमारी जवाबदेही स्वयं पर ले ली।

पिता, हम अक्सर लापरवाही करते हैं - हमारी आत्माओं, हमारे रिश्तों, उन जिम्मेदारियों के प्रति जो आपने हमें सौंपी हैं। हम दूसरों के संसाधनों के साथ लापरवाह हो सकते हैं। हमें क्षमा करें, हे प्रभु।

हम प्रार्थना करते हैं कि आप हमें अपने जीवन के बेहतर प्रबंधक बनने में मदद करें। हमें दूसरों के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को पहचानने में मदद करें, चाहे हम उधारकर्ता हों, किराएदार हों, या केवल उनकी संपत्ति के साथ बातचीत कर रहे हों। हमें सावधानी, सम्मान और निष्ठा के साथ कार्य करने की बुद्धि दें।

हमें याद दिलाएं कि आप हमेशा हमारे साथ हैं, हमारी हर क्रिया को देख रहे हैं, और अंततः हम

आपको जवाबदेह होंगे। आपकी उपस्थिति से हमें प्रोत्साहन और चुनौती मिले - प्रोत्साहन कि हम अकेले नहीं हैं, और चुनौती कि हमें आपके मानकों के अनुसार जीना चाहिए।

यीशु के नाम पर जिसने हमारे लिए स्वयं को दे दिया और हमें यह सब सिखाया।

आमीन।

---

## 6. निष्कर्ष

निर्गमन 22:15 हमें सिखाता है कि हमें दूसरों की संपत्ति के प्रति जिम्मेदार और जवाबदेह होना चाहिए। यह वचन हमें ईमानदारी, न्याय, और प्रबंधन के सिद्धांतों को अपनाने की प्रेरणा देता है। प्रभु यीशु मसीह के जीवन से हम सीखते हैं कि हमें अपने कार्यों के लिए जवाबदेह होना चाहिए और दूसरों के प्रति प्रेम और सम्मान दिखाना चाहिए।

---

P246 Ex.22:8 On the law of litigants

यह रहा निर्गमन 22:7 का सम्पूर्ण अध्ययन, जिसमें बाइबल पद, उसका हिन्दी में अर्थ, यहूदी रब्बी व्याख्याएं, मसीही दृष्टिकोण, यीशु मसीह से संबंधित प्रार्थना, और निष्कर्ष शामिल हैं:

---

□ □□□□ □□ (□□□□□□□

### 22:8) – Hindi Bible (ERV-HIN):

”यदि कोई अपने पड़ोसी को रूपया या माल रक्षित करने के लिये दे और वह घर से चुरा

**लिया जाए, तो यदि चोर पकड़ा जाए, तो वह दोहरा भरपाई करे।”**

- यह पद कृष्ट अनुवादों में 22:6 के रूप में दिखता है, जबकि हिन्दू में यह 22:7 है।
- 

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □ :

जब कोई व्यक्ति अपने पड़ोसी को अपना धन या सामान सुरक्षा के लिए सौंपता है और वह चोरी हो जाता है:

- यदि चोर मिल जाता है – चोर को पकड़ा जाए – तो वह दोगुना वापस देगा।
  - यह नियम न्याय और उत्तरदायित्व की स्थापना करता है – यदि चोरी साबित हो जाए, तो चोर को कठोर दंड मिलेगा।
  - परंतु अगर चोर नहीं मिलता, तो अगले पद (निर्गमन 22:8) में आगे की प्रक्रिया बताई गई है – यानी उस व्यक्ति को न्यायाधीशों के सामने अपनी निर्दोषता की शपथ खानी होगी।
- 

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ :

यह पद न्याय व्यवस्था की नींव बनाता है जहाँ संपत्ति की ज़िम्मेदारी और चोरी के मामलों में न्यायिक जांच की प्रक्रिया दिखाई जाती है।

❖ □□□□□□□□ □□ □□□□□□

□□□□□□□□□□:

### 1. "यदि चोर मिल जाए, तो वह दोगुना देगा" (ישלח שניהם):

- यह सिद्धांत "כף" (Kefel) कहलाता है – चोरी करने पर सामान्य दंड से दो गुना जुमाना।
- रशी (Rashi): चोर को पकड़ने का मतलब है कि गवाह या प्रमाण से वह पकड़ में आया हो। यह केवल पकड़े जाने तक सीमित नहीं, बल्कि दोष सिद्ध होना ज़रूरी है।

### 2. यह दोगुना दंड क्यों?

- यह चोरी को गंभीर अपराध बताता है जो केवल संपत्ति ही नहीं, समाजिक भरोसे को भी चोट पहुँचाता है।
- म्बाम (Maimonides) के अनुसार, यह दोगुनी भरपाई केवल तभी लागू होती है जब चोरी स्पष्ट रूप से साबित हो जाए और न्यायालय उसे दोषी ठहराए।

### 3. "चीज़ को रखवाले के पास छोड़ना":

- यदि चोरी उसके पास रहते हुए हुई, तो सवाल उठता है – क्या रखवाले ने इमानदारी से चीज़ की रक्षा की?
- यदि चोर नहीं मिला, तो रखवाले को यह साबित करना होता है कि उसने जान-

**बूझकर वस्तु का गलत उपयोग नहीं किया।**

#### 4. Talmud (Bava Metzia 93b):

- यदि रखवाले ने वस्तु का निजी उपयोग किया, तो वह "शोएल" (उधारकर्ता) जैसा समझा जाएगा और चोरी की ज़िम्मेदारी उसकी होगी।
- 

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ :

#### 1. सच्चाई और जवाबदेही की शिक्षा:

- यह पद ईमानदारी, भरोसेमंदी और दूसरों की संपत्ति की सुरक्षा की ज़िम्मेदारी सिखाता है।
- यीशु मसीह ने कहा:  
"जो थोड़े में विश्वासयोग्य है, वह बहुत में भी विश्वासयोग्य है।" (लूका 16:10)

#### 2. न्याय और अनुग्रह का संतुलन:

- जहां यहूदी व्यवस्था में दोगुना दंड है, वहीं मसीही विश्वास में पश्चाताप और क्षमा को प्राथमिकता दी जाती है, परंतु ईमानदारी की अपेक्षा बनी रहती है।

#### 3. विश्वास के रखवाले:

- मसीही विश्वासी स्वयं को परमेश्वर के "संपत्ति के प्रबंधक" (**steward**) के रूप में देखते हैं, और उनसे भरोसे का ईमानदार निर्वाह अपेक्षित होता है।
- 

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ :

### **प्रार्थना:**

"हे स्वर्गीय पिता,

जैसे आपने मुझे दूसरों की चीज़ों और ज़िम्मेदारियों का रखवाला बनाया है, वैसे ही मुझे  
ईमानदारी, नम्रता और न्याय के साथ उन्हें निभाने की शक्ति दें।

हे प्रभु यीशु मसीह, आपने क्रूस पर हमारे पापों की सज़ा अपने ऊपर ले ली।  
आपके जीवन में हमने देखा कि आपने जो कुछ भी पिता से पाया, उसे पूरी सच्चाई और भक्ति  
से संभाला।

मुझे भी वैसी ही जवाबदेही और शुद्धता में चलने की बुद्धि और आत्मा दें।  
अगर मैं किसी चीज़ में गलत हो गया हूँ, तो मुझे पर्चाताप करने की और उसे सुधारने की  
हिम्मत दें।

मैं हर *entrusted* चीज़ को आपके भय और प्रेम में संभालना चाहता हूँ।  
यीशु मसीह के नाम में,  
आमीन।"

---

□ □ □ □ □ □ □ :

- निर्गमन 22:8 हमें सिखाता है कि जब किसी के पास कोई अमानत रखी जाती है, तो उसकी पूरी जिम्मेदारी उस पर होती है।
- न्याय व्यवस्था इस बात पर ज़ोर देती है कि चोरी साबित होने पर दो गुना दंड हो, जिससे समाज में न्याय बना रहे।
- रबी और तल्मूडिक व्याख्याएं इस नियम की गहराई और नैतिकता को उजागर करती हैं।
- मसीही दृष्टिकोण में यह पद हमें ईमानदारी, उत्तरदायित्व, और आत्मा की शुद्धता की ओर प्रेरित करता है।
- यीशु मसीह ने अपने जीवन में हमें यह दिखाया कि कैसे हर जिम्मेदारी को प्रेम और सत्य के साथ निभाना चाहिए।

P247 De.25:12 Save life of one pursued, even if need - kill oppressor

□ □ □ □ □ □ (□ □ □ □ □) — □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ 25:12

“तब तू उसका हाथ काट डाल; तेरी आँख उस पर दया न करे।”

(*Hindi Bible -ERV*)

यह पद उस स्थिति का वर्णन करता है जब एक स्त्री अपने पति को एक झगड़े से बचाने के लिए

हस्तक्षेप करती है और हमलावर के गुप्तांगों को पकड़ लेती है। इस पर व्यवस्था कहती है कि उसका हाथ काट दिया जाए और उस पर दया न की जाए।

---

□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□□□:

यह पद एक विशेष परिस्थिति के लिए है जहाँ दो पुरुष झगड़ रहे हों और उस झगड़े में एक पत्नी अपने पति को बचाने के लिए दुसरे पुरुष के गुप्तांगों को पकड़ लेती है। यह एक बहुत ही अपमानजनक और असामान्य कार्य माना गया है।

बाइबल का यह निर्देश प्रतीकात्मक या शाब्दिक रूप से लिया जा सकता है, लेकिन यहां यहां परंपराओं में इसे शाब्दिक नहीं बल्कि आर्थिक दंड (मुआवज़ा) के रूप में समझा गया है।

---

□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□:

✓1. □□□ (Rashi):

- “उसका हाथ काटना” वास्तव में शारीरिक दंड नहीं बल्कि शर्मिंदगी का मुआवज़ा देना है।
- दंड का निर्धारण उस व्यक्ति की सामाजिक स्थिति और शर्म की मात्रा के अनुसार किया जाता है।

✓2. □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□:

- उन्होंने इस पद को दूसरे पदों से जोड़ा जिसमें “तेरी आँख दया न करे” (לֹא תִחַז עִינֶיךָ) कहा गया है। यह वाक्यांश आमतौर पर वित्तीय दंड के संदर्भ में आता है।

- किञ्जुर बाल हतूरिम के अनुसार, “जेब” शब्द (०'७) और “हाथ काटना” एक संकेत है कि असली दंड पैसा देना है।

✓3. हामेक दावर (Haamek Davar):

- यदि स्त्री के पास कोई और तरीका नहीं था तो वह दंड से मुक्त हो सकती है।
- वह “उसके हाथ काट दो” को महिला की कमाई के स्रोत के रूप में देखता है, मतलब उसकी मजदूरी जब्त करना।

✓4. गरीब दावर:

”तेरी आँख दया न करे“ वाक्य गरीब स्त्री के संदर्भ में इस्तेमाल किया गया है। गरीब हो या अमीर, दया नहीं दिखाई जाए।

✓5. शाड़ाल दावर:

- उन्होंने इस कार्य को एक अनैतिक और अशोभनीय कार्य बताया क्योंकि इसे एक भली और शालीन स्त्री को नहीं करना चाहिए।
- शाड़ाल इसे एक धोखाधड़ी का कार्य मानते हैं और इसे बाद की आयतों (झूठे बाट, अमालेक का हमला) से जोड़ते हैं।

✓6. दोषी दावर:

- यदि स्त्री के पास कोई अन्य विकल्प नहीं था और यह अंतिम उपाय था, तो वह दोषी

**नहीं मानी जाती। यह सिद्धांत तलमूद (Bava Kamma 28a) से आता है।**

---

▲ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□?

- आज के मसीही चर्च में यह पद शब्दशः लागू नहीं होता, लेकिन इसे नैतिक सिद्धांतों और आत्मसंयम की शिक्षा के रूप में देखा जाता है।
- यह दर्शाता है कि:
  - **हिंसा या अपमानजनक साधनों का प्रयोग तब भी गलत है जब उद्देश्य सही हो।**
  - **उचित मार्ग से सहायता करना ज़रूरी है।**
  - **परमेश्वर न्यायी है, परन्तु वह मनुष्यों को संयम और सम्मानपूर्वक कार्य करने की सीख देता है।**

यह वचन “अंत उद्देश्य साधनों को सही नहीं ठहराता” की मसीही अवधारणा को दर्शाता है।

---

□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□:

**“हे प्रभु यीशु मसीह,**

आपने अपने जीवन में हर परिस्थिति में संयम और प्रेम का उदाहरण दिया।

हमें भी ऐसा मन दीजिए कि जब हम अपनों की रक्षा करें, तो न्याय और दया में

**संतुलन बनाए रखें।**

हमें ऐसे कोई कार्य न करने दीजिए जो किसी को अपमानित करे या आपकी पवित्रता को कलंकित करे।  
हमारे हृदय में आपकी तरह क्षमा, संयम और विवेक का भाव हो।  
आमीन।”

---

□ □ □ □ □ □ □ :

- व्यवस्थाविवरण 25:12 एक कठोर प्रतीत होने वाली व्यवस्था है, लेकिन यहां परंपराओं ने इसे शारीरिक दंड के स्थान पर आर्थिक दंड के रूप में समझा है।
- यह पद दर्शाता है कि नैतिकता, मर्यादा और न्याय की अपेक्षा हर कार्य में की जाती है— even जब उद्देश्य किसी की रक्षा करना हो।
- मसीही दृष्टिकोण में यह एक सिद्धांतात्मक सीख है कि किसी भी कार्य का तरीका परमेश्वर की दृष्टि में उतना ही महत्वपूर्ण है जितना उद्देश्य।
- प्रभु यीशु का जीवन हमें यह सिखाता है कि प्रेम और संयम से ही वास्तविक विजय मिलती है।

P248 Nu.27:8 On the law of inheritance

यह रहा गिनती 27:8 का पूरा अध्ययन — आपकी सभी बातों को क्रमशः और

गहराई से समाहित करते हुए:

---

#### ■ बाइबल पद (गिनती 27:8) - हिंदी में:

“और तुम इसाएलियों से यह भी कहो, कि यदि कोई पुरुष मर जाए और उसका पुत्र न हो, तो उसका भाग उसकी बेटी को दे देना।”

(गिनती 27:8, Hindi Bible)

---

#### ■ हिंदी में व्याख्या:

इस पद में परमेश्वर मूसा से कह रहे हैं कि यदि किसी पुरुष की मृत्यु हो जाए और उसके कोई पुत्र न हो, तो उसकी संपत्ति उसकी बेटी को दी जाए। यह आदेश तब आया जब सलोफहाद की बेटियों ने याचना की कि चूँकि उनके पिता का कोई पुत्र नहीं है, इसलिए उन्हें विरासत में हिस्सा दिया जाए। परमेश्वर ने उनकी बात को उचित माना और इसे एक स्थायी व्यवस्था बना दिया।

यह व्यवस्था बताती है कि परमेश्वर न्यायी और करुणामय हैं, और महिलाओं को भी उत्तराधिकार में सम्मानजनक स्थान देते हैं — एक क्रांतिकारी विचार उस समय के सामाजिक परिप्रेक्ष्य में।

---

#### ■ यहूदी रब्बीनिक व्याख्या (उदाहरणों सहित):

##### 1. वंशानुक्रम का क्रम:

यदि कोई पुरुष मर जाए और उसका पुत्र या पोता हो, तो वही वारिस होता है।

यदि कोई पुत्र न हो, तो बेटी को संपत्ति दी जाती है।

यदि बेटी भी न हो, तो भाई, फिर पिता, फिर पिता के भाई—यह क्रम चलता है।

(बाबा बात्रा 115b)

##### 2. "בָּנָן לֹא יִהְיֶה" (उसका कोई पुत्र नहीं):

रब्बियों ने सिखाया कि "पुत्र नहीं" का अर्थ यह नहीं कि केवल जीवित पुत्र नहीं हैं, बल्कि कोई पुरुष वंशज भी नहीं होना चाहिए — यानी पोता, परपोता भी नहीं होना चाहिए।

शब्द "l'ā" (नहीं) को "l'u" (जांच करना) भी समझा गया — जिससे संकेत मिलता है कि वारिस की तलाश गहराई से होनी चाहिए

### 3. "वहआबरतेम" (स्थानांतरित करना) शब्द पर चर्चा:

जब बेटी को संपत्ति दी जाती है, तो "स्थानांतरित करना" (transfer) शब्द का उपयोग होता है — यह दिखाता है कि यह उत्तराधिकार सामान्य व्यवस्था से हटकर विशेष व्यवस्था है।

उदाहरण: यदि बेटी की शादी किसी अन्य गोत्र में होती है, तो संपत्ति उस गोत्र में चली जाती है। (बाबा बात्रा 118b)

### 4. रब्बी अकिवा की व्याख्या:

उन्होंने "शे'आरो" (उसका निकट संबंधी) को पति से जोड़ा और कहा कि एक पति को अपनी पत्नी की संपत्ति उत्तराधिकार में मिलती है।

### 5. कब्बालिस्टिक (रहस्यवादी) दृष्टिकोण:

रिकनाटी नामक रब्बी ने कहा कि यह पद केवल भौतिक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक स्तर पर भी कार्य करता है: पुत्र = तीफेरेत, बेटी = शेखीना (ईश्वर की उपस्थिति)। यह उत्तराधिकार परमेश्वर के स्वरूप के रहस्यों को दर्शाता है।

### ■ मसीही दृष्टिकोण और आज के चर्च में महत्व:

#### 1. विश्वास और न्याय का उदाहरण:

मसीही चर्च इस पद को विश्वास के साथ आग्रह करने और ईश्वर के न्याय के उदाहरण के रूप में देखता है। जैसे सेलोफहाद की बेटियों ने डर के बिना न्याय माँगा, वैसे ही विश्वासियों को भी प्रार्थना और साहस से परमेश्वर के पास आना चाहिए।

## 2. पुरुष और महिला की समानता:

यह पद सिखाता है कि परमेश्वर की दृष्टि में महिला और पुरुष समान हैं, जब न्याय और उत्तराधिकार की बात आती है — यह सिद्धांत यीशु मसीह के सिखाए प्रेम और समानता से मेल खाता है (गलातियों 3:28)।

## 3. स्वर्गीय उत्तराधिकार:

जैसे बेटियों को उनके पिता की विरासत मिली, वैसे ही यीशु मसीह में विश्वास रखनेवाले ईश्वर की संतान बनते हैं और उन्हें **स्वर्ग का उत्तराधिकारी** कहा गया है (रोमियों 8:17)। यह पद उस गूढ़ आत्मिक सच्चाई का छाया रूप है।

---

### प्रार्थना (प्रभु यीशु मसीह से संबंधित):

हे स्वर्गीय पिता,  
मैं आपके न्याय और करुणा के लिए धन्यवाद करता हूँ।  
जैसे आपने सेलोफहाद की बेटियों की याचना सुनी और उन्हें उत्तराधिकार दिया,  
वैसे ही कृपया मेरी याचना सुनें और मुझे भी आपकी आत्मिक संपत्ति में भाग दे।  
प्रभु यीशु मसीह के द्वारा आपने मुझे अपनी संतान बनाया है,  
और मैं अब आपका उत्तराधिकारी हूँ।  
मुझे आपकी इच्छा में चलने और आपके वचन के अनुसार जीवन जीने की सामर्थ्य  
दीजिए।  
यीशु मसीह के नाम में,  
आमीन।

---

### निष्कर्ष:

गिनती 27:8 हमें सिखाता है कि परमेश्वर न्यायी और समानता में विश्वास करनेवाले हैं। यह पद सामाजिक व्यवस्था में सुधार का प्रतीक है और यह दर्शाता है

कि महिलाएँ भी ईश्वर के सामने मूल्यवान और अधिकारों से युक्त हैं। रब्बीनिक परंपरा इस कानून की जड़ों को बहुत गहराई से देखती है और उसके नियमों को एक सुव्यवस्थित उत्तराधिकार प्रणाली के रूप में प्रस्तुत करती है। मसीही दृष्टिकोण में यह पद यीशु मसीह द्वारा प्राप्त स्वर्गीय विरासत की ओर संकेत करता है। आज का विश्वासि जान सकता है कि अगर वह मसीह में है, तो वह ईश्वर का पुत्र/पुत्री और स्वर्ग की संपत्ति का उत्तराधिकारी है।

---

